བོད་སྐད་དང་ལེགས་སྦྱར་གྱི་ཚིག་མཛོད་ཆེན་མོ།

[པོད་བདུན་པ། ཇ།]

भोट-संस्कृतकोशः

[सप्तमो भागः]

जे. एस. नेगी

कोश अनुभाग
केन्द्रीय उच्च तिब्बती शिक्षा संस्थान
सारनाथ, वाराणसी

बुद्धाब्द-२५४५ खीष्टाब्द-२००१

བོད་སྐད་དང་ལེགས་སྦྱར་གྱི་ཚིག་མཛོད་ཆེན་མོ།

[པོད་བདུན་པ། ཉ།]

ཛེ་ ཤེས་ ནེ་གི

ཚིག་མཛོད་སྡེ་ཚན།

ཝཱ་ཎ་དབུས་བོད་ཀྱི་ཆེས་མཐོའི་གཙུག་ལག་སློབ་གཉེར་ཁང་།

སྟོན་པའི་འདས་ལོ་ ༢༥༤༥ ཕྱི་ལོ་ ༢༠༠༡

བོད་སྐད་དང་ལེགས་སྦྱར་གྱི་ཚིག་མཛོད་ཆེན་མོ།

[པོད་བདུན་པ། ཉ།]

TIBETAN-SANSKRIT DICTIONARY

[Vol. 7]

J. S. Negi
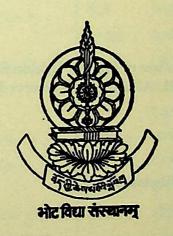
DICTIONARY UNIT
CENTRAL INSTITUTE OF HIGHER TIBETAN STUDIES
SARNATH, VARANASI

B.E. 2545 C.E. 2001

Chief Editor: *Prof. Geshe Ngawang Samten*
Publication Incharge: *Samten Chhosphel*

Research Assistants (Dictionary Unit):
Mr. Karma
Mr. Tashi Topgyal
Ms. Lata Deshpande

First Edition: 1100 copies, 2001

Price: Rs. 250.00

Publisher:
Central Institute of Higher Tibetan Studies
Sarnath, Varanasi, India.

ISBN 81-87127-10-4

Printed at Shivam Printers, Maldahiya, Varanasi

सङ्केतसूची

सङ्केताक्षरम्	विवरणम्	भोटसंस्करणम्
अ.क.	अवदानकल्पलता[1], 1959.	
	(སྐྱེས་རབས།)[37]	De གི། ཁི།
अ.को.	अमरकोशः[11], 1971.	
अ.क्र.	अचिन्त्यक्रमोपदेशः[7], 1988.	
	(རྒྱུད།)[37]	De ཞི།
अ.पा.	अमरपदपारिजातः[11], 1971.	
अ.वि.	अमरपदविवृतिः[11], 1971.	
अ.श.	अवदानशतकम्[1], 1958.	
	(མདོ་སྡེ།)[36]	De ཨྃ།
अ.सा.	अष्टसाहस्रिका प्रज्ञापारमिता[1], 1960.	
	(ཤེར་ཕྱིན།)[36]	Nar ཀ།
अ.सि.	अद्वयसिद्धिः[7], 1988.	
	(རྒྱུད།)[37]	De ཞི།
अक.	अकर्मकक्रिया।	
अभि.अ.	अभिसमयालङ्कारः[1], 1960.	
	(ཤེར་ཕྱིན།)[37]	De ཀ།
अभि.आ.	अभिसमयालङ्कारालोकः[1], 1960.	
अभि.को.	अभिधर्मकोशम्[5], 1971.	
	(མངོན་པ།)[37]	De ཀུ།
अभि.भा.	अभिधर्मकोशभाष्यम्[5], 1971.	
	(མངོན་པ།)[37]	De ཀུ། ཁུ།
अभि.स.भा.	अभिधर्मसमुच्चयभाष्यम्[3], 1976.	
	(སེམས་ཙམ།)[37]	De ཤི།
अभि.सू.	अभिधर्मकोशभाष्यसूचिः[20], 1978.	
अभि.स्फु.	अभिधर्मकोशभाष्यस्फुटार्थः[5], 1971.	
	(མངོན་པ།)[37]	De ཀུ། ངུ།
अवि.	अविकारिक्रिया।	
अव्य.	अव्ययम्।	
आ.को.	आप्टेकृतसंस्कृतहिन्दीकोशः[2], 1966.	
आद.	आदरसूचकशब्दः।	
उ.प.	उत्तरपदम्।	
उ.पु.	उत्तमपुरुषः।	
उ.वृ.	उणादिवृत्तिः[22]।	
	(སྒྲ་ཚོགས།)[37]	De ཞོ།
उ.स.	उपसर्गः।	
क.त.	कग्युर-तनग्युरसूची[21], 1934.	
का.आ.	काव्यादर्शः[8], 1939.	
	(སྒྲ་མདོ།)[37]	De སེ།
का.त.	कालचक्रतन्त्रम्[10]।	
	(རྒྱུད།)[37]	De ཤ།
का.व्यू.	कारण्डव्यूहः[1], 1961.	
	(མདོ་སྡེ།)[36]	De ཟ།
कृ.	कृदन्तः।	
कौ.प्र.	कौशिकप्रज्ञापारमितासूत्रम्[1], 1961.	
	(ཤེར་ཕྱིན།)[36]	De ཀ།
क्रि.	क्रिया।	
क्रि.वि.	क्रियाविशेषणम्।	
ख.टी.	खसमनामटीका[9], 1983.	
	(རྒྱུད།)[37]	De ཞི།
ग.व्यू.	गण्डव्यूहसूत्रम्[1], 1960.	
	(ཕལ་ཆེན།)[36]	De ཀ། ཨ།

गु.स. गुह्यसमाजतन्त्रम्[1], 1965.
(རྒྱུད།)[36] De ཅ།

गु.सि. गुह्यसिद्धिः[7], 1988.
(རྒྱུད།)[37] De ཞི།

ङ.को. ङवङजिगडगकृतकोशः[33]।

ङो.को. ངོ་མཚར་ནོར་བུའི་ངོ་སྤལ།[32]।

च.उ.वृ. चन्द्रोणादिवृत्तिः[23]।
(སྒྲ་ཚོགས།)[37] De ཧོ།

ज्यो. ज्योतिषम्।

छो.को. छोडग(ཆོས་གྲགས)कृत-
कोशः[31], 1957.

जा.मा. जातकमाला[1], 1959. *

ज्ञा.सि. ज्ञानसिद्धिः[7], 1988.
(རྒྱུད།)[37] De ཞི།

ण्य. ण्यन्तः।

त. तन्त्रम्।

त.प. तत्त्वसंग्रहपञ्जिका[5], 1968.
(ཚད་མ།)[37] De ཟེ། འེ།

त.स. तत्त्वसंग्रहः[5], 1968.
(ཚད་མ།)[37] De ཟེ།

त.सि. तत्त्वसिद्धिः[7], 1988.
(རྒྱུད།)[37] De ཞི།

तुल. तुलनीयम्।

त्रि. त्रिंशिकाप्रकरणम्[4], 1967.
(སེམས་ཙམ།)[37] De ཤི།

त्रि.भा. त्रिंशिकाविज्ञप्तिभाष्यम्[4], 1967.
(སེམས་ཙམ།)[37] De ཤི།

द.को. དག་ཡིག་གསར་བསྒྲིགས།[31], 1982.

द.भू. दशभूमिकसूत्रम्[1], 1967.
(ཕལ་ཆེན།)[36] De ཁ།

दे.स. देगे(སྡེ་དགེ།) संस्करणम्।

द्र. द्रष्टव्यम्।

द्विक. द्विकर्मकक्रिया।

ध.प्र. धर्मोत्तरप्रदीपः[3], 1971.

न. नपुंसकम्।

ना. नाम (व्यक्तिवाचकसंज्ञा)।

ना.ना. नागानन्दनामनाटकम्[24], 1957.
(སྐྱེས་རབས།)[37] De ཤུ།

ना.प. नामसङ्गीतिपञ्जिका[10]।

ना.स. नामसङ्गीतिः[17]।
(རྒྱུད་འབུམ།)[36] De ཀ།

नि. निपातः (ཚིག་ཕྲད།)

न्या. न्यायशास्त्रम्।

न्या.को. न्यायकोशः[38], 1978.

न्या.टी. न्यायबिन्दुटीका[3], 1971.
(ཚད་མ།)[37] De ཞེ།

न्या.प्र. न्यायप्रवेशः[25], 1968.
(ཚད་མ།)[37] De ཅེ།

न्या.बि. न्यायबिन्दुः[3], 1971.
(ཚད་མ།)[37] De ཅེ།

पर्या. पर्यायवाचकशब्दः।

पा. पारिभाषिकशब्दः।

पा.टि. पादटिप्पणी।

पा.भे. पाठभेदः।

पु. पुंल्लिङ्गः।

पे.स. पेकिंग(जापानी)संस्करणम्।

प्र.	प्रत्ययः।
प्र.अ.	प्रमाणवार्त्तिकालङ्कारः[3], 1953.
	(ཚད་མ།)[37] De ཏེ། ཐེ།
प्र.को.	प्रज्ञा[12], 1962.
प्र.प.	प्रसन्नपदा[1], 1960.
	(དབུ་མ།)[37] De འ།
प्र.पु.	प्रथमपुरुषः।
प्र.वा.	प्रमाणवार्त्तिकम्[5], 1968.
	(ཚད་མ།)[37] De ཅེ།
प्र.वृ.	प्रमाणवार्त्तिक(स्व)वृत्तिः[28], 1959.
	(ཚད་མ།)[37] De ཅེ།
प्र.सि.	प्रज्ञोपायविनिश्चयसिद्धिः[7], 1988.
	(རྒྱུད།)[37] De ཝི།
प्रा.	प्राचीनशब्दः (བརྡ་རྙིང)।
ब.अ.	Blue Annals[2], 1976.
ब.वि.	बलिविधिः।
बो.अ.	बोधिचर्यावतारः[1], 1960.
	(དབུ་མ།)[37] De ལ།
बो.को.	བོད་རྒྱ་ཚིག་མཛོད་ཆེན་མོ།[31], 1984.
बो.प.	बोधिचर्यावतारपञ्जिका[1], 1960.
	(དབུ་མ།)[37] De ལ།
बो.भू.	बोधिसत्त्वभूमिः[3], 1978.
	(སེམས་ཙམ།)[37] De ཝི།
भवि.	भविष्यत्कालः।
भा.क्र.	भावनाक्रमः[27], 1958.
	(དབུ་མ།)[37] De ཀི།
भू.का.कृ.	भूतकालिककृदन्तः।
भूत.	भूतकालः।
म.का.	मध्यमककारिका[1], 1960.
	(དབུ་མ།)[37] De ཙ།
म.को.	མ་ནོར་ལམ་བཟང་།[35], 1977.
म.टी.	मध्यान्तविभागटीका[2], 1971.
	(སེམས་ཙམ།)[37] De བི།
म.पु.	मध्यमपुरुषः।
म.भा.	मध्यान्तविभागभाष्यम्[2], 1971.
	(སེམས་ཙམ།)[37] De བི།
म.मू.	मञ्जुश्रीमूलकल्पः[1], 1964.
	(རྒྱུད།)[36] De ན།
म.वि.	मध्यान्तविभागः[2], 1971.
	(སེམས་ཙམ།)[37] De ཕི།
म.वृ.	मनोरथनन्दिकृतप्रमाण-वार्त्तिकवृत्तिः[5], 1968.
म.व्यु.	महाव्युत्पत्तिः[13]।
	(སྣ་ཚོགས།)[37] De ཅོ།
मि.को.	मिफम(མི་ཕམ)कृतकोशः[30], 1979.
मे.दू.	मेघदूतम्[2], 1977.
	(སྒྲ་མདོ།)[37] De ཤེ།
मो.को.	मोनियरविलियमकृत-संस्कृताङ्ग्लकोशः[2], 1979.
या.को.	याशकेकृतभोटाङ्ग्लकोशः[2], 1975.
यो.र.	योगरत्नमाला[14], 1976.
यो.वि.	योगाचारविज्ञानवादः।
यो.श.	गोगशतकम्[15], 1976.
	(གསོ་རིག།)[37] De ཧེ།
र.वि.	रत्नगोत्रविभागः[16], 1950.
	(སེམས་ཙམ།)[37] De ཕི།

र.व्या. रत्नगोत्रविभागव्याख्या[16], 1950.
(སེམས་ཙམ།)[37] De ཕི།

रा.को. राधाकान्तकृतशब्दकल्पद्रुमः[6], 1967.

रा.प. राष्ट्रपालपरिपृच्छा[1], 1961.
(དཀོན་བརྩེགས།)[36] De ང།

ल.अ. लङ्कावतारसूत्रम्[1], 1963.
(མདོ་སྡེ།)[36] De ཅ།

ल.वि. ललितविस्तरः[1], 1958.
(མདོ་སྡེ།)[36] De ཁ།

लि.पा. लिप्यन्तरितभोटपाठः।

लो.को. लोकेशकृतभोटसंस्कृतकोशः[17], 1976.

व.का.कृ. वर्तमानकालिककृदन्तः।

वर्त. वर्तमानकालः।

वा.को. वाचस्पत्यम्[6], 1969.

वा.टी. वादन्यायटीका[5], 1972.
(ཚད་མ།)[37] De ཞེ།

वा.न्या. वादन्यायः[5], 1972.
(ཚད་མ།)[37] De ཆེ།

वि. विशेषणम्।

वि.प्र. विमलप्रभा[10], 1986.
(རྒྱུད།)[37] De ཤ། ད།

वि.व. विनयवस्तु[1], 1967.
(འདུལ་བ།)[36] De ཀ། ཁ།

वि.सू. विनयसूत्रम्[26], 1981.
(འདུལ་བ།)[37] De ཕུ།

वि.स्त. विशेषस्तवः।

विं. विंशतिकाप्रकरणम्[4], 1967.
(སེམས་ཙམ།)[37] De ཤི།

विं.वृ. विंशतिकाप्रकरणवृत्तिः[4], 1967.
(སེམས་ཙམ།)[37] De ཤི།

विन. विनयशास्त्रम्।

वेदा. वेदान्तः।

वै.द. वैशेषिकदर्शनम्।

वैदि.द. वैदिकदर्शनम्।

व्या. व्याकरणशास्त्रम्।

श.को. शरच्चन्द्रकृतभोटाङ्ग्लकोशः[2], 1973.

श.टी. शतपञ्चाशत्कबुद्धस्तोत्रटीका[19], 1951.
(བསྟོད་ཚོགས།)[37] De ཀ།

श.बु. शतपञ्चाशत्कनामबुद्धस्तोत्रम्[19], 1951.
(བསྟོད་ཚོགས།)[37] De ཀ།

शि.का. शिक्षासमुच्चयकारिका[1], 1960.
(དབུ་མ།)[37] De ཁི།

शि.स. शिक्षासमुच्चयः[1], 1960.
(དབུ་མ།)[37] De ཁི།

श्रा.भू. श्रावकभूमिः[3], 1973.
(སེམས་ཙམ།)[37] De ཛི།

श्री.को. श्रीज्ञान(དཔལ་ཡེ་ཤེས)कृतकोशः[34]।

सं. संज्ञा।

स.उ. संवरोदयतन्त्रम्[18], 1974.
(རྒྱུད་འབུམ།)[36] De ཁ།

स.क्रि. सहायकक्रिया।

स.दु. सर्वदुर्गतिपरिशोधनतन्त्रम्[2], 1983.
(རྒྱུད་འབུམ།)[36] De ཏ།

स.ना. सर्वनाम।

स.प. सम्बन्धपरीक्षा[5], 1972.
(ཚད་མ།)[37] De ཅེ།

स.पु. सद्धर्मपुण्डरीकसूत्रम्[1], 1960.
(མདོ་སྡེ།)[36] De ཇ།

स.सि. सहजसिद्धिः[7], 1988.
(རྒྱུད།)[37] De ཞི།

सक. सकर्मकक्रिया।

सु.प. सुविक्रान्तविक्रामिपरिपृच्छा[1], 1961.
(ཤེས་ཕྱིན།)[36] De ཀ།

सु.प्र. सुवर्णप्रभाससूत्रम्[1], 1967.
(རྒྱུད་འབུམ།)[36] De པ།

सु.व्यू. सुखावतीव्यूहः[1], 1961.
(མདོ་སྡེ།)[36] De ཇ།

सू.अ. (महायान)सूत्रालङ्कारः[1], 1970.
(སེམས་ཙམ།)[37] De ཕི།

सू.भा. (महायान)सूत्रालङ्कारभाष्यम्[1], 1970.
(སེམས་ཙམ།)[37] De ཕི།

सू.व्या. (महायान)सूत्रालङ्कारव्याख्या[1], 1970.
(སེམས་ཙམ།)[37] De ཕི།

स्त्री. स्त्रीलिङ्गम्।

ह.को. हलायुधकोशः[29], 1967.

ह.टी. हरिभद्रविरचिता अष्टसाहस्रिका-
टीका[1], 1960.

हे.टी. हेतुबिन्दुटीका[25], 1949.
(ཚད་མ།)[37] De ཚེ།

हे.त. हेवज्रतन्त्रम्[14], 1976.
(རྒྱུད།)[36] De ང།

हे.बि. हेतुबिन्दुः[25], 1949.
(སེམས་ཙམ།)[37] De ཅེ།

---

1 Mithila Institute, Darbhanga, Bihar 2 Motilal Banarsidass, Bungalow Road, Jawahar Nagar, Delhi-7 3 K.P. Jayaswal Research Institute, Patna, Bihar 4 Chowkhamba Vidyabhawan, Chowk, Varanasi 5 Bauddha Bharati, P.B. 49, Varanasi 6 Chowkhamba Sanskrit Series Office, P.B.8, Varanasi -1 7 Central Institute of Higher Tibetan Studies, Sarnath, Varanasi 8 Culcutta University 9 Sampurnanand Sanskrit University, Varanasi 10 Manuscript, Nepal 11 Adyar Library and Research Centre, Adyar, Madras 12 Namgyal Institute of Tibetology, Gangtok, Sikkim 13 Compiled by R. Sakaki, Japan 14 London Oriental Series, Oxford University Press 15 Library of Tibetan Works and Archives, Dharamsala (H.P.) 16 Bihar Research Society, Patna, Bihar 17 International Academy of Indian Culture, J22 Hauz Khas Enclave, New Delhi 18 The Hokuseido Press, Tokyo, Japan 19 Cambridge University Press, London 20 Index to the Abhidharmakosabhasya (Part Three), Japan 21 A Complete Catalogue of the Tibetan Buddhist Canons, Published by Tohoku Imperial Univerity, Sendai, Japan 22 bKah-hGyur and bsTan-hGyur, No.4426 23 bKah-hGyur and bsTan-hGyur, No. 4428 24 Asiatic Society, 1 Park Street, Calcutta-16 25 Gaekwad Oriental Institute, Baroda 26 Bharatiya Vidya Bhavan, Kulapati Munshi Marg, Bombay-400007 27 Ed. by Tucci, Serie Orientale, Roma-9 28 Banaras Hindu University, Press Book Depot, Varanasi- 5 29 Hindi Samiti, Su-

cana Vibhaga, Lucknow (U.P.) 30 མི་ཕམ་རྒྱ་མཚོས་བརྩམས་པ། སྐད་གཉིས་ཤན་སྦྱར་རབ་གསལ་ནོར་བུའི་མེ་ལོང་། Leh, Ladakh 31 མི་རིགས་དཔེ་སྐྲུན་ཁང་། 32 ཚེ་རིང་དབང་རྒྱལ་གྱིས་བརྩམས་པ། ཉེ་བར་མཁོ་བའི་ལེགས་སྦྱར་གྱི་སྐད་བོད་ཀྱི བརྡ་ཀཱ་ལཱིའི་འཕྲེང་བསྒྲིགས་ངོ་མཚར་ནོར་བུའི་དོ་ཤལ། 33 དག་དབང་འཇིག་གྲགས་ཀྱིས་བརྩམས་པ། མངོན་བརྗོད་ཀྱི་བསྟན་བཅོས མཁས་པའི་རྣ་རྒྱན་ཞེས་བྱ་བ། 34 དཔལ་ཡེ་ཤེས་ཀྱིས་བརྩམས་པ། སྐད་དོད་གཅིག་གིས་དོན་དུ་མར་འཇུག་པའི་མངོན་བརྗོད་ནོར་བུའི ཕྲེང་བ། 35 ཚེ་དབང་རྣམ་རྒྱལ་གྱིས་བརྩམས་པ། བརྡ་དག་མ་ནོར་ལམ་བཟང་། བོད་གཞུང་ཤེས་རིག་པར་ཁང་ནས་པར་བསྐྲུན་པ། 36 བཀའ་འགྱུར། 37 བསྟན་འགྱུར། 38 The Bhandarkar Oriental Research Institute, Poona.

De = སྡེ་དགེ། Nar = སྣར་ཐང་།

* Pub. by Kunsang Topgey, Thimbu Bhutan, 1975.

Note: Due to a technical problem, the-end-of-the-line tshag (་) could not be printed.

<?> This sign indicates that:

1. The entry word and its Sanskrit equivalent do not agree in meaning or tense, e.g.

   སྐྱོང་ལྷ་མོ <?> ना. सुरादेवी, देवकुमारिका– བྱང་ཕྱོགས་ཡོགས་ཀྱི་ཕྱོགས་ཆ་ན། །ལྷ་མོ་གཞོན་ནུ་བརྒྱད་ཡོད་དེ། །རབ་ཆགས་ལྷ་མོ་སྐྱོང་[ཆང་]ལྷ་མོ། །ས་དང་དེ་བཞིན་པད་མ་ཅན། །རྒྱལ་པོ་ཆེ་ལ་ཉེར་གནས་དང་། །རེ་དང་ཁྲེལ་ཡོད་དཔལ་ལྡན་མ།། उत्तरेऽस्मिन् दिशो भागे अष्टौ देवकुमारिकाः। इलादेवी सुरादेवी पृथ्वी पद्मावती तथा॥ उपस्थिता महाराजा आशा श्रद्धा हिरी शिरी। ल.वि.186ख/284.

   བཏུང་བ •*क्रि. (འཐུང་བ इत्यस्याः भवि.)* <?> **1.** चूषति – ཆུ་བཏུང་ངོ་།། उदकं चूषति अभि.भा.202क /681 **2.** पिबेत् – དེ་ཡི་ཆང་ཡང་བཏུང་བར་བྱ། །དེ་ནས་རང་ཡང་བཏུང་བ་ཉིད།། मदनं पाययेत् तासां स्वयं चैव पिबेत् ततः। हे.त. 20ख/66; ཆང་ལ་སོགས་པ་རྟག་ཏུ་བཏུང་།། मद्यादींश्च पिबेत् सदा गु.स. 139ख/106.

2. The Tibetan translation differs from the Sanskrit or vice versa, e.g.

   བཏུང་བ་ཞིམ་པོ पानीयम् – གཅེར་བུ་རྣམས་ཀྱིས་གོས་དག་དང་། །བཀྲེས་པ་རྣམས་ཀྱིས་ཟས་དང་ནི། །སྐོམ་པ་རྣམས་ཀྱིས་ཆུ་དག་དང་། །བཏུང་བ་ཞིམ་པོ་ཐོབ་པར་ཤོག། <?> वस्त्रभोजनपानीयं स्रक्-चन्दनविभूषणम्। मनोभिलषितं सर्वं लभन्तां हितसंहितम्॥ बो.अ.10.20.

*> This sign indicates that:

1. The Sanskrit citation following this is doubtful or ambiguous, e.g.

   རྣམ་པར་གནས་པ व्यवस्थापनम् – འདི་ལ་བསྒོ་བ་ཉིད་དུ་རྣམ་པར་གནས་པ་ནི་སེམས་གཙོའོ།། *> तता-त्राज्ञप्ततायां व्यवस्थापनम् वि.सू. 48ख/61.

2. The Tibetan word(s) following this is/are doubtful or ambiguous, e.g.

   རྣམ་པར་དཔྱད •*क्रि.* **1.** विचार्यते – དེ་ནི་འདུ་བར་གནས་སེ་ན། །དེ་ལྟར་རྣམ་པར་དཔྱད་མིན་ཏེ།། स्थितिस्तत्समवायश्चेन्न तथैव विचार्यते। त.स.30ख/320; མདུན་ས་འདིར་ནི་ཅུང་ཟད་གང་། །ལེགས་བཤད་རིན་ཆེན་རྣམ་དཔྱད་དེ།། अस्मिन् सदसि यत्किंचित् सूक्तरत्नं विचार्यते। अ.क. 28क/53.13; व्यवचारयति – ཚོང་དཔོན་གྱི་བུ་ནོར་བཟངས་ཀྱིས་མཐོང་ངོ་།། ཐོས་སོ།། རྣམ་པར་དཔྱད་དོ།། सुधनः श्रेष्ठिदारकः पश्यति स्म, शृणोति व्यवचारयति ग.व्यू.106ख/195 **2.** विचारयेत्–བློ་ཆེན་ལྡན་པས་རྣམ་པར་དཔྱད།། विचारयेन्महाधीमान् स.सि.70क/189 **3.** *> རྣམ་པར་སྤྱད། •= རྣམ་པར་དཔྱད་པ།

   སྤྱོད་སྤྱད་འགྲུབ་པ *> སྤྱོད་སྤྱད་འབྲུབ་པ།

ACKNOWLEDGMENTS

I feel very fortunate to have had the facilities and assistance from the Institute which made this work possible. I would like to express my deepest gratitude to Dr. S. S. Bahulkar who kindly helped in dealing with the obscure readings of the Sanskrit texts and technical problems from time to time. I would also like to thank Mr. Karma, Mr. Tashi Topgyal, Mrs. Lata Deshpande (Research Assistants) and Daya Ram Yadav for their active assistance.

J. S. Negi

Chief Editor
Dictionary Unit

ན

ན व्यञ्जनद्वादशवर्णः। འདིའི་ང་རོ་འདོན་ཚུལ་ལ་སྐྱེ་གནས་སོ་སྣ་དང་བཅས་པ་དང་། བྱེད་པ་ལྕེ་རྩེ། ནང་གི་རྩོལ་བ་སོ་ལྕེ་ཐྲད་པ་དང་། ཕྱིའི་རྩོལ་བ་སྒྲོག་ཆུང་སྒྲ་ལྡན बो.को.1492; = न (देवनागरीवर्णः) – ན་ཞེས་བརྗོད་པ་དང་མིང་དང་གཟུགས་ཡོངས་སུ་ཤེས་པར་བྱ་བའི་སྒྲ་བྱུང་ངོ་॥ नकारे नामरूपपरिज्ञाशब्दः (निश्चरति स्म) ल.वि.67ख/89; ན་ལ་ད नलदम् सु.प्र.29क/56; • *अव्य.* **i.** तु – མདོར་བསྡུ་ན समासतस्तु अभि.भा.34ख/54; དངོས་སུ་ན वस्तुतस्तु त.स.48क/479 **ii.** च – དེ་ཚས་པ་ན་རྒྱལ་པོ་གསོ་སྦྱོང་འཕགས་ཤིའོ॥ स संप्रस्थितः, उपोषधश्च राजा कालगतः वि.व.156ख/1.45; དེ་ལྟ་ན་སངས་རྒྱས་ཉིད་ཡོན་ཏན་མ་ལུས་པའི་གཞི་དང་། གཞན་དག་དང་ཐུན་མོང་མ་ཡིན་ནོ་ཞེས་བདེ་བར་གཤེགས་པའི་སྒྲས་བསྟན་ཏོ॥· एवं च बुद्धत्वमशेषगुणसरसमसाधारणमपरयोगिभिः सुगतशब्देन ख्यापितम् बो.प.42ख/1 **iii.** हि – དེ་ལྟ་ན་གང་སུ་ཡང་རུང་བ་གསལ་བར་བྱེད་པར་འགྱུར་རོ॥ एवं हि यत्किञ्चिद्यस्य कस्यचिद् व्यञ्जकं स्यात् त.प.180क/821; ན་ཞེས་བྱ་བ་ནི་གང་གི་ཕྱིར་ཞེས་བྱ་བའི་དོན་ཏེ हि यस्मादर्थे न्या.टी.51ख/110 **iv.** चेद् – གལ་ཏེ་རྒྱུ་མ་ཚང་བ་མེད་པ་ཡིན་ན अविकलं चेत् कारणम् त.प.176क/811; གལ་ཏེ་སྡེར་མོ་དག་གིས་བྲད་ན་མཉམ་པར་བྱའོ॥ नखरिकाभिलिखितं चेत् समं कुर्यात् वि.सू.93क/111 **v.** यदि – ཤེས་བྱ་ལས་སྔར་ཤེས་ཡོད་ན། དེ་ནི་ཅི་ལ་དམིགས་ནས་སྐྱེ ज्ञेयात्पूर्वं यदि ज्ञानं किमालम्बयास्य सम्भवः। बो.अ.35क/9.105; • *प्र.* **i.** विभक्तिप्रत्ययः (ལ་དོན།) – མི་དྲན་ན་དྲན་པར་བྱའོ॥ अस्मृतौ स्मारणम् वि.सू.88ख/106; དུས་གཅིག་ན एकस्मिन् समये ल.अ.56क/1; མྱ་ངན་ལས་མ་འདས་པའི་གནས་སྐབས་ན अनिर्वाणावस्थायाम् त.प.272ख/1013; ལུས་ལ་བརྟེན་ན་ཡང देहाश्रितत्वेऽपि त.स.70ख/663; ལྡོག་པ་ཏེ་བསྒྲུབ་བྱ་མེད་ན་སྒྲུབ་བྱེད་མི་འབྱུང་བ व्यतिरेकः साध्याभावे साधनाभावः त.प.42क/532; བྱེ་བ་ཕྲག་བརྒྱ་ན་ཐེར་འབུམ་ཞེས་བྱའོ॥ शतं कोटीनामयुतं नामोच्यते ल.वि.76ख/103 **ii.** त्रल्-प्रत्ययत्वेन प्रयोगः – འདི་ན་མེ་ཡོད་དོ॥ अग्निरत्र हे.बि.240ख/55; དེ་ན་རྣམ་པར་རྟོག་པ་མང་བའི་ཕྱིར་རོ॥ तत्र वितर्कभूयस्त्वात् अभि.स्फु.163क/899 **iii.** शतृ-प्रत्ययत्वेन प्रयोगः – འདོད་ནའང་འདོད་ལ་རག་ལས་འགྱུར॥ इच्छन्नपीच्छायत्तः स्यात् बो.अ.35ख/9.126; བསྐྱེད་པ་ན जनयत् त.प.173क/803 **iv.** शानच्-प्रत्ययत्वेन प्रयोगः – སྐྱེ་བ་ན उपजायमानः त.प.236ख/944; ལྡོག་པ་ན निवर्तमानः त.प.280क/1027; • *संक्षि.*> ན་བ། • *संक्षि.*> ན་ཚོད། • द्र. འདི་ཡོད་ན་འདི་ཡོད་དོ॥ अस्मिन् सतीदं भवति ल.अ.96ख/43; མེད་པ་ཉིད་དུ་ཁས་ལེན་ན नास्तितोपगमे सति त.स.71ख/671; དེ་ལྟ་ན एवं सति त.प.228ख/927; བཅོམ་ལྡན་འདས་གཤེགས་ན་ནི་འགྲོ་ལ། བཞེངས་ན་ནི་སྡོད་དོ॥ भगवन्तं च गच्छन्तमनु गच्छति, तिष्ठन्तं तिष्ठति अ.श.65क/57; མིག་གིས་ཀྱང་མ་བལྟས

ན་ལྡང་བའམ...ལྟ་ཅི་སྨོས चक्षुःसंप्रेक्षणामपि न कृतवान्, कः पुनर्वाद उत्थास्यति अ.श.9ख/8; གང་བྱུང་བ་ན་གྲོང་ཡང་སྲེག་པར་བྱེད यत्तूत्पन्नं ग्राममपि दहति श्रा.भू.82ख/215; བསྡམས་པར་བྱ་བའམ་འདིས་སྡོམ་པར་བྱེད་པས་ན་སྡོམ་པ་སྟེ संवरणं संव्रियते वा अनेनेति संवरः बो.प.43क/2.

ན་ཀུ་ལ नकुलः, वाद्ययन्त्रविशेषः – བཙུན་མོའི་འཁོར་དང་རོལ་མོའི་ཆ་བྱད་རྒྱུད་གཅིག་པ་དང་པི་བང་དང...ན་ཀུ་ལ་དང...གླུ་དབྱངས་སྦྱར་བ་ལ་ལེགས་པར་བསླབས་པ अन्तःपुरं तुणवपणववीणा...नकुल...सङ्गीतिसंप्रयोगसुशिक्षितम् ल.वि.105ख/152.

ན་ཀྲ = ཆུ་སྲིན་ན་ཀྲ नक्रः, जलजन्तुविशेषः – དེ་ཡི་གསུང་གིས་ཆུ་ལ་ཉ། །ཆུ་སྲིན་ན་ཀྲ་ལ་སོགས་ཚོགས།། मत्स्यकुम्भीरनक्रादिसंभारं तद्गिराम्भसि । अ.क.298क/39.11.

ན་ཁ = སྤྲང་ཕང་སྔོན་པོ नखम्, गन्धद्रव्यविशेषः – शुक्तिः शङ्खः खुरः कोलदलं नखम् अ.को.2.4.130; नखति कुष्ठादिरोगान् गृहीत्वा गच्छतीति नखम् । नख गतौ अ.वि.2.4.130.

ན་ཁི = ན་ཁ།

ན་ག་གེ་སར = ནཱ་ག་གེ་སར།

ན་ག་ཏ་མ་ལ नक्तमालः, वृक्षविशेषः – ཤིང་སཱ་ལ་དང་བ་ཀུ་ལ་དང...ན་ག་ཏ་མ་ལ་དང་བི་དུ་ལ་དང་ནི་ཙུ་ལ་མང་པོ་དང सालबकुल...नक्तमालविदुलनिचुलक्षुपबहुले जा.मा.149ख/174.

ན་ག་ར ना. नगरम्, उपपीठम् – ཉེ་གནས་མཱ་ལ་ཝ་ཞེས་བརྗོད། །སིན་དྷུ་ན་ག་ར་ཉིད་དོ།། उपपीठं मालवं प्रोक्तं सिन्धुर्नगरमेव च। हे.त.8क/22.

ན་གུ माषः – [དཔེར་]ན་ཆུ་མང་པོ་མཆིས་པའི་སྣོད་ན་སྲན་ཆུང་ཀ་རུའམ་ན་གུ་གྱེན་དུ་མཆི་ན་ཡང་བྲེལ་བ་དང་སྨིན་པར་འགྱུར། ཐུར་དུ་མཆི་ན་ཡང་བྲེལ་བ་དང་སྨིན་པར་འགྱུར་བ यथा बह्वयुदकायां स्थाल्यां मुद्गा वा माषा वा चोर्ध्वं गच्छन्तोऽधो गच्छन्तः स्विद्यन्ते पच्यन्ते का.व्यू.204क/261.

ན་གྱུར = ན་བར་གྱུར།

ན་ཆུང 1. = ན་ཆུང་མ युवतिः, ०ती – དར་ལ་བབས་པའི་ན་ཆུང་འཁོར་པ་ཡང་། །བསོད་ནམས་བྱས་པ་རྣམས་ལ་དགའ་སྐྱེར་ཡིན།། प्रीतिप्रदाः पुण्यवतां भवन्ति प्रौढा युवत्यश्च विभूतयश्च ॥ अ.क.357क/48.1; तरुणी – ན་ཆུང་གི། །བྲེར་མིག་རྣོན་པོས་ཕུག་པའི་སྐྱེ་བོ་དག།། जनाः...विद्धाः सुतीक्ष्णैस्तरुणीकटाक्षैः अ.क.123क/65.59; कन्या – ན་ཆུང་ཡངས་པའི་མིག་ཅན་ནི། །གཟུགས་དང་ལང་ཚོས་བརྒྱན་ཉིད་ནས།། प्राप्य कन्यां विशालाक्षीं रूपयौवनमण्डिताम् । गु.स.102क/25; कुमारी – རིགས་ཀྱི་བུད་མེད་དམ་རིགས་ཀྱི་ན་ཆུང་ལ་གཤེས་སམ་ཁ་ངན་སྨྲས་སམ་རེག་པས कुलस्त्री वा कुलकुमारी वा आक्रुष्टा भवत्याभाष्टा परामृष्टा वा वि.व.230क/2.133; कान्ता – ན་ཆུང་ལག་པས་གསེར་གྱི་བུམ་བཏུད་ཅིང་། །དྲི་བཟང་ཆུ་ཡིས་མཆོག་ཏུ་མངོན་བཀྲུས་པ།། कान्ताकरावर्जितहेमकुम्भसत्सौरभाम्भःप्रवराभिषिक्तः अ.क.194ख/22.27; ཕྱོགས་ཀྱི་ན་ཆུང་རྣ་རྒྱན་དུ། །གྱུར་པ་ད་ལྟའང་རྣམ་པར་མཛེས།། अद्यापि यस्य दिक्कान्ताकर्णाभरणतां गतम् । विभाति अ.क.203ख/23.7; अङ्गना – ན་ཆུང་ཚིག་སྨྲ་གླུ་ལེན་གར་བྱེད་པས།། अङ्गनाजल्पितनृत्तगीतैः जा.मा.164ख/190; योषित् – བུང་བའི་ན་ཆུང་གླུ་ལེན་པ།། गीतं मधुपयोषिताम् जा.मा.51क/60; वधूः – རིག

འཛིན་ན་ཆུང་ཁྲུས་བྱས་ཤིང་།། विद्याधरवधूस्नानैः जा.मा.117ख/137; पुरन्ध्रिः, °न्ध्री – ཅི་སྟེ་གྲུབ་པའི་ན་ཆུང་གིས། །ལྷ་ཡི་གོས་དང་རྒྱན་རྣམས་ཀྱིས།། अथ सिद्धपुरंध्रीभिर्दिव्यांशुकविभूषणैः अ.क.302ख/108.84 **2.** = གཞོན་ནུ युवा – ན་ཆུང་དགའ་བའི་དགའ་སྟོན་དཔལ།། यूनां रत्युत्सवश्रियः का.आ.325ख/2.106; तरुणः – वयस्थस्तरुणो युवा अ.को.2.6.42; तरति दुस्तरमपीति तरुणः । तॄ प्लवनतरणयोः अ.वि.2.6.42.

ན་ཆུང་མ युवती–དཔེར་ན་བུད་མེད་དང་མི་མོ་དང་ན་ཆུང་མ་རྣམས་ལས་བུད་མེད་གཅིག་པུ་གཙོ་བོའི་མིང་མ་ཡིན་ཏེ यथा स्त्रीनारीयुवतीत्यादीनां नैका स्त्रीसंज्ञा प्रधाना स्यात् वि.प्र.135ख/1, पृ.34; द्र. ན་ཆུང་།

ན་མཉམ वयस्यः, समानवयस्कः – स्निग्धो वयस्यः सवयाः अ.को.2.8.12; वयसा तुल्यो वयस्यः अ.वि.2.8.12; द्र. ན་མཉམ་མ།

ན་མཉམ་པ = ན་མཉམ།

ན་མཉམ་མ = གྲོགས་མོ वयस्या, सखी – आलिः सखी वयस्या च अ.को.2.6.12; वयसा तुल्या वयस्या अ.वि.2.6.12; द्र. ན་མཉམ།

ན་བ • *सं.* **1.** = ནད व्याधिः – སྐྱེ་བ་དང་རྒ་བ་དང་ན་བ་དང་འཆི་བ་དང...འཁྲུག་པ་ལ་སོགས་པ་ལས जातिजराव्याधिमरण...उपायासादिभ्यः ल.अ.124क/71; སྐྱེ་དང་ན་དང་རྒ་དང་འཆིས་གཟིར་བ།། जातिव्याधिजरमृत्युमर्दितान् रा.प.232क/125; रोगः – དབྱངས་དགྲ་ཡིས་འཆི་བ་སྟེ། གསལ་བྱེད་དགྲ་ཡིས་ན་བའོ།། स्वरेण शत्रुणा मरणम्, व्यञ्जनशत्रुणा रोगः वि.प्र.80ख/4.168; गदः मि.को.51ख; व्यथा – མགོ་བོ་ན་བ शिरोव्यथा वि.प्र.68क/4.121; शूलः, °लम् – རང་གི་མགོ་བོ་མཚུངས་མེད་ནི། །ན་བར་སྨོན་ཅིང་བྲྀ་ལྡན་དེས།། सा शिरःशूलमतुलं वदन्ती स्वस्य अ.क.267क/32.23; བགྲེན་པ་རྣམས་ཀྱིས་ངོ་བསྟོད་ནི། །འཛམ་ཡང་རྣ་བ་ན་བའི་རྒྱུ།། कृपणश्चाटुकारोऽपि कर्णशूलाय केवलः ॥ अ.क.362क/48.54; आबाधकः – ཕན་འདོགས་པ་རྣམས་གང་ཞེ་ན...འབྲོག་དགོན་པ་དང་མུ་གེ་དང...ནད་ཀྱི་འཇིགས་པ་ལས་སྒྲོལ་བར་བྱེད་པ་རྣམས་དང उपकारिणः कतमे...ये वा पुनरटवीकान्तारादुत्तारयन्ति, दुर्भिक्षाद्वा...आबाधकाद्वा श्रा.भू.61क/151 **2.** दुःखनम्–གལ་ཏེ་ན་ན་ཐན་གོར་དུ་ཡོ་མའི་ཚང་བུ་དག་གཞག་གོ།། सामन्तके दुःखनं चेत् पात्र[पत्र]वैभङ्गुकानां दानम् वि.सू. 81क/98; • *वि.* **1.** = ནད་པ व्याधितः – འཇིག་པའི་ཆོས་ཅན་འཇིག་པ་དང ...ན་བའི་ཆོས་ཅན་ན་བ་དང...སྡུག་བསྔལ་འབྱུང་བ་གང་ཡིན་པ नशनधर्मके नष्टे...व्याधिधर्मके व्याधिते...यद्दुःखम् बो.भू.131क/168; ग्लानः – ན་སྟེ་མི་ནུས་ན་ཉེས་པ་མེད་དོ།། अनापत्तिः ग्लानः स्यादप्रतिबलः बो.भू.93क/118; ན་བ་དང་དབང་མེད་པ་དང་སྲོག་དང་ཚངས་པར་སྤྱོད་པའི་བར་ཆད་ཀྱིས་འཇིགས་པ་ལས་གཞན་པ་ལ་འབུལ་བ་ལ་ནི་ཉེས་བྱས་སོ།། दुष्कृतं ग्लानावशप्राणब्रह्मचर्यान्तरायभीतादन्यस्य दाने वि.सू.60ख/77; आबाधिकः – ཡང་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་ནི་སེམས་ཅན་ནད་ཀྱིས་ཐེབས་ཏེ་ན་བ་རྣམས་ལ पुनर्बोधिसत्त्व आबाधिकानां सत्त्वानां व्याधितानाम् बो.भू.142क/182; आतुरः – ཡུན་རིང་དག་ཏུ་སྡུག་བསྔལ་མང་པོའི་གནས། །རྟག་ཏུ་ན་བས་ཉོན་མོངས་མང་པོའི་གཞི།། चिरस्य तावद्बहुरोगभाजनं सदातुरत्वाद्विविधश्रमाश्रयः । जा.मा.182क/211; अस्वस्थः – ན་དང་མི་ན་ཀུན་གྱིས་ཀྱང་། །གློ་བུར་ཚེ་ལ་ཡིད་མི་བརྟན།། स्वस्थास्वस्थैरविश्वास्य आकस्मिकमहाशनिः ॥ बो.अ.5क/2.34 **2.** = ན་ཚ (=

གསར་པ) नवः, नूतनः – ན་པ་མ་ལི་ཀ नवमल्लिका म.व्यु.6156(88क/).

ན་པ་མ་ལི་ཀ = ན་ཝ་མ་ལླི་ཀཱ། ན་ཝ་མཱ་ལི་ཀཱ། नवमल्लिका; नवमालिका, पुष्पविशेषः म.व्यु.6156(88क).

ན་བའི་རྐྱེན་གྱི་སྨན = ན་བའི་རྐྱེན་སྨན།

ན་བའི་རྐྱེན་སྨན *पा.* ग्लानप्रत्ययभेषज्यम् – སྨན་ནི་རྣམ་པ་གཉིས་ཏེ། གཏན་དུ་བའི་སྨན་དང་ན་བའི་རྐྱེན་སྨན་ནོ།། द्विविधं भैषज्यम्। सततभैषज्यं ग्लानप्रत्ययभैषज्यं च शि.स.73क/71; ན་བཟའ་དང་བསྙོས་དང་མལ་སྟན་དང་ན་བའི་རྐྱེན་གྱི་སྨན་དང་ཡོ་བྱད་རྣམས་ཀྱིས་བསྙེན་བཀུར་བྱས་ནས चीवरपिण्डपातशयनासनग्लानप्रत्ययभैषज्यपरिष्कारैरुपस्थिता भवन्ति का.व्यू.209क/267; द्र. ན་བའི་གསོས་སྨན།

ན་བའི་སྡུག་བསྔལ *पा.* व्याधिदुःखम्, दुःखताभेदः – སྡུག་བསྔལ་བརྒྱད अष्टौ दुःखताः। སྐྱེ་བའི་སྡུག་བསྔལ जातिदुःखम्...ན་བའི་སྡུག་བསྔལ व्याधिदुःखम् म.व्यु.2235(44क).

ན་བའི་གསོས་སྨན ग्लानप्रत्ययभेषज्यम् – གོས་དང་ཟས་དང་མལ་ཆ་དང་སྟན་དང་ན་བའི་གསོས་སྨན་དང་ཡོ་བྱད་རྣམས་ཚོལ་བར་བྱེད་དོ།། चीवरपिण्डपातशयनासनग्लानप्रत्ययभैषज्यपरिष्कारान्...पर्येषते बो.भू.79ख/102; ཆོས་དང་མཐུན་པར་གོས་དང་ཟས་དང་མལ་ཆ་དང་སྟན་དང་ན་བའི་གསོས་སྨན་གྱིས་བསྙེན་བཀུར་བྱེད་པ धर्म्यचीवरपिण्डपातशयनासनग्लानप्रत्ययभैषज्यपरिचर्या बो.भू.45क/59; ग्लानभैषज्यम् – བདག་ན་བའི་གསོས་སྨན་གྱིས་ཕོངས་སོ།། विघातो मे ग्लानभैषज्येन शि.स.148क/143; द्र. ནད་ཀྱི་གསོས་སྨན། ན་བའི་རྐྱེན་སྨན།

ན་བར་གྱུར = ན་བར་གྱུར་པ།

ན་བར་གྱུར་པ *वि.* ग्लान्यं पतितः – དེ་ནས་རེ་ཞིག་ན་ཁྱིམ་བདག་དེའི་ཆུང་མ་དེ་ན་བར་གྱུར་ནས यावदसौ गृहपतिपत्नी ग्लान्यं पतिता अ.श.254ख/234.

ན་བུན 1. = སྨུག་པ नीहारः, घनीभूतशिशिरम् – སྟོན་ཀའི་སྤྲིན་ནམ་ན་བུན་གྱི་ཚོགས་རླུང་གིས་བསྐྱོད་པ་བཞིན་དུ नीहारपुञ्जमिव शरद्बलाहकमिव पवनबलावर्जितम् जा.मा.180ख/209; महिका मि.को.146ख 2. पटलम् – སྤོས་དང་བདུག་སྤོས་ཐམས་ཅད་ཀྱི་ན་བུན་གྱི་གཟུགས་ཀྱི་སྤྲིན་གྱིས་ཆོས་ཀྱི་དབྱིངས་ཐམས་ཅད་རྒྱས་པར་འགེངས་པའི་ཁ་དོག सर्वगन्धधूपपटलविग्रहमेघसर्वधर्मधातुस्फरणवर्णा ग.व्यू.187क/270.

ན་བུན་སྨུག་པ महिका (ན་བུན་རྨུགས་པ इति पाठः) म.व्यु.7158; द्र. ན་བུན།

ན་མཿ नमः – ཞི་བ་ལ་སྔགས་འདི་ན་མཿའི་མཐའ་ཅན་ནོ།། शान्तिकेऽसौ मन्त्रो नमोऽन्तः वि.प्र.142क/3.80.

ན་མོ नमो – ན་མོ་བུད་དྷཱ་ཡའི་འགྲེལ་པ [नमो बुद्धाय-टीका] क.त.2300; = ན་མཿ།

ན་སྨད = ན་སྨད་པ།

ན་སྨད་པ अपहासः – མེད་པ་ཉིད་ལ་ཡོད་པའི་བློ་ཅན་ལ་ནི་ན་སྨད་དོ།། सम्मतावसत्त्वेऽपह्ना[ह्ना]सः वि.सू.27क/34; ह्रासः – དེའི་དོན་ཉིད་ལ་ཉེས་པ་དང་ན་སྨད་པ་མ་ཡིན་ནོ།། नैतदर्थतायाम[यां]दोषो ह्ना[ह्रा]सो वा वि.सू.31ख/40; द्र. ན་སྨད་པ་ཉིད།

ན་སྨད་པ་ཉིད न्यूनत्वम् – རྣང་རྙེང་ལ་ནི་ན་སྨད་པ་ཉིད་དོ།། न्यूनत्वं विलीने वि.सू,28क/35; སྣད་གདགས་སུ་མི་རུང་བ་ལ་ནི་ན་སྨད་པ་ཉིད་དོ།། न्यूनत्वमयाचिके (?) वि.सू.26ख/33; རྒྱུ་དང་ཐུན་ལ་ནི་ན་སྨད་པ་ཉིད་དོ།། न्यूनत्वमोतोस्तानस्य (?) च वि.सू.24ख/30.

ན་ཚ་ कारणा – རིགས་ཀྱི་བུ་འདི་ཅིའི་ཕྱིར་བདག་ཉིད་ལ་བདག་ཉིད་འདི་ལྟ་བུའི་ན་ཚ་བྱེད་པ किं नु खल्वयं कुलपुत्र आत्मनैवात्मानम् ईदृशीं कारणां कारयति अ.सा.436क/246; व्याधिः – स्त्री रुग् रुजा चोपतापरोगव्याधिगदामयाः अ.को.2.6.51.

ན་ཚ་ཚབས་ཆེ་བ = ན་ཚབས་ཆེ་བ།

ན་ཚབས་ཆེ་བ = ན་ཚ་ཚབས་ཆེ་བ *वि.* बाढग्लानः – དེས་དུས་གཞན་གྱི་ཚེ་ན་ནི། བདག་ཉིད་དམ་གཞན་དག་ན་བ་དང་སྡུག་བསྔལ་བ་དང་ན་ཚབས་ཆེ་བ་དང...མཐོང་ངོ༎ सोऽपरेण समयेन पश्यत्यात्मानम्वा परम्वा आबाधिकम्, दुःखितम्, बाढग्लानम् श्रा.भू.182ख/481.

ན་ཚོད वयः – བདག་ཅག་མཆུ་དང་ཞེང་ཡང་མཉམ། །ན་ཚོད་ལ་ཡང་རྒན་གཞོན་མེད༎ तुल्यारोहपरीणाहौ समानौ वयसा च नौ। जा.मा.123क/141; ན་མཉམ वयस्यः अ.को.2.8.12.

ན་ཚོད་རྗེས་སུ་ཐོབ་པ वयोऽनुप्राप्तः लो.को.1332.

ན་ཚོད་མཉམ་པ = ན་མཉམ།

ན་ཚོད་གནས वयस्था 1. = ཨ་རུ་རའི་ཤིང हरीतकीवृक्षः मि.को.53क 2. = སྐྱུ་རུ་རའི་ཤིང आमलकीवृक्षः मि.को. 53ख।

ན་ཚོད་བཟང་པོ सुवयाः लो.को.1332.

ན་ཚོད་ཡོལ་བ जरा – विस्रसा जरा अ.को.2.6.41; जरयति दन्तादिकमिति जरा। जॄष् वयोहानौ। जीर्यन्तेऽनयाऽङ्गादीनीति वा अ.वि.2.6.41.

ན་ཟ = ན་བཟའ།

ན་ཟླ *वि.* सहजातकः – དེའི་གྲོགས་པོ་ན་ཟླ་རྣམས་མཉན་དུ་ཡོད་པའི་གྲོང་ཁྱེར་སློམ་ཅན་དུ་ཧོང་ངོང་བ तस्य वयस्यकाः सहजातकाः श्रावस्त्याः सौपारकनगरमनुप्राप्ताः अ.श.269ख/247.

ན་བཟའ *आद.*> གོས वस्त्रम् – ཤེས་རབ་ཀྱི་ཕ་རོལ་ཏུ་ཕྱིན་པ་དེ་ལ་མེ་ཏོག་དང...ན་བཟའ་དང...མཆོད་པ་རྣམ་པ་མང་པོ་དག་གིས་མཆོད་པར་བྱེད་དེ तां चैनां प्रज्ञापारमितां..पुष्पैः...वस्त्रैः...बहुविधाभिश्च पूजाभिः पूजयेत् अ.सा.63क/35; वसनम् – མལ་ཆ་དང་སྟན་དང་གནས་དང་ན་བཟའ་དང་རྒྱན་དང་བྱུག་པ་ལ་སོགས་པ <?> शयनासनवसनभोजनाभरणविलेपनप्रभृति बो.प.70ख/39; अम्बरम् – ཕྲེང་བ་ན་བཟའ་རྒྱན་དང་ཙན་དན་ཕྱེ་མ་ཆར་ཕབ་པས༎ माल्याम्बराभरणचन्दनचूर्णवर्षैः जा.मा.6ख/6; चेलम् – ལྷའི་མེ་ཏོག་ཕྲེང་དང་རོལ་མོའི་སྒྲ་དང་བདུག་པ་དང་ན་བཟའ་འཕྱུལ་བ་དང་གདུགས་དང་རྒྱལ་མཚན་དང་བ་དན་ལ་སོགས་པ་དམ་པ་རབ་མཆོག་དག་གིས་མཆོད་པའི་ལས་བྱེད་པ दिव्यैर्माल्यैर्वाद्यैर्धूपैश्चेलविक्षेपैश्छत्रध्वजपताकादिभिर्वरप्रवराभिः पूजाकर्म बो.भू.40ख/52; वासः लो.को. 1332; चीवरम् – ན་བཟའ་དང་བསོད་སྙོམས་དང་མལ་སྟན་དང་ན་བའི་རྐྱེན་གྱི་སྨན་དང་ཡོ་བྱད་རྣམས་ཀྱིས་བསྙེན་བཀུར་བྱས་ནས चीवरपिण्डपातशयनासनग्लानप्रत्ययभैषज्यपरिष्कारैरुपस्थिता भवन्ति का.व्यू. 209क/267; वल्कलः – ལོ་འདབ་གསར་པ་ལྟར་དམར་ན་བཟས་མཚན༎ बालप्रवालारुणवल्कलाङ्कम् अ.क. 77ख/7.71.

ན་བཟའ་ཆོས་གོས चीवरम् – ན་བཟའ་ཆོས་གོས་དང་བསོད་སྙོམས་དང་གཟིམས་ཆ་དང་སྙུན་དཔྱད་ཀྱི་རྐྱེན་སྨན་གྱི་ཡོ་བྱད་རྣམས་འབུལ अधिवासयतु...चीवरपिण्डपातशयनासनग्लानप्रत्ययभैषज्यपरिष्कारैः वि.व. 134ख/1.23.

ན་བཟའ་འབུལ་བ चेलविक्षेपः – ལྷའི་མེ་ཏོག་ཕྲེང་དང་རོལ་མོའི་སྒྲ་དང་བདུག་པ་དང་ན་བཟའ་འབུལ་བ་དང་གདུགས་དང་རྒྱལ་མཚན་དང་བ་དན་ལ་སོགས་པ་དམ་པ་རབ་མཆོག་དག་གིས་མཆོད་པའི་ལས་བྱེད་པ दिव्यैर्माल्यैर्वाद्यैर्धूपैश्चेलविक्षेपैश्छत्रध्वजपताकादिभिर्वरप्रवराभिः पूजाकर्म बो.भू.40ख/52.

ན་བཟའ་དམར་པོ་གྱོན་པ *वि.* रक्ताम्बरभूषितः – སེམས་ཅན་དེ་ནི་དྲན་བྱས་ལ། །ན་བཟའ་དམར་པོ་གྱོན་པ་ཡི། स्मृत्वा तस्य सत्त्वस्य रक्ताम्बरभूषितः। स.दु.125ख/224.

ན་བཟའ་སེར་པོ་གྱོན་པ *वि.* पीताम्बरधरः – ན་བཟའ་སེར་པོ་གྱོན་བྱས་ནས། །མཐོ་རིས་གནས་པ་རྗེས་དྲན་ཞིང་། पीताम्बरधरो भूत्वाऽनुस्मृत्य सुगतिसंस्थितम्। स.दु.125क/224.

ན་བཟའི་ཁང་པ वस्त्रगृहम् – འདི་ནི་ཟྫོད་ཀྱི་ཟས་ཀྱི་ཁང་པ། [སྐོམ་གྱི་ཁང་པ།] ན་བཟའི་ཁང་པ། इमानि तेऽन्नगृहाणि पानगृहाणि वस्त्रगृहाणि का.व्यू.219ख/281.

ན་རཿ = མི नरः, मनुष्यः छो.को.458/रा.को.2.829.

ན་ར་ཀ = དམྱལ་བ नरकः छो.को.458/रा.को.2.829.

ན་རི་ཀེ་ལ = ནཱ་རི་ཀེ་ལ།

ན་རེ परमतद्योतकशब्दः – དེ་ན་རེ་ཆོས་དུས་རྣམས་སུ་འཇུག་པ་ན...ཞེས་ཟེར་རོ་ཞེས་གྲག་གོ། स किलाह–धर्मोऽध्वसु प्रवर्त्तमानः...इति अभि.भा.239ख/806; སློབ་དཔོན་འདུས་བཟང་ན་རེ་མཆོག་ཏུ་ཞེས་བྱ་བའི་སྒྲ་སྦྱར་བས་ཀྱང་ཁྱད་པར་གྱི་དོན་འདིར་འགྱུར་རོ་ཞེས་ཟེར་རོ། परशब्दप्रयोगेण चायमतिशयार्थो लभ्यत इत्याचार्यसङ्घभद्रः अभि.स्फु.95ख/773; ཉེ་དུ་རྣམས་ན་རེ་ཁྱེའུ་འདི་སྟོབས་ཀྱི་ཤུགས་དང་ལྡན་པས་ན། དེའི་ཕྱིར་ཁྱེའུ་འདིའི་མིང་སྟོབས་ལྡན་ཞེས་གདགས་སོ་ཞེས་ཟེར་རོ། ज्ञातय ऊचुः – यस्मादयं दारको बलवान्, प्राप्तं स्यादस्य बलवानिति नाम अ.श.174ख/161; གཞན་དག་ན་རེ་གཟུགས་སུ་རུང་བ་ནི་ཐོགས་པའོ་ཞེས་ཟེར་རོ། प्रतिघातो रूपेणेत्यपरे अभि.भा.32ख/44; གཞན་དག་ན་རེ་བདུན་ལས་དོན་གཞན་དུ་གྱུར་པ་རྒྱུར་བྱས་པའི་གཟུགས་ཡིན་ནོ་ཞེས་ཟེར་རོ། उपादायरूपं सप्तभ्योऽर्थान्तरमित्यपरे अभि.भा.56ख/1090; གཞན་དག་ན་རེ། གྲོངས་ཤིག་ཅེས་ཟེར་ན अपराः कथयन्ति मुञ्चतु वि.व.378ख/2.173; ཁ་ཅིག་ན་རེ་བདེ་བ་སྦྱོང་[ཉུང་]བའི་ཕྱིར་ཏེ། མོན་སྲན་སྡེའུ་ལ་སོགས་པ་ཡོད་བཞིན་དུ་མོན་སྲན་གྲེའུའི་ཕུང་པོ་ཞེས་སྟོན་པ་བཞིན་ཏེ सुखस्याल्पत्वात्, मुद्गादिभावेऽपि माषराश्यपदेशवदित्येके अभि.भा.3ख/878; དེ་དག་ན་རེ་འདི་ནི་ལྟོ་ན་ཁྱེའུ་འདུག་པ་དེའི་མཐུ་ཡིན་ནོ་ཞེས་ཟེར་རོ། ते कथयन्ति–योऽयमुदरस्थो दारकः तस्यायं प्रभाव इति अ.श.134क/124; द्र. དེ་ལྟར་ན་རེ་ཞིག་འབྲས་བུ་དོན་དུ་གཉེར་བ་རྣམས་ཀྱི་ཐ་སྙད་ཀྱི་རྒྱུ་ཉིད་ཀྱིས་ཚད་མར་བཤད་པ་ཡིན་ནོ། एवं तावत् फलार्थितां[नां] व्यावहारिकत्वेन प्रमाणत्वं प्रतिपादितम् प्र.अ.19ख/22; གལ་ཏེ་བདག་གིས་འདོམས་ཡོག་འགའ་ཞིག་རྙེད་ན་རེ་སྐྱེས་སྣུམ་མོ། सचेदहं कौपीनप्रच्छादनं लभेयम्, शोभनं स्यात् ल.वि.131क/194.

ན་རོ་པ *ना.* नरोपः, सिद्धाचार्यः मि.को.6ख; द्र. ནཱ་རོ་པ།

ན་ལ *ना.* नलः, नृपः – ན་ལའི་རྒྱལ་དང་དུས་འདབ་རྒྱལ། །རྟ་མཆོག་ཚོ་ལོའི་དོར་སེམས་སྟོན། नलर्तुपर्णयोश्चासावश्वाक्षहृदयज्ञयोः। त.स.115ख/1001.

ན་ལ་ད •*सं.* नलदम्, जटामांसी–ཤུ་དག...།སྤྱི་མོ་སུག

སྨེལ་ན་ལ་ད།...།འདི་དག་ཆ་ནི་མཉམ་བགྱིས་ནས།། वचा ... नलदं चव्यं सूक्ष्मेला... एतानि समभागानि सु.प्र. 29क/56; • ना. नालदः, ग्रामः – ལྷ་གྲོང་ན་ལ་ད་ན་བྲམ་ཟེ་གནས་ལེན་གྱི་བུ་ཞེས་བགྱི་བ ...མཆིས देवास्ति नालदग्रामे माठरो नाम ब्राह्मणः वि.व.8ख/2.80.

ན་ལན་ད ना. नालन्दा, प्रदेशः – ཡུལ་ན་ལན་དར་སངས་རྒྱས་ཀྱིས་གསུངས་པའི་མདོ་ཡང་དག་པར་ལྡན་པའི་ལུང་ལས नालन्दायां बुद्धभाषितं च सूत्रम्, संयुक्तागमे च अभि.स्फु.117क/812.

ན་ལའི་རྒྱལ ना. नलः, नृपः–ན་ལའི་རྒྱལ་དང་དུས་འདབ་རྒྱལ། །རྟ་མཆོག་ཚོ་ལོའི་དོར་ཤེས་སྔོན།། नलर्तुपर्णयोश्चासावश्वाक्षहृदयज्ञयोः । त.स.115ख/1001.

ན་ལའི་ཉ नड(नल)मीनः, मत्स्यविशेषः – नड[नल]मीनश्चिलिचिमः अ.को.1.12.19; नडा(नला)ख्ये तृणे मीनः नड(नल)मीनः अ.वि.1.12.19.

ན་ལི་ཀེ་རི नालीकेरी – ཤིང་གི་རིགས་ན་ལི་ཀེ་རི་ཞེས་བྱ་བ་རྒྱ་མཚོ་གཏོད་པ་དང་བྲལ་བ་ནས་སྐྱེ་བ་ཡོད་དེ अस्ति नालीकेरी नाम वृक्षजातिः उद्यतके समुद्रे सम्भूता ग.व्यू.317क/401.

ན་ལེ་ཤམ = ཕོ་བ་རིས मरिचम्–ན་ལེ་ཤམ་ལ་སྟོང་རྩ་བརྒྱད་མངོན་པར་བསྔགས་པ་བྱས་ཏེ་ཁར་བཅུག་ན་ཁྲོས་པ་ཡང་ཚིག་གིས་དགའ་བར་འགྱུར་རོ།། मरिचमष्टसहस्राभिमन्त्रितं कृत्वा मुखे प्रक्षिप्य क्रुद्धोऽपि वचनेन प्रियो भवति म.मू.223ख/243; मरीचम् – ཨ་རུ་ར་དང་སྐྱུ་རུ་ར་དང་བ་རུ་ར་དང་ན་ལེ་ཤམ་དང་པི་པི་ལིང་དག་གོ།། हरीतक्यामलकं विभीतकं मरीचं पिप्पली वि.सू.76क/93; ऊषणम् यो.श.33; वरिष्ठम् श्री.को.179ख।

ན་ལེ་ཤམ་དཀར་པོ शिग्रुः, वृक्षविशेषः मि.को.56क।

ན་ལེ་ཤམ་གྱི་བཏུང་བ मरिचपानकम् – བར་གྱི་ཚིག་མི་མངོན་པར་བྱས་པའི་ཕྱིར་ཏེ...ན་ལེ་ཤམ་གྱི་བཏུང་བ་ཞེས་བྱ་བ་བཞིན་ནོ།། मध्यपदलोपाद्... मरिचपानकवत् अभि.भा.109ख/385; ན་ལེ་ཤམ་དང་ལྡན་པའི་བཏུང་བ་ལ་བར་གྱི་ཚིག་མི་མངོན་པར་བྱས་པའི་ཕྱིར་ན་ལེ་ཤམ་གྱི་བཏུང་བ་ཞེས་བྱ་བ यथा मरिचैः प्रतिसंयुक्तं पानकं मरिचपानकम्, मध्यपदलोपात् अभि.स्फु.245ख/385.

ན་ལེན་ད = ན་ལན་ད།

ན་ཤམ = ན་ལེ་ཤམ།

ན་ཧུ་ཥ ना. नहुषः, नृपः – རྒྱལ་པོ་ན་ཧུ་ཥ་ལ་སོགས། །དང་པོའི་དུས་སུ་བསྟན་པ་དག།། आद्ये तु युगे कथिता नहुषाद्या पार्थिवादयः ॥ म.मू.303क/472.

ནག = ནག་པོ वि. कृष्णः – སྦྲུལ་ནག་ཁྲོས་ནས་གདེངས་ཀ་བརྗེག་འདྲ་བའི།། क्रोधोच्छिरस्कानिव कृष्णसर्पान् जा.मा.107ख/24; མིག། །ནག་དཀར་རྗེས་སུ་དམར་བ་ཡང་།། कृष्णार्जुनानुरक्तापि दृष्टिः का.आ.333ख/2.336; कालः – དུས་མིན་སྤྲིན་ནག་གིས་གཟིར་བའི། །ནག་པོའི་ཕྱོགས་ཀྱི་ཟླ་བ་བཞིན།། अकालकालमेघार्तः कृष्णपक्ष इवोडुपः ॥ अ.क.337क/44.6; नीलः – སྦྲུལ་ནག་མགོ་མངས་བཞིན་དུ་མདོག་སྔོ་བའི།། नीला भुजङ्गा इव नैकशीर्षाः जा.मा.81क/93.

ནག་འགྲན 1. कालमेषी i. = བཙོད मञ्जिष्ठा मि.को.58क ii. = སོ་མ་རཱ་ཛ सोमराजी मि.को.55ख 2. = ཏྲི་བྲིད་ནག་པོ कालमेषिका, कृष्णत्रिवृता मि.को.59ख।

ནག་ཐིག་ཅན = སྙི་བ तिलकालकः – तिलकस्तिलकालकः अ.को.2.6.49; तिल इव कालवर्णत्वात् तिलकालकः अ.वि.2.6.49.

ནག་ནོག कलङ्कः – ཉོན་མོངས་པ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་དྲི་མའི་ནག་ནོག་དང་བྲལ་ཞིང་ सर्वक्लेशमलकलङ्कापगमक्रमात् ज्ञा.सि.54[ख]/140.

ནག་པ • सं. 1. चित्रा, नक्षत्रविशेषः – བྲམ་ཟེ་མདུན་ན་འདོན་འཆར་པོ་ཞེས་བྱ་བ...སྐར་མ་མེ་བཞི་འདས་ནས་ནག་པ་ལ་བབ་པའི་ཚེ་རྒྱལ་པོ་ཟས་གཙང་མའི་དྲུང་དུ་ཕྱིན་ནས उदयनो नाम ब्राह्मणो राज्ञः पुरोहितः...हस्तोत्तरे चित्रानक्षत्रे राजानं शुद्धोदनमुपसंक्रम्य ल.वि.64[ख]/85 2. चैत्रः, मासभेदः – དེ་ལྟར་འདབ་མ་ཉི་ཤུ་རྩ་བརྒྱད་པོ་རྣམས་ལ་ནག་པ་ལ་སོགས་པའི་ཟླ་བའི་ཚེས་རྣམས་ཏེ एवमष्टाविंशतिदलेषु चैत्रादिमासतिथयः वि.प्र.42[ख]/4.36; • ना. 1. चित्रः, गजसैन्यपः – གྲོང་ཁྱེར་རྒྱལ་པོའི་ཁབ་ཏུ་སྔོན། །ནག་པ་ཞེས་པ་གླང་སྡེ་བདག། །གླང་ཆེན་སྟན་གྱི་བུ་རུ་གྱུར།། पुरे राजगृहे पुरा। चित्राख्यो हस्तिशय्यातिपुत्रोऽभूद् गजसैन्यपः॥ अ.क.214[क]/88.2 2. चैत्रः, कश्चित्पुरुषः – མཚོན་དང་སྨན་སོགས་འབྲེལ་བ་ལས། །ནག་པའི་རྨ་དག་འདྲུབས་ཡིན་ན།། शस्त्रौषधाभिसम्बन्धाच्चैत्रस्य व्रणरोहणे। प्र.वा.108[ख]/1.24; གང་དང་གང་རྣམ་པར་གཅོད་པར་བྱེད་པ་དེ་དང་དེ་ནི་གཞན་ཡིན་ཏེ། དཔེར་ན་བ་ལང་ནག་པ་བཞིན་ནོ།། यद्यस्य व्यवच्छेदकं तत्तस्मादन्यत्, तद्यथा गोपिण्डाच्चैत्रः वा.टी.72[ख]/28.

ནག་པ་ཟླ་བ = ནག་པའི་ཟླ་བ།

ནག་པའི་ཉ = ནག་པའི་ཟླ་བའི་ཉ།

ནག་པའི་ཟླ = ནག་པའི་ཟླ་བ།

ནག་པའི་ཟླ་བ चैत्रः, मासभेदः – དེ་ལྟར་ནག་པའི་ཟླ་བའི་ཚེས་རྣམས་བདེན་བྲལ་གྱི་པདྨའི་འདབ་མ་ལའོ།། एवं चैत्रतिथयो नैर्ऋत्यस्य कमलदले वि.प्र.42[ख]/4.36; ནག་པ་ཟླ་བའི་གནམ་སྟོང་ चैत्रामावासी वि.प्र.54[क]/4.84; द्र. ནག་པ།

ནག་པའི་ཟླ་བའི་ཉ चैत्रपूर्णिमा – ཟླ་བ་བཅུ་གཉིས་པ་ནག་པའི་ཉ་ལ་ཤྲཱི་དྷ་ནྱ་ཀ་ཊ་ཀར द्वादशमे मासे चैत्रपूर्णिमायां श्रीधान्यकटके वि.प्र.93[ख]/3.5; ནག་པའི་ཟླ་བའི་ཉ་འདི་ལ་རིག་བྱེད་ཀྱི་གཞུང་གི་ངེས་པ་སྐྱོང་བར་བྱེད་པ་ཉིད་རྣམས་ལ་བདག་གིས་བསྟན་པ་སྦྱིན་པར་བྱའོ།། इह चैत्रपूर्णिमायां मया युष्माकं वेदस्मृतिनियमपालकानां शासनं दातव्यम् वि.प्र.128[ख]/1, पृ.27.

ནག་པོ • वि. कृष्णः – སྐྲ་ནག་པོ कृष्णकेशः स.पु.116[ख]/186; ཏིལ་ནག་པོ कृष्णतिलाः वि.प्र.149[ख]/3.96; ནག་པོའི་ལས कृष्णकर्म अ.क.175[ख]/19.139; कालः – དེ་ནས་ནམ་ཞིག་མལ་སྟན་མཐར། ...སྦྲུལ་ནི་ནག་པོ་མཐོང་བར་གྱུར།། कदाचिदथ शय्यान्ते कालव्यालं व्यलोकयत्। अ.क.86[क]/63.39; ཨ་ག་རུ་ནི་ནག་པོ་སྟེ།། कालागुरुश्यामः का.आ.340[ख]/3.166; ཆར་སྤྲིན་ནག་པོ་རླུང་གིས་གཏོར་བ་བཞིན།། वाताभिनुन्ना इव कालमेघाः जा.मा.68[क]/79; श्यामलः – ནག་པོའི་མཚན་མའི་རི་མོ श्यामललक्ष्मलेखा अ.क.64[क]/59.127; मलिनः – གང་ཞིག་ཟླ་བ་མཛེས་པའི་ལུས་ལ་སྐྱོན་གྱི་ཐིག་ལེ་ནག་པོ་དང་།། कान्तः काये वहति मलिनं दोषबिन्दुं यदिन्दुः अ.क.4[ख]/50.34; • सं. 1. कृष्णः i. कृष्णवर्णः – ཉི་མ་ཁ་དོག་ནག་པོར་མཐོང་བ་དང་ आदित्यः कृष्णवर्णो दृश्यते वि.प्र.266[ख]/2.80 ii. कृष्णपक्षः – དཀར་པོ་དང་ནག་པོའི་ཕྱོགས་དག་ལ कृष्णशुक्लपक्षयोः अभि.स्फु.151[क]/873 2. = ནག་པོ་ཉིད कार्ष्ण्यम् – ཡོན་ཏན་ནག་པོ་དང་། །སེར་པོ་དག गुणौ। कार्ष्ण्यं पिशंगता चोभौ का.आ.328[क]/2.181; དེ་ཉིད་ནག་པོའི་དངོས་པོ་ལ་ནི... སྨུ་དག་བྱེད स एव...

कार्ष्ण्ये भावे मायां कारयेत् वि.प्र.224ख/2.8; श्यामता – མེས་ནི་ཤིང་ལ་ནག་པོ་ཙམ་བྱས་པ་ཡང་ལྡོག་པ་མ་ཡིན་ལ श्यामतामात्रमपि काष्ठेऽग्निकृतमसंहार्यम् प्र.अ.66ख/75 **3.** काला **i.** = ཟི་ར་ནག་པོ कृष्णजीरकः – सुषवी कारवी पृथ्वी पृथुः कालोपकुञ्चिका। अ.को.2.9.37; कालवर्णत्वात् काला अ.वि.2.9.37 **ii.** = དུར་བྱིད་ནག་པོ श्यामा – श्यामापालिन्द्यौ तु सुषेणिका॥ काला मसूरविदलार्धचन्द्रा कालमेषिका। अ.को.2.4.108 **4.** = པོ་བ་རིས कृष्णम्, मरिचम् – वेल्लजम्॥ मरीचं कोलकं कृष्णमूषणं धर्मपत्तनम्। अ.को.2.9.36; कृष्णवर्णफलत्वात् कृष्णम् अ.वि. 2.9.36 **5.** = སྐྱེ་ཚེ कृष्णिका, राजिका – क्षवः क्षुताभिजननो राजिका कृष्णिकासुरी॥ अ.को.2.9.19; कृष्णवर्णयोगात् कृष्णिका अ.वि.2.9.19 **6.** = པི་པི་ལིང कृष्णा, पिप्पली – कृष्णोपकुल्या वैदेही मागधी चपला कणा॥ ऊषणा पिप्पली शौण्डी कोला अ.को.2.4.96; कृष्णवर्णत्वात् कृष्णा अ.वि.2.4.96; • *ना.* **1.** कालः **i.** महाश्रावकः – ཉན་ཐོས་ཆེན་པོ་ལྔ་བརྒྱ་པོ…ག་ཡཱ་འོད་སྲུང་དང…ནག་པོ་དང་འཆར་ཀ་ནག་པོ་དང…ལེགས་འོངས་ལ་སོགས་པ पञ्च महाश्रावकशतानि…गयाकाश्यपः…कालः कालोदायी…स्वागतः। इत्येवंप्रमुखानि स.पु.78क/132 **ii.** नागराजः – ཀླུའི་རྒྱལ་པོ་ནག་པོ कालो नागराजा म.व्यु.3251 (56क) **iii.** पर्वतराजः – རིའི་རྒྱལ་པོ་ཁོར་ཡུག་དང་ཁོར་ཡུག་ཆེན་པོ་དང …རིའི་རྒྱལ་པོ་ནག་པོ་དང་ནག་པོ་ཆེན་པོ་དང चक्रवालमहाचक्रवालौ पर्वतराजानौ…कालमहाकालौ पर्वतराजानौ का.व्यू.243क/304 **2.** असितः, महर्षिः – དེའི་ཚེ་རིའི་རྒྱལ་པོ་གངས་རིའི་ངོས་ལ་དྲང་སྲོང་ཆེན་པོ་ནག་པོ་ཞེས་བྱ་བ་མངོན་པར་ཤེས་པ་ལྔ་དང་ལྡན་པ་ཞིག་སྲུག་གི་ཚ་བོ་མིས་བྱིན་ཞེས་བྱ་བ་དང་ལྷན་ཅིག་ཏུ་འདུག་འདུག་པ་ལས तेन च समयेन हिमवतः पर्वतराजस्य पार्श्वे असितो नाम महर्षिः प्रतिवसति स्म पञ्चाभिज्ञः सार्धं नरदत्तेन भागिनेयेन ल.वि.54ख/72 **3.** कालिकः, नागराजः – དེ་ཡི་ཚེ་ཀླུའི་རྒྱལ་པོ་ནག་པོ་རང་གི་འཁོར་གྱི་མདུན་དུ་འདུག་སྟེ་ཚིགས་སུ་བཅད་པ་འདི་དག་སྨྲས་སོ॥ कालिको नागराजस्तस्यां वेलायां स्वस्य परिवारस्य पुरतः स्थित्वेमा गाथा अभाषत ल.वि.139क/204 **4.** कालकः, नागः म.व्यु.3327(57ख) **5.** कृष्णः **i.** भगवदवतारविशेषः – ནག་པོའི་གནས་སྐབས कृष्णावस्था वि.प्र.224क/2.6 **ii.** मुनीन्द्रः – སྐབས་དེར་ཐུབ་དབང་ནག་པོ་དང་། །གོ་ཏ་མ་རྗེས་འབྲང་བཅས།… །སྟོན་པའི་བསྟན་ལ་འོངས་པར་གྱུར॥ अत्रान्तरे सानुचरौ मुनीन्द्रौ कृष्णगौतमौ।…शास्तुः शासनमापतुः॥ अ.क.286क/36.74 **iii.** ऋषिः – གང་ཡང་དྲང་སྲོང་དང་དྲང་སྲོང་ཆེན་པོ་དེ་དག་ལ་འདི་ལྟ་སྟེ། རྒྱུན་ཤེས་ཀྱི་བུ་དང…ནག་པོ་དང་གཽ་ཏ་མ་ནག་པོ་དང…ཉི་མའི་རིགས་ཏེ येऽपि ते ऋषयो महाऋषयः, तद्यथा–आत्रेय…कृष्णकृष्णगौतम… मार्कण्डश्चेति म.मू.103ख/12 **iv.** = ཁྱབ་འཇུག विष्णुः – विष्णुर्नारायणः कृष्णो वैकुण्ठो विष्टरश्रवाः। अ.को.1.1.18; करोतीति कृष्णः। डुकृञ् करणे अ.वि.1.1.18 **v.** रोमविवरः – ནག་པོ་ཞེས་བྱ་བའི་བ་སྤུའི་ཁུང་བུ་དེ་ན་དྲང་སྲོང་བྱེ་བ་ཁྲག་ཁྲིག་བརྒྱ་སྟོང་ཕྲག་དུ་མ་ཡོད་དེ कृष्णो नाम रोमविवरः। तत्रानेकानि ऋषिकोटिनियुतशतसहस्राणि प्रतिवसन्ति का.व्यू.225ख/288.

ནག་པོ་ཆེ *वि.* महाकृष्णः – ཧཱུྃ་གི་དེ་ཉིད…རྡོ་རྗེ་སྐྱེ་བ་ནག་པོ་ཆེ॥ हूँतत्त्वं…वज्रजन्ममहाकृष्णम् हे.त.5क/12; कृष्णः – རྣལ་འབྱོར་པ་གང་ནག་པོ་ཆེ། །དེ་ཡི་ལྷ་ནི་མི་བསྐྱོད་པ॥ यो हि योगी भवेत्कृष्णो अक्षोभ्यस्तस्य

देवता। हे.त.29क/98; द्र. ནག་པོ་ཆེན་པོ།

ནག་པོ་ཆེན་པོ ना. महाकालः 1. मण्डलनायको देवः – དཔལ་ནག་པོ་ཆེན་པོའི་རྒྱུད་ श्रीमहाकालतन्त्रम् क.त. 667; ནག་པོ་ཆེན་པོ་ཞེས་བྱ་བའི་རྒྱུད་ཀྱི་རྒྱལ་པོ་ महाकालतन्त्रराजनाम क.त.440 2. लौकिकदेवता म.व्यु.3162 (55ख) 3. पर्वतः – རིའི་རྒྱལ་པོ་ཁོར་ཡུག་དང་ཁོར་ཡུག་ཆེན་པོ་དང་...རིའི་རྒྱལ་པོ་ནག་པོ་དང་ནག་པོ་ཆེན་པོ་དང་ चक्रवालमहाचक्रवालौ पर्वतराजानौ ...कालमहाकालौ पर्वतराजानौ का.व्यू.243क/304 4. प्रमथगणविशेषः मि.को.168क 0. महाकालः – གནོད་སྦྱིན་དང་སྲིན་པོ་དང་[གྲུལ་བུམ་དང་]། ནག་པོ་ཆེན་པོ་བུད་མེད་མང་པོ་དང་བཅས་པ་ཡང་བྲོས་སོ།། निष्पलायन्ते यक्षराक्षसकुम्भाण्डा महाकालमातृगणसहिताः का.व्यू.234ख/297; ད་ཅི་ནག་པོ་ཆེན་པོ་འདི་མཁའ་འགྲོ་མ་རྣམས་ཀྱིས་ཟ་བའམ तत्किं महाकाल एव डाकिनीभिर्भक्ष्यते प्र.अ.210ख/568.

ནག་པོ་ཆེན་པོའི་རྒྱུད་ ना. महाकालतन्त्रम्, ग्रन्थः – དཔལ་ནག་པོ་ཆེན་པོའི་རྒྱུད་ श्रीमहाकालतन्त्रम् क.त. 667.

ནག་པོ་ཆེན་པོའི་སྒྲུབ་ཐབས་ ना. महाकालसाधनम्, ग्रन्थः क.त.1772; क.त.3644.

ནག་པོ་ཆེན་པོའི་མངོན་པར་རྟོགས་པ་ ना. महाकालाभिसमयः, ग्रन्थः क.त.1756.

ནག་པོ་ཆེན་མོ་ ना. महाकाली, देवी – དཔལ་ལྷ་མོ་ནག་པོ་ཆེན་མོ་ལ་བསྟོད་པ་བརྒྱད་པ་ཞེས་བྱ་བ་ श्रीमहाकालीदेवीस्तोत्राष्टकनाम क.त.1777.

ནག་པོ་འཆར་ཀ་ ना. कालोदायी, महास्थविरः – བྲན་པོ་ཁྱིམ་བདག་མཛེས་པ་ཡིན།...།བརྒྱ་བྱིན་ནག་པོ་འཆར་ཀ་ཡིན།། चित्रो गृहपतिर्दासः... कालोदायी च शक्रोऽभूत् जा.मा.104क/120; द्र. ཉན་ཐོས་ཆེན་པོ་ལྔ་བརྒྱ་པོ ...ག་ཡ་འོད་སྲུང་དང...ནག་པོ་དང་འཆར་ཀ་ནག་པོ་དང...ལེགས་འོངས་ལ་སོགས་པ पञ्च महाश्रावकशतानि...गयाकाश्यपः...कालः कालोदायी...स्वागतः। इत्येवंप्रमुखानि स.पु.78क/132.

ནག་པོ་ཉིད་ श्यामता – དབྱར་བཞིན་ཉི་མའི་འོད་ཟེར་སྒྲིབ་ཅིང་ཉིན་པར་དག་ནི་ནག་པོ་ཉིད་དུ་བྱེད་པ་ཡི།། कुर्वाणाः प्रावृषीव स्थगितरविरुचः श्यामतां वासरस्य ना.ना.239ख/130.

ནག་པོ་བསྟན = ནག་པོ་བསྟན་པ།

ནག་པོ་བསྟན་པ कालापदेशः – བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་ནག་པོ་བསྟན་པ་དང་ཆེན་པོ་བསྟན་པ་ལ་མཁས་པ་ནི་དེ་ཁོ་ནའི་དོན་ལ་སུས་ཀྱང་རྣམ་པར་བསྐྱོད་པའམ་རྣམ་པར་བསྐུལ་བར་ཇི་ལྟར་ཡང་མི་ནུས་སོ།། कालापदेशमहापदेशकुशलो बोधिसत्त्वः तत्त्वार्थान्न विचलयितुं न विकम्पयितुं केनचित् कथंचिच्छक्यते बो.भू.59क/76; ཡང་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་ནི་ནག་པོ་བསྟན་པ་དང་ཆེན་པོ་བསྟན་པ་ཡང་ཡང་དག་པ་ཇི་ལྟ་བ་བཞིན་དུ་རབ་ཏུ་ཤེས་ཏེ पुनर्बोधिसत्त्वः कालापदेशञ्च [महापदेशञ्च] यथाभूतं प्रजानाति बो.भू.136क/175; कालोपदेशः – མདོ་སྡེ་དང་འདུལ་བ་དང་བསླབ་པ་ལ་མི་ལྟ་ཞིང་ནག་པོ་བསྟན་པ་དང་ཆེན་པོ་བསྟན་པ་སྤྲངས་ཏེ सूत्रविनयशिक्षा अनपेक्ष्य कालोपदेशमहाप्रदेशानपहाय शि.स.41ख/39.

ནག་པོ་དམ་ཚིག་རྡོ་རྗེ ना. कृष्णसमयवज्रः, आचार्यः ब.अ.261.

ནག་པོ་རྡོ་རྗེ་ཞབས ना. कृष्णवज्रपादः, सिद्धाचार्यः – དཔལ་ནག་པོ་རྡོ་རྗེ་ཞབས་ཀྱི་དོ་ཧ་མཛོད་ཀྱི་རྒྱ་ཆེར་འགྲེལ་པ श्रीकृष्णवज्रपाददोहकोषटीका क.त.2302.

ནག་པོ་པ *ना.* कृष्णपादः, आचार्यः ब.अ.754; कृष्णः ब.अ.803; द्र. ནག་པོ་ཞབས།

ནག་པོ་སྤྱོད་པ *ना.* कृष्णचारी, सिद्धाचार्यः (= कृष्णाचार्यः, कृष्णपादः, काह्नपादः) लो.को.1334; द्र. ནག་པོ་ཞབས།

ནག་པོ་སྤྱོད་པ་པ = ནག་པོ་སྤྱོད་པ།

ནག་པོ་འབར་མ = ནག་མོ་འབར་མ།

ནག་པོ་བརྩེགས = ནག་པོ་བརྩེགས་པ།

ནག་པོ་བརྩེགས་པ कालकूटः, °टम्, विषभेदः – གང་ན་བདུད་རྩི་ལས་ནི་རབ་དྲག་ནག་པོ་བརྩེགས་པ་རབ་གསལ་སྐྱེ། यत्रोदेति प्रकटममृतादुत्कटः कालकूटः अ.क.314क/40.79.

ནག་པོ་ཞབས = ནག་པོའི་ཞབས།

ནག་པོའི་བརྒྱད कृष्णाष्टमी – ནག་པོའི་བརྒྱད་ཀྱི་མཚན་མོའམ་ཡང་ན་མ་ནུའི་ཉིན་ཞག་ལ་ཞེས་པ कृष्णाष्टम्यां निशायाम्, अथ मनुदिवस इति वि.प्र.83क/4.170.

ནག་པོའི་ལྔ་པ कृष्णपञ्चमी – མི་དགེ་བའི་ལས་ལ་ནག་པོའི་ལྔ་པ་དང་བཅུ་པ་དང་གནམ་སྟོང་སྟེ། ཟླ་བ་ཉམས་པ་ལ་ས་སྦྱང་བར་བྱ་ཞིང अशुभकर्मणि कृष्णपञ्चम्यां दशम्याममावस्यायां नष्टचन्द्रे भूमिं शोधयेत् वि.प्र.107ख/3.29.

ནག་པོའི་ཐིག कालसूत्रम्, कृष्णरेखा – དུས་མ་ཡིན་པའི་འཆི་བས་ནོན་པའི་ལྕེ་འོག་ཏུ་ནག་པོའི་ཐིག་སྟེ་རི་མོ་རྣམས་ནག་པོར་རབ་ཏུ་འགྱུར་རོ། अरिष्टमरणाक्रान्तस्य जिह्वाधः कालसूत्रं कृष्णरेखा भवति वि.प्र.266ख/2.81.

ནག་པོའི་གནས་སྐབས *पा.* कृष्णावस्था, गर्भजानामवस्थाभेदः – ལོ་བཅུ་དྲུག་ནས་སྐྲ་དཀར་སྐྱེས་པའི་བར་ནི་རྒྱས་པ་གཞན་ནག་པོའི་གནས་སྐབས་སོ།...གནས་སྐབས་བཅུའི་ངེས་པའོ། अपरा विपुला षोडशवर्षात् पलितोत्पत्तिं यावत् कृष्णावस्था...इति दशावस्थानियमः वि.प्र.224क/2.6.

ནག་པོའི་ཕྱོགས • *सं.* = མར་ངོ कृष्णपक्षः, असितपक्षः – གང་བསྔགས་ནག་པོའི་ཕྱོགས་ལ་ཡང་། कृष्णपक्षेऽपि यद्वल्यः स.दु.127क/230; तामिस्रपक्षः – ནག་པོའི་ཕྱོགས་ཀྱི་མུན་ནག་འདྲ་བ तामिस्रपक्षरजनीव घनान्धकारा जा.मा.141क/163; • *वि.* कृष्णपक्षिकः – ནག་པོའི་ཕྱོགས་ཀྱི་ཀླུའི་རྒྱལ་པོ་བྲམ་ཟེའི་གཟུགས་སུ་འོང་ནས कृष्णपक्षिको नागराजो ब्राह्मणरूपेणागत्य ल.अ.126ख/73; द्र. ནག་པོའི་ཕྱོགས་པ།

ནག་པོའི་ཕྱོགས་པ *वि.* कृष्णपाक्षिकः – དེ་ལྟར་བདུད་ཀྱི་བུ་དཀར་པོའི་ཕྱོགས་པ་དང་ནག་པོའི་ཕྱོགས་པ་སྟོང་དུ་ཚང་བ་དེ་དག་ཐམས་ཅད་ཀྱིས་སོ་སོ་ནས་བདུད་སྡིག་ཅན་ལ་ཚིགས་སུ་བཅད་པ་དེ་སྨྲས་སོ། एवं ते सर्वे मारपुत्राः परिपूर्णं पुत्रसहस्रं शुक्लपाक्षिकाश्च कृष्णपाक्षिकाश्च मारं पापीयांसं पृथक्पृथग्गाथाभिरध्यभाषन्त ल.वि.154क/230.

ནག་པོའི་རྩ་ལག कृष्णबन्धुः – ནག་པོའི་རྩ་ལག་བྱམས་པའི་སྟོབས་ཀྱིས་འཇོམས། །བླ་མེད་བྱང་ཆུབ་ཞི་བར་འཚང་ཡང་རྒྱ། मैत्रीबलेन विनिहत्य हि कृष्णबन्धुं यावत् स्पृशिष्यति अनुत्तरबोधि सान्तम् ॥ ल.वि.79क/106; བདུད་དམ་ནག་པོའི་རྩ་ལག म.व्यु.7385(105क).

ནག་པོའི་ཚེས་གཅིག कृष्णप्रतिपद् – ནག་པོའི་ཚེས་གཅིག་ལ་སོགས་པ་ཚེས་ལྔའོ། कृष्णप्रतिपदाद्याः पञ्च तिथयः वि.प्र.123क/1, पृ.21; དེ་བཞིན་དུ་གཉིས་པའི་ཟླུམ་སྐོར་ལ་ནག་པོའི་ཚེས་གཅིག་ལ་སོགས་པ एवं द्वितीयपरिमण्डले कृष्णप्रतिपदादयः वि.प्र.54ख/4.85.

ནག་པོའི་ཞབས *ना.* कृष्णपादः, सिद्धाचार्यः मि.को.6ख; ब.अ.869; ब.अ.373; द्र. ནག་པོ་པ། ནག་པོ་སྤྱོད་པ།

ནག་པོའི་ལས कृष्णकर्मा – ཐིག་སྤྱོད་དང་ནི་ནག་པོའི་ལས།། शिश्विदानः कृष्णकर्मा ('शिश्विदानोऽकृष्णकर्मा' इत्यपि पाठः) अ.को.3.1.44.

ནག་ཕྱོགས = ནག་པོའི་ཕྱོགས།

ནག་མོ • *ना.* 1. काली i. पत्रदेवी – ཕག་མོའི་འདབ་མ་དང་པོ་ལ་སོགས་པ་ལ་ཀེང་རུས་མ་དང་...ནག་མོ་དང་...གཟུགས་ངན་མ་རྣམས་ནོར་འདབ་པདྨ་ལ་སྟེ་ཕག་མོ་འདབ་མའི་ལྷ་མོའོ་ཞེས་པ་ལྷོར་རོ།། वाराह्याः प्रथमपत्रादौ कङ्काली... काली... विरूपा इति कमलवसुदले शूकरी पत्रदेवी दक्षिणे वि.प्र.41ख/4.30; वि.प्र.132क/3.64 ii. देवी – དཔལ་ལྷ་མོ་ནག་མོ་སྒྲུབ་པའི་ཐབས་ཀྱི་ཆོ་ག श्रीदेवीकालीसाधनम् क.त.1766 2. कृष्णा i. पत्रदेवी – དེ་ནས་དྲག་མོའི་མདུན་གྱི་འདབ་མ་ལ་གཽ་རཱི་དང་གཾ་གཱ་དང་...ནག་མོ་སྟེ། དེ་བཞིན་གང་ན་དྲག་མོ་གཙོ་མོའི་པདྨ་ནོར་གྱི་འདབ་མ་ལའོ་ཞེས་པ་བྱང་དུའོ།། ततो रौद्रयाः पूर्वपत्रादौ गौरी, गङ्गा...कृष्णा। तथाष्टौ कमलवसुदले नायिका यत्र रौद्री। इत्युत्तरे वि.प्र.41ख/4.32; वि.प्र.132क/3.64 ii. = ནག་མོ་འབར་མ कृष्णदीप्ता – ནག་མོ་ཡི་ནི་དང་པོའི་ཕྱག་གི་མཐིལ་ན་སྤོས་ཀྱི་སྣོད་དང་...ག་པུར་གྱི་སྣོད་ནི་བཞི་པ་ན་སྟེ་གཡས་ཀྱི་ཕྱག་རྣམས་སོ།། कृष्णाया धूपपात्रं प्रथमकरतले ...कर्पूरपात्रं चतुर्थे। इति दक्षिणकरेषु वि.प्र.37क/4.17 iii. द्रौपदी – གང་གིས་ནག་མོ་བདག་མདུན་ནས། །སྐྲ་ནས་བཟུང་སྟེ་དྲངས་གྱུར་པ། །བསྟན་དཀའ་སྡིག་ཅན་ཐོབ་པ་འདི།།སྐད་ཅིག་འཚོ་བར་འགྱུར་རམ་ཅི།། निगृह्य केशेष्वाकृष्टा कृष्णा येनाग्रतो मम। सोऽयं दुःशासनः पापो लब्धः किं जीवति क्षणम्॥ का.आ.331ख/2.279 3. कालिका, काचित् स्त्री – ནམ་ཞིག་ཁྱིམ་བདག་དེ་ལ་ནི། ...།ཆུང་མ་ནག་མོ་ཞེས་བྱ་བ། །ཀྱཻ་ཀྱུ་ཅན་གྱིས་དལ་བུས་སྨྲས།། कदाचित् गृहपतिं कालिका नाम वल्लभा। उवाच कुटिला स्वैरम् अ.क.4ख/50.37.

ནག་མོ་ཆེ *ना.* महाकाली, देवी ब.वि.169क; द्र. ནག་མོ་ཆེན་མོ།

ནག་མོ་ཆེན་མོ *ना.* महाकाली, देवी – ལྷ་མོ་ནག་མོ་ཆེན་མོའི་གཟུངས देवीमहाकालीनामधारणी क.त.670.

ནག་མོ་འབར་མ *ना.* कृष्णदीप्ता, देवी – དེ་བཞིན་དུ་ཤར་གྱི་འདབ་མ་ལ་ནག་མོ་འབར་མ་རོ་མཉམ་པའོ།། एवं पूर्वपत्रे कृष्णदीप्ता समरसा वि.प्र.50क/4.54; ཨ...ནག་མོ་འབར་མ...དེ་ལྟར་ཡི་གེ་བརྒྱད་ལས་སྐྱེས་པ་ནུས་མ་བརྒྱད་དོ།། अ...कृष्णदीप्ता...एवमष्टाक्षरजाः शक्तयोऽष्टौ वि.प्र.53क/4.81; द्र. ནག་མོ།

ནག་མོའི་ཁོལ *ना.* कालिदासः, कविः श.को.731.

ནག་མོའི་འབངས *ना.* कालिदासः, कविः श.को.731.

ནག་ཚུར पुष्पकासीसम् म.व्यु.5829(84ख); पुष्पाक्षम् यो.श.58; कायुशम् ('कापुशम्, कयूसम्' इति पा.टि.) म.व्यु.5830(84ख); कायुषम् (कायूषम् म.व्यु.5937)(85ख); द्र. ནག་མཚུར། ནག་འཚུར།

ནག་མཚུར कासीसम्, उपधातुविशेषः – གསེར་གྱི་ས་ལེ་སྦྲམ་དེ་ཉིད་ནག་མཚུར་དུ་བཙུག་ན་དེ་བས་ཀྱང་དྲི་མ་ཐམས་ཅད་དང་བྲལ་བར་འགྱུར་རོ།། तदेव जातरूपं कासीसप्रक्षिप्तं भूयस्या मात्रया सर्वमलापगतं भवति द.भू.193क/18; पुष्पकासी मि.को.57क; कायुषम् मि.को.25ख; सङ्कायूषम् मि.को.57क; द्र. ནག་ཚུར། ནག་འཚུར།

ནག་འཚུར = ནག་ཚུར།

ནག་འཛིན་ कृष्णलः, ०कः, परिमाणविशेषः (रा.को.2.184); གུཉྫ་ མ་རུ་རྩེ། མིང་གཞན་ནག་འཛིན་དང་སྲང་གི་ས་བོན་ཀྱང་ཟེར་བ मि.को.21ख; द्र.मो.को.308.

ནག་སླ་བ = ནག་པའི་སླ་བ།

ནག་སེར་ कपिशः, वर्णविशेषः – श्यावः स्यात् कपिशः अ.को.1.5.16; कपिवर्णयोगात् कपिशः। वानरवर्णनाम अ.वि.1.5.16.

ནག་ལྷང་ = མདོག་ནག་པོ मेचकः, असितः मि.को.14क।

ནགས་ वनम् – འཇིག་རྟེན་ཀུན་ནས་གདུང་བཞིན་དུ... །དེ་སྲིད་དུ་ནི་ནགས་སུ་སོང་॥ आशोच्यमानो लोकेन तावदेव वनं व्रजेत् ॥ बो.अ.24ख/8.35; དཀའ་ཐུབ་ནགས་ तपोवनम् अ.क.22ख/52.36; ལོ་མ་རལ་གྲི་ལྟ་བུའི་ནགས་བྱུང་བ་དག་སུ་ཡིས་བྱས་ असिपत्रवनसमुद्भूतानि वा केन कृतानि बो.प.89क/51; काननम् – ནགས་ནི་འཚོལ་བྱེད...རང་སངས་རྒྱས་ काननैषिणः। प्रत्येकबुद्धाः अ.क.28क/3.104; अटविः – ནགས་ཀྱི་རི་དྭགས་ཀྱི་བདག་པོ་ཞེས་པ་བཞིན་དུ་རོ་ལྡན་ན་གནས་པ་གནོད་སྦྱིན་ཆེན་པོ་རྣམས་ཀྱི་བདག་པོའོ॥ अटव्यां मृगाधिपतिरिव अडकवतीनिवासी महायक्षाधिपतिः वि.प्र.119ख/1, पृ.17; दावः – མེ་ཡིས་ནགས་སྲེག་པ་ན་ अग्नेश्च दावदहने वि.व.217क/1.94; दवः – ནགས་མེ་ दवानलः अ.क.306ख/108.117; अरण्यम् – ཙན་དན་ནགས་ चन्दनारण्यम् का.आ.330क/2.235; गहनम् – མཉན་ཡོད...སྨྱིག་མའི་ནགས་ན་ श्रावस्त्यां वेणुगहने अ.क.174क/19.123; མཐའ་འཁོབ་ནགས་ཀྱི་མགྲོན་དུ་བྱས॥ चक्रे प्रत्यन्तगहनातिथिम् अ.क.286ख/106.12; विपिनम् – བཙུན་མོའི་རྣམས་དང་ནགས་སོགས་བཞིན॥ दारादिविपिनादिवत् त.स.42क/427; वनभूमिः – རྩོད་དང་ཉོན་མོངས་ཀྱིས་སྟོང་པ། །ཞི་བའི་ནགས་ཀྱི་ནང་དག་ཏུ॥ कलहायासशून्यासु शान्तासु वनभूमिषु ॥ बो.अ.26ख/8.85; उपवनम् – བཅོམ་ལྡན་འདས་ཀྱི་བསོད་ནམས་ནགས॥ भगवतः...पुण्योपवनम् अ.क.71ख/7.12; वनस्पतिः म.व्यु.4213(66ख); द्र. ནགས་ཚལ།

ནགས་ཀྱི་ (འབྲས་བུ) वन्यम् (फलम्)–ནགས་ཀྱི་འབྲས་བུ་ཅི་དགར་རྙེད་པས་ཀྱང་॥ वन्यैर्यदृच्छाधिगतैः फलैर्वा जा.मा.142ख/165; ནགས་ཀྱི་བརྟུལ་ཞུགས་རྣམས་ཀྱིས་ཞི वन्यव्रतैः शान्तः अ.क.31ख/53.44; द्र.– ནགས་ཀྱི་ས་ཕྱོགས་འདིར वनप्रदेशेऽत्र जा.मा.142ख/164.

ནགས་ཀྱི་ཏིཀྟ = ས་ཏུ वनतिक्तिका, पाठा मि.को.57ख।

ནགས་ཀྱི་བདག = ནགས་ཀྱི་བདག་པོ།

ནགས་ཀྱི་བདག་པོ वनस्पतिः मि.को.148क; द्र. ནགས་ཚལ་བདག་པོ།

ནགས་ཀྱི་འདབ = ནགས་འདབ།

ནགས་ཀྱི་འདབ་མ = ནགས་འདབ།

ནགས་ཀྱི་གནས་ वनभूमिः – ནགས་ཀྱི་གནས་ན་འདུག་པའི་ཚེ། །དབྱུ་གུ་ཤིང་དང་པགས་པ་དང་། །སྐེད་ཆིངས་དང་ནི་རིལ་བ་རྣམས། །ང་ལ་ཚངས་པས་སྦྱིན་པར་བྱེད॥ अजिनं दण्डकाष्ठं च मेखलाचक्रमण्डलम्। ददाति ब्रह्मा महेश्वरो वनभूमौ व्यवस्थिते ॥ ल.अ.189क/161.

ནགས་ཀྱི་སྦྲང་མ = ཤ་སྦྲང་ वनमक्षिका, दंशः – दंशस्तु वनमक्षिका अ.को.2.5.27; वने मक्षिका वनमक्षिका अ.वि.2.5.27.

ནགས་ཀྱི་མེ = ནགས་མེ།

ནགས་ཀྱི་སྨན वनौषधिः – དེ་ལྟར་ལྕགས་དང་རིན་པོ་ཆེ་དང་ནགས་ཀྱི་སྨན་དང་འབྲུ་དང་དྲིའི་རྫས་རྣམས་བུམ་པ་རྣམས་སུ་བླུགས་ནས एवं लोहानि रत्नानि वनौषध्यः शस्यानि गन्धद्रव्याणि घटेषु क्षिप्त्वा वि.प्र.150क/3.96.

ནགས་ཀྱི་རིན་ཆེན *ना.* वनरत्नः, आचार्यः – དཔལ་ལྡན་བླ་མ་ནགས་ཀྱི་རིན་ཆེན་གྱི་བསྟོད་པ་བདུན་པ श्री-गुरुवनरत्नस्तोत्रसप्तकम् क.त.1177.

ནགས་ཀྱི་རུས = ནགས་ཀྱི་རུས་པ།

ནགས་ཀྱི་རུས་པ वनास्थिकम् – ནགས་ཀྱི་རུས་པའོ॥ अन[वना]स्थिकानि वि.सू.78ख/95.

ནགས་ཀྱི་ལྐུང = ནགས་ལྐུང་།

ནགས་ཀྱི་ལྷ वनदेवता – ནགས་ཀྱི་ལྷ་ཡིས་གདུག་པའི་གདེངས་ཅན་དབང་པོ་དེ་ལ་སྨས॥ क्रूरं फणीन्द्रमवदन् वनदेवतास्तम् ॥ अ.क.43ख/56.19; द्र. ནགས་ཚལ་གྱི་ལྷ།

ནགས་སྐྱེས *वि.* वनजः – དེ་དག་ནགས་སྐྱེས་ཀྱི། །གླང་པོའི་ཆང་གིས་དྲོ་ཞིང་ཁ་བའི་ཆུ་ནི་ཇི་ལྟར་འཐུང་॥ कथं ते वनजगजमदोष्णं तिक्तमम्भः पिबन्ति अ.क.315क/40.92.

ནགས་ཁུང वनप्रस्थः – དགོན་པ་དང་ནགས་ཁུང་དང་བས་མཐའི་གནས་མལ་དུ་གནས་བཅའ་བ་ནི་ཡིད་ལ་བསམ་པར་ཡང་དཀའ दुरभिसंबोधान्यरण्यवनप्रस्थानि, प्रान्तानि शयनासनान्यध्यावस्तुम् अ.श.248क/227; अटवी – ལུས་འཕགས་ཀྱི་རྒྱལ་པོ་ཕོ་བྲང་འཁོར་གྱི་མི་དང་བཅས་པ་ཕ་རོལ་གྱི་དམག་ཚོགས་བྱུང་སྟེ། ཅི་བྱ་གཏོལ་མེད་ནས་ནགས་ཁུང་དུ་ཞུགས་ཏེ विदेहराजः सपरिवारः परचक्रवित्रासितोऽटवीमनुप्राप्तः अ.श.250क/229.

ནགས་ཁུང་སྟུག་པོ गहनम् – ནགས་ཁུང་སྟུག་པོའི་འཇིགས་པ་མང་པོ་འདི་ནས་ཁྱོད॥ बहुप्रतिभयाद्गहनादितस्त्वाम् जा.मा.144क/167; द्र. ནགས་ཐིབས་པོ། ནགས་འཐིབས་པོ།

ནགས་ཁྲོད वनषण्डः – ཨོ་ཏ་ལར་ཨོ་ཏ་ལའི་ནགས་ཁྲོད་ན་བཞུགས་སོ॥ ओतलायां विहरति। ओतलीये वनषण्डे वि.व.129क/1.19; वनखण्डः म.व्यु.4214 (66ख); वनम् – ནགས་ཁྲོད་གནས་པའང་སྡུག་བསྔལ་ཆེན་པོ་སྟེ॥ महच्च दुःखं वसतां वनेषु वि.व.215ख/1.92; दावः – འདི་ལྟར་ཡང་ནགས་ཁྲོད་ཞིག་ཏུ་གཙུག་ལག་ཁང་བརྩིགས་པ་དང यथापि तद्विहारो दावमध्ये प्रतिष्ठापितो भवति वि.व.231ख/2.134; प्रान्तवनप्रस्था म.व्यु.2989(53ख); द्र.– ནུ་པོ་དེ་ནི་ཡོངས་ཚོལ་ཞིང་། །གདོང་ལ་མཆི་ཟག་ནགས་ཁྲོད་རྒྱུ॥ पर्येषन्ति भ्रातरमश्रुमुखानि विचरन्ति वनमध्ये ॥ सु.प्र.58क/115.

ནགས་ཁྲོད་ཆེན་པོ प्रवणः, °णम् (*) – གཞན་ཡང་དགྲ་བཅོམ་པ་རེས་འགའ་དགོན་པ་ན་ནགས་ཁྲོད་ཆེན་པོར་རྒྱུ་བ་ན་ལམ་སྟོར་ཏེ पुनरयमर्हन्नेकदाऽरण्ये प्रवणेऽन्वाहिण्डन्मार्गादपनश्य अभि.स.भा.98क/132.

ནགས་ཁྲོད་བདག आटविकः म.व्यु.3689 (62क).

ནགས་ཁྲོད་ན་གནས་པ वानप्रस्थः, तृतीयाश्रमः म.व्यु.2998(53ख).

ནགས་རྒྱུ = ནགས་ན་རྒྱུ་བ།

ནགས་མཆོག་ཆེན་པོ महावनखण्डः – ནགས་མཆོག་ཆེན་པོ་དེར་བལྟས་ན། །སེམས་ཅན་ཆེན་པོ་མ་རྙེད་ནས॥ न लभेते महासत्त्वं दृष्ट्वा तत्र महावनखण्डेऽस्मिन् ॥ सु.प्र.58क/115.

ནགས་སྡོང = ཨ་ག་རུ वनद्रुमः, अगुरु मि.को.55क।

ནགས་ཞུལ་བ *वि.* वनप्रतिसंवेदकः – ནགས་ཞུལ་བའི་དགེ་སློང་ वनप्रतिसंवेदकः भिक्षुः वि.सू.48ख/62.

ནགས་སྟུག་པོ अरण्यानी, महारण्यम् – महारण्यमरण्यानी अ.को.2.4.1; महदरण्यं महारण्यम्। अरण्यानी च अ.वि.2.4.1.

ནགས་ཐིབས་པོ गहनम् – དེ་ནགས་ཐིབས་པོ་ཞིག་ཏུ་ཞུགས་ནས་བདག་ཉིད་འགེག་པར་བརྩམས་པ་དང सोऽन्यतमं गहनं प्रविश्यात्मानमुद्बन्धितुमारब्धः वि.व. 191ख/1.66; द्र. ནགས་འཐིབས་པོ། ནགས་ཁྲོད་སྟུག་པོ།

ནགས་མཐའ वनान्तः – གྲོང་དང་གྲོང་ཁྱེར་ནགས་མཐའ་དང་། །ཕྱོགས་དང་གླིང་རྣམས་ཐམས་ཅད་ནས།། पुरग्रामवनान्तेभ्यो दिग्द्वीपेभ्यश्च सर्वशः। अ.क.35क/54.9; प्रान्तः म.व्यु.2990 (प्रान्तः བས་མཐའ 53ख).

ནགས་འཐིབས་པོ गहनम् – कष्टे तु कृच्छ्रगहने अ.को.3.3.39; द्र. ནགས་ཐིབས་པོ། ནགས་ཁྲོད་སྟུག་པོ།

ནགས་བདག = ནགས་ཀྱི་བདག་པོ།

ནགས་བདག་སྐྱེས वानस्पत्यः मि.को.148क।

ནགས་འདབ वनप्रस्थः – དགོན་པ་དང་ནགས་འདབ་དང་རིའི་ཕུག་དང་དུར་ཁྲོད་དང་སོག་མའི་ཕུང་པོ་ལ་སོགས་པའི་ནང་དུ་གནས་པར་བྱའོ།། अरण्यवनप्रस्थगिरिगुहाश्मशानपलालपुञ्जादिषु विहर्तव्यम् अ.सा.344क/194; དགོན་པ་ནགས་འདབ་མི་མ་ཡིན་པས་རྒྱུ་བ अरण्यवनप्रस्थान्यमनुष्यावचराणि ल.अ.154क/101; उपवनम् – དགོན་པའམ་ནགས་འདབ་བམ་བླ་གབ་མེད་པར་ཨ་ག་རུའམ་རྒྱ་སྤོས་སམ་དུས་ཀྱི་རྗེས་སུ་འབྲང་བས་བདུགས་ལ अरण्ये उपवनेऽभ्यवकाशे वा अगरुं वा तगरं वा कालानुसारि वा धूपयितव्यम् शि.स.42ख/40; गह्वरम् – རི་བོ་ནགས་འདབ་ཆུ་རྡོགས་སུ། །རྟག་ཏུ་དངོས་གྲུབ་ཐོབ་པར་འགྱུར།། गिरिगह्वरकुलेषु सदा सिद्धिरवाप्यते॥ गु.स.111ख/46; वनान्तरम् – དཔེར་ན་མེས་ནགས་ཀྱི་འདབ་མ་སྒྱུར་དུ་ཚིག་པར་བྱེད་པ་དེ་བཞིན་དུ་ཁྱོད་མཐོང་མ་ཐག་ཏུ་སྡིག་པ་ཐམས་ཅད་འཇོམ་པར་མཛད་དོ།། यथाग्निर्दहति वनान्तरम्, एवं त्वं दर्शनेन सर्वपापानि दहसि का.व्यू.236ख/298.

ནགས་ལྡན *ना.* वनः, यक्षः – དེ་བཞིན་དུ་གནོད་སྦྱིན་མདའ་ཅན་དང་གནོད་སྦྱིན་ནགས་ལྡན་དང་གནོད་སྦྱིན་མོ་བསླང་སྙེད་མ་དང་མཆུ་རྣམས་བཏུལ་ཏོ།། एवं शरो यक्षो वनो यक्षः आलिकावेन्दा मघा यक्षिणी विनीता वि.व.129क/1.18.

ནགས་ན་རྒྱུ = ནགས་ན་རྒྱུ་བ།

ནགས་ན་རྒྱུ་བ वनचरः – གླང་པོ་ཆེའི་ནགས་ཚལ…ནགས་ན་རྒྱུ་བ་རྣམས་ཀྱི་གནས་སུ་ནི་གྱུར नागवने…आश्रयभूते वनचराणाम् जा.मा.179ख/209; वनेचरः – ཚོམ་རྐུན་པ…།ནགས་ན་རྒྱུ་བས་ལམ་དུ་མཐོང་།། वनेचराः…ददृशुर्दस्यव पथि॥ अ.क.57ख/6.49; རྔོན་པ་གདུག་པ་ཅན་ཞེས་པ། །ནགས་རྒྱུ་མཐའ་འཁོབ་དག་ན་གནས།། लुब्धकः क्रूरको नाम प्रत्यन्तेऽस्ति वनेचरः। अ.क.30क/53.27; द्र. ནགས་ན་སྤྱོད་པ།

ནགས་ན་འདུག་པ वनवासः – འདི་ལྟར་ནགས་ན་འདུག་པ་ལ་འདི་སྙེད་ཀྱི་དུས་སུ་སྡུག་བསྔལ་ཉམས་སུ་མྱོང་ཡང ईदृशं वनवासदुःखमनुभवन्नपि ना.ना.226क/9; द्र. ནགས་ན་གནས་པ།

ནགས་ན་གནས = ནགས་ན་གནས་པ།

ནགས་ན་གནས་པ •*सं.* 1. वनवासः – བདག་ནི་ཡོངས་སུ་བོར་ནས་བྲོ། །ནགས་སུ་འགྲོ་བར་མི་འོས་སོ། །ཁྱོད་ནི་ནགས་ན་གནས་པ་དག། །དགྲ་རྣམས་ཡིད་ལ་རེ་བ་ཡིན།།

न मां पुत्र परित्यज्य गहनं गन्तुमर्हसि। भवन्तु तव शत्रूणां वनवासमनोरथाः ॥ अ.क.250क/29.33; वने निवसनम् – བུ་ཀྱཱ་[ཀྱེ་]ནགས་ན་གནས་པ་ནི། །རྡུལ་གྱི་གོས་དང་མཚུངས་པ་སྟེ॥ वने निवसनं पुत्र पांशुप्रावरणं समम्। अ.क.249ख/29.30; वनाशा – ནགས་གནས་འདོད་ཆུང་ཆོག་ཤེས་དང་། །སྦྱངས་པ་ཡང་དག་སྡོམ་བརྟེན་དང་॥ वनाशाऽल्पेच्छता तुष्टिर्धूतसंलेखसेवनम्॥ अभि.अ.4क/1.54 2. वनौकः, वनवासी – དེ་ཡི་མཐུ་ཡིས་དེ་དག་ཏུ། །ནགས་ན་གནས་པ་ཐམས་ཅད་ཀྱིས། །རང་བཞིན་ཁོན་གྱི་མེ་སྤངས་ནས། །སེམས་ཀྱི་སྤྱོད་ཚུལ་བསིལ་བར་གྱུར॥ बभूवुस्तत्प्रभावेण तत्र सर्ववनौकसाम्। जातिवैरानलत्यागशीतलाश्चित्तवृत्तयः॥ अ.क.250ख/29.40; वननिवासी – གེལ་པའི་ནགས་གནས་རི་བོང་གྱུར་པའི་ཚེ། །ལེགས་སྤྱོད་རི་བོང་ཚོགས་གྱུར་དེ་ལ་བསྟན॥ आसि शशो वनगुल्मनिवासी शासति तं सुकृते शशवर्गम्। रा.प. 239ख/136 3. वानप्रस्थः – ब्रह्मचारी गृही वानप्रस्थो भिक्षुश्चतुष्टये॥ अ.को.2.7.3; वने प्रस्थो वनप्रस्थः। तत्र भवः वानप्रस्थः अ.वि.2.7.3; द्र. ནགས་ན་རབ་ཏུ་གནས་པ། • *ना.* वनवासी, महास्थविरः मि. को.109क।

ནགས་ན་སྤྱོད वनेचरः – ལྷ་ཅིག...།ནགས་ན་སྤྱོད་རྣམས་སྨྲེང་གྱུར་པ། །དེ་དག་བདག་གིས་རབ་ཏུ་ཐོས॥ श्रुतमेतन्मया देव कथ्यमानं वनेचरैः। अ.क.39क/4.30; द्र. ནགས་ན་རྒྱུ་བ།

ནགས་ན་སྤྱོད་པ = ནགས་ན་སྤྱོད།

ནགས་ན་རབ་ཏུ་གནས་པ वानप्रस्थः – ནགས་ན་རབ་ཏུ་གནས་པའི་ཆུང་མ वानप्रस्थपत्नी वि.प्र.163ख/3.131; द्र. ནགས་ན་གནས་པ།

ནགས་ན་རབ་ཏུ་གནས་པའི་ཆུང་མ वानप्रस्थपत्नी – མ་མ་ཀཱི་ནི...བྲམ་ཟེ་མོ་སྟེ...རྣམ་པ་བདུན་ནི། ངེས་བརྗོད་ཀྱི་ཡན་ལག་དང་...ནགས་ན་རབ་ཏུ་གནས་པའི་ཆུང་མ་དང་བདག་པོའི་ཆུང་མ་དང་གྲོལ་བའི་ཆུང་མ་སྟེ मामकी सप्तधा ब्राह्मणी...ऋक्शाखा...वानप्रस्थपत्नी पतिपत्नी मुक्तपत्नीति वि.प्र.163ख/3.131.

ནགས་ནས་བྱུང་བ *वि.* आरण्यकः लो.को.1336; द्र. ནགས་ཚལ་ནས་བྱུང་བ།

ནགས་གནས = ནགས་ན་གནས་པ།

ནགས་པ *उ.प.* वनिकः – སེང་ལྡེང་ནགས་པ खदिरवनिकः म.व्यु.1066(23ख).

ནགས་བྱུང = ནགས་ནས་བྱུང་བ།

ནགས་མེ दावानलः, दावाग्निः – དེར་ནི་ནགས་མེས་ཚིག་གྱུར་ཅིང་॥ तत्र दावानलप्लुष्टाम् अ.क.108ख/10.97; दाववह्निः – ནགས་ཀྱི་མེ་ལ་སོགས་པ दाववह्न्यादीनाम् त.प.170ख/798; दवानलः – དེ་ཡི་སྡུག་བསྔལ་ནགས་མེ་སློག་པའི་ཐབས། །བརྩེ་བས་བརླན་པའི་བློ་ཡིས་རབ་བསམས་པ॥ अचिन्तयद्दुःखदवानलेऽस्या निवारणोपायधिया दयार्द्रः ॥ अ.क.306ख/108.117; दवाग्निः – སེམས་ནི་ནགས་ཀྱི་མེ་བཞིན་སྲེག॥ चित्तं दहते दवाग्निवत् बो.प.89ख/52; दावः – ནགས་ཀྱི་མེ་ནི་ནགས་ན་ཡོད་པའི་མེའོ॥ दावो वनगतो वह्निः त.प.170ख/798; द्र. ནགས་ཚལ་མེ།

ནགས་མེད अवनम् – དབང་པོ་ཐུལ་བའི་མི་བདག་ནི། །ཀུན་ཏུ་ནགས་མེད་དཀའ་ཐུབ་ཡིན॥ जितेन्द्रियाणां सर्वत्र नृपाणामवनं तपः ॥ अ.क.249क/29.23; द्र. ནགས་ཚལ་མེད་པ།

ནགས་མེད་པ = ནགས་མེད།

ནགས་མེས་བཏང་བ दवदाहः – ནགས་མེས་བཏང་བ་ལ་སོགས་པ་དག་གིས་བཟུང་བའི་ཕྱིར दवदाहादिभिरादानार्थम् वि.सू.14क/15.

ནགས་ཙལ = ནགས་ཚལ།

ནགས་ཚལ • सं. 1. वनम् – ནགས་ཚལ་ས་ཕྱོགས་དབེན་ཞིང་ཉམས་དགའ་དང་།། वनप्रदेशाश्च विवेकरम्याः बो.अ.3ख/2.3; དཀའ་ཐུབ་ཀྱི་ནགས་ཚལ तपोवनम् जा.मा.16ख/42; काननम् – རྒྱལ་པོ་དེ་ནི་བདག་ཡིན་ཏེ། །རྒྱལ་སྲིད་བཏང་ནས་ནགས་ཚལ་བསྟེན།། अहं स राजा संत्यक्तराज्यः काननमाश्रितः। अ.क.23ख/52.47; ནགས་ཚལ་ཐམས་ཅད་འབར་གྱུར་ཏེ།། आदीप्तं काननं सर्वम् अ.श.255ख/235; अटविः, ०वी – དལ་གྱིས...སཱ་ལའི་ནགས་ཚལ་སླེབ प्राप शालाटवीं शनैः अ.क.136क/67.23; दावः – གང་བྱུང་བ་ན་གྲོང་ཡང་སྲེག་པར་བྱེད ...ནགས་ཚལ་དང་ཤིང་དང་རྩྭ་དང यत्तूत्पन्नं ग्राममपि दहति...दावम्वा काष्ठम्वा तृणम्वा श्रा.भू.82ख/215; अरण्यम् – ལོ་འདབ་གསར་འབྲུངས་ནགས་ཚལ་དང་།། उत्प्रबालान्यरण्यानि का.आ.330क/2.239; वनषण्डः – གྲོང་དང་གྲོང་ཁྱེར་དང ...མེ་ཏོག་དང་ཤིང་ཏོག་དང་རྩི་དང་ནགས་ཚལ་མངོན་པར་བསྒྲུབ་པ་དང ग्रामनगर...पुष्पफलौषधिवनषण्डाभिनिर्हाराणि द.भू.214ख/29; वनप्रदेशः – དགོན་པའི་ནགས་ཚལ་ཆེན་པོ महत्यरण्यवनप्रदेशे जा.मा.150ख/174; तपोवनम्–ཁྱོད་ཀྱི་མཐུ་ཡིས་བསྲུངས་པའི་ནགས་ཚལ་ན།། तपोवने त्वद्भुजवीर्यरक्षिते जा.मा.170क/196; उपवनम्–གྲོང་ཁྱེར་སེར་སྐྱ་ཞེས་པར་ནི། །ནྱ་གྲོ་དྷ་ཡི་ནགས་ཚལ་གནས།། न्यग्रोधोपवनस्थितिः। कपिलाख्ये पुरे अ.क.70ख/7.2; वनस्पतिः – རྩྭ་དང་ཤིང་གེལ་པ་དང་སྨན་དང་ནགས་ཚལ་སྔོ་ཚོགས་རྣམས་མདངས་དང་རབ་ཏུ་ལྡན་པར་འབྲུངས་པར་འགྱུར नानातृणगुल्मौषधिवनस्पतय ओजस्वितराः प्ररोहयिष्यन्ति सु.प्र.33क/ 64; སྟོབས་ཇི་ལྟ་བ་དང་ཡུལ་ཇི་ལྟ་བ་དང་མཐུ་ཇི་ལྟ་བ་བཞིན་དུ་དང་ཤིང་གེལ་པ་དང་སྨན་དང་ནགས་ཚལ་ལ་སོགས་པས་ཆུ་འཐུང་སྟེ यथाबलं यथाविषयं यथाऽस्थाम च ते तृणगुल्मौषधिवनस्पतयो वार्यापिबन्ति स.पु.48क/85 2. कुञ्जः, निकुञ्जः – निकुञ्जकुञ्जौ वा क्लीबे लतादिपिहितोदरे॥ अ.को.2.3.8; पक्षिणोऽत्र स्थित्वा निकूजन्तीति निकुञ्जः। कुञ्जश्च। कूज अव्यक्ते शब्दे।...गृहवद्भासमान- लतापिहितप्रदेशनामनी अ.वि.2.3.8; द्र. ནགས་རི། • वि. = ནགས་ཀྱི वन्यः – ནགས་ཚལ་གླང་པོ་མཚོ་ཆེན་དོགས་ལྷགས་བཞིན།། समीयुर्महाह्रदं वन्यगजा यथैव जा.मा.8क/7.

ནགས་ཚལ་ནས་ནགས་ཚལ་མེད་པར་གཤེགས་པ वनाद् निर्वणमागतः म.व्यु.6443(92क).

ནགས་ཚལ་གྱི་དགོ་བ་མོ वनमृगी – ནགས་ཚལ་གྱི་དགོ་བ་མོ་གཅན་གཟན་མ་རུངས་པས་གཙེས་པ་བཞིན་དུ་འཇིགས་ཤིང་བག་ཚ་བས་ངོ་འཛུམ་ནི་འགྱུར व्यालमृगाभिद्रुतेव वनमृगी भयविषादविक्लवमुखी जा.मा.112ख/130.

ནགས་ཚལ་གྱི་བདག་པོ वनस्पतिः – ནགས་ཚལ་གྱི་བདག་པོ་དེའི་ཡལ་ག་གཅིག तस्य तु वनस्पतेरेका शाखा जा.मा.157ख/182.

ནགས་ཚལ་གྱི་ཕྲེང་བ वनराजी – གྲོང་ཁྱེར་ཆེན་པོ་ཡངས་པ་ཅན་འདི་ནི་འབྱོར་ཅིང...མེ་ཏོག་གི་ར་བ་དང་ནགས་ཚལ་གྱི་ཕྲེང་བ་མེ་ཏོག་ཀུན་ཏུ་རྒྱས་པ་དང་ལྡན་པ་ཡིན་ལ इयं वैशाली महानगरी ऋद्धा च...पुष्पवाटिकावनराजिसंकुसुमिता च ल.वि.14क/15.

ནགས་ཚལ་གྱི་མེ = ནགས་ཚལ་མེ།

ནགས་ཚལ་གྱི་གཞི = ནགས་ཚལ་གཞི།

ནགས་ཚལ་གྱི་ལྷ = ནགས་ཀྱི་ལྷ वनदेवता – ཀུན་དགའ་ར་བའི་ལྷ་དག་དང་ནགས་ཚལ་གྱི་ལྷ་དག་དང་བཞི་མདོའི་ལྷ་དག་དང आरामदेवता वनदेवताश्चत्वरदेवताः वि.व.206ख/1.80; དེ་ནས་ནགས་ཚལ་གྱི་ལྷ་ཞིག་དེས་དེ་ལ་བརྙས་ཐབས་བྱས་པས་དེ་མ་བཟོད་པ་དང अथान्यतमा वनदेवता तस्य तमसत्कारमसहमाना जा.मा.212क/247; द्र.– གནམ་གྱུམ་བླ་བཞིན་ས་ལ་ལྷུང་བར་གྱུར། །ནགས་ཚལ་འཁྲི་ཤིང་ལྷ་རྣམས་འདུད་པར་འགྱུར།། निर्घातपिण्डितरवं निपपात भूमावावर्जयन् वनलता वनदेवताश्च ॥ जा.मा.183क/212.

ནགས་ཚལ་དགའ = གླང་པོ स्तम्बेरमः, गजः – दन्ती दन्तावलो हस्ती द्विरदोऽनेकपो द्विपः ।...इभः स्तम्बेरमः पद्मी अ.को.2.8.35; स्तम्बे नदीकुञ्जे रमत इति स्तम्बेरमः । रमु क्रीडायाम् अ.वि.2.8.35.

ནགས་ཚལ་སྟུག་པོ अटविः, °वी – གང་ཡང་ནགས་ཚལ་སྟུག་པོའི་ཕྱིན་ལ་དགའ་བདེར་ཁང་པའི་ཐང་བཞིན་འགོམ་བྱེད་པ།། लङ्घयन्ते भवनस्थलीकलनया ये चाटवीनां तटाः अ.क.53ख/6.2; वनगहनम् – ནགས་ཚལ་སྟུག་པོ་སྐྱེ་བོ་མེད་པ་དག་ན་ཉམས་དགའ་བར་འདུག་གོ།། निर्जनसंपातेषु वनगहनेष्वभिरेमे जा.मा.151क/174.

ནགས་ཚལ་བརྟག་པ་ལས་གྱུར་པ वनविचयगतम् मं.व्यु.8522(118क).

ནགས་ཚལ་བདག་པོ = ནགས་ཚལ་གྱི་བདག་པོ།

ནགས་ཚལ་བདག་མོ ना. वनस्पतिः, गन्धर्वकन्या – དྲི་ཟའི་བུ་མོ་བརྒྱ་སྟོང་དུ་མ་དག་ཀུང་ཚོགས་པ་འདི་ལྟ་སྟེ། དྲི་ཟའི་བུ་མོ་དགའ་བའི་བཞིན་ཞེས་བྱ་བ་དང...དྲི་ཟའི་བུ་མོ་ནགས་ཚལ་བདག་མོ་ཞེས་བྱ་བ་དང अनेकानि च गन्धर्वकन्याशतसहस्राणि सन्निपतितानि । तद्यथा– प्रियमुखा नाम गन्धर्वकन्या...वनस्पतिर्नाम गन्धर्वकन्या का.व्यू.202क/259.

ནགས་ཚལ་ན་རྒྱུ = ནགས་ཚལ་ན་རྒྱུ་བ།

ནགས་ཚལ་ན་རྒྱུ་བ वनचरः – ནགས་ཚལ་མེ་ཆེན་པོས...ནགས་ཚལ་ན་རྒྱུ་བ་རྣམས་ནི་སྐྲག་པར་བྱེད་ལ वनदावः ...सन्त्रासनो वनचराणाम् जा.मा.89ख/102.

ནགས་ཚལ་ན་གནས = ནགས་ཚལ་ན་གནས་པ།

ནགས་ཚལ་ན་གནས་པ • सं. वनवासः – ལྷ་བདག་གིས་ནི་ནགས་ཚལ་ན་གནས་པ་མི་བདེ་བར་མ་མཐོང་ལགས་སོ།། नैव च खलु देव वनवासो दुःख इति प्रतिभाति जा.मा.51क/60; द्र. དཀའ་ཐུབ་ཀྱི་ནགས་ཚལ་ན་གནས་པ तपोवनवासः जा.मा.108क/125; • वि. वनस्थः – ནགས་ཚལ་གནས་རྣམས་ཚོག་ཤེས་པ། །ཡོན་ཏན་རྒྱན་གྱི་མཆོག་ཡིན་ནོ།། सन्तोषश्च वनस्थानां गुणशोभाविधिः परः ॥ जा.मा.32ख/37; वनप्रस्थः – ཁྱིམ་ན་གནས་པ་ནད་བཞིན་ཡོངས་སྤངས་ནས། །ནགས་ཚལ་གནས་ཤིག་རབ་ཏུ་བརྒྱན་པར་གྱུར།། गार्हस्थ्यमस्वास्थ्यमिवावधूय कंचिद्वनप्रस्थमलंचकार ॥ जा.मा.3ख/2; वनौकाः – བསོད་ནམས་མཐུ་ཡིས་ནགས་ཚལ་ན། །གནས་རྣམས་སྤྱོད་ཚུལ་མཚུངས་པར་བྱས།། चक्रुः पुण्यानुभावेन तुल्यवृत्तान् वनौकसः ॥ अ.क.209क/86.15; • ना. वनवासी, जनपदः – སོང་རིགས་ཀྱི་བུ་ལྷོ་ཕྱོགས་ཀྱི་རྒྱུད་འདི་ཉིད་ན་ཡུལ་ནགས་ཚལ་ན་གནས་པ་ཞེས་བྱ་བ་ཡོད་དེ། དེ་ན་ཚོང་དཔོན་བཏང་བརྗོད་ཅེས་བྱ་བ་འདུག་གི गच्छ कुलपुत्र, अयमिहैव दक्षिणापथे वनवासी नाम जनपदः । तत्र मुक्तको नाम श्रेष्ठी प्रतिवसति ग.व्यू.341ख/61.

ནགས་ཚལ་ནས་བྱུང = ནགས་ཚལ་ནས་བྱུང་བ།

ནགས་ཚལ་ནས་བྱུང་བ *वि.* वन्यम् – ནགས་ཚལ་ནས་བྱུང་བས་འཚོ་བའི་ཕྱིར་ཟ་ཞིང་གནས་སོ།། अभ्यवहृतेन तेन वन्येनाहारेण वर्तयामास जा.मा.31[ख]/37; द्र. ནགས་ནས་བྱུང་བ། ནགས་སུ་བྱུང་བ།

ནགས་ཚལ་གནས = ནགས་ཚལ་ན་གནས་པ།

ནགས་ཚལ་མེ वनदावः – ནགས་ཚལ་མེ་ཆེན་པོས... ནགས་ཚལ་ན་རྒྱུ་བ་རྣམས་ནི་སྐྲག་པར་བྱེད་ལ वनदावः...सन्त्रासनो वनचराणाम् जा.मा.89[ख]/102; द्र. ནགས་མེ།

ནགས་ཚལ་མེད = ནགས་ཚལ་མེད་པ།

ནགས་ཚལ་མེད་པ निर्वनम् म.व्यु.6443 (92[क]); द्र. ནགས་མེད།

ནགས་ཚལ་གཞི वनस्थली, वनभूमिः – རྔུལ་གྱི་ཆུ་ཡི་ཐིགས་རྒྱས་པས། །ནགས་ཚལ་གཞི་ནི་བསིལ་བར་སྣེབ།། स्वेदवारिकणाकीर्णः प्रभास्निग्धवनस्थलीम् अ.क. 216[ख]/24.98.

ནགས་ཚལ་ས་ཕྱོགས वनप्रदेशः – ནགས་ཚལ་ས་ཕྱོགས་དབེན་ཞིང་ཉམས་དགའ་དང་།། वनप्रदेशाश्च विवेकरम्याः बो.अ.3[ख]/2.3.

ནགས་ཚལ་ལྷ = ནགས་ཚལ་གྱི་ལྷ།

ནགས་ཚོགས वान्या, वनसमूहः मि.को.143[ख]; वनस्कन्धः लो.को.1337.

ནགས་རི निकुञ्जः, कुञ्जः – निकुञ्जकुञ्जौ वा क्लीबे लतादिपिहितोदरे ॥ अ.को.2.3.8; पक्षिणोऽत्र स्थित्वा निकूजन्तीति निकुञ्जः । कुञ्जश्च । कूज अव्यक्ते शब्दे ।...गृहवद्भासमानलतापिहितप्रदेशनामनी अ.वि.2.3.8; कुञ्जः मि.को.147[क]।

ནགས་རིན་ལུགས་ཀྱི་སྒྲོལ་དཀར वनरत्नक्रमसिततारा लो.को.1337.

ནགས་རླུང वनमारुतः – སྒྲ་མེད་ཞི་བའི་ནགས་རླུང་གཡོ་བ་ཡིས།། निःशब्दसौम्यवनमारुतवीज्यमानैः बो.अ. 26[ख]/8.86.

ནགས་སུ་བྱུང་བ *वि.* वन्यः लो.को.1337; द्र. ནགས་ཚལ་ནས་བྱུང་བ།

ནགས་སྲན वनमुद्गः – मकुष्ठकमयुष्ठकौ । वनमुद्गे अ.को.2.9.17.

ནགས་སྲེག་མེ दावाग्निः – ནགས་སྲེག་མེ་ཡི་དུ་བ་རབ་རྒྱས་ཁྲོ་གཉེར་ལྡན་པའི་བཞིན།། दावाग्निधूमविकटभ्रुकुटीमुखेषु अ.क.249[ख]/29.31; འདི་བརྗོད་ནགས་སྲེག་མཇུག་གི་མེར། ...།རི་བོང་གིས་ནི་ལུས་པོ་འཕངས།། इत्युक्त्वा दावशेषाग्नौ चिक्षेप शशकस्तनुम् । अ.क.82[क]/8.33.

ནགས་ལྷ = ནགས་ཀྱི་ལྷ།

ནང • *सं.* अन्तरम्– ཁང་ནང་དེ་ལས་དེ་ནི་ཕྱི་རོལ་སོང་།། निर्गत्य तस्माद्भवनान्तरात्सा अ.क.58[ख]/59.82; अभ्यन्तरम्–སྣ་ཡི་ནང་ནས་འབྱུང་བ་དག།། नासिकाभ्यन्तरोद्भवैः अ.सि.61[क]/161; अवान्तरम् – དོན་ཏེ་དེ་ལས་ནང་གི་ཁྱད་པར་ཡོད་དེ अथावान्तरभेदस्तत्र विद्यते प्र.अ.143[ख]/490; उत्सङ्गः – རྒྱུ་སྐར་བདག་པོའི་ནང་གི་རི་དྭགས་བཞིན།། ताराधिपोत्सङ्गमृगोपमस्य अ.क.50[ख]/59.8; गर्भः – འབྱུང་པོའི་ཁང་པའི་ཕུག་ནང་ན།། सूतागारगुहागर्भे अ.क.171[क]/77.2; པད་མའི་ནང་ནས་ཕྱུང་བ་བཞིན།། पद्मगर्भादिवोद्धृतम् का. आ.323[ख]/2.41; कुक्षिः – ཁ་བ་ཅན་གྱི་ནང་དག་ཏུ། །སཱ་ལའི་ནགས་ནི་ཡང་དག་འབྱུང་།། सालवने मध्ये हिमवत्कुक्षिसम्भवे म.मू.291[क]/452; उदरम् – ལྟོ

བྲང་འཁོར་གྱི་ནང་སོང་སྟེ अन्तःपुरोदरं गत्वा अ.क. 132ख/66.89; मध्यः, ०यम् – འཁོར་དེའི་ནང་དུ་ཆོས་ཀྱི་གཏམ་བྱ་བར་བརྩམས་པ तासां पर्षदां मध्ये धर्मसांकथ्यं कर्तुमारब्धः का.व्यू.207ख/265; ཨུཏྤ་ལ་ཆུ་ནང་ཇི་བཞིན་དུ། །དེ་ནས་མཐར་གྱིས་རྣམ་པར་འཕེལ།། उत्पलं वारिमध्ये वा सोऽनुपूर्वेण वर्धते। शि.स.151ख/146; कोटरः, ०रम् – དཀྲུ་ནང་དུ कुक्षिकोटरे अ.क. 141ख/68.3; सुषिरम् – ལུས་འདི་ལ་མིག་གི་ནང་ཞེའམ ...ཁའམ་ཁའི་ནང་ཞེའམ यदस्मिन् काये चक्षुःसुषिरमिति वा...मुखं वा मुखद्वारं वा शि.स.137ख/133; विवरकम् – ཇི་ལྟར་རུས་སྦལ་དེ་ནི་ཆུའི་ནང་ན་ཀུན་ནས་བསྐུམས་ཤིང་འདུག यथा कूर्मश्चासौ जलविवरके संकुचितकः सू.व्या.163क/53; द्वारम्–ལུས་འདི་ལ་མིག་གི་ནང་ཞེའམ...ཁའམ་ཁའི་ནང་ཞེའམ यदस्मिन् काये चक्षुःसुषिरमिति वा...मुखं वा मुखद्वारं वा शि.स.137ख/133; अवचरकः – གང་གི་ནང་ན་གནས་པས་མཐོང་བ་དེར་ནི་གླང་པོ་ཆེའི་ཁྱུའི་གོ་སྐབས་མེད་པའི་ཕྱིར་དང यत्र ह्यवचरके व्यवस्थितः पश्यति तत्र हस्तिपुरो-[यूथा]नवकाशत्वाद् प्र.अ.180ख/195; •वि. अन्तर्गतः – མེ་ལོང་གི་ནང་དུ་གཟུགས་ཀྱི་གཟུགས་བརྙན་སྣང་བ་ཐམས་ཅད दर्पणान्तर्गताः सर्वरूपावभासाः ल.अ.76ख/25; आभ्यन्तरः – གང་གང་ཕྱི་འམ་ནང་གི་བདེ་བ་དཔེ་མེད་ཅུང་ཟད་དག་དང་ནི།། यद्यत्किंचित् सुखमनुपमं बाह्यमाभ्यन्तरं वा अ.क.289ख/107.19; • *अव्य.* अन्तः – ཞི་བརྩོན་ལེགས་པའི་ཡིད་ཀྱིས་དེས་[དེ]། །ནང་དང་ཕྱི་རོལ་གང་དུའང་མཉམ།། शमोद्यमे सुमनसा स कोऽप्यन्तर्बहिः समः। अ.क.221ख/24.150; ཇི་ལྟར་མི་དབུལ་ཁྱིམ་ནང་ས་འོག་ན། །མི་ཟད་པ་ཡི་གཏེར་ནི་ཡོད་གྱུར་ལ།། यथा दरिद्रस्य नरस्य वेश्मन्यन्तः पृथिव्यां निधिरक्षयः स्यात्। र.वि.59ख/63.

ནང་གི *वि.* आध्यात्मिकम् – ནང་གི་དྲོ་བ་གང་ཡིན་པ यच्चोष्मा आध्यात्मिकः अभि.स्फु.289क/1135; འདིར་དམ་ཚིག་རྣམ་པ་གཉིས་ནི་ཕྱི་དང་ནང་གི་སྟེ इह समयो द्विविधो बाह्य आध्यात्मिकः वि.प्र.89ख/3.2; བློ་གྲོས་ཆེན་པོ་ཆོས་ཐམས་ཅད་ཀྱི་རྟེན་ཅིང་འབྲེལ་པར་འབྱུང་བའི་མཚན་ཉིད་རྣམ་པ་གཉིས་ཏེ། འདི་ལྟར་ཕྱིའི་དང་ནང་གིའོ།། द्विप्रकारं महामते प्रतीत्यसमुत्पादहेतुलक्षणं सर्वधर्माणां यदुत बाह्यं च आध्यात्मिकं च ल.अ.88क/35; अध्यात्मकम् – ནང་གི་སྟོང་པ་ཡིན་པར་ལྟོས། །ཕྱི་རོལ་གནས་པ་སྟོང་པར་ལྟོས།། शून्यमध्यात्मकं पश्य शून्यं पश्य बहिर्गतम्। अभि.भा. 86ख/1203; आध्यात्मिकी – བདག་ཉིད་ཅེས་བྱ་བ་ནི་ནང་གིའོ།། आत्मनेत्याध्यात्मिकी सू.व्या.211ख/116; आन्तरम् – ནང་གི་ཉམས་མྱོང་ལས་ཐ་དད།། आन्तरानुभवाद् भिन्नम् त.स.75क/702; ཕྱི་རོལ་ཉིད་ཀྱི་མུན་པ་བཞིན། །ནང་གི་ཡང་ནི་རྟོགས་པར་འགྱུར།། बाह्यस्येवास्य तमस आन्तरस्यापि गम्यते ॥ त.स. 124ख/1079; मध्यस्थः – ནང་གི་དམ་པའི་ཆོས་སྐུ་ནི། །ཡེ་ཤེས་མིག་གིས་མཐོང་བར་འགྱུར།། सद्धर्मकायं मध्यस्थं पश्यन्ति ज्ञानचक्षुषा॥ र.वि.68क/101.

ནང་དུ अन्तः – དེ་ཡང་མང་པོའི་ནང་དུ་ནི། །བདེ་བར་སྟོན་ནས་རྒྱལ་གྱིས་ཕོངས།། बहूनां तु पुनर्मध्ये स्वागतेऽपि दरिद्रता॥ गु.सि.4क/9; आन्तरम् – རྒྱུ་དེ་ཡང་རྨི་ལམ་ལ་སོགས་པའི་[སོགས་པ་བཞིན་]ནང་དུ་ཡང་སྲིད་པའི་ཕྱིར་རོ།། तत्तु कारणं स्वप्नादाविवान्तरमपि सम्भाव्यम् त.प.182क/825; अर्वाक् – མཚམས་ཆེན་པོའི་ནང་དུ་དགེ་སློང་ཐམས་ཅད་ཀྱིས་ཆོས་གོས་དག་དང་མི་འབྲལ་བའི་གནང་བ་སྦྱིན་པར་བྱའོ།། महत्याः सीमाया अर्वाक् सर्वेषां भिक्षूणां चीवरकाणामविप्रवाससंवृत्तिर्दातव्या वि.व.140क/2.116; तले – ཁྲབ་བདག

གཟུགས། །རྫོགས་སངས་དཀྱིལ་འཁོར་ནང་དུ་མཐོང་བར་འགྱུར།། संबुद्धमण्डलतलेषु विभोर्विभूतिं...व्यवलोकयन्ति र.वि.66ख/96; मध्ये – མཆོག་ཚོགས་ནང་དུ अग्रगणस्य मध्ये सू.अ.147ख/28; गर्भे – དེ་བཞིན་དུ་སའི་ནང་དུ་གཏེར་གཞུག་པར་བྱ तथा भूमिगर्भे निधापनीयम् वि.प्र.95ख/3.8; अध्यात्मनि – འདིར་ཕྱི་འཇིག་རྟེན་གྱི་ཁམས་དང་ནང་ལུས་དང་གཞན་བརྟགས་པའི་དཀྱིལ་འཁོར་ལ་སྤྲོ་བ་དང་བསྡུ་བ་ནི अत्र बाह्ये लोकधातौ देहेऽध्यात्मनि परे कल्पितमण्डले स्फरणं च निधनता च वि.प्र.45ख/4.47; •द्र.– དགའ་ལྡན་ཞེས་བྱ་ལྷ་རྣམས་ཀྱི་ནང་དུ་ཡང་དག་སྐྱེས་པར་གྱུར།། देवानां तुषिताख्यानां निलये समजायत ॥ अ.क.158क/17.8; ལྷུང་བཟེད་འདིའི་ནང་དུ་བྱིན་ཅིག दीयतामस्मिन्पात्रे अ.श.3क/2; དྲང་སྲོང་གི་ནང་དུ་རབ་ཏུ་བྱུང་ནས ऋषिषु प्रव्राजितः अ.श.252क/231; རྒྱལ་པོ་དེ་གྲོག་པོའི་ནང་དུ་ལྷུང་བ་གོར་མ་ཆག་གོ།། नियतमत्र प्रपाते निपतितः स राजा जा.मा.146ख/169; ཀྱེ་སློབ་དཔོན་ཡི་གེ་དྲུག་ཅུ་རྩ་བཞི་པོ་དེ་དག་གི་ནང་ནས་བདག་ལ་གང་བསླབ आसां भो उपाध्याय चतुष्षष्टिलिपीनां कतमां त्वं शिष्यापयिष्यसि ल.वि.66ख/88.

ནང་ན अन्तः – ཕྱི་དང་ནང་ན་ལུས་མེད་ན།། नैवान्तर्न बहिः कायः बो.अ.34क/9.83; द्र.– ཡིད་བཞིན་གྱི་རྒྱ་མཚོ་ཆེན་པོའི་ནང་ན... ངང་པའི་རྒྱལ་པོ་ཡུལ་འཁོར་བསྲུང་ཞེས་བྱ་བར་གྱུར་ཏོ།། मानसे महासरसि...धृतराष्ट्रो नाम हंसराजो बभूव जा.मा.115क/135; ཆོས་ཤེས་པ་ནི་ཤེས་པ་བཅུ་དག་གི་ནང་ན་ཤེས་པ་གཅིག་ཡིན་ཏེ། ཆོས་ཤེས་པ་ཁོ་ན་ཡིན་ནོ།། धर्मज्ञानं दशसु ज्ञानेष्वेकं ज्ञानं धर्मज्ञानमेव अभि.स्फु.241ख/1040; ཏིང་ངེ་འཛིན་དེ་ནི་ཐམས་ཅད་བས་ལས་སུ་རུང་བ་དང་ལམ་སླ་བ་རྣམས་ཀྱི་ནང་ན་མཆོག་ཡིན་པའི་ཕྱིར་རོ།། स हि सर्वकर्मण्यः समाधिः, सुखप्रतिपदामग्रत्वात् अभि.भा.24ख/960.

ནང་ཁྲིམས क्रियाकारः, संविदा–དེ་དག་གིས་སུ་ཡང་དགེ་སྦྱོང་གོ་ཏ་མ་ལ་བལྟར་མི་འགྲོ་བར་ནང་ཁྲིམས་བཅས་སོ།། तैः क्रियाकारः कृतः – न केनचिच्छ्रमणगौतमं दर्शनायोपसंक्रमितव्यम् अ.श.44क/38; ཚུར་ཤོག་རེ་ཞིག་ནང་ཁྲིམས་ཤིག་བཅའ་བར་བྱ་སྟེ आगच्छत क्रियाकारं तावत् कुर्मः वि.व.255ख/2.157.

ནང་ཁྲིམས་བཅས *भू.का.कृ.* क्रियाकारः कृतः – མཛའ་བོ་རྣམས་ཀྱིས་ཀྱང་ནང་ཁྲིམས་བཅས गोष्ठिकैश्च क्रियाकारः कृतः अ.श.214ख/197; དེ་དག་གིས་སུ་ཡང་དགེ་སྦྱོང་གོ་ཏ་མ་ལ་བལྟར་མི་འགྲོ་བར་ནང་ཁྲིམས་བཅས་སོ།། तैः क्रियाकारः कृतः– न केनचिच्छ्रमणगौतमं दर्शनायोपसंक्रमितव्यम् अ.श.44क/38.

ནང་ཁྲིམས་བྱས = ནང་ཁྲིམས་བཅས།

ནང་ཁྲིམས་སུ་བཅའ་བ क्रियाकारः, संविदा – གང་ཡང་བདག་ཅག་གི་རྫས་རྣམས་མ་བྲུབས་ཀྱི་བར་དུ་རེ་ཞིག་སུས་ཀྱང་གྲོ་བཞིན་སྐྱེས་རྣ་བ་བྱེ་བ་རིའི་ཕ་མ་ལ་གཏམ་བསྙད་པར་མི་བྱའོ་ཞེས་དེ་རྣམས་ཀྱིས་ནང་ཁྲིམས་སུ་བཅའ་བ་དག་བྱས་ནས་དོང་ངོ་།། तावन्न केनचिच-छ्रोणस्य कोटीकर्णस्य मातापितृभ्यामारोचयितव्यं यावद् भाण्डं न प्रतिशामितं भवतीति। ते क्रियाकारं कृत्वा गताः वि.व.255ख/2.157.

ནང་ཁྲོལ अन्त्रम् – ནང་ཁྲོལ་ཡང་ནི་བདག་མིན་ཏེ།། ཞེས་པ་ལ། ནང་ཁྲོལ་དག་ནི་གྲགས་པ་ཉིད་དེ། དེ་ཡང་བདག་མ་ཡིན་ནོ།། अन्त्राणि नाप्यहमिति। अन्त्राणि प्रसिद्धानि, तान्यपि नाहम् बो.प.226ख/212.

ནང་ཁྲོལ་གཞན अन्त्रनिर्गुण्डी – སོ་དང་སྒྲ་སེན་བདག་མ་ཡིན།...།ནང་ཁྲོལ་གཞན་ཡང་བདག་མིན་ཏེ།། दन्त-

केशनखा नाहं... न चाहमन्त्रनिर्गुण्डी बो.अ.33क/9.59.

ནང་འཁྲུག डमरः – རྩོད་པ་དང་འཐབ་པ་ཞི་བ་དང་། འཁྲུག་པ་དང་ནང་འཁྲུག་དང་ཇོམ་ཀུན་དང་མུ་གེ་དང་ནད་རྣམས་མེད་པ་དང प्रशान्तकलिकलहडिम्बडमरं तस्कर[दुर्भिक्ष]रोगापगतम् अ.श.63ख/55.

ནང་ག *ना.* नङ्गा, नदी – ཆུ་བོ་མང་པོ...ནང་ག་ཕྱེ་མ་ལེབ་གདུངས་དང་།...།ནང་ག་ན་ནི་སྲིན་མོ་ཁྲོ॥ नद्यश्च...नङ्गा पतङ्गा तपनी...नङ्गायां राक्षसीकोपाः वि.व.213ख/1.88.

ནང་གི་དཀྱིལ་འཁོར अभ्यन्तरमण्डलम्–ནང་གི་དཀྱིལ་འཁོར་ནི་འཁོར་ལོ་རྩིབས་བརྒྱད་པ་རྡོ་རྗེ་ཕྲེང་བས་ཡོངས་སུ་བསྐོར་བའོ॥ अभ्यन्तरमण्डलमष्टारचक्रं वज्रावलीपरिवृतम् स.दु.108क/160; गर्भमण्डलम् – དེས་ན་མཆོད་རྟེན་གྱི་ཕྱི་རོལ་རྒྱུ་སྐར་གྱི་རྣམ་པར་དབྱེ་བས་མཆོད་རྟེན་གྱི་ནང་གི་དཀྱིལ་འཁོར་ནི་དཔལ་ལྡན་རྒྱུ་སྐར་གྱི་དཀྱིལ་འཁོར་རོ॥ तेन चैत्यबाह्ये नक्षत्रविभक्तेन चैत्यगर्भमण्डलं श्रीमान्नक्षत्रमण्डलमिति वि.प्र.93ख/3.5.

ནང་གི་སྐྱེ་མཆེད आध्यात्मिकमायतनम् – དགེ་སློང་མིག་ནི་ནང་གི་སྐྱེ་མཆེད་དེ चक्षुर्भिक्षो आध्यात्मिकमायतनम् अभि.भा.30क/31.

ནང་གི་ཁྱད་པར अवान्तरभेदः – འོན་ཏེ་དེ་ལ་ནང་གི་ཁྱད་པར་ཡོད་དེ अथावान्तरभेदस्तत्र विद्यते प्र.अ.143ख/490; द्र. ནང་གི་དབྱེ་བྲག॥

ནང་གི་ཁྱབ་པ • *पा.* अन्तर्व्याप्तिः – ཁ་ཅིག་ཕྱོགས་ཉིད་མཐུན་པའི་ཕྱོགས་ལ་ལྟོས་པའི་ནང་གི་ཁྱབ་པ་[དང་ཕྱིའི་ཁྱབ་པ་]བསྟན་པ་ཡིན་ནོ་སྙམ་དུ་ལོག་པར་རྟོག་པ पक्षसपक्षापेक्षयान्तर्व्याप्तिः, बहिर्व्याप्तिश्च प्रदर्श्यते इत्येके विप्रतिपन्नाः वा.टी.55क/8; • *ना.* अन्तर्व्याप्तिः, ग्रन्थः क.त.4260.

ནང་གི་ཁྱིམ वासगृहम्, गर्भागारम् – गर्भागारं वासगृहम् अ.को.2.2.8; वासाय गृहं वासगृहम् । गृहान्तर्गृहनामनी अ.वि.2.2.8.

ནང་གི་རྒྱ་མཚོ आभ्यन्तरः समुद्रः, अन्यतरः समुद्रः – དེ་དག་བར་བདུན་རོལ་མཚོ་ཡིན། །དང་པོ་སྟོང་ཕྲག་བརྒྱད་ཅུ་འོ། །དེ་ནི་ནང་གི་རྒྱ་མཚོ་ཡིན།...།ལྷག་མ་ཕྱི་ཡི་མཚོ་ཆེན་ཡིན॥ शीताः सप्तान्तराण्येषामाद्याशीतिसहस्रिका ॥ आभ्यन्तरः समुद्रोऽसौ ...शेषं बाह्यो महोदधेः ॥ अभि.को.8ख/510.

ནང་གི་སྙེ་མ *ना.* अन्तर्मञ्जरी, ग्रन्थः – ནང་གི་སྙེ་མ་ཞེས་བྱ་བ अन्तर्मञ्जरीनाम क.त.1377.

ནང་གི་གཏེར अन्तर्निधिः, देहल्या अभ्यन्तरनिधिः – ཤེས་རབ་ཀྱིས་སོ་སོར་བརྟག་པར་བྱ་བ་དྲུག་པོ་ནང་གི་གཏེར་དང་ཕྱིའི་གཏེར་དང...ཆུ་འགྲམ་གྱི་གཏེར་ཏེ षट् प्रज्ञाप्रतिवेदनीयानि ज्ञातव्यानि अन्तर्निधिर्बहिर्निधिः...उदकान्ते निधिः वि.व.198ख/1.71; ནང་གི་གཏེར་ཅི་ཞེ་ན། ནང་གི་གཏེར་ཞེས་བྱ་བ་ནི། ཐེམ་པའི་ནང་རོལ་ན་ཡོད་པའི་གཏེར་ཡིན་ནོ॥ अन्तर्निधिरिति किम् । अन्तर्निधिर्देहल्या अभ्यन्तरनिधिः वि.व.198ख/1.72.

ནང་གི་རྟེན आध्यात्मिकाश्रयः – གནད་མི་བཟད་པར་བསྣུན་པ་ལ་སོགས་པ་ནི་འཁྲུལ་པའི་རྒྱུ་ནང་གི་རྟེན་ལ་གནས་པ་གཟུང་ངོ་॥ गाढमर्मप्रहारादय आध्यात्मिकाश्रयस्था विभ्रमहेतवो गृह्यन्ते न्या.टी.42ख/55.

ནང་གི་རྟེན་ཅིང་འབྲེལ་བར་འབྱུང་བ *पा.* आध्यात्मिकः प्रतीत्यसमुत्पादः – བློ་གྲོས་ཆེན་པོ་ཆོས་ཐམས་ཅད་ཀྱི་རྟེན་ཅིང་འབྲེལ་བར་འབྱུང་བའི་མཚན་ཉིད་རྣམ་པ་གཉིས

ཏེ། འདི་ལྟར་ཕྱིའི་དང་ནང་གིའོ།། ...བློ་གྲོས་ཆེན་པོ་དེ་ལ་ནང་གི་རྟེན་ཅིང་འབྲེལ་བར་འབྱུང་བ་ནི་འདི་ལྟ་སྟེ།...མ་རིག་པ་དང་སྲེད་པ་དང་ལས་དང་ཆོས་འདི་དག་ལ་སོགས་པ་ནི द्विप्रकारं महामते प्रतीत्यसमुत्पादहेतुलक्षणं सर्वधर्माणां यदुत बाह्यं च आध्यात्मिकं च...तत्र आध्यात्मिकः प्रतीत्यसमुत्पादो यदुत अविद्या तृष्णा कर्मेत्येवमाद्या महामते धर्माः ल.अ.88क/35; ས་དང་ཆུ་དང་མེ་དང་རླུང་དང་ནམ་མཁའ་དང་རྣམ་པར་ཤེས་པའི་ཁམས་འདུས་པ་ལས་ནང་གི་རྟེན་ཅིང་འབྲེལ་བར་འབྱུང་བ་རྐྱེན་དང་འབྲེལ་བར་བལྟའོ།། पृथिव्यप्तेजोवाय्वाकाशविज्ञानधातूनां समवायादाध्यात्मिकस्य प्रतीत्यसमुत्पादस्य प्रत्ययोपनिबन्धो द्रष्टव्यः शि.स.124क/120.

ནང་གི་རྟེན་ལ་གནས་པ *वि.* आध्यात्मिकाश्रयस्थः – གནོད་མི་བཟད་པར་བསྣུན་པ་ལ་སོགས་པ་ནི་འཁྲུལ་པའི་རྒྱུ་ནང་གི་རྟེན་ལ་གནས་པ་གཟུང་ངོ་།། गाढमर्मप्रहारादय आध्यात्मिकाश्रयस्था विभ्रमहेतवो गृह्यन्ते न्या.टी.42ख/55.

ནང་གི་ལྟ་བ अध्यात्मदृष्टिः लो.को.1338.

ནང་གི་དོན आन्तरार्थः – ཤེས་པའི་རྣམ་པ་བཀག་པས་ཀྱང་། །ནང་གི་དོན་ནི་བརྗོད་བྱ་མིན།། ज्ञानाकारनिषेधाच्च नान्तरार्थोऽभिधीयते॥ त.स.36ख/385.

ནང་གི་གདུང་བ अन्तर्दाहः – རིགས་ཀྱི་བུ་འདི་ལྟ་སྟེ། ཚིག་གིས་འདོད་པ་ཆུང་ལ་སེམས་ཀྱིས་རྙེད་པ་འདོད་པ་འདི་ནི་ནང་གི་གདུང་བ་ཡིན་ཏེ अन्तर्दाह एष कुलपुत्र यद्वाचा अल्पेच्छता चित्तेन लाभकामता शि.स.148क/143; द्र. ནང་གི་ཡོངས་སུ་གདུང་བ།

ནང་གི་བདག་ཉིད • *सं.* 1. अन्तरात्मा – ཐམས་ཅད་ལས་ནི་སེམས་བསྡུས་ནས། །ནང་གི་བདག་ཉིད་གཡོ་མེད་པས། །གནས་ནའང་མིག་གིས་གཟུགས་དག་ནི། །མཐོང་བའི་བློ་དེ་དབང་སྐྱེས་ཡིན།། संहृत्य सर्वतश्चिन्तां स्तिमितेनान्तरात्मना। स्थितोऽपि चक्षुषा रूपमीक्षते साक्षजा मतिः॥ प्र.वा.123क/2.124 2. अध्यात्मम् – सूक्ष्ममध्यात्मम् अ.को.3.3.144; • *वि.* आध्यात्मिकः – ཡང་ན་ནང་གི་བདག་ཉིད་ཀུན། །བདག་མེད་ཉིད་ཀྱིས་ལུས་ཅན་ཏེ།། अथ वाऽऽध्यात्मिकाः सर्वे नैरात्म्याक्रान्तमूर्त्तयः। त.स.9ख/117.

ནང་གི་བདེ་བ आन्तरं सुखम्–འདིར་གཟུགས་ལ་སོགས་པ་སྣང་བ་ན་དུས་གཅིག་ཏུ་ནང་གི་བདེ་བ་ལ་སོགས་པའི་རྣམ་པ་ནི་མྱོང་བ་ཡིན་ནོ།། इह च रूपादौ वस्तुनि दृश्यमाने आन्तरः सुखाद्याकारस्तुल्यकालं संवेद्यते न्या.टी.43ख/65; अध्यात्मसुखम् लो.को.1338.

ནང་གི་ནམ་མཁའི་ཁམས *पा.* आध्यात्मिक आकाशधातुः – ནང་གི་ནམ་མཁའི་ཁམས་གང་ཞེ་ན། གང་ཅི་ཡང་རུང་སྟེ། ལུས་འདི་ལ་ནང་གི་ཡོད་ན་ཉེ་བར་གྱུར་པ་དང་། ཟིན་པ་དང་ནམ་མཁའ་དང་ནམ་མཁའི་རྣམ་པ་ནང་ཞེས་བྱ་བའི་གྲངས་སུ་འགྲོ་བ། མ་གང་བ་[མ་གསས་པ་] དང་བགས་པ་དང་ཤ་དང་ཁྲག་གིས་གང་བར་[གས་པར་] བྱ་བ་མ་ཡིན་པའོ།། आध्यात्मिक आकाशधातुः कतमः ? यत्किंचिदस्मिन् कायेऽध्यात्मं प्रत्यात्ममुपगतमुपात्तमाकाशगतमिहाभ्यन्तरसंख्याभूतम्, अस्फुटमस्फरणीयं त्वङ्मांसशोणितेन शि.स.137ख/133.

ནང་གི་རྣམ་པར་གཡེང་བ *पा.* अध्यात्मविक्षेपः, विक्षेपभेदः – གཡེང་བ་རྣམ་པ་དྲུག་ནི། རང་བཞིན་གྱིས་རྣམ་པར་གཡེང་བ་དང་ཕྱི་རོལ་ཏུ་རྣམ་པར་གཡེང་བ་དང་ནང་གི་རྣམ་པར་གཡེང་བ་དང་...ཡིད་ལ་བྱེད་པའི་རྣམ་པར་གཡེང་བའོ།། षड्विधो विक्षेपः–प्रकृतिविक्षेपः, बहि-

धर्विक्षेपः, अध्यात्मविक्षेपः... मनसिकारविक्षेपश्च म.भा.21ख/5.11.

ནང་གི་ཕྱག་རྒྱ *पा.* अध्यात्ममुद्रा – སད་པ་དང་རྨི་ལམ་དང་ཤིན་ཏུ་གཉིད་ལོག་པ་དང་བཞི་པའི་མཚན་ཉིད་རྣམ་པར་དག་པ་རྣམས་ཀྱིས་སྒྲིབ་པ་མེད་པའི་ཕྱིར་ནང་གི་ཕྱག་རྒྱ་རྣམས་དག་པ་སྟེ जाग्रत्स्वप्नसुषुप्ततुर्यलक्षणैर्विशुद्धैर्निरावरणादध्यात्ममुद्राः शुद्धाः वि.प्र.60ख/4.106.

ནང་གི་ཕྱོགས अभ्यन्तरपार्श्वम् – ཆུ་དྲོན་གཞག་པའི་ཕྱིར་ནང་གི་ཕྱོགས་སུ་བཞག་སྐེགས་བྱའོ॥ तप्तजलस्थापनार्थमभ्यन्तरपार्श्वकपोतमालाकरणम् वि.सू.6क/6.

ནང་གི་འཕར་མ अध्यात्मकपुटम्, अभ्यन्तरपुटम् – རེ་ཞིག་ནང་གི་འཕར་མ་ལ། །རྣལ་འབྱོར་མ་ལྔ་ངེས་གནས་པ॥ अध्यात्मकपुटे तावत् स्थिता वै पञ्चयोगिन्यः। हे.त.9क/26.

ནང་གི་བྱེ་བྲག अवान्तरभेदः – དེ་ཕྱིར་རྟེན་ལྔའི་གཟུང་བ་ནི། །རྣམ་པ་ལྔར་ནི་བསྟན་པར་བྱ། །དེ་ཡི་ནང་གི་བྱེ་བྲག་ནི། །ལྔ་ལ་གནོད་པ་མེད་པ་ཉིད॥ तस्मात् पञ्चाश्रयग्राह्यं पञ्चधा व्यपदिश्यताम्। तस्यावान्तरभेदस्तु पञ्चत्वानुपरोधकृत्॥ प्र.अ.47ख/54; द्र. ནང་གི་ཁྱད་པར།

ནང་གི་བྱེ་བྲག་གི་རྣམ་པར་དབྱེ་བ अवान्तरविभागः – ལུང་ཐམས་ཅད་ལའང་སོ་སོར་ངེས་པའི་ལུང་གི་དོན་གྱི་ནང་གི་བྱེ་བྲག་གི་རྣམ་པར་དབྱེ་བ་དམིགས་པ་ནི། སྐྱེས་བུ་ཙམ་གྱིས་རང་གིས་བརྟགས་ནས་རྗེས་སུ་སྒྲུབ་པར་ནུས་པ་མ་ཡིན་ནོ॥ न हि प्रतिनियतागमार्थावान्तरविभागाः सर्वागमेष्वपि समुपलब्धाः स्वयमुत्प्रेक्ष्य विधातुं शक्याः पुरुषमात्रेण प्र.अ.8ख/10.

ནང་གི་བྱེད = ནང་གི་བྱེད་པ།

ནང་གི་བྱེད་པ 1. = སེམས अन्तःकरणम्, मनः – སྐྱེ་རྒུ་བྲལ་བའི་སྡུག་བསྔལ་ལས། །རབ་སྐྱེས་ཆེ་ངེའི་སྒྲ་ནི་ནང་གི་བྱེད་པ་དག། །ངེས་པར་འཇོམས་པ་རྒྱལ་པོ་དེས་ནི་ཇི་ལྟར་བཟོད॥ स राजा सहते कथं नु...विदारितान्तःकरणं प्रजानां वियोगदुःखोद्भवमार्तनादम्॥ अ.क.32ख/3.155 2. अन्तर्व्यापारः – དེས་ན་ནི་ནང་གི་བྱེད་པའི་སྐྱེས་བུ་སྲོག་གི་རྫས་གཅིག་པོ་དྲིས་སོ॥ स हि जीवद्रव्यमेकमन्तर्व्यापारपुरुषमधिकृत्य पृष्टवान् अभि.भा.88ख/1209.

ནང་གི་བྱེད་པ་ཅན *वि.* अन्तःकरणः – ཚངས་པ་མཆོག་གི་བདག་ཉིད་དེ་ནི་མངོན་པར་མཐོ་བ་དང་ངེས་པར་ལེགས་པའི་འབྲས་བུའི་ཆོས་རྗེས་སུ་འཛིན་པའི་ནང་གི་བྱེད་པ་ཅན་རྣལ་འབྱོར་པ་རྣམས་ཀྱིས་མཐོང་ངོ་॥ तं तु परमं ब्रह्मात्मानमभ्युदयनिःश्रेयसफलधर्मानुगृहीतान्तःकरणा योगिन एव पश्यन्ति त.प.188ख/94.

ནང་གི་བྱེད་པོ = སེམས अन्तःकरणम्, मनः छो.को.460/रा.को.1.53; द्र. ནང་གི་བྱེད་པ།

ནང་གི་མི = ནང་མི།

ནང་གི་མུན་པ = མི་ཤེས་པ अन्तस्तमः, अज्ञानम् – ནང་གི་མུན་པའི་ཚོགས་འཇོམས་པ॥ विधूतान्तस्तमश्चयः त.स.113ख/981; ནང་གི་མུན་པ་ནི། ཉོན་མོངས་པ་དང་ཉོན་མོངས་པ་ཅན་མ་ཡིན་པའི་མི་ཤེས་པའོ॥ अन्तस्तमः क्लिष्टाक्लिष्टमज्ञानम् त.प.216क/902.

ནང་གི་མུན་པའི་ཚོགས་འཇོམས་པ *वि.* विधूतान्तस्तमश्चयः – དེས་ན་དབང་འདས་དོན་མཐོང་བ། །ནང་གི་མུན་པའི་ཚོགས་འཇོམས་པ། །རིག་བྱེད་དོན་གྱི་དབྱེ་ཤེས་དང་། །བྱེད་པ་པོ་ཡང་ཁས་བླང་གྱིས॥ अतीन्द्रियार्थदृक् तस्माद् विधूतान्तस्तमश्चयः। वेदार्थप्रविभागज्ञः

कर्त्ता चाभ्युपगम्यताम् ॥ त.स.113ख/981.

ནང་གི་མེའི་ཁམས *पा.* आध्यात्मिकस्तेजोधातुः – ནང་གི་མེའི་ཁམས་གང་ཞེ་ན། གང་ཅི་ཡང་རུང་སྟེ། ལུས་འདི་ལ་མེ་དང་མེའི་རྣམ་པ་དང་། དྲོ་བ་དང་དྲོ་བའི་རྣམ་པ་དང་། ཉེ་བར་གྱུར་པ་དང་ཟིན་པའོ།། आध्यात्मिकस्तेजोधातुः कतमः ? यत्किंचिदस्मिन् काये तेजस्तेजोगतमूष्म[मूष्मोष्म]गतमुपगतमुपात्तम् शि.स.137क/132.

ནང་གི་དམིགས་པ आध्यात्मिकालम्बनम् – ཕྱི་ནང་གི་དམིགས་པ་གཉིས་པོ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་དེ་བཞིན་ཉིད་རྙེད་པ द्वयस्य पुनः समस्तस्याध्यात्मिकबाह्यालम्बनस्य तथताया लाभः सू.अ.165ख/56.

ནང་གི་ཡན་ལག अन्तरङ्गः – དེ་བརྡ་རྩོལ་བ་ལ་སོགས་པ། །ནང་གི་ཡན་ལག་རྗེས་འཇུག་ཕྱིར། །བུམ་པ་ལ་འདེགས་ཕྱི་དང་ནི། །གྲངས་སོགས་བློས་ནི་བཤད་པ་ཡིན།། एतेन समयाभोगाद्यन्तरङ्गानुरोधतः। घटोत्क्षेपणसामान्यसंख्यादिषु धियो गताः ॥ प्र.अ.172ख/187.

ནང་གི་ཡོངས་སུ་གདུང་བ अन्तर्दाहः – འཆི་བ་ན་རྨོངས་པ་མངོན་པར་ཆགས་པ་དང་བཅས་པའི་ནང་གི་ཡོངས་སུ་གདུང་བ་ནི་མྱ་ངན་ནོ།། म्रियमाणस्य मूढस्य साभिष्वङ्गस्यान्तर्दाहः शोकः शि.स.125क/121; द्र. ནང་གི་གདུང་བ།

ནང་གི་རིག་པ = ནང་རིག་པ།

ནང་གི་རླུང་གི་ཁམས *पा.* आध्यात्मिको वायुधातुः – ནང་གི་རླུང་གི་ཁམས་གང་ཞེ་ན། གང་ལུས་འདི་ལ་རླུང་དང་རླུང་གི་རྣམ་པ་དང་། ཡང་བ་ཉིད་དང་གཡོ་བ་ཉིད་དང་ཉེ་བར་གྱུར་པ་དང་ཟིན་པའོ།། [आध्यात्मिको वायुधातुः कतमः ?] यत्किंचिदस्मिन् काये वायुर्वायुगतं लघुत्वं समुदीरणत्वम् [उपगतमुपात्तम्] शि.स.137ख/133.

ནང་གི་ལེའུ अध्यात्मपटलः – ནང་གི་ལེའུ་ལས་མངལ་ནས་སྐྱེས་པའི་བྱིས་པའི་གནས་སྐབས་རྣམ་པ་བཞིའི་དབྱེ་བས་མངལ་དང་ཕྱི་རོལ་དུ་སྐུ་བཞིར་གསུངས་པ་ཇི་ལྟ་བ यथा जरायुजस्य बालस्याध्यात्मपटले गर्भे बाह्ये चतुर्विधावस्थाभेदेन चतुर्विधः काय उक्तः वि.प्र.55क/4.95.

ནང་གི་སེམས 1. अध्यात्मचित्तम् – ནང་གི་སེམས་རྡོ་རྗེ་འཛིན་པ་ཁྱབ་འཇུག་གི་གནས་སྐབས་བཅུ་གསུངས་ཏེ अध्यात्मचित्तवज्रधरविष्णोर्दशावस्था उच्यन्ते वि.प्र.224क/2.6 2. अन्तर्भावः – བྱ་བ་རྣམས་ལ་ཇི་ལྟ་བ་བཞིན་དུ་སྡུག་བསྔལ་བ་རྣམས་དང...ནང་གི་སེམས་འཇམ་པོས་ཚར་གཅད་པ་དང यथा कृत्येषु एवं दुःखेषु ...स्निग्धेन चान्तर्भावेन विनिग्रहे बो.भू.79क/101; द्र. ནང་གི་བསམ་པ།

ནང་གི་སེམས་རྡོ་རྗེ་འཛིན་པ *वि.* अध्यात्मचित्तवज्रधरः – ནང་གི་སེམས་རྡོ་རྗེ་འཛིན་པ་ཁྱབ་འཇུག་གི་གནས་སྐབས་བཅུ་གསུངས་ཏེ अध्यात्मचित्तवज्रधरविष्णोर्दशावस्था उच्यन्ते वि.प्र.224क/2.6.

ནང་གི་བསམ་པ अन्तर्भावः – ཀུན་ནས་མནར་སེམས་དང་རྒྱབ་ཀྱིས་ཕྱོགས་པར་གྱུར་དུ་དོགས་པ་རྣམས་ལ་དགའ་བའི་བཞིན་གྱིས་ནང་གི་བསམ་པ་དག་པར་བསྟན་པའི་ཕྱིར་བྱས་ན་ཉེས་པ་མེད་དོ།། अनापत्तिः...आघातवैमुख्यसम्भावनाजातानां सौमुख्यान्तर्भावशुद्ध्युपदर्शनार्थम् बो.भू.91क/116.

ནང་སྒོ अन्तर्द्वारम् मि.को.140ख।

ནང་སྒྲུབ अन्तरसाधनम् – ཆོས་རྒྱལ་ནང་སྒྲུབ अन्तरसाधन धर्मराज लो.को.1338; འཇམ་དབྱངས་ནང་སྒྲུབ अन्तरसाधन मञ्जुघोष लो.को.1338.

ནང་ཅན = ཁོག་སྟོང་ कोटरम्, वृक्षविवरम् – निष्कुहः कोटरं वा अ.को.2.4.13; कुटिलसुषिरत्वात् कुटतीति कोटरम्। कुट कौटिल्ये...वृक्षगतविवरनामनी अ.वि.2.4.13.

ནང་ཆུད = ནང་དུ་ཆུད་པ།

ནང་འཇུག = ནང་དུ་འཇུག་པ།

ནང་འཇུག་པ = ནང་དུ་འཇུག་པ།

ནང་རྗེ = ཁང་བདག पुरुषः, गृहस्वामी – ཀྱེ་ནང་རྗེ་འདི་ན་ཆུ་ཡོད་དམ भोः पुरुष। अस्त्यत्र पानीयम् वि.व. 356ख/2.158; ཀྱེ་ནང་རྗེ་ཚུར་སོག། ཁྱོད་རྒྱལ་པོ་བྲམ་ཟེ་མེས་སྦྱིན་གང་ན་བ་དེར་སོང་ལ एहि त्वं भोः पुरुष येनाग्निदत्तो ब्राह्मणराजस्तेनोपसंक्रम वि.व.142क /1.31.

ནང་སྟོང་ཉིད = ནང་སྟོང་པ་ཉིད།

ནང་སྟོང་པ་ཉིད *पा.* अध्यात्मशून्यता, शून्यताभेदः – སྟོང་པ་ཉིད་རྣམ་པ་བཅུ་དྲུག་པོ་འདི་ལྟ་སྟེ། ནང་སྟོང་པ་ཉིད་དང་ཕྱི་སྟོང་པ་ཉིད་དང... དངོས་པོ་མེད་པའི་ངོ་བོ་ཉིད་སྟོང་པ་ཉིད་དོ།། षोडशविधा शून्यता–अध्यात्मशून्यता, बहिर्धाशून्यता...अभावस्वभावशून्यता च म.भा.4ख/1.17; म.व्यु.934(21क).

ནང་དང་ཕྱིའི་ཆོས་ལ་མངོན་པར་ཞེན་པ अध्यात्मबाह्यधर्माभिनिवेशः – བློ་གྲོས་ཆེན་པོ་དེ་ལ་དངོས་པོའི་མཚན་མ་ལ་མངོན་པར་ཞེན་པའི་མཚན་ཉིད་ནི་འདི་ལྟ་སྟེ། ནང་དང་ཕྱིའི་ཆོས་ལ་མངོན་པར་ཞེན་པའོ།། तत्र वस्तुनिमित्ताभिनिवेशलक्षणं पुनर्महामते यदुत अध्यात्मबाह्यधर्माभिनिवेशः ल.अ.81ख/29.

ནང་དུ་བགྲི་བ <?> *भू.का.कृ.* प्रवेशितः – རྒྱལ་པོ་གསོ་སྦྱོང་འཕགས་གྱིས་གཞོན་ནུ་བྱུང་མ་ཐག་ཏུ་བཙུན་མོའི་འཁོར་དྲུག་ཁྲིའི་ནང་དུ་བགྲི་བ་[? བགྲིས་པ་] उपोषधस्य राज्ञः षष्टिः स्त्रीसहस्राणि। जातः कुमारोऽन्तःपुरं प्रवेशितः वि.व.156क/1.44.

ནང་དུ་ཁྲིད *भू.का.कृ.* प्रवेशितः – དེས་དེ་ནང་དུ་ཁྲིད་ནས་དབེན་པ་ཞིག་ཏུ་བཞག་གོ།། तया प्रवेशितः। सुगुप्ते प्रदेशे स्थापितः वि.व.217ख/1.94.

ནང་དུ་ཆུད = ནང་དུ་ཆུད་པ།

ནང་དུ་ཆུད་གྱུར = ནང་དུ་ཆུད་པར་གྱུར་པ།

ནང་དུ་ཆུད་པ *वि.* अन्तर्गतम् – རྣལ་འབྱོར་པའི་ཡེ་ཤེས་དེའི་ནང་དུ་ཆུད་པ་ཡིན་ནོ།། योगिनो ज्ञानं तदन्तर्गतमेव ज्ञा.सि.54क/139; དེ་བཞིན་ཡིད་ཀྱི་ནང་ཆུད་རིན་ཆེན་གཉེར།། तद्वन्मनोऽन्तर्गतम्...रत्नकोशम् र.वि. 59ख/63; द्र. ནང་དུ་གཏོགས་པ། ནང་དུ་འདུས་པ། ནང་དུ་མཆིས་པ།

ནང་དུ་ཆུད་པར་གྱུར་པ *भू.का.कृ.* अन्तर्भूतम् – བྱང་ཆུབ་ཀྱི་སེམས་ལ་སོགས་པའི་བསོད་ནམས་ཀྱི་ཚོགས་སྐད་ཅིག་སོ་སོ་ལ་ནམ་མཁའི་ཁམས་ཁྱབ་པར་བྱེད་པ་ཆེན་པོའི་ནང་དུ་ཆུད་པར་གྱུར་པས་རྒྱ་མཚོར་ལན་ཚྭ་སྲང་གཅིག་གི་དཔེ་བཞིན་དུ་མི་མངོན་པའི་ཕྱིར बोधिचित्तप्रसूते प्रतिक्षणमाकाशधातुव्यापके महति पुण्यौघेऽन्तर्भूततया लवणपलोपमन्यायेन अप्रज्ञायमानत्वात् बो.प.50क /10; अन्तर्गतम् – ཇི་ལྟར་དྲི་མེད་གསེར་འབར་ལས་བྱས་ས་ཡི་ནང་དུ་ཆུད་གྱུར་གཟུགས།། यद्वन्निर्मलदीप्तकाञ्चनमयं बिम्बं मृदन्तर्गतम् र.वि.60ख/66.

ནང་དུ་ཆུད་པར་བྱས། °ཏེ अनुप्रविश्य – པི་ཝང་གི་ནང་དུ་ཆུད་པར་བྱས་ཏེ वीणामनुप्रविश्य ल.अ.56ख/1.

ནང་དུ་འཇུག་པ • *क्रि.* प्रविशति – གང་ཞིག་དུས་མིན་ཉེར་བསྒྲོད་དང་། །མ་བརྗོད་པར་ནི་ནང་འཇུག་དང་།། उ-

पसर्पत्यकाले यः प्रविशत्यनिवेदितः । अ.क.174ख /78.18; • सं. प्रवेशः – སོར་མོ་གདངས་ཤིང་གཡོ་བ ཡིས། །ནང་འཇུག་བསམ་པ་ཟློག་བྱེད་ཅིང་།། निवारयन् प्रवेशाशामुन्नताङ्गुलिदोलया ॥ अ.क.184क/80.42.

ནང་དུ་བརྗོད་པ अन्तर्जल्पः – དེ་ཡང་ཕྱི་རོལ་གྱི་སྦྱོར བའི་དབང་དུ་བྱས་པ་མ་ཡིན་ནོ།། འོ་ན་ཅི་ཞེ་ན། ནང་དུ བརྗོད་པའི་བདག་ཉིད་ཁོ་ན་ཡིན་ཏེ न तद्बहिर्भूतं प्रयोगमधिकृत्य। किं तर्हि ? अन्तर्जल्पात्मकमेव त.प. 138क/8.

ནང་དུ་གཏོགས = ནང་དུ་གཏོགས་པ།

ནང་དུ་གཏོགས་པ वि. अन्तर्गतः – དངོས་པོ་གཅིག་གི ཁོངས་སུ་འདུས་པའི་ཕྱིར། ཁང་པ་གཅིག་གི་ནང་དུ གཏོགས་པའི་ཁང་མིག་བཞིན་ཏེ एकवस्त्वन्तर्गतत्वात्, एकावसथान्तर्गतापवरकवत् त.प.178क/ 73; द्र. ནང་དུ་ཆུད་པ། ནང་དུ་འདུས་པ། ནང་དུ་མཆིས པ།

ནང་དུ་བལྟ་བ अन्तर्मुखप्रवृत्तम् म.व्यु.6735(96क).

ནང་དུ་བལྟས = ནང་དུ་བལྟས་པ།

ནང་དུ་བལྟས་པ वि. अन्तर्मुखम् – ཕྱི་རོལ་དུ་བལྟས་པ དང་ནང་དུ་བལྟས་པའི་བྱེ་བྲག་དང बहिर्मुखान्तर्मुखभेदतः अभि.स.भा.15क/19; अन्तर्मुखप्रवृत्तम् म.व्यु. 6735.

ནང་དུ་ཕྱོང क्रि. प्रविशतु – ལྷ་མོ་སློང་བ་མངོན་འོངས པ། །འདི་ནི་མ་ཟློག་ནང་དུ་ཕྱོང་།། देवि याच्ञाभियातोऽसौ प्रविशत्वनिवारितः। अ.क.50क/5.41.

ནང་དུ་འདུ་བ सन्निपातः – དགེ་བའི་བར་ཆད་བྱེད་པའི ཆོས་ཞེས་བྱ་བ་ནི་རྒྱུན་མི་འཆད་པར་ཚོགས་ཀྱི་ནང་དུ འདུ་བ་ལ་སོགས་པའོ།། कुशलान्तरायिका धर्मा अभीक्ष्णं गणसन्निपातादयः अभि.स.भा.21क/27.

ནང་དུ་འདུས = ནང་དུ་འདུས་པ།

ནང་དུ་འདུས་པ • क्रि. अन्तर्भवति – དེ་ལ་ཕྱག་འཚལ བ་ནི་སྡིག་པ་བཤགས་པའི་ནང་དུ་འདུས་ཏེ तत्र वन्दना पापदेशनायामन्तर्भवति शि.स.159क/152; • सं. 1. अन्तर्भावः – དེའི་ཕྱིར་འདི་ཉིད་[འདི་གཉིས་]གཅིག གི་ནང་དུ་འདུས་པ་མེད་དོ།། ततो नानयोरन्योन्यान्तर्भावः न्या.टी.78क/207; अन्तर्गमः – གཟུགས་ལ སོགས་པའི་རང་བཞིན་ཡིན་པ་ཉིད་ཀྱིས་གཟུགས་ཀྱི་ཕུང པོའི་ནང་དུ་འདུས་པའི་ཕྱིར་རོ།། रूपादिस्वभावत्वेन रूपस्कन्धस्यान्तर्गमात् प्र.अ.178ख/193; अबहिर्भावः – ཉེ་བར་འཇལ་བར་གྲགས་ལྡན་པ། །དེ་ལ་སླར ཡང་རི་ཁྲོད་པས། །བྱས་པའི་ལུང་ལས་དེ་ཉིད་ཀྱིས། །ནང དུ་འདུས་པར་གཞན་སྨྲས་པ།། एतस्मिन्नुपमानत्वं प्रसिद्धं शाबरे पुनः। अस्यागमाबहिर्भावादन्यथैवोपवर्णितम् ॥ त.स.56क/543; क्रोडीकरणम् – དེ་གཉིས ཀྱིས་དངོས་པོ་ཐམས་ཅད་བསྡུས་པའི་ཕྱིར་དེའི་ནང་དུ འདུས་པའི་ཕྱིར་རོ།། ताभ्यां सर्वस्य वस्तुनः संग्रहात् क्रोडीकरणात् न्या.टी.81क/216 2. = ནང་དུ་འདུས་པ ཉིད अन्तर्गतत्वम् – ཉེ་བར་འཇལ་བའི་ཚད་མ་གཞན དུ་ཐལ་བར་འགྱུར་རོ་ཞེ་ན། མ་ཡིན་ཏེ། རྗེས་སུ་དཔག་པའི ནང་དུ་འདུས་པའི་ཕྱིར་རོ།། उपमानं प्रमाणमपरं प्रसक्तमिति चेत्। न, अनुमानान्तर्गतत्वात् प्र.अ.143क/ 489; དགོས་པའི་ནང་དུ་འདུས་པའི་ཕྱིར་ལོགས་ཤིག་ཏུ མ་བརྗོད་དོ།། प्रयोजनान्तर्गतत्वात् पृथगसौ नाभिहितः वा.टी.52क/4; • भू.का.कृ. अन्तर्गतम् – བློ་གྲོས ཆེན་པོ་འདི་ཉིད་ཀྱི་ནང་དུ་རང་བཞིན་གསུམ་དང་རྣམ པར་ཤེས་པ་བརྒྱད་དང་བདག་མེད་པ་གཉིས་ཀྱང་འདུས སོ།། अत्रैव महामते त्रयः स्वभावा अन्तर्गताः, अष्ट-

टौ च विज्ञानानि, द्वे च नैरात्म्ये ल.अ.146क/92; अन्तर्भूतम् – ཁམས་བཞི་ནི་རེག་བྱའི་ཁམས་ཀྱི་ནང་དུ་འདུས་སོ།། चत्वारो धातवः स्प्रष्टव्यधातावन्तर्भूताः अभि.भा.39ख/77; अन्तर्भावितम् – བྱས་པའི་སྒྲ་ཉིད་ཀྱིས་ཐ་དད་པའི་བྱེ་བྲག་གི་ཚིག་ནང་དུ་འདུས་པ་ཡིན་ནོ།། कृतकशब्देनैव व्यतिरिक्तं विशेषणपदमन्तर्भावितम् न्या.टी.63ख/159; द्र.ནང་དུ་ཆུད་པ། ནང་དུ་མཆིས་པ། ནང་དུ་གཏོགས་པ། •वि. अन्तर्वर्ती– ལྷ་མ་ཡིན་རྣམས་ནི་ལྷའི་ནང་དུ་འདུས་པ་ཉིད་དོ།། असुरास्तु देवान्तर्वर्तिन एव वि.प्र.271क/2.93.

ནང་དུ་འདུས་པར་འགྱུར *क्रि.* अन्तर्भविष्यति – ལྷག་མ་བརྗོད་པའི་རིགས་རྣམས་ཀྱང་། །འདི་ཉིད་ནང་དུ་འདུས་པར་འགྱུར།། तत्रैवान्तर्भविष्यन्ति शेषास्त्वाख्यानजातयः ॥ का.आ.320क/1.28.

ནང་དུ་སྡུད་པ क्रोडीकरणम् – འོན་ཏེ་དེ་ཡང་ནང་དུ་བསྡུས་པ་ཉིད་དོ་ཞེ་ན། མ་ཡིན་ཏེ། མཐོང་བའི་རྗེས་སུ་འབྲང་བས་ནང་དུ་སྡུད་པར་མི་སྲིད་པའི་ཕྱིར་རོ།། अथ सोऽपि क्रोडीकृत एव। न, दृष्टानुसारेण क्रोडीकरणासम्भवात् प्र.अ.279ख/645.

ནང་དུ་བསྡུས་པ •*भू.का.कृ.* अन्तर्गतम् – དབང་པོ་རྣམས་ནང་དུ་བསྡུས་པ་དང་། ཡིད་ཕྱི་རོལ་དུ་མ་སོང་བ་དང་གསལ་བ་དང་དྲང་པོས་མི་འཐོགས་པར་བཅག་པར་བྱའོ།། अन्तर्गतैश्चंक्रम्येतेन्द्रियैरबहिर्गतेन मानसेनाविलम्बितं स्पष्टमृजु वि.सू.59क/75; क्रोडीकृतम् – འོན་ཏེ་དེ་ཡང་ནང་དུ་བསྡུས་པ་ཉིད་དོ་ཞེ་ན། མ་ཡིན་ཏེ། མཐོང་བའི་རྗེས་སུ་འབྲང་བས་ནང་དུ་སྡུད་པར་མི་སྲིད་པའི་ཕྱིར་རོ།། अथ सोऽपि क्रोडीकृत एव। न, दृष्टानुसारेण क्रोडी- करणासम्भवात् प्र.अ.279ख/645; •*सं.* अन्तर्भावनम् – དེའི་ཚེ་ནི་ལན་དུ་གཞི་མཐུན་པ་ཉིད་ཀྱིས་བ་ལང་ངོ་ཞེས་སོ།། དེ་ནང་དུ་བསྡུས་པ་ཉིད་ཀྱིས་འདྲི་བ་ཡིན་པའི་ཕྱིར་རོ།། तदा प्रतिवचनं गौरिति समानाधिकरणतया। तदन्तर्भावनेनैव प्रश्नभावात् प्र.अ.90क/97.

ནང་དུ་སྤྱན་དྲངས *भू.का.कृ.* प्रवेशितः – དེ་ནས་བཅོམ་ལྡན་འདས་ཉན་ཐོས་ཀྱི་དགེ་འདུན་དང་བཅས་པ། བཀུར་སྟི་ཆེན་པོ་དང་ལྡན་པས་ནང་དུ་སྤྱན་དྲངས་ནས་ཞལ་ཟས་བཟང་པོས་ཚིམ་པར་བྱས་སོ།། ततो राज्ञा भगवान् सश्रावकसङ्घो महता सत्कारेण प्रवेशितः, प्रणीतेन चाहारेण संतर्पितः अ.श.153ख/143.

ནང་དུ་སྤྱན་དྲངས་པ = ནང་དུ་སྤྱན་དྲངས།

ནང་དུ་སྤྱོན་ཅིག *क्रि.* प्रविशतु – ནང་དུ་སྤྱོན་ཅིག། ལེགས་ལྡན་ཀུན་དགའ་བོ་ལ་སུ་ཞིག་འགོག प्रविशतु, को भवन्तमानन्दं वारयति वि.व.142क/1.31.

ནང་དུ་ཕྱིན *क्रि.* प्राविशत् – དེ་ཡང་ནང་དུ་ཕྱིན་ཏོ།། स प्राविशत् ग.व्यू.388ख/96.

ནང་དུ་བྱས། ०ནས अन्तरीकृत्वा – འདོད་པའི་འདོད་ཆགས་ཀྱིས་ཀུན་ནས་དཀྲིས་པ་དེ་འདོད་པའི་འདོད་ཆགས་ཀྱིས་ཀུན་ནས་དཀྲིས་པ་ནང་དུ་བྱས་ནས་སེམས་པར་བྱེད स कामरागपर्यवस्थितः कामरागपर्यवस्थानमन्तरीकृत्वा ध्यायति अभि.स्फु.285ख/1128.

ནང་དུ་མི་འདུ་བ *क्रि.* नान्तर्याति – ཇི་ལྟར་དོན་དམ་པར་རེག་པ་ལ་སོགས་པ་ཡུལ་གཞན་གཟུགས་ལ་སོགས་པའི་རང་བཞིན་འཛིན་པའི་ནང་དུ་མི་འདུ་བ་དེ་བཞིན་དུ་འབྱུང་བར་འགྱུར་བའི་རང་བཞིན་ཡང་ཡིན་ནོ།། यथा च भिन्नो विषय[ः]स्पर्शादिकः न रूपादिस्वरूपग्रहणेऽन्तर्याति तथा भाविस्वरूपमपि परमार्थतः प्र.अ.4क/5.

ནང་དུ་མི་དགོས་པ अनन्तर्मुक्तः – སྔར་ཕྱི་རོལ་དུ་དྲུད་པ་ཉིད་ལའོ།། ནང་དུ་མི་དགོས་པར་ཕྱི་རོལ་ཉིད་དུའོ།། बहिर्नि-

घर्षपूर्वकत्वेऽनन्तर्मुक्तपरतायाम् वि.सू.12ख/14.

ནང་དུ་ཞུགས •*क्रि.* प्रविशतु – ཟན་ལ་ནང་དུ་ཞུགས། སྐྱོ་མ་ལ་ནང་དུ་ཞུགས प्रविश पिण्डीम्, प्रविश तर्पणम् अभि.स्फु.13ख/22; •= ནང་དུ་ཞུགས་པ།

ནང་དུ་ཞུགས་ཏེ། °ནས अवतीर्य – ཆུ་ཀླུང་དེའི་ནང་དུ་ཞུགས་ཏེ་དབུས་སུ་སྡོད་ནས तां नदीमवतीर्य मध्ये स्थित्वा अ.श.114ख/ 104; अवगाह्य – དེ་ནས་རྒྱལ་པོ་རྫིང་གི་ནང་དུ་ཞུགས་ནས ततो राजा पद्मिनीमवगाह्य अ.श.64क/56.

ནང་དུ་ཞུགས་པ •*सं.* अनुप्रवेशः – གཙོ་བོའི་ནང་དུ་ཞུགས་པ་ནི། །དེར་མེད་གཅིག་པ་ག་ལས་ཡིན། प्रधानानुप्रवेशो हि न तत्रास्त्येकता कुतः । प्र.अ.146ख/156; अनुगमः म.व्यु.1168(25क0; •*भू.का.कृ.* अवतीर्णः – རྒྱ་མཚོ་ཆེན་པོའི་ནང་དུ་ཞུགས་སོ། महासमुद्रमवतीर्णः अ.श.100ख/90; प्रविष्टः – ཚེ་དང་ལྡན་པ་ཀུན་དགའ་བོ་ནང་དུ་ཞུགས་སོ། आयुष्मानानन्दः प्रविष्टः वि.व.142क/1.31; अन्तर्गतः – ཆུ་སོགས་ནང་དུ་ཞུགས་པ་འདི། །གཟུགས་ནི་རིང་དུ་གནས་པ་ཡིན། जलाद्यन्तर्गतं चेदं बिम्बं त्वारादवस्थितम् ॥ त.स.92ख/846.

ནང་དུ་འཇུག *भू.का.कृ.* उपनिक्षिप्तम् – དེ་དག་ནི་སྨོན་ལམ་ཆེན་པོ་གཅིག་གི་ནང་དུ་འཇུག་ཅིང་འདུས་ཏེ་རྗེས་སུ་ཞུགས་པ་ལགས་ཏེ तान्येकस्मिन् महाप्रणिधाने उपनिक्षिप्तान्यन्तर्गतान्यनुप्रतिष्ठानि शि.स.30क/27.

ནང་དུ་འོང་བར་གྱིས་ཤིག *क्रि.* प्रविशतु लो.को.1339.

ནང་དུ་འོངས *भू.का.कृ.* अवतीर्णः – ཟློས་གར་མཁན་གྱི་གར་གྱི་སློབ་དཔོན་ཉིད་ནི། སངས་རྒྱས་ཀྱི་ཆ་ལུགས་ཀྱིས་ནང་དུ་འོངས་སོ། नटाचार्यः स्वयमेव बुद्धवेषेणावतीर्णः अ.श.203क/187.

ནང་དུ་འོངས་པ = ནང་དུ་འོངས།

ནང་དུ་ཡང་དག་འཇོག = ནང་དུ་ཡང་དག་འཇོག་པ།

ནང་དུ་ཡང་དག་འཇོག་པ •*सं.* प्रतिसंलयनम् – ནང་དུ་ཡང་དག་འཇོག་ཅེས་བྱ་བ་ནི་ཞི་གནས་དང་ལྷག་མཐོང་ངོ་། प्रतिसंलयनमुच्यते शमथो विपश्यना च श्रा.भू.59ख/147; ནང་དུ་ཡང་དག་འཇོག་པའི་བར་ཆད प्रतिसंलयनान्तरायः श्रा.भू.59क/145; •*वि.* प्रतिसंलीनः – ཀ་པི་ན་ཁྱོད་གཅིག་པུ་དབེན་པར་སོང་སྟེ་ནང་དུ་ཡང་དག་འཇོག་པ་ན་འདི་སྙམ་དུ ननु ते कप्फिण एकाकिनो रहोगतस्य प्रतिसंलीनस्यैवम् वि.व.138क/2.115.

ནང་དུ་ཡང་དག་འཇོག་པའི་བར་ཆད *पा.* प्रतिसंलयनान्तरायः, अन्तरायभेदः – བར་ཆད་ནི་མདོར་ན་རྣམ་པ་གསུམ་སྟེ། སྦྱོར་བའི་བར་ཆད་དང་རབ་ཏུ་དབེན་པའི་བར་ཆད་དང་ནང་དུ་ཡང་དག་འཇོག་པའི་བར་ཆད་དོ། समासतस्त्रिविधोऽन्तरायः । प्रयोगान्तरायः, प्राविवेक्यान्तरायः, प्रतिसंलयनान्तरायश्च श्रा.भू.59क /145.

ནང་དུ་ཡང་དག་འཇོག་པར་བྱེད་པ *वि.* प्रतिसंलीनः – བཅོམ་ལྡན་འདས་ཀྱང་ནང་དུ་ཡང་དག་པར་འཇོག་པར་མཛད་ལ། དགེ་སློང་ཡིད་དུ་འཐད་པ་རྣམས་ཀྱང་ནང་དུ་ཡང་དག་འཇོག་པར་བྱེད་པས प्रतिसंलीनो भगवान् प्रतिसंलीनाश्च मनोभावनीयाश्च भिक्षवः वि.व.131क /2.108.

ནང་དུ་ཡང་དག་འཇོག་མང་དུ་བྱེད་པ *वि.* प्रतिसंलयनबहुलः – ནང་དུ་ཡང་དག་འཇོག་ལྷུར་ལེན་པ་ཡིན། ནང་དུ་ཡང་དག་འཇོག་མང་དུ་བྱེད་པ་དང་འདྲི་བ་རབ་ཏུ་དབྱེ་བ་ལ་མཁས་པ་ཡིན प्रतिसंलयनगुरुकः प्रतिसंलयनबहुलश्च प्रश्नप्रभेदकुशलश्च भवेत् स.पु.127ख /202.

ནང་དུ་ཡང་དག་འཇོག་ལ་འཇུག་པར་དགའ *वि.* प्रतिसंलयनगुरुकः – ནང་དུ་ཡང་དག་འཇོག་ལ་འཇུག་པར་དགའ་ཞིང་ནང་དུ་ཡང་དག་འཇོག་ལ་རྟག་ཏུ་བསྟེན་པ་ཡིན་ཏེ स च प्रतिसंलयनगुरुको भवति, अभीक्ष्णं च प्रतिसंलयनं सेवते स.पु.104[ख]/167; द्र. ནང་དུ་ཡང་དག་འཇོག་ལྷུར་ལེན་པ།

ནང་དུ་ཡང་དག་འཇོག་ལ་ཞུགས = ནང་དུ་ཡང་དག་འཇོག་ལ་ཞུགས་པ།

ནང་དུ་ཡང་དག་འཇོག་ལ་ཞུགས་པ • *क्रि.* प्रतिसंलीनो बभूव – དགེ་སློང་མྱ་ངན་མེད་ཀྱང་ཤིང་མྱ་ངན་འཚང་གི་དྲུང་ན་ནང་དུ་ཡང་དག་འཇོག་ལ་ཞུགས་སོ॥ अशोकश्च भिक्षुरशोकस्याधस्तात्प्रतिसंलीमो बभूव अ.श.115[ख]/105; • *भू.का.कृ.* प्रतिसंलीनः – བཙུན་པ་འདིར་བདག་གཅིག་པུ་དབེན་པར་མཆིས་ནས་ནང་དུ་ཡང་དག་འཇོག་ལ་ཞུགས་པ་ན། སེམས་ལ་འདི་ལྟ་བུའི་སེམས་ཀྱི་ཡོངས་སུ་རྟོག་པ་བྱུང་སྟེ इह मम भदन्त एकाकिनो रहोगतस्य प्रतिसंलीनस्यैवं चेतसि चेतःपरिवितर्क उदपादि अ.श.105[ख]/95.

ནང་དུ་ཡང་དག་འཇོག་ལྷུར་ལེན་པ *वि.* प्रतिसंलयनगुरुकः – ནང་དུ་ཡང་དག་འཇོག་ལྷུར་ལེན་པ་ཡིན། ནང་དུ་ཡང་དག་འཇོག་མང་དུ་བྱེད་པ་དང་འདྲི་བ་རབ་ཏུ་དབྱེ་བ་ལ་མཁས་པ་ཡིན प्रतिसंलयनगुरुकः प्रतिसंलयनबहुलश्च प्रश्नप्रभेदकुशलश्च भवेत् स.पु.127[ख]/202; द्र. ནང་དུ་ཡང་དག་འཇོག་ལ་འཇུག་པར་དགའ།

ནང་དུ་ཡང་དག་པར་འཇོག་པ = ནང་དུ་ཡང་དག་འཇོག་པ།

ནང་དུ་ཡང་དག་པར་འཇོག་པར་མཛད་པ *भू.का.कृ.* प्रतिसंलीनः – བཅོམ་ལྡན་འདས་ཀྱང་ནང་དུ་ཡང་དག་པར་འཇོག་པར་མཛད་ལ། དགེ་སློང་ཡིད་དུ་འཐད་པ་རྣམས་ཀྱང་ནང་དུ་ཡང་དག་འཇོག་པར་བྱེད་པས प्रतिसंलीनो भगवान् प्रतिसंलीनाश्च मनोभावनीयाश्च भिक्षवः वि.व.131[क]/2.108.

ནང་དུ་ཡང་དག་གཞག་པ་ཉིད प्रतिसंलीनत्वम् – དྲན་པ་དང་ལྡན་པ་ཉིད་དང་། ནང་དུ་ཡང་དག་གཞག་པ་ཉིད་དང་། མཉམ་པར་གཞག་པ་ཉིད་དོ॥ स्मृतिमत्त्वम्। प्रतिसंलीनत्वम्। समाहितत्वम् वि.सू.3[ख]/3.

ནང་དུ་ཀློག་ཤིག *कृ.* प्रवेष्टव्यम् – སངས་རྒྱས་ཀྱི་བཀའ་ཁ་ཏོན་གྱིས་ལ། ནང་དུ་ཀློག་ཤིག बुद्धवचनं [स्वाध्यायतु।] प्रवेष्टव्यम् अ.श.107[क]/97.

ནང་དུ་གཤེགས *क्रि.* प्रविवेश – དེ་ནས་བཅོམ་ལྡན་འདས ...ཁྱིམ་དེའི་ནང་དུ་གཤེགས ततो भगवान्...तद्गृहं प्रविवेश अ.श.10[ख]/9.

ནང་དུ་སོང = ནང་དུ་སོང་བ།

ནང་དུ་སོང་བ *भू.का.कृ.* प्रविष्टः – དེ་དེའི་ནང་དུ་སོང་བ་དང स तत्र प्रविष्टः अ.श.101[ख]/91; मध्यगतः – གདུག་པ་དང་སྡིག་སྦྲུལ་མང་པོའི་དགོན་པའི་ནང་དུ་སོང་བ व्यालसरीसृपकान्तारमध्यगताः अ.सा.69[क]/38.

ནང་དུ་སོན་པ *भू.का.कृ.* मध्यगतः – སྲིན་མོའི་ནང་དུ་སོན་པའི་ཚོང་པ་རྣམས། །ང་ཡིས...བསྒྲལ॥ राक्षसिमध्यगता वणिजो मे तारिताः रा.प.239[क]/136.

ནང་ན་འཁོད་པ अन्तरीभूतम् लो.को.1340.

ནང་ན་མཆིས = ནང་ན་མཆིས་པ།

ནང་ན་མཆིས་པ *भू.का.कृ.* अन्तर्गतः – དེ་བཞིན་གཤེགས་པའི་སྙིང་པོ...སེམས་ཅན་ཐམས་ཅད་ཀྱི་ལུས་ཀྱི་ནང་ན་མཆིས་པ तथागतगर्भः...सर्वसत्त्वदेहान्तर्गतः ल.अ.86[क]/33; द्र. ནང་དུ་གཏོགས་པ། ནང་དུ་ཆུད་པ། ནང་དུ་འདུས་པ།

ནང་ན་འདུག *वि.* मध्यगतः – འཁོར་གྱི་ནང་ན་འདུག་གུང རུང पर्षन्मध्यगतो वा म.व्यु.6435(92क).

ནང་ན་འདུག་པ = ནང་ན་འདུག།

ནང་ན་གནས = ནང་ན་གནས་པ།

ནང་ན་གནས་གྱུར་པ *भू.का.कृ.* अन्तर्गतः – ལྷན་སྐྱེས ཡོངས་སུ་འདྲིས་ཤིང་རྟག་ཏུ་ནང་ན་གནས་གྱུར་པ། །དཀར་བའི་ཡོན་ཏན་རྣམས་ཀྱི་རྒྱུད་པོ་རིགས་ནི་མིན་པ ཉིད།། सहजपरिचितानां नित्यमन्तर्गतानां भवति सितगुणानां कारणं नैव जातिः ॥ अ.क.280क/36.1.

ནང་ན་གནས་པ *वि.* अन्तस्थः – སྲིད་གསུམ་ནང་ན གནས་པ་ཡི། །སྲོག་ཆགས་ཐམས་ཅད त्रिभुवनान्तस्थाः सर्वे प्राणभृतः त.स.88क/803; अन्तरस्थः–དེ་བཞིན བདག་རང་ནང་གནས་མགོན་ཡོད་གྱུར་ཀྱང་མགོན་མེད་བློ ལྡན་པ།། तद्वत्...सन्नाथेषु च सत्स्वनाथमतयः स्वात्मान्तरस्थेष्वपि ॥ र.वि.60ख/65; अभ्यन्तरस्थः – སྒོ་གློགས་ལ་བརྡབས་པས་ནང་ན་གནས་པ་ལ་གོ་བར བྱའོ།། अर्गटकाकोटनेनाभ्यन्तरस्थं बोधयेत् वि.सू. 9ख/10; अन्तर्गतः – ཉི་མ་ལ་ཆུའི་ནང་ན་གནས་པའི ངོ་བོ་མེད་པའི་ཕྱིར་རོ།། सूर्यस्य जलान्तर्गतरूपाभावात् त.प.190ख/844.

ནང་ན་ཡོད་པ *वि.* अन्तर्गतः – གཏན་ཚིགས་མ་གྲུབ་པ ནི་མ་ཡིན་ཏེ། ཉི་མ་ལ་ཆུའི་ནང་ན་ཡོད་པའི་ངོ་བོ་མེད པའི་ཕྱིར་རོ།། नासिद्धो हेतुः, सूर्यस्य जलान्तर्गतरूपाभावात् त.प.190ख/844.

ནང་གནས = ནང་ན་གནས་པ།

ནང་པ 1. = སངས་རྒྱས་པ आभ्यन्तरकः, बौद्धः – སོ སོའི་སྐྱེ་བོ་ནི་རྣམ་པ་གཉིས་ཏེ། ནང་པ་དང་ཕྱི་རོལ་པའོ།། ནང་པ་ནི་དགེ་བའི་རྩ་བ་ཀུན་ཏུ་མ་ཆད་པའོ།། ཕྱི་རོལ་པ ནི་དགེ་བའི་རྩ་བ་ཀུན་ཏུ་ཆད་པ་སྟེ पृथग्जनो वा द्विविधः –आभ्यन्तरकश्चासमुच्छिन्नकुशलमूलः, बाह्यकश्च समुच्छिन्नकुशलमूलः अभि.भा.56ख/150 2. = ནངས་པ प्रातः – ཚུལ་འཆོས་ཅན་དེ་དགེ་སློང་དང་། །ལྷན་ཅིག་ནང་པར་གྲོང་ཁྱེར་འོངས།། स पुरं प्रातरागन्ता दाम्भिकः सह भिक्षुभिः ॥ अ.क.241क/28.9; प्रभातः – དེ་ནས་ནང་པར་དངུལ་དང་ཨིནྡྲ་ནཱི་ལ[ཨིནྡྲ་ནཱི་ལ]། །བཻ་ཌཱུར་ཡ་དང་གསེར་གྱིས་གྲུ་བཀང་སྟེ།། अथ प्रभाते रजतेन्द्रनीलवैडूर्यहेमप्रतिपूर्णनौकाः । जा.मा.85ख/98; कल्यम् – ང་ནང་པར་ཤམ་ཐབས་དང་ཆོས་གོས བགོས། ལྷུང་བཟེད་ཐོགས་ཏེ अहं कल्यमेव सन्निवास्य पात्रचीवरमादाय ल.वि.118क/175; དེ་ནང་པར སྔར་ལངས་ཏེ स कल्यमेवोत्थाय अ.श.94क/84; काल्यम् – ཚེ་དང་ལྡན་པ་ཀུན་དགའ་བོ་ནང་པར་སྔར ལངས་ཏེ། རྒྱལ་པོ་བྲམ་ཟེ་མེས་སྦྱིན་གྱི་ཁྱིམ་གང་ན་བ་དེར སོང་བ་ལས आयुष्मानानन्दः काल्यमेवोत्थाय येनाग्निदत्तस्य ब्राह्मणराजस्य निवेशनं तेनोपसंक्रान्तः वि.व.135क/1.24; ནང་པར་སྔར་ལངས་ཏེ་སྒོ་དབྱེ་བ དང कल्यमुत्थाय द्वारमोक्षः वि.सू.87ख/105.

ནང་པའི་བླ अन्तर्वासिकः म.व्यु.3690(62क).

ནང་བྱན *कल्पिकारः – ཀལྤི་ཀཱ་རཿ ཀལྤཱ་རིཿ འཐངས སམ་ནང་བྱན་ནམ་རྩེ་གོད म.व्यु.3840(63ख); *कप्यारिः म.व्यु.3841(63ख); द्र. – རྩེ་གོད་པོ་དང་རྩེ་གོད མོ་དང་དགེ་ཚུལ་དང་དགེ་ཚུལ་མ་དག་གིས་སོ།། कल्पकारकल्पकारीश्रामणेरश्रामणेरिभिः वि.सू.33ख/43.

ནང་བློན་ཅན = ནང་བློན་གྱུན་པ།

ནང་བློན་གྱུན मन्त्रिपर्षदध्यक्षः म.व्यु.3678(61ख).

ནང་སྦྲང་གི་སྦྲང་རྩི माक्षिकम्, मधुभेदः मि.को.61क।

ནང་མ *वि.* पूर्वः – ཡན་ལག་ཕྱི་མས་ལམ་བཀག་པས། །ནང་མ་འགྲོ་བར་མི་འགྱུར་རོ། །ཇི་ལྟར་ཕྱི་མས་གོ་ཕྱེ་བ། །ནང་མ་དེ་ལྟ་དེ་ལྟར་འགྲོ॥ उत्तरावयवैः रुद्धे मार्गे पूर्वे न यान्ति च। यथोत्तरे विमुञ्चन्ति पूर्वे यान्ति तथा तथा ॥ त.स.100[ख]/888.

ནང་མི अन्तर्जनः – དེའི་ཚེ་ཤཱཀྱའི་བུ་མོ་ས་འཚོ་མས གཏམ་དེ་ཐོས་ནས་ནང་མི་རྣམས་ཀྱི་མདུན་དུ་འདུག་སྟེ། ཚིགས་སུ་བཅད་པ་འདི་དག་སྨྲས་སོ॥ ततो गोपा शाक्यकन्या एतां प्रकृतिं श्रुत्वा सर्वस्यान्तर्जनस्य पुरतः स्थित्वा इमा गाथा अभाषत ल.वि.81[क]/108; དེ་ནས དེའི་ཕ་མ་དང་ནང་མི་རྣམས་ཀྱིས་སྔོན་མ་མཐོང་བའི་གཟུགས་པར་སྣྲིམ་པ་མཐོང་ནས་མཆོག་ཏུ་ཡ་མཚན་དུ་གྱུར་ཏོ॥ अथास्य मातापितरावन्तर्जनश्चादृष्टपूर्वप्रभावं दृष्ट्वा परमं विस्मयमापन्नाः अ.श.10[ख]/9; स्वजनः – མས་ཀྱང་མ་བགྱིས ...ནང་མི་དང་གཉེན་གྱི་ཚོགས་ཀྱིས ཀྱང་མ་བགྱིས न मात्रा कृतं ...नेष्टेन स्वजनबन्धुवर्गेण अ.श.78[क]/69; ནང་གི་མི་དང་ཕྱི་མི་འདྲ་བར སྙོམས॥ समप्रभावा स्वजने जने च जा.मा.72[ख]/84.

ནང་མོ 1. = ནང་གི་གཡོག་མོ छो.को.461 2. = ནངས་མོ प्रातः – ཁྱོད་ཀྱི་སྲས་ནི་ཐུབ་པ་འམ། །འཁོར་ལོས་སྒྱུར་བར་ནང་མོར་འགྱུར॥ मुनिर्वा चक्रवर्ती वा प्रातस्ते भविता सुतः ॥ अ.क.218[ख]/24.121; द्र. ནང་པ།

ནང་ཚེམས जत्रु म.व्यु.3969; द्र. ནམ་འཚེམ།

ནང་གཟུགས་མེད་པར་འདུ་ཤེས་པ अध्यात्ममरूपसंज्ञी – དེ་ཁོ་ན་བཞིན་དུ་ནང་གཟུགས་མེད་པར་འདུ་ཤེས་པ་སྟེ अध्यात्ममरूपसंज्ञ्येवमेव अभि.भा.80[क]/1180; ནང་གཟུགས་མེད་པར་འདུ་ཤེས་པས་ཕྱི་རོལ་གྱི་གཟུགས ཆེན་པོ་ཁ་དོག་བཟང་པོ་དང་ཁ་དོག་ངན་པ་རྣམས་ལ་ལྟ अध्यात्ममरूपसंज्ञी बहिर्धा रूपाणि पश्यति अधिमात्राणि सुवर्णदुर्वर्णानि अभि.स्फु.308[क]/1180.

ནང་གཟུགས་སུ་འདུ་ཤེས་པ अध्यात्मं रूपसंज्ञी – ནང་གཟུགས་སུ་འདུ་ཤེས་པས་ཕྱི་རོལ་གྱི་གཟུགས་ཆུང་ངུ་ཁ་དོག་བཟང་པོ་ཁ་དོག་ངན་པ་རྣམས་ལ་ལྟ अध्यात्मं रूपसंज्ञी बहिर्धा रूपाणि पश्यति परीत्तानि सुवर्णानि दुर्वर्णानि अभि.भा.80[क]/1180; ནང་གཟུགས་སུ་འདུ་ཤེས་པས་ཕྱི་རོལ་གྱི་གཟུགས་ཆེན་པོ་ཁ་དོག་བཟང་པོ་དང་ཁ་དོག་ངན་པ་རྣམས་ལ་ལྟ अध्यात्मं रूपसंज्ञी बहिर्धा रूपाणि पश्यति अधिमात्राणि सुवर्णदुर्वर्णानि अभि.स्फु.308[क]/1180.

ནང་ཡངས་པ अन्तर्विशालः म.व्यु.9342(128[ख]).

ནང་ཡན *वि.* प्रत्ययितः, आप्तः – आप्तः प्रत्ययितस्त्रिषु अ.को.2.8.13; प्रत्ययो विश्वासोऽस्य संजातः प्रत्ययितः अ.वि.2.8.13.

ནང་རབ་ཏུ་དང་བ *पा.* अध्यात्मसम्प्रसादः, ध्यानाङ्गभेदः – བསམ་གཏན་གཉིས་པ་ལ་ཡན་ལག་བཞི་སྟེ། ནང་རབ་ཏུ་དང་བ་དང་དགའ་བ་དང་བདེ་བ་དང་སེམས་རྩེ་གཅིག་པ་ཉིད་དོ॥ द्वितीये ध्याने चत्वार्यङ्गानि–अध्यात्मसम्प्रसादः, प्रीतिः, सुखम्, चित्तैकाग्रता च अभि.भा.69[क]/1140.

ནང་རིག = ནང་རིག་པ།

ནང་རིག་པ = ནང་གི་རིག་པ *पा.* अध्यात्मविद्या, विद्यास्थानभेदः – རིག་པའི་གནས་ནི་རྣམ་པ་ལྔ་སྟེ། ནང་རིག་པ་དང་གསོ་བ་རིག་པ་དང་གཏན་ཚིགས་རིག་པ་དང་སྒྲ་རིག་པ་དང་བཟོའི་ལས་ཀྱི་གནས་རིག་པའོ॥ पञ्चविधं विद्यास्थानम्। अध्यात्मविद्या, हेतुविद्या, शब्दविद्या, चिकित्साविद्या, शिल्पकर्मस्थानविद्या च सू.व्या.176[क]/70; རིག་པའི་གནས་ལྔ་པོ་དག་ཡིན་ཏེ། ནང་གི་རིག་པ་དང་གཏན་ཚིགས་ཀྱི་རིག་པ་དང་སྒྲའི་རིག་པ

དང་ནད་གསོ་བའི་རིག་པ་དང་བཟོ་དང་ལས་ཀྱི་གནས་ཀྱི་རིག་པའོ༎ पञ्चविद्यास्थानानि भवन्ति। अध्यात्मविद्या हेतुविद्या शब्दविद्या व्याधिचिकित्साविद्या शिल्पकर्मस्थानविद्या च बो.भू.52क/68.

ནང་རིམ अभ्यन्तरपट्टिका म.व्यु.4362(68ख); मि.को.11क।

ནང་རོལ་ན་ཡོད་པ *वि.* अभ्यन्तरम् – ནང་གི་གཏེར་ཞེས་བྱ་བ་ནི། ཁྱིམ་པའི་ནང་རོལ་ན་ཡོད་པའི་གཏེར་ཡིན་ནོ༎ अन्तर्निधिर्देहल्या अभ्यन्तरनिधिः वि.व.198ख/1.72.

ནང་ལ་ཡོད་པ *वि.* अध्यात्मगतम् – འཁྲུལ་པའི་རྒྱུ་འདི་ནི་ནང་ལ་ཡོད་པ་[ཡིན་]ལ एतच्चाध्यात्मगतं विभ्रमकारणम् न्या.टी.42ख/55.

ནང་ཡོགས། ०སུ अन्तः – དབྱར་གྱི་ནང་ཡོགས་སུ་བདག་གིར་བྱེད་ནའོ༎ अन्तर्वर्षं स्वीकृतौ वि.सू.28क/35.

ནང་སེམས་ཅན་གྱི་འཇིག་རྟེན अध्यात्मसत्त्वलोकः मि.को.135क।

ནང་གསལ क्षौमम्, दुकूलम् – क्षौमं दुकूलं स्याद् अ.को.2.6.113; क्षुमया अतसीविशेषेण निर्मितं क्षौमम् अ.वि.2.6.113.

ནང་གསེས་ཀྱི་དབྱེ་བ अवान्तरभेदः –ནང་གསེས་ཀྱི་དབྱེ་བ་ལ་བརྟེན་པའི་ཕྱིར་རྣམ་པ་གསུམ་རྩ་བ་ཉིད་དུ་བརྗོད་དོ༎ अर्था[अवा]न्तरभेदाश्रयणात् तु त्रिविधा मूलत्वेनोक्ता त.प.285ख/1035.

ནངས = ནངས་པ།

ནངས་པ द्र.– གྲོང་ཁྱེར་ལས་འདས་ཏེ་མེ་ནེ་ཡའི་ཡུལ་གྱི་གྲོང་རྡལ་རྗེས་སུ་དཔག་པ་ཞེས་བྱ་བ་ནས་དཔག་ཚད་དྲུག་ཏུ་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་ཕྱིན་པ་དང་ ནམ་ནངས་པར་གྱུར་ཏོ༎ अतिक्रम्य मल्लान् मैनेयानामनुवै[मै]नेये निगमे षट्सु योजनेषु। तत्र बोधिसत्त्वस्य रात्रिप्रभातोऽभूत् ल.वि.111ख/163; ནམ་མ་ནངས་པ་ཉིད་ལའོ༎ འདིར་ནི་སྐྱ་རེངས་ཐ་མ་མ་ཤར་བ་ཉིད་དེ་ཡིན་ནོ༎ अप्रभातत्वे। अन्त्यारुणस्यैतदत्रानुद्गतत्वम् वि.सू.47क/59; द्र. ནངས་པ།

ནད 1. रोगः – ལོངས་སྤྱོད་ནད་དང་དགའ་དང་རྨོངས༎ भोगो रोगो मोदो मोहः का.आ.337ख/3.84; རླུང་གནས་ནད་ཀྱི་བརྟག་པ་ཞེས་བྱ་བ वायुस्थानरोगपरिज्ञाननाम क.त.2407; རྐང་ནད पादरोगः त.प.161क/43; ནད་ཀྱི་གཞིར་གྱུར रोगभूतस्य जा.मा.181ख/211; व्याधिः – ནད་གསོ་བའི་རིག་པ व्याधिचिकित्साविद्या बो.भू.52क/68; མཐའ་མེད་ནད་དང་གདུང་བ་སྟེ། །ཀྱེ་མ་སྐྱེས་བུའི་ཡོངས་འཛིན་ནོ༎ अहो निरवधिः पुंसामाधिव्याधिपरिग्रहः ॥ अ.क.92ख/9.73; གཟུགས་མ་ཡིན་པ་ལ་ནི་ནད་མེད་པའི་རྒྱུ་སྟེ། ཉོན་མོངས་པའི་ནད་རབ་ཏུ་ཞི་བར་བྱེད་པའི་ཕྱིར་རོ༎ अरूपे आरोग्यहेतुः क्लेशव्याधिप्रशमनात् सू.व्या.179ख/74; आमयः – རྒྱལ་སྲས་དེ་ལས་བདུད་རྩི་ནི། །རྟོགས་ནས་ནད་དང་བྲལ་བ་ཐོབ༎ अधिगम्यामृतं तस्मान्नृपसूनोरनामयम्। अ.क.212क/24.49; गदः – རླུང་ནད་ཀྱིས་ཉེན वातगदार्दितः अ.क.349ख/46.30; रुक् – དེ་ཡི་མགོ་ཡི་ནད་ཀྱིས་ནི༎ तस्याः शिरोरुजाम् अ.क.267क/32.24; ज्वरः – འཇིགས་ཆེན་ནད་ཀྱིས་ཐེབས་གྱུར་པ༎ महात्रासज्वरग्रस्तः बो.अ.5ख/2.45; दोषः – དེ་ལ་གཙུག་ལག་ཐ་དད་མེད། །ནད་ཀྱིས་ཕྱེ་བ་ཐ་དད་དོ༎ न तु शास्त्रस्य भेदोऽस्ति दोषभेदात्तु भिद्यते ॥ ल.अ.136ख/83; आबाधः – ལུས་ལ་ལུས་ཀྱི་ནད་རྣམ་པ་མང་པོ་འདི་ལྟ་སྟེ། འབྲས་དང་ཕོལ་མིག་དང་ काये बहवः कायिका आबाधाः। तद्यथा गण्डः पिटकः श्रा.भू.

30[ख]/77; གསོ་བའི་བསྟན་བཅོས་ནི་རྣམ་པ་བཞིས་འཇུག་སྟེ། ནད་ལ་མཁས་པ་སྟོན་པའི་རྣམ་པ་དང་ནད་ཅི་ལས་བྱུང་བ་ལ་མཁས་པ་སྟོན་པའི་རྣམ་པ་དང चिकित्साशास्त्रञ्चतुराकारं प्रवर्तते। आबाधकौशलपरिदीपनाकारम्, आबाधसमुत्थानकौशलपरिदीपनाकारम् बो.भू.52[ख]/68; आर्तिः – བཅོམ་ལྡན་ཇི་སྲིད ...།སྲིད་པའི་ནད་ཀྱི་སྨན་པ་ཁྱོད། །ནད་པ་རྣམས་ལ་ལྷག་པར་བྱམས॥ भगवन्...भवार्तिभिषजः कस्माद्रोगिणोऽप्यधिकं प्रियाः ॥ अ.क.204[ख]/85.3; पीडा–གཟེར་བའི་ནད मस्तकपीडा बो.प.53[क]/14; वेदना – ནད་དྲག་པོ तीव्रवेदना जा.मा.210[क]/245; शूलम् – མགོ་ནད शिरःशूलम् अ.क.267[ख]/32.26; आतङ्कः श्री.को.165[क]; यक्ष्मा – ནད་རྣམས་མང་པོ་ཚོགས་པ་འམ། །ནད་ཀྱི་ནང་ན་གང་ཞིག་ཡིན॥ अनेकरोगसङ्घातः कतमो वाऽसि यक्ष्मणाम् ॥ जा.मा.144[ख]/167 2. = ནད་ཉིད अस्वास्थ्यम् – ཁྱིམ་ན་གནས་པ་ནད་བཞིན་ཡོངས་སྤངས་ནས། །ནགས་ཚལ་གནས་ཤིག་རབ་ཏུ་བརྒྱན་པར་གྱུར॥ गार्हस्थ्यमस्वास्थ्यमिवावधूय कंचिद्वनप्रस्थमलंचकार॥ जा.मा.3[ख]/2; मान्द्यम्–ལུས་གང་བཀྲེས་དང་སྐོམ་སོགས་ནད། །གསོ་བའི་ཆོ་ག་བྱེད་འདོད་པས॥ यो मान्द्यक्षुत्पिपासादिप्रतीकारचिकीर्षया। बो.अ.28[क]/8.122.

ནད་ཀྱི་རྒྱུན་ཅི = སྨན།

ནད་ཀྱི་བསྐལ་པ་བར་མ रोगान्तरकल्पः, कल्पभेदः – ནད་ཀྱི་བསྐལ་པ་བར་མ་ལ། །དེ་ནི་ཅི་མཆོག་དམ་པར་འགྱུར॥ रोगान्तरकल्पेषु भेषज्यं भोन्ति उत्तमाः। शि.स.175[क]/173; म.व्यु.8283(115[क]).

ནད་ཀྱི་བརྟག་པ रोगपरिज्ञानम् – རླུང་གནས་ནད་ཀྱི་བརྟག་པ वायुस्थानरोगपरिज्ञानम् क.त.2407.

ནད་ཀྱི་གཞི निदानम्–སེམས་ཅན་དེ་དག་གི་ནད་ཀྱི་གཞི་དང་གནས་དང་སྡུ་ནས་གཞི་ཡོད་པ་རྟོགས་ནས तेषां सत्त्वानां निदानमाशयानुशयं चोपलक्ष्य अ.श.88[क]/78; आबाधसमुत्थानम् – ནད་ལ་མཁས་པ་ཡིན། ནད་ཀྱི་གཞི་ལ་མཁས་པ་ཡིན आबाधकुशलो भवति, आबाधसमुत्थानकुशलः अभि.स्फु.151[ख]/874.

ནད་ཀྱི་གཞི་ལ་མཁས་པ • *वि.* आबाधसमुत्थानकुशलः – ཡན་ལག་བཞི་དང་ལྡན་པའི་སྨན་པ...ནད་ལ་མཁས་པ་ཡིན། ནད་ཀྱི་གཞི་ལ་མཁས་པ་ཡིན चतुर्भिरङ्गैः समन्वागतो भिषक्...आबाधकुशलो भवति, आबाधसमुत्थानकुशलः अभि.स्फु.151[ख]/874; द्र. ནད་ཅི་ལས་བྱུང་བ་ལ་མཁས་པ་སྟོན་པའི་རྣམ་པ།

ནད་ཀྱི་གཞིར་གྱུར = ནད་ཀྱི་གཞིར་གྱུར་པ།

ནད་ཀྱི་གཞིར་གྱུར་པ *वि.* रोगभूतः – ནད་ཀྱི་གཞིར་གྱུར་ཚུད་ཟ་བའི། །འདི་ལྟར་ལུས་འདི་གཅིག་པུའི་ཕྱིར། །སེམས་ཅན་རྣམས་ལ་སྙིང་མི་བརྩེ། །ཀྱི་ཧུད་གཏི་མུག་འདི་ཅི་ཙུང॥ देहस्यैकस्य नामार्थे रोगभूतस्य नाशिनः। इदं सत्त्वेषु नैर्घृण्यं धिगहो बत मूढताम् ॥ जा.मा.181[ख]/211.

ནད་ཀྱི་གསོས་སྨན ग्लानप्रत्ययभेषज्यम् – ཆོས་གོས་དང་བསོད་སྙོམས་དང་མལ་ཆ་དང་སྟན་དང་ནད་ཀྱི་གསོས་སྨན་དང་ཡོ་བྱད चीवरपिण्डपातशयनासनग्लानप्रत्ययभेषज्यपरिष्कारैः श्रा.भू.5[क]/8; द्र. ན་བའི་གསོས་སྨན།

ནད་ཀྱིས་ཐེབས་པ *वि.* ग्लानः मि.को.51[ख]।

ནད་ཀྱིས་བཏབ = ནད་ཀྱིས་བཏབ་པ།

ནད་ཀྱིས་བཏབ་པ • *क्रि.* आबाधको भवति–ནད་ཀྱིས་བཏབ་པ་དང་ སྡུག་བསྔལ་བ་དང་ ནད་ཚབས་ཆེ་བ་དང

आबाधको भवति, [दुःखितः,] बाढग्लानः श्रा.भू. 59क/145; • *वि.* आबाधिकः – སྐྱེས་པའམ་བུད་མེད་གང་ཡང་རུང་བ་ཞིག་ནད་ཀྱིས་བཏབ་པ་སྟེ། སྡུག་བསྔལ་ཞིང་ནད་ཚབས་ཆེ་བའམ་ཤི་ཞིང་འཆི་བའི་དུས་ལས་འདས་པར་ཐོས་ཀྱང་རུང་ पुरुषम्वा स्त्रियम्वा आबाधिकं शृणोषि, दुःखितम्, बाढग्लानम्, मृतम्वा कालगतम् श्रा.भू.151ख/411; व्याधिग्रस्तः – ནད་ཀྱིས་བཏབ་པའི་ནད་པས་ व्याधिग्रस्तेनैवातुरेण श्रा.भू. 166क/442; व्याधिपरिपीडितः – ནད་ཀྱིས་བཏབ་པ་རྣམས་ལ་ནི་སྨན་པར་གྱུར་པའོ།། व्याधिपरिपीडितानां वैद्यभूतः का.व्यू.220ख/282; व्याधिपरिगतः – ནད་སྣ་ཚོགས་ཀྱིས་བཏབ་པ नानाव्याधिपरिगतः म.व्यु. 7155(102क); रोगस्पृष्टः – ནད་ཀྱིས་བཏབ་པ་རྣམས་ནི་ནད་དང་བྲལ་བར་གྱུར रोगस्पृष्टा विगतरोगा भवन्ति स्म म.व्यु.6308(89ख); व्याध्यातुरः – ནད་ཀྱིས་བཏབ་པའི་ནད་པའི་མི་མཐོང་ནས།...།མི་དེ་ངས་ནི་ནད་དང་བྲལ་བར་བྱས།། व्याध्यातुरं च नरमीक्ष्य... निर्व्याधितः स च कृतो मे रा.प.238क/134; • *भू.का.कृ* ग्लान्यं पतितः – ཕྱིས་རེ་ཞིག་ན་ནད་ཀྱིས་བཏབ་པ་དང་ यावदपरेण समयेन ग्लान्यं पतितः अ.श.230क/212; द्र.– མཚན་མོ་མ་ཞུའི་ནད་ཀྱིས་བཏབ། །གདུང་བ་ཆེན་པོའི་ཚེ་དེ་བཀྲོན།། रात्रौ विसूचिकाक्रान्तश्चुक्रोश विपुलव्यथः ॥ अ.क.185ख/21.14.

ནད་ཀྱིས་བཏབ་པར་གྱུར = ནད་ཀྱིས་བཏབ་པར་གྱུར་པ།

ནད་ཀྱིས་བཏབ་པར་གྱུར་པ वि. रोगेण विकलीभूतः – མི་ཐམས་ཅད་ལ་ནད་ཆེན་པོས་བཏབ་པར་གྱུར་ནས་འཆི་བ་ན सर्वे...मनुष्या महता रोगेण विकलीभूता म्रियन्ते च बो.प.67ख/34.

ནད་ཀྱིས་ཐེབས = ནད་ཀྱིས་ཐེབས་པ།

ནད་ཀྱིས་ཐེབས་པ •*क्रि.* रोगेण बाध्यते – སྟོན་གྱི་དུས་ཀྱི་ཚེ་དགེ་སློང་དག་སྐྱ་ཐབ་སེར་པོའི་ནད་ཀྱིས་ཐེབས་ཏེ་ལུས་རིད་ཅིང་ལུས་ཉམ་ཆུང་བར་གྱུར་ཏོ།། शरत्कालसमये भिक्षवो रोगेण बाध्यन्ते पीतपाण्डुकाः कृशशरीरा दुर्बलाङ्गाः अ.श.87क/78; • *वि.* व्याधितः – དཔེར་ན་མི་ནད་ཀྱིས་ཐེབས་པ་ལ་ལ་ཞིག་ལ་སྨན་པ་ཆེན་པོ་ལ་ལ་ཞིག་གིས་དེ་ལ་ཡོད་པའི་ནད་ཞི་བར་བྱ་བའི་ཕྱིར तद्यथा किञ्चिद्व्याधितं पुरुषं कश्चिन्महावैद्यस्तस्य प्रत्युपस्थितस्य व्याधेः प्रशमाय बो.भू.149क/192; ནད་ཀྱིས་ཐེབས་པའི་མི་ཞིག་མཐོང་།། अपश्यद् व्याधितं नरम् अ.क.214ख/24.78; སེམས་ཅན་ནད་ཀྱིས་ཐེབས་པ་རྣམས་ཀྱི་ནད་གཡོག་བྱེད་དོ།། व्याधितान् सत्त्वान् परिचरति बो.भू.78क/100; • *भू.का.कृ.* ग्लानः संवृत्तः – རྒྱལ་པོ་ཀུན་དགའ་བོ་ནད་ཀྱིས་ཐེབས आनन्दो राजा ग्लानः संवृत्तः वि.व.198क/1.71.

ནད་ཀྱིས་ཐེབས་པར་གྱུར་པ *भू.का.कृ.* व्याधिनाऽऽक्रान्तः – འདི་བརྗོད་མ་ཐག་དུས་ཀྱི་མཚམས། །ཐོབ་ཅིང་ནད་ཀྱིས་ཐེབས་པར་གྱུར།། इत्युक्त्वा व्याधिनाक्रान्तः प्राप्तकालावधिर्मघः । अ.क.63क/6.119; ज्वरग्रस्तः – འཇིགས་ཆེན་ནད་ཀྱིས་ཐེབས་གྱུར་པ།། महात्रासज्वरग्रस्तः बो.अ.5ख/2.45.

ནད་ཀྱིས་གཟིར = ནད་ཀྱིས་གཟིར་བ།

ནད་ཀྱིས་གཟིར་བ *वि.* रोगपीडितः – ཚུལ་ཁྲིམས་འཆལ་ཅིང་ནད་ཀྱིས་གཟིར།། दुःशीला रोगपीडिताः ज्ञा.सि. 37क/94; आतुरः – ལམ་དུ་ཕན་པའི་ཟས་བྲལ་བས། །ནད་ཀྱིས་གཟིར་ཅིང་འདུག་པ་མཐོང་།། ददर्श पथ्यविरहात्पथि सीदन्तमातुरम् ॥ अ.क.47ख/58.5.

ནད་ཀྱིས་ཡོངས་སུ་གཟིར་བ *वि.* व्याधिपरिपीडितः – སེམས་ཅན་རྣམས... ནད་ཀྱིས་ཡོངས་སུ་གཟིར་བ་མཐོང

ནས་ སत्त्वान् व्याधिपरिपीडितान् दृष्ट्वा अ.श.88ཁ /79; द्र. ནད་ཀྱིས་གཟིར་བ།

ནད་ཀྱིས་རིད་པ *वि.* ग्लास्नुः मि.को.51ཁ।

ནད་ཁོང་སྐེམ क्षयव्याधिः, रोगविशेषः म.व्यु.9502 (130ཁ); मि.को.52ཀ।

ནད་ཁོང་སྐེམས = ནད་ཁོང་སྐེམ།

ནད་འགོ་བ ईतिः – སངས་རྒྱས་ཀྱི་མཐུས་ལོང་བ་རྣམས་ཀྱིས་ནི་མིག་ཐོབ་པོ།། ...ནད་འགོ་བ་རྣམས་ནི་ཞི་བར་གྱུར་ཏོ།། बुद्धानुभावेन अन्धाश्चक्षूंषि प्रतिलभन्ते...ईतयः शाम्यन्ति सू.व्या.153ཁ/38; सञ्चारव्याधिः म.व्यु.9526; उपसर्गः – ནད་འགོ་བ་མེད་པ अनुपसर्गः लो.को.1342.

ནད་འགོ་བ་མ་མཆིས་པ अनुपसर्गः लो.को.1342.

ནད་འགོ་བ་མེད་པ अनुपसर्गः लो.को.1342.

ནད་ཅན = ནད་པ रोगी – གཞན་ཡང་ནད་ཅན་ནད་མེད་མཐོང་།། रोगिणोऽप्यरुजश्चान्ये दृष्टाः अ.क.74ཁ /62.8; आमयावी – आमयावी विकृतो व्याधितोऽपटुः । आतुरोऽभ्यमितोऽभ्यान्तः अ.को.2.6.58; आमयोऽस्यास्तीति आमयावी अ.वि.2.6.58; द्र. ནད་བུ་ཅན།

ནད་ཅི་ལས་བྱུང་བ་ལ་མཁས་པ་སྟོན་པའི་རྣམ་པ *पा.* आबाधसमुत्थानकौशलपरिदीपनाकारः – གསོ་བའི་བསྟན་བཅོས་ནི་རྣམ་པ་བཞིས་འཇུག་སྟེ། ནད་ལ་མཁས་པ་སྟོན་པའི་རྣམ་པ་དང་ནད་ཅི་ལས་བྱུང་བ་ལ་མཁས་པ་སྟོན་པའི་རྣམ་པ་དང་ चिकित्साशास्त्रञ्चतुराकारं प्रवर्तते। आबाधकौशलपरिदीपनाकारम्, आबाधसमुत्थानकौशलपरिदीपनाकारम् बो.भू.52ཁ/68; द्र. ནད་ཀྱི་གཞི་ལ་མཁས་པ།

ནད་གཅོད་མེད = ནད་མེད अनामयम्, आरोग्यम् – अनामयं स्यादारोग्यम् अ.को.2.6.50; आमयस्य व्याधेरभावोऽनामयम् अ.वि.2.6.50.

ནད་ཆེན 1. = ནད་ཆེན་པོ महाव्याधिः – ནད་ཆེན་པོས་བཟུང་བ་རྣམས महाव्याधिग्रस्तान् बो.प.141ཀ/122; महारोगः – དེའི་ཚེ... མི་ཐམས་ཅད་ལ་ནད་ཆེན་པོས་བཏབ་པར་གྱུར་ནས་འཆི་བ་ན तस्मिन् समये सर्वे...मनुष्या महता रोगेण विकलीभूता म्रियन्ते च बो.प. 67ཁ/34 2. = ནད་པ་ཆེན་པོ महातुरः, महाव्याधिग्रस्तः – ཚེ་ག་སིན་ཏུ་འཇམ་པོ་ཡིས། །ནད་ཆེན་དཔག་མེད་གསོ་བར་མཛད།། मधुरेणोपचारेण चिकित्सति महातुरान् बो.अ.21ཀ/7.24; ནད་པ་ཆེན་པོ་ནི་ཡུན་རིང་པོའི་ནད་པ་སྟེ། འདོད་ཆགས་ལ་སོགས་པའི་ནད་ཆེན་པོས་བཟུང་བ་རྣམས་སོ།། महातुरान् दीर्घरोगिणो रागादिमहाव्याधिग्रस्तान् बो.प.141ཀ/122.

ནད་ཆེན་པོ = ནད་ཆེན།

ནད་འཆོས་པ = གསོ་རིག रुक्प्रतिक्रिया, चिकित्सा मि.को.51ཀ।

ནད་འཇོམས 1. = སྨན་པ रोगहारी, वैद्यः – रोगहार्यगदंकारो भिषग्वैद्यौ चिकित्सके अ.को.2.6.57; रोगं हरतीति रोगहारी अ.वि.2.6.57 2. = དོང་ཁའི་ཤིང व्याधिघातः, सुवर्णकः – आरग्वधे राजवृक्षशम्या-(पा)कचतुरङ्गुलाः ॥ आरेवतव्याधिघातकृतमालसुवर्णकाः। अ.को.2.4.23; व्याधिं हन्तीति व्याधिघातः अ.वि.2.4.23 3. = བ་ཤ་ཀ सिंही, वासकः मि.को.57ཁ।

ནད་འཇོམས་པ = ནད་འཇོམས།

ནད་བཏབ = ནད་ཀྱིས་བཏབ་པ།

ནད་ཐམས་ཅད་རབ་ཏུ་ཞི་བར་བྱེད་པ་ཞེས་བྱ་བའི་གཟུངས *ना.* सर्वरोगप्रशमनीनामधारणी, ग्रन्थः – འཕགས་པ་ནད་ཐམས་ཅད་རབ་ཏུ་ཞི་བར་བྱེད་པ་ཞེས་བྱ་བའི་གཟུངས आर्यसर्वरोगप्रशमनीनामधारणी क.त. 622, 1014.

ནད་ཐམས་ཅད་ལས་ཐར་བ *वि.* सर्वरोगपरिमुक्तः – ནད་པ་ནད་ཐམས་ཅད་ལས་ཐར་བ་བཞིན་དུ सर्वरोगपरिमुक्ता इवातुराः अ.श.135क/125.

ནད་ཐམས་ཅད་ལས་ཐར་བར་བྱེད་པ *वि.* सर्वरोगविमोचनकः – དེ་སྨན་ཐམས་ཅད་ལ་མཁས་ཤིང་ནད་བྱུང་བ་ཐམས་ཅད་ལ་མཁས་ཏེ། ནད་ཐམས་ཅད་ལས་ཐར་པར་བྱེད་པ स सर्वभैषज्यकुशलः सर्वव्याध्युत्पत्तिकुशलः सर्वरोगविमोचनकः सु.प.25ख/5.

ནད་ཐམས་ཅད་ལས་རབ་ཏུ་ཐར་བར་བྱེད་པ सर्वव्याधिप्रमोचनी, ओषधिविशेषः – གངས་ཀྱི་རིའི་རྒྱལ་པོ་ལ་སྨན་སྔ་བཞི་ཡོད་དེ།...གཉིས་པ་ནད་ཐམས་ཅད་ལས་རབ་ཏུ་ཐར་བར་བྱེད་པ་ཞེས་བྱ་བ་དང सन्ति तु हिमवति पर्वतराजे चतस्र ओषधयः।...द्वितीया सर्वव्याधिप्रमोचनी नाम स.पु.51ख/91.

ནད་ཐམས་ཅད་ཤེས་པ *वि.* सर्वव्याधिज्ञः – དེ་ནས་སྨན་པ་ནད་ཐམས་ཅད་ཤེས་པ་ལ་ལ་ཞིག་གིས་མི་དམུས་ལོང་དེ་མཐོང་ནས अथ कश्चिद् वैद्यः सर्वव्याधिज्ञः स्यात् । स तं जात्यन्धं पुरुषं पश्येत् स.पु.51क/91.

ནད་ཐམས་ཅད་གསོ་བར་བྱེད་པ *ना.* सर्वव्याधिचिकित्सकः, बोधिसत्त्वः – དེ་བཞིན་དུ་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་བཅུ་དྲུག་བྱ་བ་ལ་འདི་ལྟ་སྟེ། ཀུན་ཏུ་བཟང་པོ་དང...ནད་ཐམས་ཅད་གསོ་བར་བྱེད་པ་དང... བློ་བཟང་པོ एवं बोधिसत्त्वाः षोडश कार्याः। तद्यथा–समन्तभद्रः ...सर्वव्याधिचिकित्सकः...पतिंधर[मतिभद्र]श्च म.मू.119क/28.

ནད་ཐམས་ཅད་གསོ་བར་བྱེད་མ *ना.* सर्वव्याधिचिकित्सनी, विद्याराज्ञी–སྒྲོལ་མ་དང...ནད་ཐམས་ཅད་གསོ་བར་བྱེད་མ་དང...ཟླ་ལྡན་མ་དང་། འདི་དག་དང་གཞན་ཡང་རིག་པའི་རྒྱལ་མོ་དག तारा...सर्वव्याधिचिकित्सनी...चन्द्रावती चेति। एतैश्चान्यैश्च विद्याराज्ञीभिः म.मू.96ख/7.

ནད་མཐར་བྱེད་མ *ना.* रोगान्तिका, विद्याराज्ञी – སྒྲོལ་མ་དང...ནད་མཐར་བྱེད་མ་དང...ཟླ་ལྡན་མ་དང་། འདི་དག་དང་གཞན་ཡང་རིག་པའི་རྒྱལ་མོ་དག तारा...रोगान्तिका...चन्द्रावती चेति। एतैश्चान्यैश्च विद्याराज्ञीभिः म.मू.96ख/7.

ནད་དང་འགྲོགས རोगसङ्गतिः – ནད་མེད་རྣམས་ལ་ཁ་ཟས་མེད། །དཔལ་ལྡན་རྣམས་ནི་ནད་དང་འགྲོགས།། स्वस्थानामशनं नास्ति श्रीमतां रोगसङ्गतिः ॥ अ.क. 205ख/85.17.

ནད་དང་བཅས་པ *वि.* सरुक् लो.को.1342.

ནད་དང་བྲལ = ནད་དང་བྲལ་བ།

ནད་དང་བྲལ་བ *वि.* अनामयः – རྒྱལ་སྲས་དེ་ལས་བདུད་རྩི་ནི། །རྟོགས་ནས་ནད་དང་བྲལ་བ་ཐོབ།། अधिगम्यामृतं तस्मान्नृपसूनोरनामयम्। अ.क.212क/24.49; निरामयः – རྟག་ཏུ་བདག་ནི་ནད་དང་བྲལ།། सदैवाहं निरामयः अ.क.268ख/99.12; निर्व्याधितः – ནད་ཀྱིས་བཏབ་པའི་ནད་པའི་མི་མཐོང་ནས།...།མི་དེ་ངས་ནི་ནད་དང་བྲལ་བར་བྱས།། व्याध्यातुरं च नरमीक्ष्य...निर्व्याधितः स च कृतो मे रा.प.238क/134; विगतरोगः – ནད་ཀྱིས་བཏབ་པ་རྣམས་ནི་ནད་དང་བྲལ་བར

གྱུར་ रोगस्पृष्टा विगतरोगा भवन्ति स्म म.व्यु.6308 (89[ख]).

ནད་དུ་མས་རྣམ་པར་བསྐྱེད་པ *वि.* अनेकव्याधिविवर्धितः – ནད་དུ་མས་རྣམ་པར་བསྐྱེད་པ་སྒྱུ་མའི་རང་བཞིན་ལྟ་བུར་(?) མཐོང་ནས अनेकव्याधिविवर्धितं च आत्मभावं संपश्यन् द.भू.196[क]/19.

ནད་དྲི आमगन्धि, गन्धविशेषः मि.को.15[क]।

ནད་ལྡང་བ་ཐམས་ཅད་ལ་མཁས་པ *वि.* सर्वव्याध्युत्पत्तिकुशलः – སྨན་པ...སྨན་ཐམས་ཅད་ལ་མཁས་པ། ནད་ལྡང་བ་ཐམས་ཅད་ལ་མཁས་པ वैद्यः...सर्वभैषज्यकुशलः सर्वव्याध्युत्पत्तिकुशलः सु.प.25[ख]/5.

ནད་ལྡན = ནད་པ रोगी, रोगयुक्तः – རིང་པོའི་ནད་ལྡན་མ་ཡིན་སྲོག་སོང་བདེ།། सुखी गतासुर्न तु दीर्घरोगी अ.क. 57[क]/59.71.

ནད་སྣ་ཚོགས་ཀྱིས་བཏབ་པ *वि.* नानाव्याधिपरिगतः म.व्यु.7155(102[क]).

ནད་པ रोगी – འོད་ཟེར་དཀར་ལྡན...སྐྱེ་[སྐྱ་]བོའི་ནད་པ་བཞིན पाण्डुरोगीव गौरद्युतिः अ.क.169[ख]/19.68; व्याधितः – མི་ནད་པ་དེས་སྨན་དེ་དག་ཡུན་རིང་པོར་བསྟེན་པས། དེ་དག་ལ་མོས་ཤིང་དེ་དག་ལ་དགའ་བར་འགྱུར་ཏེ स च व्याधितपुरुषो दीर्घकालप्रतिनिषेवणात् तेषां भैषज्यानां तदधिमुक्त एव भवेत् तदारामः बो.भू.149[क]/192; ग्लानः – སེམས་ཅན་ནད་པ་རྣམས་ལ་ཡང་དག་པའི་གསོ་བ་བྱ་བར་སྤྲོ་བ ग्लानानां च सत्त्वानां भूतचिकित्सायै उत्सुको भवति शि.स. 151[क]/146; ཐམས་ཅད་ཀྱིས་ནད་པ་ལ་བལྟ་བར་བྱའོ།། ग्लानमवलोकयेत् सर्वः वि.सू.32[क]/40; आतुरः – ནད་པ་ལ་ནི་སྨན་པ་བཞིན། །སེམས་ཅན་རྣམས་ལ་སྒྲུབ་པར་བྱེད།། आतुरे च यथा वैद्यः सत्त्वेषु प्रतिपद्यते ॥ सू.अ.189[क]/87; ནད་པ་རྣམས་ལ་རྟག་ཏུ་བདག། །ཤིན་ཏུ་ཕྱོགས་སུ་ལྷུང་བར་གྱུར།། आतुरेष्वेव सततं पक्षपातो ममाभवत् ॥ अ.क.204[ख]/ 85.5; रोगार्तः – ཀུན་ཏུ་ནད་པ་ཐམས་ཅད་ནི། །ཀུན་ནས་བདག་གིས་གསོ་བར་བྱ།། सर्वे सर्वत्र रोगार्ताश्चिकित्स्याः सर्वथा मया। अ.क.204[ख]/85.7; आर्तः – བཀྲེས་པ་ཁ་ཟས་ནད་པ་སྨན་རབ་འདོད་པ་དང་།། बुभुक्षितोऽन्नं सुभेषजमिवार्तः द.भू.172[ख]/6; आबाधिकः – ནད་པས་སྨན་གཞུག་པའི་ཕྱིར་མཆན་ཁུག་བཅང་བར་བྱའོ།། धारयेदाबाधिकः कच्छपुटं भैषज्यनिधानाय वि.सू.76[ख]/93; ग्लानीयः – སྨན་པ་ངན་གཡོ་ཅན་འགའ་ཞིག་གིས་ནད་པ་འགའ་ཞིག་སྨན་བྱིན་ནས་བསམས་པ कुहकेनैकतरेण वैद्येन कस्मैश्चिद् ग्लानीयौषधं ददानेन चिन्तितम् अभि.स्फु.328[क]/1224; आमयावी मि.को.51[ख]।

ནད་པ་ཆེན་པོ = ནད་ཆེན།

ནད་པ་སོས་པ निरामयत्वम् – སྨན་པའི་ངག་མ་མཉན་ན་སྨན་དག་གིས། །བཅོས་དགོས་ནད་པ་སོས་པ་ག་ལ་ཡོད།། वैद्योपदेशाच्चलतः कुतोऽस्ति भैषज्यसाध्यस्य निरामयत्वम् ॥ बो.अ.10[क]/4.48.

ནད་པའི་རུང་བའི་ཁང་པ ग्लानकल्पिकशाला – ནད་པའི་རུང་བའི་ཁང་པར་དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་ནད་པའི་རིམ་གྲོ་མཛད་པའོ།། ग्लानकल्पिकशालायां तथागतस्य ग्लानमुपतिष्ठतः वि.सू.95[ख]/114.

ནད་སྤངས་ནས་ཕྱིར་མི་སྐྱེ་བ་ལ་མཁས་པ • *वि.* प्रहीणस्य चाबाधस्यायत्यामनुत्पादकुशलः – ཡན་ལག་བཞི་དང་ལྡན་པའི་སྨན་པ... ནད་ལ་མཁས་པ་ཡིན། ནད་ཀྱི་གཞི་ལ་མཁས་པ་ཡིན། ནད་སྤོང་བ་ལ་མཁས་པ་ཡིན། ནད་སྤངས་ནས་ཕྱིར་མི་སྐྱེ་བ་ལ་མཁས་པ་ཡིན་ནོ།། चतुर्भिरङ्गैः समन्वागतो भिषक्...आबाधकुशलो भवति,

आबाधसमुत्थानकुशलः, आबाधप्रहाणकुशलः, प्रहीणस्य चाबाधस्यायत्यामनुत्पादकुशलः अभि.स्फु. 151ख/874; द्र. ནད་བསལ་ནས་ཕྱིས་མི་འབྱུང་བར་བྱ་བ་ལ་མཁས་པ་སྟོན་པའི་རྣམ་པ།

ནད་སྤོང་བ་ལ་མཁས་པ •*वि.* आबाधप्रहाणकुशलः – ཡན་ལག་བཞི་དང་ལྡན་པའི་སྨན་པ...ནད་ལ་མཁས་པ་ཡིན། ནད་ཀྱི་གཞི་ལ་མཁས་པ་ཡིན། ནད་སྤོང་བ་ལ་མཁས་པ་ཡིན चतुर्भिरङ्गैः समन्वागतो भिषक्...आबाधकुशलो भवति, आबाधसमुत्थानकुशलः, आबाधप्रहाणकुशलः अभि.स्फु.151ख/874; ནད་བྱུང་བ་བསལ་བ་ལ་མཁས་པ་སྟོན་པའི་རྣམ་པ།

ནད་པ་ཅན = ནད་པ ग्लानकः – མི་ཡི་སྲིད་པ་ཐོབ་ན་ཡང་། །ནད་པ་ཅན་ལ་གཞན་དབང་དང་།། लब्ध्वा वै मानुषं भवम्। ग्लानकः परवश्यश्च वि.व.291क/1.113; व्याधितः – དེ་ཡང་ནད་པ་ཅན་ཞིག་སྟེ་བཱ་ར་ཎ་སཱིར་བསོད་སྙོམས་ལ་སོང་ངོ་།། स व्याधितो वाराणसीं पिण्डाय प्रविशति अ.श.123क/113; व्याधिस्पृष्टः – རྒ་བས་ཉེན་ཅིང་ནད་པ་ཅན जरार्दित व्याधिन [? धि-स]पृष्टाः शि.स.177ख/175; द्र. ནད་ཅན།

ནད་པ་མེད आरोग्यम्, अनामयम् – अनामयं स्यादारोग्यम् अ.को.2.6.50; अरोगस्य भावः आरोग्यम् अ.वि.2.6.50.

ནད་བྱུང་བ་བསལ་བ་ལ་མཁས་པ་སྟོན་པའི་རྣམ་པ *पा.* उत्पन्नस्याबाधस्य प्रहाणकौशलपरिदीपनाकारः – གསོ་བའི་བསྟན་བཅོས་ནི་རྣམ་པ་བཞིས་འཇུག་སྟེ། ནད་ལ་མཁས་པ་སྟོན་པའི་རྣམ་པ་དང་ནད་ཅི་ལས་བྱུང་བ་ལ་མཁས་པ་སྟོན་པའི་རྣམ་པ་དང་ནད་བྱུང་བ་བསལ་བ་ལ་མཁས་པ་སྟོན་པའི་རྣམ་པ་དང चिकित्साशास्त्रञ्चतुराकारं प्रवर्तते । आबाधकौशलपरिदीपनाकारम्, आबाधसमुत्थानकौशलपरिदीपनाकारम्, उत्पन्नस्याबाधस्य प्रहाणकौशलपरिदीपनाकारम् बो.भू. 52ख/68; द्र. ནད་གྲངས་ནས་ཕྱིར་མི་སྐྱེ་བ་ལ་མཁས་པ།

ནད་བྲལ = ནད་དང་བྲལ་བ།

ནད་བྲལ་བ = ནད་དང་བྲལ་བ།

ནད་མ་མཆིས་པ आरोग्यम् लो.को.1342.

ནད་མང = ནད་མང་བ།

ནད་མང་བ •*वि.* व्याधिबहुलः – དེས་དེའི་ལུས་འདི་ལྟ་བུར་མི་སྡུག་ཅིང་ནད་མང་ལ་དྲི་ང་བར་གྱུར་ལགས येनास्य शरीरमेवं बीभत्सव्याधिबहुलं दुर्गन्धं संवृत्तम् अ.श.271क/248; •*सं.* बहुग्लान्यता – དེ་ནས་ཅི་སྟེ་མིར་སྐྱེས་ན་ཡང་རྣམ་པར་སྨིན་པ་གཉིས་མངོན་པར་འགྲུབ་པ་འདི་ལྟ་སྟེ། ཚེ་ཐུང་བ་དང་ནད་མང་བའོ།། अथ चेत्पुनर्मनुष्येषु उपपद्यते, द्वौ विपाकावभिनिर्वर्तयति अल्पायुष्कतां च बहुग्लान्यतां च द.भू.190क/17.

ནད་མི་མངའ = ནད་མི་མངའ་བ།

ནད་མི་མངའ་བ = སངས་རྒྱས निर्ज्वरः, बुद्धस्य नामपर्यायः म.व्यु.75(2ख).

ནད་མིང་ཅན = རུ་ཏ गदाख्यम्, कुष्ठम् मि.को.57ख।

ནད་མེད •*वि.* निरामयः – ས་སྐྱོང་ཁྱོད་ནི་ནད་མེད་བདག་གིས་བགྱི།། अहं महीपाल निरामयं त्वां करोमि अ.क. 58क/59.78; अनामयः – ཚུར་སོག་ཚུར་སོག་གནོད་མེད་ལ། །ནད་མེད་གནས་ནི་ཁྱོད་ཀྱིས་འཐོབ།། एह्येहि प्राप्नुहि पदं निरपायमनामयम्। अ.क.80ख/62.76; अरोगः – གང་དག་ཆོས་ཉན་འགྱུར་བ་རྣམས། །དེ་དག་མཁས་ཤིང་ནད་མེད་དང་།། पण्डिताश्चाप्यरोगाश्च धर्मं श्रोष्यन्ति येऽपि ते। ल.वि.172क/259; निर्व्या-

धिः – འཛིག་རྟེན་ན་ནད་མེད་པ་དང་ཡིད་གཞུངས་པ་དང་ལྡན་ཞིང་ लोके निर्व्याधिर्मेधान्वितः स.दु.116क/194; अरोगी – དེས་ཡང་དུས་གཞན་གྱི་ཚེ་ན། ནད་མེད་པ་དང་བདེ་བ་དང་སྟོབས་དང་ལྡན་པར་ཡང་མཐོང་སྟེ स पुनरपरेण समयेन पश्यत्यरोगिणम्, सुखितम्, बलवन्तम् श्रा.भू.182ख/481; अरुक् – གཞན་ཡང་ནད་ཅན་ནད་མེད་མཐོང་॥ रोगिणोऽप्यरुजश्चान्ये दृष्टाः अ.क.74ख/62.8; निरुक् – སེམས་ཅན་བདེ་ཞིང་ནད་གྱུང་མེད་པར་བྱས॥ सत्त्वा कृताः सुखिता निरुजाश्च रा.प.239क/136; निरातङ्कः – དེ་ལ་རིགས་མཐུན་པའི་ལྷ་དང་མི་རྣམས་དགའ་བར་འགྱུར་རོ॥ ནད་མེད་པ་དང་ཚེ་རིང་བར་འགྱུར་རོ॥ स निकायसभागे देवमनुष्याणां प्रियो भवति, निरातङ्को दीर्घायुष्कः शि.स.99क/98; निर्ज्वरः – ཉོན་མོངས་མེད་དང་ནད་མེད་དང་॥ अक्लेशनिर्ज्वरम् प्र.वा.113क/1.143; स्वस्थः – ནད་མེད་རྣམས་ལ་ཁ་ཟས་མེད། །དཔལ་ལྡན་རྣམས་ནི་ནད་དང་འགྲོགས॥ स्वस्थानामशनं नास्ति श्रीमतां रोगसङ्गतिः ॥ अ.क.205ख/85.17; उल्लाघः श्री.को.174ख; • सं. 1. = ནད་མེད་ཉིད आरोग्यम् – ལུས་ནད་མེད་པ་ཐོབ་པའི་ཕྱིར आरोग्यलाभाद् देहस्य प्र.अ.65ख/74; གཟུགས་མ་ཡིན་པ་ལ་ནི་ནད་མེད་པའི་རྒྱུ་སྟེ། ཉོན་མོངས་པའི་ནད་རབ་ཏུ་ཞི་བར་བྱེད་པའི་ཕྱིར་རོ॥ अरूपे आरोग्यहेतुः, क्लेशव्याधिप्रशमनात् सू.व्या.179ख/74; མྱ་ངན་ལས་འདས་པ་ནད་མེད་པ་འཐོབ་པར་བྱེད་པའི་ཕྱིར་རོ॥ निर्वाणारोग्यसम्प्रापकत्वात् अभि.स्फु.235क/1026; अरोगता – ནད་མེད་ཚེ་རིང་ནོར་དང་རིགས་དང་གཟུགས་རྣམས་ནི། །རབ་དང་འབྲིང་དང་ཐ་མའི་བྱེ་བྲག་སྣ་ཚོགས་པའི॥ अरोगतायुर्धनरूपजातिभिर्निकृष्टमध्योत्तमभेदचित्रता। जा.मा.166क/192 2. = ཨ་རུ་ར अव्यथा, हरीतकी – अभया त्वव्यथा पथ्या कायस्था पूतनामृता। हरीतकी हैमवती रेचकी श्रेयसी शिवा॥ अ.को.2.4.59; न व्यथयति रोगहरत्वाद् अव्यथा। व्यथ भयसंचलनयोः अ.वि.2.4.59 3. निर्ज्वरः, धर्मपर्यायः म.व्यु.1293(27ख).

ནད་མེད་པ = ནད་མེད།

ནད་མེད་པ་ལྟ་བུར་གྱུར་པ *वि.* आरोग्यभूतः – འདི་ནི་དེ་ལྟར་རབ་ཏུ་དང་བར་གྱུར་པའི་སྒྲུབ་པ་ཡིན་པའི་ཕྱིར་རོ॥ ཡང་ན་ནད་མེད་པ་ལྟ་བུར་གྱུར་པ་ཡིན་པའི་ཕྱིར་རོ॥ एवं प्रसन्नस्यैषा प्रतिपत्तिरिति; आरोग्यभूतत्वाद्वा अभि.भा.41क/1026.

ནད་མེད་པ་ཐོབ་པ आरोग्यलाभः – དེས་ན་ལུས་ནད་མེད་པ་ཐོབ་པའི་ཕྱིར་སླར་འཚོ་བར་འགྱུར་ཏེ तत आरोग्यलाभाद् देहस्य पुनरुज्जीवनं भवेत् प्र.अ.65ख/74.

ནད་མེད་མིག་ཅན *वि.* स्वस्थेक्षणः – རབ་རིབ་ཅན་དང་ལྷན་ཅིག་ཏུ། །ནད་མེད་མིག་ཅན་སུ་ཞིག་འགྲན॥ को हि तैमिरिकैः स्पर्धां कुर्यात् स्वस्थेक्षणे नरे॥ त.स.129ख/1108.

ནད་ཆབས་ཆེ་བ *वि.* बाढग्लानः – སྐྱེས་པའམ་བུད་མེད་གང་ཡང་རུང་བ་ཞིག་ནད་ཀྱིས་བཏབ་པ་སྟེ། སྡུག་བསྔལ་ཞིང་ནད་ཆབས་ཆེ་བའམ་ཤི་ཞིང་འཆི་བའི་དུས་ལས་འདས་པར་ཐོས་ཀྱང་རུང पुरुषम्वा स्त्रियम्वा आबाधिकं शृणोषि, दुःखितम्, बाढग्लानम्, मृतम्वा कालगतम् श्रा.भू.151ख/411; द्र. ནད་ཆབས་པོ་ཆེ།

ནད་ཆབས་ཆེན = ནད་ཆབས་ཆེ་བ།

ནད་ཆབས་པོ་ཆེ महाव्याधिः – རྒྱ་གླུང་གློག་བྱེད་ཀྱི་ནང་དུ་ཉ་པོ་ཆེ་རོ་ཧི་ཏ་ཞེས་བྱ་བ་སྐྱེས་པ་དེ་ནི། ནད་ཆབས་པོ་ཆེས་གཟིར་ནས་ཡུན་རིང་དུ་ཡོན་པ་རྣམས་ཀྱི་བདུད་རྩི་དང་འདྲའོ॥ एष दीर्घकालमहाव्याध्युत्पीडितानाम-

मृतकल्पो नद्यां वालुकायां महान् रोहितमत्स्य प्रादुर्भूतः अ.श.88ख/79; द्र. ནད་ཚབས་ཆེ་བ།

ནད་ཟད་བྱེད क्षयव्याधिः, क्षयरोगः मि.को.52क।

ནད་གཟེར་བ महल्लकः म.व्यु.4097.

ནད་གཡོག 1. उपस्थायकः, ग्लानस्य परिचारकः – དེའི་ནད་གཡོག་ནི་ནད་པ་དེའི་རིམ་གྲོ་བྱེད་པའོ། तदुपस्थायकः तस्य ग्लानस्य परिचारकः बो.प.70क/38; དེ་ལ་ནད་གཡོག་མེད་ན་མཐར་ཐུག་པ་མན་ཆད་ལས་བསྐྱོ་བར་བྱའོ། उपस्थायकस्याभावे ददीरन्नान्तात् वि.सू.10क/10 2. ग्लानोपस्थानम् – ལྷུང་བཟེད་དང་ཆོས་གོས་ཀྱི་ལས་དང་ནད་གཡོག་དང་ पात्रचीवरकर्मणो ग्लानोपस्थाने वि.सू.3क/2.

ནད་གཡོག་བྱ *क्रि.* ग्लानमुपतिष्ठेत् – ལྷན་ཅིག་གནས་པ་དང་…འགྲོགས་བརྩེས་ཀྱིས་ནད་གཡོག་བྱའོ། सार्धविहारी…संसमकं[सप्रेमकः] ग्लानमुपतिष्ठेत् वि.सू.10क/10.

ནད་གཡོག་བྱེད = ནད་གཡོག་བྱེད་པ།

ནད་གཡོག་བྱེད་པ • *क्रि.* परिचरति – ཡང་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་ནི་སྡུག་བསྔལ་བ་རྣམས་ཀྱི་གྲོགས་སུ་འགྲོ་བར་བྱེད་དོ། སེམས་ཅན་ནད་ཀྱིས་ཐེབས་པ་རྣམས་ཀྱི་ནད་གཡོག་བྱེད་དོ། पुनर्बोधिसत्त्वः सहायीभावं गच्छन् व्याधितान् सत्त्वान् परिचरति बो.भू.78ख/100; • *सं.* उपस्थायकः, ग्लानस्य परिचारकः – འགྲོ་བ་ནད་པ་ཇི་སྲིད་དུ། །ནད་སོས་གྱུར་གྱི་བར་དུ་ནི། །སྨན་དང་སྨན་པ་ཉིད་དག་དང་། །དེ་ཡི་ནད་གཡོག་བྱེད་པར་ཤོག། ग्लानानामस्मि भैषज्यं भवेयं वैद्य एव च। तदुपस्थायकश्चैव यावद्रोगापुनर्भवः॥ बो.अ.7क/3.7.

ནད་གཡོག་མི་བྱེད་པ अनुपस्थापनम् – ནད་པ་དག་ལ་ནད་གཡོག་མི་བྱེད་པ་ལའོ། अनुपस्थापने ग्लानयोः वि.सू.52ख/67.

ནད་ལ་མཁས = ནད་ལ་མཁས་པ།

ནད་ལ་མཁས་པ • *वि.* आबाधकुशलः – ཡན་ལག་བཞི་དང་ལྡན་པའི་སྨན་པ…ནད་ལ་མཁས་པ་ཡིན चतुर्भिरङ्गैः समन्वागतो भिषक्…आबाधकुशलो भवति अभि.स्फु.151ख/874; • *सं.* आबाधकौशलम् – ནད་ལ་མཁས་པ་སྟོན་པའི་རྣམ་པ आबाधकौशलपरिदीपनाकारम् बो.भू.52ख/68.

ནད་ལ་མཁས་པ་སྟོན་པའི་རྣམ་པ *पा.* आबाधकौशलपरिदीपनाकारः – གསོ་བའི་བསྟན་བཅོས་ནི་རྣམ་པ་བཞིས་འཇུག་སྟེ། ནད་ལ་མཁས་པ་སྟོན་པའི་རྣམ་པ་དང་ ནད་ཅི་ལས་བྱུང་བ་ལ་མཁས་པ་སྟོན་པའི་རྣམ་པ་དང་ चिकित्साशास्त्रञ्चतुराकारं प्रवर्तते। आबाधकौशलपरिदीपनाकारम्, आबाधसमुत्थानकौशलपरिदीपनाकारम् बो.भू.52ख/68; द्र. ནད་ལ་མཁས་པ།

ནད་ལ་འཚེ = བསྐ་བ तुवरः, कषायः मि.को.15क।

ནད་ལས་གྲོལ་བར་མཛད་པ *क्रि.* रोगमुक्तान् करोति – གསོ་བར་མཛད་པ་ནི་ནད་ལས་གྲོལ་བར་མཛད་པའོ། चिकित्सति रोगमुक्तान् करोति बो.प.141क/122.

ནད་ལས་གྲོལ་མ་ཐག་པ *वि.* उल्लाघः मि.को.62ख।

ནད་ལས་ཐར་གྱུར་ཅིག *क्रि.* मुञ्चतु व्याधितः – དེ་ཀུན་མྱུར་དུ་ནད་ལས་ཐར་གྱུར་ཅིག། ते सर्वि[र्वे] मुच्यन्तु च व्याधितो लघु सु.प्र.10क/19.

ནད་ལས་ཐར་པ *वि.* व्याधिमोक्षणः – རྡོ་རྗེ་རྒྱལ་པོ་སྤྲིན་ཆེན་པོ། །ནད་ལས་ཐར་བར་བསྒོམ་པར་བྱ།། वज्रराजं महामेघं भावयेद् व्याधिमोक्षणम्॥ गु.स. 130क/87; द्र. ནད་ལས་ཐར་བར་བྱེད་པ།

ནད་ལས་ཐར་བར་བྱེད་པ *वि.* रोगविमोचनकः – ནད་ཐམས་ཅད་ལས་ཐར་བར་བྱེད་པ सर्वरोगविमोचनकः सु.प.25ख/5; द्र. ནད་ལས་ཐར་མཛད་པ།

ནད་ལས་ཐར་མཛད་པ व्याधिप्रमोचकः – ནད་རྣམས་ཀུན་ལས་ཐར་མཛད་པ། །སྨན་པའི་རྒྱལ་པོ་ཡང་དག་བྱུང་॥ वैद्यराट् त्वं समुत्पन्नः सर्वव्याधिप्रमोचकः॥ ल.वि.172क/259; द्र. ནད་ལས་ཐར་བར་བྱེད་པ།

ནད་ལས་ཡོངས་སུ་ཐར་བར་མཛད་པ *वि.* व्याधिपरिमोचनकरः, अवलोकितेश्वरस्य – སྤྱན་རས་གཟིགས་ཀྱི་དབང་པོ་དབང་ཕྱུག་ཆེན་པོ...ནད་ལས་ཡོངས་སུ་ཐར་བར་མཛད་པ...ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ॥ नमोऽस्त्ववलोकितेश्वराय महेश्वराय... व्याधिपरिमोचनकराय का.व्यू.205ख/263.

ནད་སེལ 1. = སྨན अगदः –भेषजौषधभैषज्यान्यगदो जायुरित्यपि॥ अ.को.2.6.50; अविद्यमानो गदोऽनेन इति अगदः अ.वि.2.6.50 2. = སྨན་པ अगदंकारः – रोगहार्यगदंकारो भिषग्वैद्यौ चिकित्सके। अ.को.2.6.57; अगदमरोगं करोति प्राणिनमिति अगदंकारः अ.वि.2.6.57.

ནད་སོས་པ *भू.का.कृ.* ग्लान्याद्व्युत्थितः – གང་གི་ཚེ་ནད་སོས་པ་དེའི་ཚེ་དེས་སངས་རྒྱས་ལ་སོགས་པ་དགེ་སློང་གི་དགེ་འདུན་ཆུས་མི་ཐྲེལ་བར་བྱས་ཏེ यदा तस्माद् ग्लान्याद्व्युत्थितः, तदा तेन बुद्धप्रमुखो भिक्षुसङ्घः पानीयेनाल्पोत्सुकः कृतः अ.श.230ख/212.

ནད་གསོ་པ 1. व्याधिचिकित्सा – ནད་གསོ་བའི་རིག་པ व्याधिचिकित्साविद्या बो.भू.52क/68 2. व्याधिचिकित्सकः लो.को.1343.

ནད་གསོ་བའི་རིག་པ *पा.* व्याधिचिकित्साविद्या, विद्यास्थानभेदः – རིག་པའི་གནས་ལྔ་པོ་དག་ཡིན་ཏེ། ནང་གི་རིག་པ་དང་གཏན་ཚིགས་ཀྱི་རིག་པ་དང་སྒྲའི་རིག་པ་དང་ནད་གསོ་བའི་རིག་པ་དང་བཟོ་དང་ལས་ཀྱི་གནས་ཀྱི་རིག་པ་འོ॥ पञ्चविद्यास्थानानि भवन्ति। अध्यात्मविद्या हेतुविद्या शब्दविद्या व्याधिचिकित्साविद्या शिल्पकर्मस्थानविद्या च बो.भू.52क/68.

ནད་གསོར་མི་རུང་བ दीर्घग्लान्यम् लो.को.1343.

ནད་བསལ་ནས་ཕྱིས་མི་འབྱུང་བར་བྱ་བ་ལ་མཁས་པ་སྟོན་པའི་རྣམ་པ *पा.* प्रहाणस्य चाबाधस्यायत्यामनुत्पादकौशलपरिदीपनाकारः – གསོ་བའི་བསྟན་བཅོས་ནི་རྣམ་པ་བཞིས་འཇུག་སྟེ། ནད་ལ་མཁས་པ་སྟོན་པའི་རྣམ་པ་དང་ནད་ཅི་ལས་བྱུང་བ་ལ་མཁས་པ་སྟོན་པའི་རྣམ་པ་དང་ནད་བྱུང་བ་བསལ་བ་ལ་མཁས་པ་སྟོན་པའི་རྣམ་པ་དང་ནད་བསལ་ནས་ཕྱིས་མི་འབྱུང་བར་བྱ་བ་ལ་མཁས་པ་སྟོན་པའི་རྣམ་པ་འོ॥ चिकित्साशास्त्रञ्चतुराकारं प्रवर्तते। आबाधकौशलपरिदीपनाकारम्, आबाधसमुत्थानकौशलपरिदीपनाकारम्, उत्पन्नस्याबाधस्य प्रहाणकौशलपरिदीपनाकारम्, प्रहीणस्य चाबाधस्यायत्यामनुत्पादकौशलपरिदीपनाकारम् बो.भू.52ख/68; द्र. ནད་སྤངས་ནས་ཕྱིར་མི་སྐྱེ་བ་ལ་མཁས་པ།

ནན = ནན་ཏན། ནན་གྱིས बलात्, प्रयत्नात् – སྙིང་རྗེ་སྡུག་བསྔལ་མང་གྱུར་པ། །ཅི་ཕྱིར་ནན་གྱིས་སྐྱེད་ཅེ་ན॥ कृपया बहु दुःखं चेत्कस्मादुत्पद्यते बलात्। बो.अ.27ख/8.104; बलात्कारेण – དེ་ནས་མི་དེ་དག་གིས་ནན་གྱིས་མི་དབུལ་པོ་དེ་ཀུ་ཅོ་འདོན་བཞིན་དུ་ཁྲིད་པ་དང་ अथ खलु ते पुरुषा बलात्कारेण तं दरिद्रपुरुषं विरवन्तमप्याकर्षेयुः स.पु.41क/72; हठेन – གཞན་དག་ལ་ཡང་ནན་གྱིས་ཆོས་སྟོན हठेन च परेषां धर्मं देशयति बो.भू.167ख/221; हठात् – འབྲས་བུ་ནི་རྒྱུའི་གཞན་གྱི

དབང་ཡིན་པས་རྒྱུ་དེ་ནུས་པ་ཡིན་ན་ནན་གྱིས་སྐྱེད་པར་བྱེད་དོ།། कारणपरतन्त्रं हि कार्यं तत्समर्थं कारणं हठादेव जनयति प्र.अ.49ख/56; प्रयत्नात् – ནན་གྱིས་སླར་བཟློག་སྟེ प्रयत्नाद्विनिवर्त्य जा.मा.52क/61; प्रसभम् – གཡུལ་ངོར་དཔའ་ངར་ཆེ་ནན་གྱིས་གཞོམ་པར་འདོད་པ་ཡང་།། रणशिरसि प्रसभं निहन्तुमुग्राः बो.अ.9ख/4.37; म.व्यु.6858(98क); प्रसह्य–གཞན་གྱི་ཆུང་མ་ལ་ནན་གྱིས་བྱས་པ་དང་མི་དབང་བའི་བུ་མོ་ལ་བྱས་པ་ཡང་དེ་བཞིན་ནོ།། एवं प्रसह्यानीतास्वपि परस्त्रीषु, [अ]लब्धासु च कन्यासु शि.स.48क/45.

ནན་ཁུགས *ना.* वेष्ठिलः, गृहपतिः – སོང་རིགས་ཀྱི་བུ་ལྷོ་ཕྱོགས་ཀྱི་རྒྱུད་འདི་ཉིད་ན་གྲོང་ཁྱེར་དགེ་བའི་ཕ་རོལ་ཏུ་ཕྱིན་པ་ཞེས་བྱ་བ་ཡོད་དེ། དེ་ན་ཁྱིམ་བདག་ནན་ཁུགས་ཞེས་བྱ་བ་དེ་བཞིན་གཤེགས་པའི་མཆོད་རྟེན་ཙན་དན་གྱི་ཁྲི་འཕང་ཅན་ལ་མཆོད་པ་བྱེད་པ་ཞིག་འདུག་གིས गच्छ कुलपुत्र, इहैव दक्षिणापथे शुभपारङ्गमं नाम नगरम्। तत्र वेष्ठिलो नाम गृहपतिश्चन्दनपीठं तथागतचैत्यं पूजयति ग.व्यू.65ख/156.

ནན་ཏན • *सं.* 1. प्रयत्नः – ཤཱཀྱ་གཞོན་ནུ་ཐམས་ཅད་ཀྱིས་ནན་ཏན་གྱི་མཆོག་གིས་བསྒྲིམས་ཀྱང་གཞུ་དེ་བདུང་བར་ཡང་མ་ནུས་ན་དགང་བར་ལྟ་སྨོས་ཀྱང་ཅི་དགོས་ཏེ་མ་ནུས་སོ།། सर्वे शाक्यकुमाराः परमेणापि प्रयत्नेन व्यायच्छमाना न शक्नुवन्ति स्म तद्धनुरारोपयितुं प्रागेव पूरयितुम् ल.वि.79ख/107; यत्नः – ཚུལ་ཁྲིམས་དོན་དུ་གཉེར་བས་ཀྱང་ཏིང་ངེ་འཛིན་ལ་ནན་ཏན་དུ་བྱའོ།། शीलार्थिनाऽपि समाधौ यत्नः कार्यः बो.प.95क/60; श्रमः – དེ་དག་ནི་ནན་ཏན་དུ་མ་སྦྱངས་པའི་བྱིས་པ་སོ་སོའི་སྐྱེ་བོ་དག་སྟེ ते हि अकृतश्रमा बालपृथग्जनाः बो.प.108ख/78; व्यवसायः लो.को.1343; उद्यमः म.व्यु.1817(39क); योगः – རྣལ་འབྱོར་ཅན་གྱིས་དགེ་བའི་བཤེས་གཉེན་གྱི་སྐྱེ་བོ་ལ་བསྟེན་པའི་ནན་ཏན་བརྩམ་པར་བྱའོ།། योगिना कल्याणमित्रजिन[? जन]योगे योगः प्रारब्धव्यः ल.अ.73क/21 2. प्रतिपत् – ནན་ཏན་དང་སྤོང་བ་ཤེས་པས་བསམ་པ་རྣམ་པར་དག་པ་མཉམ་པ་ཉིད་དང प्रतिपत्प्रहाणज्ञानविशुद्ध्याशयसमतया च द.भू.212क/27; प्रतिपत्तिः – རབ་ཏུ་བྱུང་ནས་ཀྱང་ནན་ཏན་གྱིས་བསྒྲུབ་པར་བྱའོ།། प्रव्रजित्वा[? ज्य] च प्रतिपत्त्या सम्पादयेयम् श्रा.भू.5क/9; ནན་ཏན་སྙིང་པོར་བྱེད་པ प्रतिपत्तिसारता शि.स.107ख/106; • *पा.* अनुष्ठानम्, कृत्यानुष्ठानज्ञानम् – རང་ལྷའི་ས་བོན་ཕྱག་མཚན་ནི། །སོ་སོར་རྟོག་པར་བརྗོད་པར་བྱ། །ཐམས་ཅད་གཅིག་གྱུར་ནན་ཏན་ཉིད། །རྫོགས་པ་ཆོས་དབྱིངས་དག་པ་སྟེ།། बीजैश्चिह्नैः स्वदेवस्य प्रत्यवेक्षणमुच्यते। सर्वैरेकमनुष्ठानं निष्पत्तिः शुद्धिधर्मता॥ हे.त.9क/26; = བྱ་བ་ནན་ཏན་ཡེ་ཤེས कृत्यानुष्ठानज्ञानम् गु.सि.14क/30.

ནན་ཏན་དུ प्रयत्नेन – དེ་བས་བཟོད་ལ་ནན་ཏན་དུ། །སྣ་ཚོགས་ཚུལ་དུ་བསྒོམ་པར་བྱ།། तस्मात्क्षान्तिं प्रयत्नेन भावयेद्विविधैर्नयैः॥ बो.अ.14ख/6.2; प्रयत्नतः – རྣལ་འབྱོར་གྱིས་ནི་ནན་ཏན་དུ། །དུས་མཚམས་གསུམ་དང་སྒོམ་པ་གསུམ་བྱས།། <?>त्रिशरणं त्रिसन्ध्यासु योगी कुर्यात्प्रयत्नतः॥ ल.अ.188ख/160.

ནན་ཏན་སྒྲུབ་པ प्रतिपत्तिः – བསོད་ནམས་གཞི་ལས་འབར་བའི་ཡོན་ཏན་རྣམས། །ནན་ཏན་སྒྲུབ་པའི་བྱིན་གྱིས་དགའ་བར་གྱུར།། गुणा हि पुण्याश्रयलब्धदीप्तयो गताः प्रियत्वं प्रतिपत्तिशोभया। जा.मा.128ख/149.

ནན་ཏན་ཆེ་བའི་ཡོན་ཏན་དང་ལྡན་པ *वि.* प्रतिपत्तिगुणसौष्ठवः – དེ་བསོད་ནམས་དང་ལྡན་ཞིང...ནན་ཏན

ཆེ་བའི་ཡོན་ཏན་དང་ལྡན་པ स कृतपुण्यत्वात्...प्रतिपत्तिगुणसौष्ठवाच्च जा.मा.128ख/149.

ནན་ཏན་སྙིང་པོར་བྱེད་པ प्रतिपत्तिसारः म.व्यु.1810 (39क); प्रतिपत्तिसारता – ཆོས་ཀྱི་ཚོགས་སུ་སྦྱོར་བ་གང་ཞེ་ན། གང་འདི་ནི་དོན་ཉུང་བ་དང་...ནན་ཏན་སྙིང་པོར་བྱེད་པ་དང་ कतमो धर्मसंभारयोगः ? येयमल्पार्थता...प्रतिपत्तिसारता शि.स.107ख/106.

ནན་ཏན་དང་སྤོང་བ་ཤེས་པས་བསམ་པ་རྣམ་པར་དག་པ་མཉམ་པ་ཉིད *पा.* प्रतिपत्प्रहाणज्ञानविशुद्ध्याशयसमता, चित्ताशयविशुद्धिसमताभेदः – དེ་སེམས་ཀྱི་བསམ་པ་རྣམ་པར་དག་པའི་མཉམ་པ་ཉིད་བཅུས་འཇུག་གོ། བཅུ་གང་ཞེ་ན། འདི་ལྟ་སྟེ། འདས་པའི་སངས་རྒྱས་ཀྱི་ཆོས་ཀྱིས་བསམ་པ་རྣམ་པར་དག་པ་མཉམ་པ་ཉིད་དང་... ནན་ཏན་དང་སྤོང་བ་ཤེས་པས་བསམ་པ་རྣམ་པར་དག་པ་མཉམ་པ་ཉིད་དང་ स दशभिश्चित्ताशयविशुद्धिसमताभिरवतरति। कतमाभिर्दशभिः ? यदुत अतीतबुद्धधर्मविशुद्ध्याशयसमतया च...प्रतिपत्प्रहाणज्ञानविशुद्ध्याशयसमतया च द.भू.212क/27.

ནན་ཏན་དུ་སྒྲུབ་པ अनुष्ठानम् – བྱ་བ་ནན་ཏན་དུ་སྒྲུབ་པའི་ཡེ་ཤེས कृत्यानुष्ठानज्ञानम् म.व्यु.114(3क); द्र. ནན་ཏན། ནན་ཏན་བྱེད་པ།

ནན་ཏན་དུ་བྱ •*क्रि.* 1. यतेत – སྙིང་རྗེ་མདུན་དུ་བཞག་ནས་སུ། །དགེ་བ་སྤེལ་ལ་ནན་ཏན་བྱ། करुणां च पुरस्कृत्य यतेत शुभवृद्धये ॥ शि.स.152क/147; अनुतिष्ठेत् – དེའི་ཚིག་ཡི་གེར་བྲི་བའི་དམ་བཞག་ལ་ནན་ཏན་བྱའོ། यत्राभिलिखितता सम्पत्ति[पत्राभिलेखनसम्वित्ति]मस्यानुतिष्ठेत् वि.सू.27क/33 2. प्रतिपत्स्यते – འཁོར་བ་ཟད་པར་བྱ་བའི་ཕྱིར་ནན་ཏན་དུ་བྱའོ། संसारक्षयाय प्रतिपत्स्यामहे प्र.प.75ख/95 3. प्रयत्यते म.व्यु.7639(109क); • *कृ.* अनुष्ठेयम् – དེ་ཕྱིར་དེ་ཡི་ཡེ་ཤེས་ནི། །ནན་ཏན་བྱ་རྟོགས་[གཏོགས་] རྣམ་དཔྱད་བྱའི། तस्मादनुष्ठेयगतं ज्ञानमस्य विचार्यताम्। प्र.अ.45ख/52; • *सं.* प्रतिपत्तिः – ཆོས་དང་གཉེར་བའི་ཆོས་ལ་ནན་ཏན་དུ་བྱ་བས་སངས་རྒྱས་ཀྱི་ཆོས་ཁོང་དུ་ཆུད་པར་བྱའི། ཚིག་གི་ལམ་ཡོངས་སུ་དག་པ་འབའ་ཞིག་གིས་མ་ཡིན་ནོ། धर्मानुधर्मप्रतिपत्त्या इमे बुद्धधर्मा अनुगन्तव्या, न केवलं वाक्कर्म[पथ]परिशुद्ध्या द.भू.198क/20; अनुप्रतिपत्तिः – དགོན་མཆོག་དག་གི་རྩིག་པ་དང་ཀ་བ་དང་སྒོ་གློགས་ཀྱི་སེར་ཀ་དག་བྱུག་པའི་ཕྱིར་དེ་ལ་ནན་ཏན་བྱའོ། भित्तिस्तम्भकवाटसुषिरेषु रत्नेषु लेपनमित्यनुप्रतिपत्तिः वि.सू.96ख/116.

ནན་ཏན་དུ་བྱ་བ = ནན་ཏན་དུ་བྱ།

ནན་ཏན་དུ་བྱ་བའི་སྤྱོད་པ་ཡོངས་སུ་རྫོགས་པར་བྱེད་པ *वि.* प्रायोगिकचर्यापरिपूरणी – ཀྱེ་རྒྱལ་བའི་སྲས་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའི་ས་འདི་ནི་ནན་ཏན་དུ་བྱ་བའི་སྤྱོད་པ་ཡོངས་སུ་རྫོགས་པར་བྱེད་པ इयं भो जिनपुत्रा बोधिसत्त्वभूमिः प्रायोगिकचर्यापरिपूरणी च द.भू.231क/37.

ནན་ཏན་དུ་བྱས་པ •*भू.का.कृ.* अनुष्ठितः म.व्यु.2420(46ख); •*वि.* प्रतिपद्यमानः – དེ་ནས་ཚོང་དཔོན་གྱི་བུ་ནོར་བཟངས་ཀྱིས་སྲིན་པོའི་དབང་པོ་མིག་བཟངས་ཀྱིས་ཇི་སྐད་དུ་གདམས་པ་དེ་ལྟར་ནན་ཏན་དུ་བྱས་པ་དང་ अथ खलु सुधनः श्रेष्ठिदारको यथानुशिष्टः सुनेत्रेण राक्षसेन्द्रेण प्रतिपद्यमानः ग.व्यू.260क/342.

ནན་ཏན་དུ་བྱེད = ནན་ཏན་བྱེད་པ།

ནན་ཏན་དུ་བྱེད་པ = ནན་ཏན་བྱེད་པ།

ནན་ཏན་བྱ = ནན་ཏན་དུ་བྱ།

ནན་ཏན་བྱེད་པ • *क्रि.* प्रतिपद्यते – ལྷག་པའི་བསམ་པ་བརྟན་པས་ནན་ཏན་དུ་བྱེད་པ་འདི་ལྟ་བུས་དགེ་བའི་བཤེས་གཉེན་གྱི་གདམས་ངག་ལ་ནན་ཏན་དུ་བྱེད་པ ई-दृश्या दृढाध्याशयप्रतिपत्त्या कल्याणमित्रानुशासनीषु प्रतिपद्यन्ते ग.व्यू.308ख/395; •*सं.* प्रतिपत्तिः – མིའི་འཇིག་རྟེན་ན་ཆོས་དང་མཐུན་པའི་ཆོས་ལ་ནན་ཏན་བྱེད་པ་ཡང་ཤིན་ཏུ་དཀོན་ན मनुष्यलोके दुर्लभा धर्मानुधर्मप्रतिपत्तिः ग.व्यू.381ख/90; ཇི་སྐད་དུ་ཐོས་པའི་ཆོས་ལ་ནན་ཏན་དུ་བྱེད་པའི་སེམས་དང་ལྡན་པ་ཡིན་ཏེ यथाश्रुतधर्मप्रतिपत्तिचित्तश्च भवति द.भू.207ख/25; अनुष्ठानम् – ནན་ཏན་བྱེད་པ་ཡོད་མ་ཡིན། །ཞེས་ནི་ཁ་ཅིག་རབ་ཏུ་བརྗོད།། नास्त्यनुष्ठानमिति केचित् प्रचक्षते प्र.अ.44क/50; • *वि.* यत्नवान् लो.को.1343.

ནན་ཏན་མི་བྱེད་པ •*क्रि.* न प्रतिपद्यते लो.को.1343; •*सं.* अननुष्ठानम् – བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའི་བྱ་བ་ལ་ནན་ཏན་མི་བྱེད་པ་ལ་འཛེམ་པ་གང་ཡིན་པ་དེ་ནི་གནས་དང་པོའོ།། बोधिसत्त्वकरणीयस्याननुष्ठाने या लज्जा। इदं प्रथममधिष्ठानम् बो.भू.133क/171.

ནན་ཏན་ཡིད *वि.* युक्तमानसः – མ་ཆགས་གྱུར་ཅིང་ནན་ཏན་ཡིད་ཀྱིས་འཆད།། असङ्गप्राप्तो वदि युक्तमानसः स.पु.38ख/70.

ནན་ཏར = ཤིན་ཏུ गाढम्, अतिशयः – अथातिशयः... गाढनिर्भरम् ॥ अ.को.1.1.68; गाहते गाढम् अ.वि.1.1.68.

ནན་ཏུར 1. अवष्टम्भः – དེ་ལྟ་བས་ན་འདི་ནི་ནན་ཏུར་ལས་བྱུང་བའི་ཐབས་ཞེས་བྱའོ།། तस्मादयमवष्टम्भज उपाय इत्युच्यते बो.भू.143क/183; ནན་ཐུར་(ནན་ཏུར་)ལས་བྱུང་བ अवष्टम्भजः बो.भू.140क/180 2. दण्डनीतिः – ཆགས་དང་ཞེ་སྡང་མེད་པའི་ནན་ཏུར་གྱིས། །འགྲོ་བ་རྣམས་སྐྱོང་ལ रागद्वेषोन्मुक्तया दण्डनीत्या रक्षँल्लोकान् जा.मा.139क/161; द्र.– ཕན་ གདགས ནན་ཐུར་བགྱི་བའི་བཀའ་ཁྲིམས་ཀྱིས། །འབངས་ཀྱི་སྐྱེ་དགུ་བསྲུང་བའི་དབང་བསྐུར་ཏམ།། अपि रक्षणदीक्षितः प्रजानां समयानुग्रहविग्रहप्रवृत्त्या। जा.मा.125क/144 3. प्रणिधिः – ནན་ཏུར་གྱི་ལས प्रणिधिकर्म वि.सू.3क/3; वि.सू.83क/100.

ནན་ཏུར་གྱི་ལས प्रणिधिकर्म – ནན་ཏུར་བྱེད་པར་འདོད་པའི་དགེ་འདུན་ལ་ཨེ་མའོ་དགེ་འདུན་གྱིས་འདི་ལ་ནན་ཏུར་གྱི་ལས་འདི་ལྟ་བུ་མི་བྱའོ་ཞེས་ཀྱང་ངོ།། प्रणिधातुकामे सङ्घेऽहो बत सङ्घोऽस्येदं प्रणिधिकर्म न कुर्यादिति वि.सू.3क/3; वि.सू.83क/100.

ནན་ཏུར་དུ་བྱ་བ प्रणिधिकर्म म.व्यु.9304(128क); द्र. ནན་ཏུར་གྱི་ལས།

ནན་ཏུར་བྱས = ནན་ཏུར་བྱས་པ།

ནན་ཏུར་བྱས་པ *भू.का.कृ.* प्रणिहितः – ནན་ཏུར་བྱེད་པ་དག་གིས་མ་བསྒོས་ན་ནན་ཏུར་བྱས་པ་ལ་བཟློད་པ་མི་འཆགས་སོ།། *> नासां मन्ये प्रणिधातॄणामवसारणस्य प्रणिहितौ रूढिः वि.सू.85ख/103.

ནན་ཏུར་བྱེད་པ प्रणिधाता – ནན་ཏུར་བྱེད་པ་དག་གིས་མ་བསྒོས་ན་ནན་ཏུར་བྱས་པ་ལ་བཟློད་པ་མི་འཆགས་སོ།། * > नासां मन्ये प्रणिधातॄणामवसारणस्य प्रणिहितौ रूढिः वि.सू.85ख/103; ནན་ཏུར་བྱེད་པར་འདོད་པ प्रणिधातुकामः वि.सू.3क/3.

ནན་ཏུར་བྱེད་པར་འདོད་པ *वि.* प्रणिधातुकामः – ནན་ཏུར་བྱེད་པར་འདོད་པའི་དགེ་འདུན་ལ་ཨེ་མའོ་དགེ་འདུན་གྱིས་འདི་ལ་ནན་ཏུར་གྱི་ལས་འདི་ལྟ་བུ་མི་བྱའོ་ཞེས་ཀྱང་ངོ།། प्रणिधातुकामे सङ्घेऽहो बत सङ्घोऽस्येदं प्रणिधि-

ཆེ་བའི་ཡོན་ཏན་དང་ལྡན་པ स कृतपुण्यत्वात्...प्रतिपत्तिगुणसौष्ठवाच्च जा.मा.128ख/149.

ནན་ཏན་སྙིང་པོར་བྱེད་པ प्रतिपत्तिसारः म.व्यु.1810 (39क); प्रतिपत्तिसारता – ཆོས་ཀྱི་ཚོགས་སུ་སྦྱོར་བ་གང་ཞེ་ན། གང་འདི་ནི་དོན་ཉུང་བ་དང་...ནན་ཏན་སྙིང་པོར་བྱེད་པ་དང कतमो धर्मसंभारयोगः ? येयमल्पार्थता...प्रतिपत्तिसारता शि.स.107ख/106.

ནན་ཏན་དང་སྤོང་བ་ཤེས་པས་བསམ་པ་རྣམ་པར་དག་པ་མཉམ་པ་ཉིད *पा.* प्रतिपत्प्रहाणज्ञानविशुद्ध्याशयसमता, चित्ताशयविशुद्धिसमताभेदः – དེ་སེམས་ཀྱི་བསམ་པ་རྣམ་པར་དག་པའི་མཉམ་པ་ཉིད་བཅུས་འཇུག་གོ། བཅུ་གང་ཞེ་ན། འདི་ལྟ་སྟེ། འདས་པའི་སངས་རྒྱས་ཀྱི་ཆོས་ཀྱིས་བསམ་པ་རྣམ་པར་དག་པ་མཉམ་པ་ཉིད་དང...ནན་ཏན་དང་སྤོང་བ་ཤེས་པས་བསམ་པ་རྣམ་པར་དག་པ་མཉམ་པ་ཉིད་དང स दशभिश्चित्ताशयविशुद्धिसमताभिरवतरति। कतमाभिर्दशभिः ? यदुत अतीतबुद्धधर्मविशुद्ध्याशयसमतया च...प्रतिपत्प्रहाणज्ञानविशुद्ध्याशयसमतया च द.भू.212क/27.

ནན་ཏན་དུ་སྒྲུབ་པ अनुष्ठानम् – བྱ་བ་ནན་ཏན་དུ་སྒྲུབ་པའི་ཡེ་ཤེས कृत्यानुष्ठानज्ञानम् म.व्यु.114(3क); द्र. ནན་ཏན། ནན་ཏན་བྱེད་པ།

ནན་ཏན་དུ་བྱ •*क्रि.* 1. यतेत – སྙིང་རྗེ་མདུན་དུ་བཞག་ནས་སུ། །དགེ་བ་སྤེལ་ལ་ནན་ཏན་བྱ॥ करुणां च पुरस्कृत्य यतेत शुभवृद्धये ॥ शि.स.152क/147; अनुतिष्ठेत् – དེའི་ཚིག་ཡི་གེར་བྲི་བའི་དམ་བཞག་ལ་ནན་ཏན་བྱའོ॥ यत्राभिलिखितता सम्पत्ति[पत्राभिलेखनसम्वित्ति]मस्यानुतिष्ठेत् वि.सू.27क/33 2. प्रतिपत्स्यते – འཁོར་བ་ཟད་པར་བྱ་བའི་ཕྱིར་ནན་ཏན་དུ་བྱའོ॥ संसारक्षयाय प्रतिपत्स्यामहे प्र.प.75ख/95 3. प्रयत्यते म.व्यु.7639(109क); • *कृ.* अनुष्ठेयम् – དེ་ཕྱིར་དེ་ཡི་ཡེ་ཤེས་ནི། །ནན་ཏན་བྱ་རྟོགས་[གཏོགས་]རྣམ་དཔྱད་བྱ॥ तस्मादनुष्ठेयगतं ज्ञानमस्य विचार्यताम् । प्र.अ.45ख/52; • *सं.* प्रतिपत्तिः – ཆོས་དང་གཉེར་བའི་ཆོས་ལ་ནན་ཏན་དུ་བྱ་བས་སངས་རྒྱས་ཀྱི་ཆོས་ཁོང་དུ་ཆུད་པར་བྱའི། ཚིག་གི་ལམ་ཡོངས་སུ་དག་པ་འབའ་ཞིག་གིས་མ་ཡིན་ནོ॥ धर्मानुधर्मप्रतिपत्त्या इमे बुद्धधर्मा अनुगन्तव्या, न केवलं वाक्कर्म[पथ]परिशुद्ध्या द.भू.198क/20; अनुप्रतिपत्तिः – དཀོན་མཆོག་དག་གི་རྩིག་པ་དང་ཀ་བ་དང་སྒོ་སྒློགས་ཀྱི་སེར་ཀ་དག་བུག་པའི་ཕྱིར་དེ་ལ་ནན་ཏན་བྱའོ॥ भित्तिस्तम्भकवाटसुषिरेषु रत्नेषु लेपनमित्यनुप्रतिपत्तिः वि.सू.96ख/116.

ནན་ཏན་དུ་བྱ་བ = ནན་ཏན་དུ་བྱ།

ནན་ཏན་དུ་བྱ་བའི་སྤྱོད་པ་ཡོངས་སུ་རྫོགས་པར་བྱེད་པ *वि.* प्रायोगिकचर्यापरिपूरणी – ཀྱེ་རྒྱལ་བའི་སྲས་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའི་ས་འདི་ནི་ནན་ཏན་དུ་བྱ་བའི་སྤྱོད་པ་ཡོངས་སུ་རྫོགས་པར་བྱེད་པ इयं भो जिनपुत्रा बोधिसत्त्वभूमिः प्रायोगिकचर्यापरिपूरणी च द.भू.231क/37.

ནན་ཏན་དུ་བྱས་པ •*भू.का.कृ.* अनुष्ठितः म.व्यु.2420(46ख); •*वि.* प्रतिपद्यमानः – དེ་ནས་ཚོང་དཔོན་གྱི་བུ་ནོར་བཟངས་ཀྱིས་སྲིན་པོའི་དབང་པོ་མིག་བཟངས་ཀྱིས་ཇི་སྐད་དུ་གདམས་པ་དེ་ལྟར་ནན་ཏན་དུ་བྱས་པ་དང अथ खलु सुधनः श्रेष्ठिदारको यथानुशिष्टः सुनेत्रेण राक्षसेन्द्रेण प्रतिपद्यमानः ग.व्यू.260क/342.

ནན་ཏན་དུ་བྱེད = ནན་ཏན་བྱེད་པ།

ནན་ཏན་དུ་བྱེད་པ = ནན་ཏན་བྱེད་པ།

ནན་ཏན་བྱ = ནན་ཏན་དུ་བྱ།

ནན་ཏན་བྱེད་པ • *क्रि.* प्रतिपद्यते – ལྷག་པའི་བསམ་པ་བརྟན་པས་ནན་ཏན་དུ་བྱེད་པ་འདི་ལྟ་བུས་དགེ་བའི་བཤེས་གཉེན་གྱི་གདམས་ངག་ལ་ནན་ཏན་དུ་བྱེད་པ ई-दृश्या दृढाध्याशयप्रतिपत्त्या कल्याणमित्रानुशासनीषु प्रतिपद्यन्ते ग.व्यू.308ख/395; • *सं.* प्रतिपत्तिः – མིའི་འཇིག་རྟེན་ན་ཆོས་དང་མཐུན་པའི་ཆོས་ལ་ནན་ཏན་བྱེད་པ་ཡང་ཤིན་ཏུ་དཀོན་ན मनुष्यलोके दुर्लभा धर्मानुधर्मप्रतिपत्तिः ग.व्यू.381ख/90; ཇི་སྐད་དུ་ཐོས་པའི་ཆོས་ལ་ནན་ཏན་དུ་བྱེད་པའི་སེམས་དང་ལྡན་པ་ཡིན་ཏེ यथाश्रुतधर्मप्रतिपत्तिचित्तश्च भवति द.भू.207ख/25; अनुष्ठानम् – ནན་ཏན་བྱེད་པ་ཡོད་མ་ཡིན། །ཞེས་ནི་ཁ་ཅིག་རབ་ཏུ་བརྗོད།། नास्त्यनुष्ठानमिति केचित् प्रचक्षते प्र.अ.44क/50; • *वि.* यत्नवान् लो.को.1343.

ནན་ཏན་མི་བྱེད་པ • *क्रि.* न प्रतिपद्यते लो.को.1343; • *सं.* अननुष्ठानम् – བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའི་བྱ་བ་ལ་ནན་ཏན་མི་བྱེད་པ་ལ་འཛེམ་པ་གང་ཡིན་པ་དེ་ནི་གནས་དང་པོའོ།། बोधिसत्त्वकरणीयस्याननुष्ठाने या लज्जा। इदं प्रथममधिष्ठानम् बो.भू.133क/171.

ནན་ཏན་ཡིད *वि.* युक्तमानसः – མ་ཆགས་གྱུར་ཅིང་ནན་ཏན་ཡིད་ཀྱིས་འཆད།། असङ्गप्राप्तो वदि युक्तमानसः स.पु.38ख/70.

ནན་ཏར = ཤིན་ཏུ गाढम्, अतिशयः – अथातिशयः... गाढनिर्भरम् ॥ अ.को.1.1.68; गाहते गाढम् अ.वि.1.1.68.

ནན་ཏུར 1. अवष्टम्भः – དེ་ལྟ་བས་ན་འདི་ནི་ནན་ཏུར་ལས་བྱུང་བའི་ཐབས་ཞེས་བྱའོ།། तस्मादयमवष्टम्भज उपाय इत्युच्यते बो.भू.143क/183; ནན་ཐུར་(ནན་ཏུར་)ལས་བྱུང་བ अवष्टम्भजः बो.भू.140क/180 2. दण्डनीतिः – ཆགས་དང་ཞེ་སྡང་མེད་པའི་ནན་ཏུར་གྱིས། །འབངས་རྣམས་སྐྱོངས་ལ रागद्वेषोन्मुक्तया दण्डनीत्या रक्षँल्लोकान् जा.मा.139क/161; द्र.– ཕན་གདགས ནན་ཐུར་བསྒྱི་བའི་བཀའ་ཁྲིམས་ཀྱིས། །འབངས་ཀྱི་སྐྱེ་དགུ་བསྲུང་བའི་དབང་བསྐུར་ཏམ།། अपि रक्षणदीक्षितः प्रजानां समयानुग्रहविग्रहप्रवृत्त्या। जा.मा.125क/144 3. प्रणिधिः – ནན་ཏུར་གྱི་ལས प्रणिधिकर्म वि.सू.3क/3; वि.सू.83क/100.

ནན་ཏུར་གྱི་ལས प्रणिधिकर्म – ནན་ཏུར་བྱེད་པར་འདོད་པའི་དགེ་འདུན་ལ་ཨེ་མའོ་དགེ་འདུན་གྱིས་འདི་ལ་ནན་ཏུར་གྱི་ལས་འདི་ལྟ་བུ་མི་བྱའོ་ཞེས་ཀྱང་ངོ་།། प्रणिधातुकामे सङ्घेऽहो बत सङ्घोऽस्येदं प्रणिधिकर्म न कुर्यादिति वि.सू.3क/3; वि.सू.83क/100.

ནན་ཏུར་དུ་བྱ་བ प्रणिधिकर्म म.व्यु.9304(128क); द्र. ནན་ཏུར་གྱི་ལས།

ནན་ཏུར་བྱས = ནན་ཏུར་བྱས་པ།

ནན་ཏུར་བྱས་པ *भू.का.कृ.* प्रणिहितः – ནན་ཏུར་བྱེད་པ་དག་གིས་མ་བསྒོས་ན་ནན་ཏུར་བྱས་པ་ལ་བཟོད་པ་མི་འཆགས་སོ།། *> नासां मन्ये प्रणिधातृणामवसारणस्य प्रणिहितौ रूढिः वि.सू.85ख/103.

ནན་ཏུར་བྱེད་པ प्रणिधाता – ནན་ཏུར་བྱེད་པ་དག་གིས་མ་བསྒོས་ན་ནན་ཏུར་བྱས་པ་ལ་བཟོད་པ་མི་འཆགས་སོ།། * > नासां मन्ये प्रणिधातृणामवसारणस्य प्रणिहितौ रूढिः वि.सू.85ख/103; ནན་ཏུར་བྱེད་པར་འདོད་པ प्रणिधातुकामः वि.सू.3क/3.

ནན་ཏུར་བྱེད་པར་འདོད་པ *वि.* प्रणिधातुकामः – ནན་ཏུར་བྱེད་པར་འདོད་པའི་དགེ་འདུན་ལ་ཨེ་མའོ་དགེ་འདུན་གྱིས་འདི་ལ་ནན་ཏུར་གྱི་ལས་འདི་ལྟ་བུ་མི་བྱའོ་ཞེས་ཀྱང་ངོ་།། प्रणिधातुकामे सङ्घेऽहो बत सङ्घोऽस्येदं प्रणिधि-

कर्म न कुर्यादिति वि.सू.3क/3.

ནན་ཏུར་ལས་བྱུང་བའི་ཐབས *पा.* अवष्टम्भज उपायः, उपायभेदः – བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་དེའི་སེམས་ཅན་གྱི་དོན་རྣམ་པ་བཞི་མངོན་པར་འགྲུབ་པར་བྱེད་པ་འདི་ལ་ཡང་མདོར་བསྡུ་ན་ཐབས་རྣམ་པ་དྲུག་ཁོ་ན་ཡོད་པར་རིག་པར་བྱ་སྟེ། མཐུན་པ་དང་...ནན་ཐུར་(ཏུར་)ལས་བྱུང་བ་དང་...དག་པ་ནི་ཐབས་དྲུག་པའོ།། बोधिसत्त्वस्य चतुर्विधस्याप्यस्य सत्त्वार्थस्याभिनिष्पत्तये समासतः षड्विध एवोपायो वेदितव्यः। आनुलोमिकः... अवष्टम्भजः...विशुद्धश्च षष्ठ उपायः बो.भू.140क/180; བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའི་ནན་ཏུར་ལས་བྱུང་བའི་ཐབས་གང་ཞེ་ན།...དེ་ལྟ་བས་ན་འདི་ནི་ནན་ཏུར་ལས་བྱུང་བའི་ཐབས་ཞེས་བྱའོ།། कतमो बोधिसत्त्वस्यावष्टम्भज उपायः...तस्मादयमवष्टम्भज उपाय इत्युच्यते बो.भू.142ख/183.

ནན་ཐུར = ནན་ཏུར།

ནབ་ནུབ विजङ्गम्, संख्याविशेषः – སེམས་ཅན་བརྒྱའི་ཕྱིར་མ་ཡིན...སེམས་ཅན་ནབ་ནུབ་ཀྱི་ཕྱིར་མ་ཡིན न सत्त्वशतस्यार्थाय...न सत्त्वविजङ्गस्य ग.व्यू.370क/82; विजङ्गम् – བརྒྱ་སྟོང་ཕྲག་བརྒྱ་ན་བྱེ་བའོ།། ...ཁྲམ་ཁྲིམ་ཁྲམ་ཁྲིམ་ན་ནབ་ནུབ་བོ།། शतं शतसहस्राणां कोटिः... विभजं विभजानां विजङ्गम् ग.व्यू.3क/103; विजम्भः म.व्यु.7719(109ख); विभजम् म.व्यु.7845(110ख).

ནབ་ནེབ हेतुनम्, संख्याविशेषः – བརྒྱ་སྟོང་ཕྲག་བརྒྱ་ན་བྱེ་བའོ།། ...ཡིད་འཚོ་ཡིད་འཚོ་ན་ནབ་ནེབ་བོ།། शतं शतसहस्राणां कोटिः... दृष्टवान्तः दृष्टवान्तानां हेतुनम् ग.व्यू.3क/103.

ནབ་སོ *ना.* 1. पुनर्वसुः i. नक्षत्रम् – རྒྱུ་སྐར་ནི་ཐ་སྐར་དང་...ནབ་སོ་དང་...ནམ་གྲུ་སྟེ་ཉི་ཤུ་རྩ་བདུན་ནོ།། नक्षत्राणि अश्विनी... पुनर्वसुः... रेवतीति सप्तविंशतिः वि.प्र.179ख/1.36; བཞི་པ་ལ་ནབ་སོའོ།། चतुर्थ्यां पुनर्वसुः वि.प्र.236क/2.37 ii. श्रावकाचार्यः – ཉན་ཐོས་ཀྱི་དགེ་འདུན་ཆེན་པོ...དང་ལྷན་ཅིག་པ་ལ་འདི་ལྟ་སྟེ། འོད་སྲུང་ཆེན་པོའི་བུ་དང་...ནབས་སོ་དང་ महाश्रावकसङ्घेन च सार्धम्... तद्यथा–महाकाश्यपः... पुनर्वसुः म.मू.99ख/9 2. पुनर्वसुकः, नागः – སྙམ་དུ་མཆིད་ནས། བཅོམ་ལྡན་འདས་ཀྱི་འགྲོ་མགྲོགས་དང་ནབ་སོ་གཉིས་གང་ན་བ་དེར་གཤེགས་ཏེ भगवतः... इति विदित्वा येनाश्वकपुनर्वसुकयोर्भवनं तेनोपसंक्रान्तः वि.व.120ख/1.9.

ནབ་སོ་སྐྱེས = ཁྱབ་འཇུག पुनर्वसुः, विष्णुः ङ.को.24/रा.को.3.171.

ནབས་སོ = ནབ་སོ།

ནམ • *सं.* = མཚན་མོ रात्रम्, रात्रिः – ནམ་གྱི་ཆ་སྟོད་དང་ནམ་གྱི་ཆ་སྨད་ལ་མི་ཉལ་བར་སྦྱོར་བའི་རྗེས་སུ་བརྩོན་པ་ཉིད पूर्वरात्रापररात्रं जागरिकानुयुक्तता श्रा.भू.6क/11; བདག་གིས་ནམ་ཕྱེད་དམ་ཟླ་བ་ཤར་བའམ་ཟླ་བ་ནུབ་པའི་ཚེ་སད་པར་བྱའོ།། अर्धरात्रे चन्द्रोदये चन्द्रास्तमये वा मया प्रबोद्धव्यम् अभि.स्फु.298क/1155; तमस्विनी – अथ शर्वरी...विभावरीतमस्विन्यौ रजनी यामिनी तमी। अ.को.1.4.5; तमोऽस्यामस्तीति तमस्विनी अ.वि.1.4.5; •*अव्य.* 1. = གང་ཚེ कदा – འོ་ན་ནམ་འགྱུར་ཞེ་ན कदा तर्हि भवति अभि.भा.227ख/764; यदा–འདི་དག་ཐམས་ཅད་རྣམ་སྤངས་ཤིང་། །སྣང་བ་མེད་པར་ནམ་གྱུར་པ [འགྱུར་བ]།། विधूय सर्वाण्येतानि निराभासं यदा भवेत्। ल.अ.94ख/41; གཞན་དུ་ན་ནམ་མངོན་པར་བཤད་པ་དེའི་ཚེ་ཀུན་ནེས

ཤིང་ཐོས་པའི་ལམ་དུ་འགྱུར་རོ།། अन्यत्र यदाऽभिभाष्यते तदा आज्ञायते, श्रवणपथं चाधिगच्छति सु.प. 48क/25; བཅོམ་ལྡན་འདས་བདག་རི་དང་རི་སུལ་དང་ནགས་ཁྲོད་དང་...ཤིང་དྲུང་དབེན་པར་གཤེགས་པ་ལ་གནས་པའི་སྐད་དུ་རྟག་པར་ནམ་མཆི་བ यदा चाहं भगवन् अभीक्ष्णं गच्छामि पर्वतगिरिकन्दराणि...वृक्षमूलान्येकान्तानि दिवाविहाराय स.पु.25क/44 **2.** वा – བྱིའུ་འདི་གསོན་ནམ་མི་གསོན किमयं चटको जीवति न वा अभि.स्फु.322क/1212; ནུས་པ་དེ་དོན་གཅིག་ལ་ངེས་པ་ཡིན་ནམ་དོན་དུ་མ་ལ་ངེས་པ་ཡིན सा शक्तिरेकार्थनियता वा भवेत्, नानार्थनियता वा त.प.198ख/863; བསམ་གཏན་ནམ་གཟུགས་མེད་པ་དག་པ་བ་འཐོབ शुद्धकं वा प्रतिलभते ध्यानम्, आरूप्यं वा अभि.स्फु.297क/1152; ཕྱིན་ཅི་ལོག་གི་དོན་ཅན་ནམ་བདེན་པའི་དོན་ཅན་ཉིད་ཀྱིས་ཏེ་རྣམ་པ་གཉིས་ཀྱིས་དོན་དང་ལྡན་པ་ཡིན་ཏེ། द्वाभ्यां प्रकाराभ्यामर्थवत्ता भवति – अविपरीतार्थत्वेन, विपरीतार्थत्वेन वा त.प.42ख/534; द्र.– ནམ་ཁྱོད་སྡེ་སྣོད་གསུམ་མ་ཐོབས་ཀྱི་བར་དུ་ང་དང་ཕྲད་དུ་མ་འོང་ཅིག तावत्तेऽस्माकं दर्शनं न देयम्, यावत्त्रयः पिटका अधीताः अ.श.227ख/210; ཅི་དགྲ་བཅོམ་པ་དྲུག་པོ་འདི་དག་དང་པོ་ཁོ་ན་ནས་དེའི་རིགས་ཅན་ཁོ་ན་དག་ཅིག་ཡིན་ནམ་འོན་ཏེ། ཕྱིས་ཡིན་ཞེ་ན किं पुनरेते षडर्हन्त आदित एव तद्गोत्रा भवन्ति? अथ पश्चात् अभि.भा.31ख/990; འོན་ཏེ་བྷཱ་ར་ཏ་འདོན་པར་བྱེད་པ་ལ་ཡང་དེ་སྐད་དུ་བརྗོད་པར་ནུས་པ་མ་ཡིན་ནམ ननु च भारताध्ययनेऽपि शक्यमेवं वक्तुम् त.प. 164ख/783.

ནམ་གྱི་དུས་ན་ཡང कदाचन – ཁྱོད་ཀྱིས་ནམ་གྱི་དུས་ན་ཡང་། །དགེ་སློང་རྣམས་ལ་རྩོད་མི་བྱ།། भिक्षुभिस्तु न कर्तव्यस्त्वया वादः कदाचन। अ.क.302क/39.56; द्र. ནམ་ཡང།

ནམ་གྱི་ཚེ = ནམ་ཞིག་ན कदा मि.को.72क; जातु मि.को.68क।

ནམ་དུ་ཡང = ནམ་ཡང།

ནམ་དུའང = ནམ་ཡང།

ནམ་ཡང = ནམ་དུ་ཡང། ནམ་དུའང कदाचित् – ཡོན་ཏན་ལ་ཆགས་ནམ་ཡང་ནོར་ལ་མིན།། गुणे स्पृहा न द्रविणे कदाचित् अ.क.288क/107.1; འགྲོ་བ་ཐམས་ཅད་ནམ་དུ་འང་། །འདི་འདྲ་མ་ཡིན་པར་འདོད་མིན།། इष्यते च जगत् सर्वं न कदाचिदनीदृशम्। त.स.113ख/979; कदाचन – གང་དག་ཡོད་ན་འབྱུང་མཐོང་ལ། །མེད་ན་ནམ་ཡང་མ་ཡིན་པ།། येषु सत्सु भवद्दृष्टमसत्सु न कदाचन। त.स.5क/71; ཇི་ལྟར་ནམ་མཁའ་མེ་རྣམས་ཀྱིས། །སྔོན་ཆད་ནམ་ཡང་ཚིག་པ་མེད།། यथा नाग्निभिराकाशं दग्धपूर्वं कदाचन। र.वि.57क/42; དེ་བས་དྲན་པ་ཡིད་སྒོ་ནས། །གུད་དུ་ནམ་ཡང་མི་གཏོང་ངོ་།། तस्मात् स्मृतिर्मनोद्वारान्नापनेया कदाचन। बो.अ.11क/5.29; དོན་མེད་གཡེང་བར་ལྟ་བ་ནི། །ནམ་ཡང་བདག་གིས་མི་བྱ་སྟེ།། निष्फला नेत्रविक्षेपा न कर्तव्याः कदाचन। बो.अ.11ख/5.35; कथञ्चन – རྣམ་པར་ཤེས་པས་ཕྱི་རོལ་དོན། །ནམ་ཡང་ཤེས་པ་མ་ཡིན་ནོ།། विजानाति न विज्ञानं बाह्यमर्थं कथञ्चन ॥ त.प.330ख/1130; जातुचित् – སོལ་བ་ཇི་ལྟར་བདར་ཡང་ནི། །ནམ་ཡང་དཀར་པོར་འགྱུར་མ་ཡིན།། घृष्यमाणो हि नाङ्गारः शुक्लतामेति जातुचित्। प्र.अ.140ख/150; ཞེས་པ་དེ་ལྟ་བུ་ལ་སོགས། །སྐལ་བཟང་ནམ་ཡང་གཏང་མིན་ཉིད།། इत्येवमादि सौभाग्यं न जहात्येव जातुचित्। का.आ.323ख/2.54; जातु– དེ་དག་ནམ་དུའང་དགའ་མི་བྱེད།། न ताः सम्मोदयेज्जातु शि.स.32ख/

31; བདག་དང་གཞན་དོན་མ་མྔོངས་གསལ་སྤྱོད་པས། །རྒྱལ་པོ་ནམ་ཡང་དམྱལ་བར་ཡོང་མི་ལྟུང་།། चरन् परात्मार्थममोहभास्वता न जातु राजन्निरयं गमिष्यसि ॥ जा.मा.178ख/208; དེ་ནི་བསྐལ་པ་བྱེ་བར་ཡང་། །ནམ་ཡང་ལོང་ཞིང་འཐེང་མི་འགྱུར།། न जातु सोऽन्धः खञ्जो वा कल्पानामपि कोटिभिः । शि.स.163क/156; कदाचिदपि – བཅིངས་པ་གྲོལ་བ་ནམ་ཡང་ནི། །མི་སྲིད་གཅིག་ཏུ་འཇིག་ཕྱིར་རོ། །དེ་ཕྱིར་ཐར་པ་དོན་གཉེར་རྣམས། །དལ་བ་དོན་ནི་མེད་པར་འགྱུར།། मोक्षो नैव हि बद्धस्य कदाचिदपि सम्भवी। एकान्तनाशतस्तेन व्यर्थो मुक्त्यर्थिनां क्षणः ॥ त.स.19ख/213; कस्मिंश्चिदपि – བདག་གི་སེམས་དགེ་བ་ནི་དུས་ནམ་དུ་ཡང་ཉམས་པར་མི་བྱ་བའོ།། कुशलं पुनर्मम चित्तं मा कस्मिंश्चिदपि काले नङ्क्षीत् बो.प.92क/56.

ནམ་ཀ། = ནམ་མཁའ།

ནམ་མཁའ •सं. 1. आकाशम्–མཁའ་ལ་དོན་བྱེད་བསྟན་མེད་ཕྱིར། །དེ་ཉིད་ལྟ་པོ་ནམ་མཁའ་མིན།། आकाशस्य तदर्थनिर्देशाभावात् स एव द्रष्टा नाकाशादिः प्र.अ.28ख/33; འདིར་སླར་ཡང་ནམ་མཁའ་ནི་ས་ལ་སོགས་པ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་རྟེན་ཏེ་ས་ལ་སོགས་པའི་འབྱུང་བ་རྣམས་ནི་རྟེན་[བརྟེན་]པའོ།། अत्र पुनः सर्वेषां पृथ्व्यादीनामाकाशमाधारः पृथिव्यादयो भूता आधेयाः वि.प्र.227ख/2.18; དཔེར་ན་ནམ་མཁའ་ནི་ཁང་པའི་གནས་ན་མི་མངོན་ཏེ། ...འདུན་ཁང་རྟེབ་ལ་ནམ་མཁའ་གྱིས तद्यथा–आकाशं मण्डपावस्थाने न लक्ष्यते...आकाशं कुरु मण्डपं पातय अभि.स्फु.187क/944; नभः – བསོད་ནམས་ཆུགས། ...།ནམ་མཁའ་མཉམ་པར་རབ་ཏུ་འབྱུང་།། पुण्यधाराः प्रवर्तन्ते नभःसमाः बो.अ.2ख/1.19; ཆོས་རྣམས་རང་བཞིན་འོད་གསལ་བ། །གདོད་ནས་དག་པ་ནམ་མཁའ་བཞིན།། प्रकृतिप्रभास्वरा धर्माः सुविशुद्धा नभःसमाः । गु.स.95क/9; ཇི་ལྟར་རྟོག་མེད་བདག་ཉིད་ཅན། །ནམ་མཁའ་ཀུན་ཏུ་རྗེས་སོང་ལྟར། །སེམས་ཀྱི་རང་བཞིན་དྲི་མེད་དབྱིངས། །དེ་བཞིན་ཀུན་ཏུ་འགྲོ་བ་ཉིད།། सर्वत्रानुगतं यद्वन्निर्विकल्पात्मकं नभः । चित्तप्रकृतिवैमल्यधातुः सर्वत्रगस्तथा ॥ र.वि.56ख/41; गगनम् – སེམས་ཅན་མི་སྲུན་ནམ་མཁའ་བཞིན། །དེ་དག་གཞོམ་གྱིས་ཡོང་མི་ལང་།། कियतो मारयिष्यामि दुर्जनान् गगनोपमान्। बो.अ.10ख/5.12; ནམ་མཁའ་ལ་ནི་ནམ་མཁའ་བཞིན།། गगने गगनं यथा प्र.सि.33ख/79; अम्बरम् – ཆུ་དང་ཉི་མའི་འོད་དང་རླུང་དང་ས་དུས་ནམ་མཁའི་རྐྱེན་རྣམས་ཀྱིས།། अम्बवादित्यगभस्तिवायुपृथिवीकालाम्बरप्रत्ययैः र.वि.60क/64; खम्–སྐར་མ་རྣམས་ཀྱིས་ནམ་མཁའ་གང་།། खमपूर्यत नक्षत्रैः अ.क.301क/108.69; गौः – ཟླ་བ་ནི། །དལ་བུས་ཤར་བ་ནམ་མཁའ་དག།། शनैः । इन्दुर्गामुदितः अ.क.219क/24.127; व्योम–བུམ་པ་མར་མེ་ལ་སོགས་བཞིན། ...།དེ་ནི་ནམ་མཁར་འགྱུར་བ་ཡིན།། घटदीपादिवत् तच्च किल व्योम भविष्यति ॥ त.स.24क/255; विहायसम् – ནམ་མཁའ་ལ་འགྲོ་བ विहायसङ्गमाः अभि.स्फु.289ख/1135; བདུག་པ་དེ་སྟེང་གི་ནམ་མཁའ་ལ་ཡང་དག་པར་འཕགས་ཏེ...སྤྲིན་ཆེན་པོའི་མགོ་ལྟར་འདུག་པར་འགྱུར་བ स धूप उपरि विहायसमभ्युद्गम्य...महदभ्रकूटवदवस्थितः अ.श.13ख/12; विहायसा म.व्यु.7189(102ख); द्यौः – ཉི་ཟླ་སྐར་མས་བརྒྱན་པའི་ནམ་མཁའ་དང་།། चन्द्रार्कनक्षत्रविभूषणा द्यौः जा.मा.174ख/201; अन्तरिक्षम् – གུན་ཆང་གི་གཏམ་གྱི་སྐབས་གླེང་བསླང་བའི་ཚེ་མདུན་གྱི་ནམ་མཁའ་ལ་བྱུང་སྟེ་འདུག་པར་གྱུར་ཏོ།། सुरासवशीधुमैरेयमधुकथासु पुरतोऽन्तरिक्षे प्रादुरभूत् जा.मा.91ख/105;

निर्मोकः श्री.को.167ख; अनङ्गम् श्री.को.173; द्र.– དེ་དག་དཔག་ཚད་གཅིག་ཏུ་ནི་འཕགས་པ་བྱས་ཀྱང་ནམ་མཁའ་ལ་མཆོང་བར་ནུས་པ་མ་ཡིན་ནོ།། न ते योजनमेकमपि खगपथमुत्पतितुं समर्थाः प्रयत्नशतेनापि भवन्ति त.प.265ख/1000 **2.** = སྟོང་པ खम्, शून्यम् – ནམ་མཁའ་ཞེས་པ་སྟོང་པ་བསྒྲོད་པའི་མཐར་རོ།། खमिति शून्यमयनान्ते वि.प्र.179क/1.35 **3.** नभाः, श्रावणमासः – श्रावणे तु स्यान्नभाः श्रावणिकश्च सः अ.को.1.4.17; न बभस्ति न भाति मेघैः नभाः । भस भर्त्सनदीप्त्योः अ.वि.1.4.17; • *पा.* **1.** आकाशम् **i.** *(वै.द.)* द्रव्यपदार्थभेदः – རྣམ་པ་དགུ་ཞེས་བྱ་བ་ནི། མདོ་ལས་ས་དང་ཆུ་དང་མེ་དང་རླུང་དང་ནམ་མཁའ་དང་དུས་དང་ཕྱོགས་དང་བདག་དང་ཡིད་ཅེས་བྱ་བ་ནི་རྫས་དག་ཡིན་ཞེས་བྱའོ།། नवधेति । 'पृथिव्यापस्तेजोवायुराकाशं कालो दिगात्मा मनः' (वै.द.1/1/4) इति सूत्रात् त.प.257ख/231 **ii.** अनास्रवधर्मभेदः – ཟག་མེད་ལམ་གྱི་བདེན་པ་དང་། །འདུས་མ་བྱས་རྣམ་གསུམ་ཡང་སྟེ། །ནམ་མཁའ་དང་ནི་འགོག་པ་གཉིས།། अनास्रवा मार्गसत्यं त्रिविधं चाप्यसंस्कृतम् । आकाशं द्वौ निरोधौ च अभि.को.2क/18; ནམ་མཁའ་ནི་སྒྲིབ་པ་མེད་པའི་རང་བཞིན་ཏེ། གང་ན་གཟུགས་ཀྱི་འགྲོ་ཡོད་པའོ།། अनावरणस्वभावमाकाशम्, यत्र रूपस्य गतिः अभि.भा.28क/19; ངེས་པའི་ཚིག་ཏུ་ན་གོ་འབྱེད་པས་ན་ནམ་མཁའོ།། གཞན་དག་ན་རེ་འདིའི་ནང་ན་དངོས་པོ་རྣམས་ཤིན་ཏུ་སྣང་བས་ནམ་མཁའོ་ཞེས་ཟེར་རོ།། अवकाशं ददातीत्याकाशमिति निर्वचनम् । भृशमस्यान्तः काशन्ते भावा इत्याकाशमित्यपरे अभि.स्फु.12क/19 **2.** नभः, रूपायतनभेदः – ཁ་ཅིག་ནི་ནམ་མཁའ་ལ་ཁ་དོག་གཅིག་དང་རྣམ་པ་ཉི་ཤུ་རྩ་གཅིག་ཏུ་འདོན་ཏོ།། केचित् नभश्चैकवर्णमिति एकविंशतिं सम्पठन्ति अभि.भा.30क/32.

ནམ་མཁའ་སྐྱེ་བ आकाशोत्पत्तिः – ཁང་བཟངས་འཇིག་པས་ནམ་མཁའ་སྐྱེ་བ་བཞིན་ནོ།། प्रासादभङ्गादाकाशोत्पत्तिवत् ख.टी.155ख/234; འདིའི་ནམ་མཁའ་སྐྱེ་བའི་མཚན་མ་ནི་དཔེ་སྟེ आकाशमस्योत्पत्तौ चिह्नदृष्टान्तः ख.टी.155ख/234; आकाशोत्पादः – ནམ་མཁའ་སྐྱེ་བའི་མཚན་མ་ལས། །ཐོག་མ་ཐ་མ་མེད་པའི་མཆོག།། आकाशोत्पादचिह्नत्वादनादिनिधनः परः । ख.टी.155ख/235.

ནམ་མཁའ་ཁྱབ་ཀྱི་ཏིང་ངེ་འཛིན *पा.* आकाशस्फरणकसमाधिः, समाधिविशेषः – ནམ་མཁའ་ཁྱབ་ཀྱི་ཏིང་ངེ་འཛིན་ལ་སྙོམས་པར་ཞུགས་པ आकाशस्फरणकसमाधिसमापन्नम् स.दु.108क/162; द्र. ནམ་མཁའ་ཁྱབ་པར་བྱེད་པ།

ནམ་མཁའ་ཁྱབ་པར་བྱེད = ནམ་མཁའ་ཁྱབ་པར་བྱེད་པ།

ནམ་མཁའ་ཁྱབ་པར་བྱེད་པ *पा.* आकाशस्फरणः, समाधिविशेषः – ནམ་མཁའ་ཁྱབ་པར་བྱེད་པ་ཞེས་བྱ་བའི་ཏིང་ངེ་འཛིན आकाशस्फरणो नाम समाधिः म.व्यु.528(12ख); द्र. ནམ་མཁའ་ཁྱབ་ཀྱི་ཏིང་ངེ་འཛིན།

ནམ་མཁའ་གྱིས *क्रि.* आकाशं कुरु – དཔེར་ན་སྨྲ་བ་པོ་འདུན་ཁང་ཏིབ་ལ་ནམ་མཁའ་གྱིས་ཞེས་ཟེར་བ་ལྟ་བུ་ཡིན་ནོ།། यथाकाशं कुरु मण्डपं पातयेति भवन्ति वक्तारः अभि.स्फु.187क/944.

ནམ་མཁའ་རྒྱལ་པོ = ནམ་མཁའི་རྒྱལ་པོ།

ནམ་མཁའ་རྒྱལ་མཚན आकाशध्वजः लो.को.1345.

ནམ་མཁའ་ཆེན་པོའི་རྒྱུད་ཀྱི་རྒྱལ་པོ *ना.* महाखतन्त्रराजः, ग्रन्थः – དཔལ་ནམ་མཁའ་ཆེན་པོའི་རྒྱུད་ཀྱི་རྒྱལ་པོ श्रीमहाखतन्त्रराजः क.त.387.

ནམ་མཁའ་འཇལ = འོད་ཟེར मयूखः, रश्मिः – किरणोऽस्रमयूखांशुगभस्तिघृणिपृश्नयः । अ.को.1.3.33; मिनोति अवक्षिपति तम इति मयूखः । डुमिञ् प्रक्षेपणे अ. वि.1.3.33.

ནམ་མཁའ་ཉིད खत्वम्, खस्य स्वभावः – ནམ་མཁའི་རང་བཞིན་ནམ་མཁའ་ཉིད་ཅེས་བྱ་བ་ཐ་དད་པའི་རྟེན་གྱི་དྲུག་པར་ཡང་མི་འགྱུར་ཏེ खस्य स्वभावः खत्वमिति व्यतिरेकाश्रया षष्ठी न स्यात् प्र.वृ.281क/24.

ནམ་མཁའ་མཉམ = ནམ་མཁའ་དང་མཉམ་པ།

ནམ་མཁའ་མཉམ་པ = ནམ་མཁའ་དང་མཉམ་པ།

ནམ་མཁའ་སྙིང = ནམ་མཁའི་སྙིང་པོ།

ནམ་མཁའ་སྙིང་པོ = ནམ་མཁའི་སྙིང་པོ།

ནམ་མཁའ་ལྟ་བུ *वि.* गगनोपमः – གང་གིས་སངས་རྒྱས་རྣམས་ཀྱི་ཆོས། །ནམ་མཁའ་ལྟ་བུ་མི་ཤེས་པས།། ये न जानन्ति बुद्धानां धर्मतां गगनोपमाम् । गु.सि.27ख/60; गगनकल्पः –ཆོས་ཐམས་ཅད་ནམ་མཁའ་ལྟ་བུའི་ཕྱིར་ཤེས་རབ་ཀྱི་ཕ་རོལ་ཏུ་ཕྱིན་པ་ནམ་མཁའ་ལྟ་བུའོ།། गगनकल्पत्वात् सर्वधर्माणां प्रज्ञापारमिता गगनकल्पा कौ.प्र.142ख/95; गगनसमः – འདི་ནི་ནམ་མཁའ་ལྟ་བུར་ཤིན་ཏུ་མཚར།། गगनसमोऽप्यहह त.सि.66ख/176; गगनवत् – ནམ་མཁའ་ལྟ་བུའི་ཆོས་ཀུན་ལ།། गगनवत्सर्वधर्मेषु हे.त.14क/44; व्योमवत् – མཁས་པས་ནམ་མཁའ་ལྟ་བུར་བསྒོམ།། व्योमवद् भावयेद् बुधः प्र.सि.33क/78.

ནམ་མཁའ་ལྟར *वि.* आकाशकल्पः – ནམ་མཁའ་ལྟར་རྟག་པ་ཁྱབ་པ་ནི་འགའ་ཡང་རྒྱུ་མ་ཡིན་ནོ།། नित्यं व्यापि च आकाशकल्पं न कस्यचित् कारणम् प्र.अ.29क/33; द्र.– བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའི་ཏིང་ངེ་འཛིན་དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་ཐམས་ཅད་ནམ་མཁའ་ལྟར་བྱིན་གྱིས་བརླབ་པ་དང सर्वतथागतगगनाधिष्ठानेन बोधिसत्त्वसमाधिना ग.व्यू.306ख/29.

ནམ་མཁའ་ལྟར་ཆགས་པ་མེད་པས་རྣམ་པར་གྲོལ་ཞིང་གོས་པ་མེད་པ *पा.* आकाशासङ्गविमुक्तिनिरुपलेपः, समाधिविशेषः – ནམ་མཁའ་ལྟར་ཆགས་པ་མེད་པས་རྣམ་པར་གྲོལ་ཞིང་གོས་པ་མེད་པ་ཞེས་བྱ་བའི་ཏིང་ངེ་འཛིན आकाशासङ्गविमुक्तिनिरुपलेपो नाम समाधिः म.व्यु.623(15क).

ནམ་མཁའ་བལྟ་བའི་ཡི་གེ गगनप्रेक्षिणीलिपिः, लिपिविशेषः – ཚངས་པའི་ཡི་གེའམ ...ནམ་མཁའ་བལྟ་བའི་ཡི་གེའམ ...འབྱུང་པོ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་སྒྲ་སྡུད་པའི་ཡི་གེའམ ...ཡི་གེ་དྲུག་ཅུ་རྩ་བཞི་པོ་དེ་དག་གི་ནང་ནས ब्राह्मी... गगनप्रेक्षिणीलिपिं... सर्वभूतरुतग्रहणीम् । आसां... चतुष्षष्टीलिपीनाम् ल.वि.67क/88.

ནམ་མཁའ་མཐའ་ཡས་ཀྱི་སྐྱེ་མཆེད = ནམ་མཁའ་མཐའ་ཡས་སྐྱེ་མཆེད།

ནམ་མཁའ་མཐའ་ཡས་སྐྱེ་མཆེད *पा.* आकाशानन्त्यायतनम्, आरूप्यधातुविशेषः – གཟུགས་མེད་པའི་ཁམས་སྐྱེ་བའི་བྱེ་བྲག་གིས་ནི་རྣམ་པ་བཞི་སྟེ། འདི་ལྟ་སྟེ། ནམ་མཁའ་མཐའ་ཡས་སྐྱེ་མཆེད་དང...འདུ་ཤེས་མེད་འདུ་ཤེས་མེད་མིན་གྱི་སྐྱེ་མཆེད་དོ།། उपपत्तिभेदेन चतुर्विध आरूप्यधातुः । यदुत आकाशानन्त्यायतनम्...नैवसंज्ञानासंज्ञायतनमिति अभि.भा.109क/383; རྣམ་པ་ཐམས་ཅད་དུ་གཟུགས་ཀྱི་འདུ་ཤེས་རྣམས་ལས་ཡང་དག་པར་འདས་ནས་ཐོགས་པའི་འདུ་ཤེས་རྣམས་ནུབ་པར་གྱུར་ཅིང་སྣ་ཚོགས་ཀྱི་འདུ་ཤེས་རྣམས་ཡིད་ལ་མི་བྱེད་པས་ནམ་མཁའ་མཐའ་ཡས་སོ་སྙམ་སྟེ། ནམ་མཁའ་མཐའ་ཡས་སྐྱེ་མཆེད་རྫོགས་པར་བྱེད་དེ་གནས་པ་འདི་ནི་རྣམ་པར་ཐར་པ་བཞི་པ་སྟེ། འདི་ལྟ་སྟེ། ནམ་མཁའ་མཐའ་ཡས

སྐྱེ་མཆེད་དུ་ཉེ་བར་འགྲོ་བའི་ལྷ་རྣམས་ལྷ་བུའོ།། सर्वशो रूपसंज्ञानां समतिक्रमात्, प्रतिघसंज्ञानामस्तङ्गमात्, नानात्वसंज्ञानाममनसिकाराद् 'अनन्तमाकाशम्, अनन्तमाकाशम्' इत्याकाशानन्त्यायतनमुपसम्पद्य विहरति। तद्यथा–देवा आकाशानन्त्यायतनोपगाः–अयं चतुर्थो विमोक्षः अभि.स्फु.306क/1175; འདུ་ཤེས་སྣ་ཚོགས་ཡིད་ལ་མི་བྱེད་པས་མཐའ་ཡས་ནམ་མཁའ་ཞེས་ཏེ། ནམ་མཁའ་མཐའ་ཡས་པའི་སྐྱེ་མཆེད་ལ་ཉེ་བར་བསྒྲུབས་ཏེ་གནས་སོ།། नानात्वसंज्ञानाममनसिकारादनन्तकमाकाशमित्याकाशानन्त्यायतनमुपसम्पद्य विहरति द.भू.198ख/20; བསམ་གཏན་བཞི་པ་ལས་དབེན་པ་ལས་སྐྱེས་པ་ནི་ནམ་མཁའ་མཐའ་ཡས་སྐྱེ་མཆེད་ཡིན་ནོ།། चतुर्थध्यानविवेकजं ह्याकाशानन्त्यायतनम् अभि.भा.66ख/1130.

ནམ་མཁའ་མཐའ་ཡས་སྐྱེ་མཆེད་ཀྱི་ས་པ *वि.* आकाशानन्त्यायतनभूमिकः – རྣམ་ཤེས་དང་ནམ་མཁའ་མཐའ་ཡས་སྐྱེ་མཆེད་ཀྱི་ས་པ विज्ञानाकाशानन्त्यायतनभूमिके अभि.भा.73क/1153.

ནམ་མཁའ་མཐའ་ཡས་སྐྱེ་མཆེད་དུ་ཉེ་བར་འགྲོ་བ आकाशानन्त्यायतनोपगाः 1. अरूपभवविशेषः – སྲིད་པ་སུམ་ཅུ་རྩ་གཅིག་ཅེས་པ་ནི་གཟུགས་མེད་ལ་སོགས་པ་སྟེ། འདུ་ཤེས་མེད་འདུ་ཤེས་མེད་མིན་སྐྱེ་མཆེད་དུ་ཉེ་བར་འགྲོ་བ་དང...ནམ་མཁའ་མཐའ་ཡས་སྐྱེ་མཆེད་དུ་ཉེ་བར་འགྲོ་བ་ཞེས་བྱ་བ་ནི་གཟུགས་མེད་པ་བཞིའོ།། एकत्रिंशद् भवा इति अरूपादयः। नैवसंज्ञानासंज्ञायतनोपगाः...आकाशानन्त्यायतनोपगाः इत्यरूपाश्चत्वारः वि.प्र.168ख/1.15 2. देवसमुदायविशेषः – རྣམ་པ་ཐམས་ཅད་དུ་གཟུགས་ཀྱི་འདུ་ཤེས་རྣམས་ལས་ཡང་དག་པར་འདས་ནས་ཐོགས་པའི་འདུ་ཤེས་རྣམས་ནུབ་པར་གྱུར་ཅིང་སྣ་ཚོགས་ཀྱི་འདུ་ཤེས་རྣམས་ཡིད་ལ་མི་བྱེད་པས་ནམ་མཁའ་མཐའ་ཡས་སོ་སྙམ་སྟེ། ནམ་མཁའ་མཐའ་ཡས་སྐྱེ་མཆེད་རྫོགས་པར་བྱེད་དེ་གནས་པ་འདི་ནི་རྣམ་པར་ཐར་པ་བཞི་པ་སྟེ། འདི་ལྟ་སྟེ། ནམ་མཁའ་མཐའ་ཡས་སྐྱེ་མཆེད་དུ་ཉེ་བར་འགྲོ་བའི་ལྷ་རྣམས་ལྷ་བུའོ།། सर्वशो रूपसंज्ञानां समतिक्रमात्, प्रतिघसंज्ञानामस्तङ्गमात्, नानात्वसंज्ञानाममनसिकाराद् 'अनन्तमाकाशम्, अनन्तमाकाशम्' इत्याकाशानन्त्यायतनमुपसम्पद्य विहरति। तद्यथा–देवा आकाशानन्त्यायतनोपगाः – अयं चतुर्थो विमोक्षः अभि.स्फु.306क /1175.

ནམ་མཁའ་དང་མཉམ་པ • *वि.* खसमः – བཅོམ་ལྡན་འདས་རྡོ་རྗེ་འཛིན་པ་རང་བཞིན་གྱིས་ནམ་མཁའ་དང་མཉམ་པའོ།། भगवान् वज्रधरः प्रकृत्या खसमः ख.टी.153ख/231; དེའི་ཕྱིར་ནམ་མཁའ་དང་མཉམ་པའི་ཆོས་སོ།། तस्मात् खसमा धर्माः ख.टी.160क/241; ནམ་མཁའ་དང་མཉམ་པའི་དེ་ཁོ་ན་ཉིད खसमेन तत्त्वेन ख.टी.153ख/231; आकाशसमानः – གླུ་འདི་ནམ་མཁའ་དང་མཉམ་པ एतद्गीतमाकाशसमानम् ख.टी.161क/242; खेन समानः – མེད་པའི་རྣམ་པ་ཉིད་ཡོངས་སུ་གཅོད་པའི་ཕྱིར་ནམ་མཁའ་དང་མཉམ་པའོ།། आकाराणामसत्तया परिच्छेदात्, खेन समानाः ख.टी.155ख/235; नभःसमः – དེང་ནས་བཟུང་སྟེ་གཉིད་ལོག་གམ། །བག་མེད་གྱུར་ཀྱང་བསོད་ནམས་ཤུགས། །རྒྱུན་མི་འཆད་པར་དུ་མ་ཞིག །ནམ་མཁའ་མཉམ་པར་རབ་ཏུ་འབྱུང་།། ततःप्रभृति सुप्तस्य प्रमत्तस्याप्यनेकशः। अविच्छिन्नाः पुण्यधाराः प्रवर्तन्ते नभःसमाः॥ बो.अ.2ख /1.19; • *ना.* खसमा, ग्रन्थः – ནམ་མཁའ་དང་མཉམ་པའི་རྒྱུད་ཀྱི་[རྒྱ་ཆེར་] འགྲེལ་པ་ནམ་མཁའ་དང་མཉམ་པ་ལས་ཕྱོགས་ཀྱི་དཀྱིལ་འཁོར་གྱི་ལེའུ་སྟེ་གཉིས་པའོ།། ख-

समायां खसमतन्त्रस्य टीकायां चित्तमण्डलपटलो द्वितीयः ख.टी.165[क]/247; ནམ་མཁའ་དང་མཉམ་པ་ཞེས་བྱ་བའི་རྒྱ་ཆེར་འགྲེལ་པ खसमानामटीका क.त. 1424.

ནམ་མཁའ་དང་མཉམ་པ་ཉིད खसमत्वम् – དེ་ཡང་ནམ་མཁའ་དང་མཉམ་པ་སྟེ། ནམ་མཁའ་དང་མཉམ་པ་ཉིད་ཀྱིས་སྣང་བའི་ཕྱིར तेऽपि खसमाः खसमत्वेन प्रतिभासात् ख.टी.160[क]/241; ख.टी.154[ख]/233.

ནམ་མཁའ་དང་མཉམ་པ་ཞེས་བྱ་བའི་རྒྱ་ཆེར་འགྲེལ་པ *ना.* खसमानामटीका, ग्रन्थः ख.टी.153[क]/231; क.त.1424.

ནམ་མཁའ་དང་མཉམ་པའི་རྒྱུད खसमतन्त्रम्, तन्त्रविशेषः – ནམ་མཁའ་དང་མཉམ་པའི་རྒྱུད་ཀྱི་རྒྱ་ཆེར་འགྲེལ་པ་ནམ་མཁའ་དང་མཉམ་པ་ལས་ལེའུ་དང་པོའོ༎ खसमायां खसमतन्त्रस्य टीकायां प्रथमः पटलः ख.टी.158[ख]/240; ནམ་མཁའ་མཉམ་རྒྱུད་ཀྱི། །མཁའ་མཉམ་རྒྱ་ཆེར་འགྲེལ་པ་བདག་གིས་བྱ༎ तन्त्रस्य मया क्रियते टीका खसमस्य खसमैव॥ ख.टी.153[क]/231.

ནམ་མཁའ་དང་མཉམ་པའི་རྒྱུད་ཀྱི་རྒྱལ་པོ *ना.* खसमतन्त्रराजः, ग्रन्थः – དཔལ་ནམ་མཁའ་དང་མཉམ་པའི་རྒྱུད་ཀྱི་རྒྱལ་པོ श्रीखसमतन्त्रराजनाम क.त.386.

ནམ་མཁའ་དང་མཉམ་པའི་ངང *वि.* खसमः – སྐུ་གསུམ་རྣམས་ཀྱིས་ནམ་མཁའ་མཉམ་པའི་ངང་། །དང་པོའི་མཆོག་ལ་རབ་ཏུ་ཕྱག་འཚལ་ནས། །དེ་ཡི་དོན་དང་ནམ་མཁའ་མཉམ་རྒྱུད་ཀྱི། །མཁའ་མཉམ་རྒྱ་ཆེར་འགྲེལ་པ་བདག་གིས་བྱ༎ कायैस्त्रिभिरपि खसमं परमाद्यं प्रणमता तदर्थस्य। तन्त्रस्य मया क्रियते टीका खसमस्य खसमैव॥ ख.टी.153[क]/231.

ནམ་མཁའ་དང་མཉམ་པའི་གཞུང་ལུགས खसमनयः – ནམ་མཁའ་དང་མཉམ་པ་ཡང་མ་ཡིན་ཞིང་། ནམ་མཁའ་མཉམ་པའི་གཞུང་ལུགས་རབ་ཏུ་འཇུག་པར་བྱེད་པ་ཡང་མ་ཡིན་ནོ༎ नैव खसमो नापि खसमनयप्रवर्तकः ख.टी.154[क]/232.

ནམ་མཁའ་དང་འདྲ་བ आकाशसदृशः – ནམ་མཁའ་དང་འདྲ་དག་པ་ཡི། །གཞི་མིན་དེ་དང་འདྲ་བའང་མིན༎ आकाशसदृशं तद्वन्न च शुक्लास्पदं च तत्॥ र.वि. 71[ख]/113.

ནམ་མཁའ་དང་མཚུངས་པ • *वि.* आकाशसदृशः – འཁོར་ལོ་དེ་ནི་ནམ་མཁའ་དང་མཚུངས་པའི་ཕྱིར་ཐམས་ཅད་ཀྱི་རྗེས་སུ་སོང་བའོ༎ सर्वत्रानुगतं तच्चक्रं आकाशसदृशत्वात्। ल.वि.202[ख]/306; खसमः – ནམ་མཁའ་དང་མཚུངས་པར་རྟོག་པ་དང་བྲལ་བས अकल्पः खसमः त.सि.66[क]/175; खेन सरूपः – སེམས་ནི་ནམ་མཁའ་དང་མཚུངས་པའོ༎ चित्तं खेन सरूपम् ख.टी.161[ख]/243; • *सं.* आकाशसमः, बुद्धनामपर्यायः – བྱམས་པ་དེ་བཞིན་གཤེགས་པས་ཆོས་ཀྱི་འཁོར་ལོ་རྣམ་པ་འདི་ལྟ་བུ་བསྐོར་ཏེ། དེ་བསྐོར་བས་དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་ལ་དེ་བཞིན་གཤེགས་པའོ་ཞེས་བྱའོ༎ ... ནམ་མཁའ་དང་མཚུངས་པ་ཞེས་བྱའོ༎ एवंरूपं मैत्रेय तथागतेन धर्मचक्रं प्रवर्तितम्, यस्य प्रवर्तनात् तथागत इत्युच्यते... आकाशसम इत्युच्यते ल.वि.204[क]/307; • *पा.* गगनकल्पः, समाधिविशेषः – ནམ་མཁའ་དང་མཚུངས་པ་ཞེས་བྱ་བའི་ཏིང་ངེ་འཛིན गगनकल्पो नाम समाधिः अ.सा.430[क]/242.

ནམ་མཁའ་དང་ལག་མཐིལ་དུ་འདྲ་བའི་སེམས་དང་ལྡན་པ *वि.* आकाशपाणितलसमचित्तः – དགྲ་བཅོམ་པ་ཁམས་གསུམ་པའི་འདོད་ཆགས་དང་བྲལ་བར་གྱུར་ནས། གསེར་དང་བོང་བར་མཉམ་པ། ནམ་མཁའ་དང་ལག

མཐིལ་དུ་འདྲ་བའི་སེམས་དང་ལྡན་པ अर्हन् संवृत्तः त्रै-धातुकवीतरागः समलोष्टकाञ्चनः आकाशपाणि-तलसमचित्तः अ.श.51[क]/44.

ནམ་མཁའ་དྲི་མ་མེད་པ་ཤིན་ཏུ་ཡོངས་སུ་དག་པ་ཆོས་ཀྱི་དབྱིངས་ཀྱི་ཡེ་ཤེས་ཀྱི་སྙིང་པོ་ཞེས་བྱ་བ *ना.* गग-नामलसुपरिशुद्धधर्मधातुज्ञानगर्भनाम, ग्रन्थः क.त. 2589.

ནམ་མཁའ་དྲི་མེད་ཀྱི་སྒྲུབ་ཐབས *ना.* [गगनामलसाध-नम्], ग्रन्थः क.त.2754.

ནམ་མཁའ་བདག་པོ = ནམ་མཁའི་བདག་པོ།

ནམ་མཁའ་འདྲ་བ गगनोपमः – ཇི་ལྟར་ནམ་མཁའ་འདྲ་བ་ལགས॥ कथं च गगनोपमाः ल.अ.65[क]/12; द्र.– ཕྲ་ལ་ཤེས་དཀའ་དྲང་སྲོང་ཆེན་པོའི་ལམ།...།དུས་གསུམ་གྲོལ་བ་ནམ་མཁའ་འདྲ་ཞིང་མཚུངས॥ सूक्ष्मं दुराज्ञेय-पदं[थं] महर्षिणाम्...त्र्यध्वविमुक्तं नभसा समानकम् ॥ द.भू.174[क]/7.

ནམ་མཁའ་ལྡད་པ आकाशचर्वणम् – གང་ལས་འདི་ནི་ཐོགས་འགྱུར་བ། །དེ་མེད་ན་དེ་དེར་འགྱུར་གྱི། །ནམ་མཁའ་ལ་ནི་ཐོགས་མེད་པ། །བསལ་གནས་ནམ་མཁའ་ལྡང་བ་མིན[གསལ་བར་ནམ་མཁའ་ལྡད་པ་ཡིན]॥ उपघातो य-तस्तस्य तस्याभावेन तस्य सः । आकाशान्नोप-घातस्तु व्यक्तमाकाशचर्वणम् ॥ प्र.अ.164[क]/513; द्र. ནམ་མཁའ་བལྡད་པ།

ནམ་མཁའ་ལྡིང 1. गरुडः, पक्षिविशेषः – སངས་རྒྱས་བཅོམ་ལྡན་འདས་ལ་རྒྱལ་པོ་རྣམས་དང་...ནམ་མཁའ་ལྡིང་རྣམས་དང་...ལྟོ་འཕྱེ་ཆེན་པོ་རྣམས་ཀྱིས་བཀུར་སྟི་བྱས बुद्धो भगवान् सत्कृतः... राजभिः... गरुडैः... महो-रगैः अ.श.72[ख]/63; དེ་ལས་སུས་ཀྱང་སྐབས་མི་རྙེད་དེ། ལྷའམ་ལྷ་མོའམ ... ནམ་མཁའ་ལྡིང་ངམ་ནམ་མཁའ་ལྡིང་མོའམ न तस्य कश्चिदवतारं लप्स्यते देवो वा देवी वा...गरुडो वा गरुडी वा ल.अ.158[क]/106; वैनतेयः – ཤར་ཕྱོགས་སུ་ནི་ནམ་མཁའ་ལྡིང་འདབ་ཆགས་ཀྱི་གཟུགས་ཅན पूर्वायां दिशि वैनतेयः पक्षिरूपी म.मू. 122[ख]/31; सुपर्णी – བཅོམ་ལྡན་འདས་དུལ་ལ་འཁོར་ཡང་འདུལ་བ་དང... ནམ་མཁའ་ལྡིང་བྱའི་ཚོགས་ཀྱིས་བསྐོར་བ་ལྟ་བུ་དང भगवान् दान्तो दान्तपरिवारः... सुपर्णी इव पक्षिगणपरिवृतः अ.श.57[ख]/49; ནམ་མཁའ་ལྡིང་གི་འཇིགས་པ་ཡོངས་སུ་སེལ་ཏོ॥ सुपर्णि-भयान्यपनयन्ति ग.व्यू.384[क]/92 2. गारुडिकः, विषतत्त्ववित् – དཔེར་ན་ནམ་མཁའ་ལྡིང་གི་ནི། །མཆོད་སྡོང་བསྒྲུབས་ནས་འདས་གྱུར་པ॥ यथा गारुडिकः स्त-म्भं साधयित्वा विनश्यति। बो.अ.32[क]/9.37.

ནམ་མཁའ་ལྡིང་གི་རྒྱལ་པོ་རྡོ་རྗེ་སྒྲུབ་པའི་ཐབས་ཞེས་བྱ་བ *ना.* वज्रपतिराजगरुडसाधननाम, ग्रन्थः क.त. 2883.

ནམ་མཁའ་ལྡིང་གི་ཕྲུ་གུ गरुडशावकः – མི་དང་ནམ་མཁའ་ལྡིང་གི་ཕྲུ་གུ་དག་མཆོངས་པ་གོམས་པ་མཚུངས་པ་ཡིན་ཡང་མཆོངས་པ་ནི་མཚུངས་པ་མ་ཡིན་ནོ॥ समाने-ऽपि लङ्घनाभ्यासे पुरुषगरुडशावकयोर्न लङ्घनसमा-नता प्र.अ.100[क]/107.

ནམ་མཁའ་ལྡིང་གི་དབང་པོ गरुडेन्द्रः – ནམ་མཁའ་ལྡིང་གི་དབང་པོ་ཤུགས་དྲག་སྟོབས་ཆེན་དང་ནམ་མཁའ་ལྡིང་གི་བུ་དང་ནམ་མཁའ་ལྡིང་གི་བུ་མོ་ལྟ་བུའི་ལུས་ཀྱི་སྤྲིན་དུ་མངོན་པར་འཕྲོན་ཅིང་། སེམས་ཅན་ཡོངས་སུ་སྨིན་པར་བྱེད་པ་མཐོང་ངོ॥ महाबलवेगस्थामगरुडेन्द्र-गरुडपुत्रगरुडकन्यासदृशात्मभावमेघनिश्चरितान् सत्त्वान् परिपाचयमानानपश्यत् ग.व्यू.104[क]/193; དེ་བཞིན་ནམ ཚངས་པའི་དབང་དང་ལྷ་དབང་དང། ...

མཁའ་ལྡིང་ དབང་ རྣམས།། ब्रह्मेन्द्रैस्त्रिदशेन्द्रैश्च ... गरुडेन्द्रैस्तथा सु.प्र.2ख/2; ནམ་མཁའ་ལྡིང་གི་དབང་པོའི་མིང गरुडेन्द्रनामानि म.व्यु.3403(58ख).

ནམ་མཁའ་ལྡིང་གི་དབང་པོས་རྣམ་པར་མ་གཙེས་པར་བལྟས་པ *वि.* गरुडेन्द्राविहिंसाप्रेक्षितः, बुद्धस्य – བྱམས་པ་དེ་བཞིན་གཤེགས་པས་ཆོས་ཀྱི་འཁོར་ལོ་རྣམ་པ་འདི་ལྟ་བུ་བསྐོར་ཏེ། དེ་བསྐོར་བས་དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་ལ་དེ་བཞིན་གཤེགས་པའོ་ཞེས་བྱའོ།། ...ནམ་མཁའ་ལྡིང་གི་དབང་པོས་རྣམ་པར་མ་གཙེས་པར་བལྟས་པ་ཞེས་བྱའོ།། एवंरूपं मैत्रेय तथागतेन धर्मचक्रं प्रवर्तितम्, यस्य प्रवर्तनात् तथागत इत्युच्यते...गरुडेन्द्राविहिंसाप्रेक्षित इत्युच्यते ल.वि.212क/313.

ནམ་མཁའ་ལྡིང་གི་ཡི་གེ गरुडलिपिः, लिपिविशेषः – ཚངས་པའི་ཡི་གེའམ... ནམ་མཁའ་ལྡིང་གི་ཡི་གེའམ... འབྱུང་པོ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་སྒྲ་སྒྲུད་པའི་ཡི་གེའམ...ཡི་གེ་དྲུག་ཅུ་རྩ་བཞི་པོ་དེ་དག་གི་ནང་ནས ब्राह्मी... गरुडलिपिं... सर्वभूतरुतग्रहणीम्। आसां... चतुष्षष्टीलिपीनाम् ल.वि.66ख/88.

ནམ་མཁའ་ལྡིང་དང་འདྲ་བ་ལགས *क्रि.* वैनतेयायते – ཞེ་སྡང་སྦྲུལ་ནི་གདོན་པའི་ཕྱིར། །ནམ་མཁའ་ལྡིང་དང་འདྲ་བ་ལགས།། वैनतेयायते द्वेषभुजङ्गोद्धरणं प्रति ॥ श.बु.113क/73.

ནམ་མཁའ་ལྡིང་དབང = ནམ་མཁའ་ལྡིང་གི་དབང་པོ།

ནམ་མཁའ་ལྡིང་མོ गरुडी, गरुडस्त्री – དེ་ལས་སུས་ཀྱང་སྐབས་མི་རྙེད་དེ། ལྷའམ་ལྷ་མོའམ...ནམ་མཁའ་ལྡིང་ངམ་ནམ་མཁའ་ལྡིང་མོའམ न तस्य कश्चिदवतारं लप्स्यते देवो वा देवी वा...गरुडो वा गरुडी वा ल.अ.158क/106.

ནམ་མཁའ་བལྡད་པ आकाशचर्वणम्–རང་ཉིད་ལ་རབ་ཏུ་གྲུབ་པའི་རྒྱུ་མཚན་གྱིས་སྒྲུབ་པར་བྱེད་པ་དེ་ཉིད་ཅི་སྟེ་ཉེ་བར་མི་དགོད་དེ། ནམ་མཁའ་བལྡད་པའི་ངལ་བ་གཞན་གྱིས་ཅི་བྱ तदेव स्वप्रसिद्धिनिमित्तं साधनं किन्नोपन्यस्तम्। किमपरेणाकाशचर्वणप्रयासेन प्र.अ.129क/473; द्र. ནམ་མཁའ་ལྡད་པ།

ནམ་མཁའ་བྱེད་པ आकाशकरणम् – ནམ་མཁའ་བྱེད་པའི་རིགས་པས་སྐྱེ་བའི་[བསྐྱེད་པའི་]ཕྱིར आकाशकरणन्यायेनोत्पादितत्वात् ख.टी.159क/240; द्र. ནམ་མཁར་བྱེད་པ།

ནམ་མཁའ་དབྱངས = ནམ་མཁའི་དབྱངས།

ནམ་མཁའ་མིན अनाकाशः – གལ་ཏེ་ངེས་སྦྱོར་གྱིས་འཇུག་ན། །དེ་དངོས་ཡིན་ཕྱིར་དེ་ལས་ནི། །ཐམས་ཅད་ཐལ་འགྱུར་ནམ་མཁའ་ནི། །འགའ་ལའང་ནམ་མཁའ་མིན་མ་ཡིན།། नियुक्तेन प्रवृत्तिश्चेत् सर्वस्यातः प्रसज्यते। तत्स्वभावतयाकाशमनाकाशं न कस्यचित् ॥ प्र.अ.6ख/8.

ནམ་མཁའ་མེ་ཏོག = ནམ་མཁའི་མེ་ཏོག

ནམ་མཁའ་མཚུངས་པའི་ཐུགས *वि.* गगनतुल्यमानसः – མི་མཆོག་འོད་མཛད་པ་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ།། ནམ་མཁའ་མཚུངས་པའི་ཐུགས་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ།། वन्दमो नरवरं प्रभंकरं वन्दमो गगनतुल्यमानसम्। रा.प.229ख/122.

ནམ་མཁའ་མཛེས་པའི་རྒྱལ་པོ *ना.* गगनकान्तराजः, तथागतः – རབ་འཕྲུལ་དགའི་ལྷའི་རྒྱལ་པོར་གྱུར་ཏེ། དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་ནམ་མཁའ་མཛེས་པའི་རྒྱལ་པོ་ཞེས་བྱ་བ་བསྙེན་བཀུར་ཏོ།། सुनिर्मितदेवराजभूतेन गगनकान्तराजो नाम तथागत आरागितः ग.व्यू.197ख/278.

ནམ་མཁའ་མཛོད •*वि.* गगनगर्भः – ནམ་མཁའི་འདུ

ཤེས་རྣམ་པར་འགྱུར་ན་གཉིས་ཀོ་ན་ལ་སྟེ། གང་གིས་ན་ནམ་མཁའི་མཛོད་དུ་འགྱུར་བ་བསམས་པའི་དོན་འགྲུབ་པ་དང་ཇི་ལྟར་འདོད་པ་བཞིན་དུ་འགྲོ་བའི་ཕྱིར་དང་ནམ་མཁར་བྱེད་པའི་ཕྱིར आकाशसंज्ञाव्यावृत्तौ द्वयोरेव चिन्तितार्थसमृद्धो च *येन* गगनगर्भो भवति ...यथेष्टगमनादाकाशीकरणाच्च सू.व्या.157ख/44; •*पा.* गगनगञ्जः, समाधिविशेषः – ཏིང་ངེ་འཛིན་ནི་ནམ་མཁའ་མཛོད་ལ་སོགས་པ་སྟེ समाधिर्गगनगञ्जादिः सू.व्या.206ख/109; सू.व्या.212क/116; • *ना.* गगनगञ्जः, बोधिसत्त्वः – བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་ནམ་མཁའ་མཛོད་ཀྱིས་གསོལ་བ गगनगञ्जो बोधिसत्त्व आह शि.स.72ख/71; འདི་ལྟ་སྟེ། ཀུན་ཏུ་བཟང་པོ་དང་སའི་སྙིང་པོ་དང་ནམ་མཁའ་མཛོད་དང་...བློ་བཟང་པོ तद्यथा–समन्तभद्रः, क्षितिगर्भः, गगनगञ्जः ...पतिधर[मतिवर]श्च म.मू.119क/28; म.व्यु.700(16ख).

ནམ་མཁའ་མཛོད་ཀྱི་མདོ • *ना.* गगनगञ्जसूत्रम्, ग्रन्थः – འཕགས་པ་ནམ་མཁའ་མཛོད་ཀྱི་མདོ་ལས་ཀྱང ...ཞེས་གསུངས་སོ།། आर्यगगनगञ्जसूत्रे तूक्तम् शि.स.72ख/71.

ནམ་མཁའ་མཛོད་ཀྱིས་ཞུས་པ་ཞེས་བྱ་བ་ཐེག་པ་ཆེན་པོའི་མདོ *ना.* गगनगञ्जपरिपृच्छानाममहायानसूत्रम्, ग्रन्थः क.त.148.

ནམ་མཁའ་བཞིན आकाशवत् – འོ་ན་ནམ་མཁའ་བཞིན་དུ་རྟག་ཏུ་གནས་པའི་ཕྱིར་ཇི་ལྟར་འདས་པ་ལ་སོགས་པ་རྣམ་པར་གཞག आकाशवत् सदावस्थितत्वादतीतादिव्यवस्था तर्हि कथम् त.प.82ख/616.

ནམ་མཁའ་རབ་འབྱམས་ཁམས་ཀྱི་མཐས་གཏུགས་པ *वि.* आकाशधातुप्रसरावधिः – གཞན་ཡང་མཆོད་པར་འོས་པའི་རྒྱན་རྣམས་ནི ... །ནམ་མཁའ་རབ་འབྱམས་ཁམས་ཀྱི་མཐས་གཏུགས་ནི།། अन्यानि वा पूज्यविभूषणानि। आकाशधातुप्रसरावधीनि बो.अ.4क/2.5; द्र. ནམ་མཁའི་ཁམས་ཀྱི་རབ་འབྱམ་མཐར་གཏུགས་པ།

ནམ་མཁའ་ལ་འགྲོ = ནམ་མཁའ་ལ་འགྲོ་བ།

ནམ་མཁའ་ལ་འགྲོ་བ •*क्रि.* आकाशेन गच्छति – གནྡྷ་རི་ཞེས་བྱ་བའི་རིག་སྔགས་གང་གིས་ནམ་མཁའ་ལ་འགྲོ་བ་དང अस्ति हि च गान्धारी नाम विद्या ययाऽऽकाशेन गच्छति अभि.भा.62ख/1115; •*सं.* 1. आकाशगमनम् – ཇི་ལྟར་ཁྲོ་བོ་དང་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་ནི་ནམ་མཁའ་ལ་འགྲོ་བ ...°ར་མཛད་པ यथा क्रोधा बोधिसत्त्वाः कुर्वन्त्याकाशगमनम् वि.प्र.146क/3.89; བསྒྲིབས་པ་ལ་གཤེགས་པ་དང་ནམ་མཁའ་ལ་གཤེགས་པ་དང་ཤིན་ཏུ་རིང་བ་ལ་མྱུར་དུ་གཤེགས་པའོ།། आवृतगमनं च आकाशगमनं च सुदूरक्षिप्रगमनं च अभि.स्फु.274क/1097 2. = བྱ खगः, पक्षी – ནམ་མཁའ་ལ་སྤྱོད་ཅིང་ནམ་མཁའ་ལ་འགྲོ་བའི་བདག་པོ आकाशचारी खगपतिः स.दु.118ख/202; •*वि.* विहायसंगमः – རང་གི་འོད་ཅན་ནམ་མཁའ་ལ་འགྲོ་བ། དགའ་བ་ཟ་ཞིང་དགའ་བའི་ཟས་ཅན स्वयम्प्रभाः विहायसंगमाः प्रीतिभक्षाः प्रीत्याहाराः अभि.स्फु.289ख/1135; विहायसगामी म.व्यु.2403(46क); वैहायसंगमः – སེམས་ཅན་དེ་དག་ཐམས་ཅད་ཀྱང...རྫུ་འཕྲུལ་ཅན་ནམ་མཁའ་ལ་འགྲོ་བ सर्वे च ते सत्त्वाः ...ऋद्धिमन्तो वैहायसंगमाः स.पु.76ख/129.

ནམ་མཁའ་ལ་འགྲོ་བའི་བདག་པོ खगपतिः – དེ་ནས་ཡང་ནམ་མཁའ་ལ་སྤྱོད་ཅིང་ནམ་མཁའ་ལ་འགྲོ་བའི་བདག་པོས་བཅོམ་ལྡན་འདས་ལ་ཕྱག་འཚལ་ནས་འདི་སྐད་ཅེས་གསོལ་ཏོ།། अथाकाशचारी खगपतिर्भगवन्तं प्रणिपत्यैवमाह स.दु.118ख/202.

ནམ་མཁའ་ལ་རྒྱུ་བ खेचरः लो.को.1346.

ནམ་མཁའ་ལ་གནས = ནམ་མཁའ་ལ་གནས་པ།

ནམ་མཁའ་ལ་གནས་པ •वि. आकाशस्थः – ནམ་མཁའ་ལ་གནས་པའི་ལྷ་རྣམས་ཀྱིས་ཀྱང་...ཞེས་བྱ་བའི་སྒྲ་བརྗོད་དོ།། देवताभिरप्याकाशस्थाभिः शब्दमुदीरितम्...इति अ.श.3क/2; •ना. आकाशप्रतिष्ठितः, तथागतः – དགེ་སློང་དག་ལྷོ་ཕྱོགས་ན་དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་དགྲ་བཅོམ་པ་ཡང་དག་པར་རྫོགས་པའི་སངས་རྒྱས་ནམ་མཁའ་ལ་གནས་པ་ཞེས་བྱ་བ་དང་། དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་དགྲ་བཅོམ་པ་ཡང་དག་པར་རྫོགས་པའི་སངས་རྒྱས་རྟག་པར་ཡོངས་སུ་མྱ་ངན་ལས་འདས་པ་ཞེས་བྱ་བའོ།། दक्षिणस्यां दिशि भिक्षव आकाशप्रतिष्ठितश्च नाम तथागतोऽर्हन् सम्यक्संबुद्धो नित्यपरिनिर्वृतश्च नाम तथागतोऽर्हन् सम्यक्संबुद्धः स.पु.70ख/119.

ནམ་མཁའ་ལ་སྤྱོད་པ वि. आकाशचारी – དེ་ནས་ཡང་ནམ་མཁའ་ལ་སྤྱོད་ཅིང་ནམ་མཁའ་ལ་འགྲོ་བའི་བདག་པོས་བཅོམ་ལྡན་འདས་ལ་ཕྱག་འཚལ་ནས་འདི་སྐད་ཅེས་གསོལ་ཏོ།། अथाकाशचारी खगपतिर्भगवन्तं प्रणिपत्यैवमाह स.दु.118ख/202.

ནམ་མཁའ་ལ་ཡོངས་སུ་ཆགས་པ आकाशपलिगोधः – འདི་གཉིས་ནི་རབ་ཏུ་བྱུང་བའི་ནམ་མཁའ་ལ་ཡོངས་སུ་ཆགས་པ་སྟེ། འཇིག་རྟེན་རྒྱང་ཕན་པའི་གསང་ཚིག་ཡོངས་སུ་ཚོལ་བ། ལྷུང་བཟེད་དང་ཆོས་གོས་ལྷག་པར་འཆང་བ द्वाविमौ...प्रव्रजितस्याकाशपलिगोधौ–लोकायततन्त्रपर्येष्टिता, उत्सदपात्रचीवरधारणता लो.को.1346.

ནམ་མཁའ་ལས་ལྡིང་བ वि. विहायसंगमः – དེའི་ཚེ་ཕྱི་རོལ་གྱི་དྲང་སྲོང་མངོན་པར་ཤེས་པ་ལྔ་ཡོད་པ་རྫུ་འཕྲུལ་དང་ལྡན་པ་ནམ་མཁའ་ལས་ལྡིང་བ तेन च समयेन पञ्च ऋषयो बाह्याः पञ्चाभिज्ञाः ऋद्धिमन्तो विहायसंगमाः ल.वि.68ख/90.

ནམ་མཁའ་ལས་བྱུང = ནམ་མཁའ་ལས་བྱུང་བ།

ནམ་མཁའ་ལས་བྱུང་བ वि. आकाशसम्भवः – ནམ་མཁའ་སེར་སྣ་རྡོ་རྗེར་འགྱུར། །སེར་སྣ་ནམ་མཁའ་ལས་བྱུང་ཉིད།། आकाशः पिशुनवज्रः पिशुनमाकाशसम्भवम्॥ हे.त.16ख/52; गगनोद्भवः – ནམ་མཁའ་ལས་བྱུང་རང་བྱུང་བ། །ཤེས་རབ་ཡེ་ཤེས་མེ་བོ་ཆེ།། गगनोद्भवः स्वयंभूः प्रज्ञाज्ञानानलो महान्। वि.प्र.49क/4.51.

ནམ་མཁའ་སྲུང ना. आकाशरक्षिता, किन्नरकन्या – མིའམ་ཅིའི་བུ་མོ་བརྒྱ་སྟོང་དུ་མ་དག་ཚོགས་པ་འདི་ལྟ་སྟེ། མིའམ་ཅིའི་བུ་མོ་ཡིད་ཅེས་བྱ་བ་དང... ནམ་མཁའ་སྲུང་ཞེས་བྱ་བ་དང अनेकानि च किन्नरकन्याशतसहस्राणि सन्निपतितानि। तद्यथा–मनसा नाम किन्नरकन्या... आकाशरक्षिता नाम किन्नरकन्या का.व्यू.203क/260.

ནམ་མཁའ་ལྷ व्योमदेवता– དེ་ལྟར་བརྒྱ་བསམ་དབུགས་རིང་བ། །དེ་ལ་ནམ་མཁའ་ལྷ་ཡིས་སྨྲས།། इति चिन्ताशतोच्छ्वासं तमूचुर्व्योमदेवताः। अ.क.226ख/25.26.

ནམ་མཁའི་དཀྱིལ गगनतलम् – ནམ་མཁའི་དཀྱིལ་ན་ཕྱག་ན་རྡོ་རྗེ་འབར་བ་བཞུགས་མཐོང་ནས गगनतलगतं वज्रपाणिं ज्वलन्तं दृष्ट्वा बो.अ.38क/284; नभस्तलम् – རྟག་ཏུ་ཐམས་ཅད་ལ་ཁྱབ་པའི། །ཆོས་དབྱིངས་ནམ་མཁའི་དཀྱིལ་དུ་ནི།། सदा सर्वत्र विसृते धर्मधातुनभस्तले। र.वि.70क/108; ཞིང་ཀུན་ནམ་མཁའི་མཐིལ་ཁྱབ་ཉི་མ་ལ་མེད་ལ།། सर्वक्षेत्रनभस्तलस्फरणता भानोर्न संविद्यते र.वि.70ख/109; आकाशतलम् म.व्यु.6882(98क); द्र. ནམ་མཁའི་རྡོས།

ནམ་མཁའི་དཀྱིལ་འཁོར आकाशमण्डलम् – སྟོང་པའི་ཟད་པར་མཁའ་ལ་འགྲོ་དང་ཞེས་པ་ནི་གཙུག་ཏོར་གྱི་ནམ་མཁའི་དཀྱིལ་འཁོར་ལ་ནམ་མཁའི་ཟད་པར་རྫས་དང་བྲལ་བ་བསྒོམ་པར་བྱ་སྟེ། དེ་ནས་ནམ་མཁའ་ལ་འགྲོ་བར་འགྱུར་རོ།། भवति खगमने शून्यकृत्स्नमिति। उष्णीषे आकाशमण्डले आकाशकृत्स्नं द्रव्यरहितं भावयेत्, तेनाकाशगमनं भवतीति वि.प्र.77ख/4.157; गगनमण्डलम् – ནམ་མཁའི་དཀྱིལ་འཁོར་ཁྱབ་པ་ཡི། །རང་གི་ལུས་མཚུངས་རྣམ་པར་སྤྲོ།། विस्फुरन्ति स्वदेहाभाः गगनमण्डलच्छादकाः। हे.त.5क/12.

ནམ་མཁའི་དཀྱིལ་འཁོར་ཁྱབ་པ *वि.* गगनमण्डलच्छादकः – ནམ་མཁའི་དཀྱིལ་འཁོར་ཁྱབ་པ་ཡི། །རང་གི་ལུས་མཚུངས་རྣམ་པར་སྤྲོ།། विस्फुरन्ति स्वदेहाभाः गगनमण्डलच्छादकाः। हे.त.5क/12.

ནམ་མཁའི་དཀྱིལ་དུ་གནས་པ *वि.* नभस्तलवर्ती – ནམ་མཁའི་དཀྱིལ་དུ་གནས་པའི་སྣང་བ་བཞིན་དུ་རང་ཉིད་རང་བཞིན་གྱིས་གསལ་བ་ཡིན་ནོ།། स्वयं प्रकृत्या प्रकाशात्मतया, नभस्तलवर्त्यालोकवत् त.प.116क/682.

ནམ་མཁའི་སྐད व्योमवाणी, आकाशवाणी – དེ་ནས་ལོ་ནི་བཅུ་གཉིས་ན། །ནམ་མཁའི་སྐད་ཀྱིས་རྟོགས་བྱས་ཤིང་།། अथ द्वादशभिर्वर्षैर्व्योमवाणीविबोधितः। अ.क.283ख/105.24.

ནམ་མཁའི་སྐྲ་ཅན = ལྷ་ཆེན व्योमकेशः, महादेवः – शम्भुरीशः पशुपतिः शिवः शूली महेश्वरः।...व्योमकेशः अ.को.1.1.35; व्योमवद् विकीर्णः केशो यस्य सः व्योमकेशः अ.वि.1.1.35.

ནམ་མཁའི་སྐྱེ་བོ गगनजनः – ནམ་མཁའ་དང་འདྲ་བའི་སྐྱེ་བོ་ནི་ནམ་མཁའི་སྐྱེ་བོ་སྟེ...ཡང་ན་ནམ་མཁའ་དང་སྐྱེ་བོ་ནི་ནམ་མཁའི་སྐྱེ་བོ་སྟེ། དེ་རྣམས་ཟད་པ་ནི་གཏུགས་པའོ།། गगनमिव जनाः गगनजनाः।...यदि वा, गगनं च जनाश्च ते गगनजनाः। तेषां परिक्षयः पर्यवदानम् बो.प.56क/18.

ནམ་མཁའི་ཁམས *पा.* **1.** आकाशधातुः, धातुभेदः – ཁམས་དྲུག... སའི་ཁམས་དང་ཆུའི་ཁམས་དང་མེའི་ཁམས་དང་རླུང་གི་ཁམས་དང་ནམ་མཁའི་ཁམས་དང་རྣམ་པར་ཤེས་པའི་ཁམས་སོ།། षड् धातवः। पृथिवीधातुरब्धातुस्तेजोधातुर्वायुधातुराकाशधातुर्विज्ञानधातुश्च श्रा.भू.82क/211; ཁམས་བཞི་པོ་འདི་རྣམས་ལས། སའི་ཁམས་དང་ཆུའི་ཁམས་དང་རླུང་གི་ཁམས་བས་ནི་ནམ་མཁའི་ཁམས་ཉིད་སྟོབས་དང་ལྡན་པ एषां चतुर्णां धातूनां पृथिवीधातोरब्धातोर्वायुधातोराकाशधातुरेव बली र.व्या.98क/44; व्योमधातुः – རང་བཞིན་ནམ་མཁའི་ཁམས་བཞིན་དུ། །དེ་བཞིན་ཅན་[གཞི་ཅན་]མིན་གནས་པ་མེད།། तदमूलाप्रतिष्ठाना प्रकृतिर्व्योमधातुवत्॥ र.वि.57क/43 **2.** खधातुः, सर्वाकारशून्यता – ཨེ་ཡིག་དང་གསང་བ་དང་པདྨ་དང་ཆོས་འབྱུང་དང་ནམ་མཁའི་ཁམས་དང་...གསང་བའི་མིང་རྣམས་ཀྱི་ནང་ནས་ཨེ་ཡིག་གཅིག་པུ་གཙོ་བོའི་མིང་མ་ཡིན་ཏེ། ཐམས་ཅད་ཀྱིས་རྣམ་པ་ཐམས་ཅད་པའི་སྟོང་པ་ཉིད་གོ་བར་བྱེད་པའི་ཕྱིར་རོ།། एकाररहस्यपद्मधर्मोदयखधातु...गुह्यसंज्ञानां मध्ये नैका एकारसंज्ञा प्रधाना, सर्वासां सर्वाकारशून्यताप्रतिपादकत्वात् वि.प्र.135ख/75; ཨེ་ཝཾ་ནམ་མཁའི་ཁམས་སུ་བརྗོད།། एवं खधातुरित्युक्तम् गु.सि.8क/17; पद्मम् – ནམ་མཁའི་ཁམས་ནི་པད་མ་ལ། །ཛྙཱ་ན་ཞེས་བྱ་ཡེ་ཤེས་བརྗོད།། खधाताविति पद्मेषु ज्ञानं भगमिति स्मृतम्। हे.त.9ख/28.

ནམ་མཁའི་ཁམས་ཀྱི་མཐར་གཏུགས་པ *वि.* आकाशधातुपर्यवसानः म.व्यु.6430 (92क); द्र. ནམ་མཁའི

ཁམས་ཀྱི་མཐའ་གཏུགས་པ།

ནམ་མཁའི་ཁམས་ཀྱི་མཐར་ཕྱུག་པ *पा.* आकाशधातुनिष्ठा, निष्ठापदभेदः – སྨོན་ལམ་དེ་དག་ཀྱང་མཐར་ཕྱུག་པའི་གནས་བཅུས་མངོན་པར་སྒྲུབ་སྟེ། བཅུ་གང་ཞེ་ན། འདི་ལྟ་སྟེ། སེམས་ཅན་གྱི་ཁམས་ཀྱི་མཐར་ཕྱུག་པ་དང ...ནམ་མཁའི་ཁམས་ཀྱི་མཐར་ཕྱུག་པ་དང तानि च महाप्रणिधानानि दशभिर्निष्ठापदैरभिनिर्हरन्ति। कतमैर्दशभिः ? यदुत सत्त्वधातुनिष्ठया च...आकाशधातुनिष्ठया च द.भू.179ख/11.

ནམ་མཁའི་ཁམས་ཀྱི་མཐས་ཀླས་པ *वि.* आकाशधातुपर्यवसानः – རྒྱལ་པོ་ཆེན་པོ་དེ་ལྟར་ན་ཆོས་ཐམས་ཅད་ཀྱི་བར་ནི། རྣམ་པར་ཐར་པ་ལ་མངོན་པར་ཕྱོགས་པ་ཆོས་ཀྱི་དབྱིངས་སུ་ངེས་པ་ནམ་མཁའི་ཁམས་ཀྱི་མཐས་ཀླས་པ यावदिति हि महाराज सर्वधर्मा विमोक्षाभिमुखा धर्मधातुनियता आकाशधातुपर्यवसानाः शि.स.139ख/134.

ནམ་མཁའི་ཁམས་ཀྱི་མཐས་གཏུགས་པ *वि.* आकाशधातुपर्यन्तः – མཆོད་པའི་ཁྱད་པར་ཐམས་ཅད་ཀྱང་། །ནམ་མཁའི་ཁམས་ཀྱི་མཐས་གཏུགས་པར།། सर्वपूजाविशेषैः... आकाशधातुपर्यन्तैः 46क/118; द्र. ནམ་མཁའི་ཁམས་ཀྱི་མཐར་གཏུགས་པ།

ནམ་མཁའི་ཁམས་ཀྱི་པདྨ आकाशधातुकमलम् – དེ་བཞིན་དུ་གཙུག་ཏོར་དབུས་སུ་ནམ་མཁའི་ཁམས་ཀྱི་པདྨ་ལ་རྡོ་རྗེའི་རིགས་སུ་འགྱུར་ཏེ तद्वदुष्णीषमध्ये आकाशधातुकमले वज्रकुलं भवति वि.प्र.231ख/2.28.

ནམ་མཁའི་ཁམས་ཀྱི་རང་བཞིན आकाशधातुस्वभावः – ནམ་མཁའི་ཁམས་ཀྱི་རང་བཞིན་གྱིས་མཐེའུ་ཆུང་ངོ་།། आकाशधातुस्वभावेन कनिष्ठिका वि.प्र.230ख/2.26.

ནམ་མཁའི་ཁམས་ཀྱི་རབ་འབྱམས་མཐར་གཏུགས་པ *वि.* आकाशधातुप्रसरावधिः – ནམ་མཁའི་ཁམས་ཀྱི་རབ་འབྱམས་མཐར་གཏུགས་པ་ཞེས་བྱ་བ་ལ། ནམ་མཁའི་ཁམས་རབ་འབྱམས་ནི་སྐབས་སམ་རྒྱ་ཆེ་བའོ།། དེ་སྲིད་ཀྱི་མཐར་གཏུགས་པ་ནི་དེའི་མཐར་ཕྱུག་པའོ།། आकाशधातुप्रसरावधीनि आकाशधातोः प्रसरोऽवकाशः विस्तारो वा, तावदवधीनि तत्पर्यन्तानि बो.प.60क/23.

ནམ་མཁའི་ཁམས་རྣམ་པར་དཔྱད་པ་སྣང་བ་ལ་འཇུག་པ *पा.* आकाशधातुविचारणालोकप्रवेशः, धर्मालोकप्रवेशभेदः – དེ་ཆོས་སྣང་བ་ལ་འཇུག་པ་བཅུ་ཡོངས་སུ་གནོན་ཏེ།...འདི་ལྟ་སྟེ། སེམས་ཅན་གྱི་ཁམས་རྣམ་པར་དཔྱད་པ་སྣང་བ་ལ་འཇུག་པ་དང...ནམ་མཁའི་ཁམས་རྣམ་པར་དཔྱད་པ་སྣང་བ་ལ་འཇུག་པ་དང स दशभिर्धर्मालोकप्रवेशैराक्रमति...यदुत सत्त्वधातुविचारणालोकप्रवेशेन च...आकाशधातुविचारणालोकप्रवेशेन च द.भू.204क/24.

ནམ་མཁའི་ཁམས་ཡང་དག་པར་བསྒྲུབ་པ *पा.* आकाशधातुसमुदागमः – བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའི་ས་ཆོས་ཀྱི་སྤྲིན་ལ་གནས་པའི་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་ནི་ཆོས་ཀྱི་ཁམས་ཡང་དག་པར་སྒྲུབ་པ་ཡང་དག་པ་ཇི་ལྟ་བ་བཞིན་དུ་རབ་ཏུ་ཤེས་སོ།།...ནམ་མཁའི་ཁམས་ཡང་དག་པར་སྒྲུབ་པ་དང धर्ममेघायां बोधिसत्त्वभूमौ प्रतिष्ठितो बोधिसत्त्वो धर्मधातुसमुदागमं च यथाभूतं प्रजानाति ...आकाशधातुसमुदागमं च द.भू.265ख/58.

ནམ་མཁའི་གང་གཱ वियद्गङ्गा, मन्दाकिनी – मन्दाकिनी वियद्गङ्गा स्वर्णदी सुरदीर्घिका। अ.को.1.1.50; वियति गङ्गा वियद्गङ्गा अ.वि.1.1.50.

ནམ་མཁའི་གང་གཱ = ནམ་མཁའི་གང་ག།

ནམ་མཁའི་གོས་ཅན 1. दिगम्बराः, जैनाः – གཏན་ཚིགས...འདི་ཉིད་ནམ་མཁའི་གོས་ཅན་རྣམས་ཀྱིས་རྒྱལ་བ་ཐམས་ཅད་མཁྱེན་པ་ཉིད་དུ་བསྒྲུབ་པར་བྱ་བའི་ཕྱིར་ཉེ་བར་གནས་ཏེ अयमेव च दिगम्बराणां जिनसर्वज्ञसाधनाय हेतुरुपतिष्ठते त.प.263[ख]/996; ཤུན་པ་ཐམས་ཅད་ནི་ཤུན་པ་ཐམས་ཅད་ཡིན་ཏེ། དེ་བཤུས་པར་གྱུར་ན་འཆི་བར་ནམ་མཁའི་གོས་ཅན་དག་གིས་སྨྲས་པ सर्वा त्वक् सर्वत्वक्। तस्या अपहरणे सति मरणं दिगम्बरैरुपन्यस्तम् न्या.टी.73[क]/190; ཁྱུ་མཆོག་དང་འཕྲོང་རིས་དང་དེ་སྨྲ་བ་གང་ཡིན་པ་ཁྱུ་མཆོག་དང་འཕྲོང་རིས་ལ་སོགས་པ་སྟེ། ནམ་མཁའི་གོས་ཅན་ལ་སོགས་པའི་སྟོན་པ ऋषभो वर्धमानश्च तावादी यस्य स ऋषभवर्धमानादिर्दिगम्बराणां शास्ता न्या.टी.89[क]/245 2. स्याद्वादः, दिगम्बरदर्शनम् – དེ་དག་གིས་བརྗོད་པའི་རིགས་ནམ་མཁའི་གོས་ཅན་གྱི་ཞར་ལ་འགོག་པར་འགྱུར་རོ॥ तदुपवर्णिता जातिः प्रस्तावात् स्याद्वादे निषेत्स्यते त.प.305[क]/323; द्र. ནམ་མཁའི་གོས་ཅན་གྱི་ལྟ་བ།

ནམ་མཁའི་གོས་ཅན་གྱི་ལྟ་བ दिगम्बरदर्शनम् – དོན་དམ་པར་ནི་ཐ་མི་དད་ལ་ཀུན་རྫོབ་ཏུ་ནི་ཐ་དད་དོ་ཞེས་བྱ་བ་ནི་ནམ་མཁའི་གོས་ཅན་གྱི་ལྟ་བ་མ་ཡིན་ནོ॥ न हि परमार्थत्वेनाभेदः। संवृत्यैव भेद इति दिगम्बरदर्शनम् प्र.अ.219[ख]/577.

ནམ་མཁའི་གོས་ཅན་པ आजीवकाः, जैनाः – ཡང་ན་ནམ་མཁའི་གོས་ཅན་པ་དག་སྨྲ་བ་བཞིན་དུ་གཉི་གའམ་གཉི་ག་མ་ཡིན་པའི་ངོ་བོ་ཡིན་ཞེས་བྱ་བ་ཕྱོགས་བཞིའོ॥ यद्वा उभयानुभयरूपः, यथाऽऽहुराजीवका इति चत्वारः पक्षाः त.प.234[ख]/184.

ནམ་མཁའི་གླང་པོ = སྤྲིན नभोगजः, मेघः ङ.को.52/रा.को.2.827.

ནམ་མཁའི་རྒྱལ་པོ गगनराजः – སྤྱན་རས་གཟིགས་ནམ་མཁའི་རྒྱལ་པོ गगनराज अवलोकितेश्वरः लो.को. 1497.

ནམ་མཁའི་ངོ་བོ་ཉིད་ལྟ་བུ वि. आकाशस्वभावः – ཆོས་ཐམས་ཅད་ལ་སྟོང་པར་བལྟ་སྟེ།...ནམ་མཁའི་ངོ་བོ་ཉིད་ལྟ་བུ सर्वधर्मान् शून्यान् व्यवलोकयति...आकाशस्वभावान् स.पु.104[ख]/167.

ནམ་མཁའི་ངོས नभस्तलम् – རྔ་བརྡུངས་སྒྲ་ནི་དྲག་པ་ཡིས། །ནམ་མཁའི་ངོས་ནི་རལ་བ་བཞིན॥ पटहध्वनिनोत्क्रुष्टैः स्फुटतीव नभस्तलम्॥ जा.मा.67[क]/77; गगनतलम् – ནམ་མཁའི་ངོས་ཁྱབ་པ་རྣམས་ཀྱིས गगनतलव्यापिनीभिः ख.टी.164[क]/246; द्र. ནམ་མཁའི་དཀྱིལ།

ནམ་མཁའི་སྔོ་སངས་མ वि.स्त्री. नभःश्यामा – གཏུམ་མོ་ནམ་མཁའི་སྔོ་སངས་མ॥ चण्डाली च नभःश्यामा हे.त.24[ख]/80.

ནམ་མཁའི་ཆུ་སྐྱེས་པད अम्बराम्भोरुहम् – ནམ་མཁའི་ཆུ་སྐྱེས་པད་སོགས་ལ། །དེར་རྟོགས་[བརྗོད་]བག་ཆགས་ཙམ་ལས་ནི། །འབྱུང་བ་དམིགས་པ་མེད་ཉིད་ནི། །ཤེས་པ་འདི་ནི་རབ་ཏུ་བྱེད[འཇུག]॥ निरालम्बनमेवेदमम्बराम्भोरुहादिषु। तज्जल्पवासनामात्रभावि ज्ञानं प्रवर्त्तते॥ त.स.17[क]/191.

ནམ་མཁའི་སྙིང་པོ ना. आकाशगर्भः, बोधिसत्त्वः – འཕགས་པ་ནམ་མཁའི་སྙིང་པོ་དང་། །ས་ཡི་སྙིང་པོ་དག་དང་ནི॥ आर्यमाकाशगर्भं च क्षितिगर्भं च बो.अ.6[क]/2.52; བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་སེམས་དཔའ་ཆེན་པོ་ནམ་མཁའི་སྙིང་པོ་དང आकाशगर्भेण च बोधिसत्त्वेन महासत्त्वेन का.व्यू.200[क]/258; गगनगर्भः – བྱང་ཆུབ

སེམས་དཔའ་སེམས་དཔའ་ཆེན་པོ་ཤེས་པ་དམ་པའི་ཡེ་ཤེས་དང་...ནམ་མཁའི་སྙིང་པོ་དང ज्ञानोत्तरज्ञानिना च बोधिसत्त्वेन महासत्त्वेन... गगनगर्भेण च ग.व्यू. 275क/2; खगर्भः – ཨེ་ནི་ནམ་མཁའི་སྙིང་པོ་དང་ཨར་ནི་སའི་སྙིང་པོ་དང ए खगर्भः । अर् क्षितिगर्भः वि.प्र. 52ख/4.76; འཕགས་པ་ནམ་མཁའི་སྙིང་པོའི་མཚན་བརྒྱ་རྩ་བརྒྱད་པ་གཟུངས་སྔགས་དང་བཅས་པ खगर्भाष्टोत्तरशतकनामधारणीमन्त्रम् क.त.636.

ནམ་མཁའི་སྙིང་པོའི་མདོ་སྡེ *ना.* आकाशगर्भसूत्रम्, ग्रन्थः – ནམ་མཁའི་སྙིང་པོའི་མདོ་སྡེ་ནི། །ཐོག་མ་ཉིད་དུ་བལྟ་བར་བྱ།། <?>आकाशगर्भसूत्रे च मूलापत्तीर्निरूपयेत् ॥ बो.अ.14क/5.104.

ནམ་མཁའི་སྙིང་པོའི་མཚན་བརྒྱ་རྩ་བརྒྱད་པ་གཟུངས་སྔགས་དང་བཅས་པ *ना.* खगर्भाष्टोत्तरशतकनामधारणीमन्त्रम्, ग्रन्थः क.त.636, 876.

ནམ་མཁའི་ཏོག *ना.* गगनकेतुः, बुद्धः – ལག་བཟང་དང ...ནམ་མཁའི་ཏོག་དང...ཤཱཀྱ་ཐུབ་པ सुबाहुः...गगनकेतुः...शाक्यमुनिश्च म.मू.93ख/5.

ནམ་མཁའི་སྟེང་འགྲོ་བ *ना.* = མིག་དམར खोन्मुखः, मङ्गलग्रहः ङ.को.65/रा.को.3564.

ནམ་མཁའི་ཐེག་པ व्योमयानम्, विमानम् ङ.को.20/रा.को.4.554.

ནམ་མཁའི་མཐའ་གཏུགས་པ *वि.* आकाशनिष्ठः – ནམ་མཁའི་མཐའ་གཏུགས་པའི། །སེམས་ཅན་ཁམས་ལ आकाशनिष्ठस्य सत्त्वधातोः बो.अ.7ख/3.21; व्योमपर्यन्तः – ཕྱོགས་བཅུ་ནམ་མཁའི་མཐའ་གཏུགས་པའི། །འགྲོ་བ་ཉོན་མོངས་ལས་བསྒྲལ་བར།། दशदिग्व्योमपर्यन्तजगत्क्लेशविमोक्षणे । बो.अ.9ख/4.41; आकाशधातुपर्यवसानः – དེ་བཞིན་དུ་ཕྱོགས་བཅུའི འཇིག་རྟེན་གྱི་ཁམས་ཆོས་ཀྱི་དབྱིངས་ཀྱིས་ཀླས་པ་ནམ་མཁའི་མཐས་གཏུགས་པ་ཐམས་ཅད་ཀྱང་ཡོངས་སུ་དག་པ एवं दशसु दिक्षु धर्मधातुपरमाकाशधातुपर्यवसानाः सर्वलोकधातवः परिशुद्धाः ग.व्यू.280ख/6.

ནམ་མཁའི་མཐིལ = ནམ་མཁའི་དཀྱིལ།

ནམ་མཁའི་བདག་ཉིད *वि.* गगनात्मा – ཐ་སྙད་ཐམས་ཅད་ལས་འདས་པའི་བདག་ནི་རྗེ་དང་ཤིང་བལ་ལ་བརྟེན་པའི་ནམ་མཁའི་བདག་ཉིད་ཡིན་ནོ།། सर्वव्यवहारातीताद्यात्मोपलम्भ [० तीतो ह्यात्मोपल]तूलावलम्बिगगनात्मैव प्र.अ.142ख/152.

ནམ་མཁའི་བདག་པོ • *सं.* = རླུང नभस्वान्, वायुः – श्वसनः स्पर्शनो वायुर्मातरिश्वा सदागतिः ॥...नभस्वत् अ.को.1.1.64; नभोऽस्यास्तीति नभस्वान् अ.वि.1.1.64; • *ना.* गगनपतिः, नृपः ब.अ.5, 16.

ནམ་མཁའི་རྡོ་རྗེ • *पा.* = ཆོས་སྐུ खवज्रः, धर्मकायः – ནམ་མཁའི་རྡོ་རྗེ་ནི་ཆོས་སྐུའོ།། खवज्रे धर्मकाये ख.टी.156क/235; • *ना.* खवज्रः, आचार्यः ब.अ.843.

ནམ་མཁའི་གླིང = ནམ་མཁའ་གླིང་།

ནམ་མཁའི་ནོར་བུ = ཉི་མ द्युमणिः, सूर्यः – सूरसूर्यार्यमादित्यद्वादशात्मदिवाकराः ।...द्युमणिः अ.को.1.3.30; दिवि मणिः द्युमणिः अ.वि.1.3.30.

ནམ་མཁའི་པད = ནམ་མཁའི་པདྨ།

ནམ་མཁའི་པད་མ = ནམ་མཁའི་པདྨ།

ནམ་མཁའི་པདྨ गगनपद्मम् – ཕྱོགས་དང་པོ་ལ་ནམ་མཁའི་པདྨ་ལ་སོགས་པས་མ་ངེས་པའི་ཕྱིར་རིག་བྱེད་ཀྱི་དངོས་པོར་གྱུར་པའི་རྟག་པ་ཉིད་གྲུབ་པ་མ་ཡིན་ཏེ आद्ये पक्षे गगनपद्मादिनाऽनैकान्ताद् वेदस्य न वस्तुभूतनित्यत्वसिद्धिः त.प.174ख/807; वियत्पद्मम् – གང

ཕྱིར་ནམ་མཁའི་པད་སོགས་ཀྱིས། །དེ་སྐད་བྱས་ཉིད་མ་ངེས་པའོ།། तथैवोक्तावनेकान्तो वियत्पद्मादिभिर्यतः। त.स.26क/280; गगनाम्भोरुहम् – དེས་ན་འབྲས་བུ་མེད་ན་ཡང་འབྲས་བུ་ཅུང་ཟད་ཅིག་བྱེད་ཀྱི། ནམ་མཁའི་པད་མ་ལ་སོགས་པ་ནི་མ་ཡིན་ནོ།། तेन कार्यस्यासत्त्वेऽपि किञ्चिदेव कार्यं क्रियते, न गगनाम्भोरुहम् त.प.149ख/25; गगनाम्भोजम् – ནམ་མཁའ་ཡི་ནི་པད་མ་བཞིན། །གཞན་དུ་ཐམས་ཅད་ཅིག་ཅར་འབྱུང་།། गगनाम्भोजवत् सर्वमन्यथा युगपद् भवेत् ॥ त.स.5क/69; गगननलिनम् – གང་ཞིག་ཚད་མ་ལྔ་དང་བྲལ་བའི་རང་བཞིན་དངོས་པོ་མེད་པའི་ཚད་མས་ཡུལ་དུ་བྱས་པའི་རང་བཞིན་དེ་ནི་མཁས་པ་རྣམས་ཀྱིས་མེད་པའི་སྤྱོད་ཡུལ་དུ་འཇུག་པ་ཡིན་ཏེ། དཔེར་ན་ནམ་མཁའི་པདྨ་ལྟ་བུའོ།། यः प्रमाणपञ्चकविरहस्वभावाभावप्रमाणविषयीकृतविग्रहः स विदूषामभावव्यवहारगोचरतामेवावतरति, यथा गगननलिनम् त.प.259क/988; གང་ཞིག་མངོན་སུམ་དུ་མངོན་པར་འདོད་པའི་ཤེས་པ་ལ་རང་གི་རྣམ་པས་མི་སྣང་བ་དེ་ནི་མངོན་སུམ་ཉིད་དུ་གཟུང་བར་བྱ་བ་མ་ཡིན་ཏེ། དཔེར་ན་ནམ་མཁའི་པདྨོ་བཞིན་ནོ།། यः प्रत्यक्षाभिमते प्रत्यये न प्रतिभासते स्वेनाकारेण, न स प्रत्यक्षत्वेन ग्रहीतव्यः, यथा गगननलिनम् त.प.110ख/672; गगनेन्दीवरम् – མ་བྱུང་བྱུང་བ་ལྡན་པ་ཡང་། །ནམ་མཁའི་པད་མ་ལ་སོགས་བཞིན།། नाभूत्वाभावयोगस्य गगनेन्दीवरादिवत् ॥ त.स.15ख/174; वियदब्जम् – ནམ་མཁའི་པད་མ་ལ་སོགས་པ་གང་ལ་རྒྱུ་མེད་པ་དེ་ནི་མི་བྱེད་པའི་ཕྱིར་མ་ངེས་པ་ཡིན་ནོ།། यस्य तु वियदब्जादेर्नास्ति कारणं तन्न क्रियत इत्यनेकान्त एव त.प.158क/39; གང་ཞིག་གཅིག་དང་དུ་མའི་རང་བཞིན་དང་བྲལ་བ་དེ་ནི་མེད་པའི་ཐ་སྙད་དུ་རུང་བ་ཡིན་ཏེ། ནམ་མཁའི་པདྨོ་བཞིན་ནོ།། यदेकानेकस्वभावरहितं तदसद्व्यवहारयोग्यम्, यथा वियदब्जम् त.प.113क/677; अम्बरपद्मम् – དེ་ནི་དེ་ཁོ་ན་ཉིད་དུ། །དངོས་མེད་ནམ་མཁའི་པད་མ་བཞིན།། निःस्वभावतया तस्य तत्त्वतोऽम्बरपद्मवत् । त.स.26क/280; वियदम्भोजम् – རྗེས་སུ་དཔག་པས་ཀྱང་གྲུབ་སྟེ་ནམ་མཁའི་པདྨ་བཞིན་ནོ།། वियदम्भोजवदनुमानतोऽपि सिद्धः त.प.231ख/933; आकाशकुशेशयम् – འདི་ལྟར་ནམ་མཁའི་པདྨ་ལ་བྱས་པ་དང་འཇིག་པ་ཉིད་བཀག་ན་ཡང་དངོས་པོར་གྱུར་པའི་རྟག་པ་ཉིད་མ་གྲུབ་པ यथा हि आकाशकुशेशयस्य कृतकत्वविनाशित्वनिषेधेऽपि न वस्तुभूतनित्यत्वसिद्धिः त.प.174ख/807; आकाशकमलम् – ནུས་པ་ཀུན་དང་བྲལ་བའི་ཕྱིར། །ནམ་མཁའི་པད་མ་ལ་སོགས་བཞིན།། सर्वशक्तिवियुक्तत्वाद् आकाशकमलादिवत् ॥ त.स.5ख/78; आकाशाम्भोरुहम् त.प.; नभःकोकनदम् – གང་ཟག་ནི། །དོན་དམ་པར་མེད...།ནམ་མཁའི་པད་མ་ལ་སོགས་བཞིན།། पुद्गलो नैव विद्यते पारमार्थिकः।... नभःकोकनदादिवत् ॥ त.स.14क/160; व्योमतामरसम् – ནམ་མཁའི་པད་མ་ལ་སོགས་བཞིན། །འཇིག་དང་མི་སྐྱེད་ཐལ་བར་འགྱུར།། नष्टाजाताः प्रसज्यन्ते व्योमतामरसादिवत् ॥ त.स.67क/628; नभस्तामरसम् – འོན་ཏེ་ནམ་མཁའི་པད་མ་སོགས། །རང་གི་ཤེས་པའི་རྒྱུར་གྱུར་ཕྱིར། །དོན་གྱི་བྱ་བ་བྱེད་ནུས་ཀྱང་།། ननु चार्थक्रियाशक्ता नभस्तामरसादयः। स्वज्ञानहेतुभावेन त.स.17क/191; नभःपङ्कजम् – མོ་གཤམ་གྱི་བུ་དང་ནམ་མཁའི་པདྨོ་ལ་སོགས་པ་མེད་པའི་བཀག་པས་ཡོད་པའི་གནས་སྐབས་སུ་གྱུར་པ་མ་ཡིན་གྱི <?> न हि बन्ध्यातनयनभःपङ्कजादिष्वसदवस्थता भवति, प्रतिषेधात् वा.टी.69ख/24; नभस्तले कमलम् – དཔེར་ན་ནམ་མཁའི་པད་མོ་བཞིན་ནོ།། यथा नभस्तले कम-

लम् वा.टी.67[ख]/22.

ནམ་མཁའི་པདྨོ = ནམ་མཁའི་པདྨ།

ནམ་མཁའི་དཔལ *ना.* गगनश्रीः, बोधिसत्त्वः – བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་སེམས་དཔའ་ཆེན་པོ་ཤེས་པ་དམ་པའི་ཡེ་ཤེས་དང...ནམ་མཁའི་དཔལ་དང ज्ञानोत्तरज्ञानिना च बोधिसत्त्वेन महासत्त्वेन ...गगनश्रिया च ग.व्यू.276[क]/3.

ནམ་མཁའི་སྤྱོད་ཡུལ *वि.* आकाशगतिकः – འོད་སྲུང་འདི་ལྟ་སྟེ། རྣམ་པར་གྲོལ་བའི་རོ་དང...ནམ་མཁའི་སྤྱོད་ཡུལ་དུ་ངས་ཆོས་རྣམས་རོ་གཅིག་པར་རྟོགས་ཀྱང सोऽहं काश्यप एकरसधर्मं विदित्वा यदुत विमुक्तिरसं... आकाशगतिकम् स.पु.48[ख]/85.

ནམ་མཁའི་ཕྱོགས आकाशदेशः – རྩིག་པ་མཐའ་དག་དང་ལྡན་ཅིག་ཏུ་སྣང་བ་ཞེས་བྱ་བའི་ནམ་མཁའི་ཕྱོགས་དུ་བ་དང་བྲལ་བ་མཐོང་ངོ༎ भित्तिपर्यन्तसमं चालोकसंज्ञकमाकाशदेशं धूमविविक्तं पश्यति न्या.टी.55[ख]/126.

ནམ་མཁའི་བློ *ना.* गगनबुद्धिः, बोधिसत्त्वः – བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་སེམས་དཔའ་ཆེན་པོ་ཤེས་པ་དམ་པའི་ཡེ་ཤེས་དང ... ནམ་མཁའི་བློ་དང ज्ञानोत्तरज्ञानिना च बोधिसत्त्वेन महासत्त्वेन...गगनबुद्धिना च ग.व्यू.276[ख]/3.

ནམ་མཁའི་དབྱངས गगननिर्घोषः – ནམ་མཁའི་དབྱངས་ཀྱི་སྒྲ गगननिर्घोषस्वरः ग.व्यू.276[ख]/3; गगनस्वरः लो.को.1346.

ནམ་མཁའི་དབྱངས་ཀྱི་སྒྲ *ना.* गगननिर्घोषस्वरः, बोधिसत्त्वः – བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་སེམས་དཔའ་ཆེན་པོ་ཤེས་པ་དམ་པའི་ཡེ་ཤེས་དང...ནམ་མཁའི་དབྱངས་ཀྱི་སྒྲ་དང ज्ञानोत्तरज्ञानिना च बोधिसत्त्वेन महासत्त्वेन... गगननिर्घोषस्वरेण च ग.व्यू.276[ख]/3.

ནམ་མཁའི་དབྱིངས 1. आकाशधातुः – དེ་ནས་ནམ་མཁའི་དབྱིངས་འདི་ཐམས་ཅད་དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་རྡོ་རྗེའི་ངོ་བོར་གནས་པར་གྱུར་ཏོ༎ अथायं सर्वाकाशधातुः सर्वतथागतवज्रमयः संस्थितोऽभूत् गु.स.91[क]/2 2. आकाशतलम् म.व्यु.6882.

ནམ་མཁའི་དབྱིངས་ཀྱི་མཐའ་ཀླས་པ *वि.* आकाशधातुपर्यन्तः – ཆོས་དབྱིངས་མཉམ་དང་མི་མཉམ་པ། །ནམ་མཁའི་དབྱིངས་ཀྱི་མཐའ་ཀླས་པའི༎ धर्मधातुसमासमैः। आकाशधातुपर्यन्तैः ज्ञा.सि.59[क]/152.

ནམ་མཁའི་དབྱིངས་ཀྱི་མཐའ་གཏུགས་པ *वि.* आकाशधातुपर्यवसानः म.व्यु.6430; द्र. ནམ་མཁའི་དབྱིངས་ཀྱི་མཐར་ཐུག་པ།

ནམ་མཁའི་དབྱིངས་ཀྱི་མཐར་ཐུག་པ *वि.* आकाशधातुपर्यवसानम् – ཀྱེ་རྒྱལ་བའི་སྲས་དག་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའི་སྨོན་ལམ་འདི་ནི་ཤིན་ཏུ་རྣམ་པར་གཏན་མི་ཟ་བ་སྟེ...ནམ་མཁའི་དབྱིངས་ཀྱི་མཐར་ཐུག་པ सुविनिश्चितमिदं भवन्तो जिनपुत्रा बोधिसत्त्वप्रणिधानं...आकाशधातुपर्यवसानम् द.भू.169[ख]/3.

ནམ་མཁའི་དབྱིངས་ལྟར་ཡངས་པ *पा.* आकाशधातुविपुलः, बोधिसत्त्वसमाधिविशेषः – བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་ཡེ་ཤེས་དེ་ལྟ་བུ་དང་ལྡན་ཞིང་དབང་བསྐུར་བའི་ས་ཐོབ་པ་དེ་ལ་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའི་ཏིང་ངེ་འཛིན་དྲི་མ་མེད་པ་ཞེས་བྱ་བ་མངོན་དུ་འགྱུར་རོ༎ ...ནམ་མཁའི་དབྱིངས་ལྟར་ཡངས་པ་ཞེས་བྱ་བ་དང एवंज्ञानानुगतस्य बोधिसत्त्वस्य अभिषेकभूमिसमापन्नस्य विमलो नाम समाधिरामुखीभवति... आकाशधातुविपुलश्च नाम द.भू.261[ख]/55.

ནམ་མཁའི་དབྱིངས་ཐམས་ཅད་ཐ་མི་དད་པར་རྣམ་པར་དམིགས་པའི་རིན་ཆེན་རྒྱལ་པོས་བརྒྱན་པའི་གཙུག་ཕུད་ *ना.* सर्वाकाशतलासंभेदविज्ञप्तिमणिराजविभूषितचूडः, बोधिसत्त्वः – བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་སེམས་དཔའ་ཆེན་པོ་ཤེས་པ་དམ་པའི་ཡེ་ཤེས་དང ...ནམ་མཁའི་དབྱིངས་ཐམས་ཅད་ཐ་མི་དད་པར་རྣམ་པར་དམིགས་པའི་རིན་ཆེན་རྒྱལ་པོས་བརྒྱན་པའི་གཙུག་ཕུད་དང ज्ञानोत्तरज्ञानिना च बोधिसत्त्वेन महासत्त्वेन... सर्वाकाशतलासंभेदविज्ञप्तिमणिरत्न[राज]विभूषितचूडेन च ग.व्यू.275ख/2.

ནམ་མཁའི་དབྱིངས་སུ་སྣང་བ *पा.* गगनतलावभासः, बोधिसत्त्वसमाधिविशेषः – ཏིང་ངེ་འཛིན་སྣ་ཚོགས་ཀྱིས་འཇུག་པ་འདི་ལྟ་སྟེ། བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའི་ཏིང་ངེ་འཛིན་ཆོས་ཀྱི་དབྱིངས་ཀུན་ནས་བརྒྱན་པ་དང...བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའི་ཏིང་ངེ་འཛིན་ནམ་མཁའི་དབྱིངས་སུ་སྣང་བ་དང नानासमाध्यवतारैः। यदुत समन्तधर्मधातुव्यूहेन बोधिसत्त्वसमाधिना अवतरन्ति...गगनतलावभासेन बोधिसत्त्वसमाधिना ग.व्यू.304ख/28.

ནམ་མཁའི་མིག *ना.* गगननेत्रः, बोधिसत्त्वः – བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་སེམས་དཔའ་ཆེན་པོ་ཤེས་པ་དམ་པའི་ཡེ་ཤེས་དང...ནམ་མཁའི་མིག་དང ज्ञानोत्तरज्ञानिना च बोधिसत्त्वेन महासत्त्वेन... गगननेत्रेण च ग.व्यू.275ख/2.

ནམ་མཁའི་མེ गगनाग्निः – རྣལ་འབྱོར་ཅན་གྱིས་བརྩོན་བྱས་ན། །ཉི་མ་ཟླ་བའི་དབྱིབས་འདྲ་དང་། །འོག་དང་པད་མོ་ལྟ་བུ་དང་། །རི་མོ་ནམ་མཁའི་མེ་འདྲ་མཐོང་॥ सोमभास्करसंस्थानं पद्मपातालसदृशम्। गगनाग्निचित्रसदृशं योगी युञ्जन् प्रपश्यति॥ ल.अ.94क/41.

ནམ་མཁའི་མེ་ཏོག आकाशकुसुमम् – དེ་ལྟ་ཡིན་དང ནམ་མཁའི་མེ་ཏོག་བཞིན་དུ་ཚད་མ་ཉིད་དུ་ཡང་མི་འགྱུར་རོ॥ ततश्चाकाशकुसुमवदेव प्रामाण्यमपि न स्यात् त.प.174ख/807; आकाशपुष्पम् – ནམ་མཁའི་མེ་ཏོག་མོ་གཤམ་བུ། །གང་ཚེ་འདུས་བྱས་མཐོང་བ་ན॥ वंध्यासुताकाशपुष्पं यदा पश्यन्ति संस्कृतम्। ल.अ.89क/36; खपुष्पम् – དེའི་ཚེ་གཉེན་པོ་ལ་ལྟོས་པ་དང་བྲལ་བས་ནམ་མཁའི་མེ་ཏོག་གི་ཕྲེང་བ་ལྟར་སྟོང་པ་ཉིད་ཀྱང་ཡོད་པ་མ་ཡིན་ནོ་ཞེས་ངེས་པར་བྱའོ॥ तदा प्रतिपक्षनिरपेक्षत्वाच्छून्यतापि खपुष्पमालावन्नास्तीत्यवसीयताम् प्र.प.83क/107; དེའི་ཚེ་རྒྱུ་མེད་པ་ཡོད་པར་ག་ལ་འགྱུར་ཏེ། ནམ་མཁའི་མེ་ཏོག་གི་དྲི་ཞིམ་པོ་བཞིན་ནོ॥ तदिदानीं कुत एव निर्हेतुकं भविष्यति खपुष्पसौगन्ध्यवत् प्र.प.80क/102; དངོས་པོ་དངོས་གཞན་མཚུངས་པ་ཡིན། །ནམ་མཁའི་མེ་ཏོག་ཁྱད་པར་མེད॥ भावो भावान्तरात्तुल्यः खपुष्पान्न विशिष्यते। त.स.62ख/593; व्योमकुसुमम् – མེད་པ་ནམ་མཁའི་མེ་ཏོག་ལ་སོགས་པའམ། བྱེ་མ་རྣམས་ལ་ཏིལ་མར་ནི་གང་དུ་ཡང་བྱ་བར་ནུས་པ་མ་ཡིན་ཏེ न ह्यसन्तो व्योमकुसुमादयः क्वचिदपि शक्यन्ते कर्तुम्, सिकतासु वा तैलम् त.प.221क/913; ནམ་མཁའི་མེ་ཏོག་འཕྲེང་བ་བཞིན། །དག་པ་རྣམ་ཀུན་ཉིད་དུ་མེད॥ खपुष्पमालेव सती सर्वथा नैव जायते॥ अ.क.150क/14.130.

ནམ་མཁའི་མེ་ཏོག་འདྲ खपुष्पसन्निभम् – མ་སྐྱེས་པ་དང་མ་འགགས་པ། །ཇི་ལྟར་ནམ་མཁའི་མེ་ཏོག་འདྲ॥ अजातमनिरुद्धं च कथं खपुष्पसन्निभम्। ल.अ.65क/12; द्र. ནམ་མཁའི་མེ་ཏོག་བཞིན།

ནམ་མཁའི་མེ་ཏོག་བཞིན खपुष्पवत् – མེད་ཕྱིར་ནམ་མཁའི་མེ་ཏོག་བཞིན॥ अभावत्वात् खपुष्पवत् प्र.सि.29क/68; वियत्पुष्पवत् – དངོས་པོ་དང་བྲལ་བའི་ཕྱིར་ནམ་མཁའི་མེ་ཏོག་བཞིན་ནོ॥ विगतभावत्वात् विय-

त्पुष्पवत् त.प.10क/465.

ནམ་མཁའི་མཛོད = ནམ་མཁའ་མཛོད།

ནམ་མཁའི་མཛོད་ཡེ་ཤེས་བསྒྲིབས་པ་མེད་པའི་སྙིང་པོ *ना.* गगनकोशानावरणज्ञानगर्भः, बोधिसत्त्वः – བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་སེམས་དཔའ་ཆེན་པོ་རྡོ་རྗེའི་སྙིང་པོ་དང་ ...བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་སེམས་དཔའ་ཆེན་པོ་ནམ་མཁའི་མཛོད་ཡེ་ཤེས་བསྒྲིབས་པ་མེད་པའི་སྙིང་པོ་དང་ वज्रगर्भेण च बोधिसत्त्वेन महासत्त्वेन...गगनकोशानावरणज्ञानगर्भेण च द.भू.167ख/1.

ནམ་མཁའི་ཟད་པར आकाशकृत्स्नम् – གཙུག་ཏོར་གྱི་ནམ་མཁའི་དཀྱིལ་འཁོར་ལ་ནམ་མཁའི་ཟད་པར་རྫས་དང་བྲལ་བ་བསྒོམ་པར་བྱ उष्णीषे आकाशमण्डले आकाशकृत्स्नं द्रव्यरहितं भावयेत् वि.प्र.77ख/4.157.

ནམ་མཁའི་གཟིངས *ना.* आकाशप्लवा, किन्नरकन्या – མིའམ་ཅིའི་བུ་མོ་བརྒྱ་སྟོང་དུ་མ་དག་ཚོགས་པ་འདི་ལྟ་སྟེ། མིའམ་ཅིའི་བུ་མོ་ཡིད་ཅེས་བྱ་བ་དང་...ནམ་མཁའི་གཟིངས་ཞེས་བྱ་བ་དང अनेकानि च किन्नरकन्याशतसहस्राणि सन्निपतितानि। तद्यथा–मनसा नाम किन्नरकन्या...आकाशप्लवा नाम किन्नरकन्या का.व्यू.202ख/260.

ནམ་མཁའི་ཡི་གེ *पा.* आकाशाक्षरम् – ནམ་མཁའི་ཡི་གེ་རྣམས་ཐམས་ཅད་ཀྱི་གྲོགས་པོ་སྟེ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་ཡི་གེ་རྣམས་ནམ་མཁའི་གྲོགས་པོའོ༎ आकाशाक्षराणि सर्वेषां मित्राणि, सर्वेषामक्षराणि आकाशस्य मित्राणीति वि.प्र.80ख/4.168.

ནམ་མཁའི་ཡེ་ཤེས་དོན་གྱི་སྒྲོན་མ *ना.* आकाशज्ञानार्थप्रदीपः, तथागतः – དེའི་འོག་ཏུ་དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་ནམ་མཁའི་ཡེ་ཤེས་དོན་གྱི་སྒྲོན་མ་ཞེས་བྱ་བ་བསྙེན་བཀུར་ཏོ༎ तस्यानन्तरमाकाशज्ञानार्थप्रदीपो नाम तथागत आरागितः ग.व्यू.250ख/331.

ནམ་མཁའི་རང་བཞིན आकाशस्वभावः – ནམ་མཁའི་རང་བཞིན་ནི་སེམས་ཅན་རྣམས་སྒྱུ་མ་ལྟ་བུའོ༎ सत्त्वानाकाशस्वभावान् मायोपमान् ख.टी.162क/244.

ནམ་མཁའི་ལུས आकाशकायः – དེ་ལུས་ཀྱི་རྣམ་པར་རྟོག་པ་དང་འདུ་ཤེས་ཐམས་ཅད་དང་རྣམ་པར་བྲལ་བ་སྟེ། ལུས་མཉམ་པ་ཉིད་ཐོབ་པས། སེམས་ཅན་གྱི་ལུས་རབ་ཏུ་ཤེས་སོ༎ ...ནམ་མཁའི་ལུས་ཀྱང་རབ་ཏུ་ཤེས་སོ༎ स सर्वकायविकल्पा[विकल्पसंज्ञा]पगतः कायसमताप्राप्तः ...स सत्त्वकायं च प्रजानाति...आकाशकायं च प्रजानाति द.भू.244क/45.

ནམ་མཁའི་ཨུཏྤ་ལ गगनेन्दीवरम् – ནམ་མཁའི་ཨུཏྤ་ལ་སོགས་རྣམས་ཀྱི། །གྲུབ་པ་གང་ནའང་ཡོད་མིན་ན༎ गगनेन्दीवरादीनां निष्पत्तिर्न हि काचन ॥ त.स.42ख/432; व्योमोत्पलम् – སོགས་པ་སྨོས་པས་ནི་ནམ་མཁའི་ཨུཏྤ་ལ་ལ་སོགས་པ་ཡོངས་སུ་གཟུང་ངོ༎ आदिशब्देन व्योमोत्पलादयः परिगृह्यन्ते वा.टी.70क/25.

ནམ་མཁར་གནས = ནམ་མཁར་གནས་པ།

ནམ་མཁར་གནས་པ *वि.* गगनस्थः – སངས་རྒྱས་ནམ་མཁར་གནས་པ་རྣམས ...རང་གི་ལུས་ལ་བཙུག་སྟེ गगनस्थान्...बुद्धान्...स्वकाये प्रवेश्य विं.प्र.49क/4.51.

ནམ་མཁར་བྱེད་པ आकाशीकरणम् – ནམ་མཁའི་འདུ་ཤེས་རྣམ་པར་འགྱུར་ན་གཉིས་པོ་ན་ལ་སྟེ། གང་གིས་ན་ནམ་མཁའི་མཛོད་དུ་འགྱུར་བ་བསམས་པའི་དོན་འབྱོར་བ་དང་ཇི་ལྟར་འདོད་པ་བཞིན་དུ་འགྲོ་བའི་ཕྱིར་དང་ནམ་མཁར་བྱེད་པའི་ཕྱིར आकाशसंज्ञाव्यावृत्तौ द्वयोरेव चिन्तितार्थसमृद्धो च येन गगनगर्भो भवति...यथेष्टगमनादाकाशीकरणाच्च सू.व्या.157ख/44; द्र. ནམ་མཁའ་བྱེད་པ།

ནམ་མཁར་བཞུགས་པ *वि.* गगनस्थः – ནམ་མཁར་བཞུགས་པའི་སངས་རྒྱས་ཀུན། །སྐུ་གཟུགས་སྙིང་གར་རབ་ཏུ་གཞུག། गगनस्थान् सर्वबुद्धान् प्रतिमाहृदि वेषयेत्। हे.त.13ख/42.

ནམ་གུང = ནམ་གྱི་གུང་།

ནམ་གུང་ཅན = མཚན་མོ निशीथिनी, रात्रिः मि.को. 132ख; तमस्विनी मि.को.132ख।

ནམ་གྱི་གུང = ནམ་གུང अर्धरात्रम् – གནས་གཙང་མའི་རིས་ཀྱི་ལྷ་རྣམས་ཀྱིས་ནམ་གྱི་གུང་གི་དུས་ལ་བབ་པ་དང ...ཅེས་བསྐུལ་ཏེ शुद्धावासकायिका देवता अर्धरात्रकालसमये संचोदयन्ति स्म रा.प.244क/142; ནམ་གྱི་གུང་ལ་བབ་པའི་དུས་ཀྱི་ཚེ अर्धरात्रकालसमये रा.प.249क/149; निशीथः – དྲི་མེད་ཟླ་བ་ནམ་གྱི་གུང་གསལ་ལྟར། །ཤིན་ཏུ་རྣམ་དག་འགྲོ་བ་ཀུན་ལ་གསལ།། चन्द्र इवामल भाति निशीथे भासति सर्वजगेषु विशुद्धः। रा.प.228ख/121; चतुर्थप्रहरः म.व्यु.8243 (114ख).

ནམ་གྱི་ཆ་སྟོད पूर्वरात्रम् – བརྩོན་འགྲུས་གང་གིས་ནམ་གྱི་ཆ་སྟོད་དང་ནམ་གྱི་ཆ་སྨད་ལ་བརྩོན་པར་བྱེད་ཅིང येन वीर्येण पूर्वरात्रापररात्रं घटते ल.अ.150ख/96; ནམ་གྱི་ཆ་སྟོད་དང་ནམ་གྱི་ཆ་སྨད་ལ་མི་ཉལ་བར་སྦྱོར་བའི་རྗེས་སུ་བརྩོན་པ་ཉིད पूर्वरात्रापररात्रं जागरिकानुयुक्तता श्रा.भू.6क/11.

ནམ་གྱི་ཆ་སྟོད་དང་ནམ་གྱི་ཆ་སྨད पूर्वापररात्रम् – དགེ་སློང་རྣམས་ནམ་གྱི་ཆ་སྟོད་དང་ནམ་གྱི་ཆ་སྨད་ལ་མི་ཉལ་བར་སྦྱོར་བ་ལ་བརྩོན་ཞིང་གནས་པ भिक्षवः पूर्वापररात्रं जागरिकायोगमनुयुक्ता विहरन्ति वि.व.149ख/1.38; पूर्वरात्रापररात्रम् – ནམ་གྱི་ཆ་སྟོད་དང་ནམ་གྱི་ཆ་སྨད་ལ་མི་ཉལ་བར་སྦྱོར་བའི་རྗེས་སུ་བརྩོན་པ་ཉིད पूर्वरात्रापररात्रं जागरिकानुयुक्तता श्रा.भू.6क/11.

ནམ་གྱི་ཆ་སྨད अपररात्रम् – བརྩོན་འགྲུས་གང་གིས་ནམ་གྱི་ཆ་སྟོད་དང་ནམ་གྱི་ཆ་སྨད་ལ་བརྩོན་པར་བྱེད་ཅིང येन वीर्येण पूर्वरात्रापररात्रं घटते ल.अ.150ख/96; ནམ་གྱི་ཆ་སྟོད་དང་ནམ་གྱི་ཆ་སྨད་ལ་མི་ཉལ་བར་སྦྱོར་བའི་རྗེས་སུ་བརྩོན་པ་ཉིད पूर्वरात्रापररात्रं जागरिकानुयुक्तता श्रा.भू.6क/11.

ནམ་གྱི་གདོང = སྲོད रजनीमुखम्, प्रदोषः – प्रदोषो रजनीमुखम् अ.को.1.4.6.

ནམ་གྲུ •*सं.* रेवती, नक्षत्रभेदः – ཐ་སྐར་ཞེ་ཐ་སྐར་དང་བྲ་ཉེ་དང...ནམ་གྲུ་སྟེ་ཉི་ཤུ་རྩ་བདུན་ནོ།། नक्षत्राणि अश्विनी भरणी...रेवतीति सप्तविंशतिः वि.प्र.179ख/1.36; ནམ་གྲུ་ལས་སྐྱེ་དཔལ་དང་ལྡན། །འཐབ་ལ་དགའ་ཞིང་འཇིགས་པ་མེད།། रेवत्या जायते श्रीमान् युद्धशौण्डो विशारदः॥ म.मू.194क/205; •*ना.* 1. रेवतः, भिक्षुः – ཚེ་དང་ལྡན་པ་ཀུན་ཤེས་ཀཽཎྜི་ནྱ་དང...ཚེ་དང་ལྡན་པ་ནམ་གྲུ་དང... ཚེ་དང་ལྡན་པ་ཀུན་དགའ་བོ་དང་། དེ་དག་ལ་སོགས་པ་དགེ་སློང་ཁྲི་ཉིས་སྟོང་དང་ཐབས་ཅིག་ཏུ आयुष्मता च ज्ञानकौण्डिन्येन...आयुष्मता च रेवतेन...आयुष्मता चानन्देन। एवंप्रमुखैर्द्वादशभिर्भिक्षुसहस्रैः सार्धम् ल.वि.2क/1; सु.व्यू.195ख/254 2. रेवतः, ब्रह्मर्षिः – དེ་ནས་བྲམ་ཟེའི་དྲང་སྲོང་ནམ་གྲུའི་གནས་སུ་སོང་བ་དང ततो रैवतस्य ब्रह्मर्षेराश्रममगमत् ल.वि.117क/174.

ནམ་གྲུ་མ *ना.* रेवती 1. यक्षिणी – གར་བྱེད...ནམ་གྲུ་མ...།བརྒྱད་པོ་འདི་དག་གནོད་སྦྱིན་མོ།། नटी...रेवती...इत्येता अष्ट यक्षिण्यः म.मू.282ख/440 2. बलदेवपत्नी ङ.को.27/रा.को.4.178; द्र. ནམ་གྲུའི་བདག་པོ།

ནམ་གྲུའི་གདོན रेवतीग्रहः, प्रेतयोनिगतसत्त्वजाति-

विशेषः म.व्यु.4765(74क).

ནམ་གྲུའི་བདག་པོ་ *ना.* = སྟོབས་བཟང་ रेवतीरमणः, बलभद्रः – बलभद्रः प्रलम्बघ्नो बलदेवोऽच्युताग्रजः ॥ रेवतीरमणो रामः कामपालो हलायुधः । अ.को.1.1.24; रमयतीति रमणः । रेवत्या रमणो रेवतीरमणः । रमु क्रीडायाम् अ.वि.1.1.24.

ནམ་སྟོད = ནམ་གྱི་ཆ་སྟོད།

ནམ་ཕྱེད = མཚན་ཕྱེད अर्धरात्रम् – ཉི་མ་གུང་དམ་ནམ་ཕྱེད་ན། །འདི་ནི་རྣམ་པ་ཀུན་དུ་ཤིས།། मध्याह्नेऽर्धरात्रे वा इदं शस्यति सर्वथा। गु.स.126क/77; अर्धरात्रसमयः – དེ་ན་ལྷ་རྣམས་ཀྱིས་ལྟེང་རྒྱས་ཀྱི་སྡེ་དཔོན་གྱི་གྲོང་ན་དགའ་བྱེད་ཅེས་བྱ་བའི་གྲོང་མི་ཞིག་ཡོད་པའི་བུ་མོ་ལེགས་སྐྱེས་མ་ལ་ནམ་ཕྱེད་ཙམ་ན་སྨྲས་པ तत्र देवताभिरुरुबिल्वासेनापतिग्रामके नन्दिकग्रामिकदुहितुः सुजाताया आरोचितमभूदर्धरात्रसमये ल.वि.131ख/195; मध्यमो यामः – དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་ནི་དོ་ནུབ་ནམ་ཕྱེད་ན་ཕུང་པོ་ལྷག་མ་མེད་པའི་མྱ་ངན་ལས་འདས་པའི་དབྱིངས་སུ་ཡོངས་སུ་མྱ་ངན་ལས་འདའ་བར་འགྱུར་གྱིས अद्य तथागतस्य रात्र्या मध्यमे यामे निरुपधिशेषे निर्वाणधातौ परिनिर्वाणं भविष्यति अ.श.111क/101; निशीथः मि.को.133क।

ནམ་ཙོང जत्रु म.व्यु.3969; द्र. ནམ་འཚོང་།

ནམ་ཚོང जत्रु म.व्यु.3969; द्र. ནམ་འཚོང་།

ནམ་འཚོ། ०འི་བར་དུ यावज्जीवम् – དེ་ནམ་འཚོའི་བར་དུ་ཀང་པའི་མཐིལ་གྱིས་ས་ལ་མི་རེག་པར་འགྲོ་སྟེ स यावज्जीवं पादतलाभ्यां धरणीतलं नाक्रामेत् अ.सा.322क/181.

ནམ་འཚོང जत्रु म.व्यु.3969 (ཛ་ཧུ: ནམ་འཚོང 64ཁ); द्र. ནམ་ཚོང (ཏྲི་ང) བྲང་མགོ་ཡན་ཆད बो.को.1521.

ནམ་ཞིག कदा – དེ་ལྟར་སྡུག་བསྔལ་མེས་གདུངས་ལ།... །ཞི་བྱེད་པར་བདག་ནམ་ཞིག་འགྱུར།། दुःखाग्नितप्तानां शान्तिं कुर्यामहं कदा। बो.अ.37क/9.167; འདི་ལ་ཇི་ལྟར་ནམ་ཞིག་ག་ལ་བདེ།། सुखमत्र कुतः कथं कदा वा जा.मा.97ख/112; དུར་ཁྲོད་སོང་ནས་གཞན་དག་གི། །རུས་གོང་དག་དང་བདག་གི་ལུས། །འཇིག་པའི་ཆོས་ཅན་དག་ཏུ་ནི། །ནམ་ཞིག་མགོ་སྙོམས་བྱེད་པར་འགྱུར།། कायभूमिं निजां गत्वा कङ्कालैरपरैः सह। स्वकायं तुलयिष्यामि कदा शतनधर्मिणम्॥ बो.अ.24ख/8.30; कदापि – དེ་ཡང་མ་མཐོང་བ་ན་ནམ་ཞིག་བྱུང་བར་གྱུར་ཏོ་ཞེས་འདོད་པ་གང་ཡིན་པ་དེ་ནི स चादृष्टः सन् कदाप्यासीदितीष्यते यत्तद् त.प.132ख/715; कदाचित् – ནམ་ཞིག་བལྟ་བ་ལ་འོངས་ཤིང་།། कदाचिद्दर्शनायातम् अ.क.273क/34.14; དེ་ནས་ནམ་ཞིག་ས་སྐྱོང་ནི། །རྨི་ལམ་མཐོང་ནས་དོགས་གྱུར་པས།། कदाचिदथ भूपालः स्वप्नदर्शनशङ्कितः। अ.क.101ख/64.163; དེ་ནས་ནམ་ཞིག་མལ་སྟན་མཐར། ...།སྦྲུལ་ནི་ནག་པོ་མཐོང་བར་གྱུར།། कदाचिदथ शय्यान्ते कालव्यालं व्यलोकयत्। अ.क.86क/63.39; यदा – སེམས་ནི་ནམ་ཞིག་གྱུར་པ་ན། ...།དེ་ཡི་ཚེ་ན་ཐེར་ཟུག་གནས།། परावृत्तं यदा चित्तं तदा तिष्ठति शाश्वतम्। ल.अ.159ख/108; སྐྱིད་ཚལ་མཆོག་ཏུ་དར་མ་དེ། །ནམ་ཞིག་ཤིང་རྟས་འགྲོ་བ་ན།། स कदाचिद्वरोद्याने स्यन्दनेन युवा व्रजन्। अ.क.352क/47.7; *यत्र – ནམ་ཞིག་གྲགས་པའི་མེ་ཏོག་ལྡན། །བསོད་ནམས་དྲི་བཟང་རབ་ཏུ་རྒྱས།། यशःकुसुमिते यत्र पुण्यसौरभनिर्भरे। अ.क.19ख/3.4.

ནམ་ཞིག་གི་ཚེ कदाचित् मि.को.64ख।

ནམ་ཞིག་ན་ कदा मि.को.72क।

ནམ་ལ་སྤྱོད་ = སྲིན་པོ་ रात्रिचरः, राक्षसः – राक्षसः कौणपः क्रव्यात् क्रव्यादोऽस्रप आशरः ॥ रात्रिंचरो रात्रिचरः अ.को.1.1.61; रात्रौ चरतीति रात्रिंचरः, रात्रिचरश्च। चर गतिभक्षणयोः अ.वि.1.1.61.

ནམ་ལངས = ནམ་ལངས་པ།

ནམ་ལངས་པ = ཐོགས་པ उषः, कल्यम् – प्रत्यूषोऽहर्मुखं कल्यमुषः प्रत्युषसी अपि ॥ अ.को.1.4.2; ओषत्यन्धकारमिति उषः । प्रत्युषश्च । उष प्लुष दाहे अ.वि.1.4.2; प्रत्युषः मि.को.133क; द्र. དེ་ནས་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔས་ནང་པར་ནམ་ལངས་ནས་དུས་བཞིན་དུ་ལངས་ནས་བལྟས་ན अथ बोधिसत्त्वः प्रभातायां रजन्यां यथोचितं प्रतिविबुद्धः पश्यति स्म जा.मा.22ख/25.

ནམ་སྲོས द्र.– ནམ་སྲོས་སུ་ཉེ་བའི་མཚམས་ཀྱི་དུས་ནི་ཁད་ཀྱིས་སྔོ་ཞིང་ नातिश्यामीभूतसंध्याङ्गरागासु जा.मा.85ख/98; དེ་རྒྱལ་པོའི་ཁབ་ཀྱི་གྲོང་ཁྱེར་དུ་སོང་ནས་ནམ་སྲོས་ཏེ། སྣུག་ལ་བབ་པ་ན་ཁྱིམ་འཕིགས་སྲིད་འདུག་གོ॥ स राजगृहं नगरं गत्वा रात्रौ सम्प्राप्तायां भग्ने चक्षुष्पथे सन्धिमारब्धश्छेत्तुम् अ.श.276ख/253.

ནམས། °ཀྱང་ = ནམ་ཡང་ कदाचित् – ནམས་ཀྱང་མངལ་དུ་གནས་པ་ཉམས་སུ་མྱོང་བར་མ་གྱུར་ཅིག मा कदाचिद्गर्भशय्यां प्रत्यनुभवेयम् अ.श.236क/217; དེ་བས་ན་ཁྱོད་ནི་འདིས་གནོད་པ་བྱས་པ་ལས་ནམས་ཀྱང་ཐར་བར་མི་འགྱུར་རོ॥ तेन हि न त्वमस्याः कदाचित्प्रबाधनाया मोक्ष्यसे जा.मा.208ख/243; जातु – ནམས་ཀྱང་མི་ཆགས་ཤིང་ न जातु सक्तः लो.को.1349.

ནར 1. = ནར་བ། 2. = ན་རུ (ः རྟག་པ་ཁོ་ནར་གནས་པའི་ཕྱིར॥ सर्वदैव व्यवस्थितेः त.स.97क/862; སེམས་ནང་ཁོ་ནར་འཇོག་པར་བྱེད अध्यात्ममेव चित्तं स्थापयति श्रा.भू.75ख/195) 3. = ནར་མོ (ः ཤིང་མངར་ཐང་བསྐོལ་སེན་རྡེ་བ་ལྡན་ཞིང་། །དུག་ཤུང་རྡོད་ནར་པོ་སོན་ཕྱེ་མར་བསྲེ॥ यष्टीकषायः लवणाग्रयुक्तः कलिङ्गकृष्णाफलकल्कमिश्रः। यो.श.6ख/206) 4. = ནར་མ།

ནར་ནར = ནར་ནར་པོ།

ནར་ནར་པོ *पा.* पेशी, तृतीया गर्भावस्था–དང་པོར་ནུར་ནུར་པོ་ཡིན་ནོ། །ནུར་ནུར་པོ་ལས་མེར་མེར་སྐྱེས། །མེར་མེར་པོ་ལས་ནར་ནར་སྐྱེས། །ནར་ནར་པོ་ལས་མཁྲང་འགྱུར་སྐྱེ॥ कललं प्रथमं भवति कललाज्जायतेऽर्बुदः । अर्बुदाज्जायते पेशी पेशीतो जायते घनः ॥ अभि.भा.123क/433.

ནར་ནུ་སི་ཀ། नरनासिका – བླ་མས་ཤེས་རབ་ཀྱི་ནར་ནུ་སི་ཀ་གཞིབ་པར་བྱའོ॥ गुरुः प्रज्ञाया नरनासिकां चूषयेत् वि.प्र.159क/3.120.

ནར་བ *वि.* अवलम्बितम् – གྲ་གླང་པོ་ཆེའི་སྣ་ལྟར་ནར་བ་མ་ཡིན་པར་རོ॥ नांशेन शुण्डावलम्बितम् वि.सू.49क/62; द्र. གཞན་གྱིས་ཕམ་དུ་དོགས་པའི་བདུད་དག་ཀྱང་། །ད་ནི་ངེས་པར་སུགས་ཀྱང་ནར་ཞེས་འབྱིན॥ पराजयाशङ्कितजातसंभ्रमो ध्रुवं विनिश्वासपरोऽद्य मन्मथः ॥ जा.मा.6ख/6.

ནར་མ *वि.* निजः, स्वाभाविकः – ཡ་མཚན་གྱི་ཆོས་ནར་མ་རྣམ་པ་སྣ་ཚོགས་ཕུན་སུམ་ཚོགས་པ विविधनिजाश्चर्यधर्मसम्पत् अभि.भा.58क/1098; ནར་མ་རང་བཞིན་གྱིས་འབྱུང་བ निजाः स्वाभाविकाः अभि.स्फु.274क/1098; नियतः – ཕྱོགས་ཀྱི་བྱེ་བྲག་ལ་བློ་མ་སྦྱངས་ཤིང་ནར་མ་དང་བློ་བུར་དུ་འབྱུང་བའི་ལྟས་ཤེས་ལ

མཚན་མ་ལ་མཁས་ཤིང दिग्विभागेष्वसंमूढमतिः परि-विदितनियतागन्तुकौत्पातिकनिमित्तः जा.मा.79ख/92; द्र.– འགྲོ་བ་ཉུང་ཟད་ནར་མའི་ཟས་སྦྱོར་བ། ...།དགེ་བ་བྱེད་པ་ཡིན་ཞེས་སྐྱེ་བོས་བཀུར།། कतिपयजनसत्त्र-दायकः कुशलकृदित्यभिपूज्यते जनैः। बो.अ.3क/1.32; *उचितम् – ཨུ་ཙི་ཏཾ། ནར་མའམ་འདྲིས་པ म.व्यु.7583(108क); ཨ་ནུ་ཙི་ཏཾ། ནར་མ་མ་ཡིན་པའམ་མ་འདྲིས་པ म.व्यु.7584(108क).

ནར་མ་དཱ ना. नर्मदा, नदी – དྲི་མེད་ཆུ་ཀླུང་ནར་མ་དཱ་རོགས་ཁྲི་ཤིང་གཡོ་ཞིང་རྣམ་པར་རྒྱས་པ་ཡི། །མེ་ཏོག་སྦྲང་རྩི་དགའ་སྟོན་རྒྱས་པས་རབ་བསྒྲོས་[རབ་དགས་]འདི་དག་སྨྱོས་པ་བཞིན་དུ་འཁྱམ།། एते निर्मलनर्मदापरि-सरव्याजृम्भिवल्लीवलत्पुष्पोद्दाममधूत्सवप्रणयिनः क्षीबा इवाघूर्णिताः। अ.क.96ख/64.109.

ནར་མོ द्र.– རྡོད་སྨན་ནར་མོ།

ནར་ཙ द्र.– རྡོད་སྨན་ནར་ཙ།

ནལ་ཟུག 1. जारजातः, उपपतिजातसंन्तानः – དེ་ལྟ་ཡིན་དང་ཁྱོད་ནལ་ཟུག་ཉིད་དུ་འགྱུར་རོ་སྙམ་དུ་བསམས་པ་ཡིན་ནོ།། ततश्च जारजातत्वमापन्नं भवत इति भावः त.प.287ख/1037 2. बन्धुलः, असतीसुतः – अथ बान्धकिनेयः स्याद् बन्धुलश्चासतीसुतः। कौलटेयः कौलटेरः अ.को.2.6.26; स्वकुलपरिणा-हाय बन्धून् लाति स्वकीयान् करोतीति बन्धुलः। ला आदाने अ.वि.2.6.26 3. पारस्त्रैणेयः, परस्त्री-पुत्रः – पारस्त्रैणेयस्तु परस्त्रियाः अ.को.2.6.24; परस्त्रियाः पुत्रः पारस्त्रैणेयः अ.वि.2.6.24.

ནལ་ཟུག་ཉིད जारजातत्वम् – དེ་ལྟ་ཡིན་དང་ཁྱོད་ནལ་ཟུག་ཉིད་དུ་འགྱུར་རོ་སྙམ་དུ་བསམས་པ་ཡིན་ནོ།། ततश्च जारजातत्वमापन्नं भवत इति भावः त.प.287ख/1037.

ནལ་བུ = ནལ་ཟུག།

ནལ་ཟེ कटच्छुः – ལྕགས་ལས་བྱས་པའི་སྣོད་སྤྱད་དག་ལས་ལྷུང་བཟེད་དང...ནལ་ཟེ་དང...ཞོར་བུ་དག་བགོ་བར་བྱ་བ་ཉིད་དོ།། पात्र... कटच्छु... सरकानामयोभाण्डे-भ्यो भाजयितव्यता वि.सू.72ख/89; कटच्छुकः – སྨན་གྱི་ནལ་ཟེ भैषज्यकटच्छुकम् वि.सू.76ख/93; कफलिका मि.को.38ख।

ནལ་ཤམ = ན་ལེ་ཤམ།

ནས ● सं. 1. यवः i. शस्यविशेषः – ནས་ཀྱི་སྨྱུ་གུ་ལ་སོགས་པ यवादिप्रसवानाम् प्र.अ.43क/49; དེ་བཞིན་དུ་གྲངས་ཇི་ལྟ་བས་སོ་བ་ལ་སོགས་པ་འབྲུའི་ཚོགས་རྣམས་ཏེ།...གསུམ་པ་ནི་མོ་ཋ་དང་ཏྲི་པུ་ཊ་དང་ཡུངས་ནག་དང་ནས་དང་མོན་སྲན་ནོ།། एवं यथासंख्यं धान्या-दिशस्यसमूहम्...तृतीयम्–मौठम्, त्रिपुटः, कृष्ण-सर्षपाः, यवाः, माषाः वि.प्र.149ख/3.96 ii. मान-भेदः – ཡུངས་འབྲུ་བདུན་ལ་ནི་ནས་གཅིག་གོ།། सप्त-सर्षपाद्यवः ल.वि.77क/104 2. यावकः – स्याद् या-वकस्तु कुल्माषः अ.को.2.9.18; यूयते पाकसमये-ऽल्पाम्भसा युज्यत इति यावकः। युञ् बन्धने अ.वि.2.9.18; कुल्माषः – ནས་ཀྱི་དར་ཐུག कुल्माषपि-ण्डिका वि.व.166ख/1.55; ● प्रत्य. 1. विभक्तिप्रत्ययः (འབྱུང་ཁུངས) – འཇིག་རྟེན་འདི་ནས་འཇིག་རྟེན་ཕ་རོལ་དུ་སྐྱེ་བ अस्माल्लोकात् परलोक उपपत्तिः अभि.स्फु.289क/1134; ཡུལ་གཞན་ནས་འོངས་པ अन्यदेशा-दागमनम् त.प.304ख/322; དེའི་ཁ་ནས་ནི་པད་མའི་དྲི་འབྱུང་ལ तस्य मुखात्पद्मगन्धो वाति अ.श.64क/56; སེམས་ཅན་ཐམས་ཅད་འཁོར་བའི་བཙོན་ར་ནས་གདོན

ཏོ॥ सर्वसत्त्वान् संसारचारकान्निष्क्रामयेयम् शि.स.187ख/186; མཚོ་ནས་བྱུང་ནས ह्रदादभ्युद्गत्य वि.व.205ख/1.79; ཏིང་ངེ་འཛིན་དེ་དག་གིས་ཞིང་ནས ཞིང་དུ་འདོང་ངོ་॥ तैः समाधिभिः क्षेत्रात्क्षेत्रं संक्रामन्ति ल.अ.84क/31; ཤིང་གི་རྩེ་མོ་ནས་ལྷུང་བ वृक्षादिमूर्धभ्यः... पातः अभि.स्फु.167क/908; གྱེ་སློབ དཔོན་ཡི་གེ་དྲུག་ཅུ་རྩ་བཞི་པོ་དེ་དག་གི་ནང་ནས་བདག ལ་གང་བསླབ आसां भो उपाध्याय चतुष्षष्टिलिपीनां कतमां त्वं शिष्यापयिष्यसि ल.वि.66ख/88; ལྷའི དྲང་སྲོང་ནང་ནས་གཅིག देवर्षीणामन्यतमः जा.मा.174क/201 **2.** क्त्वा-प्रत्ययत्वेन प्रयोगः : (མཐོང ནས दृष्ट्वा) – མདུན་དུ་ཀླུ་ཡི་བུ་མོ་དག། །མཐོང་ནས འདི་དག་ཅི་ཞེས་དྲིས॥ किमेतदिति पप्रच्छ दृष्ट्वाऽग्रे नागकन्यकाम् ॥ अ.क.354क/47.32; ཕྱོགས བཞིར་སྐྱབས་མེད་མཐོང་ནས་ནི། །དེ་ནས་ཀུན་དུ་ཡི་མུག འགྱུར॥ त्राणशून्या दिशो दृष्ट्वा पुनः संमोहमागतः। बो.अ.5ख/2.47; (རིག་ནས विदित्वा) – ཕ་དེ་བདེ བར་འདུག་པར་རིག་ནས་སུ། །བྱིས་པ་དེ་དག་ལྷགས་ནས འདི་སྐད་སྨྲ॥ सुखस्थितं तं पितरं विदित्वा उपगम्य ते दारक एवमाहुः। स.पु.35ख/61; (དྲན་ནས स्मृत्वा)– སྲས་ནི་དྲན་ནས་འདོད་དང་བཅས་པར་གྱུར॥ स्मृत्वा सुतं सोत्सुकतामवाप अ.क.192क/22.2; (བརྩིགས ནས कारयित्वा)–སྐུ་གདུང་གི་མཆོད་རྟེན་བརྩིགས་ནས བློན་པོའི་ཚོགས་དང་བཅས་པས་ཏིལ་མར་གྱིས་བསྐུས་ཏེ शरीरस्तूपं कारयित्वा अमात्यगणसहायेन तैलाभिषेको दत्तः अ.श.243ख/223 **3.** ल्यप्-प्रत्ययत्वेन प्रयोगः : (ཕྱག་འཚལ་ནས नमस्कृत्य) – ཕྱག འཚལ་ནས་ཞེས་བྱ་བ་ནི་བྱ་བ་གཞན་ལ་ལྟོས་པ་ཡིན་པའི ཕྱིར་ཅི་ཞིག་བྱ་ཞེས་དྲིས་སོ॥ किं करिष्यतीति प्रश्नः। नमस्कृत्येति क्त्वाविधेः क्रियान्तरापेक्षत्वात् अभि.स्फु.6क/10; (བསམས་ནས संचिन्त्य) – དེ་ལྟར་ཡུན རིང་བསམས་ནས་ནི॥ इति संचिन्त्य सुचिरम् अ.क.49ख/5.31; (དབང་བྱས་ནས अधिकृत्य)– དཔེ་འདི ཉིད་དབང་བྱས་ནས་ནི། །དེ་སྐད་བཤད་མིན नोदाहरणमेवैकमधिकृत्येदमुच्यते। प्र.वा.144क/4.121; (ཐོབ ནས प्राप्य) – ཁྱོད་ཉིད་ཐོབ་ནས་ད་ལྟ་ནི། །སྐྱེ་དགུ་རྒྱལ པོ་བཟང་ལྡན་གྱུར॥ राजन्वत्यः प्रजा जाता भवन्तं प्राप्य साम्प्रतम्। का.आ.334ख/3.6; (བརྟགས་ནས निरूप्य) – དང་པོར་འབྱོར་པ་བརྟགས་ནས་ནི། །བརྩམ མམ་ཡང་ན་མི་བརྩམ་བྱ॥ पूर्वं निरूप्य सामग्रीमारभेन्नारभेत वा। बो.अ.22क/7.47; (གཏད་ནས उपनिबध्य) – རྐང་པའི་མཐེ་བོ་གཅིག་ཅིག་ལ་སེམས གཏད་ནས་རྐང་པའི་མཐེ་བོ་རྣུགས་པར་ལྟ་བ एकस्मिन् पादांगुष्ठे मन उपनिबध्य पादांगुष्ठं क्लिद्यमानं पश्यति अभि.स्फु.162क/896 **4.** तसिल्-प्रत्ययत्वेन प्रयोगः : (མདུན་ནས अग्रतः) – གང་གིས་ནག མོ་བདག་མདུན་ནས། །སྐྲ་ནས་བཟུང་སྟེ་དྲངས་གྱུར་པ॥ निगृह्य केशेष्वाकृष्टा कृष्णा येनाग्रतो मम। का.आ.331ख/2.279; (དང་པོ་ནས आदितः) – གལ་ཏེ་དང པོ་ནས་དེའི་རྩོམ་པ་ཞིག་མེད་ན यदि तस्यादितस्तत्प्रारम्भो नासीत् अभि.स्फु.158क/886; (གང་ནས कुतः) – ཚེ་དང་ལྡན་པ་དག་ཁྱེད་གང་ནས་ད་འདིར འོངས कुतो यूयमायुष्मन्तः एतर्ह्यागच्छथ वि.व.241क/2.142; (དེ་ནས ततः) – དེ་ནས་རྒྱལ་པོ་ཟས གཙང་མས་སེར་སྐྱའི་གནས་ཀྱི་གྲོང་ཁྱེར་ཆེན་པོར་དྲིལ་གྱི སྒྲ་བསྒྲགས་ཏེ ततो राजा शुद्धोदनः कपिलवस्तुनि महानगरवरे घण्टाघोषणां कारयति स्म ल.वि.74ख/101; (འདི་ནས इतः) – ནགས་ཁྲོད་སྡུག་པོའི་འཇིགས པ་མང་པོ་འདི་ནས बहुप्रतिभयाद्गहनादितः जा.मा.144क/167; • *अव्य.* आ – སྐྱེས་ནས་དག་པའི་དངོས

ཕྲུར་པ། །ཁྱོད་ལ་སྡིག་པ་ཡོད་མ་ཡིན།། आजन्मशुद्ध-भावस्य न पापं विद्यते तव ॥ अ.क.197ख/83.20; द्र.– དེ་བྱིས་པ་ནས་རྒན་པ་ལ་བསྙེན་བཀུར་བྱེད་པར་དགའ་བ स बाल्यात्प्रभृत्येव वृद्धोपासनरतिः जा.मा. 7क/7; ནུབ་པར་གྱུར་པ་ནས་ཤར་བའི་བར अस्तमना उदयं यावत् वि.प्र.274ख/2.101; སྡུག་བསྔལ་གདགས་པ་ནས་ལམ་གདགས་པའི་བར दुःखप्रज्ञप्तिर्यावन्मार्ग-प्रज्ञप्तिः अभि.भा.237ख/799.

ནས་ཀྱི་འཕྲུར་བ यवक्षारः, यवाग्रजः –यवक्षारो यवाग्रजः ॥ पाक्यः अ.को.2.9.108; यवस्य क्षारो यवक्षारः अ.वि.2.9.108.

ནས་ཀྱི་དར་ཐུག कुल्माषपिण्डिका – ཀུན་དགའ་བོ་གོ་ས་ལའི་རྒྱལ་པོ་གསལ་རྒྱལ་གྱི་ནས་ཀྱི་དར་ཐུག་ལན་ཚྭས་མ་བཏབ་པ་ལ་བརྩམས་ཏེ་ལས་ཀྱི་རྒྱུ་བ་ཁྱོད་ཉན་པར་འདོད་དམ इच्छसि त्वमानन्द राज्ञः प्रसेनजित्को-[कौ]सलस्यालवणिकां कुल्माषपिण्डिकामारभ्य कर्मप्लोतिं श्रोतुम् वि.व.166ख/1.55.

ནས་ཀྱི་བག་ཟན चिक्कसपिण्डिका – མཆི་མ་འཛག་ན་ནས་ཀྱི་བག་ཟན་གྱིས་བཅད་དོ།། *> चिक्कसपिण्डिकया क्षिप्रधरणे प्रविधानम् वि.सू.6क/6.

ནས་ཀྱི་སྦྲུས तोक्मः – ཏོཀྨཿ ནས་ཀྱི་སྦྲུས། པ་ལྭ་ལཾ། སོག་མ། ཀ་ཊཿ ཊྭའང་། གཟེག་མ་སྟེ་ནས་སོགས་ཀྱི་དུམ་བུག་ལའང་འཇུག मि.को.36क।

ནས་སྐྱེས = ནས་རྩེ་སྐྱེས यवजः, यवक्षारः मि.को.61क।

ནས་གྲ་མ शूकः, °कम् – འཕྲུར་བྱེད་དོ།། འདི་ལྟ་སྟེ། ཏིལ་གྱི་དང་རྒྱ་སྐྱེགས་ཀྱི་ཤིང་གི་ས་ཚུར་གྱི་དང་ནས་ཀྱི་དང་ནས་གྲ་མའི་དང་བྭ་ས་ཀའི་དང་ཐལ་བའི་འཕྲུར་བྱེད་དོ།། क्षारः। तद्यथा तिलपलाशस्वर्जि[सर्जि]कायवशूकवासकानाम्। क्षारक्षारश्च वि.सू.76क/93.

ནས་རྗེས धानाः, भृष्टयवः – धाना भृष्टयवे स्त्रियः अ.को.2.9.47; धीयन्ते धानाः। डुधाञ् धारणपोषणयोः अ.वि.2.9.47.

ནས་ཅན *ना.* यवनः, देशः – དེ་དགོས་པ་འགའ་ཞིག་གི་ཕྱིར་ཡུལ་དབུས་ནས་ཡུལ་ནས་ཅན་ཞེས་བྱ་བར་སོང་ངོ་།། स करणीयेन मध्यदेशाद् यवनविषयं गतः वि.व. 283क/1.100.

ནས་ཆན यावकः, °कम् – ཚོད་ཟད་དང་ནས་ཆན་ཁྱོར་གང་ཙམ་དང་འོ་མ་དང་སློང་མོའི་ཟས་ཀྱིས་འཚོ་བ <?> शाकयावकयथाभैक्षभैक्षाहारः म.मू.222क/242.

ནས་ཐུག यवागूः मि.को.39क।

ནས་འབྲུ यवः, शस्यविशेषः – བྲེ་གང་ལ་ནི་ནས་འབྲུ་དུ། །བྲེ་ཕྱེད་ལ་ཡང་ནས་འབྲུ་དུ།། प्रस्थे हि स्याद्यवाः क्यन्तः प्रस्थार्धे च यवाः कति। ल.अ.66ख/15.

ནས་རྩེ་སྐྱེས यवाग्रजः, यवक्षारः – यवक्षारो यवाग्रजः ॥ पाक्यः अ.को.2.9.108; यवाग्रैर्जन्यत इति यवाग्रजः। जनी प्रादुर्भावे अ.वि.2.9.108.

ནས་ཞིང यव्यम्, यवक्षेत्रम् मि.को.34ख।

ནས་གཞེར་བ महल्लकः म.व्यु.4097(65ख).

ནས་སོག་ཅན = ནས་རྩེ་སྐྱེས यवनाल[ज]ः, यवक्षारः मि.को.61क।

ནསྟ་སྭ་ལ = ན་ག་ཏ་མ་ལ།

ནཱ་ཀུ • *सं.* नाकुः 1. = གྲོག་མཁར वल्मीकः श्री.को.164ख 2. = རི་བོ पर्वतः श्री.को.164ख; • *ना.* नाकुः, मुनिः (रा.को.2.846).

ནཱ་ག नागः – ནཱ་ག་གེ་སར नागकेसरः श्री को.176ख।

ནཱ་ག་གེ་ས་ར नागकेसरः, वृक्षविशेषः – चाम्पेयः केसरो नागकेसरः काञ्चनाह्वयः । अ.को.2.4.65; नागप्रियाणि केसरवन्ति पुष्पाण्यस्य नागकेसरः अ.वि.2.4.65; नागः श्री.को 172ख; कनकः श्री.को. 165ख।

ནཱ་ག་རཀྵ་ नागरक्षः – འཇམ་དཔལ་ནཱ་ག་རཀྵ་ नागरक्षः लो.को.1331.

ནཱ་ད नादः – ནཱ་ད་ནི་གཞོམ་དུ་མེད་པའོ། नादोऽनाहतः वि.प्र.52ख/4.74; ཆ་སྟེ་ཉི་མ་དང་ཐིག་ལེ་སྟེ་ཟླ་བ་དང་ནཱ་ད་སྟེ་སྒྲ་གཅན་དང་དུས་ཏེ་དུས་མེ་དང कला सूर्यः, बिन्दुश्चन्द्रः, नादो राहुः, कालः कालाग्निः वि.प्र. 269क/2.87.

ནཱ་ད་ལྡན *वि.* नादी – ནཱ་ད་ལྡན་བདག་རང་གི་བློ། །སྨོས་མིན་འདོད་པ་འགའ་ཡང་མེད། नादिनोऽमदना धी स्वा न मे काचन कामिता। का.आ.337ख/3.75.

ནཱ་དའི་རང་བཞིན་ཅན *वि.* नादरूपिणी – སྲིད་གསུམ་སྐྱེད་པར་མཛད་མ་སྟོང་པ་ཉིད་རྣམ་པ་ཐམས་ཅད་པ་ནཱ་དའི་རང་བཞིན་ཅན त्रिभुवनजननी शून्यता सर्वाकारा नादरूपिणी वि.प्र.127ख/3.56.

ནཱ་རང་ག नारङ्गम्–སྐྱེ་བ་གཞན་དུ་མཆོད་རྟེན་ལ། །ནཱ་རང་ག་ཡི་འཕྲེང་བས་མཆོད། जन्मान्तरे चकारार्चां स्तूपे नारङ्गमालया। अ.क.258ख/93.108.

ནཱ་རི་ཀེ་ལ नारिकेलः – དེ་བཞིན་དུ་སྐྱོགས་རྣམས་ནི་ཤར་དུ་ཉ་ཕྱིས་ཀྱི་སྣོད... ལྷོ་དང་བདེན་བྲལ་དུ་ནཱ་རི་ཀེ་ལའི་སྐྱོགས་དང तथा करोटकानि पूर्वे शुक्तिपुटिका... दक्षिणे नैर्ऋत्ये नारिकेलकरोटकम् वि.प्र.162ख/3.126; नालिकेरः – नालिकेरस्तु लाङ्गली अ.को.2.4.168; नाल्या कमुदकमीरयतीति नालिकेरः। ईर क्षेपे अ.वि.2.4.168.

ནཱ་རི་ཀེ་ལའི་རུས करङ्कः, नारिकेलस्य अस्थि श्री.को. 165ख।

ནཱ་རོ་པ *ना.* नाडपादः, सिद्धाचार्यः मि.को.113क; द्र. ན་རོ་པ།

ནི •*अव्य.* 1. हि – ཁྱོད་ཀྱི་མིང་ནི་འདི་ཞེས་བྱ तव हीदं नामधेयम् अ.सा.339ख/191; ནིའི་སྒྲ་ནི་གང་གི་ཕྱིར་གྱི་དོན་ཏེ हिशब्दो यस्मादर्थे त.प.181क/824; ནིའི་སྒྲ་རྒྱུའི་དོན་ཏེ हिशब्दो हेतौ त.प.141क/733 2. तु – ནི་ཞེས་བྱ་བའི་སྒྲ་ནི་དམིགས་ཀྱིས་བསལ་བའི་དོན་སྟོན་པར་བྱེད་དོ། तुशब्दोऽपवादार्थं द्योतयति अभि.स्फु.299क/1158; འདིར་ནི་སྡུག་བསྔལ་རྒྱུར་གྱུར་པ། །བདེན་པར་རྟོག་པ་བཟློག་བྱ་ཡིན། सत्यतः कल्पना त्वत्र दुःखहेतुर्निवार्यते॥ बो.अ.31ख/9.26; དོན་དམ་དུ་ནི་བརྗོད་པར་བྱ་བའི་རང་གི་ངོ་བོ་རྟོགས་པ་ཉིད་དེའི་དགོས་པའོ། परमार्थतस्तु अभिधेयस्वरूपव्युत्पत्तिरेव तत्प्रयोजनम् बो.प.43ख/2; ནི་ཞེས་བྱ་བའི་སྒྲ་ནི་ཇི་སྲིད་དུ་མ་སྤངས་པ་ཞེས་བྱ་བ་ཁྱད་པར་དུ་བྱ་བའི་ཕྱིར་རོ། यावदप्रहीण इति विशेषणार्थस्तुशब्दः अभि.भा.235ख/793 3. च – ནི་ཞེས་བྱ་བ་ནི་བསྡུ་བའི་དོན་ཡིན་ནོ། समुच्चयेऽयं चकारः अभि.स्फु.88क/759; ནི་ཞེས་པའི་སྒྲ་ནི་རྒྱུའི་དོན་ཏེ चकारो हेत्वर्थः न्या.टी.59ख/144; དྲན་པ་ནི་དྲན་པ་ཁོ་ན་ཡིན་ནོ། स्मृतिश्च स्मृतिरेव अभि.भा.38ख/1018 4. अपि–དེ་ནི་དེ་ཡིས་དྲངས་པ་ན། །ལམ་ལོག་པར་ནི་ལྷུང་བར་འགྱུར། स तया कृष्यमाणश्च कुवर्त्मन्यपि सम्पतेत्। त.प.168क/792 5. किल – འདི་ནི་འཇིག་རྟེན་ལ་ཆེ་དང་། །བདག་དམན་ཡོན་ཏན་མེད་པར་གྲག། अयं किल महांल्लोके नीचोऽहं किल निर्गुणः ॥ बो.अ.29क/8.142; •द्र.–

འདུ་བྱེད་ཐམས་ཅད་ནི་མི་རྟག་པའོ༎ सर्वसंस्कारा अ-
नित्याः वि.व.151ख/1.40; འབྱུང་བ་ཆེན་པོ་ནི་ལྔ་ཡིན་
ནོ༎ पञ्चमहाभूतानि प्र.अ.47ख/54; ལུང་བསྟན་པ་ནི་
རྣམ་པ་བཞི་སྟེ༎ चतुर्विधं व्याकरणम् ल.अ.101ख/48;
དྲན་པ་ནི་དམིགས་པ་མི་བརྗེད་པའོ༎ स्मृतिरालम्बना-
संप्रमोषः अभि.भा.64ख/187; འདི་དག་ནི་རྩ་བཅུའོ༎
एता दश नाडयः वि.प्र.244ख/2.57; འདིས་ནི་འདུས་
པ་ལ་སོགས་པ། །དྲན་པ་ཉམས་སོགས་བཤད་པ་ཡིན༎
एतेन सन्निपातादेः स्मृतिभ्रंशादयो गताः । प्र.वा.
110ख/1.78; འགྱོད་པ་ལས་ནི་རབ་ཏུ་བསམས༎ पश्चा-
त्तापादचिन्तयत् अ.क.197क/83.14; དྲན་པ་ནི་ལེད་
བུ་ལ་སོགས་པའི་གཞུང་རྣམས་སོ༎ स्मृतयो मन्वादयः
वि.प्र.272क/2.96; དེའི་ཁ་ནས་ནི་པད་མའི་དྲི་འབྱུང་ལ
तस्य मुखात्पद्मगन्धो वाति अ.श.64क/56; ཁྱོད་ཀྱི་
གདོང་ནི་ཆུ་སྐྱེས་བཞིན༎ अम्भोजमिव ते वक्त्रम् का.
आ.323क/2.28; ཁྱོད་ནི་གསེར་གྱི་རི་ལྟར་དྲི་མི་མངའ༎
काञ्चनाचल इवासि निर्मलः रा.प.230क/123.

ནི་ཀུ पूगः, गुवाकः श.को.740; द्र. ཕུ་ག༎

ནི་གུ = བུ་མོ་ཆུང་བ कन्यका छो.को.466/रा.को.2.21.

ནི་མི *ना.* निमिः, नृपः – ས་སྐྱོང་ནི་མིའི་སྐྱེ་བ་ལ། །མི་ཐི་
ལར་སྔོན་དཀའ་ཐུབ་སྦྱིན། །མཆོད་སྦྱིན་གྱིས་ནི་བསོད་
ནམས་ཐོབ། །བྱང་ཆུབ་དེ་ནི་ཐོབ་མ་གྱུར༎ मिथिलायां
पुरा पुण्यं निमिभूपालजन्मनि । प्राप्तं दानतपोयज्ञै-
र्बोधिर्नाधिगता तु सा ॥ अ.क.160क/17.38.

ནི་ཙུ་ལ निचुलः, स्थलवेतसः – ནི་ཙུ་ལ་ནི་གསར་བས
[པའི་]གནས་འདི་ལས་ནི་ཁྱོད་འཕངས स्थानादस्मात्स-
रसनिचुलादुत्पत मे.दू.342ख/1.12; དགོན་པའི་ནགས
ཚལ་ཆེན་པོ་ཤིང་སཱ་ལ་དང་...ནི་ཙུ་ལ་མང་པོ་དང साल...
निचुलक्षुपबहुले... महत्यरण्यवनप्रदेशे जा.मा.149ख
/174.

ནི་ར་ཉྫ་ནི = ནི་ར་ཉྫ་ན།

ནི་རཾ་ཤུ निरंशुकम्, अस्थ्याभरणम् – མ་ད་ན་ཆང་བ་ལ
ཤ། ...།རུས་པའི་རྒྱན་ནི་ནི་རཾ་ཤུ༎ मदनं मद्यं बलं मांसं
...अस्थ्याभरणं निरंशुकम् ॥ हे.त.19क/60; ཤེལ་གྱིས
རེངས་པའི་བཟླས་པ་ཉིད། ...།ནི་རཾ་ཤུས་ནི་སྡང་བ་ལ༎
स्फटिकेन स्तम्भनं जाप्यं ...विद्वेषं निरंशुकैस्तथा ॥
हे.त.29क/96.

ནི་ར་ཉྫ་ན *ना.* निरञ्जना, नदी – ནི་ར་ཉྫ་ན་ཞེས་པ་ཡི།
།ཀླུང་དུ་ཞུགས་ཤིང་ཆུར་གནས་པ། །བྱང་ཆུབ་སེམས
དཔའ་དཀའ་ཐུབ་ཀྱིས། །རིད་འདི་ཀུན་ལས་ཁྱད་པར
འཕགས༎ सर्वप्रतिविशिष्टोऽसौ बोधिसत्त्वस्तपः-
कृशः । नद्यां निरा[निरञ्]जनाख्यायां विगाह्य सलि-
ले स्थितः ॥ अ.क.225क/25.12; निरञ्जनी – ཆུ་བོ
ནི་ར་ཉྫ་ན་ནི། །ཡང་དག་རྒྱལ་ལ་གཡོ་མེད་ཡུལ། །བྱང
ཆུབ་སེམས་ལ་གྲུབ་སྟེར་བ། །རྡོ་རྗེ་གདན་ཞེས་བརྗོད་པར
སོང་༎ निरञ्जनीं समुत्तीर्य सरितं व्रज निश्चलम् ।
सिद्धिदं बोधिसत्त्वानां देशं वज्रासनाभिधम् ॥ अ.क.
226ख/25.28.

ནི་རོ་དྷ निरोधः श.को.740; = འགོག་པ།

ནི་ཥ་ཏ = ནི་ཥ་དྷཿ *ना.* निषधः, पर्वतः – བསིལ་བའི་རི་ནི
ལག་པའི་རུས་པའོ༎ ...ནི་ཥ་ཏ་ནི་རྐང་པའི་རུས་པའོ༎
शीताद्रिः करास्थीनि ...निषटः[धः] पादास्थीनि वि.प्र.
235क/2.35.

ནི་ཥ་ད = ནི་ཥཱ་ད།

ནི་ཥཱ་ད *पा.* निषादः, सप्तस्वरान्तर्गतस्वरविशेषः –
གླུའི་དབྱངས་ཥ་ཌྫ་དང་རི་ཥ་བྷ་དང་གན་དྷ་ར་དང་མ་དྷྱ
[ཨ]ཏ་དང་ནི་ཥཱ་ད་དང་མ་དྷྱ་མ་དང་གཻ་[གེ]ཤི་ཀ་དང

ཀླུའི་དབྱངས་མང་པོར་སྒྱུར་བ་ལ་སོགས་པ་དང་ལྡན་ཞིང
षड्जर्षभगान्धारधैवतनिषादमध्यमकैशिकगीतस्व
रग्राममूर्छनादियुक्तेन ल.अ.56ख/1.

ནིམ་པ = ཤིང་ནིམ་པ། निम्बः, वृक्षविशेषः – དེ་བཞིན་དུ་དབང་ཕྱུག་ཆེན་པོའི་གནས་སུ་ཉི་མ་ཕྱེད་ལ་སོང་སྟེ། ནིམ་པའི་ལོ་མས་མཆོད་ཅིང मध्याह्ने तथैव महेश्वरायतनं गत्वा निम्बपत्रैरभ्यर्च्य म.मू.279ख/438; पिचुमन्दः– དགྲ་མཐའ་ན་སྦྲུ་བུ་ཅན་གྱི་ཤིང་ནིམ་པའི་དྲུང་ན་བཞུགས་སོ།། वैरंभ्ये विहरति नडेरपिचुमन्दमूले वि.व.134क/1.23; यो.श.43; अरिष्टः मि.को.87क; द्र. ནིམ་པའི་ཤིང་།

ནིམ་པའི་ཤིང 1. निम्बः, वृक्षविशेषः – अरिष्टः सर्वतोभद्रहिङ्गुनिर्यासमालकाः। पिचुमन्दश्च निम्बे अ.को.2.4.62; आरोग्यं नयतीति निम्बः। णीञ् प्रापणे अ.वि.2.4.62 2. निम्बतरुः, वृक्षविशेषः – पारिभद्रे निम्बतरुर्मन्दारः पारिजातकः अ.को.2.4.26; नयत्यारोग्यमिति निम्बः। णीञ् प्रापणे। स चासौ तरुश्च निम्बतरुः अ.वि.2.4.26.

ནིམ་བ = ནིམ་པ།

ནིམྦ = ནིམ་པ།

ནིམྦའི་ཤིང = ནིམ་པའི་ཤིང་།

ནུ 1. = ནུ་མ། स्तनः – སེང་གེའི་ནུ་ལོག་རི་དྭགས་ཕྲུ་གུ་རྒྱུ་བ་དབེན་པའི་ནགས་ཚལ་འདིར།། विविक्तेऽस्मिन् सिंहीस्तनतलवलद्बालहरिणे अ.क.44ख/56.28; ནུ་རྒྱས་མ घनस्तनी। अ.क.267क/32.21; कुचः – གླང་ཆེན་མྱོས་བུམ་ལྟར་མཐོའི་ནུ་རྒྱས་འཚོར།། मत्तेभकुम्भोच्चकुचा विभूतिः अ.क.195ख/22.32 2. पदांशः – གཞོན་ནུ कुमारः अ.क.205ख/23.28; ང་ལས་ནུ मान्धाता म.मू.305क/475 3. = ནུ་བོ།

ནུ་སྐྱེས = འོ་མ स्तन्यम्, दुग्धम् छो.को.467/रा.को.5.432.

ནུ་རྒྱས་ལྡན་པ *वि.स्त्री.* घनस्तनी – ས་བདག་དང་། །ཅི་ཞིང་ནུ་རྒྱས་ལྡན་པ་དེས། །སྐལ་པ་བཟང་ཞིང་མཛེས་པ་ཐོབ།། महीभुजा। लेभे सौभाग्यशोभां सा रममाणा घनस्तनी॥ अ.क.146क/68.55; द्र. ནུ་རྒྱས་མ།

ནུ་རྒྱས་མ *वि.स्त्री.* घनस्तनी – མཚན་མོ་སྒྲ་མེད་ནུ་རྒྱས་མ། །དེ་ནི་དེ་དང་རོལ་པ་ན། सा तेन निशि निःशब्दं रममाणा घनस्तनी। अ.क.267क/32.21; द्र. ནུ་རྒྱས་ལྡན་པ། ནུ་སྟུག།

ནུ་སྟུག *वि.स्त्री.* घनस्तनी – ནུ་སྟུག་ཁྱོད་གདོང་ལན་བུ་ཡི། །འབྲི་ཤིང་བུང་བ་ལྟར་སྔོ་ཞིང་། ...སུ་མ་བཅོམ།། अलिनीलालकलतं कन्न हन्ति घनस्तनि। का.आ.338क/3.89; द्र. ནུ་རྒྱས་མ།

ནུ་འཕྱུང = ནུ་མ་འཕྱུང་བ།

ནུ་བ द्र.– ནུ་མ་ནུ་བའི་མ་མ क्षीरधात्री म.व्यु.9479.

ནུ་བོ = གཅུང་པོ अनुजः, कनिष्ठभ्राता– དེ་དག་དེ་ཡི་ཕ་དག་ལ། །གུས་པས་ཁྲོ་བྲལ་དེ་དང་ནི། །ནུ་བོར་བཅས་ལ་སྐྱེད་ཚལ་གཉིས། ...ཕྱིན།། ततिपतुर्गौरवात्तस्मै सानुजाय विमन्यवः।...उद्यानद्वयं ददुः॥ अ.क.178क/20.27; कनिष्ठभ्राता म.व्यु.3887(64क); कनीयान् – དེ་བརྒྱུད་བུ་རམ་ཤིང་པ་བྱུང་། །དེ་ལས་ཡང་ནི་འཕགས་སྐྱེས་པོ། །དེ་ཡི་བུ་ནི་ནུ་བོ་ལ། །དགའ་བས་ཕུ་བོ་གནས་ནས་བསྐྲད།། इक्ष्वाकुरन्वये तस्य तस्य चाभूद् विरूढकः। प्रीत्या कनीयसः सूनोर्ज्येष्ठास्तेन विवासिताः॥ अ.क.233ख/26.14; कनीयान् भ्राता – དེ་ལ་ནུ་བོ་དྲུག་ཅིག་ཡོད་པ तस्य यत्र कनीयांसः षडपरे भ्रातरः जा.मा.98क/114; कनिष्ठः – जघन्यजे स्युः

कनिष्ठयवीयोऽवरजानुजाः ॥ अ.को.2.6.43; अतिशयेनाल्पः कनिष्ठः अ.वि.2.6.43; भ्राता – ནུ་བོ་དེ་རྣམས་ལ་ནི་སློབ་དཔོན་དང་ཕ་བཞིན་དུ་རིག་པ་སློབ་ཅིང་སྦྱོར आचार्य इव पितेव तान् भ्रातॄन् विद्यासु विनयन् जा.मा.98[क]/114; भ्रातृकः – ཀྱེ་མའོ་ནུ་བོ་སྡུག་པ་དང་ནི་རྒྱལ་པོ་དང་།། अहो प्रियभ्रातृक पार्थिवायम् सु.प्र.56[क]/111.

ནུ་བོ་འོག་མ अनुजो भ्राता – བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའི་ནུ་བོ་འོག་མས... མནའ་ཁྱད་པར་ཅན་བོར་བ बोधिसत्त्वस्यानुजो भ्राता...शपथातिशयमिमं चकार जा.मा. 101[ख]/116.

ནུ་བོའི་བུ भ्रातृपुत्रः – དེའི་ནུ་བོའི་བུ་ཡུལ་འཁོར་སྐྱོང་ཞེས་བྱ་བ་གཟུགས་བཟང་ཞིང तस्य भ्रातृपुत्रो राष्ट्रपालो नाम्ना अभिरूपः अ.श.247[ख]/227.

ནུ་འཕྱུར = ནུ་མ་འཕྱུར་བ།

ནུ་མ 1. स्तनः, शरीरावयवविशेषः – བྱིས་པ་རྣམས་ཀྱང་ཇི་སྲིད་དུ་ནུ་མ་མཐོང་བ་ན་དེ་ཉིད་འདི་ཡིན་ནོ་ཞེས་སྔོན་མཐོང་བ་ཉིད་དུ་མི་འཛིན་པ बालोऽपि हि यावद् दृश्यमानं स्तनं 'स एवायम्' इति पूर्वदृष्टत्वेन न प्रत्यवमृशति न्या.टी.41[ख]/50; ནུ་མ་མཐོ उन्नतस्तनः का.आ.333[क]/2.333; ཡིད་འཕྲོག་མ...ནུ་མ་གསེར་གྱི་བུམ་པ་དང་རུས་སྦལ་ལྟར་རྒྱས་ཤིང་ལྷོ་བ་དང་མཁྲང་ཞིང་མཛེས་པས་ཤིན་ཏུ་ལེགས་པར་ཟླུམ་པ་ལྡེམ་པ मनोहरां...काञ्चनकलशकूर्मपीनोन्नतकठिनसंहतसुजातवृत्तप्रगल[प्रगल्भ]मानस्तनीम् वि.व.209[क]/1.83; ཤེས་རབ་ཀྱི་ནུ་མ་ལ་ཐབས་ཀྱིས་རེག་པར་བྱ प्रज्ञाया स्तनस्पर्शनमुपायः करोति वि.प्र.159[क]/3.120; कुचः – ནུ་མ་དག་ནི་མི་དབེན་ཞིང་། །རྐང་པའི་ཆུ་སྐྱེས་དམར་བ་དང་།། कुचयोरविवेकेन रागेण चरणाब्जयोः। अ.क.22[ख]/3.37; पयोधरः – བུད་མེད་ཀྱི་སྒྱུ་རྣམ་པ་སུམ་ཅུ་རྩ་གཉིས་ཉེ་བར་བསྟན་ཏོ།། ...ཁ་ཅིག་ནི་ནུ་མ་མཁྲང་ཞིང་འཕྱུར་བ་སྟོན་པ་དང द्वात्रिंशदाकारां स्त्रीमायामुपदर्शयन्ति स्म ... काचिदुन्नतान् कठिनान् पयोधरान् दर्शयन्ति स्म ल.वि.156[ख]/233; ས་གཞི་རི་ཡི་ནུ་མ་གཡོ་བ་ཅན། །འདོད་ཆགས་ལངས་པ་བཞིན་དུ་རབ་ཏུ་གཡོས།། प्रकम्पितशैलेन्द्रपयोधरा धरा मदादिवाभूदभिवृद्धवेपथुः। जा.मा.58[ख]/68 2. पदांशः – གཞོན་ནུ་མ कुमारी हे.त.4[ख]/10; གཞོན་ནུ་མ་ལེན कुमारिलः त.प.62[ख]/577.

ནུ་མའི་བར स्तनान्तरम् – ལྷ་མོ་སྣང་བའི་ནུ་མའི་བར་དུ་ཟླ་བ་དང་སྣ་ཚོགས་རྡོ་རྗེའི་ལྟེ་བར་ཟླ་བ་ལ་ཧཱུྃ་ཡིག་སྔོན་པོ भादेव्याश्च स्तनान्तरचन्द्रविश्ववज्रवरटकचन्द्रे नीलहूँकारम् ख.टी.163[ख]/245.

ནུ་མ་ཉེད་པ *वि.* स्तनमर्दी– སྐྱེ་གནས་ལས་སྐྱེས་སྐྱེ་གནས་ཆགས། །ནུ་མ་འཕྱུངས་པ་ནུ་མ་ཉེད།། योनिजयोनिसंसक्ता स्तनपस्तनमर्दिनः। अ.क.107[क]/10.78.

ནུ་མ་སྡུག་པོ = ནུ་སྡུག།

ནུ་མ་མཐོ་བ *वि.* उन्नतस्तनम् – སྐེད་པ་ཕྲ་ཞིང་རོ་སྨད་སྦོམ། །མཆུ་དམར་མིག་ནི་དཀར་བ་མིན། །ལྟེ་བ་དམའ་ཞིང་ནུ་མ་མཐོ། །བུད་མེད་ལུས་ཀྱིས་སུ་མ་བཅོམ།། तनुमध्यं पृथुश्रोणि रक्तौष्ठमसितेक्षणम्। नतनाभि वपुः स्त्रीणां कं न हन्त्युन्नतस्तनम् ॥ का.आ.333[क]/2.333; द्र.–གླང་ཆེན་སྨྱོས་བུམ་ལྟར་མཐོའི་ནུ་རྒྱས་འབྱོར།། मत्तेभकुम्भोच्चकुचा विभूतिः अ.क.195[ख]/22.32.

ནུ་མ་འཕྱུང་བ • *सं.* 1. स्तनपानम् – འཛུམ་པ་དང་ངུ་བ་དང་ནུ་མ་འཕྱུང་བ་དང་དགའ་བ་ལ་སོགས་པའི་མཚན་ཉིད་དག་ལ स्मितरुदितस्तनपानप्रहर्षादिलक्षणायाम् त.प.2[ख]/450 2. = ནུ་ཆུང स्तनपः, अतिशिशुः छो.

को.467/रा.को.5.432; • *वि.* स्तनपः, °पा; द्र. ནུ་ཞོ་འཐུང་བ། ནུ་མ་འཐུངས།

ནུ་མ་འཐུངས • *सं.* स्तनपानम् – ངུ་དང་ནུ་མ་འཐུངས་སོགས་པའི། །འབྲས་བུས་དེ་ནི་རྟོགས་པར་འགྱུར།། रुदितस्तनपानादिकार्येणासौ च गम्यते । त.स.71[क]/663; • *वि.* स्तनपः – སྐྱེ་གནས་ལས་སྐྱེས་སྐྱེ་གནས་ཆགས། །ནུ་མ་འཐུངས་པ་ནུ་མ་ཉེད།། योनिजयोनिसंसक्ता स्तनपस्तनमर्दिनः । अ.क.107[क]/10.78.

ནུ་མ་ནུ་བའི་མ་མ क्षीरधात्री म.व्यु.9479; = ནུ་མ་སྣུན་པའི་མ་མ།

ནུ་མ་སྣུན་པ *वि.* स्तन्यस्य दात्री– དགེ་སློང་དག་བུའི་ཕ་མ་གཉིས་ནི་དཀའ་བ་བྱེད་པ་དང...ནུ་མ་སྣུན་པ་དང दुष्करकारकौ हि भिक्षवः पुत्रस्य मातापितरौ स्तन्यस्य दातारौ अ.श.102[ख]/92; द्र. ནུ་མ་སྣུན་པའི་མ་མ།

ནུ་མ་སྣུན་པའི་མ་མ क्षीरधात्री – གཞོན་ནུ་གཟུགས་ཅན་སྙིང་པོ་མ་མ་བརྒྱད་པོ་པང་ན་འཚོ་བའི་མ་མ་གཉིས་དང ནུ་མ་སྣུན་པའི་མ་མ་གཉིས་དང...ལ་རྗེས་སུ་གཏད་དོ།། बिम्बिसारः कुमारोऽष्टाभ्यो धात्रीभ्योऽनुप्रदत्तः । द्वाभ्यामङ्कधात्रीभ्यां द्वाभ्यां क्षीरधात्रीभ्याम् वि.व.5[ख]/2.76; वि.व.207[ख]/1.82.

ནུ་མ་བསྣུན་པའི་མ་མ क्षीरधात्री म.व्यु.9479(130[क]); = ནུ་མ་སྣུན་པའི་མ་མ།

ནུ་མ་འབུར་བ = ནུ་འབུར 1. तुङ्गस्तनः – གཡོན་གྱི་ཕྱེད་ལ་ནུ་མ་འབུར་བ་དང तुङ्गस्तनं वामार्द्धे ख.टी.166[क]/249 2. चूचुकम् श.को.741; द्र. ནུ་མའི་ཏོ།

ནུ་མ་རེག་པ स्तनस्पर्शनम् – ཤེས་རབ་ཀྱི་ནུ་མ་ལ་ཐབས་ཀྱིས་རེག་པར་བྱ प्रज्ञाया स्तनस्पर्शनमुपायः करोति वि.प्र.159[क]/3.120.

ནུ་མའི་དཀྱིལ་འཁོར स्तनमण्डलम् – བུད་མེད་ཀྱི། །ནུ་མའི་དཀྱིལ་འཁོར स्त्रीणां स्तनमण्डलम् का.आ.339[क]/3.121; འཁྱིལ་བ་སྟུག་གུ་མཛེས་པའི་འཁོར་ལོ་འདྲ། །དེ་ཡི་ནུ་མའི་དཀྱིལ་འཁོར་དག་ལའང་ཡོད།། आवर्तशोभा स्तनमण्डले वा लावण्यकल्लोलनिभास्ति तस्याः ॥ अ.क.150[क]/14.128.

ནུ་མའི་ཏོ चूचुकम्, कुचाग्रम् – चूचुकं तु कुचाग्रं स्यात् अ.को.2.6.77; चूचु इति कायति स्तनपाने चूचुकम् अ.वि.2.6.77.

ནུ་མའི་འོ་མ = ནུ་ཞོ།

ནུ་མོ स्वसा श.को.741.

ནུ་ཞོ = འོ་མ स्तन्यम्, दुग्धम् – ཕྲུ་གུ ... །མ་ལ་ཡིད་བརྟུགས་འཇིགས་མེད་ཅིང་། །ནུ་ཞོ་འདོད་ཕྱིར་ལྷགས་པ་ལ།། बालान्...स्तन्यतर्षादुपसृतान् मातृविस्रम्भनिर्व्यथान् जा.मा.4[ख]/3.

ནུ་ཞོ་འཐུང་བ • *सं.* स्तनपानम् – བཙས་མ་ཐག་ཏུ་ཐུས་ཀྱང་མ་བསྟན་པར། །ནུ་ཞོ་འཐུང་བར་རྩོལ་བར་བྱེད་པ་དང་།། विनोपदेशात्प्रतिपद्यते यत्प्रसूतमात्रः स्तनपानयत्नम् ॥ जा.मा.174[ख]/202; • *वि.* स्तनपः – པད་མ་མི་རྩོལ་ནུ་ཞོ་འཐུང་བ་རྩོལ། །དེ་བས་པད་མ་ཁ་འབྱེ་ཉི་མའི་མཐུ།། यत्नश्च नास्ति कमले स्तनपे तु दृष्टः सूर्यप्रभाव इति पद्मविकासहेतुः ॥ जा.मा.175[क]/202; पाययन्ती – དུས་མ་ཡིན་པ་གང་ཞེ་ན། སྦྲུམ་མའམ་ནུ་ཞོ་འཐུང་བའམ་ངེས་པ་དང་བཅས་པའི་གནད་དུ་འགྲོ་བའོ།། कः पुनः अकालः ? गर्भिणीं वा गच्छति, पाययन्तीं वा सनियमां वा अभि.भा.204[ख]/687; ནུ་ཞོ་འཐུང་བ་ནི་བུ་ནུ་ཞོ་འཐུང་བའི་གནས་སྐབས་སུ་ཡོད་པའི་བུད་མེད पाययन्ती स्तन्योपभोगावस्थपुत्रिका स्त्री अभि.स्फु.56[ख]/687.

ནུ་ཞོས་འཚོ་བ *वि.* स्तन्यपानपायी – ནུ་ཞོས་འཚོ་བའི་བེའུ་རྣམས་ཀྱི་སྐྱི་བ་དང་གཅིན་དག་ནི་དེ་ཞེས་བྱའོ།། तदाख्यं पुनरुच्चारप्रस्रावौ स्तन्यपानपायिनां वत्सकानाम् वि.सू.76[क]/93.

ནུ་སོར་རྩེ स्तनमुखम् – བདག་གི་ནུ་སོར་རྩེ་གཉིས་ནས། །འོ་མ་ཁྲག་[དྲག་] ཏུ་རབ་ཏུ་འབྱུང་།། उभाभ्यां स्तनमुखाभ्यां क्षीरप्रमुक्तमचिरेण ॥ सु.प्र.58[क]/116; द्र. ནུ་སོར་རྩེ་མོ།

ནུ་སོར་རྩེ་མོ स्तनमुखम् – ནུ་སོར་གཉིས་ཀའི་རྩེ་མོ་ནས། །འོ་མ་ཁྲག་[དྲག་]ཏུ་འབྱུང་ཞིང་འཛག།། ताभ्यां स्तनाभ्यां क्षीरप्रमुक्तं प्रस्रवन्त्यः वेगैः। सु.प्र.58[क]/116; द्र. ནུ་སོར་རྩེ།

ནུབ • *वि.* पश्चिमः – ནུབ་ཀྱི་སྒོར पश्चिमद्वारे वि.प्र.51[क]/4.58; ཤར་དུ་ཀླ་ཀློ་མ་དང…ནུབ་ཏུ་གདོལ་མོ་དང पूर्वे म्लेच्छा… पश्चिमे मातङ्गी वि.प्र.162[ख]/3.126; अपरः – ཤར་དང་ནུབ་ཀྱི་རྟ་བབས་ཀྱི་འོག་ཏུ་བལྟ་བར་བྱ पूर्वापरतोरणाधो दर्शनीयाः वि.प्र.44[ख]/4.43; •*सं.* 1. = ནུབ་ཕྱོགས पश्चिमा मि.को.17[क]; प्रतीची मि.को.17[क] 2. = ནུབ་མོ रात्रम् – ནུབ་གསུམ་སྲུང་བ་བྱས त्रिरात्रोषितः म.मू.211[ख]/230; सायम् – ངའི་ཉན་ཐོས་ཀྱི་དགེ་སློང་ཚུར་སོག་ཅེས་བྱ་བ་ནས་དེ་ངས་ནང་གདམས་ན་ནུབ་ཁྱད་པར་དུ་འགྲོ། ནུབ་གདམས་ན་ནང་ཁྱད་པར་དུ་འགྲོ་སྟེ एतत् भिक्षुर्मम श्रावको यावत्स मया कल्यमवोदितः सायं विशेषाय परैष्यति। सायमवोदितः कल्यं विशेषाय परैष्यति अभि.भा.242[ख]/816; •*ना.* अस्तकः, पर्वतः – ནུབ་ཕྱོགས་ཕོགས་ཀྱི་ཕྱོགས་ཆ་ན། །ནུབ་ཅེས་བྱ་བའི་རི་བོ་ཡོད།། पश्चिमेऽस्मिन् दिशो भागे अष्टङ्गो [अस्तको] नाम पर्वतः। ल.वि.186[ख]/ 284; •= ནུབ་པ།

ནུབ་ཏུ पश्चिमे – དབང་མོའི་མདུན་གྱི་འདབ་མ་ལ་སོགས་པ་ལ་རྡོ་རྗེ་འོད་དང…ཤིན་ཏུ་སྒྲོལ་མ་སྣེ་པདྨ་ནོར་འདབ་རྡོ་རྗེ་ལག་མ་ལྷག་པའི་ལྷ་ཅན་ལའོ་ཞེས་པ་ནུབ་ཏུའོ།། ऐन्द्रयाः पूर्वपत्रादौ वज्राभा…सुतारा कमलवसुदले वज्रहस्ताधिदैवे पश्चिमे वि.प्र.41[ख]/4.31; पश्चिमेन–ལྷོར་ནི་རིན་ཆེན་བྲི་བྱ་ཞིང་། །ནུབ་ཏུ་ཆུ་སྐྱེས་པད་མ་[དམ་པ་]སྟེ། །བྱང་དུ་གདོན་མི་ཟ་ཞེས་གྲགས།། दक्षिणेन लिखेद् रत्नं पश्चिमेनाम्बुजोत्तमम्। उत्तरेणामोघाख्यातम् स.दु.115[क]/190.

ནུབ་ཀ अस्तगमनम् – ཉིན་མོ་ཞེས་བྱ་བ་ནི་ཉི་མ་འཆར་ཀའི་དུས་ནས་བཟུང་སྟེ་ཉི་མ་ནུབ་ཀའི་བར་གྱི་དུས་གང་ཡིན་པའོ།། दिवा उच्यते–सूर्यस्याभ्युद्गमनसमयमुपादाय यावदस्तगमनसमयात् श्रा.भू.39[क]/99.

ནུབ་ཀྱི་སྒོ = ནུབ་སྒོ पश्चिमद्वारम् – ནུབ་ཀྱི་སྒོར་རེངས་བྱེད་དང་དེའི་ཕྱག་རྒྱ་མཐའ་ཡས་བརྩོན་འགྲུས་མ पश्चिमद्वारे स्तम्भकोऽनन्तवीर्या तस्य मुद्रा वि.प्र.51[क]/4.58; ནུབ་སྒོའི་དྲུང་དུ་པད་མ་ལ། །གནས་པའི་ཟླ་བའི་དཀྱིལ་འཁོར་དུ།། पश्चिमद्वारासीनः पद्मस्थचन्द्रमण्डले। स.दु.110[क]/168; पश्चिमं द्वारम् – རོ་ལངས་མ་ཡང་ཕྱུང་ནས་ནི། །ཕྱུང་ནས་ནུབ་ཀྱི་སྒོ་རུ་ནི།། वेताली निःसृता पुनः। निःसृत्य पश्चिमे द्वारे हे.त.24[क]/78.

ནུབ་ཀྱི་ཕྱོགས་སྐྱོང = ཆུ་ལྷ पश्चिमदिक्पालः, वरुणः छो.को.467/रा.को.4.275.

ནུབ་ཀྱི་བ་གླང་སྤྱོད = ནུབ་ཀྱི་བ་ལང་སྤྱོད།

ནུབ་ཀྱི་བ་གླང་སྤྱོད་ཀྱི་ཡི་གེ अपरगोदानीलिपिः, लिपिविशेषः – ཚངས་པའི་ཡི་གེའམ…ནུབ་ཀྱི་བ་གླང་སྤྱོད་ཀྱི་ཡི་གེའམ… འབྱུང་པོ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་སྒྲ་སྡུད་པའི་ཡི་གེའམ… ཡི་གེ་དྲུག་ཅུ་རྩ་བཞི་པོ་དེ་དག་གི་ནང་ནས ब्रा-

ह्री...अपरगोडा[? दा]नीलिपिं...सर्वभूतरुतग्रहणीम् । आसां...चतुष्षष्टीलिपीनाम् ल.वि.66ख/88.

ནུབ་གྱི་བ་ལང་སྤྱོད *ना.* अपरगोदानीयः, द्वीपः – འཛམ་བུའི་གླིང་དང་ཤར་གྱི་ལུས་འཕགས་དང་ནུབ་གྱི་བ་ལང་སྤྱོད་དང་བྱང་གི་སྒྲ་མི་སྙན་སྟོང་དང་ཉི་མ་དང་ཟླ་བ་དང་རི་རབ་སྟོང་དང་རྒྱལ་ཆེན་བཞིའི་རིས་ཀྱི་ལྷ་རྣམས་ནས་གཞན་འཕྲུལ་དབང་བྱེད་ཀྱི་བར་སྟོང་དང་ཚངས་པའི་འཇིག་རྟེན་[སྟོང་] འདི་ནི་སྟོང་སྤྱི་ཕུད་ཀྱི་འཇིག་རྟེན་གྱི་ཁམས་ཞེས་བྱའོ॥ सहस्रं जम्बूद्वीपानां पूर्वविदेहानामपरगोदानीयानामुत्तरकुरूणाम्, सहस्रं सूर्याणां चन्द्राणां सुमेरूणाम्, सहस्रं चातुर्महाराजकायिकानां देवानां यावत् परनिर्मितवशवर्तिनाम्, सहस्रं ब्रह्मलोकानाम्, अयमुच्यते साहस्रचूडिको लोकधातुः अभि.भा.152क/528; अवरगोदानीयः – བདག་ལ་འཛམ་བུའི་གླིང... ཤར་གྱི་ལུས་འཕགས་དང་ནུབ་གྱི་བ་ལང་སྤྱོད་དང་བྱང་གི་སྒྲ་མི་སྙན་གྱི་གླིང་ཡང་ཡོད अस्ति मे जम्बुद्वीपः...पूर्वविदेहः अवरगोदानीयः उत्तरकुरुश्च वि.व.179ख/1.60; གླིང་བཞི་སྟེ། འཛམ་བུའི་གླིང་དང་ཤར་གྱི་ལུས་འཕགས་གླིང་དང་ནུབ་གྱི་བ་ལང་སྤྱོད་དང་བྱང་གི་སྒྲ་མི་སྙན चत्वारो द्वीपाः– जम्बूद्वीपः, पूर्वविदेहः, अवरगोदानीयः, उत्तरकुरुश्च अभि.भा.108ख/381; अपरगोदानी – ཟུར་ཕྱེད་གཞན་ན་གནས་པ་ནི་ལྷུན་པོའི་ནུབ་བ་ལང་སྤྱོད་དུ་འགྲོའོ॥ अपरकोणार्द्धस्थो मेरोरपरगोदान्यां गच्छति वि.प्र.193ख/1.60; गोदावरी – ནུབ་གྱི་བ་ལང་སྤྱོད་ཀྱི་གླིང་གི་ཚད་དུ་ནི་ནུབ་ཀྱི་བ་ལང་སྤྱོད་ཀྱི་གླིང गोदावरीद्वीपप्रमाणेन गोदावरीद्वीपाः र.व्या.86ख/22.

ནུབ་གྱི་རི *ना.* अस्तः, पर्वतः – ནུབ་ཀྱི་རི་མགོར་ལྷུང་བ་ཡི། །མཐའ་དག་ཉི་འོད་མལ་སྟན་ཅན། །མཐིགས་པའི་ནུ་མ་ལ་གནས་པའི། །གོས་དམར་མཛེས་བཞིན་ཆུ་ལྡན་མ॥ अस्तमस्तकपर्यस्तसमस्तार्कांशुसंस्तरा। पीनस्तनस्थिताताम्रकम्रवस्त्रेव वारुणी ॥ का.आ.321क/1.82; པད་མ་ཅན་དགའ་ཉིན་མོའི་མཐར། །ནུབ་རིའི་རྫས་ལ་འཁོད་པ་ན॥ दिनान्ते पद्मिनीकान्ते विश्रान्तेऽस्ततटान्तरे। अ.क.301क/108.68; अस्ताद्रिः – ཤར་གྱི་རི་བོས་ནུབ་ཀྱི་རི་ལ་སྦྱོར་བའི་བྱ་བ་རབ་ཏུ་བྱེད॥ प्रकुर्वन्त्यस्ताद्रेरुदयगिरिणा क्लेशकलनाम् अ.क.318क/40.128; अस्ताचलः – ཆུ་ཟེར་ཅན་ནི་ཡོངས་ངལ་བཞིན། །ནུབ་ཀྱི་རི་དང་ཉེ་བར་སླེབ॥ अवापास्ताचलोपान्तं परिश्रान्त इवांशुमान् ॥ अ.क.65ख/6.144; अस्तगिरिः – ཟླ་བའི་དཀྱིལ་འཁོར་ནུབ་ཀྱི་རི་ཁར་ནུབ་པ་བཞིན॥ पर्यस्तबिम्ब इव चास्तगिरेः शशाङ्कः जा.मा.183क/212.

ནུབ་ཀྱི་རི་བོ = ནུབ་ཀྱི་རི།

ནུབ་ཀྱི་རི་བོ་སྡེ = ནུབ་ཀྱི་རི་བོའི་སྡེ།

ནུབ་ཀྱི་རི་བོ་པ अपरशैलाः, निकायविशेषः ब.अ.27; द्र. ནུབ་ཀྱི་རི་བོའི་སྡེ།

ནུབ་ཀྱི་རི་བོའི་སྡེ अपरशैलाः, निकायविशेषः म.व्यु.9091(125ख); द्र. ནུབ་ཀྱི་རི་བོ་པ།

ནུབ་གྱུར = ནུབ་པར་གྱུར་པ།

ནུབ་གྱུར་པ = ནུབ་པར་གྱུར་པ།

ནུབ་གླིང = ནུབ་ཀྱི་གླིང།

ནུབ་ཏུ་ཁ་བལྟས་པ *वि.* प्रत्यङ्मुखः – ཤར་དུ་ཁ་བལྟས་པ་མེ་ལོང་ལ་ལྟ་བ་ན་ཇི་ལྟར་ནུབ་ཏུ་ཁ་བལྟས་པར་འགྱུར प्राङ्मुखो दर्पणमवलोकयन् कथमिव प्रत्यङ्मुखो भवति त.प.148ख/749; द्र. ནུབ་ཏུ་བལྟས་པ།

ནུབ་ཏུ་ཆ་བ अस्तंगमनम् – ཉི་མ་ནུབ་ཏུ་ཆ་བའི་ཚེ आ-

दित्यास्तंगमनकाले ग.व्यू.159ख/243.

ནུབ་ཏུ་བལྟས = ནུབ་ཏུ་བལྟས་པ།

ནུབ་ཏུ་བལྟས་པ *वि.* प्रत्यङ्मुखः – ཤར་བལྟས་མེ་ལོང་ལ་བལྟས་ན། །ནུབ་ཏུ་བལྟས་པར་ཇི་ལྟར་འགྱུར།། प्राङ्मुखो दर्पणं पश्यन् स्याच्च प्रत्यङ्मुखः कथम् ॥ त.स. 81क/749; द्र. ནུབ་ཏུ་ཁ་བལྟས་པ།

ནུབ་པ •*क्रि. (अवि.; अक.)* विलीयति – མེ་དང་ཆུ་དང་དུག་སོགས་ལ། །ཐབས་ནི་གང་གིས་མི་ཤེས་པ། །དེ་ནི་ཞིག་དང་ནུབ་པ་དང་། འཆི་བར་འགྱུར་བར་ཐེ་ཚོམ་མེད།། उपायं ये न जानन्ति वह्नितोयविषादिषु । ते विलीयन्ति दह्यन्ते म्रियन्ते नात्र संशयः ॥ गु.सि.26ख/58; •*सं.* 1. अस्तम् – དེ་བཞིན་དུ་དུམ་བུ་བཅུ་གཉིས་སུ་ཇི་ལྟར་འཆར་བ་ཤར་ཡིན་པ་དེ་བཞིན་དུ་དེ་ནུབ་པ་ནི་ནུབ་ཏུ་རིག་པར་བྱའོ།། एवं द्वादशखण्डेषु यथा पूर्वे उदयस्तथा पश्चिमेऽस्तमेतद् वेदितव्यम् वि.प्र.194क/282; अस्तंगमः – རེག་པ་འགགས་པས་ནི་ཚོར་བ་ནུབ་པ་ཡིན་ནོ།། स्पर्शनिरोधाद्वेदनाया अस्तंगमः अभि.स्फु.165ख/905; དེ་གཟུགས་སུ་འདུ་ཤེས་པ་ལས་རྣམ་པ་ཐམས་ཅད་དུ་འདས་ནས། ཐོགས་པའི་འདུ་ཤེས་རྣམས་ནུབ་སྟེ स सर्वशो रूपसंज्ञानां समतिक्रमात् प्रतिघसंज्ञानामस्तंगमात् द.भू.198ख/20; ནུབ་པ་ཞེས་བྱ་བ་དེ་ནི་འགོག་པའི་ཚིག་བླ་དྭགས་ཏེ अस्तंगम इति निरोधस्यैतदधिवचनम् सु.प.26क/5; རབ་ཀྱི་རྩལ་གྱིས་རྣམ་པར་གནོན་པ་ཤེས་རབ་ཀྱི་ཕ་རོལ་ཏུ་ཕྱིན་པ་འདི་ནི་ཆོས་གང་འབྲི་བའི་ཕྱིར་རམ་འཕེལ་བའི་ཕྱིར་ཉེ་བར་གནས་པ་མ་ཡིན་ནོ།། ཆོས་གང་འདུ་བའི་ཕྱིར་རམ...ནུབ་པའི་ཕྱིར་རམ...རབ་ཏུ་མ་རྟོགས་པའི་ཕྱིར་ཉེ་བར་གནས་པ་མ་ཡིན་ནོ།། न खलु पुनरियं सुविक्रान्तविक्रामिन् प्रज्ञापारमिता कस्यचिद्धर्मस्य हानाय वा विवृद्धये वा प्रत्युपस्थिता, नापि कस्यचिद्धर्मस्य संयोगाय...अस्तंगमाय वा...अप्रतिवेधाय वा प्रत्युपस्थिता सु.प.46ख/24; अस्तंगमनम् – ཆོས་འཕགས་སྟན་ལས་ལངས་ཏེ་བདག་གི་ཁྱིམ་དུ་ཞུགས་པ་དང་ཉི་མ་ནུབ་པར་གྱུར་ཏོ།། धर्मोद्गतः...उत्थायासनात् स्वकं गृहं प्राविक्षत् सूर्यस्य चास्तंगमनकालोऽभूत् अ.सा.454क/256; अस्तमनम् – ད་ནི་གཟའ་རྣམས་ཀྱི་འཆར་བ་དང་ནུབ་པའི་དུས་གསུངས་པ इदानीं ग्रहाणामस्तमनोदयकाल उच्यते वि.प्र.187ख/1.50; अस्तमयः – བདག་གིས་ནམ་ཕྱེད་དམ་ཟླ་བ་ཤར་བའམ་ཟླ་བ་ནུབ་པའི་ཚེ་སད་པར་བྱའོ།། अर्धरात्रे चन्द्रोदये चन्द्रास्तमये वा मया प्रबोद्धव्यम् अभि.स्फु.298क/1155; अत्ययः – ཉི་མ་ནུབ་ཚེ་ཉི་མའི་དཀྱིལ་འཁོར་དྲི་མེད་བཞིན།། दिनात्यये विमलमिवार्कमण्डलम् जा.मा.134ख/155 2. अन्तर्धानम् – བཅོམ་ལྡན་འདས་ཡོངས་སུ་མྱ་ངན་ལས་འདས་ཏེ། བསྟན་པ་ནུབ་པའི་དུས་ལ་བབ་སྟེ भगवति परिनिर्वृते शासनान्तर्धानकालसमये म.मू.272क/427; རབ་ཀྱི་རྩལ་གྱིས་རྣམ་པར་གནོན་པ་ཤེས་རབ་ཀྱི་ཕ་རོལ་ཏུ་ཕྱིན་པ་འདི་ནི་ཆོས་གང་འབྲི་བའི་ཕྱིར་རམ་འཕེལ་བའི་ཕྱིར་ཉེ་བར་གནས་པ་མ་ཡིན་ནོ།། ཆོས་གང་འདུ་བའི་ཕྱིར་རམ...ནུབ་པའི་ཕྱིར་རམ...རབ་ཏུ་མ་རྟོགས་པའི་ཕྱིར་ཉེ་བར་གནས་པ་མ་ཡིན་ནོ།། न खलु पुनरियं सुविक्रान्तविक्रामिन् प्रज्ञापारमिता कस्यचिद्धर्मस्य हानाय वा विवृद्धये वा प्रत्युपस्थिता, नापि कस्यचिद्धर्मस्य संयोगाय...अन्तर्धानाय वा...अप्रतिवेधाय वा प्रत्युपस्थिता सु.प.47क/24; व्ययः – གཟུགས་བརྙན་ཤར་ནུབ बिम्बोदयव्ययम् र.वि.68ख/102; क्षयः – འཁོར་བ་ཉིན་མོ་ནུབ་མོ་ཡི། །འཆར་ནུབ་གཞན་དུ་གྱུར་པ་དག།། क्षयोदयपरावृत्तिः संसारदिनयामिन्योः अ.क.167क/19.37; पराभवः – ཟླ་བའི་ཟེར་གྱིས་རེག་པ་ན། །སྨུན

པའི་གྲིབ་པ་ནུབ་པར་འགྱུར༎ याति चन्द्रांशुभिः स्पृष्टा ध्वान्तराजी पराभवम्। का.आ.333ख/2.347; निवृत्तिः – དེ་འགགས་ཤིང་ནུབ་པ तेषां निरोधो निवृत्तिः न्या.टी.73क/191 3. निमज्जनम् – ཞུགས་ཤིང་ནུབ་པ་དང་འབྱུང་བ…འདྲེན་པ་དག་བྱེད་ན་དངོས་གཞིའོ༎ अवतीर्णस्य निमज्जनोन्मज्जन…आकर्षका[णा]नां मौलम् वि.सू.44ख/56; • भू.का.कृ. अस्तंगतः – ཇི་ལྟར་ལུས་ཀུན་འབྱུང་བ་དང་ནུབ་པ་དག་བཤད་པ यथा कायस्य समुदयास्तंगतावुक्तौ अभि.स्फु.165ख/905; अस्तंगमितः – ཉི་མའི་དཀྱིལ་འཁོར་ནུབ་ན་ནི་ནུབ་མོར་སྣང་ངོ་༎ अस्तंगमिते सूर्यमण्डले रात्रिः प्रज्ञायते ग.व्यू.188ख/271; पर्यस्तः – ཟླ་བའི་དཀྱིལ་འཁོར་ནུབ་ཀྱི་རི་ཁར་ནུབ་པ་བཞིན༎ पर्यस्तबिम्ब इव चास्तगिरेः शशाङ्कः जा.मा.183क/212; निमग्नः – མཚན་མོའི་ཟླ་བ་སྤྲིན་ནང་ནུབ་པ་ནི། །གནམ་སའི་ཕྱེ་ཕྲག་མཛེས་པ་མེད་པ་བཞིན༎ निमग्नचन्द्रेव निशा समेघा [ऽ]शोभां विभागं च दिवस्पृथिव्योः ॥ जा.मा.73ख/85; འཁོར་བའི་ཆུར་ནི་ནུབ་པ་ཡི། །ཤེས་པས संसारजलनिमग्न…ज्ञानम् ज्ञा.सि.54क/139; गतः – མདོམས་ཀྱི་སྦ་བ་སྦུབས་སུ་ནུབ་པ་རྣམས་ཀྱི་ཅིའི་ཕྱིར་མི་མཛེས་པར་འགྱུར कोशगतवस्तिगुह्यानां किं न शोभते अभि.भा.41ख/86; उपगतः – མདོམས་ཀྱི་སྦ་བ་སྦུབས་སུ་ནུབ་པ कोशोपगतवस्तिगुह्यः ल.वि.57क/75; अन्तर्हितः – དགེ་སློང་དག་རྟགས་ཟུང་ཤིག ནུབ་པར་འགྱུར་རོ་ཞེས་པ་དང་ནུབ་བོ༎ उद्गृह्णीत भिक्षवो निमित्तम्। अन्तर्धास्यतीत्यन्तर्हितम् वि.व.160ख/1.49; གཞན་དག་དམ་ཆོས་ནུབ་པ་ལས༎ सद्धर्मान्तर्हितोऽपरे अभि.को.12क/643; अनुप्रविष्टः – ཀྱེ་མ་སེམས་ཅན་འདི་དག་ནི…བདུད་ཀྱི་བསམ་པ་ཐིབས་པོར་ནུབ་པ बतेमे सत्त्वाः…माराशयगहनानुप्रविष्टाः द.भू.191ख/17; •वि. दघ्नः – དེ་ཡིས་ཆུ་[ཀྲུ་]ཡི་ལམ་དག་ཏུ། །ལོང་བུ་ཙམ་ལ་ཉིན་བདུན་ཕྱིན། །པུས་ནུབ་ཙམ་ལ་ཉིན་བདུན་དང་༎ गुल्फमात्रेण सप्ताहं गत्वा जङ्गमवर्त्मना। जानुदघ्नेन सप्ताहम् अ.क.353क/47.23.

ནུབ་པ་མ་ཡིན་པ अनन्तर्धानम् – རབ་ཀྱི་རྩལ་གྱིས་རྣམ་པར་གནོན་པ་ཤེས་རབ་ཀྱི་ཕ་རོལ་ཏུ་ཕྱིན་པ་འདི་ནི་ཆོས་གང་འགྲི་བའི་ཕྱིར་རམ་འཕེལ་བའི་ཕྱིར་ཉེ་བར་གནས་པ་མ་ཡིན་ནོ༎ ཆོས་གང་འདུ་བའི་ཕྱིར་རམ…ནུབ་པ་མ་ཡིན་པའི་ཕྱིར་རམ…རབ་ཏུ་མ་རྟོགས་པའི་ཕྱིར་ཉེ་བར་གནས་པ་མ་ཡིན་ནོ༎ न खलु पुनरियं सुविक्रान्तविक्रामिन् प्रज्ञापारमिता कस्यचिद्धर्मस्य हानाय वा विवृद्धये वा प्रत्युपस्थिता, नापि कस्यचिद्धर्मस्य संयोगाय…अनन्तर्धानाय वा…अप्रतिवेधाय वा प्रत्युपस्थिता सु.प.47क/24.

ནུབ་པ་རབ་ཏུ་རྟོགས་པ *पा.* अस्तंगमप्रतिवेधः – རབ་ཀྱི་རྩལ་གྱིས་རྣམ་པར་གནོན་པ་དེ་ལྟར་སྐྱེ་བ་མེད་ཅིང་འགག་པ་མེད་པའི་ཕྱིར་གང་འབྱུང་བ་དང་ནུབ་པ་རྟོགས་པ་དེ་ནི་ནུབ་པ་རབ་ཏུ་རྟོགས་པ་སྟེ एवं सुविक्रान्तविक्रामिन् यः समुदयास्तंगमप्रतिवेधः अनुत्पादाय अनिरोधाय, सोऽस्तंगमप्रतिवेधः सु.प.26क/6.

ནུབ་པར་གྱུར = ནུབ་པར་གྱུར་པ།

ནུབ་པར་གྱུར་པ •*क्रि.* 1. अन्तरधीयत – བཅོམ་ལྡན་འདས་ཀྱི་དབུའི་གཙུག་ཏུ་ནུབ་པར་གྱུར་ཏོ༎ भगवत एव मूर्ध्नि अन्तरधीयत अ.सा.321क/180 2. <?>पराभवति – ཚ་ཟེར་ཅན་ནི་ནུབ་གྱུར་ཏེ། །ལུས་སྐྱེས་དག་ནི་རྣམ་པར་རྒྱས༎ पराभवति घर्मांशुरङ्गजस्तु विजृम्भते ॥ का.आ.332ख/2.315; • *सं.* अस्तंगमः – ཐོགས་པའི་འདུ་ཤེས་རྣམས་ནུབ་པར་གྱུར་ཅིང प्रतिघसंज्ञानामस्तंगमात् अभि.स्फु.306क/1175; • *भू.का.कृ.*

अस्तंगतः – པ་སངས་ནུབ་པར་གྱུར་ शुक्रे अस्तंगते वि.प्र.107ख/3.30; ནུབ་པར་གྱུར་པའི་གཟའ अस्तंगतो ग्रहः वि.प्र.188क/1.50; गतोऽस्तम् – ཉི་མ་ནུབ་གྱུར་ཟླ་བ་མཛེས॥ गतोऽस्तमर्को भातीन्दुः का.आ.330क/2.241; अन्तर्हितः – དེའི་རྙེད་པ་དང་བཀུར་སྟི་ནུབ་པར་གྱུར་ तस्य लाभसत्कारोऽन्तर्हितः वि.व.317क/1.130; དམ་པའི་ཆོས་ནུབ་པར་མ་གྱུར་པའི་བར་ यावच्च सद्धर्मो नान्तर्हितः अ.सा.120ख/69; द्र. ནུབ་པར་གྱུར་པར་བསྒོམ་པར་བྱ།

ནུབ་པར་གྱུར་པར་བསྒོམ་པར་བྱ *क्रि.* अन्तर्भावयेत् – དམ་ཚིག་གི་དཀྱིལ་འཁོར་རང་གི་སྔགས་སུ་ནུབ་པར་གྱུར་པར་བསྒོམ་པར་བྱའོ॥ समयमण्डलं स्वमन्त्रेऽन्तर्भावयेत् ख.टी.165क/247.

ནུབ་པར་འགྱུར = ནུབ་པར་འགྱུར་བ།

ནུབ་པར་འགྱུར་བ • *क्रि.* 1. अस्तं गच्छति – དབང་བསྐུར་བའི་ས་ཐོབ་པའི་བྱང་ཆུབ་སེམས་པ་རྣམས་སྣང་བར་བྱས་ནས། དེ་དག་གི་ལུས་སུ་ནུབ་པར་འགྱུར་རོ॥ अभिषेकभूमिप्राप्तान् बोधिसत्त्वान् अवभास्य तत्कायेष्वेवास्तं गच्छन्ति द.भू.263क/56 2. अन्तर्धास्यति – རྩོད་པ་དང་རྒོལ་བ་དང་འགལ་བར་བྱེད་པའི་གཞི་སྐྱེས་ཤིང་སྐྱེས་པ་གང་ཡིན་པ་དེ་དག...ནུབ་པར་འགྱུར་ལ यानि तान्युत्पन्नोत्पन्नान्यधिकरणानि विग्रहा विवादा विरोधा भविष्यन्ति, ते...अन्तर्धास्यन्ति अ.सा.46ख/26; དགེ་སློང་དག་རྟགས་ཟུངས་ཤིག། ནུབ་པར་འགྱུར་རོ་ཞེས་པ་དང་ནུབ་པོ॥ उद्गृहीत भिक्षवो निमित्तम्। अन्तर्धास्यतीत्यन्तर्हितम् वि.व.160ख/1.49; • *सं.* अस्तंगमः – འགོག་པ་དང་ལམ་གྱི་བདེན་པ་གཉིས་ཀྱིས་ནི་ནུབ་པར་འགྱུར་ཏེ། གང་ཡིན་པ་དང་གང་གིས་ནུབ་པར་འགྱུར་བའི་ཕྱིར་རོ॥ द्वाभ्यामस्तंगमो निरोधमार्गसत्याभ्याम्। यश्चास्तंगमो येन चेति कृत्वा सू.व्या.223ख/132; * • *भू.का.कृ.* प्रत्यस्तमितम्, अस्तंगतम् – དེའི་ཚེ་འཇིགས་པ་མེད་འགྱུར་ཏེ་ནུབ་པར་འགྱུར་བའོ॥ तदा भयमस्तंगतं प्रत्यस्तमितम् बो.प.88ख/50.

ནུབ་པར་བྱེད = ནུབ་པར་བྱེད་པ།

ནུབ་པར་བྱེད་པ • *क्रि.* अन्तर्धापयिष्यति – དེ་དག་མཚང་འདྲུ་བ་དང་འཐབ་པ་དང་། །ཕྲག་དོག་དབང་གིས་ཆོས་འདི་ནུབ་པར་བྱེད॥ तेऽन्तर हा[तेऽन्तर्धा]पयिष्यन्ति मधर्मं [मद्धर्मं] भण्डनविग्रहईर्ष्यवशेन ॥ रा.प.235क/130; • *सं.* अन्तर्धानम् – སངས་རྒྱས་དང་སངས་རྒྱས་ཀྱི་སྲས་རྣམས་ཡོངས་སུ་མྱ་ངན་ལས་འདས་ཏེ་འགྲོ་བ་མགོན་མེད་པ་ན་བསྟན་པ་ནུབ་པར་བྱེད་པའི་རྒྱུ बुद्धबुद्धपुत्रेषु हि परिनिर्वृतेषु अनाथे जगति शासनान्तर्धानहेतुभिः अभि.स्फु.312क/1188; • *वि.* अन्तर्धायकः – བསྟན་པ་ནུབ་པར་བྱེད་པ་དམ་པའི་ཆོས་ལྟར་བཅོས་པ་རྣམས་ཡོངས་སུ་ཤེས་པ་དང་བསྟན་པ་དང་བསལ་བས་ཆོས་ཀྱི་ཚུལ་ཡུན་རིང་པོར་ཡོངས་སུ་སྐྱོང་ཅིང་ཡང་དག་པར་འཛིན་པ धर्मनेत्र्याश्च दीर्घकालं परिकर्षणं सन्धारणं सद्धर्मप्रतिरूपकाणां शासनान्तर्धायकानां परिज्ञानप्रकाशनापकर्षणतया बो.भू.31ख/38.

ནུབ་ཕྱོགས • *वि.* पश्चिमः – ནུབ་ཕྱོགས་དང་བྱང་ཕྱོགས་ཀྱི་རླུང་ पश्चिमा उत्तरा वायवः शि.स.137ख/133; ནུབ་ཕྱོགས་ལོགས་ཀྱི་ཕྱོགས་ཆ་ན། །ལྷ་མོ་གཞོན་ནུ་བརྒྱད་ཡོད་དེ॥ पश्चिमेऽस्मिन् दिशो भागे अष्टौ देवकुमारिकाः । ल.वि.183ख/284; • *सं.* पश्चिमा दिक् – ཤར་ཕྱོགས་དམའ་ན་ནུབ་ཕྱོགས་མཐོ पूर्वा दिगवनमति पश्चिमा दिगुन्नमति म.व्यु.3020(53ख); ནུབ་ཕྱོགས

དམའ་ན་ཤར་ཕྱོགས་མཐོ पश्चिमा दिगवनमति पूर्वा दिगुन्नमति म.व्यु.3021(53ख); प्रतीची– ཁྱབ་ལ་ནུབ་ཕྱོགས་ལ་སོགས་པར། །རྟོགས་མིན་གཞན་པ་ལས་མ་ཡིན། །དེ་ལ་གཞན་འགྲོ་[གོ་]ཡོད་མིན་ཏེ། །དེ་ནི་མེད་པར་ཐལ་ཕྱིར་རོ།། व्यापित्वेन[त्वे न] प्रतीच्यादिप्रत्ययो नेतरत्वतः। गतिर्नास्त्यपरा तस्यास्तदभावप्रसङ्गतः ॥ प्र.अ.164क/513; वारुणी श्री.को.184क।

ནུབ་ཕྱོགས་ན पश्चिमेन – ནུབ་ཕྱོགས་ན་དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་ཚེ་དཔག་མེད་ཅེས་བྱ་བ पश्चिमेनामितायुर्नाम तथागतः सु.प्र.32ख/63.

ནུབ་ཕྱོགས་ལོགས་སུ पश्चिमे दिग्भागे – འདི་ནས་ནུབ་ཕྱོགས་ལོགས་སུ...འཇིག་རྟེན་གྱི་ཁམས་བདེ་བ་ཅན་ཞེས་བྱ་བ་ཡོད་དེ अस्ति...पश्चिमे दिग्भागे इतः...सुखावती नाम लोकधातुः सु.व्यू.196क/254.

ནུབ་ཕྱོགས་ལྷ་བ *अव्य.* प्रत्यक् – ཤར་དུ་སོང་འཇུག་པ་ཡིས་ནི། །ནུབ་ཕྱོགས་སོང་འཇུག་ལ་བཀོད་པས། །གདོང་མཐོང་བ་ན་འཁྲུལ་པ་ཡིན། །ནུབ་ཕྱོགས་ལྷ་བར་རྟོགས་པ་མིན།། नैवं प्राङ्नतया वृत्त्या प्रत्यग्वृत्तिसमर्पितम्। बुध्यमानो मुखं भ्रान्त्या प्रत्यगित्यवगच्छति ॥ त.स. 96क/846.

ནུབ་ཕྱོགས་བདག = ནུབ་ཕྱོགས་བདག་པོ།

ནུབ་ཕྱོགས་བདག་པོ = ཆུ་ལྷ पश्चिमदिक्पतिः, वरुणः छो.को.467/मो.को.612.

ནུབ་ཕྱོགས་པ *वि.* पाश्चात्यः – ནུབ་ཕྱོགས་པ་རྣམས་ན་རེ། ཀུན་ཏུ་བསྡུས་པ་ནི་གཉིད་དང་མཚུངས་པར་ལྡན་པ་ཡིན་ནོ།། རྣམ་པར་གཡེང་བ་ནི་ཉོན་མོངས་པ་ཅན་གཞན་ཡིན་ནོ་ཞེས་ཟེར་རོ།། संक्षिप्तं मिद्धसंप्रयुक्तं विक्षिप्तमन्यत् क्लिष्टमिति पाश्चात्याः अभि.भा.46क/1047.

ནུབ་ཕྱོགས་སོང *अव्य.* प्रत्यक् – ཤར་དུ་སོང་འཇུག་པ་ཡིས་ནི། །ནུབ་ཕྱོགས་སོང་འཇུག་ལ་བཀོད་པས། །གདོང་མཐོང་བ་ན་འཁྲུལ་པ་ཡིན། །ནུབ་ཕྱོགས་ལྷ་བར་རྟོགས་པ་མིན།། नैवं प्राङ्नतया वृत्त्या प्रत्यग्वृत्तिसमर्पितम्। बुध्यमानो मुखं भ्रान्त्या प्रत्यगित्यवगच्छति ॥ त.स. 96क/846.

ནུབ་བ་གླང་སྤྱོད = ནུབ་ཀྱི་བ་ལང་སྤྱོད།

ནུབ་བ་ལང་སྤྱོད = ནུབ་ཀྱི་བ་ལང་སྤྱོད།

ནུབ་བྱ *क्रि.* निमज्जयेत् लो.को.1352.

ནུབ་བྱང पश्चिमोत्तरा, दिग्भेदः म.व्यु.8334(115ख).

ནུབ་མོ रात्रिः – ཉི་མའི་དཀྱིལ་འཁོར་ནུབ་ན་ནི་ནུབ་མོར་སྣང་ངོ་།། अस्तंगमिते सूर्यमण्डले रात्रिः प्रज्ञायते ग.व्यू.188ख/271; དེས...ནུབ་མོ་ཉལ་བ་དང सः...रात्रौ शयितः वि.व.134ख/1.23; निशा – ཚེས་བརྒྱད་དང་བཅུ་བཞི་དང་བཅོ་ལྔའི་ནུབ་མོ་ཆོས་མཉན་པར་བྱའོ།། धर्मश्रवणं कुर्युः निशायाम् अष्टम्यां चतुर्दश्यां पञ्चदश्याञ्च वि.सू.59ख/76; यामिनी – འཁོར་བ་ཉིན་མོ་ནུབ་མོ་ཡི། །འཆར་ནུབ་གཞན་དུ་གྱུར་པ་དག।। क्षयोदयपरावृत्तिः संसारदिनयामिन्योः अ.क.167क/19.37.

ནུབ་རི = ནུབ་ཀྱི་རི།

ནུར་ནུར = ནུར་ནུར་པོ།

ནུར་ནུར་པོ कललः, ०लम्, प्रथमगर्भावस्था– དང་པོར་ནུར་ནུར་པོ་ཡིན་ནོ།།... ནུར་ནུར་པོ་དང་མེར་མེར་པོ་དང་ནར་ནར་པོ་དང་མཁྲང་འགྱུར་དང་རྐང་ལག་འགྱུས་པའི་གནས་སྐབས་དེ་དག་ནི་མངལ་གྱི་གནས་སྐབས་ལྔ་ཡིན་ནོ།། कललं प्रथमं भवति...एताः पञ्च गर्भावस्थाः कललार्बुदपेशीघनप्रशाखावस्थाः अभि.भा.123क/

433; ནུར་ནུར་པོ་དང་མེར་མེར་པོ་དང་ནར་ནར་པོ་ལ་སོགས་པར་གྱུར་པ་རྣམས་ལ་ཡང་ལུས་ཁྱད་པར་ཅན་མེད་པའི་ཕྱིར་མེད་དོ॥ कललार्बुदपेश्यादिगतानां च न भवन्ति, कायविशेषाभावात् अभि.स्फु.164[क]/901.

ནུར་ཞིང་འཁྲུགས་པ क्लेदवैक्लव्यम् – ཤ་ཡི་རང་བཞིན་ལུས་པོ་འདི། །དམན་པ་ཡིན་ཡང་སྐད་ཅིག་གང་། །ནུར་ཞིང་འཁྲུགས་པར་མི་འགྱུར་བ། །འདི་ཉིད་ཡ་མཚན་ཤིན་ཏུ་ཆེ॥ इदमेव महच्चित्रमियं मांसमयी तनुः। न याति क्लेदवैक्लव्यं क्षणं पर्युषितेऽपि यत्॥ अ.क. 214[ख]/24.80.

ནུར་བར་བྱ་བ अपक्रमितव्यम् म.व्यु.5100(77[क]).

ནུས 1.= ནུས་པ། 2. पदांशः (: ནུ་ཡིས) – བུ། །བདུད་རྩི་གཞོན་ནུས་སྟོན་པར་འགྱུར॥ अमृतं वत्स कुमारः कथयिष्यति अ.क.212[क]/24.48.

ནུས་དང་མི་ནུས शक्त्यशक्ती – དངོས་པོ་དབྱེ་བ་མེད་པ་ལ། །ནུས་དང་མི་ནུས་མི་རིགས་སོ॥ नाविभक्तस्य युज्येते शक्त्यशक्ती हि वस्तुनः॥ त.स.7[ख]/99.

ནུས་གྱུར • क्रि. शशाक – ར་གྷུའི་བུ་དེ་བླ་མ་ཡི། །བཀའ་ལས་འདའ་བར་ནུས་མ་གྱུར॥ गुरोः शासनमत्येतुं न शशाक स राघवः। का.आ.332[क]/2.298; འགྲོ་དང་སྡོད་པར་ནུས་མ་གྱུར॥ न गन्तुं न स्थातुं...शशाक अ.क. 148[ख]/14.114; • भू.का.कृ. शक्तः – དཔའ་བོ་གླང་ཆེན་སེང་གེ་དེ། །དགྲ་ནི་རྣམ་འཇོམས་ནུས་གྱུར་ཀྱང་॥ स वीरकुञ्जरहरिः शक्तोऽप्यरिविदारणे। अ.क.27[ख]/3.95.

ནུས་གྱུར་པ = ནུས་གྱུར།

ནུས་རྒྱུ = ནུས་པའི་རྒྱུ།

ནུས་ཅན = ནུས་པ་ཅན།

ནུས་བཅས वि. शक्तः – དེ་ལ་ནུས་བཅས་དང་བྲལ་བའི། །ནུས་པ་གང་ན་སྲིད་མིན་པ॥ तत्र शक्तातिरेकेण न शक्तिर्नाम काचन। त.स.58[ख]/562; शक्तिमान् – དངོས་སུ་འམ་ནི་བརྒྱུད་པ་ཡིས། །འགའ་ལ་ཁ་ཅིག་ནུས་བཅས་ཡིན॥ पारम्पर्येण साक्षाद्वा क्वचित् किञ्चिद्धि शक्तिमत्। त.स.20[क]/215.

ནུས་ཆུང वि. स्वल्पशक्तिः – ནུས་ཆུང་བྲམ་ཟེ་རྨོངས་པ་འདིར། །མཐོང་བའི་དུག་གིས་ཟིན་པས་ན། །དབུགས་ཕྱིན་པར་ཡང་མི་ནུས་ན། །བཟློ་བར་བྱེད་པར་ཇི་ལྟར་ནུས॥ दृग्विषैरिह दृ[द]ष्टोऽपि स्वल्पशक्तिर्द्विजो जडः। उच्छ्वासमपि नो कर्तुं शक्नोति किमु बाधि[वदि]तुम्॥ त.स.123[क]/1071.

ནུས་སྟོབས ओजः – ནུས་སྟོབས་དང་། མདངས་སམ་འོད་དང་། གཟི་བརྗིད། ཁམས་རྣམས་འཆིང་བ་ལ། ཨོ་ཛཿ मि. को.88[क]।

ནུས་མཐུ प्रभावः – རང་གི་རྒྱུ་ཉིད་ལས་བྱུང་བ། །སྐད་ཅིག་གཅིག་ནི་གནས་པ་རྣམས། །སྔ་མ་སྔ་མའི་ནུས་མཐུ་ལས། །རྒྱུན་གྱིས་རྗེས་སུ་འཇུག་པ་ཡིན॥ क्षणं त्वेकमवस्थानं स्वहेतोरेव जातितः। पूर्वपूर्वप्रभावाच्च प्रबन्धेनानुवर्त्तनम्॥ त.स.26[ख]/285; सामर्थ्यम् लो.को.1352.

ནུས་དང་ལྡན = ནུས་ལྡན།

ནུས་དང་ལྡན་པ = ནུས་ལྡན།

ནུས་ལྡན = ནུས་པ་དང་ལྡན་པ • वि. शक्तिमान् – གལ་ཏེ་དེ་བྱེད་ནུས་ལྡན་ན། །དེ་ཀུན་ཅིག་ཅར་བྱེད་པར་འགྱུར॥ तत्सर्वं युगपत्कुर्याद्यदि तत्कृतिशक्तिमान्॥ त.स. 7[ख]/98; शक्त्युपेतः – མཁྱེན་དང་བརྩེ་དང་ནུས་པར་ལྡན། །དོན་གཉིས་ལྡན་པའི་སངས་རྒྱས་ཉིད॥ बुद्धत्वं ज्ञानकारुण्यशक्त्युपेतं द्वयार्थवत्॥ र.वि.55[क]/7;

सामर्थ्ययोगी – དེ་དག་སྐྱེད་པའི་ནུས་པ་དང་། །ལྡན་པའི་རྒྱུ་ནི་ཉེ་ཕྱིར་རོ།། तदुत्पादनसामर्थ्ययोगिकारणसन्निधेः ॥ त.स.7[ख]/100; शक्तः – ནུས་ལྡན་རྒྱུ་ནི་ཉེར་གནས་ཕྱིར།། शक्तकारणसन्निधेः त.स.90[क]/815; शक्तिकः – མཚུངས་པའི་ནུས་ལྡན་ཡིག་གཞན་གྱིས། །སླར་ཡང་མངོན་པར་གསལ་བར་བྱེད།། समानशक्तिकैर्वर्णैर्भूयोऽपि व्यज्यते परैः ॥ त.स.99[क]/878; समर्थः – གལ་ཏེ་སྔར་ནི་ནུས་མེད་པའང་། །དེ་དག་གིས་ནི་ནུས་ལྡན་བྱས།། प्रागशक्तः समर्थश्च यदि तैः क्रियते पुनः। त.स.86[क]/789; समर्थात्मा – གལ་ཏེ་ནུས་མེད་འདི་ནུས་དང་། །ལྡན་པར་གསལ་བྱེད་ཀྱིས་བྱེད་ན།། ह्यः [?ह्य]समर्थः समर्थात्मा व्यञ्जकैः क्रियते यदि। त.स.30[ख]/321; प्रभविष्णुः – ཀུན་གྱིས་ཐམས་ཅད་རྟོགས་པ་ན། །ཞིང་ཤེས་ནུས་དང་ལྡན་པ་རྣམས།། सर्वे सर्वावबोधे च क्षेत्रज्ञाः प्रभविष्णवः। त.स.118[ख]/1023; कलावान् – རྒྱུ་མ་ཚང་ན་འབྲས་བུ་མེད་པར་འགྱུར་གྱི། རྒྱུ་ནུས་པ་དང་ལྡན་པ་ཚང་བ་ལ་འབྲས་བུ་མི་སྐྱེའོ་ཞེས་བྱ་བ་འདི་ནི་འགལ་ལོ།། कारणवैकल्ये हि कार्यस्याभावः, सकले तु कलावति कारणे कार्यमनुत्पत्तिमदिति व्याहतम् प्र.अ.49[ख]/56; • *सं.* 1. शक्तियोगः – སེམས་ཅན་ཡོངས་སུ་སྨིན་པར་བྱེད་ནུས་པ་དང་ལྡན་པ སत्त्वपरिपाचनशक्तियोगम् सू.व्या.148[क]/ 29 2. = ནུས་ལྡན་ཉིད शक्तियोगिता – དེ་ལྟ་ཡིན་དང་དངོས་པོ་རྣམས་སོ་སོར་ངེས་པའི་ནུས་པ་དང་ལྡན་པར་མི་འགྱུར་ལ ततश्च प्रतिनियतशक्तियोगिता भावानां न स्यात् त.प.221[क]/912 3. सहाः, मार्गशीर्षमासः – मार्गशीर्षे सहा मार्ग आग्रहायणिकश्च सः। अ.को.1.4.15; शीतोष्णे सह्येतेऽत्र सहाः। सान्तः। षह मर्षणे अ.वि.1.4.15; • *ना.* བརྒྱ་བྱིན शक्रः, इन्द्रः – इन्द्रो मरुत्वान् मघवा बिडौजाः पाकशासनः।...शक्रः अ.को.1.1.43; शक्नोति दुष्टजये इति शक्रः। शक्लृ शक्तौ अ.वि.1.1.43.

ནུས་ལྡན་པ = ནུས་ལྡན།

ནུས་པ • *क्रि. (अवि., सक.)* 1.शक्नोति – མི་བདག་བལྟ་བར་ཇི་ལྟར་ནུས།། द्रष्टुं शक्नोमि नृपतिं कथम् अ.क.223[ख]/24.175; ཁྱོད་ལས་གཞན། །སུ་ཡིས་མགོ་བོ་སྦྱིན་པར་ནུས།། त्वदन्यो वा (कं) दातुं शक्नोति कः परः अ.क.51[क]/5.51; प्रभवति – ལོང་བ་བརྒྱུད་པ་ནི་གཞན་དག་ལ་གཟུགས་ཀྱི་ཁྱད་པར་འདོམ་པར་བྱ་བའི་ཕྱིར་ནུས་པ་མ་ཡིན་ནོ།། न ह्यन्धपरम्परा परेषां रूपविशेषोपदेशाय प्रभवति त.प.199[ख]/865; त.प.131[ख]/713; शक्यते – ཕྱིར་མི་འོང་བའི་འབྲས་བུ་མ་ཐོབ་པར་དང་པོ་ཁོ་ནར་དགྲ་བཅོམ་པ་ཉིད་ཐོབ་པར་ནི་མི་ནུས་སོ།། अनागामिफलमप्राप्यादित एवार्हत्त्वं प्राप्तुं न शक्यते अभि.स्फु.181[क]/934; उत्सहते – དེ་ལ་ནི་ཕྲ་རྒྱས་གཞན་དག་ཀྱང་རྒྱས་པར་ནུས་ཏེ तत्रान्येऽप्यनुशया अनुशयितुमुत्सहन्ते अभि.स्फु.10[ख]/17; प्रसहते – བདེན་པའི་ཚིག་བསྒོམས་ན་མེའང་འདའ་བར་བྱེད་མི་ནུས་སོ།། सत्यपरिभावितां वाचमग्निरपि न प्रसहते लङ्घयितुम् जा.मा.88[ख]/102; पार्यते – ངེས་པར་ནུས་པ་ཡང་མ་ཡིན་ཏེ न निश्चेतुं पार्यते त.प.94[क]/641 2. शक्ष्यति – དེ་བས་ན་འདི་དེ་ནས་བདག་རང་ཐར་བར་མི་ནུས་ཏེ न चायमतः शक्ष्यति स्वयमुत्तर्तुम् जा.मा.147[क]/170; སྤྲེའུའི་བདག་པོ་འདི...དུབ་པའི་ཕྱིར་གདོན་མི་ཟ་བར་བདག་རང་ལྡང་མི་ནུས་ཀྱི परिश्रान्तो व्यक्तमयं वानराधिपतिः, न चायमतः शक्ष्यति स्वयमात्मानं संहर्तुम् जा.मा.160[ख]/185 3. शशाक – དེ་མཐོང་གཏང་བར་ཡོངས་མ་ནུས།། तां दृष्ट्वा त्यक्तुं नैव शशाक सः अ.क.179[क]/20.44; • *सं.* 1. = མཐུ

शक्तिः – སྔགས་དང་སྨན་ལ་སོགས་པའི་ནུས་པས मन्त्रौषधादिशक्त्या त.प.187[ख]/837; དངོས་པོ་རྟོགས་པར་ནུས་པ་རིང་དུ་སྤངས་པ दूरीकृतवस्तुबोधशक्तयः त.प.323[क]/1114; བརྗོད་པར་བྱ་བ་དང་རྗོད་པར་བྱེད་པའི་ནུས་པ वाच्यवाचकशक्तिः त.प.154[क]/761; ནུས་པ་འབྲས་བུས་གཏན་རྗེས་དཔོག། नित्यं कार्यानुमेया च शक्तिः त.स.79[क]/736; प्रभावः – བད་ཀན་ལ་སོགས་ནུས་པ་ཡིས། །དེ་དག་ཀྱང་ནི་འབྱུང་བ་མིན།། बलासादिप्रभावेण न च तेषां समुद्भवः। त.स.71[ख]/668; ནུས་པ་ནི་རབ་ཏུ་བསྒོམ་པའོ།། प्रभावः प्रभावना ख.टी.165[ख]/248; पराक्रमः – དེ་དག་དོན་ནི་ནུས་ན་དཔྱད་པའི་རིགས།། चरेत्तदर्थं तु पराक्रमे सति जा.मा.138[क]/160; वीर्यम्–རི་ལ་སྨན་ནི་ནུས་པ་ཞན།། गिरौ ...मन्दवीर्यौषधिः अ.क.268[क]/32.37 2. कक्षा, साम्यम् – ཨོཾ་ཟེར་ཅན་གྱི་ནུས་པ་ལ། །མི་བདག་གཟི་ཡིས་འགྲོང་བར་ནུས།། अलमंशुमतः कक्षामारोढुन्तेजसा नृपः ॥ का.आ.323[ख]/2.53; ཤིན་ཏུ་མཛེས་ཏེ་གཞན་དུ་ནི། །གྲོང་པ་ཉིད་ཀྱི་ནུས་པ་བརྟེན།། अतिसुन्दरमन्यत्र ग्राम्यकक्षां विगाहते ॥ का.आ.321[ख]/1.95 3. = ནུས་པ་ཉིད सामर्थ्यम् – རིགས་འཛིན་པར་ནུས་པར་མི་འགྱུར་རོ།། न जातिग्रहणे सामर्थ्यमासादयेत् प्र.अ.9[क]/10; དོན་བྱེད་པར་ནུས་པ अर्थक्रियासामर्थ्यम् त.प.153[ख]/760; དུག་སེལ་བ་ལ་འབྱོར་པ་སྟེ། ནུས་པའི་མཐུ་ཡོད་པ་ཞེས་བྱ་བའི་ཐ་ཚིག་གོ།། विषापगमे भूतिः सामर्थ्यम्, प्रभाव इति यावत् त.प.213[क]/897; शक्तता – རྟོགས་པ་དང་ཐོབ་པ་དག་ནི་རྟོགས་པ་ཐོབ་པ་དག་སྟེ། ཇི་ལྟར་གནས་པའི་ཤེས་བྱའི་དངོས་པོའི་རྟོགས་པ་དང་ཐོབ་པ་གང་ཡིན་པ་དེ་ལ་དེའི་ཡུལ་ཅན་གྱི་ནུས་པ་ཞེས་ཚིག་རྣམ་པར་སྦྱར་རོ།། बोधश्चाप्तिश्च बोधाप्ती, यथावस्थितस्य विज्ञेयस्य वस्तुनो ये बोधाप्ती, तत्र तद्विषये, शक्ततेति विग्रहः त.प.219[ख]/909; वीर्यता – ནུས་པ་ནི་བསིལ་བའི་ནུས་པ་དང་དྲོ་བའི་ནུས་པ་ཉིད་དོ།། वीर्यं शीतवीर्यता, उष्णवीर्यतेति अभि.स्फु.253[ख]/1060 4. = བཟོད་པ तितिक्षा, मर्षणम् – क्षान्तिस्तितिक्षा अ.को.1.8.24; तितिक्षते तितिक्षा। तिज निशाने। निशानं सहनम् अ.वि.1.8.24 5. वीर्यम् – उत्साहो व्यवसायः स्यात् स वीर्यमतिशक्तिभाक् ॥ अ.को.1.8.29; वीरस्य कर्म वीर्यम्। अतिशक्तिसहितोद्योगनाम अ.वि.1.8.29; •*पा.* शक्तिः – རྡུ་ཞེས་པ་ནི་མི་རྣམས་ཀྱི་ལོ་སྟེ་ནུས་པའི་དབུགས་གཅིག་གོ།། ནུས་པ་ཞེས་པ་ནི་འོག་མིན་པའི་སྐྱེ་བའོ།། ध्रुरिति मनुष्याणां वर्षः। शक्तेरेकश्वासः। शक्तिरित्यकनिष्ठजातिः वि.प्र.172[क]/1.24; •*वि.* समर्थः – དོན་བྱེད་ནུས་པ་གང་། །དེ་འདིར་དོན་དམ་ཡོད་པ་ཡིན།། अर्थक्रियासमर्थं यत् तदत्र परमार्थसत्। प्र.वा.118[ख]/2.3; དེ་བས་ན་དོན་བྱེད་པར་ནུས་པའི་དངོས་པོ་བསྟན་པ་ནི་ཡང་དག་པའི་ཤེས་པ་ཡིན་ནོ།། ततोऽर्थक्रियासमर्थवस्तुप्रदर्शकं सम्यग्ज्ञानम् न्या.टी.38[क]/23; शक्तः – ནུས་པ་དག་ལ་བཟོད་པ་རྒྱན་གྱི་མཆོག།། क्षमा हि शक्तस्य परं विभूषणम् जा.मा.170[क]/196; क्षमः – དོན་བྱེད་ནུས་པ་གང་ཡིན་པ། །དེ་ཉིད་དོན་དམ་ཡོད་པ་ཡིན།། स पारमार्थिको भावो य एवार्थक्रियाक्षमः ॥ प्र.वा.101[क]/3.166; ཕྲ་བའི་དོན་མཐོང་ནུས་ཡིན་ཡང་ ॥ सूक्ष्मानर्थान् द्रष्टुं क्षमोऽपि सन्। त.स.115[क]/999; རིམ་གྱིས་ཤེས་པར་ཇི་ལྟར་ནུས།། क्रमाज्ज्ञातुं कथं क्षमः ज्ञा.सि.42[क]/106; གལ་ཏེ་མངོན་སུམ་ཉེར་བསྟེན་ལ། །ལྟོས་མེད་དོན་སྒྲུབ་བྱེད་ཡིན་ན། །ཉེར་བསྟན་དེ་ནི་བདེན་ཉིད་དུ། །སྒྲུབ་ནུས་དེ་ལྟ་མིན་ན་མིན།། उपदेशं विनाऽध्यक्षं यद्यर्थस्य प्रसाधकम्। तदोपदेशसत्यत्वं विधातुं नान्यथा क्षमम् ॥ प्र.अ.9[क]/10; प्रतिबलः – མི་ནུས་ན་ནུས་པ་གཞན་ལ་བཅོལ་ལོ།། अ-

शक्तावध्येषणं प्रतिबलस्य वि.सू.80ख/97; प्रवणः – བག་ཆགས་ཀྱི་སྟོབས་ལ་བརྟེན་པ་འདོད་པ་སྤྱོད་པ་ལ་སོགས་པའི་ཐ་སྙད་མངོན་པར་འདོད་པའི་དོན་བྱ་བ་བྱེད་པ་ནུས་པ་འཇུག་པ་དག་ཅི་མི་བདེན་པའི་བྱ་བས་བདག་ཉིད་འདོར་རམ वासनाबलमवलम्ब्यमाना हि सुरतादिव्यवहाराः समीहितार्थक्रियाकरणप्रवणप्रवर्त्तनाः किमसत्यताव्यतिकरव्यस्तात्मानः प्र.अ.63क/71; प्रगल्भः – གང་ཞིག་ངེས་པར་རྟོགས་པ་ཡི། །ནུས་པ་ལྷ་རྣམས་ལ་ཡང་མེད།། निश्चयाधिगमे यस्य न प्रगल्भाः सुरा अपि ॥ अ.क.153ख/15.20; प्रभविष्णुः – དགེ་འདུན་ཐ་དད་པ་ཉིད་དུ་ནུས་པ་ལ་མི་འདོད་པར་སྐུལ་བ་དང་སྐུལ་བར་བྱེད་པ་ནོན་པར་མི་བྱའོ།། *> न नानात्वाय सङ्घस्य प्रभविष्णुमकामं चोदयेदुन्मोटयेद् वा चोदयत्वम् वि.सू.89क/106; प्रभुः – ཅིའི་ཕྱིར་མི་ནུས་ཤེ་ན कस्मान्न प्रभुः त.प.219ख/909; ईशः – སྒྲོན་མ་ནི་གསལ་བར་བྱ་བ་མ་ཡིན་པའི་དྲི་དང་རོ་ལ་སོགས་པ་བརྡ་ཡི་དབང་གིས་གསལ་བར་ནུས་པ་མ་ཡིན་ནོ།། न हि प्रदीपोऽप्रकाश्यं गन्धरसादिकं सङ्केतवशात् प्रकाशयितुमीशः त.प.43ख/536; •कृ. शक्यम् – ནུས་སམ་མི་ནུས་རྣམ་བསམས་ནི།། शक्याशक्यविचिन्तने अ.क.234क/26.19; ཅུང་ཟད་བདག་གིས་ནུས་པ་གང་། །དེ་ནི་བསྡམས་པ་མེད་པར་བརྗོད།། यत्तु शक्यं मया किंचित्तदयन्त्रितमुच्यताम् ॥ अ.क.24ख/52.55; མོ་གཤམ་གྱི་བུ་བདག་གི་དངོས་པོ་ལས་ཡོད་པ་ མ་ཡིན་པ་དེ་ནི་གཞན་གྱི་དངོས་པོས་གདགས་པར་ནུས་པ་མ་ཡིན་ནོ།། न हि वन्ध्यासूनुः स्वभावतोऽसंविद्यमानः शक्यः परभावेन प्रज्ञपयितुम् प्र.प.143ख/191; •अव्य. अलम्–དབང་པོ་ལས་འདས་པ་ཕྱིན་ཅི་མ་ལོག་པར་དོན་རྟོགས་པར་ནུས་པ་མ་ཡིན་ནོ།། नालमतीन्द्रियमर्थमविपरीतमवगमयितुम् त.प.130ख/712; གདོན་མི་ཟ་བར་འདི་མངོན་པར་འདོད་པའི་འབྲས་བུ་བསྒྲུབ་པར་ནུས་པ་དེ་ལྟ་བུའི་ངོ་བོ་ཡིན་གྲང अवश्यमभिमतफलसम्पादनायालमेतदित्येवंरूपः त.प.135क/4; ཆ་ཟེར་ཅན་གྱི་ནུས་པ་ལ། །མི་བདག་གཟི་ཡིས་འགོང་བར་ནུས།། अलमंशुमतः कक्षामारोढुन्तेजसा नृपः ॥ का.आ.323ख/2.53; पर्याप्तम् – དེ་ཉིད་ཀྱིས་བསྒྲུབ་པར་ནུས་པ་ཡིན་ནོ།། तदेव तत्साधने पर्याप्तम् त.प.311क/1084.

ནུས་སུ་ཟིན་ཡང शक्तोऽपि – སྐྱེད་པར་ནུས་སུ་ཟིན་ཡང शक्तोऽप्युत्पत्तुम् प्र.अ.135क/144.

ནུས་པ་བརྒྱ་ལྡན = དུར་བ་དཀར་པོ शतवीर्या, श्वेतदूर्वा मि.को.59क।

ནུས་པ་ངེས་པ་ཅན *वि.* नियतसामर्थ्यम्–གང་ལས་དུས་གསུམ་གནས་པ་ཡི། །དངོས་པོ་ཐམས་ཅད་དེ་བཞིན་དུ། །ནུས་པ་ངེས་པ་ཅན་དུ་སྣང་།། यस्याध्वत्रितयस्थं हि सर्वं वस्त्ववभासते । तथा नियतसामर्थ्यम् त.स.123ख/1074.

ནུས་པ་ཅན = ནུས་ཅན *वि.* शक्तः – མཚུངས་པར་གཅིག་ཏུ་རྟོགས་པ་ལ། །ནུས་པ་ཅན་ཡིན་སྒྲ་དང་དེའི། །དོན तुल्यप्रत्यवमर्शने । शक्ताः शब्दास्तदर्थाश्च त.स.93ख/852; གཏན་ཚིགས་ནུས་ཅན हेतवः शक्ताः त.स.125ख/1085; समर्थः – གང་ཞིག་དངོས་འགའ་རབ་བཀོད་ནས། །དེ་ཡི་སྒྲུབ་བྱེད་ནུས་པ་ཅན། །དངོས་པོ་གཞན་དག་འགོད་པ་དེ། །དོན་གཞན་བཀོད་པར་ཤེས་པར་བྱ།། ज्ञेयः सोऽर्थान्तरन्यासो वस्तु प्रस्तुत्य किञ्चन । तत्साधनसमर्थस्य न्यासो योऽन्यस्य वस्तुनः ॥ का.आ.327ख/2.166; འདོད་འབྲས་ནུས་པ་ཅན इष्टकार्यसमर्थः त.स.102ख/905.

ནུས་པ་ཆུང = ནུས་ཆུང་།

ནུས་པ་ཆུང་བ = ནུས་ཆུང་།

ནུས་པ་ཉིད 1. सामर्थ्यम्–ཉེ་བར་འཇལ་སྟོབས་ལས་བྱུང་བའི། །ནུས་པ་ཉིད་ཀྱིས་རྟོགས་པར་བྱེད།། उपमाबलसम्भूतसामर्थ्येन प्रतीयते ॥ त.स.58ख/561; शक्यता – རང་གི་གནས་ནས་མ་འཕགས་པས་ལེན་ནུས་པ་ཉིད་ཡིན་ན शक्यतायां स्वयममुक्त्वा स्थानं ग्रहीतुम् वि.सू.37ख/47; शक्तता – བ་མེན་གྱིས་མཚོན་པ་ལང་གང་། །ཤེས་པས་གཟུང་བ་ནུས་པ་ཉིད།། गवयोपमिता या गौस्तज्ज्ञानग्राह्यशक्तता। त.स.58ख/561; शक्तवत्ता – བྱས་སམ་མ་བྱས་ཅི་ཞིག་ཇི་ལྟ་བུ་ཞིག་ཅེས་དྲན་པར་མི་ནུས་པ་ཉིད अशक्तवत्तायां कृतं नो वा किं वा कीदृशं चेति स्मर्तुम् वि.सू.86ख/104 2. शक्य एव–འོན་ཏེ་ཡོན་ཏན་དང་ལྡན་པ་མེད་པའི་ཕྱིར་སྒྲ་ནི་རླུང་གིས་བདའ་བར་མི་ནུས་པ་ཉིད་དོ...ཞེ་ན अथ शब्दः प्रेरयितुमशक्य एव मातरिश्वना गुणेन संयोगाभावात् प्र.अ.162ख/512.

ནུས་པ་སྟོང་ལྡན = རྩ་དུར་བ सहस्रवीर्या, दूर्वा मि.को. 58ख।

ནུས་པ་ཐམས་ཅད་ཀྱིས་དབེན་པ • सं. सर्वसामर्थ्यविवेकः – ནུས་པ་ཐམས་ཅད་ཀྱིས་དབེན་པ་ཉིད་མེད་པའི་ཐ་སྙད་ཀྱི་རྒྱུ་མཚན་དུ་འགྱུར་ན सर्वसामर्थ्यविवेक एव नास्तित्वव्यवहारस्य निमित्तं भविष्यति वा.टी.68क/ 22; • वि. सर्वसामर्थ्यविवेकी – ནུས་པ་ཐམས་ཅད་ཀྱིས་དབེན་པར་ཇི་སྐད་བཤད་པའི་མི་དམིགས་པས་ཅིའི་ཕྱིར་རྟོགས་པ་ཡིན་ཞེ་ན कस्मात् सर्वसामर्थ्यविवेकिनो यथोक्तानुपलम्भेनैव प्रतीतिः वा.टी.68क/22.

ནུས་པ་ཐམས་ཅད་དང་བྲལ་བ • वि. सर्वशक्तिवियोगी – ད་ལྟར་བ་ནི་མ་ཡིན་ན། །ནུས་པ་ཐམས་ཅད་དང་བྲལ་ཕྱིར། །ནམ་མཁའི་པད་མ་ལ་སོགས་བཞིན། །འཇིག་དང་མི་སྐྱེད་ཐལ་བར་འགྱུར།། अवर्तमानतायां तु सर्वशक्तिवियोगिनः। नष्टाजाताः प्रसज्यन्ते व्योमतामरसादिवत् ॥ त.स.67क/628; सर्वसामर्थ्यरहितः – ནུས་པ་ཐམས་ཅད་དང་བྲལ་བ་ལ་ནུས་པ་འགའ་ཞིག་དང་འབྲེལ་པའི་སྒྲ་ཡང་འཇུག་པ་མེད་པ[ས་མེད་པ]འི་ཐ་སྙད་ཀྱི་ཡུལ་དུ་བསྟན་པ་ཡིན་ནོ།། सर्वसामर्थ्यरहितस्य तु सामर्थ्यनिबन्धनस्य कस्यचिदपि शब्दस्यावृत्तेरसद्व्यवहारविषयत्वख्यापनाय वा.टी.57क/10; सर्वसामर्थ्यविरहः – མེད་པ་ལས་ནི་འབྲས་བུ་སྐྱེད་པའི་ནུས་པ་ཡོད་པ་ཡང་མ་ཡིན་ཏེ། མེད་པའི་མཚན་ཉིད་ནི་ནུས་པ་ཐམས་ཅད་དང་བྲལ་བ་ཡིན་པའི་ཕྱིར་རོ།། न चासतः कार्योत्पादनशक्तिरस्ति, सर्वसामर्थ्यविरहलक्षणत्वादसत्त्वस्य त.प.82क/616; वा.टी.57क/10; • सं. सर्वशक्तिवियोगः, सर्वसामर्थ्यरहितत्वम् – ནུས་པ་ཐམས་ཅད་དང་བྲལ་བས། །རྟག་པ་དངོས་མེད་བསྒྲུབས་ཟིན་ཏོ།། सर्वशक्तिवियोगेन नीरूपत्वं हि साधितम्। नित्यानाम् त.स.129ख/1108.

ནུས་པ་ཐོགས་པ་མེད་པ वि. अप्रतिबद्धशक्तिः – ནུས་པ་ཐོགས་པ་མེད་པ་ཡང་སྐད་ཅིག་མ་ཐ་མར་འགྱུར་པ་གང་ཡིན་པ་སྟེ། གཞན་རྣམས་ལ་ནི་གེགས་ཡོད་པའི་ཕྱིར་རོ།། अप्रतिबद्धशक्तीनि चान्त्यक्षणभावीन्येव, अन्येषां प्रतिबन्धसम्भवात् न्या.टी.55क/126; अप्रतिहतशक्तिः – རྒྱུའི་ཁྱད་པར་ཡང་ནུས་པ་ཐོགས་པ་མེད་པས ...འབྲས་བུ་འབྱུང་བས་དབང་པོའི་ཤེས་པའི་གཟུང་བར་བྱ་བར་འགྱུར་བས कारणविशेषादप्यप्रतिहतशक्तेः... कार्यमेवोद्भूतमक्षज्ञानग्राह्यं भवति वा.टी.54क/6; अप्रतिबद्धसामर्थ्यम्–གང་ཞིག་གང་བྱས་པ་ལ་ནུས་པ་ཐོགས་པ་མེད་པ་དེ་ནི་དེ་བྱེད་པ་ཉིད་ཡིན་ཏེ། རྒྱུ་ཚོགས་པ་ཐ་མ་བཞིན་ནོ།། यदप्रतिबद्धसामर्थ्यं यस्मिन् कर्त्तव्ये,

तत्करोत्येव, यथान्त्या कारणसामग्री त.प.42ख/534; द्र. ནུས་པ་ཐོགས་པ་མེད་པ་ཅན།

ནུས་པ་ཐོགས་པ་མེད་པ་ཅན *वि.* अप्रतिबद्धसामर्थ्यम् – གང་ཞིག་གང་བྱས་པ་ལ་ནུས་པ་ཐོགས་པ་མེད་པ དེ་ནི་དེ་བྱེད་པ་ཉིད་ཡིན་ཏེ། རྒྱུ་ཚོགས་པ་ཐ་མ་བཞིན་ནོ།། བྱེད་པ་པོ་མེད་པའི་ཚིག་ཀྱང་ཤེས་པ་སྐྱེད་པ་ལ་དུས་ཐམས་ཅད་དུ་ནུས་པ་ཐོགས་པ་མེད་པ་ཅན་ཡིན་ནོ་ཞེས་བྱ་བ་ནི་རང་བཞིན་གྱི་གཏན་ཚིགས་ཡིན་ནོ།། यदप्रतिबद्धसामर्थ्यं यस्मिन् कर्त्तव्ये, तत्करोत्येव, यथान्त्या कारणसामग्री। अप्रतिबद्धसामर्थ्यं चाकर्तृकं वाक्यं ज्ञानजनने सर्वकालमिति स्वभावहेतुः त.प. 42ख/534; द्र. ནུས་པ་ཐོགས་པ་མེད་པ།

ནུས་པ་ཐོགས་པ་མེད་པའི་ཚོགས་པའི་རྒྱུ་ལས་བྱུང་བ *वि.* समग्राप्रतिहतसामर्थ्यकारणसामग्रीकः – དཔེར་ན ནུས་པ་ཐོགས་པ་མེད་པའི་ཚོགས་པའི་རྒྱུ་ལས་བྱུང་བའི་མྱུ་གུ་བཞིན་ནོ།། यथा समग्राप्रतिहतसामर्थ्यकारणसामग्रीकोऽङ्कुरः वा.टी.86क/43.

ནུས་པ་དང་བཅས = ནུས་བཅས།

ནུས་པ་དང་བཅས་པ = ནུས་བཅས།

ནུས་པ་དང་ལྡན = ནུས་ལྡན།

ནུས་པ་དང་ལྡན་པ = ནུས་ལྡན།

ནུས་པ་སྤོང་བར་བྱེད་པ शक्त्यपाकरणम् – དངོས་པོ མ་ལུས་རྣམ་ཤེས་པའི། །ནུས་པ་སྤོང་བར་བྱེད་ན་ཡང་། །ཁྱེད་ལ་ལྡོག་པའི་ཐེ་ཚོམ་ཉིད། །གནས་སྐབས་དེ་བཞིན་ཐལ་བར་འགྱུར།། समस्तवस्तुविज्ञानशक्त्यपाकरणेऽपि ते। सन्दिग्धव्यतिरेकित्वं तदवस्थं प्रसज्यते॥ त.स.122ख/1069.

ནུས་པ་མ་ཡིན = ནུས་པ་མ་ཡིན་པ།

ནུས་པ་མ་ཡིན་པ = ནུས་མིན •*क्रि.* 1. न शक्यते – མེད་པ་ནམ་མཁའི་མེ་ཏོག་ལ་སོགས་པའམ། བྱེ་མ་རྣམས་ལ་ཏིལ་མར་ནི་གང་དུ་ཡང་བྱ་བར་ནུས་པ་མ་ཡིན་ཏེ न ह्यसन्तो व्योमकुसुमादयः क्वचिदपि शक्यन्ते कर्तुम्, सिकतासु वा तैलम् त.प.221क/913; བརྗོད་པར་ནུས་པ་མ་ཡིན་ནོ།། वक्तुं न...शक्यते त.स.77क/720; འདི་བསྟན་པར་ནུས་པ་མ་ཡིན་ནོ།། न चासौ निर्देष्टुं शक्यते त.प.100क/649; न क्षमते– ད་ལྟར་བའི་རང་བཞིན་འཛིན་པ་ལ་འཇུག་པའི་མངོན་སུམ་ནི་སྔ་མ་དང་ཕྱི་མའི་རང་བཞིན་མཐོང་བར་ནུས་པ་མ་ཡིན་ནོ།། न खलु वर्त्तमानरूपोपग्रहप्रवृत्तमध्यक्षं पूर्वापररूपमीक्षितुं क्षमते प्र.अ. 7ख/9; न युज्यते– སྨྲ་བར་ནུས་པ་མ་ཡིན་ནོ།། वक्तुं न युज्यते ज्ञा.सि.41क/104; न पार्यते – དེས་ན་ཐེ་ཚོམ་གྱིས་ལོག་ཉིད། །འཛིན་པར་ནུས་པ་མ་ཡིན་ནོ།། तावता तस्य मिथ्यात्वं ग्रहीतुं तन्न पार्यते॥ त.स. 113क/976; བཟློག་པར་ནུས་པ་མིན निराकर्तुं न पार्यते त.स.55क/533; नैव पार्यते – དེ་ནི་བརྗོད་པར་ནུས་མ་ཡིན།། तद्वक्तुं नैव पार्यते गु.सि.12क/26 2. न शक्नुयात् – ཡོད་པ་ལ་སོགས་པ་སྒྲས་མ་བསྟན་པར་ཡོད་པ་ལ་སོགས་པ་དེས་ཐ་དད་པ་གཞན་མཚོན་པར་བྱ་བའི་ཕྱིར་བརྡ་བྱེད་པར་ནུས་པ་ཡང་མ་ཡིན་ལ न च शब्देनानुपदर्श्य सत्तादिकं तेन सत्तादिना भेदान् परमुपलक्षयितुं समयकारः शक्नुयात् त.प.314क/343; སོ་སོ་རེ་རེར་རྟོགས་པར་ནི། །བསྐལ་པའི་བར་དུའང་ནུས་མ་ཡིན།། न प्रत्येकं शक्नुयाद् बोद्धुं वस्तु कल्पान्तरैरपि॥ प्र.अ. 44ख/51; भवेत् क्षमः – སེམས་མེད་པར་ནི་ལུས་དག་གིས། །ཅི་ཡང་བྱེད་པར་ནུས་མ་ཡིན།། चित्तेन न विना कायः किञ्चित् कर्तुं भवेत् क्षमः। ज्ञा.सि.47ख/122; • *वि.* असमर्थः – དོན་བྱེད་ནུས་པ་མ་ཡིན་ལ། །དོན་གཉེར་བརྟགས་པས་ཅི་ཞིག་བྱ།། अर्थक्रियाऽसमर्थस्य

विचारैः किं परीक्षया। प्र.वा.102ख/3.211; མེད་ཕྱིར་ནམ་མཁའི་མེ་ཏོག་བཞིན། །བདག་གཞན་དོན་ནི་ནུས་མ་ཡིན།། स्वपरार्थासमर्थोऽसावभावत्वात् खपुष्पवत्॥ प्र.सि.29क/68; अशक्तः – དོན་བྱེད་ནུས་མིན་ अर्थक्रियाऽशक्ता त.स.9ख/117; ནུས་དང་ནུས་མིན་ངོ་བོ་ཡིས། །ཐམས་ཅད་དུ་ཡང་རྗེས་འཇུག་ཕྱིར།། शक्ताशक्तस्वभावस्य सर्वदा ह्यनुवर्त्तनात्। त.स.55क/534; अशक्यः – རང་གི་མཚན་ཉིད་འདི་དག་ཀུན། །བརྗོད་བྱ་བར་ནི་ནུས་མིན་ཏེ།། अशक्यसमयं चेदं सर्वमेव स्वलक्षणम्। त.स.33क/344; न समर्थः – གང་གིས་མེ་ཏོག་དག་ཀྱང་བཏུ་བར་ནུས་མིན་པ कुसुममपि विचेतुं यो न मन्ये समर्थः ना.ना.234क/83; ཆོས་རྟོགས་པར་བྱ་བ་ལ་ཉེ་བར་འཇལ་བ་ཡང་ནུས་པ་མ་ཡིན་ཏེ नाप्युपमानं समर्थं धर्मप्रत्यायने त.प.131क/713; न क्षमः – ཆོས་དང་ཆོས་མ་ཡིན་པ་རྟོགས་པར་འགྱུར་ལ་དོན་གྱིས་གོ་བ་ཡང་ནུས་པ་མ་ཡིན་ཏེ नाप्यर्थापत्तिः क्षमा धर्माधर्मविबोधने त.प.131ख/713; རིག་བྱེད་གདོན་མི་ཟ་བ་ཡི། །དཔྱོད་བྱེད་ནུས་པ་མ་ཡིན་ཞེས།། वेदाधीतिजडा विप्रा न परीक्षाक्षमा इति त.स.130ख/1114; न ईशः – མ་རྟོགས་པར་ནི་གཞན་ལ་སྟོན་པར་ནུས་པ་མ་ཡིན་ནོ།། न ह्यप्रतिपद्य परस्मै कथयितुमीशः त.प.212क/894; नैव शक्तः – ཉེ་བར་བསྟན་པར་ནུས་མ་ཡིན།། शक्तो नैवोपदेशने त.स.118क/1018; न शक्यम् – འདིར་རང་ཉིད་ནི་རྟོགས་པར་ནུས་པ་མ་ཡིན་ཏེ न हि स्वयं व्युत्पादयितुमिदं शक्यम् प्र.अ.8ख/10; མང་དུ་སྨྲ་བར་ནུས་པ་མ་ཡིན་ནོ།། न...बहु शक्यं भाषितुम् त.प.311ख/1086; नैव शक्यम् – དེ་ནི་བརྗོད་པར་ནུས་མ་ཡིན།། तद्वक्तुं नैव शक्यम् प्र.सि.30क/70; नालम् – དབང་པོ་ལས་འདས་པ་ཕྱིན་ཅི་མ་ལོག་པར་དོན་རྟོགས་པར་ནུས་པ་མ་ཡིན་ནོ།། नालमतीन्द्रियमर्थमविपरीतमवगमयितुम् त.प.130ख/712.

ནུས་པ་མ་ལུས་དང་ལྡན་པ *वि.* अशेषशक्तिप्रचितम् – ནུས་པ་མ་ལུས་དང་ལྡན་པའི། །གཙོ་བོ་ཉིད་ནི་འབའ་ཞིག་ལས། །འབྲས་བུའི་ཁྱད་པར་རབ་ཏུ་སྐྱེ།། अशेषशक्तिप्रचितात् प्रधानादेव केवलात्। कार्यभेदाः प्रवर्त्तन्ते त.स.2क/20.

ནུས་པ་མིན = ནུས་པ་མ་ཡིན་པ།

ནུས་པ་མེད = ནུས་པ་མེད་པ།

ནུས་པ་མེད་པ = ནུས་མེད • *वि.* असमर्थः – ནུས་པ་མེད་པ་ནི་མོ་གཤམ་གྱི་བུ་ལ་སོགས་པའོ།། असमर्था: बन्ध्यासुतादयः त.प.76क/604; अशक्तः – འོན་ཀྱང་རྗེས་སུ་དཔག་པ་ལ་ནུས་པ་མེད་པ་ལས་མི་སྐྱེ་བ་ཡིན་པ अपि त्वनुमानेनाशक्तादनुत्पत्तिः वा.टी.86क/43; གལ་ཏེ་སྔར་ནི་ནུས་མེད་པའང་། །དེ་དག་གིས་ནི་ནུས་ལྡན་བྱས།། प्रागशक्तः समर्थश्च यदि तैः क्रियते पुनः। त.स.86क/789; निरुपाख्यः – མ་བྱས་དང་ནི་མི་འཇིག་པས། །གལ་ཏེ་རྟག་ཉིད་འདོད་པ་ན། །བཀག་པ་ཙམ་གྱི་ངོ་བོ་དག་གིས། །ནུས་མེད་ལ་ཡང་དེ་མཚུངས་ཡིན།། अकृतत्वाविनाशाभ्यां नित्यत्वं चेद् विवक्षितम्। निषेधमात्ररूपाभ्यां निरुपाख्येऽपि तत्समम्॥ त.स.88ख/807; • *सं.* 1. अशक्तिः – རྣམ་པ་དེ་ལྟ་བུའི་ཡི་གེའི་རིམ་པ་གལ་ཏེ་སྐྱེས་བུ་ཐམས་ཅད་ཀྱིས་བྱ་བར་ནུས་པ་མེད་པར་ངེས་པར་བྱ་བ་[ནུས་པ་]ཡིན་ན། ད་[དེའི་ཚེ་]ཁྱབ་པ་ངེས་པར་འགྱུར་རོ།། एवम्भूतं वर्णक्रमं यदि कर्तुं सर्वनराणामशक्तिर्निश्चिता भवेत्, तदा व्याप्तिनिश्चयो भवेत् त.प.212ख/895; འཇིག་རྟེན་ལས་ཉིད་དེ་འདྲ་ཕྱིར་དེ་ལ། །དེ་བྱེད་ནུས་མེད་ན་འདི་དམ་པ་མིན།། कर्मैव लोकस्य तथेति तत्कृदशक्तिरस्मिन्निति नार्यतास्य। प्र.अ.42ख/48; सामर्थ्यभावः – སྐྱེས་བུ

ཉིད་སོགས་གཏན་ཚིགས་ཀྱིས། །ནུས་པ་མེད་པར་ངེས་བྱེད་ན།། सामर्थ्याभावनिश्चये। पुरुषत्वादिहेतुभ्यः त.स.126ख/1088 **2.** = ནུས་མེད་ཉིད अशक्तता – རང་ལ་རྟོགས་པའི་ནུས་མེད་པའམ། །ཡང་ན་རིགས་བྱེད་རིགས་བྲལ་ཡིན།། निर्युक्तिकत्वं वेदार्थे ज्ञापनाशक्तताऽऽत्मनि। त.स.130ख/1113; असामर्थ्यम् – དེས་ན་སྣང་བ་དང་ཉེ་བར་འདུག་པ་གང་ཡིན་པ་དེ་ནུས་པ་མེད་པར་འགྱུར་རོ།། ततोऽसामर्थ्यं तस्य यस्य समीपवर्त्यालोकः न्या.टी.76ख/199; འདས་པའི་དོན་འཛིན་པའི་ནུས་པ་མེད་པའི་ཕྱིར་རོ།། अतीतार्थग्रहणासामर्थ्यात् त.प.7ख/461.

ནུས་པ་མེད་པ་ལས་བྱུང་བ་ཅན *वि.* अशक्तिजः – དེ་ལ་ནུས་པ་མེད་པ་ལས་བྱུང་བ་ཅན་གྱིས་ཞེས་པའི་ཞེས་བྱ་བ་དང་གཱ་བ་ལ་སོགས་པ་ལས་ཞེས་བྱ་བ་ནི་གཞི་མཐུན་པ་ཉིད་དུ་སྦྲེལ་ཏོ།། तदशक्तिजकारितादिति, गाव्यादेरिति सामानाधिकरण्येन सम्बन्धः त.प.200क/866; द्र. ནུས་མིན་སྐྱེས།

ནུས་པ་འཛིན = ནུས་པ་འཛིན་པ།

ནུས་པ་འཛིན་པ *वि.* शक्तिधरः – མཁས་པ་སྐྱེ་དགུའི་བདག་བྱུང་སྟེ། །རྗེ་བོ་ནུས་པ་འཛིན་ཡང་དེ།། दक्षः प्रजापतिश्चासीत् स्वामी शक्तिधरश्च सः ॥ का.आ.332ख/2.318.

ནུས་པ་ཡིན *क्रि.* क्षमो भवेत् – དེས་ན་ཤེས་རབ་ཅན་སྐྱེས་བུས། །དོན་ཕྲ་རྣམས་མཐོང་ནུས་པ་ཡིན།། अतः प्राज्ञो नरः सूक्ष्मानर्थान् द्रष्टुं क्षमो भवेत्। त.स.124क/1076; समर्थं भवति – རིགས་ཀྱི་བྱེ་བྲག་ལས་སེམས་རྣམ་པ་འདྲ་ཡང་འགའ་ཞིག་སེམས་འགའ་བསྐྱེད་པ་ལ་ནུས་པ་ཡིན་ཏེ <?> तुल्यांकारमपि हि किञ्चिदुत्पादने समर्थं भवति, गोत्रविशेषात् अभि.भा.92क/1220.

ནུས་པ་ཡོད = ནུས་པ་ཡོད་པ།

ནུས་པ་ཡོད་ཉིད शक्त्यस्तित्वम् – འདིར་ནི་དེ་ཡོད་དེ་འབྱུང་ཉིད། །ནུས་པ་ཡོད་ཉིད་རྟོགས་བྱེད་པ།། तद्भावभाविता चात्र शक्त्यस्तित्वावबोधिनी। त.स.80ख/745.

ནུས་པ་ཡོད་པ शक्तिसद्भावः – དེ་བཞིན་དུ་འདི་ལ་ཡང་དེ་ཡོད་ན་ཡོད་པ་ཉིད་ནི་སྒྲ་རྣམས་ཀྱི་ནུས་པ་ཡོད་པ་ཙམ་རྟོགས་པ་ཡིན་གྱི एवमिहापि ध्वनीनां शक्तिसद्भावमात्रावबोधिनी भवेत् तद्भावभाविता त.प.147क/746; द्र. ནུས་པ་ཡོད་ཉིད། ནུས་པ་ཡོད་མིན།

ནུས་པ་ཡོད་མིན नालम् – དེ་ལྟར་ལྷུང་བ་དེ་ཡི་ཡང་། །འདོད་པ་ས་འདི་ཐམས་ཅད་ཀྱིས། །རྫོགས་པར་ནུས་པ་ཡོད་མིན་ན། །དེ་ཡི་འདོད་པ་སུས་བྱེད་ནུས།། अस्यैवं पतितस्यापि सर्वापीयं वसुंधरा। नालं पूरयितुं वाञ्छां तत्कोऽस्येच्छां करिष्यति ॥ बो.अ.30क/8.175.

ནུས་པའི་རྒྱུ समर्थहेतुः – ནུས་པའི་རྒྱུ་ནི་ཡོད་གྱུར་ན། །དེ་དག་སྤོང་པར་གང་གིས་བྱས།། समर्थहेतुसद्भावे क्षेपस्तेषां हि किंकृतः ॥ त.स.16क/183; शक्तकारणम् – དེ་ལས་བྱུང་བའི་དོན་ཤེས་ནི། །འབྱུང་འགྱུར་ནུས་རྒྱུ་ཉེར་གནས་ཕྱིར།། तद्भाव्यर्थेषु विज्ञानं शक्तकारणसन्निधेः ॥ त.स.98ख/876.

ནུས་པར་གྱུར = ནུས་གྱུར།

ནུས་པར་འགྱུར *क्रि.* **1.** समर्थो भवति – གང་གི་ཚེ་མཉམ་པར་བཞག་པ་དེའི་ཚེ་ཡིད་ཀྱིས་ལས་ཐམས་ཅད་ནུས་པར་འགྱུར་རོ།། यदा समाहितस्तदा मनसा सर्वकर्मसमर्थो भवति स.दु.123क/216 **2.** क्षमो भवेत् – དེས་རྡོ་རྗེའི་ཕྱིར་འགྱུར་ཞིང་སྔགས་བཟླས་པ་ནུས་པར་འགྱུར་རོ།། तेन

वज्रजिह्वा भवति। मन्त्रजापक्षमो भवेत् स.दु.100ख /132.

ནུས་པར་ལྡན་པ = ནུས་ལྡན།

ནུས་མ 1. शक्तिः – ནུས་མ་ནི་དུ་བ་མ་ལ་སོགས་པ་མཚན་མའི་རྒྱལ་འཁོར་མ་རྣམས་སོ།། शक्तयो धूमादयो निमित्तदेवत्यः वि.प्र.53क/4.81; ཨ…ནག་མོ་འབར་མ…ཧ་ནི་དུ་བ་མ་དང་ཧཱ་ནི་མར་མེ་མ་སྟེ། དེ་ལྟར་ཡི་གེ་བརྒྱད་ལས་སྐྱེས་པ་ནུས་མ་བརྒྱད་དོ།། अ…कृष्णदीप्ता …ह धूमा, हा प्रदीपा। एवमष्टाक्षरजाः शक्तयोऽष्टौ वि.प्र.53क/4.81; དཔའ་བོའི་དར་དཔྱངས་ཀྱི་དབང་ནི་ཕ་རོལ་ཏུ་ཕྱིན་པ་རྣམས་ཡོངས་སུ་རྫོགས་པའི་དོན་དུ་སྦྱིན་པ་ལ་སོགས་པའི་ནུས་མ་བཅུའོ།། वीरपट्टाभिषेको दानादयो दश शक्तयः पारमितापरिपूर्णाय वि.प्र.152ख/3.99; ཕ་རོལ་ཏུ་ཕྱིན་པ་བཅུ་ནི་ནུས་མ་བཅུ दश शक्तयो दश पारमिताः वि.प्र.243क/2.53 2. शक्ता– ཕྲག་པར་ལྟ་བས་བདག་ནི་ནུས་མ་ཞེས་བརྗོད་དོ།། स्कन्धदृष्टया शक्ताऽहमिति वदति वि.प्र.180क/3.196.

ནུས་མ་བརྒྱད अष्टौ शक्तयः – 1. ནག་མོ་འབར་མ कृष्णदीप्ता, 2. སེར་མོ་འབར་མ पीतदीप्ता, 3. དཀར་མོ་འབར་མ श्वेतदीप्ता, 4.དམར་མོ་འབར་མ रक्तदीप्ता, 5. མཁའ་གསལ་མ खद्योता, 6. སྨིག་རྒྱུ་མ मरीचिः, 7. དུ་བ་མ धूमा, 8. མར་མེ་མ प्रदीपा वि.प्र.53क /4.81.

ནུས་མ་གྱུར • क्रि. न शशाक – ར་གྷུའི་བུ་དེ་བླ་མ་ཡི། །བཀའ་ལས་འདའ་བར་ནུས་མ་གྱུར།། गुरोः शासनमत्येतुं न शशाक स राघवः। का.आ.332क/2.298; འགྲོ་དང་སྡོད་པར་ནུས་མ་གྱུར།། न गन्तुं न स्थातुं…शशाक अ.क.148ख/14.114.

ནུས་མ་མཆིས न शक्यम् लो.को.1353.

ནུས་མ་ཡིན = ནུས་པ་མ་ཡིན་པ།

ནུས་མའི་ས་བོན शक्तिबीजम् – དེ་བཞིན་དུ་ནུས་མའི་ས་བོན་རྣམས་ཏེ एवं शक्तिबीजानि वि.प्र.53क/4.81.

ནུས་མིན = ནུས་པ་མ་ཡིན་པ།

ནུས་མིན་སྐྱེས वि. अशक्तिजः– རུང་བའི་བ་ལང་སྒྲ་ཡོད་ན། །དེ་ནུས་མིན་སྐྱེས་ཀྱིས་བཅུད་བྱས། །ག་བི་སོགས་ལས་བ་ལང་བློ། །རྩ་བའི་སྒྲ་རྗེས་འབྲངས་པ་ཉིད།། गोशब्देऽवस्थिते योग्ये तदशक्तिजकारितात्। गाव्यादेरपि गोबुद्धिर्मूलशब्दानुसारिणी॥ त.स.97क/866.

ནུས་མེད = ནུས་པ་མེད་པ།

ནུས་མེད་པ = ནུས་པ་མེད་པ།

ནུས་ཟླ सहस्यः, पौषमासः – पौषे तैषसहस्यौ द्वौ अ.को.1.4.15; सहोऽस्यास्तीति सहस्यः अ.वि.1.4.15.

ནུས་འོས क्रि. अर्हति – དེ་དག་ཤེས་པར་སུས་ནུས་འོས།། कस्तानि ज्ञातुमर्हति त.स.114क/992.

ནུས་ཡོད = ནུས་པ་ཡོད་པ།

ནེ་གྲོ་ཏ = ནྱ་གྲོ་དྷ།

ནེ་ནེ = ནེ་ནེ་མོ།

ནེ་ནེ་མོ = ཨ་ནེ पितृस्वसा म.व्यु.3901(64क); ཨ་ནེ་སྟེ་ཕའི་སྲིང་མོ་ཆེ་ཆུང་། बो.को.1528.

ནེ་ཙོ शुकः 1. = བྱ་ནེ་ཙོ पक्षिविशेषः – གང་གི་ཚེ་ནེ་ཙོ་དང་རི་སྐེགས་ལ་སོགས་པ་དག་གིས་སྒྲ་སྒྲོགས་པ यदा हि शुकसारिकादिभिर्व्याह्रियते शब्दः त.प.176ख/811; कीरः – कीरशुकौ समौ अ.को.2.5.21; कीति शब्दं रातीति कीरः। रा आदाने अ.वि.2.5.21 2. बुद्धस्य नामपर्यायः – བློ་གྲོས་ཆེན་པོ་ཁ་ཅིག་ནི་ང་ལ་དེ་བཞིན་གཤེགས་པར་ཤེས་སོ།།… འདྲེན་པ་དང་… ནེ་ཙོ

དང་དབང་པོ་དང केचिन्महामते तथागतमिति मां संप्रजानन्ति...नायकं...शुकमिन्द्रम् ल.अ.132क/78.

ནེ་ཙོ་སྣ = སྐྱུ་རུ་ར शुकनासः, आमलकी – मण्डूकपर्णपत्रोर्णनटकट्वङ्गटुण्टुकाः ॥ स्योनाकशुकनासर्क्षदीर्घवृन्तकुटन्नटाः । शोणकश्चारलौ तिष्यफला त्वामलकी त्रिषु ॥ अमृता च वयस्था च अ.को.2.4.57; शुकनासाकाराणि पुष्पाण्यस्य शुकनासः अ.वि.2.4.57; द्र. ནེ་ཙོའི་མཆུ།

ནེ་ཙོའམ་ཙི = ཀིང་ཤུ་ཀ किंशुकः, वृक्षविशेषः – पलाशे किंशुकः पर्णो वातपोथः अ.को.2.4.29; किंचिच्छुकवत् शुकतुण्डसदृशपुष्पत्वात् किंशुकः अ.वि.2.4.29.

ནེ་ཙོའི་ཀློག शुकपाठः – མཚུངས་མེད་གྲུབ་པའི་སྙན་ངག་མེད་ན་མཁས་པ་ཉིད་ནི་ནེ་ཙོའི་ཀློག་དང་མཚུངས།། पाण्डित्यं शुकपाठषण्ढम[समम]समोल्लासं कवित्वं विना अ.क.28ख/53.14.

ནེ་ཙོའི་ཁྱུ शौकम्, शुकसमूहः – कापोतशौकमायूरतैत्तिरादीनि तद्गणे अ.को.2.5.43; शुकानां समूहः शौकम् अ.वि.2.5.43; द्र. ནེ་ཙོའི་ཚོགས།

ནེ་ཙོའི་མཆུ शुकनासा – ཤིང་ཚིག་པ་དང་མཚེའུ་སྐམས་པ་དང་ནེ་ཙོའི་མཆུ་དང་ས་བོན་རུལ་པ་དང་མགལ་མེའི་འཁོར་ལོ་དང་སེམས་ཅན་ཤི་བ་བཞིན་ནོ།། दग्धकाष्ठशुष्कहृदशुकनासापूतिबीजालातचक्रमृतसत्त्ववत् अभि.भा.189ख/646; ནེ་ཙོའི་མཆུ་ནི་གཟུགས་མཁན་གྱིས་ཁྱིམ་ལ་སོགས་པའི་ནང་དུ་བྱས་པ་སྟེ། ནེ་ཙོའི་སྣ་དང་དབྱིབས་འདྲ་བའི་ཕྱིར་ནེ་ཙོའི་སྣ་ཞེས་བྱ་བ शुकनासा गृहादिषु रूपकारकृता शुकनासाकृतित्वात् शुकनासेत्युच्यते अभि.स्फु.40क/646; द्र. ནེ་ཙོ་སྣ།

ནེ་ཙོའི་སྨྲ་བ शुकस्य व्याहृतम् – དེ་ནི་ནེ་ཙོའི་སྨྲ་བ་ཡིན། །རི་སྐེགས་ཚིག་ཏུ་འདི་སྐད་ཕྱིར།། शुकस्य व्याहृतं चेदं शारिकाया इतीक्षणात् ॥ त.स.89क/811.

ནེ་ཙོའི་ཚོགས शौकम्, शुकसमूहः श्री.को.164ख; द्र. ནེ་ཙོའི་ཁྱུ།

ནེ་ཚོ = ནེ་ཙོ།

ནེ་ར་ཉྫ་ན = ནཻ་རཉྫ་ནཱ།

ནེ་རན་ཛ་ན = ནཻ་རཉྫ་ནཱ།

ནེ་ལེ चिल्लः, पक्षिविशेषः श.को.743.

ནེ་ལེ་མོ = ནེའུ་ལེ་མོ།

ནེ་གསིང = ནེའུ་གསིང་།

ནེམ་ནུར = ཐེ་ཚོམ संदेहः – སྒྲིབ་པའམ་ཐེ་ཚོམ་མམ་ཡིད་གཉིས་སམ་ནེམ་ནུར་རམ་ཚམ་ཚོམ་མམ...ཁོང་དུ་མི་ཆུད་པ་མེད་པ नास्त्यावरणं वा विमर्शो वा विमतिर्वा संदेहो वा संशयो वा...अनभिसमयो वा ग.व्यू.276क/354; བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ...ཐེ་ཚོམ་དང་ནེམ་ནུར་མེད་པ बोधिसत्त्वानां... अपगतविमतिसंदेहानाम् द.भू.171क/5; काङ्क्षा – ནེམ་ནུར་དང་ཐེ་ཚོམ་ཞེས་བྱ་བ་ནི་དོན་ཐ་དད་པ་མ་ཡིན་ནོ།། काङ्क्षा विचिकित्सेत्यनर्थान्तरम् अभि.स्फु.178क/928.

ནེམ་ནུར་གཅོད་པ *पा.* काङ्क्षोच्छेदनः, समाधिविशेषः – ནེམ་ནུར་གཅོད་པ་ཞེས་བྱ་བའི་ཏིང་ངེ་འཛིན काङ्क्षोच्छेदनो नाम समाधिः अ.सा.430ख/243.

ནེམ་ནུར་དུ་མི་འགྱུར་བ *क्रि.* न भवति काङ्क्षायितत्वम् – བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་སེམས་དཔའ་ཆེན་པོ་གང...ལ་སེམས་ཞུམ་པར་མི་འགྱུར་བ་དང་ནེམ་ནུར་དུ་མི་འགྱུར་བ་དང यस्य बोधिसत्त्वस्य महासत्त्वस्य...न

भवति चित्तस्य अवलीनत्वम्, न भवति काङ्क्षायितत्वम् अ.सा.28क/15.

ཉེམ་ཉུར་རྣམ་པར་སེལ་བ *पा.* विमतिविकिरणः, समाधिविशेषः – ཉེམ་ཉུར་རྣམ་པར་སེལ་བ་ཞེས་བྱ་བའི་ཏིང་ངེ་འཛིན་ विमतिविकिरणो नाम समाधिः म.व्यु. 590(14क).

ཉེམ་ཉུར་མང་བ *वि.* काङ्क्षाबहुलः – ཉེམ་ཉུར་མང་བ་དང་ཐེ་ཚོམ་མང་བ་དང་འདུན་པ་དང་ལྡན་པ काङ्क्षाबहुलो विचिकित्साबहुलः छन्दिकश्च श्रा.भू.73क/189.

ཉེམ་ཉུར་མི་མངའ = ཉེམ་ཉུར་མི་མངའ་བ།

ཉེམ་ཉུར་མི་མངའ་བ *वि.* सरभसम् – ཉེམ་ཉུར་མི་མངའ་བའི་ཞལ་གྱི་པདྨ་རབ་ཏུ་རྒྱས་པ་ལས་བདེ་བ་ཕུན་སུམ་ཚོགས་པའི་སྦྲང་རྩིའི་རྒྱུན་འབབ་པར་གྱུར་པ...དེ་ཁོ་ན་ཉིད་གྲུབ་པ सरभसविकसितवदनकमलविगलितमधुमहासुखसम्पदमृतवर्षभूरिधाराश्रवन्ती... तत्त्वसिद्धिः त.सि.68क/179.

ཉེམ་ཉུར་མི་བྱེད *क्रि.* न काङ्क्षति – དེ་ལྟར་ཞུགས་པ་དེ་དེ་བཞིན་ཉིད་ཇི་ལྟ་བ་བཞིན་ཐོས་ནས་དེ་ལས་ཀྱང་སོང་ནས་འདི་ལྟར་མ་ཡིན་ནོ་ཞེས་ཉེམ་ཉུར་མི་བྱེད། ཡིད་གཉིས་མི་བྱེད एवमवतीर्णो यथातथतां श्रुत्वाऽपि ततोऽपि चापक्रम्य न काङ्क्षति, न विमतिं करोति ...नैवमिति अ.सा.285ख/161.

ཉེམ་ཉུར་མེད = ཉེམ་ཉུར་མེད་པ།

ཉེམ་ཉུར་མེད་པ *वि.* निष्काङ्क्षः – འདི་ལྟར་སྡུག་བསྔལ་བཞིན་དུ་སངས་རྒྱས་ལ་ཡང་ཉེམ་ཉུར་མེད་ཅིང་ཐེ་ཚོམ་མེད་པས་སོ།། यस्माद् दुःखवद् बुद्धेऽपि निष्काङ्क्षो निर्विचिकित्स इति अभि.स्फु.178क/928.

ཉེམ་ཉུར་མེད་པ་ལ་མངོན་སུམ་དུ་གྱུར་པ निष्काङ्क्षाभिमुखता – ཕྱིར་ཞིང་དེའི་བསམ་པའི་ཁམས་ཡོངས་སུ་དག་པར་འགྱུར་རོ།། ...ཉེམ་ཉུར་མེད་པ་ལ་མངོན་སུམ་དུ་གྱུར་པ་ཡང་ཡོངས་སུ་རྫོགས་པར་འགྱུར་རོ།། तस्य भूयस्या मात्रया आशयधातुश्च विशुद्धयति ...निष्काङ्क्षाभिमुखता च परिपूर्यते द.भू.208क/25.

ཉེམ་ཉུར་ཟ་བ काङ्क्षा – བདག་ཉིད་ཀྱི་ལུང་དང་རྟོགས་པ་ལ་ཉེམ་ཉུར་ཟ་བ་བསལ་བའི་ཕྱིར आगमाधिगमयोरात्मनः काङ्क्षाविनोदार्थम् वि.सू.63ख/80.

ཉེམ་ཞེས་བྱེད = ཉེམས་ཞེས་བྱེད།

ཉེམས་ཞེས *क्रि.* ननाम – འཁར་བའི་སྣོད་བཞིན་སྒྲ་ལྡན་ཞིང་། །རབ་ཏུ་པར་ཞེས་ཉེམས་ཞེས་ཀྱང་།། रणन्ती कांस्यपात्रीव प्रोन्ननाम ननाम च ॥ अ.क.227क/25.30; द्र. ཉེམས་ཞེས་བྱེད།

ཉེམས་ཞེས་བྱེད *क्रि.* अवनमति – རྐང་པ་བཞག་ན་ཉེམ(ས)་ཞེས་བྱེད། རྐང་པ་བཏེག་ན་ཐྲར་ཞེས་བྱེད निक्षिप्ते पादे अवनमति, उत्क्षिप्ते पादे उन्नमति म.व्यु.6768-9(96ख); द्र. ཉེམས་ཞེས།

ཉེམས་ཟེས་བྱེད = ཉེམས་ཞེས་བྱེད།

ཉེའུ་ལྡངས *वि.* वयस्यकः – འཕགས་པ་དགེ་འདུན་འཚོ་འདི་བདག་ཅག་གི་ཉེའུ་ལྡངས་ལྷན་ཅིག་སྐྱེས་པ་ས་རྡུལ་ལ་ལྷན་ཅིག་རྩེ་རྩེ་བ་ལགས་ཏེ अयमस्माकमार्यसङ्घरक्षितो वयस्यकः सहजन्मिकः सहपांशुक्रीडनकः वि.व.101ख/2.87.

ཉེའུ་ཟླ *वि.* वयस्यः – ཉེའུ་ཟླ་རྣམས་ཀྱིས་ཡོངས་བསྐོར་ཏེ། །སྐྱེད་མོས་ཚལ་གྱི་གནས་སུ་བྱུང་།། उद्यानभूमिं निर्यामि [निरयां] वयस्यैः परिवारितः ॥ वि.व.288क/1.108.

ནེའུ་ལེ = སྲེ་མོང नकुलः, जन्तुविशेषः – ཕྱོགས་གཞན་ཞིག་ན…སྦྲུལ་ཞིག་དང་ནེའུ་ལེ་གཉིས་ཕན་ཚུན་མི་མཐུན་ཞིང अन्यस्मिन् प्रदेशे अहिनकुलौ परस्परविरुद्धौ वि.व.200[क]/1.74; कौशिकः श्री.को.166[क]।

ནེའུ་ལེ་མོ नकुली – ད་ནི… དམ་ཚིག་གསུམ་ཅུ་རྩ་དྲུག་གསུངས་ཏེ…ཁྱི་མོ་ནི་སྒྲོལ་མ་དང་…ནེ་ལེ་མོ་ནི་ང་རྒྱལ་མ इदानीं षट्त्रिंशत्समया उच्यन्ते…श्वा तारा…नकुली अतिबला ('नकुली मानिनी' इति भोटपाठः) वि.प्र.167[क]/3.149.

ནེའུ་ལེའི་པགས་པ नकुलचर्म – ཤར་དུ་ལྕགས་མཁན་མ་དང་… བྱང་དུ་ཏིལ་མར་མཁན་མ་དང་… འདི་རྣམས་ཀྱི་གདན་རྣམས་ནི་བསེའི་པགས་པ་དང་…ནེའུ་ལེའི་པགས་པ་དང पूर्वे लोहकारी…उत्तरे तैलिनी…आसामासनानि गण्डचर्म …नकुलचर्म वि.प्र.162[ख]/3.126.

ནེའུ་ལེའི་སོ་རྩེས་རེག་པ *वि.* नकुलदन्ताग्रस्पृष्टम् – ཇི་ལྟར་ནེའུ་ལེའི་སོ་རྩེ་ཡིས། །རེག་པའི་སྨན་ནི…།སྦྲུལ་དུག་ཐམས་ཅད་སེལ་བར་བྱེད།། यथा नकुलदन्ताग्रस्पृष्टा या काचिदौषधिः । सर्वं सर्पविषं हन्ति त.स.115[क]/997.

ནེའུ་སིང = ནེའུ་གསིང་།

ནེའུ་གསིང शाद्वलः, °लम् – ས་གཞི་ནི་ནེའུ་གསིང་སྔོན་པོ་འཇམ་པོ་དང་ལྡན་པ <?>मृदुशाद्वलास्तरणसुखसंस्पर्शदर्शनीयधरणीतले जा.मा.25[ख]/30; हरितशाद्वलम् म.व्यु.7108(101[ख]); द्र. ནེའུ་གསིང་སྔོན་པོ།

ནེའུ་གསིང་གི་གཞི हरितशाद्वलस्थण्डिलम् – ཤིང་སྡོང་པའི་དྲུང་དང་ནེའུ་གསིང་གི་གཞི་དག་ལ་རྒན་རིམས་བཞིན་དུ་བསྒོ་བར་བྱའོ།། वृक्षमूलहरितशाद्वलस्थण्डिलेष्वपि यथावृद्धकोद्देशः वि.सू.61[ख]/78.

ནེའུ་གསིང་སྔོན་པོ शाद्वलः, °लम् – ནེའུ་གསིང་སྔོན་པོ་ཡིད་འོང་བཻ་ཌཱུ་རྱ་འདྲ།…དཀའ་ཐུབ་ནགས་ཚལ वैडूर्यकुट्टिममनोहरशाद्वलानि…तपोवनानि जा.मा.51[क]/60; द्र. ནེའུ་གསིང་།

ནཻ་ཝེ་ཏྱ = ཞལ་ཟས་སམ་ལྷ་བཤོས नैवेद्यम् – ཨོཾ་བཛྲ་ནཻ་ཝེ་ཏྱེ་ཨཱཿཧཱུྃ་སྭཱ་ཧཱ ओं वज्रनैवेद्ये आः हूँ स्वाहा हे.त.14[क]/42.

ནཻ་ར་ཉྫ་ན = ནཻ་རཉྫ་ན།

ནཻ་རཉྫ་ན = ནེ་རཉྫ་ནཱ *ना.* नैरञ्जना, नदी – ནེ་ར་ཉྫ་ནའི་ཆུ་འགྲམ་སུ། །ཆོ་འཕྲུལ་མཛད་པ་མཐོང་ནས་ནི། །དེ་ནས་དེ་ལ་རབ་འབྱུང་ཕྱིར། །བདག་ཅག་གིས་ཀྱང་གསོལ་བ་བཏབ།། अकार्षीत् प्रातिहार्याणि नदीं नैरञ्जनां प्रति। [प्रव्रज्यां याचितोऽस्माभिस्तदालोक्य महामुनिः ॥] वि.व.294[ख]/ 1.119; ག་ཡཱའི་རི་ག་ཡཱའི་རྩེ་མོ་ལ་གནས་ཏེ། ཀང་གིས་ཡུལ་རྒྱུ་ཞིང་སྡེ་དཔོན་གྱི་གྲོང་སྟེང་རྒྱས་ག་ལ་བ་དེར་སོང་སྟེ་ཕྱིན་པ་དང་། དེ་ན་ཀླུང་ནེ་རན་ཛ་ན… མཐོང་སྟེ गयायां विहृत्य गयाशीर्षे पर्वते जङ्घाविहारमनुचंक्रम्यमाणो येनोरुविल्वा सेनापतिग्रामकस्तदनुसृतस्तदनुप्राप्तोऽभूत्। तत्राद्राक्षीन्नदीं नैरञ्जनाम् ल.वि.122[क]/182.

ནཻ་རཉྫ་ནར་གནས་པ *ना.* नैरञ्जनावासिनी, देवी – ལྷ་མོ་ཆེན་མོ་དབྱངས་ཅན་དང་། །ནཻ་ར་ཉྫ་ནར་གནས་པ་དང་།། सरस्वती महादेवी तथा नैरञ्जनावासिनी। सु.प्र.2[क]/2.

ནཻ་རན་ཛ་ན = ནཻ་རཉྫ་ན།

ནོ *नि.* 'ན' इत्यस्य पश्चात् प्रयुज्यमानः निपातशब्दः (སླར་བསྡུ། རྫོགས་ཚིག། བརྡ་སྤྲོད། ཀོ་ངོ་དོ་ནོ་བོ་མོ་འོ། །རོ་ལོ་སོ་ཏོ་སླར་བསྡུ་སྟེ། །རྫོགས་ཚིག་བརྡ་སྤྲོད་ཅེས་ཀྱང་བྱ།།)

– དེ་ཉིད་འདི་ཡིན་ནོ།། स एवायम् न्या.टी.41ख/50; ཅིའི་ཕྱིར་མེ་ནི་སྲེག་པར་བྱེད་པའམ་དྲོ་བ་ཡིན་གྱི། ཆུ་ནི་མ་ཡིན་ནོ།། कस्मादग्निर्दहत्युष्णो वा नोदकमिति त.प.76ख/606; མི་ཁོམ་པ་བརྒྱད་སྤངས་པ་ནི་དལ་བ་འབྱོར་པའོ།། ཚོགས་པ་འདི་ནི་ཤིན་ཏུ་རྙེད་དཀའ་བ་སྟེ། ཤིན་ཏུ་དཀའ་བས་རྙེད་པར་བྱ་བ་ཡིན་ནོ།། अष्टाक्षणविनिर्मुक्तस्य क्षणस्य सम्पत्तिः समग्रता। इयं सुदुर्लभा सुष्ठु दुःखेन लभ्यत इति बो.प.45क/4; དེ་ལ་འཕགས་པའི་རིགས་གསུམ་ནི་བདག་གིར་འཛིན་པའི་དངོས་པོ་འདོད་པ་དེ་དུས་སུ་ཞི་བར་བྱེད་པ་ཡིན་ནོ།། བཞི་པ་ནི་གཉི་ག་འདོད་པ་གཏན་དུ་ཞི་བར་བྱེད་པ་ཡིན་ནོ།། तत्र ममकारवस्त्विच्छायाः तत्कालशान्तये त्रय आर्यवंशा भवन्ति। उभयेच्छात्यन्तशान्तये चतुर्थ इति अभि.भा.9क/894; བདག་ནི་ཚངས་པའོ།། ...དངོས་པོ་རྣམས་ཀྱི་ཕར་གྱུར་པ་ཡིན་ནོ།། अहमस्मि ब्रह्मा...पितृभूतो भावानाम् अभि.स्फु.136ख/847; ནི་ཞེས་བྱ་བ་ནི་བསྡུ་བའི་དོན་ཡིན་ནོ།། समुच्चयेऽयं चकारः अभि.स्फु.88क/759; དྲན་པ་ནི་དྲན་པ་ཁོ་ན་ཡིན་ནོ།། स्मृतिश्च स्मृतिरेव अभि.भा.38ख/1018; དེ་འདོད་ཆགས་ལ་སོགས་པ་དང་ལྡན་པར་མངོན་ནོ།། ते रागादिमन्तो गम्यन्ते न्या.टी.89ख/248; ཀུན་རྫོབ་ཀུན་ད་ལྟ་བུ་ཉིད། །དོན་དམ་བདེ་བའི་གཟུགས་ཅན་ནོ།། संवृतं कुन्दसङ्काशं विवृतं सुखरूपिणम्। हे.त.20ख/66; འདུ་བ་དང་འཇིག་པའི་བསྐལ་པ་དུ་མ་ཡང་རྗེས་སུ་དྲན་ནོ།། अनेकानपि संवर्तविवर्तकल्पानप्यनुस्मरति द.भू.199ख/22; དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་རྣམས་ཀྱིས...ཡང་དག་པར་བསྟན་ནོ།། སྟོན་ཏོ།། སྟོན་པར་འགྱུར་རོ།། तथागतैः...सन्देशितो देश्यते देशयिष्यति वि.प्र.148क/1.2; སྒྲ་ལས་བྱུང་བ་ཡང་། མངོན་པར་འདོད་པ་སྟོན་པའི་ཕྱིར་མི་སླུ་བ་ཡིན་ནོ།། शाब्देऽप्यभिप्रायनिवेदनादविसम्वादनम् प्र.अ.3क/4; དེ་ལ་བྱེ་བྲག་སྨྲ་བ་བསྟན། །མདོ་སྡེ་པ་ཡང་དེ་བཞིན་ནོ།། वैभाष्यं तत्र देशेत सूत्रान्तं वै पुनस्तथा। हे.त.27क/90; དཔེར་ན་ད་ལྟར་བའི་རྟོགས་པ་བཞིན་ནོ།། यथेदानीन्तनो बोद्धा त.प.204ख/125; བཙུན་པ་རྟ་དབྱངས་གང་ཡིན། གང་ཡུལ་འཁོར་སྐྱོང་ཞེས་བྱ་བའི་ཟློས་གར་མཁན་ནོ།། कः पुनर्भदन्ताश्वघोषः ? यस्य राष्ट्रपालं नाम नाटकम् वा.न्या.335ख/66; སྦྱིན་པ་འདི་ལྟ་བུ་དང་འདི་ལྟ་བུར་སྦྱིན་ནོ།། एवं चैवं च दानं दास्यामि अभि.स्फु.253ख/1060; ཁོན་འཛིན་ཞེས་པ་སྟེ་སྦྱོར་བ་ཉི་ཤུ་རྩ་བདུན་ནོ།། वैधृतिरिति सप्तविंशति योगाः वि.प्र.179ख/1.36.

ནོག ककुदः, °दम्, वृषाङ्कम् – བ་ལང་ལ་སོགས་པ་ལ་བྱད་གཟུགས་དང་ཡོན་ཏན་དང་བྱ་བ་དང་ཡན་ལག་དང་ལྡན་པའི་རྒྱུ་མཚན་རྟ་ལ་སོགས་པའི་[བློ་ལས་ལྡོག་པའི་]ཤེས་པ་མཐོང་སྟེ། འདི་ལྟར་བ་ལང་དང་དཀར་པོ་དང་མྱུར་བར་འགྲོ་བ་དང་ནོག་རྒྱས་པ་[དང་དྲིལ་ཆེན་ཅན་]ཞེས་བྱ་བ་དང་གོ་རིམས་བཞིན་ནོ།། गवादिष्वाकृतिगुणक्रियावयवसंयोगनिमित्तोऽश्वादिबुद्धिव्यावृत्तः प्रत्ययो दृष्टः, तद्यथा–गौः शुक्लः शीघ्रगतिः पीनककुदो महाघण्ट इति यथाक्रमम् त.प.290ख/293; सास्ना – བ་ལང་ལྟ་བུ་ནི་བ་ལང་ཡིན་གྱི་བ་ལང་ཉིད་ནི་མ་ཡིན་ཏེ། ནོག་ལ་སོགས་པ་མེད་པའི་ཕྱིར་རོ།། गौरिव गौर्न तु गौरेव, सास्नाद्यभावाद् त.प.275क/264.

ནོག་ཅན 1. = གླང་དམ་ཁྱུ་མཆོག उक्षा, वृषः – उक्षा भद्रो बलीवर्द ऋषभो वृषभो वृषः ॥ अनड्वान् सौरभेयो गौः अ.को.2.9.59; उक्षति रेतः सिञ्चति उक्षा। उक्ष सेचने अ.वि.2.9.59 2. ककुदः – ཀ་ཏྱཱའི་བུ་ནོག་ཅན ककुदः कात्यायनः अ.श.113क/102.

ནོག་ཅན་ཚོགས་པ औक्षकम् – उक्ष्णां संहतिरौक्षकम्

अ.को.2.9.59; उक्ष्णां समूहः औक्षकम् । वृषसमूहनाम अ.वि.2.9.60.

ཉོག་ཉོག་པོར་མ་གྱུར་པ *वि.* अपरामृष्टम् म.व्यु.1625 (36ख); मि. को.122ख।

ཉོག་གསུམ་པ *ना.* त्रिककुद्, पर्वतः मि.को.147ख।

ཉོགས = ཉོགས་པ།

ཉོགས་ཁྲུབ་པ द्र.– ཟས་ལ་སྒྲ་བསྒྱུང་བ་ཉིད་དང་ཤིན་ཏུ་བསྡམས་པ་ཉིད་དང་ཤིན་ཏུ་ཉོགས་ཁྲུབ་པ་ཉིད་ཀྱིས་སོ།། अन्य[? अल्प]शब्दतया भोजने सुसंवृततया सुप्रतिच्छन्नतया वि.सू.93क/111; द्र. ཉོགས་པ།

ཉོགས་པ *भू.का.कृ.* परामृष्टः म.व्यु.7031 (100ख); द्र. ཉོགས་ཁྲུབ་པ།

ཉོངས = ཉོངས་པ།

ཉོངས་གྱུར = ཉོངས་གྱུར་པ།

ཉོངས་གྱུར་པ *भू.का.कृ.* मृतः – གནས་སྐབས་དེ་ཡི་ཚེ་ན་དེར། །མི་བདག་སྲས་མེད་ཉོངས་གྱུར་པས།། तस्मिन्नवसरे तत्र निष्पुत्रे नृपतौ मृते । अ.क.268क/32.35; द्र.– གཞོན་ནུ་ཁྱེད་ཀྱི་ཡབ་ཉོངས་ཀྱིས कुमार पिता ते कालगतः वि.व.156ख/1.45.

ཉོངས་བགྱིས दुष्कृतम् – གང་གིས་བདེ་འགྲོར་མཆི་བར་འགྱུར་བའི་ལས། །འགྲོ་བས་ལེགས་པར་བགྱིས་དང་ཉོངས་བགྱིས་མཁྱེན།། येन यान्ति सुगतिं च कर्मणा जानसे सुकृतदुष्कृतं जगे ॥ रा.प.230क/122; ཉོངས་བགྱིས་སྒྲིབ་པ་ཆེན་པོས་བསྒྲིབས་པ་འདི་དག་ལ། །ཆུ་བོ་སྐམས་གྱུར་འདི་ལ་བདག་གིས་ཅི་ཞིག་ཉོངས།། एषां तु दुष्कृतमहावरणावृतानां शोषं जलं व्रजति कोऽत्र ममापराधः ॥ वि.व.153क/1.41.

ཉོངས་བགྱིས་པ = ཉོངས་བགྱིས།

ཉོངས་ཅན = ཉེས་པ अपराधः – आगोऽपराधो मन्तुश्च अ.को.2.8.26; अपराध्यतेऽनेनेति अपराधः । राध संसिद्धौ अ.वि.2.8.26.62क/195; द्र. ཉོངས་པ།

ཉོངས་པ • *सं.* 1. = ཉེས་པ अत्ययः, दोषः – འདྲེན་པ་རྣམས་ཀྱིས་བདག་གི་སྡིག། །ཉོངས་པ་ལགས་པར་གཟུང་དུ་གསོལ།། अत्ययमत्ययत्वेन प्रतिगृह्णन्तु नायकाः । बो.अ.6ख/2.66; ཉོངས་པ་ཉིད་དེ་ཉེས་པ་ཉིད་དོ།། अत्ययत्वेन दोषत्वेन बो.प.68ख/36; བཅོམ་ལྡན་འདས་བདག་གི་ཉོངས་པ་དེ་བློ་བར་ཆུད་ཅིང་ཉོངས་པར་མཐོང་ལགས་ན་ཐུགས་བརྩེ་བ་ཉེ་བར་བཟུང་སྟེ་ཉོངས་པ་ལ་ཉོངས་པར་གཟུང་དུ་གསོལ तस्य मम भगवन्नत्ययं जानतोऽत्ययं पश्यतः अत्ययमत्ययतः प्रतिगृह्यानुकम्पामुपादाय वि.व.143क/1.32; अपराधः – དེ་སྟེ་བདག་གིས་ཉོངས་པར་གྱུར་ན་ཡང་། །འོན་ཀྱང་རྒྱལ་པོས་བཟོད་ན་མཛེས་པར་འགྱུར།། अथाप्ययं स्यादपराध एव मे क्षमा तु शोभेत तथापि ते नृप । जा.मा.170क/196; དེ་ཡང་བདག་ཅག་གིས་ཉོངས་ཀྱིས། བཅོམ་ལྡན་འདས་ཀྱིས་མ་ཉོངས་སོ།། अस्माकमेवैषोऽपराधः, नैव भगवतोऽपराधः स.पु.25क/44; अपकृतम् – དྲང་སྲོང་ཆེན་པོ་གང་བདག་གིས་དུད་འགྲོའི་སྐྱེ་གནས་སུ་སྐྱེས་པས་བྱ་མི་བྱ་མི་ཤེས་ནས་ཁྱོད་ལ་ཅུང་ཟད་ཉོངས་པ་ཅི་མཆིས་པ་བདག་ལ་ཁྱོད་ཀྱིས་བཟོད་པ་བཟོད་ཅིག क्षमस्व मम महर्षे यन्मया ऊहापोहविरहितेन तिर्यग्योनावुपपन्नेन तव किंचिदपकृतं स्यात् अ.श.104ख/94; असत् – བྱམས་པའི་ཕྱོགས་ལ་ལེགས་ཉོངས་ཅི་བགྱིས་པའི། །མཐུ་རྣམས་གྲུབ་པ་རྒྱལ་པོས་མཁྱེན་ནས་སུ།། इमं विदित्वा नृप मित्रपक्षे प्रभावसिद्धिः सदसत्प्रवृत्त्योः । जा.मा.145क/168; अंहः – अस्त्री पङ्कं पुमान् पाप्मा पापं किल्बिषकल्मषम् ॥ कलुषं वृजिनैनोऽघ-

मंहोदुरितदुष्कृतम्। अ.को.1.4.24; अंहते नरमनेनेति अंहः। अहि गतौ अ.वि.1.4.24 **2.** = སྐྱོན་ दोषः – ཚིག་སྔ་ཕྱི་འགལ་བའི་ཉེས་པར་འགྱུར पूर्वोत्तरवचनव्याघातदोषः प्रसज्यते ल.अ.99ख/46 **3.** आपत्तिः – བདག་མིང་འདི་ཞེས་བགྱི་བ་ལ་ཇི་སྐད་ཡོངས་སུ་བརྗོད་པའི་གཞི་ལས་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའི་འདུལ་བ་དང་འགལ་བ་ཉེས་བྱས་ཀྱི་ཉེས་པ་བྱུང་སྟེ अहमेवंनामा बोधिसत्त्वविनयातिसारिणीं यथा परिकीर्तिते वस्तुनि दुष्कृतामापत्तिमापन्नः बो.भू.97ख/124; अपबाधः – བཙུན་པ་བདག་ཅག་ཡི་དྭགས་རྣམས་ནི་རྣམ་པར་ལྷུང་བའི་ལུས་ཅན་རྣམས་ལགས་ཏེ། སྔོན་གྱི་ལས་ཀྱི་ཉེས་པས་ཆབ་ཀྱང་མི་རྙེད་ལགས་ན वयं भदन्त प्रेता विनिपतितशरीराः पूर्वकर्मापबाधेन पानीयं नासादयामः वि.व.153क/1.41 **4.** व्यतिक्रमः – བདག་གི་གནས་སུ་རང་དགར་ལྷགས་པ་ལ། །བདག་གིས་ཉེས་པ་ཅུང་ཟད་ཅི་ལྟར་བགྱི॥ अभियाता यदि ते ममाश्रमं यदृच्छया... व्यतिक्रमस्तत्र च नो भवेत्कियान् जा.मा.170क/196; व्यलीकः – ཉེས་པར་དོགས་པ་འགའ་ཞིག་བྱུང་བའི་གཞི། །བདག་གི་ཉེས་པ་ཁྱོད་ཀྱིས་མཐོང་ངམ་ཅི॥ व्यलीकशङ्काजनकं नु किंचिद् दृष्टं प्रमादस्खलितं त्वया नः ॥ जा.मा.130ख/150; प्रमादस्खलितम् – ཉེས་པར་དོགས་པ་འགའ་ཞིག་བྱུང་བའི་གཞི། །བདག་གི་ཉེས་པ་ཁྱོད་ཀྱིས་མཐོང་ངམ་ཅི॥ व्यलीकशङ्काजनकं नु किंचिद् दृष्टं प्रमादस्खलितं त्वया नः ॥ जा.मा.130ख/150; विभ्रान्तम् – ཞར་བ་དང་ཉེས་པ་མེད་པའི་ཕྱིར་ཞེས་བྱ་བ་ལ། ཞར་བ་ནི་གཏན་མ་ཚང་བའོ॥ ཉེས་པ་ནི་ཡོ་བའོ॥ काणविभ्रान्ताभावादिति। काणं आभ्यन्तरविकलम्। विभ्रान्तं केकरम् अभि.स्फु.282ख/1122; द्र.– ཞེ་ས་བསྐྱེད་དེ་བཏབས་པ་བཞིན་དུ་འདི་ཅི་ཉེས་ཞེས་རིད་པར་གྱུར་པའི་རྒྱུ་དེ་ལ་དྲིས་སོ॥ उपचारपुरःसरं ससम्भ्रमाः किमिदमिति कार्श्यनिमित्तमेनमपृच्छत् जा.मा.101क/116 **5.** = ཉེས་པ་ཉིད अत्ययत्वम् – འདྲེན་པ་རྣམས་ཀྱིས་བདག་གི་སྡིག། །ཉེས་པ་ལགས་པར་གཟུང་དུ་གསོལ॥ अत्ययमत्ययत्वेन प्रतिगृह्णन्तु नायकाः। बो.अ.6ख/2.65 **6.** आद.> ཤི་བ कालगतः – གཞོན་ནུ་ཁྱེད་ཀྱི་ཡབ་ཉེས་ཀྱིས कुमार पिता ते कालगतः वि.व.156ख/1.45; द्र.– གནས་སྐབས་དེ་ཡི་ཚེ་ན་དེར། །མི་བདག་སྲས་མེད་ཉེས་གྱུར་པས॥ तस्मिन्नवसरे तत्र निष्पुत्रे नृपतौ मृते। अ.क.268क/32.35; • *अव्य.* दुर् – ཉེས་པར་སྨྲ་བ दुर्भाषितम् अ.सा.163क/92; दुस्. – ཉེས་པར་སྤྱད་པ दुश्चरितम् अ.सा.161ख/91; अप – ཉེས་པ་བགྱིད་པ अपकारी च अ.श.276ख/253.

ཉེས་པ་བགྱིད་པ *वि.* अपकारी – ལྷ་མི་འདི་ནི་རྐུན་མ། ཕོ་བྲང་སུན་འབྱིན་པ། ཉེས་པ་བགྱིད་པ་ལགས་ཏེ अयं देव चौरो दुष्टोऽपकारी च अ.श.276ख/253.

ཉེས་པ་བགྱིས = ཉེས་པ་བགྱིས་པ།

ཉེས་པ་བགྱིས་པ • *भू.का.कृ.* अपराधः कृतः – བདག་ཁྲོས་ཏེ་ཁྱོད་ལ་ཉེས་པ་བགྱིས་པ་དེའི་ལས་ཀྱི་རྣམ་པར་སྨིན་པ་བདག་གིས་མྱོང་བར་མ་གྱུར་ཅིག यन्मया क्रोधाभिभूतेन तवापराधः कृतः, मा अस्य कर्मणो विपाकं प्रत्यनुभवेयम् अ.श.272क/249; • *वि.* अपराधिकः – ལྷ་ཚོང་དཔོན་འདིས་ཉེས་པ་བགྱིས་ཀྱིས། འདི་ཆད་པས་གཅད་ཅིང་ཚར་གཅད་པར་གསོལ देव अयं श्रेष्ठी अपराधिकः, क्रियतामस्य दण्डनिग्रहः अ.श.271ख/249.

ཉེས་པ་ཅན་དུ་མི་སྐྱེ་བ *क्रि.* नापराध्यते – དེ་ལྟར་ཁྱོད་ལ་གནོད་མཛད་ཀྱང་། །ཉེས་པ་ཅན་དུ་མི་སྐྱེ་བས॥ तथा हि बाधमानापि त्वां सती नापराध्यते॥ श.बु.112ख

/66.

ནོངས་པ་ཅན་དུ་གཟུང་དུ་གསོལ *क्रि.* अत्ययं प्रतिगृह्णातु – བདེ་བར་གཤེགས་པ་བདག་ཅག་ནོངས་པ་ཅན་དུ་གཟུང་དུ་གསོལ अत्ययं नो सुगतो प्रतिगृह्णातु ल. वि.181[क]/275.

ནོངས་པ་མ་བགྱིས *वि.* निरपराधः – ཡབ་ཅིག་ཕོའི་འཚལ་ལ་ནི་བུ་སྡུག་ལ་བདག་གིས་ཀྱང་ནོངས་པ་མ་བགྱིས་ན་བདག་མི་དགུམ་པར་ཅི་གནང <?> साधु तात प्रसीद। निरपराधं मा मां परित्याक्षीः। इष्टाश्च सर्वेषां पितृणां पुत्राः अ.श.92[ख]/83.

ནོངས་པར་བགྱིས་པ = ནོངས་བགྱིས།

ནོངས་པར་སྤྱད་པ दुश्चरितम् – ཡིད་ཀྱིས་ནོངས་པར་སྤྱད་པ་དང་ངག་གིས་ནོངས་པར་སྤྱད་པ་འདིའི अस्य मनोदुश्चरितस्य वाग्दुश्चरितस्य च अ.सा.161[ख]/91.

ནོངས་པར་སྨྲ་བ दुर्भाषितम् – དེ་ལྟར་ངག་གིས་ནོངས་པར་སྨྲ་བ་དེ་ལྟ་བུའི་ངོ་བོས་བསོད་ནམས་མ་ལགས་པའི་ཕུང་པོ་ཆེན་པོ་འདི་སྐྱེས་པ་ལགས་སོ॥ एवंरूपेण वाग्दुर्भाषितेन इयान् महाऽपुण्यस्कन्धः प्रसूयते अ.सा. 163[क]/92.

ནོངས་མི་མངའ = ནོངས་མི་མངའ་བ།

ནོངས་མི་མངའ་བ निष्क्लेशत्वम्–དོན་གཟིགས་པས་ནི་མི་སླུ་བ། །ནོངས་མི་མངའ་ཕྱིར་རྗེས་སུ་མཐུན॥ दृष्टार्थत्वादवितथं निष्क्लेशत्वादनाकुलम्। श.बु.113[क]/75.

ནོད = ནོད་པ། ནོད་ན गृह्यमाणः – ཡང་བསྙེན་གནས་ཉིན་ཞག་ཏུ་ནོད་ན་ཅི་ལྟར་མནོད་པར་བྱ་ཞེ་ན अथाहोरात्रं गृह्यमाण उपवासः कथं ग्रहीतव्यः अभि.भा. 181[ख]/622.

ནོད་པ •*क्रि.* *(वर्त., सक.; མནོད་པ भवि., མནོས་པ भूत., གནོས विधौ)* प्रतिगृह्णामि – དེས་ཀྱང་ནོད་ལགས་སོ་ཞེས་ཁས་བླང་བར་བྱའོ...

ནོད་པར་བྱ *कृ.* ग्राह्यम् – བསྙེན་གནས་ཡན་ལག་ཚང་བར་ནི། །ནང་པར་གཞན་ལས་ནོད་པར་བྱ॥ काल्यं ग्राह्योऽन्यतः ...उपवासः समग्राङ्गः अभि.को.12[क]/622.

ནོད་པར་བྱེད = ནོད་པར་བྱེད་པ།

ནོད་པར་བྱེད་པ •क्रि. गृह्णाति – དེ་ན་གཅིག་ནི་མིག་བཙུམས་ཏེ་ལུང་ནོད་པར་བྱེད་དོ། तत्रैकश्चक्षुषी निमीलयित्वोद्देशं गृह्णाति वि.व.103ख/2.89; आदानं करोति – དྲན་པ་གསོ་བའི་ཕྱིར་ཡང་དང་ཡང་ནོད་པར་བྱེད་པར་ཟད་ཀྱི स्मृत्युद्बोधनार्थं पुनःपुनरादानं करोति बो.भू.86क/109; • सं. आक्रमणम् – རྨད་དུ་བྱུང་བའི་སྟོབས་བཅུ། ནོད་པར་བྱེད་པའི་དགེ་བའི་རྩ་བ། བྱང་ཆུབ་ཀྱི་སྙིང་པོ་ནོད་པར་བྱེད་ཅིང་། ངེས་པར་ཕ་རོལ་དུ་འགྲོ་བར་བྱེད་པ महाद्भुतदशबलाक्रमणकुशलबोधिमण्डाक्रमणनियतपरायणम् म.मू.180क/108; • वि. ग्राहकः – སངས་རྒྱས་དང་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་རྣམས་ལས་...གདམས་ངག་ནོད་པར་བྱེད་པ बुद्धबोधिसत्त्वानामन्तिकादववादग्राहकः सू.व्या.167ख/58; • पा. प्रतीच्छकः, मनस्कारभेदः – ཡིད་ལ་བྱེད་པ་ནི་རྣམ་པ་བཅོ་བརྒྱད་དེ། རིགས་ངེས་པ་དང་...ནོད་པར་བྱེད་པ་དང་...རྒྱ་ཆེན་པོ་ཡིད་ལ་བྱེད་པའོ། अष्टादशविधो मनस्कारः । धातुनियतः...प्रतीच्छकः...विपुलमनस्कारश्च सू.व्या.166क/57; ནོད་པར་བྱེད་པ་ནི་སངས་རྒྱས་དང་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་རྣམས་ལས་ཆོས་ཀྱི་རྒྱུན་གྱི་གདམས་ངག་ནོད་པར་བྱེད་པ་གང་ཡིན་པའོ། प्रतीच्छको यो धर्मस्रोतसि बुद्धबोधिसत्त्वानामन्तिकादववादग्राहकः सू.व्या.167ख/58.

ནོན = ནོན་པ།

ནོན་པ •सं. आक्रान्तिः – མཚམས་ཀྱི་བར་ན་འདུག་པ་ལ་ལུས་སམ་གཞན་གྱིས་རེག་པས་ཇི་ཙམ་ནོན་པ་དེར་གཏོགས་པ་རྣམས་སོ། *> सीमान्तरिकात् स्थलग्ने कायेऽन्यत्र वा यातायामाक्रान्तिस्तावद् गतानाम् वि.सू.68क/85; अतिक्रामणम् – ཐག་པ་ནས་ཐག་པར་ཁུར་སྣེད་པ་ཁུར་ཅ་བ་རྣམས་ཁུར་གྱིས་ནོན་ཏེ། སྡུག་བསྔལ་བ་ཁོ་ནར་གནས་བཞིན་དུ་བདེའོ་སྙམ་དུ་བློ་སྐྱེད་པར་བྱེད་དོ། अंशादशं भारं सञ्चारयन्तो भारवाहका दुःख एवावस्थिते भारातिक्रामणे सुखमिति बुद्धिमुत्पादयन्ति अभि.स्फु.155क/880; घातः – གཏི་མུག་འཁྲུལ་པས་བདག་ནོན་ཏེ། །རྗེས་སུ་ཡི་རངས་གང་བགྱིས་པ། यच्चानुमोदितं किंचिदात्मघाताय मोहतः । बो.अ.5क/2.29; द्र. གནོན་པ། • भू.का.कृ. = ཟིལ་གྱིས་ནོན་པ आक्रान्तः – དེ་ལྟར་བྱས་ན་གྲུ་འདི་ཁྱིད་ཀྱིས་ནོན་པས་ཞོག་པར་ཡང་མི་འགྱུར་རོ། एवमिदं यानपात्रं निर्घातभराक्रान्तं न च पार्श्वानि दास्यति जा.मा.85ख/98; ང་ནི་ནུ་མའི་ཁུར་གྱིས་ནོན། अहं कुचभराक्रान्ता अ.क.211क/87.13; སྡུག་བསྔལ་གྱིས་ནོན་པ་ནི་སེམས་ཅན་དམྱལ་བ་ལ་སོགས་པར་སྡུག་བསྔལ་གྱི་ཟིལ་གྱིས་ནོན་པ་རྣམས་སོ། दुःखाक्रान्ताः दुःखाभिभूता नरकादिषु सू.व्या.215क/120; གདུང་བ་དྲག་པོས་ནོན व्यथाक्रान्तः अ.क.246क/92.42; ཡིད་ལ་རེ་བ་བསམ་པས་ནོན། चिन्ताक्रान्तमनोरथः अ.क.204क/23.10; अवष्टब्धः – དེ་...ཐོ་རངས་གཉིད་སྟུག་པོས་ནོན་ཏོ། सोऽपश्चिमे यामे गाढनिद्रावष्टब्धः वि.व.104ख/2.90; ལུས་ཤ་ཅང་ཡང་སྦྲིས་ན་གཉིད་ཀྱིས་ནོན་པར་འགྱུར་རོ། अतिगुरुकायो मिद्धावष्टब्धो भवति बो.प.102क/70; ལྕེ་གཉིས་ཀྱ་གྱུས་ནོན་པ་ཡིས། །ཇོ་བོ་ཙན་དན་ཀང་འཁྲུང་ནི། द्विजिह्वकुटिलाक्रान्तः प्रभुश्चन्दनपादपः । अ.क.176ख/20.14; अभिभूतः – ཕྲུ་གུའི་མྱ་ངན་གྱིས་ནོན་པ शावकशोकाभिभूताः वि.व.123ख/1.12; ཉོན་མོངས་པས་ནོན་བཞིན་དུ क्लेशाभिभूतेन म.टी.221क/53; རྒྱལ་བུ་གཞོན་ནུ་དེ་གཉིས་རབ་ཏུ་མྱ་ངན་གྱིས་ནོན तौ राजकुमारौ परमशोकाभिभूतौ सु.प्र.56क/110; ग्रस्तः – ཀ་སི་མྱ་ངན་གྱིས་ནོན་པའི། मृत्यु-

शोकजराग्रस्ताम् गु.सि.23ख/51; आर्तः – མྱ་ངན་ཉོན་ शोकार्ताः सु.प्र.58क/116; आस्कन्दितः – དེ་དག་གིས་ཉོན་པ་སྟེ། མནན་པ तैरास्कन्दितमाक्रान्तम् त.प.169क/56; आविष्टः – སྐྱེས་པའམ་བུད་མེད་དམ ...མི་མ་ཡིན་པའི་གདོན་གྱིས་ཟིན་ཅིང་ཉོན་པ स्त्री वा पुरुषो वा...अमनुष्यग्रहेण गृहीतो वा आविष्टो वा अ.सा.338क/190; अवनतः – རྫིང་བུའི་འགྲམ་ན་མེ་ཏོག་གི་ལྕིད་ཀྱིས་ཉོན་པའི་ཤིང་བཟང་པོ་སྟུག་པོ་ཡོད་པ ...ཞིག་ཏུ पुष्करिण्यास्तीरे कुसुमभरावनतरुचिरतरुवरनिचिते जा.मा.12क/12; समारूढः म.व्यु.7525 (107क); • कृ. आनम्यमानः – ཡལ་ག་ཉོན་པ་ཞིག་གི་དྲུང་ན་གནས་ཤིང་འདུག་གོ། आनम्यमानशाखं निश्रित्य विजहार जा.मा.157ख/182.

ཉོན་པར་གྱུར *भू.का.कृ.* अवष्टब्धः – (རྡོག་)སས་ཉོན་པར་གྱུར पांशुना अवष्टब्धः लो.को.1355.

ཉོན་པར་འགྱུར *क्रि.* अवष्टब्धो भवति – ལུས་ཧ་ཅང་ཡང་ལྕིས་ན་གཉིད་ཀྱིས་ཉོན་པར་འགྱུར་རོ། अतिगुरुकायो मिद्धावष्टब्धो भवति बो.प.102क/70; अवष्टप्स्यते – (རྡོག་)སས་ཉོན་པར་འགྱུར་རོ། पांशुना अवष्टप्स्यते लो.को.1355.

ཉོན་པར་བྱེད *क्रि.* अवक्रामति – དམིགས་པ་བརྗོད་དུ་མེད་པ་དག་ཀྱང་སྒྲིབ་པ་མེད་པའི་དབྱིངས་སུ་ཉོན་པར་བྱེད་དོ། (बोधिसत्त्वः) अपर्यन्तानि चारम्बणानि अनारम्बणे धातावक्रामति ग.व्यू.206क/287.

ཉོན་མ་གྱུར *क्रि.* मा बाधतु लो.को.1355.

ཉོམ་པ •*क्रि. (वर्त.; सक.; མནམ भवि., མནམས भूत., ཉོམས विधौ)* आमृशति म.व्यु.9368(129क); • *सं.* आमर्शः – ཉོམ་པའི་སྔ་རོལ་ནི་སྦྱོར་བའི་སྦྱོར་བ་ཉིད་དོ། प्रयोगप्रयोगत्वं प्रागामर्शात् वि.सू.14क/16; द्र. གྱི་ཉོམ་པ།

ནོར • *सं.* 1. धनम् – ནོར་གྱི་དྲེགས་པས་ལོང་བ धनदर्पान्धयम् अ.क.235क/27.3; རྒྱལ་པོ་ནི། །ནོར་དང་སྐྱེ་བོ་དར་བ राजा धनजनोर्जितः अ.क.91क/64.32; མི་རྣམས་ནོར་ནི་དངུལ་ཆུའི་ཐིགས་པ་ཁུ་ཚུར་དག་གིས་བསྡམས་པའི་རྣམ་པར་མཐོང་། दृष्टं मुष्टिनिविष्टपारदकणाकारं नराणां धनम् अ.क.184क/21.1; ཚུལ་ཁྲིམས་ནོར་གྱིས་རབ་དག་པ། शीलधनप्रशुद्धः र.व्या.83ख/17; འཕགས་པ་རྣམས་ཀྱི་ནོར་ནི་རྣམ་པ་བདུན་ནོ། धनमार्याणां सप्तविधम् ल.वि.67ख/89; ཤི་བའི་ནོར་ལེན་པ मृतधनोद्ग्रहणम् वि.सू.51क/64; वित्तम् – གཞན་གྱི་ནོར་ལ་རྐུ་བ་དང་། परवित्तापहारिणः गु.सि.2ख/6; གཅིག་གི་ནོར་དུ་འང་དེས་མི་ཚོག། नालमेकस्य तद्वित्तम् वि.व.180क/1.61; द्रव्यं वित्तं स्वापतेयं रिक्थमृक्थं धनं वसु। हिरण्यं द्रविणं द्युम्नमर्थरैविभवा अपि॥ अ.को.2.9.90; विद्यते लभ्यत इति वित्तम्। विद्लृ लाभे अ.वि.2.9.90; द्रविणम् – ཡོན་ཏན་ནོར་ནི་ཡང་དག་རྫོགས། །དབུལ་ལ་དྲིན་པར་བདག་གྱུར་ཅིག། गुणद्रविणसंपूर्णः स्यां दरिद्रप्रसादनः। अ.क.331ख/41.85; བརྩེ་བས་དེ་དག་ནོར་རྣམས་ཀྱིས། །དབུལ་པོ་ཉིད་ནི་མིན་པར་བསྒྲུབས། विधाय दयया तेषां द्रविणैरदरिद्रताम्। अ.क.216क/24.96; རང་ཡུལ་བྲལ་བའི་སྐྱེ་བོ་རྣམས། །ནོར་གྱི་ཚོགས་ནི་ཁུར་པོ་དང་། །ལོངས་སྤྱོད་ཉེ་བར་ལོངས་སྤྱོད་མིན། །ཡོན་ཏན་ཐག་པའི་མདུད་པར་རིག། भारं द्रविणसम्भारं वेत्ति ग्रन्थिगुणागुणः। भोगं निरुपभोगं च स्वदेशविरही जनः॥ अ.क.146ख/14.90; द्रव्यम् – ཕྱི་རོལ་ནོར་ལྟ་སྨོས་ཀྱང་ཅི་ཞིག་དགོས། །རང་གི་མིག་དང་མགོ་ཡང་ངས་སྦྱིན་ན། द्रव्येषु बाह्येषु क एव वादो दद्यामहं स्वे नयने शिरो वा। जा.मा.50क/59; བདག་གི་ནོར་འདི་ཀུན་གྱི་བདག་པོ་སྟེ། सर्वस्य द्रव्यस्य अयं प्रभुर्मे स.पु.45क/80;

स्वम् – སེམས་ཅན་ཐམས་ཅད་ཀྱི་ཕོངས་པ་ཡོངས་སུ་གཅད་པའི་ཕྱིར་བདག་གི་ནོར་ཐམས་ཅད་ནི་བཏང་བར་བྱ सर्वसत्त्वदारिद्र्यव्यवच्छेदाय सर्वस्वपरित्यागिना भवितव्यम् ग.व्यू.240ख/321; མ་བྱིན་ལེན་པ་གཞན་གྱི་ནོར། །མཐུ་དང་འཇབ་བུས་བདག་གིར་བྱེད།། अदत्तादानमन्यस्वस्वीक्रिया बलचौर्यतः ॥ अभि.को.13ख/687; स्वापतेयम् – ཅིག་ཤོས་ཀྱང་ནོར་ལ་ཞེན་ཏེ་ལྷག་པར་ཆགས་པར་བྱས་པས་ནེའུ་ལེར་སྐྱེས་སོ།། द्वितीयोऽपि स्वापतेयमवष्टभ्याध्यवसानं कृत्वा नकुलः संवृत्तः वि.व.201क/1.75; वसु – དེ་ནས་སྐྱེ་བོ་དེ་དག་དབུལ་པོར་ཏེ། །ས་བདག་ལས་ནི་མཐུན་པར་ནོར་ཐོབ་ནས།། अथ विहाय जनः स दरिद्रतां सममवाप्तवसुर्वसुधाधिपात्। जा.मा.64ख/74; མི་བདག་ནོར་གྱི་ཆར་འབེབས་དེས། །དེ་དག་རྣམས་ལ་དེ་སྐད་བསྟན།། इत्यादिष्टा नृपतिना ते तेन वसुवर्षिणा। अ.क.48ख/58.17; अर्थः – ནོར་ལ་རྣམ་པར་རྟོག་པ་གང་ཞེ་ན། འདི་ལྟ་སྟེ། གསེར་དང་དངུལ་དང་ནོར་རིན་པོ་ཆེ་རྣམ་པ་མང་པོའི་ཡུལ་བརྗོད་པའོ།། अर्थविकल्पः कतमः ? यदुत सुवर्णरूप्यविविधरत्नार्थविषयाभिलापः ल.अ.106ख/52; གཏམས་པའི་ནོར་བཞིན་གཞན་ལ་གཏད་བྱ་བ། །རིགས་ཀྱི་བུ་མོ་བསམ་པའི་འབྲས་བུ་ཉིད།། न्यासार्थतुल्या हि परार्पणीयाश्चिन्ताफला एव कुलस्य कन्याः ॥ अ.क.118ख/65.13; कोशः – དཔའ་བས་ཡུལ་འཁོར་ཐོབ་པར་མི་འགྱུར་ལ། །ནོར་དང་རྩོལ་ཡོད་ཐབས་ཀྱིས་དེ་མི་ཐོབ།། न देशमाप्नोति पराक्रमेण तं न कोशवीर्येण न नीतिसंपदा। जा.मा.127क/147; कोशसंपद् – ནོར་མེད་ན་ནི་རྒྱལ་པོའི་དཔལ་དེ་ཡང་།...སྨད་འཚོང་བུད་མེད་བཞིན།། नराधिपं श्रीर्न हि कोशसंपदा विवर्जितं वेशवधूरिवेक्षते ॥ जा.मा.191ख/223; धन्यम् – ནོར་གྱིས་མཐོ་བ་རྣམས་ཀྱི་ནོར་ནི་བློ་གྲོས་ཉིད།། धीरेव धन्यं धनमुन्नतानाम् अ.क.68क/6.177; भोगः – མཁས་པས་ནོར་ནི་མང་པོ་དག། །རྙེད་ནས་བག་མེད་མི་བྱ་སྟེ།། लब्ध्वा हि विपुलं भोगं न प्रमाद्येद्विचक्षणः। वि.व.186क/1.61; विभवः – ནོར་ཟད་དུ་དོགས་པས विभवपरिक्षयाशङ्कया जा.मा.22क/24; རྒྱལ་སྲིད་བདེ་དང་ཕྱུག་པའི་བུད་མེད་དང་། །ནོར་རྣམས་ཐམས་ཅད་དུ་ཡང་རྣམ་སྤངས་ཏེ།། राज्यसौख्यविभवांश्च सर्वशो विप्रहाय दयिताः स्त्रियोऽपि च। रा.प.244ख/143; पणः श्री.को.182ख **2.** धनम् – དབུས་མའི་ཁྱུང་པོ་ལ་བུ་ལོན་དུ་འགྱུར་རོ།། ...སྤྱེང་གི་ཁྱུང་པོར་གཟའ་གཉིས་ནོར་དུ་འགྱུར་རོ།། मध्यमे राशौ ऋणं भवति...मूर्ध्नि राशौ वारद्वयं धनं भवति वि.प्र.175क/1.28; ཉིན་ཞག་བདུན་པ་ལ་ཆ་ཤས་ཉི་ཤུ་རྩ་ལྔ་ཀྱང་པའི་དབང་པོས་[དབང་གིས་]ནོར་རམ་བུ་ལོན་དུ་འགྱུར་རོ།། सप्तमे दिने पञ्चविंशत्यंशाः धनं वा ऋणं वा चरणवशाद् भवन्ति वि.प्र.263क/2.73 **3.** = བརྒྱད वसुः, अष्टसंख्या – ནོར་གྱི་ཕྱག་གི་པདྨ་ནི་ཕྱག་བརྒྱད་དེ वसुकरकमला अष्टभुजा वि.प्र.36ख/4.15; ནོར་ནི་གདེངས་ཅན་གྱིས་བསྒྱུར་ཞེས་པ་བརྒྱད་ལ་བརྒྱད་ཀྱིས་བསྒྱུར་བ वसुफणिगुणिता अष्टावष्टभिर्गुणिताः वि.प्र.53ख/4.83 **4.** = ནོར་བུ मणिः – མ་ཡིས་གཙུག་གི་ནོར་བྱིན་ནས། །བཏང་བ दत्वा चूडामणिं मात्रा स विसृष्टः अ.क.128क/66.31; གཙུག་གི་ནོར चूडामणिः अ.क.159ख/17.33 **5.** = ནོར་བ། **0.** उपधिः – ནོར་དག་ཟུག་རྒྱུར་རྟོགས་ནས शल्यमुपधिं विदित्वा वि.व.180क/1.61; वसुधा – ཇི་ལྟར་ནོར་ནི་བསྒྲིབས་པས་ན། །མི་ཤེས་གཏེར་མི་ཐོབ་པ་ལྟར།། वसुधान्तरितं यद्वदज्ञानान्नाप्नुयुर्निधिम्। र.वि.61क/69; • *ना.* धनः, नागः – རྒྱ་མཚོའི་མཐར་ནི་ནོར་ཞེས་པའི། །ཀླུ་ནི་གཉེན་མང་ལྡན་པ་བྱུང་།། धननामा समुद्रान्ते नागोऽभूद्बहु-

बान्धवः। अ.क.69[क]/60.2.

ནོར་བདུན सप्त धनानि – 1. དད་པའི་ནོར श्रद्धाधनम्, 2. ཚུལ་ཁྲིམས་ཀྱི་ནོར शीलधनम्, 3. ངོ་ཚ་ཤེས་པའི་ནོར ह्रीधनम्, 4. ཁྲེལ་ཡོད་པའི་ནོར अपत्राप्यधनम्, 5. ཐོས་པའི་ནོར श्रुतधनम्, 6. གཏོང་བའི་ནོར त्यागधनम्, 7. ཤེས་རབ་ཀྱི་ནོར प्रज्ञाधनम् म.व्यु.1566 (35[ख]).

ནོར་ཀུན सर्वस्वम् – རང་གི་ནོར་ཀུན་བྱིན་ནས་ནི། །རྗེས་སུ་འབྲང་བའི་ནོར་རྣམས་བསྲུངས།། निजसर्वस्वदानेन संररक्षानुयायिनम्॥ अ.क.57[ख]/6.50.

ནོར་སྐལ दायाद्यम् – བུའི་ངོ་མཐོང་བར་འོང་ངོ་།། ...ནོར་སྐལ་ལ་སྤྱོད་པར་ཤོག་ཤིག [ཤོག་ཅིག] पुत्रमुखं पश्येयम् ...दायाद्यं प्रतिपद्येत अ.श.9[क]/8.

ནོར་སྐྱོང ना. धनपालः, गजः – དགེ་བའི་དབང་པོས་བྱས་པའི་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའི་རྟོགས་པ་བརྗོད་པ་དཔག་བསམ་གྱི་འཁྲི་ཤིང་ལས་ནོར་སྐྱོང་གི་རྟོགས་པ་བརྗོད་པའི་ཡལ་འདབ་སྟེ་ཉི་ཤུ་རྩ་དགུ་པའོ།། क्षेमेन्द्रविरचितायां बोधिसत्त्वावदानकल्पलतायां धनपालावदानं अष्टाविंशः पल्लवः अ.क.247[क]/28.70; ནོར་སྐྱོང་འདུལ་བའི་ཕྱག་གིས་ལག་པ་རབ་ཏུ་བསྟན་ན་ཁྱི་འབྲོས་པར་འགྱུར་རོ།། धनपालवैनेयहस्तेन हस्तं दर्शयेत्। श्वा पलायते हे.त.4[ख]/10; धनपालकः – གང་གི་ཚེ་མི་བླུན་པོ་ལྷས་སྦྱིན་གྱིས་བཅོམ་ལྡན་འདས་བསྒྲོངས [འགྲོངས་]པའི་ཕྱིར་གླང་པོ་ཆེ་ནོར་སྐྱོང་ཡང་བཏང यदा देवदत्तेन मोहपुरुषेण भगवतो वधार्थेन धनपालको हस्तिनाग उत्सृष्टः अ.श.91[ख]/82; द्र. ནོར་སྐྱོང་ཞལ་མ།

ནོར་སྐྱོང་ཞལ་མ वसुपालमुखी – ཀླུ་མོ་ནོར་སྐྱོང་ཞལ་མ་ཞེས་བྱ་བའི་སྒྲུབ་ཐབས नागीवसुपालमुखीसाधनम् क. त.2050.

ནོར་གྱི་རྒྱུན = ནོར་རྒྱུན།

ནོར་གྱི་དངོས་པོ धनवस्तु – དེ་ལ་ནོར་གྱི་དངོས་པོ་གང་ཞེ་ན། འདི་ལྟ་སྟེ། ...ནོར་བུ་དང་...གཞན་ཡང་གང་དག་དེ་ལྟ་བུ་དང་མཐུན་པའི་རིན་པོ་ཆེའམ་དབྱིག་གམ་སྐང་ཟིལ་ལམ་གོས་སམ तत्र धनवस्तु तद्यथा मणिः...यद्वा पुनरन्यदप्येवंभागीयं रत्नं वा हिरण्यं वा रूप्यं वा वस्त्रं वा श्रा.भू.61[ख]/153.

ནོར་གྱི་གཏེར निधिः – དབུལ་པོས་ནོར་གི་གཏེར་མཐོང་བ दरिद्रस्य वा निधिदर्शनम् वि.व.157[क]/1.45; འདི་ལྟར་ཡང་དབྱར་གནས་པར་དམ་བཅས་པའི་དགེ་སློང་གིས་ནོར་གྱི་གཏེར་ཞིག་མཐོང་ངོ་།། यथापि तद्वर्षोपगतस्य भिक्षोर्निधय उपदर्शयन्ति वि.व.246[क]/2.147.

ནོར་གྱི་བདག 1. उत्तमर्णः – उत्तमर्णाधिमर्णौ द्वौ प्रयोक्तृग्राहकौ क्रमात्। अ.को.2.9.5; ऋणे उत्कृष्टः उत्तमर्णः। वृद्ध्यर्थं धनप्रयोक्तृनाम अ.वि.2.9.5 2. = ནོར་གྱི་བདག་པོ།

ནོར་གྱི་བདག་པོ • ना. 1. धनपतिः i. कुबेरः – དེ་ན་ནོར་གྱི་བདག་པོའི་ཁང་བཟངས་ལས་ནི་བྱང་གི་ཕྱོགས་ན་བདག་གི་གྲོང་ཁྱེར་ནི།། तत्रागारं धनपतिगृहानुत्तरेणास्मदीयम् मे.दू.347[ख]/2.14; धनाधिपतिः – སུ་ཞིག་འདི་ལྟར་གནས། ནོར་གྱི་བདག་པོ་རྣམ་ཐོས་ཀྱི་བུའམ་ཅིག་མ་ཡིན་ནམ། འོན་ཏེ་འདོད་པའི་དབང་པོ་བདུད་ལྟའམ कोन्वयं निषण्णः? मा हैव वैश्रवणो धनाधिपतिर्भवेत्। आहोस्विन्मारः कामाधिपतिः ल.वि.69[क]/90 ii. नृपः – རྒྱལ་པོའི་གནས་སྡོང་པོ་རི་པོའི་དཔལ་དེར་ཁམས་ཀྱི་རྒྱལ་པོ་ནོར་གྱི་བདག་པོ་ཞེས་བྱ་བ་བྱུང་སྟེ तस्यां खलु द्रुममेरुश्रियां राजधान्यां धनपतिर्नाम राजा अभूत्

मण्डलिकः ग.व्यू.231ख/309; དེ་ནས་རྒྱལ་པོ་ནོར་གྱི་བདག་པོས་སངས་རྒྱས་བྱུང་བར་ཐོས་ནས ...ཤིན་ཏུ་བདེ་ཞིང་ལྡན་པ་ལ་ནི་རབ་ཏུ་གཞོལ་བར་སེམས अथ खलु राजा धनपतिर्बुद्धोत्पादश्रवणेन...अत्यन्तयोगक्षेम-प्रतिष्ठापकसंज्ञी ग.व्यू.244ख/327; •*वि.* पाशुपतम् – སངས་རྒྱས་པོས་མེད་ཞི་བ་འམ། །དེ་བཞིན་ནོར་གྱི་བདག་པོ་འམ།། बौद्धं चैवार्हतं वापि शैवं पाशुपतं तथा । गु.सि.14ख/32; द्र. ནོར་བདག།

ནོར་གྱི་བློ་གྲོས = ས་གཞི वसुमती, पृथिवी – འཚེད་པ་ལས་ཐར་གསེར་བཟང་མཛེས་པའི་གནས་ལ་རབ་སྦྱར་གནས་པ་ཐོབ་པ་ཡི། །རིན་དེ་ནོར་གྱི་བློ་གྲོས་རྒྱ་མཚོའི་སྐེ་རགས་དང་ལྡན་ཀང་པའི་ཆ་ལའང་ཆུང་།། पाकोत्तीर्णसुवर्ण-सुन्दरपदप्राप्तप्रबन्धस्थितेः मूल्यं सागरमेखला व-सुमती पादांशकेऽप्यल्पकम् ॥ अ.क.290क/107.26; द्र. ནོར་གྱི་བློ་གྲོས་མ།

ནོར་གྱི་བློ་གྲོས་མ = ས་གཞི वसुमती, पृथिवी – གང་ཚེ་དང་པའི་རྒྱལ་པོ་ནི། །ཇིང་བུ་གཙང་མ་དྲན་པ་ན། །དེ་ཚེ་ནོར་གྱི་བློ་གྲོས་མ། །རོ་ལྡན་ལ་ཡང་ང་མི་ཕྲེད།། यदैव राजहंसेन स्मर्यते शुचि मानसम्। तदैवास्मै वसुमती सरसीव न रोचते ॥ अ.क.93क/9.81; द्र. ནོར་གྱི་བློ་གྲོས།

ནོར་གྱི་དབང་པོ = ནོར་ལྷ द्रविणेश्वरः, कुबेरः – ཕྱོགས་མཚམས་རབ་ཏུ་གསལ་བྱེད་པ། །ཉི་མ་འདྲ་བ་ཁྱོད་ནི་སུ། །སྐབས་གསུམ་དབང་དམ་རི་བོང་ཅན། །ལྷ་འམ་ནོར་གྱི་དབང་པོ་འམ།། को भवानर्कसंकाशः प्रकाशितदिग-न्तरः । त्रिदशेशः शशाङ्को वा देवो वा द्रविणेश्वरः ॥ अ.क.235ख/27.9; द्र. ནོར་གྱི་དབང་ཕྱུག།

ནོར་གྱི་དབང་ཕྱུག = ནོར་ལྷ धनेश्वरः, कुबेरः – སྦྱིན་པ་དྲགས་ན་ནོར་གྱི་དབང་ཕྱུག་གི། །ནོར་ཡང་ཇི་སྲིད་ཅིག་ཏུ་ཟད་པར་འགྱུར།། अतिप्रदातुर्हि कियच्चिरं भवेद्धने-श्वरस्यापि धनेश्वरद्युतिः ॥ जा.मा.191ख/222; द्र. ནོར་གྱི་དབང་པོ།

ནོར་གྱི་རིག་པ *पा.* अर्थविद्या, कलाविशेषः – དེ་བཞིན་དུ་མཆོངས་པ་དང...ནོར་གྱི་རིག་པ་དང...སྤྲོས་སྦྱར་བ་ལ་སོགས་པའི་སྒྱུ་རྩལ...ཐམས་ཅད་ལ एवं लङ्घिते...अर्थ-विद्यायां...गन्धयुक्तौ–इत्येवमाद्यासु सर्वकर्मकलासु ल.वि.80ख/108.

ནོར་གྱི་ལེགས་བྱས *ना.* धनसंस्कृतः, आचार्यः मि.को.6ख।

ནོར་གྱི་བཤེས་གཉེན *ना.* मित्रावसुः, सिद्धकुमारः – དཔག་བསམ་ཤིང་སྦྱིན་རྩེ་དགས་རབ་གྲགས་པ། །ཁྱོད་ཀྱི་གྲགས་པ་ཡོན་ཏན་མཐུ་ཡིས་བརྒྱན། །ཟླ་ལྟར་དཀར་བ་འདི་ཡི་རྣ་རྒྱན་དུ། །མིང་པོ་ནོར་གྱི་བཤེས་གཉེན་དག་གིས་བྱས།། प्रख्यातकल्पद्रुमदानशीलं गुणप्रभावाभरणं यशस्ते । अस्याश्च मित्रावसुनानुजेन कर्णावतंसी-कृतमिन्दुशुभ्रम् ॥ अ.क.297क/108.36.

ནོར་གྱི་ལྷ वसुदेवः, श्रीकृष्णजनकः ङ.को.26/रो.को.4.307.

ནོར་གྱིས་བཀུར་བ *ना.* धनसम्मतः, नृपः – ཡུལ་དབུས་སུ་སྔོན་རྒྱལ་པོ་ནི། །ནོར་ལྷའི་བུ་ལྟར་ནོར་ལྷའི་བུ། །བྱང་ཕྱོགས་སུ་ཡང་མི་བདག་ནི། །ནོར་གྱིས་བཀུར་བ་ཞེས་པ་བྱུང་།། मध्यदेशे पुरा राजा वासवो वासवोपमः । धनसम्मतनामा च नृपोऽभूदुत्तरापथे ॥ अ.क.156क/16.19.

ནོར་གྱིས་རྒན་པ *वि.* धनवृद्धः – རྒན་པ་བཞི...ཡེ་ཤེས་ཀྱིས་རྒན་པ་ནི་མངོན་པར་ཤེས་པ་ཐོབ་པ... དཀའ་ཐུབ་ཀྱིས་རྒན་པ་ནི་དུར་ཁྲོད་འཛིན་པ...ཐོས་པས་རྒན་པ་ནི་མཁས་པ... ནོར་གྱིས་རྒན་པ་ནི་རྒྱལ་པོ चत्वारो वृद्धाः

...ज्ञानवृद्धोऽभिज्ञालाभी...तपोवृद्धः काषायधारी... श्रुतवृद्धः पण्डितः...धनवृद्धो राजा वि.प्र.155ख/1.4.

ནོར་གྱིས་ཕྱུག་པ धनेशत्वम् – ཐམས་ཅད་ས་ཡི་བདག་པོ་འམ། །ནོར་གྱིས་ཕྱུག་པའམ་དབང་པོ་འམ། །ཚངས་པའམ་རྣམ་པར་གྲོལ་བ་དག། །དཀའ་ཐུབ་འདི་ཡིས་བཞེད་ལགས་སམ།། सर्वक्षितिपतित्वं नु धनेशत्वमथेन्द्रताम् । ब्रह्मभूयं विमोक्षं वा तपसानेन वाञ्छसि ॥ जा.मा. 44क/51.

ནོར་འཕྲིབས་པ अर्थनाशः – ཕན་ཚུན་མཐུན་པ་མ་ཡིན་དང་། །ནོར་འཕྲིབས་པས་ནི་གནོད་པ་དང་།། परस्परविरुद्धा वा अर्थनाशैरुपद्रुताः ॥ सु.प्र.2क/2.

ནོར་རྒྱས *ना.* वासुकिः, नागराजः – वासुकिस्तु सर्पराजः अ.को.2.10.1; वसति पाताल इति वासुकिः । वस निवासे अ.वि.2.10.1; द्र. ནོར་རྒྱས་ཀྱི་བུ།

ནོར་རྒྱས་ཀྱི་བུ *ना.* वासुकिः, नागराजः – ཀླུའི་རྒྱལ་པོ་བརྒྱད་འདི་ལྟ་སྟེ། ཀླུའི་རྒྱལ་པོ་དགའ་བོ་དང་...ནོར་རྒྱས་ཀྱི་བུ་དང अष्टाभिश्च नागराजैः सार्धं...तद्यथा–नन्देन च नागराजेन...वासुकिना च स.पु.3क/2; ཆུ་སྐྱེས་ཀྱི་ཤར་གྱི་འདབ་མ་ལ་སྟོབས་ཀྱི་རྒྱུ་དང་མེར་པདྨ་དང་ལྷོར་ནོར་རྒྱས་ཀྱི་བུ་དང अब्जपूर्वपत्रे कर्कोटः, अग्नौ पद्मः, दक्षिणे वासुकिः वि.प्र.73क/4.136; མེའི་དཀྱིལ་འཁོར་ལ་ནོར་རྒྱས་ཀྱི་བུ་དང་དུང་སྐྱོང་དག वासुकिशङ्खपालयोर्वह्निमण्डले वि.प्र.55क/4.85; ལྟོ་འཕྱེ་ཆེན་པོ...།མཐའ་ཡས་འཇོག་པོ་དེ་བཞིན་དུ། །སྟོབས་ཀྱི་རྒྱུ་དང་རིགས་ལྡན་དང་། །ནོར་རྒྱས་བུ་དང་དུང་སྐྱོང་དང་། །པད་མ་ཆུ་བདག་དེ་བཞིན་ནོ།། महोरगम् । अनन्तं तक्षकं चैव कर्कोटं कुलिकं तथा ॥ वासुकिं शङ्खपालं च पद्मं वै वारुणं तथा । स.दु.119ख/204.

ནོར་རྒྱས་བུ = ནོར་རྒྱས་ཀྱི་བུ།

ནོར་རྒྱུན • *सं.* वसुधारा – ནོར་འཛིན་ནི།...ནོར་འཛིན་[ནོར་རྒྱུན་]གྱིས། །ཚིམ་པ་དག་ཀྱང་ཐོབ་པར་གྱུར།། नीयते च पुनस्तृप्तिं वसुधा वसुधारया ॥ का.आ.334ख/3.10; • *ना.* वसुधारा, धारणी – འཕགས་པ་ནོར་གྱི་རྒྱུན་ཞེས་བྱ་བའི་གཟུངས आर्यवसुधारानामधारणी क.त. 662, 1007; द्र. ནོར་རྒྱུན་མ།

ནོར་རྒྱུན་མ *ना.* **1.** वसुधारा, देवी – དཔལ་ལྷ་མོ་ནོར་རྒྱུན་མའི་དཀྱིལ་འཁོར་གྱི་ཆོ་ག श्रीवसुधारादेवीमण्डलविधिः क.त.3753; ब.वि.165ख **2.** वसुधारिणी, यक्षिणी – ནོར་རྒྱུན་མ་གནོད་སྦྱིན་མོ་ཐམས་ཅད་དང་ལྡན་པ་མྱུར་དུ་ཚུར་བྱོན वसुधारिणी सर्वयक्षिणीसमेता शीघ्रमागच्छ ब.वि.170क।

ནོར་རྒྱུན་མ་པ་ལང་ཧྲི *ना.* गोपालवसुधारा, देवी लो.को.1357.

ནོར་རྒྱུན་མ་དམར་མོ *ना.* रक्तवसुधारा, देवी लो.को. 1357; द्र. ནོར་རྒྱུན་མ།

ནོར་རྒྱུན་མའི་སྒྲུབ་ཐབས *ना.* वसुधारासाधनम्, ग्रन्थः क.त.3237, 3239, 2604, 3605; དཔལ་ནོར་རྒྱུན་མའི་སྒྲུབ་ཐབས श्रीवसुधारासाधनम् क.त.3700.

ནོར་རྒྱུན་མའི་གཟུངས་ཀྱི་མན་ངག *ना.* वसुधाराधारण्युपदेशः, ग्रन्थः क.त.3240, 3606.

ནོར་སྒྱུར་མཁན धातुवादी म.व्यु.3754(62ख).

ནོར་སྒྲུབ་པ धनार्जनम्– ནོར་སྒྲུབ་པའི་ཐབས་གཙུག་ལག་ལས་འབྱུང་བ་གཞན་དག་ཀྱང་ཡོད सन्त्यन्येऽपि शास्त्रपरिदृष्टा धनार्जनोपायाः जा.मा.70क/81; धनोपार्जनम् – ནོར་སྒྲུབ་པའི་རིམ་པ धनोपार्जनक्रमः जा. मा.70क/81.

ནོར་བསྒྱུར་མཁན = ནོར་སྒྱུར་མཁན།

ནོར་ཅན • *वि.* धनी–ལན་ཚྭ་ཡིས་བཞིན་ནོར་ཅན་རྣམས། །ནོར་དག་གིས་ནི་སྲེད་པ་འཕེལ།། धनेन धनिनां तृष्णा लवणेनेव वर्धते ॥ अ.क.231क/89.123; མཉན་ཡོད་དུ་ནི་ཁྱིམ་བདག་དག། །བརྟན་པ་ཞེས་བྱ་ནོར་ཅན་བྱུང་།། महाधनः। धीराभिधानः श्रावस्त्यामभूद् गृहपतिः अ.क.324ख/41.2; • *सं.* = རྒྱ་ཅོ་ वसुकम्, रोमकम् मि.को.57क; • *ना.* 1. धनिकः i. श्रावकाचार्यः – ཉན་ཐོས་ཀྱི་དགེ་འདུན་ཆེན་པོ...དང་ལྷན་ཅིག་པ་ལ་འདི་ལྟ་སྟེ། འོད་སྲུང་ཆེན་པོའི་བུ་དང... ནོར་ཅན་དང महाश्रावकसङ्घेन च सार्धम्... तद्यथा–महाकाश्यपः... धनिकः म.मू.99ख/9 ii. गृहपतिः – ཁྱིམ་བདག་དཔལ་གྱིས་བསྐོར་བ་ནི། །ནོར་ཅན་ཞེས་པ་བྱུང་བར་གྱུར། །དེ་ཡི་ཆུང་མ་ཆོས་ཀྱི་གྲོགས། །ངང་ཚུལ་ཅན་ཞེས་བྱ་བར་གྱུར། །བུ་ནི་གཏོང་ཕོད་ཅན་ཞེས་དང་། །དེ་བཞིན་མནའ་མ་བདེན་ལྡན་མོ།། बभूव धनिको नाम श्रिया गृहपतिर्वृतः।...पत्नी धर्मसखी तस्य शीलवत्यभिधाऽभवत् । वदान्याख्यश्च तनयः स्नुषा सत्यवती तथा ॥ अ.क.237क/90.4 iii. कश्चित् पुरुषः – ནོར་ཅན་ཞེས་པ་ནོར་དང་ལྡན། །བཱ་རཱ་ཎ་སཱིར་སྔོན་བྱུང་གྱུར། །གདུང་བ་འཕྲོག་ཅིང་འབྲས་བུ་རྒྱས། །སློང་བ་རྣམས་ཀྱི་གྲིབ་ཤིང་བཞིན།། धनिको नाम धनवान् वाराणस्यामभूत्पुरा। तापापहः फलस्फीतश्छायावृक्ष इवार्थिनाम् ॥ अ.क.350ख/46.41 2. धनः, नृपः – དེ་ལ་བྱང་ཕྱོགས་ཀྱི་ལྔ་ལེན་པ་ནོར་ཅན་ཞེས་བྱ་བ་གྲོང་ཁྱེར་སྣང་པོའི་ཁྱིམ་ཞེས་བྱ་བ་ན...རྒྱལ་སྲིད་བྱེད་དུ་འཇུག་གོ། तत्रोत्तरपञ्चालो धनो नाम्ना हस्तिनापुरे नगरे राज्यं कारयति वि.व.202ख/1.77; धनी – ཇི་ཙམ་དུས་གཞན་ཞིག་ན་རྒྱལ་པོ་ནོར་ཅན་བཙུན་མོ་དང་ལྷན་ཅིག་རྩེ་བར་བྱེད་དགའ་བར་བྱེད་དགའ་མགུར་སྤྱོད་པར་བྱེད་དོ།། यावदपरेण समयेन धनी [धनो] राजा देव्या सार्धं क्रीडति रमते परिचारयति वि.व.206क/1.80.

ནོར་ཅན་གྱི་བུ *ना.* वासवः, इन्द्रः – ཚངས་པ་དང་དབང་པོ་དང...ནོར་ཅན་གྱི་བུ་དང...ཤ་ཟ་དང...ཚངས་པའི་དྲང་སྲོང་དག་ལ་ཕྱག་འཚལ ब्रह्मेन्द्र...वासव...पिशाचांश्च ...ब्रह्मर्षींश्च नमस्यन्ति ल.वि.123ख/183.

ནོར་ཆང་ལྡན་མ <?> *ना.* सुरवती, विद्याराज्ञी – སྒྲོལ་མ་དང... ནོར་ཆང་ལྡན་མ་དང... ཟླ་ལྡན་མ་དང་། འདི་དག་དང་གཞན་ཡང་རིག་པའི་རྒྱལ་མོ་དག तारा...सुरवती... चन्द्रावती चेति। एतैश्चान्यैश्च विद्याराज्ञीभिः म.मू.96क/7.

ནོར་ཆེ་བ *वि.* महाधनः – དེའི་ཚེ་མཉན་དུ་ཡོད་པ་ན་ཚོང་དཔོན་ཕྱུག་ཅིང་ནོར་མང་བ་ལོངས་སྤྱོད་ཆེ་བ་ནོར་དང་ཡོ་བྱད་མང་བ...ཞིག་ཡོད་དེ तेन खलु समयेन श्रावस्त्यामन्यतमः श्रेष्ठी आढ्यो महाधनो महाभोगः प्रभूतवित्तोपकरणः अ.श.72ख/63; शि.स.41क/39; द्र. ནོར་ཆེ་བ།

ནོར་ཆེན • *वि.* महाधनः – དེ་ཡི་དུས་ན་འཕགས་རྒྱལ་དུ། །ཚོང་པ་ཅན་དན་བྱིན་ཞེས་པ། །ནོར་ཆེན་ནི་ཚོང་དག་གིས་ནི། །རབ་ཏུ་གྲགས་པ་བྱུང་བར་གྱུར།། बभूव समये तस्मिन्नुज्जयिन्यां महाधनः। वणिक्चन्दनदत्ताख्यः प्रख्यातक्रयविक्रयः॥ अ.क.231क/89.122; • *सं.* महद् धनम्–སྐྱེ་བོ་ནོར་ཆེན་རྙེད་པ་ཡིས། །འཕྲལ་ལ་མཐོན་པོ་ཐོབ་གྱུར་པ།། धनलाभेन महता सद्यः प्राप्तोन्नतिर्जनः। अ.क.326ख/41.29.

ནོར་ཆེན་ལྡན *वि.* महाधनः – གཞན་ཡང་དོན་གཉེར་ནོར་ཆེན་ལྡན། །བདག་གིས་ཅི་བྱ་དེ་མ་རིག།། अर्थी महाधनश्चान्यः किं करोमि न वेद्मि तत् ॥ अ.क.157ख/72.12.

ནོར་ཆེན་པ = ནོར་ཆེན།

ནོར་ཆེན་པོ = ནོར་ཆེན།

ནོར་མཆོག सर्वस्वम् – དེ་ཡིས་ཡིད་ཀྱི་ནོར་མཆོག་དེ། །འདོད་པའི་རིག་པ་བཞིན་དྲན་ཅིང་། །འཁོར་ལོས་སྒྱུར་བའི་བུ་མོ་ནི། །རྙེད་པར་དཀའ་བར་ཤེས་ནས་བསམས།། स तां मानससर्वस्वं[स्वां] स्मरविद्यामिव स्मरन् । प्रदध्यौ दुर्लभां मत्वा तनयां चक्रवर्तिनः ॥ अ.क. 359क/48.20.

ནོར་ཉམས = ནོར་ཉམས་པ།

ནོར་ཉམས་པ अर्थनाशः – དབུལ་དང་བུད་མེད་དང་བྲལ་མི་བདག་འཁྲུགས་པའི་འཇིགས་དང་རྡོ་རྗེ་ལྷུང་དང་ནོར་ཉམས་རྣམས།། दारिद्र्यं स्त्रीवियोगः क्षुभितनृपभयं वज्रपातोऽर्थनाशः वि.प्र.111ख/1, पृ.8.

ནོར་སྟོན = ནོར་སྟོན་པ།

ནོར་སྟོན་པ पा. अर्थनिदर्शनी, रश्मिविशेषः – ནོར་རྣམས་སྟོན་པའི་འོད་ཟེར་རབ་གཏོང་ཞིང་...དཀོན་མཆོག་གསུམ་ལ་གཏེར་གཞི་མི་ཟད་པ། །དབུལ་བ་ཐུས་པས་ནོར་སྟོན་འོད་ཐོབ་པོ།། अर्थनिदर्शनि मुञ्चति रश्मीन् ...अक्षयरत्ननिधिं त्रीभि रत्नैर्दानत अर्थनिदर्शनि लब्धा ॥ शि.स.181ख/181.

ནོར་དང་འདྲ་བ प्रतिवस्तुकम् – ནོར་དང་འདྲ་བ་གཞན་ན་འདུག་པ་ཡང་ཅིན་གྱིས་བརླབ་པར་བྱའོ།། प्रतिवस्तुकेनान्यस्थमधितिष्ठेयुः वि.सू.68क/85; प्रतिवस्तु म.व्यु.9405(129क); सप्रतिवस्तुकत्वम् – གང་ན་ནོར་དང་འདྲ་བ་དེར་འདུག་པ་དེའི་ཡོངས་སུ་ཡོ་བྱད་གཏོགས་པ་ཉིད་ཡིན་ནོ།། सप्रतिवस्तुकत्वे यत्रासौ तद्गतत्वं परिष्कारस्य वि.सू.68क/85.

ནོར་དང་ལྡན = ནོར་ལྡན།

ནོར་དང་ལྡན་པ = ནོར་ལྡན།

ནོར་དང་འབྲུ धनधान्यम् – ནོར་དང་འབྲུ་སོགས་རྒྱས་གྱུར་པ། །དགའ་བོ་ཞེས་ལ་བུ་མོ་ནི། །རྒྱགས་པའི་རི་མོ་ཞེས་པ་བྱུང་།། नन्दनाम्नो गृहपतेर्मदलेखाभिधा सुता। बभूव धनधान्यादिस्फीतिः अ.क.323क/40.191; རང་གི་བུ་པོ་བུ་མོ་ཆུང་མ་སྤྱུག...།གྲོང་ཁྱེར་ནོར་དང་འབྲུ་རྣམས་མང་པོ་བཏང་།། दुहितृस्वसुताः प्रियभार्याः त्यक्त पुरा धनधान्यप्रभूताः। रा.प.237क/133.

ནོར་དང་ཡོ་བྱད་མང་བ वि. प्रभूतवित्तोपकरणः – དེའི་ཚེ་མཉན་དུ་ཡོད་པ་ན་ཚོང་དཔོན་ཕྱུག་ཅིང་ནོར་མང་ལ་ལོངས་སྤྱོད་ཆེ་བ་ནོར་དང་ཡོ་བྱད་མང་བ...ཞིག་ཡོད་དེ तेन खलु समयेन श्रावस्त्यामन्यतमः श्रेष्ठी आढ्यो महाधनो महाभोगः प्रभूतवित्तोपकरणः अ.श.72ख/63.

ནོར་དུ་བྱས་པ वि. धनायितम् – གང་འདི...བདག་གིར་བྱས་པ་དང་ནོར་དུ་བྱས་པ་དང་བརྟེན་པའི་གནས་སུ་གྱུར་པ་དེ་དག་ཐམས་ཅད་ཀྱི་ཐམས་ཅད་དུ་རབ་ཏུ་ཞེས་སོ།། यानीमानि...ममायितानि धनायितानि निकेतस्थानानि, तानि सर्वाणि विगतानि भवन्ति स्म द.भू. 207क/25.

ནོར་དུ་མ་དང་ལྡན वि. अनेकधनसमुदितम् – བདག་གི་ཁྱིམ་ནོར་དུ་མ་དང་ལྡན་དུ་ཟིན་ཀྱང་བདག་ལ་བུ་ཡང་མེད་བུ་མོ་ཡང་མེད་པས अनेकधनसमुदितं मे गृहम्, न मे पुत्रो न दुहिता अ.श.98क/88.

ནོར་དུ་མི་བྱེ क्रि. न धनायते – རྙེད་པ་རྙེད་ཀྱང་བདག་གིར་མི་བྱེད། ནོར་དུ་མི་བྱེ། ཚོགས་སུ་མི་བྱེད लब्ध्वा लाभं न ममायते, न धनायते न सन्निधिं करोति शि.स.148ख/143.

ནོར་དོན་དུ་གཉེར་བ वि. धनार्थी – འདིར་གང་དག་ནོར་དོན་དུ་གཉེར་བའི་ཁྱིམ་པའི་སློབ་དཔོན་རྣམས इह धना-

र्थिनो ये गृहस्थाचार्याः वि.प्र.93[क]/3.4.

ནོར་བདག •*वि.* धनी – ཤི་བ་ཉིད་ཀྱི་དུས་ན་རྫས་ཉིད་བསྒྲུབ་པ་ལ་ནི་ནོར་བདག་མི་དབང་ངོ་॥ अप्रगमो मृतकालस्वत्वसम्पादने धनिनः वि.सू.68[ख]/85; • *ना.* धनपतिः, कुबेरः – དེ་ནས་ནོར་བདག་བརྒྱ་བྱིན་ཚངས་སོགས་སློན་པོ་རྣམས་ཀྱི་[འཆི་མེད་རྣམས་ཀྱིས་] ནི॥ अथ धनपतिशक्रब्रह्ममुख्यैरमर्त्यैः अ.क.255[ख]/93.77; धनाधिपः – རྒྱལ་པོ་ཆེན་པོ་ནི། །བཞི་ཞེས་བརྗོད་པ... ཡུལ་འཁོར་སྲུང་དང་འཕགས་སྐྱེས་པོ། །མིག་མི་བཟང་དང་ནོར་བདག་གོ॥ चत्वारः...महाराजाभिधाः...धृतराष्ट्रविरूढाख्यविरूपाक्षधनाधिपाः। अ.क.171[क]/77.5; *विनायकः – ཚངས་པ་དབང་པོ་ཉེ་དབང་དྲག། །གཤིན་རྗེ་དང་ནི་ནོར་བདག་དང་॥ ब्रह्मेन्द्रोपेन्द्ररुद्राश्च वैवस्वत विनायकः। हे.त.24[ख]/80; द्र. ནོར་གྱི་བདག་པོ།

ནོར་བདུན་སྦྱིན་པ་པོ *वि.* धनसप्तदायकः, बुद्धस्य – ཆོས་ཀྱི་རྒྱལ་པོ་ནོར་བདུན་སྦྱིན་པ་པོ།...།འདྲེན་པ་ཆོས་ཀྱི་རྗེ་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ॥ धर्मराज धनसप्तदायका...धर्मस्वामि प्रणमामि नायकम्॥ रा.प.230[ख]/123.

ནོར་བདུན་ལ་བརྟེན་པའི་རྣམ་པ *वि.* सप्तधनसमवशरणाकारम् – ཐོས་པའི་རྣམ་པ་ནི་བརྒྱད་ཅུ་སྟེ། འདི་ལྟ་སྟེ། འདུན་པའི་རྣམ་པ་དང...ནོར་བདུན་ལ་བརྟེན་པའི་རྣམ་པ་དང अशीत्याकारप्रवेशं श्रुतम्। तद्यथा छन्दाकारम्...सप्तधनसमवशरणाकारम् शि.स.107[क]/105.

ནོར་ལྡན = ནོར་དང་ལྡན་པ • *वि.* 1. धनवान् – བྲམ་ཟེའི་རིགས་སམ་རྣལ་འབྱོར་ཅན། །ཤེས་རབ་ཅན་དང་ནོར་ལྡན་པར། །དེ་དག་རྣམས་ནི་སྐྱེ་བར་འགྱུར॥ ब्राह्मणेषु च जायेत अथ वा योगिनां कुले। प्रज्ञावान् धनवांश्चैव ल.अ.157[ख]/105; ནོར་ཅན་ཞེས་པ་ནོར་དང་ལྡན། །ཝཱ་རཱ་ཎ་སཱིར་སྔོན་བྱུང་གྱུར། །གདུང་བ་འཕྲོག་ཅིང་འབྲས་བུ་རྒྱས། །སློང་བ་རྣམས་ཀྱི་གྲིབ་ཤིང་བཞིན॥ धनिको नाम धनवान् वाराणस्यामभूत्पुरा। तापापहः फलस्फीतश्छायावृक्ष इवार्थिनाम्॥ अ.क.350[ख]/46.41; वित्तवान् – གལ་ཏེ་ནོར་ལྡན་འདི་བཏང་ན། །བདག་ཅག་ལ་ནི་ཚོང་ཁེ་མེད॥ नास्माकमेतद्वाणिज्यं त्यज्यते यदि वित्तवान्। अ.क.157[ख]/72.16; अस्तिमान् – ཀློ་ཅན་བརྟག་དགུ་བཏང་བས་ནོར་མེད་པ། །བདག་ཉིད་ནོར་ལྡན་སེམས་པ་ཇི་ལྟ་བར॥ सर्वास्तिदानादधनोऽपि धीमानात्मानमन्वेति यथास्तिमन्तम्॥ सू.अ.207[क]/110; धनी – མ་ནིང་འདོད་ལྡན་བདེ་ལྡན་མཁས། །ནོར་ལྡན་དུད་པ་རྗེ་བཟོད་ལྡན། །སློང་བ་ཁེངས་པ་མི་བསྒྲུན་དེས། །བུད་མེད་དག་ཅེས་གཏམ་ཉིད་ཅི॥ क्लीबः कामी सुखी विद्वान्धनी नम्रः प्रभुः क्षमी। अर्थी मान्यः खलः स्निग्धः स्त्री सतीति कथैव का॥ अ.क.145[क]/14.71; धनिकः – ཡུལ་ཆེན་པོའི་ནང་ན་ནོར་དང་ལྡན་པ་ལགས་ལ महाजनपदेषु च धनिकः स्यात् स.पु.40[क]/71; धन्यः – सुकृती पुण्यवान् धन्यः अ.को.3.1.1 2. *(उ.प.)* धनः – བདེན་ནོར་ལྡན་པར་གྱུར་པ་བདག། །སློང་བ་འབྲས་མེད་ཇི་ལྟར་འགྱུར॥ कथं सारधनो भूत्वा भविष्याम्यर्थिनिष्फलः॥ अ.क.362[ख]/48.59; བདེན་པའི་ནོར་ལྡན་དེ་ཡི་ཚིག་ཐོས་ནས॥ श्रुत्वा वचः सत्यधनस्य तस्य अ.क.32[क]/53.48; द्रविणः – རབ་མང་ནོར་ལྡན་གཏོང་ཕོད་ཅན། །བྲེལ་བས་ཡུན་རིང་མི་སྡོད་པ॥ प्रभूतद्रविणत्यागी व्यग्रत्वादचिरस्थितिः। अ.क.8[ख]/50.81; •*सं.* धनिष्ठा, नक्षत्रविशेषः – श्रविष्ठया। समा धनिष्ठा स्युः अ.को.1.3.22; दधन्ति धनं करोति धनिष्ठा। धन धान्ये अवि.1.3.22; •*ना.* 1. वसुमतिः, विरजस्य जिनस्य माता – ང་ཡི

མ་ནི་ནོར་ལྡན་ཏེ། །ཕ་ནི་བྲམ་ཟེ་སྐྱེ་དགུའི་བདག། །ང་ནི་ཀཱ་ཏྱཱ་ཡ་ནའི་རིགས། །མིང་ནི་རྡུལ་མེད་རྒྱལ་བ་པོ།། माता च मे वसुमतिः पिता विप्रः प्रजापतिः। कात्यायनसगोत्रोऽहं नाम्ना वै विरजो जिनः॥ ल.अ.188ख/159 **2.** वासुकिः, नागराजः – ཀླུའི་རྒྱལ་པོ་ཆེན་པོ་...དགའ་བོ་དང་ཉེ་དགའ་བོ་དང་...ནོར་ལྡན་དང་...ཉེ་བའི་རྒྱ་མཚོ་སྟེ महानागराजानः... नन्द उपनन्दः... वासुकिः... उपसागरश्चेति म.मू.103क/12 **3.** द्रविणः, राक्षसराजः – གང་ཡང་སྲིན་པོའི་རྒྱལ་པོ་ཆེན་པོ་དེ་དག...འདི་ལྟ་སྟེ། སྒྲ་སྒྲོགས་དང་ནོར་ལྡན་དང་...མགོ་མཐའ་ཡས་པ येऽपि ते महाराक्षसराजानः...तद्यथा–रावणः प्र[? द्र]विणः...अनन्तशिरश्चेति म.मू.103क/12.

ནོར་ལྡན་མ • *सं.* = ས་གཞི वसुमती, पृथिवी–གང་གིས ནོར་མཆོག་སྲོག་ལས་ཕངས་པའི་ནོར་ལྡན་མ་ནི་བདེ་བླག་ཉིད་དུ་གཏོང་།། येन प्राणमनःप्रिया वसुमती संत्यज्यते लीलया अ.क.312ख/40.62; • *ना.* धनवती, विद्याराज्ञी – སྒྲོལ་མ་དང... ནོར་ལྡན་མ་དང... ཟླ་ལྡན་མ་དང་། འདི་དག་དང་གཞན་ཡང་རིག་པའི་རྒྱལ་མོ་དག तारा... धनवती... चन्द्रावती चेति। एतैश्चान्यैश्च विद्याराज्ञीभिः म.मू.96ख/7.

ནོར་དཔལ *ना.* धनश्रीः, तथागतः – ཤཱཀྱ་ཐུབ་པ་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ།། ... ནོར་དཔལ་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ།། नमः शाक्यमुनये...नमो धनश्रिये शि.स.95क/94.

ནོར་སྤྲེལ = ནོར་སྤྲེལ་བ།

ནོར་སྤྲེལ་བ धनोपार्जनम् – བྱིས་པའི་གནས་སྐབས་ན གནས་པ་ལ་ནོར་སྤྲེལ་བའི་ནུས་པ་མེད་དེ बालावस्थावस्थितस्य न धनोपार्जनशक्तिरस्ति बो.प.162क/151; अर्जनम् – བྱིས་པ་ནོར་སྤྲེལ་མི་ནུས་པས། །དར་ལ་བབ་ན་འདི་ཅི་བདེ།། शिशोर्नार्जनसामर्थ्यं केनासौ यौवने सुखी। बो.अ.26क/8.72; धनसंचयः – བདག་ཇི་སྲིད་དུ་ཡང་ཚེ་ལ་བབ་པ་དེ་སྲིད་དུ་ནི་ནོར་སྤྲེལ་བར་བྱའོ།། यावदहं युवा, तावद्धनसंचयं करोमि अ.श.217ख/201.

ནོར་སྐྱོང *ना.* माणिचरः, यक्षः – ཁ་བ་ཅན་གྱི་རི་དག་ཏུ། །དེ་ཡང་ནོར་སྐྱོང་གནོད་སྦྱིན་གྲུབ།། तस्यापि माणिचरो यक्षः सिद्धो हैमवते गिरौ। म.मू.305क/475.

ནོར་ཕུན་སུམ་ཚོགས་པ कोशसम्पद् – རྒྱལ་པོའི་དཔལ་ཡང་ནོར་ཕུན་སུམ་ཚོགས་པ་ལ་ལྟོས་སོ།། कोशसम्पदपेक्षिणी च राजश्रीः जा.मा.191ख/222.

ནོར་འཕྲོག = ནོར་འཕྲོག་པ།

ནོར་འཕྲོག་ཏུ་འཇུག *क्रि.* अर्थं मुषति – དེ་དག་རྒྱལ་རིགས་ལ་བརྟེན་ནས་དགེ་སྦྱོང་རྣམས་ལ་ཆད་པས་གཅོད་དུ་འཇུག། ཆད་པས་ནོར་འཕྲོག་ཏུ་འཇུག་སྟེ ते क्षत्रियान्निश्रित्य श्रमणान् दण्डापयन्ति, अर्थं दण्डेन मुषन्ति शि.स.41क/39.

ནོར་འཕྲོག་པ *वि.* धनहरः – བཟང་མོ་བདག་ཅག་གི་བུ་ལོན་དེད་པ་དང་། ནོར་འཕྲོག་པ་སྐྱེས་ཀྱིས भद्रे जातोऽस्माकमृणहरो धनहरश्च वि.व.166ख/1.56.

ནོར་བ • *सं.* **1.** भ्रमः – བདག་ཏུ་ལྟ་བ་གང་ཡིན་པ་དེ་ནི ནོར་བ་སྐྱེས་པ་ཡིན་ནོ།། भ्रम एष तूत्पन्नो येयमात्मदृष्टिः सू.व्या.145ख/24; विभ्रमः – དེ་བཞིན་དུ་འདི་ནི བློ་གྲོས་ཆེན་པོ་སྐྱེ་བ་དང་མི་སྐྱེ་བར་བྱིས་པ་རྣམས་ཀྱིས ནོར་བ་ཡིན་ཏེ तेषामेवमेव महामते उत्पादानुत्पादविभ्रम एष बालानाम् ल.अ.135क/80; ལམ་ནོར་བ मार्गविभ्रमः अभि.स्फु.134क/842; भ्रान्तिः – ཇི་ལྟ་བུར་ན་ནོར་བ་གདའ།། कथं हि दृश्यते भ्रान्तिः ल.अ.64ख/11; ནོར་བ་རང་གི་སེམས་རྟོགས་ན། །འཇུག་པ་མེད་ཅིང་ལྡོག་པ་མེད།། भ्रान्तिः स्वचित्तसंबोधान्न प्रवर्तते

न निवर्तते ल.अ.168क/123; विपर्ययः – ཟློ་མ་བརྗོད་པའི་འདུན་པས་མི་མཐུན་པའི་དོན་བརྗོད་ན་སྦོམ་པོའོ།། ནོར་ན་ཡང་དོ།། उत्तरख्यापनच्छन्देन सनामा[असमाना]र्थाभिधाने स्थूलम्। विपर्ययस्य वि.सू.18ख/21; मिथ्या – ནོར་བའི་དོན་ཁོ་ན་ལ་སྤྱི་དང་གཞི་མཐུན་པའི་ཐ་སྙད་འདོགས་སོ།། मिथ्यार्थ एव सामान्यसामानाधिकरण्यव्यवहारः क्रियते प्र.वृ.285क/27 **2.** = འཁྲུལ छलम्, युद्धधर्मविच्छेदनम्–स्खलितं छलम् अ.को.2.8.108; छयति छिनत्ति कार्यमिति छलम्। छो छेदने अ.वि.2.8.108; •*वि.* भ्रान्तः – གཟུགས་ཡིན།... །བྱིས་པ་ནོར་བ་རྣམས་རྟོག་གོ།། रूपं कल्पन्ति वै बाला भ्रान्ताः ल.अ.160ख/110; विभ्रान्तः – ནོར་བའི་ཡིད་དང་ལྡན་པ विभ्रान्तमानसान् ग.व्यू.192क/274; परिभ्रष्टः – གོར་མ་ཆག་པར་འདི་དག་ནི་ཕྱོགས་བསྙད་ནས་ལམ་ནོར་བ་དག་ཅིག་ཡིན་ནམ व्यक्तं त्वेते परिभ्रष्टा मार्गाद्वा मूढदेशिकाः। जा.मा.180क/209; प्रनष्टः – ལམ་ནོར་བ मार्गप्रनष्टः जा.मा.28क/33; वितथः – འདི་ལ་མ་འཇུག་འདི་ནི་ནོར་བ་ཡིན།། माऽत्र प्रयुज्यथ वितथमेतत् रा.प.240क/137; विपरीतः – ལམ་མ་ནོར་བར་སྟོན་པ अविपरीतमार्गदेशिकः म.व्यु.2761(50ख); मुग्धः – གལ་ཏེ་ནོར་བ་དང་ཞི་བར་འདོད་པ་ནི་མ་གཏོགས་སོ།། न चेत् मुग्धः शमार्थी वा वि.सू.46क/58; •*पा.* भ्रान्तिका, अधिमुक्तिभेदः – སྐྱེས་པ་ནི་འདས་པ་དང་ད་ལྟར་བྱུང་བའོ།།...ནོར་བ་ནི་དམན་པ་སྟེ་ལོག་པར་མོས་པའི་ཕྱིར་རོ།། जाता अतीतप्रत्युत्पन्ना... भ्रान्तिका हीना विपरीताधिमोक्षात् सू.व्या.162क/52.

ནོར་བ་མེད = ནོར་བ་མེད་པ།

ནོར་བ་མེད་པ •*वि.* अवितथः – དེས་སེམས་ཅན་གྱི་ལུས་རྣམས་ཀྱི་ལས་ཀྱི་ལུས་ཀྱང་རབ་ཏུ་ཤེས་སོ།། ...ལུས་མེད་པ་དང་ནོར་བ་མེད་ཅིང་མཐའ་ཡས་པ་དང स सत्त्वकायानां कर्मकायतां च प्रजानाति...अशरीरतां च अवितथानन्ततां च द.भू.245क/46; •*सं.* अभ्रान्तिः – སྐྱེ་བའི་ཚིག་དང་མི་སྐྱེ་བའི་ཚིག་དང...ནོར་བའི་ཚིག་དང་ནོར་བ་མེད་པའི་ཚིག་དང उत्पादपदम्, अनुत्पादपदम्...भ्रान्तिपदम्, अभ्रान्तिपदम् ल.अ.68ख/17.

ནོར་བ་མེད་པའི་ཚིག अभ्रान्तिपदम्, अष्टोत्तरशतपदान्तर्गतपदविशेषः – བཅོམ་ལྡན་འདས་ཚིག་བརྒྱ་རྩ་བརྒྱད་པོ་གང་ལགས། བཅོམ་ལྡན་འདས་ཀྱིས་བཀའ་སྩལ་པ། སྐྱེ་བའི་ཚིག་དང་མི་སྐྱེ་བའི་ཚིག་དང...ནོར་བའི་ཚིག་དང་ནོར་བ་མེད་པའི་ཚིག་དང कतमद्भगवन् अष्टोत्तरपदशतम् ? भगवानाह – उत्पादपदम्, अनुत्पादपदम्... भ्रान्तिपदम्, अभ्रान्तिपदम् ल.अ.68ख/17.

ནོར་བའི་ཚིག भ्रान्तिपदम्, अष्टोत्तरशतपदान्तर्गतपदविशेषः – བཅོམ་ལྡན་འདས་ཚིག་བརྒྱ་རྩ་བརྒྱད་པོ་གང་ལགས། བཅོམ་ལྡན་འདས་ཀྱིས་བཀའ་སྩལ་པ། སྐྱེ་བའི་ཚིག་དང་མི་སྐྱེ་བའི་ཚིག་དང...ནོར་བའི་ཚིག་དང་ནོར་བ་མེད་པའི་ཚིག་དང कतमद्भगवन् अष्टोत्तरपदशतम् ? भगवानाह–उत्पादपदम्, अनुत्पादपदम् ...भ्रान्तिपदम्, अभ्रान्तिपदम् ल.अ.68ख/17.

ནོར་བུ •*सं.* मणिः **1.** = རིན་ཆེན रत्नम् – रत्नं मणिर्द्वयोरश्मजातौ अ.को.2.9.93; मण्यते रत्नमिति मणिः। मण शब्दे। गारुडाद्यश्मजातीयमुक्ताप्रवालादेर्नामनी अ.वि.2.9.93; གཙུག་གི་ནོར་བུ चूडामणिः वि.व.192क/1.66; ཡིད་བཞིན་གྱི་ནོར་བུ चिन्तामणिः का.व्यू.235ख/298; མེ་ཤེལ་གྱི་ནོར་བུ सूर्यकान्तमणिः प्र.सि.31क/73; ནོར་བུ་འོད་དང་ལྡན་པ मणयोऽवभासात्मकाः वि.व.216क/1.92; ནོར་བུ་རྗེ་རང་བཞིན मण-

यः प्रस्थजातयः अ.क.326ख/41.27; रत्नम् – གཞལ་ཏེ་ནོར་བུ་གཟི་ལྟ་བུར། །དངོས་པོ་དུ་མའི་བདག་ཉིད་ཅན།། नन्वनेकात्मकं वस्तु यथा मेचकरत्नवत्। त.स.62ख/593 **2.** लिङ्गाग्रम् – ཤེས་རབ་ཀྱི་ཆུ་སྐྱེས་སུ་གནས་པའི་བྱང་ཆུབ་ཀྱི་སེམས་ཀྱི་ཐིག་ལེ་རྡོ་རྗེ་ནོར་བུར་བཀག་ནས प्रज्ञाऽब्जगतकुलिशमणौ बोधिचित्तबिन्दुनिरोधाद् वि.प्र.67क/4.119; རང་གི་རྡོ་རྗེ་ནོར་བུས་འདོད་སྤྱད་ནས स्वकुलिशमणिना कामयित्वा वि.प्र.159क/3.120 **0.** कौस्तुभः – དཔལ་དང་ནོར་བུ་ལ་སོགས་ཀྱིས། །ལྔ་དྲུག་ཉིད་ཁེངས་གཞན་མིན་ཞེས།། पञ्च षट् पूरिता एवं नान्ये श्रीकौस्तुभादिभिः। अ.क.57क/6.46; • *ना.* मणिः, किन्नरराजः – འཁོར་དེར་མིའམ་ཅི[འི་རྒྱལ་པོ་]བརྒྱ་སྟོང་དུ་མ་ཚོགས་པ་འདི་ལྟ་སྟེ། མིའམ་ཅིའི་རྒྱལ་པོ་བཞིན་བཟངས་དང...མིའམ་ཅིའི་རྒྱལ་པོ་ནོར་བུ་དང तस्मिन् पर्षदि अनेकानि च किन्नरराजशतसहस्राणि सन्निपतितानि। तद्यथा सुमुखश्च किन्नरराजः...मणिश्च किन्नरराजः का.व्यू.201क/259.

ནོར་བུ་བཀོད་པ मणिव्यूहः लो.को.1359.

ནོར་བུ་སྐར་མདོག ज्योतीरसमणिः, मणिविशेषः म.व्यु.5964 (86क).

ནོར་བུ་སྐར་འོད ज्योतिष्प्रभारत्नम्, रत्नविशेषः म.व्यु.5963(86क).

ནོར་བུ་ཁབ་ལེན अयस्कान्तमणिः – ནོར་བུ་ཁབ་ལེན་གྱིས་ལྕགས་འདྲེན་ནོ།། अयस्कान्तमणिना अयआकर्षणम् प्र.प.51ख/62; अयस्कान्तो मणिः – ནོར་བུ་ཁབ་ལེན་གྱིས་ལྕགས་མ་ཐུད་པ་ཁོ་ན་འདྲེན་པར་བྱེད་པ अप्राप्तमेव अय अयस्कान्तो मणिराकर्षति प्र.प.51ख/62; द्र. ནོར་བུ་ཁབ་འོང།

ནོར་བུ་ཁབ་འོང अयस्कान्तमणिः – དེ་ལ་ཡང་ནོར་བུ་ཁབ་འོང་གི་འོད་ཟེར་རེག་པའི་དབང་གིས་ལྕགས་ལེན་པ་ཡིན་གྱི तत्राप्ययस्कान्तमणिप्रभावेधवशादेवाकर्षणमयसः त.प.183ख/829; द्र. ནོར་བུ་ཁབ་ལེན།

ནོར་བུ་མཁན मणिकारः, मणिनिर्मितालङ्कारादिकर्ता – ནོར་བུ་མཁན་མཁས་པ་ནོར་བུ་སྦྱོང་བའི་ཚུལ་ལེགས་པར་ཤེས་པ कुशलो मणिकारो मणिशुद्धिसुविधिज्ञः र.व्या.76ख/5; འཇིག་རྟེན་པའི་བཟོ་དང་ལས་ཀྱི་གནས་ནི་རྣམ་པ་དུ་མ་རྣམ་པ་སྣ་ཚོགས་མང་པོ་ཡོད་དེ། གསེར་མགར་དང་ལྕགས་མགར་དང་ནོར་བུ་མཁན་གྱི་ལས་ཤེས་པ་ལ་སོགས་པ་སྟེ लौकिकानि शिल्पकर्मस्थानान्यनेकविधानि बहुनानाप्रकाराणि सुवर्णकारायस्कारमणिकारकर्मज्ञानप्रभृतीनि बो.भू.52क/68.

ནོར་བུ་མཁན་མ *ना.* मणिकारी, योगिनी – ཟླུམ་སྐོར་གཉིས་པ་ཐུགས་ཀྱི་འཁོར་ལོའི་གནས་ལ་ཤར་དུ་འཁར་བ་མཁན་མོ...བྱང་དུ་ནོར་བུ་མཁན་མ་དང...རླུང་དུ་ཕྲེང་བ་མཁན་མ་སྟེ་རྣལ་འབྱོར་མ་བརྒྱད་དོ།། द्वितीयपरिमण्डले चित्तचक्रस्थाने पूर्वे कंसकारी... उत्तरे मणिकारी... वायव्यां मालाकारीति योगिन्यष्टकम् वि.प्र.162क/3.126.

ནོར་བུ་གླིང *ना.* मणिद्वीपः, द्वीपः – ནོར་བུ་གླིང་གི་ཐུགས་རྗེ་ཆེན་པོ་ལྔ་ལྷ་ལ་བསྟོད་པ मणिद्वीपमहाकारुणिकपञ्चदेवस्तोत्रम् क.त.2730.

ནོར་བུ་ཅན • *सं.* = སྣོད་པོ་ཆེ मणिकः, अलिञ्जरः – अलिञ्जरः स्यान्मणिकः अ.को.2.9.31; मणति गम्भीरं ध्वनतीति मणिकः। मण शब्दे। महाकुम्भनामनी अ.वि.2.9.31; • *ना.* मणिवती, प्रदेशः – ཀུན་དགའ་བོ་ནོར་བུ་ཅན་འདིར་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔས་ནོར་བུ་མང་པོའི་མཆོད་སྦྱིན་བྱས་པས་ནོར་བུ་ཅན་ཞེས་བྱ་བར

གྲགས་སོ།། अस्यामानन्द मणिवत्यां बोधिसत्त्वेन बहुभिर्मणिभिर्यज्ञो यष्टः। मणिवती मणिवतीति संज्ञा संवृत्ता वि.व.156क/1.44.

ནོར་བུ་ཆེན་པོ महामणिः – འཕགས་པ་ནོར་བུ་ཆེན་པོ་རྒྱས་པའི་གཞལ་མེད་ཁང་ཤིན་ཏུ་རབ་ཏུ་གནས་པ་གསང་བ་དམ་པའི་གསང་བའི་ཆོ་ག་ཞིབ་མོའི་རྒྱལ་པོ་ཞེས་བྱ་བའི་གཟུངས आर्यमहामणिविपुलविमानसुप्रतिष्ठितगुह्यपरमरहस्यकल्पराजनामधारणी क.त.506, 885.

ནོར་བུ་ལྷུང = མར་གད हरिन्मणिः, रत्नविशेषः – गारुत्मतं मरकतमश्मगर्भो हरिन्मणिः। अ.को.2.9.92; हरितवर्णो मणिः हरिन्मणिः। हरितवर्णस्य रत्नस्य नामानि अ.वि.2.9.92; द्र. ནོར་བུ་ལྷུང་ཁུ།

ནོར་བུ་ལྷུང་ཁུ हरिन्मणिः, अधमरत्नविशेषः – དེ་བཞིན་དུ་ཐ་མ་རྣམས་ནི་ཤེལ་དང་...མཆིང་བུ་དང་ནོར་བུ་ལྷུང་ཁུ་རྣམས་སོ།། तथा अधमानि–स्फटिक...काचहरितमणयः वि.प्र.149ख/3.96; द्र. ནོར་བུ་ལྷུང་།

ནོར་བུ་སྙིང་པོ = ནོར་བུའི་སྙིང་པོ།

ནོར་བུ་མཐོན་ཀ इन्द्रनीलः, मरकतमणिः – ཁྱེའུ་གཟུགས་བཟང་ཞིང་...མགོ་བོ་ལ་ལྷའི་ནོར་བུ་རིན་པོ་ཆེ་མཐོན་ཀ་ཐོགས་པ་ཞིག་བཙས་ཏེ། पुत्रो जातोऽभिरूपः ...दिव्येनेन्द्रनीलमणिरत्नेन शिरस्याबद्धेन अ.श. 178क/165.

ནོར་བུ་མཐོན་ཀའི་ཁ་དོག་ཅན *वि.* इन्द्रनीलवर्णम् – ཁྱེའུ... ཞིག་བཙས་ཏེ། དེས་གྲོང་ཁྱེར་སེར་སྐྱའི་གནས་ཐམས་ཅད་ནོར་བུ་མཐོན་ཀའི་ཁ་དོག་ཅན་དུ་བྱས་སོ།། पुत्रो जातः... येन कपिलवस्तु नगरमिन्द्रनीलवर्णं व्यवस्थापितम् अ.श.178क/165.

ནོར་བུ་དྲི་མ་མེད་པའི་འོད *ना.* विमलमणिप्रभः, देवपुत्रः – བཅོམ་ལྡན་འདས་སུམ་ཅུ་རྩ་གསུམ་པའི་ལྷའི་རིགས་འདི་ནས་ལྷའི་བུ་ནོར་བུ་དྲི་མ་མེད་པའི་འོད་ཅེས་བགྱི་བ་ཞིག་ཤི་འཕོས་ཤིང་དུས་ལས་འདས་ནས भगवन् इतस्त्रयस्त्रिंशद्देवनिकायाद् विमलमणिप्रभनाम्नो देवपुत्रस्य च्युतस्य कालगतस्य स.दु.97ख/124.

ནོར་བུ་དྲི་མེད་པའི་འོད = ནོར་བུ་དྲི་མ་མེད་པའི་འོད།

ནོར་བུ་སྣ་ཚོགས་ཀྱིས་སྤྲས་པའི་ཅོད་པན་ཅན *वि.* मणिरत्नविचित्रमौलिः – དེ་ནས་སྔོན་ཡི་དྭགས་སུ་གྱུར་པའི་ལྷའི་བུ...ནོར་བུ་སྣ་ཚོགས་ཀྱིས་སྤྲས་པའི་ཅོད་པན་ཅན अथ प्रेतपूर्विणो देवपुत्राः...मणिरत्नविचित्रमौलयः अ.श.125क/115.

ནོར་བུ་འབར་མ *ना.* मणिरोचनी, किन्नरकन्या – མིའམ་ཅིའི་བུ་མོ་བརྒྱ་སྟོང་དུ་མ་དག་ཚོགས་པ་འདི་ལྟ་སྟེ། མིའམ་ཅིའི་བུ་མོ་ཡིད་ཅེས་བྱ་བ་དང... ནོར་བུ་འབར་མ་ཞེས་བྱ་བ་དང अनेकानि च किन्नरकन्याशतसहस्राणि सन्निपतितानि। तद्यथा–मनसा नाम किन्नरकन्या...मणिरोचनी नाम किन्नरकन्या का.व्यू. 203क/260.

ནོར་བུ་སྦྱོང་བའི་ཚུལ་ལེགས་པར་ཤེས་པ *वि.* मणिशुद्धिसुविधिज्ञः – ནོར་བུ་མཁན་མཁས་པ་ནོར་བུ་སྦྱོང་བའི་ཚུལ་ལེགས་པར་ཤེས་པ कुशलो मणिकारो मणिशुद्धिसुविधिज्ञः र.व्या.76ख/5.

ནོར་བུ་མ་ཡིན་པ अमणिः – ཆུ་ལས་ཆུ་བུར་འབྱུང་བ་ནོར་བུ་ཤེལ་འདྲ་བར་སྣང་བ...བློ་གྲོས་ཆེན་པོ་ཆུའི་ཆུ་བུར་དེ་དག་ནི་གཟུང་བ་དང་གཟུང་དུ་མེད་པའི་ཕྱིར་ནོར་བུའང་མ་ཡིན། ནོར་བུ་མ་ཡིན་པའང་མ་ཡིན་ནོ།། जलबुद्बुदकाः स्फटिकमणिसदृशाः ख्यायन्ते।...ते च महामते उदकबुद्बुदका न मणयो नामणयो ग्रहणाग्रहणतः ल.

अ.92क/38.

ནོར་བུ་ཚོན་གྱིས་བསྒྱུར་བ मणिरागः, कलाविशेषः – དེ་བཞིན་དུ་མཆོངས་པ་དང... ནོར་བུ་ཚོན་གྱིས་བསྒྱུར་བ་དང...སྤོས་སྦྱོར་བ་ལ་སོགས་པའི་སྒྱུ་རྩལ...ཐམས་ཅད་ལ एवं लङ्घिते... मणिरागे... गन्धयुक्तौ–इत्येवमाद्यासु सर्वकर्मकलासु ल.वि.80ख/108.

ནོར་བུ་འཛིན • ना. मणिधारिणी, किन्नरकन्या – མིའམ་ཅིའི་བུ་མོ་བརྒྱ་ཕྲག་དུ་མ་དག་ཚོགས་པ་འདི་ལྟ་སྟེ། མིའམ་ཅིའི་བུ་མོ་ཡིད་ཅེས་བྱ་བ་དང...ནོར་བུ་འཛིན་ཞེས་བྱ་བ་དང अनेकानि च किन्नरकन्याशतसहस्राणि संनिपतितानि। तद्यथा–मनसा नाम किन्नरकन्या ...मणिधारिणी नाम किन्नरकन्या का.व्यू.203क/260; • पा. = ནོར་བུ་འཛིན་པ།

ནོར་བུ་འཛིན་པ पा. मणिधरा, मुद्राविशेषः – ཇི་ལྟར་ན་ནོར་བུ་འཛིན་པའི་ཕྱག་རྒྱ་རྟོགས་པར་འགྱུར कथं मणिधरां मुद्रां संजानीते ? का.व्यू.233ख/296.

ནོར་བུ་ཟླ་བ मणिचन्द्रः लो.को.1359.

ནོར་བུ་གཟི मेचकरत्नम् – ནོར་བུ་གཟི་བཞིན་དུ་གཅིག་གིས་དངོས་པོ་ཉིད་ནི་རྣམ་པ་དུ་མ་ཅན་ཡིན་ལ मेचकरत्नवदेकमेव वस्त्वनेकाकारम् त.प.71ख/596.

ནོར་བུ་བཟང ना. मणिभद्रः, यक्षसेनापतिः – གནོད་སྦྱིན་དབང་པོ་ནོར་བུ་བཟང་། །དེ་བཞིན་གང་བ་བཟང་པོ་དང་།། मणिभद्रश्च यक्षेन्द्रः पूर्णभद्रस्तथैव च। सु.प्र.43क/86; གནོད་སྦྱིན་གྱི་སྡེ་དཔོན་ཆེན་པོ་ནོར་བུ་བཟང महायक्षसेनापतेर्मणिभद्रस्य सु.प्र.22क/44; द्र. ནོར་བུ་བཟང་པོ།

ནོར་བུ་བཟང་པོ ना. मणिभद्रः, यक्षसेनापतिः ब.वि.172ख; འཕགས་པ་ནོར་བུ་བཟང་པོའི་གཟུངས་ཞེས་བྱ་བ आर्यमणिभद्रनामधारणी क.त.764; द्र. ནོར་བུ་བཟང་།

ནོར་བུ་འོད मणिप्रभः लो.को.1359.

ནོར་བུ་ཡིད་བཞིན་རིན་པོ་ཆེ चिन्तामणिरत्नराजः – རིགས་ཀྱི་བུ་དེ་ན་ཉི་མ་དང་ཟླ་བ་མི་སྣང་སྟེ། ནོར་བུ་ཡིད་བཞིན་རིན་པོ་ཆེ་དམ་པ་སྦྱིན་པ་ཞེས་བྱ་བ་དེ་སྣང་བར་བྱེད་དོ།། यत्र कुलपुत्र चन्द्रादित्यौ न ज्ञायेते, तत्र च पृथिवीप्रदेशे वरदो नाम चिन्तामणिरत्नराजोऽस्ति। स च तत्रावभासं कुरुते का.व्यू.217ख/277.

ནོར་བུ་རིན་ཆེན = ནོར་བུ་རིན་པོ་ཆེ།

ནོར་བུ་རིན་པོ་ཆེ • सं. 1. मणिरत्नम् i. रत्नम् – དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་འོད་ཀྱི་དཀྱིལ་འཁོར་རབ་ཏུ་འབྱེད་པའི་ནོར་བུ་རིན་ཆེན་འཕྲུག་སྣའི་གཙུག་ཕུད་དང सर्वतथागतप्रभामण्डलप्रमुञ्चनमणिरत्ननिगर्जितचूडेन च ग.व्यू.275ख/2; ལྷ་ཐམས་ཅད་སྣང་བའི་ནོར་བུ་རིན་པོ་ཆེ་ཀུན་ནས་བསྡུས་པའི་ནོར་བུ་རིན་པོ་ཆེའི་རྒྱལ་པོ་ལྟར་གཟི་བརྗིད་ཀྱིས་ནི་ཤིན་ཏུ་འབར་ཞིང सर्वदेवप्रभासमणिरत्नसमुच्चयमणिराजवद्देदीप्यमानः रा.प.228क/120 ii. हस्तचिह्नविशेषः – དམར་པོའི་ཕྱག་གི་མཐིལ་བཞི་ལ་དང་པོར་གཞུ་དང...གསུམ་པར་ནོར་བུ་རིན་ཆེན་དང रक्ते करतलचतुष्के प्रथमे कोदण्डम्...तृतीये मणिरत्नम् वि.प्र.36ख/4.14 2. = ཡིད་བཞིན་ནོར་བུ चिन्तामणिः – འདི་དག་ནོར་བུ་རིན་ཆེན་མཁའ། །ཆུ་ཡི་ཡོན་ཏན་ཆོས་མཐུན་ཉིད།། चिन्तामणिनभोवारिगुणसाधर्म्यमेषु हि॥ र.वि.56क/27; • पा. मणिरत्नम्, सप्तरत्नान्तर्गतरत्नविशेषः – རིན་པོ་ཆེ་བདུན་ཡང་འབྱུང་བ་འདི་ལྟ་སྟེ། འཁོར་ལོ་རིན་པོ་ཆེ་དང...ནོར་བུ་རིན་པོ་ཆེ་དང...བློན་པོ་རིན་པོ་ཆེ सप्त रत्नानि प्रादुर्भूतानि। तद्यथा–[चक्ररत्नं]...मणिरत्नं...प-

रिणायकरत्नम् का.व्यू.208[क]/266.

ནོར་བུ་རིན་པོ་ཆེ་ཆེན་པོ • *सं.* महामणिरत्नम् – ནོར་བུ་རིན་པོ་ཆེ་ཆེན་པོ་ཆུ་འདང་ཞེས་བྱ་བ་ཡོད་དེ अस्ति उदकप्रसादकं महामणिरत्नम् ग.व्यू.313[ख]/399; • *ना.* महामणिरत्नः, पर्वतराजः – རིའི་རྒྱལ་པོ་འཁོར་ཡུག་དང་འཁོར་ཡུག་ཆེན་པོ་དང...རིའི་རྒྱལ་པོ་ནོར་བུ་རིན་པོ་ཆེ་ཆེན་པོ་དང चक्रवालमहाचक्रवालौ पर्वतराजानौ... महामणिरत्नः पर्वतराजा का.व्यू.243[क]/305.

ནོར་བུ་རིན་པོ་ཆེ་སྣ་ཚོགས་ཀྱིས་བརྒྱན་པའི་ཅོད་པན་ཅན *वि.* मणिरत्नविचित्रचूडः, °डा – དེ་ནས་སྔོན་ནེ་ཙོར་གྱུར་པ་ལྷའི་བུ་རྣ་ཆ་གཡུང་གོར་དག་ཅིང་འགུལ་བ་ཐོགས་པ...ནོར་བུ་རིན་པོ་ཆེ་སྣ་ཚོགས་ཀྱིས་བརྒྱན་པའི་ཅོད་པན་ཅན अथ शुकपूर्वी देवपुत्रश्चलविमलकुण्डलधरः...मणिरत्नविचित्रचूडः अ.श.154[क]/143; དེ་ནས་ལྷའི་བུ་མོ་རྣ་ཆ་གཡུང་གོར་དག་ཅིང་འགུལ་བ་ཐོགས་པ...ནོར་བུ་རིན་པོ་ཆེ་སྣ་ཚོགས་ཀྱིས་བརྒྱན་པའི་ཅོད་པན་ཅན अथ सा देवकन्या चलविमलकुण्डलधरा...मणिरत्नविचित्रचूडा अ.श.145[क]/135.

ནོར་བུ་རིན་པོ་ཆེ་བཻ་ཌཱུ་རྱའི་ཆུ་བ་ཆེན་པོ་ཅན *वि.* महावैडूर्यमणिरत्नदण्डम् – རིན་པོ་ཆེའི་པད་མོ་རིན་པོ་ཆེ...ནོར་བུ་རིན་པོ་ཆེ་བཻ་ཌཱུ་རྱའི་ཆུ་བ་ཆེན་པོ་ཅན...འབྱུང་བར་འགྱུར་ཏེ महारत्नराजपद्मं प्रादुर्भवति...महावैडूर्यमणिरत्नदण्डम् द.भू.262[क]/55.

ནོར་བུ་རིན་པོ་ཆེ་དབང་གི་རྒྱལ་པོ वशिराजमहामणिरत्नम् – སངས་རྒྱས་རེ་རེ་ལ་ཡང་གང་གཱའི་ཀླུང་གི་བྱེ་མ་སྙེད་ཀྱི་སངས་རྒྱས་ཀྱི་ཞིང་ནོར་བུ་རིན་པོ་ཆེ་དབང་གི་རྒྱལ་པོས་རབ་ཏུ་བཀང་སྟེ་དབུལ་བ་ཕུལ་ལ बुद्धेभ्यः प्रत्येकं सर्वेभ्यो गङ्गानदीवालुकासमानि बुद्धक्षेत्राणि वशिराजमहामणिरत्नप्रतिपूर्णानि कृत्वा दद्यात् शि.स.12[क]/12.

ནོར་བུ་རིན་པོ་ཆེ་འཛིན *पा.* मणिधरः, समाधिविशेषः – ནོར་བུ་རིན་པོ་ཆེ་འཛིན་ཅེས་བྱ་བའི་ཏིང་ངེ་འཛིན मणिधरो नाम समाधिः का.व्यू.235[क]/297; द्र. ནོར་བུ་རིན་པོ་ཆེ་འཛིན་པ།

ནོར་བུ་རིན་པོ་ཆེ་འཛིན་པ *वि.* महामणिधरः – གཡས་ཕྱོགས་སུ་ནི་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་ནོར་བུ་རིན་པོ་ཆེ་འཛིན་པར་བགྱིའོ॥ दक्षिणे पार्श्वे महामणिधरो बोधिसत्त्वः कर्तव्यः का.व्यू.233[ख]/296; द्र. ནོར་བུ་རིན་པོ་ཆེ་འཛིན།

ནོར་བུ་རིན་པོ་ཆེ་རིན་ཐང་མེད་པ अनर्घमणिरत्नम् म.व्यु.5958.

ནོར་བུ་རིན་པོ་ཆེའི་རིགས मणिगोत्रम् – ནོར་བུ་མཁན་མཁས་པ་ནོར་བུ་སྦྱོང་བའི་ཚུལ་ལེགས་པར་ཤེས་པ་དེ་ནོར་བུ་རིན་པོ་ཆེའི་རིགས་ནས་ཡོངས་སུ་མ་དག་པའི་ནོར་བུ་རིན་པོ་ཆེ་བླངས་ཏེ कुशलो मणिकारो मणिशुद्धिसुविधिज्ञः। स मणिगोत्रादपर्यवदापितानि मणिरत्नानि गृहीत्वा र.व्या.76[ख]/5.

ནོར་བུ་རིན་པོ་ཆེས་མཚན་པའི་རལ་པའི་ཅོད་པན་ཅན *वि.* मणिरत्नाङ्कजटामुकुटी – བཅོམ་ལྡན་འདས་མི་བསྐྱོད་པ... ནོར་བུ་རིན་པོ་ཆེས་མཚན་པའི་རལ་པའི་ཅོད་པན་ཅན भगवन्तमक्षोभ्यम्...मणिरत्नाङ्कजटामुकुटिनम् ख.टी.162[ख]/244.

ནོར་བུ་ཤེལ स्फटिकमणिः – ཆུ་ལས་ཆུ་བུར་འབྱུང་བ་ནོར་བུ་ཤེལ་འདྲ་བར་སྣང་བ་དེ་ལ་བྱིས་པ་རྣམས་ནོར་བུ་ཤེལ་གྱི་དངོས་པོར་མངོན་པར་ཞེན་ཅིང་རབ་ཏུ་རྒྱུག་སྟེ जलबुद्बुदकाः स्फटिकमणिसदृशाः ख्यायन्ते। तत्र च बालाः स्फटिकमणिभावमभिनिवेश्य प्रधावन्ति

ल.अ.92क/38.

ནོར་བུ་ཤེལ་ལྟར་རྣམ་པར་དག་པ *वि.* स्फटिकमणिविशुद्धः – དེ་ཡི་མཛོད་སྤུ་མཁའ་ལ་ཉི་ལྟར་ལྷམ་མེ་བ། །ནོར་བུ་ཤེལ་ལྟར་རྣམ་པར་དག་ཅིང་གཡས་སུ་འཁྱིལ།། गगन इव शून्यो [सूर्यो] भासते चास्य ऊर्णा स्फटिकमणिविशुद्धा दक्षिणा नाभि जाता ॥ रा.प.249ख/150.

ནོར་བུའི་ཁྲབ मणिवर्म लो.को.1360.

ནོར་བུའི་མགུལ *ना.* मणिकण्ठः – དྲི་ཟ་སྣ་ཚོགས་སྡེ་དང་ནི། །རྒྱལ་བ་ཁྱུ་མཆོག་རྒྱལ་བའི་རྒྱལ། །ནོར་བུའི་མགུལ་དང་ངེས་མགྲིན་དང་།། चित्रसेनश्च गन्धर्वो जिनराजो जिनर्षभः। मणिकण्ठो निकण्ठश्च सु.प्र.43ख/86.

ནོར་བུའི་རྒྱན माणिक्याभरणम् – ནོར་བུའི་རྒྱན་གྱི་འོད་དག་རེག་པས་དྲངས་ཤིང་བཀྲ་བར་བྱས་པའི་གོས་དང་ལྡན།། माणिक्याभरणप्रभाव्यतिकरैश्चित्रीकृताच्छांशुकाः ना.ना.238क/119.

ནོར་བུའི་རྒྱལ་པོ་བཟང་པོ सन्मणिराजः – ནོར་བུའི་རྒྱལ་པོ་བཟང་པོ་གཟི་བརྗིད་འབར། །ནོར་བུ་ཐམས་ཅད་ཟིལ་མནན་ལམ་མེ་ལྟར།། सन्मणिराज इवोज्ज्वलतेजा भासति सर्वमणीनभिभूय। रा.प.228ख/121.

ནོར་བུའི་ཆུ་སྣོད उदकमणिः – ནང་པར་སྔར་ལངས་ཏེ་གདན་བཏིང་ནས་ནོར་བུའི་ཆུ་སྣོད་སྣ་གོན་བྱས་ནས काल्यमेवोत्थायासनकानि प्रज्ञप्योदकमणीन् प्रतिष्ठाप्य वि.व.163क/1.51.

ནོར་བུའི་ཆུན་པོ मणिदाम म.व्यु.6124(87ख).

ནོར་བུའི་འཆིང་བ मणिबन्धः, प्रकोष्ठपाण्योः सन्धिस्थानम् – ནོར་བུའི་འཆིང་བ་ནས་ལག་པའི་མཐར་ནི་རླུང་གི་དཀྱིལ་འཁོར་ཏེ मणिबन्धात्करान्तं वायुवलयम् वि.प्र.170ख/1.19.

ནོར་བུའི་སྙིང་པོ मणिगर्भः लो.को.1360; ब.अ.847.

ནོར་བུའི་ཐག་པ मणिसूत्रम् – འཛོག་པ་ཞེས་བྱ་བ་ནི་ནོར་བུའི་ཐག་པ་བཞིན་དུ་སྣའི་རྩེ་མོ་ནས་རྐང་པའི་མཐེ་བོང་གི་བར་དུ་གནས་པར་ལྟ स्थापना नाम नासिकाग्रे यावत् पादाङ्गुष्ठे स्थितां पश्यति, मणिसूत्रवत् अभि.भा.11क/900.

ནོར་བུའི་དབང་མོ *ना.* मणीन्द्रा, किन्नरकन्या – མིའམ་ཅིའི་བུ་མོ་བརྒྱ་སྟོང་དུ་མ་དག་ཚོགས་པ་འདི་ལྟ་སྟེ། མིའམ་ཅིའི་བུ་མོ་ཡིད་ཅེས་བྱ་བ་དང... ནོར་བུའི་དབང་མོ་ཞེས་བྱ་བ་དང अनेकानि च किन्नरकन्याशतसहस्राणि सन्निपतितानि। तद्यथा–मनसा नाम किन्नरकन्या ...मुनीन्द्रा [मणीन्द्रा] नाम किन्नरकन्या का.व्यू.203क/260.

ནོར་བུའི་ཚོགས मणिगणः लो.को.1360.

ནོར་བུའི་ཞབས मणिचरणः लो.को.1360.

ནོར་བུའི་ཟླ་བ मणिचन्द्रः लो.को.1360.

ནོར་བུའི་འོད •*सं.* मणिप्रभा, मणेः प्रभा – ཇི་ལྟར་སྒོའི་བུ་གའི་གསེབ་ཀྱི་ཡུལ་ན་ནོར་བུའི་འོད་གནས་པ་ལ་ནོར་བུར་འཛིན་པའི་ཤེས་པ་ནི་ཁང་པའི་ཕུག་ན་ནོར་བུ་གནས་པ་ལ་ཚད་མ་མ་ཡིན་པ་བཞིན་ནོ།། यथा कुञ्चिकाविवरदेशस्थायां मणिप्रभायां मणिग्राहि ज्ञानं नापवरकस्थे मणौ (प्रमाणम्) न्या.टी.38ख/25; •*ना.* 1. मणिकरः, पर्वतः – རི་པོ་ཞེས་པ་ལ། རྡོ་རྗེའི་རི་ནི་རྐང་པ་དང་ལག་པའི་སེན་མོ་རྣམས་སོ།། ...ནོར་བུའི་འོད་ནི་དཔུང་པའི་རུས་པའོ།། शैला इति। वज्रपर्वताः पादकरनखाः...मणिकरो बाहुस्थीनि वि.प्र.235क/2.35
2. मणिप्रभा, अप्सरा – ལྷའི་བུ་མོ་བརྒྱ་སྟོང་ཕྲག་དུ་མ

དག་ཚོགས་པ་འདི་ལྟ་སྟེ། ལྷའི་བུ་མོ་ཏི་ལ་མཆོག་ཅེས་བྱ་བ་དང... ལྷའི་བུ་མོ་ནོར་བུའི་འོད་ཅེས་བྱ་བ་དང अने-काश्चाप्सरसः शतसहस्राः सन्निपतिताः। तद्यथा–तिलोत्तमा नामाप्सरसा...मणिप्रस्थ[मणिप्रभा]नामाप्सरसा का.व्यू.201[क]/259 **3.** मणिप्रभः लो.को. 1360.

ནོར་བུའི་རིན་པོ་ཆེ = ནོར་བུ་རིན་པོ་ཆེ།

ནོར་བུར་འཛིན་པ *वि.* मणिग्राहि – ཇི་ལྟར་སྒོའི་བུ་གའི་གསེབ་ཀྱི་ཡུལ་ན་ནོར་བུའི་འོད་གནས་པ་ལ་ནོར་བུར་འཛིན་པའི་ཤེས་པ་ནི་ཁང་པའི་ཕུག་ན་ནོར་བུ་གནས་པ་ལ་ཚད་མ་མ་ཡིན་པ་བཞིན་ནོ།། यथा कुञ्चिकाविवरदेशस्थायां मणिप्रभायां मणिग्राहि ज्ञानं नापवरकस्थे मणौ (प्रमाणम्) न्या.टी.38[ख]/25.

ནོར་འབྲུ = ནོར་དང་འབྲུ།

ནོར་སྦྱིན •*वि.* धनदः मि.को.84[ख]; •*सं.* = ཤར་ཕྱོགས धनदः, उत्तरा दिक् – ནོར་སྦྱིན་དུ་པདྨའི་ལྟེ་བ་ལ་ཁྲུ་མཆོག་གི་སྟེང་དུ་དྲག་མོའི་ཧཱུྃ་དོ།། धनदे रौद्रया वृषभोपरि पद्मकर्णिकायां हम् वि.प्र.131[ख]/3.63; ནོར་སྦྱིན་དུ་གནོད་སྦྱིན यक्षो धनदे वि.प्र.171[क]/187; उदीची–དེ་ནས་ནོར་སྦྱིན་ཕྱོགས་སུ་ཁྱོད་ནི་རྗེས་སུ་འགྲོ་ཚེ तेनोदीचीं दिशमनुसरेः मे.दू.346[ख]/1.61; • *ना.* **1.** = ནོར་ལྷ धनदः, कुबेरः – བཅོམ་ལྡན་འདས་དུལ་བ་ལ་འཁོར་ཡང་འདུལ་བ་དང...ནོར་སྦྱིན་གནོད་སྦྱིན་གྱི་ཚོགས་ཀྱིས་བསྐོར་བ་ལྟ་བུ་དང भगवान् दान्तो दान्तपरिवारः...धनद इव यक्षगणपरिवृतः अ.श.57[ख]/49; ཁྱིམ་བདག་ཟས་ནི་གཙང་མ་དག། །ནོར་སྦྱིན་དང་ནི་མཚུངས་པ་བྱུང་།། शुद्धोदनो गृहपतिर्बभूव धनदोपमः ॥ अ.क.288[क]/107.3; དེ་ནས་ཚངས་དབང་ནོར་སྦྱིན་ལ། །སོགས་པའི་ལྷ་རྣམས་དག་གིས་བསྐོར།། अथ ब्रह्मेन्द्रधनदप्रमुखस्त्रिदशैर्वृतः। अ.क.222[ख]/24.166; वित्तदः – ལྷ་མིན་དགྲ་དང་བརྒྱ་བྱིན་གྲོང་ཁྱེར་གསུམ་དགྲ་ནོར་སྦྱིན་ཚངས་སོགས་རྣམས་ཀྱིས་ཞབས་ཀྱི་པདྨ་ར་མཆོད་བྱས་པ།། मुरारिशक्रत्रिपुरारिवित्तदब्रह्मादिकाभ्यर्चितपादपङ्कजाः। प्र.सि.34[ख]/81 **2.** अर्थदः, सार्थवाहः – དེ་ནས་བྱང་ཕྱོགས་ནས་འོངས་པའི། །དེད་དཔོན་ནོར་སྦྱིན་ཞེས་པ་ཡིས།། अथोत्तरापथायातः सार्थवाहोऽर्थदाभिधः। अ.क.175[क]/19.135.

ནོར་སྦྱིན་མ • *वि.स्त्री.* धनदा – སྒྲོལ་མ་ནོར་སྦྱིན་མ धनदातारा क.त.3500; •*ना.* **1.** धनंददा, विद्याराज्ञी – སྒྲོལ་མ་དང...ནོར་སྦྱིན་མ་དང་ལྷ་ལྡན་མ་དང...ནོར་སྦྱིན་མ་དང...ཟླ་ལྡན་མ་དང་། འདི་དག་དང་གཞན་ཡང་རིག་པའི་རྒྱལ་མོ་དག तारा...धनंददा, सुरवती...वसुदा...चन्द्रावती चेति। एतैश्चान्यैश्च विद्याराज्ञीभिः म.मू.96[ख]/7 **2.** वसुदा, विद्याराज्ञी – སྒྲོལ་མ་དང...ནོར་སྦྱིན་མ་དང་ལྷ་ལྡན་མ་དང... ནོར་སྦྱིན་མ་དང...ཟླ་ལྡན་མ་དང་། འདི་དག་དང་གཞན་ཡང་རིག་པའི་རྒྱལ་མོ་དག तारा...धनंददा, सुरवती...वसुदा...चन्द्रावती चेति। एतैश्चान्यैश्च विद्याराज्ञीभिः म.मू.96[ख]/7.

ནོར་མང = ནོར་མང་བ།

ནོར་མང་པོ *वि.* प्रभूतधनः म.व्यु.7372(104[ख]); द्र. ནོར་མང་བ།

ནོར་མང་བ *वि.* महाधनः – དེའི་ཚེ་མཉན་དུ་ཡོད་པ་ན་ཚོང་དཔོན་ཕྱུག་ཅིང་ནོར་མང་བ་ལོངས་སྤྱོད་ཆེ་བ་ནོར་དང་ཡོ་བྱད་མང་བ...ཞིག་ཡོད་དེ तेन खलु समयेन श्रावस्त्यामन्यतमः श्रेष्ठी आढ्यो महाधनो महाभोगः प्रभूतवित्तोपकरणः अ.श.72[ख]/63; དེ་ན་བྲམ་ཟེ་ཤིང་སྣ་ལ་ཆེན་པོ་ལྟ་བུ་ཨོ་ཏ་ལའི་བུ་ཞེས་བྱ་བ་ཕྱུག་པོ་ནོར་མང་བ་ལོངས་སྤྱོད་ཆེ་བ་ཞིག་གནས་སོ།། तत्र ओतला-

यनो नाम ब्राह्मणमहाशालः प्रतिवसति आढ्यो महाधनो महाभोगः वि.व.129क/1.19; महाधनी – ནོར་མང་མཁས་པ་དེ་ཡིས་དེ་མཐོང་ནས།། दृष्ट्वा च सो पण्डितु[? तं] तं महाधनी स.पु.44ख/78.

ནོར་མེད • *वि.* = དབུལ་པོ अधनः – ནོར་མེད་པ་རྣམས་ཀུང་ནོར་རྙེད་པར་གྱུར་ཏོ།། अधना धनानि प्रतिलभन्ते अ.श.58क/49; བློ་ཅན་བདག་དགུ་བཏང་བས་ནོར་མེད་པ། །བདག་ཉིད་ནོར་ལྡན་སེམས་པ་ཇི་ལྟ་བར།། सर्वास्तिदानादधनोऽपि धीमानात्मानमन्वेति यथास्तिमन्तम् ॥ सू.अ.207क/110; ནོར་ལྡན་རྣམས་ནི་ནོར་མེད་འགྱུར། །ནོར་མེད་རྣམས་ནི་འཆི་བར་འགྱུར།། धनिनो यान्त्यधनतां निधनं यान्ति चाधनाः । अ.क.275ख/35.8; निर्धनः – དེ་དག་ནོར་མེད་གདུང་བ་ཐོབ།། निर्धनास्ते व्यथां प्रापुः अ.क.238ख/90.24; धनविकलः – དབུལ་བ་ཞེས་བྱ་བ་ནི་ནོར་མེད་པ་རྣམས་སོ།། दरिद्राणामिति धनविकलानाम् बो.प.70ख/39; निःस्वः – निःस्वस्तु दुर्विधो दीनो दरिद्रो दुर्गतोऽपि सः । अ.को.3.1.47; • *सं.* = ནོར་མེད་ཉིད निःस्वता–འཇིག་རྟེན་ན་ཡང་ནོར་མེད་རྒྱུད་པའི་མཆོག།། आपच्चान्त्या निःस्वता नाम लोके जा.मा.70क/81; अधनता – ནོར་ལྡན་རྣམས་ནི་ནོར་མེད་འགྱུར། །ནོར་མེད་རྣམས་ནི་འཆི་བར་འགྱུར།། धनिनो यान्त्यधनतां निधनं यान्ति चाधनाः । अ.क.275ख/35.8.

ནོར་མེད་པ = ནོར་མེད།

ནོར་འཛིན • *सं.* वसुंधरा 1. = ས་གཞི पृथिवी – རྣམ་གྲངས་ཀྱི་ཚིག་གོ།། ...ས་གནས་ནོར་འཛིན་དང་ पर्यायवचनम्...पृथिवी भूमिर्वसुन्धरा ल.अ.132क/78; वसुधा – ནོར་འཛིན་འཛིན་མ་འཛིན་བྱེད་བཅས། ...གཡོས།། वसुधा सधराधरा । विचचाल अ.क.329क/41.59; དང་པོར་ལྷ་ཡི་བདག་ཉིད་ཀྱི། །རྣལ་འབྱོར་པས་ནི་ནོར་འཛིན་སྦྱང་།། वसुधां शोधयेद् योगी प्रथमं देवतात्मकः ॥ हे.त.11ख/34; धरणी – སྔོང་དུ་གསུངས་པའི་སྔགས་ཉིད་ཀྱིས། །མཁས་པས་ནོར་འཛིན་རྣམ་པར་སྦྱང་ ॥ पूर्वोक्तेनैव मन्त्रेण शोधयेद् धरणीं बुधः ॥ हे.त.12ख/38 2. दानभेदः – རིན་ཆེན་ལྕགས་ཟས་བ་ལང་རྟ། །གླང་ཆེན་བུ་མོ་ནོར་འཛིན་དང་། །འདོད་པའི་ཆུང་མ་རང་གི་ཤ། །སྦྱིན་པ་རྣམ་པ་བཅུ་རུ་འདོད།། लोहरत्नान्नगोवाजिगजकन्यावसुन्धरा । इष्टा भार्या स्वमांसानि दानं दशविधं मतम् ॥ वि.प्र.145क/3.86; *• *ना.* = ནོར་ལྷ धनदः, कुबेरः – མི་བདག་བུ། །བརྟན་པས་ནོར་འཛིན་[ནོར་སྦྱིན་]གནས་པ་ཡི། །ཕྱོགས་སུ་འགྲོ་བར་རབ་ཏུ་བརྩམས།། नृपात्मजः । धीरः प्रचक्रमे गन्तुं धनदाध्युषितां दिशम् ॥ अ.क.110क/64.259.

ནོར་འཛིན་བདག་པོ = རྒྱལ་པོ वसुधाधिपः, नृपः – ནོར་འཛིན་བདག་པོས་དེ་སྐད་བརྗོད་ཙམ་ལ། །རྡོ་རྗེས་བཅོམ་བཞིན་བརྟན་པ་ཉམས་དེ་དག།། इत्युक्तमात्रे वसुधाधिपेन तौ वज्राग्निरुग्णाविव भग्नधैर्यौ । अ.क.274क/101.31; अ.क.33क/3.157.

ནོར་འཛིན་བུ་མོ वसुधापुरन्ध्री, पौरमुख्याङ्गना – སྟག་མོའི་སྡེར་མོའི་རྩེ་མོས་བཤིག་པ་དེ་ཡི་སྙིང་སྟོབས་དག། །མཚུངས་པ་མེད་པ་དེ་མཐོང་འཁྲུལ་ལ་ནོར་འཛིན་བུ་མོ་ནི། ...རིང་ཞིག་འདར།། ततस्य सत्त्वमतुलं... वसुधापुरन्ध्री । व्याघ्रीनखाग्रदलितस्य विलोक्य सद्यः... चिरं चकम्पे ॥ अ.क.19क/51.49.

ནོར་འཛིན་མ • *सं.* = ས་གཞི वसुन्धरा, पृथिवी – མཐའ་དག་རྒྱ་གཏེར་རླབས་ཀྱི་ནི། །སྐེ་རགས་ལྡན་པའི་ནོར་འཛིན་མ།། वसुन्धरां समस्ताब्धिवेलाकलितमेखलाम् ॥ अ.क.38ख/4.22; वसुधा – ཁྱོད་ཀྱིས་ཆར

ཆེན་ཕབ་པས་ནོར་འཛིན་མ་ཡི་དྲི་དང་ལྡངས་པ་གཙང་མ་ཚོགས་པ་ནི།། त्वन्निष्यन्दोच्छ्वसितवसुधागन्ध-संपर्करम्यः मे.दू.345[क]/1.46; • ना. वसुन्धरा, गृहपतिपत्नी – ཝཱ་ར་ཎ་སཱི་དག་ཏུ་སྔོན། །ཁྱིམ་བདག་མཛའ་བོ་ཞེས་པ་བྱུང་། །དེ་ཡི་ཆུང་མ་ནོར་འཛིན་མ། །ཞེས་པ་ཤིན་ཏུ་ཡིད་འོང་གྱུར།། वाराणस्यां गृहपतिर्मैत्रो नाम पुराऽभवत्। पत्नी वसुन्धरा नाम तस्याभूदतिवल्लभा॥ अ.क.243[ख]/92.10.

ནོར་རྫས = ནོར द्रविणम् – བདག་གིས་གཞོན་ལ་ཡོན་ཏན་བསྒྲུབས། །དར་ལ་བབས་ཚེ་ནོར་ཟས་[ནོར་རྫས་]བསྒྲུབས། །བུ་གཅིག बाल्ये गुणार्जनं पुत्र तारुण्ये द्रविणार्जनम्। मया कृतम् अ.क.301[ख]/39.48; धनम् – མཆོད་སྦྱིན་ཕྱིར་ནི་ནོར་རྫས་བསགས་པ་ནི།། इदं च यज्ञाय धनं प्रतर्कितम् जा.मा.64[क]/74; ནོར་རྫས་ལ་མར་མེ་བཞིན་དུ་དོན་དེ་ལ་སྒྲས་རྗེས་སུ་འཇུག་གོ།། स चार्थो रुतेनानुप्रविश्यते प्रदीपेनेव धनम् ल.अ.116[ख]/63; वित्तम् – ལུས་ཅན་རྣམས་ཀྱིས་གང་གི་ནོར་རྫས་རྒྱ་ཆེར་བླངས་ནས་ནི། །བདག་ཉིད་དོགས་དང་བྲལ་བར་རང་ཉམས་སྤྱོད་པར་བྱེད་པ་ལ།། स्वयमपगतशोका देहिनः स्वस्थरूपा विपुलमपि गृहीत्वा भुञ्जते यस्य वित्तम्। सू.अ.207[ख]/110; सम्पत्स्वापतेयम् – གལ་ཏེ་རྒྱལ་པོ་འདི་ལ་ནོར་རྫས་རབ་ཏུ་མང་པོ་ཡོད་ན यद्यस्य राज्ञः प्रभूतं सम्पत्स्वापतेयमस्ति वि.व.166[क]/1.55.

ནོར་ཞབས = ནོར་བུའི་ཞབས།

ནོར་བཟང • ना. 1. सुधनः, बोधिसत्त्वः – དེ་བཞིན་དུ་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་བཅུ་དྲུག་བྱ་བ་ལ་འདི་ལྟ་སྟེ། ཀུན་ཏུ་བཟང་པོ་དང...ནོར་བཟང་དང...བློ་བཟང་པོ एवं बोधिसत्त्वाः षोडश कार्याः। तद्यथा–समन्तभद्रः...सुधनः... पतिधरामतिवराश्च म.मू.119[क]/28; बो.अ.2[ख]/1.14 2. सुधना, असुरसभा म.व्यु.5500(81[ख]); मि.को.139[क]; •द्र. ནོར་བཟངས།

ནོར་བཟངས ना. 1. सुधनः i. नृपः – རྒྱལ་པོ་ཆེན་པོ་སྔོན་བྱུང་བ་འཁོར་ལོས་སྒྱུར་བའི་རྒྱལ་པོ་ནོར་བཟངས་ཞེས་བྱ་བ་ཞིག་བྱུང་སྟེ भूतपूर्वं महाराज सुधनो नाम राजाऽभूच्चक्रवर्ती वि.व.202[क]/1.76; ཁྱེའུ་འདི་རྒྱལ་པོ་ནོར་ཅན་གྱི་སྲས་ལགས་པས་ཁྱེའུའི་མིང་ནོར་བཟངས་སུ་གདགས་སོ།། अयं दारको धनस्य राज्ञः पुत्रः। भवतु दारकस्य सुधन इति नाम वि.व.207[ख]/1.82; མིའམ་ཅིའི་རྒྱལ་པོ་ལྗོན་པ...མིའམ་ཅི་རྣམས་ཀྱི་འདུན་པས་གཞོན་ནུ་ནོར་བཟངས་ལ་རྗེ་བཀུར་སྟི་ཆེན་པོ་བྱས་ནས द्रुमः किन्नरराजः...सुधनं किन्नराभिमतेन महता सत्कारेण पुरस्कृत्य वि.व.218[ख]/1.96; གཞོན་ནུ་ནོར་བཟངས་འདི...ཡིད་འཕྲོག་མ་དང་ཐབ་རིར་བབ་ལགས अयं सुधनः कुमारः... मनोहरायाः प्रतिरूपः वि.व.218[क]/1.96 ii. श्रेष्ठिदारकः – དེ་ལ་བྲམ་ཟེའི་ལྟས་པ་དང་ཕ་དང་མ་དང་གཉེན་གྱི་ཚོགས་ཀྱིས་འདི་བཙས་མ་ཐག་ཏུ་ནོར་མང་པོ་ཕུན་སུམ་ཚོགས་པ་འབྱུང་བར་གྱུར་པས་ན། ནོར་བཟངས་ནོར་བཟངས་ཞེས་དེ་ལྟར་མིང་དུ་བཏགས तस्य नैमित्तिकैर्ब्राह्मणैर्मातापितृभ्यां ज्ञातिवर्गेण च विपुलसमृद्धिरस्य जातमात्रस्य गृहे प्रादुर्भूतेति सुधनः सुधन इति नामधेयं कृतम् ग.व्यू.319[ख]/40; དེ་ལ་ཚོང་དཔོན་གྱི་བུ་ནོར་བཟངས་ནི... བརྟུལ་ཞུགས་བཟང་པོ་དང... ཚོང་དཔོན་གྱི་བུ་ལྔ་བརྒྱས་བསྐོར་ཅིང་མདུན་དུ་བྱས་ཏེ तत्र सुधनः श्रेष्ठिदारकः सुव्रतेन...पञ्चभिः श्रेष्ठिदारकशतैः परिवृतः पुरस्कृतः ग.व्यू.318[ख]/39; དེ་ནས་ཚོང་དཔོན་གྱི་བུ་ནོར་བཟངས་ཀྱིས་སྦྱིན་པོའི་དབང་པོ་མིག་བཟངས་ཀྱིས་ཇི་སྐད་དུ་གདམས་པ་དེ་ལྟར་ནན་ཏན་དུ་བྱས་པ་དང अथ खलु

सुधनः श्रेष्ठिदारको यथानुशिष्टः सुनेत्रेण राक्षसेन्द्रेण प्रतिपद्यमानः ग.व्यू.260क/342 2. माणिभद्रः, यक्षाधिपतिः – དེ་དག་བདག་པོ་རྒྱལ་པོ་ནི། །མི་ལ་ཞོན་པ་ལུས་ངན་པོ། །གནོད་སྦྱིན་ཀུན་གྱི་བདག་པོ་སྟེ། །ནོར་བཟངས་ལྡན་ཅིག་སྲུང་བར་སྟོག། तेषां चाधिपती राजा कुबेरो नरवाहनः। सर्वयक्षाणामधिपतिर्मणिभद्रेण सह रक्षतु ॥ ल.वि.186ख/284; •द्र. ནོར་བཟང་།

ནོར་འོད = ནོར་བུའི་འོད།

ནོར་ཡལ་བ धनपरिहाणिः लो.को.1361.

ནོར་ལ་ཆགས་པ • सं. धनलोभः – འཇིགས་རུང་སྡུག་བསྔལ་རྒྱ་མཚོ་འདིར། །ནོར་ལ་ཆགས་པས་བདག་ལྷུང་ངོ་॥ च्युतोऽहं धनलोभेन घोरेऽस्मिन् व्यसनार्णवे ॥ अ.क.285क/36.57; • वि. धनसक्तमतिः – ནོར་ལ་ཆགས་པས་གཡེངས་པར་གྱུར་པ་རྣམས། །སྲིད་པའི་སྡུག་བསྔལ་ལས་གྲོལ་སྐབས་མེད་དོ॥ व्यग्रतया धनसक्तमतीनां नावसरो भवदुःखविमुक्तेः ॥ बो.अ.26ख/8.79.

ནོར་ལ་རྣམ་པར་རྟོག་པ पा. अर्थविकल्पः, विकल्पभेदः – དེ་ལ་ནོར་ལ་རྣམ་པར་རྟོག་པ་གང་ཞེ་ན། འདི་ལྟ་སྟེ། གསེར་དང་དངུལ་དང་ནོར་རིན་པོ་ཆེ་རྣམ་པ་མང་པོའི་ཡུལ་བརྗོད་པའོ॥ तत्र अर्थविकल्पः कतमः? यदुत सुवर्णरूप्यविविधरत्नार्थविषयाभिलापः ल.अ.106ख/52.

ནོར་ལས་རྒྱལ = ནོར་ལས་རྒྱལ་བ།

ནོར་ལས་རྒྱལ་བ धनञ्जयः 1. = མེ अग्निः – अग्निर्वैश्वानरो वह्निर्वीतिहोत्रो धनञ्जयः। अ.को.1.1.54; धनं जयतीति धनञ्जयः। जि जये अ.वि.1.1.54 2. शरीरस्थवायुविशेषः – འདིར་ལུས་ལ་ཐུར་སེལ་གྱི་རླུང་ནི་ཡེ་ཤེས་ཀྱི་ཁམས་ལས་འབྱུར་རོ॥ ...སའི་ཁམས་ལས་ནོར་ལས་རྒྱལ་བའོ॥ इह शरीरे अपानवायुर्ज्ञानधातोर्भवति...पृथ्वीधातोर्धनञ्जयः वि.प्र.230क/2.24; སྲོག་ནི་སྟེང་དུ་འབབ་པོ॥... ནོར་ལས་རྒྱལ་བ་ནི་དབང་ལྡན་གྱི་འདབ་མ་ལ་ཀུ་ཧཱུ་ལའོ॥ प्राणः ऊर्ध्वं वहति... धनञ्जयः ईशदले कुहानाड्याम् वि.प्र.238क/2.42; ནོར་ལས་རྒྱལ་བའི་རླུང་ धनञ्जयो वायुः वि.प्र.238ख/2.44.

ནོར་ལས་བྱུང་བའི་གྲོང་ ना. वासवग्रामः, ग्रामः – ནོར་ལས་བྱུང་བའི་གྲོང་དུ་བདག། །སྡིག་ཅན་ཕྱུགས་དག་སྐྱོང་བར་གྱུར॥ अभवं वासवग्रामे दुष्कृती पशुपालकः। अ.क.168क/19.53; ཁྱིམ་བདག་སྟོབས་ཀྱི་སྡེ་ཞེས་པ། །གྲོང་ནི་ནོར་ལས་བྱུང་བར་གྱུར། ...།དེ་ཡི་བཙུན་མོ་རྒྱལ་སྡེ་ལ། ...།བུ་ཞིག...བཙས། ...།གྲོ་བཞིན་བྱེ་བ་རྣ་ཞེས་དེ॥ बभूव वासवग्रामे बलसेनाभिधो गृही।...जायायां जयसेनायां... अजायत सुतः... स श्रोणकोटिकर्णाख्यः अ.क.164क/19.3; द्र. གནས་པ།

ནོར་ལྷ • ना. 1. वसुः, प्रत्येकबुद्धः – སྤོས་ཀྱི་ངད་ལྡང་དང་... ནོར་ལྷ་དང་། དེ་དག་དང་གཞན་ཡང་རང་སངས་རྒྱས་བྱེ་བ་ཁྲག་ཁྲིག་བརྒྱ་སྟོང་ गन्धमादनः... वसुश्च। एतैश्चान्यैश्च प्रत्येकबुद्धकोटीनियुतशतसहस्र(-) म.मू.99क/9 2. वासुदेवः, कृष्णः – དེ་ལྟ་བས་ན་དུ་བ་ནི་གཙོ་བོ་ཡིན་པའི་ཕྱིར་སྔར་སྨོས་ཏེ། ནོར་ལྷ་དང་སྲིད་སྒྲུབ་བཞིན་ནོ॥ अस्माच्चाभ्यर्हितत्वाद् धूमस्य पूर्वनिपातः, वासुदेवार्जुनवत् अभि.स्फु.285ख/1129 3. वसुदेवः, विष्णुपिता–वसुदेवोऽस्य जनकः स एवानकदुन्दुभिः। अ.को.1.1.23; वसुभिः दीव्यतीति वसुदेवः। दिवु क्रीडादौ अ.वि.1.1.23 4. वसवः, गणदेवताः – आदित्यविश्ववसवस्तुषिताभास्वरा-

निलाः। महाराजिकसाध्याश्च रुद्राश्च गणदेवताः॥ अ.को.1.1.10; आहूता वसन्तीति वसवः। वस निवासे। ते अष्टौ अ.वि.1.1.10.

ནོར་ལྷའི་ཏོག ना. वसुकेतुः, बुद्धः – ལག་བཟང་དང་... ནོར་ལྷའི་ཏོག་དང་...ཤཱཀྱ་ཐུབ་པ सुबाहुः...वसुकेतुः... शाक्यमुनिश्च म.मू.94क/6.

ནོར་ལྷའི་བུ ना. 1. वासवः i. = བརྒྱ་བྱིན इन्द्रः – ཡུལ་དབུས་སུ་སྔོན་རྒྱལ་པོ་ནི། །ནོར་ལྷའི་བུ་ལྟར་ནོར་ལྷའི་བུ། །བྱང་ཕྱོགས་སུ་ཡང་མི་བདག་ནི། །ནོར་གྱིས་བཀུར་བ་ཞེས་པ་བྱུང༌།། मध्यदेशे पुरा राजा वासवो वासवोपमः। धनसम्मतनामा च नृपोऽभूदुत्तरापथे॥ अ.क. 156क/16.19 ii. नृपः – ཀཱ་ཤིའི་གྲོང་ཁྱེར་དག་ཏུ་ནི། །ས་བདག་ནོར་ལྷའི་བུ་ཞེས་པའི། །གྲོགས་ལ་བཅོམ་ལྡན་སྟོན་ཤིག་ཅེས། །རྒྱལ་པོ་དེ་ཡིས་ཕོ་ཉ་སྤྲིངས།། स राजा काशीनगरीं वासवाख्यस्य भूपतेः। सुहृदः प्राहिणोद्दूतं भगवान् दृश्यतामिति॥ अ.क.227ख/89.78; དེ་ནས་ས་བདག་ནོར་ལྷའི་བུས། །ཕ་རོལ་དང་ནི་བསྡུམས་བྱས་ནས།། कृतसन्धिः परेणाथ वासवः पृथिवीपतिः अ.क.156ख/ 16.25 iii. बुद्धः – ལག་བཟང་དང་...ནོར་ལྷའི་བུ་དང་...ཤཱཀྱ་ཐུབ་པ सुबाहुः...वा[]सवः...शाक्यमुनिश्च म.मू.94क/6 2. = ཁྱབ་འཇུག वासुदेवः, विष्णुः – འདི་ལྟར་ནོར་ལྷའི་བུ་ཡིས་ནི། །ཐེ་ཚོམ་བདག་ཉིད་ལ་སྨད་ཡིན།། तथा च वासुदेवेन निन्दिता संशयात्मता। त.स.104ख/921; ནོར་ལྷའི་བུས་ཞེས་བྱ་བ་ནི་ཁྱབ་འཇུག་གིས་སོ།། वासुदेवेनेति विष्णुना त.प.226क /921.

ནོར་ལྷས་བྱིན ना. वासवदत्ता, काचित् स्त्री – དེ་ནས་ནོར་ལྷས་བྱིན་ཞེས་པས། །སྤོས་ནི་ཉོ་རུ་བཏང་བ་ཡིས། །རང་གི་འབངས་མོས་དེ་ཡི་གཟུགས། །ཡོན་ཏན་གྲགས་པ་བཤད་ཐོས་ནས།། अथ वासवदत्ताख्या गन्धक्रयविसृष्टया। स्वदास्या कथितं श्रुत्वा तं रूपगुणविश्रुतम्॥ अ.क.157क/72.6.

ནོས་པ उत्पिण्डम् སྤྲགས་པའམ་ནོས་པ म.व्यु.5765 (84क); मि.को.41क।

ནྱ་གྲོ་དྷ न्यग्रोधः, वृक्षविशेषः – དེ་དེ་ན་ཤིང་ནྱ་གྲོ་དྷ་ཆེན་པོ་ཞིག་ཡོད་པའི...ཡལ་ག་ནོན་པ་ཞིག་གི་དྲུང་ན་གནས་ཤིང་འདུག་གོ།། स तत्र महान्तं न्यग्रोधपादपं... आनम्यमानशाखं निश्रित्य विजहार जा.मा.157ख/182; वटः – འདབ་མ་ཆེ་རྒྱལ་ནྱ་གྲོ་དྷ། །གང་འདི་རྙིང་པར་མཐོང་གྱུར་པ། །འདིའི་ཡལ་འདབ་གསར་པ་དང་། །རང་གི་ལུས་ནི་མཚུངས་པ་དྲན།། योऽयं जीर्णमहाशाखः पुराणो दृश्यते वटः। तुल्यमेनं स्वकायस्य स्मरामि नवपल्लवम्॥ अ.क.208ख/86.9.

ནྱ་གྲོ་དྷའི་ཏོག ना. न्यग्रोधकल्पः, ब्राह्मणः – མ་ག་དྷཱ [མ་ག་དྷའི་]གྲོང་ཐང་ཆེན་དུ། །སཱ་ལ་ཆེན་པོའི་རིགས་འབྱུངས་པ། །ནྱ་གྲོ་དྷ་ཡི་ཏོག་ཅེས་པ། །གཉིས་སྐྱེས་གྲགས་པའི་དཔལ་ལྡན་བྱུང༌།། द्विजन्मा मागधग्रामे विश्रुतश्रीर्महास्थले। न्यग्रोधकल्पनामाभून्महाशालकुलोद्भवः॥ अ.क.83क/63.2.

ནྱ་གྲོ་དྷའི་འདབ་མ न्यग्रोधपत्रम् – འདིར་འཆད་པར་འགྱུར་བའི་འཕྲུལ་འཁོར་ནི་ཞི་བ་དང་རྒྱས་པ་དག་ལ་ནྱ་གྲོ་དྷའི་འདབ་མ་གསར་པ་ལ...བྲི་བར་བྱ इह वक्ष्यमाणयन्त्रं शान्तौ पुष्टौ न्यग्रोधपत्रे शाद्वले लेखनीयम् वि.प्र.100ख/3.21.

ནྱ་གྲོ་དྷཱ = ནྱ་གྲོ་དྷ།

ཉང་ཀུ • सं. न्यङ्कुः, मृगविशेषः – རི་དྭགས་རུ་རུ་དང་... ཉང་ཀུ་དང་... དྲེད་ལ་སོགས་པ་མང་པོ་རྒྱུ་བ रुरु...न्य-

ङ्कु...ऋक्षादिमृगविचरिते जा.मा.149ख/174; • *ना.* न्यङ्कुः, मुनिः श्री.को.164ख; मो.को.571.

གནག •*सं.* 1. = བ་ལང གौः – གནག་རྫི गोपालः त.प. 360क/440; གནག་ར गोकुलम् वि.व.148क/1.36; བདག་པོ་རྣམས་ལ་གནག་གཏད་དེ་འོང་བར་འགྱུར स्वामिनां गां अर्पयित्वा आगमिष्यति वि.व.148ख/1.37; • *वि.* = ནག་པོ कृष्णः – བདེ་བ་གནག་ཅིང་བདེ་བ་སེར॥ सुखं कृष्णं सुखं पीतम् हे.त.15ख/48; असितः – ལུས་ཅན་རྣམས་ནི་དམར་དང་དཀར་དང་གནག་དང་ཁྲ་བའི་ལས་སྐུད་ཀྱིས། །རྣམ་པར་བཀྲ་བ་སྐྱེ་བའི་གོས་ཀྱིས་ཡན་མང་དག་ཏུ་གཡོགས་པར་གྱུར॥ रक्तैः शुक्लैरसितशबलैर्देहिनां कर्मसूत्रैश्चित्राकारं भवति बहुशः प्रावृतं जन्मवस्त्रम्। अ.क.140ख/67.75; श्यामः – དལ་གྱིས་མུན་པ་ཆུང་ངུ་གནག། །མཚན་མོས་སྲིད་པའི་སྣོད་དག་ལས། །ཐུན་མཚམས་དམར་བའི་ཆང་འཐུངས་ནས། །སྨྱོས་པ་བཞིན་དུ་སྐད་ཅིག་འཁྱམས॥ शनैः स्तोकतमः श्यामा श्यामा भुवनभाजनात्। संध्यारागासवं पीत्वा क्षीबेवाघूर्णत क्षणम्॥ अ.क.301क/108.70; कालकः – ཨེ་མའོ་དགེ་སྦྱོང་གཽ་ཏ་མ་ནི་གནག་པོ॥ कालको बत भोः श्रमणो गौतमः ल.वि.126क/186; द्र. ནམ་ཞིག་མི་ལུས་ཐོབ་པར་གྱུར་པ་ན།... །དེ་ན་དེ་དག་ལུས་གནག་འཕྲེང་པོར་གྱུར॥ पुरुषात्मभावं च यदा लभन्ते ते कुण्ठका लङ्गक भोन्ति तत्र। स.पु.37ख/67; རིགས་ཀྱི་བུ་འདི་ནི་ཁྲོ་བ་དང་ཞེ་གནག་པ་ཤས་ཆེ་བས་ཁྱད་པར་ཐོབ་པར་མི་འགྱུར་གྱིས अयं कुलपुत्रः क्रोधपर्यवस्थानबहुलो विशेषं नाधिगच्छति अ.श.252क/231; • *ना.* कृष्णा, देवकुमारिका – ནུབ་ཕྱོགས་ལོགས་ཀྱི་ཕྱོགས་ཆ་ན། །ལྷ་མོ་གཞོན་ནུ་བརྒྱད་ཡོད་དེ། །ཟ་ཆ་སྐྲ་འདྲེས་མ་དང་ནི། །པད་མ་དཀར་དང་སྐྱ་རེངས་དང་། །ཆ་མེད་གཅིག་དང་དགུ་པ་དང་། །རོལ་དང་གནག་དང་སྐྱབས་སྒྱུར་སྲིད॥ पश्चिमेऽस्मिन् दिशो भागे अष्टौ देवकुमारिकाः। अलम्बुशा मिश्रकेशी पुण्डरीका तथारुणा॥ एकादशा नवमिका शीता [लीला] कृष्णा द्रौपदी। ल.वि. 183ख/284.

གནག་གི་འཚམས* (སྣག་གི་གཉེན་མཚམས इत्यस्य स्थाने)।

གནག་རྗེས गोष्पदम् – རྒྱ་མཚོ་ཟབ་པ་ཉིད་ཀྱང་ནི། །གནག་རྗེས་ལྟ་བུར་ས་ཡེར་གདལ॥ गोष्पदोत्तानतां याति गाम्भीर्यं लवणाम्भसः। श.बु.111ख/35.

གནག་པ *वि.* = ནག་པོ कृष्णः – ལས་གཅིག་ཏུ་ངེས་པར་གནག་པ་རྣམས་ནི་རྣམ་པར་སྨིན་པ་ཡང་གཅིག་ཏུ་ངེས་པར་གནག་པར་འགྱུར་རོ॥ एकान्तकृष्णानां कर्मणामेकान्तकृष्णो विपाकः अ.श.110ख/101; ཁྲོས་ཤིང་ཁྲོ་བཅས་གནག་པ་དང་། །མཆེ་བ་རྣོན་པོ་རབ་ཏུ་བསྒོམ॥ क्रुद्धं सरोषणं कृष्णं तीक्ष्णदंष्ट्रं प्रभावयेत्॥ गु.स. 118ख/61; द्र. གནག 0. (བརྟག་པ इत्यस्य स्थाने) कल्पः – མངོན་སུམ་དུ་གནག་པས་འདུག་གོ॥...དབེན་པར་གནག་པས་འཕྲེད་གོ॥ प्रत्यक्षकल्पेन निषदने... स्थाने रहःकल्पेन वि.सू.40क/50; संकल्पः – འདོར་ཞག་དྲུག་ཏུ་འགྲོ་བ་ཏ་ཅང་ཐལ་བ་ཉིད་ལ་ནི་གནག་པ་ཡན་ལག་མ་ཡིན་ནོ॥ अनङ्गमत्रातिवाह्यत्वे षड्रात्रस्य प्रक्रान्तौ सङ्कल्पः वि.सू.28क/35.

གནག་པ་མ་ཡིན *वि.* न कृष्णा – ཕྱག་རྒྱ་ཆེན་པོ...གནག་པ་མ་ཡིན་དཀར་བ་མིན॥ महामुद्रा...न कृष्णा न च गौरिका। हे.त.27क/90.

གནག་བག कालः – སྐུ་ལ་སྨེ་བ་དང་གནག་བག་མེད་པ व्यपगततिलककालगात्रः म.व्यु.309(8ख).

གནག་ཚོགས་ཅན་ ना. गौतिकः, अर्हत् – ཚེ་དང་ལྡན་པ་གནག་ཚོགས་ཅན་སློབ་པར་གྱུར་པ...འཆི་བའི་དུས་ཀྱི་ནར་དགྲ་བཅོམ་པ་ཉིད་ཐོབ་ཅིང་ཡོངས་སུ་མྱ་ངན་ལས་འདས་པར་ཡང་གྱུར་ཏེ आयुष्मान् गौतिकः शैक्षीभूतः ...मरणकाल एवार्हत्त्वप्राप्तः परिनिर्वृतश्च अभि.भा.34क/999; अभि.स्फु.220क/999.

གནག་རྫི་ गोपालः, गवां पालकः – རྨི་ལམ་ལ་སོགས་པ་ལ... ཤེས་པ་གནག་རྫིའི་བར་དུ་རང་རིག་པ་ཉིད་དུ་མངོན་སུམ་གྱིས་ཤིན་ཏུ་གསལ་བར་གྲུབ་པོ॥ स्वप्नादिषु... ज्ञानमागोपालमतिस्फुटमेव स्वसंवेदनप्रत्यक्षसिद्धम् त.प. 360क/440; गोपालकः – བཙུན་པ་བཅོམ་ལྡན་འདས་ཀྱིས་ཅིའི་སླད་དུ་གནག་རྫི་དགའ་བོ་ལེགས་པར་གསུངས་པའི་ཆོས་འདུལ་བ་ལ་རབ་ཏུ་འབྱུང་བར་འཚལ་བ་བཟློག་སྟེ་ཁྱིམ་པར་བཏང་ལགས कस्माद्भदन्त भगवता नन्दो गोपालकः स्वाख्याते धर्मविनये प्रव्रजितुकामः पुनरप्यगारायोद्योजितः वि.व.148ख/1.37; वि.व.147ख/1.36.

གནག་རྫི་མོ་ गोपालः, गवां पालकः– དེ་ནི་ཤིན་ཏུ་རྨོངས་དོན་ཏེ། །གནག་རྫི་མོ་བར་གྲགས་ཕྱིར་རོ॥ तदत्यन्तविमूढार्थमागोपालमसंवृतेः ॥ प्र.वा.122क/2.99.

གནག་གཟན་ *>ཉག་གཟན།

གནག་ར་ गोकुलम्, गोस्थानम् – བ་རྣམས་ཀྱང་གཞོན་ལ་བེའུ་རྣམས་ཀྱང་ཚར་ཏེ་རང་རང་གི་གནག་ར་ཤེས་པས་རང་རང་གི་གནས་སུ་འགྲོ་བར་འགྱུར गावस्तरुणवत्सा ज्ञास्यन्ति स्वकस्वकानि गोकुलानि । गमिष्यन्ति स्वकस्वकानि निवेशनानि वि.व.148क/1.36.

གནག་ལྷས་ཀྱི་བུ་ गोशालीपुत्रः – ཀྱེ་གཽ་ཏ་མ་འཇིག་རྟེན་ན་མུ་སྟེགས་ཅན་གྱི་གནས་ཐ་དད་པ་འདི་ལྟ་སྟེ། འོད་སྲུང་རྫོགས་བྱེད་དང... ཀུན་ཏུ་རྒྱུ་གནག་ལྷས་ཀྱི་བུ་དང भो गौतम पृथग्लोके तीर्थ्यायतनानि, तद्यथा–पूरणः काश्यपः...मास्करी [मस्करी] गोशालीपुत्रः अ.श. 113क/102.

གནང་ = གནང་བ། གནང་ནས་ अधिवास्य – བཅོམ་ལྡན་གནང་ནས་མི་གསུང་བར། །ཞི་བའི་བློ་ཡིས་རྣམ་པར་བཞུགས॥ अधिवास्य भगवांस्तूष्णीं शमबुद्ध्या व्यवस्थितः । ल.अ.57ख/3; अनुज्ञाप्य – ཕ་མ་གཉིས་ཀྱིས་གནང་ནས་བཅོམ་ལྡན་འདས་ཀྱི་བསྟན་པ་ལ་རབ་ཏུ་བྱུང་ངོ་॥ मातापितरावनुज्ञाप्य भगवच्छासने प्रव्रजितः अ.श.103ख/93.

གནང་ཆེན་ = གནང་ཆེན་པོ •वि. वल्लभः – དེ་ནས་རྒྱལ་པོ་དེའི་ཁྱི་གནང་ཆེན་པོ་ཞིག་ཁྲོས་ཤིང་བྲུགས་ཏེ་སོ་གཙིགས་ནས་དེ་ཟར་འོངས་པ་བསྟན་ནས अथास्य सरभसभषितमतिविवृतवदनमभिद्रवन्तं वल्लभं श्वानं तत्रागतमभिप्रदर्शयन् जा.मा.130ख/151; अभिमतः – དེ་ནི་རྒྱལ་པོའི་གནང་ཆེན་ཡིན། །དགོན་པར་གནས་བློ་ཇི་ལྟར་སྐྱེས॥ क्षितिपाभिमतस्य तस्य वै वनवासे प्रणता मतिः कथम् ॥ जा.मा.105क/121; • सं. वाल्लभ्यम् – བཙུན་མོ་དེ་རྣམས་ཀྱང་རྒྱལ་པོའི་གནང་ཆེན་ཡིན་ལ་བཙས་དཀའ་བའི་ཕྱིར་དེར་མི་འདོད་བར་བཟློག་མ་ནུས་སོ॥ राज्ञो वाल्लभ्याद्दुरासदत्वाच्च तासां नैनास्ततो वारयितुं प्रसेहिरे जा.मा.165क/191.

གནང་ཆེན་པོ = གནང་ཆེན།

གནང་བ *आद.*> སྦྱེར་བ། བྱིན་པ •*क्रि. (वर्त., भवि., भूत.; सक.; གནོངས་ विधौ)* 1. अनुजानाति – དེ་ལྟར་བློ་གྲོས་ཆེན་པོ་ངས་ཤའི་ཟས་ནི་སུ་ལའང་མ་གནང་། མི་གནང་། གནང་བར་མི་འགྱུར་ཏེ यतोऽहं महामते मांसभोजनं न

कस्यचिदनुज्ञातवान्, नानुजानामि, नानुज्ञास्यामि ल.अ.156[ख]/103; अभ्यनुजानाति – ཤཱ་རིའི་བུ་གང་ཟག་དེ་ལྟ་བུའི་རང་བཞིན་ཅན་ནི་བལྟ་བར་ཡང་ངས་མི་གནང་ན་དེ་དག་དང་འགྲོགས་པ་ལྟ་ཅི་སྨོས། རྙེད་པ་དང་བཀུར་སྟི་ལྟ་ཅི་སྨོས། གནས་པ་ལྟ་ཅི་སྨོས नाहं शारिपुत्र एवंरूपाणां पुद्गलानां दर्शनमप्यभ्यनुजानामि, कुतस्तैः सह संवासं कुतो वा लाभसत्कारं कुतः स्थानम् अ.सा.162[क]/91; अधिवासयति – བཅོམ་ལྡན་འདས་ཀྱིས་ཀོ་ས་ལའི་རྒྱལ་པོ་གསལ་རྒྱལ་ལ་ཅང་མི་གསུང་བས་གནང་ངོ་॥ अधिवासयति भगवान् राज्ञः प्रसेनजितः कौशलस्य तूष्णीभावेन अ.श.24[ख]/21; वि.व.134[ख]/1.23 2. अधिवासयति स्म – བཅོམ་ལྡན་འདས་ཀྱིས་ཅང་མི་གསུང་བར་གྱུར་པས་གནང་ངོ་॥ भगवांश्च तूष्णींभावेनाधिवासयति स्म स.पु.16[क]/26; • सं. 1. अभ्यनुज्ञा – ཁ་ན་མ་ཐོ་བ་དང་བཅས་པ་ཀུན་ཏུ་སྤྱོད་པ་དགག་པ་དང་། ཁ་ན་མ་ཐོ་བ་མེད་པ་ཀུན་ཏུ་སྤྱོད་པ་གནང་བ सावद्यसमुदाचारप्रतिषेधः अनवद्यसमुदाचाराभ्यनुज्ञा बो.भू.60[ख]/79; བྱུང་བ་དང་བཅས་པ་དང་རྗེས་སུ་བཅས་པ་དང་བཀག་པ་དང་གནང་བ་མངོན་པར་ཤེས་པ་ཉིད་དོ॥ उत्पत्तिप्रज्ञप्त्यनुप्रज्ञप्तिप्रतिक्षेपाभ्यनुज्ञाभिज्ञत्वम् वि.सू.3[ख]/3; समनुज्ञा म.व्यु. 6620(94[ख]); अनुज्ञानम् – གནང་བར་བྱ་བའི་ཆོས་རྣམས་ལ་གནང་བའི་སྙན་པར་སྨྲ་བ अनुज्ञेयेषु धर्मेष्वनुज्ञाने प्रियवादिता बो.भू.117[क]/150; अधिवासनम् म.व्यु.9381(129[क]); अधिवासना – དེ་ནས་ཚངས་པ་ཆེན་པོ་གཙུག་ཕུད་ཅན་གྱིས་དེ་བཞིན་གཤེགས་པས་ཅང་མི་གསུང་བས་གནང་བར་རིག་ནས अथ खलु शिखी महाब्रह्मा तथागतस्य तूष्णीभावेनाधिवासनां विदित्वा ल.वि.189[क]/289; आदेशः – གནང་བ་རྙེད་འགྱུར་སྔགས་པ་ལ། །རྣལ་འབྱོར་མ་ཡིས་བསྟན་པར་བྱ॥ आदेशं लभते मन्त्री योगिनीभिरादिश्यते ॥ हे.त.14[ख]/46; प्रसादः – གང་ཡང་སངས་རྒྱས་གནང་བ་དང་॥ यच्च बुद्धप्रसादतः ल.अ.167[क]/121; བླ་མའི་བཀའ་དྲིན་གནང་བ་ལས॥ गुरोराज्ञाप्रसादेन गु.सि.10[ख]/23 2. संवृत्तिः – བུ་ཆུང་ངུ་དང་ལྷན་ཅིག་ཉལ་བ་ནི་མ་གནོགས་པ་ཉིད་ཡིན་ནོ॥ གནང་བ་ཐོབ་ལའོ॥ न सहशय्यायाममहतः पुत्रस्य वर्ज्यत्वम्। लब्धसंवृत्तेः वि.सू.52[क]/66; ཆར་འབབ་པ་དང་འབབ་ཏུ་དོགས་པ་དང་བགྲོད་པར་བྱ་བ་ཆུ་ཀླུང་གིས་ཆད་པ་ཉིད་ལྟ་བུ་མེད་ན་གནང་བ་མ་ཐོབ་པ་དང वर्षतो देवस्य वर्षाशङ्किता वा जलान्तरितत्वं गन्तव्यस्येत्यस्याभावेनादत्तसंवृत्तिः वि.सू.22[ख]/27; विधानम् – བསྙེན་པར་རྫོགས་པར་གནང་བ उपसम्पन्नविधानम् वि.व.2[क]/2.74; • भू.का.कृ. अनुज्ञातम् – བཞིན་བཟངས་དག་འདི་ནི་གཞན་གྱི་ཡིན་ཏེ། ཁྱེད་ལ་སྦྱིན་པ་གནང་བ་མེད་དོ॥ परकीयमेतद् भद्रमुख न चैतद्युष्माकमनुज्ञातं दातुम् बो.भू.69[ख]/89; ཐུགས་རྗེ་མངའ་བ་རིང་[དོན་]གཟིགས་པས། བཀག་པ་རྣམས་ཀྱང་དེ་ལ་གནང་॥ निषिद्धमप्यनुज्ञातं कृपालोरर्थदर्शिनः ॥ बो.अ.13[ख]/5.84; ཡོངས་སུ་གཟུང་བ་དང་བཅས་པ་གནང་བ་ལས་གཞན་པའི་ཐབས་ཀྱིས་བདག་གིར་མི་བྱའོ॥ न सपरिग्रहमनुज्ञातोऽन्येन कल्पेन स्वीकुर्यात् वि.सू.15[क]/17; अभ्यनुज्ञातम् – དགག་པ་དང་གནང་བའི་ཆོས་རྣམས་ལ་འཁྲུལ་པར་ཀུན་ཏུ་སྤྱོད་པ་བསྐུལ་བ प्रतिषिद्धाभ्यनुज्ञातेषु धर्मेषु स्खलितसमाचारसंचोदना बो.भू.60[ख]/79; अधिवासितम् – བཅོམ་ལྡན་འདས་ཀྱིས་ཅང་མི་གསུང་བས་གནང་བ अधिवासितं च भगवता तूष्णींभावेन वि.व.141[ख]/1.30; विहितम् – གནང་བ་དང་བཀག་པ་གཉིས विहितप्रतिषिद्धयोः बो.प.92[ख]/56; གནང་བ་རྣམས་ལ་བྱ་བ་དང་བཀག་པ་རྣམས་ལ་མི་བྱེད་པ विहितेषु कर-

णीयता, प्रतिषिद्धेष्वकरणम् बो.प.88[क]/50; दत्तम्– བླ་མ་དམ་པས་གནང་བ་ཡི། །ལམ་བཟང་རིན་ཆེན सद्गुरुदत्तं सुमार्गरत्नम् वि.प्र.111[क]/1, पृ.7; བཅོམ་ལྡན་འདས་ཀྱིས་དེ་ལ་མགུལ་ནས་འཁྱུད་དུ་གནང་བས भगवता तस्याः कण्ठाश्लेषो दत्तः वि.व.132[क]/1.20; དེ་ཡིས…ཚུལ་ཁྲིམས་བླང་བའི་རང་བཞིན་གྱི། །བསོད་ནམས་བློ་གྲོས་བདག་ལ་གནང་॥ तेन…दत्ता शीलसमादानमयी पुण्यमतिर्मम ॥ अ.क.168[ख]/19.58; प्रदिष्टम् – དེས་སྨྲས་བདག་ནི་བཅོམ་ལྡན་གྱིས་གནང་བ། །བསྟན་པ་ལ་དགའ་རྒྱལ་སྲིད་མ་ཡིན་ནོ॥ स्वस्याब्रवीत्तं भगवत्प्रदिष्टं तच्छासनं मोदयितुं न राज्यम् ॥ अ.क.198[ख]/22.60; संप्रदिष्टम् – དེ་ནས་ཟས་གཙང་གིས་གནང་རྒྱལ་པོ་ཡི། །དཔལ་འབྱོར་དེ་ནི་བཟང་ལྡན་ཞེས་པས་བཟུང་॥ जग्राह शुद्धोदनसंप्रदिष्टां तां राज्यलक्ष्मीमथ भद्रकाख्यः ॥ अ.क.198[ख]/22.61; वितीर्णः – གཙུག་གི་ནོར་བུ་ལྷ་ཁྱོད་གནང་བ་ན། །དེ་ཡིས་ཉེ་བར་འཚེ་རྣམས་ཞི་བར་བགྱིད॥ चूडामणिर्देव भवद्वितीर्णः करोति तस्योपनिपातशान्तिम् ॥ अ.क.32[ख]/3.152; न वारितम्–ཡོན་ཏན་ལྡན་པ་རྣམས་ཀྱིས་གནང་॥ न वारितं च गुणिभिः बो.अ.17[ख]/6.77; मुक्तः–གནང་བ་ལ་གཞན་གྱིས་བརླས་ན་མ་བཀུས་པ་མ་ཡིན་ནོ॥ མ་གནང་བས་གཞན་གྱིས་བརླ་བར་མི་བྱའོ॥ <?> न मुक्तेऽन्यदीयातिक्रामणं न हारः । नामुक्तोऽन्येनातिक्रामयेत् वि.सू.14[ख]/16; अनुज्ञातवान् – དེ་ལྟར་བློ་གྲོས་ཆེན་པོ་ངས་ཤའི་ཟས་ནི་སུ་ལའང་མ་གནང་། མི་གནང་། གནང་བར་མི་འགྱུར་ཏེ यतोऽहं महामते मांसभोजनं न कस्यचिदनुज्ञातवान्, नानुजानामि, नानुज्ञास्यामि ल.अ.156[ख]/103.

གནང་བ་སྩྩིན *क्रि.* आज्ञापयति – སྟོན་པས་དེ་ལ་གནང་བ་སྩྩིན॥ शास्ता तमाज्ञापयति हे.त.17[क]/54.

གནང་བ་མེད་པ *वि.* अननुज्ञातम् – དེ་བཞིན་གཤེགས་པའི་བསྟན་པ་ལ་མངོན་པར་དད་པ་མེད་པ་དང་དམ་ཚིག་མེད་པ་དང་གནང་བ་མེད་པ་དང་དཀོན་མཆོག་གསུམ་གྱི་གདུང་རྒྱུན་གཅོད་པར་བྱེད་པ་དང तथागतशासनेऽनभिप्रसन्नं असमयाननुज्ञातत्रिरत्नवंशानुच्छेदनकरे म.मू.243[क]/272.

གནང་བར་བྱ *क्रि.* प्रददामि – ཐུགས་རྗེ་དང་ནི་ཐུགས་བརྩེ་བས། །སྐུ་ལ་རེག་ཏུ་གནང་བར་བྱ॥ कारुण्याद् गात्रसंश्लेषं प्रददाम्यनुकम्पया ॥ वि.व.132[क]/1.20.

གནང་བར་བྱ་བར་འདོད་པ अनुज्ञातुकामता – བློ་གྲོས་ཆེན་པོ་གལ་ཏེ་ངས་གནང་བར་བྱ་བར་འདོད་དམ། ངའི་ཉན་ཐོས་རྣམས་ཀྱིས་བསྟེན་པར་རུང་བ་ཞིག་ཡིན་ན་ནི यदि तु महामते अनुज्ञातुकामता मे स्यात्, कल्प्यं वा मे श्रावकाणां प्रतिसेवितुं स्यात् ल.अ.156[क]/103.

གནང་བར་མི་འགྱུར *क्रि.* नानुज्ञास्यति – དེ་ལྟར་བློ་གྲོས་ཆེན་པོ་ངས་ཤའི་ཟས་ནི་སུ་ལའང་མ་གནང་། མི་གནང་། གནང་བར་མི་འགྱུར་ཏེ यतोऽहं महामते मांसभोजनं न कस्यचिदनुज्ञातवान्, नानुजानामि, नानुज्ञास्यामि ल.अ.156[ख]/103.

གནང་བར་མཛད་དུ་གསོལ *क्रि.* अनुजानातु – ཡབ་བདག་ལེགས་པར་གསུངས་པའི་ཆོས་འདུལ་བ་ལ་རབ་ཏུ་འབྱུང་བར་གནང་བར་མཛད་དུ་གསོལ अनुजानीहि मां तात, प्रव्रजिष्यामि स्वाख्याते धर्मविनये अ.श.71[ख]/62; अधिवासयतु – བཅོམ་ལྡན་འདས་དགེ་སློང་གི་དགེ་འདུན་དང་ཐབས་ཅིག་ཏུ་སང་བདག་གི་ཁྱིམ་པར་གདུགས་ཚོད་སྩྩོར་ཞིང་མཆིས་ན་གནང་བར་མཛད་དུ་གསོལ अधिवासयतु मे भगवन् गौतम श्वोऽन्तर्गृहे

भक्तेन सार्धं भिक्षुसङ्घेन वि.व.131क/1.19.

གནང་བར་མཛོད་ *क्रि.* दीयताम् – གལ་ཏེ་ཡོད་ན་ད་ལྟ་ཉིད། །ཐོགས་པ་མེད་པར་གནང་བར་མཛོད།། अधुनैवाविलम्बेन दीयतां यदि शक्यते ॥ अ.क.325क/41.9; གང་ཞིག་འདོད་པ་གནང་བར་མཛོད།། दीयतां यदभीप्सितम् अ.क.24ख/3.62; प्रदीयताम् – ལེགས་བྱས་རྒྱ་ཆེའི་གླང་པོ་འདི། །བདག་ཅག་ལ་ནི་གནང་བར་མཛོད།། अस्मभ्यं सुकृतोदारकुञ्जरोऽयं प्रदीयताम् । अ.क. 205क/23.23; द्र. གནང་བར་མཛོད་ཅིག།

གནང་བར་མཛོད་ཅིག *क्रि.* अनुजानातु – ཡུམ་བདག་བཅོམ་ལྡན་འདས་ཀྱི་བསྟན་པ་ལ་རབ་ཏུ་འབྱུང་གིས་གནང་བར་མཛོད་ཅིག अम्ब अनुजानीहि माम्, भगवच्छासनेषु प्रव्रजिष्यामि अ.श.126क/116; द्र. གནང་བར་མཛོད།

གནང་བྱ = གནང་བར་བྱ།

གནངས = སང་ཉིན་གྱི་ཕྱི་ཉིན परश्वः, श्वः परदिनम्– སང་ངམ་གནངས་འབྱུང་བར་འགྱུར་བ་ཉིད་ནི་ཡི་གེར་བྲིས་པ་བསྒྲག་པར་བྱའོ།། उद्घोषणं...श्वः परश्वो वा भविष्यत्तायां लिखितस्य वि.सू.99ख/120.

གནད मर्म – གསེར་གྱི་ལོགས་ནི་དེ་ཡི་ཚེ། །བརྩེ་བའི་ཞགས་པས་དབང་དུ་བྱས། །མདའ་ཡིས་གནད་དུ་ཕུག་པ་བཞིན། །དེ་ཉིད་དུ་ནི་གཡོ་མེད་གནས།། सुवर्णपार्श्वस्तु तदा कृपापाशवशीकृतः । तत्रैव निश्चलस्तस्थौ मर्मविद्ध इवेषुणा ॥ अ.क.256क/30.13.

གནད་ཀྱི་གནས मर्मस्थानम् – བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའི་སྡོམ་པ་ནི། །རྒྱས་པར་ཐེག་པ་ཆེ་ལས་བྱུང་། །གང་གིས་ལྷུང་བར་མི་འགྱུར་བའི། །གནད་ཀྱི་གནས་རྣམས་འདིར་རིག་བྱ།། महायानाद्बोधिसत्त्वस्य संवरः । मर्मस्थानान्यतो विद्याद्येनानापत्तिको भवेत् ॥ शि.का.1क/1.

གནད་གཅོད་པ मर्मच्छेदः – གནད་གཅོད་པ་ནི་ཆུ་སོགས་ཀྱིས།། मर्मच्छेदस्त्वबादिभिः अभि.को.8ख/504; द्र. གནད་ཆད་པ།

གནད་ཆད་པ मर्मच्छेदः – གནད་ཆད་པའི་ཚོར་བ་དག་ཅེས་པ་ནི་སྐོམ་པ་དང་ལུས་ཚ་བ་ལ་སོགས་པའི་སྡུག་བསྔལ मर्मच्छेदादिवेदनेति पिपासागात्रसन्तापादिदुःखम् बो.प.65क/31; द्र. གནད་གཅོད་པ།

གནད་འཛོམས་པ • *ना.* मक्कोटकः, पर्वतः – དེ་ལྟར་གནད་འཛོམས་པའི་རི་ལ་གནད་འཛོམས་པའི་སྲོག་ཆགས་སུ་གྱུར་པ་རྣམས་ཀྱིས་ཕྱི་དང་ནང་རྡུལ་ཕྲ་རབ་ཙམ་ཡན་ཆད་ཀུན་ཟོས་པར་འགྱུར་རོ།། एवं मक्कोटकपर्वते माक्कोटकैः प्राणिजातिभिः सान्तर्बहिः परमाणुशः प्रभक्ष्यते शि.स.45ख/43; •*सं.* माक्कोटकाः, प्राणिजातिविशेषः – དེ་ལྟར་གནད་འཛོམས་པའི་རི་ལ་གནད་འཛོམས་པའི་སྲོག་ཆགས་སུ་གྱུར་པ་རྣམས་ཀྱིས་ཕྱི་དང་ནང་རྡུལ་ཕྲ་རབ་ཙམ་ཡན་ཆད་ཀུན་ཟོས་པར་འགྱུར་རོ།། एवं मक्कोटकपर्वते माक्कोटकैः प्राणिजातिभिः सान्तर्बहिः परमाणुशः प्रभक्ष्यते शि.स.45ख/43.

གནད་དུ་བསྣུན = གནད་བསྣུན་པ།

གནད་དུ་བསྣུན་པ = གནད་བསྣུན་པ།

གནད་དུ་ཕོག་པ • *वि.* मर्मविद्धः – དེ་ནས་མྱ་ངན་མེད་ཀྱིས་ལྷའི་ཚིག་ཐོས་ནས་གནད་དུ་ཕོག་པ་བཞིན་དུ་ཡེང་ཅེས་བྱས་ཏེ अथाशोको देवतावचनमुपसृ[श्रु]त्य मर्मविद्ध इव प्रचलितवान् अ.श.115ख/105; •*पा.* मर्मवेधः, कलाविशेषः मि.को.28क; द्र.– གནད་དུ་འཕོག་པ།

གནད་དུ་འཕོག་པ *पा.* मर्मवेधः, कलाविशेषः म.व्यु.

4993(76ཀ); मर्मवेधित्वम् – དེ་བཞིན་དུ་མཚོངས་པ དང...གནད་དུ་འཕོག་པ་དང...སྒྲོས་སྦྱར་བ་ལ་སོགས་པའི སྒྱུ་རྩལ... ཐམས་ཅད་ལ एवं लङ्घिते... मर्मवेधित्वे... गन्धयुक्तौ । इत्येवमाद्यासु सर्वकर्मकलासु ल.वि. 80ख/108.

གནད་བསྣུན = གནད་བསྣུན་པ།

གནད་བསྣུན་པ • सं. मर्मप्रहारः – གནད་མི་བཟད་པར བསྣུན་པ་ལ་སོགས་པ་ནི་འཁྲུལ་པའི་རྒྱུ་ནང་གི་རྟེན་ལ གནས་པ་གཟུང་ངོ་॥ गाढमर्मप्रहारादय आध्यात्मिकाश्रयस्था विभ्रमहेतवो गृह्यन्ते न्या.टी.42ख/55; •वि. आविद्धः – དེ་ནས་གླང་ཆེན་བདག་པོ་ཡིས། །གནད་དུ་བསྣུན་བཀྱེ་གླང་པོ་ཆེ། །དྲག་པོ་ཁང་བཟང་ཀྱང འཕྲུང་འཇོམས། །ཁྲོ་བས་ལོང་བས་དེ་མདུན་རྒྱུགས॥ अथ हस्तिपकोत्सृष्टः कृष्टप्रासादपादपः । तमभ्यधावदाविद्धः क्रोधान्धः क्रूरकुञ्जरः ॥ अ.क.241ख/28.16; मर्महतः लो.को.1362; मर्मणि ताडितः लो.को.1362.

གནད་མི་བཟད་པར་བསྣུན་པ गाढमर्मप्रहारः – གནད མི་བཟད་པར་བསྣུན་པ་ལ་སོགས་པ་ནི་འཁྲུལ་པའི་རྒྱུ་ནང གི་རྟེན་ལ་གནས་པ་གཟུང་ངོ་॥ गाढमर्मप्रहारादय आध्यात्मिकाश्रयस्था विभ्रमहेतवो गृह्यन्ते न्या.टी. 42ख/55.

གནད་ལ་བསྒྲེ་བ चक्रकः – གནད་ལ་བསྒྲེ་བར་མི་བྱའོ॥ न चक्रकं कुर्यात् वि.सू.17क/19.

གནད་ལ་གནོད་པ वि. मर्मोपरोधिका–གང་གི་ཚེ་བཅོམ ལྡན་འདས་གཟིམས་མལ་གྱི་ཐ་མར་བཞུགས་ཏེ་གནད་ལ གནོད་པའི་ཚོར་བ་མྱོང་ཞིང यदा भगवता पश्चिमशयनोपगतेन ध[म]र्मोपरोधिकायां वेदनायां वर्तमानायाम् अ.श.114क/103.

གནད་ཤེས वि. मर्मज्ञः – འདི་ནི་གནས་[གནད་]ཤེས མཆོག་གི་བློ॥ मर्मज्ञोऽसौ विदग्धधीः अ.क.85क/8.68.

གནན क्रि. (གནོན་པ इत्यस्याः भवि.)निष्पीड्यते – དེ བཞིན་སོར་མོ་བྱས་ནས་ནི། །གཡས་པའི་མཛུབ་མོ་དེས པར་བརྐྱང་། །གཡོན་པའི་མཛུབ་མོའང་བརྐྱང་བྱས་ཏེ། །མཐེ་བོའི་ཚིགས་ནི་ཆང་པས་གནན། །ཕྱག་མདའི་ཕྱག རྒྱ་ཞེས་བསྙད་དོ॥ तदेवमङ्गुलिं कुर्याद् दक्षिणाकरनिसृता। वामं तर्जनीं मुष्टौ निष्पीड्यन्ते तु पर्वणि ॥ नाराचं मुद्रमित्युक्तः म.मू.251ख/286; द्र. ཟིལ་གྱིས གནན་པ།

གནམ = ནམ་མཁའ आकाशम् – འདམ་བུའི་སྡོག་གཉིས གནམ་དུ་བསྒྲེངས་ཏེ་ཕན་ཚུན་བརྟེན་ཅིང་འདུག་པ द्वे नडकलाप्यावाकाशे उच्छ्रिते स्याताम् । ते अन्योन्यनिश्रिते अभि.स्फु.287ख/1133; नभः – འོད་ཟེར རབ་ཏུ་གསལ་བ་ཡིས། །གནམ་ནི་དགོད་པ་ལྟར་བྱེད་པའི། །སྟོན་ཀའི་ཟླ་བ་དེ་དང་ནི॥ हासभूतेन नभसः शरद्विकचरश्मिना ।... चन्द्रमसा सह जा.मा.201ख/234; दिवम् – མཚན་མོའི་ཟླ་བ་སྤྲིན་རུམ་ནུབ་པ་ནི། །གནམ སའི་ཕྱེ་བྲག་མཛེས་པ་མེད་པ་བཞིན॥ निमग्नचन्द्रेव निशा समेघाशोभां विभागं च दिवस्पृथिव्योः ॥ जा.मा.73ख/85.

གནམ་གྱི दैविकम् – གཞན་གྱི་དམག་གི་འཇིགས་པ མེད་པར་གྱུར། །ཕན་ཚུན་གནོད་དང་གནམ་གྱི་འཇིགས པའང་མེད॥ न परचक्रकृतं समभूद्भयं न च परस्परजं न च दैविकम्। जा.मा.64ख/75.

གནམ་བསྐོས दैवम्–དེར་སོང་ནས་ཀྱང་དེའི་གནམ་བསྐོས གྱི་དབང་གིས་བཙུན་མོ་དེ་དང་བྲལ་བར་གྱུར་ཏེ तत्रागतस्यापि तत्र दैववशात् तया राज्ञा सह वियोगोऽ-

भूत् त.प.266क/1001; म.व्यु.7542(107क).

གནམ་གྱི་སྐྱོན་ देवदोषः – ནམ་ཞིག་གནམ་གྱི་སྐྱོན་གྱིས་ནི། །ཡུལ་དང་དུས་ནི་མི་བཟད་ལས། །གྲོང་པ་རྣམས་ལ་བཟོད་དཀའ་ཡི། །ནད་ནི་རབ་ཏུ་རྒྱས་པར་གྱུར།། कदाचिद्देवदोषेण वैषम्याद्देशकालयोः । दुःसहः सर्वपौराणामभूद्व्याधिसमुद्भवः ॥ अ.क.268क/99.5.

གནམ་གྱི་ཉེར་འཚེ་ देवविप्लवः – གལ་ཏེ་བདག་གི་དགྲ་གྲོང་དུ། །དེ་དག་མུ་གེས་ཉེན་འགྲོ་ན། །གནམ་གྱི་ཉེར་འཚེ་ཐམས་ཅད་དུ། །རེ་མོས་ཀྱིས་ནི་འབྱུང་བ་ཉིད།། दुर्भिक्षखिन्ना यदि ते याता मम रिपोः पुरम्। तत्सर्वत्र भवन्त्येव पर्यायैर्देवविप्लवाः ॥ अ.क.90ख/64.27.

གནམ་གྱིས་བསྙོས་པ = གནམ་བསྙོས།

གནམ་གྲུམ निर्घातः – སྐར་མདའ་གནམ་གྲུམ་ས་འགུལ་ནི། །སྐར་མདའ་དཀར་པོ་འབར་གྱུར་ན། །དེས་ནི་ཕྱིར་བཟླན་སེལ་བར་བྱེད།། <? >उल्कनिर्घातभूकम्पं... ज्वलनं सितमुल्कायाः यद्वक्रं [यदुक्तं] नाशयेत्तु तम् ॥ म.मू.200ख/216; द्र. གནམ་གྲུམ་སྦྲ།

གནམ་གྲུམ་སྦྲ निर्घातपिण्डितरवः–གནམ་གྲུམ་སྦྲ་བཞིན་ས་ལ་ལྷུང་བར་གྱུར། །ནགས་ཚལ་འཁྲི་ཤིང་ལྷ་རྣམས་འདུད་པར་འགྱུར།། निर्घातपिण्डितरवं निपपात भूमावावर्जयन् वनलता वनदेवताश्च ॥ जा.मा.183क/212.

གནམ་གྲུམ་པ = གནམ་གྲུམ།

གནམ་གྲུམ་པའི་སྒྲ་དྲག་པོ निर्घातः मि.को.33ख; द्र. སྒྲ་དྲག་པོ། གནམ་གྲུམ།

གནམ་ལྕགས अशनिः – མཇུག་རིངས་ལས་དང་སྐར་མདའ་དང་། །གནམ་ལྕགས་དང་ནི་རྡོ་རྗེ་དང་། །དུད་པ་ཕྱོགས་ནི་མཐའ་དག་ཏུ། །དུ་བ་མཇུག་རིངས་རབ་ཏུ་སྣང་།། <?>केतुकम्पास्तथोल्काश्च अशनिर्वज्र एव तु ॥ धूम्रा दिशः समन्ताद् वै धूमकेतु प्रदृश्यते। म.मू.198ख/213; वज्रम् – ह्रादिन्यौ वज्रतडितौ अ.को.3.3.112.

གནམ་ལྕགས་ལྕེ = གནམ་ལྕགས་ཆེ།

གནམ་ལྕགས་ཆེ महाशनिः – ཇི་ལྟར་བདག་ལ་ཕན་འདོད་དུག་དང་མཚོན་དང་ནི། །གནམ་ལྕགས་ལྕེ་[ཆེ་]དང་དགྲ་ལས་རང་གི་ལུས་ཟློག་པ།། यथा विषाच्छस्त्रमहाशनेरिपोर्निवारयेदात्महितः स्वमाश्रयम् । सू.अ.195ख/96.

གནམ་ལྕགས་རྡོ་རྗེ वज्रः, °ज्रम् – བྱུར་དུ་ནད་ཀྱིས་འཇིགས་[འཇིག་]འགྱུར་ཏེ། །གནམ་ལྕགས་རྡོ་རྗེས་ཤིང་ལ་བཞིན།། हन्यते व्याधिना क्षिप्रं वज्रेणेव सपादपः । म.मू.199ख/215.

གནམ་སྟོང་ अमावस्या – མི་དགེ་བའི་ལས་ལ་ནག་པོའི་ལྔ་པ་དང་བཅུ་པ་དང་གནམ་སྟོང་སྟེ། ཟླ་བ་ཉམས་པ་ལ་ས་སྦྱང་བར་བྱ་ཞིང་ अशुभकर्मणि कृष्णपञ्चम्यां दशम्याममावस्यायां नष्टचन्द्रे भूमिं शोधयेत् वि.प्र.107ख/3.29; अमावासी – ནག་པ་ཟླ་བའི་གནམ་སྟོང་ चैत्रामावासी वि.प्र.54क/4.84; अमा – གནམ་སྟོང་གི་མཐར་རྣམ་པར་བཅད་པ་ཨཿཞེས་པ་སྟེ་དབྱངས་བཅུ་དྲུག་གོ།། अमान्ते विसर्गः अः इति षोडशस्वराः वि.प्र.34क/4.10.

གནམ་དུ་ཕྱོགས་པ *वि.* अत्युन्मुखः – ཨེ་མ་ཀྱི་ཧུད་གནམ་དུ་ཕྱོགས་པ་ལྟར་ཤིན་ཏུ་ཕྱིན་ཅི་ལོག་ཏུ་གྱུར་པས་མྱ་ངན་ལས་འདས་པའི་གྲོང་ཁྱེར་དུ་འགྲོ་བའི་ལམ་ཞི་བ་དྲང་པོ་པོར་ནས...ཁྱོད་ནི་དམ་པ་དག་གིས་སྨད་པར་བྱ་བ་ཡིན་པ་བཞིན་དུ अहो बत भवानत्युन्मुख इव अत्यन्तविपर्यासान्निर्वाणपुरगामिनं शिवमृजुं परमं पन्थान-

मवधूय... सद्भिरुपालभ्य एव सन् प्र.प.83ख/108.

གནམ་མདའ = མདའ शरः, बाणः – ཉིད་ཀྱིས་གཞུ་དེ་ཟླ་གམ་བཞིན་དུ་བདུངས་ནས་གནམ་མདའ་འཕངས་ཏེ स्वयं च तद्धनुरर्धचन्द्राकारेणारोप्य शरः क्षिप्तः अ.श.240ख/221.

གནམ་སྟོད देवमातृकः, क्षेत्रभेदः – གནམ་སྐོད་[སྟོད་] མ་ཡིན་པ अदेवमातृकः म.व्यु.5296(79क); द्र. གནམ་ཏོན།

གནམ་སྟོད་མ་ཡིན་པ अदेवमातृकः, क्षेत्रभेदः म.व्यु. 5297(79क).

གནམ་སྟོད་མིན = གནམ་སྟོད་མ་ཡིན་པ།

གནམ་པ་ཉིད = དྲང་བ་ཉིད आर्जवम्–འདི་ལྟ་སྟེ་མི་དགའ་བ་དང་...[མི་]གནམ་པ་ཉིད་དང་མི་གནམ་[མི་འཇམ་]པ་ཉིད་དང་...འཁྲུག་པ་ཞེས་བྱ་བ་དག་ཡིན་ནོ།། तद्यथा– अरतिः... अनार्जवम्, अमार्दवता... उपायास इति अभि.स्फु.135क/844.

གནམ་པོ •*वि.* = དྲང་པོ आर्जवः म.व्यु.2363(45ख); (གནམ་སོ पा.भे.) मि.को.123ख; •*सं.* = བཞད་གད།

གནམ་འཕང उच्चत्वम् – ལྷ་མོ་འདི་ལྟ་སྟེ་དཔེར་ན། རིའི་རྒྱལ་པོ་རི་རབ་ཀྱི་གནམ་འཕང་དང་ཞེང་རྒྱས་རི་ནག་པོ་ཐམས་ཅད་ཟིལ་གྱིས་མནན་ནས་ཀུན་དུ་ཐལ་ལེ་ཞིང་མངོན་པར་ཐལ་ལ་འདུག་གོ།། स्याद्यथापि नाम देवि सुमेरुः पर्वतराजः सर्वान् कुलपर्वतानभिभवन्नभिरोचते च समभिरोचते चोच्चत्वेन विपुलत्वेन च शि.स.30क/27.

གནམ་ཏོན देवमातृकः म.व्यु.5296; द्र. གནམ་སྟོད།

གནམ་ཟེར = གནམ་གཟེར།

གནམ་གཟེར *> དེར་སྐར་ཁུང་དྲ་བ་ཅན་དང་སྒོ་སྒྲོགས་ཅན་དང་འཁོར་གཏན་དང་གནམ་གཟེར་དང་འཕྲེད་གཏན་དང་བཅས་པར་གཞུག་གོ།། [तत्र] जालवातायनकवाटिकाचक्रिकाघटिकासूचीनाञ्च विनिवेशनम् वि.सू.6क/6; དབྱུག་གུ་སྐམ་ག་བྱས་ཏེ་ཕྲེད་གཏན་དང་གནམ་གཟེར་དང་འཁོར་གཏན་དག་གིས་ནི་གཅད་པར་བྱའོ།། शुष्ककाष्ठेन अर्गलं कवाटम् इन्द्रकीलं च कर्तव्यम् वि.व.186ख/2.110; གནམ་གཟེར་དང་འཁོར་གཏན་གཞུག་པར་བྱའོ།། सूचकम् इन्द्रकीलं निवेशयितव्यम्। वि.व.186क/2.110; द्र.– གང་གི་ཚེ་བཅོམ་ལྡན་འདས་ཀྱི་ཞབས་སྒོའི་ཐེམ་པ་ལ་བཞག་པ་དེའི་ཚེ་ས་ཆེན་པོ་འདི་རྣམ་པ་དྲུག་ཏུ་གཡོས་ཏེ यदा च भगवता इन्द्रकीले पादो न्यस्तः, तदेयं महापृथिवी षड्विकारं प्रकम्पिता अ.श.57ख/49; འཁོར་གཏན་ནམ་སྒོའི་ཐེམ་པ इन्द्रकीलः म.व्यु.5582(82ख); སྒོའི་ཡ་ཐེམ་ལ་བཏགས་པའི་གཏན་ཤིང छो.को.473; ཁྱིང་གུར་ཀྱི་གཏན་ཤིང་དང་སྒོའི་ཡ་ཐེམ་ལ་བཏགས་པའི་གཏན་ཤིང་དམ་གཡའ་ཤིང बो.को.1541.

གནམ་རུ *प्रा.*> གཞུ कार्मुकम्, धनुः – འཁོར་གསུམ་སྟེན་ལ་མཁས་པར་གྱུར་པ་དང་། །འབངས་ལ་ཕན་ཕྱིར་གནམ་རུ་བསྣམས་པ་དེ།། त्रिवर्गसेवानिपुणस्य तस्य प्रजाहितार्थं धृतकार्मुकस्य। जा.मा.61ख/71; དེའི་གནམ་རུ་ད་ལྟར་ལྷ་ཁང་ན་སྤོས་དང་ཕྲེང་བས་མཆོད་དེ तस्य यद्धनुस्तदेतर्हि देवकुले गन्धमाल्यैर्महीयते ल.वि.79ख/107.

གནའ पूर्वम् – འདི་ལྟར་བདག་ཏུ་ལྟ་བ་བསྐྱེད་མི་དགོས། གནའ་ནས་སྐྱེས་ཟིན་པའི་ཕྱིར་རོ།། यस्मात् आत्मदृष्टिरनुत्पाद्या, पूर्वमेवोत्पन्नत्वात् सू.व्या.239ख/152.

གནའ་བོ = སྔ་མ། གཉོད་མ། གདོད་མ། द्र. གནའ།

གནའ་མི *ना.* पुराणः, स्थपतिः – དེ་བཞིན་དུ་དགེ་བསྙེན་ལྔ་བརྒྱ་དང... བཙུན་མོ་འཁོར་གྱི་བླ་དྲང་སྲོང་སྦྱིན་དང་གནའ་མི་དང... རྒྱལ་པོ་གསལ་རྒྱལ་རྣམས་ཀྱིས་ཀྱང་སྐབས་ཕྱེ་སྟེ तथा पञ्चभिरुपासकशतैरल्पोत्सुका क्रियते...ऋषिदत्तपुराणाभ्यां स्थपतिभ्यां...राज्ञा प्रसेनजिता अ.श. 193क/178; वि.व.160ख/1.49.

གནའ་རབས = གནའི་རབས पुराणम्, व्यासादिमुनिप्रणीतशास्त्रविशेषः – དེ་ལྟར་བྱུང་བརྗོད་གནའི་རབས་ལས། །གང་ཡང་ཚངས་སོགས་ཀུན་མཁྱེན་ཡིན།། इतिहासपुराणेषु ब्रह्मादिर्योऽपि सर्ववित्। त.स.116ख/1009; གནའ་རབས་ཞེས་བྱ་བ་ནི་བསྟན་བཅོས་སོ།། पुराणं नाम शास्त्रम् त.प.323ख/1114.

གནའི་རབས पुराणम् म.व्यु.7129(101ख).

གནས • *सं.* 1. = ས་ཆ स्थानम्–འདུ་འཛི་མེད་པའི་གནས་སུ་སོང་སྟེ निसङ्गं स्थानं गत्वा म.मू.180ख/108; पदम् –དཀའ་ཐུབ་ཀྱི་གནས आश्रमपदम् जा.मा.165क/191; ཉི་མ་སྲིད་པའི་མིག་དག་ནི། །འཇིག་རྟེན་ཕ་རོལ་གནས་སོང་ཚེ།། लोकोत्तरपदं याते भानौ भुवनचक्षुषि। अ.क.79क/62.61; आयतनम् – དགོན་པའི་གནས་དེ་ན་རྩ་བ་དང་འབྲས་བུ་དཀའ་ཐུབ་ཅན་རྣམས་ཀྱིས་བཟར་རུང་བ तस्मिन्नरण्यायतने तापसजनोपभोगयोग्यं मूलफलम् जा.मा.32क/37; आस्पदम् – ཚུར་སོག་ཁྱོད་ཀྱི་རང་གི་གནས། །ཝཱ་རཱ་ཎ་སཱི་ཉིད་དུ་འདོང་།། एहि वाराणसीमेव गच्छावस्ते निजास्पदम्। अ.क.146ख/14.88; भूमिः – སྐྱེད་མོས་ཚལ་གྱི་གནས་སུ उद्यानभूमिम् वि.व.290क/1.112; उद्देशः – སྐབས་དེར་བཟོད་པ་སྨྲ་བ་ནི། །དབེན་པའི་གནས་ན་རབ་དགྱེས་པས།། अत्रान्तरे क्षान्तिवादी विविक्तोद्देशनिर्वृतः। अ.क.251ख/29.51; प्रत्युद्देशः – སོང་རིགས་ཀྱི་བུ་ལྷོ་ཕྱོགས་ཀྱི་རྒྱུད་འདི་ཉིད་ཀྱི་ཕྱོགས་ཀྱི་སྒོའི་གནས་རྒྱ་མཚོའི་འགྲམ་ཞེས་བྱ་བ गच्छ कुलपुत्र, अयमिहैव दक्षिणापथे समुद्रकच्छो नाम दिग्मुखप्रत्युद्देशः ग.व्यू.279ख/360; देशः – མེ་ཏོག་འཁྲི་ཤིང་གིས་ཁྱུས་པ། །རྫིང་བུ་དགའ་བའི་གནས་དེར་ནི།། तस्मिन् पुष्करिणीरम्ये देशे फुल्ललताकुले। अ.क.36क/54.18; ओकः – མི་བཟད་མེ་ལྕེ་བརྒྱ་ཕྲག་གིས།...།དམྱལ་བའི་གནས་ནི་སྐྱོ་བར་བྱས།། तीव्रवह्निशिखाशतैः... चक्रे सखेदं नरकौकसाम् ॥ अ.क.195क/82.36; क्षयः – བཀྲམ་ཆགས་ལོག་པའི་བརྟུལ་ཞུགས་ཅན། །ཆགས་སྡང་སྙིགས་མ་ཅན་རྣམས་ཀྱི། །རྟག་ཏུ་ཚ་བའི་ཟངས་ཆེན་ནི། །འདི་དག་འཇིག་པ་མེད་པའི་གནས།། मिथ्याव्रतानां लुब्धानां रागद्वेषकषायिणाम्। एतासु नित्यतप्तासु कुम्भीष्वेवाक्षय क्षयः ॥ अ.क.111ख/10.132; वीथिका – འདི་ནི་ངེས་པར་ཤིང་ཏ་མ་ལའི་གནས་སོ།། एषा खलु तमालवीथिका ना.ना. 279क/119 2. (लाक्षणिकार्थे :) स्थानम् – དོགས་པའི་གནས आशङ्कास्थानम् प्र.वा.47ख/4.30; དགེ་བའི་གནས་སུ་དགོད་པའི་ཕྱིར कुशले स्थाने प्रतिष्ठापनार्थम् बो.भू.117क/151; पदम्– སྐྲག་པའི་གནས उत्त्रासपदम् सू.व्या.133ख/6; ཆོས་ཀྱི་འབྱུང་གནས་སྤངས་པ་ཡིས། །ཆོས་གནས་དག་པ་གཞན་དག་མེད།། नान्यद् धर्मपदं शुद्धं मुक्त्वा धर्मोदयाक्षरम्। गु.सि.6ख/14; भाजनम् – དེ།...།དམ་པ་རྣམས་ཀྱིས་སྨད་པའི་གནས།། स सतामवमानस्य भाजनम् अ.क.174ख/78.18; आयतनम् – དེ་འདོད་པ་རྣམས་ལ...ཉེས་པ་མང་པོའི་གནས་སུ་གྱུར་པའི་ཕྱིར स कामान्...अनेकदोषायतनत्वात् जा.मा.110क/128; निकेतनम् – དེ་སྲིད་འཚེ་དང་སྡིག་པའི་གནས། །ཆོས་མིན་མང་པའི་རྒྱལ་སྲིད་འདི། །ཡོངས་སུ་བཏང་ལ तस्मादिदं परित्यज्य हिंसापाप-

निकेतनम्। अधर्मबहुलं राज्यम् अ.क.20ख/52.13; आस्पदम्–དབང་བསྐུར་སྲིད་གསུམ་ཕུན་ཚོགས་གནས།། अभिषेकं त्रिभवास्पदम् प्र.सि.31क/74; निलयः – དེ་ཡིས་བཟོད་པའི་གནས་དེ་ལ། །གུས་པ་ཡིས་ནི་དང་བར་བྱས།། स तया क्षान्तिनिलयः प्रणयेन प्रसाधितः। अ.क.212क/87.26; सन्निश्रयः – མེའི་ཆ་ལུགས་ཅན་གྱི་བུ་ལྟ་བའི་གནས་ནི་འདི་གསུམ་ཡིན་ཏེ त्रय इमे अग्निवैश्यायन दृष्टिसन्निश्रयाः अ.श.279क/256; भूमिः – རྟོགས་[? རྟོག་]གནས་མིན་ཕྱིར་དཔེ་ལས་འདས་པའི་ཕྱིར།། अतर्कभूमेरुपमानिवृत्तितः र.वि.65क/89; प्रदेशः – ངས་བུ་མོ་ཨུཏ་པ་ལ་ཆ་བས་སྐྱོ་བར་བྱས་ནས། བརྟུལ་ཞུགས་ཀྱི་གནས་ལྔ་ལ་བཞག་པ मया...कुवलया दारिका [जरया] संवेज्य पञ्चसु व्रतप्रदेशेषु प्रतिष्ठापिता अ.श.202ख/186 3. = གོ་འཕང पदम् – རྡོ་རྗེ་སེམས་དཔའི་གནས་གང་ཡིན། །ཚེ་འདི་ཉིད་ལ་ཐོབ་པར་འགྱུར།། प्राप्यते जन्मनीहैव वज्रसत्त्वपदं यया ॥ गु.सि.2ख/6; स्थानम्–བླ་མེད་གནས་སུ་འགྲོ་བར་འགྱུར།། व्रजन्त्यनुत्तरं स्थानम् गु.सि.2ख/6 4. = གནས་ཁང भवनम्–དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་གླུའི་རྒྱལ་པོ་བཏང་བཟུང་གི་གནས་ན་བཞུགས་སོ།། तथागतो मुचिलिन्दनागराजभवने विहरति स्म ल.वि.181ख/276; ཕྱག་ན་རྡོ་རྗེའི་གནས་སུ་འགྲོ་བར་འགྱུར་རོ།། वज्रपाणिभवनं गच्छति म.मू.211ख/230; བདུད་ཀྱི་གནས मारभवनम् सू.भा.147ख/28; सदनम्–འདོད་པ་ཀུན་དང་བདེ་བ་ཀུན། ...།ལྷ་རྣམས་གནས་ནི་ཐམས་ཅད་ལས། །ཁྱད་འཕགས་རྒྱལ་པོས་མཐོང་གྱུར་ནས།། सर्वकामं सर्वसुखं...सर्वातिशयितं दृष्ट्वा देवानां सदनं नृपः ॥ अ.क.43ख/4.83; अगारम् – གནས་སུ་ལྷན་ཅིག་ཉལ་ན་ཡང་ངོ་།། अगारे सहस्वप्ने वि.सू.42क/53; བསམ་གཏན་གྱི་གནས་སུ་ཞུགས་ནས... ཉིན་མཚན་འདས་སོ།། प्रविश्य ध्यानागारं... अहोरात्रमतिनामयामास जा.मा.32ख/38; निकेतः – དུར་ཁྲོད་དང་ནི་ཁང་སྟོང་རི་བོ་དང་།... དཀའ་ཐུབ་ཅན་རྣམས་གནས་མེད་འཁོད་པར་འགྱུར།། श्मशानशून्यालयपर्वतेषु...निकेतहीना यतयो वसन्ति जा.मा.110ख/128; सद्म – འགའ་ཞིག་ནགས་དང་གཞན་དག་ནི། །ལྷ་རྣམས་དག་གི་གནས་སུ་སོང་།། अरण्यं कैश्चिदाक्रान्तमन्यैः सद्म दिवौकसाम्। का.आ.334ख/3.7; वेश्म – གལ་ཏེ་བློ་གནས་ཆགས་པའི་དྲ་བ་ན། །གནས་ན मतिवेश्मनि लोभपञ्जरे यदि तिष्ठन्ति बो.अ.9ख/4.35; सौधम्– ཡིད་ནི་རབ་ཏུ་དང་བའི་རྩེ་དགའི་གནས། །བུ་ཡི་བཞིན་རས་གང་ཚེ་བདག་གིས་མཐོང་།། मनःप्रसादस्य विलाससौधं द्रक्ष्यामि सूनोर्वदनं कदाहम् ॥ अ.क.192क/22.3; शाला – མེ་ཡི་གནས་ན་བདག་གིས་ནི། །གསེར་དག་སྦས་ཏེ་བཞག་ནས་ཡོད།། सुवर्णमग्निशालायामस्ति गूढं धृतं मया ॥ अ.क.171क/19.86; घरम् मि.को.139ख 5. = འདུག་གནས वासः –ཉི་མ་ནུབ་གྱུར་ཟླ་བ་མཛེས། །འདབ་ཆགས་རྣམས་ནི་གནས་སུ་སོང་།། गतोऽस्तमर्को भातीन्दुर्यान्ति वासाय पक्षिणः। का.आ.330क/2.241; དུར་ཁྲོད་ཀྱི་ནི་གནས། །བྱ་རོག་སྐྱོ་རྒྱུ་ཡིན་ནམ་ཅི།། श्मशानवासः काकस्य किमुद्वेगस्य कारणम् ॥ प्र.अ.144ख/154; आवासः – ཉིད་ཀྱི་གནས་སུ་སླར་དོང་ངོ་།། स्वमावासं प्रतिजगाम जा.मा.45ख/54; निवासः – སྔོན་གྱི་གནས་རྗེས་སུ་དྲན་པ पूर्वनिवासानुस्मृतिः अभि.भा.61क/1107; संवासः –ཀྱེ་མ་གནས་ནི་བརྗེད་གྱུར་ནས། །འཕྲལ་ལ་གཞན་དུ་རྒྱུག་པ་ཉིད།། अहो विस्मृतसंवास...सहसाऽन्यत्र धावति ॥ अ.क.110ख/10.124; वसतिः – ལྷ་རྣམས་བདག་པོ་དགའ་བས་སྐབས་གསུམ་གནས་སུ་སོང་བར་གྱུར།། त्रिदशवसतिं प्रीतः प्रायात् पतिस्त्रिदिवौकसाम् अ.क.296ख/38.21; आवसथः – རང

གི་སྐྱེད་མོས་ཚལ་ཉམས་དགའ་བའི་ས་ཕྱོགས་ཤིག་ཏུ་དེའི་
གནས་བྱེད་དུ་བཅུག རमणीये स्वस्मिन्नुद्यानवनप्रदेशे
तस्यावसथं कारयामास जा.मा.129[क]/149; निवेशः
– འཐབ་ཀྲོལ་ཅན་གྱིས་གནས་མི་འཐོབ་པར་བྱ་བའི་ཕྱིར
कलिकरनिवेशासम्पत्त्यर्थम् वि.सू.62[क]/79; निवे-
शनम् – དགེ་བསྙེན་མ་ཕྲུལ་དུ་བྱུང་བའི་གནས་གང་ན
བ་དེར་སོང་སྟེ येन प्रभूताया उपासिकाया निवेशनं
तेनोपसंक्रम्य ग.व्यू.6[क]/105; आलयः – རྒྱ་མཚོ་ཆུ
སྲིན་རྣམས་ཀྱི་གནས॥ सागरो मकरालयः अ.श.10[ख]/
9; ཕྱག་འཚལ་བསྐོར་བ་བྱས་ཏེ་བདག་བདག་གི་གནས
སུ་དོང་ངོ་॥ अभिवाद्य प्रदक्षिणीकृत्य चैनं स्वान्
स्वानालयानभिजग्मुः जा.मा.27[क]/32; निलयः –
ལྷའི་གནས། །དགའ་ལྡན་ཞེས་པ་ཐོབ་གྱུར་ཏེ॥ तुषिता-
भिधम्। अवाप देवनिलयम् अ.क.230[ख]/89.118;
རིགས་དེ་ནི་གཞི་ཞེས་ཀྱང་བྱ། རྟེན་པ་དང་རྒྱུ་དང་རྟེན་པ
དང་ཉེར་གནས་དང་སྔོན་དུ་འགྲོ་བ་དང་གནས་ཞེས་ཀྱང
བྱའོ॥ तत्पुनरेतद्गोत्रमाधार इत्युच्यते। उपस्तम्भो
हेतुर्निश्रय उपनिषत्पूर्वङ्गमो निलय इत्यप्युच्यते बो.
भू.2[ख]/2; आश्रयः – དེ་སྐད་གསལ་བར་བཀའ་སྩལ
ནས། །བཅོམ་ལྡན་རང་གི་གནས་སུ་གཤེགས॥ याते भ-
गवति स्पष्टमित्यादिश्य निजाश्रयम्। अ.क.87[क]/
9.8; आशयः – དེ་ནི་སོང་བས་མི་བསྲུན་པའི། །གྲོགས
བཞིན་ཉོན་མོངས་ཚོགས་ཀྱི་གནས། །ལྕགས་ཀྱི་རང་བཞིན
རྩུབ་པོ་ཡི། །གྲོང་ཁྱེར་ངན་འགྲོ་མང་པོ་ཐོབ॥ स व्रजन्-
नगरं प्राप दुर्गप्रायमयोमयम्। परुषं खलसौहार्दमि-
वायासचयाशयम्॥ अ.क.245[ख]/92.37; पदम् – དེ
ནས་བཅོམ་ལྡན་ལ་བཏུད་ནས། །མི་བདག་རང་གི་གནས
སོང་ཚེ॥ भगवन्तं प्रणम्याथ प्रयाते स्वपदं नृपे। अ.
क.348[ख]/46.18; प्रतिश्रयः – ཟས་འདོད་པ་རྣམས་ལ
ཟས་སྦྱིན་པར་བྱེད་དོ॥ ...གནས་འདོད་པ་རྣམས་ལ་གནས

भोजनं भोजनार्थिभ्यो ददाति...प्रतिश्रयं प्रतिश्रया-
र्थिभ्यः बो.भू.79[ख]/102; सन्निवेशः – ཡོངས་སུ་ཟིལ
གནོན་སྲིད་པ་འདིར་ནི་འདི་ཉིད་བདག་གི་གནས॥ परि-
भवभुवनेऽस्मिन्नेष नः सन्निवेशः अ.क.223[क]/24.
170; धाम – དེ་ནས་དུས་ཀྱིས་ས་ཡི་བདག། །བསོད
ནམས་ཐེམ་སྐས་དག་ལས་ནི། །ལྷ་ཡི་གནས་སུ་ཡང་དག
འཛེགས॥ ततः कालेन सुकृतसोपानैः पृथिवीपतौ।
दिव्यधामसमारूढे अ.क.22[क]/3.32; धानी – རྒྱལ
པོའི་གནས་བརྟན་པ་ཞེས་བྱ་བ स्थिरा नाम राजधानी
ग.व्यू.35[ख]/130 6. = ལྷ་ཁང आयतनम्, देवकुलम्
– ལྷའི་གནས་ལ་ལྟ་བར་བྱའོ॥ देवायतनं प्रेक्षामहे ना.
ना.266[क]/23; དབང་ཕྱུག་ཆེན་པོའི་གནས महेश्वरा-
यतनम् म.मू.279[ख]/438; དུ་ཀའི་གནས दुर्गायतनम्
अ.क.202[क]/84.32 7. = བསྟི་གནས आश्रमः, मुनी-
नां वासस्थानम् – ཐུབ་པ་གནས་ལ་གནས་པ་བཀྲེས
ཐོངས་པ། །དེ་ཡི་ཕྱེད་དུ་ངས་ནི་ལུས་ཀྱང་བཏང་॥ मुनि-
राश्रमवासि क्षुधार्तस्तस्य कृतेन मयाश्रयु त्यक्तः॥
रा.प.239[ख]/136; བསྲུངས་མ་ཉུག་རུམ་བཅས་པར་བུད
མེད་རྣམས། །བདག་གི་གནས་སུ་རང་དགར་ལྷགས་པ
ལ॥ स्त्रियोऽभियाता यदि ते ममाश्रमं यदृच्छयान्तः-
पुररक्षिभिः सह। जा.मा.170[क]/196 8. आश्रमः, ब्र-
ह्मचर्यादिः – ब्रह्मचारी गृही वानप्रस्थो भिक्षुश्चतु-
ष्टये। आश्रमोऽस्त्री अ.को.2.7.4; आश्राम्यन्त्य-
स्मिन्निति आश्रमः। श्रमु तपसि खेदे च अ.वि.2.7.
4 9. तीर्थम्, पुण्यक्षेत्रम् – སེམས་ཅན་བསོད་ནམས
འདོད་པ་རྣམས་ལ་བསོད་ནམས་ཀྱི་གནས་བསྟན་པའི་ཕྱིར
पुण्यकामानां सत्त्वानां पुण्यतीर्थोपदर्शनार्थम् अ.श.
106[ख]/96; मन्दिरम् – མི་བདག... འཇིར་འཇིག་ཅེས
བྱ་བ། །བསོད་ནམས་ཕུན་ཚོགས་གནས་སུ་གྱུར॥ नृपः...
अभूत्पुरंदरो नाम मन्दिरं पुण्यसम्पदः॥ अ.क.259[ख]

/31.3; आयतनम् – སངས་རྒྱས་ཐམས་ཅད་ཀྱི་ཞིང་གི་མུ་སྟེགས་ཅན་གྱི་གནས་སུ་ཉེ་བར་འགྲོ་བ सर्वबुद्धक्षेत्रतीर्थ्यायतनोपगतम् ल.अ.71ख/19 **10.** विषयः – རང་གི་སྐྱེ་བོ་དང་ཡོངས་ཀྱི་སྐྱེ་བོ་དང་ཡུལ་དང་གནས་དང་བྲན་དང་...ཆུང་མ་ལ་སོགས་པ་ཡང་བསྲུང་བར་བགྱིའོ།། स्वजनपरिजनदेशविषयभृत्य...भार्यादिरक्षां च करोमि स.दु.118क/200 **11.** = གྲོང་། ཚོང་དུས པत्तनम् – འགྲོ་བའི་གནས་དང་བྲལ་བར་འདོད་པ་རྣམས།། गतिपत्तनविप्रवासशीलाः बो.अ.2ख/1.11; འགྲོ་བ་ཉིད་ཚོང་དུས་ཏེ། གྲོང་གི་རྫས་ཉོ་བ་དང་འཚོང་བའི་གྲོང་ཁྱེར་ནི་འདིར་ཚོང་དུས་ཡིན་ལ गतय एव पत्तनानि पण्यद्रव्यक्रयविक्रयनगराणि इह पत्तनानि बो.प.48क/8; पुरम् – གསལ་བ་ལ་སོགས་དཀྱིལ་འཁོར་ལྡན། །དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་ཀུན་གྱི་གནས།། स्वच्छादिमण्डलैर्युक्तं सर्वताथागतं पुरम् ॥ गु.स.81क/2; ཚངས་པའི་གནས ब्रह्मपुर लो.को.1364; འཇིགས་པ་མེད་པའི་གནས अभयपुर लो.को.1364; पुरिः लो.को.1364 **12.** = ས་གཞི भूमिः, पृथिवी – རྣམ་གྲངས་ཀྱི་ཚིག་གོ།། ...ས་གནས་ནོར་འཛིན་དང पर्यायवचनम्...पृथिवी भूमिर्वसुन्धरा ल.अ.132क/78; क्षितिः मि.को.146क **13.** = སྐྱབས लयनम्, शरणपर्यायः म.व्यु.1747(38ख); ཕན་དང་བདེ་དང་སྐྱོབ་པ་དང་། །མི་རྣམས་ཀྱི་ནི་སྐྱབས་དག་དང་། །གནས་དང हितं सुखं च त्राणं च शरणं लयनं नृणाम्। अभि.अ.7ख/4.27 **14.** = གཞི། आधारः – རྟེན་པའི་བྱེད་རྒྱུ་ནི་གང་གི་གནས་སུ་གང་གྱུར་པ་སྟེ धृतिकारणं यद् यस्याऽऽधारभूतम् म.भा.7ख/2.9; ལ་ལར་ནི་བདེ་བའི་གནས་སུའོ།། क्वचित् सौख्याधारः त.सि.67ख/177; समाश्रयः – ཐོག་མ་མེད་དུས་ཅན་གྱི་ཁམས། །ཆོས་རྣམས་ཀུན་གྱི་གནས་ཡིན་ཏེ།། अनादिकालिको धातुः सर्वधर्मसमाश्रयः। र.व्या.111ख/72; आशयः – སེམས་ཅན་དེ་དག་གི་ནད་ཀྱི་གཞི་དང་གནས་དང་ཕྲ་ནས་གཞི་ཡོད་པ་རྟོགས་ནས तेषां सत्त्वानां निदानमाशयानुशयं चोपलक्ष्य अ.श.88क/78; भाजनम् – ལུས་ཞེས་བྱ་བ་འདི་ནི...སྡུག་བསྔལ་མང་པོའི་གནས།། बहुरोगभाजनं ...शरीरसंज्ञोऽयम् जा.मा.182क/211; पदम् – བསྟན་བཅོས་ཀུན་གྱི་ལུས་ནི་མདོར་བསྡུ་ན། །རྡོ་རྗེ་ཡི་ནི་གནས་བདུན་འདི་དག་གོ།། कृत्स्नस्य शास्त्रस्य शरीरमेतत् समासतो वज्रपदानि सप्त ॥ र.वि.54क/1; རྟོགས་པའི་དོན་རྡོ་རྗེ་ལྟ་བུའི་གནས་ཏེ། གཞི་ཡིན་པའི་ཕྱིར་རྡོ་རྗེའི་གནས་སོ།། वज्रोपमस्याधिगमार्थस्य पदं स्थानमिति वज्रपदम् र.भा.74क/1; དང་པོ་དག་པ་ནི་དང་པོའི་དག་པ་སྟེ་ཆོས་ཀྱི་སྐུའོ།། དེ་ཉིད་གནས་ཏེ་དམིགས་པའོ།། आदिशुद्धमादिशुद्धिः, धर्मकायः। तदेव पदमालम्बनम् ख.टी.155ख/235; བསླབ་པའི་གནས་ལྔ पञ्च शिक्षापदानि अ.क.77क/7.65; अधिष्ठानम् – རང་གི་དོན་དགོས་པ་མཐར་མ་ཕྱིན་པ་བར་མ་དོའི་གནས་འདོར་དུ་འཇུག་པའོ།། अनिष्ठितस्वकार्यस्य चान्तराधिष्ठानपरित्यागः बो.भू.60क/78 **15.** = འབྱུང་གནས आकरः – བདེ་བ་དག་ནི་ཐམས་ཅད་ཀྱི། །ཡོན་ཏན་རྒྱ་མཚོར་གནས་ཕྱིར་རོ།། सर्वेषां सर्वसौख्यानामाकरत्वाद् गुणोदधौ ॥ ज्ञा.सि.48क/123; རྒྱ་མཚོ་ཆེ་བཞིན་དཔག་མེད་པའི། །ཡོན་ཏན་རིན་ཆེན་མི་ཟད་གནས།། महोदधिरिवामेयगुणरत्नाक्षयाकरः। र.वि.56ख/37 **16.** = ལུས आश्रयः, शरीरम् – འདི་ལ་གནས་དང་ནི། །རྟེན་པ་རྒྱས་པའི་དོན་དུ་གཉིས།། इह पुष्टयर्थमाश्रयाश्रितयोर्द्वयम् अभि.को.8ख/496; གནས་ནི་དབང་པོ་དང་བཅས་པའི་ལུས་སོ།། ...རྟེན་པ་ནི་སེམས་དང་སེམས་ལས་བྱུང་བའི་ཆོས་རྣམས་སོ།། आश्रयो हि सेन्द्रियः कायः...आश्रिताश्चित्तचैत्ताः अभि.भा.141ख/496; རྟེན་ནི་གནས་གཞན་དུ་གྱུར་པའོ།། आश्रय आश्रयपरा-

वृत्तिः सू.व्या.172ख/65 **17.** वास्तु – གནས་བསྐྱབས་པ་དང་གནས་མལ་བསྐྱབས་པ་དང... བསྙེན་བཀུར་བ་བསྐྱབས་པས वास्तुपरिहारेण शयनासनपरिहारेण... उपस्थायकपरिहारेण वि.व.148ख/2.122; वस्तु – གནས་ཐམས་ཅད་གྲུབ་པའམ་བྱས་པའམ་ཟིན་པ་ལའོ།། ཕྱི་རོལ་ཏེ་འཁོར་འདོམ་གང་དང་ལྡན་པའོ།། सर्वजातकृतनिष्ठितं वस्तु । स बहिर्व्यामोपविचारम् वि.सू.57क/71; སེར་སྐྱའི་གནས་ཀྱི་གྲོང་ཁྱེར་ཆེན་པོ कपिलवस्तु महानगरम् ल.वि.79ख/107 **18.** = དབྱིབས सन्निवेशः – གཟུགས་ནི་འབྱུང་བ་ཆེན་པོ་རྣམས་ཀྱི་གནས་ཀྱི་བྱེ་བྲག་གོ།། रूपं च भूतानां सन्निवेशविशेषः ल.अ.137ख/84 **19.** = གནས་སྐབས अवस्था – འདི་ལྟ་སྟེ། བློ་གྲོས་ཆེན་པོ་གང་གཱའི་ཀླུང་གི་བྱེ་མ་རྣམས་རང་བཞིན་གཞན་དུ་མི་རྩོམ་སྟེ། བྱེ་མ་རྣམས་ནི་བྱེ་མའི་གནས་ཉིད་དོ།། तद्यथा महामते गङ्गायां नद्यां वालुका न वालुकास्वभावान्तरमारभते, वालुकावस्था एव वालुकाः ल.अ.148क/94 **20.** = སྐབས प्रकृतम्, प्रकरणम् – དེ་ལྟ་བུའི་གནས་སུ་བྱེ་བྲག་ཏུ་སྨྲ་བས་སྒྲ་ཁོ་ན་ཡིན་ནོ་ཞེས་བྱ་བ་སྨྲས་ཏེ། དམིགས་པ་ཞེས་བྱ་བར་སྐབས་དང་སྦྱར་རོ།། एवं प्रकृते वैभाषिक आह–शब्द एव । आलम्बनमिति प्रकृतम् अभि.स्फु.119क/815 **21.** पदवी – སྐྱེས་བུ་དག་ནི་སུ་ཞིག་འདི། །རིག་པ་འཛིན་པའི་འཁོར་ལོས་སྒྱུར་བའི་གནས་དག་མ་ཐོབ་འདུག་པ་ཡིན་ནམ་སྙམ།། कोऽप्ययं नो विद्याधरचक्रवर्तिपदवीमप्राप्य विश्राम्यति ना.ना.229क/38 **22.** कक्षा– འགྲོ་ལའི་འདོད་པ་རྣམ་པ་སྣ་ཚོགས་གནས་ལ་སོགས་པའི་དབྱེ་བ་ཐ་དད་པས་བརྗོད་དོ།། बहुविधं गोलमतं कक्षादिभेदान्तरेणोक्तम् वि.प्र.189ख/1.53; འདིར་གནས་དང་པོ་ལ་ཟླ་བ་དང་གཉིས་པ་ལ་གཟའ་ལག་དང इह प्रथमकक्षायां चन्द्रः, द्वितीयायां बुधः वि.प्र.190क/1.53 **23.** = སྲིད་པ स्थानम्, सम्भवः, अवकाशो वा – གནས་དང་གནས་མ་ཡིན་པ་མཁྱེན་པའི་སྟོབས स्थानास्थानज्ञानबलम् सू.व्या.258क/178; སྲིད་པ་ནི་གནས་སོ།། མི་སྲིད་པ་ནི་གནས་མ་ཡིན་པའོ།།... སྡུག་བསྔལ་འགོག་པ་འདི་ནི་གནས་ཡིན་ནོ།། सम्भवः स्थानम्, असम्भवोऽस्थानमिति...स्थानमेतद् यत् दुःखस्य निरोधः अभि.स्फु.267क/1085; སངས་རྒྱས་ཀྱི་ཆོས་ནི་ཟབ་པ་ལགས་པས་བུ་མོ་འདིས་རྟོགས་པར་མི་འགྱུར་བ་གང་ལགས་པའི་གནས་དེ་མཆིས་སོ།། गम्भीरा बुद्धधर्माः स्थानमेतद्विद्यते यदसौ दारिका न विज्ञास्यति वि.व.139ख/1.29 **24.** = མིག་འཛུམ་བཅོ་བརྒྱད काष्ठा, अष्टादशनिमेषात्मककालः–अष्टादश निमेषास्तु काष्ठा त्रिंशत्तु ताः कला ॥ अ.को.1.4.11; काशत इति काष्ठा अ.वि.1.4.11 **25.** आसनम्, गुणभेदः – सन्धिर्ना विग्रहो यानमासनं द्वैधमाश्रयः । षड्गुणाः अ.को.2.8.18; कालप्रतीक्षां कुर्वन् आस्यत इति आसनम् । आस उपवेशने अ.वि.2.8.18 **26.** स्थानम्, स्थितिः – གནས་གསུམ་མངོན་དུ་གྱུར་པས་མའི་མངལ་དུ་བུ་ཆགས་པར་གྱུར་ཏེ त्रयाणां स्थानानां सम्मुखीभावात् मातुः कुक्षौ गर्भस्यावक्रान्तिर्भवति अभि.भा.117क/410 **27.** = འགྲོ་བ गतिः – ཆང་དེ་ཉུང་ངུ་འཐུངས་ཀྱང་རྣམ་པར་སྨིན་པ་ནི། །མི་ཡི་གནས་སུ་སྐྱེས་ཀྱང་ཚུལ་ཁྲིམས་ལྟ་བ་ཉམས།། लघुरपि च विपाको मद्यपानस्य यः स्यान्मनुजगतिगतानां शीलदृष्टीः स हन्ति । जा.मा.93ख/108; དུད་འགྲོའི་གནས་དང་ཡི་དྭགས་དབུལ་འགྱུར་བ། །མཐོང་བར་འདོད་པའང་དེ་ནི་སུ་ཞིག་ཡོད།། तिर्यग्गतिं प्रेतदरिद्रतां च को नाम तद्द्रष्टुमपि व्यवस्येत् ॥ जा.मा.93ख/108; བདེ་བའི་གནས་སུ་གཤེགས་ཀྱང་ཨེ་མའོ་ཆོས་ཉིད་བཟང सुगतिं गतेष्वपि अहो सुधर्मता स.दु.111ख/174 **28.** = གནས

ཉིད पात्रता – ཨེ་མཚོ་ཡོན་ཏན་ཆེན་པོས་བདག་གི་ལུས། །ཕྱག་གི་གནས་ཀྱི་ཁྱད་པར་ཅན་དུ་བྱས།། अहो नमस्कारविशेषपात्रतां प्रसह्य नीतास्य गुणातनुस्तनुः ॥ जा.मा.6क/6 0. अन्वयः [आलयः] – བདུད་གནས་གཞལ་མེད་ཁང་མཛེ་མཛེས་པ་དག། །བདུད་བཅས་ཀུན་དུ་བསྐྱོད་ཅིང་སྐྲག་པར་བྱེད།། मारान्व[माराल]यान् क्षुब्धविमानशोभान् संकम्पयंस्त्रासयते समारान् ॥ सू.अ.147ख/28; आशा [आसः] – ནགས་གནས་འདོད་ཆུང་ཚོག་ཤེས་དང་།། वनाशाल्पेच्छता तुष्टिः अभि.अ.4क/1.54; पदम् – གནས་དང་དོན་དང་ལུས་སུ་སྣང་བའི་རྣམ་པར་ཤེས་པ་རྣམས་གཞན་དུ་གྱུར་པ་ནི་ཟག་པ་མེད་པའི་དབྱིངས་ཏེ། རྣམ་པར་གྲོལ་བའོ།། पदार्थदेहनिर्भासानां विज्ञानानां परावृत्तिरनास्रवो धातुर्विमुक्तिः सू.व्या.173क/66; • पा. 1. स्थितिः, संस्कृतधर्मस्य लक्षणविशेषः – མཚན་ཉིད་དག་ནི་སྐྱེ་བ་དང་། །རྒ་དང་གནས་དང་མི་རྟག་ཉིད།། लक्षणानि पुनर्जातिर्जरा स्थितिरनित्यता ॥ अभि.को.5ख/253 2. प्रतिष्ठा – གནས་དང་ལུས་དང་ལོངས་སྤྱོད་དུ་སྣང་བའི་རྣམ་པར་ཤེས་པ प्रतिष्ठादेहभोगनिर्भासानां विज्ञप्तीनाम् ख.टी.153क/231; ལུས་དང་ལོངས་སྤྱོད་གནས་འདྲ་བར། །སྲིད་པ་གསུམ་ལ་མ་རྟོགས་ཤིག།། देहभोगप्रतिष्ठाभं त्रिभवं न विकल्पयेत् ॥ ल.अ.171ख/130; གནས་ཀྱི་གཞི་ནི་སྣོད་ཀྱི་འཇིག་རྟེན་ཏེ प्रतिष्ठावस्तु भाजनलोकः म.भा.5क/1.18; ལུས་དང་ལོངས་སྤྱོད་གནས་ལྟ་བུར། །མི་ཡི་རྣམ་པར་ཤེས་པ་སྣང་།། देहभोगप्रतिष्ठानं[?ठाभं] विज्ञानं ख्यायते नृणाम् । ल.अ.73ख/21 3. अधिष्ठानम् – གནས་ནི་མདོར་བསྡུ་ན་རྣམ་པ་བཞི་སྟེ། བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའི་བྱ་བ་ལ་ནན་ཏན་མི་བྱེད་པ་ལ་འཛེམ་པ་གང་ཡིན་པ་དེ་ནི་གནས་དང་པོའོ།། དེ་བཞིན་དུ་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའི་བྱ་བ་མ་ཡིན་པ་ལ་ནན་ཏན་བྱེད་པ་ལ་འཛེམ་པ་གང་ཡིན་པ་དེ་ནི་གནས་གཉིས་པའོ།། དེ་བཞིན་དུ་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའི་བདག་ཉིད་ཀྱི་སྡིག་པ་འཆབ་པ་ལ་འཛེམ་པ་གང་ཡིན་པ་དེ་ནི་གནས་གསུམ་པའོ།། དེ་བཞིན་དུ་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའི་བདག་ཉིད་ཀྱི་འདོད་[? འགྱོད་]པ་སྐྱེས་པ་སྟོན་[རྟོན་]པ་དང་བཅས་པ་ཞར་ལས་བྱུང་བ་ལ་འཛེམ་པ་གང་ཡིན་པ་དེ་ནི་གནས་བཞི་པ་སྟེ अधिष्ठानं पुनः समासतश्चतुर्विधम् । बोधिसत्त्वकरणीयस्याननुष्ठाने या लज्जा । इदं प्रथममधिष्ठानम् । तथा बोधिसत्त्वाकरणीयस्यानुष्ठाने या लज्जा । इदं द्वितीयमधिष्ठानम् । तथा बोधिसत्त्वस्यात्मनः प्रतिच्छन्नपापतायां या लज्जा । इदं तृतीयमधिष्ठानम् । तथा बोधिसत्त्वस्य [स्व]कौकृत्ये समुत्पन्ने सप्रतिसरणे आनुषङ्गिके या लज्जा । इदं चतुर्थमधिष्ठानम् बो.भू.133क/171; ལྔ་པོ་འདི་དག་ནི་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་རྣམས་ཀྱི་སྙན་པར་སྨྲ་བའི་གནས་ཡིན་ཏེ...ལེགས་པར་སྨྲ་བར་བྱ་བ་དང་ལེགས་པར་ཀུན་དུ་དགའ་བར་བྱ་བ་དང་ལེགས་པར་དབུགས་དབྱུང་བ་དང་ལེགས་པར་བསྟབས་པ་དང་རིགས་པས་བསྟན་པའོ།། पञ्चेमानि बोधिसत्त्वानां प्रियवादिताया अधिष्ठानानि...सम्यगालपना, सम्यगानन्दना, सम्यगाश्वासना, सम्यक् प्रवारणा, न्यायोपदेशश्च बो.भू.158क/208 4. आयतनम् – དེ་ལ་གནས་ཞེས་བྱ་བ་ནི་དེ་བཞིན་གཤེགས་པས་གསུངས་པའི་ཆོས་འདུལ་བ་ལ་བྱ་སྟེ། འཇིག་རྟེན་དང་འཇིག་རྟེན་ལས་འདས་པའི་དཀར་པོའི་ཆོས་ཐམས་ཅད་སྐྱེ་བའི་གནས་ཡིན་པའི་ཕྱིར་རོ།། तदायतनं तथागतप्रवेदितो धर्मविनयः सर्वेषां लौकिकलोकोत्तराणां शुक्लधर्माणामुत्पत्तये श्रा.भू.4क/6 5. निश्रयः – གནས་ནི་རྫས་དང་སེམས་ཏེ། དེ་ལ་རྫས་ལ་བརྟེན་ནས་མཆོད་པ་ནི་གོས་ལ་སོགས་པའོ།། निश्रय उपधिश्चित्तं च। तत्रोपधिं निश्रित्य पूजा चीव-

रादिभिः सू.व्या.211[क]/115 **6.** स्थानम्, यथा : **i.** विद्यास्थाने – རིག་པའི་གནས་ཀྱིས་ཡོངས་སུ་བསྡུས་པ་དེ་དག་ཐམས་ཅད་ནི་རིག་པའི་གནས་ལྔ་པོ་དག་ཡིན་ཏེ तान्येतानि सर्वविद्यास्थानपरिगृहीतानि पञ्चविद्यास्थानानि भवन्ति बो.भू.52[क]/68; འཇིག་རྟེན་པའི་བཟོ་དང་ལས་ཀྱི་གནས་རྣམས་ལ་མཁས་པར་གྱུར་པ་ཡིན་ནོ॥ लौकिकेषु च शिल्पकर्मस्थानेषु कौशल्यप्राप्तः बो.भू.135[ख]/174 **ii.** गुह्यस्थाने – གང་འདི་དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་དགྲ་བཅོམ་པ་ཡང་དག་པར་རྫོགས་པའི་སངས་རྒྱས་རྣམས་ཀྱི་གསང་བ་ལ་འཇུག་པའི་གནས་འདི་ལྟ་སྟེ། སྐུའི་གསང་བའམ...དུས་དང་དུས་མ་ཡིན་པ་ཐུགས་སུ་ཆུད་པའི་གསང་བའམ स यानीमानि तथागतानामर्हतां सम्यक्संबुद्धानां गुह्यस्थानानि यदुत कायगुह्यं वा...कालाकालविचारणागुह्यं वा द.भू.266[क]/58 **iii.** निग्रहस्थाने – ཚར་གཅད་པའི་གནས་ནི་ཉི་ཤུ་རྩ་གཉིས द्वाविंशतिविधं निग्रहस्थानम् वा.टी.107[क]/73 **7.** पीठम् – གནས་དང་ཉེ་བའི་གནས་དང་ནི།...།དུར་ཁྲོད་ཉེ་བའི་དུར་ཁྲོད་ཉིད། पीठं चोपपीठं च...श्मशानोपश्मशानकम्॥ हे.त.8[क]/22; དམ་ཚིག་འདུས་པ་ལ་གནས་ནི་ཐམས་ཅད་དུ་བུད་མེད་ཀྱི་པདྨའོ॥ समयमेलापके पीठं सर्वत्र स्त्रीपद्मं भवति वि.प्र.171[क]/3.166; རིགས་ཀྱི་གནས་བཏང་སྙོམས་ཡང་དག་བྱང་ཆུབ་ཀྱི་ཡན་ལག་གོ॥ कुलपीठमुपेक्षासम्बोध्यङ्गम् वि.प्र.172[क]/3.167;
• = གནས་པ།

གནས་ལྔ་ལ་བྱང་བར་གྱུར पञ्चसु स्थानेषु कृतावी संवृत्तः म.व्यु.4996(76[क]).

གནས་ཏེ། °ནས समाश्रित्य – དཔེར་ན་བུད་ཤིང་ལ་གནས་ཏེ། །མེ་ཡི་ས་བོན་ཀུན་ཏུ་གནས॥ यथेन्धनं समाश्रित्य तेजोबीजं तु संस्थितम्। ज्ञा.सि.55[ख]/143; स्थित्वा – འོན་ཀྱང་གནས་ནས་ཡུལ་དང་དུས་གཞན་དུ་དངོས་པོ་འཇིག་པ་སྲིད་པའི་ཕྱིར་རོ॥ तथापि स्थित्वा देशान्तरे कालान्तरे च भावस्य विनाशसम्भवाद् त.प.226[ख]/168; གནས་བཟང་པོ་དེར་གནས་ནས་ནི॥ तस्मिन् स्थित्वा पदे दिव्ये गु.सि.13[क]/29; དེ་ནམ་མཁའ་ལ་གནས་ནས་མེ་ཏོག་རྣམས་མངོན་པར་སྤྲུལ་ཏེ་དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་དེ་ལ་གཏོར स वैहायसे स्थित्वा पुष्पाण्यभिनिर्माय तं तथागतमभ्यवकिरति स्म रा.प.251[ख]/153; བརྟུལ་ཞུགས་དུལ་ལྡན་ཉིད་དུ་དེར་གནས་ནས॥ स्थित्वा तपःसंयत एव तत्र अ.क.124[ख]/65.72; आस्थाय – དེ་རྣམས་ཀྱིས་སླར་ཡང་བརྩོན་འགྲུས་ལ་གནས་ནས་མངོན་པར་ཤེས་པ་ལྔ་མངོན་སུམ་དུ་བྱས་སོ॥ तैः पुनरपि वीर्यमास्थाय पञ्चाभिज्ञाः साक्षात्कृताः वि.व.175[ख]/1.60.

གནས་དང་གནས་སུ पदे पदे – གནས་དང་གནས་སུ་སྨད་གྱུར་ཅིང་།...།ཀྱེ་མ་འདི་དག་ཉེས་བྱས་ཉིད॥ अहो दुष्कृतमेतेषामवधूताः पदे पदे। अ.क.352[क]/47.13.

གནས་ཀྱི་དཀྱིལ་འཁོར་ཐམས་ཅད་རྣམ་པར་དམིགས་པར་བཀྲུན་པ *पा.* सर्वभवनमण्डलविज्ञप्तिव्यूहम्, प्रज्ञापारमितामुखविशेषः – བྷ་ཞེས་བྱ་བ་བརྗོད་པ་དང་། ཤེས་རབ་ཀྱི་ཕ་རོལ་ཏུ་ཕྱིན་པའི་སྒོ་གནས་ཀྱི་དཀྱིལ་འཁོར་ཐམས་ཅད་རྣམ་པར་དམིགས་པར་བཀྲུན་པ་ཞེས་བྱ་བ་ཁོང་དུ་ཆུད་དོ॥ भकारं परिकीर्तयतः सर्वभवनमण्डलविज्ञप्तिव्यूहं नाम प्रज्ञापारमितामुखमवक्रान्तम् ग.व्यू.274[ख]/353.

གནས་ཀྱི་སྐབས **1.** स्थानगतम् – གསོ་སྦྱོང་གི་གཞི་ལས་མཐུན་པའི་གསོ་སྦྱོང་གི་གནས་ཀྱི་སྐབས་སོ॥ पोषधवस्तुनि स्थानगतम् वि.सू.57[क]/71; निःश्रयगतम् – གནས་ཀྱི་སྐབས་སོ॥ निःश्रयगतम् वि.सू.3[ख]/3 **2.** = གནས་སྐབས།

གནས་ཀྱི་མཆོག परस्थानम् लो.को.1365.

གནས་ཀྱི་དོན स्थानार्थः लो.को.1366; संनिवेशार्थः – གནས་ཀྱི་དོན་སོ་སོ་ཡང་དག་པར་རིག་པར་བྱེད་པ संनिवेशार्थप्रतिसंवेदिन् लो.को.1366.

གནས་ཀྱི་བདག་པོ • सं. स्थानाधिपः – གཏོར་མ་བྱིན་ནས་གནས་ཀྱི་བདག་པོ་གཤེགས་ཏེ बलिं दत्त्वा स्थानाधिपं विसर्ज्य वि.प्र.103क/3.23; • ना. = བརྒྱ་བྱིན वास्तोष्पतिः, इन्द्रः – इन्द्रो मरुत्वान् मघवा बिडौजाः पाकशासनः ।...वास्तोष्पतिः अ.को.1.1.44; वास्तोः गृहदेवतायाः पतिः वास्तोष्पतिः अ.वि.1.1.44.

གནས་ཀྱི་གནས་ངན་ལེན आश्रयदौष्ठुल्यम् – གནས་ཀྱི་གནས་ངན་ལེན་རིག་པ आश्रयदौष्ठुल्यवेदित लो.को.1366.

གནས་ཀྱི་རྣམ་པ वि. अवस्थानाकारम् – ཐོས་པའི་རྣམ་པ་ནི་བརྒྱད་ཅུ་སྟེ། འདི་ལྟ་སྟེ། འདུན་པའི་རྣམ་པ་དང... གནས་ཀྱི་རྣམ་པ་དང अशीत्याकारप्रवेशं श्रुतम्। तद्यथा छन्दाकारम्... अवस्थानाकारम् शि.स.107क/105.

གནས་ཀྱི་རྣམ་པར་རིག་པ पा. स्थानविज्ञप्तिः, भाजनलोकसन्निवेशविज्ञप्तिः – གནས་ཀྱི་རྣམ་པར་རིག་པ་སྣོད་ཀྱི་འཇིག་རྟེན་གནས་པར་རྣམ་པར་རིག་པ་སྟེ། དེ་ཡང་དམིགས་པ་དང་རྣམ་པ་ཡོངས་སུ་མ་ཆད་པར་འབྱུང་བས་མི་རིག་པ་ཞེས་བྱའོ॥ स्थानविज्ञप्तिर्भाजनलोकसन्निवेशविज्ञप्तिः। साप्यपरिच्छिन्नालम्बनाकारप्रवृत्तत्वाद् असंविदितेत्युच्यते त्रि.भा.150ख/38.

གནས་ཀྱི་དབང་ཕྱུག་མ पीठेश्वरी – འཕགས་པ་གནས་ཀྱི་དབང་ཕྱུག་མའི་སྒྲུབ་པའི་ཐབས་ཞེས་བྱ་བ आर्यापीठेश्वरीसाधननाम क.त.1706; ཨོ་རྒྱན་སྒྲོལ་མ་གནས་ཀྱི་དབང་ཕྱུག་མ पीठेश्वरी उड्डियानतारा लो.को.1366.

གནས་ཀྱི་གཞི वासवस्तु – གནས་ཀྱི་གཞི་བསྔབས་པར་བྱའོ॥ वासवस्तुग्रहणम् वि.सू.61ख/78.

གནས་ཀྱི་གཞི་བྱེད་པ वासवस्तुकरणम् – གནས་དག་དགེ་འདུན་གྱི་གཞིར་དགེ་འདུན་གྱི་ཕྱིར་རམ་གང་ཟག་དགེ་སློང་གི་ཕྱིར་གནས་ཀྱི་གཞི་བྱེད་པ་རྗེས་སུ་གནང་བར་བྱའོ॥ अनुजानीयुरन्येषां साङ्घिके वस्तुनि सङ्घाय पुद्गलाय वा भिक्षवे वासवस्तुकरणम् वि.सू.92ख/110.

གནས་སྐབས 1. अवस्था i. स्थितिः – དེ་བས་ན་རྫོགས་པའི་གནས་སྐབས་ལས་སྔ་རོལ་གྱི་གནས་སྐབས་ཀྱི་གསལ་བའི་སྣང་བ་ནི་རབ་ཀྱི་མཐའ་ཞེས་བྱའོ॥ ततः सम्पूर्णावस्थायाः प्राक्तन्यवस्था स्फुटाभत्वप्रकर्षपर्यन्त उच्यते न्या.टी.44क/68; दशा – ཡུལ་ཐག་རིང་པོ་ན་གནས་པའི་གནས་སྐབས་ན་སྣང་བ་གང་ཡིན་པ यत् खलु दूरदेशनिवेशिदशायामवभासते प्र.अ.16ख/19; ཉམ་ངའི་གནས་སྐབས कष्टां दशाम् अ.क.342ख/45.1; བར་ཆད་མེད་པ་སོགས་ཡོད་ཀྱང་། །གནས་སྐབས་གཞན་ལ་ལྟོས་བཅས་ཡིན॥ सत्त्वेऽप्यव्यवधानादि तेऽपेक्षन्ते दशान्तरम् ॥ त.स.25ख/273; གནས་སྐབས་ངན་པ दुर्दशा अ.क.265ख/32.6; स्थानम् – དུས་ཆུང་ངུ་ཞིག་ངལ་བསོ་བ་དང་ལྡན་པའི་གནས་སྐབས་ན་དེ་དང་འདྲ་བའི་རླུང་ནང་དུ་འཇུག་པ་གང་ཡིན་པ་སྟེ यदन्तरालविश्रामस्थानसहगत इत्वरकालीनस्तदनुसदृशो वायुरुत्पद्यते श्रा.भू.83ख/220; व्यवस्था – དེ་ལྟར་འཁོར་བའི་གནས་སྐབས་སོ॥ इति संसारव्यवस्था त.सि.64ख/172; གནས་སྐབས་གང་ལ་དགའ་བྲལ་ཞེས་བྱ་བའི། །སྐད་ཅིག་ཟླ་གའི་དབུས་སུ་འབྱུང་འགྱུར་ཏེ། །ཕྱུངས

ཀཱར་ཞེས་བྱའི་མིང་གིས་རྣམ་གནས་པ། །དེ་ལ་སྤྲུལ་པའི་སྐུ་ཞེས་རྒྱལ་བས་གསུངས།། <?> या सा व्यवस्था तु विरामसंज्ञा क्षणादिजा जङ्गममध्यभूता। व्यवस्थिता सर्षपनामधेया निर्माणकायेति तमाहुर्बुद्धाः ॥ गु.सि. 9ख/21 **ii.** बालादिः – ཡོངས་སུ་སྨིན་པར་ནི་མངལ་ན་གནས་པ་དང་བྱིས་པ་དང་གཞོན་ནུ་དང་ལང་ཚོ་དང་དར་ལ་བབ་པ་དང་རྒན་པོའི་གནས་སྐབས་དག་ན་གང་ཡིན་པའོ།། परिपाकेन यो गर्भबालकुमारयुवमध्यमवृद्धावस्थासु सू.व्या.233ख/145; གནས་སྐབས་བཅུ... དེ་རྣམས་ལས་མངལ་གྱི་ནང་དུ་ཉ་དང་རུས་སྦལ་དང་ཕག་གི་གནས་སྐབས་གསུམ་དུ་འགྱུར་རོ།། दशावस्था...तेषु गर्भमध्ये मत्स्यकूर्मवराहावस्थास्तिस्रो भवन्ति वि.प्र.224क/2.6 **iii.** दुर्दशा – ལྟོ་ཡི་ཕྱིར་ནི་གནས་སྐབས་འདི་འདྲ་རྙེད།། इमामवस्थामुदरस्य हेतोः प्राप्तोऽसि जा.मा.194क/225 **2.** = གོ་སྐབས अवसरः – ཁྱོད་ཀྱི་དྲི་དང་ལུང་སྟོན་ལ། །རབ་བཟང་དུ་ལྟ་གནས་སྐབས་མེད།། सुभद्रावसरो नायं प्रश्नव्याकरणे तव। अ.क.184ख/80.43; བློན་པོ་ཆེན་པོས་གནས་སྐབས་སུ། །འོས་པ་བསམས་ནས་དེ་ལ་སྨྲས།། तमुवाच महामात्यः संचिन्त्यावसरोचितम् ॥ अ.क.363क/48.62; अवकाशः – གཡོག་འཁོར་མང་པོའི་ཁྱིམ་དུ་ནི། །རང་དབང་གནས་སྐབས་བྲལ་བ་དེས།། स्वैरावकाशरहिता बहुभृत्यजने गृहे। अ.क.231ख/89.126; ཉོན་མོངས་གནས་སྐབས་མཐའ་དག་གཅོད་བྱེད་པ सकलक्लेशावकाशच्छिदः अ.क.159ख/72.36 **3.** प्रकृतम् – ཐམས་ཅད་ཀྱི་སྒྲ་ཐམས་ཅད་དུ། །གནས་སྐབས་ལ་ལྟོས་འདོད་པ་ཡིན།། सर्वशब्दश्च सर्वत्र प्रकृतापेक्ष इष्यते। त.स.114क/989; ཚད་མ་རྣམ་པར་གཞག་པ་དངོས་པོའི་རང་བཞིན་དང་འབྲེལ་པའི་གནས་སྐབས་ཡིན་པ་ན वस्तुस्वभावप्रतिबद्धायां प्रमास्थितौ प्रकृतायाम् त.प.243ख/959; प्रस्तुतम् – གནས་སྐབས་ཉེ་བར་མཁོ་མིན་ལ། །ཅི་ཞིག་གོགས་ནི་བྱེད་པ་ཡིན།། अप्रस्तुतोपयोगस्य को हि कुर्यान्निषेधनम् ॥ त.स.87ख/801; प्रस्तावः – གལ་ཏེ་དེ་ནི་མ་ཡིན་ཏེ། འདིར་གནས་སྐབས་མ་ཡིན་པའི་ཕྱིར་རོ་ཞེ་ན न, तस्येहाप्रस्तावादिति चेत् वा.न्या.345ख/96; གནས་སྐབས་ཀྱི་དབང་གིས་སོ།། དཔེར་ན་སེནྡྷ་བ་ཁྱེར་ལ་སོང་ཞེས་བརྗོད་པ་ན་ཁྲུས་ལ་གོས་དང་ཟས་ལ་ལན་ཚྭ་དང་ प्रस्तावशादिति। यथा सैन्धवमानयेदित्युक्ते स्नाने वस्त्रम्, भोजने लवणम् वि.प्र.180ख/3.197; प्रकरणम् – གནས་སྐབས་འགའ་ཡིས་འདོད་འགྱུར་ཞིང་། །དེ་རྟོགས་པ་ཡང་དེ་དག་གིས།། कैश्चित् प्रकरणैरिच्छा भवेत् सा गम्यते च तैः। प्र.वा.141क/4.46 **4.** = དུས अवस्था – གར་མཁན་ལ་ལྟ་བའི་གནས་སྐབས་ན नर्तकीप्रेक्षावस्थायाम् त.प.7ख/460; अवसरः – ཟས་ཀྱི་གནས་སྐབས་སུ भोजनावसरे अ.क.214ख/88.12; कालः – སྦྱོར་བའི་གནས་སྐབས་ཉིད་ན प्रयोगकाल एव अभि.स्फु.162क/896; क्षणः – ལས་ནི་འཆད་པའི་གནས་སྐབས་དེར།། कर्माख्यानक्षणे तस्मिन् अ.क.2क/50.6; अन्तरम् – གང་ཞིག་མི་ལམ་སྒྱུ་མའི་གནས་སྐབས་སུ་ཡང་ནམ་ཡང་མི་འགྲོ་བའི།། स्फुटति न च कदाचित् स्वप्नमायान्तरे या अ.क.46ख/4.119 **5.** = ལེའུ अधिकारः – དེ་ཡང་བདག་མེད་པའི་གནས་སྐབས་སུ་བསྒྲུབས་ཟིན་ཏོ།། साऽपि ज्ञापितप्रतिबन्धा नैरात्म्याधिकारे त.प.175क/808 **6.** मात्रा – གནས་སྐབས་གསུམ...བྱང་ཆུབ་ཀྱི་སེམས་འཇུག་པའི་བགྲོད་པ་ནི་དམན་པའི་གནས་སྐབས་དང་གཡོ་བའི་བགྲོད་པ་ནི་འབྲིང་པོའི་གནས་སྐབས་དང་མི་གཡོ་བའི་བགྲོད་པ་ནི་མཆོག་གི་གནས་སྐབས་སོ།། त्रिमात्राः...बोधिचित्तस्य अक्षर[? क्षर]गतिर्मृदुमात्रा, स्पन्दगतिर्मध्यमात्रा, निःस्पन्दगतिरधिमात्रा वि.प्र.66ख/4.117 **7.** = གནས

སྐབས་ཉིད अवस्थता – ཐག་རིང་པོའི་གནས་སྐབས་ཀྱི་རྒྱུ་སྟོན་པར་བྱེད་དེ प्रकृष्टावस्थतां हेतोर्दर्शयति अभि. स्फु.252क/1058 0. प्रस्थानम् – རྣམ་པ་གསུམ་པོ་ན་ཞེས་པ་ལ་སོགས་པས་དང་པོའི་གནས་སྐབས་མཛད་དེ आदिप्रस्थानमारचयति – त्रिविधमेवेत्यादिना वा. टी.53ख/6; द्र.– དང་པོ་འཇུག་པ आदिप्रस्थानम् बो. भू.44क/57.

གནས་སྐབས་བཅུ दशावस्थाः – 1. ཉའི་གནས་སྐབས मत्स्यावस्था, 2. རུས་སྦལ་གྱི་གནས་སྐབས कूर्मावस्था, 3. ཕག་གི་གནས་སྐབས वराहावस्था, 4. མིའི་སེང་གེའི་གནས་སྐབས नरसिंहावस्था, 5. མིའུ་ཐུང་གི་གནས་སྐབས वामनावस्था, 6. དགྲ་སྟ་རཱ་མའི་གནས་སྐབས परशुरामावस्था, 7. རཱ་མའི་གནས་སྐབས रामावस्था, 8. ནག་པོའི་གནས་སྐབས कृष्णावस्था, 9. སངས་རྒྱས་ཀྱི་གནས་སྐབས बुद्धावस्था, 10. རིགས་ལྡན་གྱི་གནས་སྐབས कल्क्यवस्था वि.प्र.224क/2.6.

གནས་སྐབས་འདི་ལྟ་བུ एवंरूपा समवस्था – ངས་ཁྱོད་ཀྱི་ཇོ་བོ་གང་ཡིན་དེ་གནས་སྐབས་འདི་ལྟ་བུར་བྱས་ཀྱིས यस्ते स्वामी तस्येयमेवंरूपा समवस्था कृता वि.व. 6ख/2.78.

གནས་སྐབས་ཀྱི་ཁྱད་པར अवस्थाभेदः – གནས་སྐབས་ཀྱི་ཁྱད་པར་དང་འབྲེལ་པའི་དངོས་པོ अवस्थाभेदसम्बद्धं वस्तु त.प.4ख/453; अवस्थातिशयः – གནས་སྐབས་ཁྱད་པར་ལྡན་པ་ཡི། །ས་བོན་འདམ་དང་ཆུ་སོགས་ཅན།། अवस्थातिशयाक्रान्तं बीजपङ्कजलादिकम् ॥ त.स.6क/80.

གནས་སྐབས་ཀྱི་ཁྱད་པར་དང་འབྲེལ་པ *वि.* अवस्थाभेदसम्बद्धम् – ཡོངས་སུ་འགྱུར་བའི་ལྟ་བ་ལ་ཡང་གང་ཞིག་གནས་སྐབས་ཀྱི་ཁྱད་པར་དང་འབྲེལ་པའི་དངོས་པོ་དེ་ནི་སྒྲའི་བརྗོད་བྱ་ཉིད་དུ་དམ་བཅའ་སྟེ परिणतिदर्शनेऽपि यदवस्थाभेदसम्बद्धं वस्तु तच्छब्दवाच्यतया प्रतिज्ञातम् त.प.4ख/453.

གནས་སྐབས་ཀྱི་ཁྱད་པར་ཡོངས་སུ་བཅད་པའི་དངོས་པོའི་ཆའི་ཡུལ་ཅན་ཉིད अवस्थाभेदपरिच्छिन्नवस्तुभागविषयता – གཞན་དུ་ན་བྱིས་པ་ལ་སོགས་པའི་གནས་སྐབས་ཀྱི་ཁྱད་པར་ཡོངས་སུ་བཅད་པའི་དངོས་པོའི་ཆའི་ཡུལ་ཅན་ཉིད་ཀྱིས་ཡོད་པ་ཇི་ལྟར་རྒན་པོ་ལ་སོགས་པའི་གནས་སྐབས་ཀྱི་ཁྱད་པར་སྟོན་པར་འགྱུར अन्यथा हि बालाद्यवस्थाभेदपरिच्छिन्नवस्तुभागविषयतया निरूढाः कथं वृद्धाद्यवस्थोपहितभेदमपि वस्तु प्रतिपादयेयुः त.प.4ख/453.

གནས་སྐབས་ཁྱད་པར = གནས་སྐབས་ཀྱི་ཁྱད་པར།

གནས་སྐབས་ཁྱད་པར་ལྡན་པ *वि.* अवस्थातिशयाक्रान्तः – རྗེས་སུ་འགྲོ་ལྡོག་ལྡན་པ་ཡི། །མཚོ་སྐྱེས་གེ་སར་ལ་སོགས་པ། །གནས་སྐབས་ཁྱད་པར་ལྡན་པ་ཡི། །ས་བོན་འདམ་དང་ཆུ་སོགས་ཅན།། सरोजकेसरादीनामन्वयव्यतिरेकवत् । अवस्थातिशयाक्रान्तं बीजपङ्कजलादिकम् ॥ त.स.6क/80.

གནས་སྐབས་གྱུར་པ = གནས་སྐབས་སུ་གྱུར་པ།

གནས་སྐབས་ངན = གནས་སྐབས་ངན་པ།

གནས་སྐབས་ངན་པ कुदशा – ཀྱི་མ་རྒྱལ་སྲིད་ཡང་བཀམ་ཞིང་། །ཆོས་མི་ཤེས་པ་བདག་གིས་ནི། །ཕ་མཚུངས་སྤུན་ཟླ་བུ་པོ་ནི། །གནས་སྐབས་ངན་པ་འདི་ལ་བཀོད།། अहो नु राज्यलोभेन मया धर्ममजानता। ज्येष्ठो भ्राता पितृसमः प्रापितः कुदशामिमाम्॥ अ.क.207क/85.35; दुर्दशा – དེ་རྣམས་རིམ་གྱིས་ལམ་བརྒྱུགས་ཟིན། །བཟོད་དཀའ་གནས་སྐབས་ངན་པ་བཞིན། །ནགས་ཚལ་སྡུག་པོར

ཕྱིན་གྱུར་ནས། །བཀྲེས་པས་ཉེན་པས་ཡང་དག་བསམས་སོ།། ते शनैः क्षीणपाथेया दुर्दशामिव दुःसहाम्। विकटामटवीं प्राप्य क्षुत्क्षामाः समचिन्तयन्॥ अ.क.265ख/32.6.

གནས་སྐབས་ཅན *वि.* अवस्थाता – གལ་ཏེ་དེ་ཡི་གནས་སྐབས་ནི། །ཞིག་འདོད་གནས་སྐབས་ཅན་མིན་ན། །དེ་ཡི་ངོ་བོ་ལས་གཞན་པ། །གནས་སྐབས་ཅན་ནི་དམིགས་པ་མེད།། अवस्थास्तस्य नाशिन्यो नावस्थातेति चेन्मतम्। तद्रूपव्यतिरेकेण नावस्थातोपलभ्यते॥ प्र.अ. 141क/151; གནས་སྐབས་གཟུང་བ་མ་ཡིན་ན། །ཇི་ལྟར་གནས་སྐབས་ཅན་རྟོགས་འགྱུར།། अवस्थाऽग्रहणेऽवस्थातृप्रतीतिः कथं भवेत्। प्र.अ.53क/60.

གནས་སྐབས་ཉིད *उ.प.* अवस्थ्यम् – དེ་ཡི་གནས་སྐབས་རྟག་པ་ཉིད། །དེ་ལས་གཞན་པ་མི་རྟག་ཡིན། །དེ་ཡི་གནས་སྐབས་ཉིད་ལོག་ན། །ཅི་ཞིག་གནས་པར་འདོད་པ་ཡིན།། तादवस्थ्यं च नित्यत्वं तदन्यत्वमनित्यता। तादवस्थ्यनिवृत्तौ हि किमवस्थितमिष्यते त.स. 100क/884.

གནས་སྐབས་ཉེ་བར་མཁོ་མིན अप्रस्तुतोपयोगः – དེས་ན་དེ་ཉིད་རབ་སྤོང་ལ། །ཁོ་བོ་ལ་ནི་ཆེར་མོས་མེད། །གནས་སྐབས་ཉེ་བར་མཁོ་མིན་ལ། །སུ་ཞིག་གེགས་ནི་བྱེད་པ་ཡིན།། तेनैवैतत्प्रतिक्षेपे नास्माकं गुरुरादरः। अप्रस्तुतोपयोगस्य को हि कुर्यान्निषेधनम्॥ त.स.87ख /801.

གནས་སྐབས་ཐ་དད = གནས་སྐབས་ཐ་དད་པ།

གནས་སྐབས་ཐ་དད་ལྡན *वि.* अवस्थाभेदवान् – གནས་སྐབས་ཐ་དད་ལྡན་དངོས་པོ། །འགའ་ཞིག་སངས་རྒྱས་པ་ཡང་འདོད།། अवस्थाभेदवान् भावः कैश्चिद् बौद्धैरपीष्यते॥ त.स.65क/613.

གནས་སྐབས་ཐ་དད་པ अवस्थाभेदः – གནས་སྐབས་ཐ་དད་ཡོད་ན་ཡང་། །ཇི་ལྟར་ཁ་དོག་མ་སྤངས་གསེར། །དུས་གསུམ་དུ་ནི་དེ་བཞིན་དངོས། །འདི་ནི་རྫས་མ་སྤངས་པ་མིན[ཡིན]།། अवस्थाभेदभावेऽपि यथा वर्ण्यं जहाति न। हेमाध्वसु तथा भावो द्रव्यत्वं न त्यजत्ययम्॥ त.स.65क/614.

གནས་སྐབས་དེ་ཉིད तादवस्थ्यम् – གནས་སྐབས་དེ་ཉིད་ཀྱི་གཟུགས་ལ།། तादवस्थ्ये तु रूपस्य त.स.22क /238; द्र. དེའི་གནས་སྐབས།

གནས་སྐབས་པ *वि.* आवस्थिकः – འདི་ནི་གནས་སྐབས་པར་འདོད་དོ།། आवस्थिकः किलेष्टोऽयम् अभि.को. 7ख/440; अवस्थाता – བདེ་བ་ལ་སོགས་པའི་གནས་སྐབས་ཐ་དད་ཀྱང་གནས་སྐབས་པའི་བདག་ཉིད་གང་ཡིན་པའི་སེམས་པ་ཅན་གནས་སྐབས་ཐམས་ཅད་ལ་དམིགས་པ་དེ་ནི་རྫས་ཡིན་ནོ།། सुखाद्यवस्थाभेदेऽपि यदवस्थातृ[तुः] सर्वावस्थासु चैतन्यमुपलभ्यते तद् द्रव्यम् त.प.216ख/150.

གནས་སྐབས་མ་ཡིན་པ = གནས་སྐབས་མིན།

གནས་སྐབས་མིན अप्रस्तुतम् – གང་གིས་འཕངས་པར་གནས་གྱུར་པ། །དེས་ན་གནས་སྐབས་མིན་བརྗོད་མིན།། आक्षिप्य वर्त्तते येन तेन नाप्रस्तुताभिधा॥ त.स.45क /452; द्र. རྟག་པ་ཞེས་བྱ་བ་ནི་དེའི་གནས་སྐབས་ལ་བརྗོད་ལ། དེའི་གནས་སྐབས་མ་ཡིན་པ་ནི་མི་རྟག་པ་ཉིད་དོ།། नित्यता हि नाम तादवस्थ्यमुच्यते, अतादवस्थ्यं त्वनित्यता त.प.220क/157.

གནས་སྐབས་གཞན अवस्थान्तरम् – ཡོངས་སུ་འགྱུར་བའི་ལྟ་བ་ལ་ཡང་གང་ཞིག་གནས་སྐབས་ཀྱི་ཁྱད་པར་དང་འབྲེལ་པའི་དངོས་པོ་དེ་ནི་སྔའི་བརྗོད་བྱ་ཉིད་དུ་དམ་བཅའ་སྟེ། དེ་ལྟ་ཡིན་དང་གནས་སྐབས་གཞན་ལ་བརྟེན་པ

ན་དངོས་པོ་དེ་ཉིད་སྒྲ་དེས་བརྗོད་པར་མི་འགྱུར་རོ།། परि-णतिदर्शनेऽपि यदवस्थाभेदसम्बद्धं वस्तु तच्छब्द-वाच्यतया प्रतिज्ञातम्, ततश्चावस्थान्तरं समाश्र-येत, तदेव वस्तु तेन शब्देन नाभिधीयेत त.प.4[ख]/453; གནས་སྐབས་གཞན་བླངས་པ अवस्थान्तरोपा-दानम् अभि.भा. 88[क]/1208; दशान्तरम् – བར་ཆད་མེད་པ་སོགས་ཡོད་ཀྱང་། །གནས་སྐབས་གཞན་ལ་ལྟོས་བཅས་ཡིན།། सत्त्वेऽप्यव्यवधानादि तेऽपेक्षन्ते दशा-न्तरम्॥ त.स.25[ख]/273.

གནས་སྐབས་གཞན་དུ་གྱུར་བ་པ अवस्थाऽन्यथिकः, सर्वास्तिवादविशेषस्यानुयायी – གནས་སྐབས་གཞན་དུ་གྱུར་བ་པ་ནི་བཙུན་པ་དབྱིག་བཤེས་ཡིན་ཏེ अवस्था-न्यथिको भदन्तवसुमित्रः अभि.भा.240[क]/806; द्र. གནས་སྐབས་གཞན་དུ་འགྱུར་བར་སྨྲ་བ།

གནས་སྐབས་གཞན་དུ་འགྱུར་བར་སྨྲ་བ अवस्थान्य-थावादी, सर्वास्तिवादविशेषस्यानुयायी – གནས་སྐབས་གཞན་དུ་འགྱུར་བར་སྨྲ་བ་ནི་བཙུན་པ་དབྱིག་བཤེས་ཡིན་ཏེ अवस्थान्यथावादी भदन्तवसुमित्रः त.प.81[क]/614; द्र. གནས་སྐབས་གཞན་དུ་གྱུར་བ་པ།

གནས་སྐབས་གཞན་ལས་སྐྱེས་པ *वि.* अवस्थान्तर-जम् – ཁུར་སྤྲེད་པ་ལ་ཡང...གནས་སྐབས་གཞན་ལས་སྐྱེས་པའི་བདེ་བ་ཁོ་ན་སྐྱེ་བར་འགྱུར་རོ།། भाव[भार]सञ्-चारेऽपि चावस्थान्तरजं सुखमेवोत्पद्यते अभि.भा. 6[ख]/886.

གནས་སྐབས་ལ་ལྟོས *वि.* प्रकृतापेक्षः – ཐམས་ཅད་ཀྱི་སྒྲ་ཐམས་ཅད་དུ། །གནས་སྐབས་ལ་ལྟོས་འདོད་པ་ཡིན།། सर्वशब्दश्च सर्वत्र प्रकृतापेक्ष इष्यते। त.स.114[क]/989.

གནས་སྐབས་ལ་ལྟོས = གནས་སྐབས་ལ་ལྟོས་པ།

གནས་སྐབས་ལས་གྱུར་པ *वि.* आवस्थिकः – གནས་སྐབས་ལས་གྱུར་པའི་ལྡན་པ आवस्थिको योगः अभि. स.भा.104[ख]/141; द्र. གནས་སྐབས་སུ་གྱུར་པ།

གནས་སྐབས་ལས་གྱུར་པའི་ལྡན་པ *पा.* आवस्थिको योगः, योगभेदः – ལྡན་པའི་དོན་ནི་རྣམ་པ་ལྔ་སྟེ། མང་པོ་ལས་གྱུར་པའི་ལྡན་པ་ནི... གནས་སྐབས་ལས་གྱུར་པའི་ལྡན་པ་ནི योगार्थः पञ्च योगाः। सामूहिको योगः... आवस्थिको योगः अभि.स.भा.104[ख]/141.

གནས་སྐབས་སུ་གྱུར་པ *उ.प.* अवस्थः – དེ་དེ་ལྟ་བུའི་གནས་སྐབས་སུ་གྱུར་ཀྱང...ཁྲོ་བ་རྣམས་ཉེ་བར་འོང་བར་མ་གྱུར་ཏོ།། तदवस्थमपि चैनं ...क्रौर्याणि नोपजग्मुः जा.मा.157[ख]/182; द्र. གནས་སྐབས་ལས་གྱུར་པ།

གནས་སྐབས་གསུམ་པ = ལྷ त्रिदशः, देवः – གནས་སྐབས་གསུམ་པའི་ཚོགས་ཀྱིས་སྤྱོད་ཚུལ་ཡང་དག་མཆོད་གྱུར་པའི། །རྒྱལ་པོ་དལ་གྱིས་རང་གི་རྒྱལ་པོའི་ཕོ་བྲང་དག་ཏུ་སོང་།། सम्पूज्यमानचरितस्त्रिदशव्रजेन राजा ज-गाम शनकैर्निजराजधानीम्॥ अ.क.33[क]/53.53.

གནས་ཁང = གནས་པའི་ཁང་པ वासगृहम्–གནས་པའི་ཁང་པ་རྣམ་པ་གསུམ་པོ་དགུན་གྱི་དང་དབྱིད་ཀྱི་དང་དབྱར་གྱི་རྣམས་བརྩིགས་ནས त्रीणि वासगृहाणि मापितानि है-मन्तिकं ग्रैष्मिकं वार्षिकम् वि.व.207[ख]/1.82; वास-भवनम्–གནས་ཁང་པ་ལས་འཐོན་པ་ཉིད་དུ་འདོད वा-सभवनान्निर्गन्तुमेवेहते ना.ना.278[क]/112; अगारम् – དགེ་སློང་མས་གནས་ཁང་སྒོ་མ་བཅད་པར་སྙོམས་པར་འཇུག་པར་ཡང་མི་བྱའོ།། नापावृतद्वारेऽगारे भिक्षुणी समापद्येत च वि.सू.14[क]/15; लयनम् – ནད་པ་འདུག་པའི་གནས་ཁང་གཞན་ལ་མི་སྦྱིན་ནོ།། नाध्युषितं ग्ला-

नेनान्यस्मै लयनं... ददीरन् वि.सू.61ख/78; དེ་དག་གནས་ཁང་དུ་སྒོམ་པར་བྱེད་པ་ན།...གནས་ཁང་དུ་རྣལ་འབྱོར་བསྒོམ་པར་མི་བྱའོ།། ते लयने भावयन्ति।...न लयने योगो भावयितव्यः वि.व.132ख/2.109; आश्रमः – དེ་ནས་ནམ་ཞིག་དགའ་བོ་ལ། །གནས་ཁང་ཕྱག་དར་བསྒོས་ནས་ནི།། ततः कदाचिदादिश्य नन्दमाश्रममार्जने। अ.क.107ख/10.84; कुटिका – འདི་གུས་གསོས་ཀྱི་གནས་ཁང་གི་སྒོར་འོངས་སོ།། लेकुञ्चिकस्य कुटिकाद्वारेऽवस्थितः अ.श.265क/243; विहारः – གནས་ཁང་དང་ཟས་ལ་བསྐོ་བ་དང་ཕྲུག་པ་དང་བག་ཆོས་དང་ཤིང་ཏོག་འབྲིམ་པ་བསྐོ་བར་བྱའོ།། संमन्येरन् विहारभक्तोद्देशकयवागूखाद्यकफलभाजकम् वि.सू.93क/111; शाला – མགོན་མེད་པའི་གནས་ཁང་ལྟར་ཡོངས་སུ་གཟུང་བ་མེད་པ अनाथशालावदपरिगृहीतः शि.स.129ख/125; सद्मः मि.को.139ख; अववरकः – གྲོང་ངམ...ཁང་ཁྱིམ་ཆུ་ཞེང་གབ་པའམ་གནས་ཁང་གང་དུ यस्मिन् ग्रामे वा...आयतविशाले वा गृहे, अववरके वा श्रा.भू.175ख/465.

གནས་ཁང་བསྐོ་བ विहारोद्देशकः म.व्यु.9056(125क); द्र.– གནས་ཁང་དང་ཟས་ལ་བསྐོ་བ་དང་ཕྲུག་པ་དང་བག་ཆོས་དང་ཤིང་ཏོག་འབྲིམ་པ་བསྐོ་བར་བྱའོ།། संमन्येरन् विहारभक्तोद्देशकयवागूखाद्यकफलभाजकम् वि.सू.93क/111.

གནས་ཁང་པ = གནས་ཁང་།

གནས་གང་ན་འདུག་པར་བདེ་བ་སྦྱིན་པ यथास्थानस्थितसुखप्रदा, औषधिविशेषः – གངས་ཀྱི་རིའི་རྒྱལ་པོ་ལ་སྨན་སྣ་བཞི་ཡོད་དེ།...བཞི་པ་གནས་གང་ན་འདུག་པར་བདེ་བ་སྦྱིན་པ་ཞེས་བྱ་བ सन्ति तु हिमवति पर्वतराजे चतस्र ओषधयः...चतुर्थी यथास्थानस्थितसुखप्रदा नाम स.पु.51ख/91.

གནས་གྱུར = གནས་པར་གྱུར། གནས་གྱུར་ཀྱང अपि स्थित्वा – བདག་ནི་དེང་ཉིད་ཤི་ཡང་བླའི། །ལོག་འཚོས་ཡུན་རིང་གསོན་མི་རུང་། །བདག་ལྟ་ཡུན་རིང་གནས་གྱུར་ཀྱང་། །འཆི་བའི་སྡུག་བསྔལ་དེ་ཉིད་ཡིན།། वरमद्यैव मे मृत्युर्न मिथ्याजीवितं चिरम्। यस्माच्चिरमपि स्थित्वा मृत्युदुःखं तदेव मे॥ बो.अ. 16ख/6.56.

གནས་གྱུར་ནས आस्थाय – རྟགས་ཅན་གཟུགས་ལ་གནས་གྱུར་ནས།། लिङ्गिनं रूपमास्थाय गु.स.22ख/48.

གནས་གྱུར་ཅིག क्रि. तिष्ठतु – བདག་ཉིད་གཅིག་པུ་གདུང་གྱུར་ལ། །ཐམས་ཅད་གདུང་མེད་གནས་གྱུར་ཅིག། एकस्यैव व्यथा मेऽस्तु सर्वे तिष्ठन्तु निर्व्यथाः॥ अ.क.247ख/92.58.

གནས་གྱུར་པ = གནས་གྱུར།

གནས་དགག་པར་བྱ = གནས་དགག་པར་བྱ་བ།

གནས་དགག་པར་བྱ་བ पा. निःश्रयप्रतिप्रश्रम्भणम्, अवसादनाभेदः – ཆད་པ་ནི་ལྔའོ།། གཏམ་འདྲི་བར་མི་བྱ་བ་དང...གནས་དགག་པར་བྱ་བའོ།། पञ्चावसादनाः –अनालापः...निःश्रयप्रतिप्रश्रम्भणञ्च वि.सू.8ख/9.

གནས་འགྱུར = གནས་པར་འགྱུར།

གནས་རྒྱུ = གནས་པའི་རྒྱུ།

གནས་བརྒྱད अष्टापदम्, शारीणां फलकः (མིག་མངས་རྩེད་པའི་གདན) मि. को.42ख।

གནས་བརྒྱད་ཆེན་པོའི་རྩ་བ ना. [अष्टमहास्थानमूलम्], ग्रन्थः क.त.4350; द्र.– གནས་ཆེན་པོ་བརྒྱད་ཀྱི་མཆོད་རྟེན་ལ་བསྟོད་པ अष्टमहास्थानचैत्यस्तोत्रम् क.त.1133.

གནས་ངན་ལེན •*वि.* दुष्ठुलः – བྱང་ཕྱོགས་ན་ནི་ཉེས་དམིགས་ལྔ་ཡོད་དེ... བུད་མེད་གནས་ངན་ལེན་ཀུན་ཏུ་སྤྱོད་པའོ། पञ्चादीनवा उत्तरापथे...दुष्ठुलसमुदाचारो मातृग्रामः वि.व.122ख/1.10; གནས་ངན་ལེན་ཀུན་ཏུ་སྤྱོད་པ་དེ་མ་གཏོགས་པས་གཞན་སུ་ཞིག་འདི་ལྟ་བུ་རབ་ཏུ་འབྱིན་པར་བྱེད तं दुष्ठुलसमुदाचारं मुक्त्वा कोऽन्यः एवंविधं प्रव्राजयिष्यति वि.व.130ख/2.107; • *पा.* दौष्ठुल्यम् – དེ་ཡང་ཉེ་བར་ལེན་པའི་ཕུང་པོ་ལྔ་སྟེ། ཉོན་མོངས་པའི་གནས་ངན་ལེན་གྱིས་རབ་ཏུ་བསྐྱེད་པའི་ཕྱིར་རོ། सा पुनः पञ्चोपादानस्कन्धाः क्लेशदौष्ठुल्यप्रभावितत्वात् सू.व्या.145ख/24; ངག་ལུས་སེམས་ཀྱི་གནས་ངན་ལེན वाक्कायचित्तदौष्ठुल्यम् ल.अ.174ख/135; གནས་ངན་ལེན་ཐམས་ཅད་ནི་ཉི་ཤུ་རྩ་བཞི་ཡིན་ཏེ सर्वदौष्ठुल्यानि चतुर्विंशतिर्भवन्ति अभि.स.भा.67क/92; वैगुण्यम् – ལུས་ངག་སེམས་ཀྱི་གནས་ངན་ལེན། कायवाग्बुद्धिवैगुण्यम् प्र.वा.113क/1.144.

གནས་ངན་ལེན་ཉི་ཤུ་རྩ་བཞི चतुर्विंशतिः दौष्ठुल्यानि – 1. མངོན་པར་བརྗོད་པའི་གནས་ངན་ལེན་ནི་ཀུན་ཏུ་འགྲོ་བ सर्वत्रगमभिलापदौष्ठुल्यम्, 2. ཚོར་བའི་གནས་ངན་ལེན वेदितदौष्ठुल्यम्, 3. ཉོན་མོངས་པའི་གནས་ངན་ལེན क्लेशदौष्ठुल्यम्, 4. ལས་ཀྱི་གནས་ངན་ལེན कर्मदौष्ठुल्यम्, 5. རྣམ་པར་སྨིན་པའི་གནས་ངན་ལེན विपाकदौष्ठुल्यम्, 6. ཉོན་མོངས་པའི་སྒྲིབ་པའི་གནས་ངན་ལེན क्लेशावरणदौष्ठुल्यम्, 7. ལས་ཀྱི་སྒྲིབ་པའི་གནས་ངན་ལེན कर्मावरणदौष्ठुल्यम्, 8. རྣམ་པར་སྨིན་པའི་སྒྲིབ་པའི་གནས་ངན་ལེན विपाकावरणदौष्ठुल्यम्, 9. སྒྲིབ་པའི་གནས་ངན་ལེན निवरणदौष्ठुल्यम्, 10. རྟོག་པའི་གནས་ངན་ལེན वितर्कदौष्ठुल्यम्, 11. ཟས་ཀྱི་གནས་ངན་ལེན आहारदौष्ठुल्यम्, 12. འཁྲིག་པའི་གནས་ངན་ལེན मैथुनदौष्ठुलयम्, 13. རྨི་ལམ་གྱི་གནས་ངན་ལེན स्वप्नदौष्ठुल्यम्, 14. ནད་ཀྱི་གནས་ངན་ལེན व्याधिदौष्ठुल्यम्, 15. རྒ་བའི་གནས་ངན་ལེན जरादौष्ठुल्यम्, 16. འཆི་བའི་གནས་ངན་ལེན मरणदौष्ठुल्यम्, 17. ཡོངས་སུ་ངལ་བའི་གནས་ངན་ལེན परिश्रमदौष्ठुल्यम्, 18. གནས་ངན་ལེན་བརྟན་པ दृढदौष्ठुल्यम्, 19. གནས་ངན་ལེན་ཆེན་པོ औदारिकदौष्ठुल्यम्, 20. གནས་ངན་ལེན་འབྲིང मध्यदौष्ठुल्यम्, 21. གནས་ངན་ལེན་ཆུང་ངུ सूक्ष्मदौष्ठुल्यम्, 22. ཉོན་མོངས་པའི་སྒྲིབ་པའི་གནས་ངན་ལེན क्लेशावरणदौष्ठुल्यम्, 23. སྙོམས་པར་འཇུག་པའི་སྒྲིབ་པའི་གནས་ངན་ལེན समापत्त्यावरणदौष्ठुल्यम्, 24. ཤེས་བྱའི་སྒྲིབ་པའི་གནས་ངན་ལེན ज्ञेयावरणदौष्ठुल्यम् अभि.स.भा.66ख/92.

གནས་ངན་ལེན་གྱི་འཆིང་བ दौष्ठुल्यबन्धनम् लो.को.1367.

གནས་ངན་ལེན་གྱི་རྟེན *पा.* दौष्ठुल्याश्रयः – དེ་ནི་སངས་རྒྱས་རྣམས་ཀྱི་གནས་ངན་ལེན་གྱི་རྟེན་ཡོངས་སུ་གྱུར་པའོ། सा बुद्धानां दौष्ठुल्याश्रयपरावृत्तिः ख.टी.153ख/231.

གནས་ངན་ལེན་གྱི་གནས་གྱུར་པ *पा.* दौष्ठुल्याश्रयपरिवृत्तिः – གནས་ངན་ལེན་གྱི་གནས་གྱུར་པ་ནི་ཀུན་གཞི་རྣམ་པར་ཤེས་པ་ཉོན་མོངས་པ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་བག་ལ་ཉལ་གྱི་བག་ཆགས་དང་བྲལ་བར་གྱུར་པར་རིག་པར་བྱའོ། दौष्ठुल्याश्रयपरिवृत्तिरालयविज्ञानस्य सर्वक्लेशानुशयापगमेन परिवृत्तिर्वेदितव्या अभि.स.भा.67ख/93.

གནས་ངན་ལེན་གྱི་རྣམ་པར་གཡེང་བ *पा.* दौष्ठुल्यविक्षेपः, विक्षेपभेदः – གཡེང་བ་རྣམ་པ་དྲུག་ནི། རང

བཞིན་གྱིས་རྣམ་པར་གཡེང་བ་དང... གནས་ངན་ལེན་གྱི་རྣམ་པར་གཡེང་བ་དང་ཡིད་ལ་བྱེད་པའི་རྣམ་པར་གཡེང་བའོ༎ षड्विधो विक्षेपः–प्रकृतिविक्षेपः...दौष्ठुल्यविक्षेपः, मनसिकारविक्षेपश्च म.भा.21[ख]/5.11.

གནས་ངན་ལེན་འཆབ་པ दुष्ठुलप्रतिच्छादनम् म.व्यु. 8473(117[ख]).

གནས་ངན་ལེན་འཆབ་པའི་ལྟུང་བྱེད *पा.* दुष्ठुलप्रतिच्छादने प्रायश्चित्तिकम् – གནས་ངན་ལེན་འཆབ་པའི་ལྟུང་བྱེད་དོ༎ [इति] अवद्य[? दुष्ठुल]प्रतिच्छादन[ने प्रायश्चित्तिक]म् वि.सू.40[ख]/51.

གནས་ངན་ལེན་བརྗོད་པ *पा.* दुष्ठुलारोचनम्, प्रायश्चित्तिकभेदः म.व्यु.8424(116[ख]).

གནས་ངན་ལེན་བརྗོད་པའི་ལྟུང་བྱེད *पा.* दुष्ठुलारोचने प्रायश्चित्तिकम्, प्रायश्चित्तिकभेदः – གནས་ངན་ལེན་བརྗོད་པའི་ལྟུང་བྱེད་དོ༎ [इति] दुष्ठुलारोचन[ने प्रायश्चित्तिक]म् वि.सू.30[क]/37.

གནས་ངན་ལེན་སྙིང་པོ་ལ་ཡོད་པ་ལྟ་བུ *पा.* सारगतदौष्ठुल्यम् लो.को.1367.

གནས་ངན་ལེན་པ *वि.* दौष्ठुल्यमयः, °मयी – ནོར་བ་གནས་ངན་ལེན་པ་སྟེ། །དེ་ཡི་ཕྱིར་ན་སེམས་མི་མཐོང་༎ भ्रान्तिश्च दौष्ठुल्यमयी तेन चित्तं न दृश्यते ॥ ल.अ. 168[ख]/124.

གནས་ངན་ལེན་ལྤགས་ཤུན་ལ་ཡོད་པ་ལྟ་བུ *पा.* त्वग्गतदौष्ठुल्यम् लो.को.1367.

གནས་ངན་ལེན་རབ་ཏུ་མང་བ་ཉིད बहुदौष्ठुल्यतरत्वम्–གནས་ངན་ལེན་རབ་ཏུ་མང་བ་ཉིད་ཀྱིས་མི་མཐུན་པར་གྱུར་པའི་ཕྱིར་རོ༎ बहुदौष्ठुल्यतरत्वेन प्रतिकूलभावात् अभि.भा.29[क]/978.

གནས་ངན་ལེན་ལ་མངོན་པར་ཞེན་པའི་ཚིག *पा.* दौष्ठुल्यविकल्पाभिनिवेशवाक्, वाग्विकल्पलक्षणभेदः – བློ་གྲོས་ཆེན་པོ་ཚིག་གི་རྣམ་པར་རྟོག་པའི་མཚན་ཉིད་རྣམ་བཞི་ཡོད་དེ། འདི་ལྟར་མཚན་ཉིད་ཀྱི་ཚིག་དང་། རྨི་ལམ་གྱི་ཚིག་དང་། གནས་ངན་ལེན་[གྱི་རྣམ་པར་རྟོག་པ་]ལ་མངོན་པར་ཞེན་པའི་ཚིག་དང་། ཐོག་མ་མེད་པའི་དུས་ཀྱི་རྣམ་པར་རྟོག་པའི་ཚིག་གོ༎ चतुर्विधं महामते वाग्विकल्पलक्षणं भवति। यदुत लक्षणवाक्, स्वप्नवाक्, दौष्ठुल्यविकल्पाभिनिवेशवाक्, अनादिविकल्पवाक् ल.अ.89[क]/36.

གནས་ངན་ལེན་སེལ་བ *पा.* दौष्ठुल्यापकर्षणः, अनुशंसमनस्कारभेदः – ཕན་ཡོན་ཡིད་ལ་བྱེད་པ་ནི་རྣམ་པ་གཉིས་ཏེ། གནས་ངན་ལེན་སེལ་བ་དང་ལྟ་བའི་མཚན་མ་སེལ་བའོ༎ अनुशंसमनस्कारो द्विविधो दौष्ठुल्यापकर्षणो दृष्टिनिमित्तापकर्षणश्च सू.व्या.167[ख]/58.

གནས་ངེས་པ स्थाननियमः मि.को.93[क]।

གནས་ཅན •*वि.* आवासकः – སོ་སོར་ངེས་པའི་ཟས་ཀྱི་གནས་ཅན་དག་ལས་གཞན་པའི་དགེ་སློང प्रतिनियतभक्तावासकेभ्योरन्यैः ... भिक्षुभिः वि.सू.35[ख]/45; •*सं.* 1. = བ་སུ་ཀ། वाशिका, वासकः मि.को.57[ख] 2. = མཁས་པ सन्, विद्वान् मि.को.119[ख]; •*पा.* = བརྟན་པ स्थायी, भावभेदः – དཔའ་བ་སྒེག་པ་དག་གི་དངོས། །བརྟན་པ་[‘གནས་ཅན’ इत्यपि पाठः]ཁྲོ་དང་ཡ་མཚན་ནོ༎ वीरशृङ्गारयोर्भावौ स्थायिनौ क्रोधविस्मयौ। का.आ.340[ख]/3.170; •*ना.* = ལྷ་ཆེན स्थाणुः, महादेवः– शंभुरीशः पशुपतिः शिवः शूली महेश्वरः।...स्थाणुः अ.को.1.1.35; प्रलये तिष्ठतीति स्थाणुः। ष्ठा गतिनिवृत्तौ अ.वि.1.1.35.

གནས་གཅིག་ན་གནས་པ एकावसथावासः म.व्यु.

8454 (117क).

གནས་གཅིག་གནས = གནས་གཅིག་ན་གནས་པ།

གནས་གཅིག་གནས་པ = གནས་གཅིག་ན་གནས་པ།

གནས་བཅའ = གནས་བཅའ་བ།

གནས་བཅའ་བ • *क्रि.* वासं प्रकल्पयेत् – བླ་གབ་མེད་པའམ་སོག་ཁྲོད་དུ། །རྣལ་འབྱོར་ཅན་གྱིས་གནས་བཅའ་འོ།། पलालेऽभ्यवकाशे च योगी वासं प्रकल्पयेत् ॥ ल.अ.171क/129; • *कृ.* आश्रयणीयम् म.व्यु.9195 (126ख); द्र. གནས་བཅས་པ།

གནས་བཅའ་བར་བྱ *क्रि.* निःश्रयेत – རྒན་པ་མེད་ན་གཞོན་པ་ལ་གནས་བཅའ་བར་བྱའོ།། वृद्धाभावे नवकं निःश्रयेत वि.सू.3ख/3.

གནས་བཅས • *ना.* **1.** साकेतम्, नगरम् – སྡོམ་བརྩོན་ཡི་གེ་ཨ་ཞེས་བསྒྲགས། །བྲམ་ཟེ་ལས་ནི་རབ་ཏུ་བྱུང་། །གྲོང་ཁྱེར་གནས་བཅས་གནས་པ་སྟེ། །དེ་བཞིན་ཚེ་ནི་བརྒྱད་ཅུར་འཚོ།། अकाराख्यो यतिः ख्यातो द्विजः प्रव्रजितस्तथा। साकेतपुरवास्तव्यः आयुषाशीतिकस्तथा ॥ म.मू.325ख/510 **2.** साकेता, देशः – ཀུན་དགའ་བོ་གནས་བཅས་འདིར་རྒྱལ་པོ་གསོ་སྦྱོང་འཕགས་ཞེས་བྱ་བ་འབྱོར་པ་དང་རྒྱས་པ་དང... རྒྱལ་སྲིད་བྱེད་དུ་འཇུག་གོ།། अस्यामानन्द साकेतायामुपोषधो नाम राजा राज्यं कारयति ऋद्धं च स्फीतं च वि.व.156क/1.44; •*कृ.* आश्रयणीयम्–उपनिश्रयः ཉེ་ཞིག་གནས་བཅའ་བ། आश्रयणीयम् གནས་བཅས། གནས་བཅའ་བ म.व्यु.9195; द्र. གནས་བཅའ་བ། གནས་བཅས་པ།

གནས་བཅས་ཏེ स्थित्वा – ཕུག་གམ་ལྷ་ཁང་སྟོང་པའམ། །ལྗོན་ཤིང་དྲུང་དུ་གནས་བཅས་ཏེ།། शून्यदेवकुले स्थित्वा वृक्षमूले गुहासु वा। बो.अ.24ख/8.27.

གནས་བཅས་པ निश्रयः – གཉིས་ཀ་ལ་མི་ལྟོས་པ་ཉིད་བྱུང་ན་ནི་གནས་བཅས་པ་འཇིག་པའི་རྒྱུ་ཡིན་ནོ།། *> निरपेक्षतासम्पत्तिरुभयोरान्तनिःश्रेयध्वंसे कारणम् वि.सू.8ख/9; द्र. གནས་བཅས། གནས་བཅའ་བ།

གནས་ཆེན = གནས་ཆེན་པོ།

གནས་ཆེན་གྱི་རིམ་པའི་ལྷ་མོ་སྒྲོལ་མའི་བསྟོད་པ *ना.* पीठक्रमतारादेवीस्तोत्रम्, ग्रन्थः क.त.1716.

གནས་ཆེན་པོ = གནས་ཆེན • *सं.* **1.** महास्थानम् – གནས་ཆེན་པོ་བརྒྱད་ཀྱི་མཆོད་རྟེན་ལ་ཕྱག་འཚལ་བའི་བསྟོད་པ अष्टमहास्थानचैत्यवन्दनास्तवः क.त.1168; གནས་ཆེན་པོ་བརྒྱད་ཀྱི་མཆོད་རྟེན་ལ་བསྟོད་པ अष्टमहास्थानचैत्यस्तोत्रम् क.त.1133 **2.** पीठम्–གནས་ཆེན་གྱི་རིམ་པའི་ལྷ་མོ་སྒྲོལ་མའི་བསྟོད་པ पीठक्रमतारादेवीस्तोत्रम् क.त.1716; •*पा.* महाश्रया, बोधिसत्त्वानां प्रतिपत्तिभेदः–གནས་རྩོམ་འབྲས་བུ་འབྱུང་བ་ཆེ་བདག་ཉིད། །རྒྱལ་སྲས་རྣམས་ཀྱི་སྒྲུབ་པ་ཡིན་པར་འདོད།། महाश्रयारम्भफलोदयात्मिका जिनात्मजानां प्रतिपत्तिरिष्यते। सू.अ.143क/21; དེ་ལ་གནས་ཆེན་པོ་ནི་སེམས་བསྐྱེད་པ་ལ་གནས་པའི་ཕྱིར་རོ།། तत्र महाश्रया चित्तोत्पादाश्रयत्वात् सू.व्या.143क/21.

གནས་མཆོག = མྱང་འདས पदवरम्, निर्वाणम् – ཁྱེད་ཀྱིས་གནས་མཆོག་འཆི་མེད་མྱ་ངན་མེད་པ་བརྙེས།། प्राप्तं त्वया पदवरममृतं विशोकम् ल.वि.170क/255.

གནས་འཆའ = གནས་འཆའ་བ།

གནས་འཆའ་བ • *क्रि.* वासं कल्पयति म.व्यु.6873 (98क); •*सं.* निःश्रयग्रहणम् – དེས་དེ་གནས་འཆའ་བ་ལ་སྦྱར་བར་བྱའོ།། निःश्रयग्रहणे स चे[चै]नन्नियुञ्जीत वि.सू.71ख/88; • *वि.* कृताधिवासः – སྒྲུབ་མའི

སྦུབས་དང་པད་མ་དག་ལ་གནས་འཆའ་བ།། वंशान्तरम्बुरुहमध्यकृताधिवासः वि.व.215क/1.91; निषेवमाणः – དགོན་པ་སྟོང་པ་རྣམས་སུ་གནས་འཆའ་ཞིང་།། शून्यान्यरण्यानि निषेवमाणान् स.पु.5ख/7.

གནས་འཆའ་བར་བྱེད = གནས་འཆའ་བར་བྱེད་པ།

གནས་འཆའ་བར་བྱེད་པ •क्रि. वासं कल्पयति – ཇི་ལྟར་ན་དུར་ཁྲོད་པ་ཡིན་ཞེ་ན། གང་དུ་སྐྱེ་བོའི་ཚོགས་ཤི་བོ་ཅིག་འདོར་བའི་དུར་ཁྲོད་དུ་གནས་འཆའ་བར་བྱེད་པ་ཡིན་ཏེ कथं श्माशानिको भवति? श्मशाने वासं कल्पयति यत्र मृतमृतो जनकायः श्रा.भू.64ख/160.

གནས་འཇུག • सं. = ཉིན་མོ वासरः, दिनम् मि.को. 132ख; <?> • ना. वसिष्ठः, नृपः ब.अ.13; द्र. གནས་འཇོག།

གནས་འཇོག ना. वसिष्ठः 1. महर्षिः – གང་ཡང་དྲང་སྲོང་དང་དྲང་སྲོང་ཆེན་པོ་དེ་དག་ལ་འདི་ལྟ་སྟེ། རྒྱུན་ཤེས་ཀྱི་བུ་དང་གནས་འཇོག་དང...ཉི་མའི་རིགས་ཏེ येऽपि ते ऋषयो महाऋषयः, तद्यथा–आत्रेय वसिष्ठ...मार्कण्डश्चेति म.मू.103ख/12 2. त्रिपिटकाचार्यभरद्वाजस्य भ्राता – དེ་ནས་དེས་ཕུ་བོ་གནས་འཇོག་ལ་སྤྲིང་བ། ལྷན་ཅིག་འཁོད་ཀྱིས་སོག་ཤིག [ཅིག] ततस्तेन भ्रातुर्वसिष्ठस्य सन्दिष्टम्। आगच्छ एकध्ये प्रतिवसामः वि.व.316क/ 1.129.

གནས་ཉིད 1. निःश्रितत्वम् – མཁན་པོ་དེ་ཉིད་གནས་ཉིད་ཡིན་ནོ།། तत्रैवोपाध्याये निःश्रितत्वम् वि.सू.8ख/9 2. स्थानमेव–གསལ་བྱེད་ཀྱི་ནི་གནས་ཉིད་དུ། །དོན་བསྐོར་དང་ནི་ཚིག་བསྐོར་དང་། །གཉིས་ཀ་བསྐོར་བ་ཞེས་པ་ཡི། །རྒྱན་གསུམ་པོ་དག་འདོད་དེ་དཔེར།། अर्थावृत्तिः पदावृत्तिरुभयावृत्तिरित्यपि। दीपकस्थान एवेष्टमलङ्कारत्रयं यथा॥ का.आ.326क/2.115.

གནས་ཉམ་ང་བ वि. सङ्कटस्थः – འཆི་འཕོ་བ་དང་སྐྱེ་བའི་གནས་ཉམ་ང་བར་སེམས་ཅན་རྣམས་ལ་གཟིགས་ནས सत्त्वान् च्युत्युपपत्तिसङ्कटस्थान् अभिवीक्ष्य अभि.स्फु.304क/1169.

གནས་བཏང་བ स्थानोत्सर्गः – སྤྲངས་པ་ནི་གནས་བཏང་བའོ།། स्थानोत्सर्गः प्रवारणम् वि.सू.35क/44.

གནས་རྟེན = འཇིག་རྟེན विष्टपम्, लोकः – त्रिष्वथो जगती लोको विष्टपं भुवनं जगत्। अ.को.2.1.6; विशन्त्यस्मिन्निति विष्टपम्। विश प्रवेशने अ.वि. 2.1.6.

གནས་ལྟ་བུ वि. स्थानीयम् – མདོའི་གནས་ལྟ་བུའི་ཚིགས་སུ་བཅད་པ་འདིའི་རྣམ་པར་དབྱེ་བ་རྒྱས་པར་བསྟན་པ་ནི། གོ་རིམས་ཇི་ལྟ་བ་བཞིན་དུ་གཞུང་ལྷག་མས་རིག་པར་བྱའོ།། अस्य खलु सूत्रस्थानीयस्य श्लोकस्य यथाक्रमं परिशिष्टेन ग्रन्थेन विस्तरविभागनिर्देशो वेदितव्यः र.व्या.122ख/100.

གནས་བརྟན • सं. 1. स्थविरः, वरिष्ठभिक्षुः – བཅོམ་ལྡན་འདས་བདག་ཅག་རྒས་ཤིང་རྒུད་པ་འཁོགས་ནས། དགེ་སློང་གི་དགེ་འདུན་འདིའི་ནང་ན་ཡང་གནས་བརྟན་དུ་འཛིན་ཏེ वयं हि भगवन् जीर्णा वृद्धा महल्लका अस्मिन् भिक्षुसङ्घे स्थविरसम्मताः स.पु.39क/71; གནས་བརྟན་ཀུན་དགའ་བོ स्थविरानन्दः अ.सा.2ख/2; དེ་ནས་བཅོམ་ལྡན་འདས་ཀྱིས་གནས་བརྟན་ཚེ་དང་ལྡན་པ་རབ་འབྱོར་ལ་བཀའ་སྩལ་པ तत्र खलु भगवानायुष्मन्तं सुभूतिं स्थविरमामन्त्रयते स्म अ.सा.2ख/2 2. स्थावरी, निकायविशेषः – གང་ཕྱིར་སྤྲུལ་པ་གནས་བརྟན་ཕྱིར། །སྤྲུལ་པའི་འཁོར་ལོར་གནས་བརྟན་ཉིད།། स्थावरी निर्माणचक्रे तु निर्माणं स्थावरं यतः। हे.त.21ख/68; གནས་བརྟན་པ་ཉིད་ཀྱི་སྦྱོར་བ་ཡོད་པས

སྤྲུལ་པའི་འཁོར་ལོ་གནས་བརྟན་པའི་སྡེ་པའོ།། स्थावरत्वयोगात् निर्माणचक्रे स्थावरीनिकायः यो.र.51क/149; द्र. གནས་བརྟན་པ། 3. स्थापत्यः – सौविदल्लाः कञ्चुकिनः स्थापत्याः सौविदाश्च ते अ.को.2.8.8; राजस्त्रीणां सतीत्वं स्थापयन्ति स्थापत्याः अ.वि.2.8.8 4. = ग्रོང་དཔོན स्थायुकः – स्थायुकोऽधिकृतो ग्रामे अ.को.2.8.7; ग्रामे स्थातुं शीलमस्येति स्थायुकः। एकग्रामाधिकारिणो नाम अ.वि.2.8.7 5. = ཀན་པོ་ཉིད स्थाविरम्, वृद्धत्वम् – स्यात् स्थाविरं तु वृद्धत्वम् अ.को.2.6.40; स्थविरस्य भावः स्थाविरम्...पञ्चाशद्वर्षाधिकवयोनामनी अ.वि.2.6.40; • वि. 1. स्थावरः – གང་ཕྱིར་སྤྲུལ་པ་གནས་བརྟན་ཕྱིར། །དེ་ལས་སྤྲུལ་པའི་སྐུ་ཉིད་ཡིན།། तत्र निर्माणकायः स्यान्निर्माणं स्थावरं मतम् ॥ हे.त.21ख/68; སངས་རྒྱས་རྣམས་འཁོར་བ་ཇི་སྲིད་ཀྱི་བར་དུ་སྤྲུལ་པའི་སྐུས་བཞུགས་པས་དེའི་[? དེས་]གནས་བརྟན་པའོ།། बुद्धानां यावद् संसारस्तावदेव निर्माणकायेनावस्थानम्। ततः स्थावरः यो.र.50क/148 2. स्थविरः, वृद्धः – प्रवयाः स्थविरो वृद्धो जीनो जीर्णो जरन्नपि अ.को.2.6.42; बहुकालं तिष्ठतीति स्थविरः। ष्ठा गतिनिवृत्तौ अ.वि.2.6.42.

གནས་བརྟན་ཀན་པོ ना. स्थविरनामा, भिक्षुः – དེ་ནས་ཚེ་དང་ལྡན་པ་ཀུན་དགའ་བོ...ཚེ་དང་ལྡན་པ་གནས་བརྟན་ཀན་པོ་ག་ལ་བ་དེར་སོང་སྟེ तत आयुष्मानानन्दः...येनायुष्मान् स्थविरनामा तेनोपसंक्रान्तः अ.श.257क/236.

གནས་བརྟན་ཆེན་པོ महास्थविरः ब.अ.844.

གནས་བརྟན་དུ་འདྲེན वि. स्थविरसम्मतः – བཅོམ་ལྡན་འདས་བདག་ཅག་ནི་རྒན་པ་རྒྱས་པ་འཁོགས་ནས། དགེ་སློང་གི་དགེ་འདུན་འདིའི་ནང་ན་ཡང་གནས་བརྟན་དུ་འདྲེན་ཏེ वयं हि भगवन् जीर्णा वृद्धा महल्लका अस्मिन् भिक्षुसङ्घे स्थविरसम्मताः स.पु.39क/71.

གནས་བརྟན་གནས་བརྟན ना. स्थविरस्थविरः, भिक्षुः – དེ་ནས་དགེ་སློང་གནས་བརྟན་གནས་བརྟན་རྣམས་ཀྱིས་ཚེ་དང་ལྡན་པ་གནས་བརྟན་གནས་བརྟན་ཞེས་བྱ་བ་ལ་འདི་སྐད་ཅེས་སྨྲས་སོ།། अथ स्थविरस्थविरा भिक्षव आयुष्मन्तं स्थविरस्थविरनामानमिदमवोचन् वि.व.293ख/1.118.

གནས་བརྟན་པ स्थावरी, निकायभेदः – སྡེ་པ་བཞི་ནི། གནས་བརྟན་པ་དང་ཐམས་ཅད་ཡོད་པར་སྨྲ་བ་དང་ཀུན་གྱིས་བཀུར་བ་དང་དགེ་འདུན་ཕལ་ཆེན་པོ།། चत्वारो निकायाः – स्थावरी, सर्वास्तिवादः, संविदी, महासङ्घी चेति हे.त.3क/4; द्र. གནས་བརྟན།

གནས་བརྟན་སྤྱན་དྲང་བ ना. स्थविरोपनिमन्त्रणम्, ग्रन्थः क.त.4199.

གནས་ཐམས་ཅད་དང་བྲལ་བ वि. सर्वनिकेतविगमम् – དེ་དག་བདག་གིས་བདེ་བའི་དམ་པ་གནས་ཐམས་ཅད་དང་བྲལ་བ་འདི་ལྟ་སྟེ། བསྒྲིབས་པ་མེད་པ་ཐམས་ཅད་མཐིན་པའི་མྱ་ངན་ལས་འདས་པ་ལ་རབ་ཏུ་དགོད་པར་བྱའོ།། <?> तेऽस्माभिः परमसुखे सर्वनिकेतविगमे प्रतिष्ठापयितव्या यदुत सर्वावरणप्रहाणनिर्वाणे द.भू.192क/18.

གནས་ཐམས་ཅད་དུ་འཆི་འཕོ་བ पा. सर्वच्युतः, ऊर्ध्वस्रोतभेदः – (དེ་འཕར་བྱེད་འཕར་ཐམས་ཅད་དུ། །འཆི་འཕོ་ स प्लुतोऽर्धप्लुतः सर्वच्युतश्च अभि.को.20क/951; གོང་དུ་འཕོ་བ་འོག་མིན་གྱི་མཐར་ཐུག་པ་དེ་ཡང་འཕར་བ་ལ་སོགས་པའི་བྱེ་བྲག་གིས་རྣམ་པ་གསུམ་སྟེ स पुनरेषोऽकनिष्ठपरम ऊर्ध्वस्रोतास्त्रिविधः, प्लुता-

दिभेदात् अभि.भा.22ख/951;) གནས་ཐམས་ཅད་དུ་འཆི་འཕོ་བ་ཞེས་བྱ་བ་ནི་གནས་གཞན་ཐམས་ཅད་དུ་འཕོས་ནས་འོག་མིན་དུ་འཇུག་པ་གང་ཡིན་པའོ॥ सर्वच्युतो नाम यः सर्वाणि स्थानान्तराणि सञ्चर्याकनिष्ठान् प्रविशति अभि.भा.23क/952; द्र. ཐམས་ཅད་དུ་འཆི་འཕོ།

གནས་དང་མཐུན་པ *वि.* स्थानीयः – འདི་དག་ནི་དངོས་པོའི་འདོད་པའོ॥ དེ་དག་ཀྱང་བདེ་བའི་གནས་དང་མཐུན་པ་དག་དང་། སྡུག་བསྔལ་གྱི་གནས་དང་མཐུན་པ་དག་དང་། སྡུག་བསྔལ་ཡང་མ་ཡིན་བདེ་བ་ཡང་མ་ཡིན་པའི་གནས་དང་མཐུན་པ་དག་སྟེ अमी वस्तुकामाः। ते पुनः सुखस्थानीयाः, दुःखस्थानीयाः, अदुःखासुखस्थानीयाश्च श्रा.भू.165क/440.

གནས་དང་འདྲ་བ = གནས་འདྲ།

གནས་དང་ལྡན་པ = གནས་ལྡན།

གནས་དང་བརྡ་དང་ཀུན་རྫོབ་རྣམ་པར་དགོད་པ *पा.* अवस्थानसङ्केतसंवृतिव्यवस्थानता – དེས་སེམས་ཅན་གྱི་ལུས་རྣམས་ཀྱི་ལས་ཀྱི་ལུས་ཀྱང་རབ་ཏུ་ཤེས་སོ॥ ... གནས་དང་བརྡ་དང་ཀུན་རྫོབ་རྣམ་པར་དགོད་པ་དང་ས सत्त्वकायानां कर्मकायतां च प्रजानाति ...अवस्थानसङ्केतसंवृतिव्यवस्थानतां च द.भू.245क/46.

གནས་དང་གནས་པ अधिष्ठानाधिष्ठानिनौ – གནས་དང་གནས་པ་དང་རྟེན་དང་བརྟེན་པ་འདི་ལྟར་གཞོང་དང་རྒྱ་ཤུག་དག་བཞིན་དུ་ཐ་དད་པར་མི་དམིགས་པར་འགྱུར་བས་ནི་འདིར་འདི་རབ་ཏུ་སྐྱེ་བར་འགྱུར་[སྐྱེས་པར་གྱུར་] རོ་ཞེས་བྱ་བ་དེ་ལྟར་མི་འགྱུར་རོ॥ न ह्यधिष्ठानाधिष्ठानिनोराधाराधेययोः कुण्डबदरयोर्वि[योरिव वि]वेकेनानुपलक्षणे सत्येवं भवति – 'इदमिह प्रादुर्भूतम्' इति वा.टी.90ख/48; आश्रयाश्रितम् – གནས་དང་གནས་པར་འབྲེལ་པའི་མཚན་ཉིད आश्रयाश्रितप्रबन्धलक्षणम् लो.को.1369.

གནས་དང་གནས་མ་ཡིན་པ स्थानास्थानम् – གནས་དང་གནས་མ་ཡིན་པ་མཁྱེན་པའི་སྟོབས་ནི་ཤེས་པ་བཅུ་ཡིན་ནོ॥ स्थानास्थानज्ञानबलं दश ज्ञानानि अभि.भा. 55ख/1085.

གནས་དང་གནས་མ་ཡིན་པ་མཁས་པ = གནས་དང་གནས་མ་ཡིན་པ་ལ་མཁས་པ།

གནས་དང་གནས་མ་ཡིན་པ་མཁྱེན་པ स्थानास्थानज्ञानम् – གནས་དང་གནས་མ་ཡིན་པ་མཁྱེན་པའི་སྟོབས स्थानास्थानज्ञानबलम् बो.भू.197ख/265.

གནས་དང་གནས་མ་ཡིན་པ་མཁྱེན་པའི་སྟོབས *पा.* स्थानास्थानज्ञानबलम्, तथागतबलविशेषः – དེ་བཞིན་གཤེགས་པའི་སྟོབས་བཅུ...གནས་དང་གནས་མ་ཡིན་པ་མཁྱེན་པའི་སྟོབས་དང་...ཟག་པ་ཟད་པ་མཁྱེན་པའི་སྟོབས་ཏེ दश तथागतबलानि...स्थानास्थानज्ञानबलम्...आस्रवक्षयज्ञानबलञ्च बो.भू.197ख/265; གནས་དང་གནས་མ་ཡིན་པ་ནི་གནས་དང་གནས་མིན་ཏེ། དེ་མཁྱེན་པ་ཉིད་སྟོབས་ཡིན་ནོ॥ དེ་ནི་ཤེས་པ་བཅུ་ཡིན་ཏེ स्थानं चास्थानं च स्थानास्थानम्, तत्र ज्ञानमेव बलं ज्ञानबलम्। तद् दश ज्ञानानि अभि.स्फु. 267क/1085; གནས་དང་གནས་མ་ཡིན་པ་མཁྱེན་པའི་སྟོབས་ནི་ཤེས་པ་བཅུ་ཡིན་ནོ॥ स्थानास्थानज्ञानबलं दश ज्ञानानि अभि.भा.55ख/1085.

གནས་དང་གནས་མ་ཡིན་པ་ལ་མཁས་པ *पा.* स्थानास्थानकौशल्यम्, कौशल्यभेदः – མཁས་པའི་དངོས་པོ་ནི་སྟེ། རྣམ་པ་བཅུ་པོ་དེ་ཡང་... ཕུང་པོ་ལ་མཁས་པ་དང་... གནས་དང་གནས་མ་ཡིན་པ་ལ་མཁས་པ་དང་...འདུས་བྱས་དང་འདུས་མ་བྱས་ཀྱི་ཆོས་ལ་མཁས་པའོ॥ कौशल-

यतत्त्वञ्च । तत्पुनर्दशविधं... स्कन्धकौशल्यम्... स्थानास्थानकौशल्यम्... संस्कृतासंस्कृतकौशल्यञ्च म.भा.10[ख]/3.2.

གནས་ དང་ གནས་ མ་ ཡིན་ པ་ ལ་ མཁས་ ཤིང་ ཤིན་ ཏུ བརྟགས་ པ स्थानास्थानकौशल्यसुविचारितता – གནས་ དང་ གནས་ མ་ ཡིན་ པ་ ལ་ མཁས་ ཤིང་ ཤིན་ ཏུ བརྟགས་པས་བློ་དང་ལྡན་པ་ཡིན बुद्धिमांश्च भवति स्थानास्थानकौशल्यसुविचारिततया द.भू.214[क]/28.

གནས་དང་གནས་མིན = གནས་དང་གནས་མ་ཡིན་པ།

གནས་དང་བྲལ = གནས་དང་བྲལ་བ།

གནས་དང་བྲལ་བ *ना.* अनिकेतः, बोधिसत्त्वः – དེ་དག་ཐམས་ཅད་དུའང་ཁོ་མོ་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའི་ཡུམ་དུ་འགྱུར་རོ།། བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་བྱམས་པའི་ཡུམ་དུ་ཇི་ལྟར་འགྱུར་བ་དེ་བཞིན་དུ...གནས་དང་བྲལ་བ་དང तेष्वहं सर्वत्र बोधिसत्त्वजननी भविष्यामि । यथा च मैत्रेयस्य बोधिसत्त्वस्य, तथा... अनिकेतस्य ग.व्यू. 267[ख]/347.

གནས་དང་དབང་པོ་ཐ་དད་པའི་ལམ *पा.* निश्रयेन्द्रियभिन्नो मार्गः, मार्गभेदः – ལམ་རྣམ་པ་བཅུ་གཅིག... དངོས་པོ་ལ་ཡོངས་སུ་རྟོག་པའི་ལམ...གནས་དང་དབང་པོ་ཐ་དད་པའི་ལམ...ལམ་སྡུད་པའི་ལམ एकादशविधो मार्गः ...वस्तुपरीक्षामार्गः...निश्रयेन्द्रियभिन्नो मार्गः ...मार्गसंग्रहमार्गः अभि.स.भा.61[क]/84.

གནས་བདག = ས་བདག། གཞི་བདག भूमिपतिः मि.को. 8[क]।

གནས་བདག་པ = ཁང་པ་བྱེད་མཁན स्थपतिः, कारुभेदः मि.को.26[क]।

གནས་བདུན་ལ་མཁས་པ *वि.* सप्तस्थानकुशलः – དགེ་སློང་དག་ཇི་ལྟར་ན་དགེ་སློང་གནས་བདུན་ལ་མཁས་པ་ཡིན་ཞེ་ན कथं च भिक्षवो भिक्षुः सप्तस्थानकुशलो भवति अभि.स्फु.184[ख]/940.

གནས་འདེབས *क्रि.* अध्यावसति – མ་ཕེབས་པ་འཕེབས། ཕེབས་པའི་སར་གནས་འདེབས अजितं जयति । जितमध्यावसति म.व्यु.3635(61[क]).

གནས་འདེབས་པར་འགྱུར *क्रि.* वासं कल्पयति – དེར་འཁོར་ལོས་སྒྱུར་བའི་རྒྱལ་པོ...གནས་འདེབས་པར་འགྱུར་ཞིང तत्र राजा चक्रवर्ती वासं कल्पयति वि.व.137[ख]/1.26.

གནས་འདྲ *वि.* प्रतिष्ठाभः – ལུས་དང་ལོངས་སྤྱོད་གནས་འདྲ་བར། །སྲིད་པ་གསུམ་ལ་མ་རྟོགས་ཤིག།། देहभोगप्रतिष्ठाभं त्रिभवं न विकल्पयेत् ॥ ल.अ.171[ख]/130.

གནས་ལྡན *वि.* स्थितिमान् – རྟེན་བཅས་ཐམས་ཅད་གནས་ལྡན་དང་། །སྐྱེ་བ་ཅན་ཀུན་རྟེན་བཅས་ཡིན།། स्थितिमान्साश्रयः ['नाश्रयः' इति पाठः; 'साश्रयः' इति प्र.अ.] सर्वः सर्वोत्पत्तौ च साश्रयः । प्र.वा.110[क]/1.73.

གནས་ནས་བསྐྲད *भू.का.कृ.* विवासितः – དེ་ཡི་བུ་ནི་ནུ་བོ་ལ། །དགའ་བས་ཕུ་བོ་གནས་ནས་བསྐྲད།། प्रीत्या कनीयसः सूनोर्ज्येष्ठास्तेन विवासिताः ॥ अ.क.233[ख]/26.14.

གནས་ནས་ཕྱུང་བ *वि.* उत्क्षिप्तः – དགེ་སློང་གནས་ནས་ཕྱུང་བ उत्क्षिप्तस्य भिक्षोः वि.सू.50[ख]/64; उत्क्षिप्तकः – རྒྱུ་ལས་བཟློག་པ་ཁས་མི་ལེན་པ་གནས་ནས་ཕྱུང་བ་ལ་ཡང་མི་སྐྱོའོ།། न निमित्तविपर्ययानभ्युपगतावुत्क्षिप्तकस्य वि.सू.11[ख]/12.

གནས་ནས་དབྱུང་བ • सं. निष्कासनम् – ཡངས་པ་ཅན་པའི་ཚོགས་རྣམས་ཀྱིས། །སྟོན་པ་མཆོད་པའི་སྐབས་མ་ཐོབ། །ནོར་ཅན་ལ་ནི་རབ་ཁྲོས་ཏེ། །གནས་ནས་དབྱུང་བའི་རྩོམ་པ་བྱས།། अलब्धपूजावसरः शास्तुर्वैशालिको गणः। धनिकाय परं क्रुद्धश्चक्रुर्निष्कासनोद्यमम्॥ अ.क.238क/90.16; उत्क्षेपः – གནས་ནས་དབྱུང་བ་ལ་ཡང་དེ་བཞིན་ནོ།། उत्क्षेपेऽप्येतत् वि.सू.84क/101; • कृ. उत्क्षेपणीयम् – བསྡིགས་པའི་ལས་སམ... མི་སྣང་བར་གནས་ནས་དབྱུང་བའམ तर्जनीयं कर्म... अदर्शनायोत्क्षेपणीयम् वि.व.243ख/2.145.

གནས་ནས་དབྱུང་བར་བྱ •क्रि. उत्क्षिपेत्– སྡིག་པ་ཅན་གྱི་ལྟ་བའི་རྣམ་པ་མི་གཏོང་བ་ནི་གནས་ནས་དབྱུང་བར་བྱའོ།། अनुत्सृजन्तं च पापिकां दृष्टिमुत्क्षिपेयुः वि.सू.84ख/102; •कृ. उत्क्षेप्यम्– གནས་ནས་དབྱུང་བར་བྱ་བ་ཉིད उत्क्षेप्यता वि.सू.85ख/103; • सं. उत्क्षेपः – འཐབ་ཀྲོལ་ལས་འབད་པ་མ་ལོག་ན་ཉེ་བར་ཞི་བར་བྱ་བའི་ཕྱིར་གནས་ནས་དབྱུང་བར་བྱའོ།། अनिवृत्तौ कलेरुपशान्त्यै प्रयत्नादुत्क्षेपः वि.सू.85ख/103.

གནས་ནས་དབྱུང་བར་བྱ་བ = གནས་ནས་དབྱུང་བར་བྱ།

གནས་ནས་དབྱུང་བར་བྱ་བ་ཉིད उत्क्षेप्यता – འཐབ་ཀྲོལ་གྱི་རྒྱུ་ཉེ་བར་བསྒྲུབ་པ་ཡང་གནས་ནས་དབྱུང་བར་བྱ་བ་ཉིད་དོ།། निमित्तस्यापि कलेरुपसंहारिणोत्क्षेप्यता वि.सू.85ख/103.

གནས་ནས་འབྱིན་པ उत्क्षेपः – མི་འཆགས་པའི་བློས་དབྱེན་བྱེད་པ་དང་གནས་ནས་འབྱིན་པ་དག་ནི་སྦོམ་པོའོ།། स्थूलमरूढिबुद्ध्या भेदोत्क्षेपयोः वि.सू.84क/101; द्र. གནས་ནས་དབྱུང་བ།

གནས་པ •क्रि. (अवि., अक.) 1.तिष्ठति – དར་བ་རྩ་ཡི་གོས་གྱོན་རྐང་པ་གཅིག་གིས་གནས།། दर्भचीवरवासिनी... एकपादेन तिष्ठति सु.प्र.30क/57; གལ་ཏེ་ཁྱིའུ་ཡིན་ན་ནི་ལྟོ་གཡས་ལོགས་སུ་རྟེན་ཅིང་གནས་སོ།། सचेद्दारको भवति, दक्षिणं कुक्षिं निश्रित्य तिष्ठति। अ.श.9क/7; དེ་ཡི་ཚེ་ན་ཐེར་ཟུག་གནས།། तदा तिष्ठति शाश्वतम्। ल.अ.159ख/108; མཐུ་པོ་ཆེ་ཆེན་པོ་ཁྲོས་ཏེ་རྔམ་པའི་འཕྲལ་[? དཔྲལ་] བ་ལ་ཐོར་བུ་ཇི་སྲིད་དུ་གནས་པ क्रोधाविष्टस्य महानग्नस्य यावल्ललाटे पिटकास्तिष्ठन्ति ग.व्यू.319क/403; འདི་ལ་ལྟ་བ་རྒྱས་པར་འགྱུར་བའི་བློ་ནས་གནས་པས་ན་ལྟ་བའི་གནས་སོ།། दृष्टिरस्मिंस्तिष्ठत्यनुशयनादिति दृष्टिस्थानम् अभि.भा.29ख/29; संतिष्ठति – སྒྲ་དེ་ཐོས་ནས་སངས་རྒྱས་རྗེས་སུ་དྲན་པ་དང་ཆོས་རྗེས་སུ་དྲན་པ་དང་དགེ་འདུན་རྗེས་སུ་དྲན་པ་ལུས་ལ་གནས་སོ།། तं शब्दं श्रुत्वा बुद्धानुस्मृतिः काये संतिष्ठति, धर्मानुस्मृतिः काये संतिष्ठति, सङ्घानुस्मृतिः काये संतिष्ठति का.व्यू.197क/255; प्रतितिष्ठति – དགེ་སློང་སྲེད་པ་སྐྱེ་བ་ན་ཆོས་གོས་ཀྱི་ཕྱིར་དང་། བསོད་སྙོམས་ཀྱི་ཕྱིར་དང་། མལ་ཆ་དང་སྟན་གྱི་ཕྱིར་སྐྱེའོ།། གནས་པ་ན་གནས་སོ།། चीवरहेतोर्भिक्षोस्तृष्णोत्पद्यमाना उत्पद्यते, प्रतितिष्ठन्ती प्रतितिष्ठति... पिण्डपातहेतोः, शय्यासनहेतोरिति अभि.भा.9क/894; अवतिष्ठते – གང་དུ་གནས་པ་དང यत्र चावतिष्ठते शि.स.137ख/133; ད་ལྟར་ཡང་གནས་སོ།། अद्याप्यवतिष्ठते प्र.अ.73ख/81; व्यवतिष्ठते – དེ་ཉིད་ཀྱིས་ནི་ལེགས་པར་གནས།། तेनैव संस्कारो व्यवतिष्ठते त.स.80क/742; अध्यवतिष्ठते – ཞེས་བྱ་བ་འདི་ནི་བསྡུ་བའི་དོན་གྱིས་གནས་སོ།། इत्ययं समासार्थोऽध्यवतिष्ठते त.प.4क/453; संतिष्ठते – ཇི་ལྟ་ཇི་ལྟར་ཞི་གནས་དང་ལྷག་མཐོང་ལ་མངོན་པར་དགའ་བར་གནས་པ་དེ་ལྟ་དེ་ལྟར་ཞི་གནས་དང་ལྷག་མཐོང་ཡོངས་སུ་དག་པར་འགྱུར་རོ།། यथा यथा शमथ-

विपश्यनाभिरतिः संतिष्ठते तथा तथा शमथो विपश्यना च परिशुध्यति बो.भू.59ख/77; प्रतिष्ठते – ཤུགས་ཉིད་ལྡན་ཕྱིར་དེ་ཡང་ནི། །ཇི་སྲིད་ཤུགས་ཡོད་པར་དུ་གནས།། वेगवत्त्वाच्च सोऽवश्यं यावद्वेगं प्रतिष्ठते ॥ त.स.79ख/737; अभिप्रतिष्ठते – རྩོལ་བས་བསྐྱོད་པའི་རླུང་རྣམས...ཤུགས་ཇི་སྲིད་དུ་གནས་ཏེ अभिघातेन प्रेरिता वायवः... यावद्वेगमभिप्रतिष्ठन्ते त.प.143क/738; उत्तिष्ठते–ཕྲ་རྒྱས་ཀྱི་དབང་གིས་བསགས་པར་འགྱུར་ཞིང་རྣམ་པར་སྨིན་པར་ངེས་པར་[? པའི་ངེས་པས་]གནས་ཏེ अनुशयवशादुपचयं गच्छन्ति। विपाकनैयम्येनात्र उत्तिष्ठन्ते अभि.स्फु.87ख/759; वसति – རྩ་བ་གསུམ་པོ་འདི་ལ་དགེ་བའི་ཤིང་། །འབྲས་བུ་དམ་པའི་དཔལ་ལྡན་མ་ལུས་གནས།། मूलत्रयेऽस्मिन् कुशलद्रुमस्य वसत्यशेषाखिलसत्फलश्रीः ॥ अ.क.302क/39.54; निवसति – དམ་པ་ཡོན་ཏན་མཆོག་ལྡན་པ། །གང་ན་གནས་པ निवसन्ति हि यत्रैव सन्तः सद्गुणभूषणाः। जा.मा.164क/189; संवसति – སེམས་ཅན་གང་དག་དང་ཇི་ལྟར་ལྷན་ཅིག་གནས་པར་བྱ་བ་དེ་ལྟར་དེ་དག་དང་གནས་སོ།། यथा यैः सत्त्वैः सार्धं संवस्तव्यं भवति तथा संवसति बो.भू.80क/102; आवसति – དེར་འཕགས་པ་ཉིད་འབའ་ཞིག་གནས་སོ།། अत्र हि आर्या एव शुद्धा आवसन्ति त.प.320ख/1107; अभिनिवसति – བས་མཐའ་དག་དང་ནགས་སུ་དེ་ཚེ་གནས།། प्रान्तवने तदाभिनिवसन्ति रा.प.241क/139; प्रतिवसति – རེ་ཞིག་ན་རང་སངས་རྒྱས་ཤིག་དགོན་པའི་ལམ་དེ་ན་གནས་པ यावदन्यतरः प्रत्येकबुद्धस्तस्मिन् कान्तारमार्गे प्रतिवसति अ.श.250क/229; अध्यावसति – དེས་ཚེགས་ཆུང་ངུས་ནོར་གྱི་ཕུང་པོ་ཆེན་པོ་བསྒྲུབས་ཏེ་གནས་སོ།། येनाल्पकृच्छ्रेण महान्तं धनस्कन्धमभिनिर्जित्याध्यावसति बो.भू.68क/88; विहरति – དེ...བསམ་གཏན་གཉིས་པ་ཉེ་བར་བསྒྲུབས་ཏེ་གནས་སོ།། सः...द्वितीयं ध्यानमुपसंपद्य विहरति द.भू.198क/20; བཏང་སྙོམས་ཅན་དུ་དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་དེ་ལ་གནས་ཏེ उपेक्षकस्तत्र तथागतो विहरति अभि.स.भा.97क/130; དེས་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་ཐམས་ཅད་དུ་ཇི་ལྟར་འདོད་པ་བཞིན་དུ་གནས་ཏེ तया बोधिसत्त्वः सर्वत्र यथाकामं विहरति सू.व्या.228क/139; आश्रीयते – དེ་ལ་གཏན་ཚིགས་གནས་པ་ན་རྟོགས་པར་བྱེད་པའི་ཚུལ་གྱིས་གནས་པའོ།། तत्र हि हेतुर्वर्तमानो गमकत्वेनाश्रीयते न्या.टी.74क/193; निवेशयति – དེ་བས་ན་གང་དུ་གང་འདུ་བ་དེ་ནི་དེས་བདག་གི་བའི་ངོ་བོར་བང་དུ་བླངས་ཤིང་འདུ་བ་ཅན་གྱི་ངོ་བོའི་ཡུལ་ན་བདག་ཉིད་གནས་པས་སོ།། तेन यत्र यत् समवेतं तत् तदात्मीयेन रूपेण क्रोडीकुर्वत् समवायिरूपदेशे स्वात्मानं निवेशयति न्या.टी.84ख/230; वर्तते – བྱེད་པ་ལ་ནི་གང་གནས་པ། །དེ་ནི་ད་ལྟ་བ་རུ་བརྗོད།། कारित्रे वर्तते यो हि वर्तमानः स उच्यते। त.स.65ख/617; མ་དེ་ད་ལྟ་གང་ན་གནས།། सा...जननी क्वाद्य वर्तते। अ.क.298क/39.14; དེ་ཡང་དད་པ་དང་ལྡན་ལ...གཏོང་བ་ཆེན་པོ་ལ་གནས་པ་ཞིག་སྟེ स च श्राद्धः...महति त्यागे वर्तते अ.श.2क/1; ལྟ་བ་དང་ལྷན་ཅིག་གནས་པས་ནི་ལྟར་བཅས་སོ།། सहदर्शनेन वर्तत इति सदर्शनः प्र.प.38ख/43; अस्ति – རྔོན་པ་གདུག་པ་ཅན་ཞེས་པ། །ནགས་ཀྱི་མཐའ་འཁོབ་དག་ན་གནས།। लुब्धकः क्रूरको नाम प्रत्यन्तेऽस्ति वनेचरः। अ.क.30क/53.27; आस्ते– དེ་ལ་བརྟན་པ་གང་ཡིན་པ་དེ་ནི་མུན་རུམ་བཞིན་དུ་སྒྲ་སྒྲིབ་པར་གནས་ཏེ तत्र यः स्थिरः, स घनान्धकारवत् शब्दमावृत्यास्ते त.प.141क/734; रमते – མི་གང་ལ་ནི་ཁྱིམ་དཔལ་གནས། །དེ་ནི་ཀུན་གྱིས་ཡོངས་བསྲུང་བྱ།། यस्मिन् मनुष्ये रमते

कुलश्रीः स सर्वतः संपरिरक्षितव्यः। वि.व.5ख/2.77; आस्यते – དམྱལ་བ་ཡི་ནི་ལས་བྱས་ནས། །ཅི་ཕྱིར་འདི་ལྟར་བདེ་བར་གནས།། कृत्वा च नारकं कर्म किमेवं स्वस्थमास्यते ॥ बो.अ.20ख/7.12 2. स्थास्यति – སྡིག་པ་དག་ནི་བརྟན་པར་གནས།། पापं तु स्थास्यति ध्रुवम् बो.अ.16ख/6.55; འདི་ལྟ་བུའི་མངོན་[? དམ]པའི་ཆོས་འདི་ཇི་སྲིད་དུ་གནས་ཞེ་ན कियच्चिरं पुनरयं सद्धर्मः स्थास्यति अभि.भा.81ख/1185 3. तस्थौ – རང་ཉིད་ནི། །རྒྱལ་ཕམ་རིགས་པ་དག་ལ་གནས།། स्वयं तस्थुर्न्याये जयपराजये॥ अ.क.160ख/17.45; प्रतिवसति स्म – ལྷ་མོ་ཆེན་མོ་དཔལ་ནི་ལྕང་ལོ་ཅན...ན་གནས་ཏེ अलकावत्यां...श्रीर्महादेवी प्रतिवसति स्म सु.प्र.31ख/61 4. तिष्ठेत् – གཞན་པའི་སེམས་ཀྱིས་སྐད་ཅིག་ཀྱང་། །དངོས་གྲུབ་འདོད་པས་མི་གནས་སོ།། क्षणमप्यन्यचित्तः सन्न तिष्ठेत् सिद्धिकाङ्क्षकः ॥ हे.त. 14क/44; ཁྱོད་ཀྱི་བསྟན་པའི་ལུགས་འཚལ་བ། །དགའ་ན་བསྐལ་པར་ཡང་གནས་ལ།། त्वच्छासननयज्ञो हि तिष्ठेत् कल्पमपीच्छया। श.बु.113ख/89; तिष्ठतु – སྡུག་བསྔལ་ཅན་དག་བདེར་གནས་ལ།། सुखं तिष्ठन्तु दुःखिताः बो.अ.6ख/3.1; •सं. 1. स्थानम् – འགྲོ་བ་དང་འོང་བ་དང་གནས་པ་ལ་སོགས་པའི་བྱ་བ་ལ गमनागमनस्थानाद्यासु क्रियासु बो.भू.34क/43; अवस्थानम् – ཉེ་བ་ཡུལ་ཐག་ཉེ་བ་ན་གནས་པ་དང་། མི་ཉེ་བ་ཡུལ་ཐག་རིང་པོ་ན་གནས་པ संनिधानं निकटदेशावस्थानम्। असंनिधानं दूरदेशावस्थानम् न्या.टी.44ख/74; སྐད་ཅིག་གཅིག་ནི་གནས་པ་རྣམས། །སྔ་མ་སྔ་མའི་ནུས་མཐུ་ལས། །རྒྱུན་གྱིས་རྗེས་སུ་འཇུག་པ་ཡིན།། क्षणं त्वेकमवस्थानं... पूर्वपूर्वप्रभावाच्च प्रबन्धेनानुवर्त्तनम्॥ त.स.26ख/284; དེའི་བདག་ཉིད་དུ་གནས་པ་ཡང་གཞིར་སྟོན་པ་སྣང་སྟེ तादात्म्यावस्थानतोऽपि ह्यधिकरणनिर्देशो दृश्यते अभि.स्फु.8ख/14; व्यवस्थानम् – ཡུལ་ཐག་རིང་ན་གནས་པའི་ཕྱིར दूरदेशव्यवस्थानात् त.स.105क/922; संस्थानम् – ཐབས་དང་ཤེས་རབ་ཀྱི་རང་བཞིན་གསལ་བ་དེ་ཁོ་ན་ཉིད་དུ་སེམས་གནས་སོ།། प्रज्ञोपायात्मकस्फुटतत्त्वचित्तसंस्थानम् त.सि.66क/175; निवेशनम् – ཡུལ་དེའི་ངོ་བོ་ན་གནས་པ་ཉིད་དེ་པང་དུ་བླངས་པ་ཡིན་ནོ།། तद्देशरूपनिवेशनमेव तत्क्रोडीकरणम् न्या.टी.84ख/231; समावेशः – ཕན་ཚུན་འགལ་བ་ནི་གཅིག་ལ་ཅིག་ཅར་གནས་པ་མི་རུང་བའི་ཕྱིར་རོ།། परस्परविरोधिनोर्युगपदेकत्र समावेशायोगात् प्र.वृ.307क/53; वृत्तिः – གཅིག་ཉིད་ཡིན་པས་སྟེང་གནས་པ། །ཅི་སྟེ་འོག་ན་གནས་སྙམ་སེམས།། किमूर्ध्ववृत्तिमेकत्वेऽप्यवागेवानुमन्यते ॥ त.स.96क/845; དེ་བཞིན་རྟག་པའི་སེམས་ཉིད་ཀྱི། །སྐྱེས་བུ་ལུས་ལ་གནས་པ་རྣམས།། तथैव नित्यचैतन्याः पुमांसो देहवृत्तयः। त.स.10ख/127; वर्तनम् – འདི་ནི་དང་པོ་ཆོས་སྐུ་སྟེ། །ཕྱི་མ་དག་ནི་གཟུགས་ཀྱི་སྐུ། །ནམ་མཁའ་ལ་ནི་གཟུགས་གནས་བཞིན། །དང་པོ་ལ་ནི་ཐ་མ་གནས།། प्रथमो धर्मकायोऽत्र रूपकायौ तु पश्चिमौ। व्योम्नि रूपगतस्येव प्रथमेऽन्त्यस्य वर्तनम्॥ र.वि.64ख/88; अवष्टम्भः – རང་གི་རང་བཞིན་ཙམ་རིག་པའི། །ཁྱབ་པ་དེ་ནི་གང་ཡིན་བརྗོད། །དུ་མའི་ལུས་ནི་གནས་པ་ལ། །དངོས་སུ་ཁྱབ་པ་ཡིན་ཞེས་བརྗོད།། स्वरूपसंविन्मात्रस्य व्यापिता केयमुच्यते। अनेकदेशा[? देहा]वष्टम्भे व्यप्ति[? व्याप्त]रुच्येत मुख्यतः ॥ प्र.अ. 142क/152; उपनिःश्रितिः – གལ་ཏེ་མ་ཡོན་ན་གཞན་ལ་རེ་ཞིག་གནས་པའི་དོན་དུ་གཏད་པར་བྱའོ།། ऊनश्चेदन्यस्याप्युपनिःश्रित्यर्थमर्पयेत् वि.सू.4क/3 2. स्थितिः – གནས་དང་འཇིག་དང་སྐྱེ་དང་བྲལ། །རྟག་དང་མི་རྟག་སྤངས་པའོ།། स्थितिभङ्गोत्पत्तिरहिता नित्या-

नित्यविवर्जिताः। ल.अ.162क/112; སྐྱེ་དང་གནས་དང་སྡུད་པ་ཡི། །བྱེད་པ་པོ་ उत्पत्तिस्थितिसंहारकर्ता गु.सि.17क/35; གང་གི་ཚེ་སྙིང་སྟོབས་ཤས་ཆེར་འཕེལ་བ་ལ་རྟེན་པར་བྱེད་པ་དེའི་ཚེ་འཇིག་རྟེན་གནས་པའི་རྒྱུར་འགྱུར་ཏེ यदा तु सत्त्वं समुद्भूतवृत्तिं संश्रयते, तदा लोकानां स्थितिकारणं भवति त.प.179ख/75; རབ་ཀྱི་རྩལ་གྱིས་རྣམ་པར་གནོན་པ་ཤེས་རབ་ཀྱི་ཕ་རོལ་ཏུ་ཕྱིན་པ་འདི་ནི་ཆོས་གང་འབྲི་བའི་ཕྱིར་རམ་འཕེལ་བའི་ཕྱིར་ཉེ་བར་གནས་པ་མ་ཡིན་ནོ།། ...གནས་པའི་ཕྱིར་རམ་མི་གནས་པའི་ཕྱིར་རམ...མ་ཡིན་ནོ།། न खलु पुनरियं सुविक्रान्तविक्रामिन् प्रज्ञापारमिता कस्यचिद्धर्मस्य हानाय वा विवृद्धये वा प्रत्युपस्थिता...नापि...स्थितये वा अस्थितये वा सु.प.47ख/24; དོན་ནི་བཙོ་བ་དང་བསྲེག་པ་ལ་སོགས་པའོ།། བྱེད་པ་ནི་གྲུབ་པའོ།། དེ་གནས་པ་ནི་བརྟན་པའམ་རྣམ་པར་གནས་པ་ནི་མི་སླུ་བ་ཡིན་ནོ།། अर्थस्य दाहपाकादेः क्रियानिष्पत्तिस्तस्याः स्थितिरविचलनमविसम्वादनं व्यवस्था वा प्र.अ.2ख/4; འདུལ་བའི་ལམ་དུ་གནས་པ་ཐོབ लब्धस्थितेर्विनयवर्त्मनि अ.क.37क/55.6; མཁའ་དབྱིངས་ཕོ་བྲང་ཉམས་དགའ་དེར། །སྣ་ཚོགས་ཐུགས་རྗེ་ཅན་གནས་པ།། खधातुभुवने रम्ये विश्वस्थितिः कृपालुना ॥ गु.सि.7क/16; संस्थितिः – ཕན་ཚུན་བརྟེན་པ་ཉིད་ཀྱི་ཕྱིར། །གཅིག་ཀྱང་གནས་པ་ཡོད་མ་ཡིན།། इतरेतराश्रयादेवं नास्त्यन्यतरसंस्थितिः ॥ प्र.अ.21क/24; གསལ་བར་བྱེད་པའི་དབྱེ་བ་ཡིས། །དབྱེ་བའི་གནས་པ་འདི་རིགས་མིན།། न च व्यञ्जकभेदेन युक्तैषा भेदसंस्थितिः। त.स.90ख/817; अवस्थितिः – རྟེན་མེད་པར་ནི་གང་དུ་ཡང་བརྟེན་པ་རྣམས་གནས་པ་ཡོད་པ་མ་ཡིན་ཏེ न ह्याश्रयमन्तरेणाश्रितानां क्वचिदवस्थितिरस्ति त.प.290क/292; ཅི་སྟེ་སྒྲ་རྣམས་ནི་རྟག་པའི་ཕྱིར་དུས་ཐམས་ཅད་དུ་གནས་པའི་དོན་དང་ལྷན་ཅིག་དུས་ཐ་དད་པ་མ་ཡིན་ལ अथ मतम्–नित्यत्वाच्छब्दानां सर्वकालमवस्थितेरर्थेन सह [न] भिन्नकालता त.प.41ख/532; व्यवस्थितिः – དོན་ནི་གསལ་བར་བྱེད་ནུས་པ། །རྟག་པ་ཁོ་ནར་གནས་པའི་ཕྱིར། །དེ་རྒྱུ་དོན་ལ་རྟོགས་པ་ཡང་། །ཐམས་ཅད་ལ་ནི་གཏན་དུ་འགྱུར།། अर्थद्योतनशक्तेश्च सर्वदैव व्यवस्थितेः। तद्धेतुरर्थबोधोऽपि सर्वेषां सर्वदा भवेत् ॥ त.स.97क/862; अनुवृत्तिः – འདིའི་དམ་པའི་ཆོས་ནི་དུས་འདི་སྲིད་ཅིག་ཏུ་གནས་པར་འགྱུར་རོ།། एतावदन्तरं कालमस्य सद्धर्मानुवृत्तिर्भविष्यति सू.व्या.243ख/159; अवस्थानम्–ཆོས་བསྟན་པ་རྣམས་གནས་པ देशितानां धर्माणामवस्थानम् श्रा.भू.4क/7; अवस्था – འདོད་ཆགས་བྲལ་བའི་གནས་པ་ནི། །བརྩེ་བའམ་ཡང་ན་ལས་ཀྱིས་ཡིན།། अवस्था वीतरागाणां दयया कर्मणाऽपि वा। प्र.वा.115क/1.195; संश्रितिः – གཞན་ལས་ཚད་མ་གནས་པ་ན། །ཐུག་པ་མེད་པར་མི་འགྱུར་ཏེ།། न चानवस्थितिप्राप्तिरन्यतो मानसंश्रितौ। त.स.107ख/942 3. = འདུག་པ वासः – འགྲུབ་དཀའ་དེ་དང་ལྷན་ཅིག་ཏུ། །གནས་པ་ཉིད་དུའང་མི་བྱའོ།། एभिर्दुरासदैः सार्धं...वासोऽपि नैव कर्तव्यः गु.सि.4ख/10; ནགས་ན་གནས་པ वनवासः अ.क.250क/29.33; ཚངས་པར་སྤྱོད་པ་ལ་གནས་པ ब्रह्मचर्यवासः श्रा.भू.19ख/47; ཚིགས་སུ་བཅད་པ་འདིས་ནི་མཐུན་པའི་ཡུལ་དུ་གནས་པ་སྟོན་ཏོ།། अनेन श्लोकेन प्रतिरूपदेशवासं दर्शयति सू.व्या.187क/84; आवासः – ཁྱིམ་ན་གནས་པ गृहावासः श्रा.भू.5क/8; संवासः – ཆོས་མཐུན་པ་དང་གནས་པ་དང་མཐུན་པ་ཉིད་དང...སྟོན་ཏོ།། सहधार्मिकसंवासानुकूलतां...दर्शयति सू.व्या.222क/130; ལོངས་སྤྱོད་ཅིང་གནས་པ་བཏང་བ संभोगसंवासप्रतिक्षेपः वि.सू.53क/68; निवासः – རྒྱལ་པོའི་ཁབ

ན་འོད་མའི་ཚལ་བྱ་ཀ་ལན་ད་ཀ་གནས་པ་ན་རྟེན་ཅིང་བཞུགས་སོ॥ राजगृहमुपनिश्रित्य विहरति वेणुवने कलन्दकनिवासे अ.श.2क/1; अधिवासः – འབྲོག་དགོན་པ...རི་དྭགས་ཀྱི་རིགས་མང་པོ་གནས་པ अरण्यवनप्रदेशे... विविधमृगकुलाधिवासे जा.मा.145ख/169; परिवासः – དེ་ལ་དགེ་འདུན་གྱིས་ལས་ཀྱི་གནས་པ་བྱིན་ལ་ཟླ་བ་བཞིར་གནས་པར་བྱ एनं ...चतुरो मासान् परिवासयेत् सङ्घो दत्त्वा परिवासं कर्मणा वि.सू.4क/3; གསལ་བ་ཞེས་བྱ་བ་ནི་མངལ་དུ་གནས་པའི་ཕྱིར་རོ॥ पटीयसेति गर्भपरिवासात् त.प.107ख/665; अध्यासः – རང་གི་ངོ་བོ་ཡོད་པ་ན་ལྡོག་པ་ནི་འགལ་བའི་ཆོས་གནས་པའི་ཕྱིར་ཐ་དད་པར་འགྱུར་རོ॥ स्वरूपे सति निवर्तमानविरुद्धधर्माध्यासाद् व्यतिरिक्ता भवेद् प्र.अ.71ख/80; विप्रवासः – དེ་རྣམས་སུ་གནས་པ་ནི་རྣམ་པར་གནས་པ तेषु विप्रवासो विप्रवसनम् बो.प.6क/8; अध्यासनम् – འདི་ནི་དཀའ་ཐུབ་ནགས་ན་གནས་པར་འོས॥ तपोवनाध्यासनयोग्य एषः जा.मा.49क/58; विहृतिः – ཕྱེ་ཞིང་གནས་པ་ལའོ॥ དགེ་སློང་མ་དང་ངོ་॥ संसृष्टविहृतौ भिक्षुण्याः वि.सू.51क/65; विहारः – ཟས་དང་གནས་ནི་མཚུངས་པ་ཡི། །རྩེད་མོ་དང་ནི་གཏམ་དག་མཛེས॥ क्रीडाकथाश्च शोभन्ते तुल्याहारविहारयोः ॥ अ.क.240क/91.18; विहरणम् – ལུས་ནི་གཡོག་ཏུ་བཙོངས་རྣམས་ལ། །རང་དགར་གནས་པ་ག་ལ་ཡོད॥ सेवाविक्रीतकायानां स्वेच्छाविहरणं कुतः ॥ अ.क.74क/7.38; निवसनम् – བུ་གྲྭ་ནགས་ན་གནས་པ་ནི། །རྡུལ་གྱི་གོས་དང་མཚུངས་པ་སྟེ॥ वने निवसनं पुत्र पांशुप्रावरणं समम् । अ.क.249ख/29.30 4. = རབ་ཏུ་གནས་པ पीठम्, प्रतिष्ठा – རྣལ་འབྱོར་གནས་པ་ནི་རབ་ཏུ་གནས་པ་སྟེ योगस्य पीठं प्रतिष्ठा ख.टी.157क/237; प्रतिष्ठा – བརྟན་པ་སྟེ། ཐུག་པ་མེད་པ་ལ་སོགས་པའི་སྐྱོན་གྱིས་མ་གཡོས་པའི་རྩ་བ་གནས་པ་གང་ལ་ཡོད་པ་དེ་ནི་དེ་ལྟ་བུ་ཡིན་ལ दृढा अनवस्थादिदोषैरकम्प्या मूलप्रतिष्ठा यस्य स तथा त.प.225ख/920 5. सन्निवेशः – རྒྱལ་པོ་ཆེན་པོ་འཇིག་རྟེན་གནས་པ་འདི་ནམ་མཁར་གྱུར་པ་ལ། ཚངས་པའི་གཞལ་མེད་ཁང་...གནས་པའི་དུས་དེ་ཡོད་དོ॥ भवति महाराज स समयो आकाशीभूते लोकसन्निवेशे ब्राह्मं विमानं संतिष्ठते शि.स.135क/131 6. = གནས་པ་ཉིད विहारता – སྟོབས་དང་བདེ་བ་ལ་རེག་པར་གནས་སམ बलं च सुखस्पर्शविहारतां च म.व्यु.6288(89ख); स्थिरता – དེ་ལྟ་ན་ཡང་ཤི་བ་ལ་ཡང་གནས་པའི་རླུང་ཡོད་པའི་ཕྱིར་དང तथापि मृतस्यापि स्थिरता वायोरस्तीति प्र.अ.62क/70; स्थायिता – དེས་ན་དེ་ལ་དུས་གཞན་དུ་གནས་པ་མེད་པའི་ཕྱིར ततः कालान्तरस्थायितास्य नास्तीति प्र.अ.53क/60 0. आरम्भः – ལ་ལར་ནི་བརྟན་པར་གནས་པར་རོ॥ क्वचित् स्थैर्यारम्भः त.सि.67क/177; आशयः – གང་གང་དུ། །ཕྱུན་ནི་འཕངས་པ་དེ་དང་དེར། །དཔལ་ནི་གནས་པ་དག་གིས་སེམས॥ यत्र यत्र दृशं जाने तत्र तत्राशयः श्रियः ॥ अ.क.72ख/61.12; आरोहणम् – འོ་ན་དེ་ལྟར་ན་ཡང་དེ་དག་ནི་འགགས་ནས་རིང་དུ་ལོན་པའི་ཕྱིར་གཏན་ནས་མེད་པ་ཉིད་མ་ཡིན་ནམ། ཇི་ལྟར་དེ་ལ་གནས་པར་འགྱུར नन्वेवमपि तेषां चिरनिरुद्धत्वादत्यन्तासत्त्वमेवेति कथं तदारोहणं भवेत् त.प.206क/880; स्थापनम् – སྙིང་རྗེ་དམན་པ་ཉིད་ཕྱིར་ཡང་། །གནས་པའི་འབད་རྩོལ་ཆེན་པོ་མེད॥ मन्दत्वात् करुणायाश्च न यत्नः स्थापने महान् ॥ प्र.अ.130क/139; •पा. 1. विहारः – བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་རྣམས་ཀྱི་ས་དག་ནི་གནས་པ་ཞེས་བྱའོ॥ बोधिसत्त्वानां भूमयो विहारा इत्युच्यन्ते सू.व्या.255ख/175; བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའི་གནས་པ་བཅུ་གཉིས द्वादशबोधि-

सत्त्वविहाराः बो.भू.164ख/217; བཅུ་གསུམ་པ་ནི་དེ་བཞིན་གཤེགས་པའི་གནས་པ་སྟེ त्रयोदशश्च ताथागतो विहारः बो.भू.164ख/217; དེ་ནས་ཚངས་པའི་གནས་རྣམས་དྲན་པར་བྱ་སྟེ ततो ब्रह्मविहारान् स्मरेत् वि.प्र.31ख/4.5; ཏིང་ངེ་འཛིན་གྱི་བདེ་བ་ལ་གནས་པ་ཐོབ་ནས समाधिसुखविहारं प्राप्य ल.अ.80ख/28 **2.** स्थितिः **i.** संस्कृतधर्मस्य लक्षणविशेषः – སྐྱེ་བ་དང་རྒ་བ་དང་གནས་པ་དང་མི་རྟག་པ་ཞེས་བྱ་བ་བཞི་པོ་འདི་དག་ནི་འདུས་བྱས་ཀྱི་མཚན་ཉིད་དག་ཡིན་ནོ॥ जातिः, जरा, स्थितिः, अनित्यता चेति चत्वारीमानि संस्कृतलक्षणानि त.प.86ख/625; གནས་པས་གནས་པར་བྱེད་དོ॥ स्थितिः स्थापयति त.प.86ख/625 **ii.** समाधिपर्यायः – གསུམ་པ་ལ་ལྔ་བཏང་སྙོམས་དང་། །དྲན་དང་ཤེས་བཞིན་བདེ་དང་གནས॥ तृतीये पञ्च तूपेक्षा स्मृतिः प्रज्ञा सुखं स्थितिः। अभि.को.24क/1140; གནས་པ་ནི་ཏིང་ངེ་འཛིན་གྱི་རྣམ་གྲངས་ཡིན་ཏེ समाधिपर्यायो हि स्थितिः अभि.भा.69क/1141 **3.** वृत्तिः – གནས་རྣམ་པ་གཉིས...ཚད་ཡོད་པར་གནས་པ་ནི་ཡི་གེ་རྣམས་སོ॥ ཚད་མེད་པར་གནས་པ་ནི་མིང་དང་ཚིག་དག་གོ॥ द्विविधां वृत्तिं...परिमाणवृत्तिं च व्यञ्जनानाम्, अपरिमाणवृत्तिं च नामपदयोः सू.व्या.167ख/59 **4.** स्थानम्, त्रिवर्गान्तर्गतवर्गविशेषः – क्षयः स्थानं च वृद्धिश्च त्रिवर्गो नीतिवेदिनाम्॥ अ.को.2.8.19; समत्वेनात्र तिष्ठतीति स्थानम् अ.वि.2.8.19 **5.** प्रतिष्ठा – འབྱུང་བ་ཆེན་པོ་བཞི་དག་རྒྱུར་བྱས་པ་ནི་སྐྱེད་པ་དང་རྟེན་པ་དང་གནས་པ་དང་རྟོན་པ་དང་འཕེལ་བར་བྱེད་པའི་རྒྱུ་ཡིན་པའི་ཕྱིར་རོ॥ चत्वारि महाभूतान्युपादाय जननसंनिश्रयप्रतिष्ठोपस्तम्भोपबृंहणहेतुत्वेन अभि. स.भा.3क/3; •*ना.* **1.** वासवः, ग्रामः – དེའི་ཚེ་རྡོ་ཅན་ཞེས་བྱ་བའི་ཡུལ་གྱི་མཐའ་ན་གནས་པ་ཞེས་བྱ་བའི་གྲོང་ན་ཁྱིམ་བདག་སྟོབས་ཀྱི་སྡེ་ཞེས་བྱ་བ... ཞིག་འདུག་སྟེ [तस्मिन् समयेऽश्मकनगरान्तके वासव]-ग्रामके बलसेनो नाम गृहपतिः प्रतिवसति वि.व.251ख/2.154; द्र. ནོར་ལས་བྱུང་བའི་གྲོང་། **2.** वत्सः – ཀུན་ཏུ་རྒྱུ་གནས་པ་དང་རུས་མཐུན་པ वत्ससगोत्रः परिव्राजकः अभि.भा.89क/1210; •*वि.* वासी – བཱ་རཱ་ཎ་སཱིར་གནས་པ वाराणसीवासी अ.क.145ख/14.79; वासिनी – ལྷ་ནི་ཤིང་ལ་གནས་པ་དག॥ देवता वृक्षवासिनी अ.क.75ख/62.20; निवासी – བདག་ནི་རྒྱལ་པོ་འདིའི་ཡུལ་ན་གནས་པ་མ་ཡིན་པ नाहमस्य राज्ञो विषये निवासी वि.व.136क/1.25; མཉན་དུ་ཡོད་པ་ན་གནས་པའི་སྐྱེ་བོ་རྣམས श्रावस्तीनिवासिनः अ.श.149ख/139; निवासिनी – དེའི་ཚེ་དེའི་དུས་ན་ཕུག་དེ་ན་གནས་པའི་ལྷར་གྱུར་པ་གང་ཡིན་པ་དེ་ནི་མི་སྡུག་པ་འདི་ཡིན་ཏེ योऽसौ तेन कालेन तेन समयेन गुहानिवासिनी देवता बभूव, अयं विरूपः सः अ.श.274क/252; आवासिकः – ཇེ་དང་པོར་དགེ་སློང་གནས་པ་དང་གནུག་མར་གནས་པ་རྣམས་ཀྱིས पूर्वं तावदावासिकनैवासिकैर्भिक्षुभिः वि.व.138ख/2.115; विहारी – ལྷན་ཅིག་གནས་པ་དང་ཉེ་གནས་རྣམས་ཀྱིས་ཀུང་མཐུན་པར་བསྔགས་པ सार्धं विहार्यन्तेवासिकैश्चानुसंवर्णितम् वि.व.150ख/1.39; སྟོང་པ་ཉིད་ལ་གནས་པ शून्यताविहारी ल.वि.206क/309; བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ...བྱམས་པ་ལ་གནས་པ་སྙིང་རྗེ་ལ་གནས་པ་དགའ་བ་ལ་གནས་པ་བཏང་སྙོམས་ལ་གནས་པ बोधिसत्वः... मैत्रीविहारी करुणाविहारी मुदिताविहारी उपेक्षाविहारी अ.सा.327क/184; स्थायी – ཡོན་ཏན་དྲི་བཟང་སྒྲོ་བའི་མེ་ཏོག་རྣམས་ནི་སྐད་ཅིག་གནས་པའི་ཚོགས॥ क्षणस्थायी वर्गः सुरभिगुणसर्गः सुमनसाम् अ.क.35ख/54.14; དུས་གཞན་དུ་གནས་པ कालान्तरस्थायी त.प.152क

/757; མང་དུ་ཡོངས་འདྲིས་ལུས་ཀྱི་ཚོགས་ནི་བརྟན་གནས་མིན།། चिरस्थायी नायं बहुपरिचयः कायनिचयः अ.क.186क/80.59; སྡོམ་པ་ལ་གནས་པ संवरस्थायी श्रा.भू.22क/53; अवस्थायी–རང་བཞིན་རྟག་ཏུ་གནས་པ་འཇིག་པ་མེད་པ་གང་ཡིན་པ་དེ་ནི་རྟག་པ་ཞེས་བྱ་སྟེ यः स्वभावः सदाऽवस्थायी, न विनश्यति; स नित्य उच्यते त.प.223ख/163; དུས་གཞན་དུ་གནས་པ कालान्तरावस्थायी त.प.4ख/463; स्थाता – གནས་པའི་རང་བཞིན་ཉིད་དེ་ལྟར་ཁྱད་པར་གཞན་སྤངས་པའི་སྒོ་ནས་བརྗོད་ཀྱི स्थातुरेव हि स्वभावस्तथा भेदान्तरप्रतिक्षेपेणोच्यते त.प.323क/915; अधिष्ठानी – གནས་དང་གནས་པ་དང་རྟེན་དང་བརྟེན་པ་འདི་འཁར་གཞོང་དང་རྒྱ་ཤུག་དག་བཞིན་དུ་ཐ་དད་པར་མི་དམིགས་པར་འགྱུར་བས་ནི་འདིར་འདི་རབ་ཏུ་སྐྱེ་བར་འགྱུར་[སྐྱེས་པར་གྱུར་] རོ་ཞེས་བྱ་བ་དེ་ལྟར་མི་འགྱུར་རོ།། न ह्यधिष्ठानाधिष्ठानिनोराधाराधेययोः कुण्डबदरयोर्वि[योरिव वि]वेकेनानुपलक्षणे सत्येवं भवति–'इदमिह प्रादुर्भूतम्' इति वा.टी.90ख/48; निवेशी – ཡུལ་ཐག་རིང་པོ་ན་གནས་པའི་གནས་སྐབས་ན་སྣང་བ་གང་ཡིན་པ यत् खलु दूरदेशनिवेशिदशायामवभासते प्र.अ.16ख/19; स्थिरः –གལ་ཏེ་གནས་པའི་རླུང་སེམས་པའི་རྒྱུ་མ་ཡིན་ན यदि स्थिरो वायुर्न कारणं चेतनायाः प्र.अ.62क/70; स्थावरः म.व्यु.7111(101ख); तत्परः – སྒྲུབ་པོ་དེ་ཉིད་ལ་གནས་པས། །བརྟུལ་ཞུགས་མེད་པར་འགྲུབ་པར་འགྱུར།། व्रतं विनापि सिध्यन्ति साधकास्तत्त्वतत्पराः। गु.सि.3क/7; •उ.प. स्थः–ཡུལ་གཞན་ན་གནས་པ देशान्तरस्थः प्र.अ.82क/90; དཀའ་ཐུབ་ཀྱི་ནགས་ཚལ་ན་གནས་པ་རྣམས་ལ तपोवनस्थानाम् जा.मा.30ख/36; ཁྱིམ་ན་གནས་པ गृहस्थः जा.मा.16ख/42; དེ་ཡི་ཕྱག་ན་བདེ་གཤེགས་གོ་འཕང་ནི། །གནས་པ་ཡིན तेषां करस्थं सुगतपदम् प्र.सि.36क/86; སངས་རྒྱས...ནམ་མཁར་གནས་པ་རྣམས गगनस्थान्...बुद्धान् वि.प्र.49क/4.51; ཉི་མའི་གདན་ལ་གནས་པ सूर्यासनस्थाः वि.प्र.52ख/4.73; ཏིང་ངེ་འཛིན་ལ་གནས་པ समाधिस्थः वि.प्र.139क/3.75; संस्थः – ཡོགས་གཉིས་གནས་པ་དག་གིས་ཀྱང་།། पार्श्वद्वितयसंस्थाश्च त.स.11क/133; व्यवस्थः –གཉིས་སུ་གནས་ཞེས་བྱ་བ་ནི། ཡི་གེ་དང་དོན་དུ་རྣམ་པར་གནས་པའོ།། द्वयव्यवस्थ इति व्यञ्जनार्थव्यवस्थः सू.व्या.130ख/3; वर्ती–མདུན་ན་གནས་པའི་རྣམ་པ་ཉམས་སུ་མྱོང་བ་ཙམ་གྱིས་ནི་དོན་དང་ལྡན་པ་མ་ཡིན་ནོ།། न खलु पुरोवर्त्याकारानुभवादेवार्थवत्ता प्र.अ.180क/195; སྡུག་བསྔལ་ཆུ་བོར་གནས་འདི་དག།། एषां दुःखौघवर्तिनाम् बो.अ.37क/9.164; སྲིད་གསུམ་གནས་པའི་སེམས་ཅན་རྣམས།། सत्त्वांस्त्रिभववर्तिनः प्र.सि.32ख/77; वर्तिनी – དཔྲལ་བའི་ངོས་ལ་གནས་པ་དག།། ललाटतटवर्तिनी अ.क.339ख/44.39; གླང་པོ་ལ་སོགས་པའི་ལུས་ལ་གནས་པའི་ཡིད་ཀྱི་བློ་ཁྱད་པར་དུ་འཕགས་པར་འགྱུར་གྱི गजादिदेहवर्तिनी च मनोमतिरतिशयवती प्राप्नोति त.प.94ख/642; भाक् – སྦྱིན་པ་ལ་བརྩོན་བརྩོན་འགྲུས་རྒྱ་ཆེའི་གནས།། दानोद्यतानां पृथुवीर्यभाजाम् अ.क.53ख/6.1; गमः – ལུས་འདི་ལ་རླུང་... གྱེན་དུ་འགྲོ་བའི་རླུང་དང་... ལྟོ་ན་གནས་པ་དང अस्मिन् काये वायुः ...ऊर्ध्वंगमा वायवः...कुक्षिंगमाः शि.स.137ख/133; निष्ठः – ཁྲ་བོ་ལ་སོགས་པ་གསལ་བ་མཐའ་དག་ལ་གནས་པ་ཉིད་ཀྱིས शावलेयादिसकलव्यक्तिनिष्ठतया प्र.अ.177क/191; प्रतिष्ठः – བརྗོད་པར་བྱ་བ་གཞན་ལ་གནས་པའི་ཚིག་གིས་བརྫུན་ནོ།། वाच्यान्तरप्रतिष्ठेन वाक्येन मृषा वि.सू.21ख/26; स्थानम् – ལ་ལར་ནི་ཚུལ་ཁྲིམས་ཀྱིས་གནས་པར་རོ།། क्वचिच्छीलस्थानः त.सि.67क/177;

निलयः – ལ་ལར་ནི་གཅིག་པུ་འདོད་ཆགས་དང་བྲལ་བར་གནས་པར་སོ།། क्वचिदपि विरागैकनिलयः त.सि.67क/177; आश्रयः – དེ་ལ་གནས་ཆེན་པོ་ནི་སེམས་བསྐྱེད་པ་ལ་གནས་པའི་ཕྱིར་རོ།། तत्र महाश्रया चित्तोत्पादाश्रयत्वात् सू.व्या.143क/21; • कृ. 1. व.का.कृ. वर्तमानः – བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའི་ས་བརྒྱད་པ་ལ་གནས་པ अष्टम्यां बोधिसत्त्वभूमौ वर्तमानः र.व्या.75ख/3; མཐོང་བའི་ལམ་ལ་གནས་པ་ན་གཞན་གྱི་སེམས་ཤེས་པ་མངོན་དུ་མི་བྱེད་པས दर्शनमार्गे वर्तमानः परचित्तज्ञानं न सम्मुखीकरोति अभि.स्फु.250ख/1055; प्रवर्तमानः – གཏན་དུ་གནོད་པར་བྱེད་པར་གནས་པ་དག་ལ་ཡང་བརྩེ་བ་ལ་སོགས་པ་ཆུང་བར་འགྱུར་བ་མ་ཡིན་ནོ།། सततापकारप्रवर्तमानेष्वपि न कृपादयः शिथिलतां भजन्ते प्र.अ.99ख/107; संवसमानः – བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའི་སྤྱོད་པ་ལ་གནས་པ बोधिसत्त्वचर्यायां संवसमानः शि.स.19क/18; तिष्ठन् – གཞན་དོན་འཁོར་བར་གནས་ཀྱང་ནི། །སྙིང་རྗེ་ཅན་དག་ཅི་སྟེ་སྐྱོ།། तिष्ठन् परार्थं संसारे कृपालुः केन खिद्यते ॥ बो.अ.21क/7.28; विहरन् – དེ་ལྟར་རྒ་དང་འཆི་མེད་པ། །བཞིན་དུ་སྤྱོད་པས་གནས་རྣམས་ལ།། अजरामरलीलानामेवं विहरतां सताम् बो.अ.37क/9.166 2. भू.का.कृ. स्थितः – མཚན་མོ་རྒྱལ་སྲས་ཁང་བཟང་ན། །གནས་པས་གཏམ་དེ་ཐོས་གྱུར་ནས།། इति हर्म्यस्थितः श्रुत्वा रात्रौ राजसुतः कथाः। अ.क.220क/24.137; ཁྱིམ་དུ་གནས་ཏེ गृहे स्थितः गु.सि.3ख/8; སྲིད་པ་བར་མ་ལ་གནས་པས་བོར་བིན་ཏེ अन्तराभवस्थितेन तु त्यक्तानि अभि.स्फु.173क/918; ལྷུམས་ན་གནས་པས गर्भस्थितेन अ.क.209ख/24.10; བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའི་ས་གསུམ་པ་ལ་གནས་པ बोधिसत्त्वः तृतीयायां बोधिसत्त्वभूमौ स्थितः द.भू.196क/19; ཁྱོད་ཀྱི་བཀའ་ལ་བདག་གནས་སོ།། स्थितोऽहं तव शासने अ.क.161ख/72.57; རྡོ་རྗེའི་ཐེག་པར་གནས་པ་རྣམས་ལ वज्रयाने स्थितानाम् वि.प्र.154ख/3.103; अवस्थितः – སྐད་ཅིག་གནས་པའི་རང་བཞིན་གང་། །དངོས་པོ་སྐད་ཅིག་མ་རུ་བརྗོད།། क्षणावस्थितरूपं हि वस्तु क्षणिकमुच्यते। त.स.16क/179; འཆི་བའི་སྲིད་པ་ལ་གནས་པས་དེ་དག་དོར་བས मरणभवावस्थितो हि तानि त्यज्यति अभि.स्फु.173क/918; व्यवस्थितः – དེ་དབྱེ་ཐོས་པའི་དབྱེ་བ་ལའང་། །ཐོས་པ་པོ་ལའང་གནས་པ་ཡིན།། तद्भेदाच्छ्रुतिभेदश्च प्रतिश्रोतृव्यवस्थितः ॥ त.स.79क/735; རྒྱུད་ཀྱི་དང་པོར་གང་གནས་པ།། तन्त्रादौ यद् व्यवस्थितम् गु.सि.6ख/14; མདུན་ན་གནས་པའི་བ་ལང་ལ་སོགས་པའི་འདྲ་བའི་ངོ་བོ་ཉིད་དུ་རྟོགས་པ पुरोव्यवस्थितं गवादिसदृशरूपेण प्रतीयते प्र.अ.156क/170; समवस्थितः – གང་ཕྱིར་དངོས་རྣམས་བྱ་བ་ཡི། །མཚན་ཉིད་དུ་ནི་གནས་པ་ཡིན།། व्यापारलक्षणा यस्मात् पदार्थाः समवस्थिताः ॥ त.प.354क/427; संस्थितः – མཐོ་རིས་གནས་པ་རྗེས་དྲན་ཞིང་།། अनुस्मृत्य सुगतिसंस्थितम् स.दु.125क/224; དེ་ཡི་ནུས་པའམ་ནུས་མེད་པ། །ངོ་བོ་ཉིད་ཀྱིས་གང་གནས་པ།། तस्य शक्तिरशक्तिर्वा या स्वभावेन संस्थिता। प्र.अ.183ख/198; བཟང་པོ་དེ་ཉིད་གནས་པ་ཡང་། །མཁའ་དབྱིངས་ཞེས་བྱའི་སྙིང་བྲལ་ལ།། तदेव संस्थितं दिव्यं खधात्वाख्ये निरामयम्। गु.सि.6क/13; आस्थितः – གདོང་ལྔ་སེང་ཊ་དག་ལ་གནས་པ་གང་།། पञ्चाननस्यन्दनमास्थितो यः अ.क.254क/93.63; प्रतिष्ठितः – བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ...བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའི་ས་ལེགས་པའི་བློ་གྲོས་ལ་གནས་པ་དག་གིས बोधिसत्त्वैः साधुमतीबोधिसत्त्वभूमौ प्रतिष्ठितैः द.भू.272ख/63; དེ་ལྟར་ཆོས་ཐམས་ཅད་ནི་རྟེན་མེད་པའི་རྩ་བ་ལ་གནས་པའོ།། इति

ह्यप्रतिष्ठानमूलप्रतिष्ठिताः सर्वधर्माः शि.स.146ख/140; གང་ཡང་སེམས་ཅན་ཐམས་ཅད་ལ། །བདུད་དང་བགེགས་སུ་གནས་པ་རྣམས།། ये चापि सर्वलोकेषु मारविघ्नाः प्रतिष्ठिताः। ज्ञा.सि.38ख/97; उपविष्टः – མདུན་ན་གནས་པ་དེ་ལ་ནི།། उपविष्टस्य तस्याग्रे अ.क.238ख/27.44; निविष्टः – གང་ཕྱིར་ཇི་ལྟར་དོན་བདག་དེ། །ཤེས་ལ་གནས་པ་དེ་ལྟ་བུར། །འདི་ནི་དེ་ལྟར་གནས་སོ་ཞེས། །ངེས་བྱེད་བདག་ཉིད་རིག་པ་ཡིན།། यस्माद् यथा निविष्टोऽसावर्थात्मा प्रत्यये तथा। निश्चीयते निविष्टोऽसावेवमित्यात्मसंविदः ॥ प्र.वा.131ख/2.348; संनिविष्टः – བརྩེ་དང་ལྡན་པ་ངོ་ཚ་ཡོན་ཏན་གནས།། दयान्वितो ह्रीगुणसंनिविष्टः सू.अ.248क/165; निषण्णः – བྱང་གི་སྒོ་ལ་ནི། །འཇིགས་པའི་གཟུགས་ཅན་མ་ཉིད་གནས།། उत्तरे द्वारे निषण्णा घोररूपिणी हे.त.24क/78; སུ་ཞིག་འདི་ལྟར་གནས को न्वयं निषण्णः ल.वि. 69क/90; आश्रितः – གནས་མེད་ན་གནས་པར་མི་འགྱུར न ह्याश्रयाभावे आश्रितं भवति अभि.स.भा.6ख/6; སེམས་ཅན་ཀུན་ལ་གནས་པ་སྟེ།། आश्रिता सर्वभूतेषु ल.अ.159ख/108; निःश्रितः – གནས་པས་གནས་པ་ལ་མ་ཞུས་པར་བྱ་བ་མི་བྱའོ།། नानवलोक्य निःश्रयं निःश्रितः करणीयं कुर्यात् वि.सू.3क/2; གནས་པ་ལ་གནས་ཀྱིས་འབད་པར་བྱའོ།། निःश्रिते निःश्रयः प्रयतेत वि.सू.85ख/103; संनिश्रितः – འདུ་བྱེད་ལ་གནས་པའི་སེམས་དང་པོ་ནི་རྣམ་པར་ཤེས་པའོ།། संस्कारसंनिश्रितं प्रथमं चित्तं विज्ञानम् द.भू.220क/31; उषितः – བདག་གི་སྐྱེ་བ་ཟད་དོ།། ཚངས་པར་སྤྱོད་པ་ལ་གནས་སོ།། क्षीणा मे जातिः, उषितं ब्रह्मचर्यम् ल.अ.80क/27; མཚམས་གཅིག་པ་ཉིད་ཡིན་ན་དེར་གནས་གཞན་དུ་གནས་པ་རྣམས་ཀྱང་བཏིང་བའི་ཕྱིར་གནས་པ་ཉིད་ཡིན་ནོ།། उषितत्वमेकसीमतायां तत्रावासान्तरोषितानामास्तारे वि.सू.66ख/83; अध्युषितः – ལྷ་གང་དག་ཤིང་ལྗོན་པ་འདི་ལ་གནས་པ या देवताऽस्मिन् वृक्षेऽध्युषिता वि.सू.30क/38; བརྟན་པས་ནོར་འཛིན་གནས་པ་ཡི། །ཕྱོགས་སུ་འགྲོ་བར་རབ་ཏུ་བརྩམས།། धीरः प्रचक्रमे गन्तुं धनदाध्युषितां दिशम् ॥ अ.क.110क/64.259; व्युषितः – དེ་ནས་ཤིང་མྱ་ངན་འཚང་དེ་ལ་གནས་པའི་ལྷ་དེས अथ या देवता तस्मिन्नशोकवृक्षे व्युषिता, सा अ.श.115ख/105; वृत्तः – གང་དག་བརྟན་པའི་རྟེན་གནས་པ། །ཅི་ཞིག་གིས་ནི་ཁྱད་པར་བྱས།། ये वा स्थिराश्रये वृत्ताः कथञ्चिदपि चाहिताः। त.स.124ख/1079; विहृतः – དེ་ལ་ཚངས་པའི་གནས་པ་དག་གིས་གནས་པ་ཞེས་བྱ་བ་ནི་རྒྱུའོ།། तत्र ब्राह्मयैर्विहृतो विहारैरिति हेतुः सू.व्या.214क/119; विश्रान्तः – ཚུལ་དང་ཐབས་ལ་གནས་པའི་བློས།། विनयोपायविश्रान्तया धिया अ.क.315ख/40.97; आलीनः – ལུས་ཅན་ཀུན་ལ་གནས་པ आलीनं सर्वदेहिनाम् ल.अ.160ख/110; निमग्नः – རང་བཞིན་ཙམ་ལ་གནས་པ་ལ། །རྟེན་དང་བརྟེན་པ་སོགས་རྟོགས་[? རྟོག་] མིན།། स्वरूपे हि निमग्नस्य नाधारादिविकल्पनम् ॥ प्र.अ.80ख/88; रतः – ཚིག་གི་རྩོད་ལ་རྟག་ཏུ་གནས།། वाग्वादेषु सदा रताः गु.सि.4क/8; निरतः – དེ་ནི་དགའ་ལྡན་ལྷ་ཚོགས་ན། །གནས་པ་ཐོས་ནས་མི་ཡི་བདག།། श्रुत्वा तां तुषिते देवनिकाये निरतां नृपः। अ.क.158क/17.12; रूढः – མངལ་ན་གནས་པ गर्भे रूढम् वि.प्र.227क/2.17; ལུས་སྲ་ཁྱོད་ཀྱི་ཡན་ལག་རྣམས། །འཇམ་པ་ཉིད་དུ་གནས་པ་བརྫུན།། तव तन्वङ्गि मिथ्यैव रूढमङ्गेषु मार्दवम्। का.आ.326क/2.126; अधिरूढः – གླང་པོ་ལ་གནས་ཐང་སྐུ་ཡི། །སྔོན་དུ་རྒྱལ་པོ་རབ་ཏུ་སོང་།། राजा गजाधिरूढस्य पटस्य प्रययौ पुरः ॥ अ.क.309ख/40.28; आरूढः – འཁྲུལ་འཁོར་ལ་གནས

པ यन्त्रारूढः प्र.अ.11ख/13; དམ་བཅའ་བ་ལ་གནས་པ प्रतिज्ञारूढः वि.प्र.155क/3.104; समारूढः – [ཡང་ས]འདི་ལ་གནས་པའི་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་རྣམས་ནི इमां पुनर्भूमिं समारूढस्य बोधिसत्त्वस्य द.भू.241ख/43; अध्यासितः – རྣམ་པར་ཤེས་པ་ལས་གུད་ན་རང་ཡོད་པས་གནས་པའི་གཟུང་བ་ཡོད་པར་ལྷག་པར་ཆགས་པ་ནི གཟུང་བའི་འཛིན་པའོ॥ विज्ञानात् पृथगेव स्वसन्ताना[? स्वसत्तया]ध्यासितं ग्राह्यमस्तीत्यध्यवसायो ग्राह्यग्राहः त्रि.भा.165ख/82; म.व्यु.7512(107क); आसीनः – ལ་ལར་ནི་མི་གཙང་བར་གནས་པར་རོ॥ क्वचिद् विष्टासीनः त.सि.67ख/177; དེ་ཡི་བསོད་ནམས་བཀར་གནས་པའི། །མི་ཡིས་མཐོ་རིས་ཀུན་གང་བ॥ तत्पुण्यशासनासीनैः स्वर्गमापूरितं नरैः। अ.क. 239ख/91.7; लग्नः – ཆུ་འཛིན་ངོས་ཀྱི་ཕང་ན་ཆགས ['གནས།' इत्यपि पाठः]། །མཚམས་ཀྱི་ཉི་འོད་གོས་དང་ལྡན॥ पयोधरतटोत्सङ्गलग्नसन्ध्यातपांशुका। का. आ.321क/1.84; लीनः – གང་གིས་དབང་ཕྱུག་ལུས་ངན་བུའི། །མཛོད་ན་གནས་པའང་བྲམ་པར་བྱེད॥ ऐश्वर्यं यः कुबेरस्य कोशलीनं न्यवेदयत्॥ अ.क.74क/62. 3; आसन्नः – ལྷག་པར་འབྲལ་བའི་རྒ་གདོང་མེ་ནི་རབ་འབར་རྟག་ཏུ་གནས་པ་ལ། །སྐྱེས་བུ་རྣམས་ནི་སྒྲོལ་ལམ་ཆགས་བྲལ་དྲག་པོ་ཁོ་ན་བསྟམས་པའི་སྟེགས॥ नित्यासन्नप्रबलविरहप्रज्ज्वलद्वाडवाग्नौ पुंसां सेतुस्तरणशरणे तीव्रवैराग्यमेव॥ अ.क.102क/10.25; गतः – འཛམ་གླིང་ན། །གནས་པའི་མི་ཀུན जम्बुद्वीपगता नराः बो.अ.6क/2.56; དུར་ཁྲོད་ས་ལ་གནས་པ་ཞེས་པ དུར་ཁྲོད་ཀྱི་སར་གནས་པ चितिभुवनगतं श्मशानभूमिगतम् वि.प्र.72ख/4.135; གཞན་བཞིན་ནོ་ཞེས་བྱ་བ ནི་སྒྲ་ལས་གསལ་བར་བྱེད་པར་མངོན་པར་འདོད་པ་ལྟེ

བའི་རླུང་ལ་གནས་པ་ལས་གཞན་བཞིན་ཏེ अन्यवदिति शब्दव्यञ्जकाभिमतकोष्ठवायुगतादन्यस्येव त.प. 187क/835; समाक्रान्तः – བརྟན་པའི་ངོ་བོར་གནས་པ་ཡི། །དངོས་ཉིད་སྐད་ཅིག་པ་མ་ཡིན॥ स्थिररूपसमाक्रान्तं वस्त्वेवाक्षणिकं पुनः॥ त.स.16क/179; अवस्थापितः – དེ་ལ་གནས་པའི་འཇིག་རྟེན་ནི། །ཕ་རོལ་ཇི་ལྟར་དེ་ཉིད་ཀྱིས॥ तत्रावस्थापितो लोकः परो वा तात्त्विकः कथम्॥ त.स.68ख/638; परिनिष्ठितः – ཞེས་གསུངས་ཏེ། དེ་གནས་པ་ཡིན་ནོ॥ इति, तत् परिनिष्ठितम् बो.प.98क/64; निक्षिप्तः – མེད་པར་མོས་པའི་ཕྱོགས་སུ་གནས་པ [अ]सदधिमोक्षपक्षनिक्षिप्ताः प्र.अ.199ख/556; विहितः – སྣོ་གསེབ་ཀྱི་བུ་ག་ན་གནས་པའི་ནོར་བུའི་དབྱིབས་ཀྱི་ཁྱད་པར་ཅན कुञ्चिकाविवरविहितमणिसंस्थानविशेषायाम् प्र.अ.204ख/218; वेष्टितः – ཇི་ལྟར་མདོག་ངན་པད་མའི་ཁོང་གནས་པ། །མཚན་སྟོང་གྱིས་འབར་དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་ནི॥ यथा विवर्णाम्बुजगर्भवेष्टितं तथागतं दीप्तसहस्रलक्षणम्। र.वि.59क/60; उज्झितः – དེ་བཞིན་ཉོན་མོངས་གོས་རུལ་གྱིས་གཏུམས་འཁོར་བའི་ལམ་ན་གནས་པའི་ཁམས॥ तद्वत् क्लेशविपूतिवस्त्रनिवृतं संसारवर्त्मोज्झितं...धातुम् र.वि.60क/65 3. वास्तव्यम् – ཙོམ་བརྩོན་ཡི་གེ་ཨ་ཞེས་བསྒྲགས། །བྲམ་ཟེ་ལས་ནི་རབ་ཏུ་བྱུང་། །གྲོང་ཁྱེར་གནས་བཅས་གནས་པ་སྟེ། །དེ་བཞིན་ཚེ་ནི་བརྒྱད་ཅུར་འཚོ॥ अकाराख्यो यतिः ख्यातो द्विजः प्रव्रजितस्तथा। साकेतपुरवास्तव्यः आयुषाशीतिकस्तथा॥ म.मू.325ख/510.

གནས་པ་ན प्रतितिष्ठन्ती – དགེ་སློང་ཕྲེད་པ་སྐྱེ་བ་ན ཆོས་གོས་ཀྱི་ཕྱིར་དང་། བསོད་སྙོམས་ཀྱི་ཕྱིར་དང་། མལ་ཆ་དང་སྨན་གྱི་ཕྱིར་སྐྱེའོ॥ གནས་པ་ན་གནས་སོ॥ ची-

वरहेतोर्भिक्षोस्तृष्णोत्पद्यमाना उत्पद्यते, प्रतितिष्ठन्ती प्रतितिष्ठति ...पिण्डपातहेतोः, शय्यासनहेतोरिति अभि. भा.9क/894; वर्तमानः लो.को.1372.

གནས་པ་རྣམ་པ་གཉིས द्विविधा स्थितिः – 1. རྒྱུན་གནས་པ प्रबन्धस्थितिः, 2. མཚན་ཉིད་གནས་པ लक्षणस्थितिः ल.अ.69क/18.

གནས་པར अवस्थातुम् – གནས་པར་མི་ནུས་པ་ཉིད་ཡིན་ན अशक्यतायामवस्थातुम् वि.सू.64ख/81; वस्तुम् – དེ་བས་བདག་ནི་བས་མཐའ་དབེན་པར་གནས་པར་འཚལ།། इच्छामि तेन विजनेषु वनेषु वस्तुम् जा.मा.107क/124; संवसितुम् – བདག་ངན་སོང་གཅིག་ཏུ་ཡང་ཕྱི་མའི་མཐའི་མུའི་བསྐལ་པར་གནས་པར་བརྩོན་པར་བྱའོ།། व्यवस्याम्यहमेकैकस्मिन्नपायेऽपरान्तकोटीगतान् कल्पान् संवसितुम् शि.स.154क/148.

གནས་པ་ཅན • *वि.* अवस्थायी – དུས་གཞན་དུ་གནས་པ་ཅན་རང་གི་རྟེན कालान्तरावस्थायिनं स्वमाश्रयम् त.प.285ख/282; • *उ.प.* अवस्थः – དེར་ནི་ཕན་ཚུན་ཉེ་བར་འགྲོ་བ་ལ་སོགས་པའི་རྟེན་བདག་ཉིད་ཇི་ལྟ་བའི་རྐྱེན་རྣམས་ཀྱིས་རུང་བའི་ཡུལ་ལ་སོགས་པར་གནས་པ་ཅན་སྐྱེས་པ་དེ་དག तत्र यथास्वं प्रत्ययैः परस्परोपसर्पणाद्याश्रयैर्ये योग्यदेशाद्यवस्था जातास्ते हे.बि.245ख/61.

གནས་པ་མཆོག *पा.* परमो विहारः – དེ་ལ་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའི་གནས་པ་མཆོག་གང་ཞེ་ན तत्र कतमो बोधिसत्त्वस्य परमो विहारः बो.भू.166क/220.

གནས་པ་འཛིན་པ *पा.* स्थितस्थापकः, संस्कारभेदः – འདུས་བྱས་པ་ནི་རྣམ་པ་གསུམ་སྟེ། ཤུགས་དང་བག་ཆགས་དང་གནས་པ་འཛིན་པའོ།། त्रिविधः संस्कारः–वेगः, भावना, स्थितस्थापकश्च त.प.285क/282.

གནས་པ་ཉིད 1. संवासता – དུལ་བར་གནས་པ་ཉིད་དང་དགོས་པ་རྗེས་སུ་སྒྲུབ་པ་ལ་ཡང་ངོ་།། विनीतसंवासतायाम्। प्रयोजनानुष्ठाने वि.सू.3क/2; उषितत्वम् – གནས་པར་ཁས་མ་བླངས་པས་གནས་མི་གཏོང་ན་གནས་པ་ཉིད་ཡིན་ནོ།། उषितत्वमनुपगतस्य स्थानामोक्षे वि.सू.63ख/80; མཚམས་ཕྱུང་བ་ཉིད་ཡིན་ན་དེར་གནས་གཞན་དུ་གནས་པ་རྣམས་ཀྱང་བཏིང་བའི་ཕྱིར་གནས་པ་ཉིད་ཡིན་ནོ།། उषितत्वमेकसीमतायां तत्रावासान्तरोषितानामास्तारे वि.सू.66ख/83; विहारित्वम् – འདུ་འཛི་ཐག་བསྲིངས་པ་ནི་གང་གཅིག་ཏུ་གནས་པ་ཉིད་དེ संसर्गदूरीकरणं यदद्वितीयविहारित्वम् अभि.स्फु.161क/892; स्थितिता – ཆོས་གནས་པ་ཉིད धर्मस्थितिता म.व्यु.1719(38क); निष्ठता – ཁྲ་བོ་ལ་སོགས་པ་གསལ་བ་མཐའ་དག་ལ་གནས་པ་ཉིད་ཀྱིས शावलेयादिसकलव्यक्तिनिष्ठतया प्र.अ.177क/191 2. वृत्तिरेव – འདི་ལྟར་དེའི་ལྟོས་པ་ནི་དེ་ལྟར་གནས་པ་ཉིད་ཡིན་གྱི यतस्तथावृत्तिरेव तस्यापेक्षा त.प.226ख/168; अवस्थित एव – དེ་ལྟ་བས་ན་འབྲེལ་པ་རྟག་ཏུ་གནས་པ་ཉིད་ཡིན་ནོ།། तस्मान्नित्यावस्थित एव सम्बन्ध इति त.प.154ख/762.

གནས་པ་ཉེ་བར་རྟོག་པར་སྦྱོར་བ་པ *पा.* वृत्त्युपलक्षणप्रायोगिकः, प्रायोगिकमनस्कारभेदः – སྦྱོར་བའི་ཡིད་ལ་བྱེད་པ་ནི་རྣམ་པ་ལྔ་སྟེ།...གནས་པ་ཉེ་བར་རྟོག་པར་སྦྱོར་བ་པ་ནི་གང་གིས་གནས་རྣམ་པ་གཉིས་ཉེ་བར་རྟོག་པར་བྱེད་པ་སྟེ प्रायोगिकमनस्कारः पञ्चविधः ...वृत्त्युपलक्षणप्रायोगिको येन द्विविधां वृत्तिमुपलक्ष्यते सू.व्या.167ख/59.

གནས་པ་དང་ལྡན་པ *वि.* स्थितिमान् – གནས་པར་བྱ་བ་དང་གནས་པར་བྱེད་པ་གཉིས་གཞན་དུ་གནས་པ་དང

ལྡན་པར་གནས་པ་པོ་ [? བཞིན་དུ་གནས་པ་དང་ལྡན་པའི་གནས་པ་]དང་ལྡན་ཅིག་འབྲེལ་པ་མ་གྲུབ་པའི་ཕྱིར स्थाप्यस्थापकयोरिव स्थितिमतः स्थित्या सह सम्बन्धासिद्धेः त.प.223क/915.

གནས་པ་དང་བྲལ་བ *वि.* विष्ठितम् – བཅོམ་ལྡན་འདས་འོན་ཀྱང་མིང་དེའང་གནས་པ་མ་ལགས་ཤིང་མི་གནས་པའང་མ་ལགས་ལ། གནས་པ་དང་བྲལ་བ་མ་ལགས་ཤིང་གནས་པ་དང་བྲལ་བ་མ་ལགས་པའང་མ་ལགས་སོ།། अपि तु खलु पुनर्भगवंस्तदपि नामधेयं न स्थितं नास्थितम्, न विष्ठितं नाविष्ठितम् अ.सा.6क/4.

གནས་པ་དང་བྲལ་བ་མ་ལགས་པ *वि.* अविष्ठितम् – བཅོམ་ལྡན་འདས་འོན་ཀྱང་མིང་དེའང་གནས་པ་མ་ལགས་ཤིང་མི་གནས་པའང་མ་ལགས་ལ། གནས་པ་དང་བྲལ་བ་མ་ལགས་ཤིང་གནས་པ་དང་བྲལ་བ་མ་ལགས་པའང་མ་ལགས་སོ།། अपि तु खलु पुनर्भगवंस्तदपि नामधेयं न स्थितं नास्थितम्, न विष्ठितं नाविष्ठितम् अ.सा.6क/4; न विष्ठितम् अ.सा.6क/4.

གནས་པ་དང་རུས་མཐུན་པ *वि.* वत्ससगोत्रः – ཀུན་དུ་རྒྱུ་གནས་པ་དང་རུས་མཐུན་པ वत्ससगोत्रः परिव्राजकः अभि.भा.89क/1210.

གནས་པ་དམ་པ *पा.* विहारपरमता, परमताभेदः – དམ་པ་བདུན་གང་ཞེ་ན། སྐུ་དམ་པ་དང་...གནས་པ་དམ་པའོ།། सप्तपरमताः कतमाः? आश्रयपरमता...विहारपरमता च बो.भू.48ख/63.

གནས་པ་བསྡུས་པ *ना.* स्थितिसमुच्चयः, ग्रन्थः क.त. 2227.

གནས་པ་པོ *वि.* अवस्थाता – ད་ལྟར་ཡང་གནས་སོ་ཞེས་གཟུང་ན་ནི། གནས་པ་པོ་དེ་ལྟར་གཟུང་བར་འགྱུར་རོ།། अद्याप्यवतिष्ठत इति हि ग्रहणेऽवस्थाता तथा गृहीतो भवति प्र.अ.73ख/81; स्थाता – གནས་པ་ནི་གནས་པ་པོ་ལས་ཐ་མི་དད་པའི་ཕྱིར स्थितेः स्थातुरव्यतिरेकात् त.प.223क/915.

གནས་པ་མ་ཡིན = གནས་མིན།

གནས་པ་མ་ལགས *वि.* न स्थितम् – བཅོམ་ལྡན་འདས་འོན་ཀྱང་མིང་དེའང་གནས་པ་མ་ལགས་ཤིང་མི་གནས་པའང་མ་ལགས་ལ། གནས་པ་དང་བྲལ་བ་མ་ལགས་ཤིང་གནས་པ་དང་བྲལ་བ་མ་ལགས་པའང་མ་ལགས་སོ།། अपि तु खलु पुनर्भगवंस्तदपि नामधेयं न स्थितं नास्थितम्, न विष्ठितं नाविष्ठितम् अ.सा.6क/4.

གནས་པ་མི་མངའ་བ अप्रतिष्ठा – བསམ་གཏན་གྱི་འཇུག་པ་ལ་གནས་པ་མི་མངའ་བ अप्रतिष्ठाध्यानवर्तनी म.व्यु.437(11क).

གནས་པ་མིན = གནས་མིན།

གནས་པ་མིན་པ = གནས་མིན།

གནས་པ་མེད = གནས་པ་མེད་པ།

གནས་པ་མེད་པ • *वि.* अप्रतिष्ठितम् – ནམ་མཁའ་ནི་གནས་པ་མེད་པའོ།། अप्रतिष्ठितं चाकाशम् र.व्या. 98क/44; अप्रतिष्ठानम् – རང་བཞིན་ནམ་མཁའི་ཁམས་བཞིན་དུ། །དེ་བཞིན་ཅན་[? གཞི་ཅན་]མིན་གནས་པ་མེད།། तदमूलाप्रतिष्ठाना प्रकृतिर्व्योमधातुवत् ॥ र.वि.57क/43; अनालयः – ཆོས་རྣམས་སྐྱེ་བ་མེད་པ་སྟེ། །འགྱུར་བ་མེད་ཅིང་གནས་པ་མེད།། अनुत्पन्नेषु धर्मेषु अनक्षरमनालयम्। ज्ञा.सि.55ख/142; अनिकेतः – གནས་མེད་པར་སྤྱོད་པ་ཞེས་བྱ་བའི་ཏིང་ངེ་འཛིན अनिकेतचारी नाम समाधिः म.व्यु.577 (13ख); • *क्रि.* स्थितिर्नास्ति लो.को.1372.

གནས་པ་མེད་པར་སྤྱོད་པ *पा.* अनिकेतचारी, समाधिविशेषः - གནས་པ་མེད་པར་སྤྱོད་པ་ཞེས་བྱ་བའི་ཏིང་ངེ་འཛིན अनिकेतचारी नाम समाधिः म.व्यु.577(13[ख]).

གནས་པ་མེད་ལ་བླང་བ་མེད་ཅིང་དོར་བ་མེད་པ *वि.* अप्रतिष्ठानायूहानिर्यूहः, बुद्धस्य – བྱམས་པ་དེ་བཞིན་གཤེགས་པས་ཆོས་ཀྱི་འཁོར་ལོ་རྣམ་པ་འདི་ལྟ་བུ་བསྐོར་ཏེ། དེ་བསྐོར་བས་དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་ལ་དེ་བཞིན་གཤེགས་པའོ་ཞེས་བྱའོ།། ...གནས་པ་མེད་ལ་བླང་བ་མེད་ཅིང་དོར་བ་མེད་པ་ཞེས་བྱའོ།། एवंरूपं मैत्रेय तथागतेन धर्मचक्रं प्रवर्तितम्, यस्य प्रवर्तनात् तथागत इत्युच्यते... अप्रतिष्ठानायूहानिर्यूह इत्युच्यते ल.वि. 203[ख]/307.

གནས་པ་གཞན་དུ་འགྱུར་བ *पा.* स्थित्यन्यथात्वम् – གནས་པ་གཞན་དུ་འགྱུར་བ་ནི་འདུས་བྱས་ཀྱི་མཚན་ཉིད་ཡིན་པའི་ཕྱིར་ཏེ། རྒྱུན་གདོན་མི་ཟ་བར་གཞན་དུ་འགྱུར་བ་གང་ཡིན་པ་འདི་ནི་འདུས་བྱས་ཀྱི་རང་བཞིན་ནོ།། स्थित्यन्यथात्वस्य संस्कृतलक्षणत्वात् । एष हि संस्कृतस्य स्वभावो यदवश्यं प्रबन्धस्यान्यथात्वं भवति अभि.भा. 92[क]/1220; द्र. གནས་པ་གཞན་དུ་འགྱུར་བ་ཉིད།

གནས་པ་གཞན་དུ་འགྱུར་བ་ཉིད *पा.* स्थित्यन्यथात्वम् – གནས་པ་གཞན་དུ་འགྱུར་བ་ཉིད་ནི་འདུས་བྱས་ཀྱི་མཚན་ཉིད་ཡིན་པའི་ཕྱིར་ལ स्थित्यन्यथात्वस्य संस्कृतलक्षणत्वात् अभि.भा.92[ख]/1221; द्र. གནས་པ་གཞན་དུ་འགྱུར་བ།

གནས་པ་ཡིན •*क्रि.* तिष्ठति – སྟོང་བུ་ཚོགས་ལ་མང་དུ་ནི། །འབར་བ་བསྡུས་ནས་གནས་པ་ཡིན།། प्रभूतं वर्तिदेशे हि तेजस्तिष्ठति पिण्डितम् । त.स.100[ख]/887; स्थितो भवति – ཆོས་ཀྱི་རྣམ་གྲངས་འདི་རབ་ཏུ་སྟོན་པར་འདོད་པ་ནི་བདེ་བ་ལ་གནས་པ་ཡིན་ནོ།། इमं धर्मपर्यायं संप्रकाशयितुकामः सुखस्थितो भवति स.पु. 106[क]/169; सन्निहितं भवति – དེའི་ཡུལ་ན་གནས་པ་ཡིན་ནོ།། तद्देशे सन्निहितं भवति न्या.टी.84[ख]/231; वर्तते – མི་བདག་འདི་ཡི་མྱུ་ཀ་ཏ། །མདའ་རྣམས་ཉིད་ལ་གནས་པ་ཡིན།། शरेष्वेव नरेन्द्रस्य मार्गणत्वञ्च वर्तते ॥ का.आ.332[ख]/2.316; व्यवतिष्ठते – དེ་ཉིད་ཕྱིར་ན་རྗེས་དཔག་ཀྱང་། །དེ་ནི་ལེགས་པར་གནས་པ་ཡིན [? མིན]།། अत एवानुमाप्येषा न साध्वी व्यवतिष्ठते ॥ त.स.117[ख]/1015; • *भू.का.कृ.* स्थितम् – དེ་ཉིད་མཐོང་བའི་བདག་ཉིད་ཅན། །འོད་གསལ་བ་ཡི་སེམས་འདི་ནི། །རང་བཞིན་ཉིད་ཀྱིས་གནས་པ་ཡིན།། प्रभास्वरमिदं चित्तं तत्त्वदर्शनसात्मकम् । प्रकृत्यैव स्थितम् त.स.125[क]/1082; व्यवस्थितम् – ཤེས་བྱ་མིན་ཉིད་སོགས་ལྡན་པར [? ལྡོག་པས]། །ཤེས་བྱ་ཉིད་སོགས་གནས་པ་ཡིན།། अज्ञेयत्वादिविश्लेषात् ज्ञेयत्वादि व्यवस्थितम् । त.स.122[ख]/1065; प्रतिष्ठितम् लो.को.1372.

གནས་པ་ལས་གྱུར་པ *पा.* वैहारिकाः, गुणभेदः – ཚད་མེད་པ་ལ་སོགས་པ་ཡོན་ཏན་འདི་དག་ནི་རྣམ་པ་གཉིས་ཏེ། རང་གི་བྱ་བ་ལ་ཉེ་བར་གནས་པ...གནས་པ་ལས་གྱུར་པ त एतेऽप्रमाणादयो गुणा द्विप्रकाराः । स्वकारित्रप्रत्युपस्थानाः...वैहारिकाश्च अभि.स.भा.99[क]/133.

གནས་པ་ལས་མི་བསྐྱོད་པ *पा.* स्थिताकम्प्यः, अर्हद्भेदः – དགྲ་བཅོམ་པ་དྲུག...ཡོངས་སུ་ཉམས་པའི་ཆོས་ཅན་དང...གནས་པ་ལས་མི་བསྐྱོད་པ་དང་རྟོགས་པའི་སྐལ་བ་ཅན་དང་མི་གཡོ་བའི་ཆོས་ཅན་ནོ།། षडर्हन्तः – परिहाणधर्मा...स्थिताकम्प्यः, प्रतिवेधनाभव्यः, अकोप्यधर्मा च अभि.भा.31[ख]/988; གནས་པ་ལས་མི་བསྐྱོད

པ་ནི་རྣམ་པར་གྲོལ་བ་གང་ལ་གནས་པ་དེ་ལས་མི་གཡོ་བའོ།། स्थिताकम्प्यः। यस्यां विमुक्तौ स्थितः, तस्याकम्प्यः अभि.स्फु.212ख/988; द्र. གནས་པ་ལས་མི་གཡོ་བ།

གནས་པ་ལས་མི་གཡོ་བ *पा.* स्थिताकम्प्यः, अशैक्षभेदः – མི་སློབ་པ་དགུ་གང་ཡིན་ཞེ་ན། ཡོངས་སུ་ཉམས་པའི་ཆོས་ཅན་དང...གནས་པ་ལས་མི་གཡོ་བ་དང...གཉིས་ཀའི་ཆ་ལས་རྣམ་པར་གྲོལ་བ་སྟེ नवाशैक्षाः कतमे। परिहाणधर्मा... स्थिताकम्प्यः ... उभयतोभागविमुक्तः अभि.स्फु.188क/963; द्र. གནས་པ་ལས་མི་བསྐྱོད་པ།

གནས་པ་ལས་གཞན་དུ་གྱུར་པ स्थितेरन्यथात्वम् म.व्यु.2587; द्र. གནས་པ་ལས་གཞན་དུ་འགྱུར་བ་ཉིད།

གནས་པ་ལས་གཞན་དུ་འགྱུར་བ་ཉིད *पा.* स्थित्यन्यथात्वम्, संस्कृतलक्षणविशेषः – འདུས་བྱས་ཀྱི་མཚན་ཉིད་གསུམ་དང་བྲལ་བའི་ཕྱིར་ཞེས་བྱ་བ་ནི་སྐྱེ་བ་དང་འཇིག་པ་དང་གནས་པ་ལས་གཞན་དུ་འགྱུར་བ་ཉིད་དང་བྲལ་བའི་ཕྱིར་རོ།། त्रिसंस्कृतलक्षणविमुक्तत्वाद् । उत्पादव्ययस्थित्यन्यथात्वविमुक्तत्वात् अभि.स्फु.252ख/1059.

གནས་པའི་ཁང་པ = གནས་ཁང་།

གནས་པའི་རྒྱུ *पा.* स्थितिकारणम्, कारणभेदः – གང་གི་ཚེ་སྙིང་སྟོབས་ཤས་ཆེར་འཕེལ་བ་ལ་རྟེན་པར་བྱེད་པ་དེའི་ཚེ་འཇིག་རྟེན་གནས་པའི་རྒྱུར་འགྱུར་ཏེ यदा तु सत्त्वं समुद्भूतवृत्तिं संश्रयते, तदा लोकानां स्थितिकारणं भवति त.प.179ख/75; स्थितिहेतुः – འདི་གནས་པའི་རྒྱུ་ཉིད་ཡིན་གྱི། རྟེན་ནི་མ་ཡིན་ནོ་ཞེ་ན स्थितिहेतुरेवासौ नाधारः... इति चेत् प्र.अ.71ख/80; དེས་ན་འཇིག་པའི་རྒྱུ་ཅུང་ཟད་ཀྱང་བྱེད་པ་ཡང་མ་ཡིན་ཏེ། དེའི་ཕྱིར་མི་འཇིག་པས་བདག་ཉིད་གནས་པའི་ཕྱིར་གནས་པའི་རྒྱུས་ཅི་ཞིག་བྱ། གནས་པའི་རྒྱུ་ནི་ཅུང་ཟད་ཀྱང་བྱེད་པ་མ་ཡིན་ནོ།། ततश्च न नाशहेतुः किञ्चित्करोति। ततोऽनाशात् स्वयमेवास्त इति किं स्थितिहेतुना प्र.अ.72ख/80; द्र. གནས་པའི་བྱེད་རྒྱུ།

གནས་པའི་ངང་ཚུལ་ཅན *वि.* स्थायी – དེ་ཉིད་སྐད་ཅིག་མར་གནས་པའི་ངང་ཚུལ་ཅན་དུ་སྐྱེས་པ་ཡིན་པའི་ཕྱིར་རོ།། स एव ह्येकक्षणस्थायी जात इति प्र.वृ.317ख/66.

གནས་པའི་དངོས་པོ स्थितिवस्तु लो.को.1372.

གནས་པའི་ཆ་དང་མཐུན་པ *पा.* स्थितिभागीयम्, शुद्धकभेदः – དག་པ་པ་ནི། ཉམས་པའི་ཆ་དང་མཐུན་པ་དང་གནས་པའི་ཆ་དང་མཐུན་པ་དང་ཁྱད་པར་གྱི་ཆ་དང་མཐུན་པ་དང་ངེས་པར་འབྱེད་པའི་ཆ་དང་མཐུན་པ་དང་རྣམ་པ་བཞིའོ།། हानभागीयम्, विशेषभागीयम्, स्थितिभागीयम्, निर्वेधभागीयमिति चतुर्विधं शुद्धकम् अभि.भा.73ख/1156.

གནས་པའི་དེ་ཁོ་ན *पा.* सन्निवेशतत्त्वम्, प्रभेदतत्त्वभेदः – རབ་ཏུ་དབྱེ་བའི་དེ་ཁོ་ན་རྣམ་པ་བདུན་ཏེ། འཇུག་པའི་དེ་ཁོ་ན་དང... གནས་པའི་དེ་ཁོ་ན་དང... ཡང་དག་པར་སྒྲུབ་པའི་དེ་ཁོ་ན་སྟེ सप्तविधं प्रभेदतत्त्वम्–प्रवृत्तितत्त्वम्... सन्निवेशतत्त्वम्... सम्यक्प्रतिपत्तितत्त्वञ्च म.भा.13क/3.13.

གནས་པའི་དེ་བཞིན་ཉིད *पा.* सन्निवेशतथता, तथताभेदः – དེ་བཞིན་ཉིད་རྣམ་པ་བདུན་པོ་འཇུག་པའི་དེ་བཞིན་ཉིད་དང...གནས་པའི་དེ་བཞིན་ཉིད་དང...ཡང་དག་པའི་སྒྲུབ་པའི་དེ་བཞིན་ཉིད་ལ་བརྟེན་ནས་བདེན་པ་རྣམ་པར་གཞག་པ་ཡིན་ནོ།། सत्यव्यवस्थानं तु सप्तविधां तथतामाश्रित्य प्रवृत्तितथतां...सन्निवेशतथतां ...सम्यक्प्रतिपत्तितथतां च सू.व्या.244ख/161.

གནས་པའི་བྱེད་རྒྱུ་ *पा.* स्थितिकारणम्, कारणभेदः – གནས་པའི་བྱེད་རྒྱུ་ནི་སྐྱེས་པའི་རྒྱུད་རྒྱུན་མི་འཆད་པར་བྱེད་པའི་ཕྱིར་རོ།། स्थितिकारणमुत्पन्नस्य प्रबन्धानुपच्छेदात् अभि.स.भा.26ख/36; द्र. གནས་པའི་རྒྱུ།

གནས་པའི་རིམ་པ་དང་འགལ་བ་ स्थितक्रमविरोधः – དེ་དག་རང་བཞིན་རིམ་ཡོད་པ། །མཚོ་རོ་ཞེས་བྱ་ཉིད་སྲིད་ན། །ཕྱི་ནས་རོ་མཚོ་སོགས་མི་འགྱུར། །བརྟན་[གནས इत्यपि पाठः]པའི་རིམ་པ་དང་འགལ་ཕྱིར།། स्वाभाविके क्रमे चैषां सर इत्येव सम्भवेत्। न पुना रस इत्यादिः स्थितक्रमविरोधतः ॥ त.स.100ख/889.

གནས་པར་ཀུན་ཏུ་སྟོན་པ་ *पा.* स्थितिसांदर्शिकः, आहारभेदः – ཟས་རྣམ་པ་བཞི་པོ་དག་ནི...མ་དག་པའི་ལུས་གནས་པར་བྱེད་པ...གནས་པར་ཀུན་ཏུ་སྟོན་པ་ནི། སངས་རྒྱས་རྣམས་དང་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་མཐུ་ཆེན་པོ་ཐོབ་པ་རྣམས་ཀྱི་སྟེ་ चत्वारोऽप्याहाराः...अशुद्धाश्रयस्थितिकः...स्थितिसांदर्शिको बुद्धानां बोधिसत्त्वानां च महाप्रभावप्राप्तानाम् अभि.स.भा.33क/45.

གནས་པར་གྱིས་ *क्रि.* संश्रयताम् – འདོད་པ་མེད་པར་དགོན་པར་གནས་པར་གྱིས།། संश्रयस्व वनमेव निःस्पृहः रा.प.244ख/143; समाश्रयेत् – འཇིག་རྟེན་རྨི་ལམ་སྒྱུ་མ་ལྟར། །མཐོང་ནས་ཡང་དག་གནས་པར་གྱིས།། मायास्वप्नोपमं लोकं दृष्ट्वा तत्त्वं समाश्रयेत्। ल.अ.167ख/122.

གནས་པར་གྱུར་ = གནས་གྱུར • *क्रि.* **1.** अस्थात् – དེ་བཞིན་གཤེགས་པའི་བསྟན་པ་དེ་ཡང་ཕྱིར་གསལ་བར་བྱས་ནས་ལོ་སྟོང་ཕྲག་དྲུག་ཅུར་གནས་པར་གྱུར་ཏོ།། तच्च तथागतशासनं पुनर्ज्वालयित्वा षष्टिवर्षसहस्राण्यस्थात् ग.व्यू.152ख/236; स्थितोऽभूत् – རིའི་དབང་པོ་ལྷུན་པོ་ལྟར་མཐོན་པོར་གནས་པར་གྱུར་ཏོ།། मेरुपर्वतेन्द्रवदुच्चैस्त्वेन स्थितोऽभूत् ल.वि.181ख/276; संस्थितोऽभूत् – དེ་ནས་ནམ་མཁའི་དབྱིངས་འདི་ཐམས་ཅད་དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་རྡོ་རྗེའི་ངོ་བོར་གནས་པར་གྱུར་ཏོ།། अथायं सर्वाकाशधातुः सर्वतथागतवज्रमयसंस्थितोऽभूत् ज्ञा.सि.52क/135; विहरति स्म – བག་ཡོད་པ་ལ་སེམས་ཤིང་སྡུག་པ་དང་བྲལ་བར་གཅིག་པུ་གནས་པར་གྱུར་ཏོ།། अप्रमादं विचिन्तयन् प्रियविनाभावमेकाकी विहरति स्म रा.प.245क/144 **2.** = གནས་གྱུར་ཅིག་ तिष्ठतु – ཐམས་ཅད་དུ་ཡང་ས་གཞི་དག། །གསེག་མ་ལ་སོགས་མེད་པ་དང་། །ལག་མཐིལ་མཉམ་པ་བཻ་ཌཱུ་རྱའི། །རང་བཞིན་འཇམ་པོར་གནས་པར་གྱུར།། शर्करादिव्यपेता च समा पाणितलोपमा। मृद्वी च वैडूर्यमयी भूमिः सर्वत्र तिष्ठतु ॥ बो.अ.39क/10.35 ***3.** वर्तते – གལ་ཏེ་ལུས་འདི་ཐམས་ཅད་ལ། །ཕྱོགས་རེ་ཡིས་ནི་གནས་གྱུར་ན།། यदि सर्वेषु कायोऽयममेकदेशेन वर्तते। बो.अ.34क/9.81; अवतिष्ठते – གང་ཚེ་དྲན་པ་ཡིད་སྒོ་ན། །བསྲུང་བའི་དོན་དུ་གནས་གྱུར་པ། །དེ་ཚེ་ཤེས་བཞིན་འོང་འགྱུར་ཞིང་།། संप्रजन्यं तदायाति...स्मृतिर्यदा मनोद्वारे रक्षार्थमवतिष्ठते ॥ बो.अ.11ख/5.33; •*सं.* स्थितिः – ཇི་སྲིད་ནམ་མཁའ་གནས་པ་དང་། །འགྲོ་བ་ཇི་སྲིད་གནས་གྱུར་པ། །དེ་སྲིད་བདག་ནི་གནས་གྱུར་ནས། །འགྲོ་བའི་སྡུག་བསྔལ་སེལ་བར་ཤོག།། आकाशस्य स्थितिर्यावद्यावच्च जगतः स्थितिः। तावन्मम स्थितिर्भूयाज्जगद्दुःखानि निघ्नतः ॥ बो.अ.40क/10.55; •*पा.* आश्रयपरावृत्तिः, आश्रयस्य परावृत्तिः – གནས་ཀྱང་གཞན་དུ་གྱུར་པ་སྟེ། །གནས་ངན་ལེན་གཉིས་སྤངས་པའོ།། आश्रयस्य परावृत्तिर्द्विधा दौष्ठुल्यहानितः ॥ त्रि.3क/99; གནས་ནི་འདིར་ཀུན་གཞི་རྣམ་པར་ཤེས་པ་ས་བོན་ཐམས་ཅད་པའོ།། དེ་གྱུར་པ་ནི་གང་གནས་ངན་ལེན་དང་རྣམ་པར་སྨིན་པ་དང་ (?)

གཉིས་ཀྱི་བག་ཆགས་ཀྱི་དངོས་པོ་ལོག་ན་ལས་སུ་རུང་བ་དང་ཆོས་ཀྱི་སྐུ་དང་མི་གཉིས་པའི་ཡེ་ཤེས་ཀྱི་དངོས་པོར་གྱུར་པའོ॥ आश्रयोऽत्र सर्वबीजकमालयविज्ञानम्। तस्य परावृत्तिर्या दौष्ठुल्यद्वयवासनाभावेन निवृत्तौ सत्यां कर्मण्यताधर्मकायाद्वयज्ञानभावेन परावृत्तिः त्रि.भा.171[क]/100; आश्रयपरिवृत्तिः – དེ་ལ་ཉོན་མོངས་པ་སྤོང་བས་ན་དེའི་ཕྱོགས་དང་མཐུན་པའི་གནས་ངན་ལེན་དང་བྲལ་བའི་ཕྱིར་གནས་གྱུར་པའོ॥ तत्र क्लेशप्रहाणं तत्पक्षदौष्ठुल्यापगमादाश्रयपरिवृत्तिः अभि.स.भा.12[क]/15; •*भू.का.कृ.* 1. स्थितः – གལ་ཏེ་དེས་དེ་ལས་རྙེད་དམ། །སྦྱིན་བདག་ཁྱིམ་ན་གནས་གྱུར་པ॥ <?> यदि तेन न तल्लब्धं स्थितं दानपतेर्गृहे। बो.अ.17[ख]/6.84; अवस्थितः – སའི་ཕྱོགས་མཐོན་དམན་དུ་འདུག་པ་རྣམས་ཀྱང་མཉམ་པར་གནས་པར་གྱུར་པ་དང उत्कूलनिकूलाश्च पृथिवीप्रदेशाः समाः समवस्थिताः ल.वि.43[क]/57; གང་ལའང་རྣམ་པ་ཐམས་ཅད་དུ། །ཡོན་ཏན་ཐམས་ཅད་གནས་གྱུར་པ॥ सर्वे सर्वाभिसारेण यत्र चावस्थिता गुणाः॥ श.बु.110[क]/1; संस्थितः लो.को.1372; प्रतिष्ठितः – འགྲོ་ཀུན་སངས་རྒྱས་གྱུར་པ་ནི། །ཐམས་ཅད་ཇི་སྲིད་གནས་གྱུར་པ॥ भवेयुः प्राणिनो बुद्धाः सर्वे यावत् प्रतिष्ठिताः॥ ज्ञा.सि.46[ख]/119; ཅི་ནས་ཀྱང་མིག་དེའི་མིག་ཏུ་གནས་པར་གྱུར་པ། རྒྱལ་པོ་འཁོར་དང་བཅས་པ་དེས་མཐོང་བར་འགྱུར་བ[གྱུར་པ] ददर्श स राजा सपरिजनस्तत्तस्य चक्षुश्चक्षुःस्थाने प्रतिष्ठितम् जा.मा.11[ख]/11; संनिविष्टः – དེ་ལ་འཁོར་གསུམ་རྗེས་མཐུན་ཡོན་ཏན་ཚོགས། །ཕན་ཚུན་འགྲན་པ་བཞིན་དུ་གནས་པར་གྱུར॥ तस्मिंस्त्रिवर्गानुगुणा गुणौघाः संहर्षयोगादिव संनिविष्टाः। जा.मा.7[ख]/7; उषितः – ལྷ་ཡི་འཇིག་རྟེན་གྱི། །ཡོངས་འདུ་སྡོང་པའི་འོག་ཏུ་བདག། །དབྱར་གྱི་དུས་སུ་གནས་གྱུར་པ॥ देवलोकेऽहं पारिजाततरोस्तले। उषितो वार्षिकं कालम् अ.क.153[ख]/69.29; आसीनः लो.को.1366 2. आश्रयपरावृत्तम् म.व्यु.2575(48[ख]); •*वि.* नैवासिकः – གནས་དེ་ན་གནས་པར་གྱུར་པའི་ཀླུ तत्र भवने नैवासिका नागाः सु.प.34[ख]/13; •*उ.प.* वर्ती – སྒྲ་ནི་དམིགས་པའི་དུས་སུ་ནི། །རྣ་བ་ལེགས་པར་བྱས་པ་དང་། །རྣ་བུག་མཐའ་ལ་གནས་གྱུར་པའི། །རླུང་རྣམས་རྟོགས་པར་འགྱུར་བ་མིན॥ शब्दोपलम्भवेलायां कर्णपर्यन्तवर्तिनः। न वायवोऽवगम्यन्ते श्रोत्रसंस्कारकारिणः॥ त.स.90[ख]/819; निलयः – རྒྱལ་བ་རྣམས་ཀྱི་ཡོན་ཏན་བརྒྱ་ཕྲག་མང་པོའི་གནས་གྱུར་མ་ལྟ་བུ गुणशतनिलयां मातृभूतां जिनानाम् गु.सि.2[क]/5; སྡུག་བསྔལ་ཀུན་གྱི་གནས་གྱུར་པ། །དམྱལ་བ་ནས་ནི་གཙོ་བོས་དྲོངས॥ निलयात् सर्वदुःखानां नरकादुद्धर मां प्रभो गु.सि.17[ख]/36; अर्णवः – ཡོན་ཏན་ཀུན་གྱི་གནས་གྱུར་པའི། །རྡོ་རྗེ་སློབ་དཔོན་མཆོག་མཉེས་བྱ॥ आराधयेद् वरं वज्रगुरुं सर्वगुणार्णवम्॥ ज्ञा.सि.57[क]/148; द्र.– ཡུལ་ན་གནས་གྱུར प्रदेशस्थो भवेत् ज्ञा.सि.41[ख]/105.

གནས་པར་གྱུར་པ = གནས་པར་གྱུར།

གནས་པར་བགྱི = གནས་པར་བགྱི་བ།

གནས་པར་བགྱི་བ • *क्रि.* 1. उपतिष्ठामि – བྲན་གྱི་ཚུལ་དུ་གནས་པར་བགྱིའོ॥ किङ्करत्वेनोपतिष्ठामः स.दु.126[क]/226 2. स्थास्यामि लो.को.1373; आवसिष्यामि लो.को.1373; •*कृ.* स्थेयम् – དེ་བསམས་ཁྱོད་བསྟན་ངན་ན་ཡང་། །གནས་པར་བགྱི་བ་ལ་ཐུག་ན॥ तत्संस्मृत्य विरूपेऽपि स्थेयं ते शासने भवेत्॥ श.बु.113[क]/84.

གནས་པར་འགྱུར •*क्रि.* 1. तिष्ठति – དབང་ཐོབ་པ་དེ་ནི་ཇི་སྲིད་དུ་འདོད་པ་དེ་སྲིད་དུ་གནས་པར་འགྱུར་རོ॥

वशिताप्राप्तः स यावदाकांक्षति तावत्तिष्ठति बो.भू.
182क/240; निवसति – ཡི་དྭགས་ཡུལ་དང་དུད་འགྲོ
དམན་པར་གནས་པར་འགྱུར།། निवसति पितृलोके ही-
नतिर्यक्षु चैव जा.मा.94क/108; आवसति लो.को.
1373; अवस्थितो भवति – དེའི་ཚེ་འདི་རང་གི་ངོ་བོ་ལ
གནས་པར་འགྱུར་རོ།། तदा...स्वभावावस्थितो भवति
त.सि.65ख/174; उपतिष्ठते – དེ་ཚེ་ནུས་པའི་ངོ་བོ
ཡིས། །བློ་ནི་གནས་པར་འགྱུར་བ་མིན།། न चापि शक्ति-
रूपेण तथा [? तदा] धीरुपतिष्ठते । त.स.70क/
658; अवतिष्ठते – ཆོས་ཀྱི་སྣང་བ་འཕེལ་ནས་ནི།
།སེམས་ཙམ་ལ་ནི་གནས་པར་འགྱུར།། धर्मालोकविवृ-
द्धया च चित्तमात्रेऽवतिष्ठते ॥ सू.अ.192क/91; सं-
तिष्ठते – ཇི་ལྟ་ཇི་ལྟར་ཞི་གནས་དང་ལྷག་མཐོང་ལ
གོམས་པར་བྱེད་པ་དེ་ལྟ་དེ་ལྟར་ཞི་གནས་དང་ལྷག་མཐོང
ལ་མངོན་པར་དགའ་བར་གནས་པར་འགྱུར་རོ།། यथा
यथा शमथविपश्यनाभ्यासं करोति तथा तथा शमथ-
विपश्यनाभिरतिः संतिष्ठते बो.भू.59ख/77; अधि-
रोहति – གཞན་དུ་དེ་རྣམ་ཅན་མིན་ན། །ཅི་ལྟར་ཤེས་ལ
གནས་པར་འགྱུར།། अन्यथा ह्यतथारूपं कथं ज्ञानेऽ-
धिरोहति । प्र.वा.133क/2.380; स्पृशति – བྱང་ཆུབ
དམ་པར་གནས་པར་འགྱུར།། स्पृशन्ति परां बोधिम् ज्ञा.
सि.37क/93; **2.** स्थास्यति – མདུན་དུ་གནས་པར
འགྱུར་རོ།། पुरतः स्थास्यति शि.स.42क/40; བར་གྱི
བསྐལ་པ་སུམ་ཅུ་རྩ་གཉིས་སུ་དམ་པའི་ཆོས་ཀྱི་གཟུགས
བརྙན་གནས་པར་འགྱུར་རོ།། द्वात्रिंशदन्तरकल्पान् स-
द्धर्मप्रतिरूपकः स्थास्यति स.पु.27ख!48; उपस्थास्-
यति – ཇི་སྲིད་འཚོའི་བར་དུ་དེ་ན་གནས་པར་འགྱུར या-
वज्जीवं तत्रोपस्थास्यति सु.प्र.32ख/62; संस्थास्य-
ति – སྤོས་དང་བདུག་པ་སྣ་ཚོགས་ཀྱི་འཁྲི་ཤིང་དག་གི
གདུགས་རྣམས་སུ་གནས་པར་འགྱུར नानागन्धधूप-
लताछत्राणि संस्थास्यन्ति सु.प्र.22क/44; विहरिष्-
यति – རང་དབང་སྤྱོད་ཅིང་ཆགས་མེད་པར། །ནམ་ཞིག
བདག་ནི་གནས་པར་འགྱུར།། स्वच्छन्दचार्यनिलयो
विहरिष्याम्यहं कदा ॥ बो.अ.24ख/8.28; स्थास्यते
– སྟོན་པ་ཇི་སྲིད་བར་དུ་བཞུགས། །ཚུལ་ཡང་ཇི་སྲིད
གནས་པར་འགྱུར།། कियत्स्थायी भवेच्छास्ता कियन्तं
स्थास्यते नयः ॥ ल.अ.65ख/13; अवस्थास्यते – དེ
ནི་སྐད་ཅིག་མ་ཡིན་ཏེ། བློ་གཞན་གྱི་དུས་སུ་གནས་པར
མི་འགྱུར་རོ།། क्षणिका हि सा, न बुद्ध्यन्तरकालम-
वस्थास्यते त.प.232क/934; आस्यते – སྐད་ཅིག
གཅིག་བྱས་སྡིག་པས་ཀྱང་། །བསྐལ་པར་མནར་མེད
གནས་འགྱུར་ན།། एकक्षणकृतात् पापादवीचौ कल्प-
मास्यते । बो.अ.8ख/4.21; प्रचरिष्यति – འཛམ་བུའི
གླིང་དུ་ཡུན་རིང་དུ་གནས་པར་འགྱུར चिरं जम्बुद्वीपे प्र-
चरिष्यति सु.प्र.31क/60; स्थितो भविष्यति – གང
ལ་གང་གནས་པར་འགྱུར་བ་དེ་ལ་དེར་རྫུ་འཕྲུལ་གྱིས
འདུན་པར་བྱའོ།། यो यस्मिन् स्थितो भविष्यति, तं त-
स्मिन्नेव ऋद्धिबलेनावर्जयिष्यामि स.पु.108क/173;
वासं कल्पयिष्यति – ཁང་པ་བརྩེགས་པའི་ཡོངས་སུ
སྤྱོད་པ་དག་ན་མི་རྣམས་གནས་པར་འགྱུར་རོ།། कूटागा-
रपरिभोगेषु चात्र पुरुषा वासं कल्पयिष्यन्ति स.पु.
56ख/99 **3.** तिष्ठेत् – སེམས་ཅན་ཀུན་ལ་ཕན་བརྩོན
ཞིང་། །བསྐལ་པ་དུ་མར་གནས་པར་འགྱུར།། सर्वसत्त्व-
हितकारी चानेककल्पं तिष्ठेत् । स.दु.130क/242;
अवतिष्ठेत – དེ་དག་ཇི་ལྟར་བརྟེན་པ་པོ་ལོག་པ་ན
སྐྱེས་བུས་མ་བྱས་པའི་ངག་དག་ལ་གནས་པར་འགྱུར་ཏེ
ते कथमाश्रयकर्तुर्निवृत्तावपौरुषेयेषु वाक्येष्ववति-
ष्ठेरन् त.प.227ख/924; समाश्रयेत् – རྣམ་པ་གཞན
དུ་རྟོག་ན་ནི། །མུ་སྟེགས་སྨྲ་ལ་གནས་པར་འགྱུར།། अन्-
यथा कल्प्यमानं हि तीर्थ्यवादं समाश्रयेत् ॥ ल.अ.

172ख/132; स्थितिर्भवेत् – ཐམས་ཅད་ཀྱི་ཚེ་གནས་པར་འགྱུར་རོ།། सर्वदा स्थितिर्भवेत् प्र.अ.71ख/80; वासो भवेत् – འགྲོགས་ན་བདེ་བ་དེ་དག་དང་། །ནམ་ཞིག་ལྷན་ཅིག་བདག་གནས་འགྱུར།། कदा तैः सुखसंवासैः सह वासो भवेन्मम ॥ बो.अ.24क/8.26; आरोहणं भवेत् – འོ་ན་དེ་ལྟར་ན་ཡང་དེ་དག་ནི་འགགས་ནས་རིང་དུ་ལོན་པའི་ཕྱིར་གཏན་ནས་མེད་པ་ཉིད་མ་ཡིན་ནམ། ཇི་ལྟར་དེ་ལ་གནས་པར་འགྱུར नन्वेवमपि तेषां चिरनिरुद्धत्वादत्यन्तासत्त्वमेवेति कथं तदारोहणं भवेत् त.प.206क/880 0. व्यहार्षीत् – ཕྱིན་ཅི་ལོག་དང་བྲལ་བའི་སེམས་ཀྱིས་མང་དུ་གནས་པར་འགྱུར་[?གྱུར་]ཏོ།། विपर्यासापगतेन चेतसा बहुलं व्यहार्षम् अभि.स्फु.210ख/984; •कृ. उपसेवमानः – རི་དང་རི་སུལ་གནས་པར་འགྱུར་བའི་ཚེ། །བསམ་པ་འདི་དག་ཉིད་ནི་རྗེས་སུ་སེམས།། गिरिकन्दरांश्चाप्युपसेवमानो अनुचिन्तयामि इममेव चिन्ताम् ॥ स.पु.25ख/45; •उ.प. आस्पदम् – ལུས་ཀྱང་ཆུད་ཟ་མི་བདེའི་གནས་འགྱུར་ལ།། देहे विनाशिन्यसुखास्पदे च जा.मा.42ख/50; आलयः – རྒྱལ་བའི་གནས་འགྱུར་བྱང་ཆུབ་སེམས།། बोधिचित्तं जिनालयम् प्र.सि.31क/72; आसिका – གཞན་དུ་སྡུག་བསྔལ་བར་གནས་པར་འགྱུར་རོ།། अन्यथा तु दुःखासिका प्र.अ.68क/76; द्र.– གལ་ཏེ་གཟུགས་ཅན་མ་ཡིན་པ་རྣམས་ཀྱང་ཡུལ་ན་གནས་པར་འགྱུར་ན अरूपित्वेऽपि देशस्थो यदि स्यात् ज्ञा.सि.51ख/134.

གནས་པར་འགྱུར་བ = གནས་པར་འགྱུར།

གནས་པར་འགྱུར་བའི་སྐལ་བ་ཅན་ वि. स्थातुं भव्यः – གནས་པ་ལས་མི་བསྐྱོད་པ་ནི་ཡོངས་སུ་ཉམས་པར་འགྱུར་བའི་རྐྱེན་སྟོབས་དང་ལྡན་པ་མེད་ན་རྗེས་སུ་མ་བསྲུངས་ཀྱང་གནས་པར་འགྱུར་བའི་སྐལ་བ་ཅན་ཡིན स्थिताकम्प्यो यः परिहाणिप्रत्ययं बलवन्तमन्तरेणा[न]नुरक्षन्नपि स्थातुं भव्यः अभि.भा.32क/991.

གནས་པར་གཏོད་པ क्रि. समवदधाति – དེ་ལ་སེམས་དང་ལུས་སྦྲད་པའི་འདུ་ཤེས་ནི། འདུ་ཤེས་གང་གིས་སེམས་ལ་ལུས་གནས་པར་གཏོད་པ་དང་ལུས་ལ་སེམས་གནས་པར་གཏོད་པར་བྱེད་པ་སྟེ तत्र चित्तकायसमवधानसंज्ञा यया चित्तम्वा काये समवदधाति, कायम्वा चित्ते श्रा.भू.175क/463.

གནས་པར་གཏོད་པར་བྱེད་པ क्रि. समवदधाति – དེ་ལ་སེམས་དང་ལུས་སྦྲད་པའི་འདུ་ཤེས་ནི། འདུ་ཤེས་གང་གིས་སེམས་ལ་ལུས་གནས་པར་གཏོད་པ་དང་ལུས་ལ་སེམས་གནས་པར་གཏོད་པར་བྱེད་པ་སྟེ तत्र चित्तकायसमवधानसंज्ञा यया चित्तम्वा काये समवदधाति, कायम्वा चित्ते श्रा.भू.175क/463.

གནས་པར་དམ་བཅས་པ (०བཅའ་བ पा.भे.)उपगतिः म.व्यु.8680(121क).

གནས་པར་འདོད་པ •वि. विहर्तुकामः – གང་གི་ཚེ་དགེ་འདུན་གྱི་ནང་ངམ་གྲོང་ངམ་ཡུལ་ལམ་ལྗོངས་སུ་བསོད་སྙོམས་ཀྱི་ཕྱིར་གནས་པར་འདོད་པ་དེའི་ཚེ། ཐོག་མ་ཁོ་ནར་སྤྱོད་ཡུལ་ལ་ལྟ་བར་བྱེད यदा सङ्घे वा ग्रामे वा देशे वा जनपदे वा भिक्षाहेतोर्विहर्तुकामो भवति, तदा पूर्वतरं गोचरमवलोकयति अ.श.253क/232; जुषितुकामः म.व्यु.6345(90ख); • सं. अवस्थानकामता – གནས་པར་འདོད་པས་སྤྲུལ་པ་བྱིན་གྱིས་བརླབས་ནས་ཡིད་གཞན་རྣམ་པར་རིག་བྱེད་ཀུན་ནས་སློང་བར་བྱེད་པས་ངག་འཇུག་པར་བྱེད་དོ།། निर्माणमधिष्ठायावस्थानकामतया अन्येन [विज्ञप्तिसमुत्थापकेन] चित्तेन वाचं प्रवर्तयन्ति अभि.भा.64क/1119.

གནས་པར་བྱ = གནས་པར་བྱ་བ།

གནས་པར་བྱ་དགོས • कृ. वस्तव्यम् लो.को.1373; •क्रि. तिष्ठामि लो.को.1373.

གནས་པར་བྱ་བ •क्रि. = གནས་པར་བྱ 1. तिष्ठामि – དེ་ཚེ་ཤིང་བཞིན་གནས་པར་བྱ།། तस्मात्तिष्ठामि काष्ठवत् बो.अ.12क/5.51; अनुतिष्ठामि लो.को.1373 2. विहरिष्यामि – འདྲིས་པ་མེད་པར་གནས་པར་བྱ།། विहरिष्याम्यसंस्तुतः बो.अ.24क/8.16; སྟོན་པ་ལ་བཀུར་སྟི་བྱས... བརྟེན་ཏེ་གནས་པར་བྱའོ།། शास्तारं सत्कृत्य ...उपनिश्रित्य विहरिष्यामः अ.श.5क/4; དགེ་བའི་བཤེས་གཉེན་དང...གནས་པར་བྱའི་སྡིག་པའི་བཤེས་གཉེན་དང་སྡིག་པའི་གྲོགས་པོ་དང་སྡིག་པའི་རྟེན་དང་གནས་པར་མི་བྱའོ།། कल्याणमित्रा विहरिष्यामः ...न पापमित्रा न पापसहाया न पापसंपर्काः अ.श. 116क/105 3. वसेत् – གཙུག་ལག་ཁང་དུ་གནས་པར་བྱའོ།། वसेद् विहारे वि.सू.92ख/110; निवसेत् – གོས་རིན་པོ་ཆེར་གྱུར་པས་དགོན་པར་གནས་པར་མི་བྱའོ།། न नत्नभूतेन वस्त्रेनारण्ये निवसेत् वि.सू.97ख/117; प्रतिवसेत् – གང་དུ་སྲོག་གི་བར་ཆད་འབྱུང་བའི་དགོན་པ་དེར་གནས་པར་མི་བྱའོ།། न यत्र प्राणात्ययापातस्तत्रारण्ये प्रतिवसेत् वि.सू.13ख/15; विहरेत्– ཇི་ལྟར་བདེ་བར་གནས་པར་བྱའོ།། यथासुखं विहरेत् ख.टी. 164ख/247; མ་ལ་བདག་ཀུང་ཆོས་དེ་དང་དེ་དག...རྗེས་བར་རྗེས་སུ་ལྟ་བས་གནས་པར་བྱ་གོར་མ་ཆག་སྙམ་མོ།། यन्न्वहं तेषां तेषां धर्माणां...प्रतिनिःसर्गानुदर्शी विहरेयमिति अ.श.281ख/258; परिवासयेत् – དེ་ལ་དགེ་འདུན་གྱིས་ལས་ཀྱི་གནས་པ་བྱིན་ལ་ཟླ་བ་བཞིར་གནས་པར་བྱ एनं ...चतुरो मासान् परिवासयेत् सङ्घो दत्त्वा परिवासं कर्मणा वि.सू.4क/3; तिष्ठतु – དེ་བྱ་དེ་ལྟར་གནས་བྱ་ཞིང། །དེ་ལྟར་ཁྱོད་ཀྱིས་མི་བྱ་བ།། एवं कुरुष्व तिष्ठैवं न कर्तव्यमिदं त्वया। बो.अ.30क/8.167; • कृ. वस्तव्यम्–བདག...དམྱལ་བར་གནས་པར་བྱའོ།། वस्तव्यं मया महानरकेषु बो.प.57क/19; संवस्तव्यम्–སེམས་ཅན་གང་དག་དང་ཇི་ལྟར་ལྷན་ཅིག་གནས་པར་བྱ་བ་དེ་ལྟར་དེ་དག་དང་གནས་སོ།། यथा यैः सत्त्वैः सार्धं संवस्तव्यं भवति तथा संवसति बो.भू.80क/102; वास्तव्यम् – ཚེར་མས་གཏམས་ཤིང་སྟག་གིས་སྤྱོམ། །ནགས་ཚལ་མཆོག་ཏུ་གནས་པར་བྱ།། वास्तव्यं कण्टकाकीर्णे व्याघ्राघ्राते वरं वने। अ.क.178क/20.32; विहर्तव्यम् – སྤངས་པར་རྗེས་སུ་ལྟ་བས་གནས་པར་བྱའོ།། प्रतिनिसर्गानुदर्शिना विहर्तव्यम् अ.श. 280ख/257; དགོན་པ་དང་ནགས་འདབ་དང་རིའི་ཕུག་དང་དུར་ཁྲོད་དང་སོག་མའི་ཕུང་པོ་ལ་སོགས་པའི་ནང་དུ་གནས་པར་བྱའོ།། अरण्यवनप्रस्थगिरिगुहाश्मशानपलालपुञ्जादिषु विहर्तव्यम् अ.सा.344क/194; प्रतिष्ठापयितव्यम् – སའི་རིམ་པའི་མཚམས་སྦྱོར་བ་ལ་གནས་པར་བྱའོ།། भूमिक्रमानुसन्धौ प्रतिष्ठापयितव्यम् ल.अ.78क/26; अवस्थेयम् – ལུས་ཀྱིས་འདི་ལྟར་གནས་བྱ कायेनैवमवस्थेयम् बो.अ.11ख/5.39; स्थातव्यम् – མཚན་མོ་ཁྱོད་ནི་མི་སྨྲ་བར། །གནས་པར་བྱ त्वया मौनव्रतं रात्रौ स्थातव्यम् अ.क.137ख/67.42; ཤིང་བཞིན་དུ...གནས་པར་བྱ།། स्थातव्यं काष्ठवत् बो.अ.11ख/5.34; स्थानीयम्–སྲོག་གི་སྐྱེ་བ་གནས་པར་བྱ་ཞེས་པའི་རིགས་པས་སོ།། प्राणजन्मराशि स्थानीया इति न्यायात् वि.प्र.236ख/2.38; वोढव्यम् – རྒྱལ་བ་སེང་གེའི་སྲས་བདག་གིས། །ང་རྒྱལ་འདི་ལ་གནས་པར་བྱ།། मयैष मानो वोढव्यो जिनसिंहसुतो ह्यहम्॥ बो.अ.22ख/7.55; स्थाप्यम् – གནས་པར་བྱ་བ་དང་གནས་པར་བྱེད་པ་གཉིས་གཞན་དུ་ '[? བཞིན་དུ]...

འབྲེལ་པ་མ་གྲུབ་པའི་ཕྱིར स्थाप्यस्थापकयोरिव... सम्बन्धासिद्धेः त.प.223क/915.

གནས་པར་བྱ་བའི (དམིགས་པ) वैहारिकम् (आलम्बनम्) – གནས་པར་བྱ་བའི་དམིགས་པ་ནི་འདི་ལྟ་སྟེ། འགོག་པའི་སྙོམས་པར་འཇུག་པ वैहारिकमालम्बनं तद्यथा निरोधसमापत्तिः अभि.स.भा.30क/41.

གནས་པར་བྱ་བའི་ཕྱིར स्थितये– སེམས་གནས་པར་བྱ་བའི་ཕྱིར་དམིགས་པ་ལ་སེམས་ལེགས་པར་གཏོད་པ चित्तस्थितये सम्यगालम्बनोपनिबन्धः बो.भू.60क/78.

གནས་པར་བྱ་བར अवस्थातुम् लो.को.1373.

གནས་པར་བྱ་བ་ཉིད वस्तव्यता – དེས་འགྲོགས་པ་བཤེས ལ་བརྟེན་ཏེ་གནས་པར་བྱ་བ་ཉིད་དོ།། अपाश्रयेणास्य वस्तव्यता सप्रेमकस्य वि.सू.83ख/101.

གནས་པར་བྱ་བ་མ་ཡིན་པ་ཉིད असंवास्यत्वम् – གནས་ནས་ཕྱུང་བ་ཐམས་ཅད་ལ་གནས་པར་བྱ་བ་མ་ཡིན་པ་ཉིད་དང་ལོངས་སྤྱོད་པར་བྱ་བ་མ་ཡིན་པ་ཉིད་དོ།། सर्वत्रोत्क्षिप्तके[ऽ]संवास्यत्वासंभोग्यत्वे वि.सू.85ख /103.

གནས་པར་བྱ་བའི་དམིགས་པ *पा.* वैहारिकमालम्बनम्, आलम्बनभेदः – མེད་པའི་དམིགས་པ...གནས་པར་བྱ་བའི་དམིགས་པ་ནི་འདི་ལྟ་སྟེ། འགོག་པའི་སྙོམས་པར་འཇུག་པ असदालम्बनम्...वैहारिकमालम्बनं तद्यथा निरोधसमापत्तिः अभि.स.भा.30क/41.

གནས་པར་བྱེད = གནས་བྱེད།

གནས་པར་བྱེད་པ = གནས་བྱེད།

གནས་པར་བྱེད་པ་པོ *वि.* स्थापकः – རྣམ་པ་གཉི་ག་ལྟར་ན་ཡང་གནས་པར་བྱེད་པ་པོ་ནི་ཅུང་ཟད་ཀྱང་མི་བྱེད་པ་ཉིད་དོ།། उभयथापि स्थापकस्याकिञ्चित्करत्वम् त.प.223क/915.

གནས་པར་མི་འགྱུར • *क्रि.* अवस्थानं न स्यात् – གོ་འབྱེད་པ་མེད་པའི་ཕྱིར་རྩིག་པ་ལ་སོགས་པ་དེ་དག་ཉིད་གནས་པར་མི་འགྱུར་རོ།། तस्यैव कुड्यादेरनवकाशत्वादवस्थानं न स्यात् अभि.स्फु.12ख/20; • *कृ.* न वर्तितव्यम् – ཅིའི་ཕྱིར་གནས་པར་མི་འགྱུར कस्मान्न वर्तितव्यम् अभि.भा.68क/1137.

གནས་པར་མི་བྱ་བ • *कृ.* अवस्तव्यम् – བསྐྱད་པས་སུན་ཕྱུང་བའི་གནས་སུ་གནས་པར་མི་བྱ་བ་ཉིད་དོ།། अवस्तव्यता दूषितस्थाने प्रवासितस्य वि.सू.85ख/103; न स्थातव्यम् – དེ་ལྟར་ན་གཟུགས་སོ་ཞེས་གནས་པར་མི་བྱའོ།། इति हि रूपमिति न स्थातव्यम् अ.सा.31क/18; • *वि.* असंवासिकः – ཟ་མ་དང་མ་ནིང་དང...ཀུ་ཐབས་སུ་གནས་པ་དང་ཐ་དད་པར་གནས་པ་དང་གནས་པར་མི་བྱ་བ་དག་དང་མི་བྱའོ།། न षण्डपण्ड...स्तेयसंवासिकनानासंवासिकासंवासिकैः वि.सू.96ख/116.

གནས་པར་མི་བྱ་བ་ཉིད अवस्तव्यता – བསྐྱད་པས་སུན་ཕྱུང་བའི་གནས་སུ་གནས་པར་མི་བྱ་བ་ཉིད་དོ།། अवस्तव्यता दूषितस्थाने प्रवासितस्य वि.सू.85ख/103.

གནས་པར་མཛད་པ अवस्थानम् – བྱིན་གྱིས་རློབ་པ་ནི ཡུན་རིང་དུ་གནས་པར་མཛད་པའོ།། दीर्घकालावस्थानमधिष्ठानम् अभि.स्फु.274क/1097.

གནས་པར་མཛོད *क्रि.* रमताम् – དབྱངས་ཅན་མ་ནི་ཁྱོ་མོ་ཡི། །ཡིད་ལ་རིང་དུ་གནས་པར་མཛོད།། मानसे रमतां दीर्घं...सरस्वती ॥ का.आ.318ख/1.1.

གནས་པས་རྣམ་པར་རྩེ་བ *पा.* स्थितिविक्रीडितम्, अभिनिर्हारभेदः – མངོན་པར་སྒྲུབ་པ་རྣམ་པ་དྲུག...མཐོང་བ་ནི... གནས་པས་རྣམ་པར་རྩེ་བ་ནི། འདི་ལྟར་བྱང་ཆུབ

སེམས་དཔའ་རྣམས་ཏིང་ངེ་འཛིན་གྱིས་སྤྲུལ་པ་ལ་སོགས་པ་རྣམ་པ་དུ་མས་རྣམ་པར་རྩེ་བ་ཡིན་ནོ།། षड्विधोऽभिनिर्हारः...दर्शनं...स्थितिविक्रीडितं यस्मात् बोधिसत्त्वानां बहुविधं निर्माणादिभिः समाधिविक्रीडितम् सू.व्या. 227क/137.

གནས་བྱ = གནས་པར་བྱ། °བ།

གནས་བྱུས། °ནས स्थितो भूत्वा – ཁྱིམ་དེ་ཉིད་དུ་གནས་བྱས་ནས།། वेश्मस्थितो भूत्वा गु.सि.22क/47.

གནས་བྱིན་པ निश्रयदायकः म.व्यु.8731(121ख); द्र. གནས་སྦྱིན་པ།

གནས་བྱེད = གནས་པར་བྱེད་པ • *क्रि.* तिष्ठति – སངས་རྒྱས་བཅོམ་ལྡན་འདས་དེ་དག་གིས་ཆོས་གང་བཤད་པ་དང་འཆད་པར་འགྱུར་བ་དང་འཆད་པ་དང...གནས་པ་དང་གནས་པར་འགྱུར་བ་དང་གནས་པར་བྱེད་པ येश्च तैर्बुद्धैर्भगवद्भिर्धर्मो देशितो देशयिष्यते देश्यते च... स्थिताः स्थास्यन्ति तिष्ठन्ति च अ.सा.131क/75; निवसति – དེ་དག་སྟོང་པ་དགོན་པར་རྟག་ཏུ་གནས་པར་བྱེད།། <?>शून्ये च ते हि निवसन्ति शुभे अरण्ये रा.प.233ख/127; संवसति – དེ་སྲིད་དུ་དེ་དེ་དག་དང་ལྷན་ཅིག་གནས་པར་བྱེད་ལ स तैः सार्धं तावत् संवसति वि.व.130क/2.106; प्रतिवसति – དགེ་སློང་རང་བཞིན་དུ་གནས་པ་དག་དང་ལྷན་ཅིག་གནས་པར་བྱེད प्रकृतिस्थभिक्षुभिः सार्धं प्रतिवसति वि.व.130क/2.107; विहरति – བསམ་གཏན་དང་རྣམ་པར་ཐར་པ་ལ་སོགས་པ་སེམས་ཀྱི་གནས་པ་གང་གིས་གནས་པར་འདོད་པ་དེས་གནས་པར་བྱེད་དོ།། येन वा ध्यानविमोक्षादिचित्तविहारेणाकांक्षति तेन विहरति बो.भू.182क/240; वासमुपवसति – གང་འཕགས་པའི་ལམ་ཡན་ལག་བརྒྱད་པ་ལ་གནས་པར་བྱེད་པ་དེ་དག་ནི་སྐྱེས་བུ་དམ་པའོ།། ते सत्पुरुषा ये आर्यास्तान् गो[? आर्याष्टाङ्ग]मार्गाय वासमुपवसन्ति का.व्यू.206ख/264; विचरति – ཐར་པ་འདོད་པ་རི་ཁྲོད་གནས་པར་བྱེད།། गिरिगहने विचरन्ति मोक्षकामाः रा.प.234ख/129; अवतरति–མཐུ་མེད་པ་ལ་གནས་པར་མི་བྱེད་ཅིང་མོས་པ་མང་བ་ཡིན་ཏེ नाप्रतिबलतायामवतरति। अधिमुक्तिबहुलो भवति श्रा.भू.14ख/31; निवेशयति–གང་གིས་ཕ་མ་དེ་གཉིས་དད་པ་མེད་པ་ལས་དད་པ་ཕུན་སུམ་ཚོགས་པ་ལ་འཛུད་པ་དང་འདུལ་བ་དང་གནས་པར་བྱེད་པ་དང यस्त्वसावश्राद्धं मातापितरं श्रद्धासम्पदि समादापयति, विनयति, निवेशयति अ.श.102ख/92; स्थापयति – གནས་པས་གནས་པར་བྱེད་དོ།། स्थितिः स्थापयति त.प.86ख/625; རྒྱུན་གནས་པར་མི་བྱེད་ལ न च पुनः प्रबन्धं स्थापयति श्रा.भू.14ख/31; अवस्थापयति – འདོད་ཆགས་ཀྱི་ཀུན་ནས་དཀྲིས་པ་དེ་ཡང་ཡུན་རིང་དུ་སེམས་ཀྱི་རྒྱུད་ལ་གནས་པར་བྱེད तच्च पुना रागपर्यवस्थानं सन्तत्या चिरकालमवस्थापयति श्रा.भू.71क/185; རྒྱུད་གནས་པར་བྱེད་དོ་ཞེས་བྱ་བ་ནི་ཉོན་མོངས་པའི་རྒྱུན་བརྒྱུད་པས་གནས་པར་བྱེད་དོ།། सन्ततिमवस्थापयतीति परम्परया क्लेशप्रबन्धं स्थापयति अभि.स्फु.88क/760; व्यवस्थाप्यते–དེ་ལྟ་བུའི་ལྟུང་དབང་པོ་རྣམས་ལས་བཀུག་སྟེ་རྒྱུན་དུ་འཇུག་པ་དང་འབྱུང་བའི་བྱ་བ་བྱེད་པའི་ལམ་ལ་རྣལ་མ་ཉིད་དུ་གནས་པར་བྱེད་དོ།། स चेन्द्रियेभ्योऽपकृष्यानवरतस्वप्रवेशनिर्गमनिजवर्त्मव्यापारे व्यवस्थाप्यते त.सि.65क/173; अध्यालम्बते–ཡང་དེ་ཉིད་འདོད་པ་ན་སྤྱོད་པའི་ཆོས་རྣམས་ལ་གནས་པར་བྱེད་དོ།། स पुनरेव कामावचरान् धर्मानध्यालम्बते अ.सा.293ख/165; •*सं.* 1. स्थितिकरणम् – གནས་པ་ནི་གནས་པ་པོ་ལས་གཞན་མ་ཡིན་པའི་ཕྱིར། གནས་པར་བྱེད་ན་དེ་ཉིད་བྱས་པར

འགྱུར་རོ༎ स्थितेः स्थातुरव्यतिरेकात्। स्थितिकरणे स एव कृतः स्यात् प्र.अ.71[ख]/79; དངོས་པོའི་གནས་པར་བྱེད་པའི་ཕྱིར་རྟེན་ཡིན་ནོ་ཞེ་ན भावस्य स्थितिकरणादाधार इति चेत् प्र.अ.71[ख]/80; स्थितिः –སེམས་གནས་པར་བྱེད་པ་རྣམ་པ་དགུས་སེམས་ནང་ཁོ་ནར་འཛོག་པར་བྱེད नवाकारया चित्तस्थित्या अध्यात्ममेव चित्तं स्थापयति श्रा.भू.75[ख]/195; སེམས་གནས་པར་བྱེད་པ चित्तस्थितिः सू.व्या.143[ख]/22 2. स्थपतिकः, कारुविशेषः – ས་གཞི་སྦྱོ་བ་དང... ཁྱིམ་ལ་སོགས་པའི་གནས་བྱེད་པ भूमिचसकः... गृहादीनां स्थपतिकः वि.प्र.163[ख]/3.131 3. = མ་ནུ स्थापनी, पाठा मि.को.57[ख] 4. = བ་ཤ་ཀ वासकः, वृक्षविशेषः मि.को.57[ख] 5. = ཏ་ལ तालम्, हरितालम् मि.को.61[क] 6. = འོད་ཟེར उस्रः, रश्मिः मि.को.144[क] 7. तालः, गीतकालक्रियामानम् मि.को.30[क]; • *वि.* स्थापकः – གལ་ཏེ་རང་འཇིག་ངང་ཚུལ་བདག། །ཡིན་ན་དེ་གནས་བྱེད་གཞན་གང་། །གལ་ཏེ་རང་འཇིག་ངང་ཚུལ་བདག། །མིན་ན་དེ་གནས་བྱེད་གཞན་གང་༎ स्वयं विनश्वरात्मा चेत्तस्य कः स्थापकः परः। स्वयं न नश्वरात्मा चेत्तस्य कः स्थापकः परः॥ प्र.वा.110[क]/1.74; གནས་པར་བྱེད་པ་ཡོད་པ་ལ་འཇིག་པ་མི་སྲིད་དོ༎ नहि स्थापके सति विनाशसम्भवः प्र.अ.72[ख]/80; འོན་ཏེ་སྐད་ཅིག་སོ་སོར་འཇིག་པའི་ངང་ཅན་གནས་པར་བྱེད་པ་ལས་གཞན་དུ་འགྱུར་བ་ཡིན་ན अथ प्रतिक्षणं विनश्वरः स्थापकादन्यथा भवति प्र.अ.73[क]/81; स्थापिका–གལ་ཏེ་དངོས་པོའི་གནས་པར་བྱེད་པ་གནས་པ་ལས་དོན་གཞན་དུ་གྱུར་པར་ཁས་ལེན་པར་བྱེད་པ यदि पदार्थस्य स्थापिका स्थितेरर्थान्तरभूताऽङ्गीक्रियते त.प.223[क]/915; स्थितिकः – དག་པའི་ལུས་གནས་པར་བྱེད་པ་ནི་དགྲ་བཅོམ་པ་རྣམས་ཀྱི་སྟེ शुद्धाश्रयस्थितिकोऽर्हताम् अभि.स.भा.33[क]/45; विहारी लो.को.1373; स्थापयमानः – བདག་ཉིད་ནན་ཏན་ལ་གནས་པར་བྱེད་པ प्रतिपत्तौ चात्मानं स्थापयमानः शि.स.17[क]/17; • *ना.* 1. वसिष्ठः, ऋषिः – གནས་བྱེད་དང་རུས་མཐུན་པའི་བྲམ་ཟེ་མོས་བཅོམ་ལྡན་འདས་རྒྱང་ནས་མཐོང་སྟེ अद्राक्षीद् वसिष्ठसगोत्रा ब्राह्मणी भगवन्तं दूरादेव अभि.स्फु.48[क]/666 2. माठरः, देवता – माठरः पिङ्गलो दण्डश्चण्डांशोः पारिपार्श्वकाः अ.को.1.3.31; मठरस्यापत्यं पुमान् माठरः। मन्यते वा। मन ज्ञाने अ.वि.1.3.31.

གནས་བྱེད་ཀྱི་བུ वासिष्ठी – མྱ་ངན་གྱིས་ཇི་ལྟ་བུ་ཞེ་ན། དཔེར་ན་གནས་བྱེད་ཀྱི་བུ་ལ་སོགས་པ་ལྟ་བུའོ༎ कथं शोकेन ? यथा वासिष्ठीप्रभृतीनाम् अभि.भा.196[ख]/666.

གནས་བྱེད་པ = གནས་བྱེད།

གནས་བྲལ विष्ठा – གཟུགས་སོགས་འདུ་འགོད་གནས་བྲལ་དང་། །གནས་དང་བརྟགས་[བཏགས་]དང་བརྗོད་དུ་མེད། །གཟུགས་སོགས་མི་གནས་དེ་དག་ནི། །དེ་ཡི་ངོ་བོ་རང་བཞིན་མེད༎ रूपाद्यायव्ययौ विष्ठास्थिती प्रज्ञप्त्यवाच्यते। रूपादावस्थितिस्तेषां तद्भावेनास्वभावता॥ अभि.अ.3[क]/1.29.

གནས་སྦྱིན = གནས་སྦྱིན་པ།

གནས་སྦྱིན་པ • *सं.* निःश्रयदानम् – རབ་ཏུ་དབྱུང་བ་དང་བསྙེན་པར་རྫོགས་པ་དང་གནས་སྦྱིན་པ་དང་དགེ་ཚུལ་ཉེ་བར་གཞག་པ་དག་མི་བྱའོ༎ प्रव्राजनोपसंपादननिःश्रयदानश्रमणोद्देशोपस्थापनानामकरणम् वि.सू.87[क]/105; • *वि.* निःश्रयदायकः – གསང་སྟེ་སྟོན་པ་དང་ལས་བྱེད་པ་དང་གནས་སྦྱིན་པ་དང་གློག་པ་ཡང་དོ༎ रहोऽनुशंसककर्मकारकनिःश्रयदायकपा-

ठकाश्च वि.सू.2क/1; द्र. གནས་སྦྱིན་མ།

གནས་སྦྱིན་མ *वि.स्त्री.* स्थानदा – ལྷ་མོ་དགའ་སྦྱིན་གནས་སྦྱིན་མ།། रतिदां स्थानदां देवीम् हे.त.29ख/100; དགའ་བ་ནི་བརྩེ་བའོ།། གནས་ནི་བྱང་ཆུབ་ཀྱི་སེམས་སོ།། रतिः प्रीतिः । स्थानं बोधिचित्तस्य यो.र.60ख/159.

གནས་མ་བཅས = གནས་མ་བཅས་པ།

གནས་མ་བཅས་པ *वि.* अनिःश्रितः – ལོ་ལྔ་ལོན་ཞིང་ལྷན་ཅིག་སྤྱར་བ་ཐ་མ་དང་ལྡན་ན་གནས་མ་བཅས་པར་ལྗོངས་རྒྱུར་འགྲོ་བར་བྱའོ།། चरेदनिःश्रितः पञ्चवर्षः पश्चिमसमायोगेन समुचितजनपदचारिकाम् वि.सू.3ख/3.

གནས་མ་མཆིས་པ *वि.* अगतिकः – གནས་མ་མཆིས་པའི་ནི་གནས་མཛོད་ཅིག अगतिकानां गतिको भव का.व्यू.223क/285.

གནས་མ་བུ་པ 1.= གནས་མའི་བུ་པ། 2. (རྣ་མ་བུག་པ इत्यस्य स्थाने) अविद्धकर्णः – གནས་མ་བུ་པས་སྨྲས་པ། ལུང་ལས་སྤྱིར་རྟོགས་ལ་ཁྱད་པར་རྟོགས་པ་ནི་ཉེ་བར་འཇལ་བ་ལས་ཡིན་ནོ།། अविद्धकर्णस्त्वाह–आगमात् सामान्येन प्रतिपद्यते, विशेषप्रतिपत्तिस्तूपमानात् त.प.51क/553; གནས་མ་བུ་པས अविद्धकर्णस्तु त.प.52ख/556.

གནས་མ་བུའི་མདོ *ना.* वात्स्यसूत्रम्, ग्रन्थः – གནས་མ་བུའི་མདོ་ལས... ཞེས་གསུངས་པའི་ཕྱིར་རོ།། इति वात्स्यसूत्रे वचनात् अभि.भा.90क/1214.

གནས་མ་བུའི་སྡེ वात्सीपुत्रीयाः, अष्टादशनिकायान्तर्गतनिकायविशेषः म.व्यु.9088(125ख); द्र. གནས་མའི་བུའི་སྡེ་པ།

གནས་མ་ཡིན = གནས་མིན།

གནས་མ་ཡིན་པ = གནས་མིན།

གནས་མ་ལུས་པར་གྱུར་པ *पा.* निरन्तराश्रयपरिवृत्तिः – གནས་མ་ལུས་པར་གྱུར་པ་ནི་རྣམ་པ་གསུམ་སྟེ། མི་སློབ་པའི་ལམ་ཐོབ་པའི་སེམས་ཀྱི་གནས་གྱུར་པ... ལམ་གྱི་གནས་གྱུར་པ...གནས་ངན་ལེན་གྱི་གནས་གྱུར་པ निरन्तराश्रयपरिवृत्तिः त्रिधा । अशैक्षमार्गलाभिनः (1) चित्ताश्रयपरिवृत्तिः ... (2) मार्गाश्रयपरिवृत्तिः ... (3) दौष्ठुल्याश्रयपरिवृत्तिः अभि.स.भा.67ख/93.

གནས་མའི་བུ वात्सीपुत्रीयाः, आर्यसम्मतीयाः – འོ་ན་གང་གནས་མའི་བུ་རྣམས་གང་ཟག་ཡོད་པར་འདོད་པ་ཇི་ལྟ་བུ यत्तर्हि वात्सीपुत्रीयाः पुद्गलं सन्तमिच्छन्ति अभि.भा.82क/1191; གནས་མའི་བུ་ནི་འཕགས་པ་མང་པོས་བཀུར་བའི་སྡེ་པ་དག་སྟེ वात्सीपुत्रीया आर्यसम्मतीयाः अभि.स्फु.313ख/1191; द्र. གནས་མའི་བུ་པ། གནས་མའི་བུ་པའི་སྡེ་པ།

གནས་མའི་བུ་པ वात्सीपुत्रीयाः, निकायभेदः – གནས་མའི་བུ་པས་ཀུན་ཏུ་བརྟགས་པའི་གང་ཟག་དགག་པའི་ཕྱིར...སྨོས་ཏེ། ལ་ལ་ཞེས་བྱ་བ་ནི་གནས་མའི་བུ་པ་དག་གོ།། वात्सीपुत्रीयपरिकल्पितपुद्गलप्रतिषेधार्थमाह... केचिदिति वात्सीपुत्रीयाः त.प.221ख/159; द्र. གནས་མའི་བུའི་སྡེ་པ། གནས་མའི་བུ།

གནས་མའི་བུའི་སྡེ = གནས་མའི་བུའི་སྡེ་པ།

གནས་མའི་བུའི་སྡེ་པ वात्सीपुत्रीयो निकायः, निकायभेदः, तदनुयायी च – གནས་མའི་བུའི་སྡེ་དག་རང་གི་ཕྱོགས་ཡིན་པས་སོ།། स्वपक्षो वात्सीपुत्रीयो निकाय इति अभि.स्फु.313ख/1191; वात्सीपुत्रीयः – གང་ཞིག་ཕྲ་རྒྱས་ལྡན་པ་མ་ཡིན་པར་འདོད་པ་ཞེས་བྱ་བ་ནི་གནས་མའི་བུའི་སྡེ་པའོ།། यो हि विप्रयुक्तमनुशयमिच्छतीति वात्सीपुत्रीयः अभि.स्फु.90क/763; ཁ་ཅིག་འདུས་མ་བྱས་མྱ་ངན་ལས་འདས་པ་གཅིག་ཁོ་ནར་ཟད་པར་སྨྲ་བར

ཡང་ཡོད་དོ༎ འདི་ལྟ་སྟེ། གནས་མའི་བུའི་སྡེ་པ་དག་ལྟ་བུའོ༎ सन्ति हि केचिद् 'एकमेवासंस्कृतं निर्वाणम्' इत्याहुः, यथा वात्सीपुत्रीयाः अभि.स्फु.12क/19; वात्सीपुत्रः – གནས་མའི་བུའི་སྡེ་པ་རྣམས་ཀྱི་ལྟར་ན་ནི་ཕྲ་རྒྱས་ཐོབ་པ་ཡིན་ནོ༎ वात्सीपुत्रनयेन प्राप्तिरनुशयः अभि.स्फु.89क/761.

གནས་མལ शयनासनम् – གནས་མལ་བསྡུ་བར་བྱའོ༎ अभिसंक्षिपेत् शयनासनम् वि.सू.31ख/40; ཉི་མ་སྔ་མ་ལ་ནི་གནས་མལ་བསྒོག་གོ༎ पूर्वाह्णे शयनासनस्य पातनम् वि.सू.61क/77; གནས་མལ་དབེན་པ་དགོན་པ་དག་གམ་ཤིང་དྲུང་དག་གམ ...གནས་པར་བྱེད་པ་ཡིན विविक्तानि शयनासनान्यध्यावसति अरण्यानि, वृक्षमूलानि श्रा.भू.6क/12; शय्यासनम् – ཁྲི་དང་ཁྲིའུ་དང་སྔན་ནང་ཚངས་ཅན་དང་ལ་བ་དང་སྔས་དང་གོར་བུ་ཞེས་བྱ་བ་ནི་གནས་མལ་ལོ༎ मञ्चपीठवृशिकोचकबिम्बोपधानचतुरस्रकमिति शय्यासनम् वि.सू.31क/39; शय्या – གནས་མལ་འདོད་ལ་གནས་མལ་དང་། །བདག་ནི་ལུས་ཅན་བྲན་འདོད་པ། །ཀུན་གྱི་བྲན་དུ་གྱུར་པར་ཤོག༎ शय्या शय्यार्थिनामहम्। दासार्थिनामहं दासो भवेयं सर्वदेहिनाम्॥ बो.अ.7क/3.18; पीठम्– གནས་མལ་དུ་མ་ན་ཉལ་བའི་ནག་པ་ལ་སོགས་པ अनेकपीठाधिशयितस्य चैत्रादेः त.प.269ख/255.

གནས་མལ་གྱི་ལྟུང་བྱེད *पा.* शयनासनप्रायश्चित्तिकम्, प्रायश्चित्तिकभेदः –གནས་མལ་གྱི་ལྟུང་བྱེད་དོ༎ [इति] शयनासनप्रायश्चित्तिकम् वि.सू.32ख/41.

གནས་མལ་གྱི་བྱི་དོར་དགོག་པ मुण्डशयनासनवारिकः – གནས་མལ་དགོག་པ་དང་གནས་མལ་གྱི་བྱི་དོར་དགོག་པའོ༎ शयनासनवारिकम्। मुण्डशयनासनवारिकम् वि.सू.93क/111.

གནས་མལ་གྱི་གཞི *पा.* शयनासनवस्तु – གནས་མལ་གྱི་གཞིའོ༎ [इति] शयनासनवस्तु वि.सू.93ख/111.

གནས་མལ་གྱི་གཞི་ཕྲན་ཚེགས་ལ་སོགས་པའི་སྐབས *पा.* शयनासनवस्तु क्षुद्रकादिगतम् – གནས་མལ་གྱི་གཞི་ཕྲན་ཚེགས་ལ་སོགས་པའི་སྐབས་སོ༎ [इति] शयनासनवस्तु क्षुद्रकादिगतम् वि.सू.100क/121.

གནས་མལ་བསྐྱབས་པ शयनासनपरिहारः – གནས་བསྐྱབས་པ་དང་གནས་མལ་བསྐྱབས་པ་དང... བསྙེན་བཀུར་བ་བསྐྱབས་པས वास्तुपरिहारेण शयनासनपरिहारेण ... उपस्थायकपरिहारेण वि.व.148ख/2.122.

གནས་མལ་དགོག་པ शयनासनवारिकः – གནས་མལ་དགོག་པ་དང་གནས་མལ་གྱི་བྱི་དོར་དགོག་པའོ༎ शयनासनवारिकम्। मुण्डशयनासनवारिकम् वि.सू.93ख/111.

གནས་མལ་ལ་ཆགས = གནས་མལ་ལ་ཆགས་པ།

གནས་མལ་ལ་ཆགས་པ *पा.* शयनासनरागः – གནས་མལ་ལ་ཆགས་པ་ནི་བར་ཆད་རྣམ་པ་བཞི་ཡིན་ཏེ། འདི་ལྟ་སྟེ། འདུ་འཛི་ལ་ཆགས་པ་དང་། གནས་ལ་ཆགས་པ་དང་། གློས་འབེབས་པའི་བདེ་བ་དང་ཉལ་བའི་བདེ་བ་ལ་ཆགས་པ་དང་། སྟན་དང་གདིང་བ་དང་དགབ་པ་ལ་ཆགས་པའོ༎ शयनासनरागश्चतुर्विधः। तद्यथा–संस्पर्शरागः, प्रतिश्रयरागः, पार्श्वसुखशयनसुखरागः, आस्तरणप्रत्यास्तरणोपच्छादनरागः श्रा.भू.65क/161.

གནས་མི་འཐོབ *क्रि.* न प्रतिष्ठां लभते–དེ་དག་ཏུ་གནས་མི་མཐོང་[? མི་འཐོབ་]སྟེ། རྡོ་བསྲེག་པ་ལ་རྐང་མཐིལ་དག་གི་གནས་མི་མཐོང་བ་[? མི་འཐོབ་པ་]བཞིན་ནོ༎ न तेषु प्रतिष्ठां लभन्ते, तप्त इवोपले तलानि पादानाम् अभि.भा.235ख/793.

གནས་མི་བྱ *क्रि.* न विधीयते – སྨྱུང་བར་ཡང་ནི་གནས་མི་བྱ॥ नोपवासो विधीयते अ.सि.61ख/163.

གནས་མིན = གནས་མ་ཡིན •*क्रि.* नावतिष्ठते– གང་ཕྱིར་དངོས་པོའི་དེ་ཉིད་ནི། །ནམ་ཡང་ཚིག་དོར་གྱིས་གནས་མིན॥ छलेन वस्तुनस्तत्त्वं न हि जात्ववतिष्ठते॥ त.स.110क/957; न स्थानं विद्यते – གང་དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་རྣམས་ཀྱིས་གདུལ་བར་མི་འགྱུར་བ་འདི་ནི་གནས་མ་ཡིན་ནོ॥ तथागतवैनेयं न भवतीति नेदं स्थानं विद्यते स.दु.97ख/122; •*सं.* 1. अस्थानम् – དེ་ལའང་མི་ཁྲོ་བཟོད་པ་ནི། །གནས་མིན་བཟོད་པ་སྨད་པའི་གནས॥ तत्राप्यहं न कुप्यामि धिगस्थानसहिष्णुताम्॥ बो.अ.9क/4.29; གནས་མིན་སྦྱོང་བ अस्थानयाच्ञा अ.क.25क/52. 59; སྐྲག་པའི་གནས་མ་ཡིན་པ་ལ་སྐྲག་པ་ནི་དེའི་གནས་མ་ཡིན་པ་ལ་སྐྲག་པ་སྟེ त्रासास्थाने त्रासस्तदस्थानत्रासः सू.व्या.132ख/5; ཞེས་བྱ་བ་དེ་ནི་གནས་མ་ཡིན་པ་ལ་ཐེ་ཚོམ་ཟ་བ་ཡིན་ནོ॥ इत्यस्थानमेवैतदाशङ्कायाः प्र.वृ.313क/61; དེ་ནས་དེའི་ཡབ་དེ་ལ་གནས་མ་ཡིན་པར་གཏོང་ཚབས་ཆེ་བ་དགག་པའི་བསམ་པས अथैनं तस्य पिता अस्थानातिव्ययनिवारणोद्यतमतिः जा.मा.191क/222 2. = མི་སྲིད་པ अस्थानम्, असम्भवः – སྲིད་པ་ནི་གནས་སོ॥ མི་སྲིད་པ་ནི་གནས་མ་ཡིན་པའོ॥ ཡང་ན་བུད་མེད་སངས་རྒྱས་ཉིད་བྱེད་པར་འགྱུར་བ་གང་ཡིན་པ་འདི་ནི་གནས་མ་ཡིན सम्भवः स्थानम्, असम्भवोऽस्थानमिति। अथवा 'अस्थानमनवकाशो यत् स्त्री बुद्धत्वं कारयिष्यति' अभि.स्फु.267क/1085; न स्थानम् – གང་ཟག་ལྟ་བ་ཕུན་སུམ་ཚོགས་པ་སྲིད་པ་བརྒྱད་པ་མངོན་པར་འགྲུབ་པ་གང་ཡིན་པ་དེ་ནི་གནས་མ་ཡིན་ཞིང་གོ་སྐབས་མེད་དེ། འདི་ནི་གནས་མེད་དོ॥ अस्थानमनवकाशो यद् दृष्टिसंपन्नः पुद्गलोऽष्टमं भवमभिनिर्वर्तयिष्यति। नेदं स्थानं विद्यते अभि.भा.20ख/940 3. अव्यवस्थानम् – གནས་མ་ཡིན་ཞེས་བྱ་བ་ནི་མི་གནས་པའོ॥ अव्यवस्थानमिति व्यवस्थानाभावः त.प.187ख/836 4. अपदम् – གནས་མིན་འདུག་ངས་ཅི་ཞིག་བྱ། །ཁྱོད་ནི་དུས་མིན་ཉེ་བར་འོངས॥ किं करोम्यपदस्थोऽहमकाले त्वमुपागतः। अ.क.24ख/52.55; •*वि.* अप्रतिष्ठितम् – དེ་ནི་ཚད་མ་ལ་རག་ལས། །དེ་ཡང་རང་ལས་གནས་པ་མིན॥ प्रमाणाधीनमेतद्धि स्वतस्तच्चाप्रतिष्ठितम्॥ त.स.109ख/955; न व्यवस्थितम् – སོ་སོ་བ་འམ་འདུས་པ་ཡི། །རྐྱེན་རྣམས་ལ་ཡང་གནས་མ་ཡིན॥ न च व्यस्तसमस्तेषु प्रत्ययेषु व्यवस्थितम्॥ बो.अ. 36क/9.142.

གནས་མིན་འདུག *वि.* अपदस्थः – གནས་མིན་འདུག་ངས་ཅི་ཞིག་བྱ། །ཁྱོད་ནི་དུས་མིན་ཉེ་བར་འོངས॥ किं करोम्यपदस्थोऽहमकाले त्वमुपागतः। अ.क.24ख/52.55.

གནས་མིན་པ = གནས་མིན།

གནས་མིན་བཟོད་པ अस्थानसहिष्णुता – བདག་གི་སེམས་ལ་གནས་བཞིན་དུ། །དགའ་མགུར་བདག་ལ་གནོད་བྱེད་པ། །དེ་ལའང་མི་ཁྲོ་བཟོད་པ་ནི། །གནས་མིན་བཟོད་པ་སྨད་པའི་གནས॥ मच्चित्तावस्थिता एव घ्नन्ति मामेव सुस्थिताः। तत्राप्यहं न कुप्यामि धिगस्थानसहिष्णुताम्॥ बो.अ.9क/4.29.

གནས་མེད = གནས་མེད་པ།

གནས་མེད་པ •*क्रि.* न स्थानं विद्यते – གང་ཟག་ལྟ་བ་ཕུན་སུམ་ཚོགས་པ་སྲིད་པ་བརྒྱད་པ་མངོན་པར་འགྲུབ་པ་གང་ཡིན་པ། དེ་ནི་གནས་མ་ཡིན་ཞིང་གོ་སྐབས་མེད་དེ།

འདི་ནི་གནས་མེད་དོ།། अस्थानमनवकाशो यद् दृष्टिसंपन्नः पुद्गलोऽष्टमं भवमभिनिर्वर्तयिष्यति। नेदं स्थानं विद्यते अभि.भा.20ख/940; • *वि.* अनालयः – གནས་མེད་པའི་ཆོས་ལ་བརྟེན་ཏེ अनालयं धर्मं निश्रित्य ग.व्यू.185ख/269; དགོས་པ་ལྟ་བ་དགོངས་པ་དང་། །མི་སྐྱེ་བ་ནི་གནས་མེད་པ། །དོན་གཉིས་ཡོངས་སུ་ཤེས་པས་ནི། །སྐྱེ་བ་མེད་པར་ངས་བཤད་དོ།། प्रयोजनं दृष्टिसंकोचमनुत्पादमनालयम्। अर्थद्वयपरिज्ञानादनुत्पादं वदाम्यहम् ल.अ.184क/152; निरालयः – དག་པ་དེ་ཉིད་གནས་མེད་པར། །འཇིགས་པ་ཉིད་དུ་མ་བྱེད་ཅིག།། तत्र त्रासं मा कुरुध्वं शुद्धे तत्त्वे निरालये। गु.सि.6ख/14; निराश्रयः – རྣམ་པར་རྟོག་པ་མི་འཇུག་པ། །རབ་ཏུ་གྱུར་པ་གནས་མེད་པའོ།། अप्रवृत्तिः विकल्पस्य परावृत्तिः निराश्रयः। ल.अ.182ख/150; अनिकेतः – འོད་སྲུངས་སེམས་ནི་གཟུགས་མེད་པ། བསྟན་དུ་མེད་པ། ...གནས་མེད་པའོ།། चित्तं हि काश्यप अरूपमनिदर्शनम्... अनिकेतम् शि.स.130ख/126; གནས་མེད་པར་ཞིང་ཐམས་ཅད་དུ་འགྲོང་བ अनिकेतसर्वक्षेत्रगमनानाम् ग.व्यू.308क/30; अलयनः – ཕུག་དར་ཕྲུང་པོའི་སྟེང་ན་ཉལ། །གནས་མེད་མགོན་མེད་སྐྱབས་པ་མེད།། सङ्कारकूटशयनोऽलयनोऽथापरायणः। वि.व.290ख/1.112; निरास्पदम् – དེ་ཀུན་གནས་མེད་ཉིད་ཡིན་ཏེ། །མོ་གཤམ་ལ་ནི་རྣམ་གཞག་ཡིན།། निरास्पदेव सा सर्वा वन्ध्यापुत्र इव स्थिता ॥ त.स.9ख/120; अप्रतिष्ठितः – དེ་བཞིན་གཤེགས་པའི་བྱིན་གྱི་རླབས་གནས་མེད་པའི་རང་བཞིན་ཀུན་ནས་ཉོན་མོངས་པ་མེད་པའི་དང་དྲི་མ་མེད་པའི་ཆོས་ཉིད་ཀྱི་ལུས་རྣམ་པར་དག་པའི་ལུས་དང་ལྡན་པ अप्रतिष्ठिततथागताधिष्ठानप्रकृत्यसंक्लिष्टस्वभावनिर्मलधर्मताशरीरविशुद्धकायाम् ग.व्यू.180क/265; *अनाविलः – དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་ཀུན་གྱི་གསང་། །རབ་ཏུ་མི་རྟོག་གནས་མེད་པའོ།། सर्वताथागतं गुह्यं अप्रतर्क्यमनाविलम् ॥ गु.स.81ख/3; • *सं.* 1. अनास्पदम्–དེ་ནི་སེམས་ཅན་བསམ་བཞིན་ཞུགས། །ངན་པར་ལྟ་བའི་གནས་མེད་དེ།། सत्त्वाश्र[? श]यप्रवृत्तोऽयं कुदृष्टीनामनास्पदम् ॥ ल.अ.165ख/118 2. = མི་སྲིད་པ अस्थानम्, असम्भवः – སྡུག་བསྔལ་གྱི་བདེན་པ་མ་མཐོང་བར་ཀུན་འབྱུང་བའི་བདེན་པ་མཐོང་བར་འགྱུར་བ་གང་ཡིན་པ་འདི་ནི་གནས་མེད་དོ།། नेदं स्थानं विद्यते यद् दुःखसत्यमदृष्ट्वा समुदयसत्यं द्रक्ष्यति अभि.स्फु.177ख/928.

གནས་མེད་པ་ནམ་མཁའི་སྤྱོད་ཡུལ *वि.* अनालयगगनगोचरः – སངས་རྒྱས་བཅོམ་ལྡན་འདས་རྣམས་ནི་གནས་མེད་པ་ནམ་མཁའི་སྤྱོད་ཡུལ་དུ་ནི་ཡང་དག་པར་ལྟ अनालयगगनगोचरा हि बुद्धा भगवन्त इति संपश्यन् रा.प.229क/121.

གནས་མེད་པའི་དཀྱིལ་འཁོར *पा.* अनालयमण्डलः, धर्मपर्यायविशेषः – རིགས་ཀྱི་བུ་ཁོ་མོ་ནི་ཆོས་ཀྱི་རྣམ་གྲངས་གནས་མེད་པའི་དཀྱིལ་འཁོར་ཅེས་བྱ་བ་ཤེས་ཤིང་སྟོན་པ་སྟེ अहं कुलपुत्र अनालयमण्डलं नाम धर्मपर्यायं जानामि देशयामि ग.व्यू.276ख/355.

གནས་མེད་པའི་ཆོས་ཀྱི་ནམ་མཁའ་ལ་རྣམ་པར་ལྟ་བ *पा.* अनालयधर्मगगनव्यवलोकनः, बोधिसत्त्वसमाधिविशेषः – བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའི་ཏིང་ངེ་འཛིན་གནས་མེད་པའི་ཆོས་ཀྱི་ནམ་མཁའ་ལ་རྣམ་པར་ལྟ་བ་དང ...སངས་རྒྱས་ཀྱི་རྣམ་པར་འཕྲུལ་བ་རྒྱ་མཚོ་དེ་དག་ལ་རབ་ཏུ་འཇུག་གོ།། अनालयधर्मगगनव्यवलोकनेन बोधिसत्त्वसमाधिना...तान्...बुद्धविकुर्वितसमुद्रानवतरन्ति ग.व्यू.307क/30.

གནས་མེད་པའི་ཡིད अनिकेतमानसता – དེ་དད་པ་ལ

དབང་བསྒྱུར་བ་དང...གནས་མེད་པའི་ཡིད་དང स श्रद्धाधिपतेयतया...अनिकेतमानसतया द.भू.176ख/9.

གནས་མེད་པས་གཞི་ཕྲུག་པ་མེད་པ *पा.* अनिलयप्रतिलब्धम्, प्रज्ञापारमितामुखविशेषः – ན་ཞེས་བྱ་བ་བརྗོད་པ་དང་། ཤེས་རབ་ཀྱི་ཕ་རོལ་ཏུ་ཕྱིན་པའི་སྒོ་གནས་མེད་པས་གཞི་ཕྲུག་པ་མེད་པ་ཞེས་བྱ་བ་ཡོངས་སུ་ཆུད་དོ༎ <?> नकारं परिकीर्तयतोऽनिलयप्रतिलब्धं नाम प्रज्ञापारमितामुखमवक्रान्तम् ग.व्यू.274क/353.

གནས་གཙང *ना.* शुद्धावासः, देवलोकः – སྡིག་ལས་རྣམ་གྲོལ་བདག་ཉིད་ཆེ། །དེ་ཡང་གནས་གཙང་ལྷར་སྐྱེས་ནས༎ ते च विमुक्तपापमहात्मानः शुद्धावासदेवेषूत्पन्नाः। स.दु.130क/242; = གནས་གཙང་མ།

གནས་གཙང་སྐྱེ་བ = གནས་གཙང་མར་སྐྱེ་བ།

གནས་གཙང་མ *ना.* शुद्धावासः, देवलोकः – ཕྱེད་དུ་འཕར་བ་ཞེས་བྱ་བ་ནི་དེ་ནས་གནས་གཙང་མ་རྣམས་སུ་སྐྱེས་ལ་བར་ནས་གནས་གཞན་འགའ་ཙམ་ཡང་རྒལ་ཏེ་འོག་མིན་དུ་འཕོས་ནས་འོག་མིན་དུ་འཇུག་པ་གང་ཡིན་པའོ༎ अर्धप्लुतो नाम यस्ततः शुद्धावासेषूपपद्य मध्यादेकमपि स्थानान्तरं विलङ्घ्याकनिष्ठान् प्रविशति अभि.भा.23क/952; द्र. གནས་གཙང་མའི་རིས། གནས་གཙང་མའི་རིགས། གནས་གཙང་མ་པ།

གནས་གཙང་མ་པ शुद्धावासाः, देवसमुदायविशेषः – དེས་གནས་གཙང་མ་པའི་ལྷ་རྣམས་ནི་འདི་ལྟ་བུ་ཡིན་ནོ་ཞེས་ཐོས་པས་སོ༎ श्रुतं हि तेन भवति–शुद्धावासा नाम देवा एवम्भूता इति अभि.स्फु.279क/1110; द्र. གནས་གཙང་མ།

གནས་གཙང་མའི་གནས शुद्धावासभवनम् – གནས་གཙང་མའི་གནས་དེ་ཐམས་ཅད་འོད་ཆེན་པོའི་སྣང་བས་གསལ་བར་བྱས་ཏེ सर्वं च तं शुद्धावासभवनं महता रश्म्यवभासेनावभास्य म.मू.89ख/3.

གནས་གཙང་མའི་རིགས शुद्धावासकायिकाः, देवसमुदायविशेषः – འོག་མིན་ཞེས་བྱ་བ་ནི་ལྷ་དག་སྟེ། དེ་དག་གི་ཕྱོགས་གཅིག་ན་གནས་གཙང་མའི་རིགས་ཀྱི་ལྷ་རྣམས་ཡོད་དོ༎ अकनिष्ठा नाम देवाः, तेषामेकदेशे शुद्धावासकायिका नाम देवाः त.प.320ख/1107; द्र. གནས་གཙང་མའི་རིས།

གནས་གཙང་མའི་རིས शुद्धावासकायिकाः, देवसमुदायविशेषः – དེ་ནས་གནས་གཙང་མའི་རིས་ཀྱི་ལྷའི་བུ་དེ་དག་གིས་ཐལ་མོ་སྦྱར་བ་བཏུད་ནས अथ ते शुद्धावासकायिका देवपुत्राः साञ्जलयो भूत्वा म.मू.88क/1; གནས་གཙང་མའི་རིས་ཀྱི་ལྷ་རྣམས་ཀྱིས་དེ་ལ་གོས་ཆེན་ཅན་དག་ཕུལ་ཏེ शुद्धावासकायिकैर्देवैस्तस्मै काषायाण्युपनामितानि अ.श.64ख/56; དབང་ཕྱུག་ཅེས་བྱ་བ་དང་དབང་ཕྱུག་ཆེན་པོ་དང... དུལ་བ་རབ་ཞི་དབང་ཕྱུག་ལ་སོགས་པ་དེ་དག་དང་གནས་གཙང་མའི་རིས་ཀྱི་ལྷའི་བུ་གཞན་ཤིན་ཏུ་མང་པོ ईश्वरश्च नाम शुद्धावासकायिको देवपुत्रो महेश्वरो नाम...प्रशान्तविनीतेश्वरश्चैते चान्ये च संबहुलाः ल.वि.3ख/3; द्र. གནས་གཙང་མའི་རིགས།

གནས་གཙང་མར་སྐྱེ = གནས་གཙང་མར་སྐྱེ་བ།

གནས་གཙང་མར་སྐྱེ་བ शुद्धावासोपपत्तिः – ཡང་ཅིའི་ཕྱིར་གནས་གཙང་མར་སྐྱེ་བ་ལྔ་ཁོ་ན་ཡིན་ཞེ་ན अथ कस्मात् पञ्चैव शुद्धावासोपपत्तयः अभि.भा.25ख/961; གནས་གཙང་མ་རྣམས་སུ་སྐྱེ་བར་བྱ་བའི་ཕྱིར शुद्धावासोपपत्त्यर्थम् अभि.भा.25क/961.

གནས་མཚུངས *वि.* = ཉེ་བ सनीडः, समीपः मि.को.17ख।

གནས་གཞན • सं. 1. स्थानान्तरम् – གནས་ཐམས་ཅད་དུ་འཆི་འཕོ་བ་ཞེས་བྱ་བ་ནི་གནས་གཞན་ཐམས་ཅད་དུ་འཕོས་ནས་འོག་མིན་དུ་འཇུག་པ་གང་ཡིན་པའོ།། सर्वच्युतो नाम यः सर्वाणि स्थानान्तराणि सञ्चर्याकनिष्ठान् प्रविशति अभि.भा.23क/952 2. आवासान्तरम् – དགེ་སློང་འགའ་ཞིག་རང་གི་ཕྱིར་བཅོས་པའི་དོན་དུ་གནས་གཞན་དུ་གཏང་བར་བྱ स्वप्रतिक्रियार्थमावासान्तरे कश्चित् प्रस्थापयेयुः वि.सू.58क/74.

གནས་གཞན་གྱི (ཟས) स्थानान्तरीयम् (भक्तम्) – གནས་གཞན་གྱི་ཟས་དང་ཡོ་བྱད་ཀྱི་རྙེད་པ་གཞན་དུ་ལོངས་སྤྱད་པར་མི་བྱའོ།། न स्थानान्तरीयं भक्तोपकरणलाभं स्थानान्तरे परिभुञ्जीत वि.सू.97क/116.

གནས་གཞན་དུ་འགྱུར་བ་མ་ཡིན་པའི་ཚིག अस्थित्यन्यथात्वपदम्, अष्टोत्तरशतपदान्तर्गतपदविशेषः – བཅོམ་ལྡན་འདས་ཚིག་བརྒྱ་རྩ་བརྒྱད་པོ་གང་ལགས། བཅོམ་ལྡན་འདས་ཀྱིས་བཀའ་སྩལ་པ། སྐྱེ་བའི་ཚིག་དང་མི་སྐྱེ་བའི་ཚིག་དང...གནས་གཞན་དུ་འགྱུར་བའི་ཚིག་དང་གནས་གཞན་དུ་འགྱུར་བ་མ་ཡིན་པའི་ཚིག་དང कतमद्भगवन् अष्टोत्तरपदशतम् ? भगवानाह–उत्पादपदम्, अनुत्पादपदम्...स्थित्यन्यथात्वपदम्, अस्थित्यन्यथात्वपदम् ल.अ.67ख/16.

གནས་གཞན་དུ་འགྱུར་བའི་ཚིག स्थित्यन्यथात्वपदम्, अष्टोत्तरशतपदान्तर्गतपदविशेषः–བཅོམ་ལྡན་འདས་ཚིག་བརྒྱ་རྩ་བརྒྱད་པོ་གང་ལགས། བཅོམ་ལྡན་འདས་ཀྱིས་བཀའ་སྩལ་པ། སྐྱེ་བའི་ཚིག་དང་མི་སྐྱེ་བའི་ཚིག་དང...གནས་གཞན་དུ་འགྱུར་བའི་ཚིག་དང་གནས་གཞན་དུ་འགྱུར་བ་མ་ཡིན་པའི་ཚིག་དང कतमद्भगवन् अष्टोत्तरपदशतम् ? भगवानाह–उत्पादपदम्, अनुत्पादपदम् ...स्थित्यन्यथात्वपदम्, अस्थित्यन्यथात्वपदम् ल.अ.67ख/16.

གནས་གཞི 1. आधारः – རང་ཉིད་ཀྱི་ཡོན་ཏན་ལ་ཞེས་བྱ་བ་ནི་ངེས་པ་སྐྱེད་པ་ལ་ལྟོས་ནས་གནས་གཞིའི་བདུན་པ་ཡིན་ནོ།། स्वगुणेष्विति निश्चयजन्मापेक्षयाऽऽधारसप्तमी त.प.224क/917; अधिकरणम् – དེ་ལས་ཞེས་བྱ་བ་ནི་རིག་བྱེད་ལས་ཏེ། ཚད་མ་ཉིད་ཅེས་བྱ་བ་འདི་ལ་ལྟོས་ནས་གནས་གཞིའི་བདུན་པའོ།། तस्मिन्निति वेदे । प्रमाणतेत्येतदपेक्षयाऽधिकरणसप्तमी त.प.258क/988 2. = ཁང་པ निकेतनम्, गृहम् मि.को.139ख।

གནས་བཞི་ལས་སྐྱེས वि. चतुःपीठजा – རང་གི་དམ་ཚིག་རིགས་[? རིག་]རྙེད་ནས། །གལ་ཏེ་ཚིག་འདི་མི་སྨྲ་ན། །གནས་བཞི་ལས་སྐྱེས་རྣལ་འབྱོར་མ། །དེ་ཡི་ཚེ་ན་ཁྲོ་བར་བྱེད།། स्वसमयविदां प्राप्य यदि न भाषेदिदं वचः। तदा क्षोभं प्रकुर्वन्ति योगिन्यश्चतुःपीठजाः ॥ हे.त.19क/62.

གནས་བཞིན་པ व.का.कृ. तिष्ठमानः – གནས་བཞིན་པ་ཡང་མི་གནས་ཏེ། གནས་པ་གཉིས་སུ་ཐལ་བར་འགྱུར་བའི་ཕྱིར तिष्ठमानमपि न तिष्ठति, स्थितिद्वयप्रसङ्गात् प्र.प.56क/67; स्थीयमानः प्र.प.।

གནས་བཟང • वि. स्वधिष्ठानः – གནས་བཟང་བ་ནི་ཀུན་པོ་ལ་སོགས་པ་སྐྱེ་བོ་ངན་པ་དག་མི་གནས་པའི་ཕྱིར་རོ།། स्वधिष्ठानो दुर्जनैर्दस्युप्रभृतिभिरनधिष्ठितत्वात् सू.व्या.187क/84; • सं. = མཐོ་རིས स्वर्गः, सुरलोकः – स्वरव्ययं स्वर्गनाकत्रिदिवत्रिदशालयाः । अ.को.1.1.6; स्वः सुखं गम्यते इति स्वर्गः । गम्लृ गतौ । सुष्ठु अर्ज्यते इति वा । अर्ज सर्ज अर्जने अ.वि.1.1.6.

གནས་བཟང་བ = གནས་བཟང་།

གནས་ཡོངས་སུ་གྱུར = གནས་ཡོངས་སུ་གྱུར་པ།

གནས་ཡོངས་སུ་གྱུར་པ •पा. आश्रयपरावृत्तिः – གནས་ཡོངས་སུ་གྱུར་པ་ལ་ཚིགས་སུ་བཅད་པ་དྲུག་པ་སྟེ आश्रयपरावृत्तौ षट् श्लोकाः सू.व्या.154क/39; आश्रयपरिवृत्तिः – འདིས་ནི་མི་མཐུན་པའི་ཕྱོགས་ཀྱི་ས་བོན་དང་བྲལ་བ་དང་གཉེན་པོ་ཕུན་སུམ་ཚོགས་པ་དང་ལྡན་པས་གནས་ཡོངས་སུ་གྱུར་པ...བསྟན་ཏེ अनेन विपक्षबीजवियोगतः प्रतिपक्षसम्पत्तियोगतश्चाश्रयपरिवृत्तिः परिदीपिता सू.व्या.154क/39; • आश्रयपरावृत्तम् म.व्यु.2575(48ख).

གནས་ཡོངས་སུ་དག་པ पा. आश्रयपरिशुद्धिः; आश्रयविशुद्धिः – རྣམ་པ་ཐམས་ཅད་ཡོངས་སུ་དག་པ་བཞི་གང་ཞེ་ན། གནས་ཡོངས་སུ་དག་པ་དང་དམིགས་པ་ཡོངས་སུ་དག་པ་དང་སེམས་ཡོངས་སུ་དག་པ་དང་ཡེ་ཤེས་ཡོངས་སུ་དག་པའོ།། चतस्रः सर्वाकाराः परिशुद्धयः कतमाः ? आश्रयशुद्धिः['परिशुद्धिः' इत्यपि पाठः], आलम्बनशुद्धिः, चित्तशुद्धिः, ज्ञानशुद्धिश्च बो.भू.197क/265; आश्रयविशुद्धिः – དེ་ལ་གནས་ཡོངས་སུ་དག་པ་གང་ཞེ་ན तत्राश्रयविशुद्धिः['शुद्धिः' इत्यपि पाठः] कतमा बो.भू.197क/265.

གནས་ཡོད क्रि. अस्ति स्थानम् – འདི་ནི་གནས་ཡོད་དོ།། འདི་ནི་གཞི་ཡོད་དོ།། अस्त्येतत्स्थानमस्त्येतद्वस्त्विति अभि.भा.48ख/1057.

གནས་ལ་ཆགས = གནས་ལ་ཆགས་པ།

གནས་ལ་ཆགས་པ पा. प्रतिश्रयरागः, शयनासनरागभेदः – གནས་ལ་ཆགས་པ་སྤང་བའི་ཕྱིར་ཤིང་དྲུང་པ་དང་བླ་གབ་མེད་པ་དང་དུར་ཁྲོད་པ་ཡིན་ནོ།། प्रतिश्रयरागस्य प्रहाणाय वृक्षमूलिकः, आभ्यवकाशिकः, श्माशानिको भवति श्रा.भू.65क/161.

གནས་ལ་རྟེན་མེད་པ पा. अनिकेतस्थितः, समाधिविशेषः – གནས་ལ་རྟེན་མེད་པ་ཞེས་བྱ་བའི་ཏིང་ངེ་འཛིན अनिकेतस्थितो नाम समाधिः म.व्यु.538(12ख).

གནས་ལ་བརྟེན་པ वि. पात्रस्थः – སྟོང་བས་ཀོལ་བར་རྩོལ་བྱེད་པ། །མང་པོའང་གཞོམ་པར་བྱ་བ་ནི། །ཁྱད་པར་གནས་ལ་བརྟེན་པ་ཡི། །བཟོད་པའི་ཚིགས་སུ་མཚར་མི་ཆེ།། महतोऽपि हि संरम्भात् प्रतिहन्तुं समुद्यताः। क्षमाया नातिभारोऽस्ति पात्रस्थाया विशेषतः॥ श.बु.111ख/43; द्र. གནས་ལ་བརྟེན་པ་མེད་པ་ལ་བརྩོན་པ།

གནས་ལ་བརྟེན་པ་མེད་པ་ལ་བརྩོན་པ पा. अनिलम्भनिकेतनिरतः, समाधिविशेषः – གནས་ལ་བརྟེན་པ་མེད་པ་ལ་བརྩོན་པ་ཞེས་བྱ་བའི་ཏིང་ངེ་འཛིན अनिलम्भनिकेतनिरतो नाम समाधिः म.व्यु.619(15क).

གནས་ལ་དད་པར་གྱུར་པ पा. आयतनगतः प्रसादः, स्वार्थसम्पद्भेदः – དེ་ལ་བདག་གི་འབྱོར་པ་གང་ཞེ་ན། མིར་གྱུར་པ་དང...གནས་ལ་དད་པར་གྱུར་པ་དང...གནས་ལ་དད་པར་གྱུར་པ་གང་ཞེ་ན [तत्र कतमा स्वार्थसम्पत् ? मनुष्यत्वम्]...आयतनगतः प्रसादः...आयतनगतः प्रसादः कतमः श्रा.भू.3ख/6.

གནས་ལ་སོགས་པ་གཏན་ལ་དབབ་པ ना. 1. पीठादिनिर्णयः, ग्रन्थः क.त.1606 2. प्रतिष्ठाननिर्णयः, ग्रन्थः क.त.1215.

གནས་ལུགས 1. वृत्तम्, स्थितिः – འོན་ཏེ་འདི་ནི་དངོས་པོའི་གནས་ལུགས་ཡིན་ཏེ། འདོད་ཆགས་ལ་སོགས་པ་དང་ལྡན་པ་ལ་དབང་ཕྱུག་སྲིད་པ་ནི་མ་ཡིན་ནོ།། अथ वस्तुवृत्तमेतन्न रागादियोगितामैश्वर्यसम्भवः प्र.अ.30क/34; स्थितिः – काष्ठोत्कर्षे स्थितौ दिशि अ.को.3.3.41; सन्निवेशः – དེ་ལྟ་བས་ན་འདི་ནི་བདེ་བ་དང་སྡུག

བསྔལ་བ་དང་རྨོངས་པ་རྣམ་པ་གསུམ་པོ་རྣམས་ཀྱི་གནས་ལུགས་ཀྱི་ཁྱད་པར་ཡིན་ནོ།། तस्मात् सुखदुःखमोहानां त्रयाणामेते सन्निवेशविशेषाः त.प.151क/27 2. संस्थानम् – འབྱུང་བ་ཆེན་པོ་ལས་མ་གཏོགས་པའི་དབང་པོ་ལ་སོགས་པ་ཡོད་པ་མ་ཡིན་ཏེ། དེའི་གནས་ལུགས་ཀྱི་ཁྱད་པར་ཉིད་ལ་དེ་བཏགས་པའི་ཕྱིར་ལ न हि महाभूतव्यतिरेकेणेन्द्रियादीनि सन्ति, तत्संस्थानविशेष एव तत्प्रज्ञप्तेः त.प.90ख/634.

གནས་ལེན་གྱི་བུ *ना.* 1. माठरः – ལྷ་གྲོང་ན་ལ་ད་ན་བྲམ་ཟེ་གནས་ལེན་གྱི་བུ་ཞེས་བགྱི་བ...ཞིག་མཆིས་ཏེ देवास्ति नालदग्रामके माठरो नाम ब्राह्मणः वि.व.8ख/2.80 2. माठरम्, शास्त्रम् – ལྷ་གྲོང་ན་ལ་ད་ན་བྲམ་ཟེ་གནས་ལེན་གྱི་བུ་ཞེས་བགྱི་བ... ཞིག་མཆིས་ཏེ།... དེས་བསྟན་བཅོས་གནས་ལེན་གྱི་བུ་ཞེས་བགྱི་བ་ཞི་བར་སྦྱར་ཏོ།། देवास्ति नालदग्रामके माठरो नाम ब्राह्मणः... तेन माठरं नाम शास्त्रं प्रणीतम् वि.व.8ख/2.80.

གནས་ཤིན་ཏུ་གྱུར་པ • *पा.* आश्रयपरावृत्तिः – བློ་གྲོས་ཆེན་པོ་རང་གི་སེམས་སྣང་བ་ཕྱི་རོལ་གྱི་དོན་ཡོངས་སུ་ཤེས་པས་ཐོག་མ་མེད་པའི་དུས་ཀྱི་སྤྲོས་པ། གནས་ངན་ལེན་གྱི་རྣམ་པར་རྟོག་པའི་བག་ཆགས་ཀྱི་རྒྱུ་རྣམ་པར་ལོག་ཅིང་རང་གི་གནས་ཤིན་ཏུ་གྱུར་པ་ནི་ཐར་པ་ཡིན་ཏེ अनादिकालप्रपञ्चदौष्ठुल्यविकल्पवासनाहेतुविनिवृत्तिर्महामते स्वचित्तदृश्यबाह्यार्थपरिज्ञानाद्विकल्पस्याश्रयपरावृत्तिः...मोक्षः ल.अ.148ख/95; • *वि.* परावृत्ताश्रयः – ལང་ཀའི་བདག་པོ་གནས་ཤིན་ཏུ་གྱུར་པ་དང་། རང་གི་སེམས་སྣང་བ་ཙམ་དུ་ཁོང་དུ་ཆུད་པ་རབ་ཏུ་རྟོགས་མ་ཐག་ཏུ་རྣམ་རྟོག་པའི་རྒྱུ་བ་ལ་གནས་པ <?> समनन्तरप्रतिविबुद्धे परावृत्ताश्रये स्वचित्तदृश्यमात्राधिगमेऽविकल्पप्रचारस्थितस्य लङ्काधिपतेः ल.अ.58ख/5.

གནས་ཤིན་ཏུ་གནས་པ *पा.* सुप्रतिष्ठितासनः, समाधिविशेषः – གནས་ཤིན་ཏུ་གནས་པ་ཞེས་བྱ་བའི་ཏིང་ངེ་འཛིན सुप्रतिष्ठितासनो नाम समाधिः का.व्यू.235क/297.

གནས་ས शाला, सभागृहम् – वासः कुटी द्वयोः शाला सभा अ.को.2.2.6; शलन्त्यस्यामिति शाला। शल गतौ। शाल्यते वा। शालृ श्लाघायाम्...सभागृहनामानि अ.वि.2.2.6.

གནས་སུ་གྱུར = གནས་སུ་གྱུར་པ།

གནས་སུ་གྱུར་པ *वि.* आश्रयभूतम् – བྱིས་པ་འདི་དག་ཁྱད་པར་དུ། །སྙིང་རྗེའི་གནས་སུ་གྱུར་པ་ན།། करुणाश्रयभूतस्य बालस्यास्य विशेषतः। जा.मा.34ख/40; निकेतभूतम् – འཇིག་རྟེན་པ་རྣམས་ཀྱིས་བཀུར་སྟི་བྱ་བའི་གནས་སུ་ནི་གྱུར लोके बहुमाननिकेतभूतः जा.मा.18क/20; आस्पदभूतम् – ཁྱིམ་ན་གནས་པ...བག་མེད་པའི་གནས་སུ་གྱུར་པ...རིག་ནས प्रमादास्पदभूतं...गार्हस्थमवेत्य जा.मा.31क/36; निकेतस्थानम् – གང་འདི... བརྟེན་པའི་གནས་སུ་གྱུར་པ་དེ་དག་ཐམས་ཅད་ཀྱི་ཐམས་ཅད་དུ་རབ་ཏུ་ཤེས་སོ།། यानीमानि... निकेतस्थानानि, तानि सर्वाणि विगतानि भवन्ति स्म द.भू.207क/25; आवसथीकृतम् – ཡོན་ཏན་མེད་ཅིང... ཉེས་པ་འབྱུང་བའི་གནས་སུ་གྱུར་པ་རྣམས།། गुणैर्विहीनस्य...दोषोदयैरावसथीकृतस्य जा.मा.162ख/187; स्थानमापन्नः – གང་ཟག་པ་རྣམས་མིག་གིས་གང་ཟག་བལྟའོ་ཞེས་གང་ཟག་ལྟ་བ་ནི་བདག་མེད་པས་བདག་བལྟའོ་ཞེས་བྱ་བ་ཡིན་པས་བདག་ཏུ་ལྟ་བའི་གནས་སུ་གྱུར་པ་ཡང་ཡིན་ནོ།། चक्षुषा च पुद्गलं पश्याम इति पश्यन्तः पौद्गलिकाः 'अनात्मना आत्मानं पश्यामः'

इति दृष्टिस्थानमापन्ना भवन्ति अभि.भा.85[ख]/1201; द्र. ཕོངས་པའི་གནས་སུ་གྱུར་པའི་ཕྱིར།། आपदां मूलभूतत्वात् जा.मा.34[ख]/40; བདག་ནི་ཡོན་ཏན་ལྡན་ཞེས་དད་པའི་གནས་སུ་གྱུར།། श्रद्धेयतामुपगतोऽस्मि गुणाभिपत्तौ जा.मा.107[क]/124.

གནས་སུ་འགྱུར *क्रि.* 1. भाजनीभवति – ཆོས་ཐོས་པ་དང་གཏམ་བྱ་བའི་གནས་སུ་འགྱུར་རོ།། धर्मश्रवणकथायाश्च भाजनीभवन्ति अ.श.117[ख]/107 2. संस्थास्यते – གང་ལ་འཇིག་རྟེན་གནས་གྱུར་པར། །ཕྱི་ནས་ལྷ་རྫས་གནས་སུ་འགྱུར།། पुनः संस्थास्यते दिव्यं तस्मिंल्लोकः प्रवर्त्स्यते। ल.अ.188[क]/159.

གནས་སུ་འཇོག་བྱེད *पा.* स्थितस्थापकः, संस्कारविशेषः – གནས་སུ་འཇོག་བྱེད་དངོས་ཉིད་དུ། །མི་རིགས་སྐད་ཅིག་གིས་འཇིག་ཕྱིར།། स्थितस्थापकरूपस्तु न युक्तः क्षणभङ्गतः। त.स.26[ख]/284.

གནས་སུ་བྱ་བ་མེད་པ *पा.* निरधिष्ठानः, समाधिविशेषः – གནས་སུ་བྱ་བ་མེད་པ་ཞེས་བྱ་བའི་ཏིང་ངེ་འཛིན निरधिष्ठानो नाम समाधिः म.व्यु.591(14[क]).

གནས་སུ་མ་ཡིན་པ अस्थानम् – ཤེས་རབ་ཀྱི་ཕ་རོལ་ཏུ་ཕྱིན་པ་ནི་གཉིས་སུ་བལྟ་བར་མི་བྱ། གཉིས་མ་ཡིན་པར་ཡང་མ་ཡིན...གནས་སུ་མ་ཡིན། གནས་སུ་མ་ཡིན་པར་ཡང་མ་ཡིན प्रज्ञापारमिता न द्वयेन द्रष्टव्या, न अद्वयेन...न स्थानतः, न अस्थानतः कौ.प्र.142[ख]/95.

གནས་སྲུང *ना.* धृतराष्ट्रः, हंसराजः – དེའི་རྐང་ལག་གི་སོར་མོ་དྲ་བར་འབྲེལ་པར་གྱུར་ཏེ། ཤིན་ཏུ་མཛེས་པ་རྣམ་པར་ཕྱེ་བ། བུ་ག་མེད་པས་ཟག་པ་མེད་པ་ནི་དཔེར་ན་ངང་པའི་རྒྱལ་པོ་གནས་སྲུང་ལྟ་བུར་གྱུར་ཏོ།། उभे चास्य हस्तपादतले जालिनी अभूतां विचित्रसुविभक्ताच्छिद्रापरिस्राविणी, तद्यथा धृतराष्ट्रस्य हंसराजस्य ग.व्यू.232[क]/309; द्र. གནས་སྲུང་པོ།

གནས་སྲུང་པོ *ना.* धृतराष्ट्रः, गन्धर्वराजः – དྲི་ཟའི་རྒྱལ་པོ་གནས་སྲུང་པོ་དང་དྲི་ཟའི་བུ་དང་དྲི་ཟའི་བུ་མོ་ལྟ་བུའི་ལུས་ཀྱི་སྤྲིན་དུ་མངོན་པར་འགྲོན་ཅིང་སེམས་ཅན་ཡོངས་སུ་སྨིན་པར་བྱེད་པ་མཐོང་ངོ་།། धृतराष्ट्रगन्धर्वराजगन्धर्वपुत्रगन्धर्वकन्यासदृशात्मभावमेघनिश्चरितान् सत्त्वान् परिपाचयमानानपश्यत् ग.व्यू.103[ख]/193; द्र. གནས་སྲུང་།

གནས་གསུམ་པོ भुवनत्रयम् – ང་ལས་འགྲོ་བ་ཐམས་ཅད་འབྱུང་། །ང་ལས་གནས་གསུམ་པོ་ཡང་འབྱུང་།། मद्भवं हि जगत् सर्वं मद्भवं भुवनत्रयम्। हे.त.10[क]/30.

གནས་བསྲུང = གནས་བསྲུང་བ།

གནས་བསྲུང་བ स्थानरक्षा – གནས་བསྲུང་བ་དང་སྡིག་པ་བཤགས་པ་ལ་སོགས་པའི་མདོར་བསྟུས་ཆེན་པོ་སྟེ་དང་པོའོ།། स्थानरक्षापापदेशनादिमहोद्देशः प्रथमः वि.प्र.32[ख]/4.7.

གནོང = གནོང་བ།

གནོང་བ *वि.* मङ्कुः – གང་གིས་དེ་གནོད་པར་[གནོང་བར་]འགྱུར་བའི་ཉེས་པ་ཡང་དག་པ་ཡང་འཆབ་པར་བྱེད་དེ། སྒྲོགས་པར་མི་བྱེད་དོ།། भूतञ्च दोषं प्रतिच्छादयति, न विवृणोति येनास्य स्यान्मङ्कुभावः बो.भू.135[क]/174; གནོང་མི་བཀུར་བའི་གང་ཟག་རྣམས་ཚར་གཅད་པའི་ཕྱིར दुर्मङ्कूनां पुद्गलानां निग्रहाय म.व्यु.8350 (115[ख]); གང་དག་དད་པ་དེ་དག་ནི། གནོང་ཞིང་མི་དགའ་བ་དང་མི་འཇིགས་པ་མེད་པར་གྱུར་ཏོ།། ये श्राद्धास्ते मंकवः संवृत्ताः, अनुदग्राः, अविशारदाः लो.को.1375.

གནོང་བར་འགྱུར་བ मङ्कुभावः – གང་གིས་དེ་གནོད་པར་[གནོང་བར་]འགྱུར་བའི་ཉེས་པ་ཡང་དག་པ་ཡང་འཆབ་པར་བྱེད་དེ། སྒྲོགས་པར་མི་བྱེད་དོ།། भूतञ्च दोषं प्रतिच्छादयति, न विवृणोति येनास्य स्यान्मङ्कुभावः बो.भू.135[क]/174.

གནོང་མི་བཀུར་བ *वि.* दुर्मङ्कुः – གནོང་མི་བཀུར་བའི་གང་ཟག་རྣམས་ཚར་གཅད་པའི་ཕྱིར दुर्मङ्कूनां पुद्गलानां निग्रहाय म.व्यु.8350(115[ख]); म.व्यु.2503(47[ख]); मि.को.128[क]।

གནོང་མི་བསྐུར་བ = གནོང་མི་བཀུར་བ།

གནོད = གནོད་པ།

གནོད་ཕྱུར་བ = གནོད་པར་ཕྱུར།

གནོད་གྲིབ दुश्छाया म.व्यु.4384(69[क]); मि.को.33[ख]।

གནོད་བཤིད *वि.* अपकारपरः – ཇི་ལྟར་ཁྱོད་ནི་གནོད་བཤིད་ལ། །ཕན་པ་ལྷུར་མཛད་དེ་ལྟ་བུར།། अपकारपरेऽपि त्वमुपकारपरो यथा ॥ श.बु.114[ख]/119; प्रतिकूलवर्ती – གང་ཞིག་བདག་ལ་གནོད་པ་བཤིད་པ་དེ། །གཡོ་བཞིན་དུ་ཡང་བདག་གིས་ཡོངས་མ་བཏང་།། योऽभून्ममात्र प्रतिकूलवर्ती विस्पन्दमानोऽपि स मे न मुक्तः । जा.मा.113[ख]/132; अहितावहितः – ཁྱོད་ནི་གནོད་བཤིད་དགྲ་བོ་ལ། །ཕན་པ་མཛད་པའི་བཤེས་ལགས་ཏེ།། अहितावहिते शत्रौ त्वं हितावहितः सुहृत् । श.बु.114[ख]/120.

གནོད་འགྱུར = གནོད་པར་འགྱུར་བ།

གནོད་འགྱུར་བ = གནོད་པར་འགྱུར་བ།

གནོད་ཅན = གནོད་པ་ཅན།

གནོད་ཅན་གྱི་ཚད་མ बाधकं मानम्, बाधकप्रमाणम् – རིག་བྱེད་ལ་ཡང་གནོད་ཅན་གྱི། །ཚད་མ་རྗེས་དཔག་མེད་ཉིད་བསྟན།། <?> वेदे तु बाधकं मानमुक्तमेवानुमात्मकम् । त.स.113[क]/977.

གནོད་ཅན་ཤེས = གནོད་ཅན་ཤེས་པ།

གནོད་ཅན་ཤེས་པ बाधकप्रत्ययः – དེས་ན་གནོད་ཅན་ཤེས་པ་ལ། །ལྟོས་མེད་ཚད་མ་ཉིད་མི་འགྲུབ།། अनपेक्षप्रमाणत्वं बाधकप्रत्यये यतः । न सिद्धम् त.स.109[ख]/955.

གནོད་བཅས = གནོད་པ་དང་བཅས་པ།

གནོད་ཆེན = གནོད་པ་ཆེན་པོ།

གནོད་ཆེན་བྱེད *वि.* महापकारी – དེ་བས་འདི་དག་གནོད་ཆེན་བྱེད་ན་ཡང་། །ཐམས་ཅད་བཟང་དགུ་ཞིག་ཏུ་སྤྱད་པར་བྱ།། महापकारिष्वपि तेन सर्वं कल्याणमेवाचरणीयमेषु ॥ बो.अ.19[ख]/6.120.

གནོད་ལྟས दुष्प्रेक्षितम् म.व्यु.4383 (69[क]); मि.को.33[ख]।

གནོད་ལྡན = གནོད་པ་དང་ལྡན་པ།

གནོད་གནས = ཛམྦྷ་ལ་འཛིན *ना.* जम्भलः, यक्षः – དཔལ་གནོད་གནས་ཀྱི་སྒྲུབ་པའི་ཐབས श्रीजम्भलसाधनम् क.त.3372, གནོད་གནས་ཀྱི་སྒྲུབ་པའི་ཐབས जम्भलसाधनम् क.त.3658, དཔལ་གནོད་གནས་ཀྱི་མདོར་བསྡུས་པའི་སྒྲུབ་པའི་ཐབས श्रीजम्भलसंक्षिप्तसाधनम् क.त.3347, འཕགས་པ་གནོད་གནས་[ཆུའི་]དབང་པོ་ཅི་ལྟར་འབྱུང་བའི་རྟོག་པ་ཞེས་བྱ་བ आर्यजम्भलजलेन्द्रयथालब्धकल्पनाम क.त.770; द्र. གནོད་འཛིན།

གནོད་པ •*क्रि. (अवि., सक.)* बाधते – སྡུག་བསྔལ་དེ་ཉིད་དུ་ཡོད་ན། །ཅི་སྟེ་རབ་དགའ་ལ་མི་གནོད།། यद्यस्ति दुःखं तत्त्वेन प्रहृष्टान् किं न बाधते । बो.अ.34[क]/9.88; प्रबाधते – གལ་ཏེ་བདག་གི་སྡུག་བསྔལ་གྱིས། །གཞན་གྱི་ལུས་ལ་མི་གནོད་པ། །དེ་ལྟ་ཡང་བདག་སྡུག་བསྔལ་དེ། །བདག་ཏུ་ཞེན་པས་མི་བཟོད་ཉིད།། यद्यप्यन्येषु देहेषु मद्दुःखं न प्रबाधते । तथापि तद्दुःखमेव ममात्मस्नेहदुःसहम् ॥ बो.अ.27[क]/8.92; बाध्यते – དེ་བཞིན་དུ་སྐད་ཅིག་མ་དང་བདག་མེད་པ་དང་ཐམས་ཅད་མཁྱེན་པ་དང་འདོད་ཆགས་དང་བྲལ་བ་ལ་སོགས་པའི་དམ་བཅའ་བ་ལ་ཡང་གནོད་པ་ཡོ་ན་སྟེ तथा क्षणिकत्वनैरात्म्यसर्वज्ञवैराग्यादिप्रतिज्ञापि बाध्यत एव त.प.131[ख]/714; उपरुणद्धि – དེ་ལྟ་ཡིན་དང...མངོན་སུམ་གྱི་བྱ་བ་ལ་མི་གནོད་པའི་ཕྱིར ततश्च ... न प्रत्यक्षव्यापारमुपरुण-

द्वीति त.प.238क/946; •सं. 1. अपकारः – ཕན་དང་གནོད་པ་དག་ལ་ཡང་། །ལན་ནི་ཆུང་བ་ཟུག་རྡུ་ཡིན།། अल्पप्रतिक्रिया शल्यमुपकारापकारयोः ॥ अ.क. 308क/40.13; མ་ལ་གནོད་པ་ཆུང་ངུ་བྱས་པས་ཀྱང་སྡུག་བསྔལ་ཆེན་པོ་མྱོང་བར་གྱུར་ལ मातुः स्वल्पमपकारं कृत्वा महद्दुःखमनुभूतम् अ.श.98क/88; अपकरणम् – གཞན་ལ་འཚེ་བར་མངོན་པར་དགའ་བ་དྲག་པོའི་བདག་ཉིད་ཅན་རྣམས་ཀྱི་ནི་གཞན་ལ་གནོད་པ་བྱེད་པའི रौद्रात्मनान्तु परोपद्रवाभिरतीनां परापकरणकारिणाम् प्र.अ.68क/76; अहितम् – ང་ལ་རབ་ཏུ་བྱམས་པའི་ཕྱིར། བདག་ལ་ཕན་པ་དང་གནོད་པར་འགྱུར་བ་ལའང་ང་མི་ལྟ་བར་ཁྱོད་འདི་ལྟར་འབད་པ་ནི་ངའི་དོན་དུ་སྤྱོད་པ་ཡིན་པས अस्मदतिस्नेहादनवेक्षितात्महिताहितक्रमो मदर्थचर्यासमुद्योगस्तवायम् जा.मा.77ख/89; དེ་ཡང་བློ་གྲོས་ཆེན་པོ་སྐྱེས་བུ་བླུན་པོ་རང་གི་ལས་ཀྱི་ཉེས་པའི་སྒྲིབ་པ་ལ་གནས་པ་དེ་དག་ལ་ཡུན་རིང་པོར་དོན་མེད་པ་དང་གནོད་པ་དང་མི་བདེ་བ་སྒྲུབ་པར་འགྱུར་རོ།། तदन्येषां महामते मोहपुरुषाणां स्वकर्मदोषावरणावृतानां दीर्घरात्रमनर्थायाहिताय[सुखाय] संवर्तकं भविष्यति ल.अ.156ख/103; प्रतिकृतिः – འདི་ནི་བདག་ལ་ཕན་འདོགས་པའམ་གནོད་པ་བྱེད་པ་ཡིན་ཞེས་བདག་ལ་ཕན་པ་དང་གནོད་པར་རྣམ་པར་རྟོག་གོ།། ममेदमनुग्राहकमुपघातकं चेत्यात्मोपकारकप्रतिकृत्यादिविकल्पः त.प.96ख/644; द्रोहः – ཕན་ཚུན་གནོད་པ་མེད་པའི་སེམས་གྱུར་ནས परस्परद्रोहनिवृत्तभावाः जा.मा.3ख/2; अभिद्रोहः – ང་ལ་གནོད་པ་བྱེད་པ་ནི། །གཞན་དག་འོངས་ནའང་ཁྱོད་ཉིད་ཀྱིས། །བཙོན་འགྲུས་རབ་ཏུ་སྐྱེད་ནས་སུ། །མཐུ་རྩལ་ཆེན་པོས་བཟློག་པའི་རིགས།། मदभिद्रोहसंरब्धं त्वं नामापतितं परम्। विनिवारणशौटीरविक्रमो रोद्धुमर्हसि ॥ जा.मा.143ख/166; पराभवः – གནོད་པ་བསྒྲུབ་ལ་དགྲ་ནི་ཁྱབ་བདག་མ་ཡིན་ངེས་པར་གྲོགས་ནི་ཕན་ལ་མིན།། ... གནོད་པ་བྱེད་པ་ལ་ཡང་གནོད་པའི་སྦྱོར་བ་དག། །མ་དཔྱད་པར་ནི་བློ་གྲོས་ལྡན་པས་མི་བྱ་སྟེ།། शत्रुर्नैव विभुः पराभवविधौ नैवोपकारे सुहृत्...कृतापकारेऽपि पराभवोद्यमं न नाम कुर्यादविचार्य बुद्धिमान्। अ.क.148ख/68.88 2. बाधा, पीडनम्–བདེ་དང་སྡུག་བསྔལ་སྐོམ་ལ་སོགས་གནོད་པ་དེ་ལ་ཡོད་མ་ཡིན།། सुखदुःखपिपासादिबाधा तस्य न युज्यते॥ ज्ञा.सि.40ख/103; बाधनम् – རྣམ་སྡང་སྐྱོན་གྱི་དུག་གིས་ཡིད་ནི་སུན་ཕྱུང་གྱུར་རྣམས་ཀྱིས། །དམ་པ་དག་ལ་གནོད་པ་བསྒྲུབ་ལ་འབད་པ་རབ་རྣོ་གང་།། विद्वेषदोषविषदूषितमानसानां यत्साधुबाधनविधौ निशितः प्रयत्नः। अ.क.264क/97.1; སེམས་ལ་གནོད་པར་མི་བྱ་འོ།། न कार्यं चित्तबाधनम् स.सि.70क/190; आबाधः – དེ་དུས་གཞན་ཞིག་ན་སྤྱི་བོར་ཤ་མེན་འཇམ་ཞིང་ཤིན་ཏུ་འཇམ་པ་ཞིག་སྐྱེས་ཏེ། དཔེར་ན་ཤིང་བལ་གྱི་འདའ་བའམ་རས་བལ་གྱི་འདའ་བ་བཞིན་དུ་ཆུང་ཟད་ཀྱང་གནོད་པ་སྐྱེད་པར་མི་བྱེད་དོ།། तस्यापरेण समयेन मूर्ध्नि पिटको जातो मृदुः सुमृदुः तद्यथा तूलपिचुर्वा कर्पासपिचुर्वा न च किंचिदाबाधं जनयति वि.व.156क/1.44; དེ...གནོད་པ་ཉུང་བར་འགྱུར། སྐྱོན་ཉུང་བར་འགྱུར་རོ།། सः...अल्पाबाधश्च भवति, अल्पादीनवश्च भवति अ.सा.288क/162; संबाधः – དེ་ཙམ་གྱིས་ནད་པ་ངལ་བ་དང་གནས་མལ་ཕན་ཚུན་དུ་འགྱུར་བ་དང་དུས་ལས་ཡོལ་བ་དང་གནོད་པ་འབྱུང་ན་ལན་གཉིས་སོ།། द्विस्तावता ग्लानक्लान्तिशयनासनसंभेदकालातिक्रान्तिसंबाधसंपत्तिसम्भावने वि.सू. 64क/81; རིགས་གསུམ་པ་དང་བྱ་བ་བྱེད། །མི་གནོད་རྟེན་བཅས་གཞན་ཡིན་ཏེ།། <?>त्रिधातुकः कृत्यकरः ससंबाधाश्रयोऽपरः। सू.अ.166क/57; व्याबाधः – དེ་ཡང་དེ་གཉིས་ན་མེད་དེ། ཕ་རོལ་པོ་ལ་ཡང་གནོད་པའི་རྒྱུ་མེད་པའི་ཕྱིར་རོ།། तच्च तयोर्नास्ति, परव्याबाधहेत्वभावात् अभि.भा.236क/793; पीडनम् – དམྱལ་སོགས་གནོད་པ་རྣམས་ལས་ཐར།། मुक्तो नारकपीडनात्

ज्ञा.सि.44ख/114; གནོད་པའི་བདག་ཉིད་ཡིན་པའི་ཕྱིར་སྡུག་བསྔལ་བའོ॥ पीडनात्मकत्वाद् दुःखम् अभि.भा.48ख/1057; གནོད་པའི་བདག་ཉིད་ཡིན་པའི་ཕྱིར་ཞེས་བྱ་བ་ནི་གནོད་པར་བྱེད་པའི་བདག་ཉིད་ཡིན་པའི་ཕྱིར་རོ་ཞེས་བྱ་བའི་དོན་ཏོ॥ पीडनात्मकत्वादिति बाधनात्मकत्वादित्यर्थः अभि.स्फु.252क/1057; संपीडनम् – སེམས་ལ་གནོད་པའི་ཕྱིར་ཡིད་མི་བདེ་བའོ॥ चित्तसंपीडनार्थेन दौर्मनस्यम् प्र.प.187क/246; उत्पीडा – བསད་པ་དང་བཅིང་བ་དང་ཆད་པས་གཅོད་པ་དང་གཏུབ་པ་དང་བརྡེག་པ་ལ་སོགས་པ་སེམས་ཅན་ལ་གནོད་པ་རྣམས་རྣམ་པར་སྤངས་པ་ཡིན་ནོ॥ वधबन्धनदण्डनच्छेदनताडनादिसत्त्वोत्पीडा विवर्जिताः बो.भू.187ख/249; उत्पीडनम् – དེ་བས་ཕྱུགས་ལ་བཞེད་པ་དོན་བཅས་མཛོད། །བདག་ལ་གནོད་པར་དོགས་པ་ཁྱོད་མ་མཛད॥ यतः सुकामं कुरु देव काममलं मदुत्पीडनशङ्कया ते ॥ जा.मा.76ख/88; उत्पीडना – ཕ་རོལ་གྱིས་བསྒོ་བ་དང་ཕ་རོལ་དགའ་བར་བྱ་བའི་ཕྱིར་ཕ་རོལ་ལ་གནོད་པའམ་ཕ་རོལ་གསོད་པའམ་ཕ་རོལ་འདྲིད་པར་མི་བྱེད་དོ॥ नत्वेव पराज्ञया पराराधनार्थं परोत्पीडनां परवधं परवञ्चनां वा कुर्यात् बो.भू.62ख/81; སེམས་ཅན་ཐམས་ཅད་ལ་གནོད་པའི་སྦྱིན་པ་མེད་པ་ནས་ཇི་སྙེད་སྨོས་པ་ལས་ཟླ་བའི་སྦྱིན་པ་མེད་པའི་བར नास्ति सत्त्वोत्पीडनादानम्, यावन्नास्ति यथोक्ते ऊनदानम् शि.स.149ख/144; परिपीडनम् – ལུས་ལ་གནོད་པའི་ཕྱིར་སྡུག་བསྔལ་ལོ॥ कायपरिपीडनार्थेन दुःखम् प्र.प.187क/246; प्रपीडनम् – ལུས་དང་སེམས་ལ་གནོད་པ་ཉམས་སུ་འབབ་པས་དངོས་པོའི་བདེན་པ་ཡང་རབ་ཏུ་ཤེས་སོ॥ चित्तशरीरप्रपीडनोपनिपातितत्वाद्वस्तुसत्यम्...प्रजानाति द.भू.212ख/27; उपतापः – དེ་ནི་ཆོས་ཀྱི་བདག་ཉིད་གྱུར་པས་ན། །གཞན་ལ་གནོད་པའི་སེམས་གདུག་མེད་པར་གྱུར॥ धर्मात्मकत्वान्न च नाम तस्य परोपतापाशिवमास चेतः। जा.मा.15क/16; उपरोधः – གཞན་ལ་གནོད་པས་འཚོ་ཞིང་དགའ་བ་སྐྱེ परोपरोधार्जितवृत्तितुष्टिः जा.मा.41क/48; བདག་གི་ལ་མི་གནོད་པ་དང་དེ་ལ་གནོད་པའི་གཉེན་པོ་ཅན་ལ་དེ་མི་སྲིད་པའི་ཕྱིར་རོ॥ आत्मीयानुपरोधिनि तदुपरोधप्रतिघातिनि च तस्यासम्भवात् त.प.295ख/1053; उपरोधनम् – སློང་བ་པོ་སྡུག་བསྔལ་བ་རྣམས་ལས་སློང་བའི་གནོད་པ་བཟོད་པ दुःखितानां याचकानामन्तिकाद्याच्ञोपरोधनक्षान्तिः बो.भू.106क/135; अपमर्दनम् – འཆི་བར་གྱུར་ཀྱང་སླའི། གཞན་ལ་གནོད་པ་མི་བྱེད་དོ॥ मरणमुपगच्छन्ति न त्वेव परेषामपमर्दनं कुर्वन्ति अ.सा.294क/166 3. बाधः, निषेधः – སད་པའི་ཤེས་པས་གནོད་པ་ཡིན་ནོ་ཞེ་ན། གནོད་པ་ཞེས་བྱ་བ་འདི་ཅི་ཞིག जाग्रत्प्रत्ययेन बाधमानता चेत्। कोऽयं बाधो नाम प्र.अ.3क/4; बाधा – རྗེས་སུ་དཔག་པའི་གནོད་པ་ནི་རྣམ་པ་གསུམ་དུ་བསྟན་པ། བཞི་པ་ནི་མངོན་སུམ་གྱིས་གནོད་པ अनुमानबाधैव त्रिविधा दर्शिता। प्रत्यक्षबाधा चतुर्थी प्र.अ.173क/524; དེ་ལྟ་མ་ཡིན་ན་ཚད་མའི་མཚན་ཉིད་དང་ལྡན་པ་ལ་གནོད་ན་དེའི་མཚན་ཉིད་སུན་ཕྱུང་བར་འགྱུར་བ अन्यथा हि प्रमाणलक्षणोपपन्नस्य बाधायां तल्लक्षणमेव दूषितं स्यात् त.प.175क/808; འདིར་སྒྲ་ལ་སོགས་པའི་ཚད་མས་དམ་བཅའ་བ་ལ་གནོད་པ་རྒྱས་པར་སྟོན་པ་ཡིན་ཏེ अत्र शाब्दादिप्रमाणैः प्रतिज्ञाबाधां विस्तरेण प्रतिपादयति त.प.134ख/719; बाधनम् – ཐོས་པས་གནོད་པའི་ཕྱིར་རོ॥ श्रुतिबाधनात् त.प.131ख/714; དཔྱིག་ཤིང་མིན་ཞེས། །བརྗོད་པ་ལ་ཡང་གནོད་ཕྱིར་རོ॥ वृक्षोऽधात्रीत्युक्तौ च बाधनात् ॥ प्र.वा.51क/4.121; ཕྱོགས་དང་པོ་ལ་མཐོང་བ་དང་འདོད་པས་གནོད་དེ प्रथमे पक्षे दृष्टेष्टबाधनम् त.प.109ख/669; अवबाधनम्–ཁས་བླངས་པ་དང་འདི་འགལ་ཕྱིར། །འདི་ལྟར་རིགས་པས་ཀྱང་གནོད་ཡིན॥ अभ्युपेतविरोधोऽयमेवं युक्त्यावबाधनम् ॥ त.स.106ख/934; हानिः – དམ་བཅའ་བ་ལ་གནོད་པ

प्रतिज्ञाहानिः वा.टी.107क/73; विघातः – དེའི་སྐྱོན་ཡིན་པར་འདོད་པ་ཡིན་ཡང་གྲུབ་པ་ལ་གནོད་པ་མེད་པའི་ཕྱིར་རོ།། तस्य दोषत्वेनाभिमतस्य भावेऽपि सिद्धेर्विघाताभावात् वा.टी.105ख/69; व्याघातः – རྣམ་པར་རྟོག་པ་ནི་རིག་པར་བྱ་བ་མ་ཡིན་ནོ་ཞེས་བྱ་བའི་སྐབས་ལ་གནོད་པ་མེད་དོ།། न तु विकल्पः संवेद्यत इति न प्रकृतस्य व्याघातः त.प.7क/459; व्यतिकरः – ས་འཛིན་གྱི། །རྩེ་མོའི་ཆ་དག་ལྷུང་བའི་སྒྲ་དྲག་གནོད་པས་འཇིགས་པ་བཞིན་དུ་ས་གཞི་འཁྲུགས་པར་གྱུར།། भूभृत्प्राग्भारस्फारघोषव्यतिकरचकितेवाकुला भूर्बभूव अ.क.308ख/108.138 **4.** अपराधः – བདག་གིས་གནོད་པ་བྱས་མོད་ཀྱང་། །བདེ་གཤེགས་བདག་ཉིད་ཆེན་པོ་ཡིས།...རབ་ཏུ་བསྲུངས།། अहं कृतापराधोऽपि सुगतेन महात्मना... रक्षितः अ.क.161क/72.53; आगः – དེ་ཡིས་བསམས་པ་བདག་ལ་ཡང་། །མ་ལ་གནོད་བྱས་སྡིག་པ་ཡོད།། सोऽचिन्तयन्ममाप्यस्ति पापं मातुः कृतागसः। अ.क.246क/92.44 **5.** = འཚེ་བ हिंसा – བཅོམ་པ་ནི་གནོད་པ་དང་བྲལ་བ་དག་ཡིན་ནོ།། हन हिंसागत्योः अभि.स्फु.3ख/5; विहिंसा – རབ་ཏུ་དབེན་པའི་བདེ་བའི་རོ་མྱོང་བ་རྣམས་ནི་འདོད་པ་ལ་སྦྲུས་ཀྱི་གནས་དང་གནོད་པ་ལྟ་བུར་མི་མཐུན་པར་སེམས་སོ།། प्रविवेकसुखरसज्ञानां विडम्बनेव विहिंसेव च कामाः प्रतिकूला भवन्ति जा.मा.98क/114; विहेठा – སྐད་ཅིག་དེ་ལ་སེམས་ཅན་གང་ལ་ཡང་གནོད་པའམ་འཇིགས་པའམ་དངང་བའམ་བག་ཚོན་པ་མེད་པར་གྱུར་ཏོ།། न च कस्यचित् सत्त्वस्य तस्मिन् क्षणे विहेठा वा त्रासो वा भयं वा स्तम्भितत्वं वाभूत् ल.वि.30ख/39; विहेठनम् – བདུད་སྡིག་ཅན་ནི་ཡུན་རིང་པོ་ནས་བཅོམ་ལྡན་འདས་ལ་གླགས་ལྟ་བ་དང་གླགས་ཚོལ་བ་དང་སེམས་ཅན་རྣམས་ལ་གནོད་པའི་བསམ་པ་དང་རྗེས་སུ་འབྲེལ་བ་ཡིན་ནོ།། समनुबद्धो दीर्घरात्रं मारः पापीयान् भगवतोऽवतारप्रेक्षी अवतारगवेषी, सत्त्वानां च विहेठनाभिप्रायः अ.सा.70ख/39; द्र. མཐོ་འཚམ་པ། विशसनम्– བསད་དང་བཅད་དང་གཤེག་དང་རྡེག་པ་དང་། །གནོད་པ་མང་པོས་རྟག་ཏུ་སྡུག་བསྔལ་ན།། वधविकर्तनताडनपाटनैः विशसनैर्विविधैश्च सदातुरः जा.मा.177ख/206 **6.** वधः – དེ་དག་བདག་ཉིད་ལ་གནོད་ཕྱིར། །དེ་འདྲའི་སྒྲུབ་པ་རྟོགས་[རྟོག་]པར་བྱེད།། तेषामात्मवधायैव तादृक्साधनकल्पनम्। त.स.106ख/932; ཇི་ལྟར་བདག་ཉིད་ལ་གནོད་པ་ཡིན་ཞེ་ན कथमात्मवधाय भवति त.प.231क/932; घातः – གྲོང་ལ་གནོད་པའམ་གྲོང་ཁྱེར་ལ་གནོད་པའམ་གྲོང་རྡལ་ལ་གནོད་པའམ...མེ་སྟོར་བའི་གནོད་པ་བྱུང་ངམ ग्रामघाते वा नगरघाते वा निगमघाते वा...अग्निदाहे वा वर्तमाने अ.सा.335क/188; आघातः – ཇི་ལྟ་བུར་རྟོགས་ཞེ་ན། མི་རྟག་པ་དང་...སྡིག་པ་དང་གནོད་པ་དང་...མཚན་ཉིད་མེད་པར་ཏེ कथं निर्विध्यति? अनित्यतः...अघत आघाततः... अलक्षणत इति सु.प.25क/5; उपघातः – གཞན་གྱི་གནོད་པ་དང་དུ་ལེན་པ... བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་ཡིན परोपघातेष्वधिवासकः... बोधिसत्त्वः सू.अ.248क/165; प्रतिघातः – དེ་ལ་ཕྱོགས་པའི་སེམས་ཅན་ཁྱད་པར་ཅན་རྣམས་ལ་བརྙས་པའམ་གནོད་པ་མི་བྱའོ།། तदुन्मुखेषु सत्त्वविशेषेषु नावज्ञा प्रतिघातो वा करणीयः जा.मा.60क/69; क्षतिः – དེ་དག་ཉིད་ལ་གནོད་པ་དང་ཕུང་བ་ཆེན་པོར་མི་འགྱུར་བར་བྱ་བའི་ཕྱིར། རང་གི་ལུས་དང་ཡན་ལག་གསེ་ཞིང་སྦྱིན་པར་མི་བྱེད་དོ།། न स्वदेहमङ्गविभागशो ददाति। मा हैव तेषामधिमात्रा क्षतिश्चोपहतिश्च भविष्यतीति बो.भू.62ख/82; विप्लवः – རབ་རིབ་ནི་མིག་ལ་གནོད་པ་སྟེ तिमिरम् अक्ष्णोर्विप्लवः न्या.टी.42क/55 **7.** उपद्रवः – ཚ་བ་དང་རླུང་དང་ཆར་པའི་གནོད་པས་མི་རེག་པར་བྱ་བའི་ཕྱིར घर्मवातवर्षोपद्रवेणास्पृष्टये वि.सू.72क/89; དེ་ནས་རྒྱལ་པོས་ཆོས་ཀྱི་མཆོད་སྦྱིན་དེ་ལྟར་བྱས་པ་དང་། སྐྱེ་བོ་ཕོངས་པ་རྣམས་ཀྱི་སྡུག་བསྔལ

དང་གནོད་པ་ནི་རབ་ཏུ་ཞི་བར་གྱུར་ अथैवं प्रवृत्तेन धर्मयज्ञेन राज्ञा प्रशमितेष्वर्थिजनदुःखेषु सार्धमुपद्रवैः जा.मा.65क/75; उपसर्गः – སྲོག་ཆགས་ཀུན་གྱི་གནོད་པ་དག །ཤིན་ཏུ་མི་བཟད་འདི་འདྲ་བ॥ तेषां सर्वे तथा नित्यमुपसर्गाः सुदारुणाः । सु.प्र.2क/2; མི་ཡི་བདག་པོ་ཚུལ་བཞིན་སྤྱོད་པ་ཡིས། །འབངས་རྣམས་བསྐྱངས་པས་གནོད་པ་མེད་པ་བཞིན॥ पुरं विनिर्मुक्तमिवोपसर्गैर्न्यायप्रवृत्तेन नराधिपेन ॥ जा.मा.86ख/99; ईतिः – གནོད་པ་ཡང་དག་པར་ཞི་བར་བྱེད་པ་དང་ཐ་མའི་སྐྱེ་བའོ॥ ईतिसंशमनी चरमा चोपपत्तिः बो.भू.185ख/247; आपद् – དེས་ན་མི་ཏོག་བློ་མཛེས་ཀྱིས། །རྒྱལ་པོའི་གནོད་པ་ཤེས་ཀྱང་ནི॥ अतः सुपुष्पचन्द्रेण जानताऽपि नृपापदम् बो.अ.27ख/8.106; अपायः – སེམས་དཔའ་ཆེན་པོ་དེ་ལ་བརྙས་པར་གྱུར་ཏེ། དེས་གནོད་པ་བྱས་སུའང་མི་དོགས་ལ अवज्ञाय तं महासत्त्वं तदपायनिराशङ्कः जा.मा.112ख/130; अनर्थः – ཕན་པར་འདོད་པའི་ཕྱིར་དེ་ལ་འཇིག་རྟེན་པའི་གནོད་པ་འགའ་ཡང་བྱེད་དེ तदेकत्वमप्यस्यानर्थं लौकिकमुपसंहरति हितकामतया बो.भू.142ख/183; व्यसनम् – འཇིག་རྟེན་ཇི་སྲིད་སེམས་ཅན་གྱི། །གནོད་དང་ཕུན་སུམ་ཚོགས་པ་ཀུན། །བཟློག་ཅིང་འབྱོར་བར་བྱ་བའི་ཕྱིར། །སངས་རྒྱས་སྐྱབས་ཆེན་ཉིད་དུ་འདོད॥ आलोकात्सर्वसत्त्वानां बुद्धत्वं शरणं महत् । सर्वव्यसनसम्पत्तिव्यावृत्त्यभ्युदये मतम् ॥ सू.अ.153ख/38; གང་གི་དོན་དུ་ཞེས་བྱ་བ་ནི་གནོད་པ་ཐམས་ཅད་བཟློག་པ་དང་ཕུན་སུམ་ཚོགས་པ་ཐམས་ཅད་འབྱོར་བར་བྱ་བའི་ཕྱིར་རོ॥ यत्रार्थे इति सर्वव्यसनव्यावृत्तौ सम्पत्त्यभ्युदये च सू.व्या.154क/39; དེ་ལྟར་ཡུན་རིང་རྒྱུན་ཆགས་དགྲར་གྱུར་པ། །གནོད་པའི་ཚོགས་རབ་འཕེལ་བའི་རྒྱུ་གཅིག་པུ॥ इति सन्ततदीर्घवैरिषु व्यसनौघप्रसवैकहेतुषु । बो.अ.9क/4.34 **8.** = སྡུག་བསྔལ་བ दुःखम् – བདག་ལ་ལུས་ཀྱི་གནོད་པ་དང་སེམས་ཀྱི་གནོད་པ་མཆིས་སོ॥ कायिकं च मे दुःखं चेतसिकं च अ.श.19क/15; व्यथा – ངན་འགྲོའི་གནོད་པ་དག །དྲན་པར་བྱས་ཏེ संस्मृत्यापायिकीं व्यथाम् बो.अ.11क/5.29; पीडा – ལུས་ལ་གནོད་པའམ་སེམས་ལ་གནོད་པ་བགྱིས་ན कायपीडां चित्तपीडां वा कुर्याम शि.स.59ख/58; कारणा – འོད་སྲུངས་སེམས་ནི་གནོད་པ་རྣམ་པ་མང་པོ་བྱེད་པས་ཕྱིར་རྒོལ་བ་དང་མཚུངས་སོ॥ चित्तं हि काश्यप प्रत्यर्थिकसदृशं विविधकारणाकरणतया शि.स.131क/126; ལྕགས་ཀྱི་བུམ་པ་གཅིག་ཏུ་འབར་བ་དེ་དག་ཀྱང་མཐོང་བར་གྱུར་ལ། གནོད་པ་དེ་དག་ཐམས་ཅད་ཀྱིས་ཀྱང་གནོད་པར་བྱ་ཞིང་ ताश्च लोहकुम्भीः पश्येत्, ताः कारणाः कार्यमाणान् ग.व्यू.338क/415; यातना – གནོད་པ་སྣ་ཚོགས་སྟོང་ཁྲག་དག་གིས་གནད་གཅོད་པའི་ཚོར་བ་དྲག་པོ་དག་གིས་མངོན་པར་ཉེན་པ विविधयातनासहस्रव्यतिभिन्नमर्मणस्तीव्राभिर्वेदनाभिरभिनुन्नाः अभि.भा.197क/667; སྡུག་བསྔལ་གྱིས་གནོད་པའི་རྣམ་པ་ཐམས་ཅད་ཀྱང་ཉམས་སུ་ལེན་པར་བྱེད་པ་ཡིན सर्वदुःखयातनाप्रकारांश्चोद्वहेत् बो.भू.132क/169 **9.** तुदनम् – ལུས་འདི་...ཟུག་རྔུ་ལྟར་གནོད་པའི་བདག་ཉིད་ཅན अयं कायः ...शल्यवत्तुदनात्मकः शि.स.129क/125; तोदनम् – སྲིད་པ་དང་སྲིད་པའི་ལོངས་སྤྱོད་རྣམས་དང་དཀོན་མཆོག་རྣམས་ལ་སྲེད་པ་དང་ཐེ་ཚོམ་གྱི་སྒོ་ནས་ཞུགས་པས་གནོད་པའི་ཕྱིར་ཟུག་རྔུ་རྣམས་སོ॥ [भवेषु] भवभोगेषु रत्नेषु च तृष्णाविचिकित्सामुखेनानुप्रविश्य तोदनाच्छल्याः अभि.स.भा.42ख/59 **10.** कदर्थना – མེ་ཏོག་ལྟ་བུ་མཛའ་བ་ཡིས། །གནོད་པ་བཟོད་པ་མ་ཡིན་ནོ॥ पुष्पोपमानि प्रेमाणि न सहन्ते कदर्थनाम् ॥ अ.क.147क/14.95; निकारः – དེ་ལྟར་བསམས་ནས་དེ་ཡིས་ནི། །གནོད་ལས་ཁྱོ་ལ་དགའ་བ་བཏང་॥ इति संचिन्त्य सा पत्युर्निकारात्प्रीतिमत्यजत् । अ.क.147क/14.95; གནོད་པ་ཡི་ནི་ཚོགས་དག་བྱས॥ कृता निकारनिकरा अ.क.161ख/72.54; परिभवः – མངོན་པར་ཞེན་པ

ཤིན་ཏུ་བརྟན་ལྡན་གཞན་གྱི་གནོད་པས་ཀྱུ་བཞིན་འཇུག།
<?> परपरिभवक्षोभारम्भस्थिराभिनिवेशिनः अ.क.
115ख/64.325 **11.** पांसनम् – གང་དང་གང་ཚུལ་དང
བཀའ་ཁྲིམས་ལས་འགལ་བར་བྱེད་ཅིང་དའི་བཀའ་གཙོག
པ་དེ་དང་དེ་དག...རང་གི་རིགས་ལ་གནོད་པ་དང་ཡུལ་ན
གནོད་པ་བྱེད་པ་དག यं यं...शीलमर्यादातिवर्तिनम-
स्मदाज्ञां परिभवन्तम्, तं तं स्वकुलपांसनं देशकण्-
टकम् जा.मा.63क/72 **12.** = མི་མཉམ་པ वैषम्यम् –
སྦྱོར་བ་ཆ་ཅང་དམ་པས་ནི་ལུས་ལ་གནོད་པའམ་སེམས་ལ
གནོད་པ་སྐྱེད་པར་བྱེད་དོ།། अभ्यवष्टब्धप्रयुक्तस्य
कायवैषम्यं चोत्पद्यते, चित्तवैषम्यम्वा श्रा.भू.84ख
/222 **0.** उपक्रमः – ས་ལ་ཡོངས་སུ་འགྱུར་བ་རྣམ་པ
བཞི་ཡང་དམིགས་ཏེ། ལས་ཀྱིས་བྱས་པ་ནི་སེམས་ཅན
རྣམས་ཀྱི་ལས་ཀྱི་ཁྱད་པར་གྱིས་སོ།། གནོད་པས་བྱས་པ
ནི་བསྣུན་པ་ལ་སོགས་པས་སོ།། चतुर्विधश्च परिणामः
पृथिव्या उपलभ्यते। कर्मकृतः सत्त्वानां कर्मविशे-
षात्। उपक्रमकृतः प्रहा[रा]दिभिः सू.व्या.235ख/
147; अपवादः – མི་རྣམས་ཚོག་ཤེས་ཐལ་བ་ལས། །གྱེ
མ་ནོར་སྒྲུབ་ལ་འཇུག་པ། །གནོད་པ་ཐམས་ཅད་འབྱུང་བ
ཡིས། །སྨད་འོས་རྒྱུད་པ་དག་གི་གནས།། अहो धनार्ज-
नावेशः सन्तोषविरहान्नृणाम्। सर्वापवादसंवादो
निन्द्यानां विपदां पदम्॥ अ.क.165क/19.14; अव-
ष्टम्भः – འཇུག་པའི་རྒྱུ་ཉིད་ནི་འབྱུང་བ་རྣམས་བསལ
ན་རྒྱུར་བྱས་པའི་གཟུགས་ལ་ལོགས་ཤིག་ཏུ་ཡུལ་གནོད
པའི་མཐུ་མེད་པའི་ཕྱིར་རོ།། वृत्तिहेतुत्वं भूतानि प्रत्या-
ख्यायोपादायरूपस्य पृथग्देशावष्टम्भसामर्थ्याभा-
वात् अभि.स.भा.3ख/3; संघट्टः – ཡུལ་ངན་པར་གནས
པ་ནི་ཡུལ་ཇི་ལྟ་བུར་གནས་ན་མིའམ་མི་མ་ཡིན་པ་གཞན
གྱིས་གནོད་པར་བྱེད་ཅིང <?> यद्रूपेण चादेशवासेन।
मनुष्यकृतो वा परतः संघट्टो भवति श्रा.भू.59ख/
147; •वि. बाधिका – གང་ཡང་བདག་ལ་གནོད་པའི
རྗེས་སུ་དཔག་པ या चात्मनो बाधिकानुमा त.प.175क
/808; कटुकः – བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔས་གནོད་པའི
ཐབས་དང་ཐབས་དྲག་པོ་གང་གིས་སེམས་ཅན་གྱི་དོན་དུ
འགྱུར་བ་མཐོང་བཞིན་དུ་ཡིད་མི་དགའ་བར་འགྱུར་བ
བསྲུང་བའི་ཕྱིར་ཐབས་དེ་མི་བྱེད་ན་ཉེས་པ་དང་བཅས
ཤིང་འགལ་བ་དང་བཅས་པར་འགྱུར་ཏེ बोधिसत्त्वो येन
कटुकप्रयोगेण तीक्ष्णप्रयोगेण सत्त्वानामर्थं पश्यति
तं प्रयोगं दौर्मनस्याऽऽरक्षया न समुदाचरति, साप-
त्तिको भवति [सातिसारः] बो.भू.91ख/116; विघाती
– དེ་ལྟ་མ་ཡིན་ན་འགའ་ཡང་གནོད་པའམ་མི་གནོད་པར
མི་འགྱུར་རོ།། अन्यथा हि न कश्चिद्विघाती स्याद्,
अविघाती वा त.प.198ख/863; अपथ्यम् – རྒྱལ་པོ
ལ་གནོད་པ་བསྲུང་ན་ཉེས་པ་མེད་དོ།། अनापत्ती राजा-
पथ्यमनुरक्षतः बो.भू.96क/122; •कृ. 1. व.का.कृ.
बाध्यमानः – དེ་བས་ན་འདིར་དེ་ལྟར་རང་གི་ཚིག་གིས
དཔགས་པའི་ཡོད་པས་མེད་པ་ལ་གནོད་པས་རང་གི་ཚིག
དང་འགལ་བ་ཡིན་ནོ།། तदेवं स्ववचनानुमितेन सत्त्वे-
नासत्त्वं बाध्यमानं स्ववचनेन बाधितमुक्तम् न्या.टी.
71ख/186; ཇི་ལྟར་རབ་ཏུ་སྦྱོར་བྱེད་དེར། །གནོད་པའི
རྟོགས་པ་ཅན་ཡིན་པ།། यथा प्रयोजकस्तत्र बाध्यमा-
नप्रतीतिकः। प्र.अ.13ख/15; प्रतिबाधमानः – རྩོལ
བས་བསྐྱལ་བའི་རླུང་རྣམས་བརྟེན་[བརྟན་]པའི་རླུང
གཞན་གནོད་པ་ན अभिघातेन प्रेरिता वायवः स्तिमि-
तानि वस्त्व[? वाय्व]न्तराणि प्रतिबाधमानाः त.
प.143क/738 **2.** भू.का.कृ. बाधितः – སྐྱེས་མ་ཐག
པའི་འཇིག་རྟེན་འདིའི་གོམས་པ་ནི་ཚད་མ་དང་གྲགས
པས་གནོད་པ་ཡིན་ཏེ ऐहिलौकिकाभ्यासः सद्योजा-
तानां प्रमाणप्रतीतिबाधितः त.प.106ख/664; उप-
तप्तः – སྐྱོ་བའི་སྦྱིན་པ་མེད་དོ།། སློང་བ་རྣམས་ལ་གནོད
པའི་བར་གྱི་སྦྱིན་པ་མེད་དོ།། नास्ति निक्रन्ददानम्,
यावन्नास्ति याचनकेषूपतप्तदानम् शि.स.149ख/
144; उपद्रुतः – ཕན་ཚུན་མཐུན་པ་མ་ཡིན་དང་། །ནོར
འཁྲིགས་པས་ནི་གནོད་པ་དང་།། परस्परविरुद्धा वा अ-

र्थनाशेरुपद्रुताः॥ सु.प्र.2क/2.

གནོད་པར बाधितुम् – གཞན་ཡང་གློ་བུར་བ་ཉིད་ཀྱིས་སྔར་ནས་པ་མེད་པའི་དྲི་མ་རྣམས་ཀྱིས་[? ཕྱིས་]དེའི་བདག་ཉིད་དུ་གྱུར་པའི་བདག་མེད་པ་དེ་ལ་གནོད་པར་ག་ལ་ནུས किञ्च – आगन्तुकतया प्रागप्यसमर्थानां मलानां पश्चात्सात्मीभूतं तन्नैरात्म्यं बाधितुं कुतः शक्तिः त.प.298ख/1058; अपबाधितुम् – འདྲ་བའང་དངོས་པོ་ཡིན་པ་ལ། །གནོད་པར་ནུས་པ་མ་ཡིན་ནོ།། सादृश्यस्य च वस्तुत्वं न शक्यमपबाधितुम्। त.स.56क/544.

གནོད་པ་བསྐྱེད་པ = གནོད་བསྐྱེད།

གནོད་པ་འགྱུར་བ = གནོད་པར་འགྱུར་བ།

གནོད་པ་ཅན = གནོད་ཅན वि. बाधकः – རྟོག་པ་སྔོན་དུ་གཏོང་བ་ཉིད་མ་ཡིན་པར་ཐལ་བར་འགྱུར་བ་ནི་གནོད་པ་ཅན་གྱི་ཚད་མའོ།། अप्रेक्षापूर्वकारिताप्रसङ्गो बाधकं प्रमाणमिति त.प.8क/461; དེ་ལྟ་ན་ཡང་འདིར་གནོད་ཅན། །ཚད་མ་ཅུང་ཟད་ཡོད་པ་མིན།། तथाप्यत्र न बाधकम्। किञ्चित् प्रमाणमस्ति त.स.124क/1075; ཁྱད་པར་བསྐྱེད་པར་བྱ་བ་མ་ཡིན་པ་ཡང་བསྐྱེད་པར་བྱ་བ་ཉིད་ཡིན་ན་ཐམས་ཅད་བསྐྱེད་པར་བྱ་བ་ཉིད་དུ་ཐལ་བར་འགྱུར་བ་དང་ཐུག་པ་མེད་པར་ཐལ་བར་འགྱུར་བ་ནི་གནོད་པ་ཅན་གྱི་ཚད་མ་སྟེ अनुत्पाद्यातिशयस्यापि जन्यत्वे सर्वेषां जन्यत्वप्रसङ्गोऽनवस्थाप्रसङ्गश्च बाधकं प्रमाणम् त.प.154ख/32; གནོད་པ་ཅན་གྱི་ཚད་མ बाधकप्रमाणम् त.प.177क/814; बाधिका – གནོད་ཅན་ཚད་མ बाधिका प्रमा त.स.23ख/250; प्रबाधकः – གཅིག་ནི་དུ་མ་ལ་འཇུག་པའང་། །མི་རིགས་གནོད་པ་ཅན་ཡིན་ནོ།། एकस्यानेकवृत्तिश्च न युक्तेति प्रबाधकम्॥ त.स.26क/277; प्रबाधितः – འགྱུར་སྣ་སྐད་ཅིག་ཉིད་མིན་སོགས། །མངོན་སུམ་སོགས་ཀྱིས་གནོད་པ་ཅན།། स्याद्वादाक्षणिकत्वादि प्रत्यक्षादिप्रबाधितम्। त.स.121क/1049.

གནོད་པ་ཅན་མིན अबाधकः – རྒྱུན་གྱིས་འཇུག་པའི་དྲི་ལ་སོགས། །ཕན་ཚུན་རྒྱུར་འདོད་པོ་ན་སྟེ། །དེ་རྒྱུ་ཉིད་དུ་ཐལ་འགྱུར་ཏེ། །འདི་ལ་གནོད་པ་ཅན་མིན་ནོ།། प्रबन्धवृत्त्या गन्धादेरिष्टैवान्योऽन्यहेतुता। तदबाधकमेवेदं तद्धेतुत्वप्रसञ्जनम्॥ त.स.21क/224.

གནོད་པ་ཆུང 1. मृदुव्यथा – དེ་བས་གནོད་པ་ཆུང་སོམས་པས། །གནོད་པ་ཆེན་པོ་བཟོད་པར་བྱོས།། तस्मान्मृदुव्यथाभ्यासात् सोढव्याऽपि महाव्यथा॥ बो.अ.15क/6.14 2. अल्पाबाधता – གནོད་པ་ཆུང་ངམ…བདེ་བ་དང་ལྡན་ནམ་མི་བདེ་བ་མི་མངའ་འམ་བདེ་བ་ལ་རེག་པར་གནས་སམ་ཞེས་མཆིདོ[འདྲིོ]།། अल्पाबाधतां पृच्छन्ति…सुखं चानवद्यतां च स्पर्शविहारतां च अ.श.156ख/145.

གནོད་པ་ཆེན་པོ = གནོད་ཆེན •सं. 1. महान् उपद्रवः – རྒྱུ་གསུམ་གྱིས་མ་འོངས་པ་ན་བསྟན་པ་ལ་གནོད་པ་ཆེན་པོ་ལ་བཏང་སྙོམས་སུ་གཞག་ཏུ་མི་རུང त्रिभिः कारणैरनागतस्य महतः शासनोपद्रवस्योपेक्षा न युज्यते सू.व्या.131क/3; महाव्यथा – དེ་བས་གནོད་པ་ཆུང་སོམས་པས། །གནོད་པ་ཆེན་པོ་བཟོད་པར་བྱོས།། तस्मान्मृदुव्यथाभ्यासात् सोढव्याऽपि महाव्यथा॥ बो.अ.15क/6.14 2. महापराधः – དཔེར་ན་ཁ་ཅིག་གིས་གནོད་པ་ཆེན་པོ་བྱས་པ་ཡང་སྐྱེས་བུ་སྟོབས་དང་ལྡན་པ་ལ་བརྟེན་ནས་གྲོལ་བར་འགྱུར बलवत्पुरुषाश्रयेण यथा महापराधं कृत्वाऽपि कश्चिदुत्तरति बो.प.49ख/10 3. उग्रदण्डः – ལོངས་སྤྱོད་འདི་དག་ནི་ཆུ་ཟླ་ལྟ་བུའི་རང་བཞིན་ཅན…གནོད་པ་ཆེན་པོ་ལྔ་དང་ཐུན་མོང་དུ་འདུག་པ་ཡིན་གྱིས इमे भोगाः जलचन्द्रस्वभावाः…पञ्चभिरुग्रदण्डैः साधारणाः अ.श.73क/63 4. महामारी – སེམས་ཅན་རྣམས་ནི་གནོད་ཆེན་ལྡན། །མུ་གེས་ཡུལ་འཁོར་འཇིག་པར་འགྱུར།། महामार्यां च सत्त्वानां दुर्भिक्षराष्ट्रभेदने। म.मू.199ख/214; •वि. महापकारी – དེ་བས་འདི་དག་གནོད་ཆེན་བྱེད་ན་ཡང་། །ཐམས་ཅད

བཟང་དགུ་ཞིག་ཏུ་སྤྱད་པར་བྱ།། महापकारिष्वपि तेन सर्वं कल्याणमेवाऽऽचरणीयमेषु ॥ बो.अ.19क/6.120.

གནོད་པ་ཆོམས་པ *वि.* मर्दितकण्टकः म.व्यु.3619 (61क).

གནོད་པ་ཉིད बाध्यता – མིག་བཙུམས་པ་ཙམ་གྱིས་ཞིག་པའི་ཤེས་པ་ལ་གནོད་པ་ཉིད་རྟོགས་པ་ཡང་མེད་དོ།། न चाक्षिनिमीलनान्नष्टे ज्ञाने बाध्यता प्रतीयते प्र.अ.3क/4.

གནོད་པ་ཉུང अल्पाबाधता म.व्यु.6284; द्र. གནོད་པ་ཆུང་།

གནོད་པ་དང་བཅས་པ *वि.* ससंबाधः – རྟེན་རྣམ་པར་དབྱེ་བ་ནི། གནོད་པ་དང་བཅས་པ་ཁྱིམ་ན་གནས་པའི་རྟེན་དང་གནོད་པ་མེད་པ་རབ་ཏུ་བྱུང་བའི་རྟེན་ཅན་གང་ཡིན་པའོ།། आश्रयविभक्तो यः ससंबाधगृहस्थाश्रयोऽसंबाधप्रव्रजिताश्रयश्च सू.व्या.166क/57; सापराधः – གང་གིས་ཁྱོད་མགྲིན་དོ་ཤལ་གྱི། །འཕྲི་ཤིང་འོས་ལ་ཞགས་པ་བཅུག། །གནོད་པ་དང་བཅས་བཟུང་བ་ཡི། །ལག་པ་འདི་ནི་ཇི་ལྟར་གཏོང་།། कण्ठे हारलतायोग्ये येन पाशस्तवार्पितः । गृहीतः सापराधोऽयं स कथं मुच्यते करः ॥ ना.ना.234क/84; अनर्थोपसंहितम् म.व्यु.2960 (53क).

གནོད་པ་དང་ལྡན = གནོད་པ་དང་ལྡན་པ།

གནོད་པ་དང་ལྡན་པ *वि.* संबाधप्राप्तः – སུ་ནི་ཉམས་ཤིང་སུ་ནི་དར...སུ་ནི་གནོད་པ་དང་ལྡན को हीयते, को वर्धते... कः संबाधप्राप्तः अ.श.10क/9; अपराधी – དངོས་པོ་ཀུན་ལ་གཡོག་པོ་རྣམས། །གནོད་པ་ཉིད་དང་ལྡན་པར་འགྱུར།། भवन्ति सर्वभावेषु भृत्या एवापराधिनः ॥ अ.क.317ख/40.118.

གནོད་པ་དང་བྲལ་བ *ना.* उद्यतकः, समुद्रः – རིགས་ཀྱི་བུ་འདི་ལྟ་སྟེ། དཔེར་ན། ཤིང་གི་རིགས་ན་ལི་ཀེ་རི་ཞེས་བྱ་བ་རྒྱ་མཚོ་གནོད་པ་དང་བྲལ་བ་ནས་སྐྱེ་བ་ཡོད་དེ तद्यथा कुलपुत्र अस्ति नालीकेरी नाम वृक्षजातिः उद्यतके समुद्रे सम्भूता ग.व्यू.317क/401.

གནོད་པ་བྱས = གནོད་བྱས།

གནོད་པ་བྱས་པ = གནོད་བྱས།

གནོད་པ་བྱས་པ་ཡིན *क्रि.* बाधितं भवति – འདི་ལྟར་མིག་རང་གི་ངོ་བོར་སྐྱེ་བ་ན་གང་ནས་ཀྱང་མི་འོང་ལ་ཞེས་གསུངས་པའི་བཀའ་འདི་ལ་ཡང་གནོད་པ་བྱས་པ་ཡིན་ལ यस्माच्चक्षुरुत्पद्यमानं स्वेन रूपेण न कुतश्चिद् आगच्छतीत्येतत्पदं बाधितं भवति अभि.स्फु.118ख/814.

གནོད་པ་བྱས་པར་འགྱུར *क्रि.* अपकृतं स्यात् – དེའི་ཕྱིར་བདག་ཉིད་ཀྱིས་བདག་ཉིད་ལ་གནོད་པ་བྱས་པར་འགྱུར་ཏེ अत आत्मन एव मेऽपकृतं स्यात् बो.भू.102क/130.

གནོད་པ་བྱུང་བའི་གཎྜི आपद्गण्डी – གཎྜི་དེ་ནི་ལྔ་སྟེ། དགེ་འདུན་བསྡུ་བའི་གཎྜི་དང་ལས་ཀྱི་གཎྜི་དང་ཤི་བའི་གཎྜི་དང་སྤོང་བའི་གཎྜི་དང་གནོད་པ་བྱུང་བའི་གཎྜིའོ།། पञ्च गण्डी–सार्वसङ्घिका, कर्मगण्डी, अन्तगण्डी, प्रहाणगण्डी, आपद्गण्डी च वि.व.136क/2.112.

གནོད་པ་བྱེད = གནོད་པ་བྱེད་པ།

གནོད་པ་བྱེད་པ = གནོད་བྱེད •*क्रि.* अपकरोति – དེ་བཞིན་དུ་བདག་ལ་གནོད་པར་བྱས་སོ།། གནོད་པ་བྱེད་པར་འགྱུར་རོ།། འདིས་བདག་ལ་གནོད་པ་བྱེད་དོ།། तथा ममानेनापकृतम्, अयमपकरिष्यति, अयमपकरोति त.प.102क/653; अहितं करोति – གཞན་རྣམས་ལ་ཡང་གནོད་པ་བྱེད अन्येषामप्यहितं करोति स.दु.98क/124; पीडयति – པྲི་ཊ་ཡ་ཏི། འཚེར་བའམ་གནོད་པར་བྱེད་པ म.व्यु.5354(80क); मथ्नाति – འདི་དག་གར་གནས་འགྲོ་བ་ཀུན་གནོད་བྱེད कुह स्थिताः पुनरमी मथ्नन्ति कृत्स्नं जगत् बो.अ.10क/4.47; प्रमथ्नाति

– དཔེར་ན་རྒྱལ་པོའི་མི་འགའ་ཞིག། །སྐྱེ་བོ་མང་ལ་གནོད་བྱེད་ཀྱང་།། यथैको राजपुरुषः प्रमथ्नाति महाजनम्। शि.स.88क/87; हन्ति – བདག་གི་སེམས་ལ་གནས་བཞིན་དུ། །དགའ་མགུར་བདག་ལ་གནོད་བྱེད་པ།། मच्चित्तावस्थिता एव घ्नन्ति मामेव सुस्थिताः। बो.अ.9क/4.29; कुर्वते व्यथाम् – ཉུང་ན་འཁོད་པ་སུ་དག་ཀྱང་། །སྡུ་ངན་གནོད་པ་བྱེད་མེད་པས།། न चान्तिकचराः केचिच्छोचन्तः कुर्वते व्यथाम्। बो.अ.24ख/8.37; आबाधते–གལ་ཏེ་བདག་ཉིད་ཉམ་ཆུང་ན། །ཕུང་བ་ཆུང་ངུའང་གནོད་པར་བྱེད།། आपदाबाधतेऽल्पापि मनो मे यदि दुर्बलम्॥ बो.अ.22क/7.52; དོན་མེད་ཉིད་དུ་བདག་ལ་དམྱལ་སོགས་རྣམས་སུ་ཅི་སྟེ་གནོད་པ་བྱེད།། किमकाण्ड एव नरकेष्वात्मानमाबाधसे बो.अ.10क/4.47; बाध्यते – གང་ལ་ཆགས་པ་དང་། གང་གིས་གནོད་པ་བྱེད་པ་དང་། གང་ལས་ཐར་པ་དོན་དུ་གཉེར་བ यत्र हि सक्तो येन च बाध्यते यतश्च मोक्षं प्रार्थयते अभि.भा.2ख/873; उपहन्यते – གང་ཞིག་རྣམ་པ་ཅི་ཞིག་ལྟར་འགའ་ཞིག་ཕན་གདགས་པའམ་གནོད་པར་བྱེད यो हि कथञ्चित् केनचिदुपक्रियते उपहन्यते वा प्र.अ.29ख/34; *आक्रम्यते–[ཁུར་བུ་ལྟ་བུར་གྱུར་པའི་]སྡུག་བསྔལ་གྱིས་གང་ཟག་དེ་འཚེར་ཞིང་གནོད་[གནོན་]པར་བྱེད་དོ་ཞེས་བྱ་བའི་ཐ་ཚིག་གོ།། दुःखेन भारभूतेन हि स पुद्गलो भिद्यते, आक्रम्यत इत्यर्थः अभि.स्फु.252ख/1058; •सं. 1. अपकारः – གཞན་གནོད་པ་བྱེད་པ་ལ་ཕན་པ་བྱེད་པའི་བློ་དང་ལྡན་པའི་ཕྱིར་གནོད་པ་བྱེད་པ་དྲག་པོ་ལ་ཧི་མི་སྙམ་པའི་བཟོད་པས་ཡོངས་སུ་སྨིན་པར་བྱེད་དེ अपकारिणि परे उपकारिबुद्ध्या प्रगाढापकारमर्षणक्षान्त्या परिपाचयति सू.व्या.151ख/35; अपकारक्रिया – སེམས་ཅན་མ་རུངས་པ་ཚུལ་ཁྲིམས་འཆལ་བ་དག་ལ་གཞི་དེས་གནོད་པ་བྱེད་པ་དང रौद्रदुःशीलेषु सत्त्वेषु ततो निदानमपकारक्रिया बो.भू.151ख/196; उपघातः – བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ... གནོད་པ་བྱེད་པ་བཟོད་པས་སེམས་ཅན་གྱི་དོན་བྱེད་དོ།། बोधिसत्त्वः...उपघातमर्षणेन च सत्त्वार्थं कुरुते सू.व्या.196क/97; विघातः – རྨུགས་པ་དང་གཉིད་ཀྱིས་ནི་ཤེས་རབ་ཀྱི་ཕུང་པོ་ལ། ཇི་ཞེ་ན། གནོད་པར་བྱེད་དོ་ཞེས་བྱ་བར་སྐབས་དང་སྦྱར་རོ།། स्त्यानमिद्धेन प्रज्ञास्कन्धस्य। किम्? विघात इति प्रकृतम् अभि.स्फु.138क/852; ཕུང་པོ་གནོད་བྱེད་དང་། །ཐེ་ཚོམ་ཕྱིར་ན་ལྔ་ཉིད་དོ།། पञ्चता स्कन्धविघातविचिकित्सनात् अभि.को.18क/852; उपक्रमः – གྲང་བའི་སྡུག་བསྔལ་དང་བདག་ལ་གནོད་པ་བྱེད་པའི་སྡུག་བསྔལ། འདི་ལྟ་སྟེ། གཅེར་བུ་པ་ལ་སོགས་པ་རྣམས་ཀྱི་ལྟ་བུ་དང शीतदुःखम्, आत्मोपक्रमदुःखम्, तद्यथा निर्ग्रन्थप्रभृतीनाम् बो.भू.130क/167; निकारः – གནོད་བྱེད་སྡིག་པ་བསྟེན་པའི་དཔལ་སྲས་ཀྱང་ནི་འབད་པས་རྗེས་སུ་བཟུང་བྱས་ནས།། श्रीगुप्तस्य निकारकिल्बिषजुषोऽपि कृत्वाऽवश्यमनुग्रहेण अ.क.86क/8.78; निकृतिः – ད་ནི་མི་བདག་ཞེ་སྡང་གིས། །ཚུལ་ངན་གནོད་བྱེད་ལ་རབ་ཞུགས།། अधुना द्वेषदुर्वृत्तः प्रवृत्तनिकृतिर्नृपः। अ.क.91ख/9.65; निराकरणम् – ཐོག་མར་འདྲེན་པ་ཡོན་ཏན་གྱིས། །ཉེ་བར་བཀོད་ནས་དེ་ཡིས་ནི། །དགྲ་ལ་གནོད་པ་བྱེད་ཅེས་པའི། །ལམ་འདི་རང་བཞིན་མཛེས་པ་ཡིན།། गुणतः प्रागुपन्यस्य नायकं तेन विद्विषाम्। निराकरणमित्येष मार्गः प्रकृतिसुन्दरः॥ का.आ.319क/1.21; अपराधः – ཚུལ་ཁྲིམས་ལ་སོགས་པས... གནོད་པར་བྱེད་པ་ལ་བཟོད་པ་དང शीलादिभिः...अपराधमर्षणम् सू.व्या.197ख/99; द्रोहः – སྙིང་རྗེས་ནོན་པའི་སེམས་ཀྱིས་ནི། །གཞན་ལ་གནོད་པ་བྱེད་མི་འགྱུར།། दयाक्रान्तं चित्तं न भवति परद्रोहरभसम् जा.मा.156ख/180; बाधनम् – གནོད་པའི་བདག་ཉིད་ཡིན་པའི་ཕྱིར་ཞེས་བྱ་བ་ནི་གནོད་པར་བྱེད་པའི་བདག་ཉིད་ཡིན་པའི་ཕྱིར་རོ་ཞེས་བྱ་བའི་དོན་ཏོ།། पीडनात्मकत्वादिति बाधनात्मकत्वादित्यर्थः अभि.स्फु.252क

/1058; प्रतिबाधनम् – ཐུབ་ཚུལ་ཞིག་ཕྱིར་དེ་ཡང་དམ་ཆོས་ལ་ནི་གནོད་པ་བྱེད་པར་འགྱུར།། सद्धर्मप्रतिबाधनं हि तदपि स्यान्नीतिभेदान्मुनेः ॥ र.वि.72ख/118; व्यथनम् – ཁྲོ་བས་བདག་ཉིད་ལ་གནོད་པར་བྱེད་པ་ལའོ།། व्यथने क्रोधेनात्मनः वि.सू.54क/69 2. बाधनम् – གང་གིས་དེ་ཉིད་ལ་གཅིག་ལ་གནོད་པར་བྱེད་ལ་གཞན་ལ་ནི་མ་ཡིན་ནོ་ཞེས་བྱ་བའི་རྣམ་པར་གཞག་པ་ཐ་དད་པར་བྱེད་པའི་སྦྱོར་བའི་རྣམ་པར་དབྱེ་བ་ནི་ཡོད་པ་མ་ཡིན་ནོ།། न खलु योगविभागो विद्यते। येन तत्रैकस्य बाधनमपरस्य नेति व्यवस्थाविभागः प्र.अ.17ख/20 3. = དགྲ་བོ रिपुः, शत्रुः – रिपौ वैरिसपत्नारिद्विषद्द्वेषणदुर्हृदः ॥ द्विड्विपक्षाहितामित्रदस्युशात्रवशत्रवः । अभिघातिपरारातिप्रत्यर्थिपरिपन्थिनः ॥ अ.को.2.8.10; रपति प्रकाशयत्यपकीर्तिं रिपुः । रेपयति वेष्टयतीति वा । 'रप व्यक्तायां वाचि' 'रेपृ गतौ' अ.वि.2.8.10; •*वि.* अपकारी – དགེ་བ་རྣམས་ནི་གནོད་པར་བྱེད་པ་ལའང་ཁེ་རྙེད་པ་དང་འདྲ་བར་དགའ་བར་འགྱུར་རོ།། अपकारिणमपि साधवो लाभमिव बहु मन्यन्ते जा.मा.206ख/241; གཞན་གནོད་བྱེད་ལ་ཕན་བྱེད་བློ་ལྡན་པ།། परेऽपकारिण्युपकारिबुद्धिमान् सू.अ.151ख/35; སངས་རྒྱས་ཀྱི་བསྟན་པ་ལ་གནོད་པ་བྱེད་པ་རྣམས बुद्धशासनापकारिणाम् वि.प्र.151ख/3.97; སེམས་ཅན་གནོད་པར་བྱེད་པ་རྣམས་ལ अपकारिषु सत्त्वेषु बो.भू.102ख/131; བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་སེམས་ཅན་གནོད་པ་བྱེད་པ་རྣམས་ལ་མི་རྟག་པའི་འདུ་ཤེས་ཇི་ལྟར་སྒོམ་ཞེ་ན कथञ्च बोधिसत्त्वोऽपकारिषु सत्त्वेषु अनित्यसंज्ञां भावयति बो.भू.103क/131; अपकरणकारी – གཞན་ལ་འཚེ་བར་མངོན་པར་དགའ་བ་དྲག་པོའི་བདག་ཉིད་ཅན་རྣམས་ཀྱི་ནི་གཞན་ལ་གནོད་པ་བྱེད་པའི रौद्रात्मनान्तु परोपद्रवाभिरतीनां परापकरणकारिणाम् प्र.अ.68क/76; बाधकः – སེམས་ཅན་ཆེད་དུ་དམྱལ་བའི་སྲིད་པར་གནས་པ་ཡིས། །སྡུག་བསྔལ་མི་བཟོད་ཅེས་ཀྱང་རྒྱལ་སྲས་གནོད་བྱེད་མིན།། न खलु जिनसुतानां बाधकं दुःखमुग्रं नरकभवनवासैः सत्त्वहेतोः कथंचित् ॥ सू.अ.188क/85; ཚུ་རོལ་མཐོང་བ་རྣམས་ཀྱི་འཇུག་པ་ལས་སྔར་དགོས་པ་ལ་སོགས་པའི་སྒྲུབ་པར་བྱེད་པའམ་གནོད་པར་བྱེད་པའི་ཚད་མ་ནི་ཅུང་ཟད་ཀྱང་མེད་དེ न तु किञ्चिदर्वाग्दृशां प्राक्प्रवृत्तेः प्रयोजनादिसाधकं तद्बाधकं वा प्रमाणमस्ति त.प.134ख/3; बाधिका – དེའི་ཕྱིར་གནོད་པར་བྱེད་པ་ཡིན་ནོ།། अतो बाधिका त.प.175क/809; उपघातकः – དེ་ནི་གནོད་པར་བྱེད་པའི་ངོ་བོ་ཉིད་ཡིན་པའི་ཕྱིར་ལ तस्या उपघातकस्वभावत्वात् अभि.स्फु.154ख/879; उपघातिका – ཞིམ་པ་མ་ཡིན་པ་ཞེས་བྱ་བ་ནི་གནོད་པར་བྱེད་པ་སྟེ། སྡུག་བསྔལ་ཞེས་བྱ་བའི་ཐ་ཚིག་གོ།། असातेत्युपघातिका, दुःखेत्यर्थः अभि.भा.55ख/145; घातकः म.व्यु.4580 (71ख); विघातकृत् – དེ་བས་ན་འདོད་པ་ལ་གནོད་པ་བྱེད་པ་འདི་གཉིས་ལས་གཞན་ཡིན་ནོ་ཞེས་བསྟན་པའི་ཕྱིར་སྨྲས་པ अतोऽन्य इष्टविघातकृदाभ्यामिति दर्शयन्नाह न्या.टी.79क/211; བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་རྣམས་ཀྱི་སྦྱིན་པ་ནི་བདག་ལ་ནི་བསྐལ་པ་མང་པོར་གནོད་པ་བྱེད་དུ་ཟིན་ཀྱང बोधिसत्त्वानां दानं स्यादात्मनश्च बहुकल्पविघातकृत् सू.व्या.207क/110; प्रतिकूलवर्ती – རྣམ་པར་གཡོ་བཞིན་ཁྱོད་ཀྱིས་མ་བཏང་བ། །ཁྱོད་ལ་གནོད་བྱེད་དེ་ནི་སུ་ཞིག་ཡིན།། <?> कोऽन्यस्तवाभूत्प्रतिकूलवर्ती यो विस्फुरन्नेव न ते विमुक्तः । जा.मा.113ख/132; सापराधः – གནོད་བྱེད་ལ་ཡང་ཆེན་པོ་ཡིས། །ཡིད་ནི་ཁྲོ་བའི་དྲི་ལྡན་མིན།། सापराधेऽपि महतां न मन्युमलिनं मनः ॥ अ.क.161ख/72.56; उपक्रमिका – དེ་དག་བདག་ཉིད་ཀྱིས་[? ལ་]གནོད་པ་བྱེད་ཅིང་ལུས་ལ་གདུང་བར་བྱེད་པས་[? པའི་]སྡུག་བསྔལ་གྱི་ཚོར་བ་དྲག་པོ་མི་བཟད་པ་ཚ་བ་[ཡིད་དུ་མི་འོང་བ་]མྱོང་སྟེ किं चापि ते आत्मोपक्रमिकां शरीरोपतापिकां दुःखां तीव्रां खरां कटुकाममनापां

वेदनां वेदयन्ते ल.वि.121ख/181; जिघांसुः – དེ་ལྟ་བས་ན་སྙིང་རྗེ་ཆེན་པོ་རྣམས་ནི་བདག་ལ་གནོད་པར་བྱེད་པ་རྣམས་ཀྱང་ཉམ་ཉེས་པར་གྱུར་ན་སྙིང་བརྩེ་བར་བྱེད་ཀྱི་ཡལ་བར་མི་འདོར་རོ།། तदेवं जिघांसुमप्यापद्गतमनुकम्पन्त एव महाकारुणिका नोपेक्षन्ते जा.मा.149क/173; उपद्रोता म.व्यु.2959(53क); कारणाकारकः म.व्यु.3837(63ख); अहितम् – གཞན་ཡང་གང་དག་གནོད་བྱེད་པའི། །མ་རུངས་ཐམས་ཅད་འཇིག་པར་བྱེད།། *> नश्यन्ते सर्वदुष्टा वै ये चान्ये अहितानि वै ॥ म.मू.249क/282; •उ.प. कण्टकः – ཡུལ་ན་གནོད་པ་བྱེད་པ देशकण्टकम् जा.मा.63क/72.

གནོད་པ་བྱེད་པར་འགྱུར *क्रि.* 1. बाधको भवति – ཤེས་བྱ་ཉིད་ལ་སོགས་པའི་གཏན་ཚིགས་ནི་མཐུན་པའི་ཕྱོགས་དང་མི་མཐུན་པའི་ཕྱོགས་ཐུན་མོང་བ་ཉིད་དུ་ཤིན་ཏུ་གྲགས་པ་ཡིན་ཞིང་གནོད་བྱེད་དུ་འགྱུར་བ་དེ་ནི་གཏན་དུ་མི་སྲིད་པའི་ཕྱིར་རྟོག་པ་དང་ལྡན་པས་ཁས་བླང་བར་མི་བྱ་སྟེ यस्य हि ज्ञेयत्वादयः [हेतवः] सपक्षविपक्षसाधारणत्वेना[ति]प्रतीता अपि सन्तो बाधका भवन्ति, सोऽत्यन्तासम्भवीति न प्रेक्षावताऽभ्युपेयः त.प.264क/997 2. अपकरिष्यति – དེ་བཞིན་དུ་བདག་ལ་གནོད་པར་བྱས་སོ།། གནོད་པ་བྱེད་པར་འགྱུར་རོ།། འདིས་བདག་ལ་གནོད་པ་བྱེད་དོ་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ तथा ममानेनापकृतम्, अयमपकरिष्यति, अयमपकरोतीत्यादि त.प.102क/653; बाधयिष्यति – གལ་ཏེ་འདི་ལས་བུ་བཙས་པར་གྱུར་ན་ནི་བདག་ལ་གནོད་པ་བྱེད་པར་འགྱུར་གྱིས यद्येषा पुत्रं जनयिष्यति, नियतं मां बाधयिष्यति अ.श.133ख/123; व्यसनमापादयिष्यति – དེ་རྣམས་གཏུམ་པ་གཟུ་ལུམས་ཅན་རྩུབ་པ་ཡིན་པས་ཚུལ་མ་ཡིན་པས་ཡུལ་མི་རྣམས་ལ་གནོད་པ་བྱེད་པར་འགྱུར་རོ།། एते चण्डा रभसाः कर्कशा जनपदाननयेन व्यसनमापादयिष्यन्ति वि.व.198क/1.71.

གནོད་པ་བྱེད་པར་འགྱུར་བ = གནོད་པ་བྱེད་པར་འགྱུར།

གནོད་པ་བྱེད་པོ *वि.* अपकर्ता – བདག་ནི་གནོད་པ་བྱེད་པོ་ཞེས། །ཁྱོད་ཀྱི་སྙིང་ལ་འཛེམས་མ་བྱེད།། अपकर्ताहमस्मीति हृदि ते मा स्म भूद्भयम् । का.आ.331ख/2.290.

གནོད་པ་མ་སྐྱེས अजातबाधः – དེས་ཀྱང་གནོད་པ་མ་སྐྱེས་ན། །གནོད་པ་སླར་ཡང་དོགས་མི་བྱ།། ततश्चाजातबाधेन नाशङ्क्यं बाधकं पुनः ॥ त.स.104ख/921.

གནོད་པ་མ་བྱེད་ཅིག *क्रि.* मा विहेठयतु – ཀུན་དགའ་བོས་སྨྲས་པ། རབ་བཟང... བཅོམ་ལྡན་འདས་ལ་གནོད་པ་མ་བྱེད་ཅིག आनन्द आह–अलं सुभद्र। मा भगवन्तं विहेठय अ.श.112क/102.

གནོད་པ་མང་པོ = གནོད་མང་།

གནོད་པ་མི་བྱེད = གནོད་མི་བྱེད།

གནོད་པ་མི་བྱེད་པ = གནོད་མི་བྱེད།

གནོད་པ་མིན *भू.का.कृ.* अबाधितः – བསྟན་བཅོས་ཀུན་གྱིས་བསྒྲུབས་བྱས་པས། །ཚད་མ་ཀུན་གྱིས་གནོད་པ་མིན།། साधिता सर्वशास्त्रेण सर्वमानैरबाधिता ॥ त.स.133क/1129.

གནོད་པ་མེད = གནོད་པ་མེད་པ།

གནོད་པ་མེད་པ •*सं.* 1. अबाधनम् – མངོན་སུམ་དུ་འདོད་པའི་དོན་དག་ལ་དེ་བཞིན་དུ་འགྱུར་བ་ནི་མངོན་སུམ་གྱིས་གནོད་པ་མེད་པ་སྟེ प्रत्यक्षेणाबाधनं प्रत्यक्षाभिमतानामर्थानां तथाभावः प्र.वृ.323ख/72; དང་པོ་གནོད་པ་མེད་པ་ནི་ཐམས་ཅད་ལ་ཡོད་པ་ཉིད་དོ།། प्रथममबाधनं सर्वत्रैव प्र.अ.3ख/5; बाधकाभावः – འོན་ཏེ་གནོད་མེད་མ་ལྟོས་པར། །གང་ཞིག་ཚད་མ་ཉིད་འདོད་ན། །དང་པོ་དེ་ལྟར་འགྱུར་བ་ལ། །རྒྱུ་མཚན་གང་གིས་སྡང་བ་ཡིན།། अथापि बाधकाभावं विना प्रामाण्यमिष्यते। क्वचिदाद्ये तथाभावे प्रद्वेषः किन्निमित्तकः ॥ त.स.109ख/955; अनुपरोधः – དེ་ཡི་ནང་གི་བྱེ་བྲག་ནི། །ལྔ་ལ་གནོད་པ་མེད་པ་ཉིད།། तस्यावान्तरभेदस्तु पञ्च-

त्वानुपरोधकृत् ॥ प्र.अ.47ख/54 2. = གནོད་མེད་ཉིད निरुपद्रवता – དེས་དེ་བཞིན་གཤེགས་པའི་ཡེ་ཤེས་བསམ་གྱིས་མི་ཁྱབ་པའང་རྗེས་སུ་མཐོང་སྟེ། མཚུངས་པ་མེད་པ་དང... གནོད་པ་མེད་པ་དང स तथागतज्ञानस्याचिन्त्यतां च समनुपश्यति, अतुल्यतां च ...निरुपद्रवतां च द.भू.196क/19; •पा. अनुपहता, वागाकारभेदः – ཚིག་དེ་ནི་ཀུན་ཤེས་པར་བྱེད་པ་དང... གནོད་པ་མེད་པ་དང यासौ वागाज्ञापनी ...अनुपहता ल.वि.141क/208; •वि. निरुपद्रवः – རྟག་ཏུ་ངུའི་ལུས་སྔོན་གྱི་ཇི་ལྟ་བ་བཞིན་དུ་གནས་པ་དང་ནད་མེད་པ་དང་གནོད་པ་མེད་པར་གྱུར་ཏོ།། सदाप्ररुदितस्य ...यथापौराणोऽस्य कायः संस्थितोऽभूत्, अरोगो निरुपद्रवश्च अ.सा.438क/247; अनपायः – གཟི་བརྗིད་གཏེར་དེ་རབ་ཏུ་འགུགས་པ་ཡི། །གནོད་མེད་རིགས་པ་ཅི་ཡང་བསམ་པར་མཛོད།། तेजोनिधेरानयने तु तस्य विचिन्त्यतां काप्यनपाययुक्तिः ॥ अ.क.119क/65.20; निरपायः – གནོད་པ་མེད་ཅིང་བདེ་བའི་ཐབས། །རང་ལ་ཕན་ལ་སུ་མི་གུས།། निरपायसुखोपाये स्वहिते कस्य नादरः ॥ अ.क.278ख/35.46; འདི་ནི་གནོད་མེད་རྣམ་པ་མིན[ཡིན]།། निरपायः प्रकारोऽयम् अ.क.233क/89.145; अबाधः – གནོད་མེད་རྟེན་གཅིག་ཅན་ཉིད་ནི། །བརྗོད་པ་མཐུན་པར་སྦྱོར་བའི་ཕྱིར།། अबाधैकाश्रयत्वे हि समानोक्तिनिवेशनात् । त.स.18ख/204; निर्बाधः – འབྲས་བུ་འབྲས་བུ་ཅན་ཉིད་དག །ངེས་པའི་ཁྱད་པར་ཅན་ཉིད་ཀྱི། །སེམས་གང་ཡིན་པའི་དྲན་པ་སོགས། །ཀུན་ལའང་གནོད་པ་མེད་པ་ཡིན།། केषाञ्चिदेव चित्तानां विशिष्टा कार्यकार्यिता । नियता तेन निर्बाधाः सर्वत्र स्मरणादयः ॥ त.स.21ख/229; असंबाधः – རྟེན་རྣམ་པར་དབྱེ་བ་ནི། གནོད་པ་དང་བཅས་པ་ཁྱིམ་ན་གནས་པའི་རྟེན་དང་གནོད་པ་མེད་པ་རབ་ཏུ་བྱུང་བའི་རྟེན་ཅན་གང་ཡིན་པའོ།། आश्रयविभक्तो यः ससंबाधगृहस्थाश्रयोऽसंबाधप्रव्रजिताश्रयश्च सू.व्या.166क/57; अव्याबाधः – དེ་བྱམས་པ་དང་ལྡན་པའི་སེམས་ཡངས་པ ...གནོད་པ་མེད་པ ...ཉེ་བར་བསྒྲུབས་ཏེ་གནས་སོ།། स मैत्रीसहगतेन चित्तेन विपुलेन ...अव्याबाधेन ...उपसंपद्य विहरति द.भू.198ख/21; ཆོས་ཀྱི་རྣམ་གྲངས་འདི་ཡང་དག་པར་རབ་ཏུ་སྟོན་པ་ན་གནོད་པ་མེད་པར་འགྱུར་རོ།། इमं धर्मपर्यायं संप्रकाशयमानोऽव्याबाधो भवति स.पु.108क/173; निरत्ययः – གང་ཞིག་གཞན་གྱི་འབྱོར་པ་དུག །དེ་དག་ཕྱོགས་ནི་གནོད་པ་མེད།། परवित्तं विषं येषां पक्षास्तेषां निरत्ययाः ॥ अ.क.68क/6.173; निर्व्यथा – ལྷ་མོ་སྒྱུ་འཕྲུལ་ཇི་བཞིན་དུ། །སྦྲུམ་མའང་གནོད་མེད་བཙའ་བར་ཤོག།། गर्भिण्यश्च प्रसूयन्तां मायादेवीव निर्व्यथाः ॥ बो.अ.38ख/10.19; अल्पातङ्कः – བཅོམ་ལྡན་འདས་ནི་སྙུན་མི་མངའ་ཞིང་གནོད་པ་མེད་ལ་སྙུན་གྱིས་བཏབ་པ་མ་མེད་དེ་སྟོབས་དང་ལྡན་ནོ།། भगवांस्त्वल्पाबाधोऽल्पातङ्कोऽरोगो बलवान् अ.श.87क/78; अक्षतः – བསོད་ནམས་ལ་བརྟེན་ནས་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་གནོད་པ་མེད་པར་འཁོར་བ་ན་འཁོར་ཞིང་སྡུག་བསྔལ་དག་གིས་ཤིན་ཏུ་གཟིར་བ་མེད་པ་དང पुण्यमाश्रित्य बोधिसत्त्वोऽक्षतः संसारे संसरति नात्यर्थं दुःखैर्बाध्यमानः बो.भू.19क/23; अवधः – མཚོན་བཅམས་པས་རྒྱལ་གནོད་པ་མེད།། अस्त्रजितः अवधाः अभि.को.10ख/553; अखिलम् – གྲོང་ཁྱེར་བཱ་ར་ཎ་སཱི་ན་རྒྱལ་པོ་ཚངས་པས་བྱིན་ཞེས་བྱ་བ་རྒྱལ་པོ་བྱེད་དེ། དེའི་རིང་ལ་འབྱོར་པ་དང...གནོད་པ་མེད་ཅིང་ཚེར་མ་དཀྲུགས་ལ वाराणस्यां नगर्यां ब्रह्मदत्तो नाम राजा राज्यं कारयति ऋद्धं... अखिलमकण्टकम् अ.श.110ख/100; •भू.का.कृ. अबाधितम् – ཡུལ་དབྱེ་བ་ཐ་དད་ཉིད། །ཤེས་[ཅེས་]བྱ་དེ་ནི་གནོད་མེད་ཡིན།། देशभेदेन भिन्नत्वमित्येतत् तदबाधितम् ॥ त.स.93ख/851; དེའི་ཕྱིར་གནོད་པ་མེད་པའི་རྟོགས་པ་ཙམ་ཚད་མ་ཡིན་ནོ།། तस्मादबाधितो बोधः प्रमाणम् प्र.अ.3क/4; अप्रबाधितम् – ཚད་མ་གཉིས་ཀྱིས་ནི་མངོན་སུམ་དང

རྗེས་སུ་དཔག་པ་གཉིས་[ཀྱིས་]སོ།། གནོད་པ་མེད་པ་ནི ཇི་ལྟར་བསྟན་པའི་དོན་དེ་ལྟར་ཡོད་པའི་ཕྱིར་ཏེ प्रमाणाभ्यां प्रत्यक्षानुमानाभ्याम्, अप्रबाधितं यथानिर्दिष्टस्यार्थस्य तथाभावात् त.प.302[क]/1063; अव्याहतम् – སྐྱེས་བུས་མ་བྱས་ལ་བཀག་ཟིན། །དེས་ན་ཁྱབ་པ གནོད་མེད་ཡིན།། निषिद्धेऽपौरुषेयत्वे व्याप्तिरव्याहता ततः ॥ त.स.101[ख]/895; གནོད་པ་མེད་པའི་ལུང ལ་བརྟེན་ནས་འཇུག་པ་ནི་ཇི་ལྟར་རྟོག་པ་དང་མི་ལྡན་པར འགྱུར་ཏེ अव्याहतागमसमाश्रयेण तु प्रवृत्तौ कथं न प्रेक्षावन्तो भवेयुः त.प.135[ख]/5.

གནོད་པ་མེད་པ་ཅན *वि.* अविरुद्धः लो.को.1378.

གནོད་པ་མེད་པ་ཉིད अबाध्यमानता – གལ་ཏེ་ཡང གནོད་པར་བྱེད་པའི་ཤེས་པ་ལ་(?)མ་ལྟོས་པའི་ཚད་མ ཉིད་ཡིན་པ་དེ་ལྟ་ན་ཡང་གནོད་པ་མེད་པ་ཉིད་དུ་རྟོགས་པ ཁོ་ནས་གཞན་ཚད་མ་མ་ཡིན་པ་ཉིད་དུ་བསྒྲུབ་པར་ནུས་པ ཡིན་གྱི། གཞན་དུ་ནི་མ་ཡིན་ནོ།། यद्यप्यनपेक्ष्यप्रामाण्यो बाधकः प्रत्ययः, तथाप्यबाध्यमानतया प्रतीत एवान्यस्याप्रामाण्यमाधातुं समर्थः, नान्यथा त.प. 225[ख]/920.

གནོད་པ་མེད་པའི་བདེ་བ *पा.* अव्याबाध्यं सुखम्, सुखभेदः – བདེ་བ་རྣམ་པ་ལྔ་པོ་ནི་རྒྱུ་བདེ་བ་དང...གནོད པ་མེད་པའི་བདེ་བ་དང་ལྔའོ།། पञ्चविधं सुखम्। हेतुसुखं...अव्याबाध्यञ्च पञ्चमं सुखम् बो.भू.14[क]/17.

གནོད་པ་མེད་པའི་ཡུལ་ཅན अबाधितविषयत्वम्–གང གི་ཕྱིར་གནོད་པ་མེད་པའི་ཡུལ་ཅན་ཡིན་ན་ཞེས་འདི་ལ གཏན་ཚིགས་ཐམས་ཅད་ཁྱད་པར་དང་བཅས་པར་མངོན པར་འདོད་དོ།། यस्मादबाधितविषयत्वे सतीति सर्वे हेतवः सविशेषणा इहाभिप्रेताः त.प.137[क]/725.

གནོད་པ་མེད་པའི་ཤེས་པ <?> अव्यपदेश्यप्रत्ययः – འདི་ནི་ལོག་པ་ཡིན་ནོ་ཞེས་བྱ་བའི་ཕྱིན་ཅི་ལོག་ཀྱང་མ ཡིན་ཏེ། དུས་གཞན་དང་སྐྱེས་བུ་གཞན་དང་ཡུལ་གཞན དང་གནས་སྐབས་གཞན་ལ་ཡང་གནོད་པ་མེད་པའི་ཤེས པར་འགྱུར་བ་ཡིན་ནོ།། न च विपरीतमिथ्यैतदिति कालान्तरे पुरुषान्तरे देशान्तरेऽवस्थान्तरे वा पुनरव्यपदेश्यप्रत्ययो भवति त.प.134[ख]/719.

གནོད་པ་མེད་པར་འགྱུར *क्रि.* अव्याबाधो भवति – ཆོས ཀྱི་རྣམ་གྲངས་འདི་ཡང་དག་པར་རབ་ཏུ་སྟོན་པ་ན་གནོད པ་མེད་པར་འགྱུར་རོ།། इमं धर्मपर्यायं संप्रकाशयमानोऽव्याबाधो भवति स.पु.108[क]/173.

གནོད་པ་མཛད་མི་མངའ *वि.* अप्रतिघाति – ཉེ་བར་ཞི་ལ ཡིད་དུ་འོང་། །འབར་ལ་གནོད་པ་མཛད་མི་མངའ། །དུལ ལ་རྗོམ་བརྗིད་ཆེ་བ་ཡི། །སྐུ་འདིས་སུ་ཞིག་དང་མི་མཛད།། <?> उपशान्तं च कान्तं च दीप्तमप्रतिघाति च। निभृतं चोर्जितं चेदं रूपं कमिव नाक्षिपेत् ॥ श.बु. 112[क]/52.

གནོད་པ་ཡང་དག་པར་ཞི་བར་བྱེད་པ *पा.* ईतिसंशमनी, बोधिसत्त्वानामुपपत्तिभेदः – བྱང་ཆུབ་སེམས དཔའ་རྣམས་ཀྱི་སྐྱེ་བ...མདོར་བསྡུ་ན་རྣམ་པ་ལྔ་སྟེ། གནོད པ་ཡང་དག་པར་ཞི་བར་བྱེད་པ་དང...བདག་པོར་སྐྱེ་བ དང་ཐ་མའི་སྐྱེ་བའོ།། समासतो बोधिसत्त्वानां पञ्चविधा उपपत्तिः...ईतिसंशमनी...आधिपत्योपपत्तिश्चरमा चोपपत्तिः बो.भू.185[ख]/247.

གནོད་པ་ཡིན •*क्रि.* प्रतिबध्नाति – དེ་བས་ན་དོན་གྱི འབྲས་བུར་བརྟགས་པའི་སྒྲ་ལས་[སྒྲ་ལས་]བྱུང་བའི་[ཤེས པའི་]དོན་[རྗེས་སུ་དཔགས་པ་]ཡོད་པར་དམ་བཅས་པས མེད་པ་ལ་གནོད་པ་ཡིན་ནོ།། ततः कल्पितादर्थकार्याच्छब्दाच्छाब्दप्रत्ययार्थस्यानुमितं सत्त्वं प्रतिज्ञायमानमसत्त्वं प्रतिबध्नाति न्या.टी.71[ख]/186; बाध्यते – དེས་ཚད་མ་མ་ཡིན་པ་དམ་བཅས་པ་ལ་གནོད་པ་ཡིན ནོ།། तेनाप्रामाण्यं प्रतिज्ञातं बाध्यते न्या.टी.71[ख]/186; •*भू.का.कृ.* बाधितः – སྐྱེས་མ་ཐག་པའི་འཇིག རྟེན་འདིའི་བསམས་པ་ནི་ཚད་མ་དང་གྲགས་པས་གནོད་པ

ཡིན་ཏེ ऐहिलौकिकाभ्यासः सद्योजातानां प्रमाण-प्रतीतिबाधितः त.प.106ख/664.

གནོད་པ་ལས་བྱུང་བ *वि.* औपक्रमिकम् – ཁམས་མ་སྙོམས་པ་དང་གནོད་པ་ལས་བྱུང་བ་དང་མི་མ་ཡིན་པས་བཏང་བའི་ནད་འགོ་བ་ཡང་ཞི་བར་བྱེད་པ་ཡིན་ནོ॥ धातुवैषमिकांश्चौपक्रमिकानमनुष्याभिसृष्टांश्चोपसर्गान् व्युपशमयति बो.भू.34ख/44.

གནོད་པའི་གཏན་ཚིགས *पा.* विघातहेतुः – འདིར་སྒྲུབ་པ་ལ་སོགས་པ་བརྗོད་པས་ལན་གཞན་གྱིས་ཁོང་དུ་ཆུད་པར་བྱེད་པའི་ནུས་པ་གནོད་པའི་གཏན་ཚིགས་ཡིན་ནོ་ཞེས་བྱ་བར་ཡོངས་སུ་གཟུང་བར་བྱའི अत्र आदिशब्देनोत्तर-प्रतिपत्तिशक्तिविघातहेतोः परिग्रहः वा.टी.104क/65.

གནོད་པའི་བདག་ཉིད *वि.* बाधनात्मकः – སྡུག་བསྔལ་ཞེས་བྱ་བ་འདི་ཅི་ཞིག་ཡིན། གལ་ཏེ་གནོད་པའི་བདག་ཉིད་གང་ཡིན་པའོ॥ किमिदं दुःखं नाम, यद् बाधनात्मकं चेत् अभि.भा.4ख/880; पीडनात्मकः – གནོད་པའི་བདག་ཉིད་ཡིན་པའི་ཕྱིར་སྡུག་བསྔལ་ལོ॥ पीडनात्कत्वात् दुःखम् अभि.भा.48ख/1057.

གནོད་པའི་ཚོགས व्यसनौघः – དེ་ལྟར་ཡུན་རིང་རྒྱུན་ཆགས་དགྲར་གྱུར་པ། །གནོད་པའི་ཚོགས་རབ་འཕེལ་བའི་རྒྱུ་གཅིག་པུ॥ इति सन्ततदीर्घवैरिषु व्यसनौघप्रसवैकहेतुषु। बो.अ.9क/4.34.

གནོད་པའི་ཟས अपथ्यम् – འཇིག་རྟེན་ལུགས་དང་འགལ་བ་ཡི། །ཡུལ་རྣམས་ལ་ནི་ཁྱད་པར་དུ། །སྲོག་ཆགས་ཡང་དག་འདོད་གྱུར་ཏེ། །གནོད་པའི་ཟས་ལ་ནད་ཅན་བཞིན॥ लोकस्थितिविरुद्धेषु विषयेषु विशेषतः। स्पृहा संजायते जन्तोरपथ्येष्विव रोगिणः ॥ अ.क.314ख/40.87.

གནོད་པའི་ཤེས་པ बाधकप्रत्ययः – རེ་ཞིག་གནོད་པའི་ཤེས་པ་ནི། །དོན་གཞན་ཉིད་དུ་ངེས་གཟུང་ཡིན॥ बाधकप्रत्ययस्तावद् अर्थान्यत्वावधारणम्। त.स.104ख/920; बाधप्रत्ययः – དུང་ལ་སེར་པོར་སྣང་ཤེས་པ། །གནོད་པའི་ཤེས་པ་དང་བྲལ་ཞིང་། །ཇི་སྲིད་འཚོ་ཡི་བར་དུ་སྐྱེས། །གང་ཕྱིར་ཚད་མར་སྐྱེ་མི་འགྱུར॥ आजीविता-त् समुत्पन्नं बाधप्रत्ययवर्जितम्। शङ्खे पीतनिभं ज्ञानं प्रमाणं न हि जायते॥ त.स.110क/957.

གནོད་པའི་ཤེས་པ་དང་བྲལ *वि.* बाधप्रत्ययवर्जितम् – །དུང་ལ་སེར་པོར་སྣང་ཤེས་པ། །གནོད་པའི་ཤེས་པ་དང་བྲལ་ཞིང་། །ཇི་སྲིད་འཚོ་ཡི་བར་དུ་སྐྱེས། །གང་ཕྱིར་ཚད་མར་སྐྱེ་མི་འགྱུར॥ आजीवितात् समुत्पन्नं बाधप्रत्ययवर्जितम्। शङ्खे पीतनिभं ज्ञानं प्रमाणं न हि जायते॥ त.स.110क/957.

གནོད་པའི་སེམས = གནོད་སེམས།

གནོད་པའི་སེམས་དང་ལྡན་པ *वि.* रौद्रचित्तः म.व्यु. 2952(53क).

གནོད་པར་གྱུར •*क्रि.* संतप्यते – དེའི་ཚེ…སྐྱེ་བོ་མང་པོ་ལ་མི་ནད་བྱུང་སྟེ། དེས་སྐྱེ་བོ་ཕལ་པོ་ཆེ་དེ་དག་ལ་ཤིན་ཏུ་གནོད་པར་གྱུར་ཏོ॥ तेन समयेन महाजनमरको बभूव, ईतिश्च; येन च महाजनकायोऽतीव संतप्यते अ.श.43क/37; •*सं.* सम्बाधप्राप्तिः – སྟེགས་བུ་ནི་མ་ཡིན་ནོ॥ དོགས་[? དོག་]པའི་གནོད་པར་གྱུར་ན་གལ་ཏེ་ལྷུང་བ་མེད་དོ॥ न स्थलिकायाः सङ्कटसम्बाधप्राप्तावनापत्तिः वि.सू.96ख/116; द्र.– རང་གི་ཉེས་པས་གནོད་གྱུར་པ། །གཞན་ལ་བཀོན་དུ་ཅི་ཞིག་ཡོད॥ स्वापराधागते दुःखे कस्मादन्यत्र कुप्यते ॥ बो.अ.16क/6.45.

གནོད་པར་སྙགས་ལྷ་བ अहितैषिता – དེ་ནས་ཅི་སྟེ་མིར་སྐྱེས་ན་ཡང་རྣམ་པར་སྨིན་པ་གཉིས་མངོན་པར་འགྲུབ་པ་འདི་ལྟ་སྟེ། གནོད་པར་སྙགས་ལྷ་བ་དང་ཕ་རོལ་གྱིས་མནར་བའོ॥ अथ चेत्पुनर्मनुष्येषु उपपद्यते, द्वौ विपाकावभिनिर्वर्तयति अहितैषितां च परोत्पीडनतां च द.भू.

190ख/17.

གནོད་པར་འགྱུར = གནོད་པར་འགྱུར་བ།

གནོད་པར་འགྱུར་བ •*क्रि.* 1. बाधते – སྔར་ནི་ཁས་བླངས་བྱས་པས་ཀྱང་། །གཞན་གྱིས་འཇིག་ཉིད་ལ་གནོད་འགྱུར།། पूर्वाभ्युपगतेनापि नाशित्वं बाधते नरः [? परः] ॥ त.स.84क/773; प्रतिबाधते – རྗེས་སུ་དཔག་པ་ཐམས་ཅད་ཀྱི། །འཇུག་པ་ཁོ་ན་ལ་གནོད་འགྱུར།། सर्वस्यैवानुमानस्य प्रवृत्तिं प्रतिबाधते ॥ त.स.100क/884; बाध्यते – དེས་ན་དོན་གྱིས་གྲུབ་པ་ཡི། །ཁྱོད་ཀྱིས་ཆོས་མཁྱེན་ཁས་བླངས་པས། །ཁྱེད་ཀྱིས་རྒྱས་པར་བྱས་པ་ཡི། །དགག་པ་དེ་ལ་གནོད་པར་འགྱུར།། तेनार्थापत्तिलब्धेन धर्मज्ञोपगमेन तु । बाध्यते तन्निषेधोऽयं विस्तरेण कृतस्त्वया ॥ त.स.119क/1026; དེ་ཇི་ལྟར་རྗེས་སུ་དཔག་པས་གནོད་པར་འགྱུར तत्कथमनुमया बाध्यते त.प.175क/808; पीडयते – དམྱལ་བར་ཉོན་མོངས་སྡུག་བསྔལ་གྱིས། །གྲངས་མེད་བསྐལ་པར་གནོད་པར་འགྱུར།། <?> नरकाद् दुःखसंक्लेशैः पीडयते कल्पसंख्यया । गु.सि.20क/42; दुनोति – ཇི་ལྟར་འདི་ཉིད་ང་ཡི་ཡིད་ལ་གནོད་འགྱུར་བ། །དེ་ལྟར་ང་ལ་ཟུ་འདི་གནོད་པར་མི་འགྱུར་རོ།། दुनोति मां नैव तथा त्वियं रुजा यथैतदेवात्र मनः क्षिणोति माम् । जा.मा.144क/166; क्षिणोति – ཇི་ལྟར་འདི་ཉིད་ང་ཡི་ཡིད་ལ་གནོད་འགྱུར་བ།། यथैतदेवात्र मनः क्षिणोति माम् जा.मा.144क/166; विहेठयति – སེམས་ཅན་དེ་དག་ལ་ཡང་གནོད་པར་མི་འགྱུར་རོ།། न च सत्त्वान् विहेठयति द.भू.270क/61; वार्यते – གཞན་ནི་ཐམས་ཅད་ཤེས་ན་ཡང་། །སྐྱེས་བུ་གང་གིས་གནོད་པར་འགྱུར།། सर्वमन्यद् विजानानः पुरुषः केन वार्यते ॥ त.स.114क/989; उपद्रूयते – དེ་ལ་ནི་དོན་གཞན་ལ་བརྟེན་ནས་འཇུག་པའི་སྒྲ་རང་དབང་མེད་པ་ལ་སོགས་པའི་ཉེས་པས་གནོད་པར་འགྱུར་རོ།། तत्र ह्यर्थान्तरमुपादायान्यत्र प्रवर्त्तमानो ध्वनिरस्वातन्त्र्यादिदोषैरुपद्रूयते प्र.वृ.280क/22; हन्यते लो.को.1378 2. जुगुप्सिष्यति – ལུས་ཡོངས་སུ་གྲུབ་པ་དེ་ཉིད་ཀྱིས་སེམས་བསྐྱེད་པ་དེ་དག་ལ་རྣམ་པར་སྨོད་པར་འགྱུར་བྱང་བར་བྱེད་པར་འགྱུར་གནོད་པར་འགྱུར तेनैव चात्मभावप्रतिलम्भेन तावत्पूर्वकांश्चित्तोत्पादान् विगर्हिष्यति, वा[व्य]न्तीकरिष्यति, जुगुप्सिष्यति अ.सा.343क/193 3. बाधः स्यात् – དེས་ན་འཇིག་རྟེན་ཐམས་ཅད་ཀྱིས་ངེས་པར་བཟུང་བའི་ངོ་ཤེས་པ་འདིས་བདག་མེད་པར་སྨྲ་བ་ལ་གནོད་པར་འགྱུར་རོ།། तेनास्मात् प्रत्यभिज्ञानात् सर्वलोकावधारितात् । नैरात्म्यवादबाधः स्यात् त.प. 204क/123; འདི་སྙམ་དུ། གལ་ཏེ་དེ་ཚད་མ་ཉིད་དུ་གྲུབ་པར་གྱུར་ན་འདི་ཐམས་ཅད་ལ་གནོད་པར་འགྱུར་རོ།། स्यादेतत् – बाध्येत सर्वमेतत्, यदि तस्याः प्रामाण्यं सिद्धं भवति त.प.131ख/714; •*सं.* अनर्थः – དེ་ལ་ལུས་བསྲུང་གང་ཞེ་ན། །གནོད་པར་འགྱུར་བ་སྤང་བ་སྟེ།། तत्रात्मभावे का रक्षा यदनर्थविवर्जनम् । शि.का.2क/1; अहितोदयः – སྦྱིན་པ་ལ་དགྱེས་ཆེས་ནས་མི་རིགས་པ་དང་གནོད་པར་འགྱུར་བ་མི་བརྟག་པར दानातिहर्षादनयमसमीक्ष्याहितोदयम् । जा.मा.10क/10; •*वि.* व्याबाधिकः – བདག་གི་ལུས་ཀྱི་ལས་དང་ངག་གི་ལས་དང་ཡིད་ཀྱི་ལས་འདི་གནོད་པར་འགྱུར་བ་ཞིག་ཡིན་ནམ कायकर्म, वाक्कर्म, मनस्कर्म किं व्याबाधिकं मे श्रा.भू.23ख/57; बाधितः – གང་གིས་འཁྲུལ་པ་ལས་བྱུང་རྩོད། །དེ་ཡང་ངེས་པས་གནོད་པར་འགྱུར།། विवादो भ्रान्तितो यस्मात् सा च निश्चयबाधिता । त.स.107ख/939; विहन्यमानः लो.को.1378.

གནོད་པར་འགྱུར་བའི་སྒོ་སྤང་བའི་ལྟུང་བྱེད अवष्टम्भायतद्वारपरिहरणानि [प्रायश्चित्तिकानि] वि.सू.53क/68.

གནོད་པར་སྐྱོ་བ་མེད *वि.* अकण्टकः – དེ་རྒྱ་མཚོ་ལ་ཐུག་པའི་ས་ཆེན་པོ་མ་ལུས་པར་གནོད་པར་སྐྱོ་བ་མེད་ཅིང་འཚེ་བ་མེད་པ་འདི་ཉིད་ཆད་པ་མེད་ཅིང་མཚོན་གྱིས་བདའ

བ་མེད་ལ་ཆོས་དང་མཐུན་ཞིང་སྙོམས་པས་ལེགས་པར་ཕབ་སྟེ་གནས་པའོ།། स इमामेव समुद्रपर्यन्तां महापृथिवीमखिलामकण्टकामनुत्पातामदण्डेनाशस्त्रेण धर्मेण समेनाभिनिर्जित्याध्यावसति म.व्यु.3636 (61क).

གནོད་པར་བྱ = གནོད་པར་བྱ་བ།

གནོད་པར་བྱ་བ = གནོད་བྱ •क्रि. बाध्यते – དེ་ལྟར་བདག་མེད་ཚོགས་འདི་ལ། །འདི་ཡིས་ཅི་སྟེ་གནོད་པར་བྱ།། निरात्मके कलापेऽस्मिन् क एवं बाध्यतेऽनया॥ बो.अ. 34ख/9.102; •कृ. बाध्यम् – གནོད་པར་བྱ་བ་དང་གནོད་པར་བྱེད་པའི་དངོས་པོ बाध्यबाधकभावः प्र.अ. 3क/5; ངེས་པ་དང་ནི་སྒྲོ་འདོགས་ཡིད། །གནོད་བྱ་གནོད་བྱེད་ངོ་བོའི་ཕྱིར།། निश्चयारोपमनसोर्बाध्यबाधकभावतः त.प.232ख/936; घात्यम् – གནོད་པར་བྱ་བ་དང་གནོད་པར་བྱེད་པའི་འབྲེལ་བ घात्यघातकसम्बन्धः म.व्यु.4580(71ख); •सं. अपकारः – གལ་ཏེ་དགྲ་འདི་གནོད་བྱ་བའི། །བསམ་ཡོད་མཆོད་བྱ་མིན་ཞེ་ན།། अपकाराशयोऽस्येति शत्रुर्यदि न पूज्यते। बो.अ. 19क/6.110; वधः – གང་དུ་གནས་ནས་བདག་གནོད་བྱ་ཕྱིར་འོང་།། स्थित्वा यस्मिन् मद्वधार्थं यतेत बो.अ. 10क/4.46.

གནོད་པར་བྱ་བ་དང་གནོད་པར་བྱེད་པ = གནོད་བྱ་གནོད་བྱེད།

གནོད་པར་བྱས = གནོད་བྱས།

གནོད་པར་བྱས་པ = གནོད་བྱས།

གནོད་པར་བྱེད = གནོད་པ་བྱེད་པ།

གནོད་པར་བྱེད་པ = གནོད་པ་བྱེད་པ།

གནོད་པར་བྱེད་པ་པོ वि. अपकारी – དེ་ནས་རྒྱལ་པོ་ཆེན་པོ་དེ་དེ་ལྟར་གནོད་པར་བྱེད་པ་པོ་ལ་འང་སྙིང་རྗེ་དང་བཅས་ཤིང་ अथ स राजा तेन तस्यापकारिण्यपि सदयत्वेन जा.मा.156क/180.

གནོད་པར་བྱེད་པ་ཡིན क्रि. उपघाताय संवर्तते – ཕུང་པོ་སྔ་མ་རྣམས་ཁོ་ན་ཕུང་པོ་ཕྱི་མ་རྣམས་ལ་གནོད་པར་བྱེད་པ་ཡིན་པས་ཁུར་དང་ཁུར་ཁྱེར་བ་ཞེས་བཤད་པ་ཡིན་ནོ།། स्कन्धा एव च स्कन्धानामुपघाताय संवर्तन्ते पूर्वका उत्तरेषामिति भारं च भारहारं च कृत्वोक्ताः अभि.भा.87ख/1206.

གནོད་པར་བྱེད་པའི་དངོས་པོ अपकारवस्तु – གནོད་པར་བྱེད་པའི་དངོས་པོ་ལ་ནི་ཁོང་ཁྲོ་བ་སྐྱེ་ན། འགོག་པ་དང་ལམ་དག་ནི་དེ་ལྟ་མ་ཡིན་ནོ།། अपकारवस्तुनि हि प्रतिघ उत्पद्यते। न चैवं निरोधमार्गौ अभि.भा.235क/792.

གནོད་པར་བྱེད་པའི་ཚད་མ पा. बाधकप्रमाणम् – གནོད་པར་བྱེད་པའི་ཚད་མའི་དབང་གིས་འཁྲུལ་པར་རྣམ་པར་གཞག་ལ बाधकप्रमाणवशाद् विभ्रान्तिव्यवस्थानम् त.प.7क/459.

གནོད་པར་བྱེད་པའི་ཤེས་པ बाधकप्रत्ययः – དེ་ཡང་ཞེས་བྱ་བ་ནི་གནོད་པར་བྱེད་པའི་ཤེས་པ་མེད་པའོ།། सोऽपीति बाधकप्रत्ययाभावः त.प.246क/965.

གནོད་པར་བྱེད་པར་འགྱུར = གནོད་པ་བྱེད་པར་འགྱུར།

གནོད་པར་བྱེད་པར་གནས་པ वि. अपकारप्रवर्तमानः – རྒྱུད་དེའི་ཞིང་དུ་བྱས་པ་དག་ནི་མདུན་ན་གཏན་དུ་གནོད་པར་བྱེད་པར་གནས་པ་དག་ལ་ཡང་བརྩེ་བ་ལ་སོགས་པ་ཆུང་བར་འགྱུར་བ་མ་ཡིན་ནོ།། तत्क्षेत्रीकृतसन्तानानां हि प्रत्यग्रसततापकारप्रवर्तमानेष्वपि न कृपादयः शिथिलतां भजन्ते प्र.अ.99ख/107.

གནོད་པར་མ་གྱུར क्रि. नाबाधयति स्म म.व्यु.6598 (94ख).

གནོད་པར་མ་བྱས་པ भू.का.कृ. अबाधितम् – གཞན་དག་ནི་གཏན་ཚིགས་མཚན་ཉིད་དྲུག་པའོ་ཞེས་ཟེར་ཏེ། གསུམ་པོ་དེ་དག་དང་གནོད་པར་མ་བྱས་པའི་ཡུལ་ཅན་ཉིད་དང་གྲངས་གཅིག་པ་བརྗོད་པར་འདོད་པ་ཅན་ཉིད་དང་ཤེས་པ

ཉིད་ཅེས་བྱ་བ་ཡིན་ནོ།། षड्लक्षणो हेतुरित्यपरे। त्रीणि चैतानि। अबाधितविषयत्वम्, विवक्षितैकसंख्यत्वम्, ज्ञातत्वं च हे.बि.251ख/68.

གནོད་པར་མི་འགྱུར = གནོད་མི་འགྱུར།

གནོད་པར་སེམས = གནོད་སེམས།

གནོད་པར་སེམས་པ = གནོད་སེམས།

གནོད་པས་ཐུབ་པ *पा.* अभिद्रुग्धम्, अनुत्थानवीर्याधिगतं देयवस्तु – གནོད་པས་ཐུབ་པ་ནི་ལྷུང་བའི་བརྩོན་འགྲུས་ཀྱིས་ཐོབ་པ་མ་ཡིན་ཏེ། རང་གི་གནས་ན་འདུག་ཅིང་གཞན་གྱིས་བཅོལ་བ་བསྒྲོན་པས་ཐོབ་པའི་ཕྱིར་རོ།། अभिद्रुग्धं ह्यनुत्थानवीर्याधिगतं भवति, स्वस्थाने स्थित्वा परनिक्षेपाऽऽलपनेन प्रतिलब्धत्वात् अभि.स.भा.51क/71; द्र. གནོད་པས་ཐུབ་པ་མ་ཡིན་པ།

གནོད་པས་ཐུབ་པ་མ་ཡིན་པ *पा.* अनभिद्रुग्धम्, उत्थानवीर्याधिगतं देयवस्तु – སྦྱིན་པར་བྱ་བ་ཕུན་སུམ་ཚོགས་པའི་དབང་དུ་བྱས་ནས་ལྷུང་བའི་བརྩོན་འགྲུས་ཀྱིས་ཐོབ་པ་ཞེས་བྱ་བ་འདིས་ནི་སྦྱིན་པར་བྱ་བའི་དངོས་པོ་གནོད་པས་ཐུབ་པ་མ་ཡིན་པ་སྟོན་ཏེ देयसम्पदमधिकृत्योत्थानवीर्याधिगतैरित्यनेनानभिद्रुग्धदेयवस्तुतां दर्शयति अभि.स.भा.51क/71; द्र. གནོད་པས་ཐུབ་པ།

གནོད་བྱ = གནོད་པར་བྱ་བ།

གནོད་བྱ་དང་གནོད་བྱེད = གནོད་བྱ་གནོད་བྱེད།

གནོད་བྱ་གནོད་བྱེད་ཀྱི་ངོ་བོ *पा.* बाध्यबाधकभावः – ངེས་པ་དང་ནི་སྒྲོ་འདོགས་ཡིད། །གནོད་བྱ་གནོད་བྱེད་ངོ་བོའི་ཕྱིར། །འདི་ནི་སྒྲོ་འདོགས་དབེན་པ་ལ། །འཇུག་ཅེས་བྱ་བར་ཤེས་པ་ཡིན།། निश्चयारोपमनसोर्बाध्यबाधकभावतः। समारोपविवेकेऽस्य प्रवृत्तिरिति गम्यते ॥ त.प.14ख/475; ངེས་པ་དང་སྒྲོ་འདོགས་པའི་ཡིད་ནི་གནོད་བྱ་གནོད་བྱེད་ཀྱི་ངོ་བོ་ཡིན་པའི་ཕྱིར་དང निश्चयारोपमनसोर्बाध्यबाधकभावात् त.प.242ख/956; द्र. གནོད་བྱ་གནོད་བྱེད་ཀྱི་དངོས་པོ།

གནོད་བྱ་གནོད་བྱེད་ཀྱི་དངོས་པོ *पा.* बाध्यबाधकभावः – དེས་ཀྱང་སད་པའི་ཤེས་པས་དམིགས་པ་མ་དམིགས་པའི་ཕྱིར་གནོད་བྱ་གནོད་བྱེད་ཀྱི་དངོས་པོ་མཚུངས་སོ།། तेनापि जाग्रत्प्रत्ययोपलब्धो नोपलभ्य इति समानो बाध्यबाधकभावः प्र.अ.63ख/72; དངོས་པོ་རྣམས་ལ་གནོད་བྱ་དང་། །གནོད་བྱེད་དངོས་པོ་དོན་དམ་པར། །ཡོད་མིན बाध्यबाधकभावस्तु वस्तूनां नैव तात्त्विकः। विद्यते त.स.17ख/196.

གནོད་བྱ་གནོད་བྱེད་ཀྱི་འབྲེལ་པ *पा.* घात्यघातकसम्बन्धः म.व्यु.4580(71ख).

གནོད་བྱ་གནོད་བྱེད་ངོ་བོ = གནོད་བྱ་གནོད་བྱེད་ཀྱི་ངོ་བོ།

གནོད་བྱ་གནོད་བྱེད་ཉིད बाध्यबाधकता – ངེས་པ་དང་ནི་སྒྲོ་འདོགས་བློ། །གནོད་བྱ་གནོད་བྱེད་ཉིད་དུ་གནས།། निश्चयारोपबुद्ध्योश्च बाध्यबाधकता स्थिता ॥ त.स.9ख/116.

གནོད་བྱས = གནོད་པ་བྱས་པ •*क्रि.* पीडयति – ཁྱོད་འདྲ་ལ། །གནོད་པར་བྱས་ཀྱི་ཕན་མ་མཆིས།། त्वादृशान् पीडयत्येव नानुगृह्णाति श.बु.111क/23; •*सं.* अपकारः – སེམས་ཅན་གནོད་བྱས་རྫོགས་པ་ཡི། །བདག་གིས་སྡིག་པ་ཡོངས་བཤད་པ།། सत्त्वापकारनिष्पन्नं यत्पापं परिकीर्तितम्। ज्ञा.सि.47ख/122; གཞན་གྱིས་གནོད་པ་བྱས་པ་ལ་ཐེ་མི་སྙམ་པའི་བཟོད་པ परापकारमर्षणक्षान्तिः शि.स.100ख/100; उपघातः – དེ་ཇི་ལྟར་གཞན་གྱིས་གནོད་པ་བྱས་པས་བདག་གི་དོན་དུ་ཉེས་པར་བྱེད་པའི་ལས་ལ་འཇུག་པར་འགྱུར स कथमात्मार्थं परोपघातेन दुष्कृते कर्मणि प्रवर्त्स्यतीति सू.व्या.142क/19; व्यथा – དེ་བཞིན་སེམས་ཅན་གནོད་པ་བྱས་ན་ཡང་། །ཐུགས་རྗེ་ཆེ་རྣམས་དགྱེས་པའི་ཐབས་མེད་དོ།། सत्त्वव्यथायामपि तद्वदेव न प्रीत्युपायोऽस्ति दयामया-

नाम् [महाकृपाणाम् पा.भे.] ॥ बो.अ.19[ख]/6.123; •*भू.का.कृ.* अपकृतः – དེ་ལ་གནོད་བྱས་ཐུབ་ལ་གནོད་པ་བྱས། तत्रापकारेऽपकृतं मुनीनाम् बो.अ.19[ख]/6.122; बाधितः – སྔར་གནོད་བྱས་པའི་རིགས་ཀྱིས་ནི། །འཁྲུལ་པར་རྟོག་[? རྟོགས་]པ་མ་ཡིན་ནོ། जात्या बाधितया पूर्वं व्यभिचारो न गम्यते ॥ त.स.100[क]/885; व्यथितः – འདི་ཡིས་བརྒྱ་ཕྲག་ཐམས་ཅད་དུ། །འཁོར་བར་བདག་ལ་གནོད་པ་བྱས། अनेन शतशः सर्वे संसारे व्यथिता वयम् ॥ बो.अ.29[ख]/8.154; हिंसितः – བཅོམ་པ་གནོད་པའི་དོན་ཡིན་པར་གཟུང་སྟེ། འདིས་མུན་པ་ལ་གནོད་པ་བྱས་སོ་ཞེས་བྱ་བའི་ཐ་ཚིག་གོ། हिंसार्थो हन्तिर्गृह्यते, हिंसितमनेनान्धकारमित्यर्थः अभि.स्फु.3[ख]/5.

གནོད་བྱས་པ = གནོད་བྱས།

གནོད་བྱེད = གནོད་པ་བྱེད་པ།

གནོད་བྱེད་དུ་འགྱུར་བ = གནོད་པ་བྱེད་པར་འགྱུར།

གནོད་བྱེད་པ = གནོད་བྱེད།

གནོད་སྦྱིན •*सं.* यक्षः – སངས་རྒྱས་བཅོམ་ལྡན་འདས... ལྷ་རྣམས་དང་ཀླུ་རྣམས་དང་གནོད་སྦྱིན་རྣམས་དང་ལྷ་མ་ཡིན་རྣམས་དང་ནམ་མཁའ་ལྡིང་རྣམས་དང་མིའམ་ཅི་རྣམས་དང་ལྟོ་འཕྱེ་ཆེན་པོ་རྣམས་ཀྱིས་བཀུར་སྟི་བྱས देवनागयक्षासुरगरुडकिन्नरमहोरगाभ्यर्चितो बुद्धो भगवान् अ.श.72[ख]/63; གནོད་སྦྱིན་རྣམས་ཀྱི་གནོད་སྦྱིན་གྱི་སྐད་དང་གནོད་སྦྱིན་གྱི་སྒྲ་དང་གནོད་སྦྱིན་གྱི་ཚིག་དང་གནོད་སྦྱིན་གྱི་གཏམ་དུ་བྱས་པ་དང་གནོད་སྦྱིན་གྱི་རབ་ཏུ་བརྗོད་པ་གང་ཡིན་པ་དེ་དག་སྨྲས་པ་ནི་ཤེས་པར་ནུས་ཀྱི यानि तानि यक्षाणां यक्षभाषितानि यक्षरुतानि यक्षपदानि यक्षमन्त्रितानि यक्षव्याहृतानि, तानि विज्ञायन्ते जल्प्यमानानि अ.सा.34[क]/19; དེ་ལ་སུས་ཀྱང་སྐབས་མི་རྙེད་དེ། ལྷའམ་ལྷ་མོའམ་ཀླུའམ་ཀླུ་མོའམ་གནོད་སྦྱིན་ནམ་གནོད་སྦྱིན་མོའམ न तस्य कश्चिदवतारं लप्स्यते देवो वा देवी वा नागो वा नागी वा यक्षो वा यक्षी वा ल.अ.158[क]/106; རྒྱལ་པོས...གནོད་སྦྱིན་ལ་འདི་སྐད་ཅེས་སྨྲས་སོ། གསང་བ་པ་ཆོས་སྨྲོས་ཤིག་ངས་མཉན་པར་བྱའོ། राजा यक्षमेतदुवाच–ब्रूहि गुह्यक धर्मान् श्रोष्यामीति अ.श.96[क]/86; ལང་ཀའི་གྲོང་རྡལ་གྱི་རི་མ་ལ་ཡའི་རྩེ་མོ་འདིར...ངས་ཀྱང་དེ་ཉིད་དུ་གནོད་སྦྱིན་གྱི་བདག་པོ་ཁྱོད་འགྲོགས་ཀྱི་ཕྱིར་དེ་ཉིད་བསྙེད་ཅིང་ཆོས་བསྟན་ཏོ། अस्मिंल्लङ्कापुरीमलयशिखरे...यन्न्वहमपि अत्रैव रावणं यक्षाधिपतिमधिकृत्य एतदेवोद्भावयन् धर्मं देशयेयम् ल.अ.56[क]/1; གནོད་སྦྱིན་མདངས་འཕྲོག་པ་ལྔ ओजोहाराः पञ्च यक्षाः जा.मा.37[क]/43; राक्षसः – གནོད་སྦྱིན་གྱི་བདག་པོ་ཁྱོད་འགྲོགས་དེ་བཞིན་གཤེགས་པའི་བྱིན་གྱི་རླབས་ཀྱིས...ཐོས अश्रौषीद्रावणो राक्षसाधिपतिस्तथागताधिष्ठानात् ल.अ.56[क]/1; निशाचरः – རང་གི་ཤ་ཡིས་གནོད་སྦྱིན་དེ་དག་ནི། །ཚིམ་པར་བྱས་པས་དེ་ནི་དེ་བཞིན་དགའ། स प्रीतिमानेव निशाचरांस्तान् संतर्पयन् स्वैः पिशितैस्तथासीत् । जा.मा.43[क]/51; •*ना.* यक्षः, दिक्पालः – ད་ནི་ཕྱོགས་སྐྱོང་རྣམས་ཀྱི་གནས་གསུངས་པ། ཤར་དུ་བརྒྱ་བྱིན་ནོར་སྦྱིན་དུ་གནོད་སྦྱིན་ནོ། इदानीं दिक्पालस्थानमुच्यते । पूर्वे शक्रः यक्षो धनदे वि.प्र.171[क]/1.21.

གནོད་སྦྱིན་གྱི་སྐད यक्षभाषितम् – གནོད་སྦྱིན་རྣམས་ཀྱི་གནོད་སྦྱིན་གྱི་སྐད་དང་གནོད་སྦྱིན་གྱི་སྒྲ་དང་གནོད་སྦྱིན་གྱི་ཚིག་དང་གནོད་སྦྱིན་གྱི་གཏམ་དུ་བྱས་པ་དང་གནོད་སྦྱིན་གྱི་རབ་ཏུ་བརྗོད་པ་གང་ཡིན་པ་དེ་དག་སྨྲས་པ་ནི་ཤེས་པར་ནུས་ཀྱི यानि तानि यक्षाणां यक्षभाषितानि यक्षरुतानि यक्षपदानि यक्षमन्त्रितानि यक्षव्याहृतानि, तानि विज्ञायन्ते जल्प्यमानानि अ.सा.34[क]/19.

གནོད་སྦྱིན་གྱི་རྒྱལ་པོ *ना.* यक्षराजः – གནོད་སྦྱིན་གྱི་རྒྱལ་པོ་སྒྲུབ་པའི་ཐབས यक्षराजसाधनम् क.त.3732; द्र.

གནོད་སྦྱིན་རྒྱལ་པོ།

གནོད་སྦྱིན་གྱི་རྒྱལ་པོ་སྒྲུབ་པའི་ཐབས *ना.* यक्षराजसाधनम्, ग्रन्थः क.त.3732.

གནོད་སྦྱིན་གྱི་རྒྱལ་པོ་ཆེན་པོ महायक्षराजः – གནོད་སྦྱིན་གྱི་རྒྱལ་པོ་ཆེན་པོ་ལུས་ངན་པོས་བཅོམ་ལྡན་འདས་ལ་ཕྱག་འཚལ་ནས་འདི་སྐད་ཅེས་གསོལ་ཏོ॥ कुबेरो महायक्षराजा[जो] भगवन्तं नमस्यैवमाह स.दु.118क/200.

གནོད་སྦྱིན་གྱི་རྒྱལ་པོ་ཕུར་བུས་འདེབས་པའི་སྒྲུབ་ཐབས *ना.* यक्षकीलिकीलराजसाधनम्, ग्रन्थः क.त.2056.

གནོད་སྦྱིན་གྱི་སྒྲ यक्षरुतम् – གནོད་སྦྱིན་རྣམས་ཀྱི་གནོད་སྦྱིན་གྱི་སྐད་དང་གནོད་སྦྱིན་གྱི་སྒྲ་དང་གནོད་སྦྱིན་གྱི་ཚིག་དང་གནོད་སྦྱིན་གྱི་གདམས་དུ་བྱས་པ་དང་གནོད་སྦྱིན་གྱི་རབ་ཏུ་བརྗོད་པ་གང་ཡིན་པ་དེ་དག་སྨྲས་པ་ནི་ཤེས་པར་རུང་ངོ། यानि तानि यक्षाणां यक्षभाषितानि यक्षरुतानि यक्षपदानि यक्षमन्त्रितानि यक्षव्याहृतानि, तानि विज्ञायन्ते जल्प्यमानानि अ.सा.34क/19.

གནོད་སྦྱིན་གྱི་གདམས་དུ་བྱས་པ यक्षमन्त्रितम् – གནོད་སྦྱིན་རྣམས་ཀྱི་གནོད་སྦྱིན་གྱི་སྐད་དང་གནོད་སྦྱིན་གྱི་སྒྲ་དང་གནོད་སྦྱིན་གྱི་ཚིག་དང་གནོད་སྦྱིན་གྱི་གདམས་དུ་བྱས་པ་དང་གནོད་སྦྱིན་གྱི་རབ་ཏུ་བརྗོད་པ་གང་ཡིན་པ་དེ་དག་སྨྲས་པ་ནི་ཤེས་པར་རུང་ངོ། यानि तानि यक्षाणां यक्षभाषितानि यक्षरुतानि यक्षपदानि यक्षमन्त्रितानि यक्षव्याहृतानि, तानि विज्ञायन्ते जल्प्यमानानि अ.सा.34क/19.

གནོད་སྦྱིན་གྱི་བདག་པོ 1. यक्षाधिपतिः – ལང་ཀའི་གྲོང་ཁྱེར་དཔལ་གྱི་རི་མ་ལ་ཡའི་རྩེ་མོ་འདིར... ངས་ཀྱང་དེ་ཉིད་དུ་གནོད་སྦྱིན་གྱི་བདག་པོ་འཁོར་འཁོར་འགྲོགས་ཀྱི་ཕྱིར་དེ་ཉིད་བསྙེད་ཅིང་ཆོས་བསྟན་ཏོ॥ अस्मिंल्लङ्कापुरीमलयशिखरे...यन्न्वहमपि अत्रैव रावणं यक्षाधिपतिमधिकृत्य एतदेवोद्भावयन् धर्मं देशयेयम् ल.अ.56क/1; राक्षसाधिपतिः – དེ་ནས་གནོད་སྦྱིན་གྱི་བདག་པོ་འཁོར་འགྲོགས་འཁོར་དང་བཅས་པ་མེ་ཏོག་གི་གཞལ་མེད་ཁང་དུ་ཞུགས་ནས་བཅོམ་ལྡན་འདས་ག་ལ་བ་དེར་སོང་སྟེ अथ रावणो राक्षसाधिपतिः सपरिवारः पौष्पकं विमानमधिरुह्य येन भगवांस्तेनोपजगाम ल.अ.56ख/1 2. = ཕྱག་ན་རྡོ་རྗེ यक्षराजः, वज्रपाणिः – བློ་དང་ལྡན་པ་གནོད་སྦྱིན་གྱི་བདག་པོ་ལག་ན་རྡོ་རྗེ་རྡོ་རྗེས་ང་ལ་དྲིས पृष्टोऽयं यक्षराजेन वज्रहस्तेन धीमता। म.मू.190क/125; यक्षराट् – གནོད་སྦྱིན་བདག་པོ་ཡིད་དགའ་ནས यक्षराट् तुष्टमनसः म.मू.190क/125; द्र. གནོད་སྦྱིན་རྒྱལ་པོ།

གནོད་སྦྱིན་གྱི་སྡེ་དཔོན यक्षसेनापतिः – གནོད་སྦྱིན་གྱི་སྡེ་དཔོན་ཕྱག་ན་རྡོ་རྗེ་འཁོར་དེར་འདུས་པར་གྱུར་ཏེ वज्रपाणिर्यक्षसेनापतिः तस्यां पर्षदि सन्निपतितोऽभूत् म.मू.272क/427; द्र. གནོད་སྦྱིན་གྱི་སྡེ་དཔོན་ཆེན་པོ།

གནོད་སྦྱིན་གྱི་སྡེ་དཔོན་ཆེན = གནོད་སྦྱིན་གྱི་སྡེ་དཔོན་ཆེན་པོ།

གནོད་སྦྱིན་གྱི་སྡེ་དཔོན་ཆེན་པོ महायक्षसेनापतिः – བཅོམ་ལྡན་འདས་བདག་གིས་གནོད་སྦྱིན་གྱི་སྡེ་དཔོན་ཆེན་པོ་བརྒྱད་ཅུ་དང་ལྷན་ཅིག་ཏུ་མཆིས་ཏེ अहं भगवन्... अष्टाशीतिभिर्महायक्षसेनापतिभिः सहागत्य स.दु.118क/200; म.व्यु.4338(68ख).

གནོད་སྦྱིན་གྱི་སྡེ་དཔོན་ཆེན་པོ་གར་མཁན་མཆོག་གི་བརྟག་པ *ना.* महायक्षसेनापतिनर्तकपरकल्पः, ग्रन्थः क.त.766.

གནོད་སྦྱིན་གྱི་སྡེ་དཔོན་ཆེན་པོ་ལག་ན་རྡོ་རྗེ་གོས་སྔོན་པོ་ཅན་འཁོར་ལོ་ཆེན་པོའི་ལྷ་ཚོགས་ལ་བསྟོད་པ་ཞེས་བྱ་བ *ना.* नीलाम्बरधरवज्रपाणिमहायक्षसेनापतिचक्रदेवगणमण्डलस्तोत्रनाम, ग्रन्थः क.त. 2164.

གནོད་སྦྱིན་གྱི་སྡེ་དཔོན་ཆེན་པོ་ལག་ན་རྡོ་རྗེ་གོས་སྔོན་པོ་ཅན་གྱི་དཀྱིལ་འཁོར་གྱི་ཆོ་ག་ཞེས་བྱ་བ *ना.* म-

हायक्षसेनापतिनीलाम्बरधरवज्रपाणिमण्डलविधिनाम, ग्रन्थः क.त.2162, 2171.

གནོད་སྦྱིན་གྱི་སྡེ་དཔོན་ཆེན་པོ་ལག་ན་རྡོ་རྗེ་གོས་སྔོན་པོ་ཅན་གྱི་སྒྲུབ་ཐབས *ना.* महायक्षसेनापतिनीलाम्बरधरवज्रपाणिसाधनम्, ग्रन्थः क.त.2168-70.

གནོད་སྦྱིན་གྱི་སྡེ་དཔོན་ཆེན་པོ་ལག་ན་རྡོ་རྗེ་གོས་སྔོན་པོ་ཅན་གྱི་སྒྲུབ་པའི་ཐབས་འཁོར་ལོ་ཆེན་པོ་ཞེས་བྱ་བ <?> *ना.* नीलाम्बरधरवज्रपाणिमहायक्षकलापमहाचक्रसाधननाम, ग्रन्थः क.त.2148.

གནོད་སྦྱིན་གྱི་སྡེ་དཔོན་ཆེན་པོ་ལག་ན་རྡོ་རྗེ་གོས་སྔོན་པོ་ཅན་གྱི་གཟུངས་ཀྱི་སྒྲུབ་ཐབས་བདུད་རྩི་ཐིགས་པ་ཞེས་བྱ་བ *ना.* नीलाम्बरधरवज्रपाणिमहायक्षकलापधारणीसाधनामृतबिन्दुनाम, ग्रन्थः क.त.2149.

གནོད་སྦྱིན་གྱི་སྡེ་དཔོན་ཆེན་པོ་ལག་ན་རྡོ་རྗེ་གོས་སྔོན་པོ་ཅན་དང་བྱ་ཁྱུང་གི་སྒྲུབ་ཐབས *ना.* महायक्षसेनापतिनीलाम्बरधरवज्रपाणिगरुडसाधनम्, ग्रन्थः क.त. 2192.

གནོད་སྦྱིན་གྱི་སྡེ་དཔོན་ཆེན་པོ་ལག་ན་རྡོ་རྗེ་ཞེས་བྱ་བའི་སྒྲུབ་པའི་ཐབས *ना.* महायक्षसेनापतिवज्रपाणिसाधननाम, ग्रन्थः क.त.2870.

གནོད་སྦྱིན་གྱི་སྡེ་དཔོན་རྣམས་སྦྱོང་ཞིང་སེལ་བ་ཞེས་བྱ་བའི་སྒྲུབ་ཐབས *ना.* यक्षसेनापतिविशोधनहरसाधननाम, ग्रन्थः क.त.2152.

གནོད་སྦྱིན་གྱི་ཁྲུག་པ यक्षकर्दमः, अनुलेपनभेदः – कर्पूरागरुकस्तूरीकक्कोलैर्यक्षकर्दमः । अ.को.2.6.133; यक्षाणां कर्दमवत् सुलभत्वाद् यक्षकर्दमः । कर्पूरागरुकस्तूरीकक्कोलैः मिश्रीकृतसुगन्धद्रव्यनाम अ.वि.2.6.133.

གནོད་སྦྱིན་གྱི་དབང་པོས་ཞལ་དུ་བལྟས་པ यक्षेन्द्रावलोकितमुखमण्डलः, बुद्धस्य नामपर्यायः – བྱམས་པ་དེ་བཞིན་གཤེགས་པས་ཆོས་ཀྱི་འཁོར་ལོ་རྣམ་པ་འདི་ལྟ་བུ་བསྐོར་ཏེ། དེ་བསྐོར་བས་དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་ལ་དེ་བཞིན་གཤེགས་པའོ་ཞེས་བྱའོ།། ...གནོད་སྦྱིན་གྱི་དབང་པོས་ཞལ་དུ་བལྟས་པ་ཞེས་བྱའོ།། एवंरूपं मैत्रेय तथागतेन धर्मचक्रं प्रवर्तितम्, यस्य प्रवर्तनात्तथागत इत्युच्यते ... यक्षेन्द्रावलोकितमुखमण्डल इत्युच्यते ल.वि.212क/313.

གནོད་སྦྱིན་གྱི་ཚིག यक्षपदम् – གནོད་སྦྱིན་རྣམས་ཀྱི་གནོད་སྦྱིན་གྱི་སྐད་དང་གནོད་སྦྱིན་གྱི་སྒྲ་དང་གནོད་སྦྱིན་གྱི་ཚིག་དང་གནོད་སྦྱིན་གྱི་གཏམ་དུ་བྱས་པ་དང་གནོད་སྦྱིན་གྱི་རབ་ཏུ་བརྗོད་པ་གང་ཡིན་པ་དེ་དག་སྨྲས་པ་ནི་ཤེས་པར་རུང་གི यानि तानि यक्षाणां यक्षभाषितानि यक्षरुतानि यक्षपदानि यक्षमन्त्रितानि यक्षव्याहृतानि, तानि विज्ञायन्ते जल्प्यमानानि अ.सा.34क/19.

གནོད་སྦྱིན་གྱི་ཚོགས་ཀྱིས་བསྐོར་བ *वि.* यक्षगणपरिवृतः – དེ་ནས་བཅོམ་ལྡན་འདས་དུལ་ལ་འཁོར་ཡང་དུལ་བ་དང་...ནོར་སྦྱིན་གནོད་སྦྱིན་གྱི་ཚོགས་ཀྱིས་བསྐོར་བ་ལྟ་བུ अथ भगवान् दान्तो दान्तपरिवारः...धनद इव यक्षगणपरिवृतः अ.श.57ख/49.

གནོད་སྦྱིན་གྱི་ཡི་གེ यक्षलिपिः, लिपिविशेषः – ཚངས་པའི་ཡི་གེའམ...གནོད་སྦྱིན་གྱི་ཡི་གེའམ...འབྱུང་པོ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་སྒྲ་སྡུད་པའི་ཡི་གེའམ...ཡི་གེ་དྲུག་ཅུ་རྩ་བཞི་པོ་དེ་དག་གི་ནང་ནས ब्राह्मी...यक्षलिपिं...सर्वभूतरुतग्रहणीम्। आसां...चतुष्षष्टीलिपीनाम् ल.वि.66ख/88.

གནོད་སྦྱིན་གྱི་རབ་ཏུ་བརྗོད་པ यक्षव्याहृतम् – གནོད་སྦྱིན་རྣམས་ཀྱི་གནོད་སྦྱིན་གྱི་སྐད་དང་གནོད་སྦྱིན་གྱི་སྒྲ་དང་གནོད་སྦྱིན་གྱི་ཚིག་དང་གནོད་སྦྱིན་གྱི་གཏམ་དུ་བྱས་པ་དང་གནོད་སྦྱིན་གྱི་རབ་ཏུ་བརྗོད་པ་གང་ཡིན་པ་དེ་དག་སྨྲས་པ་ནི་ཤེས་པར་རུང་གི यानि तानि यक्षाणां यक्षभाषितानि यक्षरुतानि यक्षपदानि यक्षमन्त्रितानि

यक्षव्याहृतानि, तानि विज्ञायन्ते जल्पमानानि अ. सा.34क/19.

གནོད་སྦྱིན་དགའ་བྱེད་ཀྱི་སྒྲུབ་ཐབས *ना.* यक्षनन्दिकरसाधनम्, ग्रन्थः क.त.2055.

གནོད་སྦྱིན་རྒྱལ = གནོད་སྦྱིན་རྒྱལ་པོ།

གནོད་སྦྱིན་རྒྱལ་པོ *ना.* यक्षराट् 1. = ལུས་ངན कुबेरः – कुबेरस्त्र्यम्बकसखो यक्षराड् गुह्यकेश्वरः। मनुष्यधर्मा धनदो राजराजो धनाधिपः ॥ अ.को.1.1.70; यक्षेषु राजत इति यक्षराट्। राजृ दीप्तौ अ.वि.1.1.70 2. = རྣམ་ཐོས་སྲས वैश्रवणः – རྒྱལ་པོ་ཆེན་པོ་བཞི་པོ་ཡང་། །འཇིག་རྟེན་ཀུན་ལ་གྲགས་པ་སྟེ། །འཕགས་སྐྱེས་པོ་དང་མིག་མི་བཟང་། །ཡུལ་འཁོར་སྲུང་དང་གནོད་སྦྱིན་རྒྱལ། चत्वारोऽपि महाराजाः सर्वलोकेषु कीर्तिताः। विरूढो विरूपाक्षश्च धृतराष्ट्रोऽथ यक्षराट् ॥ म.मू. 327क/513; द्र. གནོད་སྦྱིན་བདག་པོ།

གནོད་སྦྱིན་ཆེན་པོ་གཞན་གྱིས་མི་ཐུབ་པའི་སྒྲུབ་ཐབས་ཀྱི་རྒྱུད *ना.* महायक्षापराजितसाधनतन्त्रम्, ग्रन्थः क.त.3754.

གནོད་སྦྱིན་བདག་པོ

གནོད་སྦྱིན་མདངས་འཕྲོག་པ ओजोहारयक्षः – འོད་སྲུངས་སེམས་ནི་རྟག་ཏུ་ཀླན་ཀ་ཚོལ་བའི་ཕྱིར་གནོད་སྦྱིན་མདངས་འཕྲོག་པ་དང་མཚུངས་སོ॥ काश्यप...चित्तं हि ओजोहारयक्षसदृशं सदा विवरगवेषणतया शि.स. 131क/126.

གནོད་སྦྱིན་ན་ཊ་ཎོ་ཌོའི་སྒྲུབ་ཐབས *ना.* यक्षनडनाडीसाधनम्, ग्रन्थः क.त.2053.

གནོད་སྦྱིན་ནོར་བུ་བཟང་པོའི་རྟོག་པ *ना.* मणिभद्रयक्षसेन(?)कल्पः, ग्रन्थः क.त.765.

གནོད་སྦྱིན་སྤུན་གཉིས་ཀྱི་སྒྲུབ་ཐབས *ना.* द्वयभ्रातृयक्षसाधनम्, ग्रन्थः क.त.2132.

གནོད་སྦྱིན་སྤོས = སྤོས་དཀར यक्षधूपः, सर्जरसः मि.को. 55क।

གནོད་སྦྱིན་བུ यक्षपुत्रः – གནོད་སྦྱིན་མོ་དང་གནོད་སྦྱིན་བུ། །ཐེག་ཆེན་རྟོགས་པར་འཚལ་བ་མཆིས॥ यक्षिण्यो यक्षपुत्राश्च महायानबुभुत्सवः। ल.अ.57ख/3.

གནོད་སྦྱིན་དབང 1. = གནོད་སྦྱིན་དབང་པོ 2. यक्षैश्वर्यम् – བརྒྱ་བྱིན་ཉིད་དང་གནོད་སྦྱིན་དབང་། །སྲིན་པོ་ཉིད་དང་རིག་འཛིན་ཉིད॥ शक्रत्वं यक्षैश्वर्यं राक्षसत्वं विद्याधरत्वम्। स.दु.121क/210.

གནོད་སྦྱིན་དབང་པོ = འབོད་འགྲོགས यक्षेन्द्रः, रावणः – གནོད་སྦྱིན་དབང་པོ་འདས་པ་ཡི། །མགོན་པོས་རིན་ཆེན་རི་བོ་ལ། །སོ་སོ་རང་རིག་ཆོས་རྣམས་བསྟན། །ཁྱོད་ཉིད་ལ་ཡང་ཐུགས་བརྩེར་དགོངས॥ अतीतैरपि यक्षेन्द्र नायकै रत्नपर्वते ॥ प्रत्यात्मधर्मो निर्दिष्टः त्वं चैवाप्यनुकम्पितः। ल.अ.57ख/3.

གནོད་སྦྱིན་འབྲོག་གནས *ना.* आटवकयक्षः, यक्षः म.व्यु. 3377(58क).

གནོད་སྦྱིན་མ་ཆེན་པོ महायक्षिणी – དེ་བཞིན་དུ་གང་གཞན་ཡང་གཞོན་ནུ་མ་བཞི་གནོད་སྦྱིན་མ་ཆེན་པོའི་མིང་པོ་ཏུམ་བུ་རུ་ཞེས་བྱ་བ་ཡང་དག་པར་རྟེན་པ། གྲུའི་ཐེག་པ་ལ་ཡང་དག་པར་ཞོན་པ། འཇིག་རྟེན་ཐམས་ཅད་ཀྱིས་རབ་ཏུ་མཆོད་པ། སེམས་ཅན་རྣམས་རྗེས་སུ་འཛིན་པར་བྱེད་པ एवं यापि ताः चतुः [चतस्रः] कुमार्यः महायक्षिण्या भ्रातुः तुम्बुरुसमेता नौयानसमारूढाः सर्वलोकसुपूजिताः सत्त्वानुग्रहकारिकाः म.मू.289ख/448.

གནོད་སྦྱིན་མི་བཟད་པ *ना.* व्याडयक्षः, यक्षः – རྒྱལ་པོ་ཆེན་པོ་བཞི་ནི་དེའི་སྒོ་དཔོན་ལྟ་བུར་བཀོད་དོ། གླང་པོ་ཆེ་ས་སྲུང་གི་བུ་ལྟ་བུ་དག་དང...མི་གནོད་སྦྱིན་མི་བཟད་པ་ལྟ་བུ་དག་ཀྱང་བཀོད་དོ॥ चत्वारो महाराजानो दौवारिकाः स्थापिताः, ऐरावतसदृशा हस्तिनः...व्याडयक्षसदृशा मनुष्याः अ.श.240क/220.

གནོད་སྦྱིན་མོ यक्षिणी, यक्षस्त्री – གནོད་སྦྱིན་མོ་དང་ གནོད་སྦྱིན་བུ། །ཐེག་ཆེན་རྟོགས་པར་འཚལ་བ་མཆིས॥ यक्षिण्यो यक्षपुत्राश्च महायानबुभुत्सवः। ल.अ.57ख/3; མདུད་ཅན་གྱི་གྲོང་ཁྱེར་ན་གནོད་སྦྱིན་མོ་མདུད་ཅན་ཞེས་བྱ་བ कुन्तीनगरे [कुन्ती यक्षिणी इति ख्याता] वि.व.121क/1.9; यक्षी – བསྐལ་པ་སྒྲེག་པའི་འཁོར་ལོ་ཆེ། །བསྒོམས་ནས་གནོད་སྦྱིན་མོ་དང་སྦྱང་॥ कल्पोद्दाहमहाचक्रं ध्यात्वा यक्षींस्तु भुञ्जयेत् [साधयेत् पा.भे.] गु.स.123क/71; དེ་ལ་སུས་ཀྱང་སྐབས་མི་རྙེད་དེ། ལྷའམ་ལྷ་མོའམ་ཀླུའམ་ཀླུ་མོའམ་གནོད་སྦྱིན་ནམ་གནོད་སྦྱིན་མོའམ न तस्य कश्चिदवतारं लप्स्यते देवो वा देवी वा नागो वा नागी वा यक्षो वा यक्षी वा ल.अ. 158क/106.

གནོད་སྦྱིན་མོ་སའི་བདག་མོ་བཀྲ་ཤིས་མའི་སྒྲུབ་ཐབས *ना.* यक्षिणीपार्थिवी[पृथिवी लि,पा.]लक्ष्मीसाधनम्, ग्रन्थः क.त.2054.

གནོད་སྦྱིན་ལག་ན་རྡོ་རྗེ *ना.* वज्रपाणिः, यक्षसेनापतिः – ཀུན་དགའ་བོ་ང་གནོད་སྦྱིན་ལག་ན་རྡོ་རྗེ་དང་ཐབས་ཅིག་ཏུ་བྱང་ཕྱོགས་སུ་གཤེགས་ནས་ཏ་མ་སའི་ཚལ་རྣམས་ལུང་བསྟན་ཏོ॥ गतोऽहमानन्द वज्रपाणिसहीय उत्तरापथम्। व्याकृतं तमसावनं यावद् वि.व. 122क/1.10; द्र. གནོད་སྦྱིན་གྱི་སྡེ་དཔོན།

གནོད་སྦྱིན་ཤིང་རྟ भूतरथः – བདག་ཉིད་ཆེན་པོ་ཛམ་བྷ་ལ། །གནོད་སྦྱིན་གྱི་ནི་སྔགས་ཀྱང་བསྒྲུབས། །བདག་ཉིད་ཆེན་པོ་ས་ཡི་བདག། །དེ་ནས་གནོད་སྦྱིན་ཤིང་རྟ་སྒྲུབ॥ <?> आराध्य मन्त्रं यक्षस्य जम्भलस्य महात्मने। ततो भूतरथः सिद्धः क्षितिपश्च महात्मनः ॥ म.मू. 304क/474.

གནོད་མ་གྱུར *क्रि.* मा बाधतु लो.को.1382.

གནོད་མ་བྱས = གནོད་མ་བྱས་པ།

གནོད་མ་བྱས་པ *वि.* अनपराधः – འདི་ལྟར་ཕར་གནོད་མ་བྱས་ན། །འགའ་ཡང་གནོད་པ་མི་བྱེད་དོ॥ यतो मेऽनपराधस्य न कश्चिदपराध्यति ॥ बो.अ.18ख/6. 106.

གནོད་མང *वि.* बहुव्यथः – བརྩོན་མེད་འབྲས་བུ་འདོད་པ་དང་། །བཟེ་རེ་ཅན་ལ་གནོད་མང་ཞིང་॥ निरुद्यम फलाकाङ्क्षिन् सुकुमार बहुव्यथ। बो.अ.20ख/7.13.

གནོད་མི་འགྱུར •*क्रि.* न बाधते – བརྙས་དང་ཚིག་རྩུབ་སྨྲ་བ་དང་། །མི་སྙན་པ་ཡི་ཚིག་དེ་ཡིས། །ལུས་ལ་གནོད་པར་མི་འགྱུར་ན॥ न्यक्कारः परुषं वाक्यमयशश्चेत्ययं गणः। कायं न बाधते बो.अ.16ख/6.53; न बाध्यते – འཆགས་དང་འཇིག་པ་དག་གིས་ཀྱང་། །ཐབས་དང་ཤེས་རབ་གནོད་མི་འགྱུར॥ उत्पत्तिप्रलयाभ्यां च प्रज्ञोपायौ न बाध्यते। हे.त.15क/48; •*अव्य.* सुखावहम् – དེ་ལ་གནོད་པར་མི་འགྱུར་བའི། །ལས་གང་ཡིན་པའང་བྱེད་དུ་ཆུག॥ कारयन्तु च कर्माणि यानि तेषां सुखावहम्। बो.अ.7क/3.14.

གནོད་མི་བྱ *क्रि.* न पीडयेत् – དམ་པའི་ཆོས་ནི་སྤྱོད་པའི་ལུས། །ཕྲན་ཚེགས་ཆེད་དུ་གནོད་མི་བྱ॥ सद्धर्मसेवकं कायमितरार्थं न पीडयेत्। बो.अ.13ख/5.86.

གནོད་མི་བྱེད •*क्रि.* नापराध्यति – འདི་ལྟར་ཕར་གནོད་མ་བྱས་ན། །འགའ་ཡང་གནོད་པ་མི་བྱེད་དོ॥ यतो मेऽनपराधस्य न कश्चिदपराध्यति ॥ बो.अ.18ख/6. 106; द्र. – དཔེར་ན་རྒྱལ་པོའི་མི་འགའ་ཞིག། །སྐྱེ་བོ་མང་ལ་གནོད་བྱེད་ཀྱང་། །སྐྱེ་བོ་མིག་རྒྱང་རིང་པོ་དག། །ནུས་ཀྱང་ཕྱིར་གནོད་མི་བྱེད་དེ॥ यथैको राजपुरुषः प्रमथ्नाति महाजनम्। विकर्तुं नैव शक्नोति दीर्घदर्शी महाजनः ॥ बो.अ.19ख/6.128; •*सं.* अनपकारः – འདོད་ཆགས་མིན་ཏེ་སྤང་བྱའི་ཕྱིར། །གནོད་མི་བྱེད་ཕྱིར་ཞེ་སྡང་མིན॥ न रागस्तस्य वर्ज्यत्वान्न द्वेषोऽनपकारतः। अभि.स्फु.105ख/789; परिहारः – དེ་ཚེ་དེ་དག་གཞན་ལུས་ལ། །གནོད་མི་བྱེད་པར་ཇི་ལྟར་འགྱུར॥

तदेषां परकायेषु परिहारः कथं भवेत् ॥ बो.अ.16क/6.37; •वि. अनपकारी लो.को.1378.

གནོད་མི་བྱེད་པ = གནོད་མི་བྱེད།

གནོད་མིན = གནོད་པ་མིན།

གནོད་མེད = གནོད་པ་མེད་པ།

གནོད་མེད་ཅན *वि.* अबाधी – དེས་ན་དེ་རྒྱུ་གནོད་མེད་ཅན། །བསྒྲུབས་པས་དེ་ལ་ཇི་ལྟར་གནོད།། तस्मात्तत्कारणाबाधी विधिस्तं बाधते कथमिति ॥ प्र.अ.146क/155; अबाधितः – འོ་ན་དབང་པོའི་བྱ་བ་ནི། །ཡོད་ན་མི་གཡོ་གནོད་མེད་ཅན།། अक्षव्यापारसद्भावे निष्प्रकम्पमबाधितम् ॥ त.स.17ख/197.

གནོད་མཛད *व.का.कृ.* बाधमानः – དེ་ལྟར་ཁྱོད་ལ་གནོད་མཛད་ཀྱང་།། तथा हि बाधमानापि त्वाम् श.प.112ख/66.

གནོད་མཛེས *ना.* सुम्भः, महाक्रोधः – དེ་ནས་བཅོམ་ལྡན་འདས་དམ་ཚིག་རྣམ་པར་འཕྲུལ་པའི་རྡོ་རྗེ་ཞེས་བྱ་བའི་ཏིང་ངེ་འཛིན་ལ་སྙོམས་པར་ཞུགས་ནས་རྡོ་རྗེ་འཛིན་ཐམས་ཅད་ཀྱི་དམ་ཚིག་ཁྲོ་བོ་ཆེན་པོ་གནོད་མཛེས་འདི། ཉིད་ཀྱི་སྐུ་གསུང་ཐུགས་རྡོ་རྗེ་ལས་ཕྱུང་ངོ་།། अथ भगवान् समयविजृम्भितवज्रं नाम समाधिं समापद्येमं सर्ववज्रधरसमयं सुम्भमहाक्रोधं स्वकायवाक्चित्तवज्रेभ्यो निश्चारयामास गु.स.122ख/69; द्र. གནོད་མཛེས་རྒྱལ་པོ།

གནོད་མཛེས་རྒྱལ་པོ *ना.* सुम्भराजः, क्रोधराजः – དེ་བཞིན་དུ་ཡེ་ཤེས་ཀྱི་རིགས་ལས་སྐྱེས་པ་རྡོ་རྗེ་སེམས་དཔའ་དང་སྣ་ཚོགས་ཡུམ་དང་གནོད་མཛེས་རྒྱལ་པོ་དང་ཀུན་དུ་བཟང་པོ་དང་སྒྲ་རྡོ་རྗེ་མ་སྟེ་སྔོན་པོ་རྣམས་ཀྱི་ཡང་ངོ་།། མཚན་མའི་ངེས་པའོ།། एवं नीलानामपि ज्ञानकुलजानां वज्रसत्त्वविश्वमातासुम्भराजसमन्तभद्रशब्दवज्राणामिति चिह्ननियमः वि.प्र.40क/4.24; द्र. གནོད་མཛེས།

གནོད་འཛིན = སྔགས་འཛིན *ना.* जम्भलः, यक्षः – འཕགས་པ་གནོད་འཛིན་དཔལ་ཞེས་བྱ་བའི་གཟུངས आर्यजम्भलश्रीनामधारणी क.त.768; འཕགས་པ་གནོད་འཛིན་ཆུ་དབང་སྙིང་རྗེ་ཅན་གྱི་གཟུངས་བདེ་བྱེད་ཅེས་བྱ་བ कारुणिकार्यजम्भलजलेन्द्रसुशङ्करनामधारणी क.त.769; རྗེ་བཙུན་འཕགས་པ་གནོད་འཛིན་ཆུ་དབང་གི་སྒྲུབ་པའི་ཐབས भट्टारकार्यजम्भलजलेन्द्रसाधनम् क.त.1861; འཕགས་པ་གནོད་འཛིན་གྱི་མཚན་བརྒྱ་རྩ་བརྒྱད་པ་ཞེས་བྱ་བ आर्यजम्भलनामाष्टशतकम् क.त.771; द्र. གནོད་གནས། ཛམ་བྷ་ལ།

གནོད་ཤེས = གནོད་པའི་ཤེས་པ།

གནོད་སེམས •*क्रि.* व्यापद्यते – དེ་དག་ཐམས་ཅད་ལས་ཕལ་ཆེར་དེ་ལ་ཁྲོ་ཞིང་གནོད་པར་སེམས་ལ་མ་དད་པར་སྐྱེད་དེ सर्वेऽस्य यद्भूयस्त्वेन क्रुध्यन्ति, व्यापादन्ति [? व्यापादयन्ति], अप्रसादमुत्पादयन्ति स.पु.140ख/225; •*सं.* 1. व्यसनचित्तम् – གང་ཕྱིར་ཞི་བ་དེ་ཕྱིར་གནོད་སེམས་འགལ།། शान्तिर्यतो व्यसनचित्तमतो विरुद्धम्। सू.अ.189क/86 2. विद्वेषणता लो.को.1378; •*पा.* व्यापादः, अकुशलकर्मविशेषः – སྲོག་གཅོད་པ་དང་...གནོད་སེམས་དང་ལོག་པར་ལྟ་བ་རྣམས་ནི་མི་དགེ་བ་བཅུའོ།། प्राणातिपात...व्यापादमिथ्यादृष्टयो दशाकुशलाः त.प.315क/1096; དེ་ལ་གནོད་སེམས་ལ་སོགས་པ་ནི་གོ་རིམས་བཞིན་དུ་བྱམས་པ་ལ་སོགས་པའི་མི་མཐུན་པའི་ཕྱོགས་ཡིན་ཏེ། གནོད་སེམས་དང་འདོད་པའི་འདོད་ཆགས་དག་ནི་བཏང་སྙོམས་ཀྱི་ ཡིན་ནོ།། तत्र व्यापादादयो मैत्र्यादीनां यथाक्रमं विपक्षाः। व्यापादकामरागावुपेक्षायाः सू.व्या.214क/119; •*वि.* दुष्टचित्तः – རྐུ་བ...གནོད་པར་སེམས་པ་འདོད་ཆེན་ཆེ་བ चोराणां दुष्टचेतसामभिध्यालूनाम् ग.व्यू.24क/121; दुग्धचेताः – སེམས་ཅན་གང་དག་བྱམས་པར་སེམས་པ་དང་གནོད་པར་སེམས་པ ये सत्त्वाः स्निग्धचित्ता वा दुग्धचित्ता वा स.पु.52क/92.

གནོད་སེམས་ལས་འབྱིན་པ་ནི་གནོད་སེམས་མེད་པ་སྙིང་རྗེ་བྱམས་པ व्यापादस्याव्यापादो निःसरणं मैत्री – འབྱུང་བར་ངེས་པའི་ཁམས་དྲུག། གནོད་སེམས་ལས་འབྱིན་པ་ནི་གནོད་སེམས་མེད་པ་སྙིང་བྱམས་པ षट् निःसरणीयधातवः । व्यापादस्याव्यापादो निःसरणं मैत्री म.व्यु.1597 (36क).

གནོད་སེམས་ཀྱིས་ཁྲག་ཕྱུང་བ *पा.* दुष्टचित्तरुधिरोत्पादः – མཚམས་མེད་པ་ལྔ...འདི་ལྟ་སྟེ། ཕ་དང་མ་དང་དགྲ་བཅོམ་པ་གསོད་པ་དང་དགེ་འདུན་འབྱེད་པ་དང་དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་ལ་གནོད་སེམས་ཀྱིས་ཁྲག་ཕྱུང་བའོ།། पञ्चानन्तर्याणि...यदुत मातृपित्रर्हद्बुधसंघभेदास्तथागतकाये दुष्टचित्तरुधिरोत्पादश्च ल.अ.110क /56.

གནོད་སེམས་ཀྱིས་ཀྱུས་པ *वि.* आकीर्णव्यापादः – ཡུལ་འཁོར་སྐྱོང་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའི་ཐེག་པ་པའི་གང་ཟག་ཕལ་ཆེར་ལ་སྐྱོན་དེ་དག་འབྱུང་བར་འགྱུར་ཏེ།... གནོད་སེམས་ཀྱིས་ཀྱུས་པ་དང यद्भूयसा राष्ट्रपाल बोधिसत्त्वयानीयानां पुद्गलानामिमे दोषा भविष्यन्ति... आकीर्णव्यापादाः रा.प.242ख/140.

གནོད་སེམས་སྐྱེད་པ *क्रि.* व्यापद्यते – དེ་ཅུང་ཟད་ཙམ་ཞིག་སྨྲས་ན་ཡང་ཁོང་ཞིང་འཁྲུག་ལ་གནོད་སེམས་སྐྱེད་པ་དང सोऽल्पमात्रमप्युक्तः सन्नभिषज्यते, कुप्यति, व्यापद्यते श्रा.भू.72क/186.

གནོད་སེམས་བསྐྱེད *क्रि.* व्यापादमुत्पादयिष्यति – དེ་འདི་སྙམ་དུ་སེམས་ཏེ། གལ་ཏེ་བདག་གིས་གནོད་སེམས་བསྐྱེད་དུ་ཟིན་ན तस्यैवं भवति–स चेदहं व्यापादमुत्पादयिष्यामि अ.सा.47ख/27.

གནོད་སེམས་ཅན *वि.* व्यापन्नचित्तः – རིགས་ཀྱི་བུ་ངའི་ཡུལ་ན་གནས་པའི་སེམས་ཅན་འདི་དག་ཀྱང་ཕལ་ཆེར་སྲོག་གཅོད་པ་བྱེད་པ...གནོད་སེམས་ཅན इमे च कुलपुत्र मद्विषयवासिनः सत्त्वा यद्भूयसा प्राणातिपातिनः...व्यापन्नचित्ताः ग.व्यू.26क/123.

གནོད་སེམས་དང་བྲལ་བ *वि.* अव्यापन्नचित्तः – གནོད་སེམས་དང་བྲལ་བ་ཡིན་ཏེ། སེམས་ཅན་ཐམས་ཅད་ལ་བྱམས་པའི་སེམས་དང་ཕན་པའི་སེམས་དང...འབྱུང་པོ་ཐམས་ཅད་ལ་ཕན་ཞིང་སྙིང་བརྩེ་བའི་སེམས་དང་ལྡན་པས अव्यापन्नचित्तः खलु पुनर्भवति। सर्वसत्त्वेषु मैत्रचित्तो हितचित्तः...सर्वभूतहितानुकम्पाचित्तः द.भू. 189क/16.

གནོད་སེམས་སྤོང་བ *पा.* व्यापादात्प्रतिविरतिः, दशसु कुशलकर्मस्वेकम् – སྲོག་གཅོད་པ་སྤོང་བ...གནོད་སེམས་སྤོང་བ प्राणातिघाताद्विरतिः... व्यापादात्प्रतिविरतिः म.व्यु.1697(37ख).

གནོད་སེམས་བྱེད *क्रि.* व्यापद्यते–དགེ་སློང་གསར་དུ་འོང་བ་རྣམས་མཐོང་ན་ཚིག་པ་ཟ་ཞིང་འཁྲུག་ལ་གནོད་སེམས་བྱེད་དེ आगन्तुकान् भिक्षून् दृष्ट्वाऽभिषज्यते, कुप्यति, व्यापद्यते अ.श.137क/126.

གནོད་སེམས་མང་བ •*सं.* व्यापादबहुलता – སེམས་ཀྱི་རྨ་ནི་འདི་ལྟ་སྟེ། རྙེད་པ་ལ་སྨོན་པ་དང་ཚངས་པ་མཚུངས་པར་སྤྱོད་པ་གཞན་གྱི་རྙེད་པ་དག་ལ་གནོད་སེམས་མང་བ चित्तक्षतिर्यदुत प्रार्थना। लाभिनां च ब्रह्मचारिणामन्तिके व्यापादबहुलता शि.स.148ख/143; •*वि.* व्यापादबहुलः – གནོད་སེམས་དང་རྣམ་པར་འཚེ་བ་དང་མི་དགའ་བ་དང་འདོད་པའི་འདོད་ཆགས་དང་གནོད་སེམས་མང་བ་རྣམས་ཀྱིས་དེ་དག་སྤང་བར་བྱ་བའི་ཕྱིར་བཞི་སྟེ་གྲངས་བཞིན་ནོ།། व्यापादविहिंसाऽरतिकामरागव्यापादबहुलानां तत्प्रहाणाय चत्वारि यथासंख्यम् अभि.भा.77ख/1170.

གནོད་སེམས་མེད་པ •*सं.* अव्यापादः – ལུས་དང་ངག་དང་ཡིད་ཀྱི་ལས་དགེ་བ་དང་བརྣབ་སེམས་མེད་པ་དང་གནོད་སེམས་མེད་པ་དང་ཡང་དག་པའི་ལྟ་བ་རྣམས་སོ།། इष्टं कुशलं कायवाङ्मनस्कर्म अनभिध्याऽव्या-

पादसम्यग्दृष्टयश्च अभि.भा.199क/674; •वि. अव्यापन्नः – སེམས་ཅན་གང་གིས་དྲི་དེ་ཚོར་བར་གྱུར་པ་དེ་དག་ཐམས་ཅད་ཀྱང་གནོད་སེམས་མེད་པའི་སེམས་དང...གཞན་གྱིས་ཡོངས་སུ་བཟུང་བ་ལ་རེ་བ་མེད་པའི་སེམས་སུ་གྱུར ये च सत्त्वास्तं गन्धं जिघ्रन्ति, ते सर्वेऽव्यापन्नचित्ता भवन्ति... परपरिग्रहानभिलाषचित्ता भवन्ति ग.व्यू.6ख/105.

གནོད་སེམས་མེད་པ་ཡིད་ལ་བྱེད་པ *वि.* अव्यापन्नमनस्कारः – གནོད་སེམས་མེད་པ་ཡིད་ལ་བྱེད་པ་དང་དྲན་པ་དང་ལྡན་པ་དང་མཐུ་དང་ལྡན་པ་ཡིན अव्यापन्नमनस्कारः स्मृतिमांश्च स्थामवांश्च भवेत् स.पु.127ख/202.

གནོད་སེམས་ཡོད = གནོད་སེམས་ཡོད་པ།

གནོད་སེམས་ཡོད་པ *वि.* व्यापन्नचित्तः – དེས་མི་མ་བྱིན་པར་ལེན་པ...གནོད་སེམས་ཡོད་པ...རབ་ཏུ་གདུལ་བར་བྱ་བའི་ཕྱིར་བཙོན་རར་བཙུད་པར་གྱུར་ཏོ། तेन अदत्तादायिनां पुरुषाणां...व्यापन्नचित्तानां...चारके प्रक्षिप्तान्यभूवन् दमनार्थाय ग.व्यू.191क/273.

གནོད་སེལ *ना.* वामकः, नृपः म.व्यु.3571(60ख).

གནོན = གནོན་པ།

གནོན་པ •*क्रि.* (*वर्त.*, གནན *भवि.*, མནན *भूत.*, ནོན *विधौ*) आक्रामति – ཁམས་གསུམ་དེ་དག་ལ་བདུད་སྡིག་ཅན་གནོན་ཏེ तस्य मारः पापीयांस्त्रैधातुकमाक्रामति स.पु.108ख/174; •*सं.* 1. आक्रमणम् – རྡོ་རྗེའི་གདན་གནོན་པ་དང་བདུད་གདུལ་བ་དང་ཆོས་ཀྱི་འཁོར་ལོ་བསྐོར་བ་དང वज्रासनाक्रमणमारधर्षणधर्मचक्रप्रवर्तन(म्) म.मू.88क/1; ས་གནོན་པ भूम्याक्रमणम् म.व्यु.6871 (98क); अवक्रान्तिः – ཡུལ་ཤིན་ཏུ་ཆེས་ཡངས་གནོན་པར་གནས་པའི་རས་ཡུག་ལ་སོགས་པའི་དངོས་པོར་རྟོགས་[གཏོགས་]པའི་དམར་པོ་ལ་སོགས་པར་བསྟན་པར་འདོད་པ पृथुतरदेशावक्रान्तिव्यवस्थितशाटकादिपदार्थगतरक्तादिप्रतिपादनेच्छा त.प.265ख/247; आक्रान्तिः – གནོན་པ་ལའོ། आक्रान्तौ वि.सू.33क/41; विक्रमः लो.को.1383; पराक्रमः – དམག་ཆེན་པོའི་གཡུལ་གནོན་པ महासेनाव्यूहपराक्रमः म.व्यु.3374 (58क); द्र.– ཕ་རོལ་གནོན་པ་རྣམས पराक्रमाः ज्ञा.सि.38ख/97 2. स्तम्भनम् – དབུས་སུ་རྡོ་རྗེ་རྣམ་བསྒོམས་ལ། །ཆུ་རྣམས་གནོན་པའི་མཆོག་ཡིན་ནོ། मध्ये वज्रं विभावित्वा वारिस्तम्भनमुत्तमम् । गु.स.126ख/78 3. = གནོན་པ་ཉིད विष्कम्भनता – དེ་ལ་ཆོས་ཀྱི་ཚོགས་སུ་སྦྱོར་བ་གང་ཞེ་ན། གང་འདི་ནི་དོན་ཉུང་བ་དང...སྒྲིབ་པ་རྣམས་གནོན་པ་དང तत्र कतमो धर्मसंभारयोगः? येयमल्पार्थता...नीवरणानां विष्कम्भनता शि.स.107ख/106; •*वि.* विक्रामी – གནོན་པ་ཆེན་པོ महाविक्रामी स.पु.2ख/2; क्रान्तः – ཕྱོགས་མཚམས་མ་ལུས་གནོན་པ་དེ། །སྙིང་རྗེས་ཟིལ་མནན་གདུང་བར་གྱུར། विव्यथे करुणाक्रान्तः क्रान्ताखिलदिगन्तरः ॥ अ.क.47ख/58.6; •*उ.प.* तपः – ཨང་གའི་རྒྱལ་པོ་འདི་ནི་གདུག་པ་ཕ་རོལ་གནོན་པ एषोऽङ्गराजः परन्तपो निष्ठुरः वि.व.3क/2.75 0. पातः म.व्यु.8437 (117क).

གནོན་པ་ཆེན་པོ *ना.* महाविक्रामी, बोधिसत्त्वः – བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་སེམས་དཔའ་ཆེན་པོ་འཇམ་དཔལ་གཞོན་ནུར་གྱུར་པ་དང...བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་གནོན་པ་ཆེན་པོ་དང मञ्जुश्रिया च कुमारभूतेन बोधिसत्त्वेन महासत्त्वेन...महाविक्रामिणा च स.पु.2ख/2.

གནོན་པར་བྱེད *क्रि.* आक्रमयति म.व्यु.6914 (98ख).

གནོན་པར་བྱེད་པ = གནོན་པར་བྱེད།

གནོན་པོ ओस्तारकः, सत्त्वजातिविशेषः – དེ་ལ་སུས་ཀྱང་སྐབས་མི་རྙེད་དེ། ལྷའམ་ལྷ་མོའམ་ཀླུའམ་ཀླུ་མོའམ་གནོད་སྦྱིན་ནམ་གནོད་སྦྱིན་མོའམ...གནོན་པོའམ་གནོན་མོའམ न तस्य कश्चिदवतारं लप्स्यते देवो वा देवी

वा नागो वा नागी वा यक्षो वा यक्षी वा...ओस्तारको वा ओस्तारकी वा ल.अ.158ख/106; ब.वि.163ख।

གནོན་མོ ओस्तारकी, ओस्तारकस्त्री – དེ་ལ་སུས་ཀྱང་སྐབས་མི་རྙེད་དེ། ལྷའམ་ལྷ་མོའམ་ཀླུའམ་ཀླུ་མོའམ་གནོད་སྦྱིན་ནམ་གནོད་སྦྱིན་མོའམ...གནོན་པོའམ་གནོན་མོའམ न तस्य कश्चिदवतारं लप्स्यते देवो वा देवी वा नागो वा नागी वा यक्षो वा यक्षी वा...ओस्तारको वा ओस्तारकी वा ल.अ.158ख/106.

མནག་དཀའ = མི་བཟད་ཚོར་བ कारणा, तीव्रवेदना–कारणा तु यातना तीव्रवेदना अ.को.1.9.3; कृणातीति कारणा। कृ हिंसायाम् अ.वि.1.9.3.

མནགས = མནགས་པ། མནགས་ཏེ་བོར་ཡང व्यवस्थापयन्नपि–དེ་ལྟར་རྒྱལ་པོ་དེ་འདོད་པས་སྨྱོས་པའི་མཐུས་བརྟན་པ་ནི་ཉམས། བདག་རང་གིས་མནགས་ཏེ་བོར་ཡང་མདངས་ནི་སེར་སྐྱུར་གྱུར་ཅིང་ལུས་ཀྱང་ཤ་ཕྲི་སྲབ་མོར་གྱུར इति स राजा मदबलविचलितधृतिर्व्यवस्थापयन्नप्यात्मानमापाण्डुकृशतनुः जा.मा.75ख/87.

མནགས་ནུས वि. सहिष्णुः, सहनशीलः – सहिष्णुः सहनः क्षन्ता तितिक्षुः क्षमिता क्षमी ॥ अ.को.3.1.29.

མནགས་པ = བཟོད་པའམ་བསྲན་ཟིན་པ छो.को.476; द्र. སོ་སོར་བརྟགས་ཏེ་མནགས་པའི་མཐུ་ཆུང་བས་དུལ་བ་དང་ངེས་པར་སྤྱོད་པ་ནི་ཉམས प्रतिसंख्यानबलवैकल्याच्च भ्रष्टविनयोपचारसौष्ठवः जा.मा.167ख/193.

མནགས་མི་ཐུབ वि. अविषह्यम् – བཟོད་པ་ལ་གོམས་ཤིང་སོ་སོར་བརྟགས་ཏེ་མནགས་པའི་ཤས་ཆེ་བ་རྣམས་ནི་མནགས་མི་ཐུབ་ཅེས་བྱ་བ་མེད་དོ॥ सात्मीभूतक्षमाणां प्रतिसंख्यानमहतां नाविषह्यं नाम किंचिदस्ति जा.मा.163क/189.

མནན = མནན་པ། མནན་ཏེ། °ནས आक्रम्य–མཆིལ་ལྷམ་དང་བཅས་བཞིན་དུ་ཟ་བར་མི་བྱའོ॥ ནད་པས་ནི་མནན་ཏེའོ॥ न सोपानत्था[? त्को] भुञ्जीत। आक्रम्य ग्लानः वि.सू.80क/97; དེ་རྐང་པས་མནན་ནས་སྔགས་བཟླས་ཏེ तं पादेनाक्रम्य मन्त्रं जपेत् हे.त.4क/8; अवष्टभ्य – རྟུལ་ཕོད་པས་མནན་ནས अवष्टभ्य साहसैः ज्ञा.सि.59क/152; स्तम्भयित्वा – ཞབས་དག་གིས་ནི་གདེངས་ཅན་བདག་པོ་ཟུང་དག་མནན་ནས पादाभ्यां स्तम्भयित्वा फणिपतिमिथुनम् वि.प्र.73क/4.136.

མནན་པ •क्रि. (གནོན་པ इत्यस्याः भूत.) <?> आक्रामति – དེ་ལྟ་ན་ཡང་གཟི་བྱིན་ཅན། །ཉི་མས་འགྲོ་བ་གསུམ་པོ་མནན॥ आक्रामत्येव तेजस्वी तथाप्यर्को जगत्त्रयम् ॥ का.आ.333क/2.325; •सं. अवष्टम्भः – རྩྭ་དང་འདམ་རྫབ་དང་ས་རྡུལ་ལ་སོགས་པ་དག་གིས་མནན་ནས་ཀྱང་ངོ་॥ अवष्टम्भेनापि तृणशादपांसुप्रभृतिभिः वि.सू.30क/38; स्तम्भनम्–ཀླུ་རིགས་བཞི་མནན་པའི་ཆོ་ག་ཞེས་བྱ་བ नागकुलचतुःस्तम्भनविधिनाम क.त.2159; पीडनम्–རྐང་པ་ལ་མནན་པས पादपीडनैः अ.क.342ख/45.6; •भू.का.कृ. आक्रान्तः – དེའི་དབུས་སུ་མཐའ་ཡས་མནན་པའི་ཀྱེའི་རྡོ་རྗེ...བྲིའོ॥ तन्मध्येऽनन्ताक्रान्तं हेवज्रं लिखेत् हे.त.3ख/8; ཡིད་སྐྱེས་ཀྱིས་མནན मन्मथाक्रान्तः का.आ.320क/1.57; आरूढः – ཟླ་བ་མནན་པ་ཧཱུྃ་ཡིག་གི་གཟུགས་ཀྱིས་ཡོངས་སུ་གྱུར་པའི་ཕྱིར་རོ॥ चन्द्रारूढहूँकाररूपेण परिणामात् ख.टी.161ख/243; आक्रमितः – ཞབས་གཉིས་དག་གིས་འབྱུང་པོའི་མགོན་པོ་སྐྱེ་ཡི་དགས་ཀྱི་མགོན་པོ་གཞན་གྱིས་མི་ཐུབ་པ་ལྷག་པའི་སྟོབས་ཀྱིས་མནན पादाभ्यां भूतनाथमपराजितप्रेतनाथमाक्रमितमतिबलात् वि.प्र.72ख/4.135; निमीलितः –སོར་མོས་མིག་མནན་པ་ན་སྣེ། བཙིར་བ་ན अङ्गुल्या चक्षुषि निमीलिते अवष्टब्धे सति त.प.148क/748; सम्मीलितः – སོར་མོས་ཅུང་ཟད་མནན་མིག་ལ། །གཅིག་ཀྱང་དུ་མར་སྣང་བ་གང་॥ ईषत्सम्मीलितेऽङ्गुल्या यच्च चक्षुषि दृश्यते।

पृथगेकोऽपि त.स.93क/847; अवष्टब्धः – སས་མནན་པ पांशुनावष्टब्धः लो.को.1383.

མནན་པར་གནས = མནན་པར་གནས་པ།

མནན་པར་གནས་པ *वि.* अवष्टम्भी – རྡུལ་གྱིས་མནན་པར་གནས་པར་ཁས་བླངས་པ་ལ་ནི་སྐལ་བ་གཅིག་ཁོ་ནའོ॥ एकांशतैवावष्टम्भिद्रव्योऽपि तस्य वि.सू.73ख/90.

མནན་པར་འོས་པ *कृ.* आक्रमणीयम् – མནན་པར་འོས་པའི་རྐང་བ་ཕུར་བུ་ལྟ་བུ་ཉིད་གྱུར་རོ॥ कीलपादकत्वं चाक्रमणीयस्य वि.सू.33क/41.

མནབས = མནབས་པ།

མནབས་པ •*भू.का.कृ.* निवसितः – འཕགས་པ་འཇམ་དཔལ...ན་བཟའ་སྔོན་པོ་གཡོ་བཞིན་པ་མནབས་པ आर्यमञ्जुश्रियं...नीलपट्टचलनिकानिवसितम् म.मू.141ख/52; निवस्तः – འཕགས་པ་ཀུན་དུ་བཟང་པོ...ན་བཟའ་སྔོན་པོ་གཡོ་བ་མནབས་པ आर्यसमन्तभद्र...नीलपट्टचलनिकानिवस्तम् म.मू.141ख/52; संनद्धः – བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་སེམས་དཔའ་ཆེན་པོ་གོ་ཆ་ཆེན་པོ་མནབས་པ...གོ་ཆ་སྲ་བ་མནབས་པ बोधिसत्त्वो महासत्त्वो महासंनाहसंनद्धः... दृढसंनाहसंनद्धः ल.वि. 135ख/200; •*उ.प.* धरः – གོས་སུ་ཤིང་ཤུན་དང་ནི་གཡང་གཞི་མནབས चीराजिनाम्बरधरः वि.व.215ख/1.92.

མནམ = མནམ་པ།

མནམ་པ *वि.* दुर्गन्धिः – ཁྱོད་ཀྱང་ཤི་བའི་ཁོག་པ་མཚོག་ཏུ་མནམ་ཞིང་མི་གཙང་བའི་རོ་ཤིང་འདྲ་བར་གྱུར་པ་འདིས་ཅི་ཞིག་སྒྲུབ त्वं च पुनरनेन मृतकुणपेनाशुचिना परमदुर्गन्धेन शवेन काष्ठभूतेन किं प्रार्थयसे अ.श. 143क/132; द्र.– དེའི་ལུས་ལས་རྣག་ཁྲག་འཛག་ཅིང་དྲི་ཤིན་ཏུ་མནམ་པ་འབྱུང་ངོ་॥ पूयशोणितं चास्य शरीरात्प्रघरन्महद्दौर्गन्धं जनयति अ.श.269ख/247.

མནམ་པར་འགྱུར *क्रि.* आघ्रास्यति – སྤོས་དྲི་རྒྱ་ཆེན་པོ་ཡང་མནམ་པར་འགྱུར उदारांश्च गन्धानाघ्रास्यन्ति सु.प्र.22क/44.

མནའ शपथः – དེ་ནས་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའི་ནུ་བོ་འོག་མས་རང་གི་ཡིད་ལ་གཅགས་པ་དང་། བདག་ཉིད་གཙང་མར་བསྟན་པའི་ཕྱིར་མནའ་ཁྱད་པར་ཅན་བོར་བ अथ बोधिसत्त्वस्यानुजो भ्राता स्वमावेगमात्मविशुद्धिं च प्रदर्शयञ्छपथातिशयमिमं चकार जा.मा.101ख/116; བདག་གྱིས་བརྗོད་ལ་མནའ་བྱེད་པ། །རང་ཤ་ཟ་ཞེས་སྨྲ་བ་མོ॥ मयोक्ते शपथं चक्रे स्वमांसादनवादिनी ॥ अ.क. 172क/19.102; शपनम् – शपनं शपथः अ.को.1.6.9; शपति आक्रोशतीति शपनम् । शप आक्रोशे अ.वि.1.6.9; अभिषङ्गः श्री.को.174क; समयः मि.को. 88ख।

མནའ་བསྒག शपथः – དམ་ཚིག་ཆུ་དང་མནའ་བསྒག་དང་། །མེ་ཏོག་དཀྱིལ་འཁོར་དོར་བ་སྟེ། །གང་དང་གང་དུ་མེ་ཏོག་བབས། །དེ་དང་དེ་ཡི་རིགས་སུ་འགྱུར॥ <?> समयोदकशपथञ्च मण्डले पुष्पक्षेपणम् । यद्यत्पुष्पं पतति तु तत्तत्कुलञ्च भविष्यति ॥ स.उ.287ख/18. 25; द्र. མནའ།

མནའ་འདོར་བ शपथकरणम् – མནའ་འདོར་བ་ལའོ॥ शपथकरणे वि.सू.54क/69.

མནའ་འདོར་བར་མི་བྱ *क्रि.* न शपथं कुर्वीत – མནའ་འདོར་བར་མི་བྱའོ॥ न शपथं कुर्वीत वि.सू.29क/36.

མནའ་འདོར་བར་མི་བྱ་བ = མནའ་འདོར་བར་མི་བྱ།

མནའ་བོར་བ *भू.का.कृ.* शपथः कृतः – དེས་བརྫུན་བྱས་ཏེ་མནའ་བོར་བའི་ལས་ཀྱི་རྣམ་པར་སྨིན་པ་དེས་ནི་ཉིན་མོ་དང་མཚན་མོ་བུ་ལྔ་ལྔ་བཙའ་ཞིང་ཟ་བར་གྱུར་ཏོ॥ यत्तया मृषावादेन शपथः कृतः, तस्य कर्मणो विपाकेन रात्रिंदिवेन पञ्च पुत्रान् प्रसूय तानेव भक्षयति अ.श. 133ख/123.

མནའ་མ वधूः म.व्यु.3904(64क); वधुका–ཁྱིམ་རྣམས་སུ་ནི་མནའ་མ་དང་། །གཞོན་ནུ་མ་རྣམས་སྤང་བར་བྱ།། कुलेषु चापि वधुकाः कुमार्यश्च विवर्जयेत् ॥ शि.स. 32ख/31; स्नुषा – ཀང་པ་གཞན་ལ་བརྟགས་འདི་དག། །བདག་གི་འབང་མོ་མནའ་མ་ཡིན།། पश्चात्पादावलम्बिन्यौ दासी चेयं स्नुषा च मे ॥ अ.क.172क/19.96.

མནའ་མ་གསར་པ = བག་གསར नववधूः म.व्यु.3919 (64क).

མནར = མནར་བ།

མནར་བ •सं. 1. परिभवः – གནས་མ་ཡིན་པ་གཞན་དག་ལ་མནར་བའི་སེམས་སམ་ཀུན་ནས་མནར་སེམས་ཀྱི་སེམས་སྐྱེད་པར་བྱེད་པ་དང अस्थाने परेषामन्तिके परिभवचित्तं वा आख्यातं वोत्पादयति श्रा.भू.19ख/46 2. = འཚེར་བ अवमर्दः, पीडनम् – अवमर्दस्तु पीडनम् अ.को.2.8.109; अवमृद्यत इति अवमर्दः । मृद क्षोदे अ.वि.2.8.109 3. = གསོད་པ निर्वासनम्, मारणम् – प्रमापणं निबर्हणं निकारणं निशारणम् ॥... निर्वासनम् अ.को.2.8.113 4. = མནར་བ་ཉིད उत्पीडनता – ཕ་རོལ་གྱིས་མནར་བ परोत्पीडनता द.भू.190ख/17 5. = ནད आमयः, व्याधिः मि.को.51ख; •भू.का.कृ. परिपीडितः – བཀྲེས་པ་དང་སྐོམ་པས་མནར་བ क्षुत्पिपासापरिपीडितान् ग.व्यू.191ख/273; प्रपीडितः – ཕོངས་པའི་སྡུག་བསྔལ་གྱིས་མནར་བ दारिद्र्यदुःखप्रपीडितान् ग.व्यू.192क/274; दुर्गतः – རིང་པོའི་ནད་ཀྱིས་མནར་བ་ཡིས། །ཡོངས་སུ་ཉམས་པ་དེ་མཐོང་ནས།། स तं दृष्ट्वा परिम्लानं दीर्घरोगेण दुर्गतम् । अ.क.47ख/58.6; हतः – དལ་འབྱོར་ཕུན་སུམ་རྙེད་དཀའ་འདི། །ལས་ཀྱིས་མནར་བ་རྣམས་ཀྱིས་བཅོམ།། हता दैवहतेनेयं क्षणसम्पत्सुदुर्लभा ॥ बो.अ.26ख/8.81; आर्तः – སེམས་ཅན་དེ་ལྟར་སྡུག་བསྔལ་གྱིས་མནར་བ एषां सत्त्वानां दुःखार्तानाम् द.भू.213ख/28.

མནར་མ་མཆིས་པ ना. अवीचिः, नरकः– སེམས་ཅན་དེ་དག་ཀྱང་མནར་མ་མཆིས་པའི་སེམས་ཅན་དམྱལ་བ་ཆེན་པོ་དེར་ལུས་ཀྱི་སྡུག་བསྔལ་ཉམས་སུ་མྱོང་ ते सत्त्वा अवीचौ महानरके कायिकं दुःखं प्रत्यनुभवन्ति का.व्यू. 204ख/261; द्र. མནར་མེད་པ།

མནར་མི་གདའ क्रि. वीचिर्न प्रज्ञायते – བཅོམ་ལྡན་འདས་མནར་མ་མཆིས་པའི་སེམས་ཅན་དམྱལ་བ་ཆེན་པོ་ན་མནར་མི་གདའ་ན <?> भगवन्, अवीचौ महानरके कानि सत्त्वानि संविद्यन्ते? यत्र वीचिर्न प्रज्ञायते का.व्यू.204क/261.

མནར་མེད = མནར་མེད་པ།

མནར་མེད་པ •ना. अवीचिः, नरकः – ངོག་ཏུ་འགྲོ་བ་གང་ཡིན་པ་དེ་དག་ནི་སེམས་ཅན་དམྱལ་བ་ཡང་སོས་དང...མནར་མེད་པ་དང...པད་མ་ལྟར་གས་པ་ཆེན་པོར་སོང་ནས या अधस्ताद्गच्छन्ति, ताः संजीवं...अवीचिं...महापद्मं नरकान् गत्वा अ.श.3ख/2; རིགས་ཀྱི་བུ་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་[སེམས་དཔའ་ཆེན་པོ་]སྤྱན་རས་གཟིགས་ཀྱི་དབང་པོ་འདི་ནི་མནར་མེད་པའི་སེམས་ཅན་དམྱལ་བ་ཆེན་པོར་ཞུགས་ནས कुलपुत्रोऽवीचौ महानरके आर्यावलोकितेश्वरो बोधिसत्त्वो महासत्त्वः प्रविष्टः का.व्यू.204क/261; •वि. आवीचिकः – དེ་ལས་མནར་མེད་རྣམས་ཀྱི་འགྲོ་བ་སིན་ཏུ་འཇིགས་པར་འགྲོ་མི་འགྱུར།། तद्धेतोर्न पुनर्व्रजेदतिभयामावीचिकानां गतिम् र.वि.73क/118; མནར་མེད་པའི་མེ་ནང आवीचिकं वह्निम् बो.अ.9क/4.30.

མནར་མེད་པ་ཀུན་སྐེམས་པར་མཛད་པ वि. अवीचिसंशोषणकरः, अवलोकितेश्वरस्य– སྤྱན་རས་གཟིགས་ཀྱི་དབང་པོ་དབང་ཕྱུག་ཆེན་པོ...མནར་མེད་པ་ཀུན་སྐེམས་པར་མཛད་པ...ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ།། नमोऽस्त्ववलोकितेश्वराय, महेश्वराय...अवीचिसंशोषणकराय का.व्यू.205क/263.

མཉལ = མཉལ་བ།

མཉལ་བ शयितम् – བཞེངས་དང་བཞུགས་དང་གཤེགས་དང་བཞུད་པ་དང་། །མཉལ་དང་མི་གསུང་ཡང་ན་གསུང་བ་འམ།། स्थितमासितमागतं गतं शयितं मौनमथाभ्युदीरितम्। वि.व.126क/1.15; द्र. མཉལ་བར་མཛད་པ།

མཉལ་བ་མཛད = མཉལ་བར་མཛད་པ།

མཉལ་བར་མཛད་པ •क्रि. शय्यां कल्पयिष्यति – སངས་རྒྱས་བཅོམ་ལྡན་འདས་རྣམས་འོད་ལ་མཉལ་བར་མཛད་པ་དེ་ནི་གནས་མ་ཡིན་ཞིང་གོ་སྐབས་མེད་པས་མ་ལ་བདག་གིས་མར་མེ་དེ་གསད་པར་བྱའོ།། अस्थानमनवकाशो यद् बुद्धा भगवन्तः आलोकशय्यां कल्पयिष्यन्ति यत्त्वहं प्रदीपं निर्वापयेयम् वि.व.168ख/1.58; •भू.का.कृ. सुप्तम् – བཟོས་ཀྱང་ཐལ་བ་གསོལ་མཛད་ཅིང་། །རེས་འགའ་སྦྱང་བ་དག་ཀྱང་མཛད། །ཉམ་ངའི་ཤུལ་དུའང་གཤེགས་མཛད་ཅིང་། །རྡད་རྡོད་ཅན་དུའང་མཉལ་བ་མཛད།། कदन्नान्यपि भुक्तानि क्वचित् क्षुदधिवासिता। पन्थानो विषमाः क्षुण्णाः सुप्तं गोकण्टकेष्वपि॥ श.बु.114ख/115.

མཚོ་བསམ = ལྷག་པར་དཔྱོད་པ ऊहः – ཨུ་ཧཿ མཚོ་བསམ་སྟེ། ལྷག་པར་དཔྱོད་པའི་མིང་ངོ་།། मि.को.118क।

མཚོག आस्वादः – མཚོག་ཆུང་གང་ཡིན་དེ་དོན་དུ།། तस्यास्वादलवस्यार्थे बो.अ.26ख/8.81; द्र. མཚོག་ཆུང་། མཚོག་མེད།

མཚོག་ཆུང वि. अल्पास्वादः – འདོད་པ་རྣམས་ནི་མཚོག་ཆུང་ལ་སྡུག་བསྔལ་མང་ཞིང་ཉེས་དམིགས་མང་བ་དང་ अल्पास्वादाः कामाः बहुदुःखाः, बह्वादीनवाः श्रा.भू.165ख/441; མཁས་པས་འདོད་པ་མཚོག་ཆུང་ཞིང་། །སྡུག་བསྔལ་མང་པོར་ཤེས་ནས་ནི།། अल्पास्वादान् बहुदुःखान् कामान् विज्ञाय पण्डितः। वि.व.180क/1.61; འདོད་ལྡན་རྣམས་ལ་དེ་ལ་སོགས། །ཉེས་དམིགས་མང་ལ་མཚོག་ཆུང་སྟེ།། एवमादीनवो भूयानल्पास्वादस्तु कामिनाम्। बो.अ.26ख/8.80; आस्वादलवः – མཚོག་ཆུང་གང་ཡིན་དེ་དོན་དུ།། तस्यास्वादलवस्यार्थे बो.अ.26ख/8.81.

མཚོག་མེད वि. विरलः – དེས་ན་འདིར་ནི་མཚོག་མེད་ཚུལ་དང་བྲལ་བས་སྐལ་ལྡན་བློ་མི་བརྟན་རྣམས་ཀྱི། །བློ་ནི་མཐའ་འདས་དག་པར་བྱ་ཕྱིར་ཡང་དག་རིག་པའི་དོན་དུ་བློ་བསྒྲུབ་བོ།། तेनास्मिन् विरलक्रमव्यपगमादत्यन्तशुद्धान्धियं धन्यानां विदधातुमुद्धतधियां धीः सम्विदे धीयते॥ प्र.अ.1क/3.

མཚོག་མེད་པ = མཚོག་མེད།

མཚོང = ཚོངས།

མཚོད་པ ग्रहणम् – དེའི་ཕྱིར་འགྲོ་བས་མཚོད་པ་བརྩོལ་བར་བྱའོ།། तस्मान्नियुञ्जीत ग्रहणे प्रक्रामन् वि.सू.67ख/84; प्रग्रहणम् – སྣུམ་བཟག་གི་རྙེད་པ་མཚོད་དོ།། प्रग्रहणं स्नेहलाभस्य वि.सू.94क/112; ग्राहः – གནས་མལ་དུ་མ་མཚོད་པར་རིགས་པ་ཉིད་དོ།། अर्हत्वमनेकशयनासनग्राहे वि.सू.83ख/101; आदानम् – བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་ནི་ཡང་དག་པར་བླངས་པ་ཡོངས་སུ་བཏང་དུ་ཟིན་ཀྱང་ཚེ་འདི་ལ་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའི་ཚུལ་ཁྲིམས་ཀྱི་སྡོམ་པ་ཡང་དག་པར་བླངས་པ་ཕྱིར་མཚོད་པའི་སྐལ་པ་ཡོད་དེ परित्यक्तसमादानोऽपि च बोधिसत्त्वो दृष्टे धर्मे भव्यः पुनरादानाय बोधिसत्त्वशीलसंवरसमादानस्य भवति बो.भू.86क/109; धारणम् – ལུང་དཔོག་པ་དང་མཚོད་པ་ནི་ཤིན་ཏུ་ལེགས་པར་བསླབས་པ་དང་ཤིན་ཏུ་ཡོངས་སུ་བྱང་བ་དང་ཐེ་ཚོམ་མེད་པར་བྱས་ཏེའོ།། सुस्वाध्यायितं सुपरिमृष्टं निःसंदिग्धं कृत्वोद्देशधारणं च वि.सू.93क/111; प्रतीष्टिः – ཤིང་ཏོག་དང་མཐང་ཤེལ་དང་ཁྲི་དང་ཁྲིའུ་དང་གྲུ་བ་དང་ལྷུང་བཟེད་ཀྱི་གཞི་དག་གིས་བྱིན་ལེན་མཚོད་དུ་མི་རུང་བ་ཉིད་མ་ཡིན་ནོ།། न फलानां पा[म]ञ्चपीठिकोत्सङ्गपात्राधिष्ठानैः प्रतिग्रहप्रतीष्टेरन्याय्यत्वम् वि.सू.37ख/47.

མཆོད་པར་བྱ = མཆོད་པར་བྱ་བ •कृ. ग्राह्यम् – མཆོད་པར་བྱ་བ་མང་བ་ཉིད་ན་ཞུ་བར་བྱའོ॥ बहुत्वे ग्राह्यस्यावलोकनम् वि.सू.93क/111; ग्रहीतव्यम् – ཡང་བསྙེན་གནས་ཉིན་ཞག་ཏུ་ནོད་ན་ཇི་ལྟར་མཆོད་པར་བྱ་ཞེ་ན अथाहोरात्रं गृह्यमाण उपवासः कथं ग्रहीतव्यः अभि.भा.181ख/622; आदातव्यम् – དེས་སྡོམ་པ་བཏང་བ་ལན་གཉིས་སུ་སླར་ཡང་མཆོད་པར་བྱའོ॥ तेन त्यक्तः संवरः द्विरपि पुनरादातव्यः बो.भू.97ख/124; •क्रि. गृह्णातु – ཞག་གཅིག་གི་དོན་དུ་གནས་མལ་མཆོད་པར་མི་བྱའོ॥ नैकाहस्यार्थे शयनासनं गृह्णीत वि.सू.62क/78; प्रतिगृह्णीयात् – ཁྲིམ་པར་བྱེད་པ[འི]་ནི་མཁན་པོའམ་སློབ་དཔོན་གྱིས་མཆོད་པར་བྱའོ॥ चारकस्याचार्य उपाध्यायो वा प्रतिगृह्णीयात् वि.सू.37ख/47; प्रतीच्छेत् – ནད་པས་བསྙེན་པར་རྫོགས་པ་མེད་ན་བསྙེན་པར་མ་རྫོགས་པ་ལས་ཟན་མཆོད་པར་བྱའོ॥ प्रतीष्ठ्य[? च्छे]द् ग्लानोऽनुपसम्पन्नेन भोजनमभाव उपसम्पन्नस्य वि.सू.38क/47.

མཆོད་པར་བྱ་བ = མཆོད་པར་བྱ།

མཆོལ་བར་བགྱིས *भू.का.कृ.* विध्वंसितः – བུ་མོ་གཞོན་ནུ་དེ་དག་ཀྱང་པནྡ་བ་དང་ཀོའུ་ར་བ་དག་གིས་མཆོལ་བར་བགྱིས་སོ॥ ता अपि च कुमारिकाः पाण्डवैः कौरवैर्विध्वंसिताः का.व्यू.215क/275.

མཆོས *•क्रि. भवेत् – དེ་ལྟར་སེམས་ཏེ་བདེ་བར་མཆོས॥ एवं मत्वा सुखी भवेत् बो.अ.15ख/6.33; भवतु – དེ་བས་སེམས་ཁྱོད་བརྟན་པར་མཆོས॥ चेतस्तस्माद् दृढीभव बो.अ.15क/6.12; •= གཆོས་པ།

མཆོས་ནས आदाय – བསླབ་པ་འགའ་ཙམ་ཡང་མཆོས་ནས་ཞེས་བྱ་བ་ནི་དག་གི་ལས་ཡིན་ཏེ एकशिक्षामपि चादायेति वाक्कर्म अभि.स्फु.174क/922.

མཆོས་པ •क्रि. (ཆོད་པ इत्यस्याः भूत.) *संप्रतीच्छति – གང་དག་གནས་དེ་ན་གནས་པར་གྱུར་པའི་ཀླུ་དེ་དག་གིས་ཀྱང་ཆར་གྱི་རྒྱུན་དེ་མཆོས་ནས་དགའ་བར་འགྱུར་ཏེ ये च तत्र भवने नैवासिका नागा भवन्ति, ते च वर्षधाराः संप्रतीच्छन्ति; तुष्टाश्च भवन्ति सु.प.34ख/13; •सं. आदानम् – མཆོས་པ་དང་རང་བྱེད་པ་དང་དེའི་མཇུག་དག་ཏུ་གོ་རིམས་བཞིན་དུ་བཏིངས་པར་[? བཏིང་བར་]འགྱུར་རོ॥ བཏིང་ངོ॥ བཏིང་ངོ་སྙམ་དུ་སེམས་བསྐྱེད་པར་བྱའོ॥ आदानस्वयंकृति तदन्तेष्वास्तरिष्याम्यास्तृणोम्यास्तृतं मयेति यथासंख्यं चित्तस्योत्पादनम् वि.सू.66क/82; ग्रहः – སྤང་བྱ་ལྔ་བརྒྱད་བཅུ་དང་ནི །ཐམས་ཅད་སྤོང་བ་མཆོས་པ་ལས॥ पञ्चाष्टदशसर्वेभ्यो वर्ज्येभ्यो विरतिग्रहात् । अभि.को.11ख/608; नयनम् – ཤས་མཆོས་པ་དང་དེ་སྲུབ་པའི་ཕྱིར་རེག་པ་ནི་རྒྱེན་དེ་ལྟ་བུ་དག་ཡོད་ན་ནུང་བ་མ་ཡིན་པ་ཉིད་དུ་མི་འགྱུར་རོ॥ नाकल्पिकत्वं भागनयने स्पृष्टौ नीतस्य प्रवेशने तद्रूपेषु प्रत्ययेषु वि.सू.37क/46; प्रतीष्टिः – དེ་དང་འབྲེལ་བས་བྱིན་པ་མཆོས་པ་ནི་བྱིན་ལེན་ནོ॥ तत्सम्बन्धेन चोत्सृष्टस्य प्रतीष्टिः प्रतिग्रहः वि.सू.37ख/47; •भू.का.कृ. आधृतः – མི་ཡི་དབང་པོས་བཀའ་ཁྲིམས་སྤྱི་བོས་མཆོས། །དེ་ཡི་མཚོན་ཆ་རྒྱན་དང་འདྲ་བར་གྱུར॥ नरेन्द्रचूडाधृतशासनस्य तस्य त्वलङ्कारवदास शस्त्रम् । जा.मा.37क/43; उत्कृष्टः – འགྲོ་བར་ཆས་པ་དང་། གློ་བུར་དུ་འོངས་པ་དང་། ནད་པ་དང་། ནད་གཡོག་དང་། དགེ་སློས་ལས་གཞན་པས་ཐམས་ཅད་ཀྱིས་མ་ཟོས་པར་གཡོས་མལ་དང་སྤྱི་བུངས་ལས་མཆོས་ཏེ་བཟའ་བར་མི་བྱའོ॥ *> न गमिकागन्तुकग्लानतदुपस्थायकोपधिवारिकादन्यो यवनोपन्वाहारादभुक्तायां सर्वैरुत्कृष्टं भुञ्जीत वि.सू.35ख/45; कृतः – གཞན་གྱིས་མཆོས་པ་ཡང་ངོ॥ परकृते च वि.सू.35क/44; प्रतीच्छितः – སུས་ཀྱང་བསྟན་པ་མེད་ལ། སུས་ཀྱང་ཐོས་པའང་མེད། སུས་ཀྱང་མཆོས་པའང་མེད། སུས་ཀྱང་མངོན་སུམ་དུ་བྱེད་པའང་མེད नैव च केनचिद्देशिता, नापि केनचिच्छ्रुता, नापि केनचित्प्र-

तीच्छिता, नापि केनचित्साक्षात्कृता अ.सा.181[क]/102; • *वि.* गृहीता – བསྙོས་པ་ནི་མཚོན་པས་སོ།། अ-द्वेष्टस्ये[? उद्दिष्टस्येति] गृहीत्रा वि.सू.96[ख]/116; प्रतिगृहीता – དེ་དག་གིས་རྒྱལ་པོ་དེའི་བཀའ་སྤྱི་བོས་མཚོན་ཏེ तैराज्ञा शिरसि प्रतिगृहीता अ.श.203[क]/187; द्र.– ལུང་མཚོན་པ་མེད་པར उपदेशमन्तरेण अभि.स्फु.311[क]/1185.

མཚོན་པར व्याहर्तुम् – གང་གི་ཚིག་ཚད་མ་ཐམས་ཅད་ཀྱིས་རྣམ་པར་དཔྱད་པ་ན་མཚོན་པར་མི་ནུས་པ་དེ་ཉིད་ཐམས་ཅད་མཁྱེན་པར་འགྱུར་རོ་སྙམ་ན अथापि स्यात्– यस्य वचनं सर्वत्र प्रमाणैर्निवार्य [? विचार्य]माणं व्याहर्तुं न पार्यते, स एव सर्वज्ञो भविष्यति त.प. 263[ख]/996.

རྣ = རྣ་བ།

རྣ་གོར = རྣ་ཆ་གདུབ་གོར།

རྣ་སྐྱེས *वि.* श्रोत्रजः – གཞན་ཡང་རྣ་སྐྱེས་ངོ་ཤེས་པས། །སྒྲ་ཡང་རྟག་པ་ཉིད་དང་ནི། །ཁྱབ་པ་ཉིད་དུ་འགྲུབ་པས་ན། །བཟློག་ལ་ངེས་པར་སུ་ཞིག་བྱེད།། किञ्च शब्दस्य नित्यत्वं श्रोत्रजप्रत्यभिज्ञया । विभुत्वं च स्थितं तस्य कोऽध्यवस्येद् विपर्ययम् ॥ त.स.77[क]/721.

རྣ་སྐྱེས་ངོ་ཤེས་པ *पा.* श्रोत्रजप्रत्यभिज्ञा – གཞན་ཡང་རྣ་སྐྱེས་ངོ་ཤེས་པས། །སྒྲ་ཡང་རྟག་པ་ཉིད་དང་ནི། །ཁྱབ་པ་ཉིད་དུ་འགྲུབ་པས་ན། །བཟློག་ལ་ངེས་པར་སུ་ཞིག་བྱེད།། किञ्च शब्दस्य नित्यत्वं श्रोत्रजप्रत्यभिज्ञया। विभुत्वं च स्थितं तस्य कोऽध्यवस्येद्विपर्ययम् ॥ त.स.77[क]/721; श्रोत्रजप्रत्यभिज्ञानम् – རྣ་བ་ལས་སྐྱེས་ངོ་ཤེས་པས། །སྒྲ་ནི་རྟག་པར་ངེས་བྱས་ཕྱིར།། श्रोत्रजप्रत्यभिज्ञानाच्छब्दाभेदा[? च्छब्दनित्या]वसायतः। त.स.84[क]/774.

རྣ་ཁུང = རྣ་བུག།

རྣ་སྒྲོན कर्णप्रावरणः म.व्यु.8896(123[ख]).

རྣ་རྒྱན = རྣ་བའི་རྒྱན कर्णाभरणम्, कर्णभूषणम्– གྲོང་དང་གྲོང་གི་གཞི་[? ཞིང་]རྣམས་སྦྱིན་ནོ།། ...རྣ་རྒྱན་དང ग्रामं वा ग्रामक्षेत्राणि वा ददाति...कर्णाभरणानि स.पु.108[ख]/174; གང་གི་གྲགས་པ...།ཕྱོགས་ཀྱི་ནཱ་ཆུང་རྣ་རྒྱན་དུ། །གྱུར་པ यस्य दिक्कान्ताकर्णाभरणतां गतम्...यशः ॥ अ.क.203[ख]/23.7; कर्णभूषणम् – དེ་ཡི་ཆེད་དུ་རྣ་བའི་རྒྱན། །ས་ཡི་རིན་དུ་རབ་ཏུ་ཕུལ།། प्रददौ पृथिवीमूल्यं तत्कृते कर्णभूषणम् ॥ अ.क.175[क]/19.135; कर्णस्य भूषणम्– འདི་ནི་བདག་གི་རིང་བ་དག། །འགོག་བྱེད་རྣ་བའི་རྒྱན་ཞེས་ཏེ།། कर्णस्य भूषणमिदं मदायतिनिरोधिनः। का.आ.329[ख]/2.221; अवतंसः – མི་རྣམས་དབང་ཕྱུག་ངོ་མཚར་བདེ་བ་ཡི། །རྣ་རྒྱན་ཅན་དང་དཔལ་མཛེས་ཐིག་ལེ་ཅན།། ऐश्वर्यमाश्चर्यसुखावतंसं लावण्यलक्ष्मीतिलकं... नराणाम् अ.क.66[ख]/59.152; कर्णावतंसः – མཐོང་བའི་རྣམ་འཕྲུལ་གསར་པ་ཡིན་མོད་ཀྱང་། །མིག་གི་མཛེས་པ་རྣ་བའི་རྒྱན་བྱས་དེས།། कर्णावतंसीकृतनेत्रकान्तिः नवेऽपि संदर्शनविभ्रमे सा। अ.क.299[क]/108.54; कर्णपूरः – རྐང་རྒྱན་དང་རྣ་རྒྱན་མ་གཏོགས་པའི་རྒྱན་གདགས་སོ།། आभरणप्रतियुक्तिरुत्सृज्य पादाभरणं कर्णपूरं च वि.सू.100[क]/121; कर्णिकम् मि.को.9[ख]; कर्णिका – ལྷན་སྐྱེས་རིན་ཆེན་སྒྲོན་མའི་འོད། །དེ་ཡི་རྣ་བའི་རྣ་རྒྱན་གྱུར།། सहजा रत्नदीपार्चिरभूत्कर्णस्य कर्णिका। अ.क.164[क]/19.5; कुण्डलः, °लम्– རྒྱལ་པོ་དང་ནི་དེ་བཞིན་རྒྱལ་སྲས་དག། །དོ་ཤལ་དཔུང་རྒྱན་རྣ་རྒྱན་རབ་སྤངས་པ།། राज्ञस्तथा राजकुमारकाणामुत्सृष्टहाराङ्गदकुण्डलानाम्। अ.क.200[क]/22.74; ताटङ्कः – རྣ་རྒྱན

འོད་ཟེར་དག་གིས་འགྲམ་པ་ཟུང་ལ་པ་ཏྲའི་འབྲེང་བ་རྣམ་པར་འཛིན།། ताटङ्कद्युतिभिः कपोलयुगले पत्रावलीं बिभ्रती अ.क.193ख/82.19; कर्णवेष्टनम् – कुण्डलं कर्णवेष्टनम् अ.को.2.6.103; कर्णौ वेष्टते कर्णवेष्टनम् अ.वि.2.6.103.

རྣ་རྒྱན་གྱི་ནགས *ना.* कर्णिकवनम्, प्रदेशः ब.अ.25.

རྣ་རྒྱན་གྱི་ཕྱག་རྒྱ *पा.* कुण्डलमुद्रा, मुद्राविशेषः – ལག་པ་གཉི་གའི་མཐིལ་གྱི་ཕྱི་ཕྱོགས་སྦྱར་ཏེ་རྒྱབ་ཏུ་སོར་མོ་ལྔ་པོ་རྣམས་ནི་རྣ་རྒྱན་ལ་ནི་རྣ་རྒྱན་གྱི་ཕྱག་རྒྱའོ།། उभयहस्तयोर्विषमकरतलदेशः पञ्चाङ्गुलीनां पृष्ठतः कुण्डलेष्विति कुण्डलमुद्रा वि.प्र.176ख/3.182.

རྣ་རྒྱན་ཅན = རྨ་བྱ कुण्डली, मयूरः छो.को.478/रा.को.2.140.

རྣ་རྒྱན་གཅིག་པ *ना.* एककुण्डलः 1. = རྣམ་སྲས कुबेरः छो.को.478/रा.को.1.291 2. = སྟོབས་བཟང बलभद्रः छो.को.478/रा.को.1.291.

རྣ་ཅན *ना.* 1. कर्णः, युधिष्ठिराग्रजः – དེ་བཞིན་དུ་གཞན་དང་ལྡན་པ་རྣམ་པར་གཅོད་པའི་ངག་དེ་ལ་ཡང་གལ་ཏེ་སྲིད་སྒྲུབ་དང་རྣ་ཅན་གཉིས་འཕོང་སྐྱེན་ཞེས་སོ་སོར་ངེས་པའི་བཟློག་ཟླའི་སྐབས་ཡིན་ན་ནི་སྲིད་སྒྲུབ་ཉིད་འཕོང་སྐྱེན་ནོ་ཞེས་དེ་ལས་རྣ་ཅན་ཉིད་རྣམ་པར་གཅོད་གྱི तथा तत्राप्यन्ययोगव्यवच्छेदवाक्ये यदि प्रतिनियतः प्रतियोगी प्रकृतः पार्थराधेययोः कः कोदण्डधरः। ततः कर्ण एव व्यवच्छिद्यते। पार्थेव धनुर्धर इति प्र.अ.229ख/588; राधेयः – སྲིད་སྒྲུབ་དང་རྣ་ཅན་གཉིས पार्थराधेययोः प्र.अ.229ख/588 2. कर्णिकः, नृपः ब.अ.5.

རྣ་གཅིག་པ *वि.* एककर्णः – གླང་ཆེན་རྣ་འདྲ...རྣ་གཅིག་པ་དང་རྣ་མེད་དང हस्तिकर्णाः...एककर्णा अकर्णकाः वि.सू.5क/5.

རྣ་ཆ = རྣ་ཆ་གདུབ་སྐོར • *सं.* कुण्डलः, °लम्, कर्णभूषणभेदः – རྣ་བ་ཐོས་པས་ཡིན་གྱི་རྣ་ཆས་མིན། །ལག་པ་སྦྱིན་པས་ཡིན་གྱི་གདུབ་བུས་མིན།། श्रोत्रं श्रुतेनैव न कुण्डलेन दानेन पाणिर्न तु कङ्कणेन अ.क.196क/22.37; རྣ་ཆ་དང་ཅོད་པན་འཁྱུག་པའི་འོད་ཀྱིས་གདོང་གསལ་བར་གྱུར་ཏེ कुण्डलकिरीटविद्युद्भासुरवदनः जा.मा.103ख/120; कर्णपूरः – མེ་ཏོག་རྣ་ཆ་གསར་པ་རབ་ཏུ་མཛེས་པ་དང་།། प्रत्यग्रशोभैरपि कर्णपूरैः जा.मा.164ख/190; कर्णिकम् म.व्यु.6022(86ख); *बध्नः, °ध्नम् – དེ་ནས་ཁྱེའུ་དེས་བུ་མོ་དེ་ལ་དོ་ཤལ་དང་སེ་མོ་དོ་དང་ཕྲེང་བ་དང་རྣ་ཆ་དང་མགུལ་རྒྱན་རྣམས་བསྐུར་རོ།། अथ स दारको दारिकाया हारार्धहारमालां बध्नन् (?) कण्ठेमणीन् प्रेषयति अ.श.211क/194; • *पा.* कुण्डलम्, मुद्राविशेषः – འཁོར་ལོ་རྣ་ཆ་ནོར་བུ་དང་། །ལག་གདུབ་དང་ནི་སྐ་རགས་ཉིད། །སངས་རྒྱས་ལྔ་ནི་རྣམ་དག་པ། །འདི་རྣམས་ཕྱག་རྒྱར་རབ་ཏུ་གྲགས།། चक्री कुण्डल कण्ठी च हस्ते रुचक मेखला। पञ्चबुद्धविशुद्धया चैता मुद्राः प्रकीर्तिताः॥ हे.त.5क/12; རྡོ་རྗེ་ཅན་གྱི་ཕྱག་རྒྱ་དྲུག་ཏུ་འགྱུར་ཏེ་འཁོར་ལོ་དང་རྣ་ཆ་དང་མགུལ་རྒྱན་དང...མཆོད་ཕྱིར་ཐོགས་པ षण्मुद्रा वज्रिणो भवन्ति–चक्री कुण्डलं कण्ठिका...यज्ञोपवीतमिति वि.प्र.243क/2.53; वि.प्र.161क/3.125; • *ना.* अलम्बुशा, देवकुमारिका – ནུབ་ཕྱོགས་ཕྱོགས་ཀྱི་ཕྱོགས་ཆ་ན། །ལྷ་མོ་གཞོན་ནུ་བརྒྱད་ཡོད་དེ། །རྣ་ཆ་སྒྲ་འཛིན་མ་དང་ནི། །པད་མ་དཀར་དང་སྐྱ་རེངས་དང་། །ཆ་མེད་གཅིག་དང་དགུ་པ་དང་། །རོལ་དང་གནག་དང་སྟབས་སྦྱར་སྲིད།། पश्चिमेऽस्मिन् दिशो भागे अष्टौ देवकुमारिकाः।

अलम्बुशा मिश्रकेशी पुण्डरीका तथारुणा ॥ एकादशा नवमिका शीता [? लीला] कृष्णा च द्रौपदी । ल.वि.183ख/284.

རྣ་ཆ་ཅན • *वि.* कुण्डली – གཞན་ཡང་ལྷ་སྦྱིན་རྣ་ཆ་ཅན་ཞེས་བྱ་བའི་བློ་འདི་སྐྱེ་བ་ན་རྒྱུ་མཚན་གང་གིས་སྐྱེ་བ་ཡིན་ཞེས་བརྗོད་པར་བྱ་དགོས་སོ། अपि च–'कुण्डली देवदत्तः' इति मतिरियमुपजायमाना किन्निबन्धनोपजायत इति वचनीयम् त.प.279क/272; • *उ.प.* अवतंसः –སྟོན་ཀའི་སྤྲིན་གྱི་རྣ་ཆ་ཅན། །ལྷུན་པོའི་མཛེས་པ་ཐོབ་དང་ལྡན། शरदभ्रावतंसस्य मेरोः शोभामवाप्तवान् ॥ अ.क.38ख/4.19.

རྣ་ཆ་གདུབ་གོར कुण्डलम्, कर्णभूषणविशेषः – དཔུང་རྒྱན་དང་ནོར་བུས་སྤྲས་པའི་རྣ་ཆ་གདུབ་གོར་རྣམས केयूरमणिकुण्डलानि बो.भू.125ख/162; ལྷའི་བུ་རྣ་ཆ་གདུབ་གོར་དག་ཅིང་འགྱུལ་བ་ཐོགས་པ देवपुत्राश्चलविमलकुण्डलधराः अ. श.125क/115; ལྷའི་བུ་མོ་རྣ་ཆ་གདུབ་གོར་དག་ཅིང་འགྱུལ་བ་ཐོགས་པ देवकन्या चलविमलकुण्डलधरा अ.श.145क/135.

རྣ་ཆ་གདུབ་གོར་དག་ཅིང་འགྱུལ་བ་ཐོགས་པ *वि.* चलविमलकुण्डलधरः, °रा – དེ་ནས་སྔོན་ཡི་དྭགས་སུ་གྱུར་པའི་ལྷའི་བུ་རྣ་ཆ་གདུབ་གོར་དག་ཅིང་འགྱུལ་བ་ཐོགས་པ अथ प्रेतपूर्विणो देवपुत्राश्चलविमलकुण्डलधराः अ. श.125क/115; དེ་ནས་ལྷའི་བུ་མོ་རྣ་ཆ་གདུབ་གོར་དག་ཅིང་འགྱུལ་བ་ཐོགས་པ अथ सा देवकन्या चलविमलकुण्डलधरा अ.श.145क/135.

རྣ་ཆ་གདུབ་སྐོར = རྣ་ཆ་གདུབ་གོར།

རྣ་ཆ་མེད་པ *वि.* अकुण्डलः – གལ་ཏེ་ཡང་ཁྱེད་ཅག་གིས་ལྡན་པ་ནམ་ཡང་མ་དམིགས་ན་དེའི་ཕྱིར་འདི་ནག་པ་རྣ་ཆ་མེད་པའམ་རྣ་ཆ་ཅན་ཞེས་བྱ་བ་དེ་ལྟ་བུའི་རྣམ་པར་དབྱེ་བའི་ཐ་སྙད་དུ་[ཇི་ལྟར་]འགྱུར་རོ། यदि भवता संयोगो न कदाचिदुपलब्धः, तत्कथमस्य 'चैत्रोऽकुण्डलः, कुण्डली च' इत्येवं विभागेन व्यवहारो भवेत् त.प.279ख/272; अकुण्डली – འདི་ལ་ནག་པ་རྣ་ཆ་མེད་པ་ཞེས་བྱ་བ་འདིས་རྣ་ཆ་བཀག་པ་ནི་མ་ཡིན་ཏེ अत्र 'चैत्रोऽकुण्डली' इत्यनेन न कुण्डलं प्रतिषिध्यते त.प.279ख/272.

རྣ་ཆའི་མཆོག *ना.* सुकुण्डलः, देवपुत्रः – ལྷའི་བུ་རྣ་ཆའི་མཆོག་ཅེས་བྱ་བ་དབུལ་པོ་སྡུག་བསྔལ་བ་ཞིག་འདུག་གོ། सुकुण्डलो नाम देवपुत्रो दरिद्रो दुश्चित्त[? दुःखित]श्च का.व्यू.219क/280.

རྣ་ཆེན = བོང་བུ रासभः, गर्दभः – चक्रीवन्तस्तु बालेया रासभा गर्दभाः खराः ॥ अ.को.2.9.77; रासन्ते वाश्यन्ते उच्चैरिति रासभाः । रासृ शब्दे अ.वि.2.9.77; द्र. शङ्कुकर्णः रा.को.5.10.

རྣ་མཆོག कर्णशष्कुली – འོན་ཀྱང་རྣ་མཆོག་ལ་དེ་དང་། །མི་ལྡན་པས་ན་རྟོགས་མི་འདོད།། अथापि कर्णशष्कुल्या तस्यायोगान्न विन्मतिः । त.स.92ख/835; शष्कुली–མཁའ་གཅིག་བདག་ཉིད་རྣ་བ་ནི། །རྣ་མཆོག་ལེགས་པར་མ་བྱས་མེད།། एकव्योमात्मकं श्रोत्रं नास्त्यसंस्कृतशष्कुलि । त.स.92ख/836; द्र. རྣ་བུག། རྣ་སྦུབས།

རྣ་མཆོག་སྦྲུ་འཆམས་པ *वि.* नाडिकर्णः ['राजीकर्णः' इति सम्पादितपाठः] म.व्यु.8919(123ख).

རྣ་གཏོད་པ • *सं.* अवधानम् – དགེ་སློང་དག་ཚོད་པར་གྱུར་པ་དགེ་སློང་དག་དང་གྲོས་བྱེད་པ་ན་མཉན་པའི་ཕྱིར་རྣ་བཏོད་ན་སྙེ་ཞེ་བར་ཞི་བར་འདོད་པས་ནི་མ་གཏོགས་སོ།། भिक्षोरधिकरणसंप्रधारणस्य भिक्षुभिरुपश्रुत्यर्थमुत्सृज्योपशमनच्छन्देनावधाने वि.सू.46क/58;

• *वि.* दत्तकर्णः – རིང་ནས་རྗོག་སྒྲ་དག་ལ་རྣ་གཏོད་ཅིང་། །མཛའ་བས་རབ་ཏུ་འདོད་ལྡན་བུ་ཞེས་པ། ...དེ་དག पुत्रेति दूरात्पदशब्ददत्तकण्ठौ[कर्णौ] समुत्कण्ठितमानसौ तौ। अ.क.273ख/101.28.

རྣ་གཏོད་པར་བྱེད *क्रि.* श्रोत्रमवदधाति – ཉན་ཐོས་དེ་དག་དེ་ལ་ཉན་པར་བྱེད། རྣ་བ་གཏོད་པར་བྱེད तस्य मे श्रावकाः शुश्रूषन्ते, श्रोत्रमवदधति अभि.स्फु.270ख/1092.

རྣ་དྲུང་དུ་ཐུག་པ། ०र आकर्णम् लो.को.1384.

རྣ་གདུབ = རྣ་ཆ་གདུབ་གོར།

རྣ་ནག་མ = བཀྲ་མི་ཤིས་པ कालकर्णी, अलक्ष्मीः – འདི་དག་གི་ནང་ན་འདི་ནི་ཆགས་པའི་གཞི་ཡིན་པས་དེའི་ཕྱིར་དེ་ལ་མ་ཆགས་པར་བྱ་བའི་དོན་དུ་དེ་ནི་དཔལ་དང་འདྲ་བ་འདི་དང་རྣ་ནག་མ་དང་ལྷན་ཅིག་ཏུ་བསྟན་ཏེ एषा ह्येषु सङ्गास्पदम्, अतः श्रियमिवैनां कालकर्णिसहितां दर्शयामास तस्यामनासङ्गार्थम् अभि.भा.81क/255; བཀྲ་མི་ཤིས་པ་[དང་ལྷན་ཅིག་ཏུ་ནི་]རྣ་ནག་མ་དང་ལྷན་ཅིག་ཏུ कालकर्णीसहितामलक्ष्मीसहिताम् अभि.स्फु.159ख/255.

རྣ་སྤབས = རྣ་བའི་དྲི་མ कर्णमलम् म.व्यु.4053(65क); द्र. སོགས་པའི་སྒྲས་རྣ་སྤབས་བྲུས་པ་ལ་སོགས་པ་གཟུང་ངོ་॥ आदिशब्देनोल्लेखनादिपरिग्रहः त.प.187ख/837.

རྣ་སྤབས་བྲུས = རྣ་སྤབས་བྲུས་པ།

རྣ་སྤབས་བྲུས་པ उल्लेखनम् – སྔགས་དང་སྨན་སོགས་ནུས་པ་ཡིས། ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་སྨོས་ཏེ། སོགས་པའི་སྒྲས་རྣ་སྤབས་བྲུས་པ་ལ་སོགས་པ་གཟུང་ངོ་॥ मन्त्रौषधादीत्यादि। आदिशब्देनोल्लेखनादिपरिग्रहः त.प.187ख/837.

རྣ་བ • *सं.* कर्णः, शरीरावयवविशेषः – རྣ་བ་དང་སྣ་དང་རྐང་པ་གཉིས་ཀྱང་དེ་བཞིན་དུ་བཅད་དོ॥ कर्णनासं चरणौ तथैव निचकर्त जा.मा.171क/197; རྣ་བ་གཡས་པའི་སྟེང་དུ दक्षिणकर्णोपरि ख.टी.164क/246; རྣ་བ་གཡོན་པའི་སྟེང་དུ वामकर्णोपरि ख.टी.164क/246; དེ་བཞིན་རྣ་བ་མགྲིན་དཔུང་པ། རུས་པའི་དུམ་བུས་རྣམ་པར་བརྒྱན॥ कर्णे गले तथा बाहौ अस्थिखण्डैर्विभूषितम्। गु.सि.24क/51; རྐང་པ་ལག་པ་དེ་བཞིན་རྣ་དང་སྣ། །སློང་བ་རྣམས་ལ་རབ་ཏུ་བགོས་[? རབ་ཏུ་དགས་]བྱིན་ན॥ हस्तपादमथ कर्णनासिका याचिता ददति संप्रहर्षिताः। रा.प.244ख/143; མིག་ལ་གཏི་མུག་རྡོ་རྗེ་མ། །རྣ་བར་ཞེ་སྡང་རྡོ་རྗེ་མ॥ चक्षुषो मोहवज्रा श्रोत्रयोर्द्वेषवज्रिका हे.त.18ख/60; श्रोत्रम्–རྣ་བ་ལ་སོགས་རྣམ་པར་ཤེས། །དོན་ཡོད་ཅན་ལ་དེ་དག་མེད॥ सदर्थानां नैतच्छ्रोत्रादिचेतसाम् प्र.वा.109क/2.39; ཐམས་ཅད་ལྷ་ཡི་རྣ་བར་ཡང་། །རྣ་ལམ་དུ་ནི་མི་འགྲོ་བཞིན॥ यथा...न दिव्यश्रोत्रेऽपि श्रवणपथमायाति निखिलम् र.वि.123ख/104; श्रवणम् – རྣ་བ་ཡི་ཨུཏྤལ་གྱིས་སྣུན་བྱེད॥ करोति...श्रवणोत्पलताडनम् का.आ.335क/3.21; ལྷར་ནི་རྔ་ཡི་སྒྲ་ཆེན་པོ། །སར་གནས་རྣམས་ཀྱི་རྣར་མི་འགྲོ॥ शब्दा महान्तो दिवि दुन्दुभीनां क्षितिस्थितेषु श्रवणं न यान्ति। र.वि.124क/103; श्रुतिः – བདག་ཅག་རྣ་བ་གས་ཤིང་སྙིང་ཡང་འཇིགས་པས་དཀྲུགས་པ་བཞིན་དུ་གྱུར॥ निर्भिन्दन्निव नः श्रुतीः प्रतिभयश्चेतांसि मथ्नन्निव जा.मा.83ख/96; • *पा.* श्रोत्रम् 1. इन्द्रियविशेषः – མིག་གིས་མཐོང་ངོ་॥ རྣ་བས་ཐོས་སོ॥ चक्षुः पश्यति, श्रोत्रं शृणोति त.प.82ख/617; ཐོས་པ་ནི་གང་རྣ་བས་མྱོང་བའོ॥ श्रुतं यच्छ्रोत्रेणानुभूतम् अभि.स.भा.3क/2 2. *(सां.द.)* बुद्धीन्द्रियम् – བློའི་དབང་པོ་ལྔ་ནི། རྣ་བ་དང་པགས་པ་དང་མིག་དང་ལྕེ་དང

ལྔའི་མཚན་ཉིད་ཅན་ནོ།། पञ्च बुद्धीन्द्रियाणि – श्रोत्रत्वक्चक्षुर्जिह्वाघ्राणलक्षणानि त.प.147क/21.

རྣ་བའི་བར आकर्णम् – རང་ཉིད་བྲོ་ཞིང་དྲག་པོ་ཡིས། །རྣ་བའི་བར་དུ་མདའ་སྣུན་དྲངས།། स्वयमाकर्णनिष्कृष्टकोपक्रूरशरासनः। अ.क.229ख/25.60; རྣ་བའི་བར་དུ་མདའ་དྲངས་ཤིང་།། आकर्णाकृष्टसायकः अ.क.130ख/66.66.

རྣ་བས་མ་ཐོས श्रोत्रं न शृणोति–ཐག་རིང་པོ་ན་གནས་པ་དང་སེམས་གཡེངས་པ་དང་གཉིད་ལོག་པ་དང་བརྒྱལ་བ་རྣམས་ཀྱི་རྣ་བས་མ་ཐོས་ཏེ विदूरस्थान्यचित्तसुप्तमूर्च्छितानां श्रोत्रं न शृणोति त.प.144क/740.

རྣ་བ་གླང་པོ་ཆེའི་ལྷ་བུ *वि.* हस्तिकर्णः म.व्यु.8824 (122ख); द्र. གླང་ཆེན་རྣ་འདྲ།

རྣ་བ་བརྒྱད་པ = ཚངས་པ अष्टकर्णः, ब्रह्मा छो.को.479 /रा.को.1.148.

རྣ་བ་ཅན = རྣ་ཅན།

རྣ་བ་གཅིག་ནས་གཅིག་ཏུ་བརྒྱུད་པ कर्णपरम्परा लो.को.1385.

རྣ་བ་གཅིག་པ = རྣ་གཅིག་པ།

རྣ་བ་ཆད་པ *वि.* छिन्नकर्णः –བུ་མོ་རྒན་མོ་དར་མ་རྣམས་སམ... རྣ་བ་ཆད་པའམ་སྣ་ཆད་པའམ་མཆུ་ཆད་པའམ बाला वृद्धास्तरुण्यो वा...छिन्नकर्णा वा छिन्ननासा वा छिन्नौष्ठा वा वि.प्र.164ख/3.138.

རྣ་བ་ཉམས = རྣ་བ་ཉམས་པ།

རྣ་བ་ཉམས་པ *वि.* श्रोत्रविहीनः – རྣ་བ་རྣམ་སྦྱོང་འོད་ཟེར་རབ་གཏོང་ཞིང་། །རྣ་བ་ཉམས་པས་སྒྲ་མང་ཐོས་པར་འགྱུར།། श्रोत्रविशोधनि मुञ्चति रश्मीन् श्रोत्रविहीन श्रुणी पृथु शब्दान्। शि.स.181ख/181.

རྣ་བ་ཉིད श्रोत्रता – ཡང་ན་རིག་བྱེད་རྗེས་འབྲངས་པས། །ཕྱོགས་ནི་རྣ་བ་ཉིད་ངེས་བྱ།། यद्वा वेदानुसारेण कार्यादिक्श्रोत्रतामतिः। त.स.80क/743.

རྣ་བ་གཏོད་པ = རྣ་གཏོད་པ།

རྣ་བ་རྟའི་ལྷ་བུ *वि.* अश्वकर्णः म.व्यु.8825(122ख); द्र. རྟ་རྣ་འདྲ།

རྣ་བ་དང་བྲལ = རྣ་བ་དང་བྲལ་བ།

རྣ་བ་དང་བྲལ་བ *वि.* श्रोत्रविकलः – ཇི་ལྟར་རྣ་བ་དང་བྲལ་བས། །ཕྲ་མོའི་སྒྲ་ནི་མི་མྱོང་བཞིན།། यथा सूक्ष्मान् शब्दाननुभवति न श्रोत्रविकलः र.वि.124ख/104.

རྣ་བ་ནག་མོ = རྣ་ནག་མ།

རྣ་བ་རྣམ་པར་དག་པ श्रोत्रविशुद्धिः –ཆོས་ཀྱི་རྣམ་གྲངས་འདི་བཟུང་ནས་མིག་རྣམ་པར་དག་པ་དང་རྣ་བ་རྣམ་པར་དག་པ་དང...ཡིད་རྣམ་པར་དག་པ་དེ་ལྟ་བུ་ཐོབ་པོ།། इमं धर्मपर्यायमुद्गृहीतवान्, इमां चैवंरूपां चक्षुर्विशुद्धिं श्रोत्रविशुद्धिं... मनोविशुद्धिं च प्रतिलब्धवान् स.पु.141क/225.

རྣ་བ་རྣམ་སྦྱོང *पा.* श्रोत्रविशोधनी, रश्मिविशेषः – རྣ་བ་རྣམ་སྦྱོང་འོད་ཟེར་རབ་གཏོང་ཞིང་། །རྣ་བ་ཉམས་པས་སྒྲ་མང་ཐོས་པར་འགྱུར།། श्रोत्रविशोधनि मुञ्चति रश्मीन् श्रोत्रविहीन श्रुणी पृथु शब्दान्। शि.स.181ख/181.

རྣ་བ་སྤྲེའུའི་ལྷ་བུ *वि.* मर्कटकर्णः म.व्यु.8827(122ख); द्र. སྤྲེའུ་རྣ་འདྲ།

རྣ་བ་ཕག་གི་ལྷ་བུ *वि.* सूकरकर्णः म.व्यु.8829(123क); द्र. ཕག་རྣ་འདྲ།

རྣ་བ་འཕྱང་བ་ཅན *वि.* लम्बकर्णः – ལྷ་སྦྱིན་ཞེས་བྱ་བ

དག་པ་ཡིན་ནོ།། རྣ་བ་འཕྱང་བ་ཅན་ཞེས་བྱ་བ་ནི་ཐ་དད་པ་མེད་པའི་རྣ་བ་གཉིས་ཀྱི་བྱེ་བྲག་ཅན་དུ་གྱུར་པའོ།། देवदत्त इति शुद्धः, लम्बकर्ण इत्यभिन्नकर्णद्वयविशिष्टः न्या.टी.63ख/158.

རྣ་བ་ཡང་གི་ལྷ་བུ *वि.* गोकर्णः म.व्यु.8826(122ख); द्र. བན་གླང་རྣ་འདྲ།

རྣ་བ་བོང་བུའི་ལྷ་བུ *वि.* खरकर्णः म.व्यु.8828(123क); द्र. བོང་བུའི་རྣ་འདྲ།

རྣ་བ་བྱེ་བ *ना.* श्रोणकोटिः, भिक्षुः – མི་དམན་ཁྱིམ་གྱི་དཔལ་ལ་ལྟོས་མེད་པའི། །དགེ་སློང་འདི་ནི་རྣ་བ་བྱེ་བར་གྲགས།། स श्रोणकोटिः श्रुत एष भिक्षुरक्षुण्णलक्ष्मीगृहनिर्व्यपेक्षः अ.क.255क/93.72.

རྣ་བ་འབིགས་པ कर्णवेधः, शास्त्रोक्तविधानेन कर्णयोर्वेधनम् – བྱིས་པའི་རྣ་བ་འབིགས་པ་ལ་སོགས་པས་ལོ་བཅུ་དྲུག་གི་མཚམས་སུ་བག་མ་ལེན་པ་ན་ལག་པ་འཛིན་པ་དང་ཡེ་ཤེས་མཆོད་པའི་རྗེས་སུ་ཆགས་པ་ཇི་ལྟ་བ་བཞིན་ནོ།། <?>यथा बालस्य कर्णवेधादिकम्, विवाहे पाणिग्रहम्, षोडशवर्षावधेर्ज्ञानपूजानुरागणम् वि.प्र.58क/4.100.

རྣ་བ་འཕྲུག་པར་བྱེད་པ *वि.* कर्णकण्डूविनोदनकारी – དཔེར་ན་རྣ་བ་འཕྲུག་པར་བྱེད་པའི་བྱའི་གཤོག་པའི་སྒྲ་རྣམ་པར་ཆད་པར་དམིགས་པ་དེ་བཞིན་དུ་འབྲུག་ལ་སོགས་པའི་སྒྲ་ཡང यथा कर्णकण्डूविनोदनकारिणः पतत्रिपक्षस्याविच्छिन्नः [विच्छिन्नः पा.भे.] शब्द उपलभ्यते, तथा मेघादिशब्दस्यापि त.प.185ख/832.

རྣ་བ་མི་གསལ་བ *वि.* कल्लः – རབ་འབྱོར་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་སེམས་དཔའ་ཆེན་པོ་དེ་ལྟར་སློབ་པ་ནི། ལོང་བར་མི་འགྱུར...རྣ་བ་མི་གསལ་བར་མི་འགྱུར एवं शिक्षमाणः सुभूते बोधिसत्त्वो महासत्त्वो नान्धो भवति... न कल्लो भवति अ.सा.372ख/211.

རྣ་བ་མེད་པ = རྣ་མེད།

རྣ་བ་འཛིན = རྣ་བ་འཛིན་པ།

རྣ་བ་འཛིན་པ कर्णधारः – གྱེ་མ་བདག་གི་ཐེ་ཚོམ་ལ། །རྣ་བ་འཛིན་པ་རབ་གཡེལ་བ། །ཁྱོད་ཀྱི་རྒྱལ་སྲིད་རྒྱ་གཏེར་ལ། །གྲུ་བཞིན་དཔལ་ལ་བཏང་སྙོམས་བྱས།། अहो बतावलेपेन भवता मम संशये । राज्याब्धिकर्णधारेण नौरिव श्रीरुपेक्षिता अ.क.127क/66.22; རྒྱལ་སྲིད་རྒྱ་གཏེར་གྱི། །རྣ་བ་འཛིན་པ་གང་གིས་ནི། །གཙོ་བོའི་གྲགས་པ་ཕ་རོལ་བསྒྲལ།། प्रभोः...राज्याब्धिकर्णधारेण पारमुत्तारितं यशः ॥ अ.क.48क/5.16.

རྣ་བ་གཞུ *ना.* कर्णधनुः, कालपृष्ठम् श्री.को.180क।

རྣ་བ་འོན་པ बधिरः, एडः – एडे बधिरः अ.को.2.6.48; बध्यते वातादिना श्रवणमस्येति बधिरः । बन्ध बन्धने अ.वि.2.6.48.

རྣ་བ་ལས་སྐྱེས = རྣ་སྐྱེས།

རྣ་བ་ལས་སྐྱེས་རྡོ་རྗེ་ཤེས་པ = རྣ་སྐྱེས་རྡོ་རྗེ་ཤེས་པ།

རྣ་བ་ལས་སྐྱེས་པ = རྣ་སྐྱེས།

རྣ་བ་ལེགས *ना.* = ཁྱབ་འཇུག विष्टरश्रवाः, विष्णुः – विष्णुर्नारायणः कृष्णो वैकुण्ठो विष्टरश्रवाः । अ.को.1.1.18; विष्टराकारे श्रोत्रे यस्य सः विष्टरश्रवाः । विष्टराकारो रोमावर्तो श्रवसि यस्येति वा । विष्टरं व्यापनशीलं श्रवः कीर्तिर्यस्येति वा अ.वि.1.1.18.

རྣ་བ་ལེགས་པར་བྱས་པ *वि.* श्रोत्रसंस्कारकारी – སྒྲ་ནི་དམིགས་པའི་དུས་སུ་ནི། །རྣ་བ་ལེགས་པར་བྱས་པ་དང་།

།སྒྲ་[? རྣ་]ཁུག་མཐའ་ལ་གནས་གྱུར་པའི། །རླུང་རྣམས་རྟོགས་པར་འགྱུར་བ་མིན།། शब्दोपलम्भवेलायां कर्णपर्यन्तवर्त्तिनः। न वायवोऽवगम्यन्ते श्रोत्रसंस्कारकारिणः॥ त.स. 90ख/819.

རྣ་བ་ལེགས་པར་བྱེད་པ श्रोत्रसंस्कारः – ཕྱོགས་དང་པོ་ལ་རྣ་བ་དང་སྒྲ་དག་གིས་ལེགས་པར་བྱེད་པ་མི་འགྲུབ་པར་ཐལ་བར་འགྱུར་ཏེ། དོན་གཞན་བྱེད་པའི་ཕྱིར་རོ།། प्रथमे पक्षे श्रोत्रशब्दयोः संस्कारासिद्धिप्रसङ्गः, अर्थान्तरकरणात् त.प.188ख/839.

རྣ་བབས = རྣ་སྦྲབས།

རྣ་བའི་སྐྱེ་མཆེད *पा.* श्रोत्रायतनम्, आयतनभेदः – སྐྱེ་མཆེད་ནི་བཅུ་གཉིས་ཏེ། མིག་གི་སྐྱེ་མཆེད་དང...རྣ་བའི་སྐྱེ་མཆེད་དང...ཆོས་ཀྱི་སྐྱེ་མཆེད་དེ द्वादशायतनानि– चक्षुरायतनं...श्रोत्रायतनं...धर्मायतनं च श्रा.भू.97क/245.

རྣ་བའི་ཁམས *पा.* श्रोत्रधातुः, धातुभेदः – ཁམས་ནི་བཅོ་བརྒྱད་དེ། མིག་གི་ཁམས་དང...རྣ་བའི་ཁམས་དང...ཡིད་ཀྱི་རྣམ་པར་ཤེས་པའི་ཁམས་ཏེ अष्टादश धातवः–चक्षुर्धातुः...श्रोत्रधातुः...मनोविज्ञानधातुः श्रा.भू.97क/245.

རྣ་བའི་ཁུང་བུ = རྣ་ཁུག།

རྣ་བའི་གོང་རྒྱན अवतंसकः, कर्णभूषणम् – དེས་དེའི་རྣ་བའི་གོང་རྒྱན་དུ་བཅོས་ནས་མཆོད་རྟེན་དེ་ལ་བཏགས་ཏེ स तेनावतंसकं कारयित्वा तत्र स्तूपे आरोपितः अ.श.169क/157.

རྣ་བའི་རྒྱན = རྣ་རྒྱན།

རྣ་བའི་སྐབས कर्णतालः – རྔ་ཡབ་དང་བཅས་དར་དང་རྒྱལ་མཚན་ཕྲོགས། །རྟ་དང་བཅས་པའི་གླང་གཞོན་རྣ་བའི་སྐབས། །རང་བཞིན་གྱིས་གཡོ་རྒྱལ་པོའི་དཔལ་འབྱོར་གྱི། །ལོངས་སྤྱོད་ཐམས་ཅད་སྐད་ཅིག་འཇིག་པའི་གྲོགས།། सचामराः सध्वजपुञ्जपट्टाः सवाजिबाला द्विपकर्णतालाः। स्वभावलोलाः किल राजलक्ष्म्यः सर्वे विलासाः क्षणभङ्गसङ्गाः॥ अ.क.197क/22.45.

རྣ་བའི་དྲི་མ कर्णमलम्, कर्णस्य मलम् – རྣ་བའི་དྲི་མ་དང...མཆན་ཁུང་གི་དྲི་མ་སྟེ་ལུས་ཐམས་ཅད་ཀྱི་དྲི་མ་རྣམས་སོ།། དམ་ཚིག་བརྒྱད་ནི་ལྷ་མིན་མོ་རྣམས་ཀྱི་གྲངས་བཞིན་དུ་སྟེ། ཁྱི་གདོང་མ་དང...འུག་གདོང་མ་སྟེ कर्णमलं...कक्षमलं सर्वाङ्गमलमिति समयाष्टकमासुरीणां यथासंख्यम्, श्वानास्या... उलूकास्या वि.प्र.170क/3.161.

རྣ་བའི་འདུས་ཏེ་རེག་པ श्रोत्रसंस्पर्शः – མིག་དང་རྣ་བ་དང་སྣ་དང་ལྕེ་དང་ལུས་ཀྱི་འདུས་ཏེ་རེག་པ་ལྔ་ནི་ཐོགས་པ་དང་བཅས་པའི་དབང་པོ་ལ་བརྟེན་པའི་ཕྱིར་ཐོགས་པའི་རེག་པ་ཞེས་བྱའོ།། चक्षुःश्रोत्रघ्राणजिह्वाकायसंस्पर्शाः *पञ्च प्रतिघसंस्पर्श इत्युच्यते*, सप्रतिघेन्द्रियाश्रयत्वात् अभि.भा.134क/471.

རྣ་བའི་འདུས་ཏེ་རེག་པ་ལས་བྱུང་བའི་ཚོར་བ *पा.* श्रोत्रसंस्पर्शजा वेदना; द्र.– དེ་ཡང་དབྱེ་ན་ཚོར་བའི་ཚོགས་དྲུག་སྟེ། མིག་གི་འདུས་ཏེ་རེག་པ་ལས་བྱུང་བའི་ཚོར་བ་ནས་ཡིད་ཀྱི་འདུས་ཏེ་རེག་པ་ལས་བྱུང་བའི་ཚོར་བའི་བར་རོ།། स पुनर्भिद्यमानः षड् वेदनाकायाः चक्षुःसंस्पर्शजा वेदना यावन्मनःसंस्पर्शजा वेदना अभि.भा.33क/48.

རྣ་བའི་ནམ་མཁའ कर्णव्योम – རྣ་བའི་ནམ་མཁར་ཕྱིན་པ་ཡིས། །དེ་ནི་རྣ་ནུས་བྱེད་ཅེ་ན།། कर्णव्योमनि सम्प्राप्तः शक्तिं श्रोत्रे करोति चेत्। त.स.92क/833; त.स.79ख/738.

རྣ་བའི་རྣམ་པར་ཤེས་པ *पा.* श्रोत्रविज्ञानम्, विज्ञान-भेदः – མིག་གི་རྣམ་པར་ཤེས་པ་དང་རྣ་བའི་རྣམ་པར་ཤེས་པ་དང...ཡིད་ཀྱི་རྣམ་པར་ཤེས་པ་རྣམ་པར་དག་པས चक्षुर्विज्ञानं श्रोत्रविज्ञानं...मनोविज्ञानं विशुद्धया वि.प्र.185क/5.4.

རྣ་བའི་རྣམ་པར་ཤེས་པའི་ཁམས *पा.* श्रोत्रविज्ञानधातुः, धातुभेदः – ཁམས་ནི་བཅོ་བརྒྱད་དེ། མིག་གི་ཁམས་དང...རྣ་བའི་རྣམ་པར་ཤེས་པའི་ཁམས་དང...ཡིད་ཀྱི་རྣམ་པར་ཤེས་པའི་ཁམས་ཏེ अष्टादश धातवः–चक्षुर्धातुः...श्रोत्रविज्ञानधातुः...मनोविज्ञानधातुः श्रा.भू.97क/245.

རྣ་བའི་རྣམ་པར་ཤེས་པས་རྣམ་པར་ཤེས་པར་བྱ་བ *वि.* श्रोत्रविज्ञानविज्ञेयः –དེ་རྣ་བའི་རྣམ་པར་ཤེས་པས་རྣམ་པར་ཤེས་པར་བྱ་བ་ཡིན་པའི་ཕྱིར་གཟུགས་ལས་གཞན་ཡིན་པར་འགྱུར་ཏེ स श्रोत्रविज्ञानविज्ञेयत्वाद् रूपाद-न्यः प्राप्नोति अभि.भा.85क/1199.

རྣ་བའི་པདྨའི་རྩ་བ श्रोत्रस्य कमलकन्दः – པདྨའི་ས་བོན་རྣམས་གསུངས་པ...རྣ་བའི་པདྨའི་རྩ་བ་ལ་ཀ། སྡོང་བུ་ལ་ཁ། འདབ་མ་ལ་ག། གེ་སར་ལ་གྷ། ལྟེ་བ་ལ་ང་ཞེས་པའོ།། कमलबीजान्युच्यते... श्रोत्रस्य कमलकन्दे कं नाले खं दले गं केशरे घं कर्णिकायां ङमिति वि.प्र.130ख/3.61.

རྣ་བའི་བུ་ག = རྣ་བུག།

རྣ་བའི་བུ་གས་ཡོངས་བཅད་པ *वि.* कर्णरन्ध्रपरिच्छि-न्नः – ཕྱོགས་ནི་ཀུན་འགྲོ་གཅིག་པུ་ཉིད། །ནམ་མཁའ་ཇི་སྲིད་དུ་གནས་པ། །རྣ་བའི་བུ་གས་ཡོངས་བཅད་པ། །རྣ་བ་ཡིན་ཏེ་མཁའ་ཕྱོགས་བཞིན།། दिक् च सर्वगतैकैव यावद्व्योम व्यवस्थिता। कर्णरन्ध्रपरिच्छिन्ना श्रोत्र-माकाशदेशवत्॥ त.स.80क/744.

རྣ་བའི་བུག་པ = རྣ་བུག།

རྣ་བའི་བློ *पा.* श्रोत्रधीः – དེ་ལྟ་ན་ལན་ཅིག་སྐྱེས་ནས་ཞིག་པའི་དོན་གྱི་ཡུལ་ཅན་གྱི་ཤེས་པ་དང་ནི་ན་རྣ་བའི་བློ་ཚད་མ་ཉིད་དུ་མི་འགྱུར་ཏེ एवं सति सकृज्जातविनष्टार्थ-विषयस्य ज्ञानस्य श्रोत्रधियश्च प्रामाण्यं न प्राप्नोति त.प.228ख/927; श्रोत्रबुद्धिः – གཉི་ག་ལ་ཡང་ཞེས་བྱ་བ་ནི་རྣ་བའི་བློ་དང་རིག་བྱེད་ཀྱི་དོན་གྱི་བློ་དག་ལའོ།། द्वयोरपीति श्रोत्रबुद्धिवेदार्थबुद्ध्योः त.प.229क/928.

རྣ་བའི་དབང་པོ *पा.* श्रोत्रेन्द्रियम्, इन्द्रियविशेषः – འདི་ལྟ་སྟེ། མིག་གི་དབང་པོ་དང་རྣ་བའི་དབང་པོ་དང...ལུས་ཀྱི་དབང་པོ तद्यथा–चक्षुरिन्द्रियम्, श्रोत्रेन्द्रियम्...कायेन्द्रियम् अभि.भा.85क/1199.

རྣ་བའི་སྦུབས कर्णशष्कुली – འདི་སྙམ་དུ་གང་གིས་མ་མཐོང་བའི་འདུ་བྱེད་ཀྱིས་རྣ་བའི་སྦུབས་སུ་དེར་ཡོངས་སུ་གཅོད་པའི་ནམ་མཁའ་ནི་རྣ་བ་ཉིད་ཡིན་ཏེ स्यान्मतम्–तदीयादृष्टाभिसंस्कृता या कर्णशष्कुली तत्परि-च्छिन्नस्यैवाकाशस्य श्रोत्रत्वम् त.प.271ख/258; द्र. རྣ་བུག།

རྣ་བའི་རྩ་བ कर्णमूलम् – कर्णमूलं तु चूलिका अ.को.2.8.38.

རྣ་བའི་ཚེར श्रोत्रकण्टकः – བརྟགས་པ་ཉམས་པའི་དྲན་པས་ཀྱང་། །ཏིང་ངེ་འཛིན་གྱི་རྣ་བའི་ཚེར།། स्मरोऽपि नष्टसङ्कल्पः समाधेः श्रोत्रकण्टकम्। अ.क.230क/25.63.

རྣ་བའི་ལམ = རྣ་ལམ།

རྣ་བའི་ལེགས་བྱས श्रोत्रसंस्कृतिः – དེས་ན་གཙོ་བོ་ཐ་དད་པས། །རྣ་བའི་ལེགས་བྱས་ཐ་དད་འགྱུར།། तेन प्रधा-नवैदेश्याद् विगुणा श्रोत्रसंस्कृतिः॥ त.स.80क/741.

རྣ་བའི་ཤིང་རྟ कर्णीरथः, यानविशेषः – कण्ठीरथः प्रवहणं डयनं च समं त्रयम्। अ.को.2.8.52; कण्ठेषु मनुष्यस्कन्धेषु उह्यमानो रथः कण्ठीरथः। कर्णीरथ इति वा पाठः अ.वि.2.8.52.

རྣ་བའི་ཤེས = རྣ་བའི་ཤེས་པ།

རྣ་བའི་ཤེས་པ *पा.* श्रोत्रविज्ञानम् – དཔེར་ན་རྣ་བའི་ཤེས་པ་དང་ལྷན་ཅིག་སྐྱེས་ནས་ཞིག་པའི་ཡུལ་ཅན་གྱི་ཤེས་པ་བཞིན་ནོ།། यथा श्रोत्रज्ञानं सकृज्जातं विनष्टविषयं च विज्ञानम् त.प.229क/928; = རྣ་བའི་རྣམ་པར་ཤེས་པ།

རྣ་བར་སྙན་པ = རྣར་སྙན་པ།

རྣ་བར་བདེ་བ = རྣར་བདེ་བ།

རྣ་བར་མི་སྙན = རྣར་མི་སྙན་པ།

རྣ་བར་ཟློས कर्णेजपः – कर्णेजपः सूचकः स्यात् अ.को.3.1.45.

རྣ་བར་སོན = རྣ་བར་སོན་པ།

རྣ་བར་སོན་པ *वि.* श्रुतिगतः – གསུང་ནི…ཀུན་གྱི་སྒྲ། །གཞན་གྱི་རྣ་བར་སོན་པས་དམ་པའི་ལམ་ནི་ཡང་དག་སྟོན་པར་མཛད་པ भाषा सर्वरुता परश्रुतिगता सन्मार्गसंदेशकी वि.प्र.29क/4.1.

རྣ་བས་རྟོགས་བྱ *वि.* श्रोत्रगम्यः – རྣ་བས་རྟོགས་བྱའི་སྒྲ་རྣམས་ལ། །རིང་དང་ཕྲ་སོགས་དམིགས་པ་ཡིས། །སྐྱེས་བུ་ཕུལ་བྱུང་མཐོང་བ་ཡིན།། श्रोत्रगम्येषु शब्देषु दूरसूक्ष्मोपलब्धिभिः। पुरुषातिशयो दृष्टः त.स.115क/999.

རྣ་བས་ཤེས་པར་བྱ་བ *वि.* श्रोत्रविज्ञेयः – རྣ་བས་ཤེས་པར་བྱ་བའི་སྒྲ་རྣམས श्रोत्रविज्ञेयाः शब्दाः अ.श.103ख/93.

རྣ་བུག = རྣ་བའི་བུ་ག कर्णरन्ध्रम् – དེ་ཡང་རྣ་བའི་བུ་གར་ཕྱིན་ནས་རྣ་བ་ལ་ནུས་པ་སྐྱེད་པར་བྱེད་དོ།། स च कर्णरन्ध्रं प्राप्य श्रोत्रे शक्तिमाधत्ते त.प.143क/737; དེས་ན་བསོད་ནམས་བསོད་ནམས་མིན། །དབང་བྱས་རྣ་བུག་གིས་ཡོངས་བཅད། །ཕྱོགས་རྫས་ཆ་ཡི་རྣ་གང་ཡིན། །དེ་ནི་ལེགས་པར་བྱ་བར་འགྱུར།། तस्माद् दिग्द्रव्यभागो यः पुण्यापुण्यवशीकृतः। कर्णरन्ध्रपरिच्छिन्नः श्रोत्रं संस्क्रियते च सः॥ त.स.80ख/744; རྣ་བ་གཡོན་པའི་བུག་པ་ནི་མཇུག་རིངས་སོ།། वामकर्णरन्ध्रं केतुः वि.प्र.233ख/2.33; རྣ་བ་གཡས་པའི་བུག་པ་ནི་སྤེན་པའོ།། दक्षिणकर्णरन्ध्रं मन्दः वि.प्र.233ख/2.33; कर्णपुटम् – གང་གི་རྣ་བའི་བུ་གར་ཡང་། །བཤད་པ येषामिदं कर्णपुटे देशितम् सु.प्र.2ख/3; कर्णशष्कुली – རི་བྲོད་པས་ཀྱང་། མངོན་སུམ་མ་ཡིན་པའི་རླུང་གི་རླུང་དང་ལྡན་པ་དང་རྣམ་པར་དབྱེ་བ་རྣམས་རྣ་བུག་གི་ཕྱོགས་ནས་འབྱུང་བ་ན་མི་དམིགས་པ་ཡིན་ནོ་ཞེས་ཟེར་རོ།། शबरेणोक्तम्–वायवीयाः संयोगविभागा अप्रत्यक्षस्य वायोः कर्णशष्कुलीप्रदेशात् प्रादुर्भवन्तो नोपलभ्यते त.प.186ख/834; དེའི་མ་མཐོང་བས་མངོན་པར་འདུས་བྱས་པའི་རྣ་བའི་བུ་ག་ནི་བདག་དང་ལྡན་ལ आत्मना हि संयुक्ता तदीया [ऽ]दृष्टाभिसंस्कृता कर्णशष्कुली त.प.193क/102; द्र. རྣ་བའི་སྐུབས།

རྣ་བུག་གིས་ཡོངས་བཅད *वि.* कर्णरन्ध्रपरिच्छिन्नः – དེས་ན་བསོད་ནམས་བསོད་ནམས་མིན། །དབང་བྱས་རྣ་བུག་གིས་ཡོངས་བཅད། །ཕྱོགས་རྫས་ཆ་ཡི་རྣ་གང་ཡིན། །དེ་ནི་ལེགས་པར་བྱ་བར་འགྱུར།། तस्माद् दिग्द्रव्यभागो यः पुण्यापुण्यवशीकृतः। कर्णरन्ध्रपरिच्छिन्नः श्रोत्रं संस्क्रियते च सः॥ त.स.80ख/744.

རྣ་བུག་གིས་ཡོངས་བཅད་པ = རྣ་བུག་གིས་ཡོངས་བཅད།

རྣ་བུག་མཐའ་ལ་གནས་གྱུར་པ *वि.* कर्णपर्यन्तवर्त्ती – སྒྲ་ནི་དམིགས་པའི་དུས་སུ་ནི། །རྣ་བ་ལེགས་པར་བྱས་པ་དང་། །སྣ་[རྣ་]བུག་མཐའ་ལ་གནས་གྱུར་པའི། །རླུང་རྣམས་རྟོགས་པར་འགྱུར་བ་མིན།། शब्दोपलम्भवेलायां कर्णपर्यन्तवर्त्तिनः । न वायवोऽवगम्यन्ते श्रोत्रसंस्कारकारिणः ॥ त.स.90ख/819.

རྣ་བྲང་གཞག *क्रि.* नियोजयेत् – མདའ་དང་མདུང་ཙེ་རྣ་བྲང་གཞག།། शरशक्तीर्नियोजयेत् सु.प्र.29क/56.

རྣ་བླགས = རྣ་བླགས་པ།

རྣ་བླགས་ཏེ་ཉན་པའི་རྣམ་པ *पा.* अवहितश्रोत्राकारम्– ཐོས་པའི་རྣམ་པ་ནི་བརྒྱད་ཅུ་སྟེ། འདི་ལྟ་སྟེ། འདུན་པའི་རྣམ་པ་དང...རྣ་བླགས་ཏེ་ཉན་པའི་རྣམ་པ་དང अशीत्याकारप्रवेशं श्रुतम् । तद्यथा छन्दाकारम्...अवहितश्रोत्राकारम् शि.स.107क/105.

རྣ་བླགས་པ *वि.* अवहितश्रोत्रः – རྣ་བླགས་ཏེ་ཉན་པའི་རྣམ་པ अवहितश्रोत्राकारम् शि.स.107क/105; म.व्यु.2428(46ख).

རྣ་བློ = རྣ་བའི་བློ།

རྣ་འབྲུག कर्णशष्कुली–དེ་དང་ཞེས་བྱ་བ་ནི་རླུང་དང་དོ། མི་ལྡན་ཞེས་བྱ་བ་ནི་མ་འབྲེལ་བ་སྟེ། རྣ་འབྲུག་ལ་ཞེས་འབྲེལ་ཏོ།། त.प.187क/835; तस्येति वायोः । अयोग इति असंसर्गः । कर्णशष्कुल्येति सम्बन्धः त.प.144ख/740; द्र. རྣ་བའི་སྦུབས། རྣ་བུག།

རྣ་འབྲུག་གི་རྩ་བ कर्णशष्कुलीमूलम् – འདི་ལྟར་རླུང་རྣ་འབྲུག་གི་རྩ་བར་ཕྱིན་པ་རྣ་བ་ལེགས་པར་བྱ་བར་ནུས་ཀྱི། མ་ཕྱིན་པ་ནི་མ་ཡིན་པས་དེའི་ཕྱིར་ཕྱོགས་གཞན་བརྗོད་པ་ཡིན་ནོ།། यतः प्राप्तकर्णशष्कुलीमूला एव वायवः श्रोत्रसंस्कारायालम्, नाप्राप्ता इत्यतः पक्षान्तरमुक्तम् त.प.144ख/740.

རྣ་སྦུབས = རྣ་བའི་སྦུབས།

རྣ་མ་ཕུག = རྣ་མ་ཕུག་པ།

རྣ་མ་ཕུག་པ •*ना.* अविद्धकर्णः, आचार्यः – འདི་ལ་རྣ་མ་ཕུག་པས་དབང་ཕྱུག་སྒྲུབ་པ་ལས་ཚད་མ་གཉིས་བཀོད་པ་ནི... སྨྲས་ཏེ अत्राविद्धकर्णोपन्यस्तमीश्वरसाधने प्रमाणद्वयमाह त.प.166ख/52; རྣ་མ་ཕུག་གིས་བཤད་པའི་ཊཱི་ཀཱ་བྱེད་པས་འདིར་ཐམ་པར་འདོད་པས་ན་དོགས་པ་བསུ་བ་ནི अविद्धकर्णस्तु भाष्यटीकायामिदमाशङ्कय परिजिहीर्षति वा.टी.108ख/76; द्र. གནས་མ་བུ་པ། •*सं.* = མ་ནུ अविद्धकर्णी, पाठा मि.को.57ख।

རྣ་མེད *वि.* अकर्णकः – གླང་ཆེན་རྣ་འདྲ...རྣ་གཅིག་པ་དང་རྣ་མེད་དང हस्तिकर्णाः... एककर्णा अकर्णकाः वि.सू.5क/5.

རྣ་ལ་གནོད་པ • *सं.* विहेठनम्–དགེ་སློང་གི་བསྒོ་བ་རྣ་ལ་གནོད་ན་འོ།། भिक्ष्वाज्ञाविहेठने वि.सू.31क/39; •*वि.* विहेठकः – ཅང་མི་སྨྲ་བས་རྣ་ལ་གནོད་པ་དང तूष्णींभावविहेठक(ः) वि.सू.31क/39.

རྣ་ལམ श्रवणपथः –ཐམས་ཅད་ལྟ་ཡི་རྣ་བར་ཡང་། །རྣ་ལམ་དུ་ནི་མི་འགྲོ་བཞིན།། यथा...न दिव्यश्रोत्रेऽपि श्रवणपथमायाति निखिलम् र.वि.123ख/104; श्रोत्रपथः – མི་དབང་མཐུ་ཆེན་འདི་ལྟར་གྲགས་པ་ཡང་། །ཁྱེད་ཀྱི་རྣ་ལམ་ཇི་ལྟར་མ་གྲགས་ཀྱི།། एवं प्रकाशो नृपतिप्रभावः कथं नु वः श्रोत्रपथं न यातः । जा.मा.38ख/45.

རྣ་ལམ་དུ་གྲག *क्रि.* श्रवणावभासमागच्छति – དེ་བཞིན་དུ་བློ་གྲོས་ཆེན་པོ་ང་ཡང་མི་མཛེད་ཀྱི་འཇིག་རྟེན་གྱི་ཁམས་ན་མིང་གྲངས་མེད་པ་བརྒྱ་སྟོང་ཕྲག་གསུམ་དུ་བྱིས

པ་རྣམས་ཀྱི་རྣ་ལམ་དུ་གྲག་སྟེ་ एवं महामते अहमपि सहायां लोकधातौ त्रिभिर्नामासंख्येयशतसहस्रैर्बालानां श्रवणावभासमागच्छामि ल.अ.132क/78.

རྣ་ལམ་དུ་གྲགས་པར་མི་འགྱུར *क्रि.* न श्रवणपथमागमिष्यति म.व्यु.6459(92ख).

རྣ་ཤལ कर्णः, शरीरावयवविशेषः – དགེ་སློང་བལྟ་ན་སྡུག་པ... རྣ་ཤལ་རིང་ཞིང་ལྡོད་པར་འཕྱང་བ सुदर्शनं भिक्षुम्... आयतमुक्तप्रलम्बकर्णम् ग.व्यू.392ख/99; *चमसः म.व्यु.4050(65क).

རྣག • *सं.* पूयः, ०यम्, व्रणे पक्वरुधिरम् – དེ་ལ་ནང་ལ་བརྟེན་པའི་མི་གཙང་བའི་མི་སྡུག་པ་ཉིད་གང་ཞེ་ན། འདི་ལྟ་སྟེ། སྐྲ་དང...རྣག་དང तत्राध्यात्ममुपादाय [प्रत्यशुभता] तद्यथा–केशाः...पूयः श्रा.भू.79क/203; སོ་དང་སྐྲ་སེན་བདག་མ་ཡིན།...ཆུ་སེར་དང་ནི་རྣག་ཀྱང་མིན།། दन्तकेशनखा नाहं...न पूयं लसिकापि वा ॥ बो.अ.33क/9.58; • *वि.* पूतिः – ཅི་རྣག་གི་ལུས་འདི་ལ་སྙིང་པོ་ཡོད་དམ किमस्मिन् पूतिकलेवरे सारमस्ति वि.सू.5ख/5; द्र. རྣག་ཅན།

རྣག་ཁྲག पूयशोणितम् – དེའི་མགོ་བོ་ལས་རྣག་ཁྲག་ཅི་འཛག་པ་རྣམས་དེའི་ཟས་སུ་ཟའོ།། तस्य शिरसो यत् पूयशोणितं प्रघरति, सोऽस्याहारः अ.श.101ख/91; द्र. རྣག་ཁྲག་འཛག་པ།

རྣག་ཁྲག་འཛག་པ रक्तातिसारः, व्याधिविशेषः– སླར་ཡང་ལོ་སྟོང་ཕྲག་བརྒྱད་ཅུ་རྩ་བཞིར་ནད་རྣག་ཁྲག་འཛག་པ་དང་མཛེ་དང་འབོལ་མིག་གིས་གཟིར་བ་དང पुनरपि चतुरशीतिवर्षसहस्राणि व्याधिरक्तातिसारकुष्ठविघात[? विस्फोट]पीडितश्च स.दु.98क/124; द्र. རྣག་ཁྲག།

རྣག་གི་ལུས पूतिकलेवरम् – ཅི་རྣག་གི་ལུས་འདི་ལ་སྙིང་པོ་ཡོད་དམ किमस्मिन् पूतिकलेवरे सारमस्ति वि.सू.5ख/5.

རྣག་གིས་གསོས = རྣག་གིས་གསོས་པ།

རྣག་གིས་གསོས་པ *पा.* पूयम्रक्षितम्, अशुभताभेदः – དེ་ལ་ཕྱི་རོལ་ལ་བརྟེན་པའི་མི་གཙང་བའི་མི་སྡུག་པ་ཉིད་གང་ཞེ་ན། འདི་ལྟ་སྟེ། རྣམ་པར་བསྔོས་པ་དང...རྣག་གིས་གསོས་པ་དང तत्र बहिर्धा चोपादाय अशुभता कतमा? तद्यथा–विनीलकं वा...पूयम्रक्षितं वा श्रा.भू.79ख/203.

རྣག་ཅན *वि.* पूतिः – རྣག་ཅན་ལུས་འདི अयं पूतिकायः सु.प्र.55क/108; *क्वाथः – བདག་ཅག་གི་ལུས་རྣག་ཅན་འདིས་ཐོབ་པར་བྱ་བ་གང་ཡིན་པ་ནི་ཐོབ་ཟིན་གྱིས यदस्माभिरनेन क्वाथकायेन प्राप्तव्यम्, प्राप्तं तत् वि.व.123ख/1.12.

རྣག་འབྱུར श्वयथुः, व्याधिविशेषः मि.को.53क।

རྣག་གཟན कायोद्धर्षणम् – ལུས་འཛག་པས་རྣག་གཟན་ནོ།། श्रवत्कायः कायोद्धर्षणम् वि.सू.70ख/87; म.व्यु.9001(124ख).

རྣགས = རྣགས་པ།

རྣགས་པ *प्रा.*> རྣག་པ पूयः, ०यम् – ཀང་འབྱུང་འདི་དག་གཡོ་བའི་བྱ་རོག་ཆགས་པའི་ཕྱི་བས་སྐྱུག་ཅིང་བརྒྱལ་བ་དང་། །རྣམ་པར་སྨིན་ཅིང་རྣགས་པའི་རོ་ཡི་དྲི་ངས་ངེས་པར་སྣ་ངན་སྒྲོགས་པ་བཞིན།། <?>एते दृष्टनिषक्तवायसशकृन्निष्ठीविनः पादपा मूर्च्छन्तीव विपाकपूयकुणपाघ्राणेन निष्कूणिताः। अ.क.217ख/24.110; द्र. ལ་ལ་ནི་རྣགས་པ་ཙམ कानिचिन्...विपूयकानि ग.व्यू.24ख/121.

རྣགས་པ་ཙམ विपूयकम् – ཤི་བའི་རོ་ཀེང་རུས...ལ་ལ་ནི་ཁ་དོག་སྔུར་ཏེ། སྔོན་པོར་གྱུར་པ་ཙམ། ལ་ལ་ནི་རྣགས་པ་ཙམ मृतकलेवर...कानिचिन्नीलानि च नीलवर्णानि विपूयकानि ग.व्यू.24ख/121.

རྣང་མ जलनिर्गमः – भ्रमाश्च जलनिर्गमाः अ.को.1.12.7; जलानि निर्गच्छन्त्येभ्य इति जलनिर्गमाः । गम्लृ गतौ अ.वि.1.12.7.

རྣམ = རྣམ་པ།

རྣམ་ཀུན = རྣམ་པ་ཀུན།

རྣམ་ཀུན་མཁྱེན = རྣམ་པ་ཀུན་མཁྱེན་པ།

རྣམ་ཀུན་མཁྱེན་ཉིད *पा.* सर्वाकारज्ञता – ཤེས་རབ་ཕ་རོལ་ཕྱིན་པ་ནི། །དངོས་པོ་བརྒྱད་ཀྱིས་ཡང་དག་བཤད། །རྣམ་ཀུན་མཁྱེན་ཉིད་ལམ་ཤེས་ཉིད། །དེ་ནས་ཐམས་ཅད་ཤེས་པ་ཉིད། ...།ཆོས་ཀྱི་སྐུ་དང་དེ་རྣམ་བརྒྱད།། प्रज्ञापारमिताष्टाभिः पदार्थैः समुदीरिता । सर्वाकारज्ञता मार्गज्ञता सर्वज्ञता ततः ।... धर्मकायश्च तेऽष्टधा अभि.अ.2क/1.4; अभि.अ.2क/1.7.

རྣམ་ཀུན་མཁྱེན་པ་ཉིད = རྣམ་ཀུན་མཁྱེན་ཉིད།

རྣམ་ཀུན་མངོན་པར་བྱང་ཆུབ *पा.* सर्वाकाराभिसंबोधिः – རྣམ་ཀུན་མངོན་པར་བྱང་ཆུབ་དང་། །དྲི་མ་བག་ཆགས་བཅས་སྤངས་པ། །སངས་རྒྱས་མྱ་ངན་འདས་པ་ནི། །དམ་པའི་དོན་དུ་གཉིས་མེད་ཉིད།། सर्वाकाराभिसंबोधिः सवासनमलोद्धृतिः । बुद्धत्वमथ निर्वाणमद्वयं परमार्थतः ॥ र.वि.104ख/56; द्र. རྣམ་ཀུན་མངོན་རྫོགས་རྟོགས་པ།

རྣམ་ཀུན་མངོན་པར་རྫོགས་པར་རྟོགས་པ = རྣམ་ཀུན་མངོན་རྫོགས་རྟོགས་པ།

རྣམ་ཀུན་མངོན་རྫོགས་རྟོགས = རྣམ་ཀུན་མངོན་རྫོགས་རྟོགས་པ།

རྣམ་ཀུན་མངོན་རྫོགས་རྟོགས་པ *पा.* सर्वाकाराभिसंबोधः – ཤེས་རབ་ཕ་རོལ་ཕྱིན་པ་ནི། །དངོས་པོ་བརྒྱད་ཀྱིས་ཡང་དག་བཤད། །རྣམ་ཀུན་མཁྱེན་ཉིད...རྣམ་ཀུན་མངོན་རྫོགས་རྟོགས་པ་དང་།...ཆོས་ཀྱི་སྐུ प्रज्ञापारमिताष्टाभिः पदार्थैः समुदीरिता । सर्वाकारज्ञता...सर्वाकाराभिसम्बोधः...धर्मकायश्च अभि.अ.2क/1.5; द्र. རྣམ་ཀུན་མངོན་པར་བྱང་ཆུབ།

རྣམ་ཀུན་མངོན་རྫོགས་བྱང་ཆུབ = རྣམ་ཀུན་མངོན་པར་བྱང་ཆུབ།

རྣམ་ཀུན་མཆོག་ལྡན = རྣམ་པ་ཀུན་གྱི་མཆོག་ལྡན་པ།

རྣམ་ཀུན་རང་བཞིན་བདག་ཉིད *वि.* सर्वाकारस्वभावात्मा – དེ་ནས་རྒྱལ་པོ་རྡོ་རྗེ་འཛིན། །གཙོ་བོ་ཀྱེ་རྡོར་ཀུན་སྦྱིན་པས། །རྣམ་ཀུན་རང་བཞིན་བདག་ཉིད་ཀྱི། །དཀྱིལ་འཁོར་དག་ནི་ཡང་དག་གསུངས།། अथ वज्री महाराजा हेवज्रः सर्वदः प्रभुः । सर्वाकारस्वभावात्मा [? त्म] मण्डलं संप्रकाशयेत् ॥ हे.त.23ख/76.

རྣམ་དཀྲིས *भू.का.कृ.* आवृतः – ཇི་ལྟར་བདག་མེད་རྣལ་འབྱོར་མ།...སྟག་གི་ལྤགས་པས་རྣམ་དཀྲིས་སྐེད།། यथा नैरात्म्ययोगिनी... व्याघ्रचर्मावृता कटिः हे.त.9ख/26.

རྣམ་བཀོད = རྣམ་པར་བཀོད་པ།

རྣམ་བཀོད་པ = རྣམ་པར་བཀོད་པ།

རྣམ་བཀྲ = རྣམ་པར་བཀྲ་བ།

རྣམ་བཀྲ་བ = རྣམ་པར་བཀྲ་བ།

རྣམ་བཀྲམ = རྣམ་པར་བཀྲམ་པ།

རྣམ་བཀྲམ་པ = རྣམ་པར་བཀྲམ་པ།

རྣམ་སྐྲག • *वि.* विह्वलः – བདག་ནི་འཇིགས་པས་རྣམ་སྐྲག་པས། །ཀུན་ཏུ་བཟང་ལ་བདག་ཉིད་འབུལ།། समन्तभद्रायात्मानं ददामि भयविह्वलः । बो.अ.6क/2.50; • *भू.का.कृ.* वित्रस्तः – དེར་ནི་དེ་མཐོང་རྣམ་པར་སྐྲག།། तं दृष्ट्वा तत्र वित्रस्ताः अ.क.297ख/39.5; དེ་དག་རྣམ་སྐྲག་འཇིགས་པ་དང་། །ཕན་ཚུན་དུ་ནི་རྣམ་པར་རྒྱུ།། वित्रस्ता तेऽपि भीता वै विचरन्ति इतस्ततः । म.मू.198ख/213; संत्रस्तः – རི་དྭགས་མོ་བཞིན་རྣམ་སྐྲག་པའི།། संत्रस्तां हरिणीमिव अ.क.206ख/23.39.

རྣམ་སྐྲག་པ = རྣམ་སྐྲག།

རྣམ་བརྒྱངས *वि.* विसारिणी – विसृत्वरो विसृमरः प्रसारी च विसारिणी अ.को.3.1.29.

རྣམ་བསྒྲིད = རྣམ་པར་བསྒྲིད་པ།

རྣམ་བསྒྲིད་པ = རྣམ་པར་བསྒྲིད་པ།

རྣམ་བསྐྲུན = རྣམ་བསྐྲུན་པ།

རྣམ་བསྐྲུན་པ • *सं.* उद्भवः – རིན་ཆེན་ཁང་པར་གསར་པ་ཡི། །ལོངས་སྤྱོད་འབྱོར་པས་རྣམ་བསྐྲུན་པའི། །རྩེ་དགའ་བཏང་ནས रत्नहर्म्येषु नवतासम्भोगविभवोद्भवम् । त्यक्त्वा विलासम् अ.क.315क/40.91; • *वि.* विधायी – མཚར་བའི་ལས་ཀྱིས་རྣམ་བསྐྲུན་པ། །སྐྲུན་བྱེད་སྣ་ཚོགས་རྣམ་པར་བཀྲ། །ངོ་མཚར་རི་མོ་བཀོད་པ་ལ། །གཅོད་པར་བྱེད་པའི་དབང་ཕྱུག་སུ།། विधेर्विविधवैचित्र्यचित्रकर्मविधायिनः । आश्चर्यरेखाविन्यासं कः परिच्छेत्तुमीश्वरः ॥ अ.क.38क/4.12; • *भू.का.कृ.* विनिहितः – དཔལ་ལྡན་འཇིག་རྟེན་བསྐྱབ་བློ་རྣམ་བསྐྲུན་སྐྱོང་བ་ཀུན་གྱི་འབྲས་བུ་སྟེར།། श्रीमान् सर्वप्रणयिफलदः…लोकत्राणे विनिहितमतिः अ.क.70क/6.190.

རྣམ་ཕེངས बिब्बोकः मि.को.42क।

རྣམ་ཁྱབ • *वि.* विपूर्णः – ཀུན་དགའ་རྣམ་པར་ཁྱབ་པ་དེ་མཐོང་ནས།། दृष्ट्वा तमानन्दविपूर्णमानसम् अ.क.193क/22.10; • *सं.* = རུ་ཏ वाप्यम्, कुष्ठम् मि.को.57ख।

རྣམ་མཁྱེན = རྣམ་པར་མཁྱེན་པ།

རྣམ་འཁོར • *क्रि.* भ्रमति लो.को.1386; • *सं.* विभ्रमः श.को.758.

རྣམ་འཁྲུགས = རྣམ་པར་འཁྲུགས་པ།

རྣམ་ཕྱུར = རྣམ་པར་ཕྱུར་པ།

རྣམ་གྲགས = རྣམ་པར་གྲགས་པ།

རྣམ་གྲགས་རྒྱལ་པོ *ना.* विघुष्टराजः लो.को.1386.

རྣམ་གྲངས 1. पर्यायः – དཔེར་ན་མིག་ནི་མིག་ཅེས་བྱ་བའི་རྣམ་གྲངས་དེ་ལས་གཞན་པ་འདྲེན་བྱེད་དང་གསལ་བྱེད་དང་ཁྲིད་བྱེད་དང་ལྟ་བ་ལ་སོགས་པ་རྣམ་གྲངས་སུ་གཏོགས་པ་གཞན་དག་ཏུའང་འགྱུར་ཏེ यथा चक्षुश्चक्षुरित्येतस्मात्पर्यायादन्येष्वपि नेत्राक्षिनयनलोचनादिषु पर्यायान्तरेषु क्षरति अभि.स.भा.9क/10; དྲི་མ་རྣམས་ནི་ཟག་པའི་རྣམ་གྲངས་ཡིན་པའི་ཕྱིར་རོ།། मलानामास्रवपर्यायत्वात् अभि.स्फु.6ख/11; བརྟན་པ་དང་མི་མཛེད་པ་དང་བཟོད་པ་ཞེས་བྱ་བ་ནི་རྣམ་གྲངས धृतिः सहनं क्षान्तिरिति पर्यायाः सू.अ.149ख/31 2. = རྣམ་གྲངས་ཉིད पर्यायता – ཐ་དད་པ་འང་དེ་བཞིན་ནོ། །དེ་ལས་རྣམ་གྲངས་ག་ལ་ཡིན།། विभेदोऽपि तथैवेति कुतः पर्यायता ततः । त.स.38ख/399 3. प्रकारः – ཁྱེད་གཉིས་ཀྱིས་རྣམ་གྲངས་གང་གིས་ཀྱང་གྲོ་བཞིན་སྐྱེས་རྣ་བ་བྱེ་བ་རི་གཏང་བར་མི་བྱའོ།། पुत्रौ युवाभ्यां न केनचित् प्रकारेण श्रोणः कोटीकर्णो मोक्तव्यः वि.व.254ख/2.156; རྣམ་གྲངས་དེ་དག་ཉིད་ཀྱིས་ནི། །དེ་ལ་སྨྲ

གཞན་དག་གིས་ཡང་། །བརྗོད་པ་འབྲས་བུ་ཡོད་མིན་ལ། །བརྗོད་ན་འབྲས་བུ་ཉིད་དུ་ངེས॥ <?> एतेनैव प्रकारेण नान्येषामप्युदीरणम्। सफलं तत्र शब्दानामुक्तौ पर्यायिता ध्रुवम्॥ त.स.41ख/423.

རྣམ་གྲངས་ཀྱི་སྒོ་ནས अर्थतः – ད་ནི་རྣམ་གྲངས་ཀྱི་སྒོ་ནས་ཡིན་གྱི་ཞལ་ནས་ནི་མ་ཡིན་པས་ཁྱད་པར་ཡོད་དོ॥ इदानीमर्थतो न कण्ठत इति विशेषः अभि.स्फु.113ख/805.

རྣམ་གྲངས་ཀྱིས = ཅིག་ཅར་མ་ཡིན་པར पर्यायेण, अयुगपत् – ཡང་བྱུང་མེད་ཀྱི་སེམས་ལས་རྣམ་གྲངས་ཀྱིས་ཞེས་བྱ་བ་རྒྱས་པར་འབྱུང་བ་ནི་ཅིག་ཅར་མ་ཡིན་པར་རྣམ་གྲངས་ཀྱིས अथ पुनः पर्यायेणेति विस्तरः। पर्यायेण अयुगपत् अभि.स्फु.326ख/1220.

རྣམ་གྲངས་ཀྱི་ཚིག • सं. पर्यायवचनम् – བློ་གྲོས་ཆེན་པོ...དེ་ནི་དེ་བཞིན་གཤེགས་པའི་ཚིག་བླ་དྭགས་ཏེ་རྣམ་གྲངས་ཀྱི་ཚིག་གོ॥ तथागतस्य एतन्महामते [अधिवचनं] पर्यायवचनम् ल.अ.131ख/78; • वि. पर्यायवाचकः – དངོས་པོ་རེ་རེ་ལ་རྣམ་གྲངས་ཀྱི་ཚིག་གི་སྒྲ་མང་པོ་རྣམ་པར་བརྟགས་པ་ཡོད་དེ एकैकस्य भावस्य बहवः पर्यायवाचकाः शब्दा भवन्ति विकल्पिताः ल.अ.132क/78.

རྣམ་གྲངས་བརྗོད་པ पर्यायोक्तम् – རྣམ་པ་གཞན་དག་བརྗོད་པ་གང་། །དེ་ནི་རྣམ་གྲངས་བརྗོད་པར་འདོད॥ यत् प्रकारान्तराख्यानं पर्यायोक्तन्तदिष्यते ॥ का.आ. 332क/2.292.

རྣམ་གྲངས་ཉིད पर्यायता – གཞན་དུ་དངོས་པོ་གཅིག་པུ་ལ། །སྒྲ་འམ་བློ་གཅིག་གིས་ཁྱབ་ན། །གཞན་ཡུལ་མ་ཡིན་དེ་ཡི་ཕྱིར། །རྣམ་གྲངས་པ་ནི་ཉིད་དུ་འགྱུར॥ अन्यथैकेन शब्देन व्याप्त एकत्र वस्तुनि। बुद्ध्या वा नान्यविषय इति पर्यायता भवेत्॥ प्र.वृ.276ख/18.

རྣམ་གྲངས་པ पर्यायिता – ཇི་ལྟར་བརྟགས་པའི་བརྗོད་བྱ་ཐ་དད་པས་རྣམ་གྲངས་པ་མ་ཡིན་པར་བསྟན་པ यथा पर्यायिता कल्पितवाच्यभेदान्नेति प्रतिपादितम् प्र.अ.90क/97; पार्यायिकम् – རྣམ་གྲངས་ལས་བྱུང་བས་ན་རྣམ་གྲངས་པ་སྟེ། རྣམ་པ་འགའ་ཞིག་གིས་ཡིན་ཞེས་བྱ་བའི་ཐ་ཚིག་གོ॥ पर्याये भवं पार्यायिकम्। केनचित् प्रकारेण भवतीत्यर्थः. अभि.स्फु.195क/957; ཞེས་མིག་ལ་སོགས་པ་རྣམ་གྲངས་པའི་ཟག་པ་དང་བཅས་པ་ཡང་ཡིན་ཟག་པ་མེད་པ་ཡང་ཡིན་པ་ཉིད་དུ་རྟོག་པས་ཐེ་ཚོམ་དུ་འགྱུར་རོ॥ इति पार्यायिकं सास्रवानास्रवत्वं चक्षुरादीनां कल्प्यत इति सन्देहः अभि.स्फु.11ख/18.

རྣམ་གྲངས་པ་ཉིད = རྣམ་གྲངས་ཉིད།

རྣམ་གྲངས་པའི་སྐྱེས་བུ་དམ་པ་ཉིད पार्यायिकं सत्पुरुषत्वम् – གཞན་དག་ལ་ཡང་སྡིག་པ་རྣམ་པ་ལྔ་གཏན་མི་བྱེད་པའི་སྡོམ་པ་ཐོབ་པའི་ཕྱིར་དང་ཉོན་མོངས་པ་མི་དགེ་བ་ཕལ་ཆེར་སྤངས་པའི་ཕྱིར་རྣམ་གྲངས་པའི་སྐྱེས་བུ་དམ་པ་ཉིད་ཡོད་མོད་ཀྱི अन्येषामप्यस्ति पार्यायिकं सत्पुरुषत्वम्। पञ्चविधस्य पापस्यात्यन्तमकरणसंवरप्रतिलम्भात्, प्रायेणाकुशलप्रहाणाच्च अभि.भा. 24क/957.

རྣམ་གྲངས་མེད་པ། ०པར अव्य. निष्पर्यायम्, ०येण – སྒྲ་གཅིག་ཉིད་ཡིན་ན་ལེགས་པར་བྱས་པ་དང་ལེགས་པར་མ་བྱས་པའི་གནས་སྐབས་གཉིས་རྣམ་གྲངས་མེད་པར་མི་འགྱུར་ཏེ शब्दस्यैकत्वे सति संस्कृतासंस्कृतत्वे द्वे अवस्थे निष्पर्यायेण न प्राप्नुतः त.प.141क/734; འདི་དག་ནི་རྣམ་གྲངས་མེད་པར་ཟག་པ་མེད་པ་ཁོ་ན་ཡིན་གྱི निष्पर्यायमनास्रवा एवामी अभि.स्फु.11ख/18.

རྣམ་གྲངས་གཞན། अपरः पर्यायः – སྐྱེས་བུ་དམ་པའི་ཤེས་རབ... དེ་ནི་རྣམ་པ་ལྔར་བལྟ་བར་བྱ་སྟེ།... རྣམ་གྲངས་གཞན་ཡང...ཆ་ཕྲ་བ་དང...རྟོགས་པ་དང་ལྡན་པའོ།། सत्पुरुषप्रज्ञा। सा पञ्चविधा...अपरः पर्यायः। सूक्ष्मा ...अधिगमोपेता बो.भू.114क/147; पर्यायान्तरम्– བཅོམ་ལྡན་འདས... སྐྱེ་བ་མེད་པ་དང་འགོག་པ་མེད་པ་འདི་དངོས་པོ་མ་མཆིས་པའམ། འོན་ཏམ་འདི་དེ་བཞིན་གཤེགས་པའི་རྣམ་གྲངས་གཞན་ལགས། तत्किमयं भगवन् अभावोऽनिरोधानुत्पादः, उत तथागतस्यैतत्पर्यायान्तरम् ल.अ.131ख/77; द्र. རྣམ་གྲངས་སུ་གཏོགས་པ་གཞན།

རྣམ་གྲངས་སུ་གཏོགས་པ་གཞན། पर्यायान्तरम्– དཔེར་ན་མིག་ནི་མིག་ཅེས་བྱ་བའི་རྣམ་གྲངས་དེ་ལས་གཞན་པ་འཛིན་བྱེད་དང་གསལ་བྱེད་དང་ཁྲིད་བྱེད་དང་ལྟ་བ་ལ་སོགས་པ་རྣམ་གྲངས་སུ་གཏོགས་པ་གཞན་དག་ཏུའང་འགྱུར་ཏེ यथा चक्षुश्चक्षुरित्येतस्मात् पर्यायादन्येष्वपि नेत्राक्षिनयनलोचनादिषु पर्यायान्तरेषु क्षरति अभि.स.भा.9क/10; द्र. རྣམ་གྲངས་གཞན།

རྣམ་གྲོལ = རྣམ་པར་གྲོལ་བ།

རྣམ་གྲོལ་སྐུ *पा.* विमुक्तिकायः – རྣམ་གྲོལ་ཆོས་ཀྱི་སྐུ་དག་ནི། །རྣམ་གཉིས་རྣམ་གཅིག་ཤེས་བྱ་སྟེ།། विमुक्तिधर्मकायौ च वेदितव्यौ द्विरेकधा। र.वि.117क/83; विमोक्षाङ्गः – གྲོལ་བ་ཐར་པ་རྣམ་གྲོལ་སྐུ། །རྣམ་གྲོལ་ཞི་བ་ཞི་བ་ཉིད།། मुक्तिर्मोक्षो विमोक्षाङ्गो विमुक्तिः शान्तता शिवः॥ वि.प्र.156क/3.105.

རྣམ་གྲོལ་གྱི་ཡེ་ཤེས་གཟིགས་པ = རྣམ་པར་གྲོལ་བའི་ཡེ་ཤེས་གཟིགས་པ།

རྣམ་གྲོལ་འགྱུར = རྣམ་པར་གྲོལ་བར་འགྱུར།

རྣམ་གྲོལ་བརྙེས विमुक्तिलाभी लो.को.1387.

རྣམ་གྲོལ་ཏོག विमुक्तकेतुः लो.को.1387.

རྣམ་གྲོལ་བདག *वि.* विमुक्तात्मा–བགེགས་སོགས་པ་ལས་རྣམ་གྲོལ་བདག།། विघ्नादिभिर्विमुक्तात्मा ज्ञा.सि.53ख/138; विविक्तात्मा – སྣ་ཚོགས་རྟོག་ལས་རྣམ་གྲོལ་བདག།། नानाकल्पविविक्तात्मा ज्ञा.सि.56ख/146; द्र. རྣམ་པར་གྲོལ་བའི་བདག་ཉིད།

རྣམ་གྲོལ་སྡེ *ना.* विमुक्तसेनः, आचार्यः – འཕགས་པ་རྣམ་གྲོལ་སྡེ आर्य विमुक्तसेन लो.को.1387; བཙུན་པ་རྣམ་གྲོལ་སྡེ भदन्त विमुक्तसेन लो.को.1387.

རྣམ་གྲོལ་བ = རྣམ་པར་གྲོལ་བ།

རྣམ་གྲོལ་བྱེད = རྣམ་པར་གྲོལ་བར་བྱེད་པ།

རྣམ་གྲོལ་མིན *क्रि.* न विमुच्यते – རང་རིག་བདག་ཉིད་དག་པ་ཉིད། །དག་པ་གཞན་གྱིས་རྣམ་གྲོལ་མིན།། स्वसंवेद्यात्मिका शुद्धिर्नानि[? र्नान्य]शुद्ध्या विमुच्यते। हे.त.10ख/32.

རྣམ་གྲོལ་གཙུག विमुक्तचूडः लो.को.1387.

རྣམ་གྲོལ་མཛད = རྣམ་པར་གྲོལ་བར་མཛད་པ།

རྣམ་གྲོལ་རེག་མཛད་པ *वि.* विमुक्तिस्पर्शनः – བདུད་འཇོམས་མཛད་པ་ལྟ་ངན་སྦྱོང་བ་པོ། །སྲིད་པ་སྐེམས་པ་རྣམ་གྲོལ་རེག་མཛད་པས། །ཆོས་ཀྱི་ཚུལ་ཡང་བསྐྱུད་པར་མི་འགྱུར་བར། །སེམས་ཅན་རིན་ཆེན་སྦྱོད་མཆོག་བསྟན་དུ་གསོལ།། मारभञ्जन कदृष्टिशोधना तृष्णशोषण विमुक्तिस्पर्शना। धर्मनेत्रि रयिन प्रमुह्यत सत्त्वरत्न निगदोत्तमां चरिम्॥ रा.प.231ख/124.

རྣམ་གྲོལ་ལམ = རྣམ་པར་གྲོལ་བའི་ལམ།

རྣམ་དགོད་པ = རྣམ་པར་དགོད་པ།

རྣམ་འགར་ *अव्य.* कथञ्चन – དེ་ལའང་ཁྱབ་པར་བྱེད་པའི་ཆོས། །ཁྱབ་བྱ་ལྡོག་པའི་གོ་བྱེད་འདོད། །གལ་ཏེ་རང་གི་ལྡོག་པ་ནི། །རྣམ་འགར་ཡོངས་སུ་བཅད་ན་འོ།། तत्रापि व्यापको धर्मो निवृत्तेर्गमको मतः। व्याप्यस्य स्वनिवृत्तिश्चेत् परिच्छिन्ना कथञ्चन ॥ प्र.वा.122क/2.98.

རྣམ་འགས་ *अव्य.* कथञ्चित् – རྣམ་འགས་ཕན་གདགས་བྱ་མིན་ཕྱིར། །མི་རྟག་ན་ཡང་ཚད་མེད་ཉིད།། कथञ्चिन्नोपकार्यत्वादनित्येऽप्यप्रमाणता ॥ प्र.अ.29ख/34.

རྣམ་འགོག = རྣམ་པར་འགོག་པ།

རྣམ་འགོག་པ = རྣམ་པར་འགོག་པ།

རྣམ་འགྱུར = རྣམ་པར་འགྱུར་བ།

རྣམ་འགྱུར་ཅན = རྣམ་པར་འགྱུར་བ་ཅན།

རྣམ་འགྱུར་དང་བྲལ་བ *वि.* निर्विकारः – བཟོད་པ་སྨྲ་བས་རྣམ་འགྱུར་དང་། །བྲལ་བའི་ཡིད་ཀྱིས་དེ་ལ་སྨྲས།། निर्विकारेण मनसा क्षान्तिवादी जगाद तम् ॥ अ.क.252ख/29.61.

རྣམ་འགྱུར་ལྡན་པ *वि.* सविकारः – དེ་ནི་འོང་བ་མཐོང་གྱུར་ནས། ...།དེ་ནི་རྣམ་འགྱུར་ལྡན་པར་གྱུར།། तां दृष्ट्वैव समायातां...सविकारो बभूव सः ॥ अ.क.10ख/50.103; सविभ्रमः – ཞེས་བསམས་དེ་ཡིས་དཔལ་བུ་ཡིས། ...།རྣམ་འགྱུར་ལྡན་པས་དེ་ལ་སྨྲས།། इति संचिन्त्य सा स्वैरं तमुवाच सविभ्रमम्। अ.क.262क/31.31.

རྣམ་འགྱུར་དཔེ *पा.* विक्रियोपमा, उपमाभेदः – ལུས་ཕྲ་ཁྱོད་ཀྱི་བཞིན་རས་ནི། །ཟླ་བའི་དཀྱིལ་འཁོར་ལས་བརྟོན་བཞིན། །པད་མའི་ནང་ནས་བྱུང་བ་བཞིན། །ཞེས་པ་འདི་ནི་རྣམ་འགྱུར་དཔེ།། चन्द्रबिम्बादिवोत्कीर्णं पद्मगर्भादिवोद्धृतम्। तव तन्वङ्गि वदनमित्यसौ विक्रियोपमा ॥ का.आ.323ख/2.41.

རྣམ་འགྱུར་སྦེད་པ अवहित्था – अवहित्थाकारगुप्तिः अ.को.1.8.34; अवहीयते गोप्यते आकारोऽत्रेति अवहित्था। ओहाक् त्यागे अ.वि.1.8.34.

རྣམ་འགྱུར་མི་མངའ = རྣམ་འགྱུར་མི་མངའ་བ།

རྣམ་འགྱུར་མི་མངའ་བ *वि.* निर्विकारः – དེ་ནས་བཅོམ་ལྡན་ཀུན་མཁྱེན་གྱིས། ... །རྣམ་འགྱུར་མི་མངའ་བཞིན་འཛུམ་པས། །འདི་དག་ཅི་ཞེས་དེ་ལ་གསུངས།། भगवानथ सर्वज्ञः...किमेतदिति तानूचे निर्विकारस्मिताननः ॥ अ.क.54क/6.7; द्र. རྣམ་འགྱུར་མེད་པ།

རྣམ་འགྱུར་མེད = རྣམ་འགྱུར་མེད་པ།

རྣམ་འགྱུར་མེད་པ *वि.* अविकारः – བྱམས་པས་དག་ཅིང་རྣམ་འགྱུར་མེད་པ་རྒྱ་ཆེའི་སྙིང་སྟོབས་དང་།། मैत्रीपवित्रमविकारमुदारसत्त्वम् अ.क.18ख/51.48; निर्विकारः – ཐུབ་པས་རྣམ་འགྱུར་མེད་པར་བྱིན།། मुनिना निर्विकारेण दत्तम् अ.क.29क/3.114; ཅི་སྟེ་འདི་དོན་དམ་པར་རྣམ་པར་འགྱུར་བ་མེད་པ་ཉིད་དེ། བདེ་བ་ལ་སོགས་པའི་རྟོགས་པ་འཁྲུལ་པ་ཉིད་དོ་ཞེ་ན अथ निर्विकारोऽसौ परमार्थतः भ्रान्तिरेव तु सुखित्वादिप्रतिपत्तिः प्र.अ.131ख/140.

རྣམ་འགྲེལ = རྣམ་པར་འགྲེལ་བ •*क्रि.* विवृणोति – འདི་ཉིད་རྣམ་པར་འགྲེལ་བ་ནི एतदेव विवृणोति त.प.146क/744; རབ་ཏུ་འཇོག་པ་དང་རྣམ་པར་འབྱེད་པ་དང་རྣམ་པར་འབྲེལ་[? འགྲེལ] པ་ནི་གོ་རིམས་བཞིན་དུ་བསྟན་པ་དང་རྣམ་པར་འབྱེད་པ་དང་ཐེ་ཚོམ་གཅོད་པ་རྣམས་ཀྱིས་སོ།། प्रस्थापयति विभाजयति विवृणोति यथाक्रममुद्देशविभागसंशयच्छेदैः सू.व्या.183ख/79; •*सं.* 1. वार्त्तिकम्, टीकाविशेषः – རྣམ་འགྲེལ་གྱི་མཆན་ཉིད

ནི། མདོ་རྣམས་ལ་མི་རིགས་པར་བརྐྱལ་བ་དང་དེའི་ལན་དང་ཁྱད་པར་བརྗོད་པ་ཡིན་ཏེ सूत्राणामनुपपत्तिचोदना तत्परिहारो विशेषाभिधानं चेति वार्त्तिकलक्षणम् प्र. अ.171क/512; ཚད་མ་རྣམ་འགྲེལ་གྱི་རྒྱན་ལས་བསྒྲུབ་པ་དང་བསྒོམ་པ་ལ་སོགས་པ་རྣམ་པར་འགྲེལ་པ་སྔེ་དང་པོའོ॥ प्रमाणवार्त्तिकालङ्कारे विधिभावनादि वार्त्तिकं प्रथमम् प्र.अ.18ख/21 2. विवरणम्– འཕགས་པ་ཆོས་ཀྱི་དབྱིངས་ཀྱི་སྙིང་པོའི་རྣམ་པར་འགྲེལ་བ आर्यधर्मधातुगर्भविवरणम् क.त.4101; म.व्यु.1450(30ख) 3. = རྣམ་འགྲེལ་ཉིད विवरणता – རྣམ་པར་ཕྱེ་སྟེ་ཆོས་བརྗོད་པ་གང་ཞེ་ན། སེམས་ཅན་ཤེས་རབ་རྒྱ་ཆེ་ཞིང་སངས་རྒྱས་ཀྱི་བསྟན་པའི་ཚུལ་ལ་ལེགས་པར་ཞུགས་པ་རྣམས་ལ། ཤིན་ཏུ་རྒྱ་ཆེ་ཞིང་ཟབ་པའི་གནས་རྣམ་པར་འགྲེལ་བ་གང་ཡིན་པའོ॥ विवृतधर्माख्यानं कतमत्। या पृथुप्रज्ञानां सत्त्वानां सुखप्रविष्टबुद्धशासननयानामत्युदारगम्भीरस्थानविवरणता बो.भू.49ख/58.

རྣམ་འགྲེལ་བྱེད་པ वार्त्तिककारः, वार्त्तिककर्ता – ཕྱོགས་ཀྱི་མཚན་ཉིད་བྱས་པ་འདི་ནི་རྣམ་འགྲེལ་བྱེད་པ་ཉིད་ཀྱིས་ཡིན་ནོ॥ वार्त्तिककारस्यैवेयं स्वयं पक्षलक्षणस्य कृतिः प्र.अ.171क/512; རྣམ་བཤད་བྱེད་པའི་[ཁསམ་པ]སུན་དབྱུང་[? ཕྱུང་]ནས་རྣམ་འགྲེལ་བྱེད་པ་ལ་གནས་པའི་ཕྱོགས་ལ་སྨྲས་[? སྨྲས་]པ་དེ་ཉིད་བསྟན་པར་བྱ་བ་ནི<?> तत्र भाष्यकारमतं दूषयित्वा वार्त्तिककारो यं स्थितपक्षमाह वा.टी.107क/73.

རྣམ་འགྲེལ་མཛད་པ •क्रि. विवृणोति – སློབ་དཔོན་གྱིས་ཀྱང་དེ་དག་ནི་དོན་གྱི་ཤུགས་ཀྱིས་བཤད་པ་ཡིན་ནོ་ཞེས་བྱ་བར་གཟིགས་ནས་རྣམ་པར་འགྲེལ་བར་མཛད་དེ आचार्योऽपि अर्थापत्त्या उक्ता एत इति पश्यन् विवृणोति अभि.स्फु.192क/954; •सं. वार्त्तिककृत् – དེས་ན་རྣམ་འགྲེལ་མཛད་པས་ཕྱུགས་བཏང་སྙོམས་སུ་མཛད་དོ॥ *** प्र.अ.181ख/647; द्र. རྣམ་འགྲེལ་བྱེད་པ།

རྣམ་འགྲོལ = རྣམ་པར་འགྲོལ་བ།

རྣམ་རྒྱལ = རྣམ་པར་རྒྱལ་བ།

རྣམ་རྒྱལ་ཅན = རྣམ་པར་རྒྱལ་བ་ཅན།

རྣམ་རྒྱལ་བ = རྣམ་པར་རྒྱལ་བ།

རྣམ་རྒྱལ་བ་ཅན = རྣམ་པར་རྒྱལ་བ་ཅན།

རྣམ་རྒྱལ་བ་དན = རྣམ་པར་རྒྱལ་བའི་བ་དན།

རྣམ་རྒྱལ་བུམ་པ विजयकलशः, कलशभेदः – རྣམ་རྒྱལ་བུམ་པ ...ལྟོ་བ་རིན་ཆེན་ལྔས་གང་བ॥ विजयकलशम्...पञ्चरत्नोदरम् हे.त.25ख/84.

རྣམ་རྒྱལ་བྱེད = རྣམ་པར་རྒྱལ་བྱེད།

རྣམ་རྒྱལ་མ = རྣམ་པར་རྒྱལ་མ།

རྣམ་རྒྱལ་ཞབས *ना.* विजयपादः, आचार्यः ब.अ.380.

རྣམ་རྒྱལ་ཤིང वैजयन्तिका, वृक्षविशेषः – जया जयन्ती तर्करी नादेयी वैजयन्तिका ॥ अ.को.2.4.65; विजयते शोभादिकमनयेति वैजयन्तिका अ.वि.2.4.65.

རྣམ་རྒྱས = རྣམ་པར་རྒྱས་པ།

རྣམ་རྒྱས་པ = རྣམ་པར་རྒྱས་པ།

རྣམ་སྒོམ = རྣམ་པར་སྒོམ་པ།

རྣམ་སྒོམ་པ = རྣམ་པར་སྒོམ་པ།

རྣམ་བརྐྱལ་བ *वि.* विलङ्घी – སྲིད་པའི་སྲེད་ལས་རྣམ་བརྐྱལ་བའི། །ལས་གཞན་འཕེན་ནུས་མ་ཡིན་ཏེ॥ अलम् ॥ नाक्षेप्तुमपरं कर्म भवतृष्णाविलङ्घिनाम्। प्र.वा. 115क/1.196; प्र.अ.128ख/138.

རྣམ་བརྒྱན = རྣམ་པར་བརྒྱན་པ།

རྣམ་བརྒྱན་པ = རྣམ་པར་བརྒྱན་པ།

རྣམ་བསྒོམ = རྣམ་པར་བསྒོམ་པ།

རྣམ་བསྒོམ་པ = རྣམ་པར་བསྒོམ་པ།

རྣམ་བསྒོམས = རྣམ་པར་བསྒོམས་པ།

རྣམ་བསྒྱིངས་པ = རྣམ་པར་བསྒྱིངས་པ།

རྣམ་བསྒྱུར = ཉི་མ विकर्तनः, सूर्यः–सूरसूर्यार्यमादित्यद्वादशात्मदिवाकराः।...विकर्तनार्कमार्तण्डमिहिरारुणपूषणः॥ अ.को.1.3.29; तमः विकृन्ततीति विकर्तनः। कृती छेदने अ.वि.1.3.29.

རྣམ་བསྒྲགས = རྣམ་པར་བསྒྲགས་པ།

རྣམ་ངེས = རྣམ་པར་ངེས་པ།

རྣམ་ངེས་བློ་གྲོས विनिश्चितमतिः लो.को.1388.

རྣམ་ཅན = རྣམ་པ་ཅན།

རྣམ་གཅིག = རྣམ་པ་གཅིག།

རྣམ་གཅིག་ཅན *वि.* एकाकारः – དངོས་པོ་ངོ་བོ་རྣམ་གསུམ་པ། །དེ་ཡི་རིག་པ་རྣམ་གཅིག་ཅན།། त्र्याकारं वस्तुनो रूपमेकाकाराश्च तद्विदः। त.स.3[क]/46; द्र. རྣམ་པ་གཅིག།

རྣམ་གཅོད = རྣམ་པར་གཅོད་པ།

རྣམ་གཅོད་པ = རྣམ་པར་གཅོད་པ།

རྣམ་གཅོད་བྱེད = རྣམ་པར་གཅོད་པར་བྱེད་པ།

རྣམ་བཅད = རྣམ་པར་བཅད་པ།

རྣམ་བཅད་པ = རྣམ་པར་བཅད་པ།

རྣམ་བཅས = རྣམ་པ་དང་བཅས་པ།

རྣམ་བཅས་རྣམ་ཤེས *पा.* साकारविज्ञानम्– གལ་ཏེ་རྣམ་བཅས་རྣམ་ཤེས་ཀྱིས། །དངོས་རྣམས་རིག་པར་ཁྱོད་འདོད་དམ། །འོན་ཏེ་རྣམ་མེད་པས་དངོས་རྣམས། །རྣམ་པར་རིག་པར་བྱེད་འདོད་པ།། यदि साकारविज्ञानविज्ञेयं वस्तु वो मतम्। अथानाकारधीवेद्यं वस्तु युष्माभिरिष्यते॥ त.स.21[क]/225.

རྣམ་བཅས་ཤེས་པ *पा.* साकारविज्ञानम् – ཇི་སྐད་རྣམ་བཅས་ཤེས་པ་ཡི། །ཕྱོགས་ལ་དོན་གྱི་གཟུགས་བརྙན་ནི། །ཕ་རོལ་པོ་ལ་དེར་ཉེ་བའི། །རྒྱུ་མཚན་ཡོད་པ་མ་ཡིན་ནོ།། न हि तत्र परस्यास्ति प्रत्यासत्तिर्निबन्धनम्। यथा साकारविज्ञानपक्षेऽर्थप्रतिबिम्बकम्॥ त.स.73[ख]/687; द्र. རྣམ་བཅས་རྣམ་ཤེས།

རྣམ་བཅིལ། °ནས विष्टभ्य – དགྲ་ཡི་དཔུང་ནི་ཤིང་རྟས་རྣམ་བཅིལ་ནས།། रथेन विष्टभ्य बलं तु विद्विषाम् जा.मा.67[ख]/78.

རྣམ་བཅུ = རྣམ་པ་བཅུ་པོ།

རྣམ་བཅུ་དབང་ལྡན *वि.* दशाकारो वशी–རྣམ་པ་བཅུ་པོ་དོན་བཅུའི་དོན། །ཐུབ་དབང་སྟོབས་བཅུ་ཁྱབ་པའི་བདག། ...།རྣམ་བཅུ་དབང་ལྡན་ཆེ་བ་པོ།། दशाकारो दशार्थार्थो मुनीन्द्रो दशबलो विभुः।...दशाकारो वशी महान्॥ वि.प्र.158[ख]/3.119.

རྣམ་བཅོམ = རྣམ་པར་བཅོམ་པ།

རྣམ་བཅོམ་པ = རྣམ་པར་བཅོམ་པ།

རྣམ་ཆད = རྣམ་པར་ཆད་པ།

རྣམ་ཆད་པ = རྣམ་པར་ཆད་པ།

རྣམ་འཆད = རྣམ་པར་འཆད་པ།

རྣམ་འཆད་པ = རྣམ་པར་འཆད་པ།

རྣམ་ཆད་མེད་པ अविच्छेदः – རུས་ནི་རྣམ་པར་མ་ཆད་ཀྱང་། །ཤེས་པར་ནུས་པ་མ་ཡིན་ནོ། །རུས་ཀྱི་དངོས་པོ་འགའ་ཡང་ནི། །རྣམ་ཆད་མེད་པར་ངེས་མ་ཡིན།། अविच्छेदश्च गोत्रस्य प्रत्येतुं शक्यते न च ॥ अविच्छेदो न नियतः कस्यचिद् गोत्रभाविनः । प्र.अ.10क/11.

རྣམ་འཇིག = རྣམ་པར་འཇིག་པ།

རྣམ་འཇིག་ཉིད विनाशित्वम् – བྱས་པ་ཉིད་དང་རྣམ་འཇིག་ཉིད། །སངས་རྒྱས་ཡེ་ཤེས་ཇི་ལྟར་འགྱུར།། कृतकत्वाद् [? त्वं] विनाशित्वं बुद्धज्ञाने कथं भवेत् ॥ ज्ञा.सि.42ख/108.

རྣམ་འཇིག་པ = རྣམ་པར་འཇིག་པ།

རྣམ་འཇིག་བྱེད = རྣམ་པར་འཇིག་པར་བྱེད་པ།

རྣམ་འཇོག = རྣམ་པར་འཇོག་པ།

རྣམ་འཇོམས = རྣམ་པར་འཇོམས་པ།

རྣམ་འཇོམས་པ = རྣམ་པར་འཇོམས་པ།

རྣམ་བརྗོད = རྣམ་པར་བརྗོད་པ།

རྣམ་ཉམས = རྣམ་པར་ཉམས་པ།

རྣམ་ཉམས་པ = རྣམ་པར་ཉམས་པ།

རྣམ་ཉེད = རྣམ་པར་ཉེད་པ།

རྣམ་ཉེད་པ = རྣམ་པར་ཉེད་པ།

རྣམ་གཉིས་སྨོངས་མེད་བདག་ཉིད་ཅན *वि.* द्वयाकाराविमूढात्मा – རང་བཞིན་གྱིས་འོད་གསལ་བའི་སེམས། །གཉིས་ཀའི་རྣམ་པས་རྙོག་མེད་པ། །རྣམ་གཉིས་སྨོངས་མེད་བདག་ཉིད་ཅན། །སུ་ཞིག་རྣམ་གཞན་དུ་བློ་བྱེད།། प्रकृत्या भास्वरे चित्ते द्वयाकारा[]कलङ्किते । द्वयाकारा[]विमूढात्मा कः कुर्यादन्यथामतिः ॥ त.स.129क/1104.

རྣམ་བཏང = རྣམ་པར་བཏང་བ།

རྣམ་རྟོག = རྣམ་པར་རྟོག་པ།

རྣམ་རྟོག་དགྲ सङ्कल्पारिः – དེ་ཉིད་སྤྱོད་པ་བླ་ན་མེད། །རྣམ་རྟོག་དགྲ་རྣམས་གསོད་བྱེད་པ།། सङ्कल्पारिनिषूदनी...तत्त्वचर्या निरुत्तरा प्र.सि.34क/81.

རྣམ་རྟོག་བཅས་པ = རྣམ་པར་རྟོག་པ་དང་བཅས་པ།

རྣམ་རྟོག་རྗེས་སུ་འབྲེལ་པ *वि.* विकल्पानुविद्धः – རྣམ་རྟོག་རྗེས་སུ་འབྲེལ་པ་ལ། །དོན་གསལ་སྣང་བ་མ་ཡིན་ནོ།། न हि विकल्पानुविद्धस्य स्पष्टार्थप्रतिभासिता । त.प.17क/480.

རྣམ་རྟོག་ཐམས་ཅད་སྤངས་པ *वि.* सर्वसङ्कल्पवर्जितः – རྣམ་རྟོག་ཐམས་ཅད་སྤངས་པ་ཡི། །སྟོང་ཉིད་སྙིང་པོ་བསྟོད་ཕྱག་འཚལ།། नमस्ते शून्यतागर्भ सर्वसङ्कल्पवर्जित । प्र.सि.31ख/74.

རྣམ་རྟོག་བདག་ཉིད་ཅན *वि.* विकल्पात्मा – གང་གིས་བརྗོད་དུ་མེད་པའི་སྤྱི། །རྣམ་རྟོག་བདག་ཉིད་ཅན་དུ་བཤད། །རྟག་པའི་རྗེས་འགྲོའི་རང་བཞིན་གྱི། །དངོས་པོ་མེད་པར་བསྟན་ཟིན་ཏོ།། विकल्पात्मा च सामान्यमवाच्यं यत् प्रकीर्तितम् । नित्यानुगतिरूपं तन्नीरूपं प्रतिपादितम् ॥ त.स.132ख/1128.

རྣམ་རྟོག་པ = རྣམ་པར་རྟོག་པ།

རྣམ་རྟོག་བྱེད •*क्रि.* विकल्पेति – རང་བཞིན་གསུམ་ལ་འཛིན་པ་ཡིས། །སོ་སོའི་སྐྱེ་བོ་གཟུང་འཛིན་ལྟ། །འཇིག་རྟེན་འདས་དང་འཇིག་རྟེན་པའི། །ཆོས་རྣམས་རྣམ་པར་རྟོག་པར་བྱེད།། स्वभावत्रयग्राहेण ग्राह्यग्राहविदृष्टयः । लौक्यलोकोत्तरान् धर्मान् विकल्पेन्ति पृथग्जनाः ॥ ल.अ.183ख/151; विकल्पयति – དེའི་ཚེ་གལ་ཏེ་ལྟ་བའི་ཤེས་པས་འགའ་ཞིག་གིས་བལྟས་ནས། ཕྱིས་མིག

བརྩམས་ཏེ་རིག་[? རིགས་]ལ་སོགས་པའི་ཆོས་ཀྱིས་རྣམ་པར་རྟོག་པར་བྱེད་པ तदाऽऽलोचनाज्ञानेन यदि कश्चिदालोच्य पश्चादक्षिणी निमील्य जात्यादिधर्मतो विकल्पयति त.प.13क/472; अवकल्प्यते – རྟོགས་པར་བྱ་བའི་དབྱེ་བ་ཡིས། །ཐ་སྙད་དུ་ནི་རྣམ་རྟོག་བྱེད།། प्रतिपाद्येन भेदेन व्यवहारोऽवकल्प्यते ॥ त.स.33ख/353; विकल्पः क्रियते – དེ་ལ་གཟུགས་སུ་རྣམ་པར་རྟོག་པར་བྱེད་དོ།། तत्र हि रूपविकल्पः क्रियते म.भा.13ख/3.16; •सं. विकल्पनम्–ལུས་ཀྱི་ནང་དུ་ཆུད་ཉིད་ན། །བསྒྲིབས་པར་གནས་པ་འབའ་ཞིག་ནི། །ཇི་ལྟར་རིག་འགྱུར་ཡུལ་གཞན་དག། །རྣམ་པར་རྟོག་པར་བྱེད་པ་ན།། शरीरान्तर्गतत्वे च केवलस्य कथं गतिः । अन्धकारस्थितस्यान्यविषयस्य विकल्पने ॥ प्र.अ.119क/127; •वि. विकल्पकः – རྣམ་པར་རྟོག་པར་བྱེད་པ་ཡིད་ཀྱི་རྣམ་པར་ཤེས་པ་དེས་གཟུགས་ཀྱི་རང་བཞིན་སྡུག་གུ་དག་ལ་ནི་ཀུན་ཏུ་ཆགས་པར་བྱེད येन विकल्पकेन मनोविज्ञानेन प्रियरूपेषु रूपेषु संरज्यते श्रा.भू.26क/65.

རྣམ་རྟོག་མི་བྱ क्रि. न परिकल्पयेत् – སེམས་ཅན་ཡོད་དང་མེད་ཅེས་པར། །རྣམ་རྟོག་ཉིད་ནི་མི་བྱའོ།། सत्त्वो नामास्ति नास्तीति न चैवं परिकल्पयेत् प्र.सि.33क/78.

རྣམ་རྟོག་མེད་པ = རྣམ་པར་རྟོག་པ་མེད་པ།

རྣམ་རྟོག་མཚུངས = རྣམ་པར་རྟོག་པ་དང་མཚུངས་པ།

རྣམ་རྟོགས་འགྱུར क्रि. 1. विजानाति – ཁྱད་པར་ཅན་གྱི་ཡུལ་ནི་དེར། །ཉེར་འཇལ་བརྟན་[? བརྟེན་]ནས་རྣམ་རྟོག་[? རྟོགས་]འགྱུར།། विशिष्टविषयं तं तु विजानात्युपमाश्रयात् ॥ त.स.57ख/553 2. व्युपपरीक्षिष्यति – ཚིག་དང་ཡི་གེ་རྣམ་པ་ཐ་དད་པ་དག་ཆུབ་པར་འགྱུར་བ་དང་རྣམ་པར་རྟོགས་པར་འགྱུར་བ་དང नानाविधानि पदव्यञ्जनान्युपनामयिष्यति व्युपपरीक्षिष्यति सु.प्र.31क/60.

རྣམ་བརྟག་པ = རྣམ་པར་བརྟག། ०པ།

རྣམ་བརྟགས = རྣམ་པར་བརྟགས་པ།

རྣམ་བརྟགས་པ = རྣམ་པར་བརྟགས་པ།

རྣམ་བརྟགས་ཞིང་ལས་བྱུང་བ वि. विकल्पक्षेत्रसम्भूतः – རྣམ་བརྟགས་ཞིང་ལས་བྱུང་བ་ཡི། །བསམ་གཏན་རྣལ་འབྱོར་པ་ཡི་ཟས།། विकल्पक्षेत्रसम्भूतध्यानाहारा हि योगिनः ॥ बो.अ.34ख/9.93.

རྣམ་བསྟན = རྣམ་པར་བསྟན་པ།

རྣམ་ཐར = རྣམ་པར་ཐར་པ།

རྣམ་ཐར་སྒོ = རྣམ་པར་ཐར་པའི་སྒོ།

རྣམ་ཐར་པ = རྣམ་པར་ཐར་པ།

རྣམ་ཐོས • ना. विश्रवाः, ऋषिः *अ.त.278; • वि. विश्रुतः मि.को.125ख।

རྣམ་ཐོས་ཀྱི་བུ ना. वैश्रवणः 1. महाराजाख्यः यक्षाधिपतिः, लोकपालश्च – རྒྱལ་པོ་ཆེན་པོ་འཕགས་སྐྱེས་པོ་དང...རྒྱལ་པོ་ཆེན་པོ་རྣམ་ཐོས་ཀྱི་བུ་དང विरूढकेन च महाराजेन...वैश्रवणेन च महाराजेन स.पु.3क/2; རྒྱལ་པོ་ཆེན་པོ་འཇིག་རྟེན་སྐྱོང་བ་བཞི་ནི།། འཕགས་སྐྱེས་པོ་དང་མིག་མི་བཟང་དང་ཡུལ་འཁོར་སྲུང་དང་རྣམ་ཐོས་ཀྱི་བུའོ།། चत्वारो महाराजानो लोकपालाः–विरूढकः, विरूपाक्षः, धृतराष्ट्रः, वैश्रवणश्च अभि.स्फु.242ख/380; གནོད་སྦྱིན་གྱི་རྒྱལ་པོ་[ཆེན་པོ་]རྣམ་ཐོས་ཀྱི་བུ वैश्रवणो महायक्षराजः स.दु.116ख/194 2. कुबेरः – སྐུ་ཞིག་འདི་ལྟར་གནས། ནོར་གྱི་བདག་པོ་རྣམ

ཐོས་ཀྱི་བུའམ་ཅིག་མ་ཡིན་ནམ།... ཡང་ན་ལྷོ་འབྱེ་ཆེན་པོའི་དབང་པོ་འམ को न्वयं निषण्णः? मा हैव वैश्रवणो धनाधिपतिर्भवेत्...अथ महोरगेन्द्रः ल.वि.69क/90; བྲམ་ཟེ་ཆེ་ཞིང་མཐོ་བ་གང་པོ་ཞེས་བྱ་བ...རྣམ་ཐོས་ཀྱི་བུའི་ནོར་དང་ལྡན་པ། རྣམ་ཐོས་ཀྱི་བུའི་ནོར་དང་འབྱོར་པ संपूर्णो नाम ब्राह्मणमहाशालः...वैश्रवणधनसमुदितो वैश्रवणधनप्रतिस्पर्धी अ.श.2क/1; वि.व.15ख/2.86; द्र. རྣམ་ཐོས་སྲས།

རྣམ་ཐོས་ཀྱི་བུའི་ནོར་དང་འབྱོར་པ *वि.* वैश्रवणधनप्रतिस्पर्धी – དེད་དཔོན་མཛའ་བོ་ཞེས་བྱ་བ་ཕྱུག་ཅིང་ནོར་མང་ལ... རྣམ་ཐོས་ཀྱི་བུའི་ནོར་དང་འབྱོར་པ་ཞིག་གནས་པ मित्रो नाम सार्थवाहो बभूव आढ्यो महाधनः...वैश्रवणधनप्रतिस्पर्धी अ.श.98क/88; བྲམ་ཟེ་ཆེ་ཞིང་མཐོ་བ་གང་པོ་ཞེས་བྱ་བ...རྣམ་ཐོས་ཀྱི་བུའི་ནོར་དང་ལྡན་པ། རྣམ་ཐོས་ཀྱི་བུའི་ནོར་དང་འབྱོར་པ संपूर्णो नाम ब्राह्मणमहाशालः...वैश्रवणधनसमुदितो वैश्रवणधनप्रतिस्पर्धी अ.श.2क/1.

རྣམ་ཐོས་ཀྱི་བུའི་ནོར་དང་ལྡན་པ *वि.* वैश्रवणधनसमुदितः – དེད་དཔོན་མཛའ་བོ་ཞེས་བྱ་བ་ཕྱུག་ཅིང་ནོར་མང་ལ...རྣམ་ཐོས་ཀྱི་བུའི་ནོར་དང་ལྡན་པ...ཞིག་གནས་པ मित्रो नाम सार्थवाहो बभूव आढ्यो महाधनः...वैश्रवणधनसमुदितः अ.श.98क/88; བྲམ་ཟེ་ཆེ་ཞིང་མཐོ་བ་གང་པོ་ཞེས་བྱ་བ...རྣམ་ཐོས་ཀྱི་བུའི་ནོར་དང་ལྡན་པ། རྣམ་ཐོས་ཀྱི་བུའི་ནོར་དང་འབྱོར་པ संपूर्णो नाम ब्राह्मणमहाशालः...वैश्रवणधनसमुदितो वैश्रवणधनप्रतिस्पर्धी अ.श.2क/1.

རྣམ་ཐོས་ཀྱི་སྲས = རྣམ་ཐོས་སྲས།

རྣམ་ཐོས་བུ = རྣམ་ཐོས་ཀྱི་བུ།

རྣམ་ཐོས་སྲས *ना.* वैश्रवणः – གཟུགས་ཅན་སྙིང་པོའང་ལུས་ཀྱི་མཐར། །དེ་དུས་ཉིད་ན་མཐོ་རིས་སུ། །དཔལ་ལྡན་རྣམ་ཐོས་སྲས་ཀྱི་བུ། །རྒྱལ་བའི་བུ་མཆོག་ཅེས་པར་གྱུར། बिम्बिसारोऽपि देहान्ते तस्मिन्नेव क्षणे दिवि। अभूज्जिनर्षभो नाम श्रीमान् वैश्रवणात्मजः ॥ अ.क.338ख/44.24; རྒྱལ་ཆེན་བཞིའི་རིགས་ཀྱི་ནི། །ལྷ་ཡི་ནང་དུ་སྐྱེས་པར་གྱུར། །དེར་ནི་རྣམ་ཐོས་སྲས་ཀྱི་བཀས། །མི་ཡི་འཇིག་རྟེན་ཁང་པ་དང་། །ལྷ་ཁང་སྒོ་ནི་མཆོད་པ་ལ། །དེ་ཡིས་ལྷག་པར་ཉེར་གནས་བྱས། चतुर्महाराजिकेषु देवेषु समजायत ॥ तत्र *वि[वै]श्रवणादेशान्मर्त्यलोके निकेतने। स चक्रे शिबिरद्वारे पूजाधिष्ठानसन्निधिम् ॥ अ.क.185ख/21.20.

རྣམ་ཐོས་སྲས་ཀྱི་སྒྲུབ་པའི་ཐབས *ना.* वैश्रवणसाधनम्, ग्रन्थः क.त.3734.

རྣམ་ཐོས་སྲས་ཀྱི་བུ वैश्रवणात्मजः – གཟུགས་ཅན་སྙིང་པོའང་ལུས་ཀྱི་མཐར། །དེ་དུས་ཉིད་ན་མཐོ་རིས་སུ། །དཔལ་ལྡན་རྣམ་ཐོས་སྲས་ཀྱི་བུ། །རྒྱལ་བའི་བུ་མཆོག་ཅེས་པར་གྱུར། बिम्बिसारोऽपि देहान्ते तस्मिन्नेव क्षणे दिवि। अभूज्जिनर्षभो नाम श्रीमान् वैश्रवणात्मजः ॥ अ.क.338ख/44.24.

རྣམ་མཐོང = རྣམ་པར་མཐོང་བ།

རྣམ་འཁོར = རྣམ་པར་འཁོར་བ།

རྣམ་འཁོར་བ = རྣམ་པར་འཁོར་བ།

རྣམ་འཁོར་གྱི་ཡི་གེ अनुद्रुतलिपिः, लिपिविशेषः – ཚངས་པའི་ཡི་གེའམ...རྣམ་འཁོར་གྱི་ཡི་གེའམ...འབྱུང་པོ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་སྒྲ་སྐད་པའི་ཡི་གེའམ... ཡི་གེ་དྲུག་ཅུ་ཙ་བཞི་པོ་དེ་དག་གི་ནང་ནས ब्राह्मी...अनुद्रुतलिपिं...सर्वभूतरुतग्रहणीम्। आसां...चतुष्षष्टिलिपीनाम् ल.वि.66ख/88.

རྣམ་དག = རྣམ་པར་དག་པ།

རྣམ་དག་རྣམ་པའི་སེམས *पा.* विशुद्ध्याकारचेतः, प्रभास्वरचित्तम् – རྣམ་དག་རྣམ་པའི་སེམས་ཀྱིས་ནི། །རང་བཞིན་མྱ་ངན་འདས་པ་ཉིད།། स्वरूपमेव निर्वाणं विशुद्ध्याकारचेतसा॥ हे.त.16क/50.

རྣམ་དག་པ = རྣམ་པར་དག་པ།

རྣམ་དག་སྤྱོད་པ *ना.* विशुद्धचारी, भिक्षुः – དགེ་སློང་རྒྱ་མཚོའི་བློ་དང་... རྣམ་དག་སྤྱོད་པ་དང सागरबुद्धिना च भिक्षुणा...विशुद्धचारिणा च ग.व्यू.314ख/36.

རྣམ་དག་བྱེད = རྣམ་པར་དག་པར་བྱེད་པ།

རྣམ་དག་བློ་གྲོས *ना.* विशुद्धमतिः, बोधिसत्त्वः – དེ་དག་ཐམས་ཅད་དུའང་ཁོ་མོ་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའི་ཡུམ་དུ་འགྱུར་རོ།། བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་བྱམས་པའི་ཡུམ་དུ་ཇི་ལྟར་འགྱུར་བ་དེ་བཞིན་དུ...རྣམ་དག་བློ་གྲོས་དང तेष्वहं सर्वत्र बोधिसत्त्वजननी भविष्यामि। यथा च मैत्रेयस्य बोधिसत्त्वस्य, तथा...विशुद्धमतेः ग.व्यू.268क/347.

རྣམ་དག་འོད་ལྡན *वि.* विशुद्धाभः – བཞིན་མདོག་པད་མ་ཟླ་བ་ལྟར། །རྣམ་དག་འོད་ལྡན་བལྟ་ན་སྡུག། जलजेन्दुविशुद्धाभं वदनं कान्तदर्शनम्॥ अ.श.145क/134.

རྣམ་དག་ལམ *पा.* विशुद्धिमार्गः लो.को.1२90.

རྣམ་དུལ = རྣམ་པར་དུལ།

རྣམ་འདུད = རྣམ་པར་འདུད་པ • *सं.* विनतिः – རྒྱལ་པོ་རྣམ་འདུད་བསྒྲུབས་པ་དེ་ནི་བཟང་སྦྱིན་དག सोऽयं राजा विहितविनतिर्भद्रकः अ.क.202ख/22.100; अवनमनम् – དེ་ལ་རྣམ་པར་འདུད་པ་དང་རབ་ཏུ་འདུད་པ་ནི་སེམས་ཅན་ཐམས་ཅད་ལ་ང་རྒྱལ་མེད་པ་ཉིད་དོ།། तत्रावनमनप्रणमनतायां सर्वसत्त्वेषु निर्मानता शि.स.86ख/85; • *ना.* विनतकः, पर्वतः – མུ་ཁྱུད་འཛིན་དང་རྣམ་པར་འདུད། །དེ་བཞིན་རི་བོ་རྟ་རྣ་དང་། །བལྟ་ན་སྡུག་དང་སེང་ལྡེང་ཅན། །གཤོལ་མདའ་འཛིན་དང་གཉའ་ཤིང་འཛིན།། निमिंधर इति विनतकः अश्वकर्णगिरिस्तथा । सुदर्शनः खदिरकः ईषाधारो युगन्धरः ॥ वि.व.175क/1.59; *विनितकः – དེ་ལ་ལྷུན་པོ་གཉའ་ཤིང་འཛིན། །གཤོལ་མདའ་འཛིན་དང་སེང་ལྡེང་ཅན། །དེ་བཞིན་བལྟ་ན་སྡུག་རི་དང་། །རྟ་རྣ་དང་ནི་རྣམ་འདུད་དང་། །མུ་ཁྱུད་འཛིན་རིའོ།། तत्र मेरुर्युगन्धरः। ईशाधारः खदिरकः सुदर्शनगिरिस्तथा॥ अश्वकर्णो विनितको निमिन्धरगिरिः अभि.को.8ख/507.

རྣམ་འདུད་སྐྱེས = རྣམ་འདུད་བུ།

རྣམ་འདུད་བུ *ना.* वैनतेयः, गरुडराजः – གང་ཡང་ནམ་མཁའ་ལྡིང་གི་རྒྱལ་པོ་དེ་དག་ཀུན་ནམ་མཁའ་ལྡིང་བརྒྱ་སྟོང་དུ་མའི་འཁོར་དང་ལྡན་པ་འཁོར་གྱི་དཀྱིལ་འཁོར་དེར་འདུས་པ་ལ་འདི་ལྟ་སྟེ། འོད་[? འདབ་]བཟང་དང་... རྣམ་འདུད་བུ་དང येऽपि ते गरुडराजास्तेऽपि तत्पर्षन्मण्डलं सन्निपतिता अनेकशतसहस्रपरिवाराः, तद्यथा–सुपर्ण...वैनतेयः म.मू.104क/13.

རྣམ་འདྲེན • *ना.* विनायकः 1. = སངས་རྒྱས बुद्धः – བློ་གྲོས་ཆེན་པོ་ཁ་ཅིག་ནི་ང་ལ་དེ་བཞིན་གཤེགས་པར་ཤེས་སོ།། ལ་ལས་ནི་རང་བྱུང་བར། དེ་བཞིན་དུ་ལ་ལས་ནི་འདྲེན་པ་དང་རྣམ་པར་འདྲེན་པ་དང केचिन्महामते तथागतमिति मां संप्रजानन्ति। केचित्स्वयंभुवमिति। नायकं विनायकम् ल.अ.132क/78 2. = ཚོགས་བདག गणेशः मि.को.86ख 3. = མཁའ་ལྡིང गरुडः मि.को.86ख 0. विनायकः – ཟླུམ་ཞིང་རྒྱས་པའི་ལག་པ་ཅན། །གྲོགས་མེད་རབ་ཏུ་འཇོམས་བྱེད་པ། །རྣམ་འདྲེན་ཁྱོད་ཀྱིས་བསྟན་པའི་ས། །མི་མཚུངས་པ་འདི་འཇིགས་པ

མེད༎ विनायकेन भवता वृत्तोपचितबाहुना। स्वमित्रोद्धारिणाऽभीता पृथ्वीयमतुलाश्रिता ॥ का.आ. 337क/3.68; •सं. = བླ་མ गुरुः मि.को.86ख।

རྣམ་འདྲེན་ཆེ = རྣམ་འདྲེན་ཆེན་པོ།

རྣམ་འདྲེན་ཆེན་པོ = སངས་རྒྱས महाविनायकः, बुद्धः – སྒྲ་འདི་ཐོས་ནས་ཚོམ་པ་རབ་སྐྱེས་ཏེ། །རྣམ་འདྲེན་ཆེན་པོ་བདག་ནི་ངོ་མཚར་གྱུར༎ आश्चर्यप्राप्तोऽस्मि महाविनायक औद्बिल्यजातो इमु घोष श्रुत्वा। स.पु.25ख/44; སྲིད་པའི་སྡུག་བསྔལ་འགོག་པར་འགྲོ་བ་ཡི། །ལམ་ནི་མཚུངས་པ་མེད་པ་ཁྱོད་ཀྱིས་བཤད། །རྣམ་པར་འདྲེན་པ་ཆེན་པོ་བརྩོན་འགྲུས་ཆེ༎ भवदुःखनिरोधगामिनी प्रतिपच्चाप्रतिमं त्वयोच्यते ॥ अतिवीर्य महाविनायक वि.व.126क/1.15; रा.प.229ख/122.

རྣམ་འདྲེན་པ = རྣམ་འདྲེན།

རྣམ་འདྲེས = རྣམ་པར་འདྲེས་པ།

རྣམ་ལྡང = རྣམ་པར་ལྡང་བ།

རྣམ་ལྡོག = རྣམ་པར་ལྡོག་པ།

རྣམ་ལྡོག་པ = རྣམ་པར་ལྡོག་པ།

རྣམ་སྡང •1. विद्वेषः, द्वेषः – རྣམ་སྡང་གིས་ནི་ལེགས་ཉིད་འཇོམས། །ཆགས་པས་ཡང་དག་མཐོ་བ་འཇོམས༎ विद्वेषः साधुतां हन्ति हन्ति लोभः समुन्नतिम् ॥ अ.क.45ख/4.110; ལེགས་པ་རྣམས་ཀྱི་ཡིད་གཙུགས་འཇོམས། །རྣམ་པར་སྡང་བའི་དུག་བཟོད་དཀའ༎ स्वच्छन्दघाती साधूनां विद्वेषविषदुःसहः। अ.क.50क/5.36 2. = དགྲ་བོ विद्विट्, शत्रुः – ལྟ་བ་ཀུན་ལ་རྣམ་སྡང་ཞིང་། །གཏི་མུག་རབ་ཏུ་རྒྱས་པ་དེས། །རྨོངས་ལས་ཟད་བྱེད་པ་ཉིད་ལ། །མངོན་པར་གུས་པ་ལྷག་པར་གྱུར༎ मौर्ख्यान्मोहप्रपन्नस्य सर्वदर्शनविद्विषः। तस्य क्षपणकेष्वेव बभूवाभ्यधिकादरः ॥ अ.क.86ख/9.3; •वि. विद्विषः – ལྷ་ལ་སོགས་པ་ཐམས་ཅད་ཀྱང་། །དེ་ནི་བསྲུང་[དེ་མི་སྲུང་]ཞིང་རྣམ་པར་སྡང་༎ सर्वदेवादयश्चापि न तं रक्षन्ति विद्विषः। ज्ञा.सि.47क/120.

རྣམ་གནས = རྣམ་པར་གནས་པ།

རྣམ་གནས་པ = རྣམ་པར་གནས་པ།

རྣམ་གནས་མ་ཡིན क्रि. न विपरिवर्तते– ཐུན་མོང་མ་ཡིན་དངོས་པོ་ལ། །བློ་ནི་རྣམ་གནས་མ་ཡིན་ཏེ༎ <?> न चासाधारणं वस्तु बुद्धौ विपरिवर्त्तते। त.स.35ख/373.

རྣམ་གཅོན = རྣམ་པར་གཅོན་པ།

རྣམ་སྣང = རྣམ་པར་སྣང་མཛད།

རྣམ་སྣང་བྱེད = རྣམ་པར་སྣང་བྱེད།

རྣམ་སྣང་མཛད = རྣམ་པར་སྣང་མཛད།

རྣམ་སྣང་མཛད་མ ना. वैरोचनी, देवी – རྣམ་སྣང་མཛད་མའི་སྐུའི་དབུས་སུ། །ཧེ་རུ་ཀ་ནི་ཞུ་བར་འགྱུར༎ वैरोचनीदेहमध्ये तु हेरुकं च द्रुतं भवेत्। स.उ.298ख/26.10; द्र. རྣམ་པར་སྣང་མཛད།

རྣམ་པ •सं. 1. = དབྱིབས आकारः, आकृतिः – སློབ་དཔོན་གྱི་གདན་ནི་གཞུའི་རྣམ་པ་གྲི་གུག་གིས་མཚན་པ་སྟེ आचार्यासनं धनुराकारं कर्तृकालाञ्छितम् वि.प्र. 137क/3.73; आकृतिः – མཆོད་ཡོན་སྦྱིན་པའི་དོན་དུ་ཤེལ་གྱི་སྣོད་ཁམ་ཕོར་གྱི་རྣམ་པ་སྟེ स्फटिकपात्रमर्घदानार्थं शरावाकृति वि.प्र.98क/3.17; རེ་ཞིག་བ་ལང་ཉིད་ལ་སོགས་པའི་རིགས་ལྟར་དེའི་རིགས་རྣམ་པའི་ཁྱད་པར་ཉིད་ལས་འགའ་ཞིག་ངེས་པར་གཟུང་བར་ནི་མི་ནུས་ཏེ། རྣམ་པ་འཚོལ་བར་མཐོང་བའི་ཕྱིར་རོ༎ न तावद् गोत्वादिजातिमिव तज्जातिमाकारविशेषादेव केचिदवधारयितुमीशते। आकृतिसङ्करस्य दर्शनात् प्र.

अ.8[ख]/10; छाया – དཔེར་ན་གསལ་བའི་མེ་ལོང་དང་། །ཇི་ལྟར་ཤིང་[ཤེལ་]གྱི་རྡོ་དང་ནི། །གང་ཞིག་ཀློ་ན་ཉེར་བྱུར་པ། །དེ་ཡི་རྣམ་པ་དེར་ཐོབ་བྱེད།། यथा वा दर्पणः स्वच्छो यथा वा स्फटिकोपलः। यदेवाऽऽधीयते तत्र च च्छायां प्रतिपद्यते ॥ त.स.10[ख]/127 2. (लाक्षणिकार्थे) आकारः – ཐོག་མར་བདེན་པ་རྣམས་ལ་མི་རྟག་པ་ལ་སོགས་པའི་རྣམ་པ་དག་གཏོད་པར་བྱེད་པ सत्येष्वनित्याद्याकाराणामादित उपनिपातनम् अभि.स्फु. 167[क]/908; རང་བཞིན་གྱིས་རྣམ་པར་དག་པའི་ཡེ་ཤེས་ཀྱི་རྣམ་པ स्वभावशुद्धो ज्ञानाकारः त.सि.66[ख]/176; ཆོས་ལ་བདག་མེད་པའི་རྣམ་པ་བསྒོམ་པ धर्मनैरात्म्याकारभावनः सू.व्या.167[क]/58; आकृतिः – བཏགས་པའི་ཆོས་ཉིད་མི་འགལ་བས། །སྟོན་པའི་རྣམ་པ་དྲོར་གྱུར་པ། །རྩེ་མོར་གྱུར་པ་གཟུགས་ལ་སོགས། །འགྲིབ་པ་མེད་ལ་སོགས་པས་ཕྱེ།། प्रज्ञप्तेरविरोधेन धर्मतासूचनाकृतिः। ऊष्मगं मूर्धगं रूपाद्यहानादिप्रभावितम् ॥ अभि.अ. 5[क]/2.9 3. प्रकारः – དེ་ལ་ཡང་མ་ཆགས་པ་དང་ཞེ་སྡང་མེད་པ་དང་གཏི་མུག་མེད་པ་ལས་སྐྱེས་པ་དང་རྣམ་པ་གསུམ་ཡོད་ལ साऽपि त्रिप्रकारा–अलोभजा, अद्वेषजा, अमोहजा अभि.भा.237[ख]/799; དུད་འགྲོར་བརྟག་པ་རྣམ་པ་མང་པོ तिर्यग्विकल्पाश्च बहुप्रकाराः जा.मा.174[ख]/201; ཁམས་ཐམས་ཅད་དང་དངོས་པོ་ཐམས་ཅད་དང་རྣམ་པ་ཐམས་ཅད་དང་དུས་ཐམས་ཅད་དུ་མཁྱེན་པ་ཐོགས་པ་མེད་པར་འཇུག་པ་གང་ཡིན་པ सर्वधातुषु सर्ववस्तुषु सर्वप्रकारेषु सर्वकालेषु यज्ज्ञानमव्याहतं प्रवर्तते बो.भू.48[क]/62; རྣམ་པ་དག་གི་དབྱེ་བས་ནི། །མཐའ་ཡས་པར་ནི་ཐལ་བ་ཡིན།། प्रकारभेदे तु पुनरनन्तत्वं प्रसज्यते ॥ प्र.अ.47[ख]/54; དྲོ་བར་གྱུར་པ་ཞེས་བྱ་བ་ནི་དྲོ་བའི་རྣམ་པའི་དགེ་བའི་རྩ་བའོ།། ऊष्मगतमिति उष्मप्रकारं कुशलमूलम् अभि. स्फु.167[क]/907; विधः – བསྟན་བཅོས་ལས་ང་རྒྱལ་རྣམ་པ་དགུ་སྟེ།...བདག་དང་འདྲའོ་སྙམ་པའི་ང་རྒྱལ་གྱི་རྣམ་པ་དང་...ཞེས་གང་བཤད་པ शास्त्रे नव मानविधा उक्ताः...सदृशोऽस्मीति मानविधाः अभि.भा.232[ख]/782; ང་རྒྱལ་གྱི་རྣམ་པ་ཞེས་བྱ་བ་ནི་ང་རྒྱལ་གྱི་རྣམ་པ་སྟེ मानविधा इति मानप्रकारः अभि.स्फु.102[क]/782; དེ་ནི་འཕགས་པ་ལ་རྣམ་པ་ལ་སོགས་པ་དེ་དག་ཀུན་ཏུ་མི་འབྱུང་བར་བསྟན་པའི་ཕྱིར...ཞེས་བྱ་བ་སྨོས་སོ།། सम्प्रति तेषां विधादीनामार्यस्यासमुदाचार उच्यते...इति अभि.स्फु.103[क]/784; आकारः – མངོན་པར་བྱང་ཆུབ་རྣམ་ལྔ་ཡི། །ཡེ་ཤེས पञ्चाकाराभिसंबोधिज्ञानेन गु.सि.13[क]/28 4. प्रकारः – དེ་ལྟར་དེ་མ་ཐག་ཏུ་བརྗོད་པའི་རྣམ་པས एवम् अनन्तरोक्तेन प्रकारेण त.प.188[क]/838; རྣམ་པ་གཞན་མེད་པར་སྟོན་པ་ཡིན་ནོ།། प्रकारान्तराभावं च सूचयति त.प.16[क]/477; རྣམ་པ་འདི་ཉིད་ཀློ་ན་ཡིས། །གསལ་བྱེད་ལ་ནི་རྣམ་རྟོག་པ། །ལྷག་མ་རྣམས་ཀུང་རྗེས་མཐུན་པར། །མཁས་པ་རྣམས་ཀྱིས་རྟོགས་པར་བྱ།། अनेनैव प्रकारेण शेषाणामपि दीपके। विकल्पानामनुगतिर्विधा[ज्ञा]तव्या विचक्षणैः ॥ का. आ.326[क]/2.114; गतिः – དེས་ན་རང་ཉིད་ངེས་པར་བརྟགས་ནས་འཇུག་པར་བྱ་བའམ་ངེས་པར་རྟོགས་པས་བསྐུལ་ནས་ཡིན་ཏེ། རྣམ་པ་གཞན་མེད་པའི་ཕྱིར་རོ།། ततः स्वयं वा निरूप्य प्रवर्त्तितव्यं निरूपकप्रेरणया गत्यन्तराभावात् प्र.अ.31[ख]/36 5. जातिः – དེ་ལྟ་བུ་ནི་འཛམ་བུ་གླིང་གི་མེ་ཏོག་པར་ཤི་ཀ་དང་མེ་ཏོག་ཛ་ཏི་དང་མེ་ཏོག་སུ་མ་ན་ལ་སོགས་པ་མེ་ཏོག་གི་རྣམ་པ་ཐམས་ཅད་ལ་ཡང་མེད་དོ།། स सर्वजम्बुद्वीपे सर्ववार्षिकाजातिसुमनादीनां पुष्पजातीनां न संविद्यते ग. व्यू.316[ख]/401; སྤོས་ཀྱི་རྣམ་པ་ཡིད་འཕྲོག་པ་ཞེས་བྱ་བ་ཡོད་དེ अस्ति...मनोहरा नाम गन्धजातिः ग.व्यू.

48क/141; जातम् – འཇིག་རྟེན་ན་མེ་ཏོག་ཕྲེང་དང་སྤོས་རྣམ་པ་སྣ་ཚོགས་རབ་མཆོག་གྱ་ནོམ་པ་གང་ཅི་ཡང་རུང་བ་ཡོད་པ यानि कानिचिन्माल्यानि गन्धजातानि च लोके विविधानि प्रवराणि प्रणीतानि बो.भू.139ख/179 6. = ངོ་བོ प्रकारः, स्वभावः – དེ་ལྟ་བུ་ཞེས་བྱ་བ་ནི་དེའི་རྣམ་པའམ་དེའི་ངོ་བོ་ཉིད་དོ། तद्रूप इति तत्प्रकारः, तत्स्वभाव इति वा अभि.स्फु.221ख/1001; आकारः – དེ་ལ་ལ་ལ་ནི་སངས་རྒྱས་སྤྱན་གྱི་རྣམ་པར་སོ། ...ལ་ལ་ནི་དམ་ཚིག་སྒྲོལ་མའི་རྣམ་པར་ཡང་དག་པར་གནས་པར་གྱུར་ཏོ། तत्र केचित् बुद्धलोचनाकारेण... केचित् समयताराकारेण संस्थिता अभूवन् गु.स.90ख/2; गतिः – འདུ་བྱེད་ཀྱི་རྣམ་པ་ཐམས་ཅད་སྙིལ་བ་དང་ལྷུང་བ་དང་རྣམ་པར་འཐོར་བ་དང་རྣམ་པར་འཇིག་པའི་ཆོས་ཅན་ཡིན་པར་རྩད་ཆོད་དེ सर्वसंस्कारगतीः शतनपतनविकिरणविध्वंसनधर्मतया पराहत्य अ.श.55क/47; रूपम् – གང་ཕའམ་མའམ...མ་གྱུར་པའི་སེམས་ཅན་དེ་ནི་རྙེད་པར་སླ་བའི་རྣམ་པ་གང་ཡང་མེད་དོ། नास्त्यसौ कश्चित्सत्त्वः सुलभरूपो यो न माताऽभूत्पिता वा ल.अ.153क/100 7. कारः, अक्षरान्ते तदक्षरवाचकः – ཨེ་ཝཾ་མ་ཡཱ་ནི། ཨེ་ཡི་རྣམ་པས་ལྷ་མོ་སྤྱན། །ཝཾ་གི་རྣམ་པས་བདག་མར་བརྗོད། एवं मया। एकारेण लोचनादेवी वंकारेण मामकी स्मृता। हे.त.2ख/4 8. = སྐུ आकृतिः, शरीरम् – དེ་ལ་ཉེར་སྦས་ཀྱིས་སྨྲས་པ། །རྒྱལ་བའི་རྣམ་པ་ཁྱོད་ཕྱག་འཚལ། उपगुप्तस्तमवदत्प्रणम्यस्त्वं जिनाकृतिः अ.क.162ख/72.67 9. = ཚུལ योगः, युक्तिः – འདི་ནི་དཔེའི་རྣམ་པ་ཡིན་ནོ་ཞེས་བྱ་བ་ནི་དཔེའི་ཚུལ་ཡིན་ནོ། གཞན་དག་ན་རེ་དཔེའི་རྣམ་པ་ཞེས་བྱ་བ་ནི་དཔེའི་རྣམ་པ་ཡིན་ནོ་ཞེས་ཟེར་ཏེ एष दृष्टान्तयोग इति। दृष्टान्तयुक्तिः। दृष्टान्तयोगः दृष्टान्तप्रकार इत्यपरे अभि.स्फु.183क/938

10. विधिः, विधानम् – ཆོས་ཀྱི་རྣམ་གྲངས་གང་ལ་ཐེག་པ་མཆོག་བསྟན་པའི་རྣམ་པ་ཡོད་པའི་ཆོས་དེའིའོ། उत्तमयानस्य देशितो विधिर्यस्मिन्धर्मे तस्य धर्मस्य सू.व्या.129ख/1 11. उल्लेखः – རྣམ་རྟོག་རྗེས་སུ་འབྲེལ་པ་ལ། །དོན་གསལ་སྣང་བ་མ་ཡིན་ཏེ། །དེ་ནི་སྤྱིའི་རྣམ་པ་ཉིད་ཀྱིས་འཇུག་པའི་ཕྱིར་རོ། न हि विकल्पानुविद्धस्य स्पष्टार्थप्रतिभासिता। सामान्योल्लेखेनैव तस्य प्रवृत्तेः त.प.17क/480 12. कोटिः – རྣམ་གསུམ་དག་པའི་ཤ་རྣམས་ནི། །མ་བརྟགས་པ་དང་མ་བསླངས་དང་། །མ་བསྐུལ་བ་ཡང་ཡོད་མེད་པས། त्रिकोटिशुद्धमांसं वै अकल्पितमयाचितम्। अचोदितं च नैवास्ति ल.अ.157ख/105 0. प्रकारः – བསྒོམ་པ་ཞེས་བྱ་བ་ནི་རྣམ་པས་སོ། भावनेति प्रकारेण ख.टी.154ख/234; गतम् – རིགས་ཀྱི་བུ་འཕགས་པ་འདི་ནི...ལྟ་བའི་རྣམ་པ་དང་དྲ་བ་ཐམས་ཅད་གཏུབ་པ་ལ་བརྩོན་པའོ། एष कुलपुत्र आर्यः... सर्वदृष्टिगतजालदालनाय प्रयुक्तः ग.व्यू.381ख/91; ལྟ་བའི་རྣམ་པ་སྤང་བ दृष्टिगतप्रतिनिस्सर्गः वि.सू.63क/79; कृतम् – ལྟ་བའི་རྣམ་པའི་སྤྲུལ་པ दृष्टिकृतनिर्माणम् द.भू.265ख/58; ལྟ་བའི་རྣམ་པ་དང་ཉོན་མོངས་པ་ཡང་དག་པར་བསྒྲུབ་པ་ཡང་དག་པ་ཇི་ལྟ་བ་བཞིན་དུ་རབ་ཏུ་ཤེས་སོ། दृष्टिकृतक्लेशसमुदागमं च यथाभूतं प्रजानाति द.भू.265ख/58; •पा. आकारः – ཤེས་པའི་རྣམ་པ ज्ञानाकारः त.प.335ख/385; རྣམ་པ་ཡོད་པར་སྣང་བ་དང་། །ཤེས་པ་དེ་ནི་འཛིན་པར་རིགས། आकारे सति विज्ञानं ग्राहकं तस्य युज्यते॥ त.स.95ख/845; རྟོག་མེད་རྣམ་པའི་ཤེས་པ་ཉིད། །དང་པོ་ཉིད་དུ་སྐྱེ་འགྱུར་ཞིང་། །དེ་ནས་བརྡ་རྣམས་ཡིད་བྱེད་ལ། །དེ་ལས་དེ་དྲན <?> अजल्पाकारमेवादौ विज्ञानं तु प्रजायते। ततस्तु समयाभोगस्तस्मात् स्मार्त्तम् त.स.28क/298; འདིའི་ཡུལ་གྱི་རྣམ་པ་ལྟ་བུའི་རྣམ

པ་ནི་ཡུལ་གྱི་རྣམ་པ་སྣེ་ཤེས་པའོ॥ विषयाकार इवाकारोऽस्य विषयाकारं ज्ञानम् प्र.अ.19ख/22; གང་དང་གང་རང་གི་ངོ་བོ་ཉིད་ཀྱིས་མི་སྣང་བའི་གཟུང་བར་མངོན་པར་འདོད་པ་དེ་ནི་རང་གི་རྣམ་པ་གཏོད་པར་[མི་]ནུས་པའི་ཕྱིར་དམིགས་པའི་རྐྱེན་དུ་འགྱུར་བ་མ་ཡིན་ཏེ། མིག་ལ་སོགས་པ་བཞིན་ནོ॥ यदेव न प्रतिभाति स्वरूपेण ग्राह्याभिमतं स न भवत्यालम्बनप्रत्ययः, स्वाकारार्पणार्थन्न सत्त्वा[? स्वाकारार्पणासमर्थत्वा]च्चक्षुरादिवत् प्र.अ.197क/211; निर्भासः – ཡུལ་དང་འདྲ་བའི་རྣམ་པ་དེ་གང་ལ་ཡོད་པ་དེ་ནི་རྣམ་བཅས་སོ॥ निर्भासः विषयसारूप्यम्, तद्यस्यास्ति तन्निर्भासि त.प.22ख/492; དོན་དམ་[དོན་མེད་]པ་ནི་དོན་གྱིས་སྟོང་པའོ॥ སྣང་བ་ནི་རྣམ་པ་སྟེ། དོན་ལ་སོགས་པ་ཞེན་པའི་རྣམ་པར་རྟོག་པ་གང་ཡིན་པ་ནམ་མཁའི་ཨུཏྤ་ལ་ལ་སོགས་པ་དོན་མེད་པར་སྣང་བའི་རྣམ་པར་རྟོག་པ། དེ་དང་མཚུངས་ཏེ असदर्थः अर्थशून्यः, उपरागः निर्भासो यस्योत्प्रेक्षितार्थादिविकल्पस्य सोऽसदर्थोपरागः व्योमा[? व्योमोत्पला]दिविकल्पः। तेन तुल्यः त.प. 105क/661; • *प्रत्य.* धाच्-प्रत्ययत्वेन प्रयोगः (རྣམ་པ་གཉིས द्विधा) – རྗེས་དཔག་རྣམ་པ་གཉིས་སུ་འདོད॥ अनुमानं द्विधेष्यते त.स.50क/494; རྣམ་པ་ལྔ पञ्चधा गु.सि.13क/28.

རྣམ་པ་གང་གིས केन प्रकारेण – དེ་[? ད་]ནི་ཇི་ལྟར་དེ་རྣམ་པ་གང་གིས་མར་མེ་སྐྱེ་བཞིན་པས་མུན་པ་སེལ་ལོ་ཞེས་བརྟག་པར་རིགས་པར་འགྱུར केन प्रकारेणेदानीमुत्पद्यमानेन प्रदीपेन तमो हतमिति युक्तं परिकल्पयितुम् प्र.प.51ख/62; केनाकारेण – ལེགས་བྱས་རྣམ་པ་གང་གིས་ནི། །འདིར་ནི་བརྐྱལ་ཞིང་བརྟགས་པ་མེད॥ न च पर्यनुयोगोऽत्र केनाकारेण संस्कृतिः। त.स. 79क/735.

རྣམ་པ་གང་གིས་ཀྱང कथञ्चन – རྣམ་པར་ཤེས་པས་ཕྱི་རོལ་དོན། །རྣམ་པ་གང་གིས་ཀྱང་མི་ཤེས॥ विजानाति न च ज्ञानं बाह्यमर्थं कथञ्चन॥ त.स.73क/682.

རྣམ་པ་ཅིས་ཀྱང कथंचित् – གང་ལ་བདག་ཡོད་མ་ཡིན་སྲོག་མེད་དང་། །རྣམ་པ་ཅིས་ཀྱང་གང་ཟག་མེད་བསྟན་པ॥ यत्रात्म नास्ति न च जीवो देशित पुद्गलोऽपि न कथंचित् रा.प.240क/137.

རྣམ་པ་དུ कति – སེམས་དང་ཕ་རོལ་ཕྱིན་པ་དུ॥ चित्तं पारमिताः कति॥ ल.अ.65क/12; कतिविधः – དེ་བཞིན་ཉིད་ནི་རྣམ་པ་དུ॥ तथता भवेत्कतिविधा ल.अ.65क/12.

རྣམ་པ་ཀུན 1. = རྣམ་པ་ཀུན་ཏུ सर्वथा – ནམ་མཁའི་མེ་ཏོག་འཕྲེང་བ་བཞིན། །དག་པ་རྣམ་ཀུན་ཉིད་དུ་མེད॥ खपुष्पमालेव सती सर्वथा नैव जायते॥ अ.क.150क/14.130; རྣམ་ཀུན་སྔོན་ནི་མེད་ངོ་བོའི། །དེ་ཡི་བདག་ཉིད་གདུ་བུ་ནི། །འབྱུང་བ་ན་ནི་དགའ་བ་བསྐྱེད॥ सर्वथाऽपूर्वरूपस्य रुचकस्य तदात्मनः। जन्मन्युत्पद्यते प्रीतिः त.स.65क/612; सर्वत्र – ཡུལ་དང་དུས་གཞན་བདག་ཉིད་ཀྱིས། །ཕྱི་རོལ་རྣམ་ཀུན་དམིགས་པ་ཡིན॥ सर्वत्रालम्बनं बाह्यं देशकालान्यथात्मकम्। त.प. 179ख/820 2. सर्वाकारः – རྣམ་ཀུན་མངོན་པར་བྱང་ཆུབ་དང་། །དྲི་མ་བག་ཆགས་བཅས་སྤངས་པ॥ सर्वाकाराभिसंबोधिः सवासनमलोद्धृतिः। र.वि.104ख/56; द्र. རྣམ་པ་ཐམས་ཅད།

རྣམ་པ་ཀུན་གྱིས सर्वथा – མཐོང་བ་གྲུབ་ཕྱིར་ཆོས་གང་ཡིན། །རྣམ་པ་ཀུན་གྱིས་དེ་ཁས་ལེན॥ दृष्टसिद्ध्यै हि यो धर्मः सर्वथा सोऽभ्युपेयते॥ त.स.81क/752.

རྣམ་པ་ཀུན་ཏུ सर्वथा – རྣམ་པ་ཀུན་ཏུ་མི་དམིགས་པ॥

सर्वथाऽनुपलम्भः सू.अ.161क/50; ལུང་དང་རིགས་པ་དང་འགལ་བས། །རྣམ་པ་ཀུན་ཏུ་འབྲས་བུ་མེད།། युक्त्यागमविरुद्धत्वात् निष्फलत्वाच्च सर्वथा ज्ञा.सि.43क/109; གང་ཞིག་རྣམ་ཀུན་དུ། །བརྗོད་པར་ནུས་མ་ཡིན་ शक्यं नैव च सर्वथाभिलपितुं यच्च सू.अ.168क/59; सर्वथैव – རྣམ་པ་ཀུན་ཏུ་ཆགས་བྲལ་བས། །ཉི་མས་བཏང་བའི་རྒྱལ་སྲིད་ནི།། राज्यं सूर्येण वैराग्यात्सर्वथैव समुज्झितम् अ.क.196ख/83.11; सर्वेण सर्वम् – རིགས་མིན་སྨྲ་དང་དམ་པ་མ་ཡིན་སྨྲ། །རྣམ་པ་ཀུན་ཏུ་ཡོངས་སུ་སྤང་བར་བྱ།། सर्वेण सर्वं परिवर्जनीया अयुक्तमन्त्राश्च अशिष्टमन्त्राः । शि.स.64क/62; सर्वप्रकारम् – རྣམ་པ་ཀུན་ཏུ་འགྲོ་ལ་ཕན་པ་ནི། །བདེ་དང་ལྡན་པ་རྟག་ཏུ་བྱེད་གྱུར་ཅིག།། सर्वप्रकारं जगतो हितानि कुर्यामजस्रं सुखसंहितानि ॥ जा.मा.5ख/5; सर्वप्रकारेण – རྣམ་པ་ཀུན་དུ་ཡོངས་སུ་བརྟགས་ནས་སྐྱོན་དང་བྲལ་བའི་བླ་མ་བསྟེན་པར་བྱ सर्वप्रकारेण परीक्षयित्वा गुरुः सेवनीयो दोषरहितः वि.प्र.92ख/3.3; सर्वतः – བདེ་བ་ཀུན་བྱེད་འོད་ཟེར་རབ་གཏོང་ཞིང་། །ནད་པ་ན་བ་གང་དག་དེས་རེག་པ། །རྣམ་པ་ཀུན་ཏུ་ནད་ཀྱི་སྡུག་བསྔལ་ཐར།། सर्वसुखावह ओसरि रश्मी ताय गिलान य आतुर स्पृष्टाः । सर्वत व्याधिदुखात्प्रतिमुक्ताः शि.स.180ख/180; सर्वशः – ཤིན་ཏུ་དགའ་བ་དེ་དག་ཀྱང་[? དང་]། །རྣམ་པ་ཀུན་དུ་ཡོངས་སུ་སྤང་།། प्रतिसंमोदनं तेभिः सर्वशः परिवर्जयेत् ॥ शि.स.32ख/31; सर्वात्मना – རྣམ་པ་ཀུན་ཏུ་ཆོས་ཀྱི་ལམ་ལ་དགའ།། सर्वात्मना धर्मपथेऽभिरेमे जा.मा.72ख/84; समन्तात् – ས་བཞིན་འགྲོ་བ་དཀར་པོའི་ཆོས་ཀྱི་སྨན་རྣམས་མ་ལུས་པའི། །རྣམ་པ་ཀུན་དུ་གཞིར་གྱུར་པ་ནི་སངས་རྒྱས་ས་ཡིན་ནོ།། क्षितिरिव निखिलानां शुक्लधर्मौषधीनां जगत इह समन्तादास्पदं बुद्धभूमिः ॥ र.वि.127क/112.

རྣམ་པ་ཀུན་ཏུའང་ सर्वथापि – རིམ་གྱིས་འབྱུང་ཡང་མགྱོགས་པ་ན། །ཅིག་ཅར་དུ་ནི་འཁྲུལ་ཞེ་ན། །ཅུང་ཟད་མིན་རྣམ་པ་ཀུན་དུའང་། །རླུང་འདི་མ་དམིགས་པ་ཡི་ཕྱིར།། लाघवात् क्रमभावेऽपि युगपद्भ्रान्तिरित्यदः । न किञ्चित् सर्वथाप्यस्मिन् वायोरनुपलम्भनात् ॥ त.स.92ख/834.

རྣམ་པ་ཀུན་དུ = རྣམ་པ་ཀུན་ཏུ།

རྣམ་པ་ཀུན་ནས समन्तात् प्रकारेण – ཕྱི་རོལ་འཁོར་བ་པའི་ལོངས་སྤྱོད་རྣམས་ལ་ཀུན་ཏེ་རྣམ་པ་ཀུན་ནས་ཡང་དག་པར་ཆགས་པ बाह्यसांसारिकभोगेषु आ समन्तात् प्रकारेण संसक्तः वि.प्र.90ख/3.3.

རྣམ་པ་ཀུན་མཁྱེན་པ सर्वप्रकारावबोधनम् – རྣམ་པ་ཐམས་ཅད་མཁྱེན་པ་ཞེས་བྱ་བ་ནི་རྣམ་པ་ཀུན་མཁྱེན་པའི་དོན་གྱིས་སོ།། सर्वथाज्ञानमिति सर्वप्रकारावबोधनार्थेन अभि.स्फु.273ख/1097.

རྣམ་པ་ཀུན་མཁྱེན་པ་ཉིད = རྣམ་ཀུན་མཁྱེན་ཉིད།

རྣམ་པ་ཀུན་གྱི་མཆོག་དང་ལྡན་པ = རྣམ་པ་ཀུན་གྱི་མཆོག་ལྡན་པ།

རྣམ་པ་ཀུན་གྱི་མཆོག་ལྡན་པ *वि.* सर्वाकारवरोपेतः – རྣམ་པ་ཀུན་གྱི་མཆོག་ལྡན་པའི། །སྐུ सर्वाकारवरोपेतः कायः वि.प्र.29क/4.1; རྣམ་པ་ཀུན་གྱི་མཆོག་ལྡན་པ། །སྟོན་པ་གང་ཚེ་འདས་གྱུར་པ།། सर्वाकारबलो[? वरो]पेतः शास्ता कालं यदाकरोत् ॥ अ.श.284क/261; རྣམ་པ་ཀུན་མཆོག་ལྡན་པ་ཡི། །རང་གི་ལྷ་ཉིད་སྐད་ཅིག་གིས། །བསྐྱེད་ལ सर्वाकारवरोपेतां झटित्येव स्वदेवताम् । निष्पाद्य ज्ञा.सि.59ख/155; རྣམ་པ་ཀུན་གྱི་མཆོག་ལྡན་པའི། །ཐ་མལ་པ་ཡི་ལུས་སྤངས་ནས།། सर्वाकारवरोपेतं...विहाय प्राकृतं कायम् गु.सि.11ख/26; द्र. རྣམ་པ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་མཆོག་དང་ལྡན་པ།

རྣམ་པ་ཀུན་གྱི་མཆོག་ལྡན་པའི་སྟོང་པ་ཉིད = རྣམ་པ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་མཆོག་དང་ལྡན་པའི་སྟོང་པ་ཉིད།

རྣམ་པ་ཀུན་གྱི་མཆོག་ལྡན་མ *वि.स्त्री.* सर्वाकारवरोपेता – རྣམ་པ་ཀུན་གྱི་མཆོག་ལྡན་མ། །ཕྱག་རྒྱ་ཆེན་མོ་དེ་ལ་འདུད།། सर्वाकारवरोपेतां महामुद्रां प्रणम्य ताम् ॥ वि. प्र.108क/1, पृ.2.

རྣམ་པ་ཀུན་མཆོག་ལྡན་པ = རྣམ་པ་ཀུན་གྱི་མཆོག་ལྡན་པ།

རྣམ་པ་ཀུན་དུ་མཆོག་ལྡན = རྣམ་པ་ཀུན་གྱི་མཆོག་ལྡན་པ།

རྣམ་པ་ཀུན་ལྡན *वि.* सर्वाकारः – རྣམ་པ་ཀུན་ལྡན་རྣམ་པ་མེད། །བཅུ་དྲུག་ཕྱེད་ཕྱེད་ཐིག་ལེ་འཆང་།། सर्वाकारो निराकारः षोडशार्धार्धबिन्दुदृक् । वि.प्र.160क/3. 121.

རྣམ་པ་འགའ་ཞིག *अव्य.* कथञ्चित् – གལ་ཏེ་ཁྱད་པར་དེ་ལ་རྣམ་པ་ཐམས་ཅད་དུ་ཡོད་པ་མ་ཡིན་པ་མ་ཡིན་ཏེ། རྣམ་པ་འགའ་ཞིག་ཡོད་པ་ཉིད་ཡིན་པའི་ཕྱིར་རོ་ཞེ་ན नातिशयस्तत्र सर्वथा नास्ति, कथञ्चित् सत एव भावादिति चेत् ? वा.न्या.333ख/54.

རྣམ་པ་འགའ་ཞིག་ལྟར कथञ्चित् – གང་ཚེ་འདོད་ཆགས་ལ་སོགས་པ་བག་ཆགས་ཀྱི་དེས་པ་ཉིད་ལས་འཇུག་པ། དེའི་ཚེ་གང་ལ་གང་གི་སྐྱེ་བ་གཞན་དང་འབྲེལ་བའི་བག་ཆགས་ཡོད་པ་དེ་ཉིད་ལས་འགའ་ཞིག་གི་ཚེ་རྣམ་པ་འགའ་ཞིག་ལྟར་རྒྱུ་འགའ་ཞིག་གིས་དེ་སད་པ་ཡིན་པའི་ཕྱིར रागादयो हि यदा वासनाबलाद् भवन्ति, तदा यस्य यत्र जन्मान्तरसङ्गता वासना तत्रैव तस्य प्रबोधः कथञ्चित् कदाचित् केनचित् हेतुनेति प्र.अ.116क/124; यथाकथंचित् – འདི་དག་ནི་རྣམ་པ་འགའ་ཞིག་ལྟར་ཐ་དད་པར་རྟོགས་པ་སྔོན་དུ་བྱས་པའི་ཐ་སྙད་ཡིན་ནོ། व्यपदेशा एते यथाकथञ्चिद् भेदपुरस्सराः प्र.अ.15ख/17.

རྣམ་པ་བརྒྱ་པ *ना.* शताकारा, गन्धर्वकन्या – དྲི་ཟའི་བུ་མོ་བརྒྱ་སྟོང་དུ་མ་དག་ཀྱང་ཚོགས་པ་འདི་ལྟ་སྟེ། དྲི་ཟའི་བུ་མོ་དགའ་བའི་བཞིན་ཞེས་བྱ་བ་དང...དྲི་ཟའི་བུ་མོ་རྣམ་པ་བརྒྱ་པ་ཞེས་བྱ་བ་དང अनेकानि च गन्धर्वकन्याशतसहस्राणि सन्निपतितानि । तद्यथा – प्रियमुखा नाम गन्धर्वकन्या... शताकारा नाम गन्धर्वकन्या का.व्यू.202क/259.

རྣམ་པ་བརྒྱ་ཡིས शतशः लो.को.1396.

རྣམ་པ་བརྒྱར शतधा – ཕུང་པོའི་རྣམ་གྲངས་ཐ་དད་པ། །ངས་ནི་རྣམ་པ་བརྒྱར་ཡང་བཤད།། पर्यायभेदं स्कन्धानां शतधा देशयाम्यहम् ॥ ल.अ.185क/154.

རྣམ་པ་ངེས་པ *वि.* आकारनियतः – ཡུལ་ངེས་པ་དང་རྣམ་པ་ངེས་པ་དེ་ནི་ཐོབ་པར་ནུས་པ་ཡིན་གྱི देशनियतम्, आकारनियतं च प्रापयितुं शक्यम् न्या.टी.38ख/26; नियताकारः – དེ་ལྟར་ན་རྟག་པ་དང་འདྲེ་ལ་སོགས་པ་ཡང་རྣམ་པ་ངེས་པ་བརྟགས་པ་ཡིན་པར་ལྟ་བ...ཡིན་ཏེ एवं नित्यत्वपिशाचादिरपि नियताकारः कल्पितो द्रष्टव्यः न्या.टी.77ख/205.

རྣམ་པ་ངེས་པ་དང་ལྡན་པ *वि.* नियताकारः – གང་རྣམ་པ་ངེས་པ་དང་ལྡན་པའི་དོན་ཡིན་གྱི། རྣམ་པ་མ་ངེས་པ་ནི་མ་ཡིན་ཏེ यो नियताकारोऽर्थः, तस्य। न त्वनियताकारः न्या.टी.77ख/204.

རྣམ་པ་ལྔས་མངོན་པར་རྟོགས་པར་བྱང་ཆུབ་པ *पा.* पञ्चाकाराभिसंबोधिः – དེ་ལྟར་རྣམ་པ་ལྔས་མངོན་པར་རྟོགས་པར་བྱང་ཆུབ་པས་སྐུ་རྟོགས་པ་ནི་བསྙེན་པའི་ཡན་ལག་སྟེ एवं पञ्चाकाराभिसम्बोधौ सेवाङ्गं कायनिष्पत्तौ वि.प्र.49क/4.51.

རྣམ་པ་ཅན उ.प. आकारः – འཇིག་རྟེན་པའི་ཤེས་རབ་ནི་སྡུག་བསྔལ་གྱི་བདེན་པ་ལ་སོགས་པའི་རྣམ་པ་ཅན་མ་ཡིན་ནོ॥ न हि लौकिकी प्रज्ञा दुःखसत्याद्याकारा अभि.स्फु.13[क]/20; དེ་བཞིན་དུ་རྗེས་སུ་དཔག་པ་ཡང་སྔོན་པོའི་རྣམ་པ་ཅན་དུ་སྐྱེ་བ་ན་སྔོན་པོ་ཁོང་དུ་ཆུད་པའི་ངོ་བོར་རྣམ་པར་གཞག་པ तद्वद् अनुमानं नीलाकारमुत्पद्यमानं नीलबोधरूपमवस्थाप्यते न्या.टी. 47[ख]/91; विधः – ཨ་རུ་ར་སོགས་ནུས་རྣམས་ཀྱི། །ཉེར་བསྟན་དེ་ལྟའི་རྣམ་ཅན་བཞིན॥ यथाऽभयादिशक्तीनामुपदेशस्तथाविधः ॥ त.स.117[ख]/1014; དེ་དག་དེ་ལྟའི་རྣམ་ཅན་གྱི། །ཡེ་ཤེས་བདེ་གཤེགས་ཉིད་འགྱུར་ཡོད॥ तेषां चैवंविधे ज्ञाने सुगतत्वं न भिद्यते । त.स.121[ख]/1051.

རྣམ་པ་གཅིག •सं. एकाकारः – དེ་ལྟ་མ་ཡིན་ན་རྣམ་པ་གཅིག་ལ་ཡང་དེ་མི་འགྱུར་རོ॥ अन्यथैकाकारेऽपि तन्न स्यात् । प्र.वृ.278[ख]/20; •वि. = རྣམ་པ་གཅིག་པ།

རྣམ་པ་གཅིག་ཏུ་ན 1. अथ वा – རྣམ་པ་གཅིག་ཏུ་ན་ད་ལྟའི་བ་ལང་གི་སྒྲའི་བློ་ནི་ཆོས་ཅན་ནོ॥ अथ वा–अद्यतनी गोशब्दबुद्धिर्धर्मिणी त.प.136[क]/723; རྣམ་པ་གཅིག་ཏུ་ན་འདིས་སྦྱོར་བར་བྱེད་པས་ནི་སྦྱོར་བ་སྟེ अथ वा–योज्यतेऽनयेति योजना त.प.3[ख]/452; རྣམ་པ་གཅིག་ཏུ་ན་ཡོན་ཏན་བརྗོད་པ་ཁོ་ནས་ཆེ་བའི་བདག་ཉིད་ཤེས་པར་བྱེད་དེ अथ वा–गुणाख्यानेनैव माहात्म्यं ज्ञाप्यते अभि.स्फु.2[ख]/4; यद्वा – རྣམ་པ་གཅིག་ཏུ་ན་གཞན་དག་མི་སྐྱོབ་པ་དང...འདོན་པར་མི་བྱེད་པ་དང...མི་དགའ་བ་ཞེས་བྱ་བ་མི་དགེ་བ་བཅུ་ཡིན་པར་འདོན་ཏོ॥ यद्वा–परेषामपरित्राणं...अस्वाध्यायः...अस्पृहा चेति दशाकुशलानि पठ्यन्ते त.प.315[क]/1096; རྣམ་པ་གཅིག་ཏུ་ན་འཇིག་པ་དང་ཤུགས་ཀྱི་བྱེ་བྲག་ཅན་གྱི་རླུང་ཞེས་འབྲུ་མང་པོ་པའོ॥ यद्वा–क्षयिणी वेगित्वसम्पद्यस्य वायोरिति बहुव्रीहिः त.प.143[ख]/739 2. एकदा – རྣམ་པ་གཅིག་ཏུ་ན་བདག་གི་ཁྱིམ་ཐབ་བཀུམ། རྣམ་པ་གཉིས་སུ་འདི་ཁྱིམ་ཐབ་ཏུ་འགྱུར་བ एकदा अनेन मम भर्ता प्रघातितोऽपर एष मे स्वामी भविष्यति वि.व. 200[ख]/1.74.

རྣམ་པ་གཅིག་བཅས वि. एकाकारः – རྣམ་པ་གཅིག་བཅས་རྣམ་ཤེས་དེ། །ཡང་དག་མ་ཡིན་ལོག་མ་ཡིན॥ तदेकाकारविज्ञानं सम्यङ् मिथ्यापि वा भवेत् । त.स. 118[ख]/1021.

རྣམ་པ་གཅིག་ཏུ་གྱུར་པ पा. एकाकारः, समाधिविशेषः – རྣམ་པ་གཅིག་ཏུ་གྱུར་པ་ཞེས་བྱ་བའི་ཏིང་ངེ་འཛིན एकाकारो नाम समाधिः म.व्यु.594(14[क]).

རྣམ་པ་གཅིག་ཏུ་རྟོག་པ पा. एकाकारपरामर्शः – རྣམ་པ་གཅིག་ཏུ་རྟོག་པའི་རྒྱུར་གྱུར་པ་རྒྱུན་དང་ཚོགས་པ་དག་གི་སྒྲས་བསྟན་པས་དེས་ན एकाकारपरामर्शहेतवश्च सम्भवन्त इत्यतः सन्तानिसमुदायिशब्दाभ्यां निर्दिश्यन्ते त.प.224[ख]/165; एकाकारप्रत्यवमर्शः – གང་གི་ཕྱིར་ཐ་དད་ན་ཡང་དོན་ཁ་ཅིག་རང་བཞིན་གྱིས་མིག་ལ་སོགས་པ་བཞིན་དུ་རྣམ་པ་གཅིག་ཏུ་རྟོགས་[? རྟོག་]པ་སྐྱེད་པར་བྱེད་པ་ལ་ནུས་པ་ཡིན་ནོ་ཞེས་བསྟན་ཟིན་ཏོ॥ यतो भेदेऽपि प्रकृत्या चक्षुरादिवदेकाकारप्रत्यवमर्शजनने समर्थाः केचिदर्था इति प्रतिपादितम् त.प.212[क]/894.

རྣམ་པ་གཅིག་ཏུ་མ་ཡིན नैकशः म.व्यु.6580(94[क]).

རྣམ་པ་གཅིག་པ वि. एकाकारः – རྐང་བཞི་རྣམ་པ་གཅིག་པ་གང་། །བྱུང་ལྡན་ཆེན་པོར་བརྗོད་པ་ཡིན॥ एकाकारचतुष्पादं यन्महायमकाह्वयम् । का.आ.3.70; སྐྱེས་བུ

དེ་དག་གི་རིག་པ་ནི་ཡང་དག་པར་རིག་པ་དག་སྟེ། རེ་རེ་ལ་ཡང་ཞེན་པ་ལ་སོགས་པ་ཙམ་ངོ་བོ་གཅིག་ངེས་པའི་ཕྱིར་རྣམ་པ་གཅིག་རིག་པར་འགྱུར तेषां पुरुषाणाम्, विदः संवित्तयः, प्रत्येकमभिष्वङ्गादिमात्रैकरूपनियमादेकाकाराः संवेद्यन्ते त.प.162ख/46; དེས་ན་རྣམ་གཅིག་ཤེས་པ་ནི། །རྡུལ་ཕྲན་རྣམས་ལ་འཐད་པ་ཉིད།། एकाकारमतो ज्ञानमणुष्वेवोपपद्यते ॥ त.स.72ख/675; द्र. རྣམ་གཅིག་ཅན།

རྣམ་པ་བཅད་ = རྣམ་པར་བཅད་པ།

རྣམ་པ་བཅུ་གཉིས་ *वि.* द्वादशाकारः – ཇི་ལྟར་ན་དེ་ལན་གསུམ་དུ་བཟླས་པ་དང་རྣམ་པ་བཅུ་གཉིས་ཡིན་ཞེ་ན... ཞེས་བྱ་བ་འདི་དག་ནི་རྣམ་པ་བཅུ་གཉིས་ཡིན་ཏེ कथं तत् त्रिपरिवर्तं द्वादशाकारं च ?...इत्येते द्वादशाकाराः अभि.भा.30ख/984.

རྣམ་པ་བཅུ་དྲུག་གིས་ཡོངས་སུ་སྦྱང་བ *पा.* षोडशाकारपरिचयः, आनापानस्मृतेः परिचयभेदः–དབུགས་རྔུབ་པ་དང་དབུགས་འབྱུང་བ་འདི་ལ་ཡོངས་སུ་སྦྱང་བ་རྣམ་པ་ལྔ་ཡོད་པར་རིག་པར་བྱ་སྟེ། ལྔ་གང་ཞེ་ན། འདི་ལྟ་སྟེ། བགྲང་བས་ཡོངས་སུ་སྦྱང་བ་དང...རྣམ་པ་བཅུ་དྲུག་གིས་ཡོངས་སུ་སྦྱང་བའོ།། अस्या आनापानस्मृतेः पञ्चविधः परिचयो वेदितव्यः । तद्यथा गणनापरिचयः... षोडशाकारपरिचयश्च श्रा.भू.85क/223.

རྣམ་པ་བཅུ་དྲུག་ཐོབ་པ *पा.* षोडशाकारभावना, प्रहाणमार्गावस्थायां पञ्चसु कारणेष्वन्यतमम् – རྒྱུ་ལྔ་དག་ནི་སྲིད་ཕྱིར་རོ། །འབྲས་ལ་སྟོན་ལམ་བཏང་བ་དང་། །གཞན་ཐོབ་པ་དང་ཟད་བསྒོམས་དང་། །ཤེས་པ་བརྒྱད་ཚན་ཐོབ་པ་དང་། །རྣམ་པ་བཅུ་དྲུག་ཐོབ་པ་ཡིས།། पञ्चकारणसम्भवात् । पूर्वत्यागोऽन्यमार्गाप्तिः क्षयसंकलनफले ॥ ज्ञानाष्टकस्य लाभोऽथ षोडशाकारभावना । अभि.को.20ख/980; རྣམ་པ་བཅུ་དྲུག་ཐོབ་པ་ནི་མི་རྟག་པའི་རྣམ་པ་ལ་སོགས་པ་སྟེ षोडशाकारभावना अनित्याद्याकाराणाम् अभि.भा.29ख/981.

རྣམ་པ་བཅུ་པོ = རྣམ་བཅུ *वि.* दशाकारः – རྣམ་པ་བཅུ་པོ་དོན་བཅུའི་དོན། །ཐུབ་དབང་སྟོབས་བཅུ་ཁྱབ་པའི་བདག། ...།རྣམ་བཅུ་དབང་ལྡན་ཆེ་བ་པོ།། दशाकारो दशार्थार्थी मुनीन्द्रो दशबलो विभुः ।...दशाकारो वशी महान् ॥ वि.प्र.158ख/3.119.

རྣམ་པ་ཇི་ལྟ་བ་བཞིན यथाकारम् – རྣམ་པ་སྣ་ཚོགས་པའི་ཕྱིར་རྣམ་པ་ཇི་ལྟ་བ་བཞིན་གྱིས་ནམ་མཁའ་དང་མཉམ་པ་ནི་མ་ཡིན་ལ आकारवैचित्र्याद्यथाकारं नैव खसमः ख.टी.153ख/231.

རྣམ་པ་ཇི་ལྟར། ०ཡང कथंचित् – དེ་ཡིས་འདི་ནི་རྣམ་པ་ཇི་ལྟར་ཡང་། །སངས་རྒྱས་བཀའ་མ་ཡིན་ཞེས་དགག་པ་བྱས།། तेनापि चैष प्रतिषिद्धो बुद्धवचो हि नेष तु कथंचित् ॥ रा.प.240क/137; གཟུགས་འགའ་ཞིག་ཏུ་འགའ་ཞིག་གི་ཚེ་རྣམ་པ་ཇི་ལྟར་ཡང་ཐ་དད་པའི་རྒྱུ་མེད་པའི་ཕྱིར कस्यचिदपि रूपस्य कथञ्चित् क्वचित् कदाचिद् विविक्तहेतोरभावात् वा.न्या.331क/41.

རྣམ་པ་ཇི་ཞིག་ལྟར कथञ्चित् – གང་གི་ཕྱིར་སེམས་དང་ལུས་དག་ཀྱང་དེ་བཞིན་དུ་ཉེ་བར་ལེན་པ་དང་ཉེ་བར་ལེན་པ་ཅན་གྱི་དངོས་པོ་མ་ཡིན་ནོ།། བ་ལང་དང་བ་མེན་དག་ཉིད་བཞིན་དུ་རྣམ་པ་ཇི་ཞིག་ལྟར་ཕན་འདོགས་པར་བྱེད་པ་ཙམ་དུ་ཟད་དེ यतश्चेतःशरीरयोरप्येवमनुपादानोपादेयभावो गोगवययोरिव कथञ्चिदुपकारित्वमात्रम् प्र.अ.69ख/78.

རྣམ་པ་ཉི་ཤུས་བྱང་ཆུབ་པ *पा.* विंशत्याकारसंबोधिः – བདེན་དོན་རྣམ་པ་བཅུ་གཉིས་ལྡན། །དེ་ཉིད་རྣམ་པ་བཅུ

དྲུག་རིག། །རྣམ་པ་ཉི་ཤུས་བྱང་ཆུབ་པ། །རྣམ་པར་སངས་རྒྱས་ཀུན་རིག་མཆོག། द्वादशाकारसत्यार्थः षोडशाकारतत्त्ववित्। विंशत्याकारसंबोधिर्विबुद्धः सर्ववित् परः ॥ वि.प्र.65ख/4.114; द्र. རྣམ་པ་ཉི་ཤུས་རྟོགས་པར་བྱང་ཆུབ་པ།

རྣམ་པ་ཉི་ཤུས་བྱང་ཆུབ་པའི་རིམ་པས་བཅོམ་ལྡན་འདས་འཇམ་དཔལ་སྒྲུབ་པའི་ཐབས *ना.* विंशत्याकाराभिसंबोधिक्रमभगवन्मञ्जुश्रीसाधनम्, ग्रन्थः क.त. 2618.

རྣམ་པ་ཉི་ཤུས་རྟོགས་པར་བྱང་ཆུབ་པ་ *पा.* विंशत्याकारसंबोधिः – དེ་ལྟར་རྣམ་པ་ལྔས་མངོན་པར་རྟོགས་པར་བྱང་ཆུབ་པས་སྐུ་རྟོགས་པ་ནི་བསྙེན་པའི་ཡན་ལག་སྟེ། རྣམ་པ་ཉི་ཤུས་རྟོགས་པར་བྱང་ཆུབ་པས་གསུང་རྟོགས་པ་ནི་ཉེ་བའི་སྒྲུབ་པའོ།། एवं पञ्चाकाराभिसंबोधौ सेवाङ्गं कायनिष्पत्तौ, विंशत्याकारसंबोधावुपसाधनं वाङ्निष्पत्तौ वि.प्र.49क/4.51; द्र. རྣམ་པ་ཉི་ཤུས་བྱང་ཆུབ་པ།

རྣམ་པ་ཉིད आकारता – སྔོ་སོགས་སོ་སོར་སྣང་བ་ནི། །མི་སླུ་ཉིད་ཀྱིས་ཤེས་པ་ཡི། །རྣམ་པ་ཉིད་ཀྱི་རིགས་མཐུན་ལས། །སྐྱེ་བར་བསྒྲུབ་ན་ཤེས་པ་བཞིན།། नीलादिप्रतिभासस्य संवादित्वेन साध्यते। ज्ञानाकारतया तुल्यजातीयाज्जन्म बोधवत् ॥ त.स.75क/701; ཤེས་ལ་རྣམ་པ་ཉིད་མེད་དེ།། ज्ञानस्याकारता न हि ज्ञा.सि. 42ख/108.

རྣམ་པ་གཉི་ག *अव्य.* उभयथा – རྣམ་པ་གཉི་ག་ཡང་གཅིག་ཏུ་བསྟན་པ་ན་འགལ་བ་མེད་དོ།། उभयथाऽप्येकनिर्देशे न विरोधः प्र.वृ.324ख/74.

རྣམ་པ་གཉིས 1. द्विधा–རང་དང་གཞན་དོན་དབྱེ་བ་ཡིས། །རྗེས་དཔག་རྣམ་པ་གཉིས་སུ་འདོད།། स्वपरार्थविभागेन त्वनुमानं द्विधेष्यते। त.स.50क/494; द्वैविध्यम्– རྣམ་པ་དེ་གཉིས་ཀྱང་གང་ཞེ་ན...ཞེས་བྱ་བ་སྨོས་ཏེ किं पुनस्तद् द्वैविध्यमित्याह न्या.टी.39ख/ 37 2. द्विरूपत्वम् – དེ་དག་ལ་ཡང་རྣམ་པ་གཉིས། །ཡང་དག་པར་ནི་ཡོད་མ་ཡིན།། तेषामपि द्विरूपत्वं भाविकं नैव विद्यते॥ त.स.63ख/599; द्वैरूप्यम्– དངོས་པོ་གཅིག་ལ་རྣམ་པ་གཉིས། །ཡང་དག་པར་ནི་ཡོད་མ་ཡིན།། वास्तवं नैकभावस्य द्वैरूप्यमपि सङ्गतम् ॥ त.स.63ख/599.

རྣམ་པ་གཉིས་ཉིད་དུ་འཇུག་པ द्वैधवृत्तिः – ཐེ་ཚོམ་ནི་རྣམ་པ་གཉིས་ཉིད་དུ་འཇུག་པའི་ཕྱིར་རྩ་བར་འོང་བ་མ་ཡིན་ཏེ विचिकित्सा किल द्वैधवृत्तेर्न मूलं भवितुमर्हति अभि.भा.236ख/796.

རྣམ་པ་གཉིས་པོ = རྣམ་པ་གཉིས།

རྣམ་པ་གཉིས་སུ་བྱ *क्रि.* द्विधा क्रियते – འདུས་མ་བྱས་རྣམས་ལ་དགེ་བ་དང་ལུང་དུ་མ་བསྟན་པའི་བྱེ་བྲག་གིས་རྣམ་པ་གཉིས་སུ་བྱའོ།། असंस्कृता द्विधा क्रियन्ते, कुशलाव्याकृतभेदात् अभि.भा.51ख/1066.

རྣམ་པ་གཏོད = རྣམ་པ་གཏོད་པ།

རྣམ་པ་གཏོད་པ आकरणम्, आकाराणां विन्यसनम्– ལུས་དྲན་པ་ཉེ་བར་གཞག་པ་ལ་སོགས་པས་ནི་རྣམ་པ་གཏོད་པ་མི་ནུས་པའི་ཕྱིར་རོ།། कायादिस्मृत्युपस्थानानामाकरणेऽसामर्थ्यात् अभि.स्फु.170ख/913.

རྣམ་པ་གཏོད་པར་བྱེད = རྣམ་པ་གཏོད་པར་བྱེད་པ།

རྣམ་པ་གཏོད་པར་བྱེད་པ •*क्रि.* आकारयति – འདོད་པ་ན་སྤྱོད་པའི་སྡུག་བསྔལ་གྱི་བདེན་པ་ལ་རྣམ་པ་བཞིས་རྣམ་པར་གཏོད་པར་བྱེད་དོ།། कामावचरं दुःखसत्यं चतुर्भिराकारैराकारयति अभि.स्फु.168ख/910; •*सं.*

आकरणम् – ཅི་མོ་རྣམ་པ་གཏོད་པར་བྱེད་པ་ལ་ནི ཐམས་ཅད་ལ་ཡང་ཆོས་དྲན་པ་ཉེ་བར་གཞག་པ་ཁོ་ན་ད ལྟར་བྱུང་བ་ཡིན་ཏེ मूर्धाऽऽकरणे सर्वत्रापि धर्मस्मृत्युपस्थानमेव प्रत्युत्पन्नम् अभि.स्फु.170ख/913.

རྣམ་པ་ལྟ་བུ *उ.प.* आकृतिः – དཀྱིལ་དུ་སྐར་ཁུང་ཕྱི་རུབ ལ་ནང་ཡངས་པ་རྒྱ་མཚོའི་རྣམ་པ་ལྟ་བུར་གདོད་དོ॥ बहिःसंवृत्तस्यान्तर्विशालस्य समुद्राकृतेर्वातायनस्य मोक्षो मध्ये वि.सू.6क/6.

རྣམ་པ་སྟོང་། ०དུ सहस्रशः – ཉོན་མོངས་ཕྱོགས་ཀྱི་ཁྲོད གནས་ན། །རྣམ་པ་སྟོང་དུ་སྲན་གཟུགས་ཏེ॥ संक्लेशपक्षमध्यस्थो भवेद्दृप्तः सहस्रशः। बो.अ.22ख/7.60.

རྣམ་པ་ཐ་དད = རྣམ་པ་ཐ་དད་པ།

རྣམ་པ་ཐ་དད་པ •*सं.* 1. प्रविभागः – བློ་གྲོས་ཆེན་པོ གཟུགས་དང་ནམ་མཁའི་རྒྱུ་རྣམ་པ་ཐ་དད་པ་ནི་གཞག པ་དང་གཞིའི་ཚུལ་དུ་གྱུར་པས་ཡིད་ཆེས་པར་བྱའོ॥ आधेयाधारव्यवस्थानभावेन महामते रूपाकाशकारणयोः प्रविभागः प्रत्येतव्यः ल.अ.75ख/24 2. विमात्रता – བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའི་མངོན་པར་འདུ་བྱ་བ ཐམས་ཅད་ལས་ཡོངས་སུ་གྲུབ་པའི་མཆོད་པ་རྣམ་པ་ཐ དད་པ་དང सर्वबोधिसत्त्वाभिसंस्कारसमुत्थिताभिः पूजाविमात्रताभिः ग.व्यू.290क/368; वैमात्रता – དེ ནི་སེམས་ཅན་རྣམས་ཀྱི་སེམས་རྣམ་པ་ཐ་དད་པ་ཡང དག་པ་ཇི་ལྟ་བ་བཞིན་དུ་རབ་ཏུ་ཤེས་ཏེ स सत्त्वानां चित्तवैमात्रतां च यथाभूतं प्रजानाति द.भू.252क/49 3. आकारभेदः – དེ་ལྟ་བས་ན་གལ་ཏེ་བདེན་པ་རྣམས མཐོང་བའི་མངོན་པར་རྟོགས་པའི་མངོན་པར་རྟོགས་པ གཅིག་གོ་ཞེས་སྨྲ་ན་ནི་རྣམ་པ་ཐ་དད་པའི་ཕྱིར་མི་རིགས པར་སྨྲ་བ་ཡིན་ནོ॥ तद्यदि सत्यानां दर्शनाभिसमयं प्रत्येकाभिसमयं ब्रूयात्। अयुक्तं ब्रूयाद्, आकारभेदात् अभि.भा.17क/925 •*वि.* भिन्नाकारः – རྣམ་པ ཐ་དད་པ་མ་ཡིན་པ་རྣམས་ཀྱང་ཁ་ཅིག་ཁྱད་པར་གཞན གྱི་སྒོ་ནས་རིགས་ཐ་དད་པ་མཐོང་བའི་ཕྱིར་རོ॥ अभिन्नाकाराणामपि केषाञ्चिदन्यतो विशेषाज्जातिभेदो दृश्यते हे.बि.248क/64; विचित्रः – རྫིང་བུ་དེ དག་རེ་རེ་ལའང་ཐེམ་སྐས་ཐེམ་པ་རིན་པོ་ཆེའི་རང་བཞིན སྣ་ཚོགས་པ་རྣམ་པ་ཐ་དད་པས་བརྒྱན་པ་བརྒྱད་བརྒྱད ཡོད་དེ एकैकस्यां च पुष्करिण्यामष्टावष्टौ सोपानानि नानाविचित्रैः रत्नमयैः सोपानफलकैः प्रतिमण्डितानि अ.सा.427ख/241.

རྣམ་པ་ཐ་དད་པ་མ་ཡིན་པ *वि.* अभिन्नाकारः – རྣམ་པ་ཐ་དད་པ་མ་ཡིན་པ་རྣམས་ཀྱང་ཁ་ཅིག་ཁྱད་པར གཞན་གྱི་སྒོ་ནས་རིགས་ཐ་དད་པ་མཐོང་བའི་ཕྱིར་རོ॥ अभिन्नाकाराणामपि केषाञ्चिदन्यतो विशेषाज्जातिभेदो दृश्यते हे.बि.248क/64.

རྣམ་པ་ཐམས་ཅད 1. सर्वाकारः – རྣམ་པ་ཐམས་ཅད་དུ ཐམས་ཅད་མཁྱེན་པའི་ཡེ་ཤེས་ལ་དབང་བསྐུར་བའི་ས ཐོབ་པ सर्वाकारसर्वज्ञज्ञानाभिषेकभूमिप्राप्तः द.भू.261ख/55; རྣམ་པ་ཐམས་ཅད་རང་བཞིན་གྱིས། །བདེ་བ ཅན་ན་ཡང་དག་བཞུགས། །ཐུགས་ཀྱི་རྡོ་རྗེ་ས་བོན་གྱིས། །རང་གི་དཀྱིལ་འཁོར་བསྐྱེད་པ་སྟེ॥ सुखावत्यां समासीनः सर्वाकारस्वरूपतः। चित्तवज्रस्य बीजेन निष्पन्नो मण्डलेश्वरः॥ हे.त.23ख/76; རྣམ་པ་ཐམས་ཅད མི་གཟིགས་པས། །བེམས་པོ་ཉིད་དུ་ཐལ་བར་འགྱུར॥ जडत्वं च प्रसज्येत सर्वाकारमपश्यतः॥ ज्ञा.सि.43ख/112 2. सर्वप्रकारः – གསུམ་གྱིས་ནི་སེམས་གནས་པ དང་རྣམ་པར་གྲོལ་བ་གཞི་དང་བཅས་པས་རང་གི་དོན རྣམ་པ་ཐམས་ཅད་སྦྱོད་དེ तिसृभिः सनिदानया चित्त-

स्थित्या विमुक्त्या च सर्वप्रकारमात्मार्थं चरति सू.व्या.196[क]/97.

རྣམ་པ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་ཐམས་ཅད་དུ सर्वथा सर्वदा – དེ་བས་ན་རྣམ་པ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་ཐམས་ཅད་དུ་བླ་མ་དམ་པའི་ཞབས་ཀྱི་པདྨ་དག་ལ... བསྟེན་པར་བྱ་བ་ཁོ་ན་ཡིན་ནོ།། तस्मात् सर्वथा सर्वदा सद्गुरुचरणारविन्दयुगलं ...उपासनीयमिति त.सि.65[क]/172.

རྣམ་པ་ཐམས་ཅད་དུ सर्वथा – གལ་ཏེ་རྣམ་པ་ཐམས་ཅད་དུ། །མཐོང་བ་ཙམ་ལ་རྟེན་བྱེད་ན།། दृष्टमात्रपरिष्वङ्गः क्रियते यदि सर्वथा ॥ प्र.अ.122[ख]/131; དེ་ལྟ་བུ་དེ་ལ་ཐམས་ཅད་ནས་ཐམས་ཅད་རྣམ་པ་ཐམས་ཅད་དུ་ཐམས་ཅད་མ་མཆིས་སོ།། एवं तस्य सर्वेण सर्वं सर्वथा सर्वं न संविद्यते अ.सा.12[क]/7; རྣམ་པ་ཐམས་ཅད་དུ་དོན་ཡོད་པ་ནི་ས་བརྒྱད་པ་ལ་སོགས་པ་ལ་སྟེ अवन्ध्यः सर्वथा अष्टम्यादिषु भूमिषु सू.व्या.210[ख]/114; सर्वशः – དེ་གཟུགས་སུ་འདུ་ཤེས་པ་ལས་རྣམ་པ་ཐམས་ཅད་དུ་འདས་ནས स सर्वशो रूपसंज्ञानां समतिक्रमात् द.भू.198[ख]/20; सर्वप्रकारेण – རྒྱལ་པོས་ཀྱང་རྣམ་པ་ཐམས་ཅད་དུ་བསྟེན་པར་མི་བྱའོ།། राज्ञा पुनः सर्वप्रकारेण नाराधनीयाः वि.प्र.92[ख]/3.3; सर्वाकारेण – ཆོས་ཐམས་ཅད་རྣམ་པ་ཐམས་ཅད་དུ་རྟོགས་པར་བྱ་བ་ལ་ཐུགས་གཙུགས་པ་དག་ཅེས་བྱ་བའི་ཐ་ཚིག་གོ།། सर्वाकारसर्वधर्मावबोधे आप्ता इत्यर्थः अभि.स्फु.311[ख]/1187; सर्वाकारतः – རྣམ་པ་ཐམས་ཅད་དུ་ཡོངས་སུ་བཙལ་ན་གཅིག་ནའང་ཡོད་པ་མ་ཡིན་པས་མེ་དེ་ཡང་བདེན་པ་ཡང་མ་ཡིན་ཞིང་བརྫུན་པ་ཡང་མ་ཡིན་ནོ།། सर्वाकारतः परिगवेष्यमानः एकस्मिन्नपि नास्ति स चाग्निर्न सत्यं न मृषा हे.त.18[क]/56; सर्वाभिसारेण – དེ་ལྟར་རྣམ་པ་ཐམས་ཅད་དུ། །ཉེས་པ་ཁྱོད་ཀྱིས་རབ་ཏུ་བཅོམ།། तथा सर्वाभिसारेण दोषेषु प्रहृतं त्वया। श.बु.111[क]/31.

རྣམ་པ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་མཆོག་དང་ལྡན་པ • *वि.* सर्वाकारवरोपेतः – རྣམ་པ་ཐམས་ཅད་མཆོག་ལྡན་པའི། །དམ་པའི་ཚུལ་ཁྲིམས་སྟོན་བྱེད་ལ།། सर्वाकारवरोपेतं सद्वृत्तप्रतिपादकम् । त.स.132[क]/1120; • *पा.* 1. सर्वाकारवरोपेता, वागाकारभेदः – དེ་བཞིན་གཤེགས་པའི་གསུང་ནི་རྣམ་པ་དྲུག་ཅུ་དང་ལྡན་པར་འབྱུང་སྟེ། མཉེན་པ་དང...རྣམ་པ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་མཆོག་དང་ལྡན་པ་ནི་འཇིག་རྟེན་པའི་དོན་ཐམས་ཅད་དཔེའི་ཆོས་སུ་བསྒྱུར་བའི་ཕྱིར་རོ།། तथागतस्य षष्ट्याकारोपेता वाग् निश्चरति स्निग्धा च...सर्वाकारवरोपेता सर्वलौकिकार्थदृष्टान्तधर्मपरिणामिकत्वात् सू.व्या.183[ख]/79; द्र. རྣམ་པ་ཀུན་གྱི་མཆོག་ལྡན་པ། 2. सर्वाकारवरोपेतः, समाधिविशेषः – རྣམ་པ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་མཆོག་དང་ལྡན་པ་ཞེས་བྱ་བའི་ཏིང་ངེ་འཛིན सर्वाकारवरोपेतो नाम समाधिः म.व्यु.602(14[ख]).

རྣམ་པ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་མཆོག་དང་ལྡན་པའི་སྟོང་པ་ཉིད *पा.* सर्वाकारवरोपेतशून्यता – རྣམ་པ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་མཆོག་དང་ལྡན་པའི་སྟོང་པ་ཉིད་ཀྱི་ཏིང་ངེ་འཛིན་གྱི་སྒོ་བསྒོམས་པས सर्वाकारवरोपेतशून्यतासमाधिमुखभावनया र.व्या.105[ख]/57; सर्वाकारवरोपेता शून्यता– རྣམ་པ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་མཆོག་དང་ལྡན་པའི་སྟོང་པ་ཉིད་གང་ཞེ་ན། སྦྱིན་པ་མ་ཚང་བ་མེད་པ...ཆོས་ཉིད་ཀྱིས་[?ཆོས་ཐམས་ཅད་ལ་]བཏང་སྙོམས་པ कतमा सर्वाकारवरोपेता शून्यता ? या न दानविकला...उपेक्षिका च सर्वधर्माणाम् शि.स.150[ख]/145.

རྣམ་པ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་མཆོག་དང་ལྡན་པའི་སྟོང་པ་ཉིད་ཀྱི་ཏིང་ངེ་འཛིན་གྱི་སྒོ *पा.* सर्वाकारवरोपेतशून्यता-

समाधिमुखम् – རྣམ་པ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་མཆོག་དང་ལྡན་པའི་སྟོང་པ་ཉིད་ཀྱི་ཏིང་ངེ་འཛིན་གྱི་སྒོ་བསྒོམས་པས सर्वाकारवरोपेतशून्यतासमाधिमुखभावनया र.व्या. 105ख/57.

རྣམ་པ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་བརྩོན་འགྲུས *पा.* सर्वाकारं वीर्यम्, वीर्यभेदः – དེ་ལ་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་རྣམས་ཀྱི་རྣམ་པ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་བརྩོན་འགྲུས་གང་ཞེ་ན तत्र कतमद्बोधिसत्त्वानां सर्वाकारं वीर्यम् बो.भू.109क/140.

རྣམ་པ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་ཚུལ་ཁྲིམས *पा.* सर्वाकारशीलम्, शीलभेदः – བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་རྣམས་ཀྱི་ཚུལ་ཁྲིམས ...ནི་རྣམ་པ་དགུར་རིག་པར་བྱ་སྟེ། ཚུལ་ཁྲིམས་ཀྱི་ངོ་བོ་ཉིད་དང...རྣམ་པ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་ཚུལ་ཁྲིམས་དང...རྣམ་པར་དག་པའི་ཚུལ་ཁྲིམས་སོ།། शीलं बोधिसत्त्वानां... नवविधं वेदितव्यम्। स्वभावशीलं...सर्वाकारशीलं ...विशुद्धशीलञ्च बो.भू.74क/95.

རྣམ་པ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་བཟོད་པ *पा.* सर्वाकारक्षान्तिः, क्षान्तिभेदः – དེ་ལ་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའི་རྣམ་པ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་བཟོད་པ་གང་ཞེ་ན། དེ་ནི་རྣམ་པ་དྲུག་དང་རྣམ་པ་བདུན་ཏེ། གཅིག་ཏུ་བསྡུས་ན་རྣམ་པ་བཅུ་གསུམ་དུ་ཡོད་པར་རིག་པར་བྱ་སྟེ तत्र कतमा बोधिसत्त्वस्य सर्वाकारक्षान्तिः। सा षड्विधा सप्तविधा चैकध्यमभिसंक्षिप्य त्रयोदशविधा वेदितव्या बो.भू.105ख/135.

རྣམ་པ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་ཤེས་རབ *पा.* सर्वाकारा प्रज्ञा, प्रज्ञाभेदः – དེ་ལ་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའི་རྣམ་པ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་ཤེས་རབ་གང་ཞེ་ན། དེ་ནི་རྣམ་པ་དྲུག་དང་རྣམ་པ་བདུན་ཏེ། གཅིག་ཏུ་བསྡུས་ན་རྣམ་པ་བཅུ་གསུམ་ཡོད་པར་རིག་པར་བྱ་སྟེ तत्र कतमा बोधिसत्त्वस्य सर्वाकारा प्रज्ञा। सा षड्विधा सप्तविधा चैकध्यमभिसंक्षिप्य त्रयोदशविधा वेदितव्या बो.भू.114क/147.

རྣམ་པ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་བསམ་གཏན *पा.* सर्वाकारध्यानम्, ध्यानभेदः – དེ་ལ་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའི་རྣམ་པ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་བསམ་གཏན་གང་ཞེ་ན། དེ་ནི་རྣམ་པ་དྲུག་དང་རྣམ་པ་བདུན་ཏེ། གཅིག་ཏུ་བསྡུས་ན་རྣམ་པ་བཅུ་གསུམ་ཡོད་པར་རིག་པར་བྱ་སྟེ तत्र कतमद्बोधिसत्त्वस्य सर्वाकारध्यानम्। तत्षड्विधं [सप्तविधं] चैकध्यमभिसंक्षिप्य त्रयोदशविधं वेदितव्यम् बो.भू. 112क/144.

རྣམ་པ་ཐམས་ཅད་མཁྱེན = རྣམ་པ་ཐམས་ཅད་མཁྱེན་པ།

རྣམ་པ་ཐམས་ཅད་མཁྱེན་ཉིད = རྣམ་པ་ཐམས་ཅད་མཁྱེན་པ་ཉིད།

རྣམ་པ་ཐམས་ཅད་མཁྱེན་པ •*वि.* सर्वाकारज्ञः – དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་འདོད་ཆགས་དང་བྲལ་བ...ཐམས་ཅད་མཁྱེན་པ་རྣམ་པ་ཐམས་ཅད་མཁྱེན་པ तथागतो विगतरागः... सर्वज्ञः सर्वाकारज्ञः अ.श.98क/88; •*पा.* सर्वथाज्ञानम्, ज्ञानसम्पद्भेदः – ཡེ་ཤེས་ཕུན་སུམ་ཚོགས་པ་ཡང་རྣམ་པ་བཞི་སྟེ། མ་བསྟན་པར་མཁྱེན་པ་དང་ཐམས་ཅད་མཁྱེན་པ་དང་རྣམ་པ་ཐམས་ཅད་མཁྱེན་པ་དང་མ་འབད་པར་མཁྱེན་པའོ།། ज्ञानसम्पत् पुनश्चतुर्विधा–अनुपदिष्टज्ञानम्, सर्वत्रज्ञानम्, सर्वथाज्ञानम्, अयत्नज्ञानञ्च अभि.भा.58क/1097; རྣམ་པ་ཐམས་ཅད་མཁྱེན་པ་ཞེས་བྱ་བ་ནི་རྣམ་པ་ཀུན་མཁྱེན་པའི་དོན་གྱིས་སོ།། सर्वथाज्ञानमिति सर्वप्रकारावबोधनार्थेन अभि.स्फु.273ख/1097.

རྣམ་པ་ཐམས་ཅད་མཁྱེན་པ་ཉིད *पा.* सर्वाकारज्ञता – རྣམ་པ་ཐམས་ཅད་མཁྱེན་པ་ཉིད་ཀྱི་སྤྱོད་པའི་ལེའུ་ཞེས་བྱ་བ་སྟེ་དང་པོའོ།། सर्वाकारज्ञताचर्यापरिवर्तो नाम प्रथमः अ.सा.29क/16; དེ་ཧི་ལྟར་བཅོམ་ལྡན་འདས་ཀྱིས་བོངས་པ་དག་མ་སྤྲངས་པར་རྣམ་པ་ཐམས་ཅད་མཁྱེན་པ

ཉིད་ཐོབ तत्कथं भगवता सर्वाकारज्ञता प्राप्ता अप्रहीणैर्दोषैः ल.अ.151[क]/98; རྣམ་པ་ཐམས་ཅད་མཁྱེན་ཉིད་དང་། །ལྷན་ཅིག་ཤེས་བྱ་ཉིད་སོགས་དག། །དངོས་སུ་འམ་བརྒྱུད་པས་འགལ་བ་ནི། །ཅུང་ཟད་ཙམ་ཡང་ཡོད་མ་ཡིན།། सर्वाकारज्ञतायास्तु न कश्चिदपि विद्यते। साक्षादितरथा वापि विरोधो ज्ञेयतादिभिः ॥ त.स. 122[क]/1065.

རྣམ་པ་ཐམས་ཅད་མཆོག་ལྡན་པ = རྣམ་པ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་མཆོག་དང་ལྡན་པ།

རྣམ་པ་ཐམས་ཅད་རྟོགས *पा.* सर्वाकारावबोधः – རྣམ་པ་ཐམས་ཅད་རྟོགས་འདི་ལ། །ཐར་པའི་ཆ་དང་མཐུན་པར་འདོད།། सर्वाकारावबोधेऽस्मिन् मोक्षभागीयमिष्यते ॥ अभि.अ.8[क]/4.32.

རྣམ་པ་ཐམས་ཅད་དང་མཆོག་མཁྱེན་པ *पा.* सर्वाकारवरज्ञानम् – སངས་རྒྱས་བཅོམ་ལྡན་འདས་རྣམས་ཀྱི་སངས་རྒྱས་ཀྱི་ཆོས་མ་འདྲེས་པ་བརྒྱ་བཞི་བཅུ་ཡོད་དེ། སྐྱེས་བུ་ཆེན་པོའི་མཚན་སུམ་ཅུ་རྩ་གཉིས་དང...རྣམ་པ་ཐམས་ཅད་དང་མཆོག་མཁྱེན་པའོ།། भगवतां चत्वारिंशदुत्तरमावेणिकं बुद्धधर्मशतं भवति। द्वात्रिंशन्महापुरुषलक्षणानि... सर्वाकारवरज्ञानञ्च बो.भू.192[ख]/259.

རྣམ་པ་ཐམས་ཅད་དུ་ཐམས་ཅད་མཁྱེན་པའི་ཡེ་ཤེས་དང་ཡོན་ཏན་ཡང་དག་པར་བསྒྲུབས་པ *पा.* सर्वाकारसर्वज्ञज्ञानगुणसञ्चयः, धर्ममुखपरिवर्तभेदः – ཀྱེ་རྒྱལ་བའི་སྲས་དག་ན་རྣམ་པ་ཐམས་ཅད་དུ་ཐམས་ཅད་མཁྱེན་པའི་ཡེ་ཤེས་དང་ཡོན་ཏན་ཡང་དག་པར་བསྒྲུབས་པའི་ཆོས་ཀྱི་སྒོའི་རྒྱུད་འདི་གང་གི་རྣ་ལམ་དུ་གྲག་པར་འགྱུར་བ་དེ་དག་བསོད་ནམས་ཀྱི་ཚོགས་ཇི་ཙམ་ཞིག་དང་ལྡན་པར་འགྱུར येषां पुनर्भो जिनपुत्र अयं सर्वाकारसर्वज्ञज्ञानगुणसञ्चयो धर्ममुखपरिवर्तः श्रवणावभासमागमिष्यति, ते कियता पुण्योपचयेन समन्वागता भविष्यन्ति द.भू.279[क]/67.

རྣམ་པ་ཐམས་ཅད་དུ་ཐམས་ཅད་མཁྱེན་པའི་ཡེ་ཤེས་ལ་དབང་བསྐུར་བའི་ས་ཐོབ་པ *वि.* सर्वाकारसर्वज्ञज्ञानाभिषेकभूमिप्राप्तः – བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ...རྣམ་པ་ཐམས་ཅད་དུ་ཐམས་ཅད་མཁྱེན་པའི་ཡེ་ཤེས་ལ་དབང་བསྐུར་བའི་ས་ཐོབ་པ་ཞེས་བྱའོ།། बोधिसत्त्वः...सर्वाकारसर्वज्ञज्ञानाभिषेकभूमिप्राप्त इत्युच्यते द.भू. 261[ख]/55.

རྣམ་པ་ཐམས་ཅད་དུ་འོད་བྱེད་པ *पा.* सर्वाकारप्रभाकरः, समाधिविशेषः – རྣམ་པ་ཐམས་ཅད་དུ་འོད་བྱེད་པ་ཞེས་བྱ་བའི་ཏིང་ངེ་འཛིན सर्वाकारप्रभाकरो नाम समाधिः म.व्यु.614(15[क]).

རྣམ་པ་ཐམས་ཅད་པ *वि.* सर्वाकारः – ཡེ་ཤེས་རྣལ་འབྱོར་ནི... ཡངས་པ་ཞེས་པ་ནི་ཉི་ཚེ་བ་མ་ཡིན་པ་སྟེ། རྣམ་པ་ཐམས་ཅད་པའོ་ཞེས་དགོངས་པའོ།། ज्ञानयोगं विशालमिति न प्रादेशिकम्, सर्वाकारमिति भावः वि.प्र.272[ख]/2.97.

རྣམ་པ་ཐམས་ཅད་པའི་སྟོང་པ་ཉིད *पा.* सर्वाकारशून्यता – དེ་བཞིན་དུ་ཨེ་ཡིག་དང་གསང་བ་དང་པདྨ་དང་ཆོས་འབྱུང་དང་ནམ་མཁའི་ཁམས་དང་བདེ་བ་ཆེན་པོའི་གནས་དང་སེང་གེའི་ཁྲི་དང་བྷ་ག་དང་གསང་བའི་མིང་རྣམས་ཀྱི་ནང་ནས་ཨེ་ཡིག་གཅིག་པུ་གཙོ་བོའི་མིང་མ་ཡིན་ཏེ། ཐམས་ཅད་ཀྱིས་རྣམ་པ་ཐམས་ཅད་པའི་སྟོང་པ་ཉིད་གོ་བར་བྱེད་པའི་ཕྱིར་རོ།། तथा एकाररहस्यपद्मधर्मोदयखधातुमहासुखावाससिंहासनभगगुह्यसंज्ञानां मध्ये नैका एकारसंज्ञा प्रधाना, सर्वासां सर्वाकारशून्यताप्रतिपादकत्वात् वि.प्र.135[ख]/1, पृ.34; རྣམ

པ་ཐམས་ཅད་པའི་སྟོང་པ་ཉིད་ཀྱི་ཡེ་ཤེས सर्वाकारशून्यताज्ञानम् वि.प्र.60ख/4.106.

རྣམ་པ་ཐམས་ཅད་པའི་སྟོང་པ་ཉིད་ཀྱི་ཡེ་ཤེས *पा.* सर्वाकारशून्यताज्ञानम्– སྣ་ཚོགས་ཡུམ་ནི་རྣམ་པ་ཐམས་ཅད་པའི་སྟོང་པ་ཉིད་ཀྱི་ཡེ་ཤེས་དུས་གསུམ་གཟིགས་པ་སྟེ་འཆི་བའི་བདེ་བ་དང་བརྟགས་པའི་སྒྲིབ་པ་ཟད་པའི་ཕྱིར་རོ་ཞེས་པ་དག་པའོ॥ विश्वमाता सर्वाकारशून्यताज्ञानं त्र्यध्वदर्शनम्, च्यवनसुखकल्पनावरणक्षयादिति शुद्धम् वि.प्र.60ख/4.106.

རྣམ་པ་ཐམས་ཅད་པའི་གཟུགས *पा.* सर्वाकारबिम्बः – ནམ་མཁའི་ཁམས་རྣམ་པ་ཐམས་ཅད་པའི་གཟུགས་ཡུལ་དང་རྣམ་པར་བྲལ་བ་དབུས་ཀྱི་ས་ལ་ཀུན་གཞིའི་རྣམ་པར་ཤེས་པ་གཞག་པར་བྱའོ॥ आकाशधातौ सर्वाकारबिम्बे विषयविरहिते स्थापयेन्मध्यभूमौ आलयविज्ञानम् वि.प्र.32ख/4.7.

རྣམ་པ་ཐམས་ཅད་ཡོངས་སུ་དག་པ *पा.* सर्वाकाराः परिशुद्धयः – སངས་རྒྱས་བཅོམ་ལྡན་འདས་རྣམས་ཀྱི་སངས་རྒྱས་ཀྱི་ཆོས་མ་འདྲེས་པ་བརྒྱ་བཞི་བཅུ་ཡོད་དེ། སྐྱེས་བུ་ཆེན་པོའི་མཚན་སུམ་ཅུ་རྩ་གཉིས་དང་དཔེ་བྱད་བཟང་པོ་བརྒྱད་ཅུ་དང་རྣམ་པ་ཐམས་ཅད་ཡོངས་སུ་དག་པ་བཞི་དང...རྣམ་པ་ཐམས་ཅད་དང་མཆོག་མཁྱེན་པའོ॥ भगवतां चत्वारिंशदुत्तरमावेणिकं बुद्धधर्मशतं भवति। द्वात्रिंशन्महापुरुषलक्षणानि अशीत्यनुव्यञ्जनानि चतस्रः सर्वाकाराः परिशुद्धयः...सर्वाकारवरज्ञानञ्च बो.भू.192ख/259.

རྣམ་པ་ཐམས་ཅད་ཡོངས་སུ་དག་པ་བཞི चतस्रः सर्वाकाराः परिशुद्धयः – 1. གནས་ཡོངས་སུ་དག་པ आश्रयपरिशुद्धिः, 2. དམིགས་པ་ཡོངས་སུ་དག་པ आलम्बनपरिशुद्धिः, 3. སེམས་ཡོངས་སུ་དག་པ चित्तपरिशुद्धिः, 4. ཡེ་ཤེས་ཡོངས་སུ་དག་པ ज्ञानपरिशुद्धिश्च बो.भू.197क/265.

རྣམ་པ་ཐམས་ཅད་ཡོངས་སུ་རྫོགས་པ *वि.* सर्वाकारपरिपूर्णः – ཕྱག་དང་ཞབས་གཉིས་ཀྱི་མཐིལ་ནས་འཁོར་ལོ་རྩིབས་སྟོང་དང་ལྡན་པ་མུ་ཁྱུད་ཅན་ལྟེ་བ་དང་བཅས་པ་རྣམ་པ་ཐམས་ཅད་ཡོངས་སུ་རྫོགས་པ་བྱུང་བ अधस्तात्[पाणि]पादतलयोश्चक्रे जाते सहस्रारे सनाभिके सनेमिके सर्वाकारपरिपूर्णे बो.भू.193क/259.

རྣམ་པ་དག་པ = རྣམ་པར་དག་པ།

རྣམ་པ་དང་བཅས = རྣམ་པ་དང་བཅས་པ།

རྣམ་པ་དང་བཅས་པ = རྣམ་བཅས *वि.* साकारः – གལ་ཏེ་ཤེས་པ་རྣམ་པ་དང་བཅས་པ་ཡིན་ན यदि साकारं ज्ञानम् त.प.254ख/226; གལ་ཏེ་རྣམ་བཅས་རྣམ་ཤེས་ཀྱིས། །དངོས་རྣམས་རིག་པར་ཁྱོད་འདོད་དམ॥ यदि साकारविज्ञानविज्ञेयं वस्तु वो मतम्॥ त.स.21क/225; རྣམ་བཅས་རྟོག་པས་ཀྱང་དེ་བཞིན་ནོ॥ साकारकल्पनाऽप्येवम् ज्ञा.सि.42ख/108; सनिर्भासः – ཕྱོགས་གཉིས་པ་ལ་བརྟེན་ནས་རྣམ་པ་དང་བཅས་པ་ཞེས་བྱ་བ་ཡང་མ་ཡིན་ནོ་ཞེས་བསྟན་པའི་ཕྱིར...སྨོས་ཏེ नापि सनिर्भासमिति द्वितीयं पक्षमाश्रित्य प्रतिपादयन्नाह त.प.123ख/696; त.प.130क/710; आकारवान् – རྣམ་པ་དང་བཅས་ཤེས་པ་ན། །ཐམས་ཅད་དེ་ནི་རིགས་པ་ཡིན॥ आकारवति विज्ञाने सर्वमेतच्च युज्यते। त.स.99ख/880; निर्भासि – ཡུལ་དང་འདྲ་བའི་རྣམ་པ་དེ་གང་ལ་ཡོད་པ་དེ་ནི་རྣམ་བཅས་སོ॥ निर्भासः विषयसारूप्यम्, तद्यस्यास्ति तन्निर्भासि त.प.22ख/492.

རྣམ་པ་དང་བཅས་པའི་རྣམ་པར་ཤེས་པ = རྣམ་བཅས་རྣམ་ཤེས།

རྣམ་པ་དང་བཅས་པའི་ཤེས་པ = རྣམ་བཅས་ཤེས་པ།

རྣམ་པ་དང་ལྡན = རྣམ་པ་དང་ལྡན་པ།

རྣམ་པ་དང་ལྡན་པ •*वि.* आकारवान् – བློ་ནི་རྣམ་པ་མེད་པ་ཡིན་ལ། ཕྱི་རོལ་གྱི་དོན་ནི་རྣམ་པ་དང་ལྡན་པ་ཡིན་ནོ།། निराकारा बुद्धिः, आकारवान् बाह्योऽर्थः त.प.335ख/385; नानाकारः – ལ་ལར་ནི་རྣམ་པ་དང་ལྡན་པར་སྙོ།། क्वचिन्नानाकारः त.सि.67ख/178; •*सं.* = རྣམ་པ་དང་ལྡན་པ་ཉིད आकारवत्त्वम् – ཕྱི་རོལ་གྱི་དོན་ཁོ་ན་རྣམ་པ་དང་ལྡན་པར་ཁས་ལེན་པའི་ཕྱིར་རོ།། बाह्यस्यैवाकारवत्त्वाभ्युपगमात् त.प.190ख/844.

རྣམ་པ་དང་བྲལ་བ = རྣམ་བྲལ།

རྣམ་པ་དུ་མ •*वि.* 1. अनेकविधः – ལུས་དེ་ལ...པགས་པ་ལ་སོགས་པ་མི་གཙང་བའི་རྫས་རྣམ་པ་དུ་མ་རྣམ་པ་མང་པོ་སྣ་ཚོགས་དུ་མ་དག་རྣམ་པར་འཕེལ त्वगादीन्यनेकविधानि बहुनानाप्रकाराणि अस्मिन् काये अशुचिद्रव्याणि विवर्धयति श्रा.भू.30ख/76; नानाप्रकारः – ནར་མ་རང་བཞིན་གྱིས་འབྱུང་བ་རྣམ་པ་སྣ་ཚོགས་རྣམ་པ་དུ་མ विविधा नानाप्रकारा निजाः स्वाभाविकाः अभि.स्फु.274क/1098; अनेकः – གཏང་བར་དཀའ་བ་རྣམ་པ་དུ་མ་བཏང་།། संत्यक्त दुस्त्यजमनेकम् रा.प.238ख/135 2. अनेकाकारः – དེ་ཉིད་ཀྱིས་ན་དངོས་གཅིག་དང་། །རྣམ་པ་དུ་མར་འདོད་པ་ཡིན།། अतः ॥ वस्त्वेकात्मकमेवेदमनेकाकारमिष्यते । त.स.63क/595; •*अव्य.* अनेकधा – གཏི་མུག་ཆགས་དང་ཞེ་སྡང་གིས། །སྡིག་པ་རྣམ་པ་དུ་མ་བྱས།། मोहानुनयविद्वेषैः कृतं पापमनेकधा बो.अ.5ख/2.39; རྣམ་པ་དུ་མས་མཉེས་པར་བྱ།། आराध्योऽनेकधा ज्ञा.सि. 38क/95.

[illegible]པ་དུ་མར अनेकधा – ཆོས་རྣམས་ཀུན་ཡང་དུས་རི[illegible]དུ། །རྣམ་པ་དུ་མར་བསྒོམ་བྱ་མིན[? ཡིན]།། सर्वधर्माश्च भाव्यन्ते दीर्घकालमनेकधा । त.स.125ख/1084; बहुशः – རྣམ་པ་དུ་མར་ཐབས་མང་པོ། །ཡུན་རིང་དུས་སུ་གོམས་པ་ལས། །དེ་ལ་སྐྱོན་དང་ཡོན་ཏན་དག །རབ་ཏུ་གསལ་བ་ཉིད་དུ་འགྱུར།། बहुशो बहुधोपायं कालेन बहुनास्य च । गच्छन्त्यभ्यस्यतस्तत्र गुणदोषाः प्रकाशताम् ॥ प्र.अ.102ख/110.

རྣམ་པ་དུ་མ་ཉིད आकारबहुता – ཤེས་ལས་ཐ་མི་དད་པའི་ཕྱིར། །རྣམ་པ་དུ་མ་ཉིད་མི་འགྱུར།། ज्ञानादव्यतिरिक्तत्वान्नाकारबहुता भवेत् । त.स.74क/696.

རྣམ་པ་དུ་ཞིག कतिविधः – རྒྱན་རྣམ་པ་དུ་ཞིག་གིས་བརྒྱན་པར་བྱེད་ཅེ་ན कतिविधमलङ्कारं करोति सू.व्या.129ख/1.

རྣམ་པ་དེ་ལྟ = རྣམ་པ་དེ་ལྟ་བུ།

རྣམ་པ་དེ་ལྟ་བུ *वि.* तथाविधः – འདི་སྙམ་དུ...རེས་འགའ་ལ་ལར་སྐྱེས་བུ་རྣམས་རྣམ་པ་དེ་ལྟ་བུའི་རིག་བྱེད་ཀྱི་ཆོས་རྣམས་ཀྱི་བྱེད་པ་པོར་འགྱུར་བ་ཡིན་ནོ་སྙམ་ན एवं मन्यते...कदाचित् क्वचित् पुरुषास्तथाविधानां वेदधर्माणां कर्तारो भवेयुरिति त.प.213क/896; དེ་དག་ཚིག དེ་[? དེ་དག་གི་ཚིག་]ངེས་ཐོས་ཤིང་། །གཞན་དུའང་རྣམ་པ་དེ་ལྟ་ཡི། །ཡི་དྭགས་མཐོང་བར་མི་འདོད་པ། །མཐོང་ནས་སྙིང་རྗེ་རྒྱས་པར་གྱུར།། इति तेषां वचः श्रुत्वा सोऽन्यत्र च तथाविधान् । प्रेतान् दृष्ट्वानभिप्रेतान् करुणाकुलितोऽभवत् ॥ अ.क.166ख/19.31; एवंविधः – རྣམ་པ་དེ་ལྟའི་སྐྱེས་བུ་འདི། །ངོ་ཤེས་པ་ནི་ཡོད་པའི་ཕྱིར། །རྟོགས་པར་འགྱུར་ཏེ पुमानेवंविधश्चायं प्रत्यभिज्ञानभावतः । प्रमीयते त.स.10क/123; སྐྱེས་བུ་རྣམས་ཀྱི་རྣམ་པ་དེ་ལྟའི་ཡོན་ཏན་དག །ལེགས་གནས་འདི་ནི་ཁྲིམས་ཀྱིས་དྲི་མ་མེད་པར་འགྱུར།། एवंविधोऽयं गुणसन्निवेशः शीलेन वैमल्यमुपैति पुंसाम् । अ.क.

68क/6.178; एवंभूतः – རྣམ་པ་དེ་ལྟ་བུའི་ཡི་གེའི་རིམ་པ་གལ་ཏེ། སྐྱེས་བུ་ཐམས་ཅད་ཀྱིས་བྱ་བར་ནུས་པ་མེད་པར་ངེས་པར་བྱ་བ་[? བྱས་པ་]ཡིན་ན एवंभूतं वर्णक्रमं यदि कर्तुं सर्वनराणामशक्तिर्निश्चिता भवेत् त.प. 212ख/895.

རྣམ་པ་དེ་འདྲ *वि.* तथाविधः – ཤེས་པ་ལ། །མཚུངས་མིན་རྣམ་པ་དེ་འདྲའི་བློ། །སྐྱེ་ཕྱིར न ज्ञाने तुल्यमुत्पत्तितो धियः। तथाविधायाः प्र.वा.119क/2.13; तद्विधः – རྣམ་པ་དེ་འདྲའི་ཉོན་མོངས་པ॥ तद्विधात्क्लेशात् बो.अ.9ख/4.43.

རྣམ་པ་དོར་བ་མེད་པ *पा.* आकारानवकारः, समाधिविशेषः – རྣམ་པ་དོར་བ་མེད་པ་ཞེས་བྱ་བའི་ཏིང་ངེ་འཛིན आकारानवकारो नाम समाधिः म.व्यु.595 (14क).

རྣམ་པ་དྲུག षड्विकारम् – ས་འདི་རྣམ་པ་དྲུག་ཏུ་གཡོས་སོ॥ भूमिरियं...षड्विकारं प्रचचाल सु.प्र.55ख/110; བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔས་ས་ཆེན་པོ་འདི་ལ་རེག་མ་ཐག་ཏུ་རྣམ་པ་དྲུག་ཏུ་གཡོས། རབ་ཏུ་གཡོས། ཀུན་ཏུ་རབ་ཏུ་གཡོས་སོ॥ संस्पृष्टमात्रा चेयं महापृथिवी बोधिसत्त्वेन षड्विकारमकम्पत्, प्राकम्पत्, संप्राकम्पत् ल.वि.156क/233; གང་གི་ཚེ་བཅོམ་ལྡན་འདས་ཀྱི་ཞབས་སྣོའི་ཐེམ་པ་ལ་བཞག་པ་དེའི་ཚེ་ས་ཆེན་པོ་འདི་རྣམ་པ་དྲུག་ཏུ་གཡོས་ཏེ यदा च भगवता इन्द्रकीले पादो न्यस्तः, तदेयं महापृथिवी षड्विकारं प्रकम्पिता अ.श.57ख/49.

རྣམ་པ་འདི इत्थम्–གཞན་སེལ་བདག་ཉིད་ཅན་ལ་ཡང་། །ག་ཉིད་ལ་ནི་རྟེན་ཡོད་མིན། །རྣམ་པ་འདི་ཉིད་ཀྱིས་ཞེ་ན། །དེ་མིན་རྟེན་མི་འགྲུབ་ཐོབ་འགྱུར॥ अन्यापोहात्मकस्यापि न गत्वस्य समाश्रयः। इत्थमेवेति चेन्नैवमाश्रयासिद्धताप्तितः॥ त.स.90ख/818.

རྣམ་པ་འདི་ལྟ = རྣམ་པ་འདི་ལྟ་བུ།

རྣམ་པ་འདི་ལྟ་བུ *वि.* एवम्प्रकारः – ཕྱིར་རྒོལ་བ་མི་སྨྲ་བ་ཉིད་ཀྱང་རྒོལ་བ་རྣམ་པ་འདི་ལྟ་བུ་རྒྱས་པ་ཞར་ལ་འོངས་པ་ཟློལ་གྱིས་རྗེས་སུ་སྨྲ་བ་ཡོད་པའི་ཕྱིར་དང प्रतिवादिनोऽप्यननुभाषणस्यैवम्प्रकारस्य प्रसङ्गस्य विस्तरेणानुभाषणव्याजेन सम्भवात् वा.न्या.335ख/66; एवंविधः – གང་ན་རྣམ་པ་འདི་ལྟ་ཡི། །འབྲས་བུ་བརྒྱུད་པ་རྒྱས་པ་ཡོད॥ एवंविधा विशी[? स्ती]र्यन्ते यस्मिन् फलपरम्पराः॥ अ.क.144क/68.35; एवंरूपम् – བྱམས་པ་དེ་བཞིན་གཤེགས་པས་ཆོས་ཀྱི་འཁོར་ལོ་རྣམ་པ་འདི་ལྟ་བུ་བསྐོར་ཏེ། དེ་བསྐོར་བས་དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་ལ་དེ་བཞིན་གཤེགས་པའོ་ཞེས་བྱའོ॥ एवंरूपं मैत्रेय तथागतेन धर्मचक्रं प्रवर्तितम्। यस्य प्रवर्तनात् तथागत इत्युच्यते ल.वि.204ख/307; རྣམ་པ་འདི་ལྟ་བུ་ཡི་ཆོས་ཀྱང་ཐོས॥ श्रुतश्च धर्मो अयमेवंरूपः स.पु. 37क/65.

རྣམ་པ་འདི་ལྟ་བུའི་སྒོ་ནས अनेन प्रकारेण – རྣམ་པ་འདི་ལྟ་བུའི་སྒོ་ནས་དམ་བཅས་པ་བཏང་བ་ལས་དམ་བཅའ་ལ་གནོད་པ་ཡིན་ནོ॥ अनेन प्रकारेण प्रतिज्ञां त्यजतः प्रतिज्ञाहानिरिति वा.न्या.338क/74.

རྣམ་པ་འདི་འདྲ *वि.* ईदृग्विधः – རྣམ་པ་འདི་འདྲའི་ཤེས་པ་ནི། །དྲན་ཡིན་དེ་ཡང་མྱོང་ལས་བྱུང་॥ स्मृतिश्चेदृग्विधं ज्ञानं तस्याश्चानुभवाद् भवः। प्र.वा.132ख/2.374; एवंविधः – འདི་ལྟར་རྣམ་པ་འདི་འདྲའི་ཞིང་། །འཇིག་རྟེན་གསུམ་ན་མཆིས་མ་ལགས॥ यस्मान्नैवंविधं क्षेत्रं त्रिषु लोकेषु विद्यते॥ श.बु.115क/133; एवंरूपम् लो.को.1398.

རྣམ་པ་འདི་འདྲ་བ = རྣམ་པ་འདི་འདྲ།

རྣམ་པ་འདྲ་བ उ.प. आकारः – ཞི་བ་བྱེད་པར་འདོད་པ་ལ་པདྨ་རྣམ་པ་འདྲ་བའི་ཐབ་ཁུང་བྱས་ལ शान्तिकं क-र्तुकामः पद्माकारां वेदिं कृत्वा म.मू.211ख/230.

རྣམ་པ་སྣ་ཚོགས •वि. नानाविधः – མེ་ཏོག་དང་འབྲས་བུ་དང་ལོ་མ་དང་འདབ་མ་དང་ལྷམ་བུ་རྣམ་པ་སྣ་ཚོགས་ཀྱིས་བརྒྱན་པའི་ཤིང་ལྗོན་པ་བརྒྱ་ཕྲག་མང་པོས་གང་བ नानाविधपुष्पफलपल्लवपत्रविटपरचनैर्महीरुहशतैराकीर्णे जा.मा.157ख/182; མེ་ཏོག་ཀ་མ་ལ་དང...མེ་ཏོག་མན་དཱ་ར་བ་ཆེན་པོ་ལ་སོགས་པ་མེ་ཏོག་རྣམ་པ་སྣ་ཚོགས་པས་ཉེ་བར་མཛེས་པ कमल...महामान्दारवादिभिः नानाविधैः पुष्पैरुपशोभिते स.दु.96ख/120; विविधः – གཏམ་རྣམ་པ་སྣ་ཚོགས་བྱས་ནས विविधां कथां व्यतिसार्य वि.व.134ख/1.23; དབྱངས་ནི་རྣམ་པ་སྣ་ཚོགས་དང་།། विविधैः स्वरैः गु.सि.18क/37; वि-विधानेकः – རྣམ་པ་སྣ་ཚོགས་གཟུགས་ལྡན་པའི།། वि-विधानेकविग्रहम् गु.सि.14क/30; विश्वकल्पः – མིང་ནི་དངོས་པོའི་ངོ་བོ་མིན། །གང་ཕྱིར་བརྗོད་དང་རྣམ་རྟོག་ནི། །རྣམ་པ་སྣ་ཚོགས་དབྱེར་མེད་ལ། །ཇི་ལྟར་གོམས་པ་བཞིན་དུ་འཇུག། न नाम रूपं वस्तूनां विकल्पा वाचकाश्च यत्। विश्वकल्पाः प्रवर्त्तन्ते यथाभ्या-समभेदिनि ॥ त.स.3क/40; विचित्ररूपः – དེ་ཡང...ལོངས་སྤྱོད་རྫོགས་པའི་སྐུས་རྣམ་པ་སྣ་ཚོགས་པར་སྣང་སྟེ तेऽपि...सम्भोगकाये विचित्ररूपाः प्रख्यान्ति ख.टी.159क/241; नानाविचित्रम् – དེས་རིན་པོ་ཆེ་རྣམ་པ་སྣ་ཚོགས་མཐོང་ནས་ཆགས་པ་ཆེན་པོ་སྐྱེས་ཏེ तस्य ना-नाविचित्राणि रत्नानि दृष्ट्वा महांल्लोभ उत्पन्नः अ.श.13क/12; विचित्रम् – དེ་དག་ནི་རོལ་མོའི་སྒྲའི་ཁྱད་པར་རྣམ་པ་སྣ་ཚོགས་ལེན་པར་བྱེད་དོ།། ये विचित्रै-र्वाद्यविशेषैर्वाद्यं कुर्वन्ति अ.श.60क/51; འོད་བཟང་མ...དང་བའི་རྒྱལ་པོ་འདབ་བརྒྱང་བ་བཞིན་དུ་ནམ་མཁའ་ལ་མངོན་པར་འཕགས་ཏེ་ཆོ་འཕྲུལ་རྣམ་པ་སྣ་ཚོགས་བསྟན་ཏོ།། सुप्रभा...विततपक्ष इव हंसराजो गगन-तलमभ्युद्गम्य विचित्राणि प्रातिहार्याणि दर्शयितुमा-रब्धा अ.श.190ख/176; ཐོས...རྣམ་པ་སྣ་ཚོགས་ श्रुते विचित्रे सू.अ.133ख/7; चित्रम् – སྒྱུ་རྩལ་རྣམ་པ་སྣ་ཚོགས་པ་ནི་མཁས་པར་བྱས།། कृतज्ञानकौतूहलश्चि-त्रासु च कलासु जा.मा.128ख/149; नाना – ཤིང་ལྗོན་པ་རྣམ་པ་སྣ་ཚོགས་མེ་ཏོག་དང་འབྲས་བུ་དང་འདབ་མས་བརྒྱན་པ་རྣམས་ཀྱིས་མཛེས་པར་བྱས་པ पुष्पफलपल-लवालंकृतविटपैर्नानातरुभिरुपशोभितम् जा.मा.31ख/36; • सं. वैचित्र्यम् – རྣམ་པ་སྣ་ཚོགས་ལས་བྱེད་དེ། །དེ་བཞིན་གཅོད་དང་དབྲལ་བའི་ལས།། करोति कर्म-वैचित्र्यं छेदभेदक्रियां तथा। म.मू.251क/285; དགེ་བ་དང་མི་དགེ་བའི་ལས་ཀྱི་ལམ་དང་དེའི་འབྲས་བུ་རྣམ་པ་སྣ་ཚོགས་ཤེས་པའི་ཕྱིར་རོ།། कुशलाकुशलकर्मपथतत्-फलवैचित्र्यज्ञानात् सू.व्या.251ख/170; विचित्रता – རྣམ་པ་སྣ་ཚོགས་ཡོད་པ་དང་། །མེད་པ་དག་ཀྱང་སྣང་བར་འགྱུར།། असत्ता चैव सत्ता च दृश्यते च विचित्रता। ल.अ.163क/114; चित्रता – རྣལ་འབྱོར་ཅན་གྱི་དངོས་པོ་ལྟར། །སྣ་ཚོགས་གཅིག་ཏུ་རྣམ་པར་མཛེས། །དེ་ལ་རྣམ་པ་སྣ་ཚོགས་མེད།། यथा हि योगिनां वस्तु चित्रमेकं विराजते। न ह्यस्ति चित्रता तत्र ल.अ.170क/127; विमात्रता – འགྲོ་བའི་ལུས་ཐམས་ཅད་དུ་ཡོངས་སུ་བྱུང་བའི་མིག་རྣམ་པ་སྣ་ཚོགས་ཀྱིས་བལྟ་བ་དང सर्वजगच्-छरीरसंभवाभिश्चक्षुर्विमात्रतावलोकनताभिः ग.व्यू.290क/368; • पा. विचित्रः, क्षणभेदः – སྐད་ཅིག་མ་བཞི་ནི། རྣམ་པ་སྣ་ཚོགས་དང་རྣམ་པར་སྨིན་པ་དང་རྣམ་པར་ཉེད་པ་དང་མཚན་ཉིད་དང་བྲལ་བའོ།། चत्वारः क्ष-

णाः। विचित्रविपाकविमर्दविलक्षणाश्चेति हे.त.3[क]
/4; द्र. – སྣ་ཚོགས་དང་ནི་རྣམ་སྨིན་དང་། །རྣམ་ཉེད་དེ
བཞིན་མཚན་ཉིད་བྲལ། །སྐད་ཅིག་བཞི་ནི་རབ་ཤེས་པ།།
विचित्रं च विपाकं च विमर्दो विलक्षणं तथा। चतुः-
क्षणसमागम्यम् हे.त.16[ख]/52; • *अव्य.* अनेकधा –
མཛའ་དང་མི་མཛའི་དོན་གྱི་ཕྱིར། །སྡིག་པ་རྣམ་པ་སྣ
ཚོགས་བྱས།། प्रियाप्रियनिमित्तेन पापं कृतमनेकधा।
बो.अ.5[क]/2.35.

རྣམ་པ་སྣ་ཚོགས་ཅན *वि.* चित्राकारः – སེམས་ནི་སྣ
ཚོགས་སྣང་བ་དང་། །རྣམ་པ་སྣ་ཚོགས་ཅན་དུ་འཇུག།
इति चित्तं चित्राभासं चित्राकारं प्रवर्तते। सू.अ.171[क]
/64;

རྣམ་པ་སྣ་ཚོགས་པ = རྣམ་པ་སྣ་ཚོགས།

རྣམ་པ་སྣ་ཚོགས་པའི་ན་བཟའ་བརྒྱན་པ *वि.* विचित्र-
वस्त्राभरणः –བཅོམ་ལྡན་འདས་རྡོ་རྗེ་སེམས་དཔའ...
རྣམ་པ་སྣ་ཚོགས་པའི་ན་བཟའ་བརྒྱན་པ भगवान् वज्र-
सत्त्वः ...विचित्रवस्त्राभरणः ख.टी.163[क]/245; ལང
ཚོ་གསར་པ ...རྣམ་པ་སྣ་ཚོགས་པའི་ན་བཟའ་བརྒྱན་པ
नवयौवनाः ... विचित्रवस्त्राभरणाः ख.टी.163[क]/
245; द्र. སྣ་ཚོགས་པའི་གོས་ཀྱིས་བརྒྱན་པ།

རྣམ་པ་སྣ་ཚོགས་བྱས *भू.का.कृ.* चित्रितम् – ཤླ་གར་ཨན
བུ་འབྲས་མི་སྡུག། །ལས་ཀྱིས་རྣམ་པ་སྣ་ཚོགས་བྱས།། पे-
शीघनार्बुदं पिटकमशुभं कर्मचित्रितम्। ल.अ.165[ख]
/117.

རྣམ་པ་སྤྱི་ཡིན་པར་སྨྲ་བ आकृतिसामान्यवादी – རྣམ
པ་སྤྱི་ཡིན་པར་སྨྲ་བའི་ལྟར་ན་ཡང་དེ་ཁྱད་པར་བཞིན་དུ
ཐ་མི་དད་པའི་སྒོ་ནས་དོན་གཞན་ལ་མི་འཇུག་པས་ཐ་མི
དད་པའི་ཕྱིར་ཐ་མི་དད་པར་སྣང་བར་མི་རུང་ངོ་།། आकृ-
तिसामान्यवादिनोऽपि विशेषवत्तस्याऽव्यतिरेकाद-
र्थान्तरेऽवृत्तिरिति भेदान्नाभिन्नः प्रतिभासो युज्यते
प्र.वृ.292[क]/36.

རྣམ་པ་སྤྲོས་པ = རྣམ་པར་སྤྲོས་པ།

རྣམ་པ་ཕྱེ = རྣམ་པར་ཕྱེ་བ།

རྣམ་པ་མ་ངེས་པ *वि.* अनियताकारः – གང་རྣམ་པ་ངེས
པ་དང་ལྡན་པའི་དོན་ཡིན་གྱི། རྣམ་པ་མ་ངེས་པ་ནི་མ་ཡིན
ཏེ यो नियताकारोऽर्थः, तस्य। न त्वनियताकारः
न्या.टी.77[ख]/204.

རྣམ་པ་མ་ཚང वैकल्यम् – ཡོངས་སུ་འཛིན་པ་མེད་པ
དང་། །ལམ་གྱི་རྣམ་པ་མ་ཚང་དང་།། परिग्रहस्याभावे च
वैकल्ये प्रतिपद्गते॥ अभि.अ.9[ख]/5.10.

རྣམ་པ་མང་། ºདུ *अव्य.* बहुधा – མི་རྣམས་ཆོས་ལ་བལྟ
བའི་ཕྱིར། །བློ་ནི་རྣམ་པ་མང་དུ་སྐྱེས། །ཁྱོད་ནི་ཆོས་རྣམས
གཏན་ལ་འབེབས། །ཇི་ལྟར་ལྟགས་པ་བཤད་དུ་གསོལ།།
धर्मं प्रति मनुष्याणां बहुधा बुद्धयो गताः। निश्चय-
स्तव धर्मे तु यथा तं वक्तुमर्हसि॥ जा.मा.156[ख]/180;
དེ་བཞིན་དུ་རྟག་པ་རྣམས་ཤེས་པ་སྐྱེད་པ་ལ་ཡང་ཉེ་བར
མཁོ་བ་ཡོད་པ་མ་ཡིན་ནོ་ཞེས་རྣམ་པ་མང་དུ་བཤད་ཟིན
ཏོ།། तथा ज्ञानजननेऽपि न नित्यानामुपयोगोऽस्ती-
ति बहुधा निवेदितम् त.प.207[ख]/883; बहुशः –
དངོས་པོ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་ནུས་པ་ཉིད་ནི་ཐ་མི་དད་པ་ཡིན
ནོ་ཞེས་རྣམ་པ་མང་དུ་བསྟན་ཟིན་པའི་ཕྱིར་རོ།། सर्वप-
दार्थानामव्यतिरिक्तैव शक्तिरिति बहुशः प्रतिपादित-
त्वात् त.प.218[क]/906.

རྣམ་པ་མང་པོ = རྣམ་མང • *वि.* बहुविधः – ཤིན་ཏུ་མི
བཟད་ལས་རྣམས་ཀྱིས། །སྡུག་བསྔལ་རྣམ་པ་མང་པོས
འཚེད།། पच्यन्ते घोरकर्माणो दुःखैर्बहुविधैर्भृशम्॥
प्र.सि.30[ख]/72; མཆོད་པ་རྣམ་པ་མང་པོ་དག་གིས बहु-

विधाभिश्च पूजाभिः अ.सा.50क/28; बहुविविधः – དེ་ནས་རྒྱལ་བུ་གཞོན་ནུ་དེ་གཉིས་ཀྱིས་སྙིང་རྗེ་རྗེ་སྐད་དུ་རྣམ་པ་མང་པོར་ངུས་ནས་དོང་ངོ་॥ अथ तौ राजकुमारौ बहुविविधकरुणं विलाप्य प्रचक्रमतुः सु.प्र.56क/111; अनेकविधः – རྫུ་འཕྲུལ་གྱི་ཡུལ་རྣམ་པ་མང་པོ་མྱོང་བར་བྱེད་པ་ཡིན अनेकविधमृद्धिविषयं प्रत्यनुभवति म.व्यु.215(6ख); नानाविधः – ནེ་ཙོ་ས་རི་ནས་བརྒྱན་པའི། །གནོད་སྦྱིན་རྣམ་པ་མང་པོ་དང་॥ यक्षैश्च नानाविधैः शुकसारणप[म ?]ण्डितैः ॥ ल.अ.57क/2; बहुप्रकारः – ལག་པ་ལ་སོགས་དབྱེ་བ་རྣམ་མང་ཡང་། །ཡོངས་སུ་བསྲུང་བྱའི་ལུས་སུ་གཅིག་པ་ལྟར॥ हस्तादिभेदेन बहुप्रकारः कायो यथैकः परिपालनीयः। बो.अ.27क/8.91; विविधप्रकारः – དེ་ཉིད་རྣམ་པ་མང་པོས་བྲལ་བ་གང་ཡིན་པ་དེ་ནི་དྲི་མ་དག་དང་རྣམ་པར་བྲལ་བའོ॥ तदेव विविधप्रकारेणापगतं यस्य स व्यपगतकलुषः वि.प्र.90क/3.1; विविधः – ཚོང་རྣམ་པ་མང་པོ་ཁྱེར་ནས་ཏེ विविधपण्यं गृहीत्वा ल.वि.182क/276; སྒྲ་རྣམ་པ་མང་པོ་གང་དག་འབྱུང་བ་འདི་ལྟ་སྟེ། གླང་པོ་ཆེའི་སྒྲའམ་རྟའི་སྒྲའམ་རྔ་མོའི་སྒྲའམ विविधाः शब्दा निश्चरन्ति...तद्यथा हस्तिशब्दा वा अश्वशब्दा वा उष्ट्रशब्दा वा स.पु.132ख/210; རྣམ་མང་ལྗོན་པ་མཆོག་རྣམས་རྩད་ནས་འབྱིན་ཞིང་རབ་ཏུ་ཕྱུགས་བྱེད་འབྲུག་བཞིན་སྒྲ་དག་སྒྲོགས॥ उत्पाटय मोटयन् वै विविधतरुवरान् मेघवद् गर्जमानः। वि.प्र.111ख/12; बहुः – དེ་བཞིན་གཤེགས་པའི་ས་གཟུགས་རྣམ་པ་མང་པོར་རྣམ་པར་འགྱུར་བ बहुरूपविकारतां च तथागतभूमिम् ल.अ.61क/7; རྡོ་རྗེ་ལྟ་བུ་རྣམས་ཀྱི་བྱེ་བྲག་ནི་རྣམ་པ་མང་པོ་ཞིག་ཏུ་བརྗོད་དེ वज्रोपमानां तु बहुभेदं वर्णयन्ति अभि.भा.26ख/966; • *अव्य.* = རྣམ་མང་དུ बहुधा – ས་ནི་རྣམ་པ་མང་པོ་གཡོས་པར་གྱུར॥ विकम्पमाना बहुधा वसुंधरा जा.मा.45क/53; མ་རྟོགས་པས་ན་དབུལ་བའི་སྡུག་བསྔལ་ནི། །རྣམ་མང་རྒྱུན་དུ་མྱོང་འདིས་སྤོང་ངོ་॥ अबुध्यमानानुभवत्यजस्रं दारिद्र्यदुःखं बहुधा प्रजेयम्॥ र.वि.107ख/63.

རྣམ་པ་མེད = རྣམ་པ་མེད་པ།

རྣམ་པ་མེད་པ •*वि.* निराकारः – ཇི་ལྟར་ཁྱེད་ཅག་གི་ཤེས་པ། །དེ་ཉིད་ཀྱིས་ན་རྣམ་མེད་ནི॥ यथा हि भवतां ज्ञानं निराकारं च तत्त्वतः। त.स.74ख/698; དམིགས་པ་མེད་པ་དང་རྣམ་པ་མེད་པའི་རྣམ་པར་ཤེས་པ་ནི་མི་རུང་ངོ་॥ न हि निरालम्बनं निराकारं वा विज्ञानं युज्यते त्रि.भा.150क/37; བེམས་མེད་རྟོགས་པའི་ངོ་བོ་ནི། །རྣམ་པ་མེད་པ་ཡིན་པར་བཤད॥ अजडं बोधरूपं तु निराकारमिति स्मृतम्। ज्ञा.सि.43ख/112; अनाकारः – འོན་ཏེ་རྣམ་མེད་པས་[? བློས་]དངོས་རྣམས། །རྣམ་པར་རིག་པར་ཁྱེད་འདོད་པ॥ अथानाकारधीवेद्यं वस्तु युष्माभिरिष्यते। त.स.21क/225; རྣམ་པ་མེད་པའི་ཕྱིར་དེ་དག་ལ་མངོན་དུ་ཕྱོགས་པ་ཡང་མ་ཡིན་ནོ॥ न च तेष्वामुखमनाकारत्वात् सू.व्या.160क/48; निराकृतिः – རྣམ་པར་བཅས་ཀྱང་རྣམ་མེད་བཅོམ་ལྡན་འདས་མ་ཤེས་རབ་མ साकारा च निराकृतिर्भगवती प्रज्ञा वि.प्र.107ख/1, पृ.1; अनिर्भासः – དེ་ལྟར་རེ་ཞིག་རྣམ་པ་མེད་པའི་ཤེས་པས་ཕྱི་རོལ་གྱི་དོན་ཤེས་པ་མ་ཡིན་ནོ་ཞེས་བསྟན་ནས एवं तावदनिर्भासं ज्ञानं न बाह्यमर्थं विजानातीति प्रतिपादितम् त.प.123ख/696; •*सं.* = རྣམ་མེད་ཉིད निराकारता–དེ་ལྟ་ཡིན་དང་ཤེས་པར་གཏོགས་པ་ཡིན་ན་ཇི་ལྟར་ཤེས་པ་རྣམ་པ་མེད་པ་ཞེས་བརྗོད་པར་བྱ་ཞེ་ན ततश्च ज्ञानगतत्वे कथं निराकारता विज्ञानस्येति वक्तव्यम् त.प.180क/820; •*पा.* अप्रकारः, समाधिविशेषः – རྣམ་པ་མེད་པ་ཞེས་བྱ་བའི་ཏིང་ངེ

འཛིན་ अप्रकारो नाम समाधिः म.व्यु.574(13ख).

རྣམ་པ་མེད་པ་དགག་པ *वि.* निराकारनिराकरणः – ཡེ་ཤེས་གྲུབ་པ་ལས་རྣམ་པ་མེད་པ་དགག་པ་སྟེ་ལེའུ་བཞི་པའོ॥ ज्ञानसिद्धौ निराकारनिराकरणश्चतुर्थः परिच्छेदः ज्ञा.सि.45क/114.

རྣམ་པ་མེད་པའི་ཚིག་ལེའུར་བྱས་པ *ना.* निराकारकारिका, ग्रन्थः क.त.3894.

རྣམ་པ་མེད་པའི་ཤེས་པ अनाकारज्ञानम् – རྣམ་པ་མེད་པའི་ཤེས་པ་སྨྲ་བ अनाकारज्ञानवादिनः त.प.118ख/687.

རྣམ་པ་མེད་པའི་ཤེས་པ་སྨྲ་བ अनाकारज्ञानवादी, निराकारविज्ञानवादस्यानुयायी – རྣམ་པ་དང་ལྡན་པ་ནི་ཕྱི་རོལ་གྱི་དོན་ཡིན་ལ། བློ་ནི་རྣམ་པ་མེད་པ་ཡིན་ནོ་ཞེས་བྱ་བ་གང་གི་ལྟ་བ་ཡིན་པའི་རྣམ་པ་མེད་པའི་ཤེས་པ་སྨྲ་བ་ལའོ॥ अनाकारज्ञानवादिनः, यस्येदं दर्शनम्–आकारवान् बाह्योऽर्थो निराकारा बुद्धिरिति त.प.118ख/687.

རྣམ་པ་མེད་པར་སྨྲ་བ निराकारवादी, निराकारविज्ञानवादस्यानुयायी – སྒྲུབ་པར་བྱེད་པ་རྣམ་པ་གཉིས་ཏེ། གང་གི་ཕྱིར་རྣམ་པ་མེད་པར་སྨྲ་བའི་ལྟ་བ་ཡིན་པ་དེས་ན་གྲུབ་པ་ལ་སྒྲུབ་པ་མ་ཡིན་ནོ॥ द्विविधमपि साधनं निराकारवादिनं प्रति यतः, तेन न सिद्धसाध्यता त.प.123ख/696.

རྣམ་པ་མཛེས = རྣམ་པར་མཛེས་པ།

རྣམ་པ་འཛིན = རྣམ་པ་འཛིན་པ།

རྣམ་པ་འཛིན་པ •*क्रि.* आकारयति – ཕ་རོལ་གྱི་སེམས་ཤེས་པ་ཟག་པ་དང་བཅས་པ་ནི་ཤེས་བྱ་སེམས་དང་སེམས་ལས་བྱུང་བ་རྣམས་ཀྱི་རང་གི་མཚན་ཉིད་གང་ཡིན་པ་དེའི་རྣམ་པ་འཛིན་ཏེ सास्रवं परचित्तज्ञानं ज्ञेयानां चित्तचैत्तानां यत् स्वलक्षणं तदाकारयति अभि.भा.45ख/1046; •*सं.* आकारग्रहणम् – མངོན་སུམ་གྱི་སྟོབས་ཀྱིས ... དེ་མ་ཡིན་པ་ལས་ལོག་པའི་ཡུལ་ཅན་གྱི་དྲན་པ་སྐྱེས་པ་ནི། ཇི་ལྟར་ཡོངས་སུ་མཐོང་བའི་རྣམ་པ་འཛིན་པའི་ཕྱིར་ཚད་མ་མ་ཡིན་ཏེ अतद्व्यावृत्तिविषया स्मृतिरुत्पन्ना प्रत्यक्षबलेन न प्रमाणम्, यथादृष्टाकारग्रहणात् हे.बि.239क/53.

རྣམ་པ་གཞན། ०དུ •*अव्य.* अन्यथा – རྣམ་པ་གཞན་དུ་བློ་དེ་ནི། །གཏོར་ཟའི་སོ་བརྟག་ལ་འཇུག་མིན॥ अन्यथा हि न सा बुद्धिर्बलिभुग्दशनादिषु। वर्तते त.स.62ख/594; རྣམ་པ་གཞན་དུ་ན་ཁྲུ་སྟོང་པའི་དཀྱིལ་འཁོར་ལ་སློབ་མས་དོར་བའི་མེ་ཏོག...གང་དུ་ལྷུང་བར་འགྱུར अन्यथा सहस्रहस्तमण्डले कुतः पुष्पं पतिष्यति शिष्येण क्षिप्तम् वि.प्र.141ख/3.78; རྣམ་གཞན་གྱིས་ཀྱང་རྟོགས་པ་མཐོང་॥ गतिरप्यन्यथा दृष्टा प्र.वा.120ख/2.56; •*सं.* 1. अन्याकारः – རྣམ་པ་གཞན་ནི་རྟོགས་པ་ཡིས། །དངོས་པོ་རྟོགས་པར་མི་འགྱུར་ཏེ॥ अन्याकारेण बोधेन नैव वस्त्ववगम्यते ॥ त.स.118ख/1021; རྣམ་པ་གཞན་ནི་རིག་པ་ན། །དོན་དེ་ཉིད་ནི་ཇི་ལྟར་རིག॥ अन्याकारस्य संवित्तौ स ह्यर्थो विदितः कथम् ॥ त.स.90ख/820 2. गत्यन्तरम् – དེས་ན་རང་ཉིད་ངེས་པར་བརྟགས་ནས་འཇུག་པར་བྱ་བའམ་ངེས་པར་རྟོགས་པས་བསྐུལ་ནས་ཡིན་ཏེ། རྣམ་པ་གཞན་མེད་པའི་ཕྱིར་རོ॥ ततः स्वयं वा निरूप्य प्रवर्त्तितव्यं निरूपकप्रेरणया गत्यन्तराभावात् प्र.अ.31ख/36; प्रकारान्तरम् – རྣམ་པ་གཞན་མེད་པར་སྟོན་པ་ཡིན་ནོ॥ प्रकारान्तराभावं च सूचयति त.प.16क/477; རྣམ་པ་གཞན་དག་བརྗོད་པ་གང་། །དེ་ནི་རྣམ་གྲངས་བརྗོད་པར་འདོད॥

यत्प्रकारान्तराख्यानं पर्यायोक्तन्तदिष्यते ॥ का.आ. 332क/2.292; अन्यगतिः – གང་ཚེ་དངོས་དང་དངོས་མེད་དག །བློ་ཡི་མདུན་ན་མི་གནས་པ། །དེ་ཚེ་རྣམ་པ་གཞན་མེད་པས། །དམིགས་པ་མེད་པར་རབ་ཏུ་ཞི།། यदा न भावो नाभावो मतेः संतिष्ठते पुरः। तदान्यगत्यभावेन निरालम्बा प्रशाम्यति ॥ बो.अ.32क/9.35; अपरप्रकारः – དེ་ལ་འདི་ནི་གདོན་མི་ཟ་བར་ངེས་པར་སྦྱོར་བ་ལ་སོགས་པའི་ཆོས་སུ་འགྱུར་ཏེ། རྣམ་པ་གཞན་རིག་པ་མེད་པའི་ཕྱིར་རོ།། तत्रानेन नियमे[न] नियोज्यादीनामन्यतमस्य धर्मेण भवितव्यमपरप्रकारासम्वेदनात् प्र.अ.7क/9 3. = རྣམ་པ་གཞན་ཉིད अन्यथात्वम्–དངོས་པོའི་རང་བཞིན་སུས་ཀྱང་རྣམ་པ་གཞན་དུ་བྱ་བར་མི་ནུས་ཏེ न च वस्तुनः स्वभावान्यथात्वं केनचित् क्रियेत त.प.175क/808; རབ་རིབ་ཅན་ལ་སོགས་པ་ཟླ་བ་གཉིས་པ་ལ་སོགས་པའི་ཤེས་པ་ལ་སྐྱེས་བུ་གཞན་ལ་དྲིས་པ་ཉིད་ལས་རྣམ་པ་གཞན་ཁོ་ནར་ངེས་ཀྱི तैमिरिकादीनां द्विचन्द्रादिज्ञानेषु पुरुषान्तरपरिप्रश्नादेवान्यथात्वनिश्चयो भवति त.प.227क/923.

རྣམ་པ་གཞན་གྱི་དངོས་པོ अन्यथाभावः – ཤིན་ཏུ་རྣམ་པར་གཏན་ལ་ཕབ་པའི་དུ་བས་དཔག་པའི་མེ་ནི་རྣམ་པ་གཞན་གྱི་དངོས་པོར་བྱ་བར་ནུས་པ་མ་ཡིན་ཏེ न हि धूमात् सुपरिनिश्चितादनुमितस्य वह्नेरन्यथाभावः शक्यते कर्तुम् त.प.39क/526.

རྣམ་པ་གཞན་གྱི་ཤེས་པ अन्यथात्वज्ञानम्–འདི་གཉིས་ཞེས་བྱ་བ་ནི་རྣམ་པ་གཞན་གྱི་ཤེས་པ་དང་རྒྱུ་རྐྱེན་གཞན་[? རྒྱུ་སྐྱོན་ཅན་]གྱི་ཤེས་པའོ།། एतद् द्वयमिति अन्यथात्वज्ञानम्, दुष्टकारणज्ञानं च त.प.230ख/931.

རྣམ་པ་གཞན་ཉིད अन्यथात्वम् – རྣམ་འགྱུར་རྣམ་པ་གཞན་ཉིད་ན། །གནས་སྐབས་ན་ཡང་དེ་ཇི་ལྟར།། अन्यथात्वं विकारो हि तादवस्थ्ये च तत्कथम् ॥ त.स. 12ख/145.

རྣམ་པ་གཞན་དང་ལྡན་པའི་དངོས་པོ་འཛིན་པ *वि.* अन्याकारवद्वस्तुग्राहि – དེའི་ཕྱིར་རྣམ་པ་གཞན་དང་ལྡན་པའི་དངོས་པོ་འཛིན་པ་ནི་རྣམ་པ་གཞན་དང་ལྡན་པའི་དངོས་པོ་ལ་ཚད་མ་མ་ཡིན་ཏེ तस्माद् अन्याकारवद्वस्तुग्राहि नाकारान्तरवति वस्तुनि प्रमाणम् न्या.टी.38ख/25.

རྣམ་པ་གཞན་དུ་ཡོད་པ अन्यथाभावः – རྣམ་པ་གཞན་དུ་ཡོད་དོགས་པས། །རྗེས་སུ་དཔག་པས་ཀྱང་གྲུབ་མིན།། न चानुमानतः सिद्धिरन्यथाभावशङ्कया ॥ त.स.123ख/1074.

རྣམ་པ་བཞི་བསྒོམ་པ *पा.* चतुराकारभावनः, भावनाकारप्रविष्टमनस्कारभेदः – སྒོམ་པའི་རྣམ་པ་ལ་ཞུགས་པ་ནི། རྣམ་པ་བཞི་བསྒོམ་པ་དང་རྣམ་པ་སུམ་ཅུ་རྩ་བདུན་བསྒོམ་པའོ།། भावनाकारप्रविष्टश्चतुराकारभावनः सप्तत्रिंशदाकारभावनश्च सू.व्या.166ख/58.

རྣམ་པ་བཟང་པོ *पा.* स्वाकारकरः, समाधिविशेषः – རྣམ་པར་བྱེད་ཅེས་བྱ་བའི་ཏིང་ངེ་འཛིན་དང… རྣམ་པ་བཟང་པོ་[བྱེད་པ་ ?]ཞེས་བྱ་བའི་ཏིང་ངེ་འཛིན་དང आकारकरो नाम समाधिः…स्वाकारकरो नाम समाधिः का.व्यू.222क/284.

རྣམ་པ་བཟང་བ *वि.* स्वाकारः – སེམས་ཅན་དག་པ་རྣམ་པ་བཟང་བ་གདུལ་སླ་བ सत्त्वः शुद्धः स्वाकारः सुविनेयः ल.वि.193क/295; द्र. རྣམ་པ་བཟང་པོ།

རྣམ་པ་ཤིན་ཏུ་གསལ་བར་འཛིན་པ *वि.* स्फुटतराकारग्राहि – རྣམ་པ་ཤིན་ཏུ་གསལ་བར་འཛིན་པའི་ཤེས་པ་ནི་རྣལ་འབྱོར་པ་རྣམས་ཀྱི་མངོན་སུམ་ཡིན་ནོ།། स्फुटतराकारग्राहि ज्ञानं योगिनः प्रत्यक्षम् न्या.टी.44क/68.

རྣམ་པ་སུམ་ཅུ་རྩ་བདུན་བསྒོམ་པ *पा.* सप्तत्रिंशदाकारभावनः, भावनाकारप्रविष्टमनस्कारभेदः – སྒོམ་པའི་རྣམ་པ་ལ་ཞུགས་པ་ནི། རྣམ་པ་བཞི་བསྒོམ་པ་དང་རྣམ་པ་སུམ་ཅུ་རྩ་བདུན་བསྒོམ་པའོ།། भावनाकारप्रविष्टश्चतुराकारभावनः सप्तत्रिंशदाकारभावनश्च सू.व्या. 166ख/58.

རྣམ་པ་གསུམ •*वि.* त्रिविधः – གཏན་ཚིགས་ཀྱང་རྣམ་པ་གསུམ་ཁོ་ན་ཡིན་ནོ།། हेतुरपि त्रिविध एवेति वा.टी. 54ख/7; འདུས་མ་བྱས་རྣམ་གསུམ་གང་ཞེ་ན कतमत् त्रिविधमसंस्कृतमिति अभि.स्फु.12क/19; རྟགས་རྣམ་པ་གསུམ त्रिविधं लिङ्गम् वा.टी.51क/3; •*अव्य.* त्रिधा– རྣམ་གསུམ་ལས་སུ་ཡང་དག་བསྒྲགས།། त्रिधा कर्म प्रकीर्तिता[? तम्] म.मू.192ख/128; •*सं.* = རྣམ་གསུམ་ཉིད त्रिविधत्वम्– དེའི་ཕྱིར་བསྒྲུབ་པར་བྱ་བ་རྣམ་པ་གསུམ་ཡིན་པས་དེའི་གོ་བར་བྱེད་པའི་གཏན་ཚིགས་ཀྱང་རྣམ་པ་གསུམ་ཁོ་ན་ཡིན་ནོ།། तस्मात् साध्यस्य त्रिविधत्वात् तद्गमको हेतुरपि त्रिविध एवेति वा.टी. 54ख/7.

རྣམ་པའི་མཆོག་ཐམས་ཅད་དང་ལྡན་པ *वि.* सर्वाकारवरोपेतः – རྒྱལ་པོ…རྣམ་པའི་མཆོག་ཐམས་ཅད་དང་ལྡན་པ། ཆོས་ཀྱི་རྒྱལ་པོ་ཆེན་པོའི་རིགས་སུ་བྱུང་བ राजा …सर्वाकारवरोपेतो महाधर्मराजकरो[? कुलो]दितः ग.व्यू.170क/252; द्र. རྣམ་པ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་མཆོག་དང་ལྡན་པ།

རྣམ་པར་དཀར་བ •*वि.* विपाण्डुरः – ལག་གཡོན་ཡལ་འདབ་དག་ལ་རྣམ་པར་དཀར་བའི་གདོང་པ་བཞག་ནས་ནི།། विपाण्डुरमाननं करकिसलये कृत्वा वामे ना.ना. 232क/65; •*व.का.कृ.* व्यवदायमानः – དཀྱིལ་འཁོར་ཡོངས་སུ་རྫོགས་སུ་ཉེ་བའི་ཉི་མ་དང་ཐག་རིང་བས་རྣམ་པར་དཀར་ཞིང་མཛེས་པ परिपूर्णप्रायमण्डलमादित्यविप्रकर्षाद्व्यवदायमानशोभम् जा.मा.26ख/31.

རྣམ་པར་དཀྲུགས = རྣམ་པར་དཀྲུགས་པ།

རྣམ་པར་དཀྲུགས་གྱུར་པ *भू.का.कृ.* व्याकुलीकृतः – འཇིག་རྟེན་མཐའ་གཉིས་ལྷུང་བ་ནི། །ལྟ་བས་རྣམ་པར་དཀྲུགས་གྱུར་པས།། द्वयान्तपतितो लोको दृष्टिभिर्व्याकुलीकृतः ॥ ल.अ.184ख/153.

རྣམ་པར་དཀྲུགས་པ • *भू.का.कृ.* विक्षोभितः – དེ་ནི་ཉོན་མོངས་པའི་དཔུང་ཐམས་ཅད་རྣམ་པར་དཀྲུགས་པ་ལ་ཤིན་ཏུ་དཔའ་བ་ལགས स शूरः सर्वक्लेशवंश[? बल]विक्षोभितासु ग.व्यू.305ख/393; དེ་བཞིན་གཤེགས་པས་མངོན་པར་རྫོགས་པར་སངས་རྒྱས་ཏེ།…ཉོན་མོངས་པ་རྣམས་ནི་རྣམ་པར་དཀྲུགས तथागतेऽभिसंबुद्धे…विक्षोभिताः क्लेशाः ल.वि.169क/253; •*वि.* व्याकुलः – ཁྱིམ་ན་གནས་པ…ནོར་སྒྲུབ་ཅིང་བསྲུང་བའི་ཞར་གྱིས་རྣམ་པར་དཀྲུགས་པ धनार्जनरक्षणप्रसङ्गव्याकुलं…गार्हस्थ्यम् जा.मा.31क/36.

རྣམ་པར་བཀག་པ *भू.का.कृ.* विसूदितः – ཁྱེད་ཀྱིས་ཤེས་པ་མིན་པ་ལས། །བདག་གིས་བཤད་པ་རྣམ་པར་འགོག[? བཀག]།། अज्ञात्वा…भवद्भिः…व्याख्या मम विसूदिता अ.क.305ख/39.94.

རྣམ་པར་བགོད = རྣམ་པར་བགོད་པ། རྣམ་པར་བགོད་ནས निधाय – ལེགས་དོན་དྲི་མེད་བདག་ཉིད་དག་བྱེད་དེ་ཡང་སྙིང་ལ་རྣམ་བགོད་ནས།། सूक्तार्थं हृदये निधाय विमलं तं चात्मसंशोधनम् अ.क.33क/53.51.

རྣམ་པར་བགོད་པ = རྣམ་བགོད • *सं.* विन्यासः – སོར་མོ་ལ་སོགས་འདབ་སོགས་དང་། །ཀང་པ་པད་མ་ཉིད་བྱས་ནས། །དེ་འོས་གནས་སུ་རྣམ་བགོད་པ། །འདི་ནི་མཐའ

དག་གཟུགས་ཅན་ནོ།། अङ्गुल्यादौ दलादित्वं पादे चारोप्य पद्मताम्। तद्योग्यस्थानविन्यासादेतत् सकलरूपकम् ॥ का.आ.324क/2.69; निवेशनम् – གང་གི་གྲགས་པའི་མཚན་ཉིད་ཁྱད་པར་རྣམ་པར་བཀོད་པ ཡིས། །ས་གཞི་བསོད་ནམས་མཆོག་གི་བསོད་ནམས་ལྡན པར་ཉེར་བསྒྲུབ་ཅིང་།། यत्कीर्तिलक्षणविशेषनिवेशनेन पुण्यापि पुण्यतरतामुपयाति पृथ्वी ॥ अ.क.155क/70.1; व्यूहः – སངས་རྒྱས་ཀྱི་ཞིང་ཚད་མེད་པ་དག་འོད དང་རྣམ་པར་བཀོད་པའི་རྒྱན་གྱིས་རབ་ཏུ་བརྒྱན་པ अप्रमाणबुद्धक्षेत्रप्रभाव्यूहालङ्कारप्रतिमण्डितम् शि.स.161क/154; प्रज्ञप्तिः – སྤོབས་པ་ཐ་དད་པ་ཡང་དག པར་ཤེས་པས་ཇི་ལྟར་རྣམ་པར་བཀོད་པ་བཞིན་དུ་འཁྲུག པ་མེད་པ་མཐའ་ཡས་པས་ཆོས་སྟོན་ཏོ།། प्रतिभानप्रतिसंविदा यथाप्रज्ञप्त्यविकोपनतापर्यन्ततया धर्मं देशयति द.भू.254ख/51; • *भू.का.कृ.* विन्यस्तः – བུ དང་གཉེན་རྣམས་མཐའ་དག་ནི། །བཙོན་ཁང་ནང་དུ་རྣམ པར་བཀོད།། बन्धनागारविन्यस्तसमस्तसुतबान्धवः अ.क.21ख/52.21; ལག་གཉིས་དེ་བཞིན་རྣམ་བཀོད་པ། །སོར་མོའི་རྩེ་མོ་ལེགས་པར་སྦྱར།། तदेव हस्तौ विन्यस्तौ अङ्गुल्यग्रसवेणिकौ । म.मू.252ख/288; न्यस्तः – གྲོགས་མོ་དང་བཅས་མིག་བཟང་མ། །ཡིད་ནི་སྤྲིན་གྱི བཞོན་པ་ལ། །རྣམ་པར་བཀོད་ནས་དལ་གྱིས་སོང་།། सह सख्या सुलोचना । जीमूतवाहनन्यस्तमानसा सा शनैर्ययौ ॥ अ.क.297ख/108.42; व्यूहितः – སངས རྒྱས་བཅོམ་ལྡན་འདས་རྣམས་ལ་ཡོངས་སུ་དྲིས་སོ།། ཡོངས་སུ་ཞུས་སོ།། ...རྣམ་པར་བཀོད་དོ།། ...རྒྱ་ཆེར་བྱས སོ།། बुद्धानां भगवतामन्तिकात् परिपृष्टा परिप्रश्नीकृता... व्यूहिता ... विपुलीकृता ग.व्यू.31क/127; विरचितः –གཡས་གཡོན་ནས་རིན་པོ་ཆེའི་སྣེགས་བུའི ཕྲེང་བ་རྣམ་པར་བཀོད་པས་རྣམ་པར་བརྒྱན་པ उभयतो नानारत्नव्योमकपंक्तिविरचितव्यूहः ग.व्यू.235ख/312; निषेवितः – སྔོན་ཡང་བདག་གིས་དགེ་བ་ལ། །འདི ནི་འབད་ནས་རྣམ་པར་བཀོད།། पूर्वमप्येष कुशले मया यत्नान्निषेवितः । अ.क.279ख/104.7; व्यवस्थापितः – དེ་བཞིན་གཤེགས་པས་མངོན་པར་རྫོགས་པར སངས་རྒྱས་ཏེ། ...སེམས་ཅན་གྱི་ཁམས་ནི་རྣམ་པར་བཀོད तथागतेऽभिसंबुद्धे... व्यवस्थापितः सत्त्वधातुः ल.वि.169क/254.

རྣམ་པར་བཀྱེ་བ **भू.का.कृ.* विसृष्टः – རྒྱ་མཚོའི་ཀླུའི རྒྱལ་པོའི་སྤྲིན་ལས་རྣམ་པར་བཀྱེ་བ[? བཀྱེས་པ]འི་ཆུའི ཕུང་པོ་ཆེན་པོ་ནི सागरनागराजमेघविसृष्टो महानप्स्कन्धः द.भू. 267ख/60.

རྣམ་པར་བཀྲ = རྣམ་པར་བཀྲ་བ།

རྣམ་པར་བཀྲ་ཕྱུར་པ *वि.* विचित्रः – དེ་ཡི་སྙིང་ག་ཀང [? ཀེད་]ལག་མཐིན་པ་ལ། །བཏགས་པའི་སྐུད་པ་རྣམ པར་བཀྲ་ཕྱུར་པ།། वक्षःकटीपाणिगलावसक्तविचित्रसूत्राणि अ.क.122क/65.49; द्र. རྣམ་པར་བཀྲ་བ།

རྣམ་པར་བཀྲ་བ • *वि.* विचित्रः – ཕ་རོལ་ཕྱིན་བཅུ རྫོགས་པ་ཡིས། །རིན་ཆེན་སྣམ་བུ་རྣམ་པར་བཀྲ།། दशपारमितापूर्णैर्विचित्रा रत्नपट्टिका ॥ वि.प्र.34क/4.9; སྐུད་པ་པ་ཏྲའི་ཕྲེང་བ་ཡིས། །རྣམ་བཀྲ་རྣམ་སྦྱར་བླངས་པ བཞིན།། जग्राह सूत्रपत्रालीविचित्रमिव चीवरम् ॥ अ.क.221ख/24.154; अतिचित्रः – རྣམ་བཀྲ་རང་གི་བྱ བ་གཟུགས་བརྟན་བཞིན། །སྐྱེས་བུ་ཆགས་བྱེད་ཉིད་ཀྱིས རྒྱན་རྣམས་བཟུང་།། बभार...सा भूषणं लोभनमेव पुंसां मूर्तं स्वकर्तव्यमिवातिचित्रम् ॥ अ.क.8क/50.77; शबलः – དེ་རྒྱན་རིན་ཆེན་འོད་ཟེར་གྱི། །རི་མོས་ནམ མཁའ་རྣམ་པར་བཀྲ།། तस्याभरणरत्नांशुलेखाभिः शबलं नभः । अ.क.221ख/24.154; चित्रितः – རིན་ཆེན

ཏུ་བབས་པ་གསེར་གྱི། །འོད་ཀྱི་ཚོགས་ཀྱིས་རྣམ་བཀྲ་གང་། …ཕྱོགས་རྣམས रत्नतोरणहर्म्यांशुनिवहैर्यत्र चित्रिताः।…ककुभः अ.क.43क/4.80; •सं. = རྣམ་པར་བཀྲ་བ་ཉིད वैचित्र्यम्–མཚར་བའི་ལས་ཀྱིས་རྣམ་བསྒྱུར་པ། །སྒྲུབ་བྱེད་སྣ་ཚོགས་རྣམ་པར་བཀྲ། विधेर्विविधवैचित्र्यचित्रकर्मविधायिनः। अ.क.38क/4.12; རྣམ་པར་བཀྲ་བ་ལས་ཀྱི་རྒྱུན། वैचित्र्यं कर्मसन्ततेः अ.क.4क/50.30.

རྣམ་པར་བཀྲམ་པ *भू.का.कृ.* विप्रकीर्णः म.व्यु.6531 (93ख).

རྣམ་པར་བཀྲོལ = རྣམ་པར་བཀྲོལ་བ། རྣམ་པར་བཀྲོལ་ནས मोचयित्वा – སངས་རྒྱས་ཀྱི་འོད་ཟེར་ཀུན་དུ་སྣང་བས་ངན་སོང་ཀུན་ལས་རྣམ་པར་བཀྲོལ་ནས་རྣམ་པར་གྲོལ་བའི་ལམ་ལ་རབ་ཏུ་བཞག་པ་ནི बुद्धरश्मिसमन्तावभासेन दुर्गतिसमन्तान्मोचयित्वा विमुक्तिमार्गे प्रतिष्ठापिताः स.दु.97क/122; विमुच्य–དེ་ནས་ཏ་ལས་བབས་ནས་དེས། །རྒྱན་རྣམས་དག་ནི་རྣམ་པར་བཀྲོལ། अवरुह्याथ तुरगाद्विमुच्याभरणानि सः। अ.क.223क/24.167.

རྣམ་པར་བཀྲོལ་བ *भू.का.कृ.* विवृतः – དེ་མདོ་སྡེའི་རྒྱན་འདིས་རྣམ་པར་བཀྲོལ་ན सोऽनेन सूत्रालङ्कारेण विवृतः सू.व्या.130क/2.

རྣམ་པར་བརྒྱན་བས *भू.का.कृ.* विभूषितः – དོ་ཤལ་དང་སེ་མོ་དོས་ལུས་རྣམ་པར་བརྒྱན་པས་ཏེ हारार्धहारविभूषितगात्रीम् अ.श.9क/8; विराजितः – དོ་ཤལ་དང་སེ་མོ་དོས་ལུས་རྣམ་པར་བརྒྱན་བས हारार्धहारविराजितगात्रीम् अ.श.133क/123.

རྣམ་པར་བརྒྱན་བས་པ = རྣམ་པར་བརྒྱན་བས།

རྣམ་པར་སྐྱེ *क्रि.* विरोहति – འཇིག་ཚོགས་ལ་ལྟ་བ་རི་རབ་དང་མཉམ་པ་དག་[? བསྐྱེད་]ནས་བྱང་ཆུབ་ཀྱི་སེམས་སྐྱེ་ཞིང་དེ་ལས་སངས་རྒྱས་ཀྱི་ཆོས་རྣམས་རྣམ་པར་སྐྱེའོ། सुमेरुसमां सत्कायदृष्टिमुत्पाद्य बोधिचित्तमुत्पद्यते। ततश्च बुद्धधर्मा विरोहन्ति शि.स.5ख/7.

རྣམ་པར་སྐྱེད་པ *क्रि.* आकारमुत्पद्यते – ཚད་མའི་ཡུལ་ནི་རྣམ་པ་གཉིས་ཏེ། གང་ཞིག་རྣམ་པར་སྐྱེད་པ་སྟེ་གཟུང་བར་བྱ་བ་དང་། གང་ཞིག་ཞེན་པར་བྱ་བ་སྟེ་ཐོབ་པར་བྱ་བའོ། द्विविधो हि विषयः प्रमाणस्य –ग्राह्यश्च यदाकारमुत्पद्यते, प्रापणीयश्च यमध्यवस्यति न्या.टी. 44ख/71.

རྣམ་པར་སྨྲིན་དུ་བསྔད་པ **भू.का.कृ.* विजुगुप्सितः – དེ་དག་ལས་རྣམ་གྲངས་དུ་མར་རྨུགས་པ་དང་གཉིད་རྣམ་པར་སྨད་ཅིང་རྣམ་པར་སྨྲིན་དུ་བསྔད་པ་[? བསྔགས་པ་] དང येषु स्त्यानमिद्धमनेकपर्यायेण विगर्हितम्, विजुगुप्सितम् श्रा.भू.39ख/100.

རྣམ་པར་སྐྲག = རྣམ་སྐྲག།

རྣམ་པར་སྐྲག་པ = རྣམ་སྐྲག།

རྣམ་པར་སྐྲག་བྱེད *वि.* वित्रासितः – དེར་ནི་རྒྱལ་པོ་དགྲ་མང་རྣམས། །རྣམ་པར་སྐྲག་བྱེད་རལ་གྲིའི་གཉེན། तत्र वित्रासितानेकशत्रुनिस्त्रिंशबान्धवः।…नृपः अ.क. 240ख/28.3.

རྣམ་པར་བསྐྱེད་པ *भू.का.कृ.* विवर्धितः – མོངས་པ་ལས།…མ་མི་གཅིག་པའི་སྤུན། །དུག་གི་ལྗོན་པ་རྣམ་པར་བསྐྱེད། मोहादसोदरो भ्राता विषवृक्षो विवर्धितः ॥ अ.क.5क/50.38; ནགས་སུ་རི་དགས་དེ། །རྣམ་པར་བསྐྱེད་ཅིང वने मृगीस्तन्यविवर्धितोऽसौ अ.क.119क/65.18; अभिविवर्धितः – དེ་ནི་སྙིང་རྗེས་རྣམ་པར

བསྒྱོད་[? བསྐྱེད་]པ་དང་། །དཔའ་བའི་ཐུགས་ཀྱིས་རྩོལ་བ་དྲག་པར་གྱུར༎ कृपयाऽभिविवर्धितः स तस्य व्यवसायः पटुतां जगाम शौर्यात्। जा.मा.160क/184.

རྣམ་པར་བསྒྱོད་པ = རྣམ་བསྒྱོད • *वि.* विलोलः – རླུང་གིས་རྣམ་པར་བསྒྱོད་པའི་ཡལ་འདབ་ལག་པས་བཞིན་རས་སྒྲིབ་པར་བྱེད་པ་བཞིན༎ भूयो [? वक्त्रं लि.पा.] वातविलोलपल्लवकरैराच्छादयन्तीव च अ.क.217ख/24.110; विस्पन्दी – དལ་བུ་དལ་བུར་རྔ་ཡབ་འདབ་མ་ནི། །ཉེར་འཁོད་མཛེས་པའི་ལག་པས་རྣམ་བསྒྱོད་པ༎ आसन्नकान्ताकरमन्दमन्दविस्पन्दिना चामरपल्लवेन। अ.क.56ख/59.66; •*भू.का.कृ.* विघट्टितः – དེ་ཡིས་རེག་པའི་རླུང་གིས་རྣམ་བསྒྱོད་པད་མའི་ཚོགས་རྣམས་དང་། །ཆུ་ལ་རྒྱུ་བས་བརྒྱན་པས་མཚོ་སྐྱེས་ཅན་གྱི་ཆུ་ལ་ནི༎ तत्स्पृष्टमारुतविघट्टितपद्मखण्डडिण्डीरमण्डनजलासु सरोजिनीषु। अ.क.36क/54.20; •*> རྣམ་པར་བསྐྱེད་པ།

རྣམ་པར་བསྒྲད *भू.का.कृ.* वारितः, निष्कासितः – ས་བདག་ཕ་བསད་ཁྲོས་པ་ཡིས། །བདག་ཅག་གནས་ནས་རྣམ་པར་བསྒྲད༎ आवां पितृवधक्रोधाद् वारितौ भूभुजा पदात् अ.क.317क/40.117.

རྣམ་པར་བསྒྲུན་པ = རྣམ་བསྒྲུན་པ།

རྣམ་པར་ཕོང་དུ་ཆུད་པ प्रगमः – རྣམ་པར་ཕོང་དུ་ཆུད་པའི་དམིགས་པ प्रगमालम्बनम् म.भा.26क/5.29.

རྣམ་པར་ཕོང་དུ་ཆུད་པའི་དམིགས་པ *पा.* प्रगमालम्बनम्, आलम्बनभेदः – དམིགས་པ་ནི་རྣམ་པ་བཅུ་གཉིས ...ཆོས་བརྟགས་པ་རྣམ་པར་གཞག་པའི་དམིགས་པ་དང...རྣམ་པར་ཕོང་དུ་ཆུད་པའི་དམིགས་པ་དང..ཕུལ་དུ་བྱུང་བའི་དམིགས་པའོ༎ द्वादशविधमालम्बनम् ... धर्मप्रज्ञप्तिव्यवस्थानालम्बनम्...प्रगमालम्बनम्...प्रकर्षालम्बनञ्च म.भा.26क/5.29.

རྣམ་པར་ཁྱབ་པ = རྣམ་ཁྱབ།

རྣམ་པར་མཁས *वि.* विचक्षणः – དེ་སྲས་དམ་པའི་ཀུན་སྤྱོད་ཅན། །རིག་གནས་ཀུན་ལ་རྣམ་པར་མཁས༎ पुत्रस्तस्य सदाचारः सर्वविद्याविचक्षणः ॥ अ.क.134ख/67.4; ནོར་བཟང་ཞེས་བྱ་ནོར་དག་ནི། །སྦྱིན་ལ་རྣམ་པར་མཁས་པར་གྱུར༎ सुधनो नाम धनादानविचक्षणः अ.क.275क/35.4; विपश्चित् – བདག་གིས་གུས་པས་དེ་ལ་སྨྲས། །དམ་པ་ཁྱོད་ནི་རྣམ་པར་མཁས༎ स मया प्रणयेनोक्तः साधो तव विपश्चितः। अ.क.279ख/104.10.

རྣམ་པར་མཁས་པ = རྣམ་པར་མཁས།

རྣམ་པར་མཁྱེན་པ *क्रि.* विजानाति – མོས་པ་རྣམ་པར་མཁྱེན་པས་ན། །བདེན་པའི་ཚིག་ནི་སྨྲ་བར་བགྱིད༎ सत्यां वाचं प्रभाषामो अधिमुक्तिं विजानसि ॥ स.पु.103ख/165.

རྣམ་པར་འཁོར་བ = རྣམ་འཁོར།

རྣམ་པར་འཁྲུམ = རྣམ་པར་འཁྲམ་པ།

རྣམ་པར་འཁྲུམ་པ •*क्रि.* विचरति – གང་གིས་བདག་གི་སེམས་ལ་དབང་བློ་ཉམས་རྣམ་པར་འཁྲམ༎ अनीशः स्वे चित्ते विचरति यया संहृतमतिः जा.मा.92ख/106; •*व.का.कृ.* विघूर्णमानः – བུང་བའི་ན་ཆུང་རྣམ་འཁྱུལ་ལོངས་སྤྱོད་ལྡན། །སྦྲང་རྩིས་མྱོས་ཤིང་རྣམ་པར་འཁྲམ་དུས་དེར༎ तस्मिन् मधुक्षीबविघूर्णमानभृङ्गाङ्गनाविभ्रमभोगकाले। अ.क.295क/108.22; •*> རྣམ་པར་འཁྲམས་པ།

རྣམ་པར་འཁྲུམས་པ •*सं.* विभ्रमः – རྣམ་པར་འཁྲམས

པ་ལས་སྔ་མ་ནི་ཐ་དད་པ་ཉིད་དོ༎ पृथक्त्वं पूर्वस्य विभ्रमात् वि.सू.46क/58; • *भू.का.कृ.* विघूर्णितः – ཁྱོད་ཀྱི་འཁོར་ལོ་རིན་ཆེན་འདིའང་། །མཁའ་ལ་དམོད་པས་རྣམ་པར་འཁྱམ[? འཁྱམས]༎ इदं च चक्ररत्नं ते व्योमनि शापविघूर्णितम्। अ.क.42क/4.67.

རྣམ་པར་འཁྲུག = རྣམ་པར་འཁྲུག་པ།

རྣམ་པར་འཁྲུག་པ • *वि.* व्याकुलः – ཉོན་མོངས་རྣམ་པར་འཁྲུག་སེམས་དང་༎ क्लेशव्याकुलचेतसा सु.प्र.7ख/13; • *सं.* विकोपनम् – སྤྱོད་པ་རྣམ་པར་འཁྲུག་པ་ལ༎ चर्यायाश्च विकोपने अभि.अ.10ख/5.31; विक्षेपः लो.को.1399.

རྣམ་པར་འཁྲུག་པ་ཉིད་ विकुपितत्वम् – བྱེད་པ་ཉིད་ན་སོང་ན་ཚིག་མ་རྫོགས་པ་རྣམ་པར་འཁྲུག་པ་ཉིད་དོ༎ क्रियमाणतायां प्रक्रान्तावपूर्व[? पूर्ण]स्य पर्वणो [? वचसो] विकुपितत्वम् वि.सू.82ख/100.

རྣམ་པར་འཁྲུག་པར་འགྱུར་ *क्रि.* प्रकुप्यते–དེར་ནི་ཆུ་དང་རྒྱུ་སྐར་རླུང་། །རྣམ་གསུམ་རྣམ་པར་འཁྲུག་པར་འགྱུར༎ त्रयस्तत्र प्रकुप्यन्ते नक्षत्रजलवायवः ॥ सु.प्र.38ख/73.

རྣམ་པར་འཁྲུག་པར་བྱེད་ = རྣམ་པར་འཁྲུག་པར་བྱེད་པ།

རྣམ་པར་འཁྲུག་པར་བྱེད་པ • *क्रि.* विक्षिपति लो.को.1399; • *वि.* विक्षोभणः – རྣམ་པར་འཁྲུག་པར་བྱེད་པའི་རླུང་གི་དཀྱིལ་འཁོར विक्षोभणवातमण्डली म.व्यु.6457 (92ख); विभ्रामणः – རྙེད་པ་དང་བཀུར་སྟི་ནི...བློ་རྣམ་པར་འཁྲུག་པར་བྱེད་པ लाभसत्कारः...बुद्धिविभ्रामणः शि.स.63क/62.

རྣམ་པར་འཁྲུག་པར་བྱེད་པའི་རླུང་གི་དཀྱིལ་འཁོར विक्षोभणवातमण्डली म.व्यु.6457 (92ख).

རྣམ་པར་འཁྲུག་མེད་ *वि.* अकोपनः–སྟོང་ཉིད་མཚན་མེད་བཅས་པ་དང་། །སྨོན་པ་རྣམ་པར་སྤངས་པ་དང་། །སྐྱེ་མེད་འགག་པ་མེད་སོགས་དང་། །ཆོས་ཉིད་རྣམ་པར་འཁྲུག་མེད་དང་༎ शून्यत्वे सानिमित्ते च प्रणिधानविवर्जिते। अनुत्पादानिरोधादौ धर्मताया अकोपने ॥ अभि.अ.7ख/4.18.

རྣམ་པར་འཁྲུགས = རྣམ་པར་འཁྲུགས་པ།

རྣམ་པར་འཁྲུགས་གྱུར = རྣམ་པར་འཁྲུགས་པར་གྱུར།

རྣམ་པར་འཁྲུགས་པ • *सं.* वैह्वल्यम् – བདག་ནི་འཕྱེ་མིན...།འོན་ཀྱང་སྐྱེ་བ་གཞན་ཉོན་མོངས། །དྲན་ཤིང་རྣམ་པར་འཁྲུགས་ལ་བརྟེན༎ नाहं पङ्गुः...जन्मान्तरक्लेशं स्मृत्वा वैह्वल्यमाश्रितः अ.क.291क/37.44; द्र. རྣམ་པར་འཁྲུག་པ། • *वि.* व्याकुलः – འཇིགས་པས་རྣམ་སྒྲག་ནས་ནི་དམྱལ་བ་ལ་སོགས་པའི་འཇིགས་པས་རྣམ་པར་འཁྲུགས་ནས་སོ༎ भयविह्वलो नरकादिभयव्याकुलः बो.प.66ख/33; विह्वलः–འཁོར་བའི་ཉོན་མོངས་ཀྱིས་རྣམ་འཁྲུགས། །དེ་དག་གལ་ཏེ་བརྩེ་བ་ན༎ अनुकम्पस्व यद्येतं संसारक्लेशविह्वलम्। अ.क.173ख/19.118; विक्लवः लो.को.1386.

རྣམ་པར་འཁྲུགས་པར་གྱུར *वि.* विह्वलः – དེ་བྲལ་དུག་གིས་ནོན་པ་དང་།...།ལྷུར་དུ་རྣམ་པར་འཁྲུགས་པར་གྱུར༎ तद्वियोगविषाक्रान्ता...बभूव भृशविह्वला अ.क.30ख/3.134; སྡང་དང་ངལ་དུབ་ཆེ་བར་འདར་བས་རྣམ་པར་འཁྲུགས་གྱུར་ཅིང་༎ <?> पृथुप्रवेपथुस्वापश्रमविह्वलानाम् अ.क.170ख/19.81.

རྣམ་པར་འཁྲུལ = རྣམ་པར་འཁྲུལ་པ།

རྣམ་པར་འཁྲུལ་པ • *सं.* विभ्रमः – ལྷ་མོ་ཚོས་ནི་བྱ་བར་རིགས། །སྨྲ་ངན་བྱ་བར་མི་འོས་སོ། །བདེ་བས་རྣམ་པར

འཕྲུལ་པ་ཡིས། །ཪྻ་བྲལ་མཛུག་ནི་སྡུག་བསྔལ་ཡིན།། देवि धर्मक्रिया युक्ता न शोकं कर्तुमर्हसि । दुःखावसानो विरसः सर्वोऽयं भोगविभ्रमः अ.क.31ख/3.143; •भू. का.कृ. उद्भ्रान्तः – དེ་ནས་རབ་བཟང་ཡ་མཚན་གྱིས། །རྣམ་པར་འཕྲུལ་ལ་བཅོམ་ལྡན་འདས། །འབྱུང་པོ་ཀུན་ཕན་ལ་དགྱེས་པས། །བུ་འདི་བླང་བར་གྱིས་ཞེས་གསུངས།། ततः सुभद्रं भगवान् सर्वभूतहिते रतः । बभाषे विस्मयोद्भ्रान्तं पुत्रोऽयं गृह्यतामिति ॥ अ.क.89क/9. 33.

རྣམ་པར་གས *भू.का.कृ.* विदीर्णः – དེ་ནས་དེ་ཡིས་ཞིང་པ རྣམས། ...།ལག་པ་རྐང་པ་རྣམ་པར་གས། ...མཐོང་གྱུར ནས།། ततः स कर्षकान्...विदीर्णपाणिचरणान्...विलोक्य अ.क.216क/24.94.

རྣམ་པར་གས་པ = རྣམ་པར་གས།

རྣམ་པར་གྱུར = རྣམ་པར་གྱུར་པ།

རྣམ་པར་གྱུར་པ • *भू.का.कृ.* विपरिणतम् – ལས་འདས་པ དང་ཟད་པ་དང་འགོག་[? འགགས་]པ་དང་བྲལ་བ་དང རྣམ་པར་གྱུར་པ་གང་ཡིན་པ་དེ་ནི་ཡོད་དོ།། यत् कर्मभिः-यतीतं क्षीणं निरुद्धं विगतं विपरिणतं तदस्ति अभि. भा.241ख/812; སེམས་དེའང་ཟད་ཅིང་འགགས་པར གྱུར་ལ་བྲལ་ཞིང་རྣམ་པར་གྱུར་པ་ཡིན་ཏེ तच्चित्तं क्षीणं निरुद्धं विगतं विपरिणतम् अ.सा.123ख/71; ཤི་བའི དུས་བྱས་པ་དེ་ལ་རིམ་གྱིས་རྣམ་པར་གྱུར་པའི་གནས སྐབས་འདི་ལྟ་སྟེ། རྣམ་པར་བསྔོས་པ་དང་རུས་པའི་གོང རུས་ཀྱི་བར་དག་ཀྱང་ཡོད་པ་དང अस्य मृतस्य कालगतस्यानुपूर्वेण विपरिणता इमा अवस्थाः प्रज्ञायन्ते, यदुत विनीलकमिति वा यावदस्थिशङ्कलिकाया वा श्रा.भू.137ख/376; •सं. विक्रिया लो.को.1386.

རྣམ་པར་གྲགས = རྣམ་པར་གྲགས་པ།

རྣམ་པར་གྲགས་པ *वि.* विख्यातः – རྟག་ཏུ་དགའ་བྱེད སྙན་པ་དག། །རབ་བགྲམ་རྣམ་པར་གྲགས་པ་དེས།། सदानन्दनविख्यातयशःप्रसरया तया अ.क.20ख/3.14; སྐལ་བཟང་ཞེས་ནི་རྣམ་པར་གྲགས།། सुभगेति च विख्यातः ज्ञा.सि.56क/145; विश्रुतः – ཁྱོད་ཀྱི་ཐོས་པ་རྣམ གྲགས་དོན་དང་ལྡན། །ང་ཡི་འབད་པ་དོན་ཡོད་ལེགས་པར བྱུང་།། तवार्थवत्सुचरितविश्रुतं श्रुतं सुखोदयः सफलतया श्रमश्च मे ॥ जा.मा.71ख/83; ལྷ་གང་འོག མིན་ཞེས་རྣམ་པར་གྲགས་པ ये ते देवा अकनिष्ठा इति विश्रुताः अभि.स्फु.195ख/958; विघुष्टः – དེ ཡི་འོག་ཏུ་རྒྱལ་པོ་ནི། །དཔའ་བོའི་སྡེ་ཞེས་རབ་ཏུ་བརྗོད། །ཆོས་ལ་སྤྱོད་ཅིང་རྣམ་པར་གྲགས།། तस्याप्यनन्तरे राजा शूरसेनः प्रकथ्यते । विघुष्टो धर्मचारी च म.मू. 306क/477; विज्ञातः – དེ་ཡིས་བདག་ནི་འཇིག་རྟེན དུ། །གསོ་སྦྱོང་ཉམས་པར་རྣམ་པར་གྲགས།། तेनाहमभवं लोके विज्ञातः खण्डपोषधः ॥ अ.क.278क/35.43; • *सं.* 1. विश्रावः मि.को.125ख 2. = སངས་རྒྱས विश्रुतः, बुद्धः म.व्यु.65 (2ख); • *ना.* 1. विश्रुतः, प्रत्येकबुद्धः – འདི་ལྟ་སྟེ་སྤོས་ཀྱི་ངད་ལྡང་དང...རྣམ་གྲགས དང...ནོར་ལྷ་དང་། དེ་དག་དང་གཞན་ཡང་རང་སངས རྒྱས་བྱེ་བ...རབ་ཏུ་གནས་པ तद्यथा गन्धमादनः...विश्रुतः...वसुश्चेति । एतैश्चान्यैश्च प्रत्येकबुद्धकोटी ...प्रतिष्ठितैः म.मू.99क/9 2. विशिष्टः, बोधिसत्त्वः – དེ་དག་ཐམས་ཅད་དུའང་ཁོ་མོ་བྱང་ཆུབ་སེམས དཔའི་ཡུམ་དུ་འགྱུར་རོ།། བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་བྱམས པའི་ཡུམ་དུ་ཇི་ལྟར་འགྱུར་བ་དེ་བཞིན་དུ... རྣམ་པར གྲགས་པ་དང तेष्वहं सर्वत्र बोधिसत्त्वजननी भविष्यामि। यथा च मैत्रेयस्य बोधिसत्त्वस्य, तथा... वि-

शिष्टस्य ग.व्यू.268ख/347.

རྣམ་པར་གྲགས་པའི་རྒྱལ་པོ विघुष्टराजः लो.को.1399.

རྣམ་པར་གྲོལ •क्रि. 1. विमुच्यते – སྲིད་གསུམ་འདི་ནི་རྨི་ལམ་དང་། །སྒྱུ་མ་འཛིངས་དང་སྒྱུ་མ་འདྲ། ...།རྣམ་པར་བསྒོམས་ན་རྣམ་པར་གྲོལ།། केशोण्डुकप्रख्यमिदं... त्रिभवं स्वप्नमायाख्यं विभावेन्तो विमुच्यते ॥ ल.अ.93क/39; སྡིག་པ་ཀུན་ལས་རྣམ་གྲོལ་ཞིང་།། सर्वपापैर्विमुच्यन्ते ज्ञा.सि.56क/144; मुच्यते – དེས་ནི་སེམས་ཅན་རྣམ་གྲོལ་ཞིང་།། येन ते सत्त्व मुच्यन्ते शि.स.175क/173 2. मुमोच – དེ་ཡིས་རྨོངས་པ་རྣམ་པར་གྲོལ།། मोहं मुमोच सः अ.क.310क/40.33 3. विमुच्येत–དུས་མ་ཡིན་པའི་འཆི་བདག་གིས་ཟིན་པ་རྣམས་དུས་མ་ཡིན་པར་འཆི་བ་ལས་རྣམ་པར་གྲོལ་བ་དང अकालमृत्युग्रस्ताश्च येनाकालमरणाद् विमुच्येरन् स.दु.122ख/214; • = རྣམ་པར་གྲོལ་བ།

རྣམ་པར་གྲོལ་འགྱུར = རྣམ་པར་གྲོལ་བར་འགྱུར།

རྣམ་པར་གྲོལ་བ •सं. 1. विनिर्मुक्तिः – དེ་ལས་ཤིན་ཏུ་རྣམ་གྲོལ་བ། །ཐར་པ་ཞེས་ནི་བཤད་པ་ཡིན།། तदत्यन्तविनिर्मुक्तिरपवर्गश्च कीर्त्यते। त.स.127क/1094; ཆོས་ཀྱི་སྒྲིབ་པ་རྣམ་པར་གྲོལ་བ་དེ་ནི་ཀུན་གཞི་རྣམ་པར་ཤེས་པའི་བག་ཆགས་བཟློག་པའི་ཕྱིར་རྣམ་པར་དག་པར་འགྱུར་རོ།། धर्मावरणविनिर्मुक्तिः पुनरालयविज्ञानवासनाविनिवृत्तेर्विशुध्यति ल.अ.151ख/98; विमोचनम् – བཟོ་དང་སྐྱེ་དང་བྱང་ཆུབ་ཆེ། །མྱ་ངན་འདས་པ་རྟག་སྟོན་པས། །སངས་རྒྱས་སྤྲུལ་པའི་སྐུ་འདི་ནི། །རྣམ་པར་གྲོལ་བའི་ཐབས་ཆེན་པོ།། शिल्पजन्ममहाबोधिसदानिर्वाणदर्शनैः। बुद्धनिर्माणकायोऽयं महोपायो विमोचने॥ सू.अ.159ख/48 2. = སངས་རྒྱས विमुक्तः, बुद्धः – བྱམས་པ་དེ་བཞིན་གཤེགས་པས་ཆོས་ཀྱི་འཁོར་ལོ་རྣམ་པ་འདི་ལྟ་བུ་བསྐོར་ཏེ། དེ་བསྐོར་བས་དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་ལ་དེ་བཞིན་གཤེགས་པའོ་ཞེས་བྱའོ།། ...རྣམ་པར་གྲོལ་བ་ཞེས་བྱའོ།། एवंरूपं मैत्रेय तथागतेन धर्मचक्रं प्रवर्तितम्, यस्य प्रवर्तनात् तथागत इत्युच्यते ...विमुक्त इत्युच्यते ल.वि.204ख/308 3. = རྣམ་གྲོལ་ཉིད विमुक्तिता – གཟུགས་དང་ཚོར་བ་དང་འདུ་ཤེས་དང་འདུ་བྱེད་དང་རྣམ་པར་ཤེས་པ་རིག་པ་ཡང་མ་ཡིན། རྣམ་པར་གྲོལ་བ་ཡང་མ་ཡིན་པ་གང་ཡིན་པ་དེ་ཤེས་རབ་ཀྱི་ཕ་རོལ་ཏུ་ཕྱིན་པའོ།། या च रूपवेदनासंज्ञासंस्कारविज्ञानानां न विद्यता न विमुक्तिता, इयं प्रज्ञापारमिता सु.प.43ख/21; विमोक्षता – དེ་ནི་སེམས་ཅན་རྣམས་ཀྱི་སེམས་རྣམ་པ་ཐ་དད་པ་ཡང་དག་པ་ཇི་ལྟ་བ་བཞིན་དུ་རབ་ཏུ་ཤེས་ཏེ...སེམས་བཅིངས་པ་དང་རྣམ་པར་གྲོལ་བ་དང स सत्त्वानां चित्तवैमात्रतां च यथाभूतं प्रजानाति...चित्तबन्धविमोक्षतां च द.भू.252क/49; •पा. 1. = ཐར་པ विमुक्तिः – རྣམ་པར་གྲོལ་ཞེས་བྱ་བ་འདི་ཅི་ཞེ་ན། དེ་རྣམ་གཉིས། འདུས་བྱས་དང་འདུས་མ་བྱས་སོ།། केयं विमुक्तिर्नाम ? सा पुनर्द्विधा–संस्कृता चासंस्कृता च अभि.भा.41ख/1027; ཡོངས་སུ་ཤེས་པ་ནི་ལམ་མོ།། ཡོངས་སུ་ཤེས་པའི་འབྲས་བུ་ནི་རྣམ་པར་གྲོལ་བའོ།། परिज्ञा मार्गः। परिज्ञाफलं विमुक्तिः सू.व्या.166ख/58; ཉོན་མོངས་རྣམ་གྲོལ་གཞན་གྱིས་དགྲ་བཅོམ་ཐོབ།། अर्हत्फलं क्लेशविमुक्तिमन्ये अ.क.197ख/22.50; རབ་ཀྱི་རྩལ་གྱིས་རྣམ་པར་གནོན་པ་ཤེས་རབ་ཀྱི་ཕ་རོལ་ཏུ་ཕྱིན་པ་འདི་ནི་ཆོས་གང་འབྲི་བའི་ཕྱིར་རམ་འཕེལ་བའི་ཕྱིར་ཉེ་བར་གནས་པ་མ་ཡིན་ནོ།། ཆོས་གང་འདུ་བའི་ཕྱིར་རམ... རྣམ་པར་གྲོལ་བའི་ཕྱིར་རམ... རབ་ཏུ་མ་རྟོགས་པའི་ཕྱིར་ཉེ་བར་གནས་པ་མ་ཡིན་ནོ།། न खलु पुनरियं सुविक्रान्तविक्रामिन् प्रज्ञापारमिता कस्यचिद्धर्मस्य हानाय वा विवृद्धये वा प्रत्युपस्थिता,

नापि कस्यचिद्धर्मस्य संयोगाय...विमुक्तये वा...अप्रतिवेधाय वा प्रत्युपस्थिता सु.प.47[क]/24; विमोक्षः – ཞུམ་པ་མེད་པའི་ཐུགས་ཀྱིས་ནི། །ཚོར་བ་དང་དུ་ལེན་པར་མཛད། །མར་མེ་ཤི་བར་གྱུར་པ་ལྟར། །དེ་ཡི་ཐུགས་ནི་རྣམ་པར་གྲོལ།། असंलीनेन चित्तेन वेदनाधिवासयन्। प्रद्योतस्येव निर्वाणं विमोक्षस्तस्य चेतसः ॥ अ.श. 284[क]/261; निर्वाणम् – སེམས་ཅན་ཐམས་ཅད་ཞི་བའི་སླད། །རྣམ་པར་གྲོལ་བ་བསྟན་པ་མཛད།། विदधे सर्वसत्त्वानां शान्त्यै निर्वाणदेशनाम् ॥ अ.क.286[क]/36.73 2. विमुक्तः, सत्त्वभेदः – སེམས་ཅན་ཐམས་ཅད་འདུལ་བ་ཡིན་པའི་ཕྱིར་འདུལ་བ་ནི་གཅིག་ཏུ་འགྱུར་རོ།། ...རྣམ་པ་དྲུག་ནི་ཁྱིམ་པ་དང...རྣམ་པར་གྲོལ་བ་དང་རྣམ་པར་མ་གྲོལ་བའོ།། स्यादेकविधो विनेयः सर्वसत्त्वा विनेया इति कृत्वा...षड्विधः–गृही...अविमुक्तो विमुक्तश्च बो.भू.155[क]/200; •भू.*का.कृ.* विमुक्तः – དེ་ནི...དུས་ལ་མི་ལྟོས་པར་རྣམ་པར་གྲོལ་བ་ཡིན་ནོ།། स ह्यसमयापेक्षविमुक्तः अभि.भा.31[ख]/989; དུས་ཀྱིས་རྣམ་པར་གྲོལ་བའི་དགྲ་བཅོམ་པ समयविमुक्तोऽर्हत् अभि.भा.34[ख]/1000; རྟོག་པ་ལས་ནི་རྣམ་པར་གྲོལ།། कल्पनया विमुक्तम् प्र.सि.34[क]/80; ཕུང་པོ་ལྔ་ལས་རྣམ་གྲོལ་ཞིང་།། पञ्चस्कन्धविमुक्तानाम् अ.क.55[ख]/6.23; མཆོག་ཏུ་ཞི་བའི་གོ་འཕང་འཇིག་རྟེན་སྤྱོད་པ་དག་ལས་རྣམ་གྲོལ་བ लोकाचारैर्विमुक्तं परमशिवपदम् गु.सि.1[क]/5; विनिर्मुक्तः – བདུད་ཀྱི་ཞགས་པ་ཐམས་ཅད་ལས་རྣམ་པར་གྲོལ་བ...སེམས་ཅན་རྣམས་དང सर्वमारपाशविनिर्मुक्तानां... सत्त्वानाम् सु.प.22[क]/2; དག་པའི་ལུས་གནས་པར་བྱེད་པ་ནི་དགྲ་བཅོམ་པ་རྣམས་ཀྱི་སྟེ། འཆིང་བ་ཐམས་ཅད་ལས་རྣམ་པར་གྲོལ་བའི་ཕྱིར་རོ།། शुद्धाश्रयस्थितिकोऽर्हताम्, सर्वबन्धनविनिर्मुक्तत्वात् अभि.स.भा.33[क]/45; དམ་ཚིག་སྡོམ་ལས་རྣམ་པར་གྲོལ། །རྣལ་འབྱོར་ལྡན་པས་སྤྱོད་པར་བྱེད།། समयसंवरविनिर्मुक्तश्चर्यां कुरुते सुयोगवान् ॥ हे.त.7[ख]/20; འཕེལ་ཞིང་འགྲིབ་ལས་རྣམ་གྲོལ་བ།། क्षयव्ययविनिर्मुक्तम् गु.सि.11[क]/24; विप्रमुक्तः – སྡུག་བསྔལ་ལས་ཀྱང་རྣམ་པར་གྲོལ་བར་འགྱུར་རོ།། दुःखादपि विप्रमुक्तो भवति अभि.स.भा.108[क]/145; སྡུག་པ་དག་ལས་མྱ་ངན་སྐྱེ། །སྡུག་པ་དག་ལས་འཇིགས་པ་སྐྱེ། །འཇིགས་[? སྡུག་] པ་དག་ལས་རྣམ་གྲོལ་རྣམས། །མྱ་ངན་མེད་ན་ག་ལ་འཇིགས།། प्रियेभ्यो जायते शोकः प्रियेभ्यो जायते भयम्। प्रियेभ्यो विप्रमुक्तानां नास्ति शोकः कुतो भयम् ॥ अ.श.96[ख]/87; निर्मुक्तः – བཤད་པའི་ཚུལ་ལས་རྣམ་གྲོལ་བ། །སོ་སོ་རང་རིག་སྤྱོད་ཡུལ་ཏེ། །ལང་ཀར་གཤེགས་པའི་མདོ་སྡེ་ནི།། देशनानयनिर्मुक्तं प्रत्यात्मगतिगोचरम्। लङ्कावतारसूत्रम् ल.अ.57[क]/2; समुन्मुक्तः – རེ་བའི་ཞགས་པའི་འཆིང་བ་ཀུན། །རྣམ་པར་གྲོལ་ཏེ समुन्मुक्तसर्वाशापाशबन्धनः अ.क.87[ख]/63.58; मुक्तः – མཐའ་བཞི་དག་ལས་རྣམ་པར་གྲོལ། །སྲིད་པ་རྟག་ཏུ་སྒྱུ་མ་བཞིན།། चातुष्कोटिकया मुक्तं भवं मायोपमं सदा ॥ ल.अ.168[क]/123.

རྣམ་པར་གྲོལ་བ་རྣམ་གཉིས विमुक्तिः द्विधा – 1. རྣམ་པར་གྲོལ་བ་འདུས་བྱས संस्कृता विमुक्तिः, 2. རྣམ་པར་གྲོལ་བ་འདུས་མ་བྱས असंस्कृता विमुक्तिः अभि.भा. 41[ख]/1028.

རྣམ་པར་གྲོལ་བ་ཉམས་མེད་པ *पा.* नास्ति विमुक्तिहानिः, आवेणिकबुद्धधर्मभेदः म.व्यु.147 (4[क]).

རྣམ་པར་གྲོལ་བ་ཉིད विमुक्तत्वम् – ཡོངས་སུ་ཉམས་པ སྲིད་པ་དང་མི་སྲིད་པའི་སྒོ་ནས...དུས་ཀྱི་རྣམ་པར་གྲོལ་བ

དང་དུས་དང་མི་སྦྱོར་བར་ རྣམ་པར་གྲོལ་བ་ཉིད་ ཡིན་ནོ།། समयासमये विमुक्तत्वं परिहाणिसम्भवासम्भवतः अभि.भा.31ख/989.

རྣམ་པར་གྲོལ་བ་དུས་དང་སྦྱོར་བ *पा.* सामयिकी विमुक्तिः – བསམ་གཏན་དངོས་གཞིའི་ཏིང་ངེ་འཛིན་ནི་དུས་སུ་མངོན་སུམ་དུ་འགྱུར་བའི་ཕྱིར་རྣམ་པར་གྲོལ་བ་དུས་དང་སྦྱོར་བ་ཞེས་ཀྱང་བྱ་ལ मौलो हि ध्यानसमाधिः समये सम्मुखीभावात् सामयिकी विमुक्तिरित्युच्यते अभि.भा.33ख/997; द्र. རྣམ་པར་གྲོལ་བ་དུས་དང་སྦྱོར་བ་པ།

རྣམ་པར་གྲོལ་བ་དུས་དང་སྦྱོར་བ་པ *पा.* सामयिकी विमुक्तिः – དེ་ལྟ་བས་ན་རྣམ་པར་གྲོལ་བ་དུས་དང་སྦྱོར་བ་པ་ནི་དགྲ་བཅོམ་པ་ཉིད་མ་ཡིན་ནོ།། तस्मान्न सामयिकी विमुक्तिरर्हत्त्वम् अभि.भा.34ख/1000; द्र. རྣམ་པར་གྲོལ་བ་དུས་དང་སྦྱོར་བ།

རྣམ་པར་གྲོལ་བ་འདུས་བྱས *पा.* संस्कृता विमुक्तिः–ཉོན་མོངས་པ་སྤངས་པ་ནི་རྣམ་པར་གྲོལ་བ་འདུས་མ་བྱས་ཡིན་ནོ།། མི་སློབ་པའི་མོས་པ་ནི་རྣམ་པར་གྲོལ་བ་འདུས་བྱས་ཡིན་ནོ།། क्लेशप्रहाणमसंस्कृता विमुक्तिः। अशैक्षाधिमोक्षः संस्कृता विमुक्तिः अभि.भा.41ख/1028.

རྣམ་པར་གྲོལ་བ་འདུས་མ་བྱས *पा.* असंस्कृता विमुक्तिः – ཉོན་མོངས་པ་སྤངས་པ་ནི་རྣམ་པར་གྲོལ་བ་འདུས་མ་བྱས་ཡིན་ནོ།། མི་སློབ་པའི་མོས་པ་ནི་རྣམ་པར་གྲོལ་བ་འདུས་བྱས་ཡིན་ནོ།། क्लेशप्रहाणमसंस्कृता विमुक्तिः। अशैक्षाधिमोक्षः संस्कृता विमुक्तिः अभि.भा.41ख/1028.

རྣམ་པར་གྲོལ་བ་བླ་ན་མེད་པ་ཉིད *पा.* विमुक्त्यानुत्तर्यम्, आनुत्तर्यभेदः – བླ་ན་མེད་པ་ཉིད་གསུམ་སྟེ། ཤེས་པ་བླ་ན་མེད་པ་ཉིད་དང་ལམ་བླ་ན་མེད་པ་ཉིད་དང་རྣམ་པར་གྲོལ་བ་བླ་ན་མེད་པ་ཉིད་དོ།། त्रीण्यानुत्तर्याणि–ज्ञानानुत्तर्यं प्रतिपदानुत्तर्यं विमुक्त्यानुत्तर्यं च अभि.स.भा. 45क/63.

རྣམ་པར་གྲོལ་བ་ཡིན *क्रि.* विमुक्तं भवति – འདི་ན་དགེ་སློང་འདོད་ཆགས་ལས་སེམས་འདོད་ཆགས་དང་བྲལ་ཞིང་རྣམ་པར་གྲོལ་བ་ཡིན इह भिक्षवो रागाच्चित्तं विरक्तं भवति विमुक्तम् अभि.भा.41ख/1028.

རྣམ་པར་གྲོལ་བ་ཡོངས་སུ་དག་པ *पा.* विमुक्तिपरिशुद्धिः – མདོ་ལས། སྟག་གི་བྱང་ཆུབ་ཀྱི་བུ་དག་རྣམ་པར་གྲོལ་བ་ཡོངས་སུ་དག་པ་གཙོ་བོ་གང་ཡིན་ཞེ་ན...ཞེས་རྒྱས་པར་གང་གསུངས་པ यत्तर्हि सूत्र उक्तम्–कतमच्च व्याघ्रबोध्यायना विमुक्तिपरिशुद्धिप्रधानम्...इति विस्तरः अभि.भा.41ख/1028.

རྣམ་པར་གྲོལ་བ་ཡོངས་སུ་དག་པ་གཙོ་བོ *पा.* विमुक्तिपरिशुद्धिप्रधानम्, परिशुद्धिप्रधानभेदः – མདོ་ལས། སྟག་གི་བྱང་ཆུབ་ཀྱི་བུ་དག་རྣམ་པར་གྲོལ་བ་ཡོངས་སུ་དག་པ་གཙོ་བོ་གང་ཡིན་ཞེ་ན... ཞེས་རྒྱས་པར་གང་གསུངས་པ यत्तर्हि सूत्र उक्तम्–कतमच्च व्याघ्रबोध्यायना विमुक्तिपरिशुद्धिप्रधानम्... इति विस्तरः अभि.भा.41ख/1028; བཞི་པོ་འདི་དག་ནི་ཡོངས་སུ་དག་པའི་གཙོ་བོ་ཡིན་ཏེ...ཚུལ་ཁྲིམས་ཡོངས་སུ་དག་པ་གཙོ་བོ་དང...རྣམ་པར་གྲོལ་བ་ཡོངས་སུ་དག་པ་གཙོ་བོའོ།། चत्वारीमानि...परिशुद्धिप्रधानानि...शीलपरिशुद्धिप्रधानम्...विमुक्तिपरिशुद्धिप्रधानं च अभि.स्फु.236क/1028.

རྣམ་པར་གྲོལ་བ་ལས་ཡོངས་སུ་མ་ཉམས་པ अपरिहीनविमुक्तिः, बुद्धस्य नामपर्यायः – བྱམས་པ་དེ་བཞིན་གཤེགས་པས་ཆོས་ཀྱི་འཁོར་ལོ་རྣམ་པ་འདི་ལྟ་བུ

བསྐོར་ཏེ། དེ་བསྐོར་བས་དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་ལ་དེ་བཞིན་གཤེགས་པའོ་ཞེས་བྱའོ། ...རྣམ་པར་གྲོལ་བ་ལས་ཡོངས་སུ་མ་ཉམས་པ་ཞེས་བྱའོ། एवंरूपं मैत्रेय तथागतेन धर्मचक्रं प्रवर्तितम्, यस्य प्रवर्तनात् तथागत इत्युच्यते...अपरिहीनविमुक्तिरित्युच्यते ल.वि.211ख/313.

རྣམ་པར་གྲོལ་བའི་སྐུ = རྣམ་གྲོལ་སྐུ།

རྣམ་པར་གྲོལ་བའི་སྐྱེ་མཆེད *पा.* विमुक्त्यायतनम् – རྣམ་པར་གྲོལ་བའི་སྐྱེ་མཆེད་ལྔ་པོ་དག་ནི་ཤེས་རབ་ཀྱི་རང་བཞིན་ཡིན་པའི་ཕྱིར་ཆོས་ཀྱི་སྐྱེ་མཆེད་ཀྱིས་བསྡུས་སོ། पञ्च विमुक्त्यायतनानि प्रज्ञास्वभावत्वाद् धर्मायतनेन (संगृहीतानि) अभि.भा.39क/74.

རྣམ་པར་གྲོལ་བའི་ཏོག = རྣམ་གྲོལ་ཏོག།

རྣམ་པར་གྲོལ་བའི་བདག་ཉིད་ཅན *वि.* विमुक्तात्मा – རྟོག་ཀུན་རྣམ་གྲོལ་བདག་ཉིད་ཅན། सर्वकल्पविमुक्तात्मा ज्ञा.सि.46क/119; द्र. རྣམ་གྲོལ་བདག།

རྣམ་པར་གྲོལ་བའི་ཕུང་པོ *पा.* विमुक्तिस्कन्धः, असमसमस्कन्धभेदः – སངས་རྒྱས་བཅོམ་ལྡན་འདས་དེ་རྣམས་ཀྱི་ཚུལ་ཁྲིམས་ཀྱི་ཕུང་པོ་དང་ཏིང་ངེ་འཛིན་གྱི་ཕུང་པོ་དང་ཤེས་རབ་ཀྱི་ཕུང་པོ་དང་རྣམ་པར་གྲོལ་བའི་ཕུང་པོ་དང་རྣམ་པར་གྲོལ་བའི་ཡེ་ཤེས་གཟིགས་པའི་ཕུང་པོ तेषां बुद्धानां भगवतां शीलस्कन्धः समाधिस्कन्धः प्रज्ञास्कन्धो विमुक्तिस्कन्धो विमुक्तिज्ञानदर्शनस्कन्धश्च अ.सा.120ख/69; अभि.भा.41ख/1028; अभि.स्फु.4ख/7.

རྣམ་པར་གྲོལ་བའི་དབྱངས *ना.* विमुक्तिघोषः, बोधिसत्त्वः – དེ་དག་ཐམས་ཅད་དུའང་ངས་མི་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའི་ཡུམ་དུ་འགྱུར་རོ། བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་བྱམས་པའི་ཡུམ་དུ་ཇི་ལྟར་འགྱུར་བ་དེ་བཞིན་དུ... རྣམ་པར་གྲོལ་བའི་དབྱངས་དང तेष्वहं सर्वत्र बोधिसत्त्वजननी भविष्यामि। यथा च मैत्रेयस्य बोधिसत्त्वस्य, तथा... विमुक्तिघोषस्य ग.व्यू.268ख/347.

རྣམ་པར་གྲོལ་བའི་གཙུག विमुक्तचूडः लो.को.1400.

རྣམ་པར་གྲོལ་བའི་ཟླ་བ *ना.* विमुक्तिचन्द्रः, बोधिसत्त्वः – བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་སེམས་དཔའ་ཆེན་པོ་རྣམ་པར་གྲོལ་བའི་ཟླ་བ་དང विमुक्तिचन्द्रेण च बोधिसत्त्वेन महासत्त्वेन द.भू.168क/2.

རྣམ་པར་གྲོལ་བའི་ཡེ་ཤེས *पा.* विमुक्तिज्ञानम्–ཐོབ་པ་དེ་ཡོད་ན་དེ་ལས་རྣམ་པར་གྲོལ་བའི་ཡེ་ཤེས་རབ་ཏུ་སྐྱེའོ། ततस्तस्मिन् प्राप्ते मतिर्वि[? सति वि]मुक्तिज्ञानं प्रादुर्भवति सू.व्या.133क/6; द्र. རྣམ་པར་གྲོལ་བའི་ཡེ་ཤེས་མཐོང་བ།

རྣམ་པར་གྲོལ་བའི་ཡེ་ཤེས་མཐོང་བ *पा.* विमुक्तिज्ञानदर्शनम् – ཡོངས་སུ་ཤེས་པ་ནི་ལམ་མོ། ཡོངས་སུ་ཤེས་པའི་འབྲས་བུ་ནི་རྣམ་པར་གྲོལ་བའོ། དེ་རབ་ཏུ་རིག་པ་ནི་རྣམ་པར་གྲོལ་བའི་ཡེ་ཤེས་མཐོང་བའོ། परिज्ञा मार्गः। परिज्ञाफलं विमुक्तिः। तत्प्रवेदना विमुक्तिज्ञानदर्शनम् सू.व्या.166ख/58; द्र. རྣམ་པར་གྲོལ་བའི་ཡེ་ཤེས་གཟིགས་པ།

རྣམ་པར་གྲོལ་བའི་ཡེ་ཤེས་མཐོང་བ་ལས་ཡོངས་སུ་མ་ཉམས་པ अपरिहीनविमुक्तिज्ञानदर्शनः, बुद्धस्य नामपर्यायः – བྱམས་པ་དེ་བཞིན་གཤེགས་པས་ཆོས་ཀྱི་འཁོར་ལོ་རྣམ་པ་འདི་ལྟ་བུ་བསྐོར་ཏེ། དེ་བསྐོར་བས་དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་ལ་དེ་བཞིན་གཤེགས་པའོ་ཞེས་བྱའོ། ...རྣམ་པར་གྲོལ་བའི་ཡེ་ཤེས་མཐོང་བ་ལས་ཡོངས་སུ་མ་ཉམས་པ་ཞེས་བྱའོ། एवंरूपं मैत्रेय तथागतेन धर्मचक्रं प्रवर्तितम्, यस्य प्रवर्तनात् तथागत इत्युच्यते ...

अपरिहीनविमुक्तिज्ञानदर्शन इत्युच्यते ल.वि.211ख/313.

རྣམ་པར་གྲོལ་བའི་ཡེ་ཤེས་མཐོང་བའི་ཕུང་པོ་ *पा.* विमुक्तिज्ञानदर्शनस्कन्धः, असमसमस्कन्धभेदः – དེ་ལ་རེ་ཞིག་ཚུལ་ཁྲིམས་དང་...རྣམ་པར་གྲོལ་བའི་ཡེ་ཤེས་མཐོང་བའི་ཕུང་པོ་དག་ལས་ཚུལ་ཁྲིམས་ཀྱི་ཕུང་པོ་ནི་གཟུགས་ཀྱི་ཕུང་པོས་བསྡུས་སོ།། ལྷག་མ་རྣམས་ནི་འདུ་བྱེད་ཀྱི་ཕུང་པོས་བསྡུས་སོ།། तत्र तावत् पञ्चानां शील...विमुक्तिज्ञानदर्शनस्कन्धानां शीलस्कन्धो रूपस्कन्धेन संगृहीतः, शेषाः संस्कारस्कन्धेन अभि.भा.39क/72; དེ་བཞིན་གཤེགས་པའི་ཚུལ་ཁྲིམས་ཀྱི་ཕུང་པོ་དང་ཏིང་ངེ་འཛིན་གྱི་ཕུང་པོ་དང་ཤེས་རབ་ཀྱི་ཕུང་པོ་དང་རྣམ་པར་གྲོལ་བའི་ཕུང་པོ་དང་རྣམ་པར་གྲོལ་བའི་ཡེ་ཤེས་མཐོང་བའི་ཕུང་པོ་ तथागतस्य शीलस्कन्धं समाधिस्कन्धं प्रज्ञास्कन्धं [विमुक्तिस्कन्धं] विमुक्तिज्ञानदर्शनस्कन्धम् अभि.स्फु.4ख/7; द्र. རྣམ་པར་གྲོལ་བའི་ཡེ་ཤེས་གཟིགས་པའི་ཕུང་པོ།

རྣམ་པར་གྲོལ་བའི་ཡེ་ཤེས་གཟིགས་པ *पा.* विमुक्तिज्ञानदर्शनम् – མ་བརྟགས་བཏང་སྙོམས་མི་མངའ་སྟེ། །འདུན་པ་བརྩོན་འགྲུས་དྲན་པ་དང་། །ཤེས་རབ་རྣམ་གྲོལ་རྣམ་གྲོལ་གྱི། །ཡེ་ཤེས་གཟིགས་པ་ཉམས་མི་མངའ།། नोपेक्षाऽप्रतिसंख्याय हानिर्न च्छन्दवीर्यतः । स्मृतिप्रज्ञाविमुक्तिभ्यो विमुक्तिज्ञानदर्शनात् ॥ र.वि.20ख/93; द्र. རྣམ་པར་གྲོལ་བའི་ཡེ་ཤེས་མཐོང་བ།

རྣམ་པར་གྲོལ་བའི་ཡེ་ཤེས་གཟིགས་པའི་ཕུང་པོ་ *पा.* विमुक्तिज्ञानदर्शनस्कन्धः, अनास्रवस्कन्धभेदः – སངས་རྒྱས་བཅོམ་ལྡན་འདས་དེ་རྣམས་ཀྱི་ཚུལ་ཁྲིམས་ཀྱི་ཕུང་པོ་དང་ཏིང་ངེ་འཛིན་གྱི་ཕུང་པོ་དང་...རྣམ་པར་གྲོལ་བའི་ཡེ་ཤེས་གཟིགས་པའི་ཕུང་པོ་དང་ यस्तेषां बुद्धानां भगवतां शीलस्कन्धः समाधिस्कन्धः...विमुक्तिज्ञानदर्शनस्कन्धश्च अ.सा.120ख/69; द्र. རྣམ་པར་གྲོལ་བའི་ཡེ་ཤེས་མཐོང་བའི་ཕུང་པོ།

རྣམ་པར་གྲོལ་བའི་རོ་ विमुक्तिरसः – འོད་སྲུང་འདི་ལྟ་སྟེ། རྣམ་པར་གྲོལ་བའི་རོ་དང་...རྟག་པར་ཡོངས་སུ་མྱ་ངན་ལས་འདས་པ་དང་... ངས་ཆོས་རྣམས་རོ་གཅིག་པར་རྟོགས་ཀྱང་ सोऽहं काश्यप एकरसधर्मं विदित्वा यदुत विमुक्तिरसं...नित्यपरिनिर्वृतम् स.पु.48क/85.

རྣམ་པར་གྲོལ་བའི་ལམ *पा.* विमुक्तिमार्गः – རྣམ་པར་གྲོལ་བའི་ལམ་ནི་གང་གིས་གནས་གྱུར་པ་དེ་སོ་སོར་རང་གིས་མྱོང་བའོ།། विमुक्तिमार्गो येन नामाश्रयपरिवृत्तिं प्रत्यात्ममनुभवति अभि.स.भा.60क/82; རྣམ་པར་གྲོལ་བའི་ལམ་གྱིས་ནི་བྲལ་བའི་ཐོབ་པ་ད་ལྟར་དུ་བྱེད་པའི་སྒོ་ནས་སྒོ་གཅོད་པར་བྱེད་དོ།། विमुक्तिमार्गेण च विसंयोगप्राप्तिकपाटं पिधीयते वर्तमानीकरणतः अभि.स्फु.178ख/929; རྣམ་པར་གྲོལ་བའི་ལམ་རྣམས་ནི་ཇི་རིགས་པར་ས་གོང་མ་ལ་ཞི་བ་དང་གྱ་ནོམ་པ་དང་ངེས་པར་འབྱུང་བའི་རྣམ་པར་བལྟའོ།། विमुक्तिमार्गा उत्तरां भूमिं शान्ततः प्रणीततो निःसरणतश्चाकारयन्ति सम्भवतः अभि.भा.29क/977; विमुक्तिपथः – འཇིག་རྟེན་པ་ཡི་རྣམ་གྲོལ་དང་། །བར་ཆད་མེད་ལམ་གོ་རིམ་བཞིན།། विमुक्त्यानन्तर्यपथा लौकिकास्तु यथाक्रमम्। अभि.को.20ख/977.

རྣམ་པར་གྲོལ་བའི་ལམ་ལྟ་བུ *वि.* विमुक्तिमार्गसदृशः – སྐད་ཅིག་མ་གཉིས་པ་ནི་བར་ཆད་མེད་པའི་ལམ་ལྟ་བུ་ཡིན་ལ། གསུམ་པ་ནི་རྣམ་པར་གྲོལ་བའི་ལམ་ལྟ་བུ་ཡིན་ནོ།། द्वौ हि क्षणावानन्तर्यमार्गसदृशौ, तृतीयो विमुक्तिमार्गसदृशः अभि.भा.25क/960.

རྣམ་པར་གྲོལ་བའི་ལམ་ལས་བླངས་པའི་ཡོན་ཏན་བསྟན

པ *ना.* विमुक्तिमार्गधौतगुणनिर्देशः, ग्रन्थः क.त. 306.

རྣམ་པར་གྲོལ་བའི་ལུས विमुक्तिकायः लो.को.1400.

རྣམ་པར་གྲོལ་བའི་ཤེས་པ *पा.* विमुक्तिज्ञानम् – རྣམ་པར་གྲོལ་བ་མེད་པར་ཡང་ཇི་ལྟར་རྣམ་པར་གྲོལ་བའི་ཤེས་པ་རྣམ་པར་གཞག विना च विमुक्त्या कथं विमुक्तिज्ञानं व्यवस्थाप्यते अभि.भा.41क/1027.

རྣམ་པར་གྲོལ་བར་གྱུར *भू.का.कृ.* विमुक्तः – དེ་ནས་དེ་དམྱལ་བའི་སྡུག་བསྔལ་ལས་རྣམ་པར་གྲོལ་བར་འགྱུར་[?གྱུར་]ཏེ ततस्ते नारकदुःखाद् विमुक्ताः स.दु.112क/178.

རྣམ་པར་གྲོལ་བར་འགྱུར = རྣམ་གྲོལ་འགྱུར • *क्रि.* 1. विमुच्यते – འཇིག་རྟེན་བག་ཆགས་རྒྱུ་ལས་བྱུང་། །གང་ནའང་མེད་མིན་ཡོད་མེད་མིན། །བདག་མེད་ཆོས་མཁས་གང་དག་གིས། །མཐོང་ན་རྣམ་པར་གྲོལ་བར་འགྱུར།། वासनाहेतुकं लोकं नासन्न सदसत्क्वचित्। ये पश्यन्ति विमुच्यन्ते धर्मनैरात्म्यकोविदाः ॥ ल.अ.175ख/137; ཆགས་པས་འཇིག་རྟེན་འཆིང་འགྱུར་བ། །འདོད་ཆགས་ཉིད་ཀྱིས་རྣམ་གྲོལ་འགྱུར།། रागेण बध्यते लोको रागेणैव विमुच्यते। हे.त.16क/50; मुच्यते – ཚུལ་སྒོ་གང་གིས་རྣམ་པར་གྲོལ་འགྱུར་བ། །དེ་ནི་བཅོམ་ལྡན་མི་ཡི་མཆོག་གིས་མཁྱེན།། येन वा नयमुखेन मुच्यते तं च वेत्सि भगवन्नरोत्तम ॥ रा.प.230क/122; विमुक्तिर्भवति – ཆོས་ཉིད་འདི་ལ་ནི་རྒྱུད་རིམ་གྱིས་འཇུག་པ་དང་ཡོངས་སུ་སྨིན་པ་དང་རྣམ་པར་གྲོལ་བར་འགྱུར་རོ།། क्रमेण हि सन्तानस्यास्यां धर्मतायामवतारपरिपाकविमुक्तयो भवन्ति अभि.भा.16क/921 2. विनिर्मुक्तो भवति – དེ་ནས་སེམས་ཅན་དེ་དག...ངན་སོང་ལས་རྣམ་པར་གྲོལ་བར་འགྱུར་རོ།། तेन ते सत्त्वाः...अपायाद् विनिर्मुक्ता भवन्ति स.दु.124ख/222; विप्रमुक्तो भवति – སྡུག་བསྔལ་ལས་ཀྱང་རྣམ་པར་གྲོལ་བར་འགྱུར་རོ།། दुःखादपि विप्रमुक्तो भवति अभि.स.भा.108क/145; •*> རྣམ་པར་གྲོལ་བར་གྱུར།

རྣམ་པར་གྲོལ་བར་བྱ *क्रि.* विमोचयेत् – སུ་ནི་དགེ་བའི་རྩ་བ་རྣམས་མ་བསྐྱེད་པ་རྣམས་ལས་བསྐྱེད་པར་བྱ...སུ་ནི་ཡོངས་སུ་སྨིན་ཟིན་པ་ལས་རྣམ་པར་གྲོལ་བར་བྱ कस्यानवरोपितानि कुशलमूलान्यवरोपयेयम्...कस्य परिपक्वानि विमोचयेयम् अ.श.10ख/9.

རྣམ་པར་གྲོལ་བར་བྱེད = རྣམ་པར་གྲོལ་བར་བྱེད་པ།

རྣམ་པར་གྲོལ་བར་བྱེད་པ •*क्रि.* विमोचयति – དེ་ནི་བག་ཆགས་རྟོགས་དང་ཞི་བ་དང་། །རབ་ཏུ་རྟོགས་པས་རྣམ་པར་གྲོལ་བར་བྱེད།། वासनबोधनशमनप्रतिवेधैस्तद्विमोचयति ॥ सू.अ.164क/55; •*सं.* विमुक्तिः – བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའི་གཞན་གྱི་དོན་རྣམ་པ་བཅུ་གསུམ་སྟེ། རྗེས་སུ་བསྟན་པ་དང...ཤེས་རབ་རྣམ་པར་གྲོལ་བར་བྱེད་པ་དང त्रयोदशविधो बोधिसत्त्वस्य परार्थः। सुदेशना...प्रज्ञाविमुक्तिः सू.व्या.143ख/22; विमोचनम् – ཤེས་རབ་ཀྱི་ཕ་རོལ་ཏུ་ཕྱིན་པའི་འབྲས་བུ་རྣམ་པར་གྲོལ་བར་བྱེད་པ་ལ་སྒྲིབ་པོ།། (फलं)...प्रज्ञापारमिताया विमोचनावरणम् म.भा.9क/2.13; •*वि.* विमोक्षकः – ཏིང་ངེ་འཛིན་ལ་སྙོམས་པར་ཞུགས་སོ།། དེ་མ་ཐག་ཉིད་དུ་ངན་སོང་གསུམ་གྱི་རྒྱུད་རྣམ་པར་གྲོལ་བར་བྱེད་པ་ཞེས་བྱ་བ་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་ཆེན་པོའི་འོད་ཟེར་འཕྲོ་བ་དང་སྡུད་པ་དུ་མའི་ཕྲེང་བ་རང་གི་མཛོད་སྤུ་ནས་བྱུང་སྟེ समाधिं समापन्नः। समनन्तरमेवापायत्रयसन्ततिविमोक्षकनाममहाबोधिसत्त्वरश्मिस्फरणसंहरणानेकमाला स्वोर्णाकोषान्निश्चचार स.दु.97क/120; विमोचकः – རྣམ་གྲོལ་ཁྱོད་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ། །སྡུག

བསྔལ་མ་ལུས་རྣམ་གྲོལ་བྱེད།། नमस्ते मुक्ताय सर्वदुःखविमोचक म.मू.91क/3; विमोक्षणकरः – བདེ་བླག་ཏུ་རྣམ་པར་གྲོལ་བར་བྱེད་པ་འདི་ཡིན་ཏེ अनायासतो विमोक्षणकरमिदं भवति स.दु.99क/126.

རྣམ་པར་གྲོལ་བར་མི་འགྱུར *क्रि.* न विमुच्यते – འདིའི་སེམས་སྟོང་པ་ཉིད་ལ་མི་འཇུག་ཅིང་རབ་ཏུ་དང་བར་མི་འགྱུར་ལ་ཡང་དག་པར་མི་གནས་པས་རྣམ་པར་གྲོལ་བར་མི་འགྱུར शून्यतायामस्य चित्तं न प्रस्कन्दति, न प्रसीदति, न सन्तिष्ठते, नाधिमुच्यते [न विमुच्यते पा.भे.] अभि.भा.86ख/1203.

རྣམ་པར་གྲོལ་བར་མཛད = རྣམ་པར་གྲོལ་བར་མཛད་པ།

རྣམ་པར་གྲོལ་བར་མཛད་པ •*क्रि.* विमोचयति – ཁྱོད་ཐོས་པས་ནི་སྤྲོ་བ་སྐྱེ།...།བསྟན་པས་རྣམ་པར་གྲོལ་བར་མཛད།། श्रवणं तर्पयति ते...विमोचयति शासनम् ॥ श.बु.113ख/92; •*वि.* विमोचकः – སེམས་ཅན་ཐམས་ཅད་རྣམ་གྲོལ་མཛད།། सर्वसत्त्वविमोचकः सू.अ.260क/180; विमोक्षणकरः – སྤྱན་རས་གཟིགས་ཀྱི་དབང་པོ་དབང་ཕྱུག་ཆེན་པོ...ཉོན་མོངས་པ་ཐམས་ཅད་ལས་རྣམ་པར་གྲོལ་བར་མཛད་པ...ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ།། नमोऽस्त्ववलोकितेश्वराय महेश्वराय...सर्वक्लेशविमोक्षणकराय का.व्यू.205ख/263.

རྣམ་པར་གྲོལ་བར་མཛད་པ་ཉིད विमोचकत्वम् – སེམས་ཅན་ཐམས་ཅད་རྣམ་པར་གྲོལ་བར་མཛད་པ་ཉིད་ནི་ལས་སོ།། सर्वसत्त्वविमोचकत्वं कर्म सू.व्या.260क/180.

རྣམ་པར་གྲོལ་བར་ཤེས་པ = རྣམ་པར་གྲོལ་བའི་ཤེས་པ།

རྣམ་པར་གྲོལ་བར་གཤེགས་པ *वि.* विमुक्तिगामी लो.को. 1400.

རྣམ་པར་དགོད = རྣམ་པར་དགོད་པ།

རྣམ་པར་དགོད་པ 1. व्यवस्था – བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་སེམས་དཔའ་ཆེན་པོས་སེམས་དང་ཤེས་རབ་དང་ཡེ་ཤེས་ཀྱི་མཚན་ཉིད་རྣམ་པར་དགོད་པ་ལ་གནས་ཏེ बोधिसत्त्वेन महासत्त्वेन चित्तविज्ञानप्रज्ञालक्षणव्यवस्थायां स्थित्वा ल.अ.74क/22; བློ་གྲོས་ཆེན་པོ་འདི་ལྟར་རིགས་རྣམ་པར་དགོད་པ་འདི་ནི་ཡོངས་སྦྱོང་བའི་ས་སྟེ परिकर्मभूमिरियं महामते गोत्रव्यवस्था ल.अ.80ख/28; व्यवस्थानम् – ཕུང་པོ་དང་ཁམས་དང་སྐྱེ་མཆེད་རྣམ་པར་དགོད་པ स्कन्धधात्वायतनव्यवस्थानम् द.भू.212ख/27; རིགས་ཀྱི་བུ་འདི་ལ་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་གཞོན་ནུར་གྱུར་ཅིང་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའི་རྣམ་པར་དགོད་པ་ལ་རྣམ་པར་གནས་པ་ཡིན་ཏེ इह कुलपुत्र बोधिसत्त्वः कुमारभूत एव बोधिसत्त्वव्यवस्थानव्यवस्थितो भवति ग.व्यू.205ख/287; ཐེག་པ་གསུམ་དུ་རྣམ་དགོད་པ།། यानत्रयव्यवस्थानम् ल.अ.81क/28; अवस्थानम् – སེམས་བསྐྱེད་པ་དེ་བསྐྱེད་མ་ཐག་ཏུ...བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའི་རྣམ་པར་དགོད་པ་ལ་རབ་ཏུ་གནས་པ་ཡིན येन चित्तोत्पादेन सहोत्पन्नेन ...सुव्यवस्थितो भवति बोधिसत्त्वावस्थानेन द.भू.175क/8 2. व्यूहः – བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའི་ཏིང་ངེ་འཛིན་ཆོས་ཀྱི་དབྱིངས་ཚུལ་གཅིག་གིས་ཆོས་ཐམས་ཅད་ཚུལ་གཅིག་པར་རྣམ་པར་དགོད་པའི་འོད་དང एकनयधर्मधातुसर्वधर्मैकनयव्यूहप्रभेण बोधिसत्त्वसमाधिना ग.व्यू.307ख/30; निवेशनम् – གྲོང་དང་གྲོང་ཁྱེར་དང...གནས་རྣམ་པར་དགོད་པ་ཤེས་པར་བྱ་བ་དང ग्रामनगर... आवसथनिवेशनज्ञानानि ग.व्यू.2ख/102; प्रज्ञप्तिः – ངེས་པའི་ཚིག་ཐ་དད་པ་ཡང་དག་པར་ཤེས་པས་ཆོས་ཐམས་ཅད་རྣམ་པར་དགོད་པ་རྒྱུན་ཆད་པ་མེད

པར་ཆོས་སྟོན་ཏོ॥ निरुक्तिप्रतिसंविदा सर्वधर्मप्रज्ञप्त्यवच्छेदन[? प्त्यविच्छेदेन]धर्मं देशयति द.भू. 254ख/51 3. = རྣམ་པར་དགོད་པ་ཉིད व्यवस्थानता – ཐེག་པ་གསུམ་རྣམ་པར་དགོད་པ་དང त्रियानव्यवस्थानतां च द.भू.245क/45.

རྣམ་པར་དགོད་པར་བྱ *क्रि.* 1. व्यवस्था क्रियते – སྣང་བ་མེད་པའི་ས་ལ་འཇུག་པའི་ཕྱིར་རྣམ་པར་དགོད་པར་བྱའོ॥ निराभासभूम्यवक्रमणतया[? तायै] व्यवस्था क्रियते ल.अ.80ख/28 2. विन्यसेत् – དེ་ནས་ཀླུའི་རྒྱལ་པོ་བཅུ་པོ་རྣམས་རྣམ་པར་དགོད་པར་བྱ ततो दशनागराजान् विन्यसेत् वि.प्र.115ख/3.35.

རྣམ་པར་དགྲོལ་བ •*सं.* विमोचना – སེམས་ཅན་ཡོངས་སུ་སྨིན་པ་རྣམས་རྣམ་པར་དགྲོལ་བ परिपक्वानाञ्च सत्त्वानां विमोचना बो.भू.118क/152; * • *व.का.कृ.* विवृण्वान – ཞེས་བྱ་བའི་ཚིགས་སུ་བཅད་པ་འདིའི་དོན་རྣམ་པར་དགྲོལ་བའི་ཕྱིར་སློབ་དཔོན་གྱིས... ཞེས་བྱ་བ་སྨྲས་སོ इत्यस्य श्लोकस्यार्थं विवृण्वान आचार्य आह अभि.स्फु.2क/4; विमोचयमानः लो.को. 1400.

རྣམ་པར་དགྲོལ་བ་མཛད *क्रि.* विभजति – སྔོན་གྱི་དགེ་བའི་རྩ་བ་ཡོངས་སུ་བསྐུལ་བ་མཛད་དོ॥ ...རྣམ་པར་དགྲོལ་བ་མཛད་དོ॥ पूर्वकुशलमूलानि संचोदयति...विभजति ग.व्यू.128ख/215.

རྣམ་པར་འགལ་བ *वि.* विरोधी – འདབ་བརྒྱ་པ་དང་སྟོན་ཟླ་དང་། །ཁྱོད་ཀྱི་གདོང་དང་གསུམ་པོ་ནི། །ཕན་ཚུན་རྣམ་པར་འགལ་ཞེས་པ། །དེ་ནི་འགལ་བའི་དཔེར་བརྗོད་དོ॥ शतपत्रं शरच्चन्द्रस्त्वदाननमिति त्रयम्। परस्परविरोधीति सा विरोधोपमोदिता ॥ का.आ.323क/2. 33.

རྣམ་པར་འགེམས་པ *व.का.कृ.* विस्फोटयन् – གང་ཞིག་རྣམ་པར་འགེམས་པའི་སྒྲ་སྒྲོགས་ས་ལ་རྐང་པ་རྡེབས་ཤིང་སྒྲུབ་པ་པོ་ནི་འཇིགས་བྱེད་པ गर्जन् विस्फोटयन् यः क्षितिमपि चरणैः साधकं भीषयन् वि.प्र.79ख/4.163.

རྣམ་པར་འགོག = རྣམ་པར་འགོག་པ།

རྣམ་པར་འགོག་པ •*सं.* 1. विद्वेषः, वैरम् – वैरं विरोधो विद्वेषः अ.को.1.8.25; विद्वेष्टीति विद्वेषः। द्विष अप्रीतौ अ.वि.1.8.25 2. वीरुत्, विस्तृता लता मि.को.148ख। • *वि.* निवारकः – ཉེས་པ་བྱས་པ་རྣམ་འགོག་པ། །ཆོས་མ་ཡིན་པ་གཞིག་པ་དང་॥ अधर्मशमनार्थाय दुष्कृतानां निवारकः। सु.प्र.37ख/71; • *> རྣམ་པར་བཀག།

རྣམ་པར་འགོད = རྣམ་པར་འགོད་པ།

རྣམ་པར་འགོད་པ •*क्रि.* व्यवस्थापयति – ཇི་ལྟར་མུ་སྟེགས་བྱེད་པའི་སྨྲ་བ་དང་ལྟ་བ་ངན་པ་དང་ཐུན་མོང་དུ་མི་འགྱུར་བ་དེ་ལྟར་རྣམ་པར་འགོད་དོ॥ तथा च व्यवस्थापयन्ति यथा तीर्थकरवादकुदृष्टिसाधारणा न भवन्ति ल.अ.70ख/19; • *सं.* 1. विन्यासः – ཆགས་དང་ཞེ་སྡང་བའི་གདུང་བ་མི་བཟད་ཉོན་མོངས་རྣམ་པར་འགོད་ལ་ཆགས॥ रागद्वेषव्यसनविषमायासविन्याससक्ताः अ.क.268क/32.33; विनिवेशः – རིགས་བརྒྱུད་ཁྱད་འཕགས་ཁྱད་པར་གྱིས། །རེ་བ་རྣམ་པར་འགོད་པ་བྱས॥ वंशोत्कर्षविशेषाशाविनिवेशं प्रचक्रतुः ॥ अ.क.192क/82.3 2. व्यवस्थानम् – གང་བླ་ན་མེད་པ་ཡང་དག་པར་རྫོགས་པའི་བྱང་ཆུབ་ཏུ་སྐྱེ་བ་གཅིག་གིས་ཐོགས་པ་དེ་ནི་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའི་རྣམ་པར་འགོད་པ་ཐམས་ཅད་ལས་ཡང་དག་པར་འདས་པ་ལགས यश्चैकजातिप्रतिबद्धोऽनुत्तरायां सम्यक्संबोधौ, स समतिक्रान्तः सर्वबोधिसत्त्वव्यवस्थानानि ग.व्यू.305क/

393; དེ... ཕུང་པོ་དང་ཁམས་དང་སྐྱེ་མཆེད་རྣམ་པར་དགོད་[པ་ཁོང་དུ་ཆུད་]པས་རྟོག་པའི་བདེན་པ་ཡང་རབ་ཏུ་ཤེས་སོ॥ सः... स्कन्धधात्वायतनव्यवस्थानानुबोधान्निस्तीरणसत्यं प्रजानाति द.भू. 212ख/27.

རྣམ་པར་འགྱུ་བ *भू.का.कृ. विद्योतितः – མངོན་པར་ཤེས་པ་དང་རིག་པ་དང་མི་འཇིགས་པའི་གློག་རྣམ་པར་འགྱུ་བ[? འགྱུས་པ] अभिज्ञाविद्यावैशारद्यविद्युद्विद्योतितम् द.भू.269क/61.

རྣམ་པར་འགྱུར = རྣམ་པར་འགྱུར་བ།

རྣམ་པར་འགྱུར་ཉིད = རྣམ་པར་འགྱུར་བ་ཉིད།

རྣམ་པར་འགྱུར་བ •क्रि. विकार्यते – དངོས་གང་འགྱུར་བ་མེད་པར་ནི། །དངོས་པོ་གང་ཞིག་རྣམ་འགྱུར་བ॥ अविकृत्य हि यद्वस्तु यः पदार्थो विकार्यते। प्र.अ.69ख/77; •सं. 1. विकारः, विकृतिः – དཔེར་ན་མར་མེ་གཅིག་གིས་རྣམ་པར་ཤེས་པ་དང་སྡོང་བུའི་རྣམ་པར་འགྱུར་བ་དང་འབར་བ་གཞན་བསྐྱེད་པ་ལྟ་བུ यथा प्रदीपस्य विज्ञानवर्त्तिविकारज्वालान्तरोत्पादनानि वा. न्या.330क/38; བདུད་ཀྱི་རྣམ་འགྱུར་དྲག་པོ་ཡིས། །བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་ཀུན་ཏུ་གཙེས॥ मारः स्फारविकारेण बोधिसत्त्वं समाद्रवत्॥ अ.क.230क/25.60; སེར་སྣ་ལ་སོགས་པ་སེམས་ཀྱི་རྣམ་པར་འགྱུར་བ་དྲུག་གསུངས་པ मात्सर्यदयः[? दीन्] षट् चित्तविकारानाह वि.प्र. 229ख/2.23; विकृतिः – ནས་ཀྱི་སྨྱུ་གུ་ལ་སོགས་པ་ནི་གཤོལ་གྱི་བྱེད་པ་ལ་སོགས་པ་རྣམ་པར་འགྱུར་བའི་ཁྱད་པར་གྱི་རྗེས་སུ་འགྲོ་བ་དང་འབྲེལ་པ་མཐོང་བའི་ཕྱིར་རོ॥ ས་ལ་སོགས་པ་རྒྱུ་ཉིད་དུ་རྟོགས་པ་ཡིན་ནོ॥ सीरव्यापारादिविशेषविकृतिसमन्वयानुगमो हि दृश्यते यवादिप्रसवानामिति पृथिव्यादिकारणत्वपरिकल्पना प्र. अ.43क/49; ཁྱོད་ནི་ནུ་མ་བྱིན་པ་ཡིས། །ཡིད་ལ་རྣམ་འགྱུར་མ་བྱུང་ངམ། །ཞེས་དྲིས अपि ते स्तनदानेन मनो विकृतिमाययौ। इति पृष्टा अ.क.15क/51.14; विक्रिया – རྣམ་པར་འགྱུར་བ་ནི་ལོག་པར་འཇུག་པ་སྟེ विक्रियेति विप्लुतिः त.प.109क/668 2. = གཞན་དུ་འགྱུར་བ་ཉིད विपरिणामः, अन्यथात्वम् – རྣམ་པར་འགྱུར་བ་དང་མི་རྟག་པའི་ཆོས་ཅན་ཡིན་པའི་ཕྱིར་རྣམ་གྲངས་ཀྱིས་ནི་སྡུག་བསྔལ་ཉིད་ཡིན་ནོ॥ दुःखत्वं च पर्यायतो विपरिणामानित्यधर्मित्वात् अभि.भा.5क/882; རྣམ་པར་འགྱུར་བ་ནི་གཞན་དུ་འགྱུར་བ་ཉིད་དོ॥ विपरिणामः पुनरन्यथात्वम् अभि.स्फु.156क/882 3. सम्भ्रमः – སྤྱན་ནི་བྱུང་དག་རིང་ཞིང་བསམ་གཏན་ལ་ཆགས་སྨིན་མའི་འཁྲི་ཤིང་རྣམ་འགྱུར་བྲལ॥ दीर्घध्याननिमीललोचनयुगं निःसम्भ्रमभ्रूलतम् अ.क. 162ख/72.65; विलासः – གྲོང་ཁྱེར་ན་ཆུང་དགའ་ཞིང་ཆགས་པའི་མིག་རྣམས་ཀྱིས་ནི་སྨིན་མ་ཡི། །རྣམ་འགྱུར་མངོན་པར་མི་ཤེས་བཞིན་དུ་བལྟ་ཞིང भ्रूविलासानभिज्ञैः प्रीतिस्निग्धैर्जनपदवधूलोचनैः पीयमानः मे.दू.342ख/1.16 4. विब्बोकः – स्त्रीणां विलासविब्बोकविभ्रमा ललितं तथा॥ अ.को.1.8.31; विशेषेण बुक्कति गर्वतीति विब्बोकः। बुक्क गर्वे अ.वि.1.8.31 5. वैकृतम् – མི་བརྟན་པས་རྣམ་པར་འགྱུར་བའི་ལྟུང་བྱེད་དོ॥ अधीरवैकृत[°ते प्रायश्चित्तिक]म् वि.सू.54क/69 6. विभङ्गः – ལས་ཀྱི་རྣམ་པར་འགྱུར་བ་ཞེས་བྱ་བའི་ཆོས་ཀྱི་གཞུང कर्मविभङ्गनामधर्मग्रन्थः क.त. 339 7. = རྣམ་འགྱུར་ཉིད विकारिता– ཡན་ལག་སེར་སྐྱ་བློ་ངན་པའང་། །འགྲོ་བ་གཙོ་ལས་སྐྱེས་པ་དང་། །ཡོན་ཏན་རྣམ་པར་འགྱུར་བ་ཡང་། །སློབ་མ་རྣམས་ལ་རབ་ཏུ་སྟོན॥ प्रधानाज्जगदुत्पन्नं कपिलाङ्गोऽपि दुर्मतिः। शिष्येभ्यः संप्रकाशेति गुणानां च विकारिता॥ ल.अ. 179क/144; •पा. 1. विकृतिः, नाशभेदः – འཇིག་པ

རྣམ་བཞིར་ཤེས་བྱ་སྟེ། །བརྟན་[? བརྟན་]སོགས་དག་ལས་བཟློག་ཕྱིར་རོ། །སྨུགས་དང་རྣམ་འགྱུར་ཆད་པ་དང་། །བསམ་མི་ཁྱབ་པར་འཕོ་བ་སྟེ॥ नाशश्चतुर्विधो ज्ञेयो ध्रुवत्वादिविपर्ययात्। पूतिर्विकृतिरुच्छित्तिरचिन्त्यनमनच्युतिः॥ र.वि.117ख/83 2. (वै.द.) विवर्तः – གནོད་པར་བྱེད་པ་ནི་མངོན་སུམ་ལ་སོགས་པ་ཡོད་པས ཤེས་པ་རྟག་པའི་རྣམ་པར་འགྱུར་བ་ཡིན་པར་མི་རིགས སོ॥ बाधकं तु प्रत्यक्षादि विद्यत इत्ययुक्तो नित्यज्ञानविवर्तः त.प.220ख/158 3. (सां.द.) विकारः – དབང་པོ་ལྔ་དང་ཡུལ་ལྔ་དང་ས་ལ་སོགས་པ་རྣམས་ཀྱི་རོ དྲུག་ནི་རྣམ་པར་འགྱུར་བ་བཅུ་དྲུག་སྟེ पञ्चेन्द्रियाणि, पञ्च विषयाः, पृथिव्यादीनां षड् रसा इति षोडश विकाराः वि.प्र.152ख/1.2; • वि. विकारी – ཀྱེ་མ་གཏི མུག་གྱིས་བཅིངས་པས། །སྐྱེངས་པ་རིང་དུ་གནས་པས ཀྱང་། །ལུས་ཅན་རྣམས་ལ་སྣང་བ་སྒྲིབ། །སྤྲིན་གྱི་རྣམ་པར འགྱུར་བས་བཞིན॥ अहो मोहानुबन्धेन दूरस्थैरपि देहिनाम्। आलोकश्छाद्यते मूर्खैर्मेघैरिव विकारिभिः अ.क.88ख/9.24; རྣམ་པར་འགྱུར་བས་འཇིག་པར འགྱུར་རོ॥ विनाशि स्याद् विकारि च ज्ञा.सि.51ख/134; विकृतः – ཤིན་ཏུ་རྣམ་པར་འགྱུར་བའི་བཞིན ལྡན सुविकृतवदनः वि.प्र.111ख/1, पृ.8; རིད་ཅིང་རྣམ འགྱུར་ལུས་ཅན་དེ། །ས་སྐྱོང་ལ་ནི་ཉེར་བཏུད་དེ॥ उपसृत्य स भूपालं कृशो विकृतविग्रहः। अ.क.24ख/3.59; विप्रकृतः – མཐུ་ཆུང་བསྡིགས་སྣང་གིས་ནི་དཀར་འགྱུར ཏེ། །མི་ཤེས་ལྡན་པ་འཁྲུག་ཅིང་རྣམ་པར་འགྱུར॥ संहृष्यते सत्कृत अल्पस्थामः प्रकम्पते विप्रकृतो अजानी। शि.स.64ख/63; • कृ. 1. विक्रियमाणः – དེའི ཕྱིར་འགྱུར་བ་མེད་པར་ཡང་རྣམ་པར་འགྱུར་བའི་ཕྱིར ལུས་འདི་ནི་རྣམ་པར་ཤེས་པའི་ཉེ་བར་ལེན་པའི་རྒྱུ་མ ཡིན་ནོ॥ तस्माद् देहाविकारेऽपि विक्रियमाणत्वाद् विज्ञानस्य नोपादानकारणमस्य देहः प्र.अ.69ख/77 2. भूतः – གཅིག་ཉིད་གཉིས་སུ་རྣམ་པར་འགྱུར॥ एकमेव द्विधाभूतम् गु.सि.11क/24; *> རྣམ་པར་གྱུར་པ།

རྣམ་པར་འགྱུར་བ་བཅུ་དྲུག षोडश विकाराः – 1.-5. དབང་པོ་ལྔ पञ्चेन्द्रियाणि, 6.-10. ཡུལ་ལྔ पञ्च विषयाः, 11.-16. ས་ལ་སོགས་པ་རྣམས་ཀྱི་རོ་དྲུག पृथिव्यादीनां षड् रसाः वि.प्र.152ख/1.2.

རྣམ་པར་འགྱུར་བ་ཅན *वि.* विपरिणामी, ०मिनी – མངོན་པར་འདུ་བྱ་བ་ཆེན་པོས་བསྒྲུབ་པར་བྱ་བ་དང་རྣམ པར་འགྱུར་བ་ཅན་ནི་མཇུག་ཐོགས་སུ་སྡུག་བསྔལ་སྐྱེ་བ ཅན་དང महाभिसंस्कारसाध्यां च विपरिणामिनीं च समनन्तरदुःखोत्पादिनीम् अभि.स्फु.155ख/881; विकारी, ०रिणी – ནོར་གྱི་ཕྱུན་ཚོགས་སྒྱུ་སྒྱུ་ནི། །སྨད་འཚོང་མ་བཞིན་རྣམ་འགྱུར་ཅན॥ वेश्या इव विकारिण्यः कुटिला धनसम्पदः॥ अ.क.21ख/52.27; विकृतः – སེམས་ཅན་རྣམ་འགྱུར་ཅན། །སྐྱེ་བོས་ཀུན་ཏུ བསྐོར་བ་གཟིགས॥ सत्त्वमद्राक्षीदावृतं विकृतं जनैः अ.क.169क/76.2.

རྣམ་པར་འགྱུར་བ་ཉིད विपरिणामता – ཀུན་དགའ་བོ གང་ཅི་ཚོར་ཡང་རུང་དེ་ནི་འདིར་སྡུག་བསྔལ་ལོ་ཞེས་བྱ་བ ནི་དངས་འདུ་བྱེད་མི་རྟག་པ་ཉིད་དང་འདུ་བྱེད་རྣམ་པར འགྱུར་བ་ཉིད་ལ་དགོངས་ནས་གསུངས་སོ॥ संस्कारानित्यतामानन्द मया सन्धाय भाषितं संस्कारविपरिणामतां च–यत्किञ्चिद्वेदितमिदमत्र दुःखस्य इति अभि.भा.5क/881; विकारित्वम् – ཞེ་སྡང་སྐྱེ་བའི་རྒྱུ ལ་ཡང་། །རྣམ་པར་འགྱུར་ཉིད་མི་རིགས་སོ॥ द्वेषाद्युत्पादहेतौ तु विकारित्वं न युज्यते॥ 48क/123.

རྣམ་པར་འགྱུར་བ་དང་བྲལ་བ = རྣམ་འགྱུར་དང་བྲལ་བ།

རྣམ་པར་འགྱུར་བ་མ་ཡིན = རྣམ་པར་འགྱུར་བ་མ

ཡིན་པ།

རྣམ་པར་འགྱུར་བ་མ་ཡིན་པ • क्रि. न विक्रियते – བཅད་པའི་དཔེས་མཚོན་པའི་ལུང་ལ་ལྟོས་པའི་རྗེས་སུ་དཔག་པས་ཀྱང་རྣམ་པར་འགྱུར་བ་མ་ཡིན་ཏེ आगमापेक्षानुमानेनापि छेददृष्टान्तसूचितेन न विक्रियते त.प.302ख/1063; •सं. अविकृतिः – དེ་ལ་རྩ་བའི་རང་བཞིན་རྣམ་པར་འགྱུར་བ་མ་ཡིན་ཏེ तत्र मूलप्रकृतिरविकृतिः वि.प्र.152क/1.2.

རྣམ་པར་འགྱུར་བ་མེད = རྣམ་འགྱུར་མེད་པ།

རྣམ་པར་འགྱུར་བ་མེད་པ = རྣམ་འགྱུར་མེད་པ།

རྣམ་པར་འགྱུར་བའི་ཆོས་ཅན वि. विपरिणामधर्मा – མི་རྟག་པ་དང་སྡུག་བསྔལ་བ་དང་རྣམ་པར་འགྱུར་བའི་ཆོས་ཅན་གང་ཡིན་པ་དེ་ལ་ཐོས་པ་དང་ལྡན་པའི་འཕགས་པའི་ཉན་ཐོས་འདི་སྙམ་དུ་འདི་བདག་གིའོ། འདི་ནི་བདག་གོ། འདི་ནི་བདག་གི་བདག་ཡིན་ནོ་སྙམ་དུ་བདག་ཏུ་འཛིན་པར་འགྱུར་རམ यत्पुनरनित्यं दुःखं विपरिणामधर्म, सत्यमपि (?) तच्छ्रुतवानार्यश्रावक आत्मत उपगच्छेदेतन्मम, एषोऽहमस्मि, एष मे आत्मेत्येवमेतत् अ.श.270ख/248.

རྣམ་པར་འགྱུར་བའི་བདག वि. विकारात्मा – རྣམ་པར་འགྱུར་བའི་བདག་ནི་རྣམ་པར་འགྱུར་བའི་རང་བཞིན་ནོ། विकारात्मा विकारस्वभावः त.प.27ख/502.

རྣམ་པར་འགྱུར་བའི་ཞལ་ཅན वि. विकृताननः ब.वि. 171क।

རྣམ་པར་འགྱུར་བར་བྱེད = རྣམ་པར་འགྱུར་བར་བྱེད་པ།

རྣམ་པར་འགྱུར་བར་བྱེད་པ •क्रि. विकारयति – གང་ཞིག་གང་རྣམ་པར་འགྱུར་བར་བྱེད་འདོད་པ་དེ་དེའི་ཉེ་བར་ལེན་པ་རྣམ་པར་འགྱུར་བར་བྱས་པ་ཉིད་ཀྱིས་དེ་རྣམ་པར་འགྱུར་བར་བྱེད་ཀྱི་གཞན་དུ་ནི་མ་ཡིན་ནོ། यो यद्विकारयितुमिच्छति स तदुपादानविकारेणैव तद्विकारयति, नान्यथा त.प.95ख/643; •वि. विकारकारी – ཇི་ལྟར་དགའ་[? ཀ་]བ་རྣམ་པར་འགྱུར་བར་བྱེད་པ་དང་། ཇི་ལྟར་ནད་ཀྱིས་རྣམ་པར་འཇིག་པར་བྱེད་པ་དང་ यथा विकारकरी च जरा, यथा विलोपकारकश्च व्याधिः रा.प.250ख/152.

རྣམ་པར་འབྱེད = རྣམ་པར་འབྱེད་པ།

རྣམ་པར་འབྱེད་པ •क्रि. संविभजते म.व्यु.2850 (51ख); •सं. 1. विवादः – དེ་ནི་གཡོ་ལྡན་ཡང་ཞིང་རེ་བྲལ་འགྱུར། །ཕྱི་ཕྱིར་ཞིང་ནི་རྣམ་པར་འབྱེད་པ་རྩོམ། शठश्च सो भोति लघुर्निराशः पुनः पुनश्चारभते विवादम्। शि.स.64ख/63 2. विक्षेपता – ཐམས་ཅད་རྣམ་པར་འབྱེད सर्वविक्षेपता म.व्यु.7985 (112ख).

རྣམ་པར་འགྱེལ क्रि. निपपात – ཅེས་བརྗོད་དེ་ཡི་རྐང་པ་ལ། །ས་ཡི་བདག་པོ་རྣམ་པར་འགྱེལ། इत्युक्त्वा निपपातास्याः पादयोः पृथिवीपतिः ॥ अ.क.148ख/68.85.

རྣམ་པར་འགྲན་པ विस्पर्धाः म.व्यु.7340 (104ख).

རྣམ་པར་འགྲུམས वि. विजर्जरम् – ཁྱིམ་དེ...།རྣམ་པར་འགྲུམས तद् गृहं...विजर्जरम् स.पु.34ख/58.

རྣམ་པར་འགྲེལ = རྣམ་འགྲེལ།

རྣམ་པར་འགྲེལ་བ = རྣམ་འགྲེལ།

རྣམ་པར་འགྲོལ =. རྣམ་པར་འགྲོལ་བ།

རྣམ་པར་འགྲོལ་བ • क्रि. विमुच्यते – དངོས་པོའི་རང་བཞིན་མི་སྐྱེ་བ། །དེ་ལྟར་མཐོང་ནས་རྣམ་པར་འགྲོལ། भावस्वभावानुत्पत्तिरेवं दृष्ट्वा विमुच्यते ॥ ल.अ.162क/113; •सं. विमुक्तिः लो.को.1400; •वि. प्र-

मोचनकः – སྡུག་བསྔལ་ཐམས་ཅད་ལས་རྣམ་པར་འགྲོལ་བ सर्वदुःखप्रमोचनकः सु.प.25ख/5.

རྣམ་པར་རྒྱུད་རིང विप्रवासः लो.को.1400.

རྣམ་པར་རྒྱན་པ व्यूहः – ཁོ་མོས་ཀྱང་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའི་རྣམ་པར་ཐར་པ་དགའ་བ་ཡངས་པའི་ཤུགས་འབྱུང་བས་སེམས་ཀྱི་སྐད་ཅིག་རྣམ་པར་རྒྱན་པ་འདི་ཐོབ་བོ། मया एष विपुलप्रीतिवेगसंभवचित्तक्षणव्यूहो बोधिसत्त्वविमोक्षः प्रतिलब्धः ग.व्यू.143ख/227.

རྣམ་པར་རྒྱལ = རྣམ་པར་རྒྱལ་བ།

རྣམ་པར་རྒྱལ་བ = རྣམ་རྒྱལ • क्रि. विजयते – གང་གིས་ནི། ...།འགྲོ་བའི་རྒྱལ་སྲིད་ཆེ་ལ་རྩེ་དགའི་མཚོན་དང་ལྡན་པའི་ལྷ་ནི་རྣམ་པར་རྒྱལ། साम्राज्ये जगतां यया विजयते देवो विलासायुधः अ.क.97ख/64.117; • सं. 1. विजयः i. जयः – རྣམ་པར་རྒྱལ་བའི་དཔལ་ཐོབ་པ समधिगतविजयश्रीः जा.मा.46क/55; གཉིས་སུ་མེད་པར་མཉམ་པའི་རྣམ་པར་རྒྱལ་བ་ལས་ཀྱང अद्वयसमताविजयेऽपि ज्ञा.सि.54क/141; རྔའི་སྒྲ་ནི་བདུད་དང་ཕྱིར་རྒོལ་བ་ཐམས་ཅད་ལས་རྣམ་པར་རྒྱལ་བའི་སྔོན་དུ་འགྲོ་བ་ཡིན་པའི་ཕྱིར་རོ། दुन्दुभिस्वरा सर्वमारप्रत्यर्थिकविजयपूर्वंगमत्वात् सू.व्या.183क/78; विजितिः – ས་ལས་རྣམ་རྒྱལ་བརྟན་པ་སྒྲུབ་བྱེད་པའི། །བརྟུལ་ཞུགས་ལ་དགའ་མཆོག་རྟོགས་ཀུ་རུ་པས། क्षितिविजितिस्थितिविहितिव्रतरतयः परगतयः।...कुरवः॥ का.आ.337ख/3.85 ii. कलशविशेषः – དེ་ནས་རྣམ་རྒྱལ་བུམ་པ་ཉིད། །ཡལ་གའི་རྩེ་མོ་གོས་བཟང་ཅན། །ཕྲེང་བ་རིན་ཆེན་ལྔས་གང་བ། །སྣ་ལྔ་སྐྱེས་པས་ཡོངས་བཀང་བཞག། विजयकलशं दद्यात् पल्लवाग्रं सुवस्त्रिणम्। पञ्चरत्नोदरं दिव्यं शालिजैः परिपूरितम् ॥ हे.त. 25ख/84; བུམ་པ་བཅུའི་བྱ་བ་ལ་ཡང་ཕྱོགས་བརྒྱད་པོ་རྣམས་སུ་བུམ་པ་བརྒྱད་དོ། རྒྱལ་བ་དང་རྣམ་པར་རྒྱལ་བའི་བུམ་པ་ནི་ཤར་དང་ནུབ་ཀྱི་བུམ་པའི་ཕྱི་རོལ་དུ दशकलशकार्येषु पुनरष्टसु दिक्षु अष्टघटाः, जयो विजयः पूर्वापरकलशबाह्ये वि.प्र.141क/3.78; རྡུལ་མི་འཛག་པས་རྣམ་པར་རྒྱལ་བའི་བུམ་པ विजयघटो रजअस्रावेण वि.प्र.59ख/4.103 iii. शङ्खविशेषः – བུམ་པ་ལྔའི་བྱ་བ་ལ་དཀྱིལ་འཁོར་གྱི་ཕྱི་རོལ་དུ་ཤར་གྱི་ས་ལ་རྒྱལ་བའི་བུམ་པ་སྟེ། དེའི་སྟེང་དུ་དྲུག་པ་རྣམ་པར་རྒྱལ་བ་དུང་ངོ་། पूर्वभूम्यां मण्डलबाह्ये जयकलशं पञ्चकलशकार्येषु। तदुपरि षष्ठो विजयशङ्खः वि.प्र.140ख/3.78 2. वैजयन्ती, पताका मि.को.49ख; द्र. རྣམ་པར་རྒྱལ་བའི་བ་དན། • ना. 1. विजयः i. बुद्धः – ལྟེ་བར་ཤཱཀྱའི་དབང་པོ་ཡི། །བདག་པོ་ཐུབ་པ་བྲི་བར་བྱ། ...།གཡོན་དུ་རྣམ་པར་རྒྱལ་བ་བྲི། नाभौ शाक्याधिपेन्द्रमुनिं संलिखेत्...वामतो विजयं लिखेत्। स.दु.112ख/183 ii. नृपः – བཅུ་གསུམ་དེ་དག་རིམ་པ་ཡིས། །རིགས་ལྡན་རིགས་ལ་འབྱུང་བར་འགྱུར། །གྲགས་པ་རིགས་ལྡན་...།དེ་བཞིན་བཞི་པ་རྣམ་རྒྱལ་ལོ། कल्किगोत्रे भविष्यन्ति त्रयोदशान्ये क्रमेण ते। यशः कल्की...चतुर्थो विजयस्तथा वि.प्र.127ख/1, पृ.25 iii. यक्षः – རྣམ་པར་རྒྱལ་བ་ཞེས་བྱ་བའི། །གནོད་སྦྱིན विजयाभिधेन यक्षेण अ.क.33क/53.52 iv. नागः – སྐུའི་དཀྱིལ་འཁོར་གྱི་ཕྱི་རོལ་དུ་རྟ་བབས་བཞིའི་ཀ་བ་བརྒྱད་ཀྱི་འོག་ཏུ་ཀླུ་བརྒྱད་དང་འོག་དང་སྟེང་དུ་རྒྱལ་བ་དང་རྣམ་པར་རྒྱལ་བ་དག་གོ།...ཡེ་ཤེས་ལ་རྣམ་པར་རྒྱལ་བའོ། बाह्ये कायमण्डले चतुस्तोरणेऽष्टस्तम्भतले अष्टौ नागाः, जयविजयावध ऊर्ध्वे...ज्ञाने विजयः वि.प्र. 43ख/4.38 2. विजितावी, राजकुमारः – རྒྱལ་པོ་རྒྱལ་བའི་འོད་དེ་ལ་བུ་གཟུགས་བཟང་བ...རྣམ་པར་རྒྱལ་བ་ཞེས་བྱ་བ་ཞིག་ཡོད་པ राज्ञः खलु पुनः जयप्रभस्य

विजितावी नाम पुत्रोऽभूदभिरूपः ग.व्यू.191क/273; གཞོན་ནུ་རྣམ་པར་རྒྱལ་བའི་མཆིད་ཕྲབས་སུ་བགྱིས་པས། རྒྱལ་པོའི་ཆབ་སྲིད་ཀྱང་སྟོར་བར་འགྱུར विजिताविनः कुमारस्य च्छन्देनायं राजकोशो विलुप्यते ग.व्यू. 192ख/274 **3.** विजयन्तः, नृपः – གྲོང་ཁྱེར་མཆོད་ངོས་ཞེས་བྱ་བ། །མཐོ་རིས་དག་དང་མཚུངས་པར་ནི། །མི་བདག་དཔལ་ལྡན་བརྒྱ་བྱིན་བཞིན། །རྣམ་པར་རྒྱལ་བ་ཞེས་པ་བྱུང་།། अजितोदय[? पूजितोचित लि.पा.]संज्ञेऽभून्नगरे स्वर्गसन्निभे। शतक्रतुरिव श्रीमान् विजयन्ताभिधो नृपः ॥ अ.क.188क/80.88 **4.** वैजयन्तः, इन्द्रप्रासादः – ཁང་བཟངས་མཐོན་པོ་རྣམ་པར་རྒྱལ་བའི་ཁང་པ་མཚུངས प्रासादउच्छ्रेपितं वैजयन्तसमम् ल.वि.106ख/153; གསེར་དང་བྱུ་རུ་བཻ་ཌཱུ་རྱའི། །ཀ་བའི་ཚོགས་ནི་གསལ་ཞིང་མཛེས། །ཁང་བཟང་རྣམ་པར་རྒྱལ་ཞེས་པ། །གྲགས་པས་གང་ལ་རྣམ་པར་མཛེས།། हेमविद्रुमवैडूर्यस्तम्भसंभारभास्वरः। प्रासादो वैजयन्ताख्यः प्रख्यातो यत्र राजते ॥ अ.क.43क/4.77; • *वि.* विजेता – འགྲོ་ལས་རྣམ་པར་རྒྱལ་བ...བདེ་བར་གཤེགས་པའི་གསུང་།། जगतो विजेतुः...सुगतस्य वाचः न्या.टी.36ख/1; विजयी – དེ་ནི་ང་རྒྱལ་ཅན་དང་རྣམ་རྒྱལ་དཔའ་དེ་ཉིད།། ते मानिनो विजयिनश्च त एव शूराः बो.अ.22ख/7.59; •*भू.का.कृ.* विजितः – དབང་པོ་རྣམ་རྒྱལ་རྣམས་ཀྱི་མིག་ནི་རིག་པ་ཉིད།། विद्यैव चक्षुर्विजितेन्द्रियाणाम् अ.क.68क/6.177; निर्जितः – ཕྱག་བཞི་ནི་བདུད་བཞི་ལས་རྣམ་པར་རྒྱལ་བ་རྣམ་པར་དག་པས་སྟེ चतुर्भुजश्चतुर्मारनिर्जितविशुद्धितः हे.त.5ख/14; विजितवान् – མཐའ་བཞིར་རྣམ་པར་རྒྱལ་བ चातुरन्तं विजितवान् म.व्यु.6542 (93ख).

རྣམ་པར་རྒྱལ་བ་མངའ་བ = སངས་རྒྱས विजयी, बुद्धः म.व्यु.30(2क).

རྣམ་པར་རྒྱལ་བ་ཅན *ना.* **1.** विजयाख्यम्, कर्णधनुः मि.को.47क **2.** विजितावी लो.को.1401; द्र. རྣམ་པར་རྒྱལ་བ།

རྣམ་པར་རྒྱལ་བ་ཆེན་པོ • *सं.* महाविजयः **1.** कलशविशेषः – ཤར་གྱི་རྒྱལ་བའི་བུམ་པའི་སྟེང་དུ་བཅུ་གཅིག་པ་རྣམ་པར་རྒྱལ་བ་ཆེན་པོའི་བུམ་པ पूर्वजयकलशोपरि महाविजयकलश एकादशमः वि.प्र.141क/3.78 **2.** शङ्खविशेषः – དེ་ལྟར་བུམ་པ་བརྒྱ་སྟོང་ལ་ཡང་རྣམ་པར་རྒྱལ་བ་ཆེན་པོའི་བུམ་པ་ནི་དུང་སྟེ एवं शतसहस्रकलशेऽपि महाविजय[कलशः]शङ्खः वि.प्र.141क/3.78; • *ना.* महाविजयः, भिक्षुः – བཅོམ་ལྡན་འདས་རྡོ་རྗེ་པད་མོའི་བླ་དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་དགྲ་བཅོམ་པ་ཡང་དག་པར་རྫོགས་པའི་སངས་རྒྱས་ཀྱི་དགེ་སློང་རྣམ་པར་རྒྱལ་བ་ཆེན་པོ་ཞེས་བྱ་བ भगवतो वज्रपद्मोत्तरस्य तथागतस्यार्हतः सम्यक्संबुद्धस्य महाविजयो नाम भिक्षुः द.भू.268ख/60.

རྣམ་པར་རྒྱལ་བའི་ཁང་པ वैजयन्तः प्रासादः म.व्यु.5498(81ख); द्र. རྣམ་པར་རྒྱལ་བ།

རྣམ་པར་རྒྱལ་བའི་ཁང་བཟང वैजयन्तः प्रासादः मि.को.139; द्र. རྣམ་པར་རྒྱལ་བ།

རྣམ་པར་རྒྱལ་བའི་སྒྲོལ་མ *ना.* विजयतारा, देवी लो.को.1401.

རྣམ་པར་རྒྱལ་བའི་བ་དན वैजयन्ती – མཆོད་རྟེན...ལྟའི་བ་དན་དང་རྣམ་པར་རྒྱལ་བའི་བ་དན་སྟོང་གིས་བརྒྱན་པ स्तूपः...पताकावैजयन्तीसहस्राभिः प्रलम्बितः स.पु.88ख/149; वैजयन्ती पताका म.व्यु.6070 (87क); वैजयन्तिकः – पताकी वैजयन्तिकः अ.को.2.8.71;

वैजयन्त्या ध्वजेन चरतीति वैजयन्तिकः अ.वि.2.8.71.

རྣམ་པར་རྒྱལ་བའི་བུམ་པ = རྣམ་རྒྱལ་བུམ་པ།

རྣམ་པར་རྒྱལ་བའི་གཞུ *ना.* विजयधन्वा, नृपः ब.अ.16.

རྣམ་པར་རྒྱལ་བར་གྱུར་ཅིག *क्रि.* जयेत – ཀྱེ་འཁོར་ལོ་རིན་པོ་ཆེ་སྔོན་གྱི་འཁོར་ལོས་སྒྱུར་བ་འཕགས་པའི་ལམ་སྲོལ་གང་ཡིན་པར་རྣམ་པར་རྒྱལ་བར་གྱུར་ཅིག जयस्व भो चक्ररत्न येनार्यः पुराणश्चक्रवर्तिपथ इति वि.व.137ख/1.26; विजयतु लो.को.1401.

རྣམ་པར་རྒྱལ་བར་གནོན་པ *ना.* विजयविक्रामी, बोधिसत्त्वः मि.को.105ख; द्र. རྣམ་པར་རྒྱལ་བས་གནོན་པ།

རྣམ་པར་རྒྱལ་བར་བྱས་པ *भू.का.कृ.* विजितः – རྣམ་པར་རྒྱལ་བར་བྱས་པ་ལས་རྣམ་པར་རྒྱལ་བ विजितविजयः म.व्यु.3620 (61क).

རྣམ་པར་རྒྱལ་བར་བྱེད་པ = རྣམ་པར་རྒྱལ་བྱེད།

རྣམ་པར་རྒྱལ་བས་གནོན་པ *ना.* विजयविक्रामी, बोधिसत्त्वः म.व्यु.723 (16ख); द्र. རྣམ་པར་རྒྱལ་བར་གནོན་པ།

རྣམ་པར་རྒྱལ་བྱེད • *सं.* = བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ विजेता, बोधिसत्त्वः म.व्यु.631 (15ख); • *ना.* वैजयन्तः, इन्द्रस्य प्रासादः–འོད་མའི་ཚལ་དེ་ཁང་བཟངས་རྣམ་པར་རྒྱལ་བྱེད་འདུ་བར་བསྟན་ཏེ། ལྷའི་གདན་ཆ་རྣམས་དང་ तद्वेणुवनं वैजयन्तं प्रासादं प्रदर्शितवान्, दिव्यानि चासनानि अ.श.47ख/41; स्यात् प्रासादो वैजयन्तो जयन्तः अ.को.1.1.47; विजयन्तस्य इन्द्रस्य अयं वैजयन्तः अ.वि.1.1.47.

རྣམ་པར་རྒྱལ་མ = རྣམ་རྒྱལ་མ *ना.* **1.** विजया, पत्रदेवी– ཁྲབ་འཇུག་མའི་འདབ་མ་དང་པོ་ལ་སོགས་པ་ལ་གཡུང་མོ་དང་…རྣམ་པར་རྒྱལ་མ་དང་…བརྒྱད་པ་དཔལ་ལྡན་འཁོར་ལོ་ཅན་མ་སྟེ वैष्णव्याः प्रथमपत्रादौ श्रीः…विजया…श्रीचक्री चाष्टमा वि.प्र.41क/4.30 **2.** विजयन्ती, देवकुमारिका – ཤར་ཕྱོགས་ཕྱོགས་ཀྱི་ཕྱོགས་ཆ་ན། །ལྷ་མོ་གཞོན་ནུ་བརྒྱད་ཡོད་དེ། །རྒྱལ་དང་རྣམ་པར་རྒྱལ་མ་དང་། །དོན་གྲུབ་མ་དང…དགའ་འཕེལ་མ།། पूर्वस्मिन् वै दिशो भागे अष्टौ देवकुमारिकाः। जयन्ती विजयन्ती च सिद्धार्था…नन्दवर्धनी। ल.वि.185ख/282 **3.** अपराजिता, देवी – རྣམ་པར་རྒྱལ་མའི་སྒྲུབ་པའི་ཐབས अपराजितासाधनम् क.त.3384 **4.** = ཨུ་མཱ जयन्ती, गौरी छो.को.480/रो.को.2.516.

རྣམ་པར་རྒྱས = རྣམ་པར་རྒྱས་པ།

རྣམ་པར་རྒྱས་འགྱུར = རྣམ་པར་རྒྱས་པར་འགྱུར་བ།

རྣམ་པར་རྒྱས་པ • *क्रि.* विकसति – ཀ་དམ་པ་ནི་རྣམ་པར་རྒྱས། །ཀུ་ཊ་ཛོང་ག་མ་རབ་གསལ།། विकसन्ति कदम्बानि स्फुटन्ति कुटजोद्गमाः। का.आ.326क/2.116; विजृम्भते – ཆུ་མ་དང་སྦྱོར་འཕེལ་བ་ཡི། །དམར་བ་རབ་ཏུ་སྟོན་བྱེད་ཅིང་། །ཚ་ཟེར་ཅན་ནི་ནུབ་གྱུར་ཏེ། །ལུས་སྐྱེས་དག་ནི་རྣམ་པར་རྒྱས།། रागमादर्शयन्नेष वारुणीयोगवर्धितः। पराभवति घर्मांशुरङ्गजस्तु विजृम्भते॥ का.आ.332ख/2.315; बिभर्ति – གང་ཞིག་ཚུལ་ཁྲིམས་བདག་དོན་བྱེད་པས་རྣམ་རྒྱས་ཤིང་།། यः शीलमात्मार्थकरं बिभर्ति र.व्या.83क/17; • *सं.* विकासः – འདོད་པའི་ཀུ་མུད་ཚལ་གྱིས་ཟླ་བའི་རི་མོ་སུ་ཞིག་དེ། །མིག་གི་པདྨོ་རྣམ་པར་རྒྱས་པའི་རྒྱུར་ནི་བདག་གིས་མཐོང་།། सा कापि कामकुमुदाकरचन्द्रलेखा दृष्टा मया नयनपद्मविकासहेतुः। अ.क.299ख/108.

57; བྱ་དང་བུང་བ་ཚོགས་གྱུར་པ། །པད་མོ་ཅན་གྱི་ཕུན་ཚོགས་རྒྱ། །རྣམ་རྒྱས་རབ་ཏུ་འགྲོགས་པ་ཡིས། །གཉིད་བཞིན་ཡང་དག་བྱུང་བར་གྱུར॥ क्षीण[? लीन]भृङ्गविहङ्गानां नलिनीनां प्रसङ्गिनी । विकाससम्पदा मुद्रा निद्रेव समजायत ॥ अ.क.166ख/19.35; རྣམ་པར་རྒྱས་པ་ཡི། །དཔལ་འདི་དགེ་བའི་ཆུ་སྐྱེས་དག་ལ་སྟེར॥ अर्पितेयं विकासलक्ष्मीः कुशलाम्बुजस्य अ.क.78क /7.75; དེ་ཡི ...ཕུན་ཚོགས་ཀུ་མུད་ལྡན་པ་ནི། །རྟག་ཏུ་རྣམ་པར་རྒྱས་བཞིན་གྱུར॥ तस्य सम्पत्कुमुदिनीविकासेन सदोदितः। अ.क.48क/5.15; •*भू.का.कृ.* विवृद्धः – དེ་ཡིས་ཉེ་བར་སྦྱར་བ་ཡི། །བཟའ་དང་བཏུང་བ་དུག་ལྡན་གྱིས། །མ་བྱའི་རྒྱལ་མོ་རྣམ་རྒྱས་ཤིང་། །མདངས་བཟང་ཡིད་འོང་མཛེས་པར་གྱུར॥ तयोपाचर्यमाणस्य सविषैः पानभोजनैः। विवृद्धा बर्हराजस्य रुरुचे रुचिरा रुचिः ॥ अ.क.95क/8.70; विबुद्धः – སངས་རྒྱས་ཞེས་བྱ་བ་ནི་བློ་རྒྱས་པའི་ཕྱིར་སངས་རྒྱས་ཏེ། དཔེར་ན་པདྨ་ཁ་བྱེ་བ་ཞེས་བྱ་བ་ལྟར་རྣམ་པར་རྒྱས་ཞེས་བྱ་བའི་ཐ་ཚིག་གོ॥ बुद्धेर्विकसनाद् बुद्धः, विबुद्ध इत्यर्थः। विबुद्धं पद्ममिति यथा अभि.स्फु.3क/5; རྣམ་རྒྱས་པད་མ་དཀར་པོའི་སྤྱན॥ विबुद्धपुण्डरीकाक्षः ना.स.1क/2; བཞིན་གྱི་པད་མོ་རྣམ་པར་རྒྱས विबुद्धमुखारविन्दः अ.क.195ख/82.40; विकसितः – རྣམ་པར་རྒྱས་པའི་ཞལ विकसितवदनम् वि.प्र.35ख/4.10; བཞིན་རས་མེ་ཏོག་རྣམ་རྒྱས་ཆུ་སྐྱེས་ལྡན་པ་དེ॥ विकसितकमलाननाब्जिनी सा अ.क.201क/22.83; विततः – ལེགས་བྱས་རྣམ་པར་རྒྱས་པའི་དཔང་པོ་བསོད་ནམས་སྟེར་ལ་མཁས॥ विततसुकृतसाक्षी पुण्यनिक्षेपदक्षः अ.क.232क/25.84; विस्तीर्णः – འཁོར་བ་བཞིན་དུ་རྣམ་རྒྱས་པའི། ...གྲོང་ཁྱེར་ལ॥ संसारमिव विस्तीर्णं पुरम् अ.क.221ख/24.156; विस्तारितः – རྣམ་རྒྱས་བསྟོད་པའི་ཚིག་གིས་སྐབས་གསུམ་པ་ཡིས་མཆོད་གྱུར་པ॥ विस्तारितस्तुतिपदत्रिदशार्च्यमानः अ.क.44ख/56.25; आकुलितः – ལྷ་ཡི་ཕོ་ཉ་མངོན་ཕྱོགས་ཏེ། །རབ་དགའ་རྣམ་པར་རྒྱས་པས་སྨྲས अभ्येत्य देवदूतस्तान् प्रहर्षाकुलितोऽवदत् ॥ अ.क.41क/4.55; •*वि.* विकचः – རབ་དགའ་རྣམ་རྒྱས་སྤྲོས་པས་གསལ་བའི་སྤྱན་གྱི་ཕྲེང་འཛིན་ཅིང་॥ प्रमदविकचव्यक्तोत्साहा वहन्नयनावलीः अ.क.296ख/38.21; उन्निद्रः– ཁྱོད་ཀྱི་གདོང་བཞིན་པད་མ་ནི། །རྣམ་པར་རྒྱས་པར་གྱུར་ཞེས་པ॥ त्वदाननमिवोन्निद्रमरविन्दमभूदिति। का.आ.322ख/2.17; विकाशी – མེ་ཏོག་གི། །ཚལ་ནི་རྣམ་པར་རྒྱས་པ་འདི॥ एतद्विकाशीकुसुमं वनम् अ.क.182क/80.17.

རྣམ་པར་རྒྱས་པའི་དཔལ विकासलक्ष्मीः – རྣམ་པར་རྒྱས་པ་ཡི། །དཔལ་འདི་དགེ་བའི་ཆུ་སྐྱེས་དག་ལ་སྟེར॥ अर्पितेयं विकासलक्ष्मीः कुशलाम्बुजस्य अ.क.78क /7.75.

རྣམ་པར་རྒྱས་པར་འགྱུར་བ •*वि.* जृम्भणम् – ཁྱོད་ཀྱི་ནུ་མ་འདི་ལྟ་བུར། །རྣམ་པར་རྒྱས་པར་འགྱུར་བ་འདི། །ངེས་པར་མ་བརྟགས་བྱེད་པོ་ཡིས། །ནམ་མཁའ་དག་ནི་ཁུང་དུར་སྤྲུལ॥ अल्पन्निर्मितमाकाशमनालोच्यैव वेधसा। इदमेवंविधम्भावि भवत्याः स्तनजृम्भणम् ॥ का.आ.321ख/1.91; • *व.का.कृ.* विवर्धमानः लो.को.1401.

རྣམ་པར་རྒྱས་པར་བྱ *क्रि.* वितन्यते – འདི་ཡི་སྐྱེད་པ་འཇམ་པའི་དཔལ་གྱིས་གསུངས་པ་རྒྱས་འགྲེལ་གྱིས་ནི་རྣམ་པར་རྒྱས་པར་བྱ उत्पादोऽस्य वितन्यते निगदितो मञ्जुश्रिया टीकया वि.प्र.48क/4.50.

རྣམ་པར་རྒྱས་པར་བྱེད་པ = རྣམ་པར་རྒྱས་བྱེད་པ།

རྣམ་པར་རྒྱས་བྱེད = རྣམ་པར་རྒྱས་བྱེད་པ།

རྣམ་པར་རྒྱས་བྱེད་པ *वि.* विकाशी – འགྲོ་བའི་མིག། །འདབ་བརྒྱ་རྣམ་པར་རྒྱས་བྱེད་པ། ...ཉི་མ་དག། །འཆར་བས उदितेन जगन्नेत्रशतपत्रविकाशिना।...विवस्वता अ.क.23क/3.45; འཇིག་རྟེན་གསུམ་གྱི་མིག་དག་ནི། །འདབ་བརྒྱ་རྣམ་པར་རྒྱས་བྱེད་ཁྱོད།། त्वयि लोकत्रये नेत्रशतपत्रविकाशिनि। अ.क.81क/8.21.

རྣམ་པར་རྒྱུ *क्रि.* 1. विचरति – མཇུག་རིངས་ཉི་མ་དག་དང་ལྷན་ཅིག་རྣམ་པར་རྒྱུ་སྟེ་མྱུར་བར་རྒྱུ་བ་ལ་མདུན་ནས केतुः सूर्येण सार्धं विचरति पुरतः शीघ्रचारे वि.प्र. 200ख/1.78; ཇི་ལྟར་བྲན་ནི་རྟག་ཏུ་འཇིགས་མེད་སྐྲག་པའི་ལུས་ཀྱིས་རྣམ་པར་རྒྱུ།། यथा भृत्यो नित्यमुपचकितमूर्तिर्विचरति सू.व्या.163क/53; विचरते – བདེ་གཤེགས་སེམས་ཅན་བརྒྱ་དག་ཡོངས་འཕྲེལ་[? འགྲོལ་] ཅིང་། །ཟླ་མེད་དམན་པ་[? སྨན་]རྐ་ལྟ་བུ་རྣམ་པར་རྒྱུ།། वैद्योपमो विचरसेऽप्रतिमो परिमोचयन् सुगत सत्त्वशतान्॥ शि.स.172क/170 2. विचचार – དེ་ཡི་རྗེས་འབྲང་ཉིད་གྱུར་ནས། །བརྟུལ་ཞུགས་ཀྱིས་བསྒྲིམས་རྣམ་པར་རྒྱུ།། तस्यैवानुचरो भूत्वा विचचार यतव्रतः॥ अ.क.328ख/41.48; चचार – མེ་ཏོག་རབ་རྒྱས་འཁྲི་ཤིང་ཚལ་གྱི་གཞིར། །རིག་འཛིན་རྒྱལ་པོའི་སྲས་ནི་རྣམ་པར་རྒྱུ།། उत्फुल्लवल्लीषु वनस्थलीषु चचार विद्याधरराजसूनुः॥ अ.क.295ख/108.22 3. पर्यटेत् – དེ་ལ་འཇིགས་པར་མི་བྱ་སྟེ། །སེང་གེའི་གཟུགས་ཀྱིས་རྣམ་པར་རྒྱུ།། भयं तत्र न कुर्वीत सिंहरूपेण पर्यटेत्॥ हे.त.7ख/20; •= རྣམ་པར་རྒྱུ་བ།

རྣམ་པར་རྒྱུ་བ • *सं.* विचारः – ཡིད་ཀྱི་ལུས་གཟུགས་བརྙན་ལྟ་བུས་རྣམ་པར་རྒྱུ་སྟེ། འགྲོ་བས་དགེ་བའི་བཤེས་གཉེན་གྱི་གན་དུ་སོང་ངོ་ प्रतिभासोपमेन मनःशरीरविचारगमनेन कल्याणमित्रसकाशमुपसंक्रमितव्यम् ग.व्यू.260क/342; विचरणम् म.व्यु.6870 (98क); • *वि.* विचारिणी– དོ་ཤལ་དང་སེ་མོ་དོས་ལུས་རྣམ་པར་བརྒྱན་ནས་ནི་ལྷའི་བུ་མོ་དགའ་བའི་ཚལ་ན་རྣམ་པར་རྒྱུ་བ་བཞིན་དུ हारार्धहारविभूषितगात्रीमप्सरसमिव नन्दनवनविचारिणीम् अ.श.9क/8; अनुविचरणः – བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ...འཇིག་རྟེན་གྱི་ཁམས་ཐམས་ཅད་དུ་རྣམ་པར་རྒྱུ་བ सर्वलोकधात्वनुविचरणानां...बोधिसत्त्वानाम् ग.व्यू.17ख/115; • *भू.का.कृ.* विचरितः – རྒྱ་མཚོ་ཆེན་པོ་ཉའི་རིགས་རྣམ་པ་སྣ་ཚོགས་རྣམ་པར་རྒྱུ་བ विविधमीनकुलविचरितम्...समुद्रम् जा.मा.80ख/92; •*क्रि.* = རྣམ་པར་རྒྱུ།

རྣམ་པར་རྒྱུ་བར་གྱུར་ཅིག *क्रि.* विचरतु लो.को.1401.

རྣམ་པར་རྒྱུག *क्रि.* विधावति – སྟོང་པ་ཉིད་དམ་སྟོང་ཉིད་དོན། །བྱིས་པས་མ་མཐོང་རྣམ་པར་རྒྱུག།། शून्यताशून्यतार्थं वा बालोऽपश्यन् विधावति॥ ल.अ.90क/37.

རྣམ་པར་རྒྱུག་པར་བྱེད *क्रि.* विधावति – མ་མ་གཏོགས་པར་ཕྱོགས་དང་ནི། །ཕྱོགས་སུ་རྣམ་པར་རྒྱུག་པར་བྱེད།། दिशो दिशो विधावन्ति स्थापयित्वा च मे मात्रम्। वि.व.293क/1.116.

རྣམ་པར་སྒེག་མ *वि.स्त्री.* विलासिनी – རྡོ་རྗེ་ཕག་མོའི་སྒྲུབ་ཐབས་རྡོ་རྗེ་རྣམ་པར་སྒེག་མ་ཞེས་བྱ་བ वज्रविलासिनीनामवज्रवराहीसाधनम् क.त.1602.

རྣམ་པར་སྒོམ = རྣམ་པར་སྒོམ་པ།

རྣམ་པར་སྒོམ་པ = རྣམ་སྒོམ •*क्रि.* विभावयति – རྡོ་རྗེ་རྣམ་སྒོམ་གཅིག་ཡིད་ཀྱིས།། वज्रं विभावयत्येकमनाः ख.टी.167क/250; विभाव्यते – གཞན་དུ་ན་ཡེ་ཤེས་ཕྱག་རྒྱ་སུ་ཆུད་པ་བདེ་བའི་དོན་དུ་མཚན་མ་མེད་པ་ལ་སྤྱོད

པའི་ཤེས་རབ་ཀྱིས་རྣམ་པར་སྒོམ་མོ། अन्यत्रा[? अन्यत्र]ज्ञानाधिगमतः सुखार्थं विभाव्यते प्रज्ञयाऽनिमित्तचारिणः ल.अ.63क/8; ཇི་ལྟར་འཕགས་པས་རྣམ་སྒོམ་ལྟར། །དངོས་པོའི་དངོས་ཉིད་མེད་མོད་ཀྱི། भावानां भावता नास्ति यथा त्वार्यैर्विभाव्यते । ल.अ.178ख/142; ཇི་ལྟར་སྣང་བ་རྣམ་པར་སྒོམ། །ཇི་ལྟར་ས་ལ་འཇུག་པར་འགྱུར། कथं दृश्यं विभावो [? विभाव्यते] कथं भूमिषु वर्तते ॥ ल.अ.64ख/11; •सं. विभावनम् – བྱང་ཆུབ་ཀྱི་ཕྱོགས་ཀྱི་ཆོས་ཐམས་ཅད་གོང་ནས་གོང་དུ་རྣམ་པར་སྒོམ་པས་བསམ་པ་རྣམ་པར་དག་པ་མཉམ་པ་ཉིད་དང सर्वबोधिपक्ष्यधर्मोत्तरोत्तरविभावनविशुद्धयाशयसमतया च द.भू.212क/27; མིང་ལ་མིང་ནི་རྣམ་སྒོམ་པར། །ཤེས་པར་བྱ་བ་དེ་ཙམ་སྟེ། <?>एता बुद्धिर्भवेद्बोध्यं नाम नाम्नि विभावनम् । ल.अ.182क/149; विभावना – གང་ན་སུས་ཀྱང་མ་མཐོང་བ། །དེ་ལ་ཇི་ལྟར་རྣམ་པར་སྒོམ། यो न दृष्टः क्वचित्केनचित्कथं तस्य विभावना ॥ ल.अ.131क/77; གང་ནའང་སྒོམ་པ་པོ་མེད་ཅིང་། །རྣམ་པར་སྒོམ་པའང་ཅི་ཡང་མེད། न यत्र भावकः कश्चिन्नापि काचिद् विभावना । प्र.सि.33ख/79.

རྣམ་པར་སྒོམ་པ་པོ *वि.* विभावकः – སྐད་ཅིག་གཅིག་ལ་མངོན་པར་རྫོགས་པར་སངས་རྒྱས་པ་འདི་ནི་དབུགས་ཀྱི་གྲངས་ཀྱི་མཐའ་ཇི་སྲིད་པར་སྐད་ཅིག་ཐམས་ཅད་རྣམ་པར་སྒོམ་པ་པོ་ཡིན་ནོ། असौ एकक्षणसंबुद्धः सर्वक्षणविभावको भवति श्वाससंख्यान्तं यावत् वि.प्र.145क/1, पृ.44.

རྣམ་པར་སྒོམས *क्रि.* विभावयेत् – རྣལ་འབྱོར་ཤེས་པས... །ཆོས་ལྔ་དང་ནི་རང་སེམས་དང་། །བདག་མེད་པ་ལ་རྣམ་པར་སྒོམས། योगवित् । पञ्चधर्मं स्वचित्तं च नैरात्म्यं च विभावयेत् ॥ ल.अ.171ख/130.

རྣམ་པར་སྒྱུར་བ विपरिणामः – རྗེས་སུ་འགྲོ་བ་དང་ལྡོག་པ་མ་གྲུབ་ན་ཡང་ཞེས་ཚིག་རྣམ་པར་སྒྱུར་ལ་གཉིས་ཀྱི་ཚིག་སྦྱར་བར་བྱའོ། अन्वयव्यतिरेकयोरसिद्धयोरिति वचनविपरिणामेन सम्बन्धः त.प.161ख/777; विवर्तना म.व्यु.1171 (སྒྱུར་བ 25क); द्र. རྣམ་པར་བསྒྱུར་བ།

རྣམ་པར་སྒྱུར་བའི་མདོ <?> *ना.* अविपरीतकसूत्रम्, ग्रन्थः – བཅོམ་ལྡན་འདས་ཀྱིས་རྣམ་པར་སྒྱུར་བའི་མདོ་ལས...ཞེས་བཀའ་སྩལ་ལ उक्तं हि भगवता अविपरीतकसूत्रे...इति अभि.भा.71क/1148.

རྣམ་པར་སྒྲ་འབྱིན། *ना.* विनर्दितः, नागः म.व्यु.3340 (57ख).

རྣམ་པར་སྒྲུབ *क्रि.* विदधाति – ཉི་མས་ཐམས་ཅད་དྲི་མེད་རབ་ཏུ་གསལ་བ་རྣམ་པར་སྒྲུབ། अर्कः प्रकाशविशदं विदधाति विश्वम् अ.क.259ख/31.1; विठपति लो.को.1401; विठपेति लो.को.1401; विठपयति लो.को.1401.

རྣམ་པར་སྒྲུབས *क्रि.* विधीयताम् – བུ་དག...བརྟན་པའི་བློ་གྲོས་རྣམ་པར་བསྒྲུབས[? སྒྲུབས]། पुत्र स्थिरा बुद्धिर्विधीयताम् अ.क.59क/6.65.

རྣམ་པར་སྒྲོག་པ विनर्दितम् – དེ་དག་ཐམས་ཅད་དུའང་ཁོ་མོ་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའི་ཡུམ་དུ་འགྱུར་རོ། བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་བྱམས་པའི་ཡུམ་དུ་ཇི་ལྟར་འགྱུར་བ་དེ་བཞིན་དུ...སེང་གེ་རྣམ་པར་སྒྲོག་པ་དང तेष्वहं सर्वत्र बोधिसत्त्वजननी भविष्यामि । यथा च मैत्रेयस्य बोधिसत्त्वस्य, तथा... सिंहविनर्दितस्य ग.व्यू.268ख/347.

རྣམ་པར་བརྐྱལ་བ = རྣམ་བརྐྱལ་བ།

རྣམ་པར་བརྒྱན = རྣམ་པར་བརྒྱན་པ།

རྣམ་པར་བརྒྱན་པ •*सं.* व्यूहः – རིགས་ཀྱི་བུ་ཁོ་མོ་ནི་ཤེས་རབ་ཀྱི་ཕ་རོལ་ཏུ་ཕྱིན་པའི་སྒོའི་རྒྱུད་ཀུན་ནས་རྣམ་པར་བརྒྱན་པ་ཞེས་བྱ་བ་ཐོབ་པ་སྟེ अहं कुलपुत्र समन्तव्यूहस्य प्रज्ञापारमितामुखपरिवर्तस्य लाभिनी ग.व्यू.389[ख]/97; •*ना.* विभूषितः, बोधिसत्त्वः – དེ་དག་ཐམས་ཅད་དུའང་ཁོ་མོ་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའི་ཡུམ་དུ་འགྱུར་རོ།། བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་བྱམས་པའི་ཡུམ་དུ་ཇི་ལྟར་འགྱུར་བ་དེ་བཞིན་དུ... རྣམ་པར་བརྒྱན་པ་དང तेष्वहं सर्वत्र बोधिसत्त्वजननी भविष्यामि। यथा च मैत्रेयस्य बोधिसत्त्वस्य, तथा...विभूषितस्य ग.व्यू.268[क]/347; •*भू.का.कृ.* विभूषितः – ཆུ་བོ་སི་ཏའི་ལྷོ་ཕྱོགས་མ་ཁའི་ཡུལ་གྲོང་བྱེ་བས་རྣམ་པར་བརྒྱན་པར་ཀླ་ཀློ་སྟག་གཟིག་རྣམས་ཀྱི་ལྷ་མ་ཡིན་གྱི་ཆོས་རབ་ཏུ་འཇུག་པར་འགྱུར་རོ།། शीतादक्षिणे मखविषये कोटिग्रामविभूषिते म्लेच्छानां तायि[तापि]नाम् असुरधर्मप्रवृत्तिर्भविष्यति वि.प्र.174[क]/1.26; རིན་ཆེན་རྣམ་བརྒྱན་རི་བོ་ལ། །མ་འོངས་རྣམས་ཀྱང་གསུང་བར་འགྱུར།། अनागताश्च वक्ष्यन्ति गिरौ रत्नविभूषिते ॥ ल.अ.57[ख]/3; ཕྱག་རྒྱ་ལྔས་ནི་རྣམ་བརྒྱན་པའོ།། पञ्चमुद्राविभूषिताः स.उ.281[ख]/13.32; भूषितः – རྟ་བབས་བཞི་ཡིས་རྣམ་པར་བརྒྱན།། चतुस्तोरणभूषितम् स.दु.108[क]/160; ཨེ་ཡི་ཆ་བྱད་བཟང་བ་ལ། །དབུས་སུ་ཝཾ་གིས་རྣམ་པར་བརྒྱན།། एकाराकृति यद्दिव्यं मध्ये वंकारभूषितम्। गु.सि.6[ख]/14; मण्डितः – མཚན་རྣམས་ཀུན་གྱིས་རྣམ་པར་བརྒྱན།། सर्वलक्षणमण्डितम् गु.सि.13[क]/29; शोभितः – གྲུ་བཞི་པ་ལ་སྒོ་བཞི་པ། །རྟ་བབས་བཞི་ཡིས་རྣམ་པར་བརྒྱན།། चतुरस्रं चतुर्द्वारं चतुस्तोरणशोभितम् ख.टी.162[ख]/244; अन्वितः – ཅང་ཏེའུས་རྣམ་པར་བརྒྱན डमरुकान्वितम् गु.सि.24[क]/51; •*वि.* विचित्रः – བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་བྱམས་པའི་ཡུམ་དུ་ཇི་ལྟར་འགྱུར་བ་དེ་བཞིན་དུ...རྡོ་རྗེ་རིན་པོ་ཆེས་རྣམ་པར་བརྒྱན་པ་དང जननी...यथा च मैत्रेयस्य बोधिसत्त्वस्य, तथा...वज्रमणिविचित्रस्य ग.व्यू.268[क]/347.

རྣམ་པར་བསྒོམ = རྣམ་པར་བསྒོམ་པ།

རྣམ་པར་བསྒོམ་པ •*क्रि.* विभावयेत् – རྟག་པར་འབྱུང་བ་འདྲ་བའི་སེམས། །མ་སྐྱེས་པར་ནི་རྣམ་པར་བསྒོམ།། भूताकारं सदा चित्तमनुत्पन्नं विभावयेत्॥ ल.अ.184[ख]/153; कुर्वीत भावनाम् – ནམ་མཁའི་ཁམས་སུ་བྷ་ག་བསམ། །དབུས་སུ་རྣམ་པར་བསྒོམ་པ་ནི། །འཁོར་ལོ་སྔོན་དུ་ཅི་རིགས་པར། །ལྷ་རྣམས་ཇི་ལྟར་འབྱུང་བ་ཉིད།། खधातौ भगं ध्यात्वा मध्ये कुर्वीत भावनाम्। चक्रं पूर्वं यथान्यायं देवतानां यथोदयम्॥ हे.त.8[ख]/24; •*सं.* 1. विभावनम् – ཡེ་ཤེས་ཕྱག་རྒྱ་རྣམ་པར་བསྒོམ།... ཕྱག་རྒྱ་ཆེན་པོར་རྣམ་པར་བསྒོམ།། ज्ञानमुद्राविभावनम्...महामुद्राविभावनम्॥ गु.सि.12[ख]/28; विभावना – གང་ནི་སུས་གང་མ་མཐོང་བ། །དེ་ལ་ཇི་ལྟར་རྣམ་པར་བསྒོམ།། यो न दृष्टः क्वचित्केन कुतस्तस्य विभावना॥ ल.अ.161[ख]/111; བསྒོམ་དང་རྣམ་བསྒོམ་བསམ་གཏན་པ། །ལམ་དང་བདེན་དང་མཐོང་བ་སྟེ། །དེ་རྣམས་གསུམ་ནི་རྣམ་བསྒོམས་ན། །ལྟ་བ་ངན་ལས་གྲོལ་བར་འགྱུར།། भाव्यं विभावनाध्याता मार्गः सत्यं च दर्शनम्। एतत्त्रयं विभावेन्तो मुच्यन्ते हि कुदर्शनैः॥ ल.अ.190[क]/162; བྱེད་པོ་དཔྱོད་[? སྤྱོད་]པ་ལས་གྲོལ་བ། །དོན་དམ་རྣམ་པར་བསྒོམ་པ་ཡིན།། कर्तृभोक्तृविनिर्मुक्ता परमार्थविभावना॥ प्र.सि.33[ख]/79 2. = རྣམ་བསྒོམ་ཉིད विभावनता – ཡེ་ཤེས་ཡོངས་སུ་སྨིན་པར་བྱེད

པའི་ཆོས་བཅུས ...འདི་ལྟ་སྟེ། ཕྱིར་མི་ལྡོག་པའི་བསམ་པ་དང་...འདུ་བྱེད་སྐྱེ་བ་དང་འཇིག་པ་རྣམ་པར་བསྒོམ་པ་དང་ दशभिर्ज्ञानपरिपाचकैर्धर्मैः... यदुत अप्रत्युदावर्त्याशयतया... संस्कारोदयव्ययविभावनतया च द.भू.204ख/24; •वि. विभावकः – དུས་གསུམ་ཕུང་པོ་ལྔ་ཡི་དོན། །སྐད་ཅིག་ཐམས་ཅད་རྣམ་བསྒོམ་པ།། पञ्चस्कन्धार्थस्त्रिकालः सर्वक्षणविभावकः । ना.स. 7ख/141; *•भू.का.कृ. विभावितः – ཕྱག་རྒྱའི་དཀྱིལ་འཁོར་སྐུ་མདོག་སོགས། །ཕྱག་དང་གདན་ནི་རྣམ་བསྒོམ་དང་།། मुद्रामण्डलवर्णादिभुजस्थानविभाविताः । ज्ञा.सि.60क/156; द्र. རྣམ་པར་བསྒོམས་པ།

རྣམ་པར་བསྒོམ་པར་གྱིས क्रि. विभावयेत् – ནང་གི་ལྟ་བའི་གནས་རྣམས་ཀྱི། །འགྱུར་བ་རྣམ་པར་བསྒོམ་པར་གྱིས།། अध्यात्मदृष्टिनिलयं परिणामं विभावयेत् । ल.अ.190क/162.

རྣམ་པར་བསྒོམ་པར་འགྱུར क्रि. विभावयिष्यति – དགེ་སྦྱོང་དམ་བྲམ་ཟེ... སྐྱེ་བ་དང་གནས་པ་དང་འཇིག་པ་སྤངས་པ། བདག་གི་སེམས་སྐྱེ་བ་དང་ལྡན་པ་རྣམ་པར་བསྒོམ་པར་འགྱུར་ཏེ श्रमणा वा ब्राह्मणा वा...उत्पादस्थितिभङ्गवर्ज्यं स्वचित्तोत्पादानुगतं विभावयिष्यन्ति ल.अ.71क/19.

རྣམ་པར་བསྒོམ་པར་བྱ •क्रि. विभावयेत् –ཁམས་གསུམ་པོ་རྡུལ་ཕྲ་རབ་ཀྱི་ཆོས་ཉིད་ལས་འདས་པའི་སྟོང་པ་ཉིད་རྣམ་པར་བསྒོམ་པར་བྱའོ།། त्रैधातुकं परमाणुधर्मातीतं शून्यताबिम्बं विभावयेत् वि.प्र.32ख/4.7; མཚན་ཉིད་མཚན་གཞི་བྲལ་བ་ཡི། །འགྱུར་བ་རྣམ་པར་བསྒོམ་པར་བྱ།། लक्ष्यलक्षणनिर्मुक्तं परिणामं विभावयेत् ॥ ल.अ.190क/162; कुर्वीत भावनाम् – དབུས་སུ་རྣམ་པར་བསྒོམ་པར་བྱ།། मध्ये कुर्वीत भावनाम् त.सि.68ख/185; •कृ. विभावयितव्यम् – ཁྱོད་ཀྱིས་སེམས་དང་ཡིད་དང་ཡིད་ཀྱི་རྣམ་པར་ཤེས་པ་དང་བྲལ་ཞིང་... ཆོས་ཐམས་ཅད་རྣམ་པར་བསྒོམ་པར་བྱ चित्तमनोमनोविज्ञानविगतेन त्वया सर्वधर्मा विभावयितव्याः ल.अ.59क/5.

རྣམ་པར་བསྒོམས = རྣམ་པར་བསྒོམས་པ། རྣམ་པར་བསྒོམས་ནས विभाव्य – ཐུན་གསུམ་དུ་བྱིན་གྱིས་བརླབས་པའི་བསྒོམ་པ་རྣམ་པར་བསྒོམས་ནས་ལངས་ཏེ त्रिसन्ध्याधिष्ठानभावनां विभाव्य उत्तिष्ठेत् हे.त. 5ख/14; हे.त.4ख/12.

རྣམ་པར་བསྒོམས་པ •सं. विभावनम् – ཤེས་རབ་ཐབས་དག་རྣམ་བསྒོམས་པས། །དེ་ལྟར་དེ་ཉིད་ཤེས་བྱས་ལ།། एवं तत्त्वेन विज्ञाय प्रज्ञोपायविभावनम् । गु.सि.10क/22; विभावना–ཤེས་རབ་ཐབས་ནི་རྣམ་བསྒོམས་པས།། प्रज्ञोपायविभावनाम् गु.सि.9क/20; •भू.का.कृ. विभावितः – བློ་གྲོས་རྣམ་པར་བསྒོམས་པ་དང विभावितमतेः ग.व्यू.278क/347.

རྣམ་པར་བསྒྲིངས = རྣམ་པར་བསྒྲིངས་པ། རྣམ་པར་བསྒྲིངས་ཏེ विजृम्भ्य – དེ་ནས་བཅོམ་ལྡན་འདས་ཀྱིས...སེང་གེའི་རྒྱལ་པོ་ལྟར་རྣམ་པར་བསྒྲིངས་ཏེ་བཞད་མོ་ཆེར་བཞད་ནས अथ भगवान्...सिंहराजवद्विजृम्भ्य महाहासमहसत् ल.अ.60क/6.

རྣམ་པར་བསྒྲིངས་པ भू.का.कृ. विजृम्भितः – བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའི་ཏིང་ངེ་འཛིན་དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་རྣམ་པར་ཐར་པའི་ཚོ་བྲང་ལ་རྣམ་པར་ལྟ་བས་སེང་གེ་རྣམ་པར་བསྒྲིངས་པ་དང सर्वतथागतविमोक्षभवनव्यवलोकनसिंहविजृम्भितेन बोधिसत्त्वसमाधिना ग.व्यू.307ख/30; དེ་ནས་སེང་གེ་རྣམ་བསྒྲིངས་པའི། །ཏིང་ངེ་འཛིན་ལ་སྙོམས་འཇུག་ནས། །ཏེན་ཅིང

འབྲེལ་འབྱུང་ལུགས་མཐུན་དང་། །ལུགས་མི་མཐུན་ལ་རྟོག་པར་བྱེད།། स समाधिं समापद्य ततः सिंहविजृम्भितम्। अनुलोमं विलोमञ्च प्रतीत्योत्पादमीक्षते ॥ अभि.अ.10क/5.23.

རྣམ་པར་བསྒྱུར = རྣམ་པར་བསྒྱུར་བ།

རྣམ་པར་བསྒྱུར་བ • *सं.* विकृतिः – གོས་གཙང་ཚོན་གྱིས་རྣམ་བསྒྱུར་སྣུམ་གྱིས་གོས་པ་མིན།། शुद्धं वस्त्रमुपैति रङ्गविकृतिं न स्नेहपङ्काङ्कितम् र.वि.128ख/118; • *भू.का.कृ.* विगुणितः – སྒྲ་གཅན་ཟླ་བའི་ལོངས་སྤྱོད་མིག་གིས་རྣམ་པར་བསྒྱུར་ཏེ་ཞེས་པ་ནི राहोर्मासस्य भोगान्नयनविगुणितादिति वि.प्र.200ख/1.77.

རྣམ་པར་བསྒྱུར་བར་བྱ = རྣམ་པར་བསྒྱུར་བར་བྱ་བ།

རྣམ་པར་བསྒྱུར་བར་བྱ་བ *कृ.* विकार्यम् – གལ་ཏེ་ཡིད་ཀྱི་བློ་ཡང་དབང་པོ་རྣམ་པར་འགྱུར་བས་རྣམ་པར་བསྒྱུར་བར་བྱ་བ་མ་ཡིན་ན यदि मनोमतिरपीन्द्रियविकारतो न विकार्या प्र.अ.51ख/59.

རྣམ་པར་བསྒྲགས = རྣམ་པར་བསྒྲགས་པ།

རྣམ་པར་བསྒྲགས་པ *वि.* विख्यातः – ཡི་གེ་དྷ་ཞེས་སྡོམ་བརྩོན་ཉིད། །ལྷོ་ཡི་ཕྱོགས་སུ་རྣམ་པར་བསྒྲགས།། थ[? ध]काराद्यो यतिश्चैव विख्यातो दक्षिणां दिशि। म.मू.325ख/510; प्रख्यातः – ཡི་གེ་ཧ་ཉིད་རྣམ་བསྒྲགས་དང་། །དེ་བཞིན་ཡང་ནི་དང་པོའི་ཨ།། हकाराद्यश्चैव प्रख्यातः अकाराद्यः पुनस्तथा ॥ म.मू.324क/508; विनर्दितः – དེ་དག་ཐམས་ཅད་དུའང་ཁོ་མོ་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའི་ཡུམ་དུ་འགྱུར་རོ།། བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་བྱམས་པའི་ཡུམ་དུ་ཇི་ལྟར་འགྱུར་བ་དེ་བཞིན་དུ…རྣམ་པར་བསྒྲགས་པའི་རྒྱལ་པོ་དང तेष्वहं सर्वत्र बोधिसत्त्वजननी भविष्यामि। यथा च मैत्रेयस्य बोधिसत्त्वस्य, तथा...विनर्दितराजस्य ग.व्यू.268ख/347.

རྣམ་པར་བསྒྲགས་པའི་རྒྱལ་པོ *ना.* विनर्दितराजः, बोधिसत्त्वः – དེ་དག་ཐམས་ཅད་དུའང་ཁོ་མོ་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའི་ཡུམ་དུ་འགྱུར་རོ།། བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་བྱམས་པའི་ཡུམ་དུ་ཇི་ལྟར་འགྱུར་བ་དེ་བཞིན་དུ…རྣམ་པར་བསྒྲགས་པའི་རྒྱལ་པོ་དང तेष्वहं सर्वत्र बोधिसत्त्वजननी भविष्यामि। यथा च मैत्रेयस्य बोधिसत्त्वस्य, तथा...विनर्दितराजस्य ग.व्यू.268ख/347.

རྣམ་པར་བསྒྲལ *क्रि.* विमोचयेत् – དེ་ལྟར་སེམས་ཅན་རེ་རེའི་ཕྱིར་ཡང་སེམས་ཅན་དམྱལ་བ་རྣམས་སུ་བསྐལ་པར་གནས་པར་སྤྲོ་ཞིང་སྐྱེ་བོ་འཁོར་བ་ལས་རྣམ་པར་བསྒྲལ་ལོ།། एवं ह्येकैकस्य सत्त्वस्यार्थे कल्पं समुदेयं [? वस्तुं समुत्सहेयं] नरकेषु जातिं [? जनान्] संसाराद्विमोचयेयम् सु.प्र.57ख/114.

རྣམ་པར་བསྒྲུབ = རྣམ་པར་བསྒྲུབ་པ།

རྣམ་པར་བསྒྲུབ་པ • *सं.* 1. विठपनम् – རིགས་ཀྱི་བུ་འདི་ནི་ཆོས་རྣམས་ཀྱི་ཆོས་ཉིད་ཡིན་གྱི་ཡོངས་རིགས་ཀྱི་བུ་ཆོས་ཐམས་ཅད་ནི་རྣམ་པར་བསྒྲུབ་ན་ཉེ་བར་འགྲུབ་པའི་མཚན་ཉིད་དེ། བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའི་ཡེ་ཤེས་ཀྱི་བྱིན་གྱིས་བརླབས་པའོ།། उत्तिष्ठ कुलपुत्र। एषा धर्माणां धर्मता। अविष्ठ[? विठ]पनप्रत्युपस्थानलक्षणाः कुलपुत्र सर्वधर्मा बोधिसत्त्वज्ञानाधिष्ठिताः ग.व्यू.339क/415; द्र. རྣམ་པར་བསྒྲུབས་པ། 2. = རྣམ་པར་བསྒྲུབ་པ་ཉིད विठपनता – དེ་ནི་སེམས་ཅན་རྣམས་ཀྱི་སེམས་རྣམ་པ་ཐ་དད་པ་ཡང་དག་པ་ཇི་ལྟ་བ་བཞིན་དུ་རབ་ཏུ་ཤེས་ཏེ…སེམས་སྒྱུ་མ་ལྟ་བུར་རྣམ་པར་བསྒྲུབ་པ་དང स सत्त्वानां चित्तवैमात्रतां च यथाभूतं प्रजानाति...चित्तमायाविठपनतां च द.भू.252क/49; • *पा.* विठपना – བདག་གིས་རྣམ་པར་བསྒྲུབ་པར་བྱ་བ་ལ་བརྩོན་པར་བྱ་སྟེ།…གང་ཡང་བདོག་པ་ཐམས་ཅད་ཡོངས

སུ་བཏང་སྟེ་སངས་རྒྱས་ཀྱི་ཞིང་ཐམས་ཅད་ཡོངས་སུ་དག་པར་བྱ་བའི་ཕྱིར་ཡོངས་སུ་བསྔོ་བ་འདི་ནི་རྣམ་པར་བསྒྲུབ་པ་ཞེས་བྱའོ॥ विठपनायां मया योगः करणीयः...यत्-पुनः सर्वस्वं परित्यज्य सर्वबुद्धक्षेत्रपरिशुद्धये परि-णामयति, इयमुच्यते विठपना शि.स.132क/127.

རྣམ་པར་བསྒྲུབ་པར་བྱ་བ विठपना – བདག་གིས་རྣམ་པར་བསྒྲུབ་པར་བྱ་བ་ལ་བརྩོན་པར་བྱ विठपनायां मया योगः करणीयः शि.स.132क/127; द्र. རྣམ་པར་བསྒྲུབ་པ།

རྣམ་པར་བསྒྲུབས = རྣམ་པར་བསྒྲུབས་པ།

རྣམ་པར་བསྒྲུབས་པ *• *क्रि.* विदधाति–སྐད་ཅིག་གིས་ནི་ས་དང་ས་འཛིན་བྲལ་བའི་རོལ་རྩེད་རྣམ་པར་བསྒྲུབས॥ क्षणात् क्षोणीक्ष्माभृद्विघटनविनोदं विदधति अ.क. 318क/40.128; विडम्ब्यते–དེ་ལྟར་རྨོངས་པས་བཅོམ་པའི་དམ་པ་དམ་མིན་རྣམས་ཀྱིས་འདིར། །བདེ་བ་མེད་པའི་ལས་ནི་འཕྲལ་ཉིད་རྣམ་པར་བསྒྲུབས་པ་གང་॥ मो-हाहतैरिह हि सद्भिरसद्भिरेषां निःशमकर्म सहसैव विडम्ब्यते यत्। अ.क.342क/44.64; • *सं.* विठप-नम्–རྣམ་པར་བསྒྲུབས་པ་ཉེ་བར་གནས་པའི་མཚན་ཉིད विठपनप्रत्युपस्थानलक्षणम् म.व्यु.7233 (103क); विठपना–ཁྱོད་ཀྱིས་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའི་སྨོན་ལམ་གྱི་ཡེ་ཤེས་ཀྱིས་རྣམ་པར་བསྒྲུབས་པ་མཐོང་ངམ་ दृष्टा ते बोधिसत्त्वप्रणिधिज्ञानविठपना ग.व्यू.339ख/415; • *भू.का.कृ.* *विधापितः – སྒྱུ་མ་ལྟར་སེམས་ཕྱིན་ཅི་ལོག་གིས་རྣམ་པར་བསྒྲུབས་པ मायासदृशाश्चित्तवि-पर्यासविधापिताः ल.वि.106क/153.

རྣམ་པར་ངུ་བ *क्रि.* *विरुवति [? विरौति] लो.को. 1402.

རྣམ་པར་ངེས = རྣམ་པར་ངེས་པ།

རྣམ་པར་ངེས་པ = རྣམ་ངེས • *क्रि.* विभाव्यते–སྤྱི་ཡི་རྣམ་པར་ཤེས་དེ་དང་། །རྗེས་འབྲེལ་སྔོན་པོ་ལ་སོགས་པའི། །རྣམ་པའི་ཆ་ནི་རྣམ་ངེས་གང་། །དེ་ནི་དེ་ལ་གང་གིས་སྤྲུལ॥ तच्च सामान्यविज्ञानमनुरुन्धन् विभाव्यते। नीलाद्याकारलेशो यः स तस्मिन् केन निर्मितः ॥ प्र.वा.119ख/2.23; • *सं.* 1. विनिश्चयः – ཆོས་རྣམ་པར་ངེས་པ་ལ་ཆོས་ནི་གསུང་རབ་ཏུ་གཏོགས་པ་ཡན་ལག་བཅུ་གཉིས་ཏེ... རྟོགས་པ་བརྗོད་པའི་སྡེ་ནི་དཔེ་དང་བཅས་པར་གསུངས་པ་སྟེ धर्मविनिश्चये धर्मो द्वाद-शाङ्गं वचोगतम्...अवदानं सदृष्टान्तकं भाषितम् अभि.स.भा.69क/96; ཐོབ་པ་རྣམ་པར་ངེས་པ་ནི་ཐོབ་པར་བྱེད་པའི་གང་ཟག་རྣམ་པར་གཞག་པ་དང་། མངོན་པར་རྟོགས་པ་རྣམ་པར་གཞག་པས་བལྟ་བར་བྱའོ॥ प्रा-प्तिविनिश्चयोऽधिगन्तृपुद्गलव्यवस्थानतोऽधिग-मव्यवस्थानतश्च द्रष्टव्यः अभि.स.भा.85ख/117; ལ་ལ་ངག་ལ་ཡི་གེ་དབྱེ་ཚིག་དང་། །དོན་ལ་རྣམ་ངེས་རྡོ་རྗེའི་ཚིག་རྣམས་དང་॥ केषुचि अक्षरभेदपदेभिः अर्थ-विनिश्चयवज्रपदेभिः। शि.स.178ख/177; ཐམས་ཅད་མཁྱེན་པ་ཉིད་ལ་འཇུག་པ་དང... ཐམས་ཅད་མཁྱེན་པ་ཉིད་དུ་རྣམ་པར་ངེས་པ་འཐོབ सर्वज्ञताप्रवेशं...सर्वज्ञ-ताविनिश्चयं प्रतिलभते रा.प.231क/124; निश्चयः – བདེན་པ་རྣམས་ལ་རྣམ་པར་ངེས་པའི་ཤེས་པ་ནི་ཤིན་ཏུ་སྤྱང་དཀའ་བ་ཞེས་བྱ་སྟེ सत्त्वेषु [? सत्येषु] निश्-चयज्ञानं सुदुर्जयम् बो.भू.178क/234; विनीतिः – དོན་ལ་རྣམ་ངེས विनीतिरर्थे सू.अ.143ख/21; = ཞུགས་པ་རྣམས་ཀྱི་ཐེ་ཚོམ་གཅོད་པའི་ཕྱིར་དོན་ལ་རྣམ་པར་ངེས་པར་བྱེད་པ विनीतिरर्थेऽवतीर्णानां संशयच्छेदनम् सू.व्या.143ख/22 2. आकाराध्यवसायः – དེར་སྣང་བའི་རྣམ་པར་ངེས་པའི་དབང་གིས་ཡོད་པ་དང་མེད་པ་དང་གཉི་གའི་ཆོས་ཞེས་བརྗོད་དོ॥ तत्प्रतिभास्याकाराध्य-

वसायवशेन च भावाभावोभयधर्म इत्युच्यते प्र.वृ. 321क/70; • भू.का.कृ. विनिश्चितः – གཉིད་སྟུག་ལོག་པ་སད་པ་ན། །རྣམ་ཤེས་སྔོན་གྱི་རིམ་[? རིག་]པ་ལས། །དུས་ཀྱིས་བར་དུ་ཆོད་ཀྱང་ནི། །སྐྱེ་བ་ཞེས་ནི་རྣམ་པར་ངེས॥ गाढसुप्तस्य विज्ञानं प्रबोधे पूर्ववेदनात्। जायते व्यवधानेन कालेनेति विनिश्चितम्॥ प्र.अ.59ख/68; ཤིན་ཏུ་རྣམ་པར་ངེས་པའི་ཤེས་རབ་ཀྱིས་ཡོངས་སུ་སྨིན་པར་བྱེད་དོ॥ सुविनिश्चितया प्रज्ञया परिपाचयति सू.व्या.152क/36.

རྣམ་པར་ངེས་པར་བྱས་ནས विनिश्चित्य– དེ་ལྟར་རྣམ་པར་ངེས་པར་བྱས་ནས་སེམས་དཔའ་ཆེན་པོ་དེ इति विनिश्चित्य स महासत्त्वः जा.मा.91ख/104.

རྣམ་པར་ངེས་པ་ཅན *वि.* अध्यवसायी – འཁྲུལ་པར་དོགས་པ་གསལ་[? བསལ་]བ་ཅན་སྐྱེ་བ་ན་བར་མ་ཆོད་པར་རིགས་མཐུན་པ་ཐུན་མོང་བའི་རྣམ་པར་ངེས་པ་ཅན་གྱིས་རྣམ་པར་གཅོད་པའི་ཤེས་པ་སྐྱེས་པ་ན निरस्तविभ्रमाशङ्कमुपजायमानमव्यवधानेन सजातीयसाधारणाध्यवसायिनं परामर्शप्रत्ययं जनयत् त.प.236ख/944.

རྣམ་པར་ངེས་པ་མེད = རྣམ་པར་ངེས་པ་མེད་པ།

རྣམ་པར་ངེས་པ་མེད་པ *भू.का.कृ.* अविनिश्चितः – ཡིད་ཆེས་པ་ཉིད་མི་འདོད་པས། །སྒྲ་ལས་བྱུང་བ་གཉིས་པ་ཡང་། །མི་བཟོད་འདོད་ན་དེ་ཉིད་དོ། །ཞེས་བྱའི་རྣམ་པར་ངེས་པ་མེད॥ आप्तानङ्गीकृतेरेव द्वितीयमपि न क्षमम्। शाब्दलक्षणमिष्टो वा सोऽयमित्यविनिश्चितः॥ त.स.55ख/537.

རྣམ་པར་ངེས་པའི་བློ = རྣམ་པར་ངེས་པའི་བློ་གྲོས།

རྣམ་པར་ངེས་པའི་བློ་གྲོས विनिश्चितमतिः लो.को. 1402.

རྣམ་པར་ངེས་པར་བྱེད་པ विनिश्चयः – གང་དགོས་པ་དང་བྲལ་བ་དེ་རྟོག་པ་སྔོན་དུ་བྱེད་པ་རྣམས་ཀྱིས་བརྩམ་པར་བྱ་བ་མ་ཡིན་ཏེ། དཔེར་ན་བྱ་རོག་གི་སོ་རྣམ་པར་ངེས་བྱེད་ལ་སོགས་པ་བཞིན यत् प्रयोजनरहितं तत् प्रेक्षापूर्वकारिभिर्नारभ्यते, यथा–बलिभुग्दशनविनिश्चयादिकम् वा.टी.51क/3; विनियतिः – རྙེད་པ་ནི་ཇི་ལྟར་རྣམ་པར་ངེས་པར་བྱེད་པ་ལྟར་རྣམ་པར་གཞག་གོ॥ यथाविनियतिर्लाभस्य व्यवस्था वि.सू.68क/84; विनीतिः – ཞུགས་པ་རྣམས་ཀྱི་ཐེ་ཚོམ་གཅོད་པའི་ཕྱིར་དོན་ལ་རྣམ་པར་ངེས་པར་བྱེད་པ विनीतिरर्थेऽवतीर्णानां संशयच्छेदनम् सू.व्या.143ख/22.

རྣམ་པར་ངེས་བྱེད = རྣམ་པར་ངེས་པར་བྱེད་པ།

རྣམ་པར་མངོན उद्धाटितम् लो.को.1402.

རྣམ་པར་མངོན་པར་སྒྲུབ་པ *पा.* आकाराभिनिर्हारः, समाधिविशेषः – རྣམ་པར་མངོན་པར་སྒྲུབ་པ་ཞེས་བྱ་བའི་ཏིང་ངེ་འཛིན आकाराभिनिर्हारो नाम समाधिः म.व्यु.593 (14क).

རྣམ་པར་སྔོས = རྣམ་པར་སྔོས་པ།

རྣམ་པར་སྔོས་པ *पा.* विनीलकम्, अशुभताभेदः – རྣམ་པར་སྔོས་ཤིང་བམ་པ་ཡི། །བུད་མེད་ཀྱི་ནི་རོ་ཞིག་མཐོང་॥ नारीकुणपमद्राक्षं व्याध्मातकविनीलकम्॥ वि.व.291ख/1.114; द्र. རྣམ་པར་བསྔོས་པ།

རྣམ་པར་བསྔོས་པ *पा.* विनीलकम्, अशुभताभेदः – ཕྱི་རོལ་ལ་ཡང་ཕྱི་རོལ་དུ་གཏོགས་པའི་རྣམ་པར་བསྔོས་པ་ལ་སོགས་པའི་རྣམ་པ་དག་གིས་མི་སྡུག་པ་ཉིད་དུ་མོས་པར་བྱེད་དེ बहिर्धा वा पुनर्बाह्यगतामशुभतां विनीलकादिभिराकारैरधिमुच्यते श्रा.भू.135ख/371; དེ་ནས་རྣམ་པར་བསྔོས་པ་ལ་ལྟོས། །དེ་ནས་རྣམ་པར་རྣགས་པ

ལྟས།། ततो विनीलकं पश्येत् ततः पश्येद्विपूयकम्। अभि.स्फु.162[क]/896; वि.सू.19[क]/22; नीलकम् – ཀེང་རུས་སམ་ རྣམ་ པར་ བསྔོས་ པའམ་ རྣམ་ པར་ རུལ་བའམ་རྣམ་པར་འབུ་ཞུགས་པའམ་རྣམ་པར་བམ་པ་ལ་སོགས་པའོ།། अस्थिसंकलिकं वा नीलकं वापि [? वा वि]पूयकं वा विपड्डुमकं [? विपुण्ड्रात्मकम्] वा व्याध्मातकादिकं वा त्रि.भा.170[ख]/97.

རྣམ་པར་བསྔོས་པའི་འདུ་ཤེས *पा.* विनीलकसंज्ञा, अशुभभावनाविशेषः म.व्यु.1156 (རྣམ་པར་སྔོས་པའི་འདུ་ཤེས 24[ख]).

རྣམ་པར་གཅད་པ *सं.* व्यवच्छेदः – ཕྱོགས་ཀྱི་མཚན་ཉིད་ཀྱི་ཚིག་གིས་གང་དག་རྣམ་པར་གཅོད་པར་བྱེད་པ་དེ་དག་རྣམ་པར་གཅད་པས पक्षलक्षणपदानि येषां व्यवच्छेदकानि तेषां व्यवच्छेदेन न्या.टी.72[क]/187; विच्छेदः – ཕུང་པོ་དང་ཁམས་དང་སྐྱེ་མཆེད་རྣམ་པར་གཅད་པའི་ངེས་པའོ།། स्कन्धधात्वायतनविच्छेदनियमः वि.प्र.253[ख]/2.65; •*> རྣམ་པར་བཅད་པ།

རྣམ་པར་གཅད་པར་བྱ་བ *कृ.* व्यवच्छेद्यः – ད་ནི་ཕྱོགས་ཀྱི་མཚན་ཉིད་ཀྱི་ཚིག་གིས་གང་དག་རྣམ་པར་གཅོད་པར་བྱེད་པ་དེ་དག་རྣམ་པར་གཅད་པས་ཕྱོགས་ཀྱི་དོན་ཅི་འདྲ་བ་ཞིག་ཐོབ་པ་དེ་བསྟན་པའི་ཕྱིར་རྣམ་པར་གཅད་པར་བྱ་བ་བསྡུས་ནས་བསྟན་ཏོ།། संप्रति पक्षलक्षणपदानि येषां व्यवच्छेदकानि तेषां व्यवच्छेदेन यादृशः पक्षार्थो लभ्यते तं दर्शयितुं व्यवच्छेद्यान् संक्षिप्य दर्शयति न्या.टी.72[क]/187; སེལ་བའི་སྒྲ་ནི་སྒྲའི་དོན་གཞན་སེལ་ བ་ མ་ ཡིན་ པ་ རྣམ་ པར་ གཅད་ པར་ བྱ་ བ་ ཡིན་ ལ अन्यापोहशब्दस्यानन्यापोहशब्दार्थो व्यवच्छेद्यः त.प.335[क]/385; ཐམས་ཅད་སྒྲ་ནི་དོན་གང་གིས། །རྣམ་པར་གཅད་བྱར་རྟོག་པར་བྱེད།། सर्वशब्दस्य कश्चार्थो व्यवच्छेद्यः प्रकल्प्यते। त.स.36[ख]/386; अवच्छिद्यमानः – འདི་ལ་གང་ཡོངས་སུ་གཅོད་པ་ན་གང་རྣམ་པར་གཅོད་པ་སྟེ། ཡོངས་སུ་གཅོད་པ་ཞེས་བྱ་བ་དེ་ནི་རྣམ་པར་གཅད་པར་བྱ་བ་ཡོངས་སུ་སྤངས་ཏེ་གནས་པའི་ངོ་བོར་བལྟ་བར་བྱའོ།། इह यस्मिन् परिच्छिद्यमाने यद् व्यवच्छिद्यते तत् परिच्छिद्यमानमवच्छिद्यमानपरिहारेण स्थितरूपं द्रष्टव्यम् न्या.टी.77[क]/203.

རྣམ་པར་གཅད་པར་བྱ་བ་དང་རྣམ་པར་གཅོད་པར་བྱེད་པའི་ དངོས་ པོ व्यवच्छेद्यव्यवच्छेदकभावः – ཡོད་པ་དང་མེད་པ་དག་ལོགས་ཤིག་ཏུ་ཡོངས་སུ་བཅད་ནས་ཕྱིས་ དེ་ དག་ རྣམ་ པར་ གཅད་ པར་ བྱ་ བ་ དང་ རྣམ་ པར་གཅོད་པར་བྱེད་པའི་དངོས་པོ་ཡིན་པའི་ཕྱིར་གསལ་[? འགལ་]བར་རྣམ་པར་གཞག་པར་བྱ་བ་ནི་མ་ཡིན་ནོ།། न हि भावाभावौ पृथक्परिच्छिद्य पश्चात्तयोर्व्यवच्छेद्यव्यवच्छेदकभावाद् विरोधो व्यवस्थाप्यते त.प. 286[ख]/1036.

རྣམ་པར་གཅད་པར་བྱ་བ་ཡིན *क्रि.* व्यवच्छिद्यते – དེ་ལྟ་ན་ཡང་གཅིག་གི་ངོ་བོ་ལ་ཡང་ཡོངས་སུ་བཅད་པ་ན་དེ་མེད་པའི་ལྟར་རུང་བ་རྣམ་པར་གཅད་པར་བྱ་བ་ཡིན་ཞིང་ तथा च सति रूपे परिच्छिद्यमान एकस्मिंस्तदभावो दृश्यो व्यवच्छिद्यते न्या.टी.78[क]/206.

རྣམ་པར་གཅད་བྱ = རྣམ་པར་གཅད་པར་བྱ་བ།

རྣམ་པར་གཅོད = རྣམ་པར་གཅོད་པ།

རྣམ་པར་གཅོད་པ •*क्रि.* व्यवच्छिनत्ति – ཆོས་ཀྱི་ཚིག ཐད་ཐ་དད་པར། །བྱེད་པས་མི་ལྡན་གཞན་ལྡན་པ། །ཤིན་ཏུ་མི་སྲིད་རྣམ་གཅོད་བྱེད།། अयोगं योगमपरैरत्यन्तायोगमेव च। व्यवच्छिनत्ति धर्मस्य निपातो व्यतिरेचकः॥ प्र.वा.146[ख]/4.190; ཚད་མ་གཅིག་འཇུག་པ

ན་གཉིས་ལས་གཞན་ཡོངས་སུ་གཅོད་ཅིང་དེ་ལས་གཞན
མི་མཐུན་པ་རྣམ་པར་གཅོད་ལ एकप्रमाणवृत्तिर्द्वयो-
रन्यतरत्परिच्छिन्दती ततः परं प्रतियोगिनं व्यव-
च्छिनत्ति त.प.233क/181; विच्छिनत्ति – དེ་དག
གིས་ཉོན་མོངས་པའི་ཐོབ་པ་རྣམ་པར་གཅོད་དེ क्लेश-
प्राप्तिं ते विच्छिन्दन्ति अभि.स्फु.178क/929; वि-
निर्भिनत्ति – ཇི་ལྟར...ཁམས་གསུམ་གྱི་གྲོང་ཁྱེར་གྱི་སྒོ
རྣམ་པར་གཅོད་ཅིང་ཐམས་ཅད་མཁྱེན་པ་ཉིད་ཀྱི་ཕོ་བྲང
གི་སྒོ་རྣམ་པར་འབྱེད་པ་དང...མ་འཚལ་ལོ། न च जाने
कथं... विनिर्भिन्दन्ति त्रैधातुकनगरकपाटम्, वि-
वृण्वन्ति सर्वज्ञतापुरद्वारकपाटम् ग.व्यू.328ख/51;
व्यवच्छिद्यते – འདི་ལ་གང་ཡོངས་སུ་གཅོད་པ་ན་གང
རྣམ་པར་གཅོད་པ་སྟེ། ཡོངས་སུ་གཅོད་པ་ཞེས་བྱ་བ་དེ
ནི་རྣམ་པར་གཅད་པར་བྱ་བ་ཡོངས་སུ་སྤངས་ཏེ་གནས
པའི་ངོ་བོར་བལྟ་བར་བྱའོ། इह यस्मिन् परिच्छिद्यमाने
यद् व्यवच्छिद्यते तत् परिच्छिद्यमानमवच्छिद्यमान-
परिहारेण स्थितरूपं द्रष्टव्यम् न्या.टी.77क/203;
• *सं.* विच्छेदः – ཉིན་ཞག་སུམ་ཅུ་རྩ་གསུམ་གྱི་བར་དུ
ཕུང་པོ་དང་ཁམས་རྣམས་རྣམ་པར་གཅོད་པ་སྟེ त्रय-
स्त्रिंशद्दिनानि यावत् स्कन्धधातूनां विच्छेदः वि.
प्र.253क/2.65; • *पा.* व्यवच्छेदः – མི་ལྡན་དང་།
།གཞན་ལྡན་རྣམ་གཅོད་རྣམ་པ་གཉིས། द्विविधो हि
व्यवच्छेदो वियोगापरयोगयोः। प्र.वा.140ख/4.38;
ཕན་ཚུན་རྣམ་པར་གཅོད་པའི་ངོ་བོ་དེ་དག་ནི་གཅིག
དགག་པ་གཞན་སྒྲུབ་པ་མེད་ན་མི་འབྱུང་བ་ཡིན་པའི
ཕྱིར་རོ། परस्परव्यवच्छेदरूपाणामेकनिषेधस्यापर-
विधिनान्तरीयकत्वात् त.प.218ख/907; གལ་ཏེ་བ
ལང་གི་སྒྲ་གཞན་རྣམ་པར་གཅོད་པ་སྟོན་པར་བྱེད་པ
ལྷུར་ལེན་པ་ཡིན་ན यदि गोशब्दोऽन्यव्यवच्छेदप्र-
तिपादनपरः त.प.322क/359; དོན་གཞན་རྣམ་པར
གཅོད་པར་ནི། །བྱེད་པ་སྒྲར་ནི་བརྗོད་པ་ཡིན། अर्था-
न्तरव्यवच्छेदं कुर्वती श्रुतिरुच्यते। त.स.38क/
394; བློ་གཞན་པ་ལ་རྣམ་གཅོད་པས། །བློར་རྟོགས་པ
ནི་མ་ཡིན་ཏེ། बुद्ध्यन्तराद् व्यवच्छेदो न च बुद्धौ
प्रतीयते। त.स.34ख/364; རྣམ་པར་གཅོད་པའི་འབྲས
བུ་ཅན་དེ་དག་ནི་དངོས་པོའི་ཆ་ཤས་མ་རྟོགས་པ་རྟོགས
པར་བྱ་བའི་ཕྱིར་འཇུག་པ་མ་ཡིན་ཏེ तेषां तु व्यवच्छे-
दफलानां नाप्रतीतवस्त्वंशप्रत्यायने प्रवृत्तिः प्र.वृ.
275ख/17; • *वि.* व्यवच्छेदकः – ཐེ་ཚོམ་མེད་དེ་དག
རྣམ་གཅོད། །རྗོད་པར་བྱེད་པར་སྒྲུབ་པ་ཉིད། नाशङ्क्या
एव सिद्धास्ते व्यवच्छेदकस्य वाचकाः। प्र.वृ.8ख/
61; *• *भू.का.कृ.* व्यवच्छिन्नः – གལ་ཏེ་དོན་གཞན
རྣམ་གཅོད་པའི། །ངོ་བོས་འཛིན་པ་མ་ཡིན་ན། བརྗོད
པར་འདོད་པའི་དོན་ལས་གཞན་གང་ཡིན་པ་དེ་ལས་རྣམ
པར་གཅད་[? བཅད་]པ་དེ་ལ་ཡོད་པ་མ་ཡིན་ནོ། अर्था-
न्तरव्यवच्छिन्नरूपेणाग्रहणं यदि। विवक्षितादर्थाद्
यदर्थान्तरम्, ततो व्यवच्छिन्नं तत्राविद्यमानम् त.
प.9क/464; དེའི་ཕྱིར་དོན་བྱེད་པར་ནུས་པའི་མཚན་ཉིད
ནི་ཡོད་པ་ཡིན་ལ། དེ་ལས་ལྡོག་པ་ནི་རྣམ་པར་གཅོད
པའོ། अतोऽर्थक्रियासामर्थ्यलक्षणात् सत्त्वाद् व्या-
वृत्तं व्यवच्छिन्नम् वा.टी.56ख/10; *> རྣམ་པར
བཅད་པ།

རྣམ་པར་གཅོད་པའི་གཏན་ཚིགས *पा.* व्यवच्छेदहेतुः –
མ་དམིགས་པ་ལས་[གཞན་]རྣམ་པར་གཅོད་པའི་གཏན
ཚིགས་ཡོད་པ་[མ་]ཡིན་ནོ། न ह्यनुपलम्भादन्यो व्य-
वच्छेदहेतुरस्ति वा.टी.85क/42.

རྣམ་པར་གཅོད་པའི་ཤེས་པ *पा.* परामर्शप्रत्ययः – འཁྲུལ
པར་རྟོགས་པ་གསལ་[? བསལ་]བ་ཅན་སྐྱེ་བ་ན་བར་མ

ཚོད་པར་རིགས་མཐུན་པ་ཐུན་མོང་བའི་རྣམ་པར་ངེས་པ་ཅན་གྱིས་རྣམ་པར་གཅོད་པའི་ཤེས་པ་སྐྱེས་པ་ན निरस्तविभ्रमाशङ्कमुपजायमानमव्यवधानेन सजातीयसाधारणाध्यवसायिनं परामर्शप्रत्ययं जनयत् त.प. 236ख/944.

རྣམ་པར་གཅོད་པར་འགྱུར *क्रि.* व्यवच्छेत्स्यति – དུད་འགྲོ་སོང་གི་སྐྱེ་གནས་ཀྱི་ལམ་གྱི་རྒྱུད་ཐམས་ཅད་རྣམ་པར་གཅོད་པར་འགྱུར सर्वतिर्यग्योनिगतिं व्यवच्छेत्स्यति ग.व्यू.377ख/88.

རྣམ་པར་གཅོད་པར་བྱེད = རྣམ་པར་གཅོད་པར་བྱེད་པ།

རྣམ་པར་གཅོད་པར་བྱེད་པ • *क्रि.* व्यवच्छिनत्ति – ཆོས་ཀྱི་ཚིག་ཕྲད་ཐ་དད་པར། །བྱེད་པས་མི་ལྡན་གཞན་ལྡན་པ། །ཤིན་ཏུ་མི་སྲིད་རྣམ་གཅོད་བྱེད།། अयोगं योगमपरैरत्यन्तायोगमेव च । व्यवच्छिनत्ति धर्मस्य निपातो व्यतिरेचकः ॥ प्र.वा.146ख/4.190; གཏན་ཚིགས་མི་མཐུན་པའི་ཕྱོགས་ལས་རྣམ་པར་གཅོད་པར་བྱེད་པ་གང་ཡིན་པ་དེ་ཁྱད་པར་ཡིན་ཏེ तद्विशेषणं भवति यद्विपक्षाद् हेतुं व्यवच्छिनत्ति त.प.170ख/798; व्यवच्छेदः क्रियते – དེ་ཉིད་རྟོག་པའི་ཡེ་ཤེས་ཀྱིས་རྣམ་པར་གཅོད་པར་བྱེད་པའི་ཕྱིར तस्यैव च परामर्शचेतसा व्यवच्छेदः क्रियते त.प.329क/1126; • *सं.* व्यवच्छेदः – བློ་གཞན་རྣམ་པར་གཅོད་བྱེད་པ། །དེས་ན་བློ་ནི་ཤེས་བྱས་ཏེ།། बुद्ध्यन्तराद् व्यवच्छेदस्तेन बुद्धेः प्रतीयते ॥ त.स.38ख/398; • *वि.* व्यवच्छेदकः – གང་ཞིག་གང་གཞན་ལས་རྣམ་པར་གཅོད་པར་བྱེད་པ་དེ་དག་ནི་དེ་ལས་ཐ་མི་དད་པ་མ་ཡིན་ཏེ यो हि यद्व्यवच्छेदकः, नासौ तदव्यतिरेकी त.प.283ख/279; གང་དང་གང་རྣམ་པར་གཅོད་པར་བྱེད་པ་དེ་དང་དེ་ནི་གཞན་ཡིན་ཏེ། དཔེར་ན་བ་ལང་ནག་པ་བཞིན་ནོ།། འདི་ལ་ཡང་ཐ་དད་པར་སྒྲུབ་པའི་ཚད་མ་འདི་དག་ཡོད་པ་ཡིན་ནོ།། 'यद्यस्य व्यवच्छेदकं तत्तस्मादन्यत्, तद्यथा गोपिण्डाच्चैत्रः' इत्येतानि तद्व्यतिरेकसाधनप्रमाणानि सन्ति वा.टी.72ख/28.

རྣམ་པར་གཅོད་བྱེད་པ = རྣམ་པར་གཅོད་པར་བྱེད་པ།

རྣམ་པར་བཅད = རྣམ་པར་བཅད་པ།

རྣམ་པར་བཅད་པ = རྣམ་བཅད • *सं.* 1. विच्छेदः – སྒྲོ་འདོགས་རྣམ་པར་བཅད་པ་ཡི། །ཡུལ་ཅན་ཉིད་ཀྱིས་ཚད་མ་ཡིན།། न समारोपविच्छेदविषयत्वेन मानता । त.स.48क/475; བ་ལང་ལ་རྭ་ཞེས་འཇིག་རྟེན། །རྭ་ལ་བ་ལང་འཇིག་རྟེན་མིན། །བ་ལང་ཞེས་བྱ་ཡན་ལག་ནི། །ལྷག་མ་རྣམ་བཅད་དམིགས་མེད་ཕྱིར།། शृङ्गं गवीति लोके स्यात् शृङ्गे गौरित्यलौकिकम् । गवाख्यपरिशिष्टाङ्गविच्छेदानुपलम्भनात् ॥ प्र.वा.124क/2.150; व्यवच्छेदः – ཐ་དད་པ་དང་ཐ་མི་དད་པ་ཕན་ཚུན་སྤངས་ཏེ་གནས་པའི་མཚན་ཉིད་དག་ལས་གཅིག་གི་རང་བཞིན་རྣམ་པར་བཅད་པ་ཉིད་ཀྱིས་གཞན་ཡོངས་སུ་གཅོད་པ་ཡིན་པའི་ཕྱིར་རོ།། भेदाभेदौ परस्परपरिहारस्थितलक्षणौ, तयोरेकस्वभावव्यवच्छेदेनैवापरस्य परिच्छेदात् त.प.183ख/828; རྣམ་པར་བཅད་པའི་ཆོས་མཐའ་དག་བསྡུས་པས संहृतसकलव्यवच्छेदधर्मैः प्र.वृ.279ख/21 2. विकर्तनम् – སྤུ་གྲི་ཡིས། །དམ་དུ་བཅིངས་པ་དེ་ཡི་ནི། །རྐང་པ་རྣམ་པར་བཅད་པར་བྱས།། क्षुरेण गाढबद्धस्य पादयोस्तद्विकर्तनम् ॥ अ.क. 337ख/44.15 3. विसर्गः – འདིར་དང་པོར་རྗེས་སུ་ང་རོ་དང་དེ་ནས་ཨ་ཡིག་དང་གཉི་གའི་དབུས་སུ་རྣམ་པར་བཅད་པ་དང इह प्रथममनुस्वारः, ततोऽकारः, उभयोर्मध्ये विसर्गः वि.प्र.128क/3.56; དབྱངས་རྣམས་ཀྱི་ཐིག་ལེ་དང་གསལ་བྱེད་རྣམས་ཀྱི་རྣམ་པར་བཅད་པ་དང

स्वराणां बिन्दुः, व्यञ्जनानां विसर्गः वि.प्र.35ख/4.10; གནམ་སྣོང་གི་མཐར་རྣམ་པར་བཅད་པ་ཨཿ་ཞེས་པ་སྟེ་དབྱངས་བཅུ་དྲུག་གོ། अमान्ते विसर्गः अः इति षोडशस्वराः वि.प्र.34क/4.10 4. = ལེའུ परिच्छेदः – དབྱུག་པ་ཅན་གྱིས་བྱས་པའི་སྙན་ངག་མེ་ལོང་ལས་རྣམ་པར་ཕྱེ་བའི་རྣམ་པར་བཅད་པ་སྟེ་དང་པོའོ། (पा.भे.) दण्डिना कृतौ काव्यादर्शे मार्गविभागो नाम प्रथमः परिच्छेदः का.आ.322क/49 5. = ཉི་མ विकर्तनः, सूर्यः मि.को.31ख *6. विवेचनम् – དམ་པའི་ལམ་ནི་ཡོངས་མ་བཏང་། །རིགས་དང་མི་རིགས་རྣམ་བཅད་ཅིང་། सन्मार्गस्यापरित्यागाद् युक्तायुक्तविवेचनात्। अ.क.281ख/36.15; *> རྣམ་པར་དཔྱད་པ། • भू.का.कृ. 1. विच्छिन्नः – གལ་ཏེ་ཤེས་པ་ལས་གཞན་པར། །འབྱུང་བ་བཞི་པོ་ཡོད་པ་མིན། །གསལ་བར་སྣང་བར་གྱུར་པ་ཡི། །རྣམ་བཅད་འདི་ནི་ཅི་ཞིག་ཡིན། यदि ज्ञानातिरेकेण नास्ति भूतचतुष्टयम्। तत् किमेतन्नु विच्छिन्नं विस्पष्टमवभासते ॥ त.स.71ख/670; व्यवच्छिन्नः – དེ་ལ་རིགས་ལ་སོགས་པས་རྣམ་པར་བཅད་པའི་དངོས་པོ་མིང་ཉིད་ཀྱིས་ཁྱད་པར་དུ་བྱས་པ་གཟུང་སྟེ तत्र जात्यादिव्यवच्छिन्नं वस्तु नाम्नैव विशिष्टं गृह्यते त.प.5क/455; ལུས་ནི་རེ་ཞིག་འདོད་པ་ཡི། །དོན་གྱི་རྣམ་བཅད་ཚིག་གི་ཕྲེང་། शरीरं तावदिष्टार्थव्यवच्छिन्ना पदावली ॥ का.आ.318ख/1.10; अवच्छिन्नः – སྤྱིའི་ངོ་བོ་ནི་གཉིས་ཏེ། ཁྱད་པར་གྱིས་རྣམ་པར་བཅད་པའི་ངོ་བོ་དང་རྣམ་པར་མ་བཅད་པའི་ངོ་བོའོ། द्विरूपं हि सामान्यम्–विशेषेणावच्छिन्नरूपम्, अनवच्छिन्नरूपं च त.प.10ख/467 2. विकृत्तः – དེ་ཡི་ཚིག་མདའ་རྣོན་པོ་ཡིས། །རྣམ་པར་བཅད་བཞིན་དགེ་སློང་རྣམས། तस्य वाक्यशरैस्तीक्ष्णैर्विकृत्ता इव भिक्षवः। अ.क.305ख/39.96.

རྣམ་པར་བཅིངས = རྣམ་པར་བཅིངས་པ།

རྣམ་པར་བཅིངས་པ •सं. विनिबन्धनम् – ཀྱེ་མ་སེམས་ཅན་འདི་དག་ནི... སྡུག་པ་དང་མི་སྡུག་པས་རྣམ་པར་བཅིངས་པ...མ་རིག་པའི་ཐིབས་པོས་ཀུན་ནས་ཡོག་པའི་ནང་ན་མི་མཐུན་པར་གྱུར་པ་ཡིན་གྱིས रुद्धा बतेमे सत्त्वाः... प्रियाप्रियविनिबन्धने... अविद्यागहनसंछन्ने द.भू.192क/18; • भू.का.कृ. विनिबद्धः – ཡིད་དུ་འོང་བ་དང་ཡིད་དུ་མི་འོང་བས་རྣམ་པར་བཅིངས་པ प्रियाप्रियविनिबद्धम् द.भू.196क/19; निबद्धः – རྒན་པོ་བདག་གིས་བུ་ཁྱོད་ལ། །རེ་བ་མཆོག་ཏུ་རྣམ་པར་བཅིངས། आशानिबद्धवृद्धेन त्वयि पुत्र मया परम् ॥ अ.क.248क/29.21; विवेष्टितः – གཞལ་ཡས་ཁང་ནས་སྐྱེས་བུ་དེ། །ལྷུང་བར་གྱུར་ཅིང་སྦྲུལ་གཟུགས་ཀྱི། །རྐང་བརྒྱ་པས་ནི་རིམ་པ་ཡིས། །ལན་བདུན་དཀྲིས་ཤིང་རྣམ་པར་བཅིངས། विमानपतितः सोऽपि पुरुषः सर्व[?सर्प]रूपया। शनैः सप्तभिरावर्तैः शतपद्या विवेष्टितः ॥ अ.क.169ख/19.71.

རྣམ་པར་བཅོམ = རྣམ་པར་བཅོམ་པ།

རྣམ་པར་བཅོམ་པ •सं. विघातः – དེ་ཡི་བསམ་པ་རྣམ་བཅོམ་པའི། །གདུང་བ་མྱུར་དུ་ཟློག་པར་མཛོད། आशाविघाते सन्तापस्तस्य तूर्णं निवार्यताम् ॥ अ.क.50ख/5.44; གཞན་རྨོངས་པ་དང་རྗེས་སུ་བརྗོད་པའི་ནུས་པ་རྣམ་པར་བཅོམ་པ་ལ་སོགས་པའི་ཕྱིར परव्यामोहनानुभाषणशक्तिविघातादिहेतोः वा.न्या.335क/65; • भू.का.कृ. विध्वस्तः – དེ་བཅོམ་རྣམ་པར་བཅོམ་སྟེ་ཐམ་པར་བྱས་ནས་སླར་ལོག་གོ། स हतविहतविद्धा[? विध्व]स्तः प्रत्यागतः वि.व.210क/1.84; विनाशितः – གསེར་གྱི་གླང་ཆེན་རྣམ་པར་བཅོམ། हेमहस्ती विनाशितः अ.क.363क/48.64; विध्वंसितः – འདི་སྐད

མ་ཐག་ཏུ་བདུད་ཀྱི་གནས་ཐམས་ཅད་བཅོམ་ཞིང་རྣམ་པར་བཅོམ་པར་གྱུར་ཏོ॥ अस्यां भाषितमात्रायां सर्वमारभवनानि ध्वस्तानि विध्वंसितान्यभूवन् स.दु. 115क/188; विलुप्तः – ཤུན་པས་རྣམ་པར་བཅོམ་པ་རྣམས་ཀྱིས། །ཞིང་དང་ཁང་པ་ཡོངས་སུ་བཟུང་॥ तमोभिश्च विलुप्तानां क्षेत्रागारपरिग्रहाः अ.क.233क/26.9; विदारितः – འཇིག་ཚོགས་ལྟ་བའི་རི་བོ་ནི། །ཡེ་ཤེས་རྡོ་རྗེས་རྣམ་བཅོམ་སྟེ॥ ज्ञानवज्रेण सत्कायदृष्टिशैले विदारिते। अ.क.183क/80.28; विसूत्रितः – དེ་ཡི་སྣང་བས་རྣམ་བཅོམ་པས། །ཀླུ་ཡི་ཁང་པར་རབ་རིབ་རྣམས། །འབྲོས་པར་བྱེད་པ་གཡོ་བ་ཡི། །སྦྲུལ་གྱི་ཚོགས་དང་མཚུངས་པར་གྱུར॥ तिमिरं नागभवने तत्प्रकाशविसूचि[? त्रि लि.पा.]तम्। पलायमानव्यालोलव्यालजालतुलां ययौ ॥ अ.क.43क/56.13; विजितः – དེ་ཡིས་བསྟན་པའི་ལམ་ལས་ནི། །ངལ་བ་རྣམ་བཅོམ་དེས་བགྲོད་པས॥ स व्रजन् विजितायासस्तेन निर्दिष्टवर्त्मना। अ.क.61ख/6.98.

རྣམ་པར་བཅོམ་པར་གྱུར *भू.का.कृ.* विघातितः – དེ་ཡིས་སྐྱེ་འཆི་སྲིད་སྲེད་འཕེལ་བྱེད་པ། །ཉོན་མོངས་དགྲ་དག་རྣམ་པར་བཅོམ་པར་གྱུར॥ येन क्लेशरिपवो विघातिता जातिमृत्युभवतृष्णवर्धकाः ॥ रा.प.230ख/123.

རྣམ་པར་ཆགས = རྣམ་པར་ཆགས་པ།

རྣམ་པར་ཆགས་པ • *सं.* = སྲེད་པ विरागः, तृष्णा – གང་དག་ཉིན་དང་མཚན་མོར་བུད་མེད་གྲོགས་ལ་རྣམ་པར་ཆགས་པས་དོན་ཀུན་ཉམས་འགྱུར་ཞིང་॥ येषां सर्वार्थनाशो भवति दिननिशं स्त्रीप्रसङ्गे विरागात् वि.प्र. 113क/1, पृ.10; विसक्तिः – སྲེད་པ་དང་འདོད་ཆགས་དང་ཆགས་པ་དང་རྣམ་པར་ཆགས་པ་ཞེས་བྱ་བའི་སྒྲ་ནི་རྣམ་གྲངས་དག་གོ॥ तृष्णा रागः सक्तिर्विसक्तिश्चेति पर्यायाः प्र.प.108ख/141; • *भू.का.कृ.* विलग्नः – ལྟ་བའི་ཐིབས་པོར་རྟག་ཏུ་རྣམ་པར་ཆགས། །ཡོད་དང་མེད་དང་དེ་བཞིན་ཡོད་མེད་པ། །ལྟར་གྱུར་དྲུག་ཅུ་གཉིས་ལ་བརྟེན་ནས་སུ། །དངོས་པོ་མེད་ལ་ཡོངས་སུ་འཛིན་ཅིང་གནས॥ विलग्न दृष्टीगहनेषु नित्यमस्तीति नास्तीति तथास्ति नास्ति। द्वाषष्टि दृष्टीकृत निश्रयित्वा असन्त भावं परिगृह्य ते स्थिताः ॥ स.पु.20ख/32; འདི་ལྟར་འདོད་ལ་རྣམ་པར་ཆགས་པའི་བློ། །བྱིས་པ་འདི་ཀུན་ང་ཡི་མི་ཉན་ཏོ॥ न चैव मे ते श्रुणि सर्वि बाला यथापि कामेषु कामविलग्नबुद्धयः स.पु.36क/62.

རྣམ་པར་ཆགས་བྱེད विलोभनम् – ཅེས་བརྗོད་ཙམ་ལ་དེ་ཡི་དུས་ཉིད་ན། །མི་བདག་བུ་ཡི་སྤྱན་གྱི་མཚོ་སྐྱེས་བྱུང་། །འཇིག་རྟེན་བདེན་པའི་བརྟུལ་ཞུགས་ཡིད་ཆེས་བྱེད། །དཔལ་མོ་རྣམ་པར་ཆགས་བྱེད་རབ་ཏུ་བྱུང་॥ इत्युक्तमात्रे नृपनन्दनस्य प्रादुर्बभूवाक्षिसरोजयुग्मम्। सत्यव्रतप्रत्ययकारिलोके विलोभनं तत्क्षणमेव लक्ष्म्याः ॥ अ.क.67ख/59.162.

རྣམ་པར་ཆད = རྣམ་པར་ཆད་པ།

རྣམ་པར་ཆད་པ • *सं.* विच्छेदः – གལ་ཏེ་སྒྲ་ཐམས་ཅད་དུ་སོང་བ་ཡིན་ན་ཇི་ལྟར་འདི་བུམ་པ་ལ་སོགས་པ་བཞིན་དུ་ཡུལ་རྣམ་པར་ཆད་པ་སྣ་ཚོགས་པ་ཉིད་དུ་དམིགས་ཏེ ननु च यदि सर्वगतः शब्दः, कथमस्य घटादेरिव देशविच्छेदे नानात्वमुपलभ्यते त.प.147ख/746; སྔོན་གྱི་འདུ་བྱེད་ལ་ལྟོས་ཅན། །ཤེས་པ་བར་དུ་ཆོད་པ་ཡི། །རྣམ་ཤེས་ལས་ཀྱང་སྐྱེ་འགྱུར་བས། །གཉིད་ཀྱིས་དེ་ནི་རྣམ་ཆད་མིན॥ पूर्वसंस्कारसापेक्षं ज्ञानं व्यवहितादपि। विज्ञानाज्जायते तस्य न विच्छेदोऽस्ति मिद्धतः ॥ प्र.अ.70ख/78; • *भू.का.कृ.* विच्छिन्नः – རྟེན་ནི་རྣམ་པར་ཆད་པའི་ཚེ། །གང་ཞིག་བྱ་ལ་བརྟན་པའི་ཡིད॥

विच्छिन्नालम्बने काले यत्कर्तव्यदृढं मनः ॥ अ.क.63[ख]/6.122; ཉེས་པ་ནི...རྣམ་ཆད་པ॥ कलङ्का यस्य विच्छिन्नाः अभि.अ.4[क]/1.62; व्यवच्छिन्नः – རྒྱུད་གསུམ་རྣམ་པར་འཆད་[? ཆད་]པ་སྟེ། །ཡོད་པ་དང་ནི་མེད་པ་སྤངས॥ त्रिसन्ततिव्यवच्छिन्नं सत्ताऽसत्ताविवर्जितम् । ल.अ.168[क]/123; अवच्छिन्नः – སྤྱིའི་ངོ་བོ་ཡང་གཉིས་ཏེ། ཁྱབ་པས་[? ཁྱད་པར་གྱིས་] རྣམ་པར་ཆད་པ་ནི་དཔེར་ན་བ་ལང་ཉིད་ལ་སོགས་པ་བཞིན་ནོ॥ རྣམ་པར་མ་ཆད་པ་ནི་དཔེར་ན་ཡོད་པ་དང་དངོས་པོ་ཉིད་ལ་སོགས་པ་བཞིན་ནོ॥ सामान्यं च द्विरूपम्–विशेषेणावच्छिन्नं यथा गोत्वादि, अनवच्छिन्नं यथा सत्तावस्तुत्वादि त.प.9[क]/463.

རྣམ་པར་ཆད་པར་སྣང་བ विच्छिन्नप्रतिभासिता – གཞན་ཡང་བདེ་བ་ལ་སོགས་པ་ལ་གཟུང་བར་བྱ་བ་ཡིན་ནོ॥ སྔོན་པོ་ལ་སོགས་པ་བཞིན་དུ་རྣམ་པར་ཆད་པར་སྣང་བར་འགྱུར་ན अपि च–ग्राह्यत्वे सति सुखादीनां विच्छिन्नप्रतिभासिता स्यान्नीलादिवत् त.प.19[ख]/485.

རྣམ་པར་ཆོམས क्रि. विदार्यताम् – མྱུར་དུ་རབ་ལྕི་རྫོམ་པ་ཡིས། །བྱིས་པ་འདི་ནི་རྣམ་པར་ཆོམས॥ तूर्णं गुरुतरारम्भेर्दारकोऽसौ विदार्यताम् । अ.क.127[ख]/66.28; विध्वंसयेत ब.वि.167[ख]।

རྣམ་པར་འཆད = རྣམ་པར་འཆད་པ།

རྣམ་པར་འཆད་པ •क्रि. व्याचक्षते – གང་དག...ཞེས་རྣམ་པར་འཆད་པ ये तु व्याचक्षते... इति अभि.स्फु. 4[ख]/7; • सं. 1. विच्छेदः – དཔེར་ན་རེག་པ་[ལ་སོགས་པ]འི་དབང་པོ་རྣམ་པར་འཆད་པར་མི་འཛིན་པ यथा त्वगादेरिन्द्रियस्य विच्छेदेन ग्रहणं न भवति त.प.185[ख]/832 2. व्याख्यानम् – དེ་བཞིན་གཤེགས་པའི་གསུང་རབ་རྣམ་པར་འཆད་པའི་སྒྲོལ་གྱིས तथागतप्रवचनव्याख्यानव्याजेन प्र.प.53[ख]/65.

རྣམ་པར་འཆད་མི་འགྱུར क्रि. न विच्छेदमेति – ལུས་འདི་ཡོངས་བསྒྱུར་བརྒྱ་ཡི་མཐའ་མར་མི་ཕྱིན་ཅིང་། །མགྱོགས་པར་བྲོས་པ་དག་ལ་རྣམ་པར་འཆད་མི་འགྱུར॥ नायाति कायपरिवृत्तिशतैर्विरामं विच्छेदमेति न जवेन पलायितस्य । अ.क.125[ख]/65.1.

རྣམ་པར་འཆིང་བ क्रि. विनिबध्यते – དེ་ལ་སེམས་ཅན་ཡང་དག་པ་མ་ཡིན་པ་ལ་ལྷག་པར་ཆགས་པ་དེ་ནི་རྣམ་པར་འཆིང་བ་སྟེ तत्र सत्त्वा अभूता अध्यवसिता विनिबध्यन्ते सु.प.30[ख]/9.

རྣམ་པར་འཇོམས = གསོད་པ विशसनम्, मारणम् – प्रमापणं निबर्हणं निकारणं...विशसनम् अ.को.2.8.114; विशस्यते विशसनम् । शसु हिंसायाम् अ.वि2.8.114.

རྣམ་པར་འཇིག = རྣམ་པར་འཇིག་པ།

རྣམ་པར་འཇིག་པ •क्रि. 1. विनश्यति – ཕ་རོལ་དམག་ཚོགས་ལྷགས་ནས་སུ། །ཡུལ་འཁོར་དེ་ནི་རྣམ་པར་འཇིག॥ विनश्यति च तद्राष्ट्रं परचक्रस्य चाक्रमे । सु.प्र.38[क]/72; བསྐལ་པ་བྱེ་བར་འབྱུང་བ་ནི། །སྐད་ཅིག་ཉིད་ནི་རྣམ་འཇིག་པ॥ कल्पकोटिशतोपात्तः क्षणादेव विनश्यति ज्ञा.सि.48[क]/123; विलोपयति – གླང་ཆེན་དབང་པོས་རྫིང་བུ་བཞིན། །རང་གི་ཡུལ་འཁོར་རྣམ་པར་འཇིག॥ विलोपयति स्वं राष्ट्रं गजेन्द्र इव पद्मिनीम् ॥ सु.प्र.38[क]/72; विलुप्यते – གླང་ཆེན་རྣམས་ཀྱིས་རྫིང་ཆེན་བཞིན། །ཡུལ་འཁོར་དེ་ནི་རྣམ་པར་འཇིག॥ विलुप्यते च तद्राष्ट्रं गजैरिव महासरः ॥ सु.प्र.39[ख]/75; नश्यते – གདུགས་ཀྱི་ཕྱག་རྒྱ་དེ་མཐོང་བས། །བགེགས་རྣམས་ཀུན་ནི་རྣམ་པར་འཇིག॥ नश्यन्ते सर्वविघ्ना वै दृष्ट्वा मुद्रां सच्छत्रकाम् ॥ म.मू.248[ख]/281 2. वि-

नङ्क्ष्यति – ལྷ་རྣམས་རབ་ཏུ་འཁྲུགས་པས་ན། །དེ་ཡི་ཡུལ་ནི་རྣམ་པར་འཇིག། देवतानां परिकोपाद्विषयोऽस्य विन[ङ्]क्ष्यति सु.प्र.38क/72; •सं. 1. विनाशः – བདག་ནི་འདོད་པ་གང་ཡིན་དེས། །རྣམ་པར་འཇིག་པར་ཇི་ལྟར་འདོད།། यस्यात्मावल्लभस्तस्य विनाशं कथमिच्छति। प्र.अ.141ख/151; विध्वंसः मि.को.50ख; विध्वंसनम् – འདུ་བྱེད་ཀྱི་རྣམ་པ་ཐམས་ཅད་རྙིལ་བ་དང་ལྷུང་བ་དང་རྣམ་པར་འཐོར་བ་དང་རྣམ་པར་འཇིག་པའི་ཆོས་ཅན་དུ་རྩད་ཆོད་ནས सर्वसंस्कारगतीः शतनपतनविकरणविध्वंसनधर्मतया पराहत्य अ.श. 28ख/24; विनाशनम् – འཁྲུལ་པ་ཙམ་ཞིག་རྣམ་པར་འཇིག།། भ्रममात्रविनाशनम् ज्ञा.सि.50क/9; विदारणम्–བརྗོད་པ་དང་རིགས་པ་དང་དེ་ཁོ་ན་ཉིད་ཀྱི་མཚན་ཉིད་རྣམ་པར་འཇིག་པ भाष्ययुक्तितत्त्वलक्षणविदारणम् ल.अ.72क/20 2. विप्रलोपः – བཅོམ་ལྡན་འདས་ཕྱི་མའི་དུས་དང་[བདེ་བར་གཤེགས་པ་] ཕྱི་མའི་དུས་སུ་བསྟན་པ་རྣམ་པར་འཇིག་པར་འགྱུར་བ་ན पश्चिमे भगवन् काले पश्चिमे सुगत समये शासनविप्रलोपे वर्तमाने म.मू.272क/427 3. व्यवसादः – རབ་འབྱོར་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའི་ལམ་གྱི་བར་མ་དོར་རྣམ་པར་འཇིག་པ་གང་ཞེ་ན कश्च सुभूते बोधिसत्त्वस्यान्तराव्यध्वनि व्यवसादः अ.सा.254ख/143 4. = རྣམ་པར་འཇིག་པ་ཉིད विप्रलोपता–སྡུག་བསྔལ་བ་དང...རྣམ་པར་འཇིག་པ་དང... [འདུ་བྱེད་ཀྱི་རྣམ་པ་ཐམས་ཅད་ལ་]... རབ་ཏུ་རྟོག་གོ།། दुःखतां च...विप्रलोपतां च...सर्वसंस्कारगतस्य प्रत्यवेक्षते द.भू.195ख/19; •पा. विभावनम् – རྣམ་པར་འཇིག་པ་འཕྲོབ་པ विभावनभावना अभि.भा.55ख/1082; अभि.स्फु.265क/1082; विभावना–དེ་རྣམ་པར་འཇིག་པ་ནི་བྲལ་བ་སྟེ། དམིགས་པ་མེད་པའི་ངོ་བོའོ།། तस्य विभावना विगमोऽनालम्बनीभावः सू.व्या.246क/162; རྣམ་པར་འཇོག་[? འཇིག་]པ་ཡང་ལུས་ལ་དམིགས་པའི་ཉོན་མོངས་པ་ཐག་བསྲིང་བ་ཡིན་ནོ།། विभावनापि कायालम्बनस्य क्लेशस्य निर्धावनम् अभि.स्फु.265क/1082; •वि. विनाशी – སྐད་ཅིག་རེ་རེ་རྣམ་འཇིག་པའི། ...།རྒྱུ་ཡི་ངེས་པར་རིག་ནས་ནི།། प्रतिक्षणविनाशिनाम्। हेतूनां नियमं बुद्ध्वा त.स.21क/228; གཙང་བ་མིན་པ་ཀུན་གྱི་གཏེར། །བྱས་པ་མི་གཟོ་རྣམ་པར་འཇིག། །ལུས་ངན་དག་གི་ཆེད་དུ་ཡང་།། सर्वाशुचिनिधानस्य कृतघ्नस्य विनाशिनः। शरीरकस्यापि कृते ना.ना.241क/145; विनाशकः – གང་ན་འབྲེལ་ལས་ལོགས་ཤིག་ན། །དངོས་པོ་བསྐྱེད་པ་ཡོད་ཅེས་པ། །འབྲེལ་པ་རྣམ་པར་འཇིག་པ་སྟེ། །རྒྱུ་མེད་སྨྲ་བར་ཤེས་པར་བྱ།། यस्य जन्यो भवेद्भावः संकलायाः पृथक् क्वचित्। अहेतुवादी विज्ञेयः संकलाया विनाशकः॥ ल.अ.136क/82.

རྣམ་པར་འཇིག་པ་འཕྲོབ་པ *पा.* विभावनभावना, भावनाभेदः – འཕྲོབ་པ་དྲུག་སྟེ། བཞི་པོ་དེ་དག་དང་། སྡོམ་པ་འཕྲོབ་པ་དང་རྣམ་པར་འཇིག་པ་འཕྲོབ་པའོ།། षड् भावनाः–एताश्चतस्रः; संवरभावना, विभावनभावना च अभि.भा.55ख/1082; སྡོམ་པ་དང་རྣམ་པར་འཇིག་པ་འཕྲོབ་པ་དག་ནི་གོ་རིམས་བཞིན་དུ་གཉེན་པོ་དང་ཐག་བསྲིང་བ་འཕྲོབ་པའི་ཁོངས་སུ་ཡང་འདུས་ལ संवरविभावनभावने प्रतिपक्षनिर्धावनभावनान्तर्भूते यथाक्रमम् अभि.स्फु.265क/1082.

རྣམ་པར་འཇིག་པར་འགྱུར •*क्रि.* 1. विप्रणश्यति–ཤིན་ཏུ་ཡུན་རིང་གླིང་སྤྱད་ནས། །སྲེད་པས་རྣམ་པར་འཇིག་པར་འགྱུར།། भुक्त्वा तु सुचिरं द्वीपांस्तृष्णया विप्रणश्यति॥ ल.अ.188क/159; विलुप्यति लो.को.1402; विपद्यते – གང་ཕྱིར་ལུས་ནི་དུས་བཞི་གྲངས། །གནས

ཀྱང་རྣམ་པར་འཇིག་པར་འགྱུར༎ युगसंख्यामपि स्थित्वा विपद्यन्ते हि देहिनः ॥ अ.क.50ख/5.42 2. व्यवसादमापत्स्यते – རབ་འབྱོར་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་དེ་ནི་ལམ་གྱི་བར་མ་དོར་རྣམ་པར་འཇིག་པར་འགྱུར་བར་རིག་པར་བྱའོ༎ वेदितव्यमेतत्सुभूते अयं बोधिसत्त्वोऽन्तरा व्यध्वनि व्यवसादमापत्स्यते अ.सा. 254ख/143.

རྣམ་པར་འཇིག་པར་བྱེད = རྣམ་པར་འཇིག་པར་བྱེད་པ།

རྣམ་པར་འཇིག་པར་བྱེད་པ •*क्रि.* विनश्यते – རྟོག་པ་རྣམ་པར་འཇིག་པ་ན། །ང་ཡི་ཚུལ་ཡང་རྣམ་འཇིག་བྱེད༎ कल्पितं हि विनाशेते मम नेत्री विनश्यते । ल.अ. 178क/142; •*वि.* विनाशकः – དེ་དག་མཐའ་གཉིས་ལྷུང་བ་སྟེ། །གཞན་ཡང་རྣམ་པར་འཇིག་པར་བྱེད༎ द्वयान्तपतिता ह्येते अन्येषां च विनाशकाः ॥ ल.अ. 178ख/142; विलोपकारकः – ཇི་ལྟར་དགའ[? རྒ་]བ་རྣམ་པར་འགྱུར་བར་བྱེད་པ་དང་། ཇི་ལྟར་ནད་ཀྱིས་རྣམ་པར་འཇིག་པར་བྱེད་པ་དང यथा विकारकरी च जरा, यथा विलोपकारकश्च व्याधिः रा.प.250ख/152; वैनाशिकः – བློ་གྲོས་ཆེན་པོ་དེ་སྐད་ཟེར་བ་ཡང་རྣམ་པར་འཇིག་པར་བྱེད་པ་ཡིན་ནོ༎ एवमपि ब्रुवन् महामते वैनाशिको भवति ल.अ.113क/59.

རྣམ་པར་འཇིག་མ *वि.स्त्री.* विनाशिनी ब.वि.165ख।

རྣམ་པར་འཇིགས་བྱེད *ना.* विभीषणः 1. राक्षसराजः – གང་ཡང་སྲིན་པོའི་རྒྱལ་པོ་ཆེན་པོ་དེ་དག...འདི་ལྟ་སྟེ། སྒྲ་སྒྲོགས་དང...རྣམ་པར་འཇིགས་བྱེད་དང...མགོ་མཐའ་ཡས་པ येऽपि ते महाराक्षसराजानः [? जाः]...तद्यथा–रावणः ...विभीषणः...अनन्तशिरश्चेति म.मू.103क/12 2. नागराजः – ཀླུའི་རྒྱལ་པོ་རྣམ་པར་འཇིགས་བྱེད विभीषणो नागराजा[? जः] म.व्यु. 3303 (57क).

རྣམ་པར་འཇུ་བྱེད *ना.* विद्रावणः, राक्षसराजः – གང་ཡང་སྲིན་པོའི་རྒྱལ་པོ་ཆེན་པོ་དེ་དག... འདི་ལྟ་སྟེ། སྒྲ་སྒྲོགས་དང...རྣམ་པར་འཇུ་བྱེད་དང...མགོ་མཐའ་ཡས་པ येऽपि ते महाराक्षसराजानः[? जाः...तद्यथा–रावणः ...विद्रावणः ...अनन्तशिरश्चेति म.मू.103क/12.

རྣམ་པར་འཇོག = རྣམ་པར་འཇོག་པ།

རྣམ་པར་འཇོག་པ •*क्रि.* व्यवस्थापयति म.व्यु.5169; व्यवस्थाप्यते – མིང་འདི་ནི་འདི་ལྟ་བུའི་དོན་དུ་དངོས་པོ་ལ་རྣམ་པར་འཇོག་སྟེ इदं नाम इत्यर्थं वस्तुनि व्यवस्थाप्यते बो.भू.33क/36; •*सं.* व्यवस्था – དེ་དག་ཇི་ལྟར་མདོ་སྡེའི་སྡེ་སྣོད་དང་འདུལ་བའི་སྡེ་སྣོད་དང་ཆོས་མངོན་པའི་སྡེ་སྣོད་གསུམ་རྣམ་པར་འཇོག कथं तेषां पिटकत्रयव्यवस्था–सूत्रपिटकः, विनंयपिटकः, अभिधर्मपिटक इति अभि.स्फु.9क/15; འདི་ནི་སྔོན་པོ་རིག་པ་ཡིན་གྱི་སེར་པོ་ནི་མ་ཡིན་ནོ་ཞེས་ཡུལ་རྟོགས་པ་རྣམ་པར་འཇོག་པའི་རྒྱུ་མཚན་ནི་དོན་དང་འདྲ་བ་ཉིད་ཡིན་གྱི། གཞན་ནི་མ་ཡིན་ནོ༎ नीलास्प[? नीलस्ये]दं संवेदनं न पीतस्येति विषयावगतिव्यवस्थाया अर्थसारूप्यमेव निबन्धनम्, नान्यत् त.प.20ख/488; व्यवस्थितिः – དེ་ཉིད་ཀྱི་ཕྱིར་ཁྱིར་ཁྱབ་པ་དང་ཆ་ཤས་མེད་པའི་རྣ་བ་ལྡན་པ་ཅན་ཐ་དད་པའི་ཕྱིར་འོན་པ་ལ་སོགས་པའི་རྣམ་པར་འཇོག་པ་ཡིན་ནོ༎ अत एव च व्यापिनिरवयवस्य श्रोत्रस्य संसर्गिभेदाद् बाधिर्यादिव्यवस्थितिः त.प.145क/741; དེ་ཙམ་གྱི་ནི་ཚ་ཡིས་ནི། །ཚད་མ་ཉིད་དུ་རྣམ་འཇོག་ལ༎ एतावता च लेशेन प्रमाणत्वव्यवस्थितौ। त.स.57क/549; स्थितिः – ངོ་ཤེས་པ་ནི་དངོས་པོ་རྣམས། །རྣམ་པར་འཇོག་པའི་རྒྱུ་མ་ཡིན༎ प्रत्यभिज्ञा पदार्थानां भवेन्न स्थितिकारणम् ॥

प्र.अ.141ख/151; व्यवस्थानम्–ཇི་ལྟ་བ་བཞིན་དུ་རྣམ་པར་འཇོག་པ་ནི་འཇིག་རྟེན་ལས་འདས་པའི་རྗེས་ལ་ཐོབ་པ་འཇིག་རྟེན་པ་སྟེ यथाव्यवस्थानं च लोकोत्तरपृष्ठलब्धं लौकिकम् सू.व्या.194ख/94; རྣམ་པར་འཇོག་པ་དང་རྣམ་པར་མི་རྟོག་པ་ཞེས་བྱ་བ་ནི་ས་རྣམ་པར་འཇོག་པའི་ཡེ་ཤེས་དང་རྣམ་པར་མི་རྟོག་པའོ॥ व्यवस्थानाविकल्पेनेति भूमिव्यवस्थानज्ञानेनाविकल्पेन च सू.व्या.187क/84; प्रत्यवस्थानम्–རྣམ་པར་འཇོག་པ་རྟོགས་པའི་རང་བཞིན་གྱི་ཆོས་འཕགས་པའི་ཡེ་ཤེས་སོ་སོ་རང་གིས་རིག་པའི་ཏིང་ངེ་འཛིན་གྱི་བདེ་བ་ལ་གནས་པ་ནི་མི་བརྗོད་དོ॥ न च प्रत्यवस्थानगतिस्वभावधर्मार्यज्ञानप्रत्यात्माधिगमसमाधिसुखविहारमुद्भावयति ल.अ.92ख/39; व्यवस्थापनम् – དེར་ནི་བདེན་པ་རྣམ་པར་འཇོག་པ་མངོན་པར་རྟོགས་པའི་མཐའ་ལས་བྱུང་བ་ཀུན་རྫོབ་ཤེས་པ་རྣམས तत्र पुनः सत्यव्यवस्थापनान्यभिसमयान्तिकानि संवृतिज्ञानानि अभि.स.भा.89ख/122; སྡོམ་ཞེས་བྱ་བ་ནི་དོན་ཅི་ཞེ་ན། གཅིག་ཏུ་རྣམ་པར་འཇོག་པ་ཞེས་བྱ་བའི་ཐ་ཚིག་གོ॥ सङ्कलनमिति कोऽर्थः ? एकत्वेन व्यवस्थापनमिति योऽर्थः अभि.स्फु.149क/868; འོན་ཀྱང་རྣམ་པར་གཞག་པ་དང་རྣམ་པར་འཇོག་པའི་སྒོ་ནས་ཡིན་ནོ॥ अपि तु व्यवस्थाप्यव्यवस्थापनभावेन न्या.टी.46क/82; व्यवस्थापना–དམ་པའི་ཆོས་ལྟར་བཅོས་པ་རྣམས་ལ་སྲེད་ཅིང་སྟོན་ལ་རྣམ་པར་འཇོག་པའོ॥ सद्धर्मप्रतिरूपकाणां च रोचना देशना व्यवस्थापना बो.भू.151ख/196; प्रतिष्ठापनम् – བདག་གི་སྨྲ་བ་རྣམ་པར་གཞག་པ་ཐམས་ཅད་རྣམ་པར་འཇོག་པའི་ཕྱིར་ཤེས་རབ सर्वस्ववादव्यवस्थानप्रतिष्ठापनाय च प्रज्ञा बो.भू.114ख/147; • वि. व्यवस्थापकः – རྣམ་པར་འཇོག་པའི་ཚད་མ་གཞན་ལ་ལྟོས་ནས་ནི་གཞལ་བྱ་ཁོ་ན་ཡིན་གྱི་ཚད་མ་ནི་མ་ཡིན་པའི་ཕྱིར་འཆོལ་བའི་ཉེས་པ་མེད་དེ व्यवस्थापकप्रमाणान्तरापेक्षया तु प्रमेयमेव न प्रमाणमिति न साङ्कर्यदोषः त.प.239ख/950; द्र. རྣམ་པར་གཞག་པ།

རྣམ་པར་འཇོག་པའི་རྒྱུ *पा.* व्यवस्थापनहेतुः – དེ་བས་ན་མྱོང་བར་འགྱུར་བའི་འདྲ་བ་ནི་རྣམ་པར་འཇོག་པའི་རྒྱུ་ཡིན་ལ तस्मात् सारूप्यमनुभूतं व्यवस्थापनहेतुः न्या.टी.46क/83; स्थितिकारणम्–ངོ་ཤེས་པ་ནི་དངོས་པོ་རྣམས། །རྣམ་པར་འཇོག་པའི་རྒྱུ་མ་ཡིན॥ प्रत्यभिज्ञा पदार्थानां भवेन्न स्थितिकारणम् ॥ प्र.अ.141ख/151.

རྣམ་པར་འཇོག་པར་བྱེད = རྣམ་པར་འཇོག་པར་བྱེད་པ།

རྣམ་པར་འཇོག་པར་བྱེད་པ • *क्रि.* अवस्थापयति – བྱས་པ་དང་མ་བྱས་པ་ཉིད་ཀྱི་སྒོ་ནས་དངོས་པོ་རྣམས་ཕུང་པོ་གཉིས་ཁོ་ནར་རྣམ་པར་འཇོག་པར་བྱེད་དོ॥ कृतकाकृतकत्वेन भावानां द्वैराश्यमवस्थापयन्ति त.प.226क/167; • *वि.* व्यवस्थापकः – རྣམ་པར་གཞག་པར་བྱ་བ་དང་རྣམ་པར་འཇོག་པར་བྱེད་པའི་ངོ་བོས་བསྒྲུབ་པར་བྱ་བ་དང་སྒྲུབ་པར་བྱེད་པར་རྣམ་པར་གཞག་གོ व्यवस्थाप्यव्यवस्थापकभावेन साध्यसाधनव्यवस्था त.प.20ख/488.

རྣམ་པར་འཇོམས = རྣམ་པར་འཇོམས་པ།

རྣམ་པར་འཇོམས་པ • *क्रि.* विहन्यते – སྡིག་པ་བྱེད་པ་བདེ་འདོད་ཀྱང་། །གང་དང་གང་དུ་འགྲོ་འགྱུར་བ། །དེ་དང་དེར་ནི་སྡིག་པ་དེས། །སྡུག་བསྔལ་མཚོན་གྱིས་རྣམ་པར་འཇོམས॥ पापकारिसुखेच्छा तु यत्र यत्रैव गच्छति। तत्र तत्रैव तत्पापैर्दुःखशस्त्रैर्विहन्यते ॥ बो.अ.21ख/7.43; •*सं.* 1. विनाशः – ཞི་གནས་རབ་ཏུ་ལྡན་པའི་ལྷག་མཐོང་གིས། །ཉོན་མོངས་རྣམ་པར་འཇོམས་པར་ཤེས་བྱས་ནས॥ शमथेन विपश्यनासुयुक्तः कुरुते

क्लेशविनाशमित्यवेत्य। बो.अ.23ख/8.4; विघातः – སེམས་ཅན་བཏགས་དང་དེའི་རྒྱུ་ཡི། །ཡུལ་ཅན་དེ ཡིས་རྣམ་འཇོམས་པས། །སྒོམ་པའི་ལམ་དང་འབྲེལ་པ ཡི། །མི་མཐུན་ཕྱོགས་གཞན་རྣམ་པ་དགུ། सत्त्वप्रज्ञप्तितद्धेतुविषयो नवधाऽपरः। भावनामार्गसंबद्धो विपक्षस्तद्विघाततः॥ अभि.अ.10ख/5.32; विनाशनम् – མུ་གེ་ལ་སོགས་རྣམ་པར་འཇོམས॥ दुर्भिक्षादिविनाशनम् स.दु.117क/198; विध्वंसनम् – འཕགས་པ་མི་རྐུན་རྣམ་པར་འཇོམས་པ་ཞེས་བྱ་བའི་གཟུངས आर्यचोरविध्वंसननामधारणी क.त.961; विदारणम् – དཔའ་བོ་གླང་ཆེན་སེང་གེ་དེ། །དགྲ་ནི་རྣམ་འཇོམས ནུས་གྱུར་ཀྱང་॥ स वीरकुञ्जरहरिः शक्तोऽप्यरिविदारणे। अ.क.27ख/3.95; विमर्दनम् – ཚེས་གྲངས གཉིས་ཀའི་དབུས་སུ་ནི། །ཟླ་བ་ཉི་མ་རྣམ་འཇོམས་པ॥ तिथ्योरुभयोर्मध्ये विमर्दनेन्दुसूर्ययोः। वि.प्र.182ख/1.38; विनिर्भेदनम् – སེམས་ཅན་ཐམས་ཅད་ཀྱི་ཉོན མོངས་པའི་རི་རྣམ་པར་འཇོམས་པའི་ཡེ་ཤེས་རྡོ་རྗེའི མཚོན་ཆ་མདའ་བ सर्वसत्त्वक्लेशपर्वतविनिर्भेदनमहाज्ञानवज्रप्रहरणः ग.व्यू.161ख/244 2. = གསོད་པ विशरः, वधः – प्रमापणं निबर्हणं... विशरघातोन्माथवधा अपि अ.को.2.8.115; विशरणं विशरः। शॄ हिंसायाम् अं.वि.2.8.115; •ना. 1. विध्वंसकः, बुद्धः – ལྟེ་བར་ཤཱ་ཀྱའི་དབང་པོ་ཡི། །བདག་པོ་ཐུབ་པ་བྲི བར་བྱ།... རྣམ་པར་འཐོར་བ་རླུང་ཉིད་དུ། །རྣམ་པར འཇོམས་པ་བདེན་བྲལ་བྲི॥ नाभौ शाक्याधिपेन्द्रमुनिं संलिखेत्...विकिरिणं चैव वायव्यां नैर्ऋत्यां विध्वंसकं लिखेत्॥ स.दु.112ख/182 2. विस्फोटकः, नागः म.व्यु.3345(मि॰ སྦྲུ་ཏ་གཱ: 57ख); •वि. विघातकः – ཡེ་ཤེས... ཉེས་པ་ཐམས་ཅད་རྣམ་འཇོམས་པ ज्ञानं... सर्वदोषविघातकम् ल.अ.187ख/158; विध्वंसनी – དེ་ནས་སླར་ཡང་བཅོམ་ལྡན་འདས་ཀྱིས་གདོན་མི་ཟ་བར མི་ཚོམས་པར་སྒྲིབ་པ་ཐམས་ཅད་རྣམ་པར་འཇོམས་པ ཞེས་བྱ་བའི་ཏིང་ངེ་འཛིན་ལ་སྙོམས་པར་ཞུགས་ནས अथ खलु भगवान् पुनरप्यमोघाप्रतिहतसर्वावरणविध्वंसनीनामसमाधिं समापद्य स.दु.115क/190; विनाशनी – དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་སྒྲིབ པ་མ་ལུས་པ་རྣམ་པར་འཇོམས་པ་ཞེས་བྱ་བའི་སྙིང་པོའི གཟུངས सर्वतथागताशेषावरणविनाशनीं नाम हृदयधारणीम् स.दु.115क/188; •उ.प. घ्नः – མཁས པ་རྣམས་ཀྱི་དགའ་བ་བསྐྱེད། །བར་མ་རྣམས་ཀྱི་བློ་ཡང སྤྲེལ། །ཐ་མའི་རབ་རིབ་རྣམ་འཇོམས་པས། །གསུང་འདི སྐྱེ་བོ་ཀུན་ལ་སྨན॥ विदुषां प्रीतिजननं मध्यानां बुद्धिवर्धनम्। तिमिरघ्नं मन्दानां सार्वजन्यमिदं वचः॥ श.बु.113क/78; विदारणः, ०णा – འཁོར་བའི་ཕ་རོལ མཐར་སོན་པ།...།ཤེས་རབ་མཚོན་ཆས་རྣམ་འཇོམས་པ॥ संसारपारकोटिस्थः...प्रज्ञाशस्त्रविदारणः वि.प्र.139क/1, पृ.38; गु.स.125क/75; རྡོ་རྗེ་རྣམ་པར་འཇོམས་པ ཞེས་བྱ་བའི་གཟུངས वज्रविदारणानामधारणी क.त. 949; འཕགས་པ་རྡོ་རྗེ་རྣམ་པར་འཇོམས་པ་ཞེས་བྱ བའི་གཟུངས་ཀྱི་རྒྱ་ཆེར་འགྲེལ་པ་རིན་པོ་ཆེ་གསལ་བ ཞེས་བྱ་བ आर्यवज्रविदारणानामधारणीटीकारत्नाभास्वरानाम क.त.2680; རྡོ་རྗེ་རྣམ་འཇོམས་པའི དཀྱིལ་འཁོར་གྱི་ཆོ་ག་ཞེས་བྱ་བ वज्रविदारणामण्डलविधिनाम क.त.2942.

རྣམ་པར་འཇོམས་པར་བྱེད་པ •क्रि. विनिहन्ति – སྐྱེ་བོ ངན་པ་དགོད་ན་ཡང་། །རྣམ་པར་འཇོམས་བྱེད་རོ་ལངས བཞིན॥ हसन्तोऽपि विनिघ्नन्ति वेताला इव दुर्जनाः॥ अ.क.89ख/9.41; •सं. विधमनम् – རྣམ་པར

འཇོམས་པར་བྱེད་པའི་རྒྱལ་པོ विधमनराजः म.मू.93ख /5.

རྣམ་པར་འཇོམས་པར་བྱེད་པའི་རྒྱལ་པོ *ना.* विधमनराजः, बुद्धः – ལག་བཟང་དང...རྣམ་པར་འཇོམས་པར་བྱེད་པའི་རྒྱལ་པོ་དང...ཤཱཀྱ་ཐུབ་པ सुबाहुः...विधमनराजः...शाक्यमुनिश्च म.मू.93ख/5.

རྣམ་པར་འཇོམས་བྱེད = རྣམ་པར་འཇོམས་པར་བྱེད་པ།

རྣམ་པར་འཇོམས་མ *वि.स्त्री.* विध्वंसनी ब.वि.171ख।

རྣམ་པར་འཇོམས་མཛད *वि.* व्याघातकर्ता – སྣང་དང་རབ་རིབ་རྣམ་པར་འཇོམས་མཛད་དམ་ཆོས་ཉི་མ་དེ་ལ་འདུད།། तस्मै धर्मदिवाकराय...दोषतिमिरव्याघातकर्त्रे नमः ॥ र.वि.79ख/11.

རྣམ་པར་བརྗེ་བ विक्रेयम्, पण्यम् – विक्रेयं पणितव्यं च पण्यं क्रयादयस्त्रिषु। अ.को.2.9.82; विक्रेतुं योग्यं विक्रेयम् अ.वि.2.9.82.

རྣམ་པར་བརྗེད་པ *भू.का.कृ.* विस्मृतः – གང་ཞིག་མཐོང་བ་ཉིད་ཀྱིས་དེ། །དྲན་པ་རྣམ་པར་བརྗེད་པར་གྱུར།། यस्य संदर्शनेनैव साऽभवत् विस्मृतस्मृतिः ॥ अ.क.146क /14.81.

རྣམ་པར་བརྗོད་པ • *सं.* व्यपदेशः – བཅོམ་ལྡན་འདས་ཀྱིས་རྟེན་ཅིང་འབྲེལ་བར་འབྱུང་བ་བཤད་པས་རྒྱུ་རྣམ་པར་བརྗོད་པ་ཉིད་བགྱིས་ཏེ प्रतीत्यसमुत्पादं पुनर्भगवता देशयता कारणव्यपदेश एव कृतः ल.अ.96ख/43; व्याहारः मि.को.62ख; •*भू.का.कृ.* विकथितम् म.व्यु.7246 (103क).

རྣམ་པར་ཉམས = རྣམ་པར་ཉམས་པ།

རྣམ་པར་ཉམས་པ • *क्रि.* विनश्यति – བློ་དང་དགའ་ཐན་[? དྲན་]གྲགས་པ་རྣམས། །ཕྲག་དོག་གིས་བཞིན་རྣམ་པར་ཉམས།། ईर्ष्ययैव विनश्यन्ति धीधृतिस्मृतिकीर्तयः ॥ अ.क.83ख/8.52; •*सं.* 1. विनाशः – རང་གི་མིག་ནི་རྣམ་པར་ཉམས་ཚུལ་བཤད།། न्यवेदयत्...निजं...नेत्रविनाशवृत्तम् अ.क.67क/59.154; ཆུ་ཡིས་མེ་ནི་རྣམ་པར་ཉམས་པ་དང་པོར་འདིར་ནི་ལུས་ཀྱི་དབུས་སུ་སྦྱོམ་བརྩོན་རྣམས་ཀྱིས་བྱ तोयेनाग्नेर्विनाशं प्रथममिह यतिः कारयेद् देहमध्ये वि.प्र.32ख/4.7; विहानिः – དེས་ནི་ཆོས་དཀར་ཐོབ་པ་དང་། །མ་ཐོབ་པ་ལས་རྣམ་ཉམས་འགྱུར།། प्राप्ताप्राप्तविहानिं शुक्लेर्धर्मैः समाप्नुते तेन। सू.अ.221क/129; འཕགས་པས་དེ་དག་ས་བོར་ནས་གཏོང་ངོ་ཞེས་འབྱུང་བས་རྣམ་པར་ཉམས་པ་ཡང་བཤད་ལ भूमित्यागात्त्यजत्यार्य इत्यादिवचनाद्विहानिरुक्ता अभि.स्फु.173क/918; म्लानिः – བཀུར་བ་རྣམ་པར་ཉམས मानम्लानिः अ.क.22क/52.30 2. विभङ्गः – ཡང་དག་ཡེ་ཤེས་ནི་ཉིན་མོའི་སྣང་བ་བཞིན་དུ་ཐམས་ཅད་མཐོང་བའོ།། རྣམ་ཉམས་ཡེ་ཤེས་ནི་མཚན་མོའི་སྣང་བ་བཞིན་སེམས་ཅན་རྣམས་ཀྱི་འཆི་བ་དང་འཚོ་བ་ཅུང་ཟད་མཐོང་བའོ།། सम्यग्ज्ञानं दिवालोकवत्सर्वदर्शि, विभङ्गज्ञानं रात्र्यालोकवत्किञ्चित् सत्त्वानां जीव[न]मरणदर्शि वि.प्र.273ख/2.98; • *भू.का.कृ.* विनष्टः – བརྟན་པ་རྣམ་པར་ཉམས विनष्टधैर्या अ.क.275ख/102.10; ཞེ་སྡང་སྡིག་པ་རྣམ་པར་ཉམས་པ विनष्टद्वेषकल्मषाः अ.क.325ख/41.16; རྒྱལ་པོའང་དེ་སྡིག་ནག་པོ་བརྩེགས་ལྟ་བུས། །ཆུ་བུར་གྱིས་གཏམས་སྤྱོད་ཚུལ་རྣམ་པར་ཉམས།། राजापि तत्किल्बिषकालकूटविस्फोटसंघट्टविनष्टचेष्टः। अ.क.296ख/38.19; विक्षतः – དེ་ཡི་སྙིང་ཁའི་གཞི་ནི་རྣམ་པར་ཉམས་པ་སྐད་ཅིག་མཚོན།། वक्षःस्थली क्षणमलक्षत विक्षताऽस्य अ.क.18ख/51.45; विभ्रष्टः – ཕྱུར་འགྲོ་འཕྲུགས་པས་རྣམ་ཉམས་པ། །ཁྱོད་ནི་སིན་ཏུ་ཏོག་ཏུ

རྣམ་པར་བཏུད *भू.का.कृ.* प्रणतः – ལུས་བཏུད་ལུས་མངོན་པར་བཏུད་ལུས་རྣམ་པར་བཏུད अवनतकाया अभिनतकायाः प्रणतकायाः स.पु.39क/71.

རྣམ་པར་བཏུད་པ = རྣམ་པར་བཏུད།

རྣམ་པར་བཏུལ *भू.का.कृ.* विनीतवान् – སྲོག་ཆགས་བྱེ་བ་སྟོང་ཡང་རྣམ་པར་བཏུལ།། विनीतवान् प्राणिसहस्रकोटयः स.पु.12क/19.

རྣམ་པར་ཧྲེན་པར་བྱེད *क्रि.* विभजते – འཇིག་རྟེན་སྣ་ཚོགས་ནི་ལས་ཉིད་ལས་སེམས་ཅན་རྣམས་རྣམ་པར་ཧྲེན་པར་བྱེད་དེ कर्म एव सत्त्वानां विभजते लोकवैचित्र्यम् म.मू.191ख/128.

རྣམ་པར་རྟོག = རྣམ་པར་རྟོག་པ། རྣམ་པར་རྟོག་ཅིང विकल्प्य – སྨིག་སྨྲིའི་ཆུ་ལ་དབྱེད་ཀྱི་ཉི་མས་གདུངས་པའི་རི་དྭགས་རྣམས་ཆུའི་དངོས་པོར་རྣམ་པར་རྟོག་ཅིང་བཏུང་བར་འདོད་པའི་ཕྱིར་རབ་ཏུ་རྒྱུག मृगतृष्णोदकं मृगा उदकभावेन विकल्प्य ग्रीष्माभितप्ताः पातुकामतया प्रधावन्ति ल.अ.91क/38.

རྣམ་པར་རྟོག་པ • *क्रि.* विकल्पते – ཇི་སྲིད་རྣམ་པར་རྣམ་རྟོག་པ། །དེ་སྲིད་སྒྲོངས་པས་སེམས་འཇུག་གོ།། <?> यावद् विकल्पते भ्रान्तिस्तावत् प्रवर्तते ॥ ल.अ.167ख/122; विकल्पेति – མུ་ངན་འདས་ལྟའི་མུ་སྟེགས་ཅན། །ཐ་དད་པར་ནི་རྣམ་པར་རྟོག།། निर्वाणदृष्टयस्तीर्थ्या विकल्पेन्ति पृथक्पृथक् । ल.अ.129क /75; कल्पति – རྒྱུ་དང་རྐྱེན་རྣམས་འདུས་པ་ལས། །འབྱུང་བར་བྱིས་པ་རྣམ་རྟོག་སྟེ།། हेतुप्रत्ययसामग्र्यां बालाः कल्पन्ति संभवम् । ल.अ.97ख/44; विकल्पयति – བཅོམ་ལྡན་འདས་ཆོས་ཐམས་ཅད་ནི་གཉིས་སུ་མ་མཆིས་པ་སྟེ། གཅིག་གིས་གཅིག་མ་འཚལ་རྣམ་པར་མ་འཚལ་མི་རྟོག་རྣམ་པར་མི་རྟོག अद्वितीयाश्च भगवन् सर्वधर्माः । परस्परं न जानन्ति न विजानन्ति न कल्पयन्ति न विकल्पयन्ति शि.स.146क/140; विकल्प्यते – འདས་པ་ཡང་འདི་ལྟར་འདས་པ་ཞེས་རྣམ་པར་རྟོག་གོ།། अतीतोऽप्येवं विकल्प्यते 'अतीतः' ल.अ.63क/8; कल्प्यते – རི་མོ་བྲིས་པའི་གཞི་མཐོན་དམན་མེད་པ་ལ་བྱིས་པ་རྣམས་མཐོན་དམན་དུ་རྣམ་པར་རྟོག་གོ།། चित्रकरकृतप्रदेशा अनिम्नोन्नताः सन्तो निम्नोन्नता बालैः कल्प्यन्ते ल.अ.91ख/38; •*सं.* 1. विकल्पः, कल्पनम् – གཏིང་མི་ཚུགས་པ་ལོག་པའི་རྣམ་པར་རྟོག་པ་དག་གིས་ཆོག་གོ།། इति अलमप्रतिष्ठितैर्मिथ्याविकल्पैः प्र.वृ.280क/22; विकल्पनम् – དེ་ནི་གཅིག་ཏུ་འཛིན་པའི་ཡུལ་ཡིན་པའི་ཕྱིར་རོ།། དེས་ན་འདི་ལ་རྣམ་པར་རྟོག་པ་མེད་དོ།། तदेकपरामर्शविषयत्वात् । तदसत् विकल्पनम् प्र.अ.41क/47; སྣང་དང་འཇུག་པར་རྣམ་རྟོག་པས། །མི་བཙོན་རྣམས་ལ་སྐྱེ་བར་འགྱུར།། संजायतेऽयुक्तानामाभा वृत्तिर्विकल्पनैः ॥ ल.अ.182क/148; विकल्पना – དེ་ལྟ་བུ་དང་མཐུན་པའི་ཚུལ་གྱི་དབྱེ་བ་ཚད་མེད་པས་ངོ་བོ་ཉིད་དུ་རྣམ་པར་རྟོག་པ་ལ་བརྟེན་པ་དེ་བྱེ་བྲག་ཏུ་བྱ་བའི་ཕྱིར་རྣམ་པར་རྟོག་པ་གང་ཡིན་པ། དེ་ནི་བྱེ་བྲག་ཏུ་རྣམ་པར་རྟོག་པ་ཞེས་བྱའོ།། इत्येवंभागीयेनाप्रमाणेन प्रभेदनयेन या स्वभावविकल्पाधिष्ठाना तद्विशिष्टार्थविकल्पना । अयमुच्यते विशेषविकल्पः बो.भू.29क/35; का.आ.334ख/3.2 2. वितर्कः – འདུ་འཛི་དང་མི་དགེ་བའི་རྣམ་པར་རྟོག་པ་ཐག་བསྲིངས་པའི་ཕྱིར संसर्गाकुशलवितर्कदूरीकरणात् अभि.भा.8क/892; རྣམ་རྟོག་མེ་ཡིས་བདག་ལུས་བསྲེགས་པ་བཞིན།། वितर्कवह्निर्दहतीव मां पुनः जा.मा.177ख/206; རྣམ་པར་རྟོག་པ་ཡོངས་སུ་དོར།། वितर्कान् परिवर्जयेत् बो.अ.23ख/8.2; परिवितर्कः – དེ་ནས་བཅོམ་ལྡན་འདས་ཀྱིས་བྱང

ཆུབ་སེམས་དཔའ་དེ་དག་གི་སེམས་ཀྱི་རྣམ་པར་རྟོག་པ ཐུགས་ཀྱིས་ཐུགས་སུ་ཆུད་ནས अथ खलु भगवांस्तेषां बोधिसत्त्वानां चेतसैव चेतःपरिवितर्कमाज्ञाय स.पु. 81ख/138; विमर्शः – དེ་ཁོ་ན་ཉིད་མི་ཉམས་ན་ཡང རྣམ་པར་ཕྱེ་སྟེ་སྣང་བར་མི་འགྱུར་བའམ། རྣམ་པར་ཕྱེ ནས་སྣང་བ་ན་ཡང་གལ་ཏེ་ཡོངས་སུ་གཅོད་པར་བྱེད་པ རྗེས་ལ་ཐོབ་པ་དག་པ་འཇིག་རྟེན་པའི་ཤེས་པ་རྣམ་པར རྟོག་པའི་ཤེས་པ་སྐྱེ་བར་འགྱུར་ན <?>[अ]प्रच्युतत-त्त्वस्यापि विभागेनावभासनमेव वा न स्यात्, विरु-द्धा[? विभक्ता]वभासनस्यापि यदि परिच्छेदकः शु-द्धलौकिको विमर्शप्रत्ययः पृष्ठभावी नोत्पद्यते त.प.328ख/1124; परामर्शः – གང་ཡང་རུང་བ་རྣམ་པར རྟོག་པ་ན་གཞན་མི་རྟོག་པའི་ཕྱིར་རོ་དང་གཟུགས་ལ སོགས་པ་བཞིན་ནོ༎ एकतरपरामर्शे सत्यपरस्यापरा-मर्शनात्, रसरूपादिवत् त.प.127क/704; विचारः – ཅི་གེ་དེ་འདི་ཡིན་ནམ་འོན་ཏེ་མ་ཡིན་ཞེས། །རྣམ་རྟོག གཡེང་བས स्यात्किं नु सोऽयमुत नेति विचारदोला-लोलस्य जा.मा.10क/9; विचारणा – སྤྱོད་དམ་མི་སྤྱོད སྙམ་པ་ཡི། །རྣམ་པར་རྟོག་པ་རྣམ་སྤངས་ནས༎ विषह्य-मविषह्यं वेत्यवधूय विचारणाम्। श.बु.110ख/10 3. कल्पना – འདིར་རྣམ་པར་རྟོག་པ་གཉིས་ཏེ། རེས་འགའ མེད་པར་དགག་པའི་ངོ་བོའི་མ་བྱས་པ་དང་འཇིག་པ་དག གིས་སམ་མ་ཡིན་པའི་དགག་པའི་ངོ་བོ་དག་གིས་རྟག་པ ཉིད་དུ་འདོད अत्र द्वयी कल्पना–किं प्रसज्यप्रति-षेधरूपाभ्यामकृतकत्वाविनाशाभ्यां नित्यत्वमि-ष्टम्, पर्युदासरूपाभ्यां वा त.प.174ख/807; परि-कल्पना – དེ་ཚེའང་བདག་ཉིད་ཡིན་སྙམ་པའི། །རྣམ རྟོག་དེ་ནི་ལོག་པ་སྟེ༎ अहमेव तदापीति मिथ्येयं प-रिकल्पना। शि.स.192क/192; བདག་གིས་དེ་ནི་སྦྱོང སྙམ་པའི། །རྣམ་པར་རྟོག་དེ་ལོག་པ་སྟེ༎ अहमेव तदा-पीति मिथ्येयं परिकल्पना। बो.अ.27क/8.98 4. सङ्कल्पः – འཚེ་བའི་རྣམ་རྟོག་སྡིག་པས་ནི། །རྡོ་རྗེ་ལྟ བུས་ཡང་དག་བཅོམ༎ हिंसासङ्कल्पपापेन वज्रेणेव स-माहतः। अ.क.343क/45.11; སྡིག་པའི་སེམས་ལྡན གཉིས་སྐྱེས་འདིའི། །རྣམ་རྟོག་འདི་ནི་འཇིགས་སུ་རུང༎ सङ्कल्पोऽयं द्विजस्यास्य क्रूरः कलुषचेतसः। अ.क. 52क/5.61; རྣམ་པར་རྟོག་པ་ཐམས་ཅད་སྤངས་པའི གཙོ་བོ सर्वसङ्कल्पवर्जितो नायकः त.सि.66ख/176

5. वितर्कितम् – གང་འདི་ཕན་པ་དང་ལྡན་པ། བྱམས པ་དང་ལྡན་པ། སེམས་ཅན་ཐམས་ཅད་ལ་ཕན་པ་དང བདེ་བར་བྱ་བའི་ཕྱིར་རྣམ་པར་རྟོག་ཅིང་རྣམ་པར་དཔྱོད པ། དེ་དག་ལ་རྣམ་པར་རྟོག་པ་ཡིན यानीमानि हितोप-संहितानि मैत्र्युपसंहितानि सर्वसत्त्वहितसुखाय वि-तर्कितविचारितानि, तान्यनुवितर्कयिता भवति द.भू.189क/16; • *पा.* विकल्पः – རྟོག་པ་ནི་ངོ་བོ་ཉིད་དུ རྟོག་པའོ༎ རྣམ་པར་རྟོག་པ་ནི་ཁྱད་པར་དུ་རྟོག་པར་རིག པར་བྱའོ༎ स्वभावकल्पनं कल्पः। विशेषकल्पनं विकल्पो वेदितव्यः सू.व्या.254ख/173; གཟུང་བ དང་འཛིན་པར་རྟོག་པས་ཡོངས་སུ་བསྒོས་པ་ནི་རྟོག་པའི ཡིད་ལ་བྱེད་པ་སྟེ། གཟུང་བ་དང་འཛིན་པར་རྣམ་པར རྟོག་པ་དེའི་རྟེན་ཡིན་པས། འདི་ནི་ཡིད་ལ་བྱེད་པ་ལ ཕྱིན་ཅི་མ་ལོག་པའོ༎ ग्राह्यग्राहकजल्पपरिभावितो जल्पमनस्कारस्तस्य ग्राह्यग्राहकविकल्पस्याश्रयो भवति, इत्ययं मनस्कारेऽविपर्यासः म.भा.22क/5.16; བདག་དང་བདག་གིར་མངོན་པར་ཆགས་པས་རྣམ པར་རྟོག་པ་ཞེས་བསྒྲགས་པ་སེམས་དང་སེམས་ལས བྱུང་བ་མང་པོ་འབྱུང་བ་འབྱུང་ངོ༎ चित्तचैत्तकलापो विकल्पसंशब्दितः प्रवर्तमानः प्रवर्तते आत्मात्मी-याभिनिवेशात् ल.अ.115क/61; ལྟ་བ་ལ་རྣམ་པར་རྟོག པ दृष्टिविकल्पः ल.अ.106ख/52; རྣམ་རྟོག་རྣམ

པར་ཤེས་པ་ལས། །བཟློག་པས་མྱ་ངན་ང་འདས་སོ།། विकल्पहेतुविज्ञाने निवृत्ते निर्वृतो ह्यहम् ॥ ल.अ.106[क]/52; ཚིག་གི་རྣམ་པར་རྟོག་པ वाग्विकल्पः ल.अ.89[क]/36; कल्पः – རྣམ་རྟོག་ཀུན་ལས་ངེས་གྲོལ་ཞིང ॥ सर्वकल्पविनिर्मुक्तान् ज्ञा.सि.44[क]/112; མཐོང་དང རྣམ་རྟོག་དབྱེ་མི་ཤེས། །འཇིག་རྟེན་ཕྱི་རོ་སྙམ་དུ་སེམས།། दृश्यकल्पाविभागज्ञो लोको बाह्यं तु मन्यते ॥ त.स.40[क]/411; •वि. विकल्पकः – བརྟགས་པ་ནི་ཚད་མ ལ་བརྗོད་ཀྱི་རྣམ་པར་རྟོག་པའི་ཤེས་པ་ནི་མ་ཡིན་ནོ།། विचारप्रमाणमुच्यते, न विकल्पकम्विज्ञानम् प्र.अ.171[क]/185; མཐོང་བ་འགའ་ལ་ཤེས་པ་གང་། །སྤྱི་ཡི དོན་ཅན་རྣམ་རྟོག་པ། །གཞན་གྱི་ཆ་སྒྲོ་མ་བཏགས་པ། །དེ་ཙམ་སེལ་བའི་སྤྱོད་ཡུལ་ཅན།། क्वचिद् दृष्टेऽपि यज्ज्ञानं सामान्यार्थं विकल्पकम् । असमारोपितान्यांशे तन्मात्रापोहगोचरम् ॥ प्र.वृ.276[क]/18; विकल्पिका – རྣམ་པར་རྟོག་པའི་བློ་གང་ཡིན་པ या विकल्पिका बुद्धिः त.प.276[ख]/267; अनुवितर्कयिता – སེམས་ཅན་ཐམས་ཅད་ལ་ཕན་པ་དང་བདེ་བར་བྱ་བའི ཕྱིར་རྣམ་པར་རྟོག་ཅིང་རྣམ་པར་དཔྱོད་པ་དེ་དག་ལ་རྣམ པར་རྟོག་པ་ཡིན सर्वसत्त्वहितसुखाय वितर्कितविचारितानि, तान्यनुवितर्कयिता भवति द.भू.189[क]/16.

རྣམ་པར་རྟོག་པ་བཅུ दशविधो विकल्पः – 1. མེད་པར རྣམ་པར་རྟོག་པ अभावविकल्पः, 2. ཡོད་པར་རྣམ པར་རྟོག་པ भावविकल्पः, 3. སྒྲོ་འདོགས་པའི་རྣམ པར་རྟོག་པ अध्यारोपविकल्पः, 4. སྐུར་བ་འདེབས པའི་རྣམ་པར་རྟོག་པ अपवादविकल्पः, 5. གཅིག་པ ཉིད་དུ་རྣམ་པར་རྟོག་པ एकत्वविकल्पः, 6. ཐ་དད་པ ཉིད་དུ་རྣམ་པར་རྟོག་པ नानात्वविकल्पः, 7. རང་གི མཚན་ཉིད་ལ་རྣམ་པར་རྟོག་པ स्वलक्षणविकल्पः, 8. ཁྱད་པར་ལ་རྣམ་པར་རྟོག་པ विशेषविकल्पः, 9. མིང ཇི་ལྟ་བ་བཞིན་དུ་དོན་མངོན་པར་ཞེན་པའི་རྣམ་པར་རྟོག པ यथानामार्थाभिनिवेशविकल्पः, 10. དོན་ཇི་ལྟ་བར མིང་དུ་མངོན་པར་ཞེན་པའི་རྣམ་པར་རྟོག་པ यथार्थनामाभिनिवेशविकल्पः सू.व्या.180[ख]/75.

རྣམ་པར་རྟོག་པ་ན विकल्पयन् – འདི་ལྟར་དོན་ལྐོག ཏུ་གྱུར་པ་རྣམ་པར་རྟོག་པ་ན་བདག་ཉིད་རྟོག་པར་བྱེད ཀྱི། མཐོང་བ་ནི་མ་ཡིན་ནོ་ཞེས तथाहि परोक्षमर्थं विकल्पयन्त उत्प्रेक्षामहे न तु पश्याम इति न्या.टी.46[ख]/86.

རྣམ་པར་རྟོག་པ་ཅན वि. सवितर्कः – རྣམ་པར་རྟོག་པ ཅན་རྣམ་པར་དཔྱོད་པ་ཅན...བསམ་གཏན་དང་པོ་ལ་ཉེ བར་བསྒྲུབས་ཏེ་གནས་སོ།། सवितर्कं सविचारं...प्रथमं ध्यानमुपसंपद्य विहरति द.भू.198[क]/20; विकल्पिका – རྣམ་པར་རྟོག་པ་ཅན་གྱི་བློ་ནི་དེ་དག་ལས་གཞན པ་ལས་ལྡོག་པ་ཅན་གྱི་དངོས་པོ་རྣམས་ལ་བརྟེན་ནས་སྐྱེ བ་ན बुद्धिः खलु तदन्यव्यतिरेकिणः पदार्थानाश्रित्योत्पद्यमाना विकल्पिका प्र.वृ.282[क]/24.

རྣམ་པར་རྟོག་པ་གཅོད་པར་བྱེད་པ་ཡིན क्रि. वितर्कोपच्छेदाय संवर्तते – ཁ་ཅིག་ན་རེ་འདི་ནི་སྣ་ཚོགས་ལ་མི དམིགས་པའི་ཕྱིར་རྣམ་པར་རྟོག་པ་གཅོད་པར་བྱེད་པ ཡིན་གྱི अविचित्रालम्बनत्वादेषां वितर्कोपच्छेदाय संवर्तत इत्येके अभि.भा.9[क]/895.

རྣམ་པར་རྟོག་པ་དང་བཅས = རྣམ་པར་རྟོག་པ་དང བཅས་པ།

རྣམ་པར་རྟོག་པ་དང་བཅས་པ वि. सविकल्पः म.व्यु.7453 (106[क]); सविकल्पकः – དེ་ལྟ་ན་ནི་རྣམ་པར

རྟོག་པ་དང་བཅས་པ་ཉིད་དུ་འགྱུར་རོ་ཞེ་ན तथा च सविकल्पकं स्यात् न्या.टी.42[क]/52; འདི་མེ་ཞེས་བྱ་མངོན་སུམ་ཉིད། །རྣམ་རྟོག་བཅས་པར་གང་སྨྲས་ལ།། सविकल्पकमध्यक्षमेषोऽग्निरिति यो वदेत् ॥ प्र.अ. 157[ख]/171.

རྣམ་པར་རྟོག་པ་དང་བཅས་པའི་གཟུགས་བརྙན *पा.* सविकल्पं प्रतिबिम्बम्, व्याप्यालम्बनभेदः – ཁྱབ་པའི་དམིགས་པ... རྣམ་པ་བཞི... འདི་ལྟ་སྟེ། རྣམ་པར་རྟོག་པ་དང་བཅས་པའི་གཟུགས་བརྙན་དང...དགོས་པ་ཡོངས་སུ་གྲུབ་པའོ།། व्याप्यालम्बनं...चतुर्विधम्। तद्यथा–सविकल्पं प्रतिबिम्बं...कार्यपरिनिष्पत्तिश्च श्रा.भू.75[क]/193.

རྣམ་པར་རྟོག་པ་དང་བརྟགས་པ་སྤངས *वि.* विकल्पकल्परहितः – བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་སེམས་དཔའ་ཆེན་པོ་གཞན་རྣམས་རྣམ་པར་རྟོག་པ་དང་བརྟགས་པ་སྤངས་ཤིང अन्ये च बोधिसत्त्वा महासत्त्वा विकल्पकल्परहिताः ल.अ.106[क]/52.

རྣམ་པར་རྟོག་པ་དང་མཚུངས་པ विकल्पसमः – རྣམ་པར་རྟོག་པ་དང་མཚུངས་པ་ནི་ཆོས་མཐུན་ན་ཡང་ཁྱད་པར་བརྗོད་པ་རྟོག་པ་དང་མཚུངས་པ་ཡིན་ནོ།། विकल्पसमं तु 'साधर्म्येऽपि विशेषोक्तिर्विकल्पसमम्' प्र.अ. 39[क]/45.

རྣམ་པར་རྟོག་པ་སྤངས *वि.* विकल्पवर्जितः – ཕྲ་ཞིང་བལྟ་དཀའ་རྣམ་པར་རྟོག་པ་སྤངས།...།མཁས་པ་རྣམས་ཀྱི་ཟག་མེད་སྤྱོད་ཡུལ་ཏེ།། सूक्ष्मदुर्दृशविकल्पवर्जितः ...गोचरो हि विदुषामनास्रवः द.भू.171[क]/4.

རྣམ་པར་རྟོག་པ་སྤྱད་པ *पा.* वितर्कचरितः, पुद्गलभेदः – དེ་ལ་སྤྱོད་པའི་རབ་ཏུ་དབྱེ་བས་ནི་གང་ཟག་བདུན་རྣམ་པར་གཞག་སྟེ...རྣམ་པར་རྟོག་པ་ཤས་ཆེ་བ་གང་ཡིན་པ་དེ་ནི་རྣམ་པར་རྟོག་པ་སྤྱད་པའོ།། तत्र चरितप्रभेदेन सप्तानां पुद्गलानां व्यवस्थानम्...यो वितर्कोन्मदः स वितर्कचरितः श्रा.भू.71[क]/184; द्र. རྣམ་པར་རྟོག་པ་སྤྱོད་པ།

རྣམ་པར་རྟོག་པ་སྤྱོད་པ *पा.* वितर्कचरितः, पुद्गलभेदः – སེམས་ཅན་ཐམས་ཅད་འདུལ་བ་ཡིན་པའི་ཕྱིར་འདུལ་བ་ནི་གཅིག་ཏུ་འགྱུར་རོ།།... རྣམ་པ་ལྔ་ནི་འདོད་ཆགས་སྤྱོད་པ་དང་ཞེ་སྡང་སྤྱོད་པ་དང་གཏི་མུག་སྤྱོད་པ་དང་ང་རྒྱལ་སྤྱོད་པ་དང་རྣམ་པར་རྟོག་པ་སྤྱོད་པའོ།། स्यादेकविधो विनेयः सर्वसत्त्वा विनेया इति कृत्वा...पञ्चविधः–रागचरितो द्वेषचरितो मोहचरितो मानचरितो वितर्कचरितश्च बो.भू.155[क]/200; द्र. རྣམ་པར་རྟོག་པ་སྤྱད་པ།

རྣམ་པར་རྟོག་པ་མི་མངའ་བ *वि.* अविकल्पः – བློ་གྲོས་ཆེན་པོ་སྔོན་གྱི་རྒྱལ་བ་ལ་བྱ་བ་བྱས་པ...རྣམ་པར་རྟོག་པ་མི་མངའ་བ... བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་ཆེན་པོ་རྣམས་ནི महामते पूर्वजिनकृताधिकाराणां... अविकल्पानां... बोधिसत्त्वानाम् ल.अ.155[क]/102.

རྣམ་པར་རྟོག་པ་མེད = རྣམ་པར་རྟོག་པ་མེད་པ།

རྣམ་པར་རྟོག་པ་མེད་པ *वि.* अविकल्पः – བསམ་གཏན་དེ་ནི་རྟོག་པ་མེད་རྣམ་པར་རྟོག་པ་མེད་གཡོ་བ་མེད... ཐམས་ཅད་དུ་རྗེས་སུ་སོང་བ अकल्पं तद् ध्यानमविकल्पमनिञ्जनम्... सर्वत्रानुगतं च ल.वि.124[क]/183; निर्विकल्पः – རྣམ་རྟོག་མེད་པའི་སེམས་ཀྱིས་སུ། །ཕྲག་དོག་འཕྲན་དང་ང་རྒྱལ་བསྒོམ།། भावयेर्ष्यां च मानं च निर्विकल्पेन चेतसा ॥ बो.अ.29[क]/8.140; निर्विकल्पकः म.व्यु.4472(70[क]); अवितर्कः – དེ...རྣམ

པར་རྟོག་པ་དང་རྣམ་པར་དཔྱོད་པ་མེད་པ། ཏིང་དེ་འཛིན་ལས་སྐྱེས་པའི་དགའ་བ་དང་བདེ་བ་བསམ་གཏན་གཉིས་པ་ཉེ་བར་བསྒྲུབས་ཏེ་གནས་སོ॥ सः...अवितर्कमविचारं समाधिजं प्रीतिसुखं द्वितीयं ध्यानमुपसंपद्य विहरति द.भू.198[क]/20; རྣམ་པར་རྟོག་པ་མེད་པ་ཡི། །དགེ་བའི་ལས་ཀྱི་རྣམ་སྨིན་ནི། །སེམས་ཀྱི་ཚོར་བ་ཁོ་ནར་འདོད॥ कुशलस्यावितर्कस्य कर्मणो वेदना मता। विपाकश्चैतसिक्येव अभि.को.13[क]/664.

རྣམ་པར་རྟོག་པ་མེད་པ་ཉིད • सं. अविकल्पता – རྣམ་རྟོག་མེད་པ་ཉིད་ཀྱིས་ནི། །རང་གི་མཚན་ཉིད་ལ་མངོན་སུམ། །རྣམ་རྟོག་མེད་པར་སྤྱི་འཛིན་མིན། །དེ་ཕྱིར་དེ་ལ་རྗེས་དཔག་ཉིད॥ स्वलक्षणे च प्रत्यक्षमविकल्पतया विना। विकल्पेन न सामान्यग्रहस्तस्मिंस्ततोऽनुमा॥ प्र.वा.121[क]/2.75; • पा. निर्विकल्पता – ཡོན་ཏན་བརྒྱད་གང་ཞེ་ན། བསམ་དུ་མེད་པ་ཉིད་དང་གཉིས་སུ་མེད་པ་ཉིད་དང་རྣམ་པར་རྟོག་པ་མེད་པ་ཉིད་དང...འདོད་ཆགས་དང་བྲལ་བའི་རྒྱུའོ॥ अष्टौ गुणाः कतमे। अचिन्त्यत्वम्, अद्वयता, निर्विकल्पता...विरागहेतुरिति र.व्या.80[क]/11.

རྣམ་པར་རྟོག་པ་མེད་པའི་གཟུགས་བརྙན པा. निर्विकल्पं प्रतिबिम्बम्, व्याप्यालम्बनभेदः – ཁྱབ་པའི་དམིགས་པ...རྣམ་པ་བཞི...རྣམ་པར་རྟོག་པ་མེད་པའི་གཟུགས་བརྙན་དང... དགོས་པ་ཡོངས་སུ་གྲུབ་པའོ॥ व्याप्यालम्बनं...चतुर्विधम्...निर्विकल्पं प्रतिबिम्बं...कार्यपरिनिष्पत्तिश्च श्रा.भू.75[क]/193.

རྣམ་པར་རྟོག་པ་ལ་མངོན་པར་ཆགས་པ वि. विकल्पाभिनिविष्टः – ཇི་ལྟར་བྱིས་པ་མུ་སྟེགས་ཅན་གྱི་རྣལ་འབྱོར་ལ་རྣལ་འབྱོར་ཅན...རྣམ་པར་རྟོགས་པ་ལ་མངོན་པར་ཆགས་པ་[མཚན་གཞི་དང་]མཚན་ཉིད་དུ་ལྷུང་བའི་བསམ་པས་བརྟགས་པ यथा बालतीर्थयोगयोगिभिः कल्प्यते... विकल्पाभिनिविष्टैर्लक्ष्यलक्षणपतिताशयैः ल.अ.59[ख]/5.

རྣམ་པར་རྟོག་པ་ཤས་ཆེ་བ पा. उन्मदवितर्कः, पुद्गलभेदः – དེ་ལ་གང་ཟག་ནི་ཉི་ཤུ་རྩ་བརྒྱད་ཡོད་དེ...དབང་པོ་རྟུལ་པོ་དང...རྣམ་པར་རྟོག་པ་ཤས་ཆེ་བ་དང...གཉིས་ཀའི་ཚ་ལས་རྣམ་པར་གྲོལ་བའོ॥ तत्र पुद्गला अष्टाविंशतिः...मृद्विन्द्रियः...उन्मदवितर्कः...उभयतोभागविमुक्तश्च श्रा.भू.67[ख]/169; वितर्कोन्मदः–དེ་ལ་སྤྱོད་པའི་རབ་ཏུ་དབྱེ་བས་ནི་གང་ཟག་བདུན་རྣམ་པར་གཞག་སྟེ...རྣམ་པར་རྟོག་པ་ཤས་ཆེ་བ་གང་ཡིན་པ་དེ་ནི་རྣམ་པར་རྟོག་པ་སྤྱོད་པའོ॥ तत्र चरितप्रभेदेन सप्तानां पुद्गलानां व्यवस्थानम्...यो वितर्कोन्मदः स वितर्कचरितः श्रा.भू.71[क]/184.

རྣམ་པར་རྟོག་པའི་སྒོམ་པ विकल्पभावना–དེ་ལྟར་ལྷའི་སྒྲུབ་པ་ལ་རྣམ་པར་རྟོག་པའི་སྒོམ་པ་དང་དེ་ཁོ་ན་ཉིད་ཀྱི་སྒྲུབ་པ་ལ་རྣམ་པར་རྟོག་པ་དང་བྲལ་བ་ཡན་ལག་བཞི་པོ་རྣམས་ཀྱིས་སོ॥ एवं देवतासाधने विकल्पभावना, तत्त्वसाधने विकल्परहितैश्चतुरङ्गैः वि.प्र.68[क]/4.120.

རྣམ་པར་རྟོག་པའི་མཐར་ཐུག་པ वि. विकल्पपरिनिष्ठितः – ཐོག་མ་མེད་པའི་བག་ཆགས་ལས་བྱུང་བའི་རྣམ་པར་རྟོག་པའི་མཐར་ཐུག་པའི་སྒྲ་ལས་བྱུང་བ अनादिवासनोद्भूतविकल्पपरिनिष्ठितः शाब्दः त.प.200[ख]/867.

རྣམ་པར་རྟོག་པའི་རྣམ་པར་གཡེང་བ पा. विकल्पविक्षेपः, विक्षेपभेदः – རྣམ་པར་གཡེང་བ་དེ་ཡང་རྣམ་པ་གཉིས་ཏེ། ཡིད་ལ་བྱེད་པའི་རྣམ་པར་གཡེང་བ...རྣམ་པར་རྟོག་པའི་རྣམ་པར་གཡེང་བ स पुनर्विक्षेपो द्विवि-

धः – मनसिकारविक्षेपः ...विकल्पविक्षेपश्च सू.व्या. 203क/105.

རྣམ་པར་རྟོག་པའི་རྣམ་པར་ཤེས་པ *पा.* विकल्पविज्ञानम् – རྣམ་པར་རྟོག་པའི་རྣམ་པར་ཤེས་པ་ནི་དོན་ལས་སྐྱེས་པ་མ་ཡིན་ནོ།། विकल्पविज्ञानं त्वर्थान्नोत्पद्यते न्या.टी.41ख/49.

རྣམ་པར་རྟོག་པའི་སྣང་བ *वि.* विकल्पप्रतिभासी – ཅི་བདག་འདི་རྣམ་པར་རྟོག་པའི་སྣང་བའི་དོན་ཡིན་ནམ། ཇི་ལྟར་མངོན་པར་འདོད་པ་དངོས་པོ་ལས་སྐྱེས་པ་ཡིན་ནམ་མ་ཡིན་སྙམ་པ किमयमात्मविकल्पप्रतिभास्यर्थो यथाभिमतभावोपादानः, न वेति वा.टी.106क/70.

རྣམ་པར་རྟོག་པའི་སྣང་བའི་ཡུལ विकल्पप्रतिबिम्बविषयत्वम्–དེ་ནི་ཡུལ་དང་དུས་སོ་སོར་ངེས་པ་ལ་ལྟོས་པའི་རྣམ་པར་རྟོག་པའི་སྣང་བའི་ཡུལ་ཡིན་པའི་ཕྱིར་རོ།། སྒྲ་འདི་ཉིད་ཀྱང་ཡུལ་མེད་པ་མ་ཡིན་ནོ།། <?>देशकालप्रतिनियतिमनपेक्ष्य विकल्पप्रतिबिम्बविषयत्वादेव चात्मशब्दस्य न निर्विषयत्वमस्ति वा.टी.106क /70.

རྣམ་པར་རྟོག་པའི་སྤྲོས = རྣམ་པར་རྟོག་པའི་སྤྲོས་པ།

རྣམ་པར་རྟོག་པའི་སྤྲོས་པ विकल्पप्रपञ्चः – སྐྱེ་བ་དང་གནས་པ་དང་འཇིག་པར་རྣམ་པར་རྟོག་པའི་སྤྲོས་པ་དང་བྲལ་བར་སེམས་ཙམ་གྱི་རྗེས་སུ་འབྲང་བར་བྱའོ།། उत्पादस्थितिभङ्गविकल्पप्रपञ्चरहितैर्भवितव्यं चित्तमात्रानुसारिभिः ल.अ.71ख/20.

རྣམ་པར་རྟོག་པའི་བྱེད་པ *पा.* विकल्पव्यापारः – རྟོག་པའི་བདག་ཉིད་རྣམ་པར་རྟོག་པའི་བྱེད་པ་ཡིན་པར་ནི་མྱོང་བ་ཉིད་ལས་ངེས་པ་ཡིན་ནོ།། उत्प्रेक्षात्मकं विकल्पव्यापारमनुभवादध्यवस्यन्ति न्या.टी.46ख/86.

རྣམ་པར་རྟོག་པའི་མཚན་ཉིད་འཛིན་པ་ལ་མངོན་པར་ཆགས་པས་རབ་ཏུ་འཇོག་པའི་བློ *पा.* विकल्पलक्षणग्राहाभिनिवेशप्रतिष्ठापिका बुद्धिः, बुद्धिभेदः – བློ་རྣམ་པ་གཉིས་ཏེ། རབ་ཏུ་རྣམ་པར་འབྱེད་པའི་བློ་དང་རྣམ་པར་རྟོག་པའི་མཚན་ཉིད་འཛིན་པ་ལ་མངོན་པར་ཆགས་པས་རབ་ཏུ་འཇོག་པའི་བློའོ།། द्विप्रकारा बुद्धिः– प्रविचयबुद्धिश्च विकल्पलक्षणग्राहाभिनिवेशप्रतिष्ठापिका च ल.अ.103ख/50.

རྣམ་པར་རྟོག་པའི་ཡུལ विकल्पविषयः – འདི་ལྟར་རྣམ་པར་རྟོག་པའི་ཡུལ་གྱི་མེ་ལ་ཡང་མཐོང་བའི་བདག་ཉིད་ཁོ་ནར་ངེས་པ་ཡིན་ནོ་ཞེ་ན तथा हि विकल्पविषयोऽपि वह्निर्दृश्यात्मक एवावसीयत इति न्या.टी.44ख/75.

རྣམ་པར་རྟོག་པའི་ཤེས་པ विकल्पज्ञानम् – རྣམ་པར་རྟོག་པའི་ཤེས་པས་ངེས་པའི་དོན་ནི་ཉེ་བ་[དང་ཉེ་བ་མ་ཡིན་པ་] དག་ལས་ཤེས་པའི་སྣང་བ་ཐ་དད་པར་མི་བྱེད་དོ།། विकल्पज्ञानेनावसीयमानो ह्यर्थः सन्निधानासन्निधानाभ्यां ज्ञानप्रतिभासं न भिनत्ति न्या.टी.45क /77; विकल्पप्रत्ययः – རྣམ་པར་འཇོག་པར་བྱེད་པ་ནི་མངོན་སུམ་གྱི་རྟོག་པས་[? སྟོབས་ལས་]བྱུང་བའི་རྣམ་པར་རྟོག་པའི་ཤེས་པ་ཡིན་གྱི व्यवस्थापकश्च विकल्पप्रत्ययः प्रत्यक्षबलोत्पन्नो द्रष्टव्यः न्या.टी.46क /84; विमर्शप्रत्ययः – དེ་ཁོ་ན་ཉིད་མི་ཉམས་ན་ཡང་རྣམ་པར་ཕྱེ་སྟེ་སྣང་བར་མི་འགྱུར་བའམ། རྣམ་པར་ཕྱེ་ནས་སྣང་བ་ན་ཡང་གལ་ཏེ་ཡོངས་སུ་གཅོད་པར་བྱེད་པ་རྗེས་ལ་ཐོབ་པ་དག་པ་འཇིག་རྟེན་པའི་ཤེས་པ་རྣམ་པར་རྟོག་པའི་ཤེས་པ་སྐྱེ་བར་འགྱུར་ན <?>[अ]प्रच्युततत्त्वस्यापि विभागेनावभासनमेव वा न स्यात्, विरुद्धा[? विभक्ता]वभासनस्यापि यदि परिच्छेदकः शुद्धलौकिको विमर्शप्रत्ययः पृष्ठभावी नोत्पद्यते त.

प.328ख/1124.

རྣམ་པར་རྟོག་པར་འགྱུར *क्रि.* विकल्पयिष्यति – འཕགས་པའི་ཡེ་ཤེས་སོ་སོ་རང་གིས་རིག་པར་བྱ་བའི་རང་བཞིན་གཉིས་ལས་རྣམ་པར་གྲོལ་བ་ལ། དངོས་པོའི་རང་བཞིན་དུ་ཡོད་དོ་ཞེས་རྣམ་པར་རྟོག་པར་འགྱུར་ཏེ आर्यज्ञानप्रत्यात्माधिगम्यं स्वभावद्वयविनिर्मुक्तं वस्तु स्वभावतो विद्यत इति विकल्पयिष्यन्ति ल.अ.92क/39; कल्पयिष्यति–ཡོད་མེད་ཕྱོགས་བྲལ...།དབུ་མར་རྣམ་པར་རྟོག་པར་འགྱུར།། सदसत्पक्षविगताः कल्पयिष्यन्ति मध्यमम्॥ ल.अ.172क/130.

རྣམ་པར་རྟོག་པར་བྱེད = རྣམ་རྟོག་བྱེད།

རྣམ་པར་རྟོག་པར་བྱེད་པ = རྣམ་རྟོག་བྱེད།

རྣམ་པར་རྟོག་པར་མི་མཛད *क्रि.* न विकल्पयति – ཡང་དག་པར་རྫོགས་པའི་སངས་རྒྱས་གཡོ་བར་མི་མཛད... རྣམ་པར་རྟོག་པར་མི་མཛད सम्यक्संबुद्धो नेञ्जते...न विकल्पयति र.व्या.78ख/9.

རྣམ་པར་རྟོག་པས་སྤྲུལ་པ *वि.* कल्पनानिर्मितम् – དབྱེ་བར་བྱེ་བྲག་བྱེད་འདི་ཡང་། །རྣམ་པར་རྟོག་པས་སྤྲུལ་པ་སྟེ།། <?> कल्पनानिर्मितं चेदमभेदेऽपि विशेषणम्॥ त.स.40क/410.

རྣམ་པར་རྟོག་བྱེད་པ = རྣམ་རྟོག་བྱེད།

རྣམ་པར་རྟོགས = རྣམ་པར་རྟོགས་པ། རྣམ་པར་རྟོགས་ནས विदित्वा–སངས་རྒྱས་ཀྱི་གསུང་རབ་རྒྱུ་དང་འབྲས་བུ་ཡང་དག་པར་སྟོན་པའི་རྣམ་པར་རྟོགས་ནས बुद्धवचनं सम्यग्हेतुफलपरिदीपनाकारं विदित्वा बो.भू.56क/73.

རྣམ་པར་རྟོགས་པ •*क्रि.* व्यवसीयते – རྣམ་པར་རྟོགས་སོ།། व्यवसीयन्ते म.व्यु.7643 (109क); •*सं.* विबोधः – བདག་རྗེས་རྟོགས་དང་ལྟ་བ་སྲ་རྟོགས་དང་། །རྣམ་རིག་སྣ་ཚོགས་རྣམ་པར་རྟོགས་དང आत्मानुबोधात्तनुदृष्टिबोधात् विचित्रविज्ञप्तिविबोधतश्च। सू.अ.249ख/167.

རྣམ་པར་རྟོགས་པར་འགྱུར་བ = རྣམ་རྟོགས་འགྱུར།

རྣམ་པར་ལྟ = རྣམ་པར་ལྟ་བ།

རྣམ་པར་ལྟ་བ •*क्रि.* 1. व्यवलोकयति–ཕྱོགས་སུ་རྣམ་པར་ལྟ་བའམ दिशो वा व्यवलोकयति श्रा.भू.39ख/101; ཆོས་ཐམས་ཅད་ཀྱི་རང་བཞིན་གྱི་དཀྱིལ་འཁོར་ལ་རྣམ་པར་ལྟ་བའི་མིག་རྡུལ་དང་བྲལ་བས་དབང་བསྒྱུར་བ་ཞེས་བྱ་བ་ཐོབ་པར་གྱུར་ཏོ།། विरजःपतिं च नाम चक्षुः प्रतिलेभे, येन च सर्वधर्मस्वभावमण्डलं व्यवलोकयति ग.व्यू.258ख/341 *2. व्यवलोकयेत् – ལྟ་བ་དང་སེམས་སྐྱོ་བ་སྤང་བའི་ཕྱིར་རེས་འགའ་སྐབས་སུ་ཕྱོགས་སུ་རྣམ་པར་ལྟའོ།། दृष्टिचित्तपरिखेदपरित्यागाय कदाचित् कर्हिचित् दिशो व्यवलोकयेत् बो.प.94ख/59 *3. विलोकयति स्म – དགེ་སློང་དག་དེ་ལྟར་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་དགའ་ལྡན་གྱི་གནས་དམ་པ་ན་འདུག་པ་ནི་རྣམ་པར་བལྟ་བ་ཆེན་པོ་བཞི་ལ་རྣམ་པར་ལྟ་སྟེ इति हि भिक्षवो बोधिसत्त्वस्तुषितवरभवनस्थितश्चत्वारि महाविलोकितानि विलोकयति स्म ल.वि.12ख/14; • *सं.* 1. विलोकनम् – ཕན་ཚུན་བཞིན་གྱི་ཆུ་སྐྱེས་ལ། །རྣམ་པར་ལྟ་བའི་རོ་བྲལ་བའི།། अन्योन्यवदनाम्भोजविलोकनरसं विना अ.क.233ख/89.153; མངོན་དུ་ལྡང་བ་དང་སྟན་ལ་བོད་པ་དང་གཏམ་འདྲི་བ་དང་ཞེབས་པར་སྨྲ་བ་དང་ཀུན་དགའ་བར་འགྱུར་བ་དང་རྣམ་པར་ལྟ་བ་དང་ཉུང་ཟད་ལྟ་བ་དག་ཀྱང་མི་བྱའོ།། प्रत्युत्थानासनोपनिमन्त्रणासंलपनालपनसंमोदनव्यवलोकनालोकनानामप्यकरणम् वि.सू.89क/107

2. व्यवलोकनता– ཏིང་ངེ་འཛིན་གྱི་སངས་རྒྱས་རྣམས་ཀྱིས་ཡང་དག་པར་བཟུང་བ་དེའི་ཕྱིར་སངས་རྒྱས་ཀྱི་ཆོས་བསམ་གྱིས་མི་ཁྱབ་པ་དང་རང་གི་སྨོན་ལམ་ལ་རྣམ་པར་ལྟ་བས समाधिबुद्धैः संधार्यमाणोऽचिन्त्यबुद्धधर्मस्वप्रणिधानव्यवलोकनतया ल.अ.143क/90 3. विलोकितम् – དུས་གསུམ་ལ་རྣམ་པར་ལྟ་བ་ཤེས་པར་སླ་བ་མ་ཡིན་ནོ།། न सुकरं त्र्यध्वविलोकितं ज्ञातुम् द.भू.272ख/63; व्यवलोकितम् – བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའི་རྣམ་པར་ལྟ་བ बोधिसत्त्वव्यवलोकितम् ग.व्यू.290ख/13; • ना. विलोकितः, विद्याराजः – རིག་པའི་རྒྱལ་པོ་པདྨའི་རིགས་ཀྱང་འདི་ལྟ་སྟེ། བཅོམ་ལྡན་འདས་ཕྱག་བཅུ་གཉིས་པ་དང... རྣམ་པར་ལྟ་བ་དང... འདུལ་བྱེད་མཆོག अब्जकुले च विद्याराज्ञः [? राजाः]। तद्यथा–भगवान् द्वादशभुजः...विलोकितः...दमकश्चेति म.मू.95ख/7; •वि. अवलोकिनी – ཆུང་མ་ནི། །གཞན་གྱི་བཞིན་རས་རྣམ་པར་ལྟ།། अन्यवक्त्रावलोकिन्यो जायाः अ.क.264क/31.58; • कृ. व्यवलोकयन्– ཏིང་ངེ་འཛིན་ལ་ངེས་པར་གཞག་པའི་སྒོ་བཅུས་རྣམ་པར་ལྟ་བའི་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་ནི་དགེ་བའི་བཤེས་གཉེན་ཐམས་ཅད་དང་མངོན་དུ་གྱུར་པ་ཐོབ་པ་ཡིན་ཏེ། दशभिश्च समाधिनिध्यप्तिमुखैर्व्यवलोकयन् बोधिसत्त्वः सम्मुखीभावं प्रतिलभते सर्वकल्याणमित्राणाम् ग.व्यू.259क/341; * विलोकितः म.व्यु.6634 (95क); द्र. རྣམ་པར་བལྟས་པ།

རྣམ་པར་ལྟ་བར་འགྱུར क्रि. व्यवलोकयिष्यति – དེ་བླ་ན་མེད་པ་ཡང་དག་པར་རྫོགས་པའི་བྱང་ཆུབ་མངོན་པར་རྫོགས་པར་སངས་རྒྱས་ནས་སེམས་ཅན་ཐམས་ཅད་ཀྱི་སེམས་ལ་རྣམ་པར་ལྟ་བར་འགྱུར་རོ།། तेन सोऽनुत्तरां सम्यक्संबोधिमभिसंबुध्य सर्वसत्त्वानां चित्तानि व्यवलोकयिष्यति अ.सा.48ख/28.

རྣམ་པར་ལྟ་བར་བྱེད = རྣམ་པར་ལྟ་བར་བྱེད་པ།

རྣམ་པར་ལྟ་བར་བྱེད་པ •क्रि. विपश्यति – ལྷག་མཐོང་གི་རྣམ་པ་དག་གིས་རྣམ་པར་ལྟ་བར་བྱེད་ཅིང་རྣམ་པར་འབྱེད་པར་བྱེད विपश्यनाकारैर्विपश्यति, विचिनोति श्रा.भू.75क/193; व्यवलोकयति – ཅུང་ཟད་བལྟ་བར་བྱ་བ་གང་ཡིན་པ་དང་། རྣམ་པར་བལྟ་བར་བྱ་བ་གང་ཡིན་པ་དེ་ལ་ཅུང་ཟད་ལྟ་བར་བྱེད་ཅིང་རྣམ་པར་ལྟ་བར་བྱེད་པ་དང यच्चावलोकयितव्यं व्यवलोकयितव्यं तदालोकयति व्यवलोकयति श्रा.भू.45क/114; • सं. व्यवलोकनम् – ཕྱོགས་ཐམས་ཅད་དུ་རྣམ་པར་ལྟ་བར་བྱེད་པ सर्वदिग्व्यवलोकनम् बो.प.94ख/59.

རྣམ་པར་ལྷུང་བ वि. विनिपतितः – བཙུན་པ་བདག་ཅག་ཡི་དྭགས་རྣམས་ནི་རྣམ་པར་ལྷུང་བའི་ལུས་ཅན་རྣམས་ལགས་ཏེ། སྔོན་གྱི་ལས་ཀྱི་ནོངས་པས་ཆབ་ཀྱང་མི་རྙེད་ལགས་ན་འཚལ་མ་མཐོང་བ་ལྟ་མོས་ཀྱང་ཅི་འཚལ वयं भदन्त प्रेता विनिपतितशरीराः पूर्वकर्मापबाधेन पानीयं नासादयामः। कुतो भक्तस्य दर्शनम् वि.व.152ख/1.41.

རྣམ་པར་ལྷུང་བའི་ལུས་ཅན वि. विनिपतितशरीरः – བཙུན་པ་བདག་ཅག་ཡི་དྭགས་རྣམས་ནི་རྣམ་པར་ལྷུང་བའི་ལུས་ཅན་རྣམས་ལགས་ཏེ། སྔོན་གྱི་ལས་ཀྱི་ནོངས་པས་ཆབ་ཀྱང་མི་རྙེད་ལགས་ན་འཚལ་མ་མཐོང་བ་ལྟ་མོས་ཀྱང་ཅི་འཚལ वयं भदन्त प्रेता विनिपतितशरीराः पूर्वकर्मापबाधेन पानीयं नासादयामः। कुतो भक्तस्य दर्शनम् वि.व.152ख/1.41.

རྣམ་པར་ལྷུང་བྱེད व्यातिपातः [? व्यतिपातः] म.व्यु.4398 (69क); मि.को.33ख।

རྣམ་པར་སྟོན = རྣམ་པར་སྟོན་པ།

རྣམ་པར་སྟོན་པ •क्रि. विदर्शयति – དེ་བཞིན་གཤེགས་པའམ་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་འོག་ཏུ་ནི་ངན་སོང་དག་ཀྱང་རྣམ་པར་སྟོན तथागतो वा बोधिसत्त्वो वा अपायानपि विदर्शयत्यधः बो.भू.33क/41; विभावयति– ཀུན་གཞི་རྣམ་པར་ཤེས་པ་ནི་རང་གི་སེམས་སྣང་བའི་ལུས་དང་གནས་དང་ལོངས་སྤྱོད་ཀྱི་ཡུལ་ཅིག་ཅར་རྣམ་པར་སྟོན་ཏོ॥ आलयविज्ञानं स्वचित्तदृश्यदेहप्रतिष्ठाभोगविषयं युगपद् विभावयति ल.अ.77क/25; •पा. विदर्शनम्, पारिणामिक्या ऋद्धेर्भेदः – དེ་ལ་ཡོངས་སུ་བསྒྱུར་བའི་རྫུ་འཕྲུལ་གྱི་རྣམ་པའི་རབ་ཏུ་དབྱེ་བ་གང་ཞེ་ན། འདི་ལྟ་སྟེ། གཡོ་བར་བྱེད་པ་དང་...རྣམ་པར་སྟོན་པ་དང་...འོད་ཟེར་འབྱིན་པ तत्र पारिणामिक्या ऋद्धेः प्रकारभेदः कतमः। तद्यथा–कम्पनं...विदर्शनम् ...रश्मिप्रमोक्षणं च बो.भू.32क/40.

རྣམ་པར་བརྟག • क्रि. 1. विकल्प्यते – སེམས་ཅན་དྲང་བའི་དོན་གྱི་ཕྱིར། །ཚོན་གྱིས་རི་མོ་རྣམ་པར་བརྟག॥ सत्त्वानां कर्षणार्थाय रङ्गैश्चित्रं विकल्प्यते। ल.अ.73ख/22; कल्प्यते – ལུས་དང་མིག་སོགས་གནོད་པའི་ཕྱིར། །འདི་ལ་འཚེ་བར་རྣམ་པར་བརྟག॥ शरीरचक्षुरादीनां वधाद् हिंसाऽस्य कल्प्यते। त.स.8क/103; प्रकल्प्यते – ཐར་པའི་དོན་དུ་རྣམ་པར་བརྟག॥ मोक्षार्थं तु प्रकल्प्यते म.मू.188क/121 2. विचारयेत्– དངོས་པོ་ཐམས་ཅད་རྣམ་པར་བརྟག॥ सर्वभावान् विचारयेत् ज्ञा.सि.37ख/94; •= རྣམ་པར་བརྟག་པ།

རྣམ་པར་བརྟག་པ •सं. विकल्पः – འམ་གྱི་སྒྲ་ནི་སྔ་མ་ལ་ལྟོས་པས་རྣམ་པར་བརྟག་པའི་དོན་ཏོ॥ 'वा' शब्दः पूर्वापेक्षया विकल्पार्थः वा.टी.53क/5; विकल्पना– མི་ཡི་ཚིག་གི་རྣམ་བརྟག་པ། །ནེ་ཙོ་བཞིན་དུ་འཇུག་པར་འགྱུར॥ वाचा प्रवर्तते नृणां शुकस्येव विकल्पना॥ ल.अ.165ख/118; सङ्कल्पः लो.को.1405; •कृ. विकल्प्यम् – རྣམ་པར་རྟོག་དང་རྣམ་པར་བརྟག་པ། །ཇི་སྲིད་ཡི་གེའི་སྤྱོད་ཡུལ་བ། །རྟོག་ཅན་རྟོག་གེས་ནོར་བའི་ཕྱིར། །དེ་སྲིད་ཡང་དག་མི་མཐོང་ངོ་॥ विकल्पश्च विकल्प्यं च यावत्त्वक्षरगोचरम्। तावत्तत्त्वं न पश्यन्ति तार्किकास्तर्कविभ्रमात्॥ ल.अ.161ख/112; *• भू.का.कृ. विकल्पितः – སྔོན་གྱི་སློབ་དཔོན་རྣམས་ན་རེ...རྣམ་པར་བརྟག་པ་ནི་མི་དགེ་བ་ཡིན་ནོ་ཞེས་ཟེར་རོ॥ विकल्पिता त्वकुशलेति पूर्वाचार्याः अभि.भा.236क/794; कल्पितः – རིགས་ལྔ་དག་དང་མཉམ་ལྡན་པ། །རིགས་ནི་གཅིག་ཏུ་རྣམ་པར་བརྟག॥ पञ्चवर्णसमायुक्तमेकवर्णं तु कल्पितम्। हे.त.7क/18; वितर्कितः – བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའི་ས་འོད་འཕྲོ་བ་ཅན་འདི་ལ་གནས་པའི་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་ནི་གང་འདི...རྣམ་པར་བརྟག་པ་དང་རྣམ་པར་དཔྱད་པ་དང बोधिसत्त्वस्यास्यामर्चिष्मत्यां बोधिसत्त्वभूमौ स्थितस्य यानीमानि...विचिन्तितानि वितर्कितानि द.भू.207क/25; *> རྣམ་པར་བརྟགས་པ།

རྣམ་པར་བརྟགས = རྣམ་པར་བརྟགས་པ། རྣམ་པར་བརྟགས་ནས विकल्प्य – འོན་ཀྱང་གང་ཟག་དེ་ནི་ཡང་དག་པ་ཇི་ལྟ་བ་ཉིད་ལ་མཚན་མར་བྱས་ཤིང་རྣམ་པར་བརྟགས་ནས་ཡང་དག་པ་ཇི་ལྟ་བ་བཞིན་མ་ཡིན་པ་ལ་ཡང་དག་པ་ཇི་ལྟ་བར་འདུ་ཤེས་པས་དམིགས་པ་ལ་མི་དམིགས་པར་ཡོངས་སུ་བསྔོ་བར་བྱེད་པ་ཡིན་ཏེ अपि तु खलु पुनः स पुद्गलो निमित्तीकृत्य विकल्प्य च यथाभूतमयथाभूते यथाभूतसंज्ञी उपलम्भमनुपलम्भे परिणामयेत् अ.सा.133ख/76; समन्विष्य – མཐའ་ཡས་ནོར་ནི་རྒྱས་པ་དེ། །རྣམ་པར་བརྟགས་ནས་སེར་སྣས་ཀྱང

|| कपिलोऽपि समन्विष्य तमनन्तधनोदयम्। अ.क. 85ख/63.35; विनिष्प्रेक्ष्य – བགྲེས་པ་རྣམས་ཀྱིས་ཡིད་བཞིན་ནོར། །རྣམ་པར་བརྟགས་ནས་བགམ་བྱ་མིན།། चिन्तामणिर्विनिष्प्रेक्ष्य भुज्यते न बुभुक्षितैः ॥ अ. क.52क/5.62; विकल्पित्वा – ཇི་བཞིན་སྒྲ་ལ་རྣམ་བརྟགས་ནས། །ཆོས་ཉིད་ལ་ཡང་སྒྲོ་འདོགས་ཏེ།། यथारुतं विकल्पित्वा समारोपेन्ति धर्मताम्। ल.अ.117क/63.

རྣམ་པར་བརྟགས་ཤིང་ विचारयन् – འགྲོ་བ་ཀུན་གྱི་དགའ་བ་རྣམས། །རྣམ་པར་བརྟགས་ཤིང་མི་འཛིན་ལ།། जगदाह्लादनं सर्वं नातिगृह्णन् विचारयन्। ज्ञा.सि. 53ख/138;

རྣམ་པར་བརྟགས་པ •क्रि. विकल्प्यते – རྣམ་པར་རྟོག་པ་གང་གང་གིས། །དངོས་པོ་གང་གང་རྣམ་བརྟགས་པ།། येन येन विकल्पेन यद्यद् वस्तु विकल्प्यते। त्रि.भा. 167ख/88; དེ་བཞིན་དངོས་པོར་རྣམ་རྟོག་འདི། །ལོག་པར་བྱིས་པས་རྣམ་པར་བརྟགས།། तथा भावविकल्पोऽयं मिथ्या बालैर्विकल्प्यते ॥ ल.अ.122क/68; कल्प्यते – ཤེས་པ་ལ་གྲུབ་ཐ་དད་ལ། །བརྟེན་ནས་རྣམ་པར་བརྟགས་པ་ཡིན།། भेदं प्रत्ययसंसिद्धमवलम्ब्य च कल्प्यते ॥ प्र.वा.146ख/4.183; •सं. 1. विकल्पः – འདི་ལྟར་ནགས་ཚལ་ཞེས་བརྗོད་པ་ན་ད་བའམ་སེང་ལྡེང་ངམ་པ་ལ་ཤ་ཞེས་རྣམ་པར་བརྟགས་པས་རྟོགས་པར་འགྱུར་བ་མ་ཡིན་ལ तथा हि, 'वनम्' इत्युक्ते धवो वा खदिरो वा पलाशो वेति न विकल्पेन प्रतीतिर्भवति त.प.318क/350; ལུས་ཉིད་ནི་བློ་མ་ཡིན་ཏེ། དེ་གྲུབ་ཀྱང་བློའི་རྣམ་པར་བརྟགས་པ་ལ་ཐེ་ཚོམ་ཟ་བའི་ཕྱིར་རོ།། न च शरीरमेव बुद्धिस्तत्सिद्धावपि बुद्धिविकल्पे संशयात् प्र.अ.15ख/17; རྣམ་བརྟགས་ཞིང་ལས་བྱུང་བ་ཡི། །བསམ་གཏན་རྣལ་འབྱོར་པ་ཡི་ཟས།། विकल्पक्षेत्रसंभूतध्यानाहारा हि योगिनः ॥ बो.अ.34ख/9.93 2. सङ्कल्पः – རྣམ་པར་བརྟགས་པ་གཡོ་མེད་དེས། །སྐྱེད་ཚལ་ལྷ་ཡང་དང་བྱས་ནས། །དྲི་མེད་བྱང་ཆུབ་ལ་དམིགས་པའི། །སྨོན་ལམ་དག་དང་ལྡན་པར་གྱུར།། सोऽपि निश्चलसङ्कल्पः प्रसाद्योद्यानदेवताम्। विमलां बोधिमालम्ब्य बभूव प्रणिधानवान्॥ अ.क.52ख/5.70; སྡིག་པ་རྣམ་པར་བརྟགས་ཙམ་གྱིས།། पापसङ्कल्पमात्रेण अ. क.45ख/4.109 3.विमर्शः – ཐུབ་ཚོད་བྱས་ཏེ་སྤྱོད་པ་མི་རིགས་ཀྱི། །རྣམ་པར་བརྟགས་པའི་ལམ་དུ་འཇུག་པའི་རིགས།། न युक्तरूपं सहसा प्रवर्तितुं विमर्शमार्गोऽप्यनुगम्यतां यतः ॥ जा.मा.169ख/195; •भू.का.कृ. विकल्पितः – བཟླས་པ་གྲུབ་པའི་མཚན་མ་དང་། བསྒྲུབ་བྱ་བསྒྲུབ་མིན་རྣམ་པར་བརྟགས།། जापिनां सिद्धिनिमित्तानि साध्यासाध्यविकल्पिताम् ॥ म.मू.190ख/126; དངོས་པོ་རེ་རེ་ལ་རྣམ་གྲངས་ཀྱི་ཚིག་གི་སྒྲ་མང་པོ་རྣམ་པར་བརྟགས་པ་ཡོད་དེ एकैकस्य भावस्य बहवः पर्यायवाचकाः शब्दा भवन्ति विकल्पिताः ल.अ. 132क/78; कल्पितः – མུ་སྟེགས་ཅན་དང་ཉན་ཐོས་དང་རང་སངས་རྒྱས་དང་བྱིས་པ་རྣམས་ཀྱི་རྣམ་པར་རྟོག་པས་རྣམ་པར་བརྟགས་པ तीर्थ्यश्रावकप्रत्येकबुद्धबालविकल्पकल्पिताः ल.अ.62ख/8; वितर्कितः – འདི་ལ་རྣམ་པར་བརྟགས་པ་དང་རྣམ་པར་དཔྱད་པ་གང་ཡིན་པ་འདི་ནི་འདིར་འཕགས་པ་རྣམས་ཀྱིས་གཡོ་བའོ་ཞེས་གསུངས་སོ།། यदत्र वितर्कितं विचारितमिदमत्रार्या इञ्जितमित्याहुः अभि.भा.192क/652; སྦྱིན་ལ་རབ་ཏུ་དགའ་བའི་ཡིད་ཀྱིས་སུ། །འདི་ནི་རྒྱལ་པོས་ཀྱི་ནར་རྣམ་བརྟགས་སམ།། दानातिहर्षोद्धतमानसेन वितर्कितं किंस्विदिदं नृपेण। जा.मा.8ख/8; प्रकल्पितः

– ཇི་ལྟར་རིགས་པས་རྣམ་བརྟགས་པ། །རྣམ་པ་དང་བཅས་རབ་བཀག་ནས།། प्रतिषिद्धं तु साकारं यथायुक्तिप्रकल्पितम् । ज्ञा.सि.43ख/112; •वि.विकल्प्यमानः – ཇི་ལྟར་ན་མཁས་པ་རྣམས་ཀྱིས་ནོར་བ་དེ་ཉིད་ལ་རྣམ་པར་བརྟགས་པས་སངས་རྒྱས་ཀྱི་ཐེག་པའི་རིགས་འདྲེན་པར་བྱེད་པ་ཡིན་ཞེ་ན तत्र कथं पुनः...पण्डितैः सैव भ्रान्तिर्विकल्प्यमाना बुद्धयानगोत्रावहा भवति ल.अ.98क/45.

རྣམ་པར་བརྟགས་པའི་མཚན་ཉིད *वि.* विकल्पितलक्षणः – དངོས་པོ་མེད་པའི་རང་བཞིན་གང་། །དེ་དག་རྣམ་བརྟགས་མཚན་ཉིད་དོ།། अभावस्वभावा ये तु ते विकल्पितलक्षणाः ॥ ल.अ.165क/118.

རྣམ་པར་བརྟགས་པའི་གཟུགས *पा.* विकल्पितं रूपम्, रूपभेदः – གཟུགས...རྣམ་པ་གསུམ་སྟེ། ཀུན་བརྟགས་པའི་གཟུགས...རྣམ་པར་བརྟགས་པའི་གཟུགས...ཆོས་ཀྱི་གཟུགས त्रिविधं रूपम्–परिकल्पितं रूपम्...विकल्पितं रूपम्...धर्मतारूपम् म.भा.13ख/3.16.

རྣམ་པར་བརྟེན་པ व्यपाश्रयः – གཞན་ལ་རྣམ་པར་བརྟེན་ན་ཡང་། །འདི་ནི་དེ་རྟོགས་ཇི་ལྟར་ཡིན།། परव्यपाश्रयेणापि प्रतिपत्तौ किमस्य सा । त.स.62ख/592.

རྣམ་པར་བལྟ = རྣམ་པར་བལྟ་བ།

རྣམ་པར་བལྟ་བ •*क्रि.* आकारयति – རྣམ་པར་གྲོལ་བའི་ལམ་རྣམས་ནི་ཅི་རིགས་པར་ས་གོང་མ་ལ་ཞི་བ་དང་གྱ་ནོམ་པ་དང་ངེས་པར་འབྱུང་བའི་རྣམ་པར་བལྟའོ།། विमुक्तिमार्गा उत्तरां भूमिं शान्ततः प्रणीततो निःसरणतश्चाकारयन्ति सम्भवतः अभि.भा.29क/977; •*सं.* 1. विलोकनम् – དགེ་སློང་...ཀུན་ཀྱང་...སངས་རྒྱས་ཀྱི་ཕྱོགས་རྣམ་པར་བལྟ་བ་ལ་མཐུ་ཡོད་པ सर्वे च ते भिक्षवः...बुद्धदिग्विलोकनसमर्थाः ग.व्यू.315क/37; ཁང་བཟང་ནང་དུ་སོན་ཞིང་རྣམ་པར་བལྟ་བའི་རོ་ལས་བཞིན་གྱི་ཆུ་སྐྱེས་དང་།། हर्म्योत्सङ्गगता विलोकनरसान्नम्राननाम्भोरुहा अ.क.193ख/82.19; व्यवलोकनम् – བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའི་རྣམ་པར་ཐར་པ་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའི་ཏིང་ངེ་འཛིན་རྒྱ་མཚོའི་ཚུལ་ཐམས་ཅད་ལ་རྣམ་པར་བལྟ་བའི་ཡུལ་ཐོབ་པ सर्वबोधिसत्त्वसमाधिसागरनयव्यवलोकनविषयस्य बोधिसत्त्वविमोक्षस्य लाभिनी ग.व्यू.225ख/305 2. विलोकितम् – དགེ་སློང་དག་དེ་ལྟར་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་དགའ་ལྡན་གྱི་གནས་དམ་པ་ན་འདུག་པ་ནི་རྣམ་པར་བལྟ་བ་ཆེན་པོ་བཞི་ལ་རྣམ་པར་ལྟ་སྟེ इति हि भिक्षवो बोधिसत्त्वस्तुषितवरभवनस्थितश्चत्वारि महाविलोकितानि विलोकयति स्म ल.वि.12ख/14; • *वि.* अवलोकिनी – ངོ་ཤལ་རྣམ་པར་བལྟ་བ་དག། །མཐོང་ནས हारावलोकिनीं दृष्ट्वा अ.क.73क/7.27.

རྣམ་པར་བལྟ་བ་ཆེན་པོ *पा.* महाविलोकितम्–དགེ་སློང་དག་དེ་ལྟར་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་དགའ་ལྡན་གྱི་གནས་དམ་པ་ན་འདུག་པ་ནི་རྣམ་པར་བལྟ་བ་ཆེན་པོ་བཞི་ལ་རྣམ་པར་ལྟ་སྟེ། བཞི་གང་ཞེ་ན། འདི་ལྟ་སྟེ། དུས་ལ་རྣམ་པར་ལྟ་བ་དང་གླིང་ལ་རྣམ་པར་ལྟ་བ་དང་ཡུལ་ལ་རྣམ་པར་ལྟ་བ་དང་རིགས་ལ་རྣམ་པར་ལྟ་བའོ།། बोधिसत्त्वस्तुषितवरभवनस्थितश्चत्वारि महाविलोकितानि विलोकयति स्म। कतमानि चत्वारि ? तद्यथा–कालविलोकितं द्वीपविलोकितं देशविलोकितं कुलविलोकितम् ल.वि.12ख/14.

རྣམ་པར་བལྟ་བར་བྱ • *क्रि.* विलोकयेत् – ལེགས་པར་འོངས་ཞེས་སྨྲ་བས་ཚིམས་པར་སྨྲ་བའི་དོན་དུ་རྣམ་པར་བལྟ་བར་བྱའོ།། स्वागतवादेन संतोषणार्थं विलोकयेत्

बो.प.94ख/59; •कृ. व्यवलोकयितव्यम्–ཚུར་ཟད་བལྟ་བར་བྱ་བ་གང་ཡིན་པ་དང་། རྣམ་པར་བལྟ་བར་བྱ་བ་གང་ཡིན་པ་དེ་ལ་ཚུར་ཟད་ལྟ་བར་བྱེད་ཅིང་རྣམ་པར་ལྟ་བར་བྱེད་པ་དང་ यच्चावलोकयितव्यं व्यवलोकयितव्यं तदालोकयति व्यवलोकयति श्रा.भू.45क/114; • सं. व्यवलोकनम् – ཕྱོགས་ཆེས་མཐོན་པོར་འདུག་སྟེ་ཕྱོགས་བཞིར་རྣམ་པར་བལྟ་བར་བྱའོ॥ उच्चतरके प्रदेशे स्थित्वा चतुर्दिशं व्यवलोकनम् वि.सू.58ख/74; •द्र.– ཧྲི་མ་གཉིས་ཚུར་ཟད་བྱེ་ལ། སྣའི་རྩེ་མོར་གཏད་པའམ་གཉའ་ཤིང་གང་ཙམ་དུ་རྣམ་པར་བལྟ་བར་བྱ ईषन्मुकुलितपक्ष्मयुगला नासाग्रविनिवेशिता युगमात्रव्यवलोकिनी वा कार्या दृष्टिः बो.प.94ख/59.

རྣམ་པར་བལྟས = རྣམ་པར་བལྟས་པ། རྣམ་པར་བལྟས་ཏེ། °ནས अवलोक्य लो.को.1405; विलोक्य लो.को.1405.

རྣམ་པར་བལྟས་པ •क्रि. व्यलोकयत् – མི་བདག་གིས། །བཅོམ་ལྡན་འདས་ལ་རྣམ་པར་བལྟས॥ नृपः...भगवन्तं व्यलोकयत् अ.क.364ख/48.81; •भू.का.कृ. विलोकितः – སངས་རྒྱས་བཅོམ་ལྡན་འདས་རྣམས་ལ་ཡོངས་སུ་དྲིས་སོ॥ ཡོངས་སུ་ཞུས་སོ॥ ...རྣམ་པར་བལྟས་སོ॥ ...རྒྱ་ཆེར་བྱས་སོ॥ बुद्धानां भगवतामन्तिकात् परिपृष्टा परिप्रश्नीकृता... विलोकिता... विपुलीकृता ग.व्यू. 31क/127; མངོན་པར་སྲེད་དང་ལྡན་པ་དེས། །འཇིགས་ལྡན་ལ་རྣམ་པར་བལྟས॥ सा तेन साभिलाषेण सविलासं[? सा] विलोकिता। अ.क.192ख/82.7; व्यवलोकितः – དེ་ལྟར་མི་ཉལ་བར་སྦྱོར་བའི་རྗེས་སུ་བརྩོན་པར་གྱུར་པ་དེ་འགྲོ་བ་དང་ལྡོག་པ་ལ་ཤེས་བཞིན་དུ་སྤྱོད་པར་བྱེད་པ་དང་། ཚུར་ཟད་བལྟས་པ་དང་རྣམ་པར་བལྟས་པ་དང་ स तथा जागरिका[योगा]नुयुक्तः अभिक्रमप्रतिक्रमे संप्रजानद्विहारी भवत्यालोकितव्यवलोकिते श्रा.भू.6क/11; བཙུན་པ་བཅོམ་ལྡན་འདས་ཇི་ལྟར་བདག་ཆོས་ཐམས་ཅད་ཡང་དག་པར་འཚལ་བ་དང་...ཡང་དག་པར་རྣམ་པར་བལྟས་པ་དང་ यथा च मे भदन्त भगवन् सर्वधर्माः सम्यग्ज्ञाताः...सम्यग्व्यवलोकिताः सु.प्र. 36क/69.

རྣམ་པར་བསྟན = རྣམ་པར་བསྟན་པ། རྣམ་པར་བསྟན་ནས विदर्श्य लो.को.1405.

རྣམ་པར་བསྟན་པ •क्रि. विदर्शितं भवति – མཉན་ཡོད་དུ་ཆོ་འཕྲུལ་ཆེན་པོ་རྣམ་པར་བསྟན་པ་དང་ श्रावस्त्यां महाप्रातिहार्यं विदर्शितं भवति वि.व.281ख/1.98; विनिर्देशयति स्म लो.को.1405; •भू.का.कृ. विनिर्दिष्टः – གང་དུ་འཇིག་རྟེན་རྣམ་བསྟན་པ། །ཞི་བའི་གནས་ནི་དྲི་མེད་བཟང་॥ यत्तु लोकविनिर्दिष्टं शिवं स्थानं सुनिर्मलम्॥ म.मू.236ख/261.

རྣམ་པར་བསྟན་པ་མཛད་ क्रि. विभावयामास–སོ་སོ་རང་རིག་སྤྱོད་ཡུལ་གྱི། །ཆོས་ནི་རྣམ་པར་བསྟན་པ་མཛད॥ धर्मं विभावयामास प्रत्यात्मगतिगोचरम् ॥ ल.अ. 58क/3.

རྣམ་པར་བསྟེན་ क्रि. भेजे – འཚོ་བ་ཐོབ་ཅིང་ཕ་རོལ་ཏུ། །ཕྱིན་ནས་ངལ་གསོ་རྣམ་པར་བསྟེན॥ पारमासाध्य विश्रान्तिं भेजिरे लब्धजीविताः॥ अ.क.265क/97.14.

རྣམ་པར་ཐ་དད་པ = རྣམ་པ་ཐ་དད་པ།

རྣམ་པར་ཐར = རྣམ་པར་ཐར་པ།

རྣམ་པར་ཐར་པ = རྣམ་ཐར •क्रि. विमुच्यते – སྒྱུ་མ་རོ་ལངས་འཕྲུལ་འཁོར་དང་། །མི་ལམ་གློག་དང་སྤྲིན་ལྟ་བུར། །ནམ་ཡང་རྒྱུད་གསུམ་རྣམ་ཆད་པར། །སྐྱེ་བོ་མཐོང་ནས་རྣམ་པར་ཐར॥ मायावेतालयन्त्राभं स्वप्नविद्युद्घनं

सदा। त्रिसन्ततिव्यवच्छिन्नं जगत् पश्य विमुच्यते॥ ल.अ.93क/40; • सं. 1. विमोक्षणम् – གཞན་དག་ན་རེ་སྙོམས་པར་འཇུག་པའི་སྒྲིབ་པ་ལས་རྣམ་པར་ཐར་པའི་ཕྱིར་རྣམ་པར་ཐར་པ་ཞེས་བྱའོ༎ समापत्त्यावरणविमोक्षणाद् विमोक्ष इत्यपरे अभि.भा.79ख/1177 2. विमोक्षः – དཔལ་འབྱུང་བ་ཡི་རྣམ་ཐར་ལས། །བླ་མ་བསྟེན་པའི་ཚུལ་ལྟར་བསླབ༎ श्रीसंभवविमोक्षाच्च शिक्षेद्यद्गुरुवर्तनम्। बो.अ.14क/5.103 3. विमोक्षा, धारणीविशेषः – རྒྱལ་བུ་གཞོན་ནུ་བསོད་ནམས་ཀྱི་འོད་ཟེར་གྱིས་དེ་ཐོས་ནས་རྣམ་པར་ཐར་པ་ཞེས་བྱ་བའི་གཟུངས་ཐོབ་བོ༎ यं श्रुत्वा पुण्यरश्मिना राजकुमारेण विमोक्षा नाम धारणी प्रतिलब्धा रा.प.251ख/153; • पा. विमोक्षः – དེ་ནས་རྣམ་པར་ཐར་པ་བཞི་བསྒོམ་པར་བྱ་སྟེ། སྟོང་པ་ཉིད་དང་མཚན་མ་མེད་པ་དང་སྨོན་པ་མེད་པ་དང་མངོན་པར་འདུས་མ་བྱས་པ་བསྒོམ་པར་བྱའོ༎ ततश्चतुर्विमोक्षं विभावयेत्, शून्यतामनिमित्तमप्रणिहितमनभिसंस्कारमिति वि.प्र.32क/4.5; རིགས་ཀྱི་བུ་ཁོ་མོ་ནི་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའི་རྣམ་པར་ཐར་པ་ཐུབ་པར་དཀའ་བའི་ཡེ་ཤེས་ཀྱི་སྙིང་པོ་ཐོབ་པ་སྟེ अहं कुलपुत्र दुर्योधनज्ञानगर्भस्य बोधिसत्त्वविमोक्षस्य लाभिनी ग.व्यू.38ख/133; དེ་དག་རབ་ཏུ་ཕྱེ་བས་ན། །རྣམ་པར་ཐར་དང་བདེན་མཐོང་ན། །སྒོམ་དང་མཐོང་བས་སྤང་བ་ཡི། །ཉོན་མོངས་རྣམས་ཀུང་སྦྱང་བ་ཡིན༎ एतेषां प्रविभागेन विमोक्षः सत्यदर्शनम्। भावानां [? भावना]दृश्यहेयानां क्लेशानां स्याद्विशोधनम्॥ ल.अ.186ख/156; བློ་གྲོས་ཆེན་པོ་ཁ་ཅིག་ནི་ང་ལ་དེ་བཞིན་གཤེགས་པར་ཤེས་སོ༎...འདྲེན་པ་དང...གཞན་ལ་ལས་ནི་སྐྱེ་བ་མེད་པ་དང་འགོག་པ་མེད་པ་དང...རྣམ་པར་ཐར་པ་དང་ལམ་དང་བདེན་པ་རྣམས་དང केचिन्महामते तथागतमिति मां संप्रजानन्ति...नायकं...अपरे अनिरोधानुत्पादं...विमोक्षं मार्गसत्यानि ल.अ.132क/78; विमुक्तिः – རྣམ་པར་ཐར་པའི་དཀྱིལ་འཁོར་སྣང་བ་ཞེས་བྱ་བ་དང विमुक्तिमण्डलप्रभासं च नाम द.भू.267क/59.

རྣམ་པར་ཐར་པ་བརྒྱད་ अष्टौ विमोक्षाः – 1. གཟུགས་ཅན་གཟུགས་རྣམས་ལ་ལྟ་བ་འདི་ནི་རྣམ་པར་ཐར་པ་དང་པོའོ༎ ‘रूपी रूपाणि पश्यति’ इत्ययं प्रथमो विमोक्षः, 2. ནང་གཟུགས་མེད་པར་འདུ་ཤེས་པས་ཕྱི་རོལ་གྱི་གཟུགས་རྣམས་ལ་ལྟ་བ་འདི་ནི་རྣམ་པར་ཐར་པ་གཉིས་པའོ༎ ‘अध्यात्ममरूपसंज्ञी बहिर्धा रूपाणि पश्यति’ इत्ययं द्वितीयो विमोक्षः, 3. སྡུག་པའི་རྣམ་པར་ཐར་པ་ལུས་ཀྱིས་མངོན་སུམ་དུ་བྱས་ཏེ་རྫོགས་པར་བྱས་ནས་གནས་པ་འདི་ནི་རྣམ་པར་ཐར་པ་གསུམ་པའོ༎ ‘शुभं विमोक्षं कायेन साक्षात्कृत्वोपसम्पद्य विहरति’ इत्ययं तृतीयो विमोक्षः, 4. རྣམ་པ་ཐམས་ཅད་དུ་གཟུགས་ཀྱི་འདུ་ཤེས་རྣམས་ལས་ཡང་དག་པར་འདས་ནས་ཐོགས་པའི་འདུ་ཤེས་རྣམས་ནུབ་པར་གྱུར་ཅིང་སྣ་ཚོགས་ཀྱི་འདུ་ཤེས་རྣམས་ཡིད་ལ་མི་བྱེད་པས་ནམ་མཁའ་མཐའ་ཡས་སོ་སྙམ་སྟེ། ནམ་མཁའ་མཐའ་ཡས་སྐྱེ་མཆེད་རྫོགས་པར་བྱེད་དེ་གནས་པ་འདི་ནི་རྣམ་པར་ཐར་པ་བཞི་པ་སྟེ सर्वशो रूपसंज्ञानां समतिक्रमात्, प्रतिघसंज्ञानामस्तङ्गमात्, नानात्वसंज्ञानाममनसिकाराद् ‘अनन्तमाकाशम्, अनन्तमाकाशम्’ इत्याकाशानन्त्यायतनमुपसम्पद्य विहरति...अयं चतुर्थो विमोक्षः, 5. རྣམ་པ་ཐམས་ཅད་དུ་ནམ་མཁའ་མཐའ་ཡས་སྐྱེ་མཆེད་ལས་ཡང་དག་པར་འདས་ཏེ་རྣམ་པར་ཤེས་པ་མཐའ་ཡས་སོ་སྙམ་ནས་རྣམ་ཤེས་མཐའ་ཡས་སྐྱེ་མཆེད་རྫོགས་པར་བྱས་ཏེ་གནས་པ་འདི་ནི་རྣམ་པར་ཐར་པ་ལྔ་པ་སྟེ सर्वश आ-

काशानन्त्यायतनं समतिक्रम्य 'अनन्तं विज्ञानम्, अनन्तं विज्ञानम्' इति विज्ञानानन्त्यायतनमुपसम्पद्य विहरति...अयं पञ्चमो विमोक्षः, 6. རྣམ་པ་ཐམས་ཅད་དུ་རྣམ་ཤེས་མཐའ་ཡས་སྐྱེ་མཆེད་ལས་ཡང་དག་པར་འདས་ཏེ། ཅི་ཡང་མེད་དོ་སྙམ་ནས་ཅི་ཡང་མེད་པའི་སྐྱེ་མཆེད་རྫོགས་པར་བྱས་ཏེ་གནས་པ་འདི་ནི་རྣམ་པར་ཐར་པ་དྲུག་པ་སྟེ सर्वशो विज्ञानानन्त्यायतनं समतिक्रम्य 'नास्ति किञ्चिद्' इत्याकिञ्चन्यायतनमुपसम्पद्य विहरति...अयं षष्ठो विमोक्षः, 7. རྣམ་པ་ཐམས་ཅད་དུ་ཅི་ཡང་མེད་པའི་སྐྱེ་མཆེད་ལས་ཡང་དག་པར་འདས་ནས་འདུ་ཤེས་མེད་འདུ་ཤེས་མེད་མིན་སྐྱེ་མཆེད་རྫོགས་པར་བྱས་ཏེ་གནས་པ་འདི་ནི་རྣམ་པར་ཐར་པ་བདུན་པ་སྟེ सर्वश आकिञ्चन्यायतनं समतिक्रम्य नैवसंज्ञानासंज्ञायतनमुसम्पद्य विहरति... अयं सप्तमो विमोक्षः, 8. རྣམ་པ་ཐམས་ཅད་དུ་འདུ་ཤེས་མེད་འདུ་ཤེས་མེད་མིན་སྐྱེ་མཆེད་ལས་ཡང་དག་པར་འདས་ཏེ་ཚོར་བ་དང་འདུ་ཤེས་འགོག་པ་ལུས་ཀྱིས་མངོན་སུམ་དུ་བྱས་ནས་རྫོགས་པར་བྱས་ཏེ་གནས་པ་འདི་ནི་རྣམ་པར་ཐར་པ་བརྒྱད་པའོ॥ सर्वशो नैवसंज्ञानासंज्ञायतनं समतिक्रम्य संज्ञावेदितनिरोधकायेन साक्षात्कृत्वोपसम्पद्य विहरति–अयमष्टमो विमोक्षः अभि.स्फु.306क/1175; म.व्यु.1510 (32क).

རྣམ་པར་ཐར་པ་བཞི चतुर्विमोक्षः – 1. སྟོང་པ་ཉིད शून्यता, 2. མཚན་མ་མེད་པ अनिमित्तम्, 3. སྨོན་པ་མེད་པ अप्रणिहितम्, 4. མངོན་པར་འདུས་མ་བྱས་པ अनभिसंस्कारः वि.प्र.32क/4.5.

རྣམ་པར་ཐར་པ་འཇུག་པ་ལས་བྱུང་བ་ཅན *पा.* विमोक्षप्रावेशिकम् – ཟིལ་གྱིས་གནོན་པའི་སྐྱེ་མཆེད་རྣམས་ནི་རྣམ་པར་ཐར་པ་འཇུག་པ་ལས་བྱུང་བ་ཅན་ཡིན་ལ विमोक्षप्रावेशिकान्यभिभ्वायतनानि अभि.भा.80ख/1183; རྣམ་པར་ཐར་པ་འཇུག་པ་ལས་བྱུང་བ་ཅན་ཡིན་ཞེས་བྱ་བ་ནི་འཇུག་པ་ཉིད་འཇུག་པ་ལས་བྱུང་བ་ཅན་ཡིན་པའམ་འཇུག་པ་ལས་བྱུང་བ་ཡིན་ནོ॥ <?> विमोक्षप्रावेशिकानीति । प्रवेशा एव प्रावेशिकानि–इति स्वार्थवृद्धिविधानात् । प्रवेशे भवानि वा अभि.स्फु. 309ख/1183.

རྣམ་པར་ཐར་པ་ལས་གྱུར = རྣམ་པར་ཐར་པ་ལས་གྱུར་པ།

རྣམ་པར་ཐར་པ་ལས་གྱུར་པ *वि.* वैमोक्षिकम्–གཟུགས་བརྙན་དང་དབང་འབྱོར་པ་དང་ངེས་པར་བསྟན་པའི་ཕྱིར་བྱུང་བ་ནི་ཤེས་བྱའི་དངོས་པོ་དང་མཐུན་པ་དང་རྣམ་པར་ཐར་པ་ལས་གྱུར་པ་དང་དེ་བཞིན་གཤེགས་པའི་གཟུགས་ཏེ་གོ་རིམས་བཞིན་ནོ॥ प्रतिबिम्बविभुत्वनिदर्शनोत्पन्नं ज्ञेयं वस्तु सभागं वैमोक्षिकं ताथागतं च रूपं यथाक्रमम् अभि.स.भा.19क/25.

རྣམ་པར་ཐར་པ་གསུམ་སྤྱོད་པ *वि.* विमोक्षत्रयचारी – རྣམ་པར་ཐར་པ་གསུམ་སྤྱོད་པ་ཡི། །འཕགས་པ་དག་ལ་དངོས་པོ་མེད॥ आर्याणां नास्ति वै भावो विमोक्षत्रयचारिणाम्॥ ल.अ.178ख/143.

རྣམ་པར་ཐར་པའི་དཀྱིལ་འཁོར་སྣང་བ *पा.* विमुक्तिमण्डलप्रभासः, बोधिसत्त्वविमोक्षविशेषः – ཀྱེ་རྒྱལ་བའི་སྲས་དག། དེ་ལྟར་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའི་ས་འདི་དང་ལྡན་པའི་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་དེ་བྱང་ཆུབ་སེམས་པའི་རྣམ་པར་ཐར་པ་བསམ་གྱིས་མི་ཁྱབ་པ་ཞེས་བྱ་བ་རབ་ཏུ་འཐོབ་པོ॥ ...རྣམ་པར་ཐར་པའི་དཀྱིལ་འཁོར་སྣང་བ་ཞེས་བྱ་བ་དང स खलु पुनर्भो जिनपुत्रा बोधिसत्त्व एवमिमां बोधिसत्त्वभूमिमनुगतोऽचिन्त्यं च नाम बोधिसत्त्वविमोक्षं प्रतिलभते... विमुक्तिमण्डलप्रभासं च नाम द.भू.267क/59.

རྣམ་པར་ཐར་པའི་སྒོ *पा.* विमोक्षमुखम् – དེ་དེ་ལྟར་རྟེན་ཅིང་འབྲེལ་བར་འབྱུང་བ་ལ་རྣམ་པ་བཅུར་[? བཅུ་གཉིས་སུ་]རབ་ཏུ་རྟོག་ཅིང་བདག་མེད་པ་དང...སྟོང་པ་ཉིད་ཀྱི་རྣམ་པར་ཐར་པའི་སྒོ་སྐྱེས་པ་ཡིན तस्यैवं द्वादशाकारं प्रतीत्यसमुत्पादं प्रत्यवेक्षमाणस्य निरात्मतः...शून्यताविंमोक्षमुखमाजातं भवति । द.भू.223क/33; གང་གི་ཚེ་ན་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་སེམས་དཔའ་ཆེན་པོ་རྣམ་པར་ཐར་པའི་སྒོ་སྟོང་པ་ཉིད་ཀྱི་ཏིང་ངེ་འཛིན་ལ་གནས་པ་དེའི་ཚེ་ན་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་སེམས་དཔའ་ཆེན་པོས་མཚན་མ་མེད་པའི་ཏིང་ངེ་འཛིན་ལ་གནས་པར་བྱ་སྟེ यस्मिन् समये बोधिसत्त्वो महासत्त्वः शून्यतासमाधिविमोक्षमुखेन विहरति, तस्मिन् समये बोधिसत्त्वेन महासत्त्वेन आनिमित्तेन च समाधिना विहर्तव्यम् अ.सा.325क/183.

རྣམ་པར་ཐར་པའི་སྒོ་གསུམ त्रीणि विमोक्षमुखानि – 1. རྣམ་པར་ཐར་པའི་སྒོ་སྟོང་པ་ཉིད शून्यता विमोक्षमुखम्, 2. རྣམ་པར་ཐར་པའི་སྒོ་སྨོན་པ་མེད་པ अप्रणिहितं विमोक्षमुखम्, 3. རྣམ་པར་ཐར་པའི་སྒོ་མཚན་མ་མེད་པ अनिमित्तं विमोक्षमुखम् अभि.भा.76ख/1165.

རྣམ་པར་ཐར་པའི་སྒོ་སྟོང་ཉིད = རྣམ་པར་ཐར་པའི་སྒོ་སྟོང་པ་ཉིད།

རྣམ་པར་ཐར་པའི་སྒོ་སྟོང་པ་ཉིད *पा.* शून्यता विमोक्षमुखम्, विमोक्षमुखभेदः – ཏིང་ངེ་འཛིན་གསུམ་པོ་དེ་དག་དྲི་མ་མེད་པ་ནི་ཐར་པའི་སྒོ་ཡིན་པའི་ཕྱིར་རྣམ་པར་ཐར་པའི་སྒོ་སྟོང་པ་ཉིད་དང་རྣམ་པར་ཐར་པའི་སྒོ་སྨོན་པ་མེད་པ་དང་རྣམ་པར་ཐར་པའི་སྒོ་མཚན་མ་མེད་པ་སྟེ། རྣམ་པར་ཐར་པའི་སྒོ་གསུམ་ཞེས་བྱའོ།། अनास्रवास्त्वेते त्रयः समाधयस्त्रीणि विमोक्षमुखान्युच्यन्ते। शून्यताविमोक्षमुखम्, अप्रणिहितम्, अनिमित्तं विमोक्षमुखमिति; मोक्षद्वारत्वात् अभि.भा.76ख/1165.

རྣམ་པར་ཐར་པའི་སྒོ་སྨོན་པ་མེད་པ *पा.* अप्रणिहितं विमोक्षमुखम्, विमोक्षमुखभेदः – ཏིང་ངེ་འཛིན་གསུམ་པོ་དེ་དག་དྲི་མ་མེད་པ་ནི་ཐར་པའི་སྒོ་ཡིན་པའི་ཕྱིར་རྣམ་པར་ཐར་པའི་སྒོ་སྟོང་པ་ཉིད་དང་རྣམ་པར་ཐར་པའི་སྒོ་སྨོན་པ་མེད་པ་དང་རྣམ་པར་ཐར་པའི་སྒོ་མཚན་མ་མེད་པ་སྟེ། རྣམ་པར་ཐར་པའི་སྒོ་གསུམ་ཞེས་བྱའོ།། अनास्रवास्त्वेते त्रयः समाधयस्त्रीणि विमोक्षमुखान्युच्यन्ते । शून्यताविमोक्षमुखम्, अप्रणिहितम्, अनिमित्तं विमोक्षमुखमिति; मोक्षद्वारत्वात् अभि.भा.76ख/1165.

རྣམ་པར་ཐར་པའི་སྒོ་མཚན་མ་མེད་པ *पा.* अनिमित्तं विमोक्षमुखम्, विमोक्षमुखभेदः – ཏིང་ངེ་འཛིན་གསུམ་པོ་དེ་དག་དྲི་མ་མེད་པ་ནི་ཐར་པའི་སྒོ་ཡིན་པའི་ཕྱིར་རྣམ་པར་ཐར་པའི་སྒོ་སྟོང་པ་ཉིད་དང་རྣམ་པར་ཐར་པའི་སྒོ་སྨོན་པ་མེད་པ་དང་རྣམ་པར་ཐར་པའི་སྒོ་མཚན་མ་མེད་པ་སྟེ། རྣམ་པར་ཐར་པའི་སྒོ་གསུམ་ཞེས་བྱའོ།། अनास्रवास्त्वेते त्रयः समाधयस्त्रीणि विमोक्षमुखान्युच्यन्ते । शून्यताविमोक्षमुखम्, अप्रणिहितम्, अनिमित्तं विमोक्षमुखमिति; मोक्षद्वारत्वात् अभि.भा.76ख/1165.

རྣམ་པར་ཐར་པའི་སྒྲིབ་པ *पा.* विमोक्षावरणम् – གཟུགས་ཅན་གྱི་རྣམ་པར་ཐར་པའི་སྒྲིབ་པ་མཐའ་དག་སྤངས་པས रूपिविमोक्षावरणसाकल्यप्रहाणात् अभि.स्फु.308क/1179.

རྣམ་པར་ཐར་པའི་ཟླ་བ *ना.* विमोक्षचन्द्रः, बोधिसत्त्वः – དེ་དག་ཐམས་ཅད་དུའང་ཁོ་མོ་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའི་ཡུམ་དུ་འགྱུར་རོ།། བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་བྱམས་པའི་ཡུམ་དུ་ཇི་ལྟར་འགྱུར་བ་དེ་བཞིན་དུ...རྣམ་པར་ཐར་པའི་ཟླ་བ་དང तेष्वहं सर्वत्र बोधिसत्त्वजननी भविष्यामि। यथा च मैत्रेयस्य बोधिसत्त्वस्य, तथा... विमो-

क्षचन्द्रस्य ग.व्यू.269क/349.

རྣམ་པར་ཐར་པར་བགྱི་བ विमोक्षणम् – མ་འོངས་པའི་སེམས་ཅན་རྣམས་ངན་སོང་གསུམ་གྱི་རྒྱུད་ལས་རྣམ་པར་ཐར་པར་བགྱི་བའི་སླད་དུ अनागतानां सत्त्वानामपायसन्ततिविमोक्षणाय स.दु.98ख/124.

རྣམ་པར་ཐར་པར་བྱེད = རྣམ་པར་ཐར་བྱེད།

རྣམ་པར་ཐར་པར་བྱེད་པ = རྣམ་པར་ཐར་བྱེད།

རྣམ་པར་ཐར་པས་རྣམ་པར་རོལ་པ *पा.* विमोक्षविक्रीडितम् – ཡེ་ཤེས་ཀྱི་ཡུལ་ཤེས་པ་སླ་བ་མ་ཡིན་ནོ།། རྣམ་པར་ཐར་པས་རྣམ་པར་རོལ་པ་ཤེས་པར་སླ་བ་མ་ཡིན་ནོ།། न सुकरो ज्ञानविषयो ज्ञातुम्। न सुकरं विमोक्षविक्रीडितं ज्ञातुम् द.भू.272ख/63.

རྣམ་པར་ཐར་བ = རྣམ་པར་ཐར་པ།

རྣམ་པར་ཐར་བྱེད •*क्रि.* विमोक्षयति लो.को.1405; •*सं.* विमोक्षणम् – དགྲ་བཅོམ་པ་ཉིད་མངོན་དུ་བྱེད་པས་ཁམས་གསུམ་པ་ལས་རྣམ་པར་ཐར་པར་བྱེད་པའི་ཕྱིར अर्हत्त्वसाक्षात्करणेन त्रैधातुकविमोक्षणात् अभि.स.भा.91क/124; विमोचनम् – གདུལ་བ་ཐམས་ཅད་ཡོངས་སུ་སྨིན་པར་བྱེད་པ་དང་རྣམ་པར་ཐར་པར་བྱེད་པའི་ཕྱིར་རོ།། सर्वविनेयजनपरिपाचनविमोचनात् अभि.स.भा.91क/123; •*ना.* विमोक्षकरा, किन्नरकन्या – མིའམ་ཅིའི་བུ་མོ་བརྒྱ་སྟོང་དུ་མ་དག་ཚོགས་པ་འདི་ལྟ་སྟེ། མིའམ་ཅིའི་བུ་མོ་ཡིད་ཅེས་བྱ་བ་དང...རྣམ་པར་ཐར་བྱེད་ཅེས་བྱ་བ་དང अनेकानि च किन्नरकन्याशतसहस्राणि सन्निपतितानि। तद्यथा–मनसा नाम किन्नरकन्या ...विमोक्षकरा नाम किन्नरकन्या का.व्यू.203क/260.

རྣམ་པར་ཐུལ་བ *भू.का.कृ.* विजितः – ཁྲེད་པར་ཆེ་རྣམས་མདུན་དུ་བུ་མོ་ནི། །ངོ་ཚས་རྣམ་པར་ཐུལ་བའི་རང་བཞིན་འགྱུར།། भवन्ति लज्जाविजितस्वभावा विशेषतोऽग्रे महतां हि कन्यकाः ॥ अ.क.297क/108.37; विनीतः लो.को.1406.

རྣམ་པར་ཐོ་མི་འཚམས་པ अविहेठनम् – གསོད་པ་དང་འཆིང་བ་ལ་སོགས་པས་སེམས་ཅན་རྣམས་ལ་རྣམ་པར་ཐོ་མི་འཚམས་པས་མི་འཚེ་བ་སྟེ वधबन्धनादिभिः सत्त्वानामविहेठनमविहिंसा त्रि.भा.157क/59; अविहेठना – སེམས་ཅན་ཐམས་ཅད་ལ་ཡང་རྣམ་པ་ཐམས་ཅད་ཀྱིས་རྣམ་པར་ཐོ་མི་འཚམས་པས་མི་འཇིགས་པའི་སྦྱིན་པ་བྱེད་དེ सर्वसत्त्वानां च सर्वप्रकारैरविहेठनयाऽभयमनुप्रयच्छति बो.भू.39ख/50.

རྣམ་པར་ཐོ་འཚམ་པ *वि.* विहेठकः – དེ་ན་གནོད་སྦྱིན་ཆེན་པོ་སེམས་ཅན་རྣམས་ལ་རྣམ་པར་མཐོ་[ཐོ་]འཚམ་ཞིང་བགེགས་དུ་མ་བྱེད་པ་པོ་དག་ཡོད་ལ तस्यां महायक्षाः सत्त्वानां विहेठका अनेकविघ्नकर्तारः वि.प्र.119ख/1, पृ.17.

རྣམ་པར་ཐོ་འཚམས = རྣམ་པར་ཐོ་འཚམས་པ།

རྣམ་པར་ཐོ་འཚམས་པ •*क्रि.* विहेठयते – འདིས་བསད་པ་དང་བཅིང་བ་ལ་སོགས་པས་སེམས་ཅན་རྣམས་ལ་རྣམ་པར་ཐོ་འཚམས་པས་སྡུག་བསྔལ་དང་ཡིད་མི་བདེ་བ་སྐྱེད་པའི་ཕྱིར་སེམས་ཅན་རྣམས་ལ་རྣམ་པར་ཐོ་འཚམས་པའོ།། विहेठयन्तेऽनया सत्त्वा वधबन्धनादिभिर्दुःखदौर्मनस्योत्पादनादिति सर्वसत्त्वविहेठना त्रि.भा.160ख/68; •*सं.* विहेठः – བདུད་ཀྱི་རིས་ཀྱི་ལྷ་རྣམས་ལ་ཇི་ལྟར་ཐོ་འཚམས་པའི་བསམ་པས་སློང་དུ་འོང་བ་རྣམས་ལ भारकायिकेषु देवेषु याचनकेषु विहेठाभिप्रायेषु प्रत्युपस्थितेषु बो.भू.62ख/82; विहेठनम् – རྣམ་པར་འཚེ་བ་ནི་རྣམ་པར་ཐོ་འཚམས་པ་སྟེ། གང་གིས

མཚོན་ཆ་དང་ཚིག་རྩུབ་པོ་དག་གིས་ཕ་རོལ་པོ་རྣམ་པར་ཐོ་འཚམས་པར་བྱེད་པ विहेठनं विहिंसा, येन प्रहारपारुष्यादिभिः परान् विहेठयते अभि.भा.250[ख]/846; འདྲི་བ་པོ་གཡོན་ཅན་རྣམ་པར་ཐོ་འཚམས་པའི་བསམ་པ་ཅན་གྱི་འདྲི་བ་ལུང་བསྟན་པ शठस्य विहेठनाभिप्रायस्य प्रष्टुः परिपृच्छाव्याकरणम् अभि.स्फु.111[क]/799; གཞན་དག་ལ་འདི་ལྟ་སྟེ། ལུས་དང་ངག་གིས་ཤིན་ཏུ་རྣམ་པར་མཐོ་འཚམས་པའི་རང་བཞིན་ཅན་མ་ཡིན་པ་དང नात्यर्थं परेषां विहेठनजातीयो यदुत कायेन वाचा श्रा.भू.71[ख]/185; विहेठना – རྣམ་པར་འཚེ་བ་ནི་སེམས་ཅན་རྣམས་ལ་རྣམ་པར་ཐོ་འཚམས་པ་སྟེ विहिंसा सत्त्वविहेठना त्रि.भा.160[ख]/68.

རྣམ་པར་ཐོ་འཚམས་པར་བྱེད་པ *क्रि.* विहेठयति – ཁྲོ་བས་ཟིལ་གྱིས་ནོན་ནས... སེམས་ཅན་རྣམས་ལ... རྣམ་པར་ཐོ་འཚམས་པར་བྱེད་པ क्रोधाभिभूतः...सत्त्वान्... विहेठयति बो.भू.85[ख]/108; विहेठयते – རྣམ་པར་འཚེ་བ་ནི་རྣམ་པར་ཐོ་འཚམས་པ་སྟེ། གང་གིས་མཚོན་ཆ་དང་ཚིག་རྩུབ་པོ་དག་གིས་ཕ་རོལ་པོ་རྣམ་པར་ཐོ་འཚམས་པར་བྱེད་པ विहेठनं विहिंसा, येन प्रहारपारुष्यादिभिः परान् विहेठयते अभि.भा.250[ख]/846.

རྣམ་པར་ཐོང *क्रि.* विमुञ्चतु – ས་ཡི་བརྒྱ་བྱིན་མྱ་ངན་རྣམ་པར་ཐོང་॥ विमुञ्च पृथ्वीपुरुहूत शोकम् अ.क.66[ख]/59.151.

རྣམ་པར་ཐོས = རྣམ་ཐོས།

རྣམ་པར་ཐོས་པ = རྣམ་ཐོས།

རྣམ་པར་མཐོ་འཚམ་པ = རྣམ་པར་ཐོ་འཚམ་པ།

རྣམ་པར་མཐོ་འཚམས་པ = རྣམ་པར་ཐོ་འཚམས་པ།

རྣམ་པར་མཐོང = རྣམ་པར་མཐོང་བ།

རྣམ་པར་མཐོང་བ • *सं.* विदर्शनम् – སངས་རྒྱས་ཐམས་ཅད་རྣམ་པར་མཐོང་བ་ལ་ཆགས་པ་མེད་པའི་མིག་གི་ཡུལ་ཞེས་བྱ་བའི་ཏིང་ངེ་འཛིན་ཐོབ་པར་གྱུར་ཏོ॥ सर्वबुद्धविदर्शनासङ्गचक्षुर्विषयं नाम समाधिं प्रत्यलभन्त ग.व्यू.317[क]/38; विदर्शना – དཀར་པོ་རྣམ་པར་མཐོང་བའི་ས शुक्लविदर्शना भूमिः म.व्यु.1141 (24[ख]); • *भू.का.कृ.* 1. विलोकितः – དེ་ཡིས་དེ་ལ་བཏུང་བ་དྲིས། །གང་ཚེ་ཅི་ཡང་མི་སྨྲ་བ། །དེ་ཚེ་རང་ཉིད་ནང་ཞུགས་པས། །ཡི་དྭགས་འཇིག་རྟེན་རྣམ་པར་མཐོང॥ स तेन पृष्टः पानीयं यदा नोवाच किंचन। तदा स्वयं प्रविष्टेन प्रेतलोको विलोकितः॥ अ.क.165[ख]/19.21 2. आकारो दृष्टः – མི་རྣམས་ནོར་ནི་དངུལ་ཆུའི་ཐིགས་པ་ཁུ་ཚུར་དག་གིས་བཟུམས་པའི་རྣམ་པར་མཐོང་॥ दृष्टं मुष्टिनिविष्टपारदकणाकारं नराणां धनम् अ.क.184[क]/21.1.

རྣམ་པར་འཐག་པ 1. वैदल्यम् – ཤིན་ཏུ་རྒྱས་པའི་སྡེ་ཞེས་བྱ་བ་ལ་རྣམ་པར་འཐག་པ་དང་མཚུངས་བྲལ་ཞེས་བྱ་བ་ནི་ཐེག་པ་ཆེན་པོའི་རྣམ་གྲངས་སུ་གཏོགས་པ་སྟེ वैपुल्यं वैदल्यं वैतुल्यमित्येते महायानस्य पर्यायाः अभि.स.भा.69[क]/96 2. = གསོད་པ विशसनम्, वधः मि.को.50[ख]।

རྣམ་པར་འཐོར = རྣམ་པར་འཐོར་བ།

རྣམ་པར་འཐོར་བ • *क्रि.* विधमति – ཉོན་མོངས་ཤེས་བྱའི་སྤྲིན་གྱི་དྲ་བ་སངས་རྒྱས་རྣམས་ཀྱི་ཐུགས་རྗེའི་རླུང་གིས་རྣམ་པར་འཐོར क्लेशज्ञेयाभ्रजालं विधमति करुणा वायुभूता जिनानाम् र.वि.122[क]/98; • *सं.* 1. विकिरणम् – རྟག་ཏུ་འཇིག་པ་འབྲལ་བ་འབྱུལ་བ་རྣམ་པར་འཐོར་བ་རྣམ་པར་འཇོམས་པའི་ཆོས་ཅན नित्यं शतनपतनभेदनविकिरणविध्वंसनधर्मा शि.स.128[ख]

/124; བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་བདུད་ཀྱི་དཀྱིལ་འཁོར་ཐམས་ཅད་རྣམ་པར་འཕྲོར་བའི་ཡེ་ཤེས་རྒྱལ་མཚན་ཞེས་བྱ་བ सर्वमारमण्डलविकिरणज्ञानध्वजो नाम बोधिसत्त्वः ग.व्यू.285ख/9; བདུད་ཀྱི་དཀྲུགས་མ་རྣམ་པར་འཕྲོར་བའི་ཁྲོ་མཆོག་གི་མཐུ་ཐུང་བ་ལའང་འཇུག་གོ॥ मारकलिविकिरणविनर्दितमवतरामि ग.व्यू.67क/157 **2.** वैरम्भः, वायुविशेषः – ཕྱིག་ཅན་ཁྱོད་ནི་རྣམ་པར་འཕྲོར་རླུང་གིས་གཏོར་བའི་བྱ་བཞིན་དུ་དེང་འདར་བར་འགྱུར་བའོ॥ विधुनेष्यसे त्वमद्य पापीयं वैरम्भवायुविक्षिप्त इव पक्षी ॥ ल.वि.162क/243; འདི་ལྟ་སྟེ་དཔེར་ན་རྣམ་པར་འཕྲོར་རླུང་གིས་བདས་པའི་བྱེའུ वैरम्भवाताभिहतशकुन्तवत् शि.स.135ख/132; • *पा.* **1.** विकिरणः, समाधिविशेषः – རྣམ་པར་འཕྲོར་བ་ཞེས་བྱ་བའི་ཏིང་ངེ་འཛིན विकिरणो नाम समाधिः म.व्यु.569 (13ख) **2.** विक्षिप्तकम्, अशुभताभेदः – དེ་ལ་ཕྱི་རོལ་ལ་བརྟེན་པའི་མི་གཙང་བའི་མི་སྡུག་པ་ཉིད་གང་ཞེ་ན། འདི་ལྟ་སྟེ། རྣམ་པར་བསྔོས་པ་དང...རྣམ་པར་འཕྲོར་བ་དང तत्र बहिर्धा चोपादाय अशुभता कतमा? तद्यथा–विनीलकं वा...विक्षिप्तकं वा श्रा.भू.79ख/203; ཡན་ལག་དང་ཉིང་ལག་ཕྱོགས་ཕྱོགས་སུ་རྣམ་པར་འཕྲོར་ཞིང་མ་འབྲེལ་ལ། ཤ་དང་བཅས་པའམ་ཤ་མེད་པའམ་ཤའི་ལྷག་རོལ་ཙུང་ཟད་ཡོད་པ་དག་ལ་ནི་རྣམ་པར་འཕྲོར་བར་མོས་པར་བྱེད་དོ॥ दिशोदिशमङ्गप्रत्यङ्गेषु विक्षिप्तेषु विश्लेषितेषु समांसेषु निर्मांसेषु किंचिच्छिष्टमांसेषु विक्षिप्तकमित्यधिमुच्यते श्रा.भू.136क/372; विक्षिप्तम् – གཉིས་པའི་ནི་རྣམ་པར་ཟོས་པ་དང་རྣམ་པར་འཕྲོར་བ་ལ་དམིགས་པའོ॥ द्वितीयस्य विखादितकविक्षिप्तालम्बनाम् अभि.भा.9ख/895; • *ना.* विकिरिणः, बुद्धः – ལྟེ་བར་ཤཱ་ཀྱའི་དབང་པོ་ཡི། །བདག་པོ་ཐུབ་པ་བྲི་བར་བྱ། ...རྣམ་པར་འཕྲོར་བ་རླུང་ཉིད་དུ། །རྣམ་པར་འཇོམས་པ་བདེན་བྲལ་བྲི॥ नाभौ शाक्याधिपेन्द्रमुनिं संलिखेत्...विकिरिणं चैव वायव्यां नैर्ऋत्यां विध्वंसकं लिखेत् ॥ स.दु.112ख/182; • *भू.का.कृ.* विप्रकीर्णः – དེ་དག་དེ་དང་དེར་རྣམ་པར་འཕྲོར་བ་རྣམས་གཅིག་ཏུ་སྡུད་པ་ནི་དོན་བསྡུས་པ་སྟེ तेषामितस्ततो विप्रकीर्णानामेकत्र हि संक्षेपः संग्रहः त.प.146ख/20; त.प.139ख/11; म.व्यु.6531 (93ख); विक्षिप्तः – ཡན་ལག་དང་ཉིང་ལག་ཕྱོགས་ཕྱོགས་སུ་རྣམ་པར་འཕྲོར་ཞིང་མ་འབྲེལ་ལ दिशोदिशमङ्गप्रत्यङ्गेषु विक्षिप्तेषु विश्लेषितेषु श्रा.भू.136क/372; विद्रुतः – ས་ནི་རི་དང་བཅས་སུ་གཡོས། །བྱ་ཚོགས་རྣམ་མང་རྣམ་པར་འཕྲོར॥ कम्पित सशैल धरणी विद्रुत पक्षिसङ्घ विविधानि सु.प्र.57ख/115; द्र. འཕྲོར་བ།

རྣམ་པར་འཕྲོར་བ་ལ་དམིགས་པ *वि.* विक्षिप्तालम्बनः – གཉིས་པའི་ནི་རྣམ་པར་ཟོས་པ་དང་རྣམ་པར་འཕྲོར་བ་ལ་དམིགས་པའོ॥ द्वितीयस्य विखादितकविक्षिप्तालम्बनाम् अभि.भा.9ख/895.

རྣམ་པར་འཕྲོར་བའི་འདུ་ཤེས *पा.* विक्षिप्तकसंज्ञा, अशुभभावनाविशेषः म.व्यु.1162 (25क); द्र. རྣམ་པར་འཕྲོར་བ།

རྣམ་པར་འཕྲོར་བའི་རླུང = རྣམ་པར་འཕྲོར་རླུང་།

རྣམ་པར་འཕྲོར་བར་བྱེད = རྣམ་པར་འཕྲོར་བྱེད།

རྣམ་པར་འཕྲོར་བར་བྱེད་པ = རྣམ་པར་འཕྲོར་བྱེད།

རྣམ་པར་འཕྲོར་བྱེད • *क्रि.* विक्षिपति म.व्यु.5195 (77ख); • *सं.* वैरम्भः, वायुभेदः – གཞན་དག་ན་རེ་རླུང་གི་དཀྱིལ་འཁོར་དང་རྣམ་པར་འཕྲོར་བྱེད་ཀྱི་རླུང་གི་བར་དུའོ་ཞེས་ཟེར་ཏེ यावद्वायुमण्डलं वैरम्भाश्च वायव इत्यपरे अभि.भा.11क/900; अभि.स्फु.163ख/

900; द्र. རྣམ་པར་འཕྲོར་རླུང་།

རྣམ་པར་འཕྲོར་རླུང वैरम्भवायुः, वायुभेदः – སྡིག་ཅན་ཁྱོད་ནི་རྣམ་པར་འཕྲོར་རླུང་གིས་གཏོར་བའི་བྱ་བཞིན་དུ་དེང་འདར་བར་འགྱུར་བའོ॥ विधुनेष्यसे त्वमद्य पापीयं वैरम्भवायुविक्षिप्त इव पक्षी ॥ ल.वि.162क/243; वैरम्भवातः – རྣམ་པར་འཕྲོར་རླུང་གིས་ནི་བྱ་ལྟུང་ལྟར། །ཆགས་པས་ཀྱང་ནི་དེ་ལྟར་མི་རིགས་སོ॥ वैरम्भवातेन यथैव पक्षी क्षिप्यन्ति लोभेन तथा अयुक्ताः ॥ रा.प. 243क/141; वैरम्भो वायुः – ཕྱི་རོལ་གྱི་རླུང་གི་ཁམས་གང་ཞེ་ན…ཤར་གྱི་རླུང་དང…རྣམ་པར་འཕྲོར་བའི་རླུང་དང बाह्यो वायुधातुः कतमः ? …पूर्वा वायवः …वैरम्भा वायवः श्रा.भू.83क/216; द्र. རྣམ་པར་འཕྲོར་བྱེད།

རྣམ་པར་དག = རྣམ་པར་དག་པ།

རྣམ་པར་དག་པ = རྣམ་དག •क्रि. विशुध्यते – གང་གིས་སྐྱེ་བོའི་ཐེ་ཚོམ་གཅོད་འགྱུར་བ། །ཤེས་རབ་རྒྱ་མཚོ་ཇི་ལྟར་རྣམ་པར་དག॥ प्रज्ञासागर कथं विशुध्यते येन छिन्दति जनेऽस्य संशयम् ॥ रा.प.231ख/124; • सं. 1. विशुद्धिः – དེ་ནི་ནམ་མཁའ་གསེར་དང་ཆུ་ལྟར་ཉོན་མོངས་པ་ལས་རྣམ་དག་འདོད॥ यस्याकाशसुवर्णवारिसदृशी क्लेशाद्विशुद्धिर्मता॥ सू.अ.168क/59; སྡིག་པ་ཐམས་ཅད་རྣམ་པར་དག་པ॥ सर्वपापविशुद्धिम् ज्ञा.सि. 47क/120; རབ་འབྱོར་གཟུགས་རྣམ་པར་དག་པ་གང་ཡིན་པ་དེ་ནི་འབྲས་བུ་རྣམ་པར་དག་པ या सुभूते रूपविशुद्धिः, सा फलविशुद्धिः अ.सा.165ख/93; शुद्धिः – ཡོངས་སུ་གཅོད་པར་ནུས་པའི་ཡུལ་མ་ལུས་པ་རྣམ་པར་དག་པ་དེ་ནི་མི་སླུ་བ་ཡིན་ནོ॥ सेयं शक्यपरिच्छेदाऽशेषविषयशुद्धिरविसंवादः प्र.वृ.322ख/72; हे. त.18ख/58; शुचिः – གང་གི་གྲགས་པ་རྣམ་དག་པས། །ཁྱབ་པའི་བརྟུལ་ཞུགས་བླངས་པ་བཞིན॥ यशोभिः शुचिभिर्यस्य मुनिव्रतमिवोह्यते ॥ अ.क.208ख/24.4
2. = སངས་རྒྱས विशुद्धः, बुद्धस्य नामपर्यायः – བྱམས་པ་དེ་བཞིན་གཤེགས་པས་ཆོས་ཀྱི་འཁོར་ལོ་རྣམ་པ་འདི་ལྟ་བུ་བསྐོར་ཏེ། དེ་བསྐོར་བས་དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་ལ་དེ་བཞིན་གཤེགས་པའོ་ཞེས་བྱའོ॥ …རྣམ་པར་དག་པ་ཞེས་བྱའོ॥ एवंरूपं मैत्रेय तथागतेन धर्मचक्रं प्रवर्तितम्, यस्य प्रवर्तनात् तथागत इत्युच्यते …विशुद्ध इत्युच्यते ल.वि.204ख/308 3. = རྣམ་དག་ཉིད विशुद्धता – ཆེ་བ་དང… རྣམ་པར་དག་པ་དང… ཕྱོགས་ཀྱི་དྲ་བ་རྣམ་པར་དབྱེ་བ་ཡང་རབ་ཏུ་ཤེས་སོ॥ महद्गततां च… विशुद्धतां च…दिग्जालविभागतां च प्रजानाति द.भू. 244ख/45; འདི་ཡི་སེམས་ནི་ཇི་ལྟར་རྣམ་དག་ལྟོས॥ विशुद्धता पश्य यथास्य चेतसः जा.मा.13ख/14; परिशुद्धता–འཇིག་རྟེན་གྱི་ཁམས…ཀུན་ནས་ཉོན་མོངས་པ་རྣམ་པར་དག་པར་བྱིན་གྱིས་རློབ་བོ॥ संक्लिष्टाया लोकधातोः परिशुद्धतामधितिष्ठति द.भू.270क/61; •पा. विशुद्धिः – དེ་ལ་རྣམ་པར་དག་པ་ནི་མདོར་བསྡུ་ན་རྣམ་པ་གཉིས་ཏེ། རང་བཞིན་གྱིས་རྣམ་པར་དག་པ་དང་དྲི་མ་མེད་པའི་རྣམ་པར་དག་པའོ॥ तत्र विशुद्धिः समासतो द्विविधा। प्रकृतिविशुद्धिर्वैमल्यविशुद्धिश्च र. व्या.116क/80 •भू.का.कृ. विशुद्धः – རྣམ་པར་དག་པའི་རྒྱུས་བསྐྱེད་པ་ཉིད विशुद्धकारणजनितत्वम् त.प. 224ख/917; བདག་མེད་པ་མཆོག་ནི་དེ་བཞིན་ཉིད་རྣམ་པར་དག་པའོ॥ अग्रं नैरात्म्यं विशुद्धा तथता सू.व्या. 155क/41; बो.भू.143क/184; परिशुद्धः – འཇིག་རྟེན་གྱི་ཁམས…རྣམ་པར་དག་པ་ཀུན་ནས་ཉོན་མོངས་པར་བྱིན་གྱིས་རློབ་བོ॥ परिशुद्धाया लोकधातोः संक्लिष्टतामधितिष्ठति द.भू.270क/61; संशुद्धः – ཀུན་འགྲོའི་ཡེ་ཤེས་རྣམ་དག་པ॥ ज्ञानं सर्वत्र संशुद्धम् गु.सि. 13क/28; शुद्धः – མཆོག་ཏུ་ཤེས་ཤིང་རྣམ་དག་གང་།

...གནས་ यत्तत्परं शिवं शुद्धं...स्थानम् गु.सि.6क/13; རང་བཞིན་གྱིས་རྣམ་པར་དག་པ स्वभावशुद्धः त.सि. 66ख/176; विशोधितः – ཚུལ་ཁྲིམས་ལ་སོགས་ཕུང་པོ་ལྔས། །ཁ་དོག་ལྔ་ནི་རྣམ་པར་དག། शीलादिपञ्चभिः स्कन्धैः पञ्चवर्णं विशोधितम् ॥ वि.प्र.34क/4.9; •वि. विशुद्धकः – གཟུགས་རྟག་མ་ཡིན་མི་རྟག་མིན། །མཐའ་ལས་འདས་དང་རྣམ་དག་དང་།། रूपं न नित्यं नानित्यमतीतान्तं विशुद्धकम्। अभि.अ.6ख/3.12.

རྣམ་པར་དག་པ་ངེས་པར་འབྱིན་པའི་ལམ *पा.* विशुद्धिनैर्याणिको मार्गः, मार्गभेदः – ལམ་རྣམ་པ་བཅུ་གཅིག ...དངོས་པོ་ལ་ཡོངས་སུ་རྟོག་པའི་ལམ...རྣམ་པར་དག་པ་ངེས་པར་འབྱིན་པའི་ལམ एकादशविधो मार्गः...वस्तुपरीक्षामार्गः...विशुद्धिनैर्याणिको मार्गः अभि.स.भा. 61क/84.

རྣམ་པར་དག་པ་ཉིད विशुद्धता – ཏིང་ངེ་འཛིན་དང་གཟུངས་རྣམ་[? གཟུངས་རྣམས་]དང་། །བྱང་ཆུབ་རྣམ་པར་དག་པ་ཉིད།། समाधिधारणीनां च बोधेश्चैव विशुद्धता। सू.अ.251ख/170; विशुद्धत्वम् – ལྷག་མས་རྣམ་པར་དག་པ་ཉིད་དེ शेषेण विशुद्धत्वम् ख.टी.160ख/241.

རྣམ་པར་དག་པ་མཉམ་པ་ཉིད विशुद्धिसमता – དེ་སེམས་ཀྱི་བསམ་པ་རྣམ་པར་དག་པའི་མཉམ་པ་ཉིད་བཅུས་འཇུག་གོ།། ...ལྟ་བ་དང་ནེམ་ནུར་དང་དོགས་པ་བསལ་བས་བསམ་པ་རྣམ་པར་དག་པ་མཉམ་པ་ཉིད་དང་ स दशभिश्चित्ताशयविशुद्धिसमताभिरवतरति...दृष्टिकाङ्क्षाविमतिविलेखापनयनविशुद्ध्याशयसमतया च द.भू.212क/27.

རྣམ་པར་དག་པ་རབ་ཏུ་འབྱེད་པ *पा.* विशुद्धिविचयः, बोधिसत्त्वविमोक्षविशेषः – ཀྱེ་རྒྱལ་བའི་སྲས་དག། དེ་ལྟར་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའི་ས་འདི་དང་ལྡན་པའི་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་དེ་བྱང་ཆུབ་སེམས་པའི་རྣམ་པར་ཐར་པ་བསམ་གྱིས་མི་ཁྱབ་པ་ཞེས་བྱ་བ་རབ་ཏུ་འཐོབ་བོ།། ...རྣམ་པར་དག་པ་རབ་ཏུ་འབྱེད་པ་ཞེས་བྱ་བ་དང་ स खलु पुनर्भो जिनपुत्रा बोधिसत्त्व एवमिमां बोधिसत्त्वभूमिमनुगतोऽचिन्त्यं च नाम बोधिसत्त्वविमोक्षं प्रतिलभते...विशुद्धिविचयं च नाम द.भू.267क/59.

རྣམ་པར་དག་པ་ལ་དབང་བསྒྱུར་བ <?> *पा.* विशुद्धगतिः, चक्षुर्विशेषः – ཞིང་ཐམས་ཅད་ལ་རྣམ་པར་ལྟ་བའི་མིག་རྣམ་པར་དག་པ་ལ་དབང་བསྒྱུར་བ་ཞེས་བྱ་བ་ཐོབ་པར་གྱུར་ཏོ།། विशुद्धगतिं च नाम चक्षुः प्रतिलेभे, येन सर्वक्षेत्रप्रकृतिं व्यवलोकयति ग.व्यू.258ख/341.

རྣམ་པར་དག་པའི་སྐུ *पा.* विशुद्धकायः – དེའི་ཕྱིར་གསང་བའི་པདྨ་དང་གཙུག་ཏོར་གྱི་པདྨ་དང་ལྟེ་བའི་པདྨ་ལ་རྣམ་པར་དག་པའི་སྐུ་ལྷག་པའི་ལྷ་སྟེ अतो गुह्यकमले उष्णीषकमले नाभिकमले विशुद्धकायोऽधिदेवता वि.प्र.231क/2.27.

རྣམ་པར་དག་པའི་རྒྱུ *पा.* विशुद्धकारणम् – རྣམ་པར་དག་པའི་རྒྱུས་བསྐྱེད་ཕྱིར། །དེ་ནི་ཚད་མ་ཉིད་དུ་ངེས།། विशुद्धकारणोत्पादात् त्वस्याः प्रामाण्यनिश्चयः। त.स.109क/952; བསྐལ་པའི་ཡུལ་ཅན་གསེར་གྱི་དུང་འཛིན་པའི་ཤེས་པ་རྣམ་པར་དག་པའི་རྒྱུས་བསྐྱེད་པ་གང་ཡིན་པ་དེ་ནི་དེ་ཡིས་བསྐྱེད་པ་ཉིད་ཀྱི་ཕྱིར་ཏེ यद्विप्रकृष्टविषयं सौवर्णशङ्खग्राहिज्ञानं तस्य तज्जन्यत्वाद् विशुद्धकारणजन्यत्वम् त.प.240क/951; विशुद्धिकारणम् – རྣམ་པར་དག་པའི་རྒྱུ་མེད་ཕྱིར། །ཡང་ན་རྒྱུ་མཚན་གཞན་གྱིས་ནི། །གནོད་པ་ཅན་དུ་མི་སྐྱེས་ཏེ།། वि-

शुद्धिकारणाभावान्नोपजायेत बाधकम्। अन्येन वा निमित्तेन त.स.110क/957.

རྣམ་པར་དག་པའི་ཆོས་ཅན *वि.* विशुद्धधर्मि – རབ་ཀྱི་རྩལ་གྱིས་རྣམ་པར་གནོན་པ་གཟུགས་ནི་རྣམ་པར་དག་པའི་ཆོས་ཅན་ཡང་མ་ཡིན། རྣམ་པར་མ་དག་པའི་ཆོས་ཅན་ཡང་མ་ཡིན་ནོ།། न हि सुविक्रान्तविक्रामिन् रूपं विशुद्धधर्मि नाविशुद्धधर्मि सु.प.38ख/17.

རྣམ་པར་དག་པའི་ཆོས་ཉིད विशुद्धधर्मता – གཟུགས་དང་ཚོར་བ་དང་འདུ་ཤེས་དང་འདུ་བྱེད་རྣམས་དང་རྣམ་པར་ཤེས་པ་རྣམ་པར་དག་པའི་ཆོས་ཉིད་ཀྱང་མ་ཡིན། རྣམ་པར་མ་དག་པའི་ཆོས་ཉིད་ཀྱང་མ་ཡིན་པ་གང་ཡིན་པ་དེ་ཤེས་རབ་ཀྱི་ཕ་རོལ་ཏུ་ཕྱིན་པའོ།། या च रूपवेदनासंज्ञासंस्कारविज्ञानानां न विशुद्धधर्मता नाविशुद्धधर्मता, इयं प्रज्ञापारमिता सु.प.38ख/17.

རྣམ་པར་དག་པའི་མཉམ་པ་ཉིད = རྣམ་པར་དག་པ་མཉམ་པ་ཉིད།

རྣམ་པར་དག་པའི་ཐབས *पा.* विशुद्ध उपायः, उपायभेदः – དེ་ལ་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའི་རྣམ་པར་དག་པའི་ཐབས་གང་ཞེ་ན तत्र कतमो बोधिसत्त्वस्य विशुद्ध उपायः बो.भू.143क/184.

རྣམ་པར་དག་པའི་དེ་ཁོ་ན *पा.* विशुद्धितत्त्वम्, प्रभेदतत्त्वभेदः – རབ་ཏུ་དབྱེ་བའི་དེ་ཁོ་ན་རྣམ་པ་བདུན་ཏེ། འཇུག་པའི་དེ་ཁོ་ན་དང...རྣམ་པར་དག་པའི་དེ་ཁོ་ན་དང ཡང་དག་པར་སྒྲུབ་པའི་དེ་ཁོ་ནའོ།། सप्तविधं प्रभेदतत्त्वम् – प्रवृत्तितत्त्वम्...विशुद्धितत्त्वम्, सम्यक्प्रतिपत्तितत्त्वञ्च म.भा.13क/3.13.

རྣམ་པར་དག་པའི་དེ་བཞིན་ཉིད *पा.* विशुद्धितथता, तथताभेदः – དེ་བཞིན་ཉིད་རྣམ་པ་བདུན་པོ་འཇུག་པའི་དེ་བཞིན་ཉིད་དང... རྣམ་པར་དག་པའི་དེ་བཞིན་ཉིད་དང... ཡང་དག་པར་སྒྲུབ་པའི་དེ་བཞིན་ཉིད་ལ་བརྟེན་ནས་བདེན་པ་རྣམ་པར་གཞག་པ་ཡིན་ནོ།། सत्यव्यवस्थानं तु सप्तविधां तथतामाश्रित्य प्रवृत्तितथतां... विशुद्धितथतां...सम्यक्प्रतिपत्तितथतां च सू.व्या. 244ख/161.

རྣམ་པར་དག་པའི་བདག = རྣམ་དག་བདག *वि.* विशुद्धात्मा – དེ་ནས་སྤྱོད་པ་བྱ་བ་འཐམ།...།དེ་ཉིད་རིན་ཆེན་རྣམ་དག་བདག།། ततश्चर्यां प्रकुर्वीत...तत्त्वरत्नविशुद्धात्मा गु.सि.3ख/8; རྣམ་པར་དག་པའི་བདག་མཐོང विशुद्धात्मदर्शनम्। त.स.129क/1104.

རྣམ་པར་དག་པའི་བདག་མཐོང विशुद्धात्मदर्शनम् – རྣམ་པར་དག་པའི་བདག་མཐོང་གང་། །དེ་ཉིད་ཁོ་ན་དེ་ཤེས་ཡིན།། एतदेव हि तज्ज्ञानं यद्विशुद्धात्मदर्शनम्। त.स.129क/1104.

རྣམ་པར་དག་པའི་རྣལ་འབྱོར *पा.* विशुद्धयोगः – དེ་ཉིད་ལྷན་ཅིག་སྐྱེས་པའི་སྐུ་སྟོང་པ་ཉིད་ཀྱི་རྣམ་པར་ཐར་པས་རྣམ་པར་དག་པ། ཡེ་ཤེས་རྡོ་རྗེ་ཐམས་ཅད་མཁྱེན་པ་ཤེས་རབ་དང་ཐབས་ཀྱི་བདག་ཉིད་རྣམ་པར་དག་པའི་རྣལ་འབྱོར་ཞེས་བརྗོད་དོ།། स एव सहजकायः शून्यताविमोक्षविशुद्धो ज्ञानवज्रः सर्वज्ञः प्रज्ञोपायात्मको विशुद्धयोग इति वि.प्र.146क/102.

རྣམ་པར་དག་པའི་སྤྱོད་ཡུལ་གྱི་དེ་ཁོ་ན *पा.* विशुद्धिगोचरतत्त्वम्, तत्त्वभेदः – དེ་ཁོ་ན་རྣམ་པ་བཅུ་སྟེ། འདི་ལྟ་སྟེ། རྩ་བའི་དེ་ཁོ་ན་དང་།... རྣམ་པར་དག་པའི་སྤྱོད་ཡུལ་གྱི་དེ་ཁོ་ན་དང་། བསྡུ་བའི་དེ་ཁོ་ན་དང་། རབ་ཏུ་དབྱེ་བའི་དེ་ཁོ་ན་དང་། མཁས་པའི་དེ་ཁོ་ནའོ།། दशविधं तत्त्वम्, यदुत – मूलतत्त्वम्... विशुद्धिगोचरतत्त्वम्,

संग्रहतत्त्वम्, प्रभेदतत्त्वम्, कौशल्यतत्त्वञ्च म.भा. 10क/3.2.

རྣམ་པར་དག་པའི་བློ = རྣམ་པར་དག་པའི་བློ་གྲོས།

རྣམ་པར་དག་པའི་བློ་གྲོས *pā.* विशुद्धमतिः, चक्षुर्विशेषः – དེ་བཞིན་གཤེགས་པའི་གཟུགས་ཀྱི་སྐུ་ཡོངས་སུ་གྲུབ་པ་རྣམ་པར་ཕྱེ་བ་བསམ་གྱིས་མི་ཁྱབ་པ་ལ་རྣམ་པར་ལྟ་བའི་མིག་རྣམ་པར་དག་པའི་བློ་གྲོས་ཞེས་བྱ་བ་ཐོབ་པར་གྱུར་ཏོ།། विशुद्धगतिं[? मतिं] च नाम चक्षुः प्रतिलेभे, येनाचिन्त्यां तथागतरूपकायपरिनिष्पत्तिं व्यवलोकयति ग.व्यू.258ख/341.

རྣམ་པར་དག་པའི་སྦྱིན་པ *pā.* विशुद्धं दानम्, दानभेदः – དེ་ལ་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའི་རྣམ་པར་དག་པའི་སྦྱིན་པ་གང་ཞེ་ན། དེ་ནི་རྣམ་པ་བཅུར་རིག་པར་བྱ་སྟེ तत्र कतमद्बोधिसत्त्वस्य विशुद्धं दानम्? तद्दशाकारं वेदितव्यम् बो.भू.72ख/93.

རྣམ་པར་དག་པའི་སྦྱིན་པ་རྣམ་པ་བཅུ दशाकारं विशुद्धं दानम् – 1. ཐོགས་པ་མེད་པ असक्तम्, 2. མཆོག་ཏུ་འཛིན་པ་མེད་པ अपरामृष्टम्, 3. བསགས་པ་མེད་པ असंभृतम्, 4. ཁེངས་པ་མེད་པ अनुन्नतम्, 5. མི་བརྟེན་པ अनिश्रितम्, 6. ཞུམ་པ་མེད་པ अलीनम्, 7. ངན་པ་མ་ཡིན་པ अदीनम्, 8 རྒྱབ་ཀྱིས་ཕྱོགས་པ་མེད་པ अविमुखम्, 9. ལན་ལ་མི་ལྟ་བ प्रतीकारानपेक्षम्, 10. རྣམ་པར་སྨིན་པ་ལ་མི་ལྟ་བ विपाकानपेक्षम् बो.भू.72ख/93.

རྣམ་པར་དག་པའི་མིག *nā.* विशुद्धनेत्रः, बोधिसत्त्वः – འདི་ལྟ་སྟེ། བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་སེམས་དཔའ་ཆེན་པོ་ཤེས་པ་དམ་པའི་ཡེ་ཤེས་དང་...རྣམ་པར་དག་པའི་མིག་དང यदुत ज्ञानोत्तरज्ञानिना च बोधिसत्त्वेन महासत्त्वेन...विशुद्धनेत्रेण च ग.व्यू.275क/2.

རྣམ་པར་དག་པའི་དམིགས་པ विशुद्धालम्बनम् लो.को. 1406.

རྣམ་པར་དག་པའི་བརྩོན་འགྲུས *pā.* विशुद्धं वीर्यम्, वीर्यभेदः – དེ་ལ་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའི་རྣམ་པར་དག་པའི་བརྩོན་འགྲུས་གང་ཞེ་ན། དེ་ནི་མདོར་བསྡུ་ན་རྣམ་པ་བཅུར་རིག་པར་བྱ་སྟེ तत्र कतमद् बोधिसत्त्वस्य विशुद्धं वीर्यम् । तत्समासतो दशविधं वेदितव्यम् बो.भू. 109ख/141.

རྣམ་པར་དག་པའི་བརྩོན་འགྲུས་བཅུ दशविधं विशुद्धवीर्यम् – 1. འཚམ་པ अनुरूपम्, 2. གོམས་པ अभ्यस्तम्, 3. མི་གཡེལ་བ अश्लथम्, 4. ལེགས་པར་ཟིན་པ सुगृहीतम्, 5. དུས་སུ་གོམས་པར་བརྩོན་པ कालाभ्यासप्रयुक्तम्, 6. མཚན་མ་རྟོགས་པ་དང་ལྡན་པ निमित्तप्रतिवेधयुक्तम्, 7. ཞུམ་པ་མེད་པ अलीनम्, 8. མི་ལྡན་པ་མེད་པ अविधुरम्, 9. སྙོམས་པ समम्, 10. བྱང་ཆུབ་ཆེན་པོར་ཡོངས་སུ་བསྔོ་བ महाबोधिपरिणमितम् बो.भू. 109ख/141.

རྣམ་པར་དག་པའི་ཚུལ་ཁྲིམས *pā.* विशुद्धशीलम्, शीलभेदः – བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་རྣམས་ཀྱི་ཚུལ་ཁྲིམས ...ནི་རྣམ་པ་དགུར་རིག་པར་བྱ་སྟེ། ཚུལ་ཁྲིམས་ཀྱི་ངོ་བོ་ཉིད་དང...རྣམ་པ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་ཚུལ་ཁྲིམས་དང...རྣམ་པར་དག་པའི་ཚུལ་ཁྲིམས་སོ།། शीलं बोधिसत्त्वानां... नवविधं वेदितव्यम्। स्वभावशीलं...सर्वाकारशीलं ...विशुद्धशीलञ्च बो.भू.74क/95; རྣམ་པར་དག་པའི་ཚུལ་ཁྲིམས... རྣམ་པ་བཅུ विशुद्धं शीलं... दशविधम् बो.भू.100ख/128.

རྣམ་པར་དག་པའི་བཟོད་པ *pā.* विशुद्धा क्षान्तिः, क्षान्तिभेदः – བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའི་རྣམ་པར་དག་པའི་བཟོད་པ... རྣམ་པ་བཅུར་བལྟ་བར་བྱ་སྟེ बोधिसत्त्वस्य

विशुद्धा क्षान्तिः... दशविधा द्रष्टव्या बो.भू.106ख/136.

རྣམ་པར་དག་པའི་ཤེས་རབ *पा.* विशुद्धा प्रज्ञा, प्रज्ञाभेदः – བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའི་རྣམ་པར་དག་པའི་ཤེས་རབ...རྣམ་པ་བཅུར་རིག་པར་བྱ་སྟེ बोधिसत्त्वस्य विशुद्धा प्रज्ञा...दशविधा वेदितव्या बो.भू.114ख/148.

རྣམ་པར་དག་པའི་བསམ་གཏན *पा.* विशुद्धं ध्यानम्, ध्यानभेदः – བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའི་རྣམ་པར་དག་པའི་བསམ་གཏན... རྣམ་པ་བཅུར་རིག་པར་བྱ་སྟེ बोधिसत्त्वस्य विशुद्धं ध्यानं...दशविधं द्रष्टव्यम् बो.भू.112ख/145.

རྣམ་པར་དག་པར་གྱུར • *क्रि.* विशुध्यतु लो.को.1390; • *भू.का.कृ.* विशुद्धः – སྲོག་ཆགས་དྲུག་ཁྲི་བཞི་སྟོང་ཆོས་རྣམས་ལ་ཆོས་ཀྱི་མིག་རྡུལ་མེད་ཅིང་དྲི་མ་མེད་པ་རྣམ་པར་དག་པར་གྱུར་ཏོ॥ चतुःषष्टेश्च प्राणिसहस्राणां विरजांसि विगतमलानि धर्मेषु धर्मचक्षूंषि विशुद्धानि अ.सा.452क/255.

རྣམ་པར་དག་པར་འགྱུར • *क्रि.* विशुध्यति – བཅོམ་ལྡན་འདས་རང་གི་སེམས་སྣང་བའི་རྒྱུད་ཅིག་ཅར་རམ་རིམ་གྱིས་འཇུག་པས་སམ་ཇི་ལྟར་རྣམ་པར་དག་པར་འགྱུར कथं भगवन् स्वचित्तदृश्यधारा विशुध्यति युगपत्क्रमवृत्त्या वा ल.अ.76ख/24; विशुद्धो भवति – ཡེ་ཤེས་ཀྱི་ཕུང་པོ་རྣམ་པར་དག་པར་འགྱུར་རོ॥ ज्ञानराशिविशुद्धो भवति का.व्यू.230ख/293; विशुद्धिर्भवति – རྣམ་པར་དག་པ་དེས་ལྷ་རྣམས་ཀྱི་སྟན་དང་འདུག་སྟངས་རྣམ་པར་དག་པར་འགྱུར་ཏེ तेन विशुद्धेन देवतानां पदासनविशुद्धिः...भवति वि.प्र.62क/4.109; विशुध्यते – ཆོས་རྣམས་ཐམས་ཅད་རྟོགས་པའི་ཕྱིར། །སངས་རྒྱས་ཡེ་ཤེས་རྣམ་དག་འགྱུར॥ सर्वधर्मावबोधेन बुद्धज्ञानं विशुध्यते ॥ ल.अ.169क/124; ཐིབས་པོ་རྒྱུ་བ་དག་ལ་གང་དག་ཀུན་ནས་ཉོན་མོངས་པར་འགྱུར་བ་དང་རྣམ་པར་དག་པར་འགྱུར་བ་དང गहनोपविचारेषु ये च संक्लिश्यन्ते विशुध्यन्ते च बो.भू.183क/241; शुध्यते – ཇི་ལྟར་རྟོག་གེ་རྣམ་དག་འགྱུར॥ कथं हि शुध्यते तर्कः ल.अ.64ख/11.

རྣམ་པར་དག་པར་འགྱུར་བ = རྣམ་པར་དག་པར་འགྱུར།

རྣམ་པར་དག་པར་བྱ་བ *कृ.* विशोधयितव्यम् – ཤེས་བྱ་ཐམས་ཅད་ལ་ཡང་ཡེ་ཤེས་མཐོང་བ་རྣམ་པར་དག་པར་བྱ་བ་སྟེ सर्वत्र च ज्ञेये ज्ञानदर्शनं विशोधयितव्यं च बो.भू.59ख/77.

རྣམ་པར་དག་པར་བྱེད = རྣམ་པར་དག་པར་བྱེད་པ།

རྣམ་པར་དག་པར་བྱེད་པ • *क्रि.* विशोधयति – ལས་བདག་གིར་བྱ་བ་ཤེས་པའི་སྟོབས་ཀྱིས་རིགས་རིམ་གྱིས་རྣམ་པར་དག་པར་བྱེད कर्मस्वकताज्ञानबलगोत्रं क्रमेण विशोधयति बो.भू.56क/73; • *वि.* विशोधकः – སྐྱེས་བུ་པད་མ་ཁྱོད་ཕྱག་འཚལ། །སྲིད་གསུམ་འདམ་ནི་རྣམ་དག་བྱེད॥ नमस्ते पुरुषपद्म त्रिभवपङ्कविशोधक ॥ म.मू.91क/3; • *व.का.कृ.* विशोधयमानः लो.को.1406.

རྣམ་པར་དག་པར་མ་མཛད་པ *वि.* अविशुद्धम् – དེས་པར་དབང་པོ་དྲུག་གི་གྲངས། །རྣམ་པར་དག་པར་མ་མཛད་པ॥ इन्द्रियाण्यविशुद्धानि षट्संख्याकृतानि वै । हे.त.18ख/58.

རྣམ་པར་དག་པས་དགྱེས་པ *ना.* विशुद्धनन्दी, बोधिसत्त्वः – དེ་དག་ཐམས་ཅད་དུའང་ཁྲོ་མོ་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའི་ཕྱུམ་དུ་འགྱུར་རོ॥ བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་བྱམས་པའི་ཕྱུམ་དུ་ཇི་ལྟར་འགྱུར་བ་དེ་བཞིན་དུ...རྣམ་པར་དག

པས་དགྱེས་པ་དང तेष्वहं सर्वत्र बोधिसत्त्वजननी भविष्यामि। यथा च मैत्रेयस्य बोधिसत्त्वस्य, तथा... विशुद्धनन्दिनः ग.व्यू.268क/347.

རྣམ་པར་དག་བྱེད = རྣམ་པར་དག་པར་བྱེད་པ།

རྣམ་པར་དང་བ *वि.* विप्रसन्नः म.व्यु.7293 (103ख).

རྣམ་པར་དྭངས = མཁས་པ विचक्षणः, विद्वान् – विद्वान् विपश्चिद्दोषज्ञः सन्सुधीः कोविदो बुधः।...विचक्षणः अ.को.2.7.6; विचष्टे विशेषेणाचष्टे विचक्षणः। चक्षिङ् व्यक्तायां वाचि अ.वि.2.7.6.

རྣམ་པར་དུད་པ *भू.का.कृ.* विनतः – དེ་མཐོང་ཉིད་ཀྱི འཕྲུལ་ལ་ནི། །ཉ་པ་རྣམ་པར་དུད་པ་ཡིས། །སྲོག་ཆགས་འཆིང་བ་ཡངས་པའི་རྒྱ། །འཁོར་བ་ལྟ་བུ་བཏང་བར་གྱུར།། तं विलोक्यैव विनताः कैवर्ताः प्राणिबन्धनम्। विशालजालं सहसा संसारमिव तत्यजुः॥ अ.क.297ख/39.10.

རྣམ་པར་དུལ विनीतः, सुशिक्षिताश्वः – विनीताः साधुवाहिनः अ.को.2.8.44; विनीयन्त इति विनीताः। नीञ् प्रापणे अ.वि.2.8.44.

རྣམ་པར་གདའ *वि.* व्यवभासितः – སྐུ་ལུས་གསེར་གྱི མདོག་ཏུ་རྣམ་པར་གདའ།། सुवर्णवर्णो व्यवभासिताङ्गः सु.प्र.60ख/123.

རྣམ་པར་གདུངས विदाहः – ཡོངས་སུ་གདུངས་དང་རྣམ པར་གདུངས་ལྡན་དང་། །འཇིགས་དང་རིམས་ནད་སྨྱ་ངན གྱིས་ཉེན་པ།། परिदाहविदाहसंयुतं भयरोगज्वरशोककर्षितम्॥ वि.व.126क/1.15.

རྣམ་པར་གདོན་མི་ཟ་བ विनिश्चयः – རིམ་ཁང་བདུན པའི་ནང་ན་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་སྒྲ་བརྙན་ལྟ་བུའི་བཟོད པ་རབ་ཏུ་ཐོབ་པ་ཐབས་དང་ཡེ་ཤེས་རྣམ་པར་གདོན་མི ཟ་བ་ལས་ཤིན་ཏུ་བྱུང་བ सप्तमे पुरे प्रतिश्रुत्कोपमक्षान्तिप्रतिलब्धानामुपायज्ञानविनिश्चयनिर्यातानाम्... बोधिसत्त्वानाम् ग.व्यू.17ख/115; ल.अ.72ख/20.

རྣམ་པར་འདག = རྣམ་པར་འདག་པ།

རྣམ་པར་འདག་པ •*क्रि.* विशुध्यति – ཤེས་བྱ་ཇི་ལྟར རྣམ་པར་འདག།། कथं ज्ञेयं विशुध्यति ल.अ.65क/12; विशुध्यते – སྲིད་པ་རྒྱུ་མེད་པར་མཐོང་ན། །སེམས ཀྱི་རྒྱུ་[? རྒྱུད་]ནི་རྣམ་པར་འདག།། अहेतुकं भवं पश्यंश्चित्तधारा विशुध्यते॥ ल.अ.179ख/144; • *सं.* विशोधनम् – བསྔགས་པས་སྡིག་པ་འཕྲོག་པར་མཛད། ...།ཡོངས་སུ་ཤེས་པས་རྣམ་པར་འདག།། कीर्तनं किल्विषहरं...परिज्ञानं विशोधनम्॥ श.बु.113ख/94.

རྣམ་པར་འདའ་བར་འགྱུར *क्रि.* व्यतिक्रामति – དེས... བདེ་བ་དང་སྡུག་བསྔལ་ལས་རྣམ་པར་འདའ་བར་འགྱུར सः...सुखदुःखं व्यतिक्रामति अभि.भा.230ख/774.

རྣམ་པར་འདལ་བ *ना.* वैदल्यः, पर्वतराजः – རིའི་རྒྱལ པོ་ཆེན་པོ་བཅུ...རིའི་རྒྱལ་པོ་ཆེན་པོ་ཁ་བ་ཅན་དང...རིའི རྒྱལ་པོ་ཆེན་པོ་རྣམ་པར་འདལ་བ་དང दश महारत्नपर्वतराजानः...तद्यथा–हिमवान् पर्वतराजः...वैदल्यः द.भू.276क/65.

རྣམ་པར་འདས་པ व्यतिक्रमः – བདེ་བ་དང་སྡུག་བསྔལ ལས་རྣམ་པར་འདས་པ सुखदुःखव्यतिक्रमम् अभि.स्फु.96ख/774.

རྣམ་པར་འདུད = རྣམ་འདུད།

རྣམ་པར་འདུད་པ = རྣམ་འདུད།

རྣམ་པར་འདུལ *क्रि.* विनेति – སེམས་ཅན་མཐའ་ཡས་བྱེ བ་རྣམ་པར་འདུལ विनेति सत्त्वान अनन्तकोटयः स.

पु.10ख/14; विनयति – ལྷ་ལས་འདས་པའི་གཏམ་ནི་གང་དག་ཅིག། །གསུངས་ནས་སྡིག་པ་རྣམ་པར་འདུལ་བ་གསུངས།། कथयस्यतिदेवताः कथाः कथिता या विनयन्ति किल्बिषम् ॥ वि.व.127क/1.16; विनयते – སེམས་ཅན་ཐམས་ཅད་རྣམ་པར་འདུལ།། सर्वसत्त्वान् विनयते स.पु.53ख/93.

རྣམ་པར་འདུལ་བ = རྣམ་པར་འདུལ།

རྣམ་པར་འདུལ་བར་བྱ་བ *कृ.* विनेतव्यः – སེམས་ཅན་འདི་དག་ནི་བདག་གིས་བསྐྱབ་པར་བྱ་བ... རྣམ་པར་གདུལ་བར་བྱ་བ मयैवैते सत्त्वाः परित्रातव्याः...विनेतव्याः द.भू.196ख/19.

རྣམ་པར་འདུས་པ कलापः – རྐྱེན་གྱི་རྣམ་པར་འདུས་པ་ལས། །རབ་ཏུ་འཇུག་ཅིང་ལྡོག་པར་འགྱུར།། कलापः प्रत्ययानां च प्रवर्तते निवर्तते। ल.अ.136क/82.

རྣམ་པར་འདོར = རྣམ་པར་འདོར་བ།

རྣམ་པར་འདོར་བ • *सं.* 1. व्यासः, तथागतस्य नामपर्यायः – བློ་གྲོས་ཆེན་པོ་ཁ་ཅིག་ནི་ང་ལ་དེ་བཞིན་གཤེགས་པར་ཤེས་སོ།། ...འདྲེན་པ་དང་... རྣམ་པར་འདོར་དང་ནི་ཚོ་དང་དབང་པོ་དང केचिन्महामते तथागतमिति मां संप्रजानन्ति...नायकं...व्यासं शुकमिन्द्रम् ल.अ.132क/78 2. विसर्गः श्री.को.174क; • *व.का.कृ.* विकीर्यमाणः – གང་ལུས་རྣམ་པར་འདོར་བ་ན་ཐམས་ཅད་མཁྱེན་པར་སེམས་བསྐྱེད་པ་རིན་པོ་ཆེ་དེ་མི་བརྗེད་ཅིང यत्काये विकीर्यमाणे तत्सर्वज्ञताचित्तोत्पादरत्नं कर्तुं न संमुह्यति शि.स.105क/103.

རྣམ་པར་འདྲུལ་བ विक्लित्तिः – ས་དང་ཆུ་དང་འབྲེལ་བ་ལས་འབྲས་བུའི་རྣམ་པར་འགྱུར་བ་ཕྲ་མོ་ནི་རྣམ་པར་འདྲུལ་བའོ།། भूम्युदकसम्बन्धात् फलस्य सूक्ष्मो विकारो विक्लित्तिः अभि.स्फु.331क/1230.

རྣམ་པར་འདྲེན་པ = རྣམ་འདྲེན།

རྣམ་པར་འདྲེན་པ་ཆེན་པོ = རྣམ་འདྲེན་ཆེན་པོ།

རྣམ་པར་འདྲེས་པ *भू.का.कृ.* विमिश्रितः – རྣམ་གསུམ་སྦྱོར་བ་རབ་ལྡན་པ། །འདོད་ཆགས་ཞེ་སྡང་གཏི་མུག་ཡིན། ...།འདྲེས་པའང་རྣམ་པར་འདྲེས་པ་པོ།། त्रिधा प्रयोगोद्युक्तानि रागद्वेषमोहिनाम् ।...व्यतिमिश्रं विमिश्रितः म.मू.182क/111; ཕན་ཚུན་རྡུལ་ཚོན་རྣམ་པར་འདྲེས་པས་སྦྱིན་བདག་གི་རྒྱུད་དང་སློབ་དཔོན་གྱི་རྒྱུད་ཀྱི་རིགས་རྒྱུད་འཆད་པར་འགྱུར་རོ།། परस्पररजोभिर्मिश्रितैः गोत्रच्छेदो भवति दानपतिसन्ताने आचार्यसन्तानेऽपि वि.प्र.125क/3.49; व्यवकीर्णः – བྱང་ཆུབ་ཀྱི་ཕྱོགས་ཀྱི་ཆོས་མངོན་པར་བསྒྲུབ་པ་དང་རྣམ་པར་འདྲེས་པ་ཡིན व्यवकीर्णश्च भवति बोधिपाक्षिकधर्माभिनिर्हारैः द.भू.224ख/34; व्यतिभिन्नः – སེམས་དང་སེམས་བྱུང་བྱེ་བྲག་ནི། །འཇུག་པ་རབ་ཏུ་འཇུག་པ་ཡིན། །གཟུགས་ཀྱི་རྣམ་པར་འདྲེས་པ་སྟེ། །འབྱུང་ལས་འགྱུར་མིན་སེམས་གཟུགས་སོ།། चित्तचैत्तस्य भेदेन वर्तमानं प्रवर्तते। व्यतिभिन्नानि रूपाणि चित्तं रूपं न भौतिकम्॥ ल.अ.185क/154.

རྣམ་པར་འདྲེས་པའི་ཡི་གེ विमिश्रितलिपिः, लिपिविशेषः – ཚངས་པའི་ཡི་གེ་འམ...རྣམ་པར་འདྲེས་པའི་ཡི་གེ་འམ...འབྱུང་པོ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་སྒྲ་སྡུད་པའི་ཡི་གེ་འམ... ཡི་གེ་དྲུག་ཅུ་རྩ་བཞི་པོ་དེ་དག་གི་ནང་ནས ब्राह्मी..विमिश्रितलिपिं...सर्वभूतरुतग्रहणीम्। आसां...चतुष्षष्टीलिपीनाम् ल.वि.66ख/88.

རྣམ་པར་འདྲེས་པའི་ལམ *पा.* विमिश्रमार्गः, मार्गभेदः – འདིར་ལམ་ནི་རྣམ་པ་གསུམ་སྟེ། འོད་ཟེར་གྱི་ལམ་དང་དུ

བའི་ལམ་དང་རྣམ་པར་འདྲེས་པའི་ལམ་མོ།། इह खलु त्रिविधो मार्गः । ज्योतिर्मार्गो धूममार्गो विमिश्रमार्गः वि. प्र.274ख/2.101.

རྣམ་པར་རྟོལ་བ = རྣམ་པར་འདོལ་བ།

རྣམ་པར་ལྡང = རྣམ་པར་ལྡང་བ།

རྣམ་པར་ལྡང་བ •*क्रि.* व्युत्तिष्ठते – དེ་ཏིང་ངེ་འཛིན་དེ་དག་ཐམས་ཅད་ལ་མཉམ་པར་གཞོག་ཅིང་རྣམ་པར་ལྡང་ངོ་།། स तान् सर्वान् समाधीन् समापद्यते च व्युत्तिष्ठते च द.भू.262क/55; द.भू.200ख/22; •*सं.* व्युत्थानम् – ཏིང་ངེ་འཛིན་ལས་རྣམ་པར་ལྡང་བ་དང समाधिव्युत्थानं च ग.व्यू.17क/114.

རྣམ་པར་ལྡན་པ *वि.* वीतः म.व्यु.4577 (71क); मि.को. 101क।

རྣམ་པར་ལྡིང *क्रि.* विगाहते – གང་ཞིག་གཟུགས་དང་ལྡན་པའི་ཆོས་ལ་བཞིན། །ཁྱུ་མཆོག་ལ་ཞོན་མཁའ་ལ་རྣམ་པར་ལྡིང་།། शरीरिणं धर्ममिवाधिरुह्य विगाहते खं वृषवाहनो यः। अ.क.255क/93.70.

རྣམ་པར་ལྡོག = རྣམ་པར་ལྡོག་པ། རྣམ་པར་ལྡོག་ཅིང विनिवृत्य–དེ་ནས་དེ་ཆོས་ཀྱིས་ཡོངས་པར་འགྱུར་བ་དང་མཐུན་པའི་ལས་དེ་དག་ལས་རྣམ་པར་ལྡོག་ཅིང་བསོད་ནམས་མངོན་པར་འདུ་བྱེད་པ་ཁོ་ན་བྱེད་དེ ततः स तेभ्यो धर्मव्यसनसंवर्तनीयेभ्यः कर्मभ्यो विनिवृत्य पुण्याभिसंस्कारमेव कुर्यात् अ.सा.163क/92.

རྣམ་པར་ལྡོག་པ • *क्रि.* व्यावर्तते – ཡོད་མིན་མེད་མིན་ཡོད་མེད་མིན། །དེ་ལྟར་འཇིག་རྟེན་ནམ་མཐོང་ན། །དེ་ཚེ་སེམས་ཀྱང་རྣམ་ལྡོག་སྟེ། །བདག་མེད་པ་ཡང་རྟོགས་པར་འགྱུར།། न सन्नासन्न सदसद्यदा लोकं प्रपश्यति । तदा व्यावर्तते चित्तं नैरात्म्यं चाधिगच्छति ॥ ल.अ. 116क/62; निवर्तते – དེ་ཚེ་གཟུང་དང་འཛིན་པ་ནི། །ནོར་བར་མཐོང་ནས་ལྡོག་པར་འགྱུར།། तदा ग्राहश्च ग्राह्यं च भ्रान्तिं दृष्ट्वा निवर्तते ॥ ल.अ.159ख/108; • *सं.* व्यावृत्तिः – གང་གིས་རྣལ་འབྱོར་ཅན་རྣམས་རང་གི་སེམས་སྣང་བ་ནི་རྣམ་པར་རྟོག་པ་རྣམ་པར་ལྡོག་པར་བྱེད་པའོ།། येन योगिनः स्वचित्तदृश्यविकल्पव्यावृत्तिं कुर्वन्ति ल.अ.123ख/70; विनिवृत्तिः – བློ་གྲོས་ཆེན་པོ་ལྟོས་པའི་རྒྱུ་ནི་རྣམ་པར་ལྡོག་པའི་དུས་ན་རྣམ་པར་མི་རྟོག་པའི་དངོས་པོ་འབྱུང་བའི་ཕྱིར་རྒྱུན་གྱི་བྱ་བ་མི་འཆད་པར་བྱེད་དོ།། उ[? अ] पेक्षाहेतुः पुनर्महामते विनिवृत्तिकाले प्रबन्धक्रियाऽव्युच्छित्तिं करोत्यविकल्पोत्पत्तौ ल.अ.88क/35; མི་ཁོམ་པ་བརྒྱད་ལས་རྣམ་པར་ལྡོག་པ་ཡང་ཤིན་ཏུ་དཀོན दुर्लभा अष्टाक्षणविनिवृत्तिः ग.व्यू.381क/90; ल.अ.172क/131; विनिवर्तनम्–སོམ་ཉི་ཐམས་ཅད་རྣམ་པར་ལྡོག་པའི་མཐུ་བསྟན་པའི་ཕྱིར सर्वसन्देहविनिवर्तनसामर्थ्यसन्दर्शनार्थम् म.टी.243क/84; •*भू.का.कृ.* व्यावृत्तः – དེས་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའི་ས་རབ་ཏུ་དགའ་བ་ཐོབ་ནས་མུ་སྟེགས་ཅན་དང་ངན་སོང་གི་འགྲོ་བ་ཐམས་ཅད་ལས་རྣམ་པར་ལྡོག་པ་ཡིན་ཏེ स प्रतिलभ्य प्रमुदितां बोधिसत्त्वभूमिं व्यावृत्तः सर्वतीर्थ्यापायगतिभ्यो भवति ल.अ. 145ख/92; སེམས་ཙམ་དུ་ནི་རྣམ་བཞག་པས། །དངོས་པོའི་མཚན་ལས་རྣམ་པར་ལྡོག།། चित्तमात्रव्यवस्थानाद्व्यावृत्तं भावलक्षणम्। ल.अ.169ख/125; विनिवृत्तः – བློ་གྲོས་ཆེན་པོ་སྲིན་པོ་རྣམས་ཀྱང་དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་རྣམས་ཀྱི་ཆོས་ཀྱི་ཆོས་ཉིད་བཟང་པོ་འདི་ཐོས་ནས་ཤ་ཟ་བ་ལས་རྣམ་པར་ལྡོག་ཅིང་སྲིན་པོའི་རང་བཞིན་དང་བྲལ་ནས་སྙིང་རྗེ་ཅན་དུ་འགྱུར་ན། ཆོས་འདོད་པའི་སྐྱེ་བོ་རྣམས་ལྟ་ཅི་སྨོས राक्षसस्या[? राक्षसा अ]पि महामते तथागतानामिमां धर्मसुधर्मतामुपश्रुत्य अपगत-

रक्षभावाः कृपालवा भवन्ति मांसभक्षणविनिवृत्ताः, किमुत धर्मकामाः जनाः ल.अ.153[ख]/100.

རྣམ་པར་ལྡོག་པར་འགྱུར *क्रि.* व्यावर्तते – རྒྱུ་ལས་མ་ཡིན་རྒྱུ་མེད་པར། །ནམ་ཞིག་འདུས་བྱས་མཐོང་བ་ན། །དེ་ནི་སྐྱེ་འཇིག་སྨྲ་བ་ཡི། །ལྟ་བ་རྣམ་པར་ལྡོག་པར་འགྱུར།། नाहेतुको न हेतुभ्यो यदा पश्यन्ति संस्कृतम्। तदा व्यावर्तते दृष्टिर्विभङ्गोत्पादवादिनी ॥ ल.अ.135[ख]/81; निवर्तते – མཐའ་དང་བྲལ་བའི་སྲིད་པའི་ནད་འདི་ཇི་ལྟར་རྣམ་པར་ལྡོག་འགྱུར་བ།། निरवधिरयं दृष्ट्वा व्याधिर्यथा हि निवर्तते अ.क.72[ख]/7.23.

རྣམ་པར་སྡང་བ = རྣམ་སྡང་།

རྣམ་པར་སྡང་ཞིང་སྐུར་བ་འདེབས་པ विद्वेषाभ्याख्यानम् लो.को.1407.

རྣམ་པར་བརྡ་ཤེས་ལྡན विसंज्ञावती, संख्याविशेषः – བྱེ་བ་ཕྲག་བརྒྱ་ན་ཐེར་འབུམ་ཞེས་བྱའོ།། ...ཀུན་སྟོབས་ཕྲག་བརྒྱ་ན་རྣམ་པར་བརྡ་ཤེས་ལྡན་ཞེས་བྱའོ།། རྣམ་པར་བརྡ་ཤེས་ལྡན་ཕྲག་བརྒྱ་ན་བརྡ་ཤེས་ཀུན་ཞེས་བྱའོ།། शतं कोटीनामयुतं नामोच्यते...शतं सर्वबलानां विसंज्ञाग[? व]ती नामोच्यते। शतं विसंज्ञाग[? व]तीनां सर्वसंज्ञा नामोच्यते ल.वि.76[ख]/103.

རྣམ་པར་གནག་པ = རྣམ་པར་རྣགས་པ།

རྣམ་པར་གནས = རྣམ་པར་གནས་པ།

རྣམ་པར་གནས་འགྱུར *क्रि.* अवतिष्ठते – འབྲེལ་པ་ཅན་གཞན་ཡོད་པ་ལ། །འདུ་བ་རྣམ་པར་གནས་འགྱུར་ན།། सम्बन्ध्यन्तरसद्भावे समवायोऽवतिष्ठते ॥ त.स. 32[ख]/337.

རྣམ་པར་གནས་པ •*क्रि.* विहरति – མཁར་བགྲོད་ཚོགས་རྣམས... ཉེ་བ་ཉིད་དུ་རྣམ་པར་གནས།། विहरति समीपे खगगणः अ.क.227[ख]/25.35; निवसति – ཉ་མིད་མིད་པར་བྱེད་པའི་ཉ། ... །རྒྱ་མཚོ་དག་ན་རྣམ་པར་གནས།། तिमिंगिलगिलिर्मत्स्यः...निवसत्येष सागरे ॥ अ.क. 222[ख]/89.16; निविशति – འདིར་ནི་སེང་གེ་སྤྲིན་གྱི་སྒྲ། །བཟོད་པ་མིན་པ་རྣམ་པར་གནས།། घनशब्दकृताक्षान्तिर्निविशत्यत्र केसरी ॥ अ.क.21[क]/52.18; व्यवतिष्ठते – ཤིང་ལྗོན་པ་གཅིག་ལ་མཚམས་བཞི་མན་ཆད་ཀྱི་སུ་ཕྲུག་དུ་མ་རྣམ་པར་གནས་སོ།། व्यवतिष्ठते सीम्न्याचतुष्टयाद्देकवृक्षेऽनेका मर्यादा वि.सू.60[ख]/76; དེ་ཉིད་ཀྱིས་འབྲེལ་ཞིང་ཉམས་སུ་མྱོང་བ་གཡོ་བའི་བདག་ཉིད་དུ་རྣམ་པར་གནས་སོ།། तमेव व्यासङ्गमनुभवन् चञ्चलात्मा व्यवतिष्ठते त.सि.65[ख]/173; अवतिष्ठते – སྤྱིའི་སྒྲ་ཡང་སྒྲ་གཞན་དང་ཉེ་བའི་སྐབས་ཀྱིས་སྤྱིའི་ཡང་བྱེ་བྲག་ལ་རྣམ་པར་གནས་པ་ཡིན་ནོ།། <? >सामान्यशब्दा अपि शब्दान्तरसन्निधानात्, प्रकरणसामर्थ्याच्च विशेषेष्ववतिष्ठन्ते वा.टी.54[ख]/7; • *सं.* 1. व्यवस्थितिः – རྣམ་པར་རྟོག་མེད་ལྷུན་གྲུབ་པར། །འདོད་པ་ཇི་བཞིན་ཡོངས་སྐོང་ཕྱིར། །ཡིད་བཞིན་ནོར་བུའི་རྫུ་འཕྲུལ་གྱིས། །རྫོགས་པར་ལོངས་སྤྱོད་རྣམ་པར་གནས།། निर्विकल्पं निराभोगं यथाभिप्रायपूरितः। चिन्तामणिप्रभावर्द्धेः सांभोगस्य व्यवस्थितिः ॥ र.वि.118[ख]/87; ཞེས་འདི་ནི་ཐ་སྙད་ཙམ་དུ་ཟད་ཀྱི། འདི་དངོས་པོའི་དེ་ཁོ་ན་རྣམ་པར་གནས་པ་ནི་མ་ཡིན་ནོ།། इति व्यवहारमात्रमेतत्। नेयं वस्तुतत्त्वव्यवस्थितिः प्र.अ.18[क]/20; དེ་ཕྱིར་དངོས་རྣམས་དེ་ཉིད་ཀྱི། །ངོ་བོར་རྣམ་གནས་རིགས་མ་ཡིན།། ततो न युक्ता वस्तूनां तत्त्वरूपव्यवस्थितिः ॥ त.स.22[क]/238; अवस्थितिः – དེ་རྟག་བསམ་གྱིས་མི་ཁྱབ་ཀྱིས། །སངས་རྒྱས་ས་ནི་རྣམ་པར་གནས།། तन्नित्याचिन्त्यतश्चैव बुद्धभूमिष्ववस्थितिः ॥ र.वि.116[क]/79; སེམས་ནི་ལུས

དང་ལྷན་ཅིག་ཏུ། །དེ་སྲིད་དུས་སུ་རྣམ་གནས་པ།། चेतसः सह कायेन तावत्कालमवस्थितिः ॥ प्र.अ.70क/78; དཔེར་ན་སྦྱོར་བ་ཡོད་གྱུར་ན། །སྲིད་པ་རྣམ་པར་གནས་པ་བཞིན།། यथासंयोगभावे तु संयुक्तानामवस्थितिः । त.स.32ख/335; स्थितिः – འདི་ནི་དོན་བྱེད་པ་རྣམ་པར་གནས་པ་མ་ཡིན་ཏེ། བརྟན་པ་ཉིད་མེད་པའི་ཕྱིར་རོ།། न चासावर्थक्रियास्थितिरविचलितत्वाभावात् प्र.अ.3ख/5; संस्थितिः – བྱ་བ་བྱེད་པའི་ཐ་སྙད་དག། །ཐམས་ཅད་དེ་ལྟར་རྣམ་པར་གནས།། एवंप्रकारा सर्वैव क्रियाकारकसंस्थितिः । प्र.वा.130ख/2.319 2. व्यवस्था – ཚོགས་པར་རྣམ་པར་གནས་པ་ཡི། །རྒྱུ་ནི་ཚོགས་པ་ཅན་ཉིད་དེ།། समुदायव्यवस्थाया हेतवः समुदायिनः । त.स.62क/590; व्यवस्थानम् – ས་དང་ས་ལ་རྣམ་པར་གནས་པ་ལ་མཁས་པར་བྱའོ།། भूमिभूमिव्यवस्थानकुशलेन च... भवितव्यम् द.भू.183ख/13; ཇི་ལྟར་རྣམ་གནས་ཡིད་ལ་བྱེད་པ་ལས། །མཐུ་འགྲུབ་པ་ཡི་དམ་པ་ཐོབ་པར་འགྱུར།། यथाव्यवस्थानमनस्क्रियातः प्रभावसिद्धिं परमां परैति ॥ सू.अ.147क/27; व्यवस्थापनम् – འདི་ལ་བསྒོ་བ་ཉིད་དུ་རྣམ་པར་གནས་པ་ནི་ཞེས་གཙོའོ།། *> तताञाज्ञप्ततायां व्यवस्थापनम् वि.सू.48ख/61 3. विहारः – དཔལ་འབྱོར་རྣམ་པར་གནས་དང་བྲལ་བར लक्ष्मीविहारविरहे अ.क.342क/45.1; निवासः – དེར་ནི་རྣམ་པར་གནས་པར་མཛོད།། निवासः क्रियतां तत्र अ.क.144क/68.36; विप्रवसनम् – དེ་རྣམས་སུ་གནས་པ་ནི་རྣམ་པར་གནས་པ तेषु विप्रवासो विप्रवसनम् बो.प.48क/8; •भू.का.कृ. व्यवस्थितः – དེ་ཉིད་ཐམས་ཅད་ཁྱབ་པ་པོ། །ཐམས་ཅད་ལུས་ལ་རྣམ་པར་གནས།། सर्वव्यापी स एवासौ सर्वदेहव्यवस्थितः ॥ हे.त.12क/36; གལ་ཏེ་ཉི་མ་ལས་འོག་དང་སྟེང་དུ་རྣམ་པར་གནས་ན། དེའི་ཚེ་མྱུར་བ་དང་དལ་བ་དག་ཏུ་སྤྲད་པར་མི་འགྱུར་ཏེ यद्यध ऊर्ध्वं सूर्याद् व्यवस्थिताः, तदा शीघ्रमन्दानां समागमो न स्यात् वि.प्र.189ख/1.53; དེ་ལ་མཐོང་བ་ཡང་དེ་ཡིན་ལ། མཐར་ཡང་རྣམ་པར་གནས་པ་ཡིན་པའི་ཕྱིར་མཐོང་བའི་མཐའ་སྟེ तत्र दृष्टश्चासावन्ते च व्यवस्थित इति दृष्टान्तः वा.न्या.338क/74; संव्यवस्थितः – བུད་མེད་སྐྱེ་བོ་སོགས་གཟུགས་ཀྱིས། །ཐམས་ཅད་དུ་ནི་རྣམ་པར་གནས།། स्त्रीपुरुषादिरूपेण सर्वतः संव्यवस्थितम् ॥ गु.सि.11क/24; समवस्थितः – ཁམས་གསུམ་པ་ཡི་ལམ་བཟང་པོ། །ཀུན་དུ་དེ་ནི་རྣམ་པར་གནས།། त्रैधातुकपदे[? पथे] रम्ये समन्तात् समवस्थितम् ॥ गु.सि.11क/24; स्थितः – ཀུན་རྫོབ་གཟུགས་སུ་རྣམ་པར་གནས། ...།ལས་ཀྱི་ཕྱག་རྒྱ स्थिता संवृतिरूपेण ...कर्ममुद्रा गु.सि.7क/16; निविष्टः – དཀར་པོའི་ཕྱོགས་ལ་རྣམ་པར་གནས शुक्लपक्षे निविष्टम् अ.क.165क/73.16; निषण्णः – ནུབ་ཀྱི་སྒོ་རུ་ནི། །བདུད་འཇོམས་མ་ནི་རྣམ་པར་གནས།། पश्चिमे द्वारे निषण्णा मारभञ्जनी हे.त.24क/78; विश्रान्तः – དེར་ནི་ཞི་བ་ལ་བརྟེན་བཞིན། །དབེན་པར་རྣམ་པར་གནས་པ་ཡི། །རང་སངས་རྒྱས་ནི་དགྲ་བཅོམ་གྱིས། །ཡོངས་བསྐོར་མཛེས་མ་རྣམས་ཀྱིས་མཐོང་།། एकान्ते तत्र विश्रान्तं कान्ताः शान्तेरिवाश्रयम् । प्रत्येकबुद्धमर्हद्भिर्ददृशुः परिवारितम् ॥ अ.क.169ख/76.13; •वि. विवर्तनी – ལེགས་བཤད་མགྲིན་པར་རྣམ་གནས་བླ་མ་ལ་འདུད་མགོ་དང་རྣ་བར་ཐོས་པ་དང་། །ཞལ་ནི་རྟག་ཏུ་སྐྱོན་མེད་བདེན་པ་དང་ལྡན་མཁས་པ་རྣམས་ནི་དགའ་བའི་རྒྱན།། सूक्तिः कण्ठविवर्तिनी गुरुनतिर्मौलौ श्रुतं श्रोत्रयोः सत्यं नित्यमनामयं च वदने विद्वत्प्रियं भूषणम् । अ.क.27क/53.1; • उ.प. व्यवस्थः – གཉིས་སུ་གནས་ཞེས་བྱ་བ་ནི་ཡི་གེ་དང་དོན་དུ་རྣམ་པར་གནས་པའོ།། द्वयव्यवस्थ

इति व्यञ्जनार्थव्यवस्थः सू.व्या.130ख/3.

རྣམ་པར་གནས་པ་ཡིན *क्रि.* व्यवस्थितो भवति – རིགས་ཀྱི་བུ་འདི་ལ་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་གཞོན་ནུར་གྱུར་ཅིང་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའི་རྣམ་པར་དགོད་པ་ལ་རྣམ་པར་གནས་པ་ཡིན་ཏེ इह कुलपुत्र बोधिसत्त्वः कुमारभूत एव बोधिसत्त्वव्यवस्थानव्यवस्थितो भवति ग.व्यू. 205ख/287.

རྣམ་པར་གནས་པར་གྱུར *भू.का.कृ.* व्यवस्थितः लो.को. 1407.

རྣམ་པར་གནས་པར་འགྱུར = རྣམ་པར་གནས་འགྱུར།

རྣམ་པར་གནོན = རྣམ་པར་གནོན་པ།

རྣམ་པར་གནོན་བརྟན *ना.* दृढविक्रमः, तथागतः – དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་རྣམ་པར་གནོན་བརྟེན་[? བརྟན་] ཞེས་བྱ་བ་ལ་དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་ཐུབ་དཀའ་ཤིང་ཐུན་དུ་གྱུར་པས་སོ་ཤིང་ཕུལ་ཏེ་དང་པོ་བྱང་ཆུབ་ཏུ་སེམས་བསྐྱེད་དོ། एवं दृढविक्रमो नाम तथागतो यत्र दुष्प्रधर्षेण तथागतेन प्रथमं बोधिचित्तमुत्पादितं दन्तकाष्ठं दत्वा काष्ठहारकभूतेन शि.स.7ख/8.

རྣམ་པར་གནོན་པ • *क्रि.* विष्कम्भयति – བསམ་གཏན་གྱིས་ནི་ཉོན་མོངས་པ་རྣམ་པར་གནོན་ཏོ། ध्यानेन क्लेशं विष्कम्भयति अभि.स.भा.74क/103; • *सं.* 1. विक्रमः – ཁྱབ་འཇུག་རྣམ་གནོན་ལ་གནས་པས། །དནུའི་བུ་ཡི་འབྱོར་པ་དག །གང་དུ་བཏང་ཞིང་ལྷ་རྣམས་ཀྱི། །ཕུན་ཚོགས་གང་ན་གནས་པ་བླངས། विष्णुना विक्रमस्थेन दानवानां विभूतयः। क्वापि नीता कुतोऽप्यासन्नानीता दैवतर्द्धयः ॥ का.आ.325ख/2.100; ཁེངས་ལྡན་དབང་ཆེན་སྡེ་ཞེས་པ། །རྒྱ་ཆེ་རྣམ་པར་གནོན་པར་གྲགས། मानी महेन्द्रसेनाख्यः प्रख्यातपृथुविक्रमः ॥ अ.क.89ख/64.13; བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའི་ཏིང་ངེ་འཛིན་སྟོབས་བཅུའི་རྩལ་གྱིས་རྣམ་པར་གནོན་པས་ཡང་དག་པར་རྩོམ་པ་དང་ दशबलाक्रमविक्रमसमारम्भेन बोधिसत्त्वसमाधिना ग.व्यू.306क/29 2. विष्कम्भणम् – བྱམས་པ་ལ་སོགས་པའི་སྦྱོར་བས་གནོད་སེམས་ལ་སོགས་པ་རྣམ་པར་གནོན་པའི་ཕྱིར་རོ། །དེ་དག་གི་གཉེན་པོ་ཉིད་དུ་བཤད་དོ། मैत्र्यादिप्रयोगेण व्यापादादिविष्कम्भनात् तत्प्रतिपक्षत्वमुक्तम् अभि.स्फु.305ख/1173; འདུལ་བ་ནི་ཀུན་ནས་དཀྲིས་པ་རྣམས་རྣམ་པར་གནོད་པའོ། विनयनं पर्यवस्थानानां विष्कम्भणम् अभि.स.भा.77क/105; • *वि.* विक्रामी – རབ་ཀྱི་རྩལ་གྱིས་རྣམ་པར་གནོན་པ་གཟུགས་ལ་ནི་ཆད་པའམ་རྟག་པ་མེད་དོ། न हि सुविक्रान्तविक्रामिन् रूपस्योच्छेदता वा शाश्वतता वा सु.प.41क/19; བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའི་ཏིང་ངེ་འཛིན་པདྨོའི་བྱིན་རྣམ་པར་འཕྲུལ་པས་ཀུན་ཏུ་རྣམ་པར་གནོན་པ་དང་ पद्मश्रीविकुर्वितसमन्तविक्रामिणा बोधिसत्त्वसमाधिना ग.व्यू. 307ख/30; विष्कम्भी – ཉོན་མོངས་པ་རྣམ་པར་གནོན་པའོ། क्लेशविष्कम्भिनः वि.सू.18क/21.

རྣམ་པར་གནོན་པ་ཆེན་པོ महाविक्रमः – དགེ་བའི་བཤེས་གཉེན་གྱི་དྲུང་དུ་འགྲོ་བ་རྣམ་པར་གནོན་པ་ཆེན་པོར་བྱིན་གྱིས་བརླབས་སོ། महाविक्रमं कल्याणमित्रोपसंक्रमणमध्यतिष्ठत् ग.व्यू.96क/188.

རྣམ་པར་གནོན་པ་བཟང་པོ *ना.* सुविक्रामी, श्रेष्ठिदारकः – དེ་ལ་ཚོང་དཔོན་གྱི་བུ་ནོར་བཟངས་ནི། ཚོང་དཔོན་གྱི་བུ་བརྟུལ་ཞུགས་བཟང་པོ་དང་...རྣམ་པར་གནོན་པ་བཟང་པོ་དང་ तत्र सुधनः श्रेष्ठिदारकः सुव्रतेन च श्रेष्ठिदारकेण सार्धं...सुविक्रामिणा ग.व्यू.318ख/39.

རྣམ་པར་གནོན་པའི་བློ = རྣམ་པར་གནོན་པའི་བློ་གྲོས།

རྣམ་པར་གནོན་པའི་བློ་གྲོས *ना.* मतिविक्रमः, बोधिसत्त्वः – བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་རྣམ་པར་གནོན་པའི་བློ་གྲོས་ཀྱིས་གསོལ་པ मतिविक्रमो बोधिसत्त्व आह शि.स.70क/69.

རྣམ་པར་གནོན་པར་བྱེད *क्रि.* विष्कम्भयते – དེ་དག་ནི་བསྒོམ་པས་སྤང་བར་བྱ་བ་ཁོ་ན་རྣམ་པར་གནོན་པར་བྱེད་ཀྱི भावनाप्रहातव्या एव तेषां विष्कम्भयन्ते अभि.स्फु.93क/769.

རྣམ་པར་གནོན་པས་གཤེགས *ना.* विक्रान्तगामी, तथागतः – དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་ཚངས་པའི་འོད་ཟེར་རྣམ་པར་རོལ་པས་མངོན་པར་མཁྱེན་པ་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ། ...རྣམ་པར་གནོན་པས་གཤེགས་པ་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ། नमो ब्रह्मज्योतिर्विक्रीडिताभिज्ञाय तथागताय... नमो विक्रान्तगामिने शि.स.95क/94.

རྣམ་པར་མནན། ०ནས विष्कम्भ्य – ཚད་མེད་པ་གསུམ་པོ་དེ་དག་གིས་ཉོན་མོངས་པ་དེ་རྣམས་རྣམ་པར་མནན་ནས་སྤོང་བའི་ལམ་བར་ཆད་མེད་པའི་ལམ་རྣམས་ཀྱིས་རབ་ཏུ་སྤོང་བར་བྱེད་དོ།། तैरप्रमाणैः त्रिभिस्तान् क्लेशान् विष्कम्भ्य प्रहाणमार्गैः आनन्तर्यमार्गैः प्रजहाति अभि.स्फु.305ख/1174.

རྣམ་པར་མཛེས *भू.का.कृ.* व्यवस्थितः – ཐབས་དང་ཤེས་རབ་ཤེས་བྱས་ནས། །ཇི་ལྟ་བ་བཞིན་རྣམ་པར་མཛེས།། प्रज्ञोपायं विदित्वा तु यथाभूतं व्यवस्थितम् ॥ गु.सि.5क/11.

རྣམ་པར་རྣགས = རྣམ་པར་རྣགས་པ།

རྣམ་པར་རྣགས་པ *पा.* विपूयकम्, अशुभताभेदः – དེ་ལ་ཕྱི་རོལ་ལ་བརྟེན་པའི་མི་གཙང་བའི་མི་སྡུག་པ་ཉིད་གང་ཞེ་ན། འདི་ལྟ་སྟེ། རྣམ་པར་བསྔོས་པ་དང་རྣམ་པར་རྣགས་པ་དང तत्र बहिर्धा चोपादाय अशुभता कतमा? तद्यथा–विनीलकं वा विपूयकं वा श्रा.भू.79क/203; དེ་ནས་རྣམ་པར་བསྔོས་ལ་ལྟོས། །དེ་ནས་རྣམ་པར་རྣགས་ལ་ལྟོས།། ततो विनीलकं पश्येत् ततः पश्येद्विपूयकम्। अभि.स्फु.162क/896.

རྣམ་པར་རྣགས་པའི་འདུ་ཤེས *पा.* विपूयकसंज्ञा, अशुभभावनाविशेषः – རྣམ་པར་གནག[? རྣགས་]པའི་འདུ་ཤེས विपूतिकसंज्ञा म.व्यु.1157 (24ख); द्र. རྣམ་པར་རྣགས་པ།

རྣམ་པར་སྣང = རྣམ་པར་སྣང་བ།

རྣམ་པར་སྣང་བ •*क्रि.* विरोचति – སྨོན་ལམ་གྲུབ་པ་འགག་པ་མེད་པའི་ཆོས་ཉིད་ཅན། ...ཐུགས་རྗེ་ཆེན་པོའི་བདག་ཉིད་རྟག་ཏུ་རྣམ་པར་སྣང་།། प्रणिधानसिद्धिरनिरोधधर्मता...सततं विरोचति महाकृपात्मनाम् ॥ स.दु.111क/174; •*सं.* 1. अवभासः – དེ་ནས་འཇིག་རྟེན་ཀུན་ལ་ཕན་བཏགས་པ། །ཀུན་དབྱིབས་ཀུན་གྱི་རང་བཞིན་རྣམ་པར་སྣང་།། तं सर्वलोकोपकृतिप्रपन्नं सर्वाकृतिं सर्वमयावभासम्। अ.क.193ख/22.16; प्रख्यानम् – གཟུང་བ་དང་འཛིན་པའི་རྣམ་པར་སྣང་བའི་མཚན་ཉིད་ཀྱི་དོན་དེ་ལ་འདི་ནི་གཟུང་བའོ།། འདི་ནི་འཛིན་པའོ་ཞེས་ངག་དང་ཡིད་ཀྱིས་བརྗོད་པ་གང་ཡིན་པ་དེ་ནི་རྟོག་པ་ཞེས་བྱའོ།། तस्मिन् ग्राह्यग्राहकप्रख्यानलक्षणेऽर्थेऽयं ग्राह्योऽयं ग्राहक इति वाङ्मनोभ्यां यदभिलपनं स जल्प इत्युच्यते म.टी.297ख/164 2. वैरोचनप्रभः, चक्षुर्विशेषः – དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་ཆོས་ཀྱི་སྐུ་ལ་རྣམ་པར་ལྟ་བའི་མིག་རྣམ་པར་སྣང་བ་ཞེས་བྱ་བ་ཐོབ་པར་གྱུར་ཏོ།། वैरोचनप्रभं च नाम चक्षुः प्रतिलेभे, येन [सर्व]तथागतधर्मशरीरं व्यवलोकयति ग.व्यू.258ख/341 3. वैरोचनः, मणिविशेषः – ནོར་བུ་རིན

པོ་ཆེ་རྣམ་པར་སྣང་བ་བརྒྱ་སྟོང་ཕྲག་བཅུས་སྙིང་པོ་རབ་ཏུ་གསལ་བར་བྱས་པ दशवैरोचनमणिरत्नशतसहस्रविमलगर्भम् ग.व्यू.330क/52 0. वैरोचनः – འཇིག་རྟེན་གྱི་ཁམས་དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་འོད་ཀྱི་དཀྱིལ་འཁོར་རྣམ་པར་སྣང་བ་ཞེས་བྱ་བ་དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་ཡེ་ཤེས་ནམ་མཁའ་ལྟ་བུར་ཆགས་པ་མེད་པའི་དཔལ་གྱི་རྒྱལ་མཚན་རྒྱལ་པོའི་སངས་རྒྱས་ཀྱི་ཞིང་ནས सर्वतथागतप्रभामण्डलवैरोचनाया लोकधातोः[० तोर्गगना]सङ्गज्ञानकेतुध्वजराजस्य तथागतस्य बुद्धक्षेत्रात् ग.व्यू.287क/10; विरोचनः – རིན་པོ་ཆེའི་རྒྱལ་པོ་འགྲོ་བ་རྣམ་པར་སྣང་བས་རྒྱན་ཤིན་ཏུ་རྣམ་པར་ཕྱེ་བ जगद्विरोचनमणिराजसुविभक्तालङ्कारः ग.व्यू.279क/5; • पा. 1. वैरोचनः, समाधिविशेषः – རྣམ་པར་སྣང་བ་ཞེས་བྱ་བའི་ཏིང་ངེ་འཛིན वैरोचनो नाम समाधिः म.व्यु.536 (12ख); • भू.का.कृ. विद्योतितः – དེའི་འོག་ཏུ་དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་འོད་གཟེར་གྱི་རི་བོ་རྣམ་པར་སྣང་བའི་སྤྲིན་ཅེས་བྱ་བ་བསྙེན་བཀུར་ཏོ॥ तस्यानन्तरं रश्मिपर्वतविद्योतितमेघो नाम तथागत आरागितः ग.व्यू.156क/238.

རྣམ་པར་སྣང་བ་དམ་པའི་ཡེ་ཤེས ना. वैरोचनोत्तरज्ञानी, बोधिसत्त्वः – འདི་ལྟ་སྟེ། བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་སེམས་དཔའ་ཆེན་པོ་ཤེས་པ་དམ་པའི་ཡེ་ཤེས་དང...རྣམ་པར་སྣང་བ་དམ་པའི་ཡེ་ཤེས་དང यदुत ज्ञानोत्तरज्ञानिना च बोधिसत्त्वेन महासत्त्वेन...वैरोचनोत्तरज्ञानिना च ग.व्यू.275क/1.

རྣམ་པར་སྣང་བ་རིན་ཆེན་པད་མོ་དཔལ་གྱི་གཙུག་ཕུད་སྙིང་པོ ना. वैरोचनरत्नपद्मगर्भश्रीचूडः, नृपः – རྒྱལ་པོའི་ཕོ་བྲང་རིན་པོ་ཆེ་མེ་ཏོག་སྒྲོན་མ་ཞེས་བྱ་བ་དེ་ན་རྒྱལ་པོ་རྣམ་པར་སྣང་བ་རིན་ཆེན་པད་མོ་དཔལ་གྱི་གཙུག་ཕུད་སྙིང་པོ་ཞེས་བྱ་བ...གྱུར་ཏོ॥ तस्यां खलु पुना रत्नकुसुमप्रदीपायां राजधान्यां वैरोचनरत्नपद्मगर्भश्रीचूडो नाम राजाऽभूत् ग.व्यू.119ख/207.

རྣམ་པར་སྣང་བའི་རྒྱལ་མཚན ना. वैरोचनध्वजः, बोधिसत्त्वः – འདི་ལྟ་སྟེ། བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་སེམས་དཔའ་ཆེན་པོ་ཤེས་པ་དམ་པའི་ཡེ་ཤེས་དང...རྣམ་པར་སྣང་བའི་རྒྱལ་མཚན་དང यदुत ज्ञानोत्तरज्ञानिना च बोधिसत्त्वेन महासत्त्वेन...वैरोचनध्वजेन च ग.व्यू.275क/2.

རྣམ་པར་སྣང་བའི་སྙིང་པོ ना. वैरोचनगर्भः, बोधिसत्त्वः – འདི་ལྟ་སྟེ། བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་སེམས་དཔའ་ཆེན་པོ་ཤེས་པ་དམ་པའི་ཡེ་ཤེས་དང...རྣམ་པར་སྣང་བའི་སྙིང་པོ་དང यदुत ज्ञानोत्तरज्ञानिना च बोधिसत्त्वेन महासत्त्वेन...वैरोचनगर्भेण च ग.व्यू.275क/2.

རྣམ་པར་སྣང་བའི་དཔལ ना. वैरोचनश्रीः, बोधिसत्त्वः – འདི་ལྟ་སྟེ། བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་སེམས་དཔའ་ཆེན་པོ་ཤེས་པ་དམ་པའི་ཡེ་ཤེས་དང...རྣམ་པར་སྣང་བའི་དཔལ་དང यदुत ज्ञानोत्तरज्ञानिना च बोधिसत्त्वेन महासत्त्वेन...वैरोचनश्रिया च ग.व्यू.276क/3.

རྣམ་པར་སྣང་བའི་སྨོན་ལམ་ཡེ་ཤེས་དཔལ ना. वैरोचनप्रणिधिज्ञानकेतुः, बोधिसत्त्वः – འཇིག་རྟེན་གྱི་ཁམས་རྣམ་པར་སྣང་མཛད་ཀྱི་སྙིང་པོ་ཞེས་བྱ་བ་དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་དཔལ་གྱི་རི་བོ་ཀུན་ནས་རྣམ་པར་སྣང་བའི་རྒྱལ་པོའི་སངས་རྒྱས་ཀྱི་ཞིང་ནས་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་རྣམ་པར་སྣང་བའི་སྨོན་ལམ་ཡེ་ཤེས་དཔལ་ཞེས་བྱ་བ वैरोचनश्रीप्रणिधि(?)गर्भाया लोकधातोः समन्तवैरोचनश्रीमेरुराजस्य तथागतस्य बुद्धक्षेत्राद्वैरोचनप्रणिधिज्ञानकेतुर्नाम बोधिसत्त्वः ग.व्यू.286क/10.

རྣམ་པར་སྣང་བའི་འོད་ཟེར་གྱིས་བརྒྱན་པ *ना.* वैरोचनरश्मिप्रतिमण्डिता, लोकधातुः – འཇིག་རྟེན་གྱི་ཁམས་རྣམ་པར་སྣང་བའི་འོད་ཟེར་གྱིས་བརྒྱན་པ་ཞེས་བྱ་བ वैरोचनरश्मिप्रतिमण्डिता नाम लोकधातुः स.पु.158क/244.

རྣམ་པར་སྣང་བར་བྱས *भू.का.कृ.* विद्योतितः म.व्यु.6909 (98ख).

རྣམ་པར་སྣང་བར་བྱེད་པ = རྣམ་པར་སྣང་བྱེད།

རྣམ་པར་སྣང་བྱེད • *वि.* वैरोचनः – ནམ་མཁའ་ལས་བྱུང་རང་བྱུང་བ། །ཤེས་རབ་ཡེ་ཤེས་མེ་པོ་ཆེ། །འོད་ཆེན་རྣམ་པར་སྣང་བར་བྱེད། །ཡེ་ཤེས་སྣང་བ་ལམ་མེ་བ།། गगनोद्भवः स्वयंभूः प्रज्ञाज्ञानानलो महान्। वैरोचनो महादीप्तिर्ज्ञानज्योतिर्विरोचनः॥ वि.प्र.49क/4.51; • *सं.* = ཉི་མ विरोचनः, सूर्यः – सूरसूर्यार्यमादित्यद्वादशात्मदिवाकराः।...विरोचनः अ.को.1.3.30; विरोचते विरोचनः। रुच दीप्तावभिप्रीतौ च अ.वि.1.3.30; • *ना.* वैरोचनः 1. नीलकायिको देवपुत्रः – དེ་ནས་སྔོན་པོའི་རིས་ཀྱི་ལྷའི་བུ་རྣམ་པར་སྣང་བྱེད་ཅེས་བྱ་བ་དེས་བདག་ལ་འདི་སྐད་ཅེས་སྨྲས་སོ།། ततो वैरोचनो नाम नीलकायिको देवपुत्रः सोऽस्मानेवमाह ल.वि.183ख/278 2. असुरः म.व्यु.3396 (58क).

རྣམ་པར་སྣང་མཛད *ना.* वैरोचनः, तथागतः – གནས་དེར་སངས་རྒྱས་བཅོམ་ལྡན་འདས་བརྒྱད་བྲི་བར་བྱ་སྟེ...དྲུག་པ་རྒྱལ་བ་རྣམ་པར་སྣང་མཛད་དང तत्रस्थान् बुद्धान् भगवत अष्टौ लिखेत्...षष्ठं वैरोचनं जिनम् म.मू.134ख/44; རྣམ་པར་སྣང་མཛད་ལ་སོགས་པའི་དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་ཁམས་དང་བཅས་པ་རྣམས་རང་གི་སྙིང་ཁར་བཅུག་ནས वैरोचनादींस्तथागतान् स्वहृदये प्रवेश्य सधातून् वि.प्र.46ख/4.49; མི་བསྐྱོད་རྡོ་རྗེ་ཞེས་བརྗོད་ཅིང་།...།རྣམ་པར་སྣང་མཛད་དེ་བཞིན་གཤེགས། ...རིགས་རྣམས་དེ་དག་མདོར་བསྡུས་པས།། अक्षोभ्यो वज्रमित्युक्तम्...वैरोचनस्तथागतः॥...कुलान्येतानि संक्षिपेत्। स.सि.69ख/188; དེ་བཞིན་དུ་རྣལ་འབྱོར་པ་ཡང་རྣམ་པ་ལྔ་སྟེ། སེང་གེ་དང་རི་དྭགས་དང་རྟ་དང་ཁྱུ་མཆོག་དང་གླང་པོ་ཆེ་སྐྱེ་རིགས་ཀྱི་དབྱེ་བ་ལས་སོ།།...རིན་ཆེན་འབྱུང་ལྡན་ནི་རྟ་དང...རྣམ་པར་སྣང་མཛད་ནི་གླང་པོ་ཆེའོ།། एवं योग्यपि पञ्चधः सिंहो मृगोऽश्वो वृषभः कुञ्जरो जातिभेदात्।...रत्नसम्भवोऽश्वः...वैरोचनो गज इति वि.प्र.165क/3.140; ནུར་ནུར་རང་བཞིན་མི་བསྐྱོད་པ།...།མཐིང་འགྱུར་རྣམ་པར་སྣང་མཛད་དེ། །རྣམ་པ་ལྔར་ནི་བསྟན་པ་ཡིན།། कललेनाक्षोभ्यरूपेण...प्रशाखा वैरोचनस्यापि पञ्चाकारं तु दर्शयेत्॥ स.उ.266ख/2.21.

རྣམ་པར་སྣང་མཛད་ཀྱི་རྒྱན་གྱིས་བརྒྱན་པའི་སྙིང་པོ वैरोचनव्यूहालङ्कारगर्भः, कूटागारविशेषः – དེའི་ནང་ན་ཁང་པ་བརྩེགས་པ་ཆེན་པོ་རྣམ་པར་སྣང་མཛད་ཀྱི་རྒྱན་གྱིས་བརྒྱན་པའི་སྙིང་པོ་ཞེས་བྱ་བ तत्र वैरोचनव्यूहालङ्कारगर्भो नाम महाकूटागारः ग.व्यू.279ख/360.

རྣམ་པར་སྣང་མཛད་ཀྱི་སྒྲུབ་པའི་ཐབས་ཀྱི་ཆོ་ག *ना.* [वैरोचनसाधनविधिः], ग्रन्थः क.त.2665.

རྣམ་པར་སྣང་མཛད་ཀྱི་སྙིང་པོའི་གཟུངས *ना.* [वैरोचनगर्भधारणी], ग्रन्थः क.त.534, 861.

རྣམ་པར་སྣང་མཛད་ཀྱི་གསང་བའི་དོན་རྣམ་པར་དགོད་པ *ना.* वैरोचनगुह्यार्थधरव्यूहः, ग्रन्थः क.त.1666.

རྣམ་པར་སྣང་མཛད་ཀྱིས་དབུ་བརྒྱན་པ *वि.* वैरोचनमौली – རེངས་པ་དང་ཕྱུར་བུས་གདབ་པ་ལ... ཁ་དོག་སེར་པོ་སོགས་དང་བཅས་པ་རྣམ་པར་སྣང་མཛད་ཀྱིས་དབུ

བཀྱུན་པའོ॥ स्तम्भने कीलने च... पीतवर्णं सवस्त्रं वैरोचनमौलिनम् वि.प्र.138ख/3.75.

རྣམ་པར་སྣང་མཛད་མངོན་པར་བྱང་ཆུབ་པའི་རྒྱུད *ना.* वैरोचनाभिसंबोधितन्त्रम्, ग्रन्थः ब.अ.351; द्र. རྣམ་པར་སྣང་མཛད་ཆེན་པོ་མངོན་པར་རྫོགས་པར་བྱང་ཆུབ་པ་རྣམ་པར་སྤྲུལ་པ་བྱིན་གྱིས་རློབ་པ་ཤིན་ཏུ་རྒྱས་པ་མདོ་སྡེའི་དབང་པོའི་རྒྱལ་པོ་ཞེས་བྱ་བའི་ཆོས་ཀྱི་རྣམ་གྲངས महावैरोचनाभिसंबोधिविकुर्विताधिष्ठानवैपुल्यसूत्रेन्द्रराजनामधर्मपर्यायः क.त.494.

རྣམ་པར་སྣང་མཛད་མངོན་པར་བྱང་ཆུབ་པའི་རྒྱུད་ཆེན་པོའི་འགྲེལ་བཤད *ना.* [वैरोचनाभिसंबोधिमहातन्त्रटीका], ग्रन्थः क.त.2663.

རྣམ་པར་སྣང་མཛད་མངོན་པར་རྫོགས་པར་བྱང་ཆུབ་པའི་རྒྱུད་ཀྱི་བསྡུས་པའི་དོན *ना.* वैरोचनाभिसंबोधितन्त्रपिण्डार्थः, ग्रन्थः क.त.2662.

རྣམ་པར་སྣང་མཛད་ཆེན་པོ་མངོན་པར་བྱང་ཆུབ་པར་གཏོགས་པའི་མཆོད་པའི་ཆོ་ག *ना.* महावैरोचनाभिसंबोधिसंबद्धपूजाविधिः, ग्रन्थः क.त.2664.

རྣམ་པར་སྣང་མཛད་སྙིང་པོ *ना.* वैरोचनगर्भः 1. बुद्धः – ལག་བཟང་དང...རྣམ་པར་སྣང་མཛད་སྙིང་པོ་དང... ཤཱཀྱ་ཐུབ་པ सुबाहुः...वैरोचनगर्भः...शाक्यमुनिश्च म.मू.93क/5 2. बोधिसत्त्वः – བདུན་པ་ལ་ནི་རྣམ་པར་སྣང་མཛད་སྙིང་པོ། བརྒྱད་པ་ལ་ནི་ངན་སོང་སྦྱོང་བ་སྟེ། བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་འདི་དག་བྲི་བར་བྱ་སྟེ सप्तमे वैरोचनगर्भः, अष्टमे अपायजहश्चेति। इत्येते बोधिसत्त्वा अभिलेख्याः म.मू.134क/44.

རྣམ་པར་སྣང་མཛད་དཔལ *ना.* वैरोचनकेतुः, बोधिसत्त्वः – དེ་དག་ཐམས་ཅད་དུའང་ཁོ་མོ་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའི་ཡུམ་དུ་འགྱུར་རོ॥ བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་བྱམས་པའི་ཡུམ་དུ་ཇི་ལྟར་འགྱུར་བ་དེ་བཞིན་དུ...རྣམ་པར་སྣང་མཛད་དཔལ་དང तेष्वहं सर्वत्र बोधिसत्त्वजननी भविष्यामि। यथा च मैत्रेयस्य बोधिसत्त्वस्य, तथा... वैरोचनकेतोः ग.व्यू.268क/347.

རྣམ་པར་སྣང་མཛད་དཔལ་གྱི་སྙིང་པོ *ना.* वैरोचनश्रीगर्भः, तथागतः – དེའི་འོག་ཏུ་དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་རྣམ་པར་སྣང་མཛད་དཔལ་གྱི་སྙིང་པོ་ཞེས་བྱ་བ་བྱུང་སྟེ तस्यानन्तरं वैरोचनश्रीगर्भो नाम तथागत उत्पन्नः ग.व्यू.130ख/216.

རྣམ་པར་སྣང་མཛད་དཔལ་གྱི་སྙིང་པོའི་རྒྱལ་པོ *ना.* वैरोचनश्रीगर्भराजः, तथागतः –དེའི་འོག་ཏུ་དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་རྣམ་པར་སྣང་མཛད་དཔལ་གྱི་སྙིང་པོའི་རྒྱལ་པོ་ཞེས་བྱ་བ་བསྙེན་བཀུར་ཏོ॥ तस्यानन्तरं वैरोचनश्रीगर्भराजो नाम तथागत आरागितः ग.व्यू.250ख/331.

རྣམ་པར་སྣང་མཛད་དཔལ་གྱི་གཟི་བརྗིད་རྒྱལ་པོ *ना.* वैरोचनश्रीतेजोराजः, तथागतः–འཇིག་རྟེན་གྱི་ཁམས་གསེར་གྱི་སྤྲིན་སྒྲོན་མའི་རྒྱལ་མཚན་ཞེས་བྱ་བ་དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་རྣམ་པར་སྣང་མཛད་དཔལ་གྱི་གཟི་བརྗིད་རྒྱལ་པོའི་སངས་རྒྱས་ཀྱི་ཞིང་ནས कनकमेघप्रदीपध्वजाया लोकधातोर्वैरोचनश्रीतेजोराजस्य तथागतस्य बुद्धक्षेत्राद् ग.व्यू.281क/6.

རྣམ་པར་སྣང་མཛད་གཟི་བརྗིད་དཔལ *ना.* वैरोचनतेजःश्रीः, लोकधातुः – འཇིག་རྟེན་གྱི་ཁམས་རྣམ་པར་སྣང་མཛད་གཟི་བརྗིད་དཔལ་ཞེས་བྱ་བར་བསྐལ་པ་རྡུལ་དང་བྲལ་བའི་དཀྱིལ་འཁོར་ཅེས་བྱ་བ་བྱུང वैरोचनतेजःश्रियां लोकधातौ विरजोमण्डलो नाम कल्पोऽभूत् ग.व्यू.118क/207.

རྣམ་པར་བརྟག་པ = རྣམ་པར་རྟགས་པ།

རྣམ་པར་བརྟགས་པ = རྣམ་པར་རྟགས་པ།

རྣམ་པར་དཔྱད •क्रि. 1. विचार्यते – དེ་ནི་འདུ་བར་གནས་སེ་ན། །དེ་ལྟར་རྣམ་པར་དཔྱད་མིན་ཏེ།། स्थितिस्तत्समवायश्चेन्न तथैव विचार्यते । त.स.30ख/320; མདུན་ས་འདིར་ནི་ཅུང་ཟད་གང་། །ལེགས་བཤད་རིན་ཆེན་རྣམ་དཔྱད་དེ།། अस्मिन् सदसि यत्किंचित् सूक्तरत्नं विचार्यते । अ.क.28क/53.13; व्यवचारयति – ཚོང་དཔོན་གྱི་བུ་ནོར་བཟངས་ཀྱིས་མཐོང་ངོ་།། ཐོས་སོ།། རྣམ་པར་དཔྱད་དོ།། सुधनः श्रेष्ठिदारकः पश्यति स्म, शृणोति व्यवचारयति ग.व्यू.106ख/195 2. विचारयेत्– བློ་ཆེན་ལྡན་པས་རྣམ་པར་དཔྱད།། विचारयेन्महाधीमान् स.सि.70क/189 3. *> རྣམ་པར་སྤྱད། •= རྣམ་པར་དཔྱད་པ།

རྣམ་པར་དཔྱད་ན विचार्यमाणः – ཐ་སྙད་ཀྱང་རྣམ་པར་དཔྱད་ན་འཇིག་པ་ཉིད་དོ།། संव्यवहारश्च विचार्यमाणो विशीर्यत एव प्र.अ.22क/25.

རྣམ་པར་དཔྱད་ནས विचार्य – དེའི་སྟོབས་དང་ལྡན་པ་དང་སྟོབས་དང་མི་ལྡན་པ་རྣམ་པར་དཔྱད་ནས तस्या बलाबलं विचार्य बो.प.145क/128; अन्विष्य – དེ་ལྟར་བསམས་ནས་མི་བདག་གིས། །བྲམ་ཟེ་ཀར་བ་ཊར་གནས་པ། །མཁས་པའི་བླ་མ་རྣམ་དཔྱད་ནས། །བློན་པོ་ཆེན་པོས་འགུགས་སུ་བཅུག།། इति संचिन्त्य नृपतिर्विप्रं कर्वटवासिनम् । आनिनाय महामात्यैरन्विष्य विदुषां गुरुम् ॥ अ.क.300ख/39.37.

རྣམ་པར་དཔྱད་པ •सं. 1. विचारः – དེ་བཞིན་རྣམ་པར་དཔྱད་པ་ཡིས། །བཙལ་ན་བདག་ཀྱང་ཡང་དག་མིན།། तथाऽहमप्यसद्भूतो मृग्यमाणो विचारतः ॥ बो.अ.33ख/9.75; ཐབས་དང་ཤེས་རབ་དང་ཡེ་ཤེས་རྣམ་པར་དཔྱད་པ་དང་ལྡན་པ་ཡིན संप्रयुक्तश्च भवत्युपायप्रज्ञा[ज्ञान]विचारैः द.भू.224ख/34; विचारणम् – དེ་ལ་འདི་ནི་རྨི་ལམ་རྣམ་པར་དཔྱད་པའི་དམ་ཚིག་གི་སྙིང་པོ།། तत्रेदं स्वप्नविचारणसमयहृदयम् गु.स.131क/88; ཉེ་བར་སྒྲུབ་པ་གྲུབ་མཆོག་ལ། །རྡོ་རྗེའི་སྐྱེ་མཆེད་རྣམ་དཔྱད་པ།། उपसाधनसिद्ध्यग्रे वज्रायतनविचारणम् । गु.स.111क/46; विचारणा – དམ་པའི་ཆོས་ལ་རིགས་པས་རྣམ་པར་དཔྱད་པ་བྱས་པའི་བསམ་པ་ནི་དེ་ཡོངས་སུ་སྨིན་པའི་རྒྱུའོ།། तत्परिपाकस्य सद्धर्मे युक्तिविचारणाकृत आशयः कारणम् सू.व्या.150क/32; དེ་ཆོས་སྣང་བ་ལ་འཇུག་པ་བཅུ་ཡོངས་སུ་གཏོན་ཏེ།...སེམས་ཅན་གྱི་ཁམས་རྣམ་པར་དཔྱད་པ་སྣང་བ་ལ་འཇུག་པ་དང་... བདག་ཉིད་ཆེ་བའི་བསམ་པ་དང་མོས་པའི་ཁམས་རྣམ་པར་དཔྱད་པ་སྣང་བ་ལ་འཇུག་པ་དང स दशभिर्धर्मालोकप्रवेशैराक्रमति...सत्त्वधातुविचारणालोकप्रवेशेन च... माहात्म्याशयाधिमुक्तिधातुविचारणालोकप्रवेशेन द.भू.204क/24; विवेचनम् – གཟུང་བར་བྱ་བ་ལ་འཛིན་པ་ནི་མངོན་པར་ཞེན་པ་སྟེ། དེ་རྣམ་པར་དཔྱད་པ་སེལ་བའོ།། ग्राह्यग्रहः अभिनिवेशः, तस्य विवेचनमपनयनम् त.प.22क/491; चिन्ता – དེ་ཉིད་ལ་ནི་རྣམ་དཔྱད་བྱས།། तत्रैवेयं कृता चिन्ता त.स.72ख/680; वितर्कः – འདོད་པ་དང་མྱ་ངན་ལ་སོགས་པའི་རྣམ་པར་སྤྱད་[? དཔྱད་]པས་ཀྱང་ཡིད་ཉམས་པ་ན་ལུས་རྣམ་པར་འགྱུར་བ་མཐོང་བའི་ཕྱིར कामशोकादिवितर्केण च मनस्युपहते देहविकारदर्शनात् त.प.96क/644 2. व्यवचारः – རིམ་ཁང་ལྔ་པའི་ནང་ན་ས་ལྔ་པ་ལ་གནས་པའི་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ...ཏིང་ངེ་འཛིན་ལ་རྣམ་པར་དཔྱད་པ་དང...མཐོང་ངོ་།། पञ्चमे पुरे पञ्चमीभूमिं प्रतिष्ठितानां बोधिसत्त्वानां...समाधिव्यवचारं च...अद्राक्षीत् ग.व्यू.17क/114; བྱང་ཆུབ

སེམས་དཔའི་སྐྱེ་བ་བརྒྱད་པ་ཡེ་ཤེས་ཀྱི་སྒོ་ཀུན་ནས་རྣམ་པར་དཔྱད་པས་ཡོངས་སུ་འགྲུབ་པ་འབྱུང་བའི་སྙིང་པོ་ཞེས་བྱ་བ समन्तज्ञानमुखव्यवचारपरिनिष्पत्तिसम्भवगर्भं नामाष्टमं बोधिसत्त्वजन्म ग.व्यू.205ख/287; व्यवचारणम् – ཡེ་ཤེས་ཀྱི་སྒོ་ཀུན་ནས་རྣམ་པར་དཔྱད་པས་ཡོངས་སུ་འགྲུབ་པ་འབྱུང་བའི་སྙིང་པོ་ཞེས་བྱ་བ་ནི་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའི་སྐྱེ་བ་བརྒྱད་པའོ།། समन्तज्ञानमुखव्यवचारणपरिनिष्पत्तिसंभवगर्भं नामाष्टमं बोधिसत्त्वजन्म ग.व्यू.202ख/285; •भू.का.कृ. विचारितः – གང་ཚེ་རྣམ་པར་དཔྱད་པ་ཡི། །རྣམ་དཔྱོད་ཀྱིས་ནི་དཔྱོད་བྱེད་ན།། विचारितेन तु यदा विचारेण विचार्यते। बो.अ.35क/9.110; སངས་རྒྱས་བཅོམ་ལྡན་འདས་རྣམས་ལ་ཡོངས་སུ་དྲིས་སོ།། ཡོངས་སུ་ཞུས་སོ།།… རྣམ་པར་དཔྱད་དོ།།…རྒྱ་ཆེར་བྱས་སོ།། बुद्धानां भगवतामन्तिकात् परिपृष्टा परिप्रश्नीकृता…विचारिता… विपुलीकृता ग.व्यू.31क/127; विचिन्तितः – བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའི་ས་འོད་འཕྲོ་བ་ཅན་འདི་ལ་གནས་པའི་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་ནི་གང་འདི…རྣམ་པར་བརྟག་[?བརྟགས་]པ་དང་རྣམ་པར་དཔྱད་པ་དང बोधिसत्त्वस्यास्यामर्चिष्मत्यां बोधिसत्त्वभूमौ स्थितस्य यानीमानि…विचिन्तितानि वितर्कितानि द.भू.207क/25; •*> རྣམ་པར་སྤྱད་པ།

རྣམ་པར་དཔྱད་པ་ཉིད विचारितता – ཡེ་ཤེས་ཀྱི་ལུས་རྣམས་ཀྱི་ཤིན་ཏུ་རྣམ་པར་དཔྱད་པ་ཉིད་ཀྱང་རབ་ཏུ་ཤེས་སོ།། ཡང་དག་པ་ཇི་ལྟ་བ་བཞིན་དུ་བརྟགས་པ་ཡང་རབ་ཏུ་ཤེས་སོ།། ज्ञानकायानां सुविचारिततां च प्रजानाति । यथावन्निस्तीरणतां च द.भू.245क/45.

རྣམ་པར་དཔྱད་པར་བྱ •क्रि. 1. विचार्यताम् – དེ་ཕྱིར་དེ་ཡི་བསྒྲུབ་བྱ་རུ། །ཕྱུར་བའི་ཡེ་ཤེས་རྣམ་དཔྱད་བྱའི།། तस्मादनुष्ठेयगतं ज्ञानमस्य विचार्यताम् । प्र.वा. 108ख/1.33; विचारयेत् – རྒྱུ་བ་དང་མི་རྒྱུ་བ་དང་བཅས་པའི་ཁམས་གསུམ་པོ་ཚིགས་སུ་བཅད་པ་འདིས་རྣམ་པར་དཔྱད་པར་བྱ་སྟེ त्रैधातुकं सचराचरं विचारयेदनया गाथया वि.प्र.32क/4.5 2. विचारः क्रियते – ད་ནི་རྣམ་པར་དཔྱད་པར་བྱ།། विचारः क्रियतेऽधुना ज्ञा. सि.49क/127; विकल्प्यते – བསྐུལ་བ་ལས་ནི་སྐྱེས་པའི་བློ། །ཚད་མ་ཡིན་ཏེ་སྐྱོན་བྲལ་བའི། །རྒྱུ་རྣམས་ཀྱིས་ནི་སྐྱེད་ཉིད་ཕྱིར། །ཞེས་བྱ་སོགས་ཀྱང་རྣམ་དཔྱད་བྱ།། चोदनाजनिता बुद्धिः प्रमाणं दोषवर्जितैः । कारणैर्जन्यमानत्वादित्याद्यपि विकल्प्यते ॥ त.स.100क/884; • = རྣམ་པར་དཔྱད་པར་བྱ་བ།

རྣམ་པར་དཔྱད་པར་བྱ་བ •कृ. व्यवचारयितव्यम् म.व्यु.7458 (106क); • द्र. རྣམ་པར་དཔྱད་པར་བྱ།

རྣམ་པར་དཔྱད་པར་བྱས་པ = རྣམ་དཔྱད་བྱས།

རྣམ་པར་དཔྱད་མིན क्रि. न विचार्यते – དེ་ནི་འདུ་བར་གནས་སེ་ན། །དེ་ལྟར་རྣམ་པར་དཔྱད་མིན་ཏེ།། स्थितिस्तत्समवायश्चेन्न तथैव विचार्यते। त.स.30ख/320.

རྣམ་པར་དཔྱོད = རྣམ་པར་དཔྱོད་པ།

རྣམ་པར་དཔྱོད་པ •क्रि. विचारयति – བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ… སོ་སོ་རང་གི་བློས་རྣམ་པར་དཔྱོད་དེ बोधिसत्त्वः…स्वप्रत्यात्मबुद्ध्या विचारयति ल.अ.108ख/54; व्यवचारयति – དེ་ལ་གནས་ནས་ཐམས་ཅད་མཁྱེན་པའི་ཡེ་ཤེས་ཀྱི་ཚུལ་ལ་རྣམ་པར་དཔྱོད་དེ यत्र प्रतिष्ठाय सर्वज्ञज्ञाननयं व्यवचारयति ग.व्यू.205ख/287; विचार्यते – དེ་རྣམས་འདི་ལྟར་རྣམ་པར་དཔྱོད།། तेषामेवं विचार्यते ज्ञ.सि.47ख/122; འོན་ཏེ་འདི་སྙོང་དེ་གང་ལས། །འདི་ནི་དེ་ཉིད་རྣམ་དཔྱོད་ཡིན།། अथ सो-

ऽनुभवः क्वास्य तदेवेदं विचार्यते । प्र.वा.130ख/2.321; • *सं.* 1. विचारः – དེ་ཉིད་ཕྱིར་ན་འདི་ཡི་ནི། །གཉེན་པོ་རྣམ་དཔྱོད་འདི་བསྒོམ་སྟེ།། अत एव विचारोऽयं प्रतिपक्षोऽस्य भाव्यते बो.अ.34ख/9.93; གང་ཚེ་རྣམ་པར་དཔྱད་པ་ཡི། །རྣམ་དཔྱོད་ཀྱིས་ནི་དཔྱོད་བྱེད་ན།། विचारितेन तु यदा विचारेण विचार्यते । बो.अ.35क/9.110; སྐལ་དང་སྐལ་མིན་རྣམ་དཔྱོད་པས། །དེ་ཕྱིར་སྦྱིན་པ་སྦྱིན་མི་བྱ།། भागाभागविचारेण तस्माद्दानं न दीयते ॥ हे.त.7ख/20; འཁོར་བའི་སྤྱོད་པ་ངོ་མཚར་ཅན། །རྣམ་པར་སྤྱོད་[? དཔྱོད་]ལ་སྲ་བྱུར་ཀྱང་།། संसारचरिताश्चर्यं विचारेष्वपि कर्कशम् । अ.क.30ख/3.132; བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའི་འཁོར་དེ་དག་གི་སེམས་དང་བསམ་པ་དང་རྣམ་པར་སྤྱོད་[? དཔྱོད་]པ་ཡང་ཤེས་ནས तस्या बोधिसत्त्वपर्षदश्चित्ताशयविचारमाज्ञाय ल.अ.60ख/6; དེ་ལྟར་རྣམ་སྤྱད་[? དཔྱད་ཁ་ཞེས་བྱ་བ ནི་དེ་ལྟར་རྣམ་པར་སྤྱོད་[? དཔྱོད་]ཅིང་ངེས་པའོ།། एअ विआर इति । एवं विचारो निश्चयः ख.टी.166ख/249; विमर्शः – དེ་མ་ངེས་ན་དེ་རྣམ་པར་དཔྱོད་པ་མི་རུང་བའི་ཕྱིར་རོ།། तदनवसाये तद्विमर्शायोगात् त.प.238क/946; परामर्शः – གསལ་བ་ཉམས་སུ་མྱོང་བའི་ཕྱིར་དེ་མ་ཐག་ཏུ་ཉམས་སུ་མྱོང་བ་ཇི་ལྟ་བཞིན་དུ་རྣམ་པར་དཔྱོད་པའི་ཤེས་པ་སྐྱེས་པས स्पष्टानुभवत्वाच्चानन्तरं यथानुभवं परामर्शज्ञानोत्पत्त्या त.प.235ख/942; चिन्ता – ཤེས་རབ་ཤིན་ཏུ་གཞོན་པ་ལྷ་རྣམས་དགའ་བ་ཚད་མ་རྣམ་པར་དཔྱོད་པའི་ཉོན་མོངས་པ་མི་བཟོད་པ་གང་གིས सुकुमारप्रज्ञो देवानाम्प्रियो न सहते प्रमाणचिन्ताव्यवहारपरिक्लेशम् वा.न्या.331क/42; विवेचनम् – དེ་ཡང་ཐ་དད་ཐ་དད་མེད། །རྣམ་པར་དཔྱོད་པ་མི་རིགས་ཉིད།། साऽप्ययुक्तैव भेदाभेदविवेचने। प्र.वृ.301ख/46; विचारणम् – གང་ཚེ་རྣམ་པར་དཔྱད་པ་ཡི། །རྣམ་དཔྱོད་ཀྱིས་ནི་དཔྱོད་བྱེད་ན། །དེ་ཚེ་རྣམ་དཔྱོད་དེ་ཡང་ནི། །རྣམ་དཔྱོད་ཕྱིར་ན་ཐུག་པ་མེད།། विचारितेन तु यदा विचारेण विचार्यते। तदानवस्था तस्यापि विचारस्य विचारणात् ॥ बो.अ.35क/9.110; विचारणा – སེམས་དྲུག་བསྟན་ཏེ། རྩ་བའི་སེམས ...རྣམ་པར་དཔྱོད་པའི་སེམས ...སྨོན་པའི་སེམས་སོ།། षट् चित्तान्युपदिष्टानि–मूलचित्तं…विचारणाचित्तं…आशास्तिचित्तं च सू.व्या.190क/88; विचालनम् – བདག་གི་བློ་རྣམ་པར་དཔྱོད་པ་ལ་མཁས་པ ...རྣལ་འབྱོར་ཆེན་པོའི་རྣལ་འབྱོར་ཅན स्वबुद्धिविचालनकुशलस्य …महायोगयोगिनः ल.अ.58ख/5 2. विवेकः, हेयोपादेयज्ञानम्–ཚེ་ནི་དོན་མེད་མྱུར་འདའ་ཡི། །རྣམ་དཔྱོད་ཤིན་ཏུ་རྙེད་པར་དཀའ།། वृथैवायुर्वहत्याशु विवेकस्तत्र दुर्लभः। बो.अ.37क/9.161; རྣམ་པར་དཔྱོད་པ་ནི་བླང་བར་བྱ་བ་དང་དོར་བར་བྱ་བ་ཤེས་པའམ། རྣམ་པར་གཡེངས་པ་དོར་བའོ།། विवेकस्तु हेयोपादेयज्ञानं व्यासङ्गपरित्यागो वा बो.प.284ख/278 3. विचारितम्– གང་འདི་ཕན་པ་དང་ལྡན་པ་བྱམས་པ་དང་ལྡན་པ་སེམས་ཅན་ཐམས་ཅད་ལ་ཕན་པ་དང་བདེ་བར་བྱ་བའི་ཕྱིར་རྣམ་པར་རྟོག་ཅིང་རྣམ་པར་དཔྱོད་པ། དེ་དག་ལ་རྣམ་པར་རྟོག་པ་ཡིན यानीमानि हितोपसंहितानि मैत्र्युपसंहितानि सर्वसत्त्वहितसुखाय वितर्कितविचारितानि, तान्यनुवितर्कयिता भवति द.भू.189क/16; • *पा.* 1. विचारः – དེ་རྣམ་པར་རྟོག་པ་དང་རྣམ་པར་དཔྱོད་པ་རྣམ་པར་ཞི་སྟེ…བསམ་གཏན་གཉིས་པ་ལ་ཉེ་བར་བསྒྲུབས་ཏེ་གནས་སོ།། स वितर्कविचाराणां व्युपशमाद्…द्वितीयं ध्यानमुपसंपद्य विहरति द.भू.198क/20 2. व्यवचारणम्, ०णा, परीक्षा – ཇི་ལྟར་རྣམ་པར་དཔྱོད་པའི་གནས་སྐབས་ན་བདེན་པ་ལ་ཡོངས་སུ་རྟོག་པ་དེ་ཁོ་ན་བཞིན་དུ་མངོན་པར་རྟོགས་པའི་གནས་སྐབས་ན་ཡང

བདེན་པ་མངོན་པར་རྟོགས་ཏེ यथा च व्यवचारणावस्थायां सत्यपरीक्षा तथाभिसमयावस्थायां सत्याभिसमयः अभि.भा.2ख/874; གང་ལས་ཐར་པ་དོན་དུ་གཉེར་བའི་སྡུག་བསྔལ་གྱི་བདེན་པ་དེ་ཉིད་ལ་དང་པོར་རྣམ་པར་དཔྱོད་པའི་གནས་སྐབས་ན་ཡོངས་སུ་རྟོག་ལ यतश्च मोक्षं प्रार्थयते, तदेवादौ व्यवचारणावस्थायां दुःखसत्यं परीक्ष्यते अभि.भा.2ख/873; • *व.का.कृ.* विमृशन् – ལུང་དང་རིགས་པས་རྣམ་དཔྱོད་པ།...།སྡུག་བསྔལ་རྒྱུ... རྟོགས་[? རྟོག་]པར་མཛད།། युक्त्यागमाभ्यां विमृशन् दुःखहेतुं परीक्षते प्र.अ.101क/108; विचार्यमाणः – ཆོས་ཀྱི་དབྱིངས་ཉིད་ལ་ནི་རྣམ་པར་དཔྱོད། ཟབ་པ་དང... རྟོག་གེའི་སྤྱོད་པ་མ་ཡིན་པ་དང धर्मधातुमेव विचार्यमाणो गम्भीरं...तर्कापगतम् रा.प.229क/121; • *वि.* विदुरः –ज्ञाता तु विदुरो विन्दुः अ.को.3.1.28.

རྣམ་པར་དཔྱོད་པ་ཅན *वि.* सविचारः – རྣམ་པར་རྟོག་པ་ཅན་རྣམ་པར་དཔྱོད་པ་ཅན...བསམ་གཏན་དང་པོ་ལ་ཉེ་བར་བསྒྲུབས་ཏེ་གནས་སོ།། सवितर्कं सविचारं...प्रथमं ध्यानमुपसंपद्य विहरति द.भू.198क/20.

རྣམ་པར་དཔྱོད་པ་བྱེད = རྣམ་པར་དཔྱོད་པར་བྱེད།

རྣམ་པར་དཔྱོད་པ་མི་བྱེད *क्रि.* न विवेचयति – དེ་ཐོབ་པས་ཡོངས་སུ་ཚིམ་པའི་ཕྱིར་གཞན་རྣམ་པ་དཔྱོད་པར་མི་བྱེད་དོ།། तदवाप्तेः परितुष्टः परं न विवेचयति प्र.अ. 134क/143.

རྣམ་པར་དཔྱོད་པ་མེད་པ *वि.* अविचारः – དེ...རྣམ་པར་རྟོག་པ་དང་རྣམ་པར་དཔྱོད་པ་མེད་པ། ཏིང་ངེ་འཛིན་ལས་སྐྱེས་པའི་དགའ་བ་དང་བདེ་བ་བསམ་གཏན་གཉིས་པ་ཉེ་བར་བསྒྲུབས་ཏེ་གནས་སོ།། सः...अवितर्कमविचारं समाधिजं प्रीतिसुखं द्वितीयं ध्यानमुपसंपद्य विहरति द.भू.198क/20; अविवेकी – རྣམ་པར་དཔྱོད་པ་མེད་པ་ལ་ནི་ཁྱད་པར་ཅན་གྱི་བདེ་བ་འདོད་པ་ཡོད་པ་མ་ཡིན་ཏེ न चाविवेकिनो विशिष्टसुखतृष्णा प्र.अ. 140क/150.

རྣམ་པར་དཔྱོད་པའི་གནས་སྐབས व्यवचारणावस्था – ཇི་ལྟར་རྣམ་པར་དཔྱོད་པའི་གནས་སྐབས་ན་བདེན་པ་ལ་ཡོངས་སུ་རྟོག་པ་དེ་ཁོ་ན་བཞིན་དུ་མངོན་པར་རྟོགས་པའི་གནས་སྐབས་ན་ཡང་བདེན་པ་མངོན་པར་རྟོགས་ཏེ यथा च व्यवचारणावस्थायां सत्यपरीक्षा तथा अभिसमयावस्थायां सत्याभिसमयः अभि.भा.2ख/873.

རྣམ་པར་དཔྱོད་པའི་ཤེས་པ *पा.* परामर्शज्ञानम् – གསལ་བ་ཉམས་སུ་མྱོང་བའི་ཕྱིར་དེ་མ་ཐག་ཏུ་ཉམས་སུ་མྱོང་བ་ཇི་ལྟ་བཞིན་དུ་རྣམ་པར་དཔྱོད་པའི་ཤེས་པ་སྐྱེས་པས स्पष्टानुभवत्वाच्चानन्तरं यथानुभवं परामर्शज्ञानोत्पत्त्या त.प.235ख/942.

རྣམ་པར་དཔྱོད་པའི་སེམས *पा.* विचारणाचित्तम्, चित्तभेदः – སེམས་དྲུག་བསྟན་ཏེ། རྩ་བའི་སེམས...རྣམ་པར་དཔྱོད་པའི་སེམས... སྨོན་པའི་སེམས་སོ།།... རྣམ་པར་དཔྱོད་པའི་སེམས་ནི། གང་གིས་དོན་དང་ཡི་གེ་དཔྱོད་པར་བྱེད་པའོ།། षट् चित्तान्युपदिष्टानि–मूलचित्तं...विचारणाचित्तं... आशास्तिचित्तं च।... विचारणाचित्तं येनार्थं व्यञ्जनं च विचारयति सू.व्या.190क/88.

རྣམ་པར་དཔྱོད་པར་བྱེད = རྣམ་པར་དཔྱོད་པར་བྱེད་པ།

རྣམ་པར་དཔྱོད་པར་བྱེད་པ • *क्रि.* विवेचयति – དེ་ཐོབ་པས་ཡོངས་སུ་ཚིམ་པའི་ཕྱིར་གཞན་རྣམ་པར་དཔྱོད་པ་མི་བྱེད་དོ།། तदवाप्तेः परितुष्टः परं न विवेचयति प्र.अ. 134क/143; व्यवचारयति – དེ་ལྟར་ན་འགྱུར་བའི་རྣམ་པས་མི་རྟག་པ་ཉིད་རྣམ་པར་དཔྱོད་པར་བྱེད་པ་ཡིན་ནོ།། एवं विपरिणामाकारेणानित्यतां व्यवचारयति श्रा.भू.

184ख/484; विचिन्तति लो.को.1409; *ईर्यते – སྒྲ་ཡི་སྤྱོད་ཡུལ་མ་ཡིན་པ། །སྤྱི་མ་ཡིན་ཞེས་རྣམ་དཔྱོད་བྱེད།། अगोचरो हि शब्दस्य न सामान्यमितीर्यते प्र.अ.156ख/170; • व.का.कृ. प्रविचार्यमाणः – ཨེ་མ་ཐུབ་པའི་སྐྱེ་བོ་རབ་ཏུ་དགའ་བ་རྣམས་ནི་རིག་བྱེད་ཀྱི་ཚིག་རྒྱས་པ་ལ་ཐེ་ཚོམ་རྣམ་པར་གཅོད་[? དཔྱོད་]པར་བྱེད་ལ अहो नु खलु मुदितमुनिजनप्रविचार्यमाण-सन्दिग्धवेदवाक्यविस्तरस्य ना.ना.227क/19.

རྣམ་པར་སྤང = རྣམ་པར་སྤང་བ།

རྣམ་པར་སྤང་བ • क्रि. विवर्जयेत् – བུད་མེད་མ་ནིང་སེམས་ཅན་གང་། །དེ་དང་འདྲིས་བྱེད་རྣམ་པར་སྤང་།། स्त्रीपण्डकाश्च ये सत्त्वाः संस्तवं तैर्विवर्जयेत्। शि.स.32ख/31; ཕག་འཚོང་བ་དང་ཤན་པ་དང་། །འདྲིས་པར་བྱེད་པ་རྣམ་པར་སྤང་།། संस्तवं च विवर्जेया[? विवर्जयेत्] सौकरौरभ्रिकैः सह ॥ शि.स.32ख/31; वर्जयेत् – བརྐམ་དང་རྨོངས་དང་འཇིགས་དང་ཁྲོ། །ངོ་ཚའི་འབྲས་བུ་རྣམ་པར་སྤང་།། लोभं मोहं भयं क्रोधं व्रीडाकार्यं च वर्जयेत्। हे.त.7ख/20; • सं. विसर्जनम्–འདི་རྣམ་པར་སྤང་བ་ནི་དཀོན་མཆོག་སྤྲིན་གྱི་མདོ་ལས...ཞེས་གསུངས་སོ།། अस्य विसर्जनं रत्नमेघसूत्रे कथितम् शि.स.34क/33; • कृ. विवर्जनीयः लो.को.1409.

རྣམ་པར་སྤང་བར་བགྱི क्रि. विवर्जयेयम् लो.को.1409.

རྣམ་པར་སྤང་བར་འགྱུར क्रि. विवर्जिष्यते – སྡིག་ཅན་ཁྱོད་ནི་སྣོད་ཆག་པ་རྡུལ་གྱིས་གང་བ་ལྟར་དེང་རྣམ་པར་སྤང་བར་འགྱུར་རོ།། विवर्जिष्यसे त्वमद्य पापीयं भिन्नभाजनमिव पांशुप्रतिपूर्णम्॥ ल.वि.162क/243.

རྣམ་པར་སྤང་བར་འགྱུར་བ = རྣམ་པར་སྤང་བར་འགྱུར།

རྣམ་པར་སྤང་བར་བྱ क्रि. विवर्जयेत् – ཆང་ནི་རྣམ་པར་སྤང་བར་བྱ།། मद्यपानं विवर्जयेत् ज्ञा.सि.46ख/119; ཁྱིམ་རྣམས་སུ་ནི་མནའ་མ་དང་། །གཞོན་ནུ་མ་རྣམས་སྤང་བར་བྱ།། कुलेषु चापि वधुकाः कुमार्यश्च विवर्जयेत्॥ शि.स.32ख/31.

རྣམ་པར་སྤངས = རྣམ་པར་སྤངས་པ། རྣམ་པར་སྤངས་ཏེ། °ནས། °ཤིང त्यक्त्वा–སྤྲོས་པ་ཐམས་ཅད་རྣམ་སྤངས་ནས།། त्यक्त्वा सर्वं प्रविस्तरम् गु.सि.5क/10; विवर्जयित्वा – རྩེད་མོ་དགའ་བ་ཐམས་ཅད་རྣམ་སྤངས་ཏེ།། क्रीडारतिं सर्वं विवर्जयित्वा स.पु.6ख/8; དེའི་ཕྱིར་གཉིས་ཀའི་མཐའ་ནི་རྣམ་སྤངས་ནས། །མཁས་པས་དབུས་ལའང་གནས་པར་ཡོད་[? ཡོང་]མི་བྱེད།། तस्मादुभे अन्त विवर्जयित्वा मध्येऽपि स्थानं न करोति पण्डितः ॥ प्र.प.46क/54; मुक्त्वा लो.को.1409; विहाय – གཉེན་དང་ཡོངས་སུ་བཟུང་བ་རྣམ་སྤངས་ཏེ विहाय बन्धूंश्च परिग्रहांश्च जा.मा.4क/3; विधूय– འདི་དག་ཐམས་ཅད་རྣམ་སྤངས་ཤིང་། །སྣང་བ་མེད་པར་ནམ་གྱུར་པ།། विधूय सर्वाण्येतानि निराभासो यदा भवेत्। ल.अ.172क/130; अवधूय – སྤྱོད་དམ་མི་སྤྱོད་སྙམ་པ་ཡི། །རྣམ་པར་རྟོག་པ་རྣམ་སྤངས་ནས།། विषह्यमविषह्यं वेत्यवधूय विचारणाम्। श.बु.110ख/10; विसृज्य लो.को.1409.

རྣམ་པར་སྤངས་པ •भू.का.कृ. विवर्जितः – བསད་པ་དང་བཅིང་བ་དང་ཆད་པས་གཅོད་པ་དང་གཏུབ་པ་དང་བརྡེག་པ་ལ་སོགས་པ་སེམས་ཅན་ལ་གནོད་པ་རྣམས་རྣམ་པར་སྤངས་པ་ཡིན་ནོ།། वधबन्धनदण्डनच्छेदन-ताडनादिसत्त्वोत्पीडा विवर्जिताः बो.भू.187ख/249; བཏུང་དང་བཏུང་མིན་རྣམ་པར་སྤངས།། पेयापेयविवर्जितः ज्ञा.सि.37ख/94; ཁྱད་པར་ཆ་ཤས་རྣམ་སྤངས

པ། །མངོན་སུམ་གྱིས་ནི་བཟུང་བ་འམ། །ཁྱད་པར་གང་ལ་རྟོགས་པ་ཡི། །རྒྱུན་ཡོད་དེ་ནི་རྟོགས་པར་འགྱུར॥ प्रत्यक्षेण गृहीतेऽपि विशेषेंऽशविवर्जिते। यद्विशेषावसायेऽस्ति प्रत्ययः स प्रतीयते॥ प्र.वृ.278ख/20; གཏོང་བའི་ངང་ཚུལ་དང་ལྡན་པ་ཞེས་པ་ནི་འདུ་འཛི་ཐམས་ཅད་རྣམ་པར་སྤྲངས་ཤིང་། རྫས་ལ་སོགས་པ་ལ་ལྟོས་པ་མེད་པའོ॥ त्यागशील इति सर्वसङ्गविवर्जितो द्रव्यादिनिरपेक्षक इति वि.प्र.93क/3.4; विप्रहीणः – བཅོམ་ལྡན་འདས་ཐུགས་རྗེ་ཆེན་པོ་དང་ལྡན་པ...ཡན་ལག་ལྔ་རྣམ་པར་སྤྲངས་པ भगवतां महाकारुणिकानां...पञ्चाङ्गविप्रहीणानाम् अ.श.10क/8; विनिर्मुक्तः – གཉིས་པ་ཐམས་ཅད་རྣམ་སྤྲངས་པས॥ सर्वद्वन्द्वविनिर्मुक्तः गु.सि.11ख/25; विप्रमुक्तः लो.को.1409; वर्जितः – བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་གཞན་སྒྲོ་འདོགས་པ་དང་སྐུར་བའི་ལྟ་བ་ངན་པ་རྣམ་པར་སྤྲངས་པའི་བློ་ཅན अन्ये च बोधिसत्त्वाः समारोपापवादकुदृष्टिवर्जितमतयः ल.अ.82ख/30; གཟུང་དང་འཛིན་པ་རྣམ་པར་སྤྲངས॥ ग्राह्यग्राहकवर्जितम् गु.सि.11क/24; སྟོང་ཉིད་མཚན་མེད་བཅས་པ་དང་། །སྨོན་པ་རྣམ་པར་སྤྲངས་པ་དང་། །སྐྱེ་མེད་འགག་པ་མེད་སོགས་དང་། །ཆོས་ཉིད་རྣམ་པར་འཁྲུག་མེད་དང་॥ शून्यत्वे सानिमित्ते च प्रणिधानविवर्जिते। अनुत्पादानिरोधादौ धर्मताया अकोपने॥ अभि.अ.7ख/4.18; विधूतः – སྡིག་པ་ཐམས་ཅད་རྣམ་སྤྲངས་པ॥ विधूताशेषकल्मषम् गु.सि.11क/24; རྟོག་པའི་དྲ་བ་རྣམ་སྤྲངས་པ॥ विधूतकल्पनाजालम् ज्ञा.सि.60ख/157; व्यवकर्षितः – གཟུགས་མེད་པའི་ཁམས་རྣམ་པར་སྤྲངས་པའི་བསམ་གཏན་ཞེས་བྱ་བ་ནི་གཟུགས་མེད་པར་སྐྱེ་བ་སྤོང་བའི་ཏིང་ངེ་འཛིན་ཞེས་བྱ་བའི་ཐ་ཚིག་གོ॥ आरूप्यधातुव्यवकर्षितेन ध्यानेनेति पर्युदस्तारूप्योपपत्तिकेन समाधिनेत्यर्थः अभि.स.भा.88ख/121; म.व्यु.7601 (108ख); बहिर्गतः – འཇིག་རྟེན་སྤྱོད་པ་རྣམ་སྤྲངས་ལ། །རིགས་རྣམས་ཀུན་ལ་ཀུན་དུ་སྤྱད॥ आचरेत् सर्ववर्णानि लोकाचारबहिर्गतः। गु.सि.19क/40; •सं. 1. व्यवसर्गः – རྫུ་འཕྲུལ་གྱི་རྐང་པ་དབེན་པ་ལ་གནས་པ...རྣམ་པར་སྤྲངས་པས་ཡོངས་སུ་གྱུར་པ་ཡོངས་སུ་སྒོམ་མོ॥ ऋद्धिपादं भावयति विवेकनिश्रितं ...व्यवसर्गपरिणतम् द.भू.205ख/24; विक्षेपः – རྟག་ཏུ་གཞུ་གྲུ་རྣམ་སྤྲངས་ཤིང་། །དྲང་བརྟན་རྣམས་ནི་རྟག་བསྟེན་པས॥ जिह्मानां नित्यविक्षेपादृजूनां नित्यसेवनात्। श.बु.110ख/15; क्षयः – དངོས་དང་དངོས་མེད་རྣམ་པར་སྤྲངས།...བྱང་ཆུབ་སེམས་ཞེས་བཤད་པ་ཡིན॥ भावाभावक्षयम्...बोधिचित्तमिति स्मृतम्॥ ज्ञा.सि.51ख/134 2. = རྣམ་སྤྲངས་ཉིད विवर्जनता – འདུ་འཛི་ལ་དགའ་བའི་གང་ཟག་རྣམ་པར་སྤྲངས་པ་དང सङ्गणिकारामपुद्गलविवर्जनतया शि.स.34ख/33; དེ་བཞིན་དུ་ལྟ་བ་ཉམས་པ་དང་ཚོ་ག་ཉམས་པ་དང་འཚོ་བ་ཉམས་པའི་གང་ཟག་རྣམ་པར་སྤྲངས་པ एवं दृष्टिविपन्नाऽऽचारविपन्नाऽऽजीवविपन्नपुद्गलविवर्जनतया शि.स.34ख/33; विवर्जितत्वम् लो.को.1409.

རྣམ་པར་སྤྲངས་པ་ན विवर्जयन् – འདྲིས་དང་ཁྱིམ་ལ་འཁྲེན་པ་དང་། །འདུ་འཛིར་གྱུར་པའི་གནས་དང་ནི།... །བཅུ་པོ་འདི་ནི་རྣམ་སྤྲངས་ན། །ས་ལྔ་པ་ནི་ཡང་དག་འཐོབ॥ संस्तवं कुलमात्सर्यं स्थानं सङ्गणिकावहम्। ...विवर्जयन् समाप्नोति दशैतान् पञ्चमीं भुवम्॥ अभि.अ.4क/1.56.

རྣམ་པར་སྤྲངས་པས་ཡོངས་གྱུར = རྣམ་པར་སྤྲངས་པས་ཡོངས་སུ་གྱུར་པ

རྣམ་པར་སྤྲངས་པས་ཡོངས་སུ་གྱུར་པ *वि.* व्यवसर्गपरिणतः – རྫུ་འཕྲུལ་གྱི་རྐང་པ་དབེན་པ་ལ་གནས་པ

...རྣམ་པར་སྤངས་པས་ཡོངས་སུ་གྱུར་པ་ཡོངས་སུ་སྒོམ་མོ།། ऋद्धिपादं भावयति विवेकनिश्रितं... व्यवसर्गपरिणतम् द.भू.205[ख]/24; द्र. རྣམ་པར་སྤངས་པས་ཡོངས་སུ་བསྒྱུར་བ།

རྣམ་པར་སྤྲེལ = རྣམ་སྤྲེལ།

རྣམ་པར་སྤྲེལ་བ = རྣམ་སྤྲེལ།

རྣམ་པར་སྤོང = རྣམ་པར་སྤོང་བ།

རྣམ་པར་སྤོང་བ • *क्रि.* विजहाति – ཇི་ལྟར...ཡོ་བྱད་ཐམས་ཅད་ཀྱི་སྲེད་པ་རྣམ་པར་སྤོང་ཞིང་འགྲོ་བ་ཐམས་ཅད་བསྡུ་བའི་སྨོན་ལམ་ཡོངས་སུ་བསྐྱེད་པར་གྱུར་བ་མ་འཚལ་ལོ།། न च जाने कथं...विजहन्ति सर्वोपकरणतृष्णाम्, उत्पादयन्ति सर्वजगत्संग्रहप्रणिधिम् ग.व्यू.328[ख]/51; विवर्जयति – དེ་དག་སྡིག་པའི་གྲོགས་པོ་དག་ལ་བསྟེན་པ་མ་ཡིན་ཏེ། །ཚིག་བྱེད་བདག་ཉིད་མེ་ལྟར་དེ་དག་རིང་དུ་རྣམ་པར་སྤོང་།། न क्वचिच्च ते भवन्ति पापमित्रसेवका दूरतो विवर्जयन्ति तेऽग्निवच्च दाहनात्मकान्॥ रा.प.232[ख]/125; रा.प.236[क]/131; • *सं.* **1.** व्यवसर्गः – རྣམ་པར་སྤོང་བས་ཡོངས་སུ་བསྒྱུར་བ व्यवसर्गपरिणतम् म.व्यु.975 (22[क]); विहानिः – ཁམས་གསུམ་ཉོན་མོངས་རྣམ་སྤོང་རྫོགས་བྱེད त्रिधातुकक्लेशविहानिपूरकम् सू.अ.184[क]/79; विवर्जनम् ल.अ.; विजहनम् – ཉོན་མོངས་པ་རྣམ་པར་སྤོང་བའི་ཤེས་རབ क्लेशविजहना च प्रज्ञा बो.भू.114[क]/147 **2.** = རྣམ་སྤོང་ཉིད वर्जनता – ཞི་གནས་མི་ཟད་པ་གང་ཞེ་ན། གང་སེམས་ཞི་བ་དང་...འདུ་འཛི་རྣམ་པར་སྤོང་བ་དང་དབེན་པ་ལ་དགའ་བ་དང कतमा शमथाक्षयता ? या चित्तस्य शान्तिः...सङ्गणिकावर्जनता विवेकरतिः शि.स.68[ख]/67; *• *भू.का.कृ.* विवर्जितः – ལྟ་བར་གྱུར་པའི་ཐིབས་པོ་ཐམས་ཅད་རྣམ་པར་སྤོང་བ་ཞེས་བྱ་བའི་ཏིང་ངེ་འཛིན सर्वदृष्टिकृतगहनविवर्जितो नाम समाधिः अ.सा.431[क]/243; *> རྣམ་པར་སྤངས་པ།

རྣམ་པར་སྤོང་བར་བྱེད = རྣམ་པར་སྤོང་བར་བྱེད་པ།

རྣམ་པར་སྤོང་བར་བྱེད་པ *वि.* विवर्जकः – ཐམས་ཅད་ཀྱི་སྒོ་ནས་བརྩོན་འགྲུས...ཉོན་མོངས་པ་ཅན་གྱི་ཆོས་རྣམ་པར་སྤོང་བར་བྱེད་པ་དང सर्वतोमुखं वीर्यम्...क्लिष्टधर्मविवर्जकम् बो.भू.108[ख]/139.

རྣམ་པར་སྤོང་བར་སོག *क्रि.* विवर्जयतु – སྡིག་པའི་ལས་རྣམས་རྣམ་པར་སྤོང་བར་སོག།། विवर्जयन्तु खलु पापकर्म सु.प्र.7[क]/12.

རྣམ་པར་སྤོང་བས་ཡོངས་སུ་བསྒྱུར་བ *वि.* व्यवसर्गपरिणतम् म.व्यु.975 (22[क]); द्र. རྣམ་པར་སྤངས་པས་ཡོངས་སུ་གྱུར་པ།

རྣམ་པར་སྤོང་བྱེད = རྣམ་པར་སྤོང་བར་བྱེད་པ།

རྣམ་པར་སྤོངས *क्रि.* विसर्जयतु – བག་མེད་མཐའ་དག་རྣམ་པར་སྤོངས प्रमादमखिलं विसर्जयत ल.वि.23[क]/26.

རྣམ་པར་སྤྱོད •*क्रि.* **1.** विचार्यते – དེ་བཞིན་དུ་ཐམས་ཅད་མཁྱེན་པ་ཉིད་དུ་སེམས་བསྐྱེད་པའི་ནོར་བུ་རིན་པོ་ཆེ་ཆེན་པོ་ཨིནྡྲ་ནཱི་ལ་ཡང་ཆོས་གང་དང་གང་ལ་རྣམ་པར་སྤྱོད་པ་དང་ཡོངས་སུ་བཏང་བ་དང एवमेव सर्वज्ञताचित्तोत्पादेन्द्रनीलमहामणिरत्नं येषु [धर्मेषु] विचार्यते प्रेष्यते ग.व्यू.314[ख]/400 **2.** विचरेत् – སེང་གེ་བཞིན་དུ་རྣམ་པར་སྤྱོད།། सिंहवद् विचरेत् गु.सि.23[ख]/50; དངོས་པོ་ཀུན་གྱི་རང་བཞིན་གྱིས། །ཡོ་གིས་རྣམ་དཔྱད་[སྤྱོད་]སྙིང་རྗེ་ཆེ།། सर्वभावस्वभावेन विचरेद् योगी महाकृपः॥ हे.त.7[ख]/20; •= རྣམ་པར་སྤྱོད་པ།

རྣམ་པར་སྤྱད་པ • *भू.का.कृ.* विचरितः – སྲེད་པ་རྣམ་པར་དཔྱད་[? སྤྱད་]པ་རྣམས་ཀྱི་འདུན་པ་བཞི་ནི་གོ་རིམས་བཞིན་དུ...ཡིན་ནོ།། तृष्णाविचरितानां...चत्वारश्छन्दा यथाक्रमं भवन्ति अभि.स्फु.254क/1060; ཡང་ན་སྲེད་པ་རྣམ་པར་སྤྱད་པ་རྣམས་ཀྱི་འདུན་པ་བཞི་ནི་སྲེད་པའི་བྱེ་བྲག་རྣམས་ལས་ལྔ་ཚན་གཉིས་དང་། བཞི་ཚན་གཉིས་ཡིན་ཏེ अथ वा – तृष्णाविचरितानां द्वौ पञ्चकौ, द्वौ चतुष्कौ, चत्वारश्छन्दाः अभि.भा. 49ख/1060; • *> རྣམ་པར་དཔྱད་པ།

རྣམ་པར་སྤྱོད = རྣམ་པར་སྤྱོད་པ།

རྣམ་པར་སྤྱོད་པ • *क्रि.* विचरति – ངོ་བོ་ཉིད་ཀྱིས་ཀུན་འབྱུང་[བྱུང་]བ། །ཁམས་གསུམ་དག་ཏུ་རྣམ་པར་སྤྱོད།། स्वभावेनैव संभूता विचरन्ति त्रिधातुके। गु.स.139ख/106; अनुविचरति – བསྒྲུབ་པ་གྲུབ་པའི་སྐྱེས་བུ་ནི་མིའི་གནས་ཐམས་ཅད་ན་རྣམ་པར་སྤྱོད་ཀྱང་མི་ཀུན་གྱིས་མི་མཐོང་ངོ་།། अञ्जनसिद्धः पुरुषः सर्वमनुष्यभवनेषु चानुविचरति, सर्वमारै[? मनुष्यै]श्च न दृश्यते ग.व्यू.320ख/404; • *सं.* 1. विहारः – བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའི་ཏིང་ངེ་འཛིན་སྤྱི་བོ་ཙུག་གི་གཞི་ལ་རྣམ་པར་སྤྱོད་པའི་བྱིན་གྱི་རླབས་པ अध[? अव]मूर्धतलविहाराधिष्ठानेन बोधिसत्त्वसमाधिना ग.व्यू.306क/29 2. विचेष्टितम् – དེ་ལྟར་ངེས་པའི་བདག་ཉིད་ཅན་གྱིས་ཡོངས་བརྟགས་ནས། །མཛའ་ཤེས་[? བཤེས་]ཕྱོགས་པ་རྣམས་ཀྱིས་རྣམ་པར་སྤྱོད་པ་དག།། इति स परिगणय्य निश्चितात्मा प्रणयमयानि सुहृद्विचेष्टितानि। जा.मा.109क/127; • *वि.* विहारी – ཚོང་དཔོན་གྱི་བུ་ནོར་བཟངས... སངས་རྒྱས་ཀྱི་ཡུལ་གྱི་རྣམ་པར་འཕྲུལ་བ་བསམ་གྱིས་མི་ཁྱབ་པ་ལ་མངོན་སུམ་དུ་རྣམ་པར་སྤྱོད་པ सुधनः श्रेष्ठिदारकः...अचिन्त्यबुद्धविषयविकुर्वितप्रत्यक्षविहारी ग.व्यू.380क/90; विहारिणी – ལྷའི་བུ་མོ་དགའ་བའི་ཚལ་ན་རྣམ་པར་སྤྱོད་པ་ལྟ་བུ अप्सरसमिव नन्दनवनविहारिणीम् वि.व.207क/1.81; विचारिणी – ལྷའི་བུ་མོ་དགའ་ཚལ་ན་རྣམ་པར་སྤྱོད་པ་བཞིན་དུ अप्सरसमिव नन्दनवनविचारिणीम् वि.व. 252ख/2.155; •*> རྣམ་པར་དཔྱོད་པ།

རྣམ་པར་སྤྲས = རྣམ་པར་སྤྲས་པ།

རྣམ་པར་སྤྲས་པ *भू.का.कृ.* विचित्रितः – ལུས་ནི་མཚན་རྣམས་ཀྱིས་རྣམ་པར་སྤྲས་པ लक्षणैर्विचित्रितगात्रः स.पु.160ख/246; विभूषितः – དགའ་བའི་ཚལ་ན...རྒྱན་སྣ་ཚོགས་ཀྱིས་རྣམ་པར་སྤྲས་པ नन्द[न]वने...नानालङ्कारविभूषिते स.दु.96ख/120; विरचितः लो.को. 1409; विराजितः – རལ་པའི་ཐོར་ཚུགས་ནི་སངས་རྒྱས་ལྔས་རྣམ་པར་སྤྲས་པ་དེས་བརྒྱན་པའི་བཅོམ་ལྡན་འདས་སོ།། जटामुकुटेन च पञ्चबुद्धविराजितेन मण्डितं भगवन्तम् ख.टी.157क/237.

རྣམ་པར་སྤྲུལ་བ • *भू.का.कृ.* विनिर्मितः – གང་གིས་མི་བཟད་*སྡུག་མ་ནི། །དགའ་མ་ཁྱོད་ལ་རྣམ་སྤྲུལ་བ།། येरेष विषमः क्लेशः प्रिये तव विनिर्मितः। अ.क.148ख/68.84; ལྷན་ཅིག་སྐྱེས་པའི་རྣམ་པར་སྤྲུལ་པའི་ཉམས་དགའ་བའི་བུ་མོ་ལ་ཀུན་དུ་བལྟས་ནས सहजविनिर्मितरम्यरामावलोकनतः त.सि.63ख/169; निर्मितः – འཇིགས་རུང་སྡུག་པོའི་རླུང་གིས་རབ་བསྙངས་ཐ་རླབས་རྣམ་སྤྲུལ་པས། །མ་ལུས་ཕྱོགས་ཀུན་ཡོངས་འགེངས་དྲག་པོའི་སྒྲ་དང་རབ་ཏུ་ལྡན།། उद्धतभैरवघनानिलनिर्मितोर्मिसंपूरिताखिलदिगन्तरघोरघोषः। अ.क.221क/89.1; ཀྱེ་མ...མཚོན་མེད་བདག་ལུས་འཇིག་པ་འདི། །བྱེད་པོ་དག་གིས་རྣམ་པར་སྤྲུལ།། अहो निरायुधस्यायं वेधसा मम निर्मितः।...वपुषः क्षयः अ.क.130ख/66.68;

विकुर्वितः – རྒྱལ་སྲིད་སྒྱུ་མ་རྣམ་སྤྲུལ་པས། राज्यं मायाविकुर्वितम् ज्ञा.सि.59क/152; *विठयितः – བླ་མའི་ཞབས་ཀྱི་པདྨ་ར་བརྟེན་པར་རྣམ་སྤྲུལ་པའི། །བདུད་རྩི गुरुचरणाम्बुजसेवाविठयितममृतम् प्र.सि.36क/87.

རྣམ་པར་སྤྲོ = རྣམ་པར་སྤྲོ་བ།

རྣམ་པར་སྤྲོ་བ • क्रि. विस्फुरति – ནམ་མཁའི་དཀྱིལ་འཁོར་ཁྱབ་པ་ཡི། །རང་གི་ལུས་མཚུངས་རྣམ་པར་སྤྲོ། विस्फुरन्ति स्वदेहाभाः गगनमण्डलच्छादकाः। हे.त.5क/12; • सं. विपञ्ची, वीणा – वीणा तु वल्लकी। विपञ्ची अ.को.1.8.3; विविधं पञ्च्यते स्वरा अत्रेति विपञ्ची। पचि व्यक्तीकरणे अ.वि.1.8.3.

རྣམ་པར་སྤྲོས = རྣམ་པར་སྤྲོས་པ།

རྣམ་པར་སྤྲོས་ན་གོ་བ वि. विपञ्चितज्ञः – ཡང་དག་པར་རབ་ཏུ་སྟོན་པ་ནི་རྣམ་པར་སྤྲོས་ན་གོ་བ་རྣམས་ལའོ། संप्रकाशयति विपञ्चितज्ञेषु सू.व्या.183ख/79.

རྣམ་པར་སྤྲོས་པ • सं. विप्रपञ्चः – རྣམ་པར་སྤྲོས་པ་མེད་པ अविप्रपञ्चः म.व्यु.2926 (52ख); विपञ्चः– ཐབས་དང་ཤེས་རབ་རྣམ་པར་གཏན་ལ་དབབ་པ་སྒྲུབ་པ་ལས་ཤེས་རབ་དང་ཐབས་རྣམ་པར་སྤྲོས་པའི་རིམ་པར་ཕྱེ་བ་སྟེ་དང་པོའོ། प्रज्ञोपायविनिश्चयसिद्धौ प्रज्ञोपायविपञ्चो नाम प्रथमः परिच्छेदः प्र.सि.30क/69; • भू.का.कृ. विपञ्चितः – ཡང་དག་པར་རབ་ཏུ་སྟོན་པ་ནི་རྣམ་པར་སྤྲོས་ན་གོ་བ་རྣམས་ལའོ། संप्रकाशयति विपञ्चितज्ञेषु सू.व्या.183ख/79; विस्फारितः – དེའི་སྟེང་དུ་དཔལ་ལྡན་རྒྱུ་སྐར་གྱི་དཀྱིལ་འཁོར་ཆ་བཅུ་དྲུག་གི་རྣམ་པར་དབྱེ་བ་ཅན་དང་པོའི་སངས་རྒྱས་རྣམ་པར་སྤྲོས་སོ། तदुपरि श्रीमान्नक्षत्रमण्डलं षड्[? षोडश]विभागिकमादिबुद्धं विस्फारितम् वि.प्र.93ख/3.5.

རྣམ་པར་སྤྲོས་པ་མེད་པ अविप्रपञ्चः म.व्यु.2926 (52ख); मि.को.120क।

རྣམ་པར་སྤྲོས་པས་གོ་བ वि. विपञ्चितज्ञः म.व्यु.2385 (46क); मि.को.124क; द्र. རྣམ་པར་སྤྲོས་ན་གོ་བ།

རྣམ་པར་ཕྱིན། ०ཏེ विनिःसृत्य – ཐབ་ཀྱི་ཕྱི་རོལ་དུ་རྣམ་པར་ཕྱིན་ཏེ कुण्डबाह्यं विनिःसृत्य वि.प्र.140क/3.76.

རྣམ་པར་ཕྱེ • क्रि. *विकासयेत् – ལག་པ་གཉིས་ནི་སྙིང་ག་རུ། །པད་མའི་རྣམ་པར་རྣམ་ཕྱེ་[? དབྱེ་]ལ། द्वयहस्तं हृदि देशे पद्माकारं विकासयेत्। स.दु.106ख/156; द्र. རྣམ་པར་དབྱེ་བར་བྱ། •= རྣམ་པར་ཕྱེ་བ།

རྣམ་པར་ཕྱེ་སྟེ विभज्य – ས་ཡི་དོན་ཚུལ་ཡང་དག་ཏུ། །རྣམ་པར་ཕྱེ་སྟེ་བཤད་པར་མཛོད། विभज्यार्थगतिं सम्यग्भूमीनां समुदाहर॥ द.भू.170ख/4; རྣམ་པར་ཕྱེ་སྟེ་ལུང་བསྟན་པར་བྱ་བ विभज्य व्याकरणीयम् अ.सा.158ख/89.

རྣམ་པར་ཕྱེ་སྟེ་བརྗོད་པར་བྱ་བ कृ. विभज्य वक्तव्यम् – ཞེས་བྱ་བ་དེ་ལྟ་བུ་ལ་སོགས་པ་རྣམ་པར་ཕྱེ་སྟེ་བརྗོད་པར་བྱ་བ་ཡིན་ནོ། इत्येवं विभज्य वक्तव्यम् अभि.भा.237ख/799.

རྣམ་པར་ཕྱེ་སྟེ་སྨྲ = རྣམ་པར་ཕྱེ་སྟེ་སྨྲ་བ།

རྣམ་པར་ཕྱེ་སྟེ་སྨྲ་བ •क्रि. विभज्य वदति – ཞེས་རྣམ་པར་ཕྱེ་སྟེ་སྨྲ་བ་དེ་དག་ནི་རྣམ་པར་ཕྱེ་སྟེ་སྨྲ་བ་དག་ཡིན་ནོ། इति विभज्य वदन्ति, ते विभज्यवादिनः अभि.भा.239ख/805; • सं. (ब.व.) विभज्यवादिनः, निकायभेदः – གང་དག་ད་ལྟར་བྱུང་བ་དང་འབྲས་བུ་མ་བསྐྱེད་པའི་ལས་འདས་པ་གང་ཡིན་པ་ཕྱུང་ཟད་ཅིག་ནི་ཡོད། མ་འོངས་པ་དང་འབྲས་བུ་བསྐྱེད་ཟིན་པའི་འདས་པ་གང་ཡིན་པ་ཕྱུང་ཟད་ཅིག་ནི་མེད་དོ་ཞེས་རྣམ་པར་ཕྱེ་སྟེ

སྨྲ་བ་དེ་དག་ནི་རྣམ་པར་ཕྱེ་སྟེ་སྨྲ་བ་དག་ཡིན་ནོ།། ये तु केचिदस्ति यत् प्रत्युत्पन्नमदत्तफलं चातीतं कर्म, किंचिन्नास्ति यद्दत्तफलमतीतमनागतं चेति विभज्य वदन्ति, ते विभज्यवादिनः अभि.भा.239ख/805; द्र. རྣམ་པར་ཕྱེ་སྟེ་སྨྲ་བའི་སྡེ།

རྣམ་པར་ཕྱེ་སྟེ་སྨྲ་བའི་སྡེ विभज्यवादिनः, निकायभेदः म.व्यु.9084 (125ख); द्र. རྣམ་པར་ཕྱེ་སྟེ་སྨྲ་བ།

རྣམ་པར་ཕྱེ་སྟེ་ལུང་བསྟན་པ *पा.* विभज्य व्याकरणम्, व्याकरणभेदः – ཅི་གང་དག་འཆི་བར་འགྱུར་བ་དེ་དག་སྐྱེ་བར་འགྱུར་རམ་ཞེས་རྣམ་པ་དེ་ལྟ་བུར་འདྲི་བ་དེ་ལ་ཐམས་ཅད་ནི་སྐྱེ་བར་མི་འགྱུར་རོ། །འོ་ན་ཅི་ཞེ་ན། ཉོན་མོངས་པ་དང་བཅས་པ་དག་ནི་སྐྱེ་བར་འགྱུར་གྱི་ཉོན་མོངས་པ་མེད་པ་རྣམས་ནི་མ་ཡིན་ནོ་ཞེས་བྱ་བ་རྣམ་པར་ཕྱེ་སྟེ་ལུང་བསྟན་དགོས་པར་འགྱུར་རོ།། यस्तु पृच्छेदनेन प्रकारेण–ये मरिष्यन्ति किं ते जनिष्यन्त इति। तस्य विभज्य व्याकरणं स्यात्–न सर्वे जनिष्यन्ते। किं तर्हि ? सक्लेशा जनिष्यन्ते, न निःक्लेशा इति अभि.स्फु.110ख/798; द्र. རྣམ་པར་ཕྱེ་སྟེ་ལུང་བསྟན་པར་བྱ་བ།

རྣམ་པར་ཕྱེ་སྟེ་ལུང་བསྟན་པར་བྱ = རྣམ་པར་ཕྱེ་སྟེ་ལུང་བསྟན་པར་བྱ་བ།

རྣམ་པར་ཕྱེ་སྟེ་ལུང་བསྟན་པར་བྱ་བ • *पा.* विभज्य व्याकरणीयः, प्रश्नभेदः – འདྲི་བ་ནི་རྣམ་པ་བཞི་སྟེ། མགོ་གཅིག་ཏུ་ལུང་བསྟན་པར་བྱ་བ་དང་། རྣམ་པར་ཕྱེ་ནས་ལུང་བསྟན་པར་བྱ་བ་དང་། དྲིས་ནས་ལུང་བསྟན་པར་བྱ་བ་དང་། གཞག་པར་བྱ་བའོ།། चतुर्विधो हि प्रश्नः–एकांशव्याकरणीयः, विभज्य व्याकरणीयः, परिपृच्छय व्याकरणीयः, स्थापनीयश्च अभि.भा.236ख/797; •*कृ.* विभज्य व्याकर्तव्यम् – ཅི་སེམས་ཅན་ཐམས་ཅད་སྐྱེ་བར་འགྱུར་རམ་ཞེས་འདྲི་ན། ཉོན་མོངས་པ་དང་བཅས་པ་རྣམས་ནི་སྐྱེ་བར་འགྱུར་གྱི་ཉོན་མོངས་པ་མེད་པ་རྣམས་ནི་མ་ཡིན་ནོ་ཞེས་རྣམ་པར་ཕྱེ་སྟེ་ལུང་བསྟན་པར་བྱའོ།། 'किं सर्वे जनिष्यन्ते' इति विभज्य व्याकर्तव्यम्–सक्लेशा जनिष्यन्ते, न निःक्लेशाः अभि.भा.237क/797; विभज्य व्याकरणीयम्–རབ་འབྱོར...འདི་ནི་རྣམ་པར་ཕྱེ་སྟེ་ལུང་བསྟན་པར་བྱ་བ་ཡིན་ནོ།། विभज्य व्याकरणीयमेतत्सुभूते अ.सा.158ख/89.

རྣམ་པར་ཕྱེ་སྟེ་ལུང་བསྟན་པར་བྱ་བ་ཡིན *कृ.* विभज्यव्याकरणीयं स्यात् – གང་ཞིག་ཅི་གང་དག་འཆི་བར་འགྱུར་བ་དེ་དག་སྐྱེ་བར་འགྱུར་རམ་ཞེས་འདྲི་བ་དེ་ལ་ནི་རྣམ་པར་ཕྱེ་སྟེ་ལུང་བསྟན་པར་བྱ་བ་ཡིན་ནོ།། यस्तु पृच्छेद्–ये मरिष्यन्ति किं ते जनिष्यन्त इति, तस्य विभज्य व्याकरणीयं स्यात् अभि.भा.237क/798.

རྣམ་པར་ཕྱེ་སྟེ་ལུང་བསྟན་པར་བྱ་བའི་དྲི་བ विभज्य व्याकरणीयः प्रश्नः – དགེ་སློང་དག་རྣམ་པར་ཕྱེ་སྟེ་ལུང་བསྟན་པར་བྱ་བའི་དྲི་བ་གང་ཞེ་ན कतमश्च भिक्षवो विभज्य व्याकरणीयः प्रश्नः अभि.भा.238क/801; द्र. རྣམ་པར་ཕྱེ་སྟེ་ལུང་བསྟན་པར་བྱ་བ།

རྣམ་པར་ཕྱེ་ནས་ལུང་བསྟན་པ = རྣམ་པར་ཕྱེ་སྟེ་ལུང་བསྟན་པ།

རྣམ་པར་ཕྱེ་བ •*सं.* 1. विभागः – གང་ཕྱིར་བྱེད་པས་རྣམ་ཕྱེ་བ། །འདི་ནི་དུས་རྣམས་རྟོག་པར་འགྱུར།། कारित्रेण विभागोऽयमध्वनां यत् प्रकल्प्यते ॥ त.स.65ख/617; བཅོམ་ལྡན་འདས་ཆོས་ཐམས་ཅད་ཀྱི་རང་གི་སེམས་སྣང་བའི་སྤྱོད་ཡུལ་རྟོགས་པ་རྣམ་པར་ཕྱེ་བའི་མཚན་ཉིད་མཆིས་པ་དང་མ་མཆིས་པ་དང་གཅིག་པ་དང་ཐ་དད་པ་དང་གཉིས་ཀ་དང་གཉིས་ཀ་མ་ལགས་པ་དང

མཆིས་པའང་མ་ལགས་མ་མཆིས་པའང་མ་ལགས་པ་དང་
རྟག་པ་དང་མི་རྟག་པ་སྤངས་པ...བདག་ལ་བཤད་དུ་
གསོལ देशयतु मे भगवान् नास्त्यस्तित्वैकत्वान्य-
त्वोभयनोभयनैवास्तिननास्तिनित्यानित्यवर्जितं...
स्वचित्तदृश्यगोचरगतिविभागलक्षणं सर्वधर्माणाम्
ल.अ.90ख/37; विभक्तिः – ལུས་རྣམ་པར་བྱེ་བ་ཚད་
མེད་པས་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའི་སྤྱོད་པའི་མཐུ་ཡོངས་སུ་
སྐྱེད་དེ अप्रमाणकायविभक्तितो बोधिसत्त्वचर्याबलं
समुदागच्छति द.भू.241ख/43; ལུས་རྣམ་པར་བྱེ་བ་
ཚད་མེད་པ་མངོན་པར་བསྒྲུབ་པ अप्रमाणकायविभक-
त्यभिनिर्हृतः द.भू.246ख/47; विभङ्गः – དོན་ཐ་དད་
པ་ཡང་དག་པར་ཤེས་པས་དུས་དང་དངོས་པོ་དང་མཚན་
ཉིད་རྣམ་པར་བྱེ་བ་སྣ་ཚོགས་ཁོང་དུ་ཆུད་པར་བྱ་བ་རབ་
ཏུ་ཤེས་སོ॥ अर्थप्रतिसंविदा नानाकालवस्तुलक्षण-
विभङ्गानुगमं प्रजानाति द.भू.255ख/52 2. विवेकः
– དཔེར་ན་ཆུ་དང་འོ་མ་ལ་སོགས་པ་འདྲེས་པར་གྱུར་པ་
རྣམ་པར་བྱེ་ནས་མི་སྣང་བའི་ཕྱིར་རྣམ་པར་གཞག་པར་
མི་ནུས་པ यथा क्षीरोदकादेर्मिश्रीभूतस्य विवेकेना-
प्रतिभासनान्न घटना शक्यते कर्तुम् त.प.3क/451
3. = རྣམ་པར་བྱེ་བ་ཉིད विभागता – འཇིག་རྟེན་པ་དང་
འཇིག་རྟེན་ལས་འདས་པ་རྣམ་པར་བྱེ་བ་དང लौकिक-
लोकोत्तरविभागतां च द.भू.245क/46; विभक्तिता–
དེ་སའི་ཁམས་ཤིན་ཏུ་ཆུང་བ་ཡང་རབ་ཏུ་ཤེས་སོ॥...སའི་
ཁམས་རྣམ་པར་བྱེ་བ་ཡང་རབ་ཏུ་ཤེས་སོ॥ स पृथिवी-
धातुपरीत्ततां च प्रजानाति...विभक्तितां च प्रजानाति
द.भू.242ख/44; प्रविभक्तिता – དེ་ནི་ལས་དགེ་བ་དང་
མི་དགེ་བ་དང་ལུང་དུ་མ་བསྟན་པ་ཡང་དག་པ་ཇི་ལྟ་བ་
བཞིན་དུ་རབ་ཏུ་ཤེས་ཏེ།...འཕགས་པ་དང་འཇིག་རྟེན་པ་
རྣམ་པར་བྱེ་བ་དང स कर्मणां कुशलाकुशलाव्याकृत-
तां च यथाभूतं प्रजानाति...आर्यलौकिकप्रविभक्तितां

च द.भू.252ख/49 0. विभावनम् – བྱང་ཆུབ་སེམས་
དཔའ་བྱམས་པའི་ལུས་དུ་ཇི་ལྟར་འགྱུར་བ་དེ་བཞིན་དུ...
དྲི་ཞིམ་པོ་རྣམ་པར་བྱེ་བ་དང यथा च मैत्रेयस्य बोधि-
सत्त्वस्य, तथा...विभावनगन्धस्य ग.व्यू.268क/
347; • भू.का.कृ. विभक्तः – གཟུང་འཛིན་རྣམ་བྱེ་བའི།
།མཚན་ཉིད་རྣམ་པར་བསླད་པ་ཅན॥ विभक्तलक्षण-
ग्राह्यग्राहककारविप्लवा। प्र.वा.131क/2.331; ཡན་
ལག་རྣམ་པར་བྱེ་བ विभक्ताङ्गस्य ग.व्यू.268क/347;
སྙིང་རྗེ་ཆེན་པོ་སྔོན་དུ་འགྲོ་བ་ཐབས་མཁས་པས་ཤིན་ཏུ་
རྣམ་པར་བྱེ་བ महाकरुणापूर्वक उपायकौशल्यसुवि-
भक्तः द.भू.245ख/46; ལེགས་པར་གསུངས་པ་དག་
གིས་རྟག་ཏུ་ཡོན་ཏན་དང་ལྡན་པའི་ཆོས་དེ་ཡང་དོན་
རྣམ་པར་བྱེ་བ་བློ་དང་ལྡན་པ་རྣམས་ལ་དགའ་བ་ཁྱད་
པར་ཅན་བསྐྱེད་དེ स धर्मः सुभाषितैः प्रकृत्यैव गुण-
युक्तोऽपि सततं विभक्तार्थस्तुष्टिं विशिष्टां जनयति
बुद्धिमताम् सू.व्या.130क/2; प्रविभक्तः – ཇི་ལྟར་རྣམ་
པར་བྱེ་བ་ཡིན་ཞེ་ན། དངོས་པོ་ཀུན་ལ་ཡི་གེ་བཞིན कथं
प्रविभक्तः ? इत्याह–वर्णवत् सर्वभावेष्विति त.प.
159ख/772; संविभक्तः – སྟུག་པོའི་མུན་པ་དག་དང་
བྲལ། །གསལ་ཞིང་མཐོང་བ་འབྲས་དང་བཅས། །རབ་
དང་ཕྱོགས་ནི་རྣམ་པར་བྱེ། །རབ་ཏུ་གསལ་བ་སྟོན་ཉིད་
བཞིན॥ घनान्धकारविरतिव्यक्तसत्फलदर्शनः। प्र-
सादसंविभक्ताशः प्रकाश इव शारदः॥ अ.क.152ख
/15.8; भिन्नः – དེ་ལྟར་རང་བཞིན་བརྟགས་པ་ལས།
།ལམ་ནི་འདི་གཉིས་རྣམ་པར་བྱེ॥ इति मार्गद्वयं भिन्नं
तत्स्वरूपनिरूपणात्। का.आ.321ख/1.101; विवृतः
– དེ་དག་ཀུན་དེ་ལ་དུས་དུས་སུ་རྣམ་པར་མ་བྱེ་བའི་
གནས་རྣམས་ནི་རྣམ་པར་འབྱེད་པར་མི་བྱེད་ལ། རྣམ་
པར་བྱེ་བའི་གནས་རྣམས་ཀུན་གསལ་བར་མི་བྱེད ते
चास्य न कालेन कालमविवृतानि च स्थानानि वि-

वृण्वन्ति, विवृतानि च स्थानानि विवृण्वन्ति श्रा.भू.60क/148; विपञ्चितः – ལྷག་མ་ནི་བདེ་བླག་པར་སླ་བས་རྣམ་པར་མ་ཕྱེ་བའོ॥ शेषं सुगमत्वान्न विपञ्चितम् अभि.भा.30क/32; विचितः म.व्यु.6838 (97ख).

རྣམ་པར་ཕྱེ་ཞིན་པ भू.का.कृ. विवेचितः – རྣམ་པར་ཕྱེ་ཞིན་པ་ཡང་དངོས་པོ་དེ་ལ་དམིགས་ནས་མི་སྐྱེའོ॥ विवेचितस्य तस्य न पुनस्तद्वस्त्वालम्ब्योत्पत्तिः अभि.स्फु.140क/856.

རྣམ་པར་ཕྱེས་པ विवृतः, धर्मपर्यायः म.व्यु.1305; द्र. རྣམ་པར་ཕྱེ་བ།

རྣམ་པར་ཕྲལ། ०नस विश्लिष्य – དེ་ནས་ངེས་པའི་ཚིག་གི་མཚན་ཉིད་ལས། ཡི་གེ་ཉམས་པ་ཡོད་ཅེས་པས་མ་ཡིག་རྣམ་པར་ཕྲལ་ནས་ཨཱ་ཡིག་དབྱི་བར་བྱའོ॥ ततो निरुक्तिलक्षणे वर्णनाशोऽस्तीति मकारं विश्लिष्य अन्त आकारो लोप्यः वि.प्र.128क/3.56.

རྣམ་པར་འཕེལ • क्रि. जजृम्भे – མི་བདག་གསར་པའི་ངོས་ན་ནི། །གསར་པ་ཉིད་དུ་རྣམ་པར་འཕེལ॥ नवस्य नृपतेः पार्श्वे नवा एव जजृम्भिरे। अ.क.179क/79.40; • = རྣམ་པར་འཕེལ་བ།

རྣམ་པར་འཕེལ་བ •क्रि. विवर्धयति – ལུས་དེ་ལ...མི་གཙང་བའི་རྫས...རྣམ་པར་འཕེལ अस्मिन् काये अशुचिद्रव्याणि विवर्धयन्ति श्रा.भू.30क/76; विवर्धते – རིགས་ཀྱི་བུ་འདི་ལྟ་སྟེ་དཔེར་ན། སྨན་ཆེན་པོའི་རྣམ་པ་རྩ་བ་མ་གྲུབ་པ་ཞེས་བྱ་བ་ཡོད་དེ། དེའི་མཐུས་འཛམ་བུའི་གླིང་གི་ཤིང་ཐམས་ཅད་ཀྱང་ཡན་ལག་ཐམས་ཅད་དུ་རྣམ་པར་འཕེལ་ལོ॥ तद्यथा कुलपुत्र अस्त्यनिर्वृत्तमूला नाम महाभैषज्यजातिः, यस्याः प्रभावेन सर्वजम्बुद्वीपका वृक्षा सर्वा[ङ्गेन] विवर्धन्ते ग.व्यू.312ख/399; སོ་གའི་ཚ་བ་མི་བཟད་དཔལ། །ཇི་ལྟ་ཇི་ལྟར་རྣམ་འཕེལ་བ॥ यथा यथा विवर्धन्ते ग्रीष्मोष्मविषमाः श्रियः। अ.क.92ख/9.74; विवृद्धिं याति – མིག་ནི་གཟུགས་ལས་མཆེད་པར་བྱེད། །རྟོག་པ་དག་ཀྱང་རྣམ་པར་འཕེལ॥ चक्षुषा स्फुरते रूपं विवृद्धिं याति कल्पनात्॥ ल.अ.165ख/118; वर्धते – ཨུཏྤལ་ལ་ཆུ་ནང་ཇི་བཞིན་དུ། །དེ་ནས་མཐར་གྱིས་རྣམ་པར་འཕེལ॥ उत्पलं वारिमध्ये वा सोऽनुपूर्वेण वर्धते। शि.स.151ख/146; •सं. 1. विवृद्धिः – ཆོས་ཀྱི་སྣང་བ་རྣམ་འཕེལ་བའི། །དགའ་བས་རྟག་ཏུ་རྒྱས་པར་འགྱུར॥ धर्मालोकविवृद्ध्या च प्रीत्याऽऽपूर्यते ध्रुवम्॥ सू.अ.227ख/138; དབང་པོ་རྣམ་པར་འཕེལ་བ་ནི་དབང་པོ་འཕོ་བའོ॥ इन्द्रियविवृद्धिरिन्द्रियसञ्चारः अभि.स्फु.142ख/860; विवर्धनम् – བདེན་པ་གསུམ་ལ་དམིགས་པ་རྣམ་པར་འཕེལ་བ་ལ विवर्धन इति त्रिसत्यालम्बने अभि.स्फु.170क/913; अभिवृद्धिः – དེའི་བསོད་ནམས་ཀྱི་ཚོགས་རྣམ་པར་འཕེལ་བར་འདོད་པ तत्पुण्यसंभाराभिवृद्धिकामः जा.मा.18ख/20 2. विजृम्भितम् – དེ་དག་ཐམས་ཅད་གཏོང་ཕོད་དང་ལྡན་མཚུངས་མེད་བསོད་ནམས་གཏེར། །ཁྱོད་ཀྱི་སྦྱིན་པ་བགྲན་མེད་འབྱོར་པའི་རྣམ་པར་འཕེལ་བ་ཡིན॥ सर्वं भवानुपमपुण्यनिधे वदान्य निर्दैन्यदानविभवस्य विजृम्भितं ते अ.क.299ख/39.29 3. = རྣམ་འཕེལ་ཉིད विवर्धनता – བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའི་ས་དང་པོ་ལ... གསུམ་པ་ལ་སྨོན་ལམ་རྣམ་པར་འཕེལ་བ་དང प्रथमायां बोधिसत्त्वभूमौ...तृतीयायां प्रणिधानविवर्धनतया द.भू.231ख/37; •भू.का.कृ. विवृद्धः – ཅིག་ལ་ཅིག་འདུས་དགའ་བ་རྣམ་པར་འཕེལ॥ परस्पराश्लेषविवृद्धहर्षम् जा.मा.201क/233; विवर्धितः – ཐམས་ཅད

མཆེད་པ་ཉིད་དུ་རྩ་བ་བརྟན་པའི་དད་པ་རྣམ་པར་འཕེལ་ལོ॥ मूलजाता श्रद्धा सर्वज्ञतायां विवर्धिता ग.व्यू.172[क]/254; •वि. विसर्पी – རང་གི་མཐུ་ཡིས་རྣམ་འཕེལ་བའི། །དུག་ལ་རྨ་ཡི་ཕྱོགས་བཞིན་ནོ॥ व्रणदेशो विषस्येव स्वसामर्थ्यविसर्पिणः । अभि.स्फु.332[ख]/1234.

རྣམ་པར་འཕེལ་བར་བགྱི •क्रि. विवर्धयिष्यामि लो.को.1410; • कृ. विवर्धयितव्यम् लो.को.1410.

རྣམ་པར་འཕེལ་བར་བགྱིད་འཚལ་བ वि. विवर्धयितुकामः लो.को.1410.

རྣམ་པར་འཕེལ་བར་འགྱུར क्रि. 1. विवर्धते – བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་བརྩོན་འགྲུས་བརྩམས་པའི་ཆོས་ཀྱི་སྣང་བ་རྣམ་པར་འཕེལ་བར་འགྱུར་རོ॥ आरब्धवीर्यस्य बोधिसत्त्वस्य धर्मालोका विवर्धन्ते सू.व्या.228[क]/138 2. विवर्धयिष्यति – སེམས་ཅན་དེ་དག་ཀྱང་བཏུང་བ་དང་བཟའ་བ་རྣམ་པ་སྣ་ཚོགས་དེ་དག་འཚལ་ནས་ཚེ་དང་སྟོབས་དང་ཁ་དོག་དང་དབང་པོ་རྣམ་པར་འཕེལ་བར་འགྱུར་རོ॥ ते च सत्त्वास्तानि पानभोजनानि नानाविधान्युपभुक्त्वा आयुर्बलवर्णेन्द्रियाणि विवर्धयिष्यन्ति सु.प्र.33[ख]/64 3. विवृद्धिं यायात् – རྣམ་པར་མི་རྟོག་པ་ལ་སྤྱོད་པ་བདེ་བའི་ཏིང་ངེ་འཛིན་དང་སྙོམས་པར་འཇུག་པས་གནས་པ་དེ་བཞིན་གཤེགས་པས་ཐུགས་སུ་ཆུད་པའི་ས་ཐོབ་པར་བྱེད་པ་བདག་གིས་ཁོང་དུ་ཆུད་པར་ཡང་རྣམ་པར་འཕེལ་བར་འགྱུར་རོ་སྙམ་མོ॥ अधिगतं च मे निर्विकल्पाचारः सुखसमाधिसमापत्तिविहारस्तथागतगतिभूमिप्रापको विवृद्धिं यायात् ल.अ.60[क]/6.

རྣམ་པར་འཕེལ་བར་བྱེད = རྣམ་པར་འཕེལ་བར་བྱེད་པ།

རྣམ་པར་འཕེལ་བར་བྱེད་པ •क्रि. विवर्धयति – གནས་དང་གནས་མ་ཡིན་པ་ཤེས་པའི་སྟོབས་ཀྱིས་རིགས་ཀུན་ཏུ་བསྟེན་པའི་རྒྱུས་རིམ་གྱིས་རྣམ་པར་དག་པར་བྱེད་ཅིང་རྣམ་པར་འཕེལ་བར་བྱེད་དོ॥ स्थानास्थानज्ञानबलगोत्रमासेवनान्वयात् क्रमेण विशोधयति विवर्धयति च बो.भू.56[क]/73; ཇི་ལྟར...སྲིད་པའི་རྒྱ་མཚོ་ཡོངས་སུ་སྐེམས་ཤིང་སྙིང་རྗེ་ཆེན་པོའི་མཚོ་རྣམ་པར་འཕེལ་བར་བྱེད་པ་དང... མ་འཚལ་ལོ॥ न च जाने कथं... शोषयन्ति तृष्णासागरम्, विवर्धयन्ति महाकरुणातोयम् ग.व्यू.328[ख]/51; विवर्धयते – དེ་ཕྱིར་རྒྱལ་བའི་བསྟན་ལ་དེ་གུས་པས། །རང་གཞན་དགེ་བའི་ཡོན་ཏན་རྣམ་འཕེལ་བྱེད॥ ततश्च ते तज्जिनशासनादराद् विवर्धयन्ते स्वपरं गुणैः शुभैः ॥ सू.अ.152[क]/36; •सं. विवर्धनम् – རིགས་ཀྱི་བུ་ཁོ་མོ་རྣམ་པར་ཐར་པ་འདི་དང་ལྡན་པས... སེམས་ཅན་ཐམས་ཅད་ཀྱི་དགའ་བའི་ཤུགས་ཆེན་པོ་རྣམ་པར་འཕེལ་བར་བྱེད་པའི་ཁ་དོག་དང अहं कुलपुत्र अनेन विमोक्षेण समन्वागता...सर्वसत्त्वमहाप्रीतिवेगविवर्धनवर्णा ग.व्यू.186[क]/270; •वि. विवर्धकः – ཐམས་ཅད་ཀྱི་སྒོ་ནས་བརྩོན་འགྲུས ...ཤེས་རབ་རྣམ་པར་འཕེལ་བར་བྱེད་པའོ॥ सर्वतोमुखं वीर्यम्... ज्ञानविवर्धकञ्च बो.भू.108[ख]/139.

རྣམ་པར་འཕྲུང་མ ना. विलम्बा, राक्षसी – དེ་ནས་སྲིན་མོ་འཕྲུང་མ་ཞེས་བྱ་བ་དང་སྲིན་མོ་རྣམ་པར་འཕྲུང་མ་ཞེས་བྱ་བ་དང अथ खलु लम्बा च नाम राक्षसी, विलम्बा च नाम राक्षसी स.पु.148[क]/234.

རྣམ་པར་འཕྲུལ་པ = རྣམ་འཕྲུལ།

རྣམ་པར་འཕྲུལ་བ = རྣམ་འཕྲུལ།

རྣམ་པར་འཕྲུལ་བ་ཕྲ་བ་ལ་འཇུག་པའི་ཡེ་ཤེས पा. विकुर्वणसूक्ष्मप्रवेशज्ञानम्, सूक्ष्मप्रवेशज्ञानविशेषः – ཡང་དག་པར་རྫོགས་པའི་སངས་རྒྱས་རྣམས་ཀྱི་ཕྲ་བ་ལ

འཇུག་པའི་ཡེ་ཤེས་འདི་ལྟ་སྟེ། སྤྱོད་པ་ཕྲ་བ་ལ་འཇུག་པའི་ཡེ་ཤེས་སམ...རྣམ་པར་འཕྲུལ་པ་ཕྲ་བ་ལ་འཇུག་པའི་ཡེ་ཤེས་སམ इमानि... सम्यक्संबुद्धानां सूक्ष्मप्रवेशज्ञानानि यदुत चर्यासूक्ष्मप्रवेशज्ञानं वा...विकुर्वणसूक्ष्मप्रवेशज्ञानं वा द.भू.266क/58.

རྣམ་པར་འཕྲུལ་པའི་རྒྱལ་པོ *ना.* विकुर्वणराजः, बोधिसत्त्वः – འཕགས་པ་རྣམ་པར་འཕྲུལ་པའི་རྒྱལ་པོས་ཞུས་པ་ཞེས་བྱ་བ་ཐེག་པ་ཆེན་པོའི་མདོ आर्यविकुर्वाणराजपरिपृच्छानाममहायानसूत्रम् क.त.167.

རྣམ་པར་འཕྲུལ་པའི་སྟོབས *पा.* विकुर्वणबलम्, बोधिसत्त्वबलविशेषः – བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའི་སྟོབས་བཅུ། བསམ་པའི་སྟོབས...རྣམ་པར་འཕྲུལ་པའི་སྟོབས दश बोधिसत्त्वबलानि – आशयबलम्... विकुर्वणबलम् म.व्यु.767 (17ख).

རྣམ་པར་འཕྲུལ་པའི་འོད *ना.* विकुर्वितप्रभः, बोधिसत्त्वः – འདི་ལྟ་སྟེ། བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་སེམས་དཔའ་ཆེན་པོ་ཤེས་པ་དམ་པའི་ཡེ་ཤེས་དང...རྣམ་པར་འཕྲུལ་པའི་འོད་དང यदुत ज्ञानोत्तरज्ञानिना च बोधिसत्त्वेन महासत्त्वेन...विकुर्वितप्रभेण च ग.व्यू.275ख/2.

རྣམ་པར་འཕྲོ = རྣམ་པར་འཕྲོ་བ།

རྣམ་པར་འཕྲོ་བ • *क्रि.* विसरति – སེམས་ཕྱི་རོལ་ཏུ་རྣམ་པར་གཡེང་ཞིང་རྣམ་པར་འཕྲོ་ལ་མཉམ་པར་མི་འཇོག་ཅིང बहिश्चित्तं विक्षिप्यते, विसरति, न समाधीयते र.व्या.114क/76; • *सं.* विसारः – གཡེང་བ་ནི་སྡུག་པའི་མཚན་མའི་རྗེས་སུ་འབྲང་བའི་སྒོ་ནས་ཡུལ་རྣམས་ལ་རྣམ་པར་འཕྲོ་བའོ།། विक्षेपः शुभनिमित्तानुसारमुखेन विषयेषु विसारः अभि.स.भा.64क/88; རྣམ་པར་གཡེང་བ་ནི་འདོད་ཆགས་དང་ཞེ་སྡང་དང་གཏི་མུག་གི་ཆར་གཏོགས་པ་སེམས་རྣམ་པར་འཕྲོ་བའོ།། विक्षेपो रागद्वेषमोहांशिकश्चेतसो विसारः त्रि.भा.161ख/71; विस्फारः – རིང་པོ་ཉིད་ནས་དོ་ཤལ་འོད་ཟེར་རབ་གསལ་རྣམ་འཕྲོ་ཆགས་གྱུར་པ། ... དེ་ནི་རྒྱལ་པོས་ཤེས་གྱུར་ནས།། दूरादेव स्फुटतरकरासक्तविस्फारहारम्... तं परिज्ञाय राजा। अ.क.33ख/53.56; • *वि.* विसारी – གང་ཡང་དྲི་མེད་བསོད་ནམས་སྣང་བ་ཕྱོགས་མཐར་རྣམ་པར་འཕྲོ་བ་ཡིས།། किमपि विमलैः पुण्यालोकैर्दिगन्तविसारिभिः अ.क.53क/5.74.

རྣམ་པར་འཕྲོས = རྣམ་པར་འཕྲོས་པ།

རྣམ་པར་འཕྲོས་པ *भू.का.कृ.* अनुविसृतः – རྣམ་པར་འཕྲོས་པ་ཞེས་བྱ་བ་ནི་རྗེས་སུ་གཡེངས་པ་ཞེས་བྱ་བ་འདིའི་བཤད་པ་ཡིན་ནོ།། अनुविक्षिप्तमित्यस्य निर्देशं करोति – अनुविसृतमिति अभि.स्फु.247क/1050; विसृष्टः – རྣམ་པར་གཡེངས་པ་ནི་ཡུལ་རྣམས་ལ་རྣམ་པར་འཕྲོས་པ་གང་ཡིན་པ་དེ་ཁོ་ན་ཡིན་ནོ།། यत्तु विषयेषु विसृष्टं तदेव विक्षिप्तम् अभि.स्फु.247क/1050.

རྣམ་པར་བམ་པ *पा.* व्याध्मातकम्, अशुभताभेदः – དེ་ལ་ཕྱི་རོལ་ལ་བརྟེན་པའི་མི་གཙང་བའི་མི་སྡུག་པ་ཉིད་གང་ཞེ་ན། འདི་ལྟ་སྟེ། རྣམ་པར་བསྔོས་པ་དང...རྣམ་པར་བམ་པ་དང तत्र बहिर्धा चोपादाय अशुभता कतमा? तद्यथा–विनीलकं वा...व्याध्मातकं वा श्रा.भू.79ख/203; ཤི་ནས་ཞག་བདུན་ལོན་པ་འབུ་ཞུགས་ཤིང་བམ་པ་ལ་ནི། རྣམ་པར་འབུས་གཞིག་པ་དང་རྣམ་པར་བམ་པར་མོས་པར་བྱེད་དོ།། सप्ताहमृतं संजातकृमि आध्मातं च विमद्रामकं [? विपुण्ड्रात्मकं] व्याध्मातकमित्यधिमुच्यते श्रा.भू.136क/372; དེས་ནི་དུར་ཁྲོད་འགྲོ་བར་གྱིས།...།དེ་ནས་རྣམ་པར་བམ་རུས་པའི། །རུས་གོང་ལ་སོགས་བལྟ་བར་གྱིས།། गच्छेदसौ शिविपथिकां...

ततो व्याध्मातकं पश्येदस्थिशङ्कलिकामपि ॥ अभि.स्फु.162[क]/896; त्रि.भा.170[ख]/97.

རྣམ་པར་བམ་པའི་འདུ་ཤེས *पा.* व्याध्मातकसंज्ञा, अशुभभावनाविशेषः म.व्यु.1159 (24[ख]).

རྣམ་པར་བྱང = རྣམ་པར་བྱང་བ།

རྣམ་པར་བྱང་བ •*क्रि.* व्यवदायते–གང་ལ་ཀུན་ནས་ཉོན་མོངས་པ་དང་རྣམ་པར་བྱང་བ་ཞེས་བྱ་བ་ནི་དབང་པོ་དང་བཅས་པའི་ལུས་ལའོ॥ यत्र संक्लिश्यते व्यवदायते चेति सेन्द्रिये काये अभि.स.भा.14[ख]/19; विशुध्यति – ཇི་ལྟར་སེམས་ནི་ཀུན་ཉོན་མོངས། །ཇི་ལྟར་སེམས་ནི་རྣམ་བྱང་དང་॥ यथासंक्लिश्यते चित्तं यथा चित्तं विशुध्यति ॥ अभि.भा.86[ख]/1202; •*सं.* व्यवदानम् – རབ་ཀྱི་རྩལ་གྱིས་རྣམ་པར་གནོན་པ་ཤེས་རབ་ཀྱི་ཕ་རོལ་ཏུ་ཕྱིན་པ་འདི་ནི་ཆོས་གང་འབྲི་བའི་ཕྱིར་རམ་འཕེལ་བའི་ཕྱིར་ཉེ་བར་གནས་པ་མ་ཡིན་ནོ॥ ཆོས་གང་འདུ་བའི་ཕྱིར་རམ...རྣམ་པར་བྱང་བའི་ཕྱིར་རམ...རབ་ཏུ་མ་རྟོགས་པའི་ཕྱིར་ཉེ་བར་གནས་པ་མ་ཡིན་ནོ॥ न खलु पुनरियं सुविक्रान्तविक्रामिन् प्रज्ञापारमिता कस्यचिद्धर्मस्य हानाय वा विवृद्धये वा प्रत्युपस्थिता, नापि कस्यचिद्धर्मस्य संयोगाय...व्यवदानाय वा...अप्रतिवेधाय वा प्रत्युपस्थिता सु.प.46[ख]/24; ཁུར་དང་ཁུར་ཁྱེར་བ་ནི་ཀུན་ནས་ཉོན་མོངས་པའོ॥ ཁུར་འདོར་བ་ནི་རྣམ་པར་བྱང་བའོ॥ भारो भारादानं च संक्लेशः। भारनिक्षेपणं व्यवदानम् सू.व्या.239[ख]/152; ཉོན་མོངས་རྣམ་བྱང་དངོས་པོ་རྣམས། །སྐྲ་ཤད་འཛིངས་པ་ལྟ་བུ་སྟེ། །གནས་དང་འཇིག་དང་སྐྱེ་དང་བྲལ། །རྟག་དང་མི་རྟག་སྤངས་པའོ॥ स्थितिभङ्गोत्पत्तिरहिता नित्यानित्यविवर्जिताः। संक्लेशव्यवदानाख्या भावा केशोण्डुकोपमाः ॥ ल.अ.162[क]/112; •*वि.* व्यावदानिकः – ཀུན་ནས་ཉོན་མོངས་པ་དང་རྣམ་པར་བྱང་བའི་ཕྱོགས་རབ་ཏུ་བསྟན་པའི་ཕྱིར सांक्लेशिकव्यावदानिकपक्षप्रदर्शनार्थम् अभि.स्फु.9[ख]/16; वैयवदानिकः – ཆོས་ལ་ཡོངས་སུ་བརྟགས་པས་ཀུན་ནས་ཉོན་མོངས་པ་དང་རྣམ་པར་བྱང་བའི་ཆོས་ལ་རྨོངས་པ་མེད་པའི་ཕྱིར་ལམ་གྱི་བདེན་པ་ལ་འཇུག་གོ॥ धर्मपरीक्षया सांक्लेशिकवैयवदानिकधर्माऽसम्मोहान्मार्गसत्यमवतरति म.भा.16[क]/4.1.

རྣམ་པར་བྱང་བ་མ་ཡིན་པ 1. अव्यवदानम् – ཤེས་རབ་ཀྱི་ཕ་རོལ་ཏུ་ཕྱིན་པ་ནི་གཉིས་སུ་ལྟ་བར་མི་བྱ། གཉིས་མ་ཡིན་པར་ཡང་མ་ཡིན...རྣམ་པར་བྱང་བར་མ་ཡིན། རྣམ་པར་བྱང་བ་མ་ཡིན་པར་ཡང་མ་ཡིན प्रज्ञापारमिता न द्वयेन द्रष्टव्या न अद्वयेन...न व्यवदानतो न अव्यवदानतः कौ.प्र.142[ख]/95 2. अव्यवदानता – གཟུགས་དང་ཚོར་བ་དང་འདུ་ཤེས་དང་འདུ་བྱེད་རྣམས་དང་རྣམ་པར་ཤེས་པ་ཀུན་ནས་ཉོན་མོངས་པ་མ་ཡིན། རྣམ་པར་བྱང་བ་ཡང་མ་ཡིན་པ་[གང་ཡིན་པ་] དེ་ཤེས་རབ་ཀྱི་ཕ་རོལ་ཏུ་ཕྱིན་པ་ཞེས་བྱའོ॥ या च रूपवेदनासंज्ञासंस्कारविज्ञानानामसंक्लेशता अव्यवदानता, इयमुच्यते प्रज्ञापारमिता सु.प.38[ख]/17.

རྣམ་པར་བྱང་བའི་ཆོས वैयवदानिकधर्मः – ཆོས་ལ་ཡོངས་སུ་བརྟགས་པས་ཀུན་ནས་ཉོན་མོངས་པ་དང་རྣམ་པར་བྱང་བའི་ཆོས་ལ་རྨོངས་པ་མེད་པའི་ཕྱིར་ལམ་གྱི་བདེན་པ་ལ་འཇུག་གོ॥ धर्मपरीक्षया सांक्लेशिकवैयवदानिकधर्माऽसम्मोहान्मार्गसत्यमवतरति म.भा.16[क]/4.1; རྣམ་པར་བྱང་བའི་ཆོས་རྣམས་ཀྱི་ཕན་ཡོན वैयवदानिकधर्मानुशंसा लो.को.1411.

རྣམ་པར་བྱང་བར་འགྱུར *क्रि.* व्यवदायते – རྣམ་པར་བྱང་བར་མི་འགྱུར न व्यवदायन्ते शि.स.146[क]/140;

व्यवदानाय संवर्तते – ལྟ་བ་དེ་ནི་ཀུན་ཏུ་འདོད་ཆགས་པ་མེད་པར་འགྱུར་གྱི་ཀུན་ཏུ་འདོད་ཆགས་པར་མི་འགྱུར་རོ།། ...རྣམ་པར་བྱང་བར་འགྱུར་གྱི་ཀུན་ནས་ཉོན་མོངས་པར་མི་འགྱུར་རོ།། इयं दृष्टिः असंरागाय संवर्तते न संरागाय...व्यवदानाय, न संक्लेशाय अ.श.279ख/256.

རྣམ་པར་བྱང་བར་འགྱུར་བ་མ་ཡིན *क्रि.* न व्यवदायते– རབ་ཀྱི་རྩལ་གྱིས་རྣམ་པར་གནོན་པ་གཟུགས་ནི་ཀུན་ནས་ཉོན་མོངས་པར་འགྱུར་བའམ་རྣམ་པར་བྱང་བར་འགྱུར་བ་མ་ཡིན་ནོ།། न हि सुविक्रान्तविक्रामिन् रूपं संक्लिश्यते वा व्यवदायते वा सु.प.38ख/17.

རྣམ་པར་བྱང་བར་མི་འགྱུར *क्रि.* न व्यवदायते – འདིའི་འཕགས་པའི་ཆོས་རྣམས་རྣམ་པར་བྱང་བར་མི་འགྱུར་རོ།། आर्यधर्मा अस्य न व्यवदायन्ते अभि.भा.86ख/1203; བཅོམ་ལྡན་འདས་ཆོས་འདི་དག་ནི་[སྐྱེ་བར་ཡང་མི་འགྱུར་]ཀུན་ནས་ཉོན་མོངས་པར་ཡང་མི་འགྱུར་རྣམ་པར་བྱང་བར་ཡང་མི་འགྱུར་རོ།། नैते भगवन् धर्मा उद्विजन्ते, न संक्लिश्यन्ते, न व्यवदायन्ते शि.स.146क/140.

རྣམ་པར་བྱུང = རྣམ་པར་བྱུང་བ།

རྣམ་པར་བྱུང་བ *भू.का.कृ.* विनिःसृतः – འདི་ནི་ཕྱག་རྒྱ་རབ་མཆོག་སྟེ། །ཆོས་ཀྱི་དབྱིངས་ལས་རྣམ་པར་བྱུང་།། एतन्मुद्रवरं श्रेष्ठं धर्मधातुविनिःसृतम् ॥ म.मू.254क/291; विनिर्गतः – ས་བཅུ་ལས་ནི་རྣམ་བྱུང་བ། །སྒྱུ་མ་ལྟ་བུའི་ཏིང་འཛིན་དང་།། मायोपमं समाधिं च दशभूमिविनिर्गतम्। ल.अ.159ख/108.

རྣམ་པར་བྱེད = རྣམ་པར་བྱེད་པ།

རྣམ་པར་བྱེད་པ = རྣམ་བྱེད • *क्रि.* आकारं करोति–ཡང་དང་ཡང་དུ་སེམས་ཅན་སྦྱོར་བ་ནི་བསྡུས་ནས་གཅིག་གི་རྣམ་པར་བྱེད་པའོ།། पुनः पुनः सत्त्वान् सङ्गतान् संहृतानेकाकारान् करोमि ख.टी.162क/244; • *सं.* = ཚངས་པ विधाता, ब्रह्मा – ब्रह्मात्मभूः सुरज्येष्ठः परमेष्ठी पितामहः ।...विधाता अ.को.1.1.17; विधत्त इति विधाता अ.वि.1.1.17; • *पा.* आकारकरः, समाधिविशेषः – རིགས་ཀྱི་བུ་འདི་ལྟ་སྟེ། རྣམ་པར་བྱེད་ཅེས་བྱ་བའི་ཏིང་ངེ་འཛིན་དང...འདུལ་བ་ཞེས་བྱ་བའི་ཏིང་ངེ་འཛིན་དང तद्यथापि नाम कुलपुत्र आकारकरो नाम समाधिः...दमनो नाम समाधिः का.व्यू.222क/284.

རྣམ་པར་བྲལ = རྣམ་པར་བྲལ་བ།

རྣམ་པར་བྲལ་བ • *क्रि.* विगच्छति लो.को.1411; • *सं.* विप्रयोगः – བརྟན་པ་འདི་ཅི་རྨོངས་འདི་ཅི་ཞིག་འཚོ་བ་ཉིད་ནི་ཅི། །སྲོག་དང་ལྡན་ཅིག་རྣམ་པར་བྲལ་བ་ཅི་ཡིན་ཡོངས་[? ཡོང་]མི་ཤེས།། नो वेद्मि किं धृतिरियं किमयं विमोहः किं जीवितं किमसुभिः सह विप्रयोगः ॥ अ.क.359क/48.23; विसंयोजनम् लो.को.1411; • *भू.का.कृ.* विगतः – རྡུལ་དང་རྣམ་པར་བྲལ་བ་ཞེས་བྱ་བའི་ཏིང་ངེ་འཛིན विगतरजो नाम समाधिः अ.सा.430ख/243; བདག་མེད་ལྟ་དང་རྣམ་བྲལ་དྲི་མ་མེད།...ཆོས་ཚུལ नैरात्म्यं दृष्टिविगतं ह्यमलम् ।...धर्मनयम् ॥ ल.अ.56ख/1; व्यपगतः – རང་སེམས་དྲི་མ་རྣམ་པར་བྲལ་བ་སྟེ་བརྟགས་པ་དང་བྲལ་བ་དག་ནི་དཀྱིལ་འཁོར་གྱི་དབང་པོར་བྱའོ།། स्वचित्तं व्यपगतकलुषं कल्पनारहितं मण्डलेशं कुर्यात् वि.प्र.46क/4.48; སྡིག་པ་རྣམ་བྲལ་བྱང་ཆུབ་སྤྱོད་ལ་རྗེས་སུ་གནས་པའི་སྔགས་པ व्यपगतकलुषो बोधिचर्यानुरूढो मन्त्री वि.प्र.31ख/4.5; विरहितः – ནམ་མཁའི་ཁམས...ཡུལ་དང་རྣམ

པར་བྲལ་བ་དབུས་ཀྱི་ས་ལ་ཀུན་གཞི་རྣམ་པར་ཤེས་པ་གཞག་པར་བྱའོ॥ आकाशधातौ... विषयविरहिते स्थापयेद् मध्यभूमौ आलयविज्ञानम् वि.प्र.32ख/4.7; དམ་ཚིག་རྣམ་བྲལ समयविरहितः वि.प्र.90ख/3.3; विवर्जितः – ངག་འཆལ་དང་ནི་འཚེ་སོགས་པའི། །སྨད་པའི་དོན་དང་རྣམ་པར་བྲལ॥ सम्भिन्नालापहिंसादिकुत्सितार्थविवर्जिताः त.स.131ख/1119; विसंयुक्तः – གཟུང་བ་དང་འཛིན་པ་དང་རྣམ་པར་བྲལ་བ ग्राह्यग्राहकविसंयुक्तम् ल.अ.71क/19; विनिर्मुक्तः – སྤྲིན་དང་རྣམ་པར་བྲལ་བ་ཡི། །རྒྱུ་སྐར་བདག་པོའི་གཟུགས་བཞིན་ནོ॥ मेघविनिर्मुक्तं बिम्बं तारापतेरिव अ.क.189क/80.97; རྣལ་འབྱོར་ཉེས་དང་རྣམ་བྲལ་བ། །སོ་སོ་རང་རིག་སེམས་པ་ཡི॥ राग[? योग] दोषविनिर्मुक्ताः प्रत्यात्मगतिचिन्तकाः। ल.अ.57क/2; विनिवृत्तः – རྟོག་གེའི་ལྟ་བ་ལ་ལྟད་མོ་དང་རྣམ་པར་བྲལ་བས་མཚན་ཉིད་ལ་འདྲིས་པའི་ཕྱིར लक्षणपरिचयात्...तर्कदृष्टिविनिवृत्तकौतुकः ल.अ.145ख/92; विप्रमुक्तः लो.को.1419; विहीनः – གཉིས་ཀའི་དོན་དང་རྣམ་བྲལ་བས॥ उभयार्थविहीनत्वात् *45क/115; रहितः – སེང་གེ་དག་ཀྱང་འགྲོག་ན་གནས་ཤིང་ཡུལ་དང་རྣམ་བྲལ་འཇིགས་པ་མེད་ལ सिंहश्चैकान्तवासी विषयविरहितो निर्भयः वि.प्र.165ख/3.142.

རྣམ་པར་བྲལ་བར་བྱེད་པ विसंयोजनम् – བདག་གི་སེམས་སྣང་བའི་སྤྱོད་ཡུལ་དང་རྣམ་པར་བྲལ་བར་བྱེད་པ ...ཆོས་ཀྱི་སྐུ་དེ་བཞིན་གཤེགས་པས་རྗེས་སུ་གསུངས་པ་བཤད་དུ་གསོལ स्वचित्तदृश्यगोचरविसंयोजनं...धर्मकायं तथागतानुगीतं प्रभाषस्व ल.अ.72क/20.

རྣམ་པར་བྲིས *भू.का.कृ.* विचित्रितः – སངས་རྒྱས་བཅོམ་ལྡན་འདས་རྣམས་ལ་ཡོངས་སུ་དྲིས་སོ॥ ཡོངས་སུ་ཞུས་སོ॥ ...རྣམ་པར་བྲིས་སོ॥ རྒྱ་ཆེར་བྱས་སོ॥ बुद्धानां भगवतामन्तिकात् परिपृष्टा परिप्रश्नीकृता...विचित्रिता विपुलीकृता ग.व्यू.31क/127.

རྣམ་པར་སྦྲོས་པ विद्रवः मि.को.50क।

རྣམ་པར་དབེན་པ = རྣམ་དབེན།

རྣམ་པར་དབྱེ • *क्रि.* भेदयेत् – ཕྱག་རྒྱ་ཕྱག་རྒྱའི་ལན་གྱིས་ནི། །དམ་ཚིག་གིས་ནི་རྣམ་པར་དབྱེ॥ मुद्राप्रतिमुद्रेण भेदयेत् समयेन तु॥ हे.त.8क/22; • = རྣམ་པར་དབྱེ་བ།

རྣམ་པར་དབྱེ་བ • *सं.* 1. विभागः – སྒྲུབ་པ་རྣམ་པར་དབྱེ་བ་ལ་ཚིགས་སུ་བཅད་པ་དྲུག་སྟེ प्रतिपत्तिविभागे षट् श्लोकाः सू.व्या.186ख/83; སྟོན་[རྟོན་]པ་རྣམ་པར་དབྱེ་བའི་ཚིགས་སུ་བཅད་པ་རྣམ་པ་གསུམ प्रतिसरणविभागे त्रयः श्लोकाः सू.व्या.223ख/133; དེས་ན་དུས་ཀྱི་རྣམ་དབྱེ་འདི། །དེ་ཡི་དབང་གིས་རྟོག་མི་འགྱུར॥ ततश्चाध्वविभागोऽयं तद्वशान्न प्रकल्प्यते। त.स.65ख/619; དེའི་ལམ་ཡང་བགྲོད་པ་འགྲོ་བའི་རྣམ་པར་དབྱེ་བས་སོ॥ अयनगतिविभागेन मार्गश्च तस्य वि.प्र.188क/1.50; ལྡན་པ་དང་ནི་རྣམ་དབྱེ་བ། །ཐ་དད་པ་ཅན་སྔར་སྨྲངས་ཟིན॥ व्यस्ताः पूर्वं च संयोगविभागव्यतिरेकिणः। त.स.92क/833; प्रविभागः – ཡི་གེ་རྣམས་ཀྱི་གོ་རིམས་དང་། །ཐུང་དང་རིང་དང་ཆེས་རིང་དང་། །སྒྲ་ཙམ་ཁྱད་པར་ཅན་དུས་ཀྱི། །རྣམ་དབྱེར་དེ་དག་ཤེས་པར་འགྱུར॥ आनुपूर्वी च वर्णानां ह्रस्वदीर्घप्लुताश्च ये। कालस्य प्रविभागास्ते ज्ञायन्ते ध्वन्युपाधयः॥ त.स.83ख/771 2. विभेदः – རྡོ་རྗེའི་ཚིག་རྣམ་པར་དབྱེ་བ་ཞེས་བྱ་བ वज्रपदविभेदनाम क.त.1987; विवेकः – དངོས་པོ་ཀུན་ལ་ཆོས་དང་ནི། །ཆོས་ཅན་རྣམ་དབྱེ་མེད་པའི་ཕྱིར॥ धर्मधर्मिविवेकस्य सर्व-

भावेष्वसिद्धितः । प्र.वा.146ख/4.181; प्र.अ.9ख/11; **विभक्तिः** – དེ་ལྟར་ན་ཐ་དད་པར་འབྱེད་པའི་རྣམ་པར་དབྱེ་བ་ཡང་མི་སྲིད་པར་འགྱུར་ཏེ། དེ་ནི་ཐ་དད་པ་ལ་བརྟེན་པའི་ཕྱིར་རོ།། तथा च व्यतिरेकिण्या विभक्तेरयोगः, तस्या भेदाश्रयत्वात् प्र.वृ.279क/21; **व्यतिरेकः** – མངོན་ཤེས་དང་། །ཡེ་ཤེས་དྲི་མེད་དེ་ཉིད་དང་། །རྣམ་དབྱེ་མེད་ཕྱིར་མར་མེ་ཡི། །སྣང་ལ་དྲོ་མདོག་ཚོས་མཚུངས་ཅན།། अभिज्ञाज्ञानवैमल्यतथताऽव्यतिरेकतः। दीपालोकोष्णवर्णस्य साधर्म्यम् र.वि.95क/38; **विभाजनम्** – བུ་མོ་ཁྱོད་ཀྱིས་སེམས་ཅན་རྣམས་ཀྱི་བསམ་པ་ཇི་ལྟ་བ་བཞིན་དུ་ཆོས་རིན་པོ་ཆེ་རྣམ་པར་དབྱེ་བའི་ཕྱིར་རྣམ་པར་དབྱེ་བའི་སེམས་བསྐྱེད་ཅིག विभाजनचित्तं च ते दारिके उत्पादयितव्यं यथाशयसर्वसत्त्वधर्मरत्नसंविभजनाय ग.व्यू.40क/134; **विभजनम्** म.व्यु.5174; **संविभजनम्** – བུ་མོ་ཁྱོད་ཀྱིས་སེམས་ཅན་རྣམས་ཀྱི་བསམ་པ་ཇི་ལྟ་བ་བཞིན་དུ་ཆོས་རིན་པོ་ཆེ་རྣམ་པར་དབྱེ་བའི་ཕྱིར་རྣམ་པར་དབྱེ་བའི་སེམས་བསྐྱེད་ཅིག विभाजनचित्तं च ते दारिके उत्पादयितव्यं यथाशयसर्वसत्त्वधर्मरत्नसंविभजनाय ग.व्यू.40क/134 **3. विप्रयोगः** – དེ་ཡི་རང་གི་ཡན་ལག་ནི། །བརྟན་པའི་རླུང་དང་ལྡན་ཅིག་ཏུ། །འགྲོ་ཞིང་ལྡན་དང་རྣམ་དབྱེ་བ། །ངེས་པར་སྐྱེད་པར་འགྱུར་བ་ཡིན།། तस्यात्मावयवानां च स्तिमितेन च वायुना। संयोगा विप्रयोगाश्च जायन्ते गमनाद् ध्रुवम्॥ त.स.79ख/737 **4. विभङ्गः** – རྣམ་དབྱེ་རྣམ་གསུམ་ཤེས་པར་བྱ། །ཕུན་སུམ་ཚོགས་པ་རྣམ་བཅུར་འགྱུར།། विभङ्गस्त्रिविधो ज्ञेयः सम्पद् दशविधा भवेत्। श्रा.भू.25ख/63; དེ་དག་གི་རྣམ་པར་དབྱེ་བ་ནི་མདོ་ལས་ཇི་སྐད་འབྱུང་བ་ཁོ་ན་བཞིན་དུ་བལྟ་བར་བྱའོ།། विभङ्गा एषां यथासूत्रमेव वेदितव्याः बो.भू.15ख/17; श्रा.भू.18क/42 **5. विचयः** – རིགས་ཀྱི་བུ་ཁྱོད་ཀྱིས...སེམས་ཀྱི་གྲོང་ཁྱེར་རྣམ་པར་དབྱེ་བའི་ཚུལ་ལ་མཁས་པར་བྱིས་ཤིག चित्तनगरविचयविधिज्ञेन ते कुलपुत्र भवितव्यम् ग.व्यू.257ख/340; ཡེ་ཤེས་ཀྱི་རྣམ་པར་དབྱེ་བ་ཤིན་ཏུ་བྱ་བས་མཐར་ཕྱིན་པའི་ས་ཞེས་བྱའོ།། परिनिष्ठितभूमिरित्युच्यते सुकृतज्ञानविचयत्वात् द.भू.246ख/47; **विवेचनम्** – དོན་དབྱེ་བའི་ཕྱིར...དོན་རྣམ་པར་དབྱེ་བའི་རྒྱུར་ཞེས་བྱ་བའི་ཐ་ཚིག་གོ།། अर्थविवेचने... अर्थविवेचननिमित्तमित्यर्थः म.टी.191क/5 **6.** = རྣམ་དབྱེ་ཉིད **विवेकिता** – གལ་ཏེ་གཞན་གྱིས་དམིགས་མེད་ན། །གཉིས་པོ་རྣམ་དབྱེ་མེད་པར་འགྱུར།། अन्यैरनुपलब्धश्चेद् द्वयोर्नास्ति विवेकिता॥ प्र.अ.106ख/114; **विभेदिता** – གཟུགས་སོགས་རྣམས་དང་བུམ་པ་ཞེས། །གྲངས་དང་མིང་གི་རྣམ་དབྱེ་དང་།། रूपादयो घटश्चेति संख्यासंज्ञाविभेदिता। त.स.13क/151 **7.** = གསལ་བའི་དབྱེ་བ **प्रकारभेदः, व्यक्तिभेदः** – འོ་ན་རྗེས་སུ་དཔག་པའི་མཚན་ཉིད་བརྗོད་པར་བྱ་བ་ལ་རྣམ་པར་དབྱེ་བ་སྨོས་པར་ཅིའི་ཕྱིར་བརྗོད་ཅེ་ན अथानुमानलक्षणे वक्तव्ये किमकस्मात् प्रकारभेदः कथ्यते न्या.टी.46ख/87;

• *पा.* **1. विभज्यम्, व्याकरणभेदः** – ལུང་བསྟན་པ་ནི་རྣམ་བཞི་སྟེ། །མགོ་གཅིག་དང་ནི་དྲི་བ་དང་། །རྣམ་པར་དབྱེ་དང་གཞག་པ་རྣམས།། चतुर्विधं व्याकरणमेकांशं परिपृच्छनम्। विभज्यं स्थापनीयं च ल.अ. 101ख/48; (द्र. རྣམ་པར་ཕྱེ་སྟེ་ལུང་བསྟན་པ) **2. विभक्तिः** – རྣམ་པར་དབྱེ་བས་ནི་དུས་ཀྱི་ཁྱད་པར་བརྗོད་པ་མ་ཡིན་ཏེ། བྱེད་པ་པོ་ཙམ་ཞིག་སྟོན་པར་ནུས་པའི་ཕྱིར་རོ།། न खलु विभक्तयः कालविशेषविधायिन्यः कारकत्वमात्रप्रतिपादने सामर्थ्यात् प्र.अ.60ख/68;

• *भू.का.कृ.* **विभक्तः** – ངེས་ན་མཆོད་རྟེན་གྱི་ཕྱི་རོལ་རྒྱུ་སྐར་གྱི་རྣམ་པར་དབྱེ་བས་མཆོད་རྟེན་གྱི་ནང་གི་དཀྱིལ

འཁོར་ནི तेन चैत्यबाह्ये नक्षत्रविभक्तेन चैत्यगर्भमण्डलम् वि.प्र.93ख/3.5; ཡིད་ལ་བྱེད་པ་ནི་རྣམ་པ་བཅོ་བརྒྱད་དེ... རྟེན་རྣམ་པར་དབྱེ་བ་དང अष्टादशविधो मनस्कारः...आश्रयविभक्तः सू.व्या.166क/57; प्रविभक्तः – གལ་ཏེ་ཡང་འདི་དངོས་པོ་ཐམས་ཅད་ལ་ཁྱབ་པ་ཡིན་པ། དེ་ལྟ་ན་ཡང་གང་གི་ཚེ་བྱས་པའི་ཁྱད་པར་འགའ་ཞིག་གིས་དངོས་པོ་འགའ་ཞིག་ལ་གསལ་བར་བྱེད་པ། དེའི་ཚེ་རྣམ་པར་དབྱེ་བ་འཛིན་པ་ཡིན་ལ यद्यपि चासौ सर्वपदार्थव्यापी, तथापि यदा केनचित् क्रियाविशेषेण क्वचित् पदार्थे व्यज्यते, तदा प्रविभक्तो गृह्यते त.प.159ख/772; •कृ. विभाज्यम् – གཏན་ཚིགས་རྣམ་པར་དབྱེ་བ་ལས་བརྩམས་ཏེ་ཚིགས་སུ་བཅད་པ कारणविभाज्यमारभ्य श्लोकः सू.व्या.130ख/3.

རྣམ་པར་དབྱེ་བར विवेचयितुम् – མཚུངས་པར་ལྡན་པ་ལས་ནི་ཉོན་མོངས་པ་རྣམ་པར་དབྱེ་བར་མི་ནུས་སོ॥ न हि सम्प्रयोगात् क्लेशो विवेचयितुं शक्यते अभि.भा. 254ख/856.

རྣམ་པར་དབྱེ་བ་ཅན *वि.* विभागिकः – རྒྱུ་སྐར་གྱི་དཀྱིལ་འཁོར་ཆ་བཅུ་དྲུག་གི་རྣམ་པར་དབྱེ་བ་ཅན नक्षत्रमण्डलं षड्[? षोडश]विभागिकम् वि.प्र.93ख/3.5.

རྣམ་པར་དབྱེ་བ་རྣམ་པར་ཉམས་པར་བྱེད་པ विवेकविकलता – འདི་ནི་དགེ་འདུན་ལ་བརྙས་པ་ཆེན་པོ་སྟེ། ངེས་པར་འདི་ནི་བདེ་བར་གཤེགས་པའི་རྣམ་པར་དབྱེ་བ་རྣམ་པར་ཉམས་པར་བྱེད་པའོ॥ महानयं परिभवः सङ्घे, महती खल्वियं विवेकविकलता सौगतानाम् वि.प्र. 92ख/3.3.

རྣམ་པར་དབྱེ་བ་མ་བྱས་པ *भू.का.कृ.* अविभक्तः – རྣམ་དབྱེ་མ་བྱས་པའི་ངོ་བོས། །དངོས་པོ་ཀུན་ནི་གང་གིས་རྟོགས། །དངོས་པོ་ཀུན་གྱི་རང་མཚན་ཉིད། །དེ་ཡིས་རྟོགས་པར་མི་འགྱུར་རོ॥ स्वभावेनाविभक्तेन यः सर्वमवबुध्यते । स्वलक्षणानि भावानां सर्वेषां न स बुध्यते ॥ त.स.118ख/1021.

རྣམ་པར་དབྱེ་བ་མེད་པ = རྣམ་དབྱེར་མེད • *सं.* अविभागः – བློ་བདག་རྣམ་པར་དབྱེར་མེད་ཀྱང་། །མཐོང་བ་ཕྱིན་ཅི་ལོག་རྣམས་ཀྱིས། །གཟུང་དང་འཛིན་པ་མྱོང་བ་དག། །ཐ་དད་ལྡན་བཞིན་རྟོགས་པར་འགྱུར॥ अविभागोऽपि बुद्ध्यात्मविपर्यासितदर्शनैः । ग्राह्यग्राहकसंवित्तिभेदवानिव लक्ष्यते ॥ प्र.वा.132क/2.354; अविनिर्भागः – བཅོམ་ལྡན་འདས་དེ་བཞིན་གཤེགས་པའི་སྙིང་པོ་ནི་རྣམ་པར་དབྱེ་བ་མེད་པ...མི་སྟོང་པའོ॥ अशून्यो भगवंस्तथागतगर्भः... अविनिर्भागैः र.व्या.104क/55; ཤཱ་རིའི་བུ་དེ་བཞིན་གཤེགས་པས་བསྟན་པའི་ཆོས་ཀྱི་སྐུ་གང་ཡིན་པ་དེ་ནི...རྣམ་པར་དབྱེར་མེད་པའི་ཆོས་དང་ལྡན་པ योऽयं शारिपुत्र तथागतनिर्दिष्टो धर्मकायः सोऽयमविनिर्भागधर्मा र.व्या.75क/3; र.वि.113ख/76; अव्यतिभेदः – དོན་རྣམ་པ་གསུམ་གྱིས་སེམས་ཅན་ཐམས་ཅད་ནི་རྟག་ཏུ་དེ་བཞིན་གཤེགས་པའི་སྙིང་པོ་ཅན་ནོ... དེ་བཞིན་གཤེགས་པའི་དེ་བཞིན་ཉིད་རྣམ་པར་དབྱེར་མེད་པའི་དོན་དང त्रिविधेनार्थेन सदा सर्वसत्त्वास्तथागतगर्भाः...तथागततथताऽव्यतिभेदार्थेन र.व्या.88ख/26; अव्यतिरेकः – མངོན་ཤེས་དང་། །ཡེ་ཤེས་དྲི་མེད་དེ་ཉིད་དང་། །རྣམ་དབྱེ་མེད་ཕྱིར་མར་མེ་ཡི། །སྣང་ལ་དྲོ་མདོག་ཆོས་མཚུངས་ཅན॥ अभिज्ञाज्ञानवैमल्यतथताव्यतिरेकतः । दीपालोकोष्णवर्णस्य साधर्म्यम् र.वि.95क/38; •*वि.* अभिन्नः – ཐོག་མ་དབུས་མཐའ་མེད་ཅིང་རྣམ་དབྱེར་མེད། །གཉིས་མེད་གསུམ་གྲོལ अनादिमध्यान्तमभिन्नमद्वयं त्रिधा विमुक्तम् र.वि.118क/85; असंभिन्नः – འདུས་མ་བྱས

ཤིང་རྣམ་དབྱེར་མེད། །མཐའ་གཉིས་དག་ནི་རྣམ་པར་སྤྲང་॥ असंस्कृतमसंभिन्नमन्तद्वयविवर्जितम्। र. वि.118ख/86.

རྣམ་པར་དབྱེ་བ་མཛད *क्रि.* विवृणोति – སྔོན་གྱི་དགེ་བའི་རྩ་བ་ཡོངས་སུ་བསྐུལ་བ་མཛད་དོ॥ ...རྣམ་པར་དབྱེ་བ་མཛད་དོ॥ पूर्वकुशलमूलानि संचोदयति...विवृणोति ग.व्यू.228ख/215.

རྣམ་པར་དབྱེ་བ་ཤིན་ཏུ་རྣམ་པར་ཕྱེ་བ •*वि.* सुविचितविचयः – བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ...རྣམ་པར་དབྱེ་བ་ཤིན་ཏུ་རྣམ་པར་ཕྱེ་བ...ཞེས་བྱའོ॥ बोधिसत्त्वः...सुविचितविचयः... इत्युच्यते द.भू.261ख/55; •*पा.* सुविचितविचयः, बोधिसत्त्वसमाधिविशेषः – དེ་དེ་ལྟར་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའི་ས་བདུན་པ་འདི་ལ་གནས་པའི་ཚེ། བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའི་ཏིང་ངེ་འཛིན་རྣམ་པར་དབྱེ་བ་ཤིན་ཏུ་རྣམ་པར་ཕྱེ་བ་ཞེས་བྱ་བ་མཉམ་པར་གཞོག་[? འཇོག་]སྟེ། བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའི་ཏིང་ངེ་འཛིན་དོན་ཤིན་ཏུ་བསམས་པ་ཞེས་བྱ་བ་དང सोऽस्यां सप्तम्यां बोधिसत्त्वभूमौ स्थितः सन् सुविचितविचयं च नाम बोधिसत्त्वसमाधिं समापद्यते। सुविचिन्तितार्थं च नाम द.भू.233क/39.

རྣམ་པར་དབྱེ་བ་ཤིན་ཏུ་བྱས་པ *वि.* सुकृतविचयः – བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ...བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའི་ས་བདུན་པ་ལ་རྣམ་པར་དབྱེ་བ་ཤིན་ཏུ་བྱས་པ बोधिसत्त्वः सप्तसु बोधिसत्त्वभूमिषु सुकृतविचयः द.भू.239ख/42.

རྣམ་པར་དབྱེ་བ་ཤེས་པ *वि.* विभागज्ञः – བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་རྣམས་ནི...མཐར་ཐུག་པའི་གནས་ཀྱི་འཇུག་པ་རྣམ་པར་དབྱེ་བ་ཤེས་པས་ཡོངས་སུ་མྱ་ངན་ལས་མི་འདའ་སྟེ बोधिसत्त्वाः... निष्ठापदगतिविभागज्ञा न परिनिर्वान्ति ल.अ.140क/87.

རྣམ་པར་དབྱེ་བའི་ཆ प्रविभागः – དུས་སུ་གཏོགས་པ་ཉིད་ཀྱི་སྒྲ་ཙམ་གྱི་ཁྱད་པར་ཅན་རྣམ་པར་དབྱེ་བའི་ཆ་དག་ནི་ཡི་གེ་རྣམས་འཛིན་པ་ན་རྟོག་[རྟོགས་]པའི་ཡན་ལག་ཡིན་ནོ॥ कालगता एवैते ध्वन्युपाधिकाः प्रविभागा वर्णेषु गृह्यमाणाः प्रतिपत्त्यङ्गम् त.प.159क/771.

རྣམ་པར་དབྱེ་བའི་བདེན་པ *पा.* विभागसत्यम् – དེ་ཀུན་རྫོབ་ཀྱི་བདེན་པ་ལ་མཁས་པ་ཡིན་ནོ॥ ...རྣམ་པར་དབྱེ་བའི་བདེན་པ་ལ་མཁས་པ་ཡིན स संवृतिसत्यकुशलश्च भवति... विभागसत्यकुशलश्च भवति द.भू. 212ख/27.

རྣམ་པར་དབྱེ་བའི་བདེན་པ་ལ་མཁས་པ *वि.* विभागसत्यकुशलः – དེ... རྣམ་པར་དབྱེ་བའི་བདེན་པ་ལ་མཁས་པ་ཡིན स...विभागसत्यकुशलश्च भवति द.भू.212ख/27.

རྣམ་པར་དབྱེ་བའི་མཚན་ཉིད་ཅན *उ.प.* विभागलक्षणम् – ཆོས་ཀྱི་དབྱིངས་གསུང་གི་དབང་ཕྱུག་གི་དཀྱིལ་འཁོར་ཆ་བཅུ་དྲུག་གི་རྣམ་པར་དབྱེ་བའི་མཚན་ཉིད་ཅན धर्मधातुवागीश्वरमण्डलं षोडशकलाविभागलक्षणम् वि.प्र. 93ख/3.5.

རྣམ་པར་དབྱེ་བའི་སེམས *पा.* विभाजनचित्तम् – བུ་མོ་ཁྱོད་ཀྱིས་སེམས་ཅན་རྣམས་ཀྱི་བསམ་པ་ཇི་ལྟ་བ་བཞིན་དུ་ཆོས་རིན་པོ་ཆེ་རྣམ་པར་དབྱེ་བའི་ཕྱིར་རྣམ་པར་དབྱེ་བའི་སེམས་བསྐྱེད་ཅིག विभाजनचित्तं च ते दारिके उत्पादयितव्यं यथाशयसर्वसत्त्वधर्मरत्नसंविभजनाय ग.व्यू.40क/134.

རྣམ་པར་དབྱེ་བར་བྱ •*क्रि.* विकासयेत् – རྡོ་རྗེ་ཁུ་ཚུར་གཉིས་བཅིངས་ནས། །རིམ་གྱིས་རྣམ་པར་དབྱེ་བར་བྱ॥ वज्रमुष्टिद्वयं बद्ध्वा परिपाट्या विकासयेत्। स.दु. 108क/162; •= རྣམ་པར་དབྱེ་བར་བྱ་བ།

རྣམ་པར་དབྱེ་བར་བྱ་བ •कृ. विभक्तव्यम् – རྣམ་པར་དབྱེ་བར་ནི་མི་བྱ་སྟེ न तु विभक्तव्याः अभि.भा.237ख/800; •सं. विचयः – སེམས་ཅན་གྱི་སྟོབས་དང་བློའི་སྟོབས་རྣམ་པར་དབྱེ་བར་བྱ་བ་ཤིན་ཏུ་རྣམ་པར་ཕྱེ་བ सत्त्वबलबुद्धिबलसुविचितविचयम् द.भू.174ख/8.

རྣམ་པར་དབྱེ་བར་མི་བྱ कृ. न विभक्तव्यम् – དེ་ལ་ནི་ཆོས་མང་པོ་ཞིག་ཡོད་ན་ཞེས་བརྗོད་པར་བྱའི་རྣམ་པར་དབྱེ་བར་ནི་མི་བྱ་སྟེ तस्य वक्तव्यम्–धर्मा बहव इति। न तु विभक्तव्याः अभि.भा.237ख/800.

རྣམ་པར་དབྱེར་མེད = རྣམ་དབྱེར་མེད།

རྣམ་པར་དབྱེར་མེད་པ = རྣམ་དབྱེར་མེད།

རྣམ་པར་འབུ་ཞུགས་པ पा. विपुण्ड्रात्मकम्, अशुभताभेदः – ཀེང་རུས་སམ་རྣམ་པར་བསྔོས་པའམ་རྣམ་པར་རུལ་བའམ་རྣམ་པར་འབུ་ཞུགས་པའམ་རྣམ་པར་བམ་པ་ལ་སོགས་པའོ॥ अस्थिसंकलिकं वा नीलकं वापि [? वा वि]पूयकं वा विपडुमकं [? विपुण्ड्रात्मकं] वा व्याध्मातकादिकं वा त्रि.भा.170ख/97; द्र. རྣམ་པར་འབུས་གཞིག་པ།

རྣམ་པར་འབུལ་བ व्यर्पणा म.व्यु.7429 (105ख).

རྣམ་པར་འབུས་གཞིག་པ पा. विपुण्ड्रात्मकम्, अशुभताभेदः – རྣམ་པར་འབུས་*གཞིགས་པ་ཞེས་བྱ་བ་ནི་འབུ་ཞུགས་པ་གང་ཡིན་པའོ॥ विपटु[? विपुण्ड्रात]मकमिति यदुत्पन्नकृमिकम् अभि.स्फु.162क/895; ཤི་ནས་ཞག་བདུན་ལོན་པ་འབུ་ཞུགས་ཤིང་བམ་པ་ལ་ནི། རྣམ་པར་འབུས་གཞིག་པ་དང་རྣམ་པར་བམ་པར་མོས་པར་བྱེད་དོ॥ सप्ताहमृतं संजातकृमि आध्मातं च विमद्रामकं [? विपुण्ड्रात्मकं] व्याध्मातकमित्यधिमुच्यते श्रा.भू.136क/372; དེ་ལ་ཕྱི་རོལ་ལ་བརྟེན་པའི་མི་གཙང་བའི་མི་སྡུག་པ་ཉིད་གང་ཞེ་ན། འདི་ལྟ་སྟེ། རྣམ་པར་བསྔོས་པ་དང་...རྣམ་པར་འབུས་གཞིགས[? གཞིག་]པ་དང तत्र बहिर्धा चोपादाय अशुभता कतमा? तद्यथा–विनीलकं वा...विभद्रात्मकं [विपुण्ड्रात्मकं] वा श्रा.भू.79ख/203; द्र. རྣམ་པར་འབུ་ཞུགས་པ།

རྣམ་པར་འབུས་གཞིགས་པ *> རྣམ་པར་འབུས་གཞིག་པ།

རྣམ་པར་འབུས་གཞིགས་པའི་འདུ་ཤེས पा. विपदुमक-[? विपुण्ड्रात्मक]संज्ञा, अशुभभावनाविशेषः म.व्यु.1158 (24ख); द्र. རྣམ་པར་འབུས་གཞིག་པ།

རྣམ་པར་འབེལ་བ* उद्विद्धः – གདུགས་ཀྱི་དཀྱིལ་འཁོར་ཆེན་པོ་རིན་པོ་ཆེ་སྣ་ཚོགས་རྣམ་པར་འབེལ་བའི་ཡུ་བ་ཅན...བྱུང་བར་གྱུར་ཏེ महाच्छत्रमण्डलं प्रादुर्बभूव विचित्रोद्विद्धमणिरत्नदण्डम् ग.व्यू.170ख/253.

རྣམ་པར་འབྱེད = རྣམ་པར་འབྱེད་པ།

རྣམ་པར་འབྱེད་པ •क्रि. विचिनोति – དེ་ལ་འདི་ལྟར་ཅི་བདག་གི་ལུས་ཀྱི་ལས་དང...འདི་གནོད་པར་འགྱུར་བ་ཞིག་ཡིན་ནམ་ཞེས་སྔ་མ་བཞིན་དུ་རྒྱས་པར་རྣམ་པར་འབྱེད་པ་གང་ཡིན་པ तत्र यदेवं विचिनोति–तत् कायकर्म... किं व्याबाधिकं मे इति विस्तरेण पूर्ववद् श्रा.भू.23ख/57; ཆོས་རྣམས་ལ་རྣམ་པར་འབྱེད་པ धर्मान् विचिनोति अभि.स.भा.66क/90; प्रविचिनोति – ཆོས་ཀྱི་སྒོ་བརྒྱ་རྣམ་པར་འབྱེད་པ་དང धर्ममुखशतं च प्रविचिनोति द.भू.185ख/14; विवेचयति – འདི་ལྟར། སོམས་པ་ནི་དུ་བ་ལ་སོགས་པ་དེའི་[རང་གི་]མཚན་ཉིད་དུ་ལྡངས་པ་ལ་སོགས་པ་དག་ལས་རྣམ་པར་འབྱེད་པ་ཉིད་ཡིན་ནོ॥ तथा हि–विवेचयन्त्येव बाष्पादि-

भ्यो धूमादीनभ्यस्ततत्स्वलक्षणाः त.प.38ख/526; विचीयते – སེམས་ཀྱིས་སུ་ནི་ལས་རྣམས་སོགས། །ཡེ་ཤེས་ཀྱིས་ནི་རྣམ་པར་འབྱེད།། चित्तेन चीयते कर्म ज्ञानेन च विधी[? विची]यते । ल.अ.117ख/64; (द्र. རྣམ་པར་སེལ་བ། རྣམ་པར་སོགས་པ།); व्यवच्छिनत्ति – ཞེས་བྱ་བ་འདིས་ནི་ཀུན་གཞི་རྣམ་པར་ཤེས་པ་དང་འཇུག་པའི་རྣམ་པར་ཤེས་པ་ལས་རྣམ་པར་འབྱེད་དོ།། इत्यनेनालयविज्ञानात्प्रवृत्तिविज्ञानाच्च व्यवच्छिनत्ति त्रि.भा.153क/45; विभजति – ཚིག་དང་ཡི་གེ་གོ་རིམས་བཞིན་དུ་བསྟན་ནས་ཀྱང་། གོ་རིམས་ཁོ་ན་བཞིན་དུ་དོན་རྣམ་པར་འབྱེད་དོ།། यथाक्रमोद्दिष्टं च पदव्यञ्जनं यथाक्रममेवार्थतो विभजति बो.भू.57ख/75; विभाजयति – རབ་ཏུ་འཇོག་པ་དང་རྣམ་པར་འབྱེད་པ་དང་རྣམ་པར་འབྲེལ་[? འགྲེལ]པ་ནི་གོ་རིམས་བཞིན་དུ་བསྟན་པ་དང་རྣམ་པར་འབྱེད་པ་དང་ཐེ་ཚོམ་གཅོད་པ་རྣམས་ཀྱིས་སོ།། प्रस्थापयति विभाजयति विवृणोति यथाक्रममुद्देशविभागसंशयच्छेदैः सू.व्या.183ख/79; विभज्यते – གང་གིས་ལས་ནི་སོ་སོ་ལ། །རྣམ་འབྱེད येन प्रतिकर्म विभज्यते प्र.वा.130क/2.302; वितरति – བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་སེམས་དཔའ་ཆེན་པོ་རྣམས་ནི་ཆོས་ཀྱི་སྦྱིན་པ་ཆེན་པོ་རྣམ་པར་འབྱེད་དོ།། बोधिसत्त्वाः [महासत्त्वाः] महाधर्मदानं वितरन्ति सू.व्या.181ख/77; व्यनक्ति – རྣམ་པ་དེ་ལྟ་བུ་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པས་དེ་ཉིད་རྣམ་པར་འབྱེད་པ न हीत्यादिनैतदेव व्यनक्ति वा.टी.67ख/22; विवृणोति – ཇི་ལྟར... ཁམས་གསུམ་གྱི་གྲོང་ཁྱེར་གྱི་སྒོ་རྣམ་པར་གཅོད་ཅིང་ཐམས་ཅད་མཁྱེན་པ་ཉིད་ཀྱི་ཕོ་བྲང་གི་སྒོ་རྣམ་པར་འབྱེད་པ་དང...མ་འཚལ་ལོ།། न च जाने कथं ...विनिर्भिन्दन्ति त्रैधातुकनगरकपाटम्, विवृण्वन्ति सर्वज्ञतापुरद्वारकपाटम् ग.व्यू.328ख/51; •सं.

1. विचयः – རྣམ་པར་འབྱེད་པ་དང་སྤྲོ་བ་དང་ཡིད་བདེ་བ་དང་ལས་སུ་རུང་བ་དང་སེམས་གནས་པ་དང་མཉམ་པ་ཉིད་ཀྱི་རྣམ་པ་བསྒོམ་པ विचयोत्साहसौमनस्यकर्मण्यताचित्तस्थितिसमताकारभावनाः सू.भा167क/58; འདི་ཡི་རྣམ་འབྱེད་རྟོག་པ་ཡི། །མཚན་མ་ཐམས་ཅད་འཇོམས་པར་བྱེད།། सर्वकल्पनिमित्तानां भङ्गाय विचयोऽस्य च ॥ सू.अ.227ख/138; प्रविचयः – དེ་ནི་ཆོས་ལ་མི་རྟོག་རྣམ་འབྱེད་ཡེ་ཤེས་དག་ལ་བརྟེན་ནས་འཐོབ།། धर्माणां तदकल्पनप्रविचयज्ञानाश्रयादाप्यते ॥ र.वि.116क/80; विवेचनम् – དམ་པ་མ་ཡིན་པའི་འདོད་པའི་དགའ་བདེ་རྣམ་པར་འབྱེད་པ་ཉིད་དང་ཆོས་ཀྱི་ཀུན་དགའི་དགའ་བདེ་ཉེ་བར་སྒྲུབ་པས་ན་བདེ་བ་ཉིད་དོ།། सुखत्वमसत्कामरतिसुखविवेचनतया च धर्मारामरतिसुखोपसंहरणतया च र.व्या.124क/103; प्र.वा.146क/4.168; विवरणम् – འཕེལ་བའི་གཏམ་གྱིས་གཏན་ལ་འབེབས་པའི་དམ་པ་རྣམས་ཀྱི་སེམས་མགུ་བར་བྱེད་པ་ནི་དོན་ཟབ་པ་རྣམ་པར་འབྱེད་པས सांकथ्यविनिश्चयेन सतां चित्तमाराधयति, गूढार्थविवरणात् अभि.स.भा.68ख/95; विभावनम् – ནམ་མཁའི་འདུ་ཤེས་གཞན་གྱུར་ན། །བསམས་པའི་དོན་ནི་འབྱོར་པ་དང་། །འགྲོ་གཟུགས་རྣམ་པར་འབྱེད་པ་ལ། །འབྱོར་པ་དམ་པ་འཐོབ་པར་འགྱུར།། आकाशसंज्ञाव्यावृत्तौ विभुत्वं लभ्यते परम्। चिन्तितार्थसमृद्धौ च गतिरूपविभावने ॥ सू.अ.157ख/44; विभावना – དགོངས་པ་ཅན་བརྟག་དཀའ་བའི་ཆོས་ཀྱི་མིང་དང་དོན་རྣམ་པར་འབྱེད་པ་འདི་ནི་གནས་བཞི་པའོ།། आभिप्रायिकनिगूढधर्मसंज्ञार्थविभावना। इदं चतुर्थमधिष्ठानम् बो.भू.158ख/209

2. विभागः – ཉེ་བ་འཁོར་གྱིས་ཞུས་པ་ལས་ལྟུང་བ་དང་ལྟུང་བ་མེད་པའི་རྣམ་པར་འབྱེད་པར་རིག་པར་བྱའོ།། उपालिपरिपृच्छायामापत्त्यनापत्तिविभागो वेदितव्यः

बो.प.101[ख]/70; རབ་ཏུ་འཇོག་པ་དང་རྣམ་པར་འབྱེད་པ་དང་རྣམ་པར་འགྲེལ་[? འགྲེལ]པ་ནི་གོ་རིམས་བཞིན་དུ་བསྟན་པ་དང་རྣམ་པར་འབྱེད་པ་དང་ཐེ་ཚོམ་གཅོད་པ་རྣམས་ཀྱིས་སོ॥ प्रस्थापयति विभाजयति विवृणोति यथाक्रममुद्देशविभागसंशयच्छेदैः सू.व्या.183[ख]/79; विभजनम् – ངེས་ཐེ་ཚོམ་སྤངས་པའི་ཕྱིར་ཏེ། བདེན་པ་རྣམས་ལ་འདི་ནི་སྡུག་བསྔལ་ལོ...གཏན་ལ་ཕབ་ནས་རྣམ་པར་འབྱེད་པའི་ཕྱིར་ངེས་པར་བྱེད་པ་སྟེ तेन विचिकित्साप्रहाणान्निश्चितः। सत्यानां च विभजनात्–इदं दुःखम्...इति निर्वेधः अभि.स्फु.171[क]/914; विवेकः – དེ་ལ་གལ་ཏེ་བྱེད་པ་དང་མི་བྱེད་པ་ཁྱད་པར་མེད་ན་ཅི་ལྟར་བྱེད་པ་དང་ཅིག་ཤོས་རྣམ་པར་འབྱེད अत्र व्यापृतस्याव्यापृतस्य वा यदि न विशेषः कथं व्यापारेतरविवेकः प्र.अ.28[क]/32; प्र.अ.123[क]/131 **3.** विभङ्गः – མ་བྱིན་པར་ལེན་པའི་ཕམ་པར་འགྱུར་བ་རྣམ་པར་འབྱེད་པའོ॥ अदत्तादानपाराजयिके विभङ्गः वि.सू.15[क]/17; ལས་རྣམ་པར་འབྱེད་པ་ཆེན་པོའི་མདོ་ལས महाकर्मविभङ्गसूत्रे अभि.स्फु.93[क]/769; ཆོས་དང་ཆོས་ཉིད་རྣམ་པར་འབྱེད་པ धर्मधर्मताविभङ्गः क.त.4022; བདེན་པ་གཉིས་རྣམ་པར་འབྱེད་པའི་ཚིག་ལེའུར་བྱས་པ सत्यद्वयविभङ्गकारिका क.त.3881 **4.** वैपञ्चिकः – དགེ་སློང་དག་དེ་ལྟར་རྒྱལ་པོ་ཟས་གཙང་མས་བྲམ་ཟེ་མཚན་དང་ལྟས་ཤེས་ཤིང་རྣམ་པར་འབྱེད་པ་དང་རྨི་ལམ་གྱི་གཞུང་ཤེས་པ་དག་ལས་དེ་སྐད་ཀྱི་ཚིག་དེ་ཐོས་ནས राजा शुद्धोदनो ब्राह्मणेभ्यो लक्षणनैमित्तिकवैपञ्च[ञ्चि]केभ्यः स्वप्नाध्यायीपाठकेभ्यः प्रतिश्रुत्य ल.वि.33[क]/45 **0.** अनुध्वंसनम् – གཞན་གྱི་ཆ་དང་མཐུན་པའི་དགེ་འདུན་ལྷག་མ་རྣམ་པར་འབྱེད་པའོ॥ अन्यथाभागीयानुध्वंसनसङ्घावशेषः वि.सू.21[ख]/26; •*वि.* विवेचकः – ཉམས་སུ་མྱོང་བ་ཙམ་གྱིས་ནི། །ཐ་དད་འགའ་ཞིག་རྣམ་འབྱེད་མིན॥ न चानुभवमात्रेण कश्चिद् भेदो विवेचकः। प्र.वा.134[ख]/2.425; विवेकी – གང་གིས་རིག་པ་མར་མེའི་རྩེ་མོ་དངོས་པོ་རྣམ་འབྱེད་ཡོན་ཏན་དག་གི་གྲོགས། །འཇིག་རྟེན་རབ་ཏུ་གསལ་ལ་མངོན་ཕྱོགས येषां वस्तुविवेकिनां गुणसखी लोकप्रकाशोन्मुखी विद्यादीपशिखा अ.क.99[क]/64.137; विवेकिनी – ཐ་དད་གསལ་བ་མེད་པ་ལ། །རྣམ་འབྱེད་བློ་མེད་མཆེ་སོགས་བཞིན॥ विवेकिनी न चास्पष्टभेदे धीर्यमलादिवत्॥ प्र.वा.134[ख]/2.425; विभेदिनी – དེ་རྣམས་རྫས་ཉིད་མིན་པའི་ཕྱིར། །རྣམ་འབྱེད་རྫས་[? གྲངས་]ནི་གང་ཞིག་ཡོད[? མེད]॥ अद्रव्यत्वान्न सङ्ख्यास्ति तेषु काचिद् विभेदिनी। त.स.25[क]/264; विभावकः – དེ་ནས་དང་པོར་སྡོམ་བརྩོན་དེ། །མདོ་ཡི་སྡེ་ལ་སོགས་པའི་ཆོས། །མི་གཉིས་དོན་ནི་རྣམ་འབྱེད་པ། །མདོ་སོགས་མིང་ལ་སེམས་འཇོག་གོ॥ ततः सूत्रादिके धर्मे सोऽद्वयार्थविभावके। सूत्रादिनाम्नि बध्नीयाच्चित्तं प्रथमतो यतिः॥ सू.अ.190[क]/88; विपञ्चितः – རྩོད་པའི་རིགས་པའི་འགྲེལ་པ་དོན་རྣམ་པར་འབྱེད་པ་ཞེས་བྱ་བ [वादन्यायस्य] विपञ्चितार्था टीका वा.टी.51[क]/3.

རྣམ་པར་འབྱེད་པ་ཉིད प्रविभागिता – རྗེས་སུ་དཔག་པ་ལ་བརྟེན་ནས། །བླང་བྱ་ལ་སོགས་རྣམ་འབྱེད་ཉིད॥ अनुमानं समाश्रित्य हेयादिप्रविभागिता। प्र.अ.123[क]/132.

རྣམ་པར་འབྱེད་པ་དང་ལྡན་པ *वि.* विवेकवान् – དེས་ན་དམན་རིགས་རྣམ་འབྱེད་དང་། །ལྡན་པར་བདག་ནི་སྐྱེ་བར་ཤོག॥ जायेयमधमे कुले तस्मादस्मि विवेकवान्॥ अ.क.163[ख]/18.23.

རྣམ་པར་འབྱེད་པ་མཛད *क्रि.* विच्छन्दयति – མ་བྱིན

པར་ལེན་པ་དང་ནི་རྣམ་པར་འབྱེད་པ་མཛད་དོ།། अदत्तादानाद्विच्छन्दयति ग.व्यू.23क/120.

རྣམ་པར་འབྱེད་པའི་སྐུ विभक्तगात्रः लो.को.1412.

རྣམ་པར་འབྱེད་པར་བགྱིད་པ *वि.* विभागकर्त्री – བཙུན་པ་ཀ་ཙང་ག་ལས་ལས་གང་དག་བགྱིས་ན་དེས...མདོ་སྡེ་རྣམ་པར་འབྱེད་པར་བགྱིད་པ་རྣམས་ཀྱི་མཆོག་ཏུ་བསྟན་ལགས किं भदन्त कचङ्गलया कर्म कृतं येन...सूत्रान्तविभागकर्त्रीणां चाग्रा निर्दिष्टा अ.श.209ख/193; द्र. རྣམ་པར་འབྱེད་པར་བྱེད་པ།

རྣམ་པར་འབྱེད་པར་བྱེད = རྣམ་པར་འབྱེད་པར་བྱེད་པ།

རྣམ་པར་འབྱེད་པར་བྱེད་པ • *क्रि.* विचिनोति – ལྷག་མཐོང་གི་རྣམ་པ་དག་གིས་རྣམ་པར་ལྟ་བར་བྱེད་ཅིང་རྣམ་པར་འབྱེད་པར་བྱེད विपश्यनाकारैर्विपश्यति, विचिनोति श्रा.भू.75क/193; प्रविचिनोति–རྣམ་པར་འབྱེད་པར་བྱེད་པས་རབ་ཏུ་རྣམ་པར་འབྱེད་པ་སྟེ प्रविचिनोतीति प्रविचयः त्रि.भा.155ख/54; विवेचयति– འཆད་པར་བྱེད་པ་རྣམས་དེ་ལྟར་རྣམ་པར་འབྱེད་པར་བྱེད་ཀྱི། ཐ་སྙད་འདོགས་པར་བྱེད་པ་རྣམས་ནི་མ་ཡིན་ཏེ व्याख्यातार एवं विवेचयन्ति, न तु व्यवहर्तारः प्र.वृ.282ख/25; विविच्यते – འདིས་རྣམ་པར་འབྱེད་པར་བྱེད་པས་དབེན་པའོ།། विविच्यतेऽनेनेति विवेकः अभि.स्फु.286क/1130; विरुजति – དེ་ཤིན་ཏུ་རིགས་བཞི་པོ་རྣམ་པར་དག་པར་འདོད་དེ་འཆད་པར་བྱེད...རྣམ་པར་འབྱེད་པར་བྱེད सोऽत्यर्थं चातुर्वर्णविशुद्धिं रोचयति दीपयति... विरुजति वि.व.124ख/1.13; • *सं.* विचयः – རྣམ་པར་འབྱེད་པར་བྱེད་པས་རབ་ཏུ་རྣམ་པར་འབྱེད་པ་སྟེ प्रविचिनोतीति प्रविचयः त्रि.भा. 155ख/54; • *वि.* विभागकर्त्री – དགེ་སློང་དག་ངའི་ཉན་ཐོས་ཀྱི་དགེ་སློང་མ་མདོ་སྡེ་རྣམ་པར་འབྱེད་པར་བྱེད་པ་རྣམས་ཀྱི་ནང་ན་འདི་ལྟ་སྟེ། དགེ་སློང་མ་ཀ་ཙང་ག་ལ་འདི་མཆོག་ཡིན་ནོ།། एषाग्रा मे भिक्षवो भिक्षुणीनां मम श्राविकाणां सूत्रान्तविभागकर्त्रीणां यदुत कचङ्गला भिक्षुणी वि.व.132ख/1.21; अ.श.209क/193; द्र. རྣམ་པར་འབྱེད་པར་བགྱིད་པ།

རྣམ་པར་འབྱེས་པ *भू.का.कृ.* विभक्तः – ཡན་ལག་དང་ཉིང་ལག་ཤིན་ཏུ་རྣམ་པར་འབྱེས་པ सुविभक्ताङ्गप्रत्यङ्गः म.व्यु.299 (8ख).

རྣམ་པར་འབྱོར = རྣམ་པར་འབྱོར་པ།

རྣམ་པར་འབྱོར་པ विभवः – རྒྱལ་པོ་ཤིན་ཏུ་བཟོད་དཀའ་འདི། །རྣམ་པར་འབྱོར་ལ་ཆགས་ཤིང་རྨོངས།། एष दुष्प्रसहो राजा लुब्धो विभवमोहितः । अ.क.28क/3.103; विभूतिः – འབྱོར་པ་ནི་རྣམ་པར་འབྱོར་པ་སྟེ། དབང་ཕྱུག་ཅེས་བྱ་བའི་དོན་ཏོ།། भूतिर्विभूतिरैश्वर्यमिति यावत् त.प.213क/897; ऐश्वर्यम् लो.को.1412.

རྣམ་པར་འབྲལ = རྣམ་པར་འབྲལ་བ།

རྣམ་པར་འབྲལ་བ • *क्रि.* विप्रवसति – ལྷག་པའི་བསམ་པའི་ཁམས་དང་རྣམ་པར་མི་འབྲལ་ལོ།། अध्याशयधातुश्च न विप्रवसति द.भू.208क/25; वियुज्यते लो.को.1412; • *सं.* विप्रयोगः लो.को.1412; *• *भू.का.कृ.* विरहितः –གལ་ཏེ་ལས་འདི་ཟད་པ་སྟེ། །སྲེད་པ་དང་ནི་རྣམ་འབྲལ་ན།། तृष्णाविरहितस्यास्य यदि कर्मपरिक्षयः। प्र.अ.127ख/136.

རྣམ་པར་འབྲལ་བར་བྱེད *क्रि.* विश्लेषयति – ཆོས་རྣམས་ལ་སེམས་མི་ཕྱོགས་པར་བྱེད...རྣམ་པར་འབྲེལ་[?འབྲལ་] བར་བྱེད་དོ།། धर्मेभ्यश्चित्तं विमुखीकरोति... विश्लेषयति श्रा.भू.150ख/409.

རྣམ་པར་འབྲལ་བར་མཛད *क्रि.* विवेचयति – ཕྲ་མའི་ཚིག་དང་ནི་རྣམ་པར་འབྲལ་བར་མཛད་དོ།། पिशुनवच-

नाद्विवेचयति ग.व्यू.23क/120.

རྣམ་པར་འབྲེལ = རྣམ་པར་འབྲེལ་བ།

རྣམ་པར་འབྲེལ་བ = རྣམ་པར་འབྲེལ་བ།

རྣམ་པར་འབྲེལ་བ • क्रि. • सं. विनिबन्धः – མ་རིག་པའི་རྐྱེན་གྱིས་འདུ་བྱེད་རྣམས་ཞེས་བྱ་བ་ནི་སྐྱེ་བ་རྣམ་པར་འབྲེལ་བ་སྟེ अविद्याप्रत्ययाः संस्कारा इत्युत्पादविनिबन्ध एषः द.भू.223क/33; विनिबन्धनम् – རྒྱུ་དང་རྐྱེན་ལས་བྱུང་བ་དང་། སྐྱེ་བ་དང་འཇིག་པ་རྣམ་པར་འབྲེལ་པ་དང हेतुंप्रत्ययप्रभवतश्च उत्पादव्ययविनिबन्धनतश्च द.भू.223क/33; *> རྣམ་འབྲེལ།

རྣམ་པར་འཁྲོས क्रि. दुद्राव – ཧཱུྃ་ཞེས་གྷར་གྷར་སྒྲ་དག་གིས། །བསེ་རུ་དྲུས་མ་རྣམ་པར་འཁྲོས॥ हूँकारघर्घरारावैर्दुद्रुवुः खड्गिधेनवः ॥ अ.क.130ख/66.64.

རྣམ་པར་སྦྱང • क्रि. 1. विशोधयामि – བཅོམ་ལྡན་འདས་གང་དག་འཇིག་རྟེན་དང་འཇིག་རྟེན་ལས་འདས་པའི་དཀྱིལ་འཁོར་དུ་ཞུགས་པ་དེ་དག་གིས་བཅོམ་ལྡན་འདས་བདག་ཅག་ལྷ་རྣམས་ཀྱི་སྒྲིབ་པ་ཐམས་ཅད་རྣམ་པར་སྦྱང་ངོ་॥ <?> ये भगवन् लौकिकलोकोत्तरमण्डले प्रविशन्ति तेषां वयं भगवन् सर्वदेवाः सर्वावरणानि विशोधयामः स.दु.121ख/212 2. विशोधयेत् – དེ་ནས་པད་མ་རྣམ་པར་སྦྱང་॥ ततः पद्मं विशोधयेत् वि.प्र.62ख/4.110; शोधयेत् – གོང་དུ་གསུངས་པའི་སྔགས་ཉིད་ཀྱིས། །མཁས་པས་ནོར་འཛིན་རྣམ་པར་སྦྱང॥ पूर्वोक्तेनैव मन्त्रेण शोधयेत् धरणीं बुधः ॥ हे.त.12ख/38; संस्करेत् – ཕྱག་རྒྱ...སི་ཧླ་ག་བུར་ཡང་དག་ལྡན། །བྱང་ཆུབ་སེམས་ཀྱིས་རྣམ་པར་སྦྱང་॥ मुद्रां...सिह्लकर्पूरसंयुक्तां बोधिचित्तेन संस्करेत् । हे.त.15क/46; • = རྣམ་པར་སྦྱང་བ།

རྣམ་པར་སྦྱང་བ •सं. विशोधनम् – རིགས་ཀྱི་ལྷ་རྣམ་པར་སྦྱང་བའི་དོན་དུ་མེ་ཏོག་འདོར་བའི་སྔགས་ནི कुलदेवताविशोधनाय पुष्पक्षेपमन्त्रः वि.प्र.150क/3.96; व्यवदानम् – ཡེ་ཤེས་ཐ་མི་དད་པ་རྣམ་པར་སྦྱང་བ་དང असंभिन्नज्ञानव्यवदानाय द.भू.168ख/2; •कृ. विशोध्यम् – འདིར་གཞན་མཐོན་པོས་གཞན་དམའ་མོ་ལ་རྣམ་པར་སྦྱང་ངོ་ཞེས་པ་ནི་ངེས་པ་སྟེ <?> अत्रोच्चग्रहो नीचग्रहेण विशोध्य इति नियमः वि.प्र.185क/1.43.

རྣམ་པར་སྦྱང་བར विशोधयितुम् – སྐྱེ་བོ་མ་རུངས་པའི་ནང་ན་འདུག་པས་ནི་བདེ་འགྲོའི་ལམ་ཡང་རྣམ་པར་སྦྱང་བར་མི་ནུས་ན दुर्जनमध्यगतेन न शक्यं सुगतिपन्थानमपि विशोधयितुम् रा.प.250ख/152.

རྣམ་པར་སྦྱང་བར་བྱ = རྣམ་པར་སྦྱང་བར་བྱ་བ།

རྣམ་པར་སྦྱང་བར་བྱ་བ कृ. विशोध्यम् – བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་རྣམས་ཀྱི་དཔག་ཏུ་མེད་པའི་དངོས་པོ་ནི་རྣམ་པ་ལྔ་སྟེ། ཡོངས་སུ་སྨིན་པར་བྱ་བའི་དངོས་པོ་...རྣམ་པར་སྦྱང་བར་བྱ་བ་ནི་སྣོད་ཀྱི་འཇིག་རྟེན་གྱིས་བསྡུས་པའི་འཇིག་རྟེན་གྱི་ཁམས་སོ॥ पञ्चविधं हि वस्तु बोधिसत्त्वानामप्रमेयम्–परिपाच्यं वस्तु...विशोध्यं लोकधातुर्भाजनलोकसंगृहीतः सू.व्या.247क/163; विशोधनीयम् – དེ་བཞིན་དུ་ལྷ་བསྒོམ་པ་ལ་རྣལ་འབྱོར་པས་རྣམ་པར་སྦྱང་བར་བྱའོ॥ तथा देवताभावनायां विशोधनीयो योगिना वि.प्र.55क/4.95; विशोधयितव्यम् – དེ་ལྟ་བས་ན་བློ་གྲོས་ཆེན་པོ་...དེ་བཞིན་གཤེགས་པའི་སྙིང་པོ་ཀུན་གཞི་རྣམ་པར་ཤེས་པ་ཞེས་བསྒྲགས་པ་རྣམ་པར་སྦྱང་བར་བྱའོ॥ तस्मात्तर्हि महामते तथागतगर्भः आलयविज्ञानसंशब्दितो विशोधयितव्यः ल.अ.143ख/90.

རྣམ་པར་སྦྱང་བྱ = རྣམ་པར་སྦྱང་བར་བྱ་བ།

རྣམ་པར་སྦྱང་བྱས *भू.का.कृ.* शोधितः – ལུས་ནི་"རྣམ་པར་སྦྱང་བྱས་ན शोधितस्यात्मभावस्य शि.स.2ख/2.

རྣམ་པར་སྦྱང་སླ *वि.* सुविशोधकः – བཅོམ་ལྡན་འདས་ཁྱོད་ཀྱི་སེམས་ཅན་རྣམས་ཚུལ་མཛེས་ལགས་སམ་ལེགས་པར་གོ་བ་ལགས་སམ་གདུལ་སླ་བ་ལགས་སམ་རྣམ་པར་སྦྱང་སླ་བ་ལགས་སམ कच्चिद् भगवन् सत्त्वाः स्वाका[? चा]राः सुविज्ञापकाः सुविनेयाः सुविशोधकाः स.पु.113क/181.

རྣམ་པར་སྦྱངས = རྣམ་པར་སྦྱངས་པ།

རྣམ་པར་སྦྱངས་པ *भू.का.कृ.* विशोधितः – དགེ་སློང་དག་དེ་ལྟར་དེ་བཞིན་གཤེགས་པས་མངོན་པར་རྫོགས་པར་སངས་རྒྱས་ཏེ། མུན་པ་མུན་ནག་དང་ནི་བྲལ། སྲེད་པ་ནི་རྣམ་པར་སྦྱངས...བག་ལ་ཉལ་རྣམས་ནི་བཏོན इति हि भिक्षवस्तथागतेऽभिसंबुद्धे विगतं तमोऽन्धकारम्, विशोधिता तृष्णा...उद्घाटिता अनुशयाः ल.वि.169क/254; སངས་རྒྱས་བཅོམ་ལྡན་འདས་རྣམས་ལ་ཡོངས་སུ་དྲིས་སོ།། ཡོངས་སུ་ཞུས་སོ།། རྣམ་པར་སྦྱངས་སོ།། ..རྒྱ་ཆེར་བྱས་སོ།། बुद्धानां भगवतामन्तिकात् परिपृष्टा परिप्रश्नीकृता विशोधिता...विपुलीकृता ग.व्यू.31क/127; རྒྱལ་དཀའ་གང་གིས་ཉུང་ངུའི་བྱེད་པ་རྣམ་པར་སྦྱོང་བ[? སྦྱངས་པ་] येनाजेन लघुकरणं विशोधितम् वि.प्र.175क/1.27; མི་ཡི་དབང་པོའི་བྱིན་རླབས་ལས།...།སྨོན་ལམ་དག་གིས་རྣམ་སྦྱངས་པ།། अधिष्ठानं नरेन्द्राणां प्रणिधानैर्विशोधितम् । ल.अ.96ख/43; विधूतः – སྡིག་པ་རྣམ་པར་སྦྱངས་པ विधूतपापः म.व्यु. 5343 (79ख).

རྣམ་པར་སྦྱར = རྣམ་པར་སྦྱར་བ།

རྣམ་པར་སྦྱར་བ •*सं.* विग्रहः – སྐྱེ་དགུ་རྣམས་ལ་ལེགས་པར་བཤད་པ་མི་ཟད་པའི་ཆོས་ཀྱི་ཆར་ཆེན་པོ་འབེབས་པས་ན་ཞེས་བྱ་བར་འདིར་ཚིག་རྣམ་པར་སྦྱར་བར་རིག་པར་བྱའོ།། महतः सुविहितस्याक्षयस्य धर्माम्बुवर्षस्य दानात् प्रजास्वित्ययमत्र पदविग्रहो वेदितव्यः सू.व्या.153क/38; द्र.– དེའི་དངོས་པོ་ནི་རྒྱུ་གཞན་ཉིད་དོ།། དེ་རྟོག་པ་ནི་རྟོག་པ་ཞེས་ཚིག་རྣམ་པར་སྦྱར་རོ།། तद्भावोऽन्यहेतुता, तस्याः क्लृप्तिः कल्पनेति विग्रहः त.प.177ख/71; དེ་དག་གི་རྟེན་ཞེས་ཚིག་རྣམ་པར་སྦྱར་རོ།། तेषां समाश्रय इति विग्रहः त.प.142ख/14; ཚིག་རྣམ་པར་སྦྱར་བ་གཉིས་རབ་ཏུ་བསྟན་པ विग्रहद्वयप्रदर्शनम् अभि.स्फु.3ख/5; •*भू.का.कृ.* विनियोजितः – དེ་ནི་རབ་འབད་བཅོམ་ལྡན་གྱིས། །འདུལ་བ་དག་ལ་རྣམ་པར་སྦྱར།། स प्रयत्नेन भवता विनयं विनियोजितः । अ.क.279क/104.5.

རྣམ་པར་སྦྱར་བར་བྱ *कृ.* योज्यम् – དེ་ལྟར་རྣམ་པར་གཞག་པ་ལ་ཡང་མེ་དང་བུད་ཤིང་ལྟར་རིམ་པར་རྣམ་པར་སྦྱར་བར་བྱའོ།། इत्येवं व्यवस्थाप्य अग्नीन्धनवत् क्रमो योज्यः प्र.प.74क/92.

རྣམ་པར་སྦྱིན • *क्रि.* दद्यात् – གང་ཞིག་སྲིན་ལག་སྟོན་པ་ལ། །དེ་ཡི་མཐེའུ་ཆུང་རྣམ་པར་སྦྱིན།། अनामिकां तु यो दद्यात् दद्यात् तस्य कनिष्ठिकाम् । हे.त.7ख/22; दापयेत् – གོང་གི་ཨ་སོགས་སྔགས་ཀྱིས་ནི། །དེ་ལ་གཏོར་མ་རྣམ་པར་སྦྱིན།། बलिं च दापयेत् तत्र प्रागकारादिमन्त्रतः । हे.त.12ख/38; • = རྣམ་པར་སྦྱིན་པ།

རྣམ་པར་སྦྱིན་པ वितरणम् – རི་ཡི་རི་དྭགས་ཆུང་མ་ལྟར་རྨོངས་ཕ་རོལ་བསླུ་ལ་མཆོག་ཏུ་སྲིན། །ལུས་ནི་རྣམ་པར་སྦྱིན་ལ་ཆགས་ཤིང་སྐྱེས་བུ་རྣམས་སྲོག་འཕྲོག། नगमृगवधूमुग्धास्तीक्ष्णाः परं परवञ्चने तनुवितरणे सक्ताः

पुंसां हरन्ति च जीवितम्। अ.क.269[क]/32.49.

རྣམ་པར་སྦྱོང = རྣམ་པར་སྦྱོང་བ།

རྣམ་པར་སྦྱོང་བ • *क्रि.* विशोधयति – གང་ཞིག་ཡུལ་རྣམས་རྣམ་སྦྱོང་བ། །དེ་ནི་བླ་མེད་རྙེད་པར་འགྱུར༎ विशोधयन्ति (ये) विषयान् लप्स्यन्ते ते ह्यनुत्तरम् ॥ हे.त.22[ख]/72; ल.अ.76[ख]/25; •*सं.* विशोधः – སེམས་ཀྱི་སྒྲིབ་པ་རྣམ་པར་སྦྱོང་བ་ཞེས་བྱ་བའི་རབ་ཏུ་བྱེད་པ चित्तावरणविशोधनामप्रकरणम् क.त.1804; विशोधनम् – སྤྱད་པ་རྣམ་པར་སྦྱོང་བའི་དམིགས་པ་དང...ཉོན་མོངས་པ་རྣམ་པར་སྦྱོང་བའི་དམིགས་པའོ༎ चरितविशोधनमालम्बनम्...क्लेशविशोधनं चालम्बनम् श्रा.भू.75[क]/193; བསམ་གཏན་དང་ཤེས་རབ་ནི་སྒྲིབ་པ་རྣམ་པར་སྦྱོང་བ་དག་གི་ལམ་ཡིན་ཏེ ध्यानं प्रज्ञा चावरणविशोधनेषु मार्गः सू.व्या.197[क]/98; སྡིག་དང་ཉོན་མོངས་རྣམ་སྦྱོང་ཡིན༎ पापक्लेशविशोधनम् शि.स.2[ख]/2; विशोधना – མཚན་མ་མེད་པ་ལྷུན་གྱིས་གྲུབ། །ཞིང་ཡང་རྣམ་པར་སྦྱོང་བ་སྟེ། །དེ་ཡི་འོག་ཏུ་སེམས་ཅན་ནི། །སྨིན་པར་བྱེད་པ་འགྲུབ་པར་འགྱུར༎ अनिमित्तेऽप्यनाभोगः क्षेत्रस्य च विशोधना। सत्त्वपाकस्य निष्पत्तिर्जायते च ततः परम्॥ सू.अ.251[ख]/170; དང་པོས་སྣོད་འགྱུར་དངོས་པོ་སྟེ། ...།བཞི་པས་རྣམ་པར་སྦྱོང་བ་འོ༎ आद्येन भाजनीभावः...चतुर्थेन विशोधना॥ सू.अ.210[क]/113; शोधनम् – ཞེ་སྡང་ལ་སོགས་རྣམ་སྦྱོང་བ༎ द्वेषादीनां तु शोधनम् हे.त.11[ख]/34; སྒྲིབ་པ་ཐམས་ཅད་རྣམ་པར་སྦྱོང་༎ सर्वावरणशोधनः स.दु.109[ख]/168; •*वि.* विशोधकः – སྲིད་པའི་འཁོར་ལོ་རྣམ་སྦྱོང་བ༎ नव[भव]चक्रविशोधकः गु.सि.17[क]/35; རྡོ་རྗེ་རྒྱལ་པོ་ཐེག་པ་ཆེ། །ནམ་མཁའི་སྤྱོད་པས་རྣམ་སྦྱོང་བ༎ <?>वज्रसत्त्व महायानाकाशचर्य विशोधकः। गु.स.101[ख]/25; •*> རྣམ་པར་སྦྱངས་པ།

རྣམ་པར་སྦྱོང་བར་འགྱུར *क्रि.* विशोधयिष्यति – ཆོས་ཀྱི་མིག་རྣམ་པར་སྦྱོང་བར་འགྱུར་རོ༎ धर्मचक्षुर्विशोधयिष्यति ग.व्यू.377[ख]/88.

རྣམ་པར་སྦྱོང་བར་བྱེད •*क्रि.* 1. विशोधयति – དོན་མཐུན་པས་ཡུན་རིང་པོར་སྒྲུབ་པའི་ཕྱིར་སྒྲུབ་པ་དེ་རྣམ་པར་སྦྱོང་བར་བྱེད་དེ समानार्थतया तां प्रतिपत्तिं विशोधयति दीर्घकालानुष्ठानाद् सू.व्या.210[क]/113 2. विशोधयेत् – བྱིས་པ་ཀུན་པ་ཆོམ་པོ་ཡིས། །ཐམས་ཅད་རྣམ་པར་སྦྱོང་བར་བྱེད༎ <?>पापैश्चौरैरवस्कन्धैः सर्वमेव विशोधयेत्॥ ज्ञा.सि.59[ख]/153; • = རྣམ་པར་སྦྱོང་བར་བྱེད་པ།

རྣམ་པར་སྦྱོང་བར་བྱེད་པ *वि.* विशोधकः – བརྒྱད་པ་ལ་ནི་ལྷུན་གྱིས་གྲུབ་པར་མཚན་མ་མེད་པ་ལ་གནས་པའི་ཕྱིར་དང...བཏང་སྙོམས་པ་དང་སངས་རྒྱས་ཀྱི་ཞིང་རྣམ་པར་སྦྱོང་བར་བྱེད་པ་ཡིན་ནོ༎ अष्टम्यामुपेक्षकः [बुद्ध]क्षेत्रविशोधकश्चानाभोगनिर्निमित्तविहारित्वाद् सू.व्या.252[ख]/170.

རྣམ་པར་སྦྱོང་བར་བྱེད་པ་ན विशोधयन् – དེས་དེར་ཤ་རྨགས་ཤིང་ཟག་པར་མོས་པས་རིམ་གྱིས་རུས་པ་རྣམ་པར་སྦྱོང་བར་བྱེད་པ་ན་ཐམས་ཅད་རུས་པའི་གོང་རུས་སུ་ལྟ་ཞིང स तत्र मांसक्लेदपीता(?)धिमोक्षक्रमेणास्थि विशोधयन् सकलामस्थिशङ्कलां पश्यति अभि.भा.9[ख]/896.

རྣམ་པར་སྦྱོར་བ विनियोजनम् – དམ་པའི་ལམ་ལ་རྣམ་པར་སྦྱོར་ཞིང सन्मार्गे विनियोजनम् अ.क.309[क]/40.27; द्र.– གང་གི་ཚེ་འདིའི་མུན་པ་བཅོམ་ཞེས་ཚིག་རྣམ་པར་སྦྱོར་བ यदा हतमस्यान्धकारमिति विग्रहः

अभि.स्फु.3ख/5.

རྣམ་པར་སྦྱོར་བར་བྱེད་པ = རྣམ་པར་སྦྱོར་བྱེད།

རྣམ་པར་སྦྱོར་བྱེད *क्रि.* विनिवेश्यते – མཁའ་དཀྱིལ་པད་མ་སོགས་པད་མ[? གང་ཚེ]། །བྱེད་པ་པོ་ལ་སོགས་པའི་ཚིག །གཅིག་གི་རྣམ་པར་སྦྱོར་བྱེད་ན། །དེས་ནི་འཁྲུལ་པ་དག་ཀྱང་མཐོང་།། नभस्तलारविन्दादौ यदेकं विनिवेश्यते। कारकादिपदं तेन व्यभिचारोऽपि दृश्यते॥ त.स.9क/113.

རྣམ་པར་མ་གྲོལ་བ *भू.का.कृ.* अविमुक्तः – འདོད་ཆགས་དང་བཅས་པའི་སེམས་ལ་འདོད་ཆགས་དང་བཅས་པའི་སེམས་སོ་ཞེས་བྱ་བར་ཡང་དག་པ་ཇི་ལྟ་བ་བཞིན་རབ་ཏུ་ཤེས་སོ།། ...རྣམ་པར་མ་གྲོལ་བ་དང་རྣམ་པར་གྲོལ་བའོ་ཞེས་བྱ་བར सरागं चित्तं सरागं चित्तमिति यथाभूतं प्रजानाति ...अविमुक्तं विमुक्तमिति अभि.स्फु.244क/1045.

རྣམ་པར་མ་བསྒྲུབས་པ *भू.का.कृ.* अविठपिता – བྱང་ཆུབ་ནི་མ་བརྟགས། རྣམ་པར་མ་བརྟགས་ཤིང་། བྱང་ཆུབ་ནི་རྣམ་པར་མ་བསྒྲུབས་ལ अकल्पिता अविकल्पिता हि बोधिः, अविठपिता हि बोधिः सु.प.31क/10.

རྣམ་པར་མ་ངེས अविनिश्चयः – དེ་བདག་རྣམ་པར་མ་ངེས་ན། ཞེས་བྱ་བ་ནི་དུག་ལ་སོགས་པའི་བདག་ཉིད་རྣམ་པར་མ་ངེས་ནའོ།། एतदात्माविनिश्चय इति विषाद्यात्माविनिश्चये त.प.220क/910.

རྣམ་པར་མ་བཅད་པ • *सं.* अव्यवच्छेदः – སྔོན་པོ་ཡོངས་སུ་གཅོད་པ་ན་ཡང་དེའི་ངོ་བོ་ཉམས་པར་བཅད་པ་ཡིན་ཏེ། དེ་རྣམ་པར་མ་བཅད་ན་སྔོན་པོ་ཡོངས་སུ་མི་གཅོད་པར་ཐལ་བར་འགྱུར་བའི་ཕྱིར་རོ།། नीले च परिच्छिद्यमाने ताद्रूप्यप्रच्युतिरवच्छिद्यते, तदव्यवच्छेदे नीलापरिच्छेदप्रसङ्गात् न्या.टी.77क/203; • *भू.का.कृ.* अनवच्छिन्नः – སྤྱིའི་ངོ་བོ་ནི་གཉིས་ཏེ། ཁྱད་པར་གྱི་རྣམ་པར་བཅད་པའི་ངོ་བོ་དང་རྣམ་པར་མ་བཅད་པའི་ངོ་བོའོ།། द्विरूपं हि सामान्यम्–विशेषेणावच्छिन्नरूपम्, अनवच्छिन्नरूपं च त.प.10ख/467; द्र. རྣམ་པར་མ་ཆད་པ།

རྣམ་པར་མ་ཆད = རྣམ་པར་མ་ཆད་པ།

རྣམ་པར་མ་ཆད་པ • *सं.* अविच्छेदः – རུས་ནི་རྣམ་པར་མ་ཆད་ཀྱང་། །ཤེས་པར་ནུས་པ་མ་ཡིན་ནོ།། अविच्छेदश्च गोत्रस्य प्रत्येतुं शक्यते न च॥ प्र.अ.10क/11; • *भू.का.कृ.* अनवच्छिन्नः – སྤྱིའི་ངོ་བོ་ཡང་གཉིས་ཏེ། ཁྱབ་པ[? ཁྱད་པར་]རྣམ་པར་ཆད་པ་ནི་དཔེར་ན་བ་ལང་ཉིད་ལ་སོགས་པ་བཞིན་ནོ།། རྣམ་པར་མ་ཆད་པ་ནི་དཔེར་ན་ཡོད་པ་དང་དངོས་པོ་ཉིད་ལ་སོགས་པ་བཞིན་ནོ།། सामान्यं च द्विरूपम्–विशेषेणावच्छिन्नम्, यथा गोत्वादि; अनवच्छिन्नं यथा सत्तावस्तुत्वादि त.प.9क/463; अविच्छिन्नः – འདི་ལྟར་སྒྲ་ཐམས་ཅད་དུ་སོང་བའི་ཕྱིར་རྣམ་པར་མ་ཆད་པའི་ངོ་བོས་ཐམས་ཅད་དུ་རྟོགས་པ་རིགས་ལ यावता (शब्दस्य) सर्वत्र सद्भावादविच्छिन्नरूपेण सर्वत्रावगतिर्युक्ता त.प.147ख/746; अव्युच्छिन्नः – གལ་ཏེ་ཟླ་བ་གཅིག་ཏུ་རྣམ་པར་མ་ཆད་དེ་བར་ཆད་མེད་པར་རྐྱང་གཡོན་པར་འབབ་ན अव्युच्छिन्नं निरन्तरं यदि मासमेकं वामनाड्यां वहति वि.प्र.246ख/2.61.

རྣམ་པར་མ་བརྟགས་པ *भू.का.कृ.* अविकल्पितः – བྱང་ཆུབ་ནི་མ་བརྟགས། རྣམ་པར་མ་བརྟགས་ཤིང་། བྱང་ཆུབ་ནི་རྣམ་པར་མ་བསྒྲུབས་ལ अकल्पिता अविकल्पिता हि बोधिः, अविठपिता हि बोधिः सु.प.30ख/10.

རྣམ་པར་མ་བརྟགས་པའི་སྐུ་མངའ་བ *वि.* अविकल्पि-

तशरीरः, बुद्धस्य म.व्यु.365 (9[ख]).

རྣམ་པར་མ་སྦྱུལ = རྣམ་པར་མ་སྦྱུལ་བ།

རྣམ་པར་མ་སྦྱུལ་བ *वि.* दुर्विनीतः – གང་ཞིག་རྣམ་པར་མ་སྦྱུལ་བས། །བསླབ་པའི་གནས་ཐོབ་མི་སྲུང་བ།། दुर्विनीता न रक्षन्ति प्राप्य शिक्षापदानि ये। अ.क.70[क]/60.13.

རྣམ་པར་མ་དག = རྣམ་པར་མ་དག་པ།

རྣམ་པར་མ་དག་པ *भू.का.कृ.* अपरिशुद्धः – རྟགས་དེ་དག་ཀྱང... རྣམ་པར་མ་དག་པ་སྟེ एतानि लिङ्गानि... अपरिशुद्धानि श्रा.भू.14[ख]/31; अविशुद्धः – ཀྱེ་བཅོམ་ལྡན་འདས་རྣམ་པར་མ་དག་པ་གང་ལགས། བཅོམ་ལྡན་འདས་ཀྱིས་བཀའ་སྩལ་པ། གཟུགས་ལ་སོགས་པའོ།། हे भगवन् के तेऽविशुद्धाः ? भगवानाह–रूपादयः हे.त.1[क]/32.

རྣམ་པར་མ་དག་པའི་ཆོས་ཅན *वि.* अविशुद्धधर्मि – རབ་ཀྱི་རྩལ་གྱིས་རྣམ་པར་གནོན་པ་གཟུགས་ནི་རྣམ་པར་དག་པའི་ཆོས་ཅན་ཡང་མ་ཡིན། རྣམ་པར་མ་དག་པའི་ཆོས་ཅན་ཡང་མ་ཡིན་ནོ།། न हि सुविक्रान्तविक्रामिन् रूपं विशुद्धधर्मि नाविशुद्धधर्मि सु.प.38[ख]/17.

རྣམ་པར་མ་དག་པའི་ཆོས་ཉིད अविशुद्धधर्मता – གཟུགས་དང་ཚོར་བ་དང་འདུ་ཤེས་དང་འདུ་བྱེད་རྣམས་དང་རྣམ་པར་ཤེས་པ་རྣམ་པར་དག་པའི་ཆོས་ཉིད་ཀྱང་མ་ཡིན། རྣམ་པར་མ་དག་པའི་ཆོས་ཉིད་ཀྱང་མ་ཡིན་པ་གང་ཡིན་པ་དེ་ཤེས་རབ་ཀྱི་ཕ་རོལ་ཏུ་ཕྱིན་པའོ།། या च रूपवेदनासंज्ञासंस्कारविज्ञानानां न विशुद्धधर्मता नाविशुद्धधर्मता, इयं प्रज्ञापारमिता सु.प.38[ख]/17.

རྣམ་པར་མ་འདུལ་བ *वि.* अविनीतः – མཚན་མོར་རྣམ་པར་མ་འདུལ་བ། །དམན་མིན[? དགའ་དགུར་]རྒྱུ་ཞིང་འགྲོ་བར་འགྱུར།། रजन्यामविनीतोऽद्य स्वैरचारी गमिष्यति ।। अ.क.193[क]/82.10.

རྣམ་པར་མ་བསྡམས = རྣམ་པར་མ་བསྡམས་པ།

རྣམ་པར་མ་བསྡམས་པ *वि.* विशृङ्खलः – དྲེགས་པས་འཕྱུར་ལས་བློ་གྲོས་རྣམ་པར་མ་བསྡམས་རྨོངས་ལས་འོག་ཏུ་འགྲེ་བྱེད་ཅིང་།། दर्पानु[? दर्पोन्न लि.पा.]द्धतया विशृङ्खलधिया मोहादधःपातिनाम् अ.क.207[ख]/86.1; བབ་ཅོལ་རྩོལ་བ་རྣམ་པར་མ་བསྡམས་པས།... །འདོད་པས་ཟིལ་མནན་དེ་ཡིས་དེ་ལ་སྨྲས།། सा तं बभाषे मदनाभिभूता प्रगल्भसंरम्भविशृङ्खलेन। अ.क.52[ख]/59.28.

རྣམ་པར་མ་མནན་པ *भू.का.कृ.* अविष्कम्भितः – བརྩོན་འགྲུས་ཀྱིས་ནི་ཉོན་མོངས་པ་རྣམ་པར་མ་མནན་ཡང་དགེ་བའི་ཕྱོགས་ལ་སྦྱོར་རོ།། वीर्येणाविष्कम्भितक्लेशोऽपि कुशलपक्षे प्रयुज्यते अभि.स.भा.74[क]/102.

རྣམ་པར་མ་དཔྱད་པ *भू.का.कृ.* अनिरूपितः – དེ་ལྟ་བས་ན་རྣམ་པར་མ་དཔྱད་པའི་ངོ་བོས་དངོས་པོ་རྣམ་པར་འཇོག་པ་ན་དངོས་པོ་རྣམས་ལེགས་པར་རྣམ་པར་གཞག[? བཞག་]པ་ཡིན་པའི་ཕྱིར་འདི་ནི་ཅི་ཡང་མ་ཡིན་ནོ།། तस्मादनिरूपितेन रूपेण भावव्यवस्थाने सुव्यवस्थिता भावा इति यत्किञ्चिदेतत् त.प.117[ख]/685.

རྣམ་པར་མ་ཕྱེ་བ अविवेकः – དེ་དང་དེ་མ་ཡིན་པའི་ངོ་བོ་དག་རྣམ་པར་མ་ཕྱེ་བའི་ཕྱིར་རོ།། तदतद्रूपयोरविवेकात् हे.बि.250[क]/66.

རྣམ་པར་མ་ཕྲི *भू.का.कृ.* अविलुप्तः – སྙིང་སྟོབས་རྣམས། །རྣམ་པར་མ་ཕྲི་སྙིང་རྗེའི་རོ་ཡིས་ཡང་དག་ཁེངས།། अविलुप्तसत्त्वः संपूर्यमाणः करुणारसेन अ.क.32[ख]/3.154.

རྣམ་པར་མ་ཞི་བ •सं. अव्युपशमः – རྒོད་པ་ནི་སེམས་རྣམ་པར་མ་ཞི་བའོ॥ རྣམ་པར་ཞི་བ་ནི་ཞི་གནས་ཏེ། དེ་དང་མི་མཐུན་པ་ནི་རྣམ་པར་མ་ཞི་བའོ॥ औद्धत्यं चित्तस्याव्युपशमः। व्युपशमो हि शमथस्तद्विरुद्धोऽव्युपशमः त्रि.भा.161[क]/69; བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ... རྣམ་པར་མ་ཞི་ཞིང་རྣམ་པར་མ་ཞི་བ་ལ་དགའ་བ बोधिसत्त्वः...अव्युपशान्तः अव्युपशमारामः बो.भू.91[क]/115; • भू.का.कृ. अव्युपशान्तः – རྒོད་པ་ནི ...ཉོན་མོངས་པ་ཅན་ཡིན་ནོ॥ རྒོད་པ་མ་ཡིན་པ་ནི...དགེ་བ་ཡིན་ནོ॥ རྣམ་པར་མ་ཞི་བ་དང་རྣམ་པར་ཞི་བ་ཡང་དེ་དང་འདྲའོ॥ उद्धतं क्लिष्टम्...अनुद्धतं कुशलं...एवमव्युपशान्तं व्युपशान्तं च अभि.भा.46[ख]/1049; རྣམ་པར་མ་ཞི་བ་ནི་རྒོད་པ་དང་མཚུངས་པར་ལྡན་པའི་ཕྱིར་ཉོན་མོངས་པ་ཅན་ཡིན་ལ། རྣམ་པར་ཞི་བ་ནི་དེའི་གཉེན་པོ་ཡིན་པའི་ཕྱིར་དགེ་བ་ཡིན་ནོ॥ अव्युपशान्तं क्लिष्टम्, औद्धत्यसंप्रयोगात्। व्युपशान्तं कुशलं तत्प्रतिपक्षत्वात् अभि.स्फु.246[ख]/1049.

རྣམ་པར་མ་བཞག་པ *भू.का.कृ.* अव्यवस्थापितः – ངེས་པར་བྱེད་པའི་ཤེས་པས་རྣམ་པར་མ་བཞག་པ་ནི་སྔོན་པོར་རྟོགས་པའི་ངོ་བོའི་ཤེས་པ་ཡོད་དུ་ཟིན་ཀྱང་མེད་པ་དང་འདྲ་བ་ཁོ་ན་ཡིན་ནོ॥ निश्चयप्रत्ययेनाव्यवस्थापितं सदपि नीलबोधरूपं विज्ञानमसत्कल्पमेव न्या.टी.46[ख]/84.

རྣམ་པར་མ་གཡེངས་པ *भू.का.कृ.* अविक्षिप्तः – སེམས་ཀྱི་གནས་སྐབས་རྣམ་པར་མ་གཡེངས་པ་ནི་ཏིང་ངེ་འཛིན་ནོ॥ अविक्षिप्तावस्था समाधिः...चित्तस्य अभि.स्फु.296[क]/1148; དྲན་པ་ཉེ་བར་གནས་པས་སོ॥ སེམས་རྣམ་པར་མ་གཡེངས་པས་སོ॥ उपस्थितस्मृतिः। अविक्षिप्तः वि.सू.80[क]/97.

རྣམ་པར་མ་རུང *क्रि.* विनश्यति – ཀྱེ་མ་འཇིག་རྟེན་འདི་ནི་མ་རུང་ངོ་॥ གྲོགས་པོ་དག་ཀྱེ་མ་འཇིག་རྟེན་འདི་ནི་རྣམ་པར་མ་རུང་ངོ་॥ नश्यति बतायं मार्षा लोको विनश्यति ल.वि.188[क]/287.

རྣམ་པར་མ་རུང་བར་བྱས་པ *भू.का.कृ.* विप्रनष्टः – སེམས་ཅན་ཐམས་ཅད་ནི་རང་གི་སྤྱོད་པ་རྣམ་པར་མ་རུང་བར་བྱས་པས་སེམས་ཅན་དང स्वचर्याविप्रनष्टसत्त्वाः सर्वसत्त्वाः सु.प.30[क]/9.

རྣམ་པར་མ་ཤེས་པ अविज्ञातम् – བརྫུན་དུ་སྨྲ་བའི་གཞི་ནི་མཐོང་བ་དང་ཐོས་པ་དང་བྱེ་བྲག་བྱེད་པ་དང་རྣམ་པར་ཤེས་པ་དང་མ་མཐོང་བ་དང་མ་ཐོས་པ་དང་བྱེ་བྲག་མི་བྱེད་པ་དང་རྣམ་པར་མ་ཤེས་པའོ॥ मृषावादस्य वस्तु दृष्टं श्रुतं मतं विज्ञातमदृष्टमश्रुतममतमविज्ञातं च अभि.स.भा.46[क]/63.

རྣམ་པར་མི་འཁྲུགས་པ अविकोपनता – སྒྲུབ་པ་རྣམ་པར་མི་འཁྲུགས་པ་དང प्रतिपत्त्यविकोपनतया अभि.स.भा.109[ख]/147; अविकोपनत्वम् – གཞན་གྱིས་རྣམ་པར་མི་འཁྲུགས་པས་བྱིན་གྱི་རླབས་ཀྱི་ས་ཞེས་བྱའོ॥ अधिष्ठानभूमिरित्युच्यते पराविकोपनत्वात् द.भू.246[ख]/47.

རྣམ་པར་མི་གྲོལ *क्रि.* न विमुञ्चति – མེ་ཏོག་མདའ་ཅན་གཞུ་ཡི་འཁྲི་ཤིང་གཟུགས་བཟང་ལྟོ་བ་ཕྲ་བའི་མཛེས་མ་དེ་དག་ལ། །སྐྱེ་བ་གཞན་གྱི་བག་ཆགས་བཞིན་དུ་བདག་གི་ཡིད་ནི་ཆགས་ལས་རྣམ་པར་མི་གྲོལ་ལོ॥ सा तन्वी कुसुमेषुकार्मुकलता क्षामोदरी सुन्दरी नो जन्मान्तरवासना इव मनः सक्तं विमुञ्चति मे ॥ अ.क.106[क]/10.71.

རྣམ་པར་མི་འཕྲོ་བ अविसारः – རྣམ་པར་མི་འཕྲོ་བའི

བསྡུས་པ अविसारसंग्रहः अभि.स.भा.34क/47.

རྣམ་པར་མི་འགྲོ་བའི་བསྡུས་པ अविसारसंग्रहः – རྣམ་པར་མི་འགྲོ་བའི་བསྡུས་པ་ནི་དཔེར་ན་བུམ་པས་ཆུ་བསྡུད་པ་དེ་བཞིན་དུ་ཏིང་ངེ་འཛིན་གྱིས་དེ་ལས་གཞན་པའི་སེམས་དང་སེམས་ལས་བྱུང་བ་རྣམས་བསྡུད་དོ།། अविसारसंग्रहो यथा घटेनोदकस्य तथा समाधिना तदन्येषां चित्तचैतसिकानाम् अभि.स.भा.34क/47.

རྣམ་པར་མི་འཇིག *क्रि.* न विनश्यति – ལས་ནི་རྣམ་པར་མི་འཇིག་གོ།། न च कर्म विनश्यति ल.अ.85ख/32.

རྣམ་པར་མི་སྙན་པར་བརྗོད་པ *क्रि.* विवर्णयति – རྣམ་གྲངས་དུ་མར་འདོད་པ་ལ་འདོད་ཆགས་དང་...ལ་རྣམ་པར་སྨད་པ་དང་རྣམ་པར་མི་སྙན་པར་བརྗོད་པ་དང अनेकपर्यायेण कामरागं...विगर्हन्ति, विवर्णयन्ति श्रा.भू.40क/102.

རྣམ་པར་མི་གཏོང་བ अनिर्मुक्ता, औषधिविशेषः – རིགས་ཀྱི་བུ་འདི་ལྟ་སྟེ་དཔེར་ན་རྣམ་པར་མི་གཏོང་བ་ཞེས་བྱ་བའི་སྨན་ཡོད་དེ། དེ་འཆང་ན་གཞན་གྱིས་གནོད་པར་བྱ་བའི་འཇིགས་པ་ཐམས་ཅད་མི་འབྱུང་ངོ་།། तद्यथा कुलपुत्र अस्त्यनिर्मुक्ता नामौषधिः। तया गृहीतया सर्वपरोपक्रमभयानि न भवन्ति ग.व्यू.312क/398.

རྣམ་པར་མི་རྟོག = རྣམ་པར་མི་རྟོག་པ།

རྣམ་པར་མི་རྟོག་པ •*क्रि.* न कल्पयति – སྣ་ཚོགས་ཆོས་ནི་ཐོས་འགྱུར་ཡང་། །དེ་ནི་དེ་ལ་རྣམ་མི་རྟོག།། शृण्वन्ति [? शृणोति] धर्मतां चित्रां न कल्पयति तांश्च सः॥ र.वि.126क/109; •*सं.* अविकल्पनम् – རྟོག་པ་ཉིད་དུ་ཤེས་པ་དེ་ཉིད་ལ་ཡང་རྣམ་པར་མི་རྟོག་པའི་ཕྱིར་རོ།། तस्यैव च कल्पनाज्ञानस्याविविकल्पनात् सू.व्या.140ख/17; अविकल्पना – རྒྱ་ཆེའི་ཕྱིར་དང་ཟབ་པའི་ཕྱིར། །ཡོངས་སུ་སྨིན་དང་རྣམ་མི་རྟོག།། औदार्यादपि गाम्भीर्यात् परिपाकोऽविकल्पना। सू.अ.132क/5; ཟབ་མོ་བསྟན་པས་རྣམ་པར་མི་རྟོག་སྟེ गाम्भीर्यदेशनया अविकल्पना सू.व्या.132ख/5; अकल्पना – རྟག་ཏུ་བྱ་བ་རྣམ་པར་དབྱེ་བའི་ཚིགས་སུ་བཅད་པ་གཉིས་ཏེ། འདོད་པའི་ཉེས་དམིགས་ཤེས་པ་དང་།...།མཚན་མ་རྣམ་པར་མི་རྟོག་པ།། सातत्यकरणीयविभागे द्वौ श्लोकौ। कामेष्वादीनवज्ञानं...निमित्तानामकल्पना सू.व्या.244क/160 2. = རྣམ་པར་མི་རྟོག་པ་ཉིད अविकल्पकत्वम् – དེ་ཉིད་ཀྱི་ཕྱིར་རང་གི་མཚན་ཉིད་སྨྲ་བར་བྱ་བ་དང་སྨྲ་བར་བྱེད་པའི་དངོས་པོར་ཁས་བླངས་ཀྱང་དེ་རྣམ་པར་མི་རྟོག་པར་བརྗོད་དོ།། अत एव स्वलक्षणस्यापि वाच्यवाचकभावमभ्युपगम्यैतदविकल्पकत्वमुच्यते न्या.टी.41ख/52; अविकल्पनता – མཚན་མ་ལ་རྣམ་པར་མི་རྟོག་པ་དང निमित्ताविकल्पनतया अभि.स.भा.109ख/147; • *पा.* अकल्पा, तथतायाः लक्षणभेदः–མེད་དང་ཡོད་ཉིད་གང་ཡིན་དང་། །ཡོད་དང་མེད་པ་མཉམ་ཉིད་དང་། །མ་ཞི་ཞི་དང་རྣམ་མི་རྟོག། །ཡོངས་སུ་གྲུབ་པའི་མཚན་ཉིད་དོ།། अभावभावता या च भावाभावसमानता। अशान्तशान्ताऽकल्पा च परिनिष्पन्नलक्षणम्॥ सू.अ.172क/65; अविकल्पा – རྣམ་པར་མི་རྟོག་པ་ནི་སྤྲོས་པ་མེད་པས་རྣམ་པར་རྟོག་པའི་སྤྱོད་ཡུལ་མ་ཡིན་པའི་ཕྱིར་རོ།། अविकल्पा च विकल्पागोचरत्वात् निष्प्रपञ्चतया सू.व्या.172ख/65; •*वि.* अविकल्पः – ཀྱེ་མ་ངས་ཐོབ་ཅིང་མངོན་པར་རྫོགས་པར་སངས་རྒྱས་པའི་ཆོས་འདི་ནི་ཟབ་པ...མི་རྟོག་པ་རྣམ་པར་མི་རྟོག་པ गम्भीरो बतायं मया धर्मोऽधिगतोऽभिसंबुद्धः...अकल्पोऽविकल्पः ल.वि.187ख/286; དངོས་མེད་ནི་རྣམ་པར་མི་རྟོག་པའི་ཏིང་ངེ་འཛིན་ནོ།། अभावोऽविकल्पः समाधिः ख.टी.

167ख/250; निर्विकल्पः – བཏང་སྙོམས་ཞེས་བྱ་བ་ནི་རྣམ་པར་མི་རྟོག་པའི་ཡེ་ཤེས་ཏེ उपेक्षोच्यते निर्विकल्पं ज्ञानम् सू.व्या.228क/139; མཐོང་བའི་ལམ་ནི་འཇིག་རྟེན་པའི་ཆོས་ཀྱི་མཆོག་གི་འོག་གི་རྣམ་པར་མི་རྟོག་པའི་ཞི་གནས་དང་ལྷག་མཐོང་གི་མཚན་ཉིད་དུ་རིག་པར་བྱའོ॥ दर्शनमार्गो लौकिकाग्रधर्मानन्तरं निर्विकल्पशमथविपश्यनालक्षणो वेदितव्यः अभि.स.भा. 55क/76; རྣམ་པར་མི་རྟོག་སེམས་ཀྱིས་ནི॥ निर्विकल्पेन चेतसा ज्ञा.सि.40क/101; རྣམ་པར་མི་རྟོག་ལམ་ལ་གནས॥ निर्विकल्पपथे स्थिताः प्र.सि.30क/70; निर्विकल्पकः – ཤེས་པའི་ངོ་བོ་རིག་པ་དེ་ཡང་བདག་ཉིད་ཀྱིས་མངོན་སུམ་དུ་བྱེད་ཅིང་རྣམ་པར་མི་རྟོག་པ་དང་མ་འཁྲུལ་བ་ཡིན་ཏེ तच्च ज्ञानरूपवेदनमात्मनः साक्षात्कारि निर्विकल्पकमभ्रान्तं च न्या.टी.43ख/66.

རྣམ་པར་མི་རྟོག་པ་འདོད་པ་ཡིད་ལ་བྱེད་པ *पा.* अविकल्पाभिलाषमनस्कारः, मनस्कारभेदः – རྣམ་པར་མི་རྟོག་པ་འདོད་པ་ཡིད་ལ་བྱེད་པ་ནི་ཕ་རོལ་ཏུ་ཕྱིན་པ་ཡོངས་སུ་རྫོགས་པར་བྱ་བའི་དོན་དུ་ཐབས་ལ་མཁས་པར་འདོད་པའི་ཕྱིར་རོ॥ अविकल्पाभिलाषमनस्कारः पारमितापरिपूरणार्थमुपायकौशल्याभिलाषात् सू.व्या. 178क/72.

རྣམ་པར་མི་རྟོག་པ་ལ་སྤྱོད་པ निर्विकल्पाचारः – རྣམ་པར་མི་རྟོག་པ་ལ་སྤྱོད་པ་བདེ་བའི་ཏིང་ངེ་འཛིན་དང་། སྙོམས་པར་འཇུག་པས་གནས་པ་དེ་བཞིན་གཤེགས་པས་ཐུགས་སུ་ཆུད་པའི་ས་ཐོབ་པར་བྱེད་པ་བདག་གིས་ཁོང་དུ་ཆུད་པ་ཡང་རྣམ་པར་འཕེལ་བར་འགྱུར་རོ་སྙམ་མོ॥ अधिगतं च मे निर्विकल्पाचारः सुखसमाधिसमापत्तिविहारस्तथागतगतिभूमिप्रापको विवृद्धिं यायात् ल.अ.60क/6.

རྣམ་པར་མི་རྟོག་པ་ལ་དབང་བ *पा.* निर्विकल्पवशिता, वशिताभेदः – དབང་རྣམ་པ་བཞི་སྟེ། རྣམ་པར་མི་རྟོག་པ་ལ་དབང་བ་དང་ཞིང་ཡོངས་སུ་དག་པ་ལ་དབང་བ་དང་ཡེ་ཤེས་ལ་དབང་བ་དང་ལས་ལ་དབང་བའོ॥ चतुर्धा वशिता – निर्विकल्पवशिता, क्षेत्रपरिशुद्धिवशिता, ज्ञानवशिता, कर्मवशिता च म.भा.9ख/2.16.

རྣམ་པར་མི་རྟོག་པའི་དབྱིངས *पा.* = སྟོང་པ་ཉིད अविकल्पधातुः, शून्यतापर्यायः – རྣམ་གྲངས་གཞན...མི་གཉིས་པ་ཉིད་དང་རྣམ་པར་མི་རྟོག་པའི་དབྱིངས་དང...མྱ་ངན་ལས་འདས་པ་ལ་སོགས་པའོ॥ अन्येऽपि पर्यायाः...अद्वयता, अविकल्पधातुः...निर्वाणादि म.टी. 213ख/39.

རྣམ་པར་མི་རྟོག་པའི་ཡེ་ཤེས *पा.* अविकल्पज्ञानम् – རྣམ་པར་མི་རྟོག་པའི་ཡེ་ཤེས་ཀྱི་སྟོབས་ཀྱིས་དུས་ཀུན་དུ་མཉམ་པ་ཉིད་དུ་སོང་བས सदा सर्वत्र समतानुगतेनाविकल्पज्ञानबलेन सू.व्या.146ख/26.

རྣམ་པར་མི་རྟོག་པར་འཇུག་པ *ना.* निर्विकल्पप्रवेशा, ग्रन्थः – རྣམ་པར་མི་རྟོག་པར་འཇུག་པའི་གཟུངས་ལས་ཇི་སྐད་དུ...གསུངས་པ यथा निर्विकल्पप्रवेशायां धारण्यामुक्तम् त्रि.भा.168ख/92.

རྣམ་པར་མི་གནས་པ • *सं.* अव्यवस्थानम् – གལ་ཏེ་བདེ་བའི་རྒྱུ་རྣམ་པར་མི་གནས་པའི་ཕྱིར་བདེ་བ་མེད་ན་སྡུག་བསྔལ་གྱི་ཡང་རྣམ་པར་མི་གནས་པའི་ཕྱིར་སྡུག་བསྔལ་ཡང་མེད་པ་ཡིན་ནོ॥ यदि सुखहेत्वव्यवस्थानान्न सुखमिति वः, दुःखमप्यसत् स्यात्, दुःखहेत्वव्यवस्थानात् अभि.स्फु.157ख/885; • *भू.का.कृ.* अव्यवस्थितः – གལ་ཏེ་ཡུལ་འབའ་ཞིག་རྒྱུ་ཡིན་ན་ནི་རྒྱུ་རྣམ་པར་མི་གནས་པ་ཁོ་ནར་ཡང་འགྱུར་བ་ཞིག་ན

ཡང་ यदि हि केवल एव विषयो हेतुः स्यात् स्यादेवाव्यवस्थितो हेतुः अभि.स्फु.157ख/885.

རྣམ་པར་མི་དཔྱོད་པ अविचारणा – གང་ཆོས་རྣམས་ལ་རྣམ་པར་མི་དཔྱོད་རྣམ་པར་མི་རྟོག་པ་དེ་ནི་འཇམ་དཔལ་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་སེམས་དཔའ་ཆེན་པོའི་ཚོ་ག་ཞེས་བྱའོ॥ या खल्वेषु धर्मेष्वविचारणा अविकल्पना, अयमुच्यते मञ्जुश्रीर्बोधिसत्त्वस्य महासत्त्वस्याचारः स.पु.104क/166.

རྣམ་པར་མི་ཕྱེ *भू.का.कृ.* न विभक्तः – ལྷག་མ་ནི་གོ་སླ་བའི་ཕྱིར་རྣམ་པར་མི་ཕྱེའོ॥ शेषं सुगमत्वान्न विभक्तम् त.प.76क/605.

རྣམ་པར་མི་འཁྲོ་བ अविसारः – རྣམ་པར་མི་འཁྲོ་བའི་བསྡུས་པ अविसारसंग्रहः अभि.स.भा.34क/47; अविसरणम् – སེམས་གནས་པ་རྩེ་གཅིག་པ་མི་འཁྲོ་བ་རྣམ་པར་མི་འཁྲོ་བ चित्तस्यावस्थानमेकाग्रता अश[? स]रणमविश[? स]रणम् शि.स.132क/127.

རྣམ་པར་མི་དམིགས་པ अविज्ञप्तितता – དེ་ནི་ལས་དགེ་བ་དང་མི་དགེ་བ་དང་ལུང་དུ་མ་བསྟན་པ་ཡང་དག་པ་ཇི་ལྟ་བ་བཞིན་དུ་རབ་ཏུ་ཤེས་ཏེ...རྣམ་པར་དམིགས་པ་དང་རྣམ་པར་མི་དམིགས་པ་དང स कर्मणां कुशलाकुशलाव्याकृततां च यथाभूतं प्रजानाति...विज्ञप्त्यविज्ञप्तितां च द.भू.252क/49.

རྣམ་པར་མི་འཚེ་བ •*क्रि.* न विहेठयेयुः लो.को.1413; •*सं.* अविहेठः – བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའི་གཞན་གྱི་དོན་མཐའ་དག་ནི་སྦྱིན་པ་ལ་སོགས་པས་གོ་རིམས་བཞིན་དུ་གཞན་དག་ལ་ཡོ་བྱད་ཀྱིས་མི་ཕོངས་པ་དང་རྣམ་པར་མི་འཚེ་བ་དང་རྣམ་པར་འཚེ་བ་བཟོད་པ་དང...དག་གིས་འགྱུར་རོ॥ दानादिभिर्बोधिसत्त्वस्य सकलः परार्थो भवति। यथाक्रमं परेषामुपकरणाविघातैः, अविहेठैः, विहेठनामर्षणैः सू.व्या.196ख/97; •*पा.* अविहिंसा, कुशलमहाभूमिकधर्मभेदः – རྣམ་པར་མི་འཚེ་བ་ནི་རྣམ་པར་འཚེ་བའི་གཉེན་པོ་སྟེ अविहिंसा विहिंसाप्रतिपक्षः त्रि.भा.157क/59; अहिंसा – དད་དང་བག་ཡོད་ཤིན་ཏུ་སྦྱངས། །བཏང་སྙོམས་ངོ་ཚ་ཤེས་ཁྲེལ་ཡོད། །རྩ་བ་གཉིས་རྣམ་མི་འཚེ་དང་། །བརྩོན་འགྲུས་རྟག་ཏུ་དགེ་ལ་འབྱུང༌॥ श्रद्धाऽप्रमादः प्रश्रब्धिरुपेक्षा ह्रीरपत्रपा। मूलद्वयमहिंसा च वीर्यं च कुशले सदा॥ अभि.को.5क/188.

རྣམ་པར་མི་གཞག་པ *क्रि.* न व्यवस्थाप्यते – དེ་ཉིད་ཀྱི་ཕྱིར་བསམ་གཏན་གཉིས་པ་ལ་སོགས་པ་ན་རྣམ་པར་མི་གཞག་པ་སྟེ अत एव द्वितीयादिषु ध्यानेषु न व्यवस्थाप्यते अभि.भा.75ख/1162.

རྣམ་པར་མི་གཡེང = རྣམ་པར་མི་གཡེང་བ།

རྣམ་པར་མི་གཡེང་བ *सं.* अविक्षेपः – དེ་ནི་འདུ་འཛི་མེད་པའི་རྒྱུ་དང་རྣམ་པར་མི་གཡེང་བའི་རྒྱུ་དང་ཚོ་ག་ཕུན་སུམ་ཚོགས་པའི་རྒྱུ་ཡིན་ནོ॥ तद् अव्यासङ्गकारणम्, अविक्षेपकारणम्, आचारकारणं च अभि.स्फु.161क/891; གལ་ཏེ་འདི་སྙམ་དུ། སེམས་གཉིས་པ་ཉིད་དེ་འཛིན་དེའི་སྟོབས་ནས་དམིགས་པ་དེ་ལས་རྣམ་པར་མི་གཡེང་བ་ཡིན་ནོ་སྙམ་དུ་སེམས་ན <?> यद्येतत् स्यात्–द्वितीयस्य चित्तस्य तस्मात् समाधेरविक्षेपः अभि.स्फु.284क/1126; •*पा.* अविक्षिप्ता, अनुधर्मप्रतिपत्तिभेदः – རྣམ་པ་འདི་གཉིས་ནི་རྗེས་སུ་མཐུན་པའི་ཆོས་སྒྲུབ་པ་སྟེ། འདི་ལྟར་རྣམ་པར་མི་གཡེང་བ་དང་ཕྱིན་ཅི་མ་ལོག་པར་སྒྱུར་བའོ॥ इत्येषा द्विविधाऽनुधर्मप्रतिपत्तिर्यदुत–अविक्षिप्ता चाऽविपर्यासपरिणता च म.भा.21ख/5.11; •*वि.* प्रणिहितः – བདེ་གཤེགས་གསུང་ནི...།དགེ་སློང

ཚོགས་ཀྱི་ཕྱུགས་ནི་རྣམ་པར་མི་གཡེང་བས། །མཚོག་ཏུ་འབྱུང་ནས་དགེ་བ་བརྟན་པའི་སྐད་དུ་གྱུར། सुगतवचः ...प्रणिहितहृदयः परं निपीय स्थिरकुशलाय बभूव भिक्षुसङ्घः ॥ अ.क.240क/27.60.

རྣམ་པར་མི་རིག་པའི་དོན *पा.* अविज्ञातार्थम्, निग्रहस्थानभेदः – རྐང་མིག་ཚར་གཅད་པའི་གནས་ནི་ཉི་ཤུ་རྩ་གཉིས་ཏེ་སྐད་བཤད་པ་ཡིན་ཏེ། དམ་བཅའ་བ་ལ་གནོད་པ་དང་...རྣམ་པར་མི་རིག་པའི་དོན་དང་...གཏན་ཚིགས་ལྟར་སྣང་བ་རྣམས་ཚར་གཅད་པའི་གནས་ཡིན་ཏེ यदुक्तमक्षपादेन द्वाविंशतिविधं निग्रहस्थानम्–प्रतिज्ञाहानिः...अविज्ञातार्थम्...हेत्वाभासाश्च निग्रहस्थानानि वा.टी.107क/73.

རྣམ་པར་མི་ལྟུང་བ अविनिपातः – དེས་ཀུན་དུ་སྦྱོར་བ་གསུམ་པོ་དེ་དག་སྤྲངས་པས་རྒྱུན་དུ་ཞུགས་པ་ཡིན། རྣམ་པར་མི་ལྟུང་བའི་ཆོས་ཅན་ཡིན स एषां त्रयाणां संयोजनानां प्रहाणात् स्रोतापन्नो भवति, अविनिपातधर्मा अभि.स्फु.133ख/841.

རྣམ་པར་སྒྲོས་པ • *सं.* विभ्रमः – བཤད་པ་བརྗོད་པ་ལ་མངོན་པར་དགའ་བའི་སེམས་ཅན་རྣམས་དང་...སེམས་རྣམ་པར་སྒྲོས་པར་གྱུར་[? འགྱུར་]ན देशनापाठाभिरतानां सत्त्वानां चित्तविभ्रमो भविष्यति ल.अ.60ख/6; • *भू.का.कृ.* विमोहितः – རྒྱུ་དང་འབྲས་བུ་ངན་ལྟ་བས། །མུ་སྟེགས་ཅན་ཀུན་རྣམ་པར་སྒྲོས། कार्यकारणदुर्दृष्ट्या तीर्थ्याः सर्वे विमोहिताः । ल.अ.129क/75.

རྣམ་པར་དམན་པ *वि.* विहीनः – དངོས་པོ་དག་གིས་རྣམ་པར་དམན་པ भावाद्विहीनम् वि.प्र.32क/4.6; དེས་དམན་པ་ནི་རྩ་ཕྱེད་བྱེད་ཀྱིས་རྣམ་པར་དམན་པའོ། तया हीनं चार्द्धनाडीविहीनम् वि.प्र.200क/1.76.

རྣམ་པར་དམར་བ *पा.* विलोहितकम्, अशुभताभेदः – དེ་ལ་ཕྱི་རོལ་ལ་བརྟེན་པའི་མི་གཙང་བའི་མི་སྡུག་པ་ཉིད་གང་ཞེ་ན། འདི་ལྟ་སྟེ། རྣམ་པར་བསྔོས་པ་དང་...རྣམ་པར་དམར་བ་དང तत्र बहिर्धा चोपादाय अशुभता कतमा? तद्यथा–विनीलकं वा...विलोहितकं वा श्रा.भू.79ख/203; པགས་པ་དང་ཤ་དང་ཁྲག་མེད་ཅིང་རྒྱུ་རྒྱུས་ཙམ་གྱིས་འབྲེལ་བ་ལ་ནི་རྣམ་པར་དམར་བར་མོས་པར་བྱེད་དོ། अपगतत्वङ्मांसशोणितं स्नायुमात्रोपनिबद्धं विलोहितकमित्यधिमुच्यते श्रा.भू.136क/372.

རྣམ་པར་དམར་བའི་འདུ་ཤེས *पा.* विलोहितकसंज्ञा, अशुभभावनाविशेषः म.व्यु.1160 (24ख).

རྣམ་པར་དམིགས་པ • *सं.* 1. विलम्बः – སེམས་ཅན་ཐམས་ཅད་སྡུག་བསྔལ་དང་འབྲལ་བའི་སྨོན་ལམ་གྱིས་རྣམ་པར་དམིགས་པ་ཞེས་བྱ་བའི་ཏིང་ངེ་འཛིན सर्वसत्त्वदुःखविप्रमोक्षप्रणिधिविलम्बो नाम समाधिः ग.व्यू.127क/214 2. विज्ञप्तिः – གཟུགས་སུ་རྣམ་པར་དམིགས་པའི་གནས་ཐམས་ཅད་གཟུགས་བརྙན་ལྟ་བུར་མངོན་པར་སྒྲུབ་པོ། प्रतिभासोपमं सर्वरूपविज्ञप्त्यधिष्ठानमभिनिर्हरति ग.व्यू.205ख/287; འཇིག་རྟེན་ཐམས་ཅད་ཀྱང་རྣམ་པར་དམིགས་པ་དང་མཉམ་པར་རབ་ཏུ་རྟོགས་པར་བྱེད་དོ། विज्ञप्तिसमं च सर्वलोकमवतरति ग.व्यू.206क/287; བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའི་ཏིང་ངེ་འཛིན་དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་སྤྲུལ་པ་ཡོངས་སུ་བསྟན་པས་ཀུན་ཏུ་རྣམ་པར་དམིགས་པ་མངོན་པར་སྒྲུབ་པ་དང सर्वतथागतनिर्माणसंदर्शनसमन्तविज्ञप्त्यभिनिर्हारेण बोधिसत्त्वसमाधिना ग.व्यू.207क/29 3. विज्ञापनम् – དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་ཐམས་ཅད་མངོན་དུ་རྣམ་པར་དམིགས་པ་ཞེས་བྱ་བའི་ཏིང་ངེ་འཛིན सर्वतथागताभिमुखविज्ञापनो नाम स-

माधिः ग.व्यू.127क/214.

རྣམ་པར་དམིགས་པ་དང་རྣམ་པར་མི་དམིགས་པ विज्ञप्त्यविज्ञप्तिता – དེ་ནི་ལས་དགེ་བ་དང་མི་དགེ་བ་དང་ལུང་དུ་མ་བསྟན་པ་ཡང་དག་པ་ཇི་ལྟ་བ་བཞིན་དུ་རབ་ཏུ་ཤེས་ཏེ། རྣམ་པར་དམིགས་པ་དང་རྣམ་པར་མི་དམིགས་པ་དང स कर्मणां कुशलाकुशलाव्याकृततां च यथाभूतं प्रजानाति, विज्ञप्त्यविज्ञप्तितां च द.भू. 252क/49.

རྣམ་པར་དམིགས་པར་འགྱུར *क्रि.* विज्ञापनं भवति – དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་འཁོར་གྱི་དཀྱིལ་འཁོར་ཀྱང་རྣམ་པར་དམིགས་པར་འགྱུར་ཏེ सर्वतथागतपर्षन्मण्डलविज्ञापनं च भवति द.भू.262ख/56.

རྣམ་པར་དམིགས་པར་བྱེད = རྣམ་པར་དམིགས་པར་བྱེད་པ།

རྣམ་པར་དམིགས་པར་བྱེད་པ •*क्रि.* विज्ञपयति – ཆོས་ཐམས་ཅད་ཀྱི་སྤྲིན་དབྱངས་ཀྱི་ཡན་ལག་རྒྱ་མཚོ་བརྗོད་དུ་མེད་པས་རྣམ་པར་དག་པ་དམིགས་པ་ཐམས་ཅད་ལས་རབ་ཏུ་འབྱུང་བ་[? ལ་རབ་ཏུ་འཇུག་པ་]རྣམ་པར་དམིགས་པར་བྱེད་པའོ॥ सर्वधर्ममेघानभिलाप्यस्वराङ्गसमुद्रविशुद्धिं सर्वारम्बणेषु प्रवर्तमानां विज्ञपयन्ति ग.व्यू.207ख/288; •*सं.* 1. विज्ञापनम् – འཁོར་བ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་སྡུག་བསྔལ་གྱིས་གཟིར་བའི་སེམས་ཅན་འབྱུང་བའི་ང་རོ་རབ་ཏུ་བསྒྲགས་པས་རྣམ་པར་དམིགས་པར་བྱེད་པ་ཞེས་བྱ་བའི་ཏིང་ངེ་འཛིན सर्वसंसारदुःखप्रतिपीडितसर्व[? सत्त्व]निर्याणनिर्घोषविज्ञापनो नाम समाधिः ग.व्यू.227क/214; विज्ञपनम् – སེམས་ཅན་ཐམས་ཅད་ཀྱི་ལུས་ཀྱི་དབྱིབས་དང་འདྲ་བར་རང་གི་ལུས་རྣམ་པར་དམིགས་པར་བྱེད་པའི་ལུས་དང་ལྡན་པ सर्वसत्त्वकायसंस्थानसदृशस्वशरीरविज्ञपनकायाम् ग.व्यू.179ख/265 2. विज्ञप्तिता – སྐྱེ་བའི་སྒོ་ཀུན་ནས་འབྱུང་བ་རྣམ་པར་དམིགས་པར་བྱེད་པ་དང आयतनद्वारसमुदयविज्ञप्तितां च द.भू.253क/50.

རྣམ་པར་རྨོངས = རྣམ་པར་རྨོངས་པ།

རྣམ་པར་རྨོངས་པ •*भू.का.कृ.* विमूढः – ལས་ཀྱི་དབང་གིས་མི་མཁས་རྣམ་པར་རྨོངས། །དམྱལ་བའམ་འོན་ཏེ་དུད་འགྲོའི་འགྲོ་རྣམས་སམ། །ཡི་དྭགས་འགྲོ་བ་རྣམས་སུ་སྡུག་བསྔལ་རྙེད॥ कर्मवशादबुधो हि विमूढः। नरकेष्वथ तिर्यग्गतिषु प्रेतगतिषु च विन्दति दुःखम्॥ रा.प.236ख /132; ལས་ཀྱི་དབང་གིས་མི་མཁས་རྣམ་པར་རྨོངས॥ कर्मवशादबुधो हि विमूढः शि.स.36क/34; विमोहितः – དེ་[? བདེ་]བས་རྣམ་པར་རྨོངས་པའི་ཡིད། །གང་དང་གང་ལ་ཆགས་གྱུར་པ། །དེ་དང་དེ་བརྒྱ་སྟོང་འགྱུར་དུ། །སྡུག་བསྔལ་ཉིད་དུ་གྱུར་ཅིང་ལྡང་॥ यत्र यत्र रतिं याति मनः सुखविमोहितम्। तत्तत्सहस्रगुणितं दुःखं भूत्वोपतिष्ठति॥ बो.अ.24क/8.18; འདོད་ཆགས་དྲག་པོའི་ཤ་ཟ་ནི། །ཆེན་པོས་རྣམ་པར་རྨོངས་པ་དེས॥ तीव्ररागपिशाचेन महता स विमोहितः। अ.क. 107ख/64.236; བདག་ལ་ཕན་འདོད་རྣམ་རྨོངས་པས། །གང་དོན་ཉིད་དུ་བཙོང་བ་ཡང་॥ यदर्थमेव विक्रीत आत्मा कामविमोहितैः। बो.अ.26क/8.75; •*वि.* विह्वलः – མུ་སྟེགས་རྒྱུ་ཡི་ཕྱོགས་ཀྱིས་བསྣད། །གཞན་ཡང་རྐྱེན་གྱིས་རྣམ་པར་རྨོངས॥ तीर्थ्या कारणदिग्मूढा अन्ये प्रत्ययविह्वलाः। ल.अ.191क/164.

རྣམ་པར་རྨོངས་པར་བྱས *भू.का.कृ.* विमोहितः – སྔོན་གྱི་སྐྱེ་བ་གཞན་ལ་དེ་དང་བྲལ་བ་ཡིས། །འདོད་པས་རྣམ་པར་རྨོངས་པར་བྱས་ཏེ་བདག་གིས་ཀྱང་॥ मयापि तस्या विरहेण पूर्वं जन्मान्तरे मारविमोहितेन। अ.क.89क /64.8.

རྣམ་པར་རྨོངས་པར་བྱེད *क्रि.* विमोहयति – སྙིང་སྡུག་གཉེན་དག་འགྲོགས་པ་དག། །བྲལ་ན་རྣམ་པར་རྨོངས་པར་བྱེད།། विमोहयन्ति विरहे सुहृद्बन्धुसमागमाः ॥ अ.क.136क/67.21; व्यामोहयति – ལྷ་དང་ལྷ་མ་ཡིན་གྱི་འཇིག་རྟེན་གྱི་ཚིག་དང་ཡི་གེ་སྣ་ཚོགས་ཀྱིས་རྣམ་པར་རྨོངས་པར་བྱེད་དོ།། ...མི་རྣམས་ལྟ་ཅི་སྨོས देवासुरलोकं विचित्रपदव्यञ्जनैर्व्यामोहयति ...किमङ्ग पुनर्मानुषान् ल.अ.124ख/71.

རྣམ་པར་སྨད = རྣམ་པར་སྨད་པ།

རྣམ་པར་སྨད་པ • *क्रि.* 1. विगर्हति– རྣམ་གྲངས་དུ་མར་འདོད་པ་ལ་འདོད་ཆགས་དང...ལ་རྣམ་པར་སྨད་པ་དང་རྣམ་པར་མི་སྙན་པར་བརྗོད་པ་དང अनेकपर्यायेण कामरागं...विगर्हन्ति, विवर्णयन्ति श्रा.भू.40क/102 2. विवर्जयेत् – མཐོང་དང་ཐོས་དང་དོགས་པ་ཡིས། །ཤ་རྣམས་ཐམས་ཅད་རྣམ་པར་སྨད།། दृष्टश्रुतविशङ्काभिः सर्वं मांसं विवर्जयेत् । शि.स.76क/74; ल.अ.157ख/105; • *भू.का.कृ.* विजुगुप्सितः –བརྙས་པ་དང་མི་སྙན་པར་བརྗོད་པ་དང་རྣམ་པར་སྨད་ན་ཡང་། རྣམ་པར་འགྱུར་བ་མེད་ཅིང विमानितोऽपि, विवर्णितोऽपि, विजुगुप्सितोऽपि न विकृतिमापद्यते श्रा.भू.53ख/130.

རྣམ་པར་སྨིན = རྣམ་པར་སྨིན་པ།

རྣམ་པར་སྨིན་སྐྱེས = རྣམ་སྨིན་སྐྱེས་པ།

རྣམ་པར་སྨིན་པ •*क्रि.* विपच्यते – གང་དུ་ལས་ཀྱི་རྣམ་པར་སྨིན། །དེར་ནི་ལས་ཀྱིས་ཁྱད་པར་བྱེད།། तत्र प्रकर्षते कर्म यत्र कर्म विपच्यते ॥ अ.श.102क/91; • *सं.* 1. विपाकः – འཇིག་རྟེན་ཕ་རོལ་མེད་པས། དགེ་བ་དང་མི་དགེ་བའི་ལས་ཀྱི་རྣམ་པར་སྨིན་པ་ལྟ་ག་ལ་ཡོད नास्ति परलोकः, कुतः शुभाशुभानां कर्मणां विपाकः जा.मा.173क/200; དེ་ནས་ཅི་སྟེ་མིར་སྐྱེས་ན་ཡང་རྣམ་པར་སྨིན་པ་གཉིས་མངོན་པར་འགྲུབ་པ་འདི་ལྟ་སྟེ། ལོངས་སྤྱོད་ཆུང་བ་དང་ཐུན་མོང་གི་ལོངས་སྤྱོད་དུ་འགྱུར་བའོ།། अथ चेत्पुनर्मनुष्येषु उपपद्यते, द्वौ विपाकावभिनिर्वर्तयति–परीत्तभोगतां च साधारणभोगतां च द.भू.190क/17; འབྲས་བུའི་དུས་སུ་ཕྱིན་པའི་ལས་ནི་རྣམ་པར་སྨིན་པ་ཞེས་བྱ་སྟེ། རྣམ་པར་སྨིན་པར་འགྱུར་བའི་ཕྱིར་རོ།། फलकालप्राप्तं वा कर्म 'विपाकः' इत्युच्यते, विपच्यत इति कृत्वा अभि.भा.44ख/97; ལས་དེའི་རྣམ་པར་སྨིན་པས་ཚེ་རབས་ལྔ་བརྒྱར་ཡི་དྭགས་རྣམས་སུ་སྐྱེས་པར་གྱུར་ཏེ तस्य कर्मणो विपाकेन पञ्चजन्मशतानि प्रेतेषूपपन्नाः वि.व.153ख/1.42; विपक्तिः – འབྲས་བུ་ནི་རྣམ་པར་སྨིན་པ་ཁོ་ན་ཡིན་པས་རྣམ་པར་སྨིན་པའོ།། फलं तु विपक्तिरेवेति विपाकः अभि.भा.44ख/97; प्लुतिः – ལས་ཀྱི་རྣམ་པར་སྨིན་པ कर्मप्लुतिः बो.प.57क/19; पाकः – སྡུག་བསྔལ་སྨད་ཅིང་གདུང་བ་དེ། །ལས་ནི་ཅི་ཡི་རྣམ་སྨིན་ལགས།། दुःखावमानसन्तापः स पाकात्कस्य कर्मणः ॥ अ.क.141ख/68.7; परिपाकः लो.को.1419 2. वैपाक्यम् – རྣམ་པར་སྨིན་པའང་ཁམས་ཏེ། གང་ལས་གྲུབ་ཟིན་པའོ།། <?> वैपाक्यं च यतो निर्वृत्तम् अभि.स.भा.3क/2; • *पा.* 1. विपाकः i. परिणामभेदः – གྱུར་པ་རྣམ་པ་གསུམ་པོ་དེ་དག་ནི་རྣམ་པར་སྨིན་པ་ཞེས་བྱ་བ་དང་རང་སེམས་པ་ཞེས་བྱ་བ་དང་ཡུལ་ལ་རྣམ་པར་རིག་པ་ཞེས་བྱའོ།། स एष त्रिविधः परिणामः–विपाकाख्यः, मननाख्यः विषयविज्ञप्त्याख्यश्च त्रि.भा.149ख/35 ii. फलभेदः – ཚེ་ཕྱི་མ་ལ་རྣམ་པར་སྨིན་པ་དང་རྒྱུ་མཐུན་པའི་འབྲས་བུ་འབྱིན་པ་ཉིད आयत्यां विपाकफलनिःष्यन्दफलदानता सू.व्या.176ख/71 iii. क्षणभेदः – སྐད

ཅིག་མ་བཞི་ནི། རྣམ་པ་སྣ་ཚོགས་དང་རྣམ་པར་སྨིན་པ་དང་རྣམ་པར་ཉེད་པ་དང་མཚན་ཉིད་དང་བྲལ་བའོ॥ चत्वारः क्षणाः–विचित्रविपाकविमर्दविलक्षणाश्चेति हे.त.3क/4; हे.त.16ख/52 **iv.** हेतुभेदः – བྱེད་རྒྱུ་ལྷན་ཅིག་འབྱུང་བ་དང་། །སྐལ་མཉམ་མཚུངས་པར་ལྡན་པ་དང་། །ཀུན་ཏུ་འགྲོ་དང་རྣམ་སྨིན་དང་། །རྒྱུ་ནི་རྣམ་པ་དྲུག་ཏུ་འདོད॥ कारणं सहभूश्चैव सभागः सम्प्रयुक्तकः। सर्वत्रगो विपाकाख्यः षड्विधो हेतुरिष्यते॥ अभि.को.6क/2.49 **2.** वैपाक्यः, चित्तोत्पादभेदः – སེམས་བསྐྱེད་པ་རབ་ཏུ་དབྱེ་བར་ཚིགས་སུ་བཅད་པ། སེམས་བསྐྱེད་དེ་ནི་ས་རྣམས་ལ། །མོས་དང་ལྷག་བསམ་དག་པ་དང་། །རྣམ་པར་སྨིན་པ་གཞན་དུ་འདོད། །དེ་བཞིན་སྒྲིབ་པ་སྤངས་པ་འོ॥ चित्तोत्पादप्रभेदे श्लोकः। चित्तोत्पादोऽधिमोक्षोऽसौ शुद्धाध्याशयिकोऽपरः। वैपाक्यो भूमिषु मतस्तथावरणवर्जितः॥ सू.व्या. 139क/15; • *वि.* वैपाकिकः – སྤྲུལ་པ་དག་གིས་གང་བཤད་པ། །རྣམ་སྨིན་རྒྱལ་བས་མ་ཡིན་ནོ॥ यद्धि नैर्माणिकाभाष्टं न तु वैपाकिकैर्जिनैः॥ ल.अ.164ख/116.

རྣམ་པར་སྨིན་པ་བསྐྱེད་ནས विपाकं दत्त्वा–དེ་ལ་རྣམ་པར་སྨིན་པའི་རྒྱུས་བསྐྱེད་པ་རྣམ་པར་སྨིན་པའི་འབྲས་བུ་བསྐྱེད་པའི་ནུས་པ་ནི་རྣམ་པར་སྨིན་པ་བསྐྱེད་ནས་ལྡོག་གོ॥ तत्र विपाकहेत्वाहितं तु विपाकफलदानसामर्थ्यं विपाकं दत्वा विनिवर्तते अभि.भा.94ख/1230.

རྣམ་པར་སྨིན་པ་རྒྱ་ཆེ་བ उदारविपाकः – མི་འདྲ་བར་སྨིན་པས་ན་རྣམ་པར་སྨིན་པ། རྣམ་པར་སྨིན་པ་རྒྱ་ཆེ་བ विसदृशः पाको विपाकः। उदारविपाकः म.व्यु. 6586 94ख).

རྣམ་པར་སྨིན་པ་དག་པ विपाकशुद्धिः – ཡིད་གཞུངས་པ་ཡོངས་སུ་སྨིན་པ་ལས་བརྩམས་ཏེ་ཚིགས་སུ་བཅད་པ། རྣམ་སྨིན་དག་ཅིང... ।ཤིན་ཏུ་ཡིད་གཞུངས་ཡོངས་སུ་སྨིན་པའི་མཚན॥ मेधापरिपाकमारभ्य श्लोकः। विपाकशुद्धिः...सुमेधतायाः परिपाकलक्षणम्॥ सू.व्या. 149ख/32; विपाकविशुद्धिः – དེ་ལ་ཡིད་གཞུངས་པ་དང་མཐུན་པའི་རྣམ་པར་སྨིན་པ་དག་པ་ནི་རྒྱུའོ॥ तत्र मेधानुकूला विपाकविशुद्धिः कारणम् सू.व्या.149ख/32.

རྣམ་པར་སྨིན་པ་དང་ལྡན་པ *उ.प.* विपाकः – ལེ་ལོ་ཅན་ནི་སྡུག་བསྔལ་བཞིན་དུ་གནས་པ་སྟེ...སྡུག་བསྔལ་གྱི་རྣམ་པར་སྨིན་པ་དང་ལྡན་པ་རྣམས་དང दुःखं हि कुसीदो विहरति...दुःखविपाकैः अ.श.241ख/222.

རྣམ་པར་སྨིན་པ་བདེ་བ सुखविपाकः – ད་ལྟར་བྱུང་བ་ལ་སྡུག་བསྔལ་ལ་ཕྱི་མ་ལ་རྣམ་པར་སྨིན་པ་བདེ་བ प्रत्युत्पन्नदुःखं आयत्यां सुखविपाकम् म.व्यु.1562 (35ख).

རྣམ་པར་སྨིན་པ་སྡུག་བསྔལ་བ दुःखविपाकः – ད་ལྟར་བྱུང་བ་ལ་བདེ་ལ་ཕྱི་མ་ལ་རྣམ་པར་སྨིན་པ་སྡུག་བསྔལ་བ प्रत्युत्पन्नसुखं आयत्यां दुःखविपाकम् म.व्यु.1561 (35ख).

རྣམ་པར་སྨིན་པ་མེད་པ अविपाकता – རྣམ་པར་སྨིན་པ་ཡོད་པ་དང་རྣམ་པར་སྨིན་པ་མེད་པ་དང विपाकाविपाकतां च द.भू.252ख/49.

རྣམ་པར་སྨིན་པ་ཡོད་པ विपाकः – རྣམ་པར་སྨིན་པ་ཡོད་པ་དང་རྣམ་པར་སྨིན་པ་མེད་པ་དང विपाकाविपाकतां च द.भू.252क/49.

རྣམ་པར་སྨིན་པ་ཡོད་པ་དང་རྣམ་པར་སྨིན་པ་མེད་པ विपाकाविपाकता – དེ་ནི་ལས་དགེ་བ་དང་མི་དགེ་བ་དང་ལུང་དུ་མ་བསྟན་པ་ཡང་དག་པ་ཇི་ལྟ་བ་བཞིན་དུ

རབ་ཏུ་ཤེས་ཏེ།...རྣམ་པར་སྨིན་པ་ཡོད་པ་དང་རྣམ་པར་སྨིན་པ་མེད་པ་དང स कर्मणां कुशलाकुशलाव्याकृततां च यथाभूतं प्रजानाति... विपाकाविपाकतां च द.भू.252क/49.

རྣམ་པར་སྨིན་པ་ལ་ཆགས་པ *पा.* विपाकसक्तिः, सक्तिभेदः – ཆགས་པ་རྣམ་པ་བདུན་ནི་སྦྱིན་པའི་མི་མཐུན་པའི་ཕྱོགས་ཡིན་ཏེ། ལོངས་སྤྱོད་ལ་ཆགས་པ་དང...རྣམ་པར་སྨིན་པ་ལ་ཆགས་པ सप्तविधा सक्तिर्दानस्य विपक्षः । भोगसक्तिः... विपाकसक्तिः सू.व्या.203क/105.

རྣམ་པར་སྨིན་པ་ལ་བརྟེན་པ *पा.* विपाकसन्निश्रिता, पारमिताभावनाया अवान्तरभेदः – ཕ་རོལ་ཏུ་ཕྱིན་པ་སྒོམ་པ་ནི་དངོས་པོ་ལ་བརྟེན་པ་ནས་དབང་འབྱོར་བ་ཉིད་ལ་བརྟེན་པའི་བར་རྣམ་པ་ལྔ་ཡིན་ནོ།། དེ་ལ་དངོས་པོ་ལ་བརྟེན་པ་ཡང་རྣམ་པ་བཞི་སྟེ། རྒྱུ་ལ་བརྟེན་པ...རྣམ་པར་སྨིན་པ་ལ་བརྟེན་པ་ནི་ལུས་ཕུན་སུམ་ཚོགས་པའི་སྟོབས་ཀྱིས་གང་ཡིན་པའོ།།...སོ་སོར་རྟོག་པའི་སྟོབས་ལ་བརྟེན་པ पञ्चविधा पारमिताभावना–उपधिसन्निश्रिता[तः विभुत्वसन्निश्रिता यावत्] । तत्रोपधिसन्निश्रिता चतुष्प्रकारा–हेतुसन्निश्रिता...विपाकसन्निश्रिता य आत्मभावसम्पत्तिबलेन ... प्रतिसंख्यानसन्निश्रिता सू.व्या.198ख/100.

རྣམ་པར་སྨིན་པ་ལ་སྡུག་བསྔལ་བ = རྣམ་པར་སྨིན་པ་སྡུག་བསྔལ་བ།

རྣམ་པར་སྨིན་པ་ལ་རེ་བ་མེད་པ • *वि.* विपाकाप्रतिकाङ्क्षी लो.को.1414; • *सं.* विपाकाप्रतिकाङ्क्षता – བདོག་པ་ཐམས་ཅད་ཡོངས་སུ་གཏོང་ཞིང་རྣམ་པར་སྨིན་པ་ལ་རེ་བ་མེད་པ་དང सर्वस्वपरित्यागिनो विपाकाप्रतिकाङ्क्षता रा.प.234ख/128.

རྣམ་པར་སྨིན་པ་ལས་སྐྱེས་པ • *वि.* विपाकजः – རྣམ་པར་སྨིན་ལས་སྐྱེས་པ་དང་། །རྒྱས་ལས་བྱུང་བ་ནང་གི་ལྔ།། विपाकजौपचयिकाः पञ्चाध्यात्मम् अभि.को.3ख/97; དེ་ལ་རྣམ་པར་སྨིན་པའི་རྒྱུ་ལས་སྐྱེས་པ་ནི་རྣམ་པར་སྨིན་པ་ལས་སྐྱེས་པ་སྟེ तत्र विपाकहेतोर्जाताः विपाकजाः अभि.भा.44ख/97; ल.अ.164क/116; • *पा.* विपाकजम्, कामावचरानिवृताव्याकृतभेदः – རྣམ་སྨིན་སྐྱེས་དང་སྤྱོད་ལམ་པ། །བཟོ་ཡི་གནས་དང་སྤྲུལ་པ་དང་། །འདོད་ན་ལུང་བསྟན་མིན་རྣམ་བཞི།། विपाकजैर्यापथिकशैल्पस्थानिकनैर्मितम् । चतुर्धाऽव्याकृतं कामे अभि.को.6ख/362; འདོད་པ་ན་སྤྱོད་པའི་མ་བསྒྲིབས་ལ་ལུང་དུ་མ་བསྟན་པ་ལ་ནི་རྣམ་པར་སྨིན་པ་ལས་སྐྱེས་པ་དང་སྤྱོད་ལམ་པ་དང་བཟོའི་གནས་པ་དང་སྤྲུལ་པའི་སེམས་དང་རྣམ་པ་བཞིར་དབྱེའོ།། कामावचरमनिवृताव्याकृतं चतुर्धा भिद्यते–विपाकजम्, ऐर्यापथिकम्, शैल्पस्थानिकम्, निर्माणचित्तं च अभि.भा.104ख/362.

རྣམ་པར་སྨིན་པ་ལས་བྱུང་བ *वि.* विपाकजः – རྣམ་པར་སྨིན་ལས་བྱུང་བ་དང་། །རྒྱས་ལས་བྱུང་བ་ནང་གི་ལྔ།། विपाकजौपचयिकाः पञ्चाध्यात्मम् अभि.को.3ख/97; त्रि.भा.151क/40.

རྣམ་པར་སྨིན་པ་ལས་འབྱུང་བ *वि.* विपाकजः – ལ་ལ་སྤྲུལ་པའི་སངས་རྒྱས་དང་། །སངས་རྒྱས་ལ་ལ་རྣམ་སྨིན་འབྱུང་།། केन निर्माणिका बुद्धाः केन बुद्धा विपाकजाः । ल.अ.65ख/13; द्र. རྣམ་པར་སྨིན་པ་ལས་བྱུང་བ།

རྣམ་པར་སྨིན་པའི་རྒྱུ *पा.* विपाकहेतुः, हेतुभेदः – རྒྱུ་ནི་དྲུག་པོ་འདི་དག་སྟེ། བྱེད་པའི་རྒྱུ་དང...རྣམ་པར་སྨིན་པའི་རྒྱུའོ།། षडिमे हेतवः–कारणहेतुः... विपाकहेतुरिति अभि.भा.86क/280; རྣམ་སྨིན་རྒྱུ་ནི་མི་དགེ་དང་། །དགེ

བ་ཟག་བཅས་རྣམས་ཡིན་ནོ॥ विपाकहेतुरशुभाः कुशलाश्चैव सास्रवाः ॥ अभि.को.6क/310; འབྲས་བུ་སྐྱེ་བའི་དུས་ན་རྣམ་པར་སྨིན་པའི་རྒྱུ་མེད་པའི་ཕྱིར फलोत्पत्तिकाले विपाकहेतोरभावात् त.प.82क/616.

རྣམ་པར་སྨིན་པའི་རྣམ་པར་ཤེས་པ *पा.* विपाकविज्ञानम्, आलयविज्ञानम् – སྔོན་གྱི་ལས་ལས་ངེས་པར་བྱུང་བའི་ཕྱིར་རྣམ་པར་སྨིན་པའི་རྣམ་པར་ཤེས་པའོ॥ पूर्वकर्मनिर्मितत्वात् विपाकविज्ञानम् अभि.स.भा. 9ख/11.

རྣམ་པར་སྨིན་པའི་བག་ཆགས *पा.* विपाकवासना–རྣམ་པར་ཤེས་པ་ནི་རྣམ་པར་སྨིན་པའི་བག་ཆགས་དང་རྒྱུ་མཐུན་པའི་བག་ཆགས་བདག་ལ་སྐྱེ་མི་ནུས་ཏེ न हि विज्ञानं विपाकवासनां निष्यन्दवासनां वा स्वात्मन्याधातुं समर्थम् त्रि.भा.166ख/86.

རྣམ་པར་སྨིན་པའི་འབྲས་བུ *पा.* विपाकफलम्, फलभेदः – མདོར་བསྡུ་ན་འབྲས་བུ་ནི་ལྔ་སྟེ། རྣམ་པར་སྨིན་པའི་འབྲས་བུ་དང་རྒྱུ་མཐུན་པའི་འབྲས་བུ་དང་བྲལ་བའི་འབྲས་བུ་དང་སྐྱེས་བུ་བྱེད་པའི་འབྲས་བུ་དང་བདག་པོའི་འབྲས་བུའོ॥ समासतः पञ्च फलानि–विपाकफलम्, निष्यन्दफलम्, विसंयोगफलम्, पुरुषकारफलम्, अधिपतिफलञ्च बो.भू.55ख/72.

རྣམ་པར་སྨིན་པའི་འབྲས་བུ་བསྐྱེད་པ विपाकफलदानम् – དེ་ལ་རྣམ་པར་སྨིན་པའི་རྒྱུས་བསྐྱེད་པ་རྣམ་པར་སྨིན་པའི་འབྲས་བུ་བསྐྱེད་པའི་ནུས་པ་ནི་རྣམ་པར་སྨིན་པ་བསྐྱེད་ནས་ལྡོག་གོ॥ तत्र विपाकहेत्वाहितं तु विपाकफलदानसामर्थ्यं विपाकं दत्वा विनिवर्तते अभि. भा.94ख/1230.

རྣམ་པར་སྨིན་པའི་འབྲས་བུ་འབྱིན་པ *वि.* विपाकफलदः – ཐམས་ཅད་བདག་པོ་རྒྱུ་མཐུན་དང་། །རྣམ་སྨིན་འབྲས་བུ་འབྱིན་པར་འདོད॥ सर्वेऽधिपतिनिष्यन्दविपाकफलदा मताः । अभि.को.14क/710.

རྣམ་པར་སྨིན་པའི་གཟུགས विपाकरूपम् – རྣམ་པར་སྨིན་པའི་གཟུགས་ལ་ནི་དེ་ལྟ་བུ་མེད་དེ न ह्येतद् विपाकरूपस्यास्ति अभि.भा.11ख/901; རྣམ་པར་སྨིན་པའི་གཟུགས་ལ་ནི་དེ་ལྟ་བུ་མེད་དོ་ཞེས་བྱ་བ་ནི་རྣམ་པར་སྨིན་པའི་བདག་ཉིད་ཀྱི་གཟུགས་མིག་ལ་སོགས་པ་ལ་ནི་ཡང་ཉིང་མཚམས་སྦྱོར་བ་འདི་མེད་ཀྱི न ह्येतद् विपाकरूपस्यास्ति । विपाकात्मकस्य रूपस्य चक्षुरादेरेतत् पुनः प्रतिसन्धानं नास्ति अभि.स्फु.164क/901.

རྣམ་པར་སྨིན་པའི་ལུས 1. विपाककायः – དེ...སེམས་ཅན་གྱི་ལུས་རབ་ཏུ་ཤེས་སོ॥ ཞིང་གི་ལུས་དང་[ལས་]རྣམ་པར་སྨིན་པའི་ལུས་དང स सत्त्वकायं च प्रजानाति, क्षेत्रकायं च कर्मविपाककायं च द.भू.244क/45 2. विपाककायता – དེས་སེམས་ཅན་གྱི་ལུས་རྣམས་ཀྱི་ལས་ཀྱི་ལུས་ཀྱང་རབ་ཏུ་ཤེས་སོ॥ རྣམ་པར་སྨིན་པའི་ལུས་དང स सत्त्वकायानां कर्मकायतां च प्रजानाति, विपाककायतां च द.भू.244ख/45.

རྣམ་པར་སྨིན་པར་འགྱུར *क्रि.* 1. विपच्यते – མཐོང་བའི་ཆོས་ལ་མྱོང་བར་འགྱུར་བའི་ལས་ནི་ཚེ་གང་ལ་བྱས་པ་དེ་ཉིད་ལ་གང་རྣམ་པར་སྨིན་པར་འགྱུར་བའོ॥ दृष्टधर्मवेदनीयं कर्म यत्र जन्मनि कृतं तत्रैव यद्विपच्यते अभि.स.भा.49ख/69; འབྲས་བུའི་དུས་སུ་ཕྱིན་པའི་ལས་ནི་རྣམ་པར་སྨིན་པ་ཞེས་བྱ་སྟེ། རྣམ་པར་སྨིན་པར་འགྱུར་བའི་ཕྱིར་རོ॥ फलकालप्राप्तं वा कर्म 'विपाकः' इत्युच्यते, विपच्यत इति कृत्वा अभि.भा.44ख/97 2. विपाको भविष्यति – ཇི་ལྟར་བྱས་ན་བདག་ཅག་རབ་ཏུ་བྱུང་བ་དོན་ཡོད་པ་དང་འབྲས་བུ་དང་བཅས་པ་དང་བདེ་བ་སྐྱེད་པ་དང་བདེ་བའི་རྣམ་པར་སྨིན་པར་འགྱུར

ལ कच्चिन्नः प्रव्रज्या अमोघा भविष्यति, सफला सुखोदया सुखविपाका अ.श.242क/222.

རྣམ་པར་སྨིན་པར་བྱེད་པ • क्रि. विपाचयति – དེས་ནི ཚོགས་རྣམས་རྫོགས་བྱེད་ཅིང་། །སེམས་ཅན་དག་ཀྱང་རྣམ་སྨིན་བྱེད། संभारान् पूर्यते सत्त्वांश्च विपाचयति तेन ॥ सू.अ.214क/119; • वि. विपाचकः – སེམས་ཅན་རྣམ་སྨིན་བྱེད་རྣམ་གསུམ། सत्त्वविपाचकं त्रेधा सू.अ.197क/98; विपाचिका – སེམས་ཅན་རྣམ་སྨིན་བྱེད་རྣམ་གསུམ། सत्त्वविपाचिका त्रेधा सू.अ.197ख/99; वैपाक्यम् – སྐྱེས་བུ་ཆེན་པོའི་མཚན་རྣམ་པར་སྨིན་པར་བྱེད་པའི་ཚུལ་ཁྲིམས་དང་...སེམས་ཅན་གྱི་དོན་རྣམ་པར་སྨིན་པར་བྱེད་པའི་ཚུལ་ཁྲིམས་སོ། महापुरुषलक्षणवैपाक्यं शीलम्... सत्त्वार्थवैपाक्यं चेति बो.भू. 100क/127.

རྣམ་པར་སྨིན་པར་མ་ངེས་པ वि. अनियतविपाकः – གཅིག་ཏུ་རབ་ཏུ་དང་བ་དེ་དག་ནི་དད་པ་ཙམ་གྱིས་ཀྱང་རྣམ་པར་སྨིན་པར་མ་ངེས་པའི་སྡིག་པའི་ཚོགས་རྣམས་ཟིལ་གྱིས་མནན་ཏེ ते हि श्रद्धामात्रकेणाप्यैकान्तिकेनाभिप्रसन्ना अनियतविपाकानां पापानां राशीनभिभूय अभि.भा.58ख/1099.

རྣམ་པར་སྨིན་པར་མི་འགྱུར क्रि. न विपच्यते – ལས་བྱས་ཤིང་བསགས་པ་དག་ནི་ཕྱི་རོལ་གྱི་སའི་ཁམས་ལ་རྣམ་པར་སྨིན་པར་མི་འགྱུར न हि कर्माणि कृतान्युपचितानि बाह्ये पृथिवीधातौ विपच्यन्ते वि.व.136ख/1.25.

རྣམ་པར་སྨོད = རྣམ་པར་སྨོད་པ།

རྣམ་པར་སྨོད་པ • क्रि. विगर्हते – ཚངས་པ་མཚུངས་པར་སྤྱོད་པ་མཁས་པ་གཞན་དག་ཀྱང་ཆོས་ཉིད་ཀྱིས་རྣམ་པར་སྨོད་དོ། अन्येऽपि विज्ञाः सब्रह्मचारिणो धर्मतया विगर्हन्ते सू.व्या.214ख/120; विजुगुप्सति – དེ་དག་གི་བསྔགས་པ་མ་ཡིན་པ་བརྗོད་དོ། སྨོད་དོ། བསྡུང་ངོ་། རྣམ་པར་སྨོད་དོ། तेषां चावर्णं निश्चारयन्ति, कुत्सन्ति, पंसयन्ति, विजुगुप्सन्ति शि.स.40क/38; विनिन्द्यते – རྒྱལ་སྲས་ཆོས་དང་མཐུན་རྣམས་ཀྱིས། །རྣམ་པར་སྨོད सहधार्मिकैर्जिनसुतैर्विनिन्द्यते सू.अ.221क/129; विवाचयति म.व्यु.9360 (128ख); • सं. 1. विगर्हणम् – ཚངས་པ་མཚུངས་པར་སྤྱོད་པ་མཁས་པ་དང་ཆོས་ཉིད་ཀྱིས་རྣམ་པར་སྨོད་པའི་ཕྱིར विज्ञैः सब्रह्मचारिभिर्धर्मतया विगर्हणात् सू.व्या.221क/129 2. विगर्हितम् – དམིགས་ཀྱིས་མ་ཕྱེ་དོན་ཟབ་པ། །སྤྱི་ལ་རྣམ་པར་སྨོད་པ་འདིའི། अनिर्भिन्नार्थगम्भीरमनारभ्यविगर्हितम्। जा.मा.155क/178.

རྣམ་པར་སྨོད་པར་འགྱུར क्रि. विगर्हिष्यति – སེམས་བསྐྱེད་པ་དེ་དག་ལ་རྣམ་པར་སྨོད་པར་འགྱུར...འདོར་བར་འགྱུར पूर्वकांश्चित्तोत्पादान् विगर्हिष्यति...प्रतिनिःस्रक्ष्यति अ.सा.343क/193.

རྣམ་པར་སྨོད་བྱེད་པ विगर्हणा लो.को.1414.

རྣམ་པར་སྨྲས क्रि. बभाषे लो.को.1414.

རྣམ་པར་གཅོགས = རྣམ་པར་གཅོགས་པ།

རྣམ་པར་གཅོགས་པ वि. विकटः – རབ་འབར་ཕྱག་ན་རྡོ་རྗེ་བསྣམས། །རྣམ་པར་གཅོགས་གསལ་འཇིགས་སུ་རུང་། वज्रहस्तं महाज्वालं विकटोत्कटभीषणम् ॥ गु.स.85ख/11; སྤྱན་དམར་མཆེ་བ་རྣམ་པར་གཅོགས། रक्ताक्षं दंष्ट्राविकटम् गु.स.118क/60; विकरालः – ཞལ་ནི་རྣམ་པར་གཅོགས་ཤིང་བཙྲད། །ཁ་དོག་དཀར་པོ་རབ་ཏུ་བརྒྱམ། विकरालं विकटवक्त्रं सितवर्णं प्रभा-

वयेत्॥ गु.स.118क/60.

རྣམ་པར་བརྩལ *भू.का.कृ.* विचितः – ལྷ་གཅིག་རི་ཡིས རྒྱས་པ་ཡི། །འགྲོ་བ་འདི་སྟེང་རྣམ་པར་བརྩལ། །ངལ་གསོ་མེད་པར་བདག་ཅག་འཁྱམས། །དེ་ལྟའི་རི་དྭགས་སྟེང་མ གྱུར།། इयती जगती देव विचिता निचिताचलैः। भ्रान्ता वयमविश्रान्ता न लभ्यस्तद्विधो मृगः॥ अ.क. 257क/30.25.

རྣམ་པར་བརྩུགས *भू.का.कृ.* विन्यस्तः – དམ་པའི་གྲགས པ་དག། །བརྟན་པའི་འཚོ་བ་རྣམ་པར་བརྩུགས།། सत्कीर्तिविन्यस्तस्थिरजीवितः अ.क.63क/6.119.

རྣམ་པར་རྩེ = རྣམ་པར་རྩེ་བ།

རྣམ་པར་རྩེ་བ •*क्रि.* 1. विक्रीडति – སྨོན་ལམ་གང་གིས བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་སྨོན་ལམ་གྱི་སྟོབས་ཅན་རྣམས རྣམ་པར་རྩེ་བ येन प्रणिधानेन [प्रणिधान]बलिका बोधिसत्त्वा विक्रीडन्ति सू.व्या.230ख/142; བྱང་ཆུབ སེམས་དཔའ...སྨོན་ལམ་ཁྱད་པར་ཅན་གྱིས་རྣམ་པར་རྩེ བའོ།། बोधिसत्त्वाः प्रणिधानवैशेषिकतया विक्रीडन्ति सू.व्या.227क/137 2. विजहार – རྒྱལ་པོའི་རྩེད འཇོ་ཡོངས་འདྲིས་ལ། །དཔུང་ཆེན་དེ་ནི་རྣམ་པར་རྩེ།། राजकेलीपरिचयैर्विजहार महाभुजः॥ अ.क.127क/66.18; • *सं.* 1. विलासः – དཔལ་འདི...རྣམ་པར་རྩེ བཞིན་རབ་ཏུ་གཡོ།། इमा... विलासचपलाः श्रियाः अ.क.31ख/3.145; विहारः – ཟླ་བ་ཤར་བ་ཀུན་དགའ དང་། །རྣམ་པར་རྩེ་ཕྱིར་འགྲོགས་པ་བཞིན།། चन्द्रोदयानन्दविहारायेव सङ्गताः अ.क.167क/19.40; विहरणम् – གང་ཞིག་རང་འདོད་བདེ་བའི་གནས་སུ་རྣམ་པར རྩེ यत्स्वाच्छन्द्यसुखास्पदं विहरणम् अ.क.284ख/105.33; विक्रीडनम् – ཡེ་ཤེས་ཀྱི་ཕ་རོལ་ཏུ་ཕྱིན་པའི མངོན་པར་ཤེས་པའི་ཡོན་ཏན་གྱིས་རྣམ་པར་རྩེ་བའོ།། अभिज्ञागुणविक्रीडनं च ज्ञानपारमितया सू.व्या. 254ख/173 2. विक्रीडितम् – གནས་པས་རྣམ་པར་རྩེ བ་ནི། འདི་ལྟར་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་རྣམས་ཏིང་ངེ འཛིན་གྱིས་སྤྲུལ་པ་ལ་སོགས་པ་རྣམ་པ་དུ་མས་རྣམ་པར རྩེ་བ་ཡིན་ནོ།། स्थितिविक्रीडितं यस्माद्बोधिसत्त्वानां बहुविधं निर्माणादिभिः समाधिविक्रीडितम् सू.व्या. 227क/137 3. = རྣམ་པར་རྩེ་བ་ཉིད विक्रीडनता लो. को.1414; • *व.का.कृ.* विक्रीडमानः म.व्यु.7341 (104ख); *• *भू.का.कृ.* विक्रीडितम् – དགའ་བའི་ཚལ ན...བརྒྱ་བྱིན་དང་ཚངས་པ་ལ་སོགས་པ་དང་[ལྷ་དང]ལྷའི་བུ་[མོ་] རྣམ་པ་སྣ་ཚོགས་པ་རྣམས་རྣམ་པར་རྩེ་བ नन्द[न]वने... शक्रब्रह्मादिदेवाप्सरोभिर्नानाविधाभिर्विक्रीडिते स.दु.96ख/120; སེང་གེ་རྣམ་པར་རྩེ་བ ཞེས་བྱ་བའི་ཏིང་ངེ་འཛིན सिंहविक्रीडितो नाम समाधिः म.व्यु.509 (12क).

རྣམ་པར་རྩེ་བར་གྱུར *भू.का.कृ.* लालितः – ས་སྐྱོང་ཀུན གྱི་མགོ་བོ་ལ། །བཀའ་ནི་རྣམ་པར་རྩེ་བར་གྱུར།། अखिलभूपालमौलिलालितशासनः अ.क.351ख/47.3.

རྣམ་པར་རྩེ་བར་བྱ *क्रि.* क्रीडते – གང་ཞིག་ཀང་མཐིལ སྟོན་པ་ལ། །*སྟེ་ཡིས་རྣམ་པར་རྩེ་བར་བྱ།། पादतलं दर्शयेद् यस्तु क्रीडते कौतुकेन तु। हे.त.8क/22.

རྣམ་པར་རྩེན་པ • *सं.* विक्रीडनता – མངོན་པར་ཤེས་པ ལྔས་རྣམ་པར་རྩེན་པ पञ्चाभिज्ञविक्रीडनता लो.को. 1414; • *वि.* विलासी – གང་གིས...རིག་འཛིན་རྣམ པར་རྩེན་རྣམས་ཀྱི། །ཁེངས་པ་དག་ནི་ཕྲུང་ཧྲུར་བྱེད།། विद्याधरविलासिनाम्। यः खर्वीकुरुते गर्वम् अ.क. 95ख/64.97; • *भू.का.कृ.* विक्रीडितः – སྒྱུ་མའི་ཆོས གྱིས་རྣམ་རྩེན་པ།། मायाधर्मविक्रीडिताः शि.स.175क/ 172.

རྣམ་པར་རྩོད = རྣམ་པར་རྩོད་པ།

རྣམ་པར་རྩོད་པ •सं. विवादः – དེ་ནས་དེ་ཡི་ལུས་སྤྱོད [? སྤྱོང་]ལ། །དགེ་སློང་རྣམས་དང་མུ་སྟེགས་དག། །སུ་ཡི་ཚངས་སྤྱོད་དང་ལྡན་ཞེས། །རྣམ་པར་རྩོད་པ་ཡང་དག་སྐྱེས།། तस्याथ देहसत्कारे भिक्षूणां सह तीर्थिकैः । कस्य स ब्रह्मचारीति विवादः समाजायत ॥ अ.क. 186ख/80.65; विवादो व्यवहारः अ.को.1.6.9; विविधो वादो विवादः अ.वि.1.6.9; वादः – སྒྲ་རྟག་པ་དང་མི་རྟག་པ་ཞེས་རྣམ་པར་རྩོད་པ་ལ 'नित्यः शब्दोऽनित्यो वा' इति वादे वा.न्या.336क/66; *• भू. का.कृ. विवादितः – བ་ལང་བྱུང་དོན་ཁྱིམ་བདག་གིས། །རྒོད་མ་བསད་ལས་ཤིང་རྟ་བས། །སྟེ་འུ་ལྷུང་ལས་འཇོག་པོར་ནི། །གནས་པའི་ཆུང་མས་རྣམ་པར་རྩོད།། गोयुगार्थे गृहस्थेन मृतेन [? सूतेन] वडवाहतेः । कुठारपाततः पत्न्या तक्षवासी विवादितः ॥ अ.क.161क/17.47.

རྣམ་པར་རྩོད་པའི་མཐའ वितण्डा लो.को.1414.

རྣམ་པར་རྩོད་པའི་ཡུལ་གྱུར་པ वि. विवादविषयः – རྣམ་པར་རྩོད་པའི་ཡུལ་གྱུར་པའི། །ཤེས་པ་རིམ་གྱིས་འབྱུང་གང་དག།། विवादविषया ये च प्रत्ययाः क्रमभाविनः । त.स.18ख/204.

རྣམ་པར་བརྩོན་པ व्यतिकरः – འཕགས་པ་མིན་ཞིང་ཕྲག་དོག་དག་གིས་གདུང་བ་རྣམ་པར་བརྩོན་པ་མ་བཟློག་པ། །བདག་ཅག་རྣམས་ནི...ཚིག་གི་ལྕགས་མདའ་དུག་གིས་ཡོངས་སུ་བསྒོས་པས་ཟུག་རྔུ་རབ་ཏུ་ཟུག་པར་བྱས།། अनार्यैर्मानव्यसनेर्ष्याभिरवार्यव्यतिकरैः । कृतास्माभिः ...वचोभिर्नाराचैर्विषपरिचितैः ...शल्यकलना अ.क.166क/19.28.

རྣམ་པར་ཚིག་པའི་འདུ་ཤེས पा. विदग्धकसंज्ञा, अशुभभावनाविशेषः म.व्यु.1163 (25क).

རྣམ་པར་འཚང་རྒྱ = རྣམ་པར་འཚང་རྒྱ་བ།

རྣམ་པར་འཚང་རྒྱ་འགྱུར क्रि. विमुच्यते – སྒྱུ་ལམ་སྒྱུ་མ་ལ་སོགས་ལྟར། །མཐོང་ན་རྣམ་པར་འཚང་རྒྱ་འགྱུར།། मायादिस्वप्नसदृशं विपश्यन्तो विमुच्यते ॥ ल.अ. 168ख/124.

རྣམ་པར་འཚང་རྒྱ་བ •क्रि. विबुध्यते – འདོད་པའི་ཁམས་དང་གཟུགས་མེད་དུ། །སངས་རྒྱས་རྣམ་པར་འཚང་མི་རྒྱ།། कामधातौ तथारूप्ये न वै बुद्धो विबुध्यते। ल.अ.187ख/158; •सं. विबुध्यनम् – སངས་རྒྱས་ཐམས་ཅད་ཀྱི་རྣམ་པར་འཕྲུལ་པ་དང་སྐྱེ་བ་དང་མངོན་པར་འབྱུང་བ་དང་བྱང་ཆུབ་ཏུ་རྣམ་པར་འཚང་རྒྱ་བ་དང་ཡེ་ཤེས་ཐུགས་སུ་ཆུད་པར་མཛད་པའི་སྣང་བའི་འོད [सर्व]बुद्धविकुर्वितजन्माभिनिष्क्रमणबोधिविबुध्यनज्ञानाधिगमालोकावभासः ग.व्यू.210क/291.

རྣམ་པར་འཚལ क्रि. विजानति – བཅོམ་ལྡན་འདས་ཆོས་ཐམས་ཅད་ནི་གཉིས་སུ་མ་མཆིས་པ་སྟེ། གཅིག་གིས་གཅིག་མ་འཚལ་རྣམ་པར་མ་འཚལ་མི་རྟོག་རྣམ་པར་མི་རྟོག अद्वितीयाश्च भगवन् सर्वधर्माः । परस्परं न जानन्ति न विजानन्ति न कल्पयन्ति न विकल्पयन्ति शि.स.146क/140.

རྣམ་པར་འཚེ་བ •सं. 1. विहिंसा – གནོད་སེམས་དང་། །རྣམ་འཚེ་མི་དགའ་གནོད་སེམས་དང་། །འདོད་པའི་འདོད་ཆགས་དང་ལྡན་པ།། व्यापादविहिंसाभ्यामरतिव्यापादकामरागैश्च । सू.अं.214क/119; འདོད་ཆགས་དང་བྲལ་བའི་ཕྱིར་ནི་དེའི་མི་མཐུན་པའི་ཕྱོགས་རྣམ་པར་འཚེ་བ་སྤངས་པའི་ཕྱིར་རོ།། विरागतोऽपि तद्विपक्षविहिंसाप्रहाणात् सू.व्या.220क/127; དེ་ལ་འཚེ་བ་སྤངས་པ

ཉིད་ཀྱིས་ནི་དེའི་མི་མཐུན་པའི་ཕྱོགས་རྣམ་པར་འཚེ་བ་སྤངས་པའི་ཕྱིར་བྲལ་བའི་འབྲས་བུ་བསྟན་ཏེ तत्र हेठापहत्वेन तद्विपक्षविहिंसाप्रहाणाद् विसंयोगफलं दर्शयति सू.व्या.215ख/121; विहेठः – འཕགས་པ་དག་རྣམ་པར་འཚེ་བ་ལ་ཏྟོན་མཛོད་ཀྱི། འདི་ན་སྤོང་བ་ག་ལ་མཆིས आर्या विहेठं प्रतिजागृथ, कुतोऽत्र प्रहाणम् वि.व.135ख/2.112; विहेठनम् – ལྷ་ལ་སོགས་པ་རེས་འགའ་ནི་གཞན་དག་ལ་ཕན་གདགས་པའི་ཕྱིར་སྤྲུལ་པར་བྱེད་ལ། རེས་འགའ་ནི་རྣམ་པར་འཚེ་བའི་ཕྱིར कदाचिद्धि देवादयः परानुग्रहार्थं परान् (?) निर्मिण्वन्ति, कदाचिद् विहेठनार्थम् अभि.स्फु.282क/1120; विहेठना – བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའི་གཞན་གྱི་དོན་མཐའ་དག་ནི་སྦྱིན་པ་ལ་སོགས་པས་གོ་རིམས་བཞིན་དུ་གཞན་དག་ལ་ཡོ་བྱད་ཀྱིས་མི་ཕོངས་པ་དང་རྣམ་པར་མི་འཚེ་བ་དང་རྣམ་པར་འཚེ་བ་བཟོད་པ་དང...དག་གིས་འགྲུབ་སྟེ།། दानादिभिर्बोधिसत्त्वस्य सकलः परार्थो भवति। यथाक्रमं परेषामुपकरणाविघातैः, अविहेठैः, विहेठनामर्षणैः सू.व्या.196ख/97 2. = གསོད་པ विशारणम्, वधः – प्रमापणं निबर्हणं निकारणं निशारणम् (विशारणम् पा.भे.)।...वधा अपि अ.को.2.8.112; नितरां शीर्यत इति निशारणम्। शॄ हिंसायाम् अ.वि. 2.8.112; •पा. विहिंसा 1. उपक्लेशभेदः – ཁྲོ་དང ...རྣམ་འཚེ... །རྟོག་པ་དང་ནི་དཔྱོད་པ་དང་། །ཉེ་བའི་ཉོན་མོངས་གཉིས་རྣམ་གཉིས།། क्रोधः...विहिंसा...वितर्कश्च विचारश्चेत्युपक्लेशा द्वये द्विधा॥ त्रि.2क/64; བསད་པ་དང་བཅིང་བ་དང་བརྡེག་པ་དང་སྡིག་པ་ལ་སོགས་པ་སྣ་ཚོགས་ཀྱིས་སེམས་ཅན་རྣམས་ལ་འཚེ་བ་ནི་རྣམ་པར་འཚེ་བའོ།། विविधैर्वधबन्धनताडनतर्जनादिभिः सत्त्वानां हिंसा विहिंसा त्रि.भा.160ख/68 2. परीत्तक्लेशभूमिकधर्मभेदः – ཁྲོ་བ་དང་། །ཁོན་དུ་འཛིན་དང་གཡོ་དང་ནི། །ཕྲག་དོག་འཚིག་འཆབ་སེར་སྣ་དང་། །སྒྱུ་དང་རྒྱགས་དང་རྣམ་འཚེ་ནི། །ཉོན་མོངས་ཆུང་ངུའི་ས་པ་རྣམས།། क्रोधोपनाहशाठ्येर्ष्याप्रदाशम्रक्षमत्सराः। मायामदविहिंसाश्च परीत्तक्लेशभूमिकाः॥ अभि.को.5क/194 3. क्लेशमलभेदः – གཞན་ཡང་ཉོན་མོངས་དྲི་མ་དྲུག། །སྒྱུ་དང་གཡོ་དང་རྒྱགས་པ་དང། །དེ་བཞིན་འཚིག་དང་ཁོན་འཛིན་དང་། །རྣམ་འཚེ अन्ये च षट्क्लेशमलाः मायाशाठ्यं मदस्तथा॥ प्र- दाश उपनाहश्च विहिंसा चेति अभि.को.17ख/845; རྣམ་པར་འཚེ་བ་ནི་རྣམ་པར་ཐོ་འཚམས་པ་སྟེ། གང་གིས་མཚོན་ཆ་དང་ཚིག་རྩུབ་པོ་དག་གིས་ཕ་རོལ་པོ་རྣམ་པར་ཐོ་འཚམས་པར་བྱེད་པ विहेठनं विहिंसा, येन प्रहारपारुष्यादिभिः परान् विहेठयते अभि.भा.250ख/846; རྣམ་པར་འཚེ་བ་ནི་སེམས་ཅན་ལ་སྡིགས་པ་དང་རྡེག་པ་དང་སྐྲག་པར་བྱེད་པ་དང་བསྡིགས་པ་ལ་སོགས་པའི་ལས་ལ་ཞུགས་པ་ཡིན་ནོ།། सत्त्वाकर्षणसन्त्रासनतर्जनादिकर्मप्रवृत्ता विहिंसा अभि.स्फु.135ख/845; •वि. नृशंसः – नृशंसो घातुकः क्रूरः पापः अ.को.3.1.45.

རྣམ་པར་འཚེ་བ་དང་བཅས་པ *वि.* सविहिंसा–འཐབ་པ་དང་བཅས་པ་དང་རྩོད་པ་དང་བཅས་པ་དང་རྣམ་པར་འཚེ་བ་དང་བཅས་པར་ཡང་དག་པར་མཐོང་ནས་ལྟ་བ་དེ་ཡང་སྤོང་ལ། ལྟ་བ་གཞན་ཡང་མི་ལེན་ཏོ།། स तां सविग्रहां सविवादां सविहिंसां च समनुपश्यन्निमां च दृष्टिं प्रतिनिसृजति, अन्यां च दृष्टिं नोपादत्ते अ.श.280क/256.

རྣམ་པར་འཚེ་བ་མེད་པ अविहिंसा – གཞན་དག་ལ་ཤས་ཆེར་ཞེ་རྗེམ་མེད་པ་ཡིན། རྣམ་པར་འཚེ་བ་མེད་པ་ཡིན། ཁྲོ་བ་མེད་པ་མང་བ་ཡིན་ནོ།། असंरम्भाविहिंसाक्रोधबहुलः परेषाम् बो.भू.169क/223.

རྣམ་པར་འཚེ་བ་བཟོད་པ विहेठनामर्षणम् – བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའི་གཞན་གྱི་དོན་མཐའ་དག་ནི་སྦྱིན་པ་ལ་སོགས་པས་གོ་རིམས་བཞིན་དུ་གཞན་དག་ལ་ཡོ་བྱད་ཀྱིས་མི་ཕོངས་པ་དང་རྣམ་པར་མི་འཚེ་བ་དང་རྣམ་པར་འཚེ་བ་བཟོད་པ་དང...དག་གིས་འགྲུབ་སྟེ॥ दानादिभिर्बोधिसत्त्वस्य सकलः परार्थो भवति। यथाक्रमं परेषामुपकरणाविघातैः, अविहेठैः, विहेठनामर्षणैः सू.व्या.196ख/97.

རྣམ་པར་འཚེ་བ་ལས་འབྱིན་པ विहिंसानिःसरणम् – རྣམ་པར་འཚེ་བ་ལས་འབྱིན་པ་ནི་སྙིང་རྗེ विहिंसानिःसरणं करुणा म.व्यु.1598 (36क).

རྣམ་པར་འཚེ་བར་བྱེད = རྣམ་པར་འཚེ་བར་བྱེད་པ།

རྣམ་པར་འཚེ་བར་བྱེད་པ •क्रि. विहिंसयति – ཁྲོ་བས་ཟིལ་གྱིས་ནོན་ནས་ལག་པའམ་བོང་བའམ་དབྱུག་པའམ་མཚོན་གྱིས་སེམས་ཅན་རྣམས་ལ་རྡེག་པར་བྱེད་རྣམ་པར་འཚེ་བར་བྱེད་རྣམ་པར་ཐོ་འཚམས་པར་བྱེད क्रोधाभिभूतः पाणिना वा लोष्टेन वा दण्डेन वा शस्त्रेण सत्त्वांस्ताडयति विहिंसयति विहेठयति बो.भू.85ख/108; • वि. विहेठकः – རྡོ་རྗེ་དེ་རྣམས་ལས་འཕྲོས་པའི་རྡོ་རྗེ་འབར་བ་རྣམས་ཀྱིས་ཕྱོགས་བཅུ་ན་གནས་པའི་མཐའ་དག་བདུད་ཀྱི་ཚོགས་སེམས་ཅན་ལ་རྣམ་པར་འཚེ་བར་བྱེད་པ་རྣམས་ངེས་པར་བསྲེག་པར་བྱ तद्वज्रनिर्गतैर्वज्रज्वालाभिर्दशदिक्स्थितमपि सकलं मारवृन्दं सत्त्वविहेठकं निर्दहेत् वि.प्र.102ख/3.23; འཁོན་འཛིན་ཐམས་ཅད་གོམས་བྱེད་ཅིང་། །གཅིག་ལ་གཅིག་ནི་རྣམ་འཚེ་བྱེད॥ वैराभ्यासरताः सर्वे परस्परविहेठकाः ॥ म.मू.300क/466.

རྣམ་པར་འཚོང་བ विपणः मि.को.41ख।

རྣམ་པར་མཛེས = རྣམ་པར་མཛེས་པ།

རྣམ་པར་མཛེས་པ • क्रि. विभाति – རྒྱལ་བའི་ཞལ་རས་ཟླ་བ་ཉ་བ་འདྲ། །ཀུན་འོད་ཟིལ་གྱིས་མནན་ནས་རྣམ་པར་མཛེས॥ पूर्णशशाङ्कनिभं जिनवक्त्रं सर्वप्रभामभिभूय विभाति॥ रा.प.228ख/121; མགོ་ལ་གཙུག་ཏོར་འདི་གསལ་སྣེན་མའི་བར་ན་མཛོད་སྤུ་འདི་ནི་རྣམ་པར་མཛེས॥ उष्णीषः स्फुट एष मूर्धनि विभात्युर्णेयमन्तर्भ्रुवोः ना.ना.229क/38; का.आ.323क/2.38; शोभते – གང་ཞིག་མཐོ་རིས་མཛེས་མའི་ལག་པས་མཆོག་ཏུ་རབ་བསྒྱོད་མཛེས་པའི་རྔ་ཡབ་དག་དང་ནི། །གདུགས་དཀར་འཛུམ་པའི་ཕུན་ཚོགས་དག་གིས་འཇིག་རྟེན་ན་ནི་ལེགས་ལྡན་ཐུགས་ནི་རྣམ་མཛེས་དང་॥ शोभन्ते भुवनेषु भव्यमनसां यन्नाककान्ताकरप्रौढोदञ्चितचारुचामरसितछत्रस्मिताः संपदः। अ.क. 37क/4.1; विराजते – ས་གཞི་སྐྱོང་བ་ཁྱོད་བཞིན་དུ། །ལྷ་ཡི་རྒྱལ་པོ་རྣམ་པར་མཛེས॥ भवानिव महीपाल देवराजो विराजते। का.आ.323ख/2.53; རྣལ་འབྱོར་ཅན་གྱི་དངོས་པོ་ལྟར། །སྣ་ཚོགས་གཅིག་ཏུ་རྣམ་མཛེས་ཀྱང་॥ यथा हि योगिनां वस्तु चित्रमेकं विराजते। ल.अ.107ख/53; •सं. = དེ་བཞིན་གཤེགས་པ विराट्, तथागतः म.व्यु.34 (2क); • व.का.कृ. विरोचमानः – ཚངས་པ་ལྟར་ཚངས་པའི་འཁོར་གྱི་ནང་ན་རྣམ་པར་མཛེས་པ ब्रह्माणमिव ब्रह्मपर्षदि विरोचमानम् ग.व्यू. 30क/126; विभ्राजमानः – རྣམ་པར་མཛེས་པའི་ཅོད་པན་དང་ལྡན विभ्राजमानमुकुटस्य अ.क.294क/108.9; • भू.का.कृ. विराजितः – སྐུ་དང་གསུང་དང་ཐུགས་ཀྱི་དཀྱིལ་འཁོར་རྣམས...མེ་ལོང་དང་ཟླ་བ་ཕྱེད་པ་དང་དྲིལ་བུས་རྣམ་པར་མཛེས་པ कायवाक्चित्तमण्डलानि...दर्पणार्द्धचन्द्रघण्टाविराजितानि वि.प्र.128ख/1, पृ.27; ནུབ་སྣོའི་དྲུང་དུ་པད་མ་ལ། །གནས་པའི་ཟླ་བའི་དཀྱིལ་འཁོར་དུ། །དང་པོ་བདུད་རྩི་འོད་ཅེས་བྱ།

།ཟླ་བའི་མདོག་གིས་རྣམ་པར་མཛེས།། पश्चिमद्वारासीनः पद्मस्थचन्द्रमण्डले । प्रथमममृतप्रभश्चन्द्रवर्णविराजितः ॥ स.दु.110[क]/168; རིན་ཆེན་འཕྲེང་བས་རྣམ་མཛེས་པའི། །མདུན་སའི་ས་གཞི...བསྟེན།། रत्नराजिविराजिताम्।...सभाभूमिं भेजे अ.क.44[क]/4.87; ललितः – དུ་གུ་ལ་ཡིས་རྣམ་མཛེས་ས་གཞི་ཆོས་ཀྱིས་བསྐྱབས་པར་གྱུར།། धर्मेण... दुकूलललितां पृथिवीं शशास ॥ अ.क.26[ख]/52.72; विद्योतितः – ཤིན་ཏུ་གསལ་བར་བསྐྱེད་པ་ཡི། །རིག་པ་ཀུན་གྱིས་རྣམ་མཛེས་བདག། सुप्रकाशोदिताशेषविद्याविद्योतितात्मनः । अ.क.22[क]/3.29.

རྣམ་པར་འཛིན = རྣམ་པར་འཛིན་པ།

རྣམ་པར་འཛིན་པ *क्रि.* बिभर्ति – དམ་པའི་ཀུན་སྤྱོད་ཡོན་ཏན་གྱིས་མཛེས་གཟུགས། །ལེགས་ལྡན་རིགས་ཀྱི་རྗེས་མཐུན་རྣམ་པར་འཛིན།། बिभर्ति भव्याभिजनानुरूपं रूपं सदाचारगुणेन शोभाम् ॥ अ.क.296[क]/108.30; विधार्यते – བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་རྣམས་ནི...ཏིང་ངེ་འཛིན་གྱི་སངས་རྒྱས་རྣམས་ཀྱིས་ཏིང་ངེ་འཛིན་གྱི་བདེ་བ་དེ་ལས་རྣམ་པར་འཛིན་ཏོ།། बोधिसत्त्वाश्च समाधिबुद्धैर्विधार्यन्ते तस्मात्समाधिसुखाद् ल.अ.139[ख]/86; विगाहते – སྐྱོན་གྱི་གྲངས་ལས་རབ་འདས་ནས། །ཡོན་ཏན་ལམ་ནི་རྣམ་པར་འཛིན།། उत्क्रम्य दोषगणा[? गण]नां गुणवीथिं विगाहते ॥ का.आ.341[क]/3.179; • *सं.* 1. विधारणम् – ཟླ་བ་དང་ཉི་མ་རྣམ་པར་འཛིན་པ་ཞེས་བྱ་བའི་ཆོ་གའོ།། इति चन्द्रसूर्यविधारणविधिः हे.त.4[ख]/10 2. = ལུས विग्रहः, शरीरम् – अथ कलेबरम्। गात्रं वपुः संहननं शरीरं वर्ष्म विग्रहः ॥ अ.को.2.6.70; विशेषेणात्मना गृह्यत इति विग्रहः। ग्रह उपादाने अ.वि.2.6.70.

རྣམ་པར་འཛིན་བྱེད *क्रि.* बिभर्ति – འདི་ནི་དོ་ཟླ་མེད་པའི་མཛེས་སྡུག་རྣམ་པར་འཛིན་བྱེད་ཅིང་།། लावण्यमप्रतिममेव बिभर्ति तन्वी अ.क.358[क]/48.12.

རྣམ་པར་ཞི = རྣམ་པར་ཞི་བ།

རྣམ་པར་ཞི་བ • *सं.* व्युपशमः – རྒོད་པ་ནི་སེམས་རྣམ་པར་མ་ཞི་བའོ།། རྣམ་པར་ཞི་བ་ནི་ཞི་གནས་ཏེ། དེ་དང་མི་མཐུན་པ་ནི་རྣམ་པར་མ་ཞི་བའོ།། औद्धत्यं चित्तस्याव्युपशमः । व्युपशमो हि शमथस्तद्विरुद्धोऽव्युपशमः त्रि.भा.161[क]/69; དེ་རྣམ་པར་རྟོག་པ་དང་རྣམ་པར་དཔྱོད་པ་རྣམ་པར་ཞི་སྟེ...བསམ་གཏན་གཉིས་པ་ལ་ཉེ་བར་བསྒྲུབས་ཏེ་གནས་སོ།། स वितर्कविचाराणां व्युपशमाद्...द्वितीयं ध्यानमुपसंपद्य विहरति द.भू.198[क]/20; • *भू.का.कृ.* व्युपशान्तः – རྒོད་པ་ནི...ཉོན་མོངས་པ་ཅན་ཡིན་ནོ།། རྒོད་པ་མ་ཡིན་པ་ནི...དགེ་བ་ཡིན་ནོ།། རྣམ་པར་མ་ཞི་བ་དང་རྣམ་པར་ཞི་བ་ཡང་དེ་དང་འདྲའོ།། उद्धतं क्लिष्टम्...अनुद्धतं कुशलं...एवमव्युपशान्तं व्युपशान्तं च अभि.भा.46[ख]/1049; རྣམ་པར་མ་ཞི་བ་ནི་རྒོད་པ་དང་མཚུངས་པར་ལྡན་པའི་ཕྱིར་ཉོན་མོངས་པ་ཅན་ཡིན་ལ། རྣམ་པར་ཞི་བ་ནི་དེའི་གཉེན་པོ་ཡིན་པའི་ཕྱིར་དགེ་བ་ཡིན་ནོ།། अव्युपशान्तं क्लिष्टम्, औद्धत्यसंप्रयोगात्। व्युपशान्तं कुशलं तत्प्रतिपक्षत्वात् अभि.स्फु.246[ख]/1049.

རྣམ་པར་ཞི་བར་བྱེད་པ *पा.* व्युपशमनम्, चित्तस्थितिभेदः – ཞི་གནས་ནི་སེམས་གནས་པ་རྣམ་པ་དགུ་སྟེ།...འཇོག་པ...བརྗེད་ནས་རྣམ་པར་རྟོག་པ་ལ་སོགས་པ་ཀུན་ཏུ་འབྱུང་བ་ན་དེ་དང་དུ་མི་ལེན་པ་ནི་རྣམ་པར་ཞི་བར་བྱེད་པའོ།། शमथः नवाकारचित्तस्थितिः...*स्थापना*...स्मृतिसंप्रमोषाद् वितर्कादिसमुदाचारे सति तदनधिवासना *व्युपशमनम्* अभि.स.भा.65[ख]/90.

རྣམ་པར་ཞི་བར་མཛད *क्रि.* व्युपशमयति – གཞན་གྱིས་ཡོངས་སུ་བཟུང་བ་ལ་མངོན་པར་ཞེན་པ་ནི་རྣམ་པར་ཞི་བར་མཛད་དོ॥ परपरिगृहीताभिलाषाद् व्युपशमयति ग.व्यू.23[क]/120.

རྣམ་པར་ཞིག = རྣམ་པར་ཞིག་པ།

རྣམ་པར་ཞིག་པ •*सं.* विनाशः – ཡང་མུ་སྟེགས་བྱེད་ཁ་ཅིག་ནི་བློ་དང་རིག་པར་བྱ་བ་མཐོང་བ་རྣམ་པར་ཞིག་པས་ཐར་པར་བརྗོད་དོ॥ अन्ये पुनर्वर्णयन्ति तीर्थकराः बुद्धिबोद्धव्यदर्शनविनाशान्मोक्ष इति ल.अ.128[क]/74; •*भू.का.कृ.* विशीर्णः – ས་འཛིན་རྣམ་པར་ཞིག་པ་དེར། །ཕྲུགས་ནི་བྱུང་བཞིན་དེ་ཡིས་བསམས॥ विशीर्णभूधरे तस्मिन् स प्रदध्यौ विषण्णधीः । अ.क.226[ख]/25.25; विपन्नः – གོམས་པའི་བག་ཆགས་རྣམ་པར་ཞིག །འཁོར་བར་མཆོག་ཏུ་བདག་མི་དགའ॥ विपन्नवासनाभ्यासः संसारे न रमे परम् ॥ अ.क.188[ख]/21.49; विघटितः – རྣམ་པར་བསྔོས་པ་ལ་སོགས་པ་དང་། རྣམ་པར་ཞིགས་[? ཞིག་]པ་དང་། གེང་རུས་དག་དང विनीलकादौ विघटिति[? ते] अस्थिशङ्कलिकयोः वि.सू.19[क]/22.

རྣམ་པར་ཞིགས་པ *> རྣམ་པར་ཞིག་པ།

རྣམ་པར་ཞུགས་པ *भू.का.कृ.* विनिविष्टः – དབང་པོའི་གྲོང་ཁྱེར་རྣམ་པར་ཞུགས་པས विनिविष्टेन्द्रियग्रामे त.सि.66[ख]/176.

རྣམ་པར་ཞེན་པ •*सं.* अध्यवसायः – བློ་དང་རྣམ་ཞེན་པ་དང་ནི། །དེ་བཞིན་རིག་དང་རིག་བྱེད་དང་། །སེམས་དང་ཉམས་མྱོང་ཞེས་བྱ་བ། །ཐམས་ཅད་སེམས་ཀྱི་རྗོད་བྱེད་ཡིན॥ बुद्धिरध्यवसायो हि संवित् संवेदनं तथा। संवित्तिश्चेतना चेति सर्वं चैतन्यवाचकम् ॥ त.स.12[ख]/147; •*भू.का.कृ.* विनिविष्टः – རྩོད་པ་བྱུང་བ་སྤྱོད་པ་ལ་མཁས་པའོ॥ རྣམ་པར་ཞེན་པའོ॥ कुशलस्याधिकरणवृत्तेऽध्याचारे च। विनिविष्टस्य वि.सू.90[क]/108.

རྣམ་པར་གཞག = རྣམ་པར་གཞག་པ། རྣམ་པར་གཞག་ན व्यवस्थाप्यमानः – བློ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་ཡུལ་ཡོད་པ་ཉིད་དུ་རྣམ་པར་གཞག་ན...བརྟག་པ་སྟེ་དཔྱོད་པ་དང་ཐེ་ཚོམ་དུ་ཡང་ག་ལ་འགྱུར सर्वबुद्धीनां सद्विषयत्वे व्यवस्थाप्यमाने कुतोऽस्य विमर्शः विचारः सन्देहो वा स्यात् अभि.स्फु.119[ख]/816.

རྣམ་པར་གཞག་པ •*क्रि.* व्यवस्थापयति – བློ་གྲོས་ཆེན་པོ་འཕྲུལ་པས་སྤྲུལ་པའི་སངས་རྒྱས་རྣམས་ནི་སྦྱིན་པ་དང་...རྣམ་པར་ཤེས་པ་འཇུག་པའི་མཚན་ཉིད་རབ་ཏུ་ཕྱེ་བ་རྒྱུ་བ་རྣམ་པར་གཞག་གོ॥ निर्मितनिर्माणबुद्धः पुनर्महामते दान... विज्ञानगतिलक्षणप्रभेदप्रचारं व्यवस्थापयति ल.अ.77[ख]/25; व्यवस्थाप्यते – དེ་དག་ཟག་པ་སྤངས་ཟིན་པ་དག་གིས་ཇི་ལྟར་ཟག་པ་དང་བཅས་པར་རྣམ་པར་གཞག་ཅེ་ན कथं प्रहीणैरास्रवैस्ते सास्रवा व्यवस्थाप्यन्ते अभि.स्फु.11[ख]/18; ཡང་བྱང་ཆུབ་ཀྱི་ཕྱོགས་ལ་སོགས་པའི་བྱེ་བྲག་གིས་ལམ་རྣམ་པ་བཅུ་གཅིག་ཏུ་རྣམ་པར་གཞག་སྟེ पुनर्बोधिपक्ष्यादिभेदेनैकादशविधो मार्गो व्यवस्थाप्यते अभि.स.भा.61[क]/84; अवस्थाप्यते – སྔོན་པོ་འདྲ་བ་མྱོང་བས་ན་སྔོན་པོ་རིག་པར་རྣམ་པར་གཞག་གོ॥ नीलसदृशं तु अनुभूयमानं नीलस्य संवेदनमवस्थाप्यते न्या.टी.46[क]/82; स्थाप्यते – པི་ཀ་སྣང་བྲེལ་སོགས་སེལ་བས། །བྱེ་བྲག་ཅན་གྱི་ཡུལ་ལ་ཡང་། །དེ་ནི་ཨུཏྤ་ལ་ཡི་སྒྲས། །རྣམ་པར་གཞག་པར་ངེས་པ་དང་॥ पिकाञ्जनाद्यपोहेन विशिष्टविषयं पुनः। तदिन्दीवरशब्देन स्था-

प्यते परिनिश्चितम् ॥ त.स.41क/418; *व्यवस्थां करोति – ཆོས་ཉིད་ཀྱི་སངས་རྒྱས་ནི...འཕགས་པ་སོ་སོ་རང་གིས་རིག་པའི་སྤྱོད་ཡུལ་རྣམ་པར་གཞོག་[? གཞག / འཇོག]གོ॥ धर्मताबुद्धः...प्रत्यात्मार्यगतिगोचरव्यवस्थां करोति ल.अ.77ख/25; •सं. 1. व्यवस्था– འོ་ན་ནམ་མཁའ་བཞིན་དུ་རྟག་ཏུ་གནས་པའི་ཕྱིར་ཇི་ལྟར་འདས་པ་ལ་སོགས་པ་རྣམ་པར་གཞག आकाशवत् सदावस्थितत्वाददतीतादिव्यवस्था तर्हि कथम् त.प.82ख/616; ཚད་མ་རྣམ་པར་གཞག་པ་ནི་དངོས་པོ་ལ་བརྟེན་པ་ཅན་ཉིད་ཡིན་པའི་ཕྱིར་རོ॥ वस्त्वधिष्ठानत्वात् प्रमाणव्यवस्थायाः हे.बि.239ख/53; བསྐྱེད་བྱ་སྐྱེད་བྱེད་ཉིད་ཀྱིས་ནི། །རྣམ་པར་གཞག་པ་འདི་མི་འདོད॥ उत्पाद्योत्पादकत्वेन व्यवस्थेयं तु नेष्यते ॥ त.स.49ख/489; ཐེག་པ་རྣམ་པར་གཞག यानव्यवस्था ल.अ.175क/136; སྡིག་དང་ཅིག་ཤོས་རྣམ་གཞག་འདི། །ཚད་མ་གང་ལས་འོང་བ་ཡིན॥ पापेतरव्यवस्थेयमायाता मानतः कुतः । प्र.अ.8ख/10; འབྲས་བུ་བཞི་རྣམ་གཞག་པ་ནི། །རྒྱུ་ལྔ་དག་ནི་སྲིད་ཕྱིར་རོ॥ चतुष्फलव्यवस्था तु पञ्चकारणसम्भवात् । अभि.को.29ख/980; व्यवस्थानम् – མངོན་པར་རྟོགས་པ་རྣམ་པར་གཞག་པ་ནི་རྣམ་པ་བཅུ་སྟེ अभिसमयव्यवस्थानं दशविधम् अभि.स.भा.90क/122; ཇི་ལྟར་རྟོགས་པའི་ཆོས་རྣམ་པར་གཞག་པ་རྟོགས་པ यथाधिगमधर्मव्यवस्थानप्रतिवेधतः सू.व्या.168क/59; ས་རྣམ་པར་གཞག་པ भूमिव्यवस्थानस्य सू.व्या.140क/17; ཇི་ལྟར་རྣམ་གཞག་ཡིད་བྱེད་པས། །དེ་རྟོག་ཉིད་དུ་ཤེས་ཕྱིར་དང་། །དེ་ཉིད་ལ་ཡང་མི་རྟོག་ཕྱིར། །ངེས་པར་འབྱུང་བར་ཤེས་པར་བྱ॥ निर्याणं विज्ञेयं यथाव्यवस्थानमनसिकारेण । तत्कल्पनताज्ञानादविकल्पनया च तस्यैव ॥ सू.अ.140क/17; ཆོས་དང་ཆོས་ཅན་རྣམ་གཞག धर्मिधर्मव्यवस्थानम् प्र.वृ.286ख/29; ཐེག་པ་གདགས་པ་རྣམ་པར་གཞག་པ यानप्रज्ञप्तिव्यवस्थानम् बो.भू.153क/198; व्यवस्थापनम् – གསུང་རབ་ཐམས་ཅད་ལ་དྲང་བ་དང་ངེས་པའི་དོན་དུ་རྣམ་པར་གཞག་པ་ཡིན་པའི་ཕྱིར་རོ॥ सर्वस्य प्रवचनस्य नेयनीतार्थतया व्यवस्थापनात् बो.प.57क/19; འཁོར་ལོའི་གྲངས་ཀྱི་རིམ་པས་རྣམ་པར་གཞག་པ चक्रसंख्याक्रमेण व्यवस्थापनम् हे.त.3क/4; व्यवस्थितिः – གང་ཞིག་གང་གི་ངོ་བོར་རྣམ་པར་གཞག་པའི་རྒྱུ་མཚན་མེད་པ་དེ་ནི་ཐ་སྙད་འདོགས་པ་པོ་རྟོག་པ་དང་ལྡན་པ་རྣམས་ཀྱིས་དེ་ལྟར་རྣམ་པར་གཞག་པར་བྱ་བ་མ་ཡིན་ཏེ यस्य यद्रूपं व्यवस्थितौ निमित्तं नास्ति, न तद् तथा प्रेक्षावद्भिर्व्यवहर्तृभिर्व्यवस्थाप्यते त.प.8क/461; ཐ་དད་ཐ་དད་མིན་པ་ཡི། །རྣམ་གཞག་བརྗོད་འདོད་གཞན་དབང་ཕྱིར॥ विवक्षापरतन्त्रत्वाद् भेदाभेदव्यवस्थितेः । प्र.अ.14ख/17; འཁྲུལ་པར་རྣམ་གཞག་བྱས་པ་ཡིན॥ कृता भ्रान्तिव्यवस्थितिः प्र.वा.121ख/2.83; संस्था–གདོན་མི་ཟ་བར་ཐོག་མར་རྣམ་པར་གཞག་པའི་སྒོ་ནས་བསྒྲུབ་པར་བྱ་བ་དང་སྒྲུབ་པར་བྱེད་པར་རྣམ་པར་གཞག་པར་བྱ་དགོས་སོ॥ अवश्यमादौ व्यवस्थाद्वारेणैव साध्यसाधनसंस्था कर्तव्या त.प.21क/489; རྣམ་པ་མེད་པའི་ཤེས་པ་ལ། །རྣམ་གཞག་དེ་ནི་མི་རིགས་སོ॥ निराकारे तु विज्ञाने सा संस्था न हि युज्यते ॥ त.स.49ख/488; संस्थितिः – བྱ་དང་བྱེད་པའི་རྣམ་གཞག་ནི། །ཐམས་ཅད་དེ་ལྟའི་རྣམ་པ་ཅན॥ एवम्प्रकारा सर्वैव क्रियाकारकसंस्थितिः । प्र.अ.197क/211; प्रत्यवस्थानम्– དེ་ནི་དེ་ཁོ་ན་རྣམ་པར་གཞག་པའི་གཏམ་མ་ཡིན་ནོ॥ न सा तत्त्वप्रत्यवस्थानकथा ल.अ.85ख/33 2. प्रक्रिया – དེ་ལྟར་བདག་ནི་མ་གྲུབ་ན་འང་། །དེ་ལ་རྣམ་གཞག་ཞེས་པ་གང་॥ इत्थमात्माप्रसिद्धौ च प्रक्रिया तत्र या

कृता। त.स.9ख/120 3. = ञ्जेष उपहारः – प्राभृतं तु प्रदेशनम्। उपायनमुपग्राह्यमुपहारस्तथोपदा। अ. को.2.8.28; उपह्रियते समीपमिति उपहारः अ.वि. 2.8.28 0. उपन्यासः – དེའི་རྣམ་པར་གཞག་པ་[? ཉེ་བར་དགོད་པ་]ནི་སྦྱོར་བ་ཡིན་ནོ॥ तासामुपन्यासाः प्रयोगाः वा.टी.51ख/4; •कृ. व्यवस्थाप्यम् – རྣམ་པར་གཞག་པ་དང་རྣམ་པར་འཇོག་པའི་ངོ་བོ་ཡང་ཤེས་པ་གཅིག་ལ་ཇི་ལྟར་རུང་ཞེ་ན व्यवस्थाप्यव्यवस्थापकभावोऽपि कथमेकस्य ज्ञानस्येति चेत् न्या.टी. 46क/83; व्यवस्थाप्यमानः – དེ་བས་ན་རྣམ་པར་འཇོག་པའི་རྒྱུ་སྔོན་པོ་དང་འདྲ་བ་ནི་ཚད་མ་ཡིན་ལ། སྔོན་པོ་མྱོང་དུ་རུང་བའི་ངོ་བོ་ཉིད་དུ་རྣམ་པར་གཞག་པ་ནི་ཚད་མའི་འབྲས་བུ་ཡིན་ནོ॥ तेन नीलसारूप्यं व्यवस्थापनहेतुः प्रमाणम्, नीलबोधरूपं तु व्यवस्थाप्यमानं प्रमाणफलम् न्या.टी.47ख/91; अवस्थाप्यमानः – ངེས་པར་བྱེད་པའི་ཤེས་པས་ཤེས་པ་དེ་ལ་སྔོན་པོ་མྱོང་བར་རྣམ་པར་གཞག་པ་ནི་རྣམ་པར་གཞག་པར་བྱ་བ་ཡིན་ནོ॥ निश्चयप्रत्ययेन च तज्ज्ञानं नीलसंवेदनमवस्थाप्यमानं व्यवस्थाप्यम् न्या.टी.46क/83; *•भू.का.कृ. व्यवस्थापितः – ཆོས་རྣམ་པར་གཞག་པ་རྟོགས་པ व्यवस्थापितधर्मप्रतिवेधतः सू.व्या.168क/59; གང་གི་ཕྱིར་སྔར་སྒྲ་དོན་རྣམ་པར་གཞག་པ་དེ་ཁོ་ན་ཉིད་དུ་ཡོད་པ་བཀག་པ་དང་འཁྲུལ་པ་ཡིན་ནོ་ཞེས་ཀྱང་རྣམ་པར་གཞག་པ་ཡིན་ནོ॥ यतस्तात्त्विकी शब्दार्थव्यवस्था पूर्वं निषिद्धा, भ्रान्तेति च व्यवस्थापिता त.प.3क/450; གང་གི་དབང་དུ་བྱས་ནས་ཆོས་གཞན་དག་ཀྱང་ཡོད་བཞིན་དུ་རྟོག་པ་ལ་སོགས་པ་ཁོ་ན་བསམ་གཏན་རྣམས་ལ་ཡན་ལག་ཉིད་དུ་རྣམ་པར་གཞག་ཅེ་ན किं पुनरधिकृत्य ध्यानेषु वितर्कादय एवाङ्गत्वेन व्यवस्थापिताः सत्स्वन्येषु धर्मेषु अभि.स.भा.57ख/79; अभि.भा.29ख/980; स्थापितः – རིན་ཆེན་སྒྲོམ་ཉིད་དུ...རྣམ་པར་གཞག स्थापितं...रत्नकरण्डके गु. सि.3ख/8; *> རྣམ་པར་བཞག་པ།

རྣམ་པར་གཞག་པར व्यवस्थापयितुम् – ལུས་ཅན་མ་ཡིན་པ་ནི་དེ་ལྟར་རྣམ་པར་གཞག་པར་ནུས་པ་མ་ཡིན་ནོ॥ न त्वमूर्तस्य शक्यं तथा व्यवस्थापयितुम् त.प. 102ख/655; घटना कर्तुम् – དཔེར་ན་རྒྱུ་དང་འོ་མ་ལ་སོགས་པ་འདྲེས་པར་གྱུར་པ་རྣམ་པར་ཕྱེ་ནས་མི་སྣང་བའི་ཕྱིར་རྣམ་པར་གཞག་པར་མི་ནུས་པ यथा क्षीरोदकादेर्मिश्रीभूतस्य विवेकेनाप्रतिभासनान्न घटना शक्यते कर्तुम् त.प.3क/451.

རྣམ་པར་གཞག་པ་དང་རྣམ་པར་འཇོག་པའི་ངོ་བོ *पा.* व्यवस्थाप्यव्यवस्थापकभावः – རྣམ་པར་གཞག་པ་དང་རྣམ་པར་འཇོག་པའི་ངོ་བོ་ཡང་ཤེས་པ་གཅིག་ལ་ཇི་ལྟར་རུང་ཞེ་ན व्यवस्थाप्यव्यवस्थापकभावोऽपि कथमेकस्य ज्ञानस्येति चेत् न्या.टी.46क/83.

རྣམ་པར་གཞག་པ་གདགས་པ व्यवस्थानप्रज्ञप्तिः, संख्याविशेषः – བྱེ་བ་ཕྲག་བརྒྱ་ན་ཐེར་འབུམ་ཞེས་བྱའོ॥ ...ཏོགས་འཁོར་ཕྲག་བརྒྱ་ན་རྣམ་པར་གཞག་པ་གདགས་པ་ཞེས་བྱའོ॥ शतं कोटीनामयुतं नामोच्यते... शतं तिटिलम्भानां व्यवस्थानप्रज्ञप्तिर्नामोच्यते ल.वि. 76ख/103.

རྣམ་པར་གཞག་པ་བྱས *क्रि.* व्यवस्था क्रियते – དེའི་ཕྱིར་སའི་གོ་རིམས་རྣམ་པར་གཞག་པ་བྱས་ཏེ इत्यतो भूमिक्रमव्यवस्था क्रियते ल.अ.140क/86.

རྣམ་པར་གཞག་པ་མཛད *भू.का.कृ.* प्रज्ञप्तः – དོན་གང་གི་དབང་དུ་བྱས་ནས་བཅོམ་ལྡན་འདས་ཀྱིས་སྐྱབས་གསུམ་རྣམ་པར་གཞག་པ་མཛད་ཅེ་ན केनार्थेन किमधिकृत्य भगवता शरणत्रयं प्रज्ञप्तम् र.व्या.83ख/17;

द्र. རྣམ་པར་བཞག་པ།

རྣམ་པར་གཞག་པ་ཡིན *क्रि.* व्यवस्थाप्यते – དེའི་ཕྱིར དེ་ཁོ་ན་ལྟར་རྣམ་པར་གཞག་པ་ཡིན་ནོ།། तस्मात् तथैव व्यवस्थाप्यते त.प.113क/676.

རྣམ་པར་གཞག་པ་བསམ་གྱིས་མི་ཁྱབ་པ *वि.* अचिन्त्यव्यवस्थानः, बुद्धस्य म.व्यु.359 (9ख).

རྣམ་པར་གཞག་པར་བྱ = རྣམ་པར་གཞག་པར་བྱ་བ།

རྣམ་པར་གཞག་པར་བྱ་བ • *क्रि.* व्यवस्थाप्यते – གང་ཞིག་གང་གི་ངོ་བོར་རྣམ་པར་གཞག་པའི་རྒྱུ་མཚན་མེད་པ་དེ་ནི་ཐ་སྙད་འདོགས་པ་པོ་རྟོག་པ་དང་ལྡན་པ་རྣམས་ཀྱིས་དེ་ལྟར་རྣམ་པར་གཞག་པར་བྱ་བ་མ་ཡིན་ཏེ यस्य यद् रूपं व्यवस्थितौ निमित्तं नास्ति, न तत्तथा प्रेक्षावद्भिर्व्यवहर्तृभिर्व्यवस्थाप्यते त.प.8क/461; དེའི་ཕྱིར་རེ་ཞིག་འདི་རྣམ་པར་གཞག་པར་བྱའོ།། अत इदं तावद् व्यवस्थाप्यते अभि.भा.19ख/937; • *सं.* व्यवस्थापनम् – དེ་ལྟ་ཡིན་ན་ཚད་མའི་གསལ་བ་གཅིག་རྣམ་པར་གཞག་པར་བྱ་བའི་ཕྱིར ततश्च एकप्रमाणव्यक्तिव्यवस्थापनाय त.प.217क/904; • *कृ.* व्यवस्थाप्यम् – ཞེས་རྣམ་པར་གཞག་པར་བྱ་བ་དང་རྣམ་པར་འཇོག་པར་བྱེད་པའི་ངོ་བོས་བསྒྲུབ་པར་བྱ་བ་དང་སྒྲུབ་པར་བྱེད་པར་རྣམ་པར་གཞག་གི इति व्यवस्थाप्यव्यवस्थापकभावेन साध्यसाधनव्यवस्था त.प.20ख/488.

རྣམ་པར་གཞག་པར་བྱ་བ་དང་རྣམ་པར་འཇོག་པར་བྱེད་པའི་ངོ་བོ व्यवस्थाप्यव्यवस्थापकभावः – ཞེས་རྣམ་པར་གཞག་པར་བྱ་བ་དང་རྣམ་པར་འཇོག་པར་བྱེད་པའི་ངོ་བོས་བསྒྲུབ་པར་བྱ་བ་དང་སྒྲུབ་པར་བྱེད་པར་རྣམ་པར་གཞག་གི། བསྐྱེད་པར་བྱ་བ་དང་སྐྱེད་པར་བྱེད་པའི་དངོས་པོས་ནི་མ་ཡིན་ནོ།། इति व्यवस्थाप्यव्यवस्थापकभावेन साध्यसाधनव्यवस्था, नोत्पाद्योत्पादकभावेन त.प.20ख/488.

རྣམ་པར་གཞག་པར་བྱ་བ་མ་ཡིན *क्रि.* न व्यवस्थाप्यते – དེ་ནི་ཐ་སྙད་འདོགས་པ་པོ་རྟོག་པ་དང་ལྡན་པ་རྣམས་ཀྱིས་དེ་ལྟར་རྣམ་པར་གཞག་པར་བྱ་བ་མ་ཡིན་ཏེ न तत् तथा प्रेक्षावद्भिर्व्यवहर्तृभिर्व्यवस्थाप्यते त.प.8क/461.

རྣམ་པར་གཞག་པར་བྱ་བ་ཡིན • *क्रि.* व्यवस्थाप्यते – འགལ་བ་འདིས་ནི་དངོས་པོའི་དེ་ཉིད་ཐ་དད་པར་རྣམ་པར་གཞག་པར་བྱ་བ་ཡིན་ནོ།། विरोधेन ह्यनेन वस्तुतत्त्वं विभक्तं व्यवस्थाप्यते न्या.टी.77ख/206; • *कृ.* व्यवस्थाप्यम् – ངེས་པར་བྱེད་པའི་ཤེས་པས་ཤེས་པ་དེ་ལ་སྔོན་པོ་མྱོང་བར་རྣམ་པར་གཞག་པ་ནི་རྣམ་པར་གཞག་པར་བྱ་བ་ཡིན་ནོ།། निश्चयप्रत्ययेन च तज्ज्ञानं नीलसंवेदनमवस्थाप्यमानं व्यवस्थाप्यम् न्या.टी.46क/83.

རྣམ་པར་གཞག་པར་མི་འགྱུར *क्रि.* व्यवस्था नैव भवेत् – ཞེས་ཁྱེད་ཅག་ལ་ངོ་ཤེས་པའི་མཐར་ཐུག་པའི་རྣམ་པར་གཞག་པར་མི་འགྱུར་ཏེ इति व्यवस्था प्रत्यभिज्ञानपरायणानां भवतां नैव भवेत् त.प.177क/812.

རྣམ་པར་གཞིག • *क्रि.* विनाशयेयम् लो.को.1415; • = རྣམ་པར་གཞིག་པ།

རྣམ་པར་གཞིག་པ विनाशः – རིགས་སུ་འཛིན་པ་རྣམ་པར་གཞིག་པའི་སླད་དུ་བདུད་རྩི་ལྔ་ལ་སོགས་པའི་དམ་ཚིག་རྣམས་བསྟེན་པར་བྱའོ།། समयान् पञ्चामृताद्यान् सेवयेत् कुलग्रहविनाशाय वि.प्र.151ख/3.97; विदारणम् – གདུག་པ་ཐམས་ཅད་རྣམ་གཞིག་པ सर्वदुष्टविदारणम् गु.स.128क/82.

རྣམ་པར་གཞིག་པར་འཚལ་བ विनाशयितुकामः लो.को.1415.

རྣམ་པར་གཞུག कृ. प्रवेष्टव्यम् – དེར་ནི་རིགས་ལྔ་ལས་བྱུང་བའི། །རིག་མ་བཟང་མོ་རྣམ་པར་གཞུག། विद्या तत्र प्रवेष्टव्या दिव्या पञ्चकुलोद्भवा ॥ हे.त.11ख/34.

རྣམ་པར་གཞོམ = རྣམ་པར་གཞོམ་པ།

རྣམ་པར་གཞོམ་པ विनाशः – བགེགས་ཀུན་རྣམ་པར་གཞོམ་པའི་ཕྱིར། །གསང་བ་པ་ཡི་བདག་པོས་གསུངས།། सर्वविघ्नविनाशाय गुह्यकाधिपभाषितः । स.दु.127ख/234; विनाशनम् – དགུག་དང་གདོན་དང་བཅིང་བ་རྣམ་པར་གཞོམ།། आकर्षणमुद्धरणबन्धविनाशनानि स.दु.111ख/176; विध्वंसनम् – ཚངས་པའི་སྒོང་ལ་སའི་ཚད་དེ་རྣམ་པར་གཞོམ་པའི་དོན་དུ तद्ब्रह्माण्डमानविध्वंसनार्थम् वि.प्र.165क/1.10.

རྣམ་པར་གཞོམ་པར་བྱ क्रि. विघातयिष्यामि – དེ་ལྟས་བདག་གིས་དགྲ་པོ་དེའི། །ཟས་ནི་རྣམ་པར་གཞོམ་པར་བྱ།། तस्माद्विघातयिष्यामि तस्याशनमहं रिपोः । बो.अ.14ख/6.8.

རྣམ་པར་བཞག = རྣམ་པར་བཞག་པ།

རྣམ་པར་བཞག་པ •क्रि. व्यवस्थाप्यते– བྱིས་པ་རྣམས་ཀྱིས་ཁོང་དུ་མ་ཆུད་པས་ཁམས་གསུམ་པ་སྣ་ཚོགས་སུ་བཏགས་པ་འདི་ནི་སའི་གོ་རིམས་ཀྱི་མཚམས་སྦྱར་བ་བསྟན་པ...རྣམ་པར་བཞག་གོ།། अनवबोधाद्बालानां भूमिक्रमानुसन्धिव्यपदेशं [? शस्]त्रैधातुकविचित्रोपचारश्च व्यवस्थाप्यते ल.अ.140क/86; • सं. 1. व्यवस्था – སོགས་པའི་སྒྲས་ནི...དེ་རྟོགས་པར་བྱེད་པའི་ཚད་མ་དང་བཅིངས་པ་དང་ཐར་པ་ལ་སོགས་པའི་རྣམ་པར་བཞག་པ་གཟུང་ངོ་།། आदिशब्देन... तदधिगन्तृप्रमाणबन्धमोक्षादिव्यवस्थापरिग्रहः त.प.142क/14; མིག་སོགས་རྣམས་ནི་གཟུགས་སོགས་ལ། །གསལ་བར་བྱེད་པ་ཉིད་ཡིན་པས། །ཇི་ལྟར་རྣམ་བཞག་སྣང་གྱུར་པ། །དེ་ལྟར་འདིར་ཡང་འགྱུར་བ་ཡིན།། सति प्रकाशकत्वे च व्यवस्था दृश्यते यथा । रूपादौ चक्षुरादीनां तथात्रापि भविष्यति ॥ त.स.73ख/686; व्यवस्थानम् – གང་ཟག་རྣམ་པར་གཞག་(བཞག पा.भे.)པ་དྲུག་པོ་དེ་དག་གིས་ནི་ཉན་ཐོས་ཀྱི་སྤྱོད་པ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་དང་པོ་དང་དབུས་དང་མཐའ་དག་བསྟན་ཏེ सैषा सा[? आ]दिमध्यपर्यवसाना सर्वश्रावकचर्या षड्भिः पुद्गलव्यवस्थानैः सन्दर्शिता भवति श्रा.भू.13क/27 2. अवस्थितिः – ངོ་བོ་རྒྱུ་དང་འབྲས་བུ་དང་། །ལས་དང་ལྡན་དང་འཇུག་པ་དང་། །དེ་རྟག་བསམ་གྱིས་མི་ཁྱབ་ཀྱིས། །སངས་རྒྱས་ས་ནི་རྣམ་པར་གནས།། स्वभावहेतुफलतः कर्मयोगप्रवृत्तितः । तन्नित्याचिन्त्यतश्चैव बुद्धभूमिष्ववस्थितिः ॥ र.वि.116क/79; • भू.का.कृ. व्यवस्थापितः – འཐད་པས་བསྒྲུབས་པའི་རིགས་པས་རབ་ཏུ་བསྒྲུབས་ཤིང་རྣམ་པར་གཞག་[? བཞག]པ उपपत्तिसाधनयुक्त्या प्रसाधितं व्यवस्थापितम् बो.भू.21क/25; व्यवस्थितः – དོན་བྱེད་པ་དང་རྗེས་འབྲེལ་བས། །ཚད་མ་ཉིད་དུ་རྣམ་པར་གཞག[? བཞག]།། अर्थक्रियानुरोधेन प्रमाणत्वं व्यवस्थितम् ॥ प्र.वा.120ख/2.58; अवस्थितः – དེའི་ཕྱིར་དེ་ལྟར་དངོས་པོ་ཐམས་ཅད་རིགས་པས་རྣམ་པར་གཞག་[? བཞག]པའི་ཆ་མེད་པ་ཉིད་ཡིན་ན་ཡང་གལ་ཏེ་ཆ་དང་བཅས་པ་ཉིད་དུ་མ་གྱུར་ན་ཡུལ་དང་དུས་ཀྱིས་བྱས་པའི་སྔ་མ་དང་ཕྱི་མ་དག་ཏུ་ཇི་ལྟར་འགྱུར་ཞེས་རྒོལ་ན तदेवं निरंशत्वेऽपि सर्वभावानां न्यायतोऽवस्थितं कालकृतं पौर्वापर्यम्, देशकृतं तु कथं स्यात् यदि सावयवत्वं न स्यात्–इति चोद्यते त.प.114ख/679.

རྣམ་པར་བཞུགས = རྣམ་པར་བཞུགས་པ།

རྣམ་པར་བཞུགས་པ • *क्रि.* विजहार – སྔོན་ཚེ་གྲོང་ཁྱེར་རྒྱལ་པོའི་ཁབ། །ཀ་ལནྡ་ཀའི་གནས་ཞེས་པ། །འོད་མའི་ཚལ་ནི་ཡིད་འཕྲོག་ན། །བཅོམ་ལྡན་འདས་ནི་རྣམ་པར་བཞུགས།། पुरे पुरा राजगृहे भगवान् वेणुकानने। कलन्दकनिवासाख्ये विजहार मनोहरे॥ अ.क.240ख/28.2; • *भू.का.कृ.* व्यवस्थितः – དང་པོའི་ལྷ་ཡི་རང་བཞིན་དུ། །རྡོ་རྗེ་སེམས་དཔའ་རྣམ་པར་བཞུགས།། आदिदेवतारूपेण वज्रसत्त्वव्यवस्थितः स.उ.268ख/4.29; ཕྱག་དང་སྐུ་མདོག་ཡང་དག་ལྡན། །ཇི་ལྟར་སྔོན་ནས་རྣམ་བཞུགས་པ།། भुजवर्णसमायुक्तं यथापूर्वव्यवस्थितम्। ज्ञा.सि.41क/104; ल.अ.57ख/3.

རྣམ་པར་ཟ *क्रि.* खादति – དེ་ན་ཅེ་སྤྱང་དུས་བྱས་ཤི་བ་ལ། །སེམས་ཅན་དག་ནི་ཕན་ཚུན་རྣམ་པར་ཟ།། भेरुण्डकाः कालगताश्च तत्र खादन्ति सत्त्वाश्च ति अन्यमन्यम्। स.पु.35क/58.

རྣམ་པར་ཟོས་པ *पा.* विखादितम्, अशुभताभेदः – དེ་ལ་ཕྱི་རོལ་ལ་བརྟེན་པའི་མི་གཙང་བའི་མི་སྡུག་པ་ཉིད་གང་ཞེ་ན། འདི་ལྟ་སྟེ། རྣམ་པར་བསྔོས་པ་དང…རྣམ་པར་ཟོས་པ་དང तत्र बहिर्धा चोपादाय अशुभता कतमा? तद्यथा – विनीलकं वा…विखादितं वा श्रा.भू.79ख/203; གང་གི་ཚེ་ཤི་བའི་རོ་དུར་ཁྲོད་དུ་བོར་བ་རྣམ་པར་ཟོས་པ…མཐོང་ན यदा मृतशरीराणि पश्यति श्मशाने उत्सृष्टानि विखादितानि शि.स.119ख/116; विखादितकम् – དང་པོའི་གཉེན་པོར་ནི་རྣམ་པར་བསྔོས་པ་ལ་སོགས་པ་ལ་དམིགས་པའི་མི་སྡུག་པ་རྗོད་པར་བྱེད་དོ།། གཉིས་པའི་ནི་རྣམ་པར་ཟོས་པ་དང་རྣམ་པར་འཐོར་བ་ལ་དམིགས་པའོ།། प्रथमस्य प्रतिपक्षेण विनीलकाद्याकारालम्बनामशुभां वर्ज[? वर्ण]यन्ति। द्वितीयस्य विखादितकविक्षिप्तालम्बनाम् अभि.भा.9ख/895; ཁྭ་དང་རྒྱུན་ལག་དང་བྱ་རྒོད་དང་ཁྱི་དང་ཝ་དག་གིས་བཟའ་བ་ལ་ནི་རྣམ་པར་ཟོས་པར་མོས་པར་བྱེད་དོ།། काकैः कुररैः खाद्यमानं गृध्रैः श्वभिः शृगालैर्विखादितकमित्यधिमुच्यते श्रा.भू.136क/372.

རྣམ་པར་ཟོས་པའི་འདུ་ཤེས *पा.* विखादितकसंज्ञा, अशुभभावनाविशेषः म.व्यु.1161 (24ख).

རྣམ་པར་ཟློག = རྣམ་པར་ཟློག་པ།

རྣམ་པར་ཟློག་པ • *क्रि.* 1. विनिवर्तयति – སྲོག་གཅོད་པ་ལས་ནི་རྣམ་པར་ཟློག་གོ།། प्राणिवधाद्विनिवर्तयति ग.व्यू.23क/120 2. विनिवर्तयेत् – བྱིས་པས…།ཇི་ལྟར་གཟེར་ལ་གཟེར་བཞིན་དུ། །འཛིན་པ་བྲིད་དེ་རྣམ་པར་ཟློག།། बालः कीले यथा कीलं प्रलोभ्य विनिवर्तयेत्॥ ल.अ.93क/40; • *सं.* विनिवर्तनम् – སྲིད་པ་གསུམ་གྱི་སྡུག་བསྔལ་རྣམ་པར་ཟློག་པ भवत्रयदुःखविनिवर्तनम् ल.अ.70ख/19; निवारणम् – བྱ་བ་ངན་ལས་རྣམ་པར་ཟློག་པ दुर्व्यापारनिवारणम् अ.क.309क/40.27; • *वि.* व्यावर्तकः – བཅོམ་ལྡན་འདས་རྣལ་འབྱོར་ཐམས་ཅད་ལ་མངའ་མཛད་པ་མུ་སྟེགས་ཅན་གྱི་རྣལ་འབྱོར་རྣམ་པར་ཟློག་པ भगवन्तं सर्वयोगवशवर्तिनं तीर्थ्ययोगव्यावर्तकम् ल.अ.59ख/5.

རྣམ་པར་ཟློག་བྱེད་པ विनायकः – བགེགས་ཀུན་རྣམ་པར་ཟློག་བྱེད་པས།། सर्वविघ्नविनायकैः ज्ञा.सि.38क/95.

རྣམ་པར་གཟིགས • *क्रि.* आलुलोके – དེ་ཡི་སྤྱན་གྱིས་འཁོར་ལ་རྣམ་པར་གཟིགས།། सः…दृशा पार्षदमालुलोके अ.क.197क/22.46; • *भू.का.कृ.* व्यवलोकितः – དེས་ནི་འགྲོ་བ་ཡོངས་སུ་སྨིན་པ་རྣམས་ཀྱི་དབང་པོ་རྣམ

པར་གཟིགས་པ་ལགས तेन व्यवलोकितानि परिपक्वजगदिन्द्रियाणि ग.व्यू.306क/394; • ना. विपश्यी, बुद्धः – སྔོན་བྱུང་བ་འདས་པའི་དུས་ན་བསྐལ་པ་དགུ་བཅུ་རྩ་གཅིག་པ་ལ...སངས་རྒྱས་བཅོམ་ལྡན་འདས་རྣམ་པར་གཟིགས་ཞེས་བྱ་བ་འཇིག་རྟེན་དུ་བྱུང་ངོ་།། भूतपूर्वमतीतेऽध्वनि एकनवते कल्पे विपश्यी नाम... लोक उदपादि...बुद्धो भगवान् अ.श.72क/63; གང་གི་ཚེ་ན་ཡང་དག་པར་རྫོགས་པའི་སངས་རྒྱས་རྣམ་པར་གཟིགས་རྒྱལ་པོའི་ཕོ་བྲང་གཉེན་ལྡན་དུ་གཤེགས་པ་དེ་ཚེ་ན་ནས་བཟུང་སྟེ། དེ་ལ་སུ་ཡང་བཀུར་སྟི་བྱ་བ་དང་...མཆོད་པར་བྱ་བ་མི་བྱེད་པ་དང་ यत एव विपश्यी सम्यक् संबुद्धो बन्धुमतीं राजधानीमनुप्राप्तस्तत एव तं न कश्चित्सत् करोति...न पूजयति वि.व. 145ख/1.33; ལག་བཟང་དང་...རྣམ་པར་གཟིགས་དང་ཤཱཀྱ་ཐུབ་པ सुबाहुः...विपश्चि[श्यी]शाक्यमुनिश्च म.मू.94क/6; དེས་ཡང་དག་པར་རྫོགས་པའི་སངས་རྒྱས་རྣམ་པར་གཟིགས་ཀྱི་མཆོད་རྟེན་ལ་བཀུར་སྟི་བྱེད་པ་དེས་ན་འདི་ལྟ་བུར་དྲི་ཞིམ་པོར་གྱུར་ཏོ།། यदनेन विपश्यिनः सम्यक्संबुद्धस्य स्तूपे काराः कृतास्तेन सुगन्धः संवृत्तः अ.श.171ख/158.

རྣམ་པར་གཟིགས་ནས व्यवलोक्य – འཇིག་རྟེན་གྱིས་མཆོད་པས་དུས་ལ་བབ་པའི་ཚོད་ལ་རྣམ་པར་གཟིགས་ནས लोकमहितो व्यवलोक्य ऋतुकालसमये ल.वि. 31ख/43; विलोक्य – བཅོམ་ལྡན་གྱིས།...ནོར་བཟང་ཉིད་ལ་རྣམ་གཟིགས་ནས།། सुधनं...विलोक्य भगवान् अ.क.279क/35.52.

རྣམ་པར་གཟིགས་ཤིང विलोकयन् – ཕྱོགས་སུ་རྣམ་པར་གཟིགས་ཤིང་སྨྲས།། दिशो विलोकयन्नूचे अ.क. 209क/24.15.

རྣམ་པར་གཟིགས་པར་མཛད क्रि. व्यवलोकयति – སངས་རྒྱས་ཀྱི་སྤྱན་གྱིས། སུ་འཕེལ། སུ་འགྲིབ...འཇིག་རྟེན་ལ་རྣམ་པར་གཟིགས་པར་མཛད་དོ།། बुद्धचक्षुषा लोकं व्यवलोकयति–को हीयते, को वर्धते बो.भू. 49क/63.

རྣམ་པར་གཟིགས་སུ་གསོལ क्रि. व्यवलोकयतु लो.को. 1415.

རྣམ་པར་གཟུང कृ. धारणीयम् – སྣ་ཚོགས་སྤངས་པའི་སྐད་ཅིག་ལ། །སྟོན་པས་སྨྲས་པ་སེམས་དཔའ་ཆེ། །བདེ་བ་ཆེན་པོ་རྣམ་པར་གཟུང་།། नानात्ववर्जिते क्षणे । शास्ता ब्रूयान्महासत्त्व धारणीयं महत्सुखम् ॥ हे.त.17ख/54.

རྣམ་པར་བཟའ་བ कृ. भक्षितव्यम् – སྨན་ནི་རྣམ་པར་བཟའ་བ་སྟེ།། भक्षितव्यं तु भैषज्यम् हे.त.7क/20.

རྣམ་པར་བཟློག = རྣམ་པར་བཟློག་པ།

རྣམ་པར་བཟློག་པ • क्रि. विनिवर्तते – བྱིས་པ...།གཟེར་གྱིས་གཟེར་ལ་ཇི་བཞིན་དུ། །ཕྱིད་ནས་འཛིན་པ་རྣམ་པར་བཟློག།། बालैः कीले यथा कीलं प्रलोभ्य विनिवर्तते॥ ल.अ.167क/121; विनिवर्तयति – དབུལ་བ་ཐམས་ཅད་ཀྱང་རྣམ་པར་བཟློག་གོ།། सर्वदारिद्र्यं च विनिवर्तयति बो.प.51ख/12; •सं. 1. विनिवृत्तिः – དེ་དག་གི་ངོ་མཚར་རྣམ་པར་བཟློག་པའི་ཕྱིར तेषां कौतूहलविनिवृत्त्यर्थम् ल.अ.60ख/6; སྐྱེ་བ་རྣམ་པར་བཟློག་པའི་ཕྱིར། །མི་སྐྱེ་བ་ནི་རབ་ཏུ་བསྒྲུབ།། उत्पादविनिवृत्त्यर्थमनुत्पादप्रसाधकम् । ल.अ.135ख/81; व्यावृत्तिः – ལྟ་བ་ཐམས་ཅད་རྣམ་བཟློག་པ།། व्यावृत्तिः सर्वदृष्टीनाम् ल.अ.176ख/139; विनिवर्तनम् – འཇིག་རྟེན་གྱི་ཚིག་ཀྱལ་བ་རྣམ་པར་བཟློག་པ लोकसंभिन्नप्रलाप-

विनिवर्तनम् ग.व्यू.156[ख]/239; व्यावर्तनम् – བདག་ཏུ་ལྟ་བ་རྣམ་པར་བཟློག་པ་ལ་མཁས་པ आत्मदृष्टिव्यावर्तनकुशलानाम् ल.अ.59[क]/5; विवर्तनम् – མི་དགེ་བའི་ལས་ལས་རྣམ་པར་བཟློག་པའི་དབང་དང अकुशलकर्मविवर्तनवशेन ग.व्यू.187[ख]/270 2. विपर्ययः – ཡང་དག་པའི་དོན་ཅན་མ་ཡིན་པ་ཉེ་བར་ལེན་པའི་སྟོབས་ལས་བྱུང་བ་ཅན་ཡང་རྒྱུད་ལས་རྣམ་པར་བཟློག་པ་བཟུང་བའི་ཕྱིར་མི་འགྱུར་རོ॥ अभूतार्थं खल्वप्युपादानबलभावि सन्तानस्य विपययोंपादानान्न स्यात् प्र.वृ.324[क]/74; विपरीतः – སྔོན་གྱི་ལས་ཀྱི་རྣམ་སྨིན་ལས། །རྣམ་པར་བཟློག་པའི་རང་བཞིན་འདི॥ विपरीतस्वभावोऽयं विपाकः पुण्य[? पूर्व लि.पा.]-कर्मणाम्। अ.क.205[ख]/85.17 3. = རྣམ་པར་བཟློག་པ་ཉིད विनिवर्तनता – སྡིག་ཏོའི་གྲོགས་པོ་དང་ཕྲད་ཀྱིས་འཇིགས་ཤིང་བག་ཚ་བའི་སེམས་ཅན་རྣམས་སྡིག་ཏོའི་གྲོགས་པོ་དང་ཕྲད་པའི་འཇིགས་པ་རྣམ་པར་བཟློག་པ पापमित्रसमवधानभयभीतानां सत्त्वानां पापमित्रसमवधानभयविनिवर्तनतायै ग.व्यू.115[क]/204; • भू.का.कृ. विनिवारितः – ནམ་ཞིག་བཀྲེས་པས་ཉེན་པ་ཡིས། །ཕྲུག་གུ་འདི་དག་ཟ་རྩོམ་པའི། །སྟག་མོ་དེ་ནི་རང་གི་ལུས། །བྱིན་ནས་བདག་གིས་རྣམ་པར་བཟློག॥ कदाचिदेतौ क्षुत्क्षामा पोतकौ भोक्तुमुद्यता। स्वशरीरं मया दत्वा व्याघ्री सा विनिवारिता ॥ अ.क.262[क]/95.17; निवारितः – རྣམ་པ་དེ་ལྟའི་མགོ་ནད་སྔོན། །བདག་གི་གཞོན་ནུ་མ་ལ་གྱུར། །སྨན་པ་རྣམས་ཀྱིས་རྡོ་བ་ནི། །ཞུ་བ་བསྐུས་ནས་རྣམ་པར་བཟློག॥ एवंविधं मे कन्यायाः शिरःशूलं पुराऽभवत्। पाषाणभेदलेपेन भिषग्भिश्च निवारितम् ॥ अ.क.267[ख]/32.26; विभावितः – མི་ཡི་རང་བཞིན་མང་པོ་ཡང་། །ཁྱོད་ཀྱིས་ངན་སོང་རྣམ་བཟློག་ནས། །སྐད་ཅིག་ཉིད་ལ་ཡོངས་སུ་བསྒྱུར॥ बहवः प्रकृतयो नृणाम्। त्वया विभावितापायाः क्षणेन परिवर्तिताः ॥ श.बु.115[क]/123.

རྣམ་པར་བཟློག་པའི་རྒྱུ व्यावृत्तिहेतुः लो.को.1415.

རྣམ་པར་བཟློག་པར་འགྱུར *क्रि.* विनिवर्तयिष्यति – སྡུག་བསྔལ་གྱི་ཕུང་པོ་རྣམ་པར་བཟློག་པར་འགྱུར་རོ॥ दुःखस्कन्धं विनिवर्तयिष्यति ग.व्यू.377[ख]/88.

རྣམ་པར་བཟློག་པར་བྱ • *क्रि.* निवार्यते – བྱིས་པ་རྐྱེན་གྱིས་གང་རྟོག་པ། །དེ་ནི་རྣམ་པར་བཟློག་པར་བྱ॥ यत्र बाला विकल्पन्ति प्रत्ययैः स निवार्यते ॥ ल.अ.89[क]/36; • *कृ.* विनिवर्तयितव्यम् – སེམས་ཅན་ཐམས་ཅད་ཀྱི་འཁོར་བའི་སྡུག་བསྔལ་ནི་རྣམ་པར་བཟློག་པར་བྱ सर्वसत्त्वसंसारदुःखानि विनिवर्तयितव्यानि ग.व्यू.240[ख]/321.

རྣམ་པར་ཡངས་པ • *सं.* वितानः – དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་དགྲ་བཅོམ་པ་ཡང་དག་པར་རྫོགས་པའི་སངས་རྒྱས་སྤོས་ཀུན་ཏུ་རྣམ་པར་ཡངས་པ་ཞེས་བྱ་བ समन्तगन्धवितानो नाम तथागतोऽर्हन् सम्यक्संबुद्धः ग.व्यू.346[क]/65; • *वि.* व्यायतः – རོ་དང་ལྡན་ཡང་རྣམ་པར་ཡངས་པའི་མེ་ཏོག་དོན་མཐུན་ཡོངས་བཏང་ནས།... ཀང་དྲུག་པ་ནི་ནགས་རྣམས་སུ།...འཁྱམ་པར་བྱེད॥ सरसमपि विहाय व्यायतं पुष्पसार्थं...भ्रमति...षट्पदः काननेषु ॥ अ.क.28[क]/53.12.

རྣམ་པར་གཡེང = རྣམ་པར་གཡེང་བ།

རྣམ་པར་གཡེང་བ •*क्रि.* विक्षिप्यते – སེམས་ཕྱི་རོལ་ཏུ་རྣམ་པར་གཡེང་ཞིང་རྣམ་པར་འཕྲོ་ལ་མཉམ་པར་མི་འཇོག་ཅིང बहिश्चित्तं विक्षिप्यते, विसरति, न समाधीयते र.व्या.114[क]/76; विप्रवाह्यते – ཇི་ལྟར་སིང་ནི་རྒྱ་མཚོ་ལ། །རླབས་ཀྱིས་རྣམ་པར་གཡེང་བ་ལྟར॥ यथा

हि काष्ठमुदधौ तरङ्गैर्विप्रवाह्यते। ल.अ.175[क]/136; •सं. 1. विक्षेपः – སྡོམ་པ་ནི་རྣམ་པར་གཡེང་བ་ལས སེམས་ཡང་དག་པར་སྡོམ་པའོ།། यमनं विक्षेपतः संयमनं चित्तस्य अभि.स.भा.76[ख]/105; རྣམ་གཡེང་མྱུར་དུ རྟོགས་བྱས་ནས། །དེ་ལ་སླར་ནི་བླན་ [སླན पा.भे.]པར བྱ།། अवगम्याशु विक्षेपं तस्मिन् प्रतिहरेत्पुनः ॥ सू.अ.191[क]/89; ཇི་སྙེད་མིག་ནི་རྣམ་གཡེང་བ། །དེ་སྙེད ཕྱག་རྒྱ་རབ་ཏུ་གྲགས།། यावन्तो दृष्टिविक्षेपास्तावन्मुद्राः प्रकीर्तिताः। वि.प्र.179[ख]/3.193; སེམས་མངོན པར་སྡུད་པ་དང་རྣམ་པར་གཡེང་བར་དོགས་པས་ཉ་ཅང མང་བ་དང་ཉུང་ངུར་ནི་མ་ཡིན་ནོ།། चित्ताभिसंक्षेपविक्षेपभयान्नाल्पबहुतरा अभि.भा.10[ख]/899; ལུས དང་སེམས་ནི་དབེན་པ་ཡིས། །རྣམ་པར་གཡེང་བ་མི འབྱུང་ངོ་།། कायचित्तविवेकेन विक्षेपस्य न संभवः। बो.अ.23[क]/8.2; རྫོགས་པའི་རིམ་པའི་རྣལ་འབྱོར་གྱིས། རྣམ་པར་གཡེང་བའི་དགྲ་གསོད་ཅིང་།། उत्पन्नक्रमयोगेन विक्षेपारिनिषूदनम्। गु.सि.16[क]/34; व्याक्षेपः – དེ་ལས་དུས་གཞན་དུ་ཡང་འགྱུར། །ལ་ལར་རྣམ་གཡེང སྲིད་ཕྱིར་རོ།། ततः कालान्तरेऽपि स्यात् क्वचिद् व्याक्षेपसम्भवात् ॥ प्र.वा.125[ख]/2.187; འདུ་བྱེད སྟོབས་དང་ལྡན་པའི་ཕྱིར། །རྣམ་པར་གཡེང་བ་ཟློག་པར བྱེད།། संस्कारस्य बलीयस्त्वाद् व्याक्षेपस्य निवर्तनम्। प्र.अ.77[क]/85; क्षेपः – སེམས་རྣམ་པར་གཡེང བའི་ཕྱིར་འཇུག་པར་ཡང་མི་འགྱུར न च चित्तक्षेपाय सम्वर्तन्ते श्रा.भू.145[क]/394 2. = རྣམ་པར་གཡེང་བ་ཉིད विक्षिप्तता – རབ་ཀྱི་རྩལ་གྱིས་རྣམ་པར་གནོན་པ་ཤེས རབ་ཀྱི་ཕ་རོལ་ཏུ་ཕྱིན་པ་འདི་ནི་ཆོས་གང་འབྲི་བའི་ཕྱིར རམ་འཕེལ་བའི་ཕྱིར་ཉེ་བར་གནས་པ་མ་ཡིན་ནོ།། ཆོས གང་འདུ་བའི་ཕྱིར་རམ...རྣམ་པར་གཡེང་བའི་ཕྱིར་རམ... རབ་ཏུ་མ་རྟོགས་པའི་ཕྱིར་ཉེ་བར་གནས་པ་མ་ཡིན་ནོ།། न खलु पुनरियं सुविक्रान्तविक्रामिन् प्रज्ञापारमिता कस्यचिद्धर्मस्य हानाय वा विवृद्धये वा प्रत्युपस्थिता, नापि कस्यचिद्धर्मस्य संयोगाय...विक्षिप्ततायै वा...अप्रतिवेधाय वा प्रत्युपस्थिता सु.प.47[ख]/24; व्याकुलता – གང་གི་ཚེ་འདུ་བྱེད་ཤིན་ཏུ་སྟོབས་དང ལྡན་པ་དེའི་ཚེ་བྲུན་ལོང་དག་ཏུ་ཡང་སེམས་གཡེང་བར མི་འགྱུར་རོ།། यदा बलीयानत्यन्तं भवति संस्कारस्तदा व्याक्षेपेऽपि न व्याकुलता चेतसः प्र.अ.77[क]/85; འོན་ཏེ་རྣམ་པར་གཡེང་བས་དེ་ཉམས་པར་བྱས་སོ ཞེ་ན अथ व्याकुलतया तदुपहतम् प्र.अ.78[क]/85; • पा. विक्षेपः, उपक्लेशभेदः – ཁྲོ་དང ...རྣམ་གཡེང ...།རྟོག་པ་དང་ནི་དཔྱོད་པ་དང་། །ཉེ་བའི་ཉོན་མོངས གཉིས་རྣམ་གཉིས།། क्रोधः... विक्षेपः... वितर्कश्च विचारश्चेत्युपक्लेशा द्वये द्विधा ॥ त्रि.2[क]/64; རྣམ པར་གཡེང་བ་ནི་འདོད་ཆགས་དང་ཞེ་སྡང་དང་གཏི་མུག གི་ཆར་གཏོགས་པ་སེམས་རྣམ་པར་འཕྲོ་བའོ།། विक्षेपो रागद्वेषमोहांशिकश्चेतसो विसारः त्रि.भा.161[ख]/71; • वि. व्याकुलः – གང་གི་ཚེ་འདུ་བྱེད་ཤིན་ཏུ་སྟོབས དང་ལྡན་པ་དེའི་ཚེ་བྲུན་ལོང་དག་ཏུ་ཡང་སེམས་གཡེང བར་མི་འགྱུར་རོ།། གང་གི་ཚེ་རྣམ་པར་གཡེང་བའི་དངོས པོ་སྟོབས་དང་ལྡན་པ་དེའི་ཚེ यदा बलीयानत्यन्तं भवति संस्कारस्तदा व्याक्षेपेऽपि न व्याकुलता चेतसः। यदा तु बलीयान् भवति व्याकुलभावस्तदा प्र.अ.77[क]/85; *• भू.का.कृ. विक्षिप्तः – ནུབ་ཕྱོགས་པ རྣམས་ན་རེ་ཀུན་ཏུ་བསྡུས་པ་ནི་གཉིད་དང་མཚུངས་པར ལྡན་པ་ཡིན་ནོ།། རྣམ་པར་གཡེང་བ་ནི་ཉོན་མོངས་པ ཅན་གཞན་ཡིན་ནོ་ཞེས་ཟེར་རོ།། संक्षिप्तं मिद्धसंप्रयुक्तं विक्षिप्तमन्यत् क्लिष्टमिति पाश्चात्याः अभि.भा.

46[क]/1047; *> རྣམ་པར་གཡེངས་པ།

རྣམ་པར་གཡེང་བ་རྣམ་པ་གཉིས विक्षेपो द्विविधः – 1. ཡིད་ལ་བྱེད་པའི་རྣམ་པར་གཡེང་བ मनसिकारविक्षेपः, 2. རྣམ་པར་རྟོག་པའི་རྣམ་པར་གཡེང་བ विकल्पविक्षेपः सू.व्या.203[क]/105.

རྣམ་པར་གཡེང་བ་དང་ཐེ་ཚོམ་གྱི་གཉེན་པོ་ཡིད་ལ་བྱེད་པ་བསྒོམ་པ *पा.* विक्षेपसंशयप्रातिपक्षिकमनस्कारभावनः, मनस्कारस्यावान्तरभेदः – ཡིད་ལ་བྱེད་པ་ནི་རྣམ་པ་བཅོ་བརྒྱད་དེ། རིགས་ངེས་པ...སྒོམ་པའི་རྣམ་པ་ལ་ཞུགས་པ་དང...སྒོམ་པའི་རྣམ་པ་ལ་ཞུགས་པ་ནི། རྣམ་པ་བཞི་བསྒོམ་པ་དང་ རྣམ་པ་སུམ་ཅུ་རྩ་བདུན་བསྒོམ་པའོ།། ...དེ་ལ་རྣམ་པ་སུམ་ཅུ་རྩ་བདུན་བསྒོམ་པ་ནི། མི་སྡུག་པའི་རྣམ་པ་བསྒོམ་པ་དང...རྣམ་པར་གཡེང་བ་དང་ཐེ་ཚོམ་གྱི་གཉེན་པོ་ཡིད་ལ་བྱེད་པ་བསྒོམ་པ་ནི། གང་གི་ཚེ་འབད་པར་བྱེད། བརྩོན་འགྲུས་རྩོམ་པར་བྱེད་པ་ན་སྟེ། གོ་རིམས་བཞིན་ནོ།། अष्टादशविधो मनस्कारः–धातुनियतः...भावनाकारप्रविष्टः...भावनाकारप्रविष्टश्चतुराकारभावनः, सप्तत्रिंशदाकारभावनः...तत्र सप्तत्रिंशदाकारभावनः– अशुभाकारभावनः...विक्षेपसंशयप्रातिपक्षिकमनस्कारभावनो यदा व्यायच्छते वीर्यमारभते यथाक्रमम् सू.व्या.167[क]/58.

རྣམ་པར་གཡེང་བ་དང་མཚུངས་པར་ལྡན་པ विक्षेपसम्प्रयोगः – རྣམ་པར་གཡེང་བ་ནི་རྣམ་པར་གཡེང་བ་དང་མཚུངས་པར་ལྡན་པའི་ཕྱིར་ཉོན་མོངས་པ་ཅན་ཡིན་ནོ།། विक्षिप्तं क्लिष्टं विक्षेपसंप्रयोगात् अभि.भा. 46[क]/1047.

རྣམ་པར་གཡེང་བ་མ་ཡིན་པ अविक्षिप्तता – རབ་ཀྱི་རྩལ་གྱིས་རྣམ་པར་གནོན་པ་ཤེས་རབ་ཀྱི་ཕ་རོལ་ཏུ་ཕྱིན་པ་འདི་ནི་ཆོས་གང་འབྲི་བའི་ཕྱིར་རམ་འཕེལ་བའི་ཕྱིར་ཉེ་བར་གནས་པ་མ་ཡིན་ནོ།། ཆོས་གང་འདུ་བའི་ཕྱིར་རམ...རྣམ་པར་གཡེང་བ་མ་ཡིན་པའི་ཕྱིར་རམ...རབ་ཏུ་མ་རྟོགས་པའི་ཕྱིར་ཉེ་བར་གནས་པ་མ་ཡིན་ནོ།། न खलु पुनरियं सुविक्रान्तविक्रामिन् प्रज्ञापारमिता कस्यचिद्धर्मस्य हानाय वा विवृद्धये वा प्रत्युपस्थिता, नापि कस्यचिद्धर्मस्य संयोगाय...अविक्षिप्ततायै वा ...अप्रतिवेधाय वा प्रत्युपस्थिता सु.प.47[ख]/24.

རྣམ་པར་གཡེང་བ་མེད་པ = རྣམ་གཡེང་མེད།

རྣམ་པར་གཡེང་བ་ལ་ཆགས་པ *पा.* विक्षेपसक्तिः, सक्तिभेदः – ཆགས་པ་རྣམ་པ་བདུན་ནི...ལོངས་སྤྱོད་ལ་ཆགས་པ་དང...རྣམ་པར་གཡེང་བ་ལ་ཆགས་པའོ།། सप्तविधा सक्तिः...भोगसक्तिः...विक्षेपसक्तिश्च सू.व्या.203[क]/105.

རྣམ་པར་གཡེང་བར་འགྱུར་བ *क्रि.* विक्षिप्यते – དེས་དེའི་སེམས་ཕྱི་རོལ་དུ་རྣམ་པར་གཡེང་བར་འགྱུར་བ་སྟེ येनास्य चित्तं बहिर्धा विक्षिप्यते श्रा.भू.60[क]/147.

རྣམ་པར་གཡེང་བར་བྱེད = རྣམ་པར་གཡེང་བར་བྱེད་པ།

རྣམ་པར་གཡེང་བར་བྱེད་པ •*क्रि.* विक्षिपति म.व्यु. 5195 (77[ख]); विक्षिप्यते – སེམས་ཕྱི་རོལ་དུ་རྣམ་པར་གཡེང་བར་བྱེད་དོ།། चित्तं...बहिर्धा वा विक्षिप्यते श्रा.भू.84[ख]/222; • *सं.* विक्षेपः – འདི་ལྟ་སྟེ་ཆོས་འདོད་པ་རྣམས་རྣམ་པར་གཡེང་བར་བྱེད་པ་འདི་ནི་ཚིག་ཀྱལ་པའི་ནང་ན་མ་རུངས་པའོ།། इदमग्रं संभिन्नप्रलापानां यदुत धर्मकामानां विक्षेपः शि.स.96[ख]/96.

རྣམ་པར་གཡེང་བྱེད་པ = རྣམ་པར་གཡེང་བར་བྱེད།

རྣམ་པར་གཡེངས = རྣམ་པར་གཡེངས་པ།

རྣམ་པར་གཡེངས་པ •*क्रि.* प्रवाह्यते – ཇི་ལྟར་ཤིང་ནི་རྒྱ་མཚོ་ལ། །རླབས་ཀྱིས་རྣམ་པར་གཡེང་བ་ལྟར། །དེ

བཞིན་ཉན་ཐོས་རྨོངས་པ་ཡང་། །མཚན་ཉིད་ཀྱིས་ཀུང་རྣམ་པར་གཡེངས॥ यथा हि काष्ठमुदधौ तरङ्गैर्विप्रवाह्यते। तथा च श्रावको मूढो लक्षणेन प्रवाह्यते ॥ ल.अ.175क/136; विप्रवाह्यते – ཇི་ལྟར་ཤིང་དག་རྒྱ་མཚོ་ལ། །རླབས་རྣམས་ཀྱིས་ནི་རྣམ་པར་གཡེངས॥ यथा हि काष्ठमुदधौ तरङ्गैर्विप्रवाह्यते। ल.अ.109क/55; • सं. विक्षेपः – གལ་ཏེ་ཕྱི་རོལ་དུ་རྣམ་པར་གཡེངས་པའི་ཕྱིར་ཏིང་ངེ་འཛིན་ལས་ཉམས་པར་འགྱུར་རོ་ཞེ་ན बहिर्विक्षेपात् समाधिभ्रंश इति चेत् अभि.भा.70क/1144; ཏིང་ངེ་འཛིན་དེ་ལས་མ་བསྐུལ་ཏེ། བཞེངས་པ རྣམ་པར་གཡེངས་པ་ཉིད་...ཞེ་ན समाधेरचोदितस्यास्य व्युत्थानम्, विक्षेप एव स्याद् ख.टी.157ख/238; व्याक्षेपः – རྟེན་གྱི་ཁྱད་པར་དང་མྱ་ངན་དང་རྣམ་པར་གཡེངས་པ་ལ་སོགས་པས་མཐུ་མ་ཉམས་པ་ཅན་ལས་སོ॥ अनुपहतप्रभावत्वाद् आश्रयविशेषशोकव्याक्षेपादिभिः अभि.भा.90ख/1215; • वि. वातूलः – འཇིག་རྟེན་དག་ན་བུད་མེད་རང་བཞིན་གྱིས། །སེམས་ནི་རྣམ་གཡེངས་དགེ་མཚན་ལྡན་པ་དང་॥ चित्तानि वातूलकुतूहलानि। स्त्रीणां स्वभावेन भवन्ति लोके अ.क.53क/59.32; • भू.का.कृ. विक्षिप्तम् – ཡུལ་གྱི་གཞན་དབང་ཅན་ནི་འདོད་པ་དག་ལ་སེམས་རྣམ་པར་གཡེངས་པ་རྣམས་སོ॥ विषयपरतन्त्राः कामेषु विक्षिप्तचित्ताः सू.व्या.219ख/126; འདོད་ཆགས་དང་བཅས་པའི་སེམས་ལ་འདོད་ཆགས་དང་བཅས་པའི་སེམས་སོ་ཞེས་བྱ་བར་ཡང་དག་པ་ཇི་ལྟ་བ་བཞིན་རབ་ཏུ་ཤེས་སོ॥ ...ཀུན་དུ་བསྡུས་པ་དང་རྣམ་པར་གཡེངས་པ་དང सरागं चित्तं सरागं चित्तमिति यथाभूतं प्रजानाति...संक्षिप्तम्, विक्षिप्तम् अभि.स्फु.244क/1045; व्याक्षिप्तम् – ཚོད་པ་དེ་དང་དེ་དག་ལ་ཡིད་རྣམ་པར་གཡེངས तेषु तेष्वधिकरणेषु व्याक्षिप्तमानसो भवति श्रा.भू. 59ख/146.

རྣམ་པར་གཡེངས་པ་ཉིད་ विक्षिप्तत्वम् – ཉོན་མོངས་པ་ཅན་གྱི་གཉིད་དང་ལྡན་ཅིག་པར་གྱུར་པ་རྣམ་པར་གཡེངས་པ་ཉིད་དུ་དམ་མ་བཅས་པའི་ཕྱིར་རོ॥ मिद्धसहगतस्य क्लिष्टस्य विक्षिप्तत्वाप्रतिज्ञानात् अभि. भा.46ख/1050.

རྣམ་པར་གཡེངས་པ་ཡིན་ क्रि. विक्षिप्तं भवति – ཇི་ལྟར་ན་ཕྱི་རོལ་དུ་རྣམ་པར་གཡེངས་པ་ཡིན་ཞེ་ན कथं बहिर्विक्षिप्तं भवति अभि.भा.46ख/1050.

རྣམ་པར་གཡེངས་བྱེད་ ना. विकरालः, पिशाचराजः – དེ་བཞིན་དུ་ཤ་ཟའི་རྒྱལ་པོ་རྣམ་པར་གཡེངས་བྱེད་ཅེས་བྱ་བ་ངེས་པར་བྲི་བར་བྱའོ॥ एवं पिशाचराजा[? जः] विकरालो नामावश्यमभिलिखितव्यः म.मू.122ख/31; द्र. རྣམ་པར་གཙོགས་པ།

རྣམ་པར་གཡོ = རྣམ་པར་གཡོ་བ།

རྣམ་པར་གཡོ་བ •क्रि. विचलति– ས་སྐྱོང་...གཡོ་ན་རྣམ་པར་གཡོ भूपाले...चञ्चले विचलति अ.क.29ख/53.22; घूर्णते– གང་གི་ཤུགས་ཀྱིས་གཟིངས་འདི་ནི། །འདྲེན་པར་བྱེད་ཅིང་རྣམ་པར་གཡོ॥ कृष्यमाणं प्रवहणं यस्य वेगेन घूर्णते ॥ अ.क.222ख/89.14; दोलायते – པད་ནང་བུང་བ་འཁོར་རམ་ཅི། །ཁྱོད་གདོང་ལ་མིག་གཡོ་འམ་ཅི། །བདག་གི་སེམས་ནི་རྣམ་པར་གཡོ། །ཞེས་པ་འདི་ནི་ཐེ་ཚོམ་དཔེ॥ किं पद्ममन्तर्भ्रान्तालि किन्ते लोलेक्षणं मुखम्। मम दोलायते चित्तमितीयं संशयोपमा ॥ का. आ.2.26; • सं. विभ्रमः – སྒྱུ་མའི་བུད་མེད་མིག་ནི་རྣམ་པར་གཡོ་བ་དག་གི་ཀ། །འདི་ལ་བརྟན་པ་ཉིད་དུ་མངོན་པར་ཁེངས་པ་འདི་ནི་ཅི॥ मायावधूनयनविभ्रमसंवि-

भागे पुंसां क एष वपुषि स्थिरताभिमानः ॥ अ.क. 215ख/24.86; • *वि.* विलोलः – ལྷུང་ཡབ་ལྷུང་གིས་ཡིད་ནི་རྣམ་པར་གཡོ॥ मनोविलोलं व्यजनानिलौघाः (?) अ.क.196ख/22.41; तरङ्गितः – ང་ནི་ནུ་མའི་ཁུར་གྱིས་ནོན། །ཁྱོད་ནི་ལང་ཚོས་རྣམ་པར་གཡོ॥ अहं कुचभराक्रान्ता त्वं तारुण्यतरङ्गितः। अ.क.211क/87.13; अनवस्थितः – རྒྱུན་མི་འཆད་པར་རྣམ་པར་གཡོ་བ अनवरतमनवस्थितम् त.सि.67क/176; • *व.का.कृ.* विचलत् – བཏུང་བས་མྱོས་ཤིང་རབ་རྒྱུག་རྣམ་པར་གཡོ पानमदोत्तरङ्गविचलत् अ.क.93ख/9.82.

རྣམ་པར་གཡོས = རྣམ་པར་གཡོས་པ།

རྣམ་པར་གཡོས་པ • *क्रि.* विचचाल – ལྷའི་གནས་ཀྱང་རྣམ་པར་གཡོས॥ विचचाल सुरालयः अ.क.2ख/50.13; • *भू.का.कृ.* विस्पन्दितः – ཡིད་ཀྱི་རྣམ་པར་གཡོས་པ मनोविस्पन्दितम् ल.अ.122क/68.

རྣམ་པར་རིག = རྣམ་པར་རིག་པ།

རྣམ་པར་རིག་འགྱུར *क्रि.* विभाव्यते – དབའ་རླབས་དངོས་པོར་རྒྱ་མཚོ་ནི། །གར་བྱེད་རྣམ་པར་རིག་འགྱུར་ན॥ उदधिस्तरङ्गभावेन नृत्यमानो विभाव्यते। ल.अ.73ख/21.

རྣམ་པར་རིག་པ • *क्रि.* विजानाति – རྣམ་པར་ཤེས་པས་རྣམ་པར་རིག॥ विज्ञानेन विजानाति ल.अ.73क/21; वेत्ति – ཇི་ལྟར་ཁྱེད་ཅག་གི་ཤེས་པ། །དེ་ཉིད་ཀྱིས་ན་རྣམ་མེད་ནི། །ཡང་དག་མ་ཡིན་རྣམ་པར་རིག॥ यथा हि भवतां ज्ञानं निराकारं च तत्त्वतः। वेत्ति चाभूतमाकारम् त.स.74ख/698; • *सं.* 1. सम्वित्तिः – དོན་ལ་རྣམ་པར་རིག་པ་ནི། །ཤེས་ཉིད་བརྗོད་པ་མ་ཡིན་ནམ॥ ननु चार्थस्य संवित्तिर्ज्ञानमेवाभिधीयते। त.स.73ख/686 2. विवेकः – རྣམ་པར་རིག་པས་སྐྱོན་བཤིག་ཅིང་॥ विवेकव्यस्तदोषाणाम् अ.क.106ख/10.76; དེ་ནི་མཛེས་སམ་མ་ཡིན་ཞེས། །རྣམ་རིག་འདི་ནི་ཅི་ལས་སྐྱེས॥ सुन्दरी सा न वेत्येष विवेकः केन जायते। का.आ. 326क/2.128 3. विज्ञातम् – མཐོང་བ་དང་ཐོས་པ་དང་བྱེ་བྲག་ཕྱེད་པ་དང་རྣམ་པར་རིག་པ་དང་མྱོང་བའི་རྣམ་པར་རྟོག་པའི་བག་ཆགས दृष्टश्रुतमतविज्ञातानुभूतविकल्पवासना ल.अ.140ख/87; • *पा.* 1. विज्ञप्तिः – རང་བཞིན་གཉིས་དང་འབྲེལ་བ་སྟེ། །ཀུན་གཞི་རྣམ་པར་ཤེས་པས་སྤྲུལ། །རྣམ་རིག་ཙམ་གྱི་ལྟ་སྤྲ་དང་། །གང་ཟག་ཆོས་སུ་སྤྱོད་པར་ཡང་། །འཇིག་རྟེན་དེ་ལྟར་རྣམ་བསྒོམས་ནས། །ནམ་ཞིག་ཤིན་ཏུ་གྱུར་པ་ན॥ स्वभावद्वयनिबद्धमालयविज्ञाननिर्मितम्। लोकं विज्ञप्तिमात्रं च दृष्टयौघं धर्मपुद्गलम्॥ विभाव्य लोकमेवं तु परावृत्तो यदा भवेत्। ल.अ.160ख/110; གྱུར་པ་རྣམ་པ་གསུམ་པོ་དེ་དག་ནི...ཡུལ་ལ་རྣམ་པར་རིག་པ་ཞེས་བྱའོ॥ स एष त्रिविधः परिणामः ...विषयविज्ञप्त्याख्यश्च त्रि.भा.149ख/35; གལ་ཏེ་དབང་པོའི་རྣམ་རིག་ནི། །གཟུང་བའི་ཆ་ནི་རྒྱུར་གྱུར་ནའང་། །དེ་ནི་དེ་ལྟར་མི་སྣང་བས། །དབང་པོ་བཞིན་དུ་དེ་ཡུལ་མིན॥ यद्यपीन्द्रियविज्ञप्तेर्ग्राह्यांशः कारणं भवेत्। अतदाभतया तस्या नाक्षवद्विषयः स तु ॥ त.प.130क/711; བདག་རྗེས་རྟོགས་དང་ལྟ་བ་ཕྲ་རྟོགས་དང་། །རྣམ་རིག་སྣ་ཚོགས་རྣམ་པར་རྟོགས་དང་...རྒྱུ། །དེས་ན་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་ཞེས་བྱའོ॥ आत्मानुबोधात्तनुदृष्टिबोधाद्विचित्रविज्ञप्तिविबोधतश्च।...तेनोच्यते हेतुना बोधिसत्त्वः॥ सू.अ.249क/167; རིག་པ་དང་དམིགས་པ་དང་དོན་[ཤེས་པ་དང་]རྣམ་པར་རིག་པ་ཞེས་ཤེས་པ་ཉིད་རྣམ་གྲངས་དེ་དག་གིས་བརྗོད་པ་ཡིན་ནོ॥ वित्ति-

रुपलब्धिरर्थप्रतीतिर्विज्ञप्तिरिति ज्ञानमेवैतैः पर्यायैरभिधीयते त.प.118क/686 2. प्रज्ञप्तिः – རབ་འབྱོར་འདི་ཇི་སྙམ་དུ་སེམས་ཏེ་བར་ལེན་པའི་ཕུང་པོ་ལྔ་པོ་འདི་རྣམས་ལ་འདི་ལྟ་སྟེ་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་ཞེས་བྱ་བའི་འདུ་ཤེས་དང་ཀུན་ཤེས་པ་དང་རྣམ་པར་རིག་པ་དང་ཐ་སྙད་འདི་ཡིན་ནམ तत्किं मन्यसे सुभूते अत्रैषा संज्ञा समज्ञा प्रज्ञप्तिर्व्यवहारः पञ्चसूपादानस्कन्धेषु यदुत बोधिसत्त्व इति अ.सा.14ख/9; •वि. आकारस्य संवेदकः – ཁ་ཅིག་ནི་ཤེས་པ་གཞན་གྱི་རྣམ་པ་ཅན་དོན་གཞན་གྱི་རྣམ་པར་རིག་པར་འདོད་དེ कैश्चिदन्याकारमपि ज्ञानमन्याकारस्यार्थस्य संवेदकमिष्टम् त.प.116क/682.

རྣམ་པར་རིག་པ་ཉིད विज्ञप्तित्वम् लो.को.1416.

རྣམ་པར་རིག་པ་མ་ཡིན་པ •पा. अविज्ञप्तिः – རྣམ་རིག་མིན་རྣམ་གསུམ་ཤེས་བྱ། །སྡོམ་དང་སྡོམ་པ་མིན་དང་གཞན།། अविज्ञप्तिस्त्रिधा ज्ञेया संवरासंवरेतरा। अभि.को.12क/605; དེ་དག་རྣམ་རིག་རྣམ་རིག་མིན། །ལུས་རྣམ་རིག་བྱེད་དབྱིབས་སུ་འདོད།། ते तु विज्ञप्त्यविज्ञप्ती कायविज्ञप्तिरिष्यते। संस्थानम् अभि.को.10ख/568; ཏིང་འཛིན་ལས་སྐྱེས་རྣམ་རིག་མིན།། अविज्ञप्तिः समाधिजा अभि.को.13ख/676; •भू.का.कृ. अविज्ञप्तः – ཀྱེ་མ་ངས་ཐོབ་ཅིང་མངོན་པར་རྫོགས་པར་སངས་རྒྱས་པའི་ཆོས་འདི་ནི་ཟབ་པ...རྣམ་པར་རིག་པ་མ་ཡིན་པ गम्भीरो बतायं मया धर्मोऽधिगतोऽभिसंबुद्धः...अविज्ञप्तः ल.वि.187ख/286; अविदितः – དོན་དམ་རྣམ་པར་རིག་མིན अविदितपरमार्थे अ.क.186क/21.26.

རྣམ་པར་རིག་པ་མེད་པ वि. अविज्ञप्तिकः – འོད་སྲུངས་སེམས་ནི་གཟུགས་མེད་པ ... རྣམ་པར་རིག་པ་མེད་པ चित्तं हि काश्यप अरूपम्...अविज्ञप्तिकम् शि.स.130ख/126; र.व्या.79क/9.

རྣམ་པར་རིག་པ་ཙམ पा. विज्ञप्तिमात्रम्– ཁམས་གསུམ་པོ་ནི་རྣམ་པར་རིག་པ་ཙམ་མོ།། विज्ञप्तिमात्रं त्रैधातुकम् त.प.131ख/714; ཆོས་དང་གང་ཟག་ལ་བདག་མེད་པར་བསྟན་པས་རྣམ་པར་རིག་པ་ཙམ་འབྲས་བུ་དང་བཅས་པ་ལ་མཐར་གྱིས་འཇུག་པར་བྱ་བའི་ཕྱིར་རབ་ཏུ་བྱེད་པ་འདི་བརྩམས་སོ།། धर्मपुद्गलनैरात्म्यप्रदर्शनेन सफले विज्ञप्तिमात्रे आनुपूर्वेण प्रवेशार्थं प्रकरणारम्भः त्रि.भा.146ख/27; विज्ञप्तिमात्रकम् – དེ་ལྟར་ན་རྣམ་པར་རིག་པ་ཙམ་གཉིས་མེད་པ་ཡིན་པའི་ཕྱིར་ཐ་དད་པ་དང་ཐ་མི་དད་པ་དག་མ་ཡིན་ནོ།། तथा विज्ञप्तिमात्रकमद्वैतमिति न भेदाभेदौ प्र.अ.262ख/626; विज्ञप्तिमात्रता – དེའི་ཕྱིར་ཕྱི་རོལ་གྱི་རྒྱུད་གཞན་ཡོད་ན་ཡང་ཤེས་པ་ནི་བདག་ཉིད་རིག་པ་ཙམ་ཁོ་ན་ཡིན་པའི་ཕྱིར་རྣམ་པར་རིག་པ་ཙམ་དུ་གྲུབ་པོ།། तस्मादात्मसंवेदनमेव सदैव ज्ञानं सत्यपि बाह्ये सन्तानान्तर इति सिद्ध्यति विज्ञप्तिमात्रता त.प.116क/682; དེ་ཉིད་རྣམ་པར་རིག་པ་ཙམ།། ཞེས་བྱ་བའི་ཚིག་འདིས་ནི་མངོན་པར་རྟོགས་པར་བསྟན་ཏོ།། सैव विज्ञप्तिमात्रतेत्यनेन वचनेनाभिसमय उक्तः त्रि.भा.169ख/95; དེའི་ཕྱིར་དེ་ལྟར་ཕྱི་རོལ་གྱི་དོན་མི་འཐད་པའི་ཕྱིར་རྣམ་པར་རྟོག་[?རིག་]པ་ཙམ་དུ་བསྟན་ནས तदेवमर्थायोगात् विज्ञप्तिमात्रतां प्रतिपाद्य त.प.116क/682.

རྣམ་པར་རིག་པ་ཙམ་ཉིད पा. विज्ञप्तिमात्रता – རྣམ་རིག་ཙམ་ཉིད་བསྒྲུབ་པ་ནི། །བློ་ལྡན་རྣམས་ཀྱིས་དྲི་མེད་མཛད།། विज्ञप्तिमात्रतासिद्धिर्धीमद्भिर्विमलीकृता। त.स.76क/711; विज्ञप्तिमात्रत्वम् – ཇི་སྲིད་རྣམ་རིག་ཙམ་ཉིད་ལ། །རྣམ་པར་ཤེས་པ་མི་གནས་པ། །དེ་སྲིད

འཛིན་པ་རྣམ་གཉིས་ཀྱི། །བག་ལ་ཉལ་བ་མི་ལྡོག་གོ། यावद् विज्ञप्तिमात्रत्वे विज्ञानं नावतिष्ठते। ग्राह-द्वयस्यानुशयस्तावन्न विनिवर्तते ॥ त्रि.भा.169ख/95.

རྣམ་པར་རིག་པ་ཙམ་ཉིད་དུ་གྲུབ་པ་ཞེས་བྱ་བ *ना.* वि-ज्ञप्तिमात्रतासिद्धिनाम, ग्रन्थः क.त.4259.

རྣམ་པར་རིག་པ་ཙམ་དུ་སྨྲ་བ विज्ञप्तिमात्रतावादी, विज्ञानवादी – ཕྱི་རོལ་གྱི་དོན་ལ་བསྙོན་པའི་རྣམ་པར་རིག་པ་ཙམ་དུ་སྨྲ་བ་ལ་དེ་མ་གྲུབ་པའི་ཕྱིར बहिरर्थाप-लापिनो विज्ञप्तिमात्रतावादिनस्तदसिद्धम् त.प. 125ख/701.

རྣམ་པར་རིག་པའི་དེ་ཁོ་ན *पा.* विज्ञप्तितत्त्वम्, प्रभेद-तत्त्वभेदः – རབ་ཏུ་དབྱེ་བའི་དེ་ཁོ་ན་རྣམ་པ་བདུན་ཏེ། འཇུག་པའི་དེ་ཁོ་ན་དང...རྣམ་པར་རིག་པའི་དེ་ཁོ་ན་དང ...ཡང་དག་པར་སྒྲུབ་པའི་དེ་ཁོ་ནའོ། सप्तविधं प्रभेद-तत्त्वम्–प्रवृत्तितत्त्वम्...विज्ञप्तितत्त्वम्, सम्यक्प्र-तिपत्तितत्त्वञ्च म.भा.13क/3.13.

རྣམ་པར་རིག་པའི་དེ་བཞིན་ཉིད *पा.* विज्ञप्तितथता, तथताभेदः – དེ་བཞིན་ཉིད་རྣམ་པ་བདུན་པོ་འཇུག་པའི་དེ་བཞིན་ཉིད་དང...རྣམ་པར་རིག་པའི་དེ་བཞིན་ཉིད་དང ...ཡང་དག་པར་སྒྲུབ་པའི་དེ་བཞིན་ཉིད་ལ་བརྟེན་ནས་བདེན་པ་རྣམ་པར་གཞག་པ་ཡིན་ནོ། सत्यव्यवस्थानं तु सप्तविधां तथतामाश्रित्य प्रवृत्तितथतां...विज्ञ-प्तितथतां ...सम्यक्प्रतिपत्तितथतां च सू.व्या.244ख /161.

རྣམ་པར་རིག་པའི་སོ་སོར་སྣང་བ་ཐ་དད་པ प्रतिवि-ज्ञप्तिप्रतिभासभेदः – གལ་ཏེ་རྣམ་པར་རིག་པའི་སོ་སོར་སྣང་བ་ཐ་དད་པ་ལས་ཐ་དད་པར་འདོད་དོ། यदि प्रतिविज्ञप्तिप्रतिभासभेदादिना प्रत्यय [? पृथग्] इ-ष्यते वा.टी.89ख/47.

རྣམ་པར་རིག་པར་སྣང་བ *पा.* विज्ञप्तिप्रतिभासम्–རྣམ་པར་རིག་པར་སྣང་བ་ནི་རྣམ་པར་ཤེས་པ་དྲུག་རྣམས་སོ། विज्ञप्तिप्रतिभासं षड् विज्ञानानि म.भा.2ख/1.4.

རྣམ་པར་རིག་པར་བྱ་བ *पा.* विज्ञेया, वागाकारभेदः – དེ་བཞིན་གཤེགས་པའི་གསུང་ནི་རྣམ་པ་དྲུག་ཅུ་དང་ལྡན་པར་འབྱུང་སྟེ། མཉེན་པ་དང...རྣམ་པར་རིག་པར་བྱ་བ་ནི་བསམས་པ་ལས་བྱུང་བའི་ཤེས་པ་ཕུན་སུམ་ཚོགས་པའི་རྟེན་ཡིན་པའི་ཕྱིར་རོ། तथागतस्य षष्टयाकारोपेता वाग् निश्चरति–स्निग्धा च...विज्ञेया संपन्नचिन्ता-मयज्ञानाश्रयत्वात् सू.व्या.183क/78; विज्ञापनीया म.व्यु.472 (11ख).

རྣམ་པར་རིག་པར་བྱ་བ་མ་ཡིན་པ *कृ.* अविज्ञापनीयः– ཀྱེ་མ་ངས་ཐོབ་ཅིང་མངོན་པར་རྫོགས་པར་སངས་རྒྱས་པའི་ཆོས་འདི་ནི་ཟབ་པ... རྣམ་པར་རིག་པར་བྱ་བ་མ་ཡིན་པ गम्भीरो बतायं मया धर्मोऽधिगतोऽभिसंबुद्धः ...अविज्ञापनीयः ल.वि.187ख/286; र.वि.79क/9.

རྣམ་པར་རིག་པར་བྱེད་པ = རྣམ་པར་རིག་བྱེད།

རྣམ་པར་རིག་བྱེད •*क्रि.* विज्ञापयति – དེའི་རྟེན་རྣམ་པར་རིག་པར་བྱེད་པ་དང तदधिष्ठानं च विज्ञापयति अभि.भा.202ख/682; •*सं.* विज्ञापनम् – གཞན་གྱིས་བསྟན་ཅིང་གཞན་གྱི་རྣམ་པར་རིག་བྱེད་ལས་སེམས་བསྐྱེད་པ་གང་ཡིན་པ་དེ་ནི་ཡང་དག་པར་བླངས་པ་བརྡ་ལས་བྱུང་བ་ཞེས་བྱའོ། यो हि पराख्यानात् चित्तोत्-पादः परविज्ञापनात् स उच्यते समादानसाङ्केतिकः सू.व्या.139ख/16; विज्ञपनम् – སོ་སོར་ཐར་ཞེས་པ། །གཞན་གྱིས་རྣམ་རིག་བྱེད་རྫོགས་ཀྱིས།། प्रातिमोक्षा-

ख्यः परविज्ञपनादिभिः अभि.को.11ख/619; • पा. 1. विज्ञप्तिः – ལུས་ཀྱི་རྣམ་པར་རིག་བྱེད कायविज्ञप्तिः बो.प.68ख/36; ཡན་ཆད་ན་རྣམ་པར་རིག་བྱེད་ཀུན་ནས་སློང་བར་བྱེད་པ་མེད་པའི་ཕྱིར་རོ། ऊर्ध्वं विज्ञप्तिसमुत्थापकाभावात् अभि.भा.63ख/1118; དེ་དག་རྣམ་རིག་རྣམ་རིག་མིན། །ལུས་རྣམ་རིག་བྱེད་དབྱིབས་སུ་འདོད། ते तु विज्ञप्त्यविज्ञप्ती कायविज्ञप्तिरिष्यते। संस्थानम् अभि.को.10ख/568 2. विज्ञापनीया, वागाकारभेदः – དེ་བཞིན་གཤེགས་པའི་གསུང་ནི་རྣམ་པ་དྲུག་ཅུ་དང་ལྡན་པར་འབྱུང་སྟེ། མཉེན་པ་དང...རྣམ་པར་རིག་པར་བྱེད་པ་ནི་བསམ་དུ་རུང་བའི་ཆོས་ཡང་དག་པར་སྟོན་པའི་ཕྱིར་རོ། तथागतस्य षष्ट्याकारोपेता वाग् निश्चरति–स्निग्धा च...विज्ञापनीया चिन्त्यधर्मसम्यग्देशिकत्वात् सू.व्या.183क/78.

རྣམ་པར་རིག་བྱེད་མ་ཡིན་པ • पा. अविज्ञप्तिः, रूपस्कन्धभेदः – གཡེངས་དང་སེམས་མེད་པ་ཡི་ཡང་། །དགེ་དང་མི་དགེ་ཡི་འབྲེལ་གང་། །འབྱུང་བ་ཆེ་རྣམས་རྒྱུར་བྱས་པ། །དེ་ནི་རྣམ་རིག་བྱེད་མིན་བརྗོད། विक्षिप्ताचित्तकस्यापि योऽनुबन्धः शुभाशुभः। महाभूतान्युपादाय स ह्यविज्ञप्तिरुच्यते॥ अभि.को.31ख/37; མདོར་ན་རྣམ་པར་རིག་བྱེད་དང་ཏིང་ངེ་འཛིན་ལས་བྱུང་བའི་གཟུགས་དགེ་བ་དང་མི་དགེ་བ་ནི་རྣམ་པར་རིག་བྱེད་མ་ཡིན་པའོ། समासतस्तु विज्ञप्तिसमाधिसम्भूतं कुशलाकुशलं रूपमविज्ञप्तिः अभि.भा.31ख/39; རྣམ་པར་རིག་བྱེད་དང་རྣམ་པར་རིག་བྱེད་མ་ཡིན་པའི་བྱེ་བྲག་གིས विज्ञप्त्यविज्ञप्तिभेदात् अभि.भा.237ख/799.

རྣམ་པར་རིག་བྱེད་མ་ཡིན་པར་སྨྲ་བ अविज्ञप्तिवादी– རྣམ་པར་རིག་བྱེད་མ་ཡིན་པར་སྨྲ་བའི་ལྟར་ན अविज्ञप्तिवादिनस्तु अभि.भा.170ख/585.

རྣམ་པར་རིག་བྱེད་མིན = རྣམ་པར་རིག་བྱེད་མ་ཡིན་པ།

རྣམ་པར་རིག་མིན = རྣམ་པར་རིག་པ་མ་ཡིན་པ།

རྣམ་པར་རིང विदूरम् – ལེ་ལོ་ཅན་ལ་ནི་བྱང་ཆུབ་ཤིན་ཏུ་རིང་ཞིང་རྣམ་པར་རིང་ངོ་། कुसीदानां पुनः सुदूरविदूरे बोधिः शि.स.151ख/146.

རྣམ་པར་རུལ་བ पा. पूयकम्, अशुभताभेदः – གོང་རུས་སམ་རྣམ་པར་བསྔོས་པའམ་རྣམ་པར་རུལ་བའམ་རྣམ་པར་འབུ་ཞུགས་པའམ་རྣམ་པར་བམ་པ་ལ་སོགས་པའོ། अस्थिसङ्कलिकं वा नीलकं वापि [वा वि]पूयकं वा विपडुमकं [? विपुण्ड्रात्मकं] वा व्याध्मातकादिकं वा त्रि.भा.170ख/97.

རྣམ་པར་རོལ = རྣམ་པར་རོལ་བ།

རྣམ་པར་རོལ་ལྡན विक्रीडितावी लो.को.1416.

རྣམ་པར་རོལ་པ = རྣམ་པར་རོལ་བ།

རྣམ་པར་རོལ་བ • क्रि. 1. विक्रीडति – དཔལ་དགྱེས་རོལ་པ་རྣམ་འཕྲུལ་བ། །སྣ་ཚོགས་ཀྱིས་ནི་རྣམ་པར་རོལ། विक्रीडति विचित्रैः श्रीरतिक्रीडाविकुर्वितैः। ज्ञा.सि. 59क/153 2. विजहार – དེ། །ངང་པ་དག་ནི་ལྔ་བརྒྱ་དང་། །མཚོ་སྐྱེས་ཅན་དེར་རྣམ་པར་རོལ། सः...विजहार सरोजिन्यां हंसानां पञ्चभिः शतैः ॥ अ.क.245क/28.51; • सं. 1. विक्रीडनम् – དགའ་ལྡན་གྱི་ཕོ་བྲང་དམ་པ་ནས་འཕབ་པ་དང་། ཆེད་དུ་དགོངས་ཏེ་ལྷུམས་སུ་འཇུག་པའི་རྣམ་པར་རོལ་བ་དང་། མངལ་གྱི་གནས་ཀྱི་ཁྱད་པར་ཀུན་ཏུ་བསྟན་པ तुषितवरभवनविकिरणसंचिन्त्यावक्रमणविक्रीडनगर्भस्थानविशेषसंदर्शनः ल.वि.3ख/3; लीला – མཆོག་ཏུ་དགའ་བའི་རྣམ་རོལ་ཅིང་། परमानन्दलीलया गु.सि.8क/17; विभ्रमः – མཁས་པས་གཡོ་ལྡན་བྱུང་བ་ཡི། །རྣམ་པར་རོལ་པས་བྱུང

མེད་གྱུད།། भुज्यन्ते कुशलैः श्यामा भ्रमद्भ्रमरविभ्रमैः। अ.क.145क/14.74 2. विकुर्वणम् – ཐམས་ཅད་ད་ནི་རྣམ་པར་རོལ། །སངས་རྒྱས་རྣམས་ཀྱི་ཐོབ་པ་ངེས་པ་སྟེ།། बुद्धानां सर्वो विकुर्वणलाभः खलु ख.टी.158ख/239 3. विकुर्वितम् – སྣ་ཚོགས་རྡོ་རྗེ་དང་སངས་རྒྱས་རྣམས་ཀྱི་རྣམ་པར་རོལ་པ་ཡིན་ན भवतु विश्ववज्रस्य बुद्धानां च विकुर्वितम् ख.टी.158ख/239; विक्रीडितम् – རྣམ་པར་རོལ་པའི་ལས་དང་སྤྲུལ་པའི་ལས་ལས་བརྩམས་ཏེ་ཚིགས་སུ་བཅད་པ། དེ་ནི་མཆོག་ཚོགས་ནང་དུ་ཉིད་དེ་འཛིན། །དཔག་མེད་རྣམ་པར་རོལ་པ་ཀུན་སྟོན་ཞིང་།། विक्रीडनकर्म [निर्माणकर्म] चारभ्य श्लोकः। समाधिविक्रीडितमप्रमेयं संदर्शयत्यग्रगणस्य मध्ये। सू.व्या.147ख/28; འཕགས་པ་འཇམ་དཔལ་རྣམ་པར་རོལ་པ་ཞེས་བྱ་བ་ཐེག་པ་ཆེན་པོའི་མདོ आर्यमञ्जुश्रीविक्रीडितनाममहायानसूत्रम् क.त.96; म.व्यु.6404 (91ख) 4. विजृम्भितम् – འདི་ནི་སྨོངས་པའི་རྣམ་རོལ་པ་ཡིན་པས་ཧ་ཅང་ཐལ་བར་འགྱུར་བས་ཆོག་གོ།། तदेतद्धि आन्ध्यविजृम्भितमित्यलं प्रसङ्गेन त.प.12ख/470; •*भू.का.कृ.* विक्रीडितः – གང་བླ་ན་མེད་པ་ཡང་དག་པར་རྫོགས་པའི་བྱང་ཆུབ་ཏུ་སྐྱེ་ཚེ་གཅིག་གིས་ཐོགས་པ...དེས་ནི་ཤེས་རབ་དང་ཐབས་མཁས་པའི་ཚུལ་ལ་རྣམ་པར་རོལ་པ་ལགས यश्चैकजातिप्रतिबद्धोऽनुत्तरायां सम्यक्संबोधौ...स विक्रीडितः प्रज्ञोपायकौशल्यनयेषु ग.व्यू.305ख/393; •*वि.* विलासी – དེ་ནི་རབ་ཏུ་བསྐྱེད་ལྡན་ཞིང་། །བྱིས་པའི་རྩེ་དགས་རྣམ་པར་རོལ།། तस्य प्रवर्धमानस्य बालक्रीडाविलासिनः। अ.क.38क/4.16; विलासिनी – གསེར་འོད་གསལ་བའི་གློག་དག་ནི། །རྣམ་པར་རོལ་པའི་སྤྲིན་འཕྲེང་བཞིན།། काञ्चनरुचिव्यक्तविद्युद्विलासिनी...मेघमालेव अ.क.313क/40.68.

རྣམ་པར་རོལ་པའི་ལས *पा.* विक्रीडनकर्म – རྣམ་པར་རོལ་པའི་ལས་དང་སྤྲུལ་པའི་ལས་ལས་བརྩམས་ཏེ་ཚིགས་སུ་བཅད་པ विक्रीडनकर्म [निर्माणकर्म] चारभ्य श्लोकः सू.व्या.147ख/28.

རྣམ་པར་རོལ་པས་མངོན་པར་མཁྱེན་པ विक्रीडिताभिज्ञः – ཆོས་རྒྱ་མཚོ་མཆོག་གི་བློས་རྣམ་པར་རོལ་པས་མངོན་པར་མཁྱེན་པའི་རྒྱལ་པོ धर्मसागराग्रमतिविक्रीडिताभिज्ञराजः लो.को.1416; པདྨའི་འོད་ཟེར་རྣམ་པར་རོལ་པས་མངོན་པར་མཁྱེན་པ पद्मज्योतिर्विक्रीडिताभिज्ञः लो.को.1416.

རྣམ་པར་བློབ་པ वेताडी – ལྷོ་ཕྱོགས་ཀྱི་རྒྱུད་འདི་ཉིད་ན ཕྱོགས་ཀྱི་གནས་རྒྱ་མཚོ་རྣམ་པར་བློབ་པ་ཞེས་བྱ་བ་ཡོད་དེ इहैव दक्षिणापथे समुद्रवेताडी नाम प्रत्युद्देशः ग.व्यू.363ख/78.

རྣམ་པར་བརླན = རྣམ་པར་བརླན་པ།

རྣམ་པར་བརླན་པ *वि.* विस्यन्दी – དེ་ཡིས་རང་བཞིན་བྱམས་པའི་བདག་ཉིད་ཀྱིས། །རྣམ་པར་བརླན་པ་བཞིན་དུ་སེམས་མཐུན་ཞིང་། །ཕན་ཚུན་གནོད་པ་མེད་པའི་སེམས་གྱུར་ནས།། मैत्रीमयेण प्रशमेन तस्य विस्यन्दिनेवानु[? वि]परीतचित्ताः। परस्परद्रोहनिवृत्तभावाः जा.मा.3ख/2.

རྣམ་པར་ལོག *क्रि.* विरमतु – ལས་ངན་འདི་ལས་རྣམ་པར་ལོག།། विरमास्मात् कुकर्मणः अ.क.168ख/19.54; •རྣམ་པར་ལོག་པ།

རྣམ་པར་ལོག་གྱུར་པ *भू.का.कृ.* विनिवृत्तः – སྦྱིན་ལ་གོམས་པ་ཆེན་པོ་ཡིས། །ཀུན་ལས་རྣམ་པར་ལོག་གྱུར་པ།། सर्वतो विनिवृत्तस्य दानाभ्यासेन भूयसा। अ.क.350ख/46.40.

རྣམ་པར་ལོག་པ • सं. विनिवृत्तिः – མི་ཤེས་པ་དང་སྲེད་པ་དང་ལས་ཀྱི་རྐྱེན་རྣམ་པར་ལོག་པ अज्ञानतृष्णाकर्मप्रत्ययविनिवृत्तिम् ल.अ.70ख/19; ཀུན་ནས་ཉོན་མོངས་པ་རྣམ་པར་ལོག་པ संक्लेशविनिवृत्तिः अभि.स्फु.4ख/7; • भू.का.कृ. विनिवृत्तः – ཐམས་ཅད་དུ་ཁྱབ་པ་ཐམས་ཅད་མཁྱེན་པ་ལ་བྱེད་པའི་མཚན་ཉིད་རྣམ་པར་ལོག་པ सर्वगतं सर्वज्ञं क्रियालक्षणविनिवृत्तम् ल.अ.59ख/5; བདག་ཏུ་སྨྲ་བ་ལས་རྣམ་པར་ལོག་པ आत्मवादविनिवृत्तः ल.अ.142ख/90; निर्मुक्तः – ཚད་དང་དབང་པོ་རྣམ་པར་ལོག། །འབྲས་བུ་མ་ཡིན་རྒྱུ་ཡང་མིན།། प्रमाणेन्द्रियनिर्मुक्तं न कार्यं नापि कारणम्। ल.अ.131क/77.

རྣམ་པར་ཤེས = རྣམ་པར་ཤེས་པ། རྣམ་པར་ཤེས་ནས विज्ञाय – འཁོར་བར་གཏོགས་པ་ཡི། །སྡུག་བསྔལ་བདག་ཉིད་ཀུན་དང་བདག་མེད་པའང་། །རྣམ་པར་ཤེས་ནས विज्ञाय संसारगतं समग्रं दुःखात्मकं चैव निरात्मकं च। सू.अ.215ख/121.

རྣམ་པར་ཤེས་མཐའ་ཡས་སྐྱེ་མཆེད = རྣམ་ཤེས་མཐའ་ཡས་སྐྱེ་མཆེད།

རྣམ་པར་ཤེས་པ • क्रि. 1. विजानाति – དེ་ལ་ཇི་ལྟར་ལྷས་བྱིན་འགྲོ་བ་དེ་བཞིན་དུ་རྣམ་པར་ཤེས་སོ།། तत्र यथा देवदत्तो गच्छति तथा विजानाति अभि.भा.91ख/1218; विजानीते – དེ་ལྟར་[ངེས་པར་]རྟོགས་པའི་ཤེས་རབ་དང་ལྡན་པས་གང་ཅི་མཐོང་བ་དང་ཐོས་པ་དང་སྣོམས་[? བསྣམས་]པ་དང་མྱངས་པ་དང་རེག་པ་དང་རྣམ་པར་ཤེས་པ་དེ་དག་ཐམས་ཅད་ངེས་པར་རྟོགས་སོ།། स एवं नैर्वेधिक्या प्रज्ञया समन्वागतो यत्किंचित् पश्यति शृणोति जिघ्रति आस्वादयति स्पृशति विजानीते वा, तत्सर्वं निर्विध्यति सु.प.25क/5; विज्ञायते – དེ་ཡང་རྣམ་པར་ཤེས་པས་རྟོགས་ཤིང་རྣམ་པར་ཤེས་ཏེ तच्च विज्ञानेन प्रतीयते विज्ञायते त्रि.भा.165ख/83 2. विजानीयात् – གཡོན་པའི་མཐེ་བོང་བཙངས་པ་ལས། །*བསྟུན་གྱི་ཕྱག་རྒྱ་རྣམ་པར་ཤེས།། क्षेममुद्रां विजानीयाद् वामाङ्गुष्ठनिपीडनात्॥ हे.त.7ख/22; • सं. 1. = ཤེས་པ विज्ञानम् – རབ་ཀྱི་རྩལ་གྱིས་རྣམ་པར་གནོན་པ་ཤེས་རབ་ཀྱི་ཕ་རོལ་ཏུ་ཕྱིན་པ་འདི་ནི་ཆོས་གང་འགྲི་བའི་ཕྱིར་རམ་འཕེལ་བའི་ཕྱིར་ཉེ་བར་གནས་པ་མ་ཡིན་ནོ།། ཆོས་གང་འདུ་བའི་ཕྱིར་རམ...རྣམ་པར་ཤེས་པའི་ཕྱིར་རམ...རབ་ཏུ་མ་རྟོགས་པའི་ཕྱིར་ཉེ་བར་གནས་པ་མ་ཡིན་ནོ།། न खलु पुनरियं सुविक्रान्तविक्रामिन् प्रज्ञापारमिता कस्यचिद्धर्मस्य हानाय वा विवृद्धये वा प्रत्युपस्थिता, नापि कस्यचिद्धर्मस्य संयोगाय...विज्ञानाय वा...अप्रतिवेधाय वा प्रत्युपस्थिता सु.प.47ख/24; ज्ञानम् – དེ་ལྟ་ཡིན་དང་རྒྱུད་གཅིག་ཏུ་གཏོགས་པའི་དབང་པོའི་རྣམ་པར་ཤེས་པའི་ཡུལ་གྱི་སྐད་ཅིག་ལས་སྐད་ཅིག་མ་ཕྱི་མ་བཟུང་བ་ཡིན་ནོ།། तथा च सति इन्द्रियज्ञानविषयक्षणादुत्तरक्षण एकसन्तानान्तर्भूतो गृहीतः न्या.टी.42ख/58; प्रत्ययः – ཀ་ལ་སོགས་པ་གཅིག་གི་རྣམ་པར་ཤེས་པའི་རྒྱུ་མཚན་ནི་གླང་པོ་ཉིད་ལ་སོགས་པ་མ་ཡིན་ནོ།། न हि गजत्वादि कर्कादिष्वेकाकारप्रत्ययनिबन्धनं भवति त.प.299ख/312; चेतः– ཞིག་ལ་སྒྲ་ལས་བློ་ཇི་འདྲ། །སྣང་བ་དེ་འདྲ་མ་ཞིག་ལའང་། །རྣ་བ་ལ་སོགས་རྣམ་པར་ཤེས། །དོན་ཡོད་ཅན་ལ་དེ་དག་མེད།། शब्देभ्यो यादृशी बुद्धिर्नष्टेऽनष्टेऽपि दृश्यते। तादृश्येव सदर्थानां नैतच्छ्रोत्रादिचेतसाम्॥ प्र.वा.120क/2.39 2. विज्ञातम् – མིག་རྣ་ཡིད་ཀྱི་རྣམ་ཤེས་དང་། །གསུམ་གྱིས་ཉམས་སུ་མྱོང་གང་དེ། །མཐོང་ཐོས་རྣམ་པར་ཤེས་པ་དང་། །རྟོགས་པ་ཡིན་ཏེ་རིམ་བཞིན་བཤད།། चक्षुः-

श्रोत्रमनश्चित्तैरनुभूतं त्रिभिश्च यत्। तद् दृष्टश्रुतविज्ञातं मतं चोक्तं यथाक्रमम्॥ अभि.को.13[ख]/689; बो.भू.22[क]/26; • *पा.* विज्ञानम् 1. इन्द्रियविज्ञानादिः – རྣམ་པར་ཤེས་པར་བྱེད་པས་རྣམ་པར་ཤེས་པའོ॥ विजानातीति विज्ञानम् त्रि.भा.149[ख]/36; རྣམ་པར་ཤེས་པས་ན་རྣམ་པར་ཤེས་པའོ॥ विजानातीति विज्ञानम् अभि.भा.70[क]/208; རྣམ་པར་རིག་པའི་ཕྱིར་རྣམ་པར་ཤེས་པའོ॥ विज्ञापनार्थेन विज्ञानम् प्र.प.187[क]/246; རྣམ་པར་ཤེས་པའི་ཆོས་ནི་རང་བཞིན་རྟོགས་པར་བྱེད་པ་ཡིན་ལ स्वरूपप्रतिपादनं विज्ञानस्य धर्मः प्र.अ.133[ख]/143; དབང་པོའི་རྣམ་པར་ཤེས་པ་ནི་ཉེ་བ་ཙམ་འཛིན་པའི་ཕྱིར་དོན་ལ་ལྟོས་པ་ཡིན་ལ इन्द्रियविज्ञानं तु सन्निहितार्थमात्रग्राहित्वादर्थसापेक्षम् न्या.टी.41[ख]/52; མིག་གི་རྣམ་པར་ཤེས་པ་དང་ལྡན་པས་སྔོན་པོ་ཤེས་ཀྱི चक्षुर्विज्ञानसमङ्गी नीलं विजानाति त.प.143[ख]/16; འཇུག་པའི་རྣམ་པར་ཤེས་པ प्रवृत्तिविज्ञानम् त्रि.भा.149[ख]/35; ཀུན་གཞི་རྣམ་པར་ཤེས་པ आलयविज्ञानम् अभि.स.भा.9[ख]/11; རྣམ་པར་ཤེས་པ་ནི་རྟེན་ཅིང་འབྲེལ་བར་འབྱུང་བས་རྫས་སུ་ཡོད་པར་ཁས་བླང་ངོ་॥ विज्ञानं पुनः प्रतीत्यसमुत्पन्नत्वाद् द्रव्यतोऽस्तीत्यभ्युपेयम् त्रि.भा.147[ख]/30; ཚེ་དང་དྲོད་དང་རྣམ་ཤེས་ཀྱིས། །གང་ཚེ་ལུས་འདི་འདོར་བྱེད་ཅིང་། །བོར་ནས་དེ་ཚེ་ཉལ་བ་ནི། །ཇི་ལྟར་ཤིང་ལ་སེམས་མེད་བཞིན॥ आयुरूष्मा च विज्ञानं यदा कायं जहत्यमी। अपविद्धस्तदा शेते यथा काष्ठमचेतनः॥ अभि.स्फु.288[क]/1133 2. विज्ञानस्कन्धः – འདི་ལ་རྣམ་པར་ཤེས་པ་ནི་རྣམ་པར་ཤེས་པའི་ཕུང་པོའོ॥ विज्ञानं चात्र विज्ञानस्कन्धः अभि.स्फु.7[क]/11 3. प्रतीत्यसमुत्पादस्याङ्गविशेषः – དེ་ནི་རྟེན་ཅིང་འབྲེལ་འབྱུང་བའི། །ཡན་ལག་བཅུ་གཉིས་ཆ་གསུམ་མོ། …།རྣམ་ཤེས་མཚམས་སྦྱོར་ཕུང་པོ་ཡིན॥ स प्रतीत्यसमुत्पादो द्वादशाङ्गस्त्रिकाण्डकः।…सन्धिस्कन्धास्तु विज्ञानम् अभि.भा.124[ख]/437; དེ་ལ་ཡན་ལག་བཅུ་གཉིས་ནི། མ་རིག་པ་དང་། འདུ་བྱེད་དང་། རྣམ་པར་ཤེས་པ་དང་། མིང་དང་གཟུགས་དང…ན་ཤི तत्र द्वादशाङ्गानि–अविद्या, संस्काराः, विज्ञानम्, नामरूपम्…जरामरणं च अभि.भा.124[क]/435; མ་རིག་པའི་རྐྱེན་གྱིས་འདུ་བྱེད་རྣམས། འདུ་བྱེད་རྣམས་ཀྱི་རྐྱེན་གྱིས་རྣམ་པར་ཤེས་པ अविद्याप्रत्ययाः संस्काराः, संस्कारप्रत्ययं विज्ञानम् सु.प्र.51[क]/102; མའི་མངལ་དུ་ཉིང་མཚམས་སྦྱོར་བའི་སྐད་ཅིག་མ་ལ་ཕུང་པོ་ལྔ་ནི་རྣམ་པར་ཤེས་པ་ཡིན་ནོ॥ मातुः कुक्षौ प्रतिसन्धिक्षणे पञ्चस्कन्धा विज्ञानम् अभि.भा.124[ख]/437; • *भू.का.कृ.* विज्ञातः – དེ་ནི་མཐོང་བ་དང་ཐོས་པ་དང་རྟོགས་པ་དང་རྣམ་པར་ཤེས་པའང་མ་ཡིན་ནོ॥ नापि सा दृष्टश्रुतमतविज्ञाता अ.सा.170[ख]/95.

རྣམ་པར་ཤེས་པ་དྲུག षड् विज्ञानानि – 1. མིག་གི་རྣམ་པར་ཤེས་པ चक्षुर्विज्ञानम्, 2. རྣ་བའི་རྣམ་པར་ཤེས་པ श्रोत्रविज्ञानम्, 3. སྣའི་རྣམ་པར་ཤེས་པ घ्राणविज्ञानम्, 4. ལྕེའི་རྣམ་པར་ཤེས་པ जिह्वाविज्ञानम्, 5. ལུས་ཀྱི་རྣམ་པར་ཤེས་པ कायविज्ञानम्, 6. ཡིད་ཀྱི་རྣམ་པར་ཤེས་པ मनोविज्ञानम् म.व्यु.2021 (41[क]); बो.अ.33[क]/9.60.

རྣམ་པར་ཤེས་པ་བདག་གི་ཡིན *पा.* आत्मीयं विज्ञानम्, सत्कायदृष्टिभेदः म.व्यु.4703 (73[क]).

རྣམ་པར་ཤེས་པ་རྣམ་པ་གཉིས द्विविधं विज्ञानम् – 1. སྣང་བའི་རྣམ་པར་ཤེས་པ ख्यातिविज्ञानम्, 2. དངོས་པོ

སོ་སོར་རྣམ་པར་རྟོག་པའི་རྣམ་པར་ཤེས་པ वस्तुप्रतिविकल्पविज्ञानम् ल.अ.69ख/18.

རྣམ་པར་ཤེས་པ་རྣམ་པ་གསུམ त्रिविधं विज्ञानम् – 1. འཇུག་པའི་མཚན་ཉིད प्रवृत्तिलक्षणम्, 2. ལས་ཀྱི་མཚན་ཉིད कर्मलक्षणम्, 3. རིགས་ཀྱི་མཚན་ཉིད जातिलक्षणम् ल.अ.69ख/18.

རྣམ་པར་ཤེས་པ་ལ་བདག་གནས पा. विज्ञाने आत्मा, सत्कायदृष्टिभेदः म.व्यु.4704 (73क).

རྣམ་པར་ཤེས་པར विज्ञातुम् – གལ་ཏེ་གཟུགས་རྣམས་ལ་བརྟེན་ནས་སྐྱེ་ན་ནི་སྒྲ་ལ་སོགས་པ་བཞིན་དུ་གང་ཟག་རྣམ་པར་ཤེས་པར་མི་ནུས་ཏེ यदि रूपाणि प्रतीत्योत्पद्यते, नोत्सहिष्यते पुद्गलं विज्ञातुम्; शब्दादिवत् अभि.भा.84ख/1198.

རྣམ་པར་ཤེས་པ་ལྔའི་ཚོགས पञ्च विज्ञानकायाः – འཛིན་པ་ནི་རྣམ་པར་ཤེས་པ་ལྔའི་ཚོགས་སོ॥ उद्ग्रहः पञ्चविज्ञानकायाः सू.व्या.172क/65; ཡིད་ཀྱི་རྣམ་པར་ཤེས་པ ...རྣམ་པར་ཤེས་པ་འདུས་པ་ལྔ་དང་ལྡན་པར་འབྱུང་བར་འགྱུར་ཏེ मनोविज्ञानं पञ्चभिर्विज्ञानकायैः सह संप्रयुक्तं प्रवर्तते ल.अ.149ख/95.

རྣམ་པར་ཤེས་པ་འཇུག་པར་བྱེད་པ वि. विज्ञानप्रवर्तिनी – རྩའི་རང་བཞིན་ཅན་དྲུག་དང...རྣམ་པར་ཤེས་པ་འཇུག་པར་བྱེད་པ་དྲུག་དང་ཡེ་ཤེས་འཇུག་པར་བྱེད་པ་དྲུག་སྟེ་རིགས་སུམ་ཅུ་རྩ་དྲུག་གི་རྩ་རྣམས षड् रसरूपिण्यः ...षड् विज्ञानप्रवर्तिन्यः, षड् ज्ञानप्रवर्तिन्य इति षट्त्रिंशत् कुलनाड्यः वि.प्र.244ख/2.57.

རྣམ་པར་ཤེས་པ་ཉིད = རྣམ་ཤེས་ཉིད།

རྣམ་པར་ཤེས་པ་ཐ་མ पा. चरमविज्ञानम् – དེ་ལ་གང་རྣམ་པར་ཤེས་པ་ཐ་མ་འགག་པ་དེ་ནི་འཆི་འཕོ་ཞེས་བྱ་བའི་གྲངས་སུ་འགྱུར་རོ॥ तत्र यश्चरमविज्ञानस्य निरोधस्तत्र च्युतिरिति संख्यां गच्छति शि.स.140ख/135.

རྣམ་པར་ཤེས་པ་མཐའ་ཡས 1. विज्ञानानन्त्यम्–རྣམ་ཤེས་མཐའ་ཡས་མཁའ་མཐའ་ཡས། །ཅི་ཡང་མེད་ཅེས་བྱ་དེ་ལྟར॥ आकाशानन्त्यविज्ञानानन्त्याकिञ्चन्यसंज्ञकाः । अभि.को.23ख/1138; ནམ་མཁའ་མཐའ་ཡས་སོ॥ རྣམ་པར་ཤེས་པ་མཐའ་ཡས་སོ॥ ཅི་ཡང་མེད་དོ་ཞེས་དེ་ལྟར་ཡིད་ལ་བྱེད་ཅིང अनन्तमाकाशम्, अनन्तं विज्ञानम्, नास्ति किञ्चिदित्येवं मनसिकुर्वाणाः अभि.भा.68क/1138; རྣམ་ཤེས་མཐའ་ཡས་སྐྱེ་མཆེད་དུ་ཉེ་བར་འགྲོ་བ विज्ञानानन्त्यायतनोपगाः वि.प्र.168ख/1.15 2. अनन्तं विज्ञानम् – ནམ་མཁའ་མཐའ་ཡས་སོ॥ རྣམ་པར་ཤེས་པ་མཐའ་ཡས་སོ॥ ཅི་ཡང་མེད་དོ་ཞེས་དེ་ལྟར་ཡིད་ལ་བྱེད་ཅིང अनन्तमाकाशम्, अनन्तं विज्ञानम्, नास्ति किंचिद् इत्येवं मनसिकुर्वाणः अभि.भा.68क/1138.

རྣམ་པར་ཤེས་པ་མཐའ་ཡས་སྐྱེ་མཆེད = རྣམ་ཤེས་མཐའ་ཡས་སྐྱེ་མཆེད།

རྣམ་པར་ཤེས་པ་དང་བཅས་པ वि. सविज्ञानकः – རྣམ་པར་ཤེས་པ་དང་བཅས་པའི་ལུས सविज्ञानके काये शि.स.84क/83.

རྣམ་པར་ཤེས་པ་དང་ལྡན वि. विज्ञानवान् – བདག་རྣམ་པར་ཤེས་པ་དང་ལྡན विज्ञानवान् आत्मा म.व्यु.4702 (73क).

རྣམ་པར་ཤེས་པ་འདུས་པ विज्ञानकायः – ཡིད་ཀྱི་རྣམ་པར་ཤེས་པ ...རྣམ་པར་ཤེས་པ་འདུས་པ་ལྔ་དང་ལྡན་པར་འབྱུང་བར་འགྱུར་ཏེ मनोविज्ञानं पञ्चभिर्विज्ञानकायैः

सह संप्रयुक्तं प्रवर्तते ल.अ.149ख/95; རྣམ་པར་ཤེས་པ་འདུས་པ་བརྒྱད་རྣམས་ལ अष्टानां विज्ञानकायानाम् ल.अ.110ख/57.

རྣམ་པར་ཤེས་པ་གནས་པ विज्ञानस्थितिः – སའི་ཁམས་ཞེས་བྱ་བ་འདི་ནི་རྣམ་པར་ཤེས་པ་གནས་པ་བཞིའི་ཚིག་བླ་དྭགས་ཡིན་ནོ།། पृथिवाधातुरिति चतसृणां विज्ञानस्थितीनामेतदधिवचनम् अभि.भा.6ख/887.

རྣམ་པར་ཤེས་པ་པོ *वि.* विज्ञाता – མཐོང་བ་པོ་ནས་རྣམ་པར་ཤེས་པ་པོའི་བར་དང...གྲོལ་བ་པོ་གང་ཡིན་པའི་གང་ཟག་དེ་ནི་ཡོད་པ་ཁོ་ནའོ།། अस्त्येव पुद्गलो य एष द्रष्टा यावद्विज्ञाता...मोक्ता च सू.व्या.238क/150.

རྣམ་པར་ཤེས་པ་མ་ཡིན་པ अविज्ञानम् – རབ་ཀྱི་རྩལ་གྱིས་རྣམ་པར་གནོན་པ་ཤེས་རབ་ཀྱི་ཕ་རོལ་ཏུ་ཕྱིན་པ་འདི་ནི་ཆོས་གང་འབྲི་བའི་ཕྱིར་རམ་འཕེལ་བའི་ཕྱིར་ཉེ་བར་གནས་པ་མ་ཡིན་ནོ།། ཆོས་གང་འདུ་བའི་ཕྱིར་རམ...རྣམ་པར་ཤེས་པ་མ་ཡིན་པའི་ཕྱིར་རམ...རབ་ཏུ་མ་རྟོགས་པའི་ཕྱིར་ཉེ་བར་གནས་པ་མ་ཡིན་ནོ།། न खलु पुनरियं सुविक्रान्तविक्रामिन् प्रज्ञापारमिता कस्यचिद्धर्मस्य हानाय वा विवृद्धये वा प्रत्युपस्थिता, नापि कस्यचिद्धर्मस्य संयोगाय...अविज्ञानाय वा ...अप्रतिवेधाय वा प्रत्युपस्थिता सु.प.47ख/24.

རྣམ་པར་ཤེས་པ་སྨྲ་བ = རྣམ་པར་ཤེས་པར་སྨྲ་བ།

རྣམ་པར་ཤེས་པ་ཙམ 1. विज्ञानमात्रम् – རྣམ་པར་ཤེས་པ་ཙམ་དུ་སྨྲ་བ विज्ञानमात्रवादः त.प.103क/655; द्र. རྣམ་པར་ཤེས་པ་ཙམ་དུ་སྨྲ་བ विज्ञानवादी त.प.102ख/655 2. विज्ञातमात्रम् – གང་གིས་རྣམ་པར་ཤེས་ཙམ་གྱིས། །སྒྲུབ་པོས་དངོས་གྲུབ་ཐོབ་འགྱུར་བ།། येन विज्ञातमात्रेण साधकः सिद्धिमाप्नुयात्। हे.त.27ख/90.

རྣམ་པར་ཤེས་པ་ཙམ་དུ་སྨྲ་བ 1. विज्ञानमात्रवादः, विज्ञानवादः – གལ་ཏེ་དེ་ལྟ་ན་གཏན་ཚིགས་འདི་ཉིད་ཀྱིས་རྣམ་པར་ཤེས་པ་ཙམ་དུ་སྨྲ་བ་སྤོང་བར་བྱེད་པ་བཟློག་པར་དཀའ་བར་འགྱུར་རོ་ཞེ་ན यद्येवम्, विज्ञानमात्रवादप्रतिक्षेपोऽनेनैव हेतुना क्रियमाणो दुर्वारः स्यात् त.प.103क/655 2. विज्ञानमात्रवादी, विज्ञानवादस्यानुयायी – རྣམ་པར་ཤེས་པ་ཙམ་དུ་སྨྲ་བ་དེད་ཅག་ལ་ནི་རིགས་ཏེ मम तु युक्तं विज्ञानमात्रवादिनः त.प.102ख/655; विज्ञानवादी – བློ་བཟང་ནི་བདེ་བར་གཤེགས་པའོ།། རྣམ་པར་ཤེས་པ་ཙམ་དུ་སྨྲ་བ་ཁ་ཅིག་གིས सुधियः सौगताः, केचन् विज्ञानवादिनः त.प.305ख/1070.

རྣམ་པར་ཤེས་པ་རིགས་གཅིག་པ एकजातीयविज्ञानम् म.व्यु.2125 (42ख).

རྣམ་པར་ཤེས་པ་ཤེས་པར་བྱེད་པའི་མཚན་ཉིད विज्ञाननालक्षणम् म.व्यु.7564 (108क).

རྣམ་པར་ཤེས་པའི་རྐྱེན *वि.* विज्ञानप्रत्ययम् – མ་རིག་པའི་རྐྱེན་གྱིས་འདུ་བྱེད་རྣམས...རྣམ་པར་ཤེས་པའི་རྐྱེན་གྱིས་མིང་དང་གཟུགས अविद्याप्रत्ययाः संस्काराः... विज्ञानप्रत्ययं नामरूपम् अ.श.241क/221.

རྣམ་པར་ཤེས་པའི་ཁམས *पा.* विज्ञानधातुः, धातुभेदः – ཁམས་དྲུག་པོ...ས་དང་ཆུ་དང་མེ་དང་རླུང་དང་ནམ་མཁའ་དང་རྣམ་པར་ཤེས་པའི་ཁམས...གང་མདུང་ཁྱིམ་གྱི་ཚུལ་དུ་ལུས་ཀྱི་མིང་དང་གཟུགས་ཀྱི་སྦྱུ་གུ་མངོན་པར་འགྲུབ་པར་བྱེད་པ་རྣམ་པར་ཤེས་པ་ལྔའི་ཚོགས་སུ་གཏོགས་པ་དང་ཟག་པ་དང་བཅས་པའི་ཡིད་ཀྱི་རྣམ་པར་ཤེས་པ་འདི་ནི་རྣམ་པར་ཤེས་པའི་ཁམས་ཞེས་བྱའོ།། षण्णां धातूनां ... पृथिव्यप्तेजोवाय्वाकाशविज्ञानधा-

तूनाम्...यो नामरूपमभिनिर्वर्तयति नडकलापयोगेन पञ्चविज्ञानकायसम्प्रयुक्तं सास्रवं च मनोविज्ञानम्, अयमुच्यते विज्ञानधातुः शि.स.124[क]/121; རྣམ་པར་ཤེས་པའི་ཁམས་གང་ཞེ་ན། མིག་གིས་དབང་བ་ནི་བདག་པོ། གཟུགས་ནི་དམིགས་པ། གཟུགས་སོ་སོར་རྣམ་པར་རིག་པ་སྟེ कतमो विज्ञानधातुः ? या चक्षुरिन्द्रियाधिपतेया रूपारम्बणप्रतिविज्ञप्तिः शि.स.138[ख]/133; द्र.– མིག་གི་རྣམ་པར་ཤེས་པའི་ཁམས་ནས་ཡིད་ཀྱི་རྣམ་པར་ཤེས་པའི་ཁམས་དང चक्षुर्विज्ञानधातुर्यावन्मनोविज्ञानधातुः अभि.भा.34[क]/50.

རྣམ་པར་ཤེས་པའི་ཁམས་རྣམ་པར་དཔྱད་པ་སྣང་བ་ལ་འཇུག་པ *पा.* विज्ञानधातुविचारणालोकप्रवेशः, धर्मालोकप्रवेशभेदः – དེ་ཆོས་སྣང་བ་ལ་འཇུག་པ་བཅུ་ཡོངས་སུ་གཏོན་ཏེ...འདི་ལྟ་སྟེ། སེམས་ཅན་གྱི་ཁམས་རྣམ་པར་དཔྱད་པ་སྣང་བ་ལ་འཇུག་པ་དང...རྣམ་པར་ཤེས་པའི་ཁམས་རྣམ་པར་དཔྱད་པ་སྣང་བ་ལ་འཇུག་པ་དང स दशभिर्धर्मालोकप्रवेशैराक्रमति...यदुत सत्त्वधातुविचारणालोकप्रवेशेन च...विज्ञानधातुविचारणालोकप्रवेशेन च द.भू.204[क]/24.

རྣམ་པར་ཤེས་པའི་ཁམས་ཡང་དག་པར་བསྒྲུབ་པ पा. विज्ञानधातुसमुदागमः – བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའི་ས་ཆོས་ཀྱི་སྤྲིན་ལ་གནས་པའི་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་ནི་ཆོས་ཀྱི་ཁམས་ཡང་དག་པར་བསྒྲུབ་པ་ཡང་དག་པ་ཇི་ལྟ་བ་བཞིན་དུ་རབ་ཏུ་ཤེས་སོ།།...རྣམ་པར་ཤེས་པའི་ཁམས་ཡང་དག་པར་བསྒྲུབ་པ་དང...ཡང་དག་པ་ཇི་ལྟ་བ་བཞིན་དུ་རབ་ཏུ་ཤེས་སོ།། धर्ममेघायां बोधिसत्त्वभूमौ प्रतिष्ठितो बोधिसत्त्वो धर्मधातुसमुदागमं च यथाभूतं प्रजानाति...विज्ञानधातुसमुदागमं च यथाभूतं प्रजानाति द.भू.265[क]/57.

རྣམ་པར་ཤེས་པའི་རྒྱུན विज्ञानप्रबन्धः – དེའི་ཚེ་ཤེས་པའི་རྟེན་རིགས་པ་ཅན་གྱིས་བརྟགས་པའི་བདག་གམ་རྣམ་པར་ཤེས་པའི་རྒྱུན་མེད་པའི་ཕྱིར་རོ།། ज्ञानाश्रयस्यात्मनो नैयायिकादिप्रकल्पितस्य विज्ञानप्रबन्धस्य वा तदानीमभावात् त.प.91[क]/636; विज्ञानस्रोतः – ཉོན་མོངས་པ་འཇུག་པ་ན་བྱ་བ་བཅུ་བྱེད་དེ། རྩ་བ་བརྟན་པར་བྱེད་དོ།།...རྣམ་པར་ཤེས་པའི་རྒྱུན་འཁྲིད་པར་བྱེད་དོ།། क्लेशो हि प्रवर्तमानो दश कृत्यानि करोति–मूलं दृढीकरोति...विज्ञानस्रोतो नमयति अभि.भा.226[ख]/760.

རྣམ་པར་ཤེས་པའི་ཆོས་ཉིད་འདས *वि.* विज्ञानधर्मतातीतः – རྣམ་པར་ཤེས་པའི་ཆོས་ཉིད་འདས། །ཡེ་ཤེས་གཉིས་མེད་ཚུལ་འཆང་བ།། विज्ञानधर्मतातीतो ज्ञानमद्वयरूपधृक्। ना.स.6[क]/99.

རྣམ་པར་ཤེས་པའི་ལྟ་བ विज्ञानवादः लो.को.1417; द्र. རྣམ་པར་ཤེས་པ་སྨྲ་བ།

རྣམ་པར་ཤེས་པའི་རྣམ་པ *वि.* विज्ञानगतम् – བཅོམ་ལྡན་འདས་ཀྱིས་ཀྱང་བསམ་གཏན་དག་ལས་ནི། གང་དེ་ན་གཟུགས་ཀྱི་རྣམ་པ་ཡོད་པའང་རུང་རྣམ་པར་ཤེས་པའི་རྣམ་པའི་བར་ཡོད་པའང་རུང་ཞེས་གསུངས་ལ ध्यानेषु चोक्तं भगवता– यत्तत्र भवति रूपगतं वा यावद्विज्ञानगतं वा इति अभि.भा.68[क]/1137.

རྣམ་པར་ཤེས་པའི་ཕུང་པོ *पा.* विज्ञानस्कन्धः, स्कन्धभेदः – གཟུགས་ཀྱི་ཕུང་པོ་དང་ཚོར་བའི་ཕུང་པོ་དང་འདུ་ཤེས་ཀྱི་ཕུང་པོ་དང་འདུ་བྱེད་ཀྱི་ཕུང་པོ་དང་རྣམ་པར་ཤེས་པའི་ཕུང་པོ་ཞེས་བྱ་བ་དེ་དག་ནི་འདུས་བྱས་ཀྱི་ཆོས་རྣམས་སོ།། रूपस्कन्धः, वेदनास्कन्धः, संज्ञास्कन्धः, संस्कारस्कन्धः, विज्ञानस्कन्धश्चेति । एते

संस्कृता धर्माः अभि.भा.29क/25; ཡུལ་དང་ཡུལ་ལ་སོ་སོར་རྣམ་པར་རིག་ཅིང་དམིགས་པ་ནི་རྣམ་པར་ཤེས་པའི་ཕུང་པོ་ཞེས་བྱའོ།། विषयं विषयं प्रति विज्ञप्तिरुपलब्धिर्विज्ञानस्कन्ध इत्युच्यते अभि.भा.33ख/50; འདིར་ཡེ་ཤེས་དང་རྣམ་པར་ཤེས་པའི་ཕུང་པོ་ལ་སོགས་པའི་དབྱངས་རྣམས་ནི་འདི་ལྟ་སྟེ། ཡེ་ཤེས་ཀྱི་ཕུང་པོ་ཨཾ། རྣམ་པར་ཤེས་པའི་ཕུང་པོ་ཨ...ཁུ་བ་འཕོ་བ་ཧཱ། अत्र ज्ञानविज्ञानस्कन्धादीनां स्वराः। तद्यथा–ज्ञानस्कन्धो अं, विज्ञानस्कन्धो अ, ...शुक्रच्युतिः हा वि.प्र.149ख/1, पृ.48; वि.प्र.59क/4.101; རྣམ་ཤེས་ཕུང་པོའི་ཚུལ་གྱིས་ནི། །བདག་མེད་རྣལ་འབྱོར་མ་གནས་སོ།། विज्ञानस्कन्धरूपेण स्थिता नैरात्म्ययोगिनी। हे.त.11क/32.

རྣམ་པར་ཤེས་པའི་ཚོགས • *सं.* विज्ञानकायाः, विज्ञानसमूहाः – དེ་ཡང་རྣམ་པར་ཤེས་པའི་ཚོགས་དྲུག་སྟེ། མིག་གི་རྣམ་པར་ཤེས་པ་ནས་ཡིད་ཀྱི་རྣམ་པར་ཤེས་པའི་བར་རོ།། स पुनः षड् विज्ञानकायाः चक्षुर्विज्ञानं यावन्मनोविज्ञानमिति अभि.भा.33ख/50; •*ना.* विज्ञानकायः, पादग्रन्थः – བསྟན་བཅོས་ཞེས་བྱ་བ་ནི་ཡེ་ཤེས་ལ་འཇུག་པ་ཡིན་ནོ།། ལུས་སུ་གྱུར་པ་དེ་ལ་ཡན་ལག་དྲུག་ཡོད་དེ། རབ་ཏུ་འབྱེད་པའི་གཞི་དང་རྣམ་པར་ཤེས་པའི་ཚོགས་དང...ཡང་དག་པར་འགྲོ་བའི་རྣམ་གྲངས་སོ།། शास्त्रमिति ज्ञानप्रस्थानम्। तस्य शरीरभूतस्य षट् पादाः–प्रकरणपादः, विज्ञानकायः...सङ्गीतिपर्यायः अभि.स्फु.7ख/12; ཡེ་ཤེས་ལ་འཇུག་པ་ནི་འཕགས་པ་ཀཱ་ཏྱཱའི་བུས་བྱས...རྣམ་པར་ཤེས་པའི་ཚོགས་ནི་བཙུན་པ་ལྷ་སྐྱིད་ཀྱིས་བྱས ज्ञानप्रस्थानस्य आर्यकात्यायनीपुत्रः कर्ता... विज्ञानकायस्य स्थविरदेवशर्मा अभि.स्फु.9क/15.

རྣམ་པར་ཤེས་པའི་ཚོགས་ལྔ पञ्च विज्ञानकायाः – 1. མིག་གི་རྣམ་པར་ཤེས་པ चक्षुर्विज्ञानम्, 2. རྣ་བའི་རྣམ་པར་ཤེས་པ श्रोत्रविज्ञानम्, 3. སྣའི་རྣམ་པར་ཤེས་པ घ्राणविज्ञानम्, 4. ལྕེའི་རྣམ་པར་ཤེས་པ जिह्वाविज्ञानम्, 5. ལུས་ཀྱི་རྣམ་པར་ཤེས་པ कायविज्ञानम् अभि.भा.31क/36.

རྣམ་པར་ཤེས་པའི་ཚོགས་དྲུག षड् विज्ञानकायाः – 1. མིག་གི་རྣམ་པར་ཤེས་པ चक्षुर्विज्ञानम्, 2. རྣ་བའི་རྣམ་པར་ཤེས་པ श्रोत्रविज्ञानम्, 3. སྣའི་རྣམ་པར་ཤེས་པ घ्राणविज्ञानम्, 4. ལྕེའི་རྣམ་པར་ཤེས་པ जिह्वाविज्ञानम्, 5. ལུས་ཀྱི་རྣམ་པར་ཤེས་པ कायविज्ञानम्, 6. ཡིད་ཀྱི་རྣམ་པར་ཤེས་པ मनोविज्ञानम् सू.व्या.249ख/167.

རྣམ་པར་ཤེས་པའི་ཚོགས་ལྔ་པ *वि.* पञ्चविज्ञानकायिकः – རྣམ་པར་ཤེས་པའི་ཚོགས་ལྔ་པ་དག་གིས་ཀྱང་ཞེས་བྱ་བ་ལ། ཀྱང་ཞེས་བྱ་བའི་སྒྲས་ནི་ཡིད་ཀྱིས་པ་དག་འབའ་ཞིག་ཏུ་ནི་མ་ཟད་ཀྱི་ཞེས་སྟོན་པར་བྱེད་དོ།། पञ्चविज्ञानकायिकैरपि न केवलं मानसैरित्यपिशब्दो द्योतयति अभि.स्फु.112ख/803; अभि.स्फु.239क/1034.

རྣམ་པར་ཤེས་པའི་ཚོགས་བཞི་པ *वि.* चतुर्विज्ञानकायिकी – རྣམ་པར་ཤེས་པའི་ཚོགས་བཞི་པའི་བཏང་སྙོམས་སོ།། उपेक्षा चतुर्विज्ञानकायिकी अभि.भा.71ख/1150.

རྣམ་པར་ཤེས་པའི་ཚོགས་གསུམ་པ *वि.* त्रिविज्ञानकायिकम् – རྣམ་པར་ཤེས་པའི་ཚོགས་གསུམ་པའི་བདེ་བ सुखं त्रिविज्ञानकायिकम् अभि.भा.71ख/1150.

རྣམ་པར་ཤེས་པའི་ཟས *पा.* विज्ञानाहारः, आहारभेदः म.व्यु.2287 (44ख); ཟས་བཞི...ཁམ་གྱི་ཟས་རགས་པ་དང་ཕྲ་བ་དང་། གཉིས་པ་རེག་པའི་ཟས་དང་། གསུམ་པ་ཡིད་ལ་སེམས་པའི་ཟས་དང་། བཞི་པ་རྣམ་པར་ཤེས་པའི

ཟས་སོ།། चत्वार आहाराः...कवलीकाराहार औदारिकः सूक्ष्मः, स्पर्शो द्वितीयः, मनःसञ्चेतना तृतीयः, विज्ञानमाहारश्चतुर्थः अभि.स्फु.289ख/1135.

རྣམ་པར་ཤེས་པའི་ཡུལ་ལས་ཕྱིར་ལོག་པ *वि.* विनिवृत्तविज्ञानविषयः – བཅོམ་ལྡན་འདས་དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་རྣམ་པར་ཤེས་པའི་ཡུལ་ལས་ཕྱིར་ལོག་པ་རྣམས་ཀྱང་བཞད་མོ་ཆེར་བཞད་དོ།། तथागता अपि भगवन्तो विनिवृत्तविज्ञानविषया महाहासं हसन्ति ल.अ.60ख/6.

རྣམ་པར་ཤེས་པའི་རང་བཞིན་གྱི་ངོ་བོ་ཉིད विज्ञानप्रकृतिस्वभावः – བློ་གྲོས་ཆེན་པོ་མིག་གི་རྣམ་པར་ཤེས་པ་ནི་རྒྱུ་བཞི་དག་གིས་འབྱུང་ངོ་...རྣམ་པར་ཤེས་པའི་རང་བཞིན་གྱི་ངོ་བོ་ཉིད་དང चतुर्भिर्महामते कारणैश्चक्षुर्विज्ञानं प्रवर्तते ... विज्ञानप्रकृतिस्वभावतः ल.अ.72क/20.

རྣམ་པར་ཤེས་པའི་རིགས་ལས་སྐྱེས་པ *वि.* विज्ञानकुलजः, °जा – རྣམ་པར་ཤེས་པའི་རིགས་ལས་སྐྱེས་པ...མི་བསྐྱོད་པ་དང་རྡོ་རྗེ་དབྱིངས་ཀྱི་དབང་ཕྱུག་མ་དང་གཙུག་ཏོར་དང་ཕྱག་ན་རྡོ་རྗེ་དང་ཆོས་ཀྱི་ཁམས་ཀྱི་རྡོ་རྗེ་མ་སྟེ विज्ञानकुलजानां...अक्षोभ्यवज्रधात्वीश्वरी-उष्णीषवज्रपाणिधर्मधातुवज्राणाम् वि.प्र.40क/4.24.

རྣམ་པར་ཤེས་པའི་ས་བོན *पा.* विज्ञानबीजम् – ལས་ཀྱི་ཞིང་དང་སྲེད་པའི་རླན་དང་མ་རིག་པའི་མུན་པ་དང་རྣམ་པར་ཤེས་པའི་ས་བོན་གྱིས་ཡང་སྲིད་པ་རབ་ཏུ་འབྱུང་བ་དང कर्मक्षेत्रतृष्णास्नेहाविद्यान्धकारविज्ञानबीजपुनर्भवप्ररोहणतां च द.भू.253क/50; རྣམ་ཤེས་ས་བོན་ཀྱང་། །ལྟ་བའི་ཡུལ་ལ་རབ་ཏུ་གཡོ།། विज्ञानबीजं हि स्पन्दते दृष्टिगोचरे ल.अ.93क/40.

རྣམ་པར་ཤེས་པའི་སངས་རྒྱས *पा.* विज्ञानबुद्धः – རྣམ་པར་ཤེས་པའི་སངས་རྒྱས་ལ་གནོད་སེམས་ཀྱིས་ཁྲག་ཕྱུང་བ་ཡིན་ཏེ། མཚམས་མེད་པ་བྱེད་པ་ཞེས་བྱའོ།། विज्ञानबुद्धस्य दुष्टचित्तरुधिरोत्पादनाद् आनन्तर्यकारीत्युच्यते ल.अ.110ख/57.

རྣམ་པར་ཤེས་པར་དཀའ་བ *वि.* दुर्विज्ञानम् – རྣམ་པར་ཤེས་པར་དཀའ་བའི་རྣམ་པར་རིག་པ दुर्विज्ञानविज्ञप्तिः अभि.स.भा.16क/21.

རྣམ་པར་ཤེས་པར་དཀའ་བའི་རྣམ་པར་རིག་པ *पा.* दुर्विज्ञानविज्ञप्तिः – ཕྲ་བའི་རབ་ཏུ་དབྱེ་བས་ཞེས་བྱ་བ་ནི་རྣམ་པར་ཤེས་པར་དཀའ་བའི་རྣམ་པར་རིག་པ་རྣམ་པ་བདུན་གྱི་དབྱེ་བྲག་གིས་ཏེ सूक्ष्मप्रभेदतः सप्तविधदुर्विज्ञानविज्ञप्तिभेदात् अभि.स.भा.16क/21; दुर्विज्ञाना विज्ञप्तिः – རྣམ་པར་ཤེས་པར་དཀའ་བའི་རྣམ་པར་རིག་པ་བདུན सप्तविधा दुर्विज्ञाना विज्ञप्तिः अभि.स.भा.16क/21.

རྣམ་པར་ཤེས་པར་དཀའ་བའི་རྣམ་པར་རིག་པ་བདུན सप्तविधा दुर्विज्ञाना विज्ञप्तिः – 1. མ་རིག་པའི་རྣམ་པར་རིག་པ असंविदितविज्ञप्तिः, 2. སྣ་ཚོགས་ཀྱི་རྣམ་པའི་རྣམ་པར་རིག་པ चित्राकारविज्ञप्तिः, 3. ལྷན་ཅིག་འབྱུང་བའི་རྣམ་པར་རིག་པ सहभावविज्ञप्तिः, 4. མི་མཐུན་པའི་ཕྱོགས་ལས་གཉེན་པོ་མྱུར་དུ་འབྱུང་བའི་རྣམ་པར་རིག་པ विपक्षप्रतिपक्षलघुपरिवृत्तिविज्ञप्तिः, 5. བག་ཆགས་ཀྱི་རྣམ་པར་རིག་པ वासनाविज्ञप्तिः, 6. ཉིང་མཚམས་སྦྱོར་བའི་རྣམ་པར་རིག་པ प्रतिसंधिविज्ञप्तिः, 7. གྲོལ་བའི་རྣམ་པར་རིག་པ मुक्तिविज्ञप्तिः अभि.स.भा.16क/21.

རྣམ་པར་ཤེས་པར་བྱ = རྣམ་པར་ཤེས་པར་བྱ་བ།

རྣམ་པར་ཤེས་པར་བྱ་བ *कृ.* विज्ञेयम् – དེ་བས་ན་དམིགས་པ་མེད་པའི་ཕྱིར་རྣམ་པར་ཤེས་པ་ཉིད་དུ་ཡང་མི་འགྱུར་རོ་ཞེས་བྱ་བ་ནི་རྣམ་པར་ཤེས་པར་བྱ་བ་ཡོད་ན་རྣམ་པར་ཤེས་པ་ཡིན་པས་སོ॥ ततो विज्ञानमेव न स्यादालम्बनाभावादिति विज्ञेये सति विज्ञानमिति कृत्वा अभि.स्फु.113ख/804.

རྣམ་པར་ཤེས་པར་བྱ་བར विज्ञातुम्–གཉིས་པ་ལ་ཡང་ནུས་པ་དེ་ནི་རྣམ་པར་ཤེས་པར་བྱ་བར་ནུས་པ་ཡང་མ་ཡིན་ནོ་ཞེས་བྱ་བ་སྨོས་ཏེ द्वितीयेऽप्याह–विज्ञातुं सा शक्तिर्न च शक्यत इति त.प.44क/536.

རྣམ་པར་ཤེས་པར་བྱ་བ་མ་ཡིན་པ *कृ.* अविज्ञेयम् – དོན་དམ་པ་གང་ཡིན་པ་དེ་ནི་བརྗོད་དུ་མེད་པ་སྟེ། ཤེས་པར་བྱ་བ་མ་ཡིན་པ་རྣམ་པར་ཤེས་པར་བྱ་བ་མ་ཡིན་པ यः पुनः परमार्थः सोऽनभिलाप्योऽनाज्ञेयोऽविज्ञेयः शि.स.142ख/136.

རྣམ་པར་ཤེས་པར་བྱེད = རྣམ་པར་ཤེས་པར་བྱེད་པ།

རྣམ་པར་ཤེས་པར་བྱེད་པ • *क्रि.* विजानाति – དོན་ཉན་པར་བྱེད་དོ་ཞེས་བྱ་བ་ནི་དེའི་དོན་མཉན་པའི་སྒོ་ནས་རྣམ་པར་ཤེས་པར་བྱེད་དོ॥ अर्थं वा शृणोति। तदर्थं श्रोत्रद्वारेण विजानाति अभि.स्फु.161क/891; विभाव्यते – དེ་བཞིན་གྲུབ་པའི་རྫས་རྣམས་ནི། །མཚན་ཉིད་ཀྱིས་ནི་རྣམ་པར་ཤེས॥ तथा हि सिद्धद्रव्याणां लक्षणेन विभाव्यते॥ म.मू.192ख/129; • *सं.* विज्ञानना, विज्ञानस्कन्धलक्षणम् मि.को.13क; • *वि.* विज्ञापनी – ཚིག་དེ་ནི་ཀུན་ཤེས་པར་བྱེད་པ་དང་རྣམ་པར་ཤེས་པར་བྱེད་པ་དང...ཧབ་ཧབ་པོར་མ་ཡིན་པ་དང यासौ वागाज्ञापनी विज्ञापनी...अद्रुता ल.वि.141क/208.

རྣམ་པར་ཤེས་པར་མི་རུང་བ *वि.* अविज्ञेयः – འཇིག་རྟེན་བསམ་དུ་རུང་བ་དང་བསམ་དུ་མི་རུང་བ་དང་རྣམ་པར་ཤེས་པར་རུང་བ་དང་རྣམ་པར་ཤེས་པར་མི་རུང་བའི་སྤྱོད་པ་ཡང་དག་པར་བསྟན་པ་ལ་འཇུག་པའི་ཡེ་ཤེས་སམ चिन्त्याचिन्त्यलोकविज्ञेय[।]विज्ञेयं चरिसंदर्शनावतारज्ञानं वा द.भू.267क/59.

རྣམ་པར་ཤེས་པར་སྨྲ་བ 1. विज्ञानवादः, दार्शनिकप्रस्थानविशेषः – འདི་ནི་བདེན་མོད་ཀྱི་བསམ་པ་འདི་ནི་རྣམ་པར་ཤེས་པར་སྨྲ་བའི་ཡིན་ཏེ सत्यमेवैतद् विज्ञानवादचिन्तायाम् त.प.182क/825; ཁོ་བོ་ཅག་རྣམ་པར་ཤེས་པ་སྨྲ་བ་རིག་[? རིགས་]པའི་རྗེས་སུ་འབྲང་བ་རྣམས་ཀྱིས་འདི་འདོད་པ་ཉིད་ཡིན་པའི་ཕྱིར་ཆད་པ་ཆུང་ཟད་ཀྱང་མེད་དོ॥ विज्ञानवादन्यायानुसारिभिरस्माभिरेतदिष्टमेवेति न किंचिद् क्षीयते त.प.22क/491; ཡུལ་མེད་པའི་ཤེས་པ་ནི་འགའ་ཡང་ཡོད་པ་མ་ཡིན་ནོ་ཞེས་བྱ་བ་འདི་ནི་རྣམ་པར་ཤེས་པ་སྨྲ་བ་དཔྱད་པར་གཏན་ལ་ཕབ་ཟིན་ཏོ॥ 'निर्विषयो न कश्चित् प्रत्ययोऽस्ति' इति निर्लोडितमेतद् विज्ञानवादविचारे त.प.330ख/376 2. विज्ञानवादी, विज्ञानवादस्यानुयायी – འདི་ནི་རྣམ་པར་ཤེས་པར་སྨྲ་བ་[གཞན་]དག་གི་འགོག་པའི་སྙོམས་པར་འཇུག་པ་ལ་སོགས་པའི་དུས་དང་མཚུངས་སོ॥ अन्यविज्ञानवादिनामपि निरोधसमापत्त्याद्यवस्थासु तुल्यमेतत् त्रि भा.150ख/38.

རྣམ་པར་ཤེས་པར་རུང་བ *वि.* विज्ञेयम् – འཇིག་རྟེན་བསམ་དུ་རུང་བ་དང་བསམ་དུ་མི་རུང་བ་དང་རྣམ་པར་ཤེས་པར་རུང་བ་དང་རྣམ་པར་ཤེས་པར་མི་རུང་བའི་སྤྱོད་པ་ཡང་དག་པར་བསྟན་པ་ལ་འཇུག་པའི་ཡེ་ཤེས་སམ चिन्त्याचिन्त्यलोकविज्ञेय[।]विज्ञेयं चरिसंदर्शनावतारज्ञानं वा द.भू.267क/59.

རྣམ་པར་ཤེས་ཙམ = རྣམ་པར་ཤེས་པ་ཙམ།

རྣམ་པར་གཤེགས་པ *भू.का.कृ.* विनिर्गतः – བཅོམ་ལྡན་འདས་ནི་འཁོར་བ་ལས་རྣམ་པར་གཤེགས་པའི་ཕྱིར་རོ།། भगवतां तु संसारविनिर्गतत्वात् बो.प.42क/1.

རྣམ་པར་བཤད = རྣམ་པར་བཤད་པ། རྣམ་པར་བཤད་ན व्याख्यायमानः – བཤད་པ་བྱ་ན་ཞེས་བྱ་བ་ནི་རྣམ་པར་བཤད་ན་འོ།། आख्यायमान इति व्याख्यायमानः त.प.170क/797.

རྣམ་པར་བཤད་པ •*क्रि.* व्याचष्टे – དེའི་ཕྱིར་སྐལ་བ་ཇི་ལྟ་བ་བཞིན་ཞེས་རྣམ་པར་བཤད་དོ།། अतो यथाभव्यमिति व्याचष्टे अभि.स्फु.5ख/9; व्याख्यायते – དེའི་ཕྱིར་དེ་སྐད་དུ་རྣམ་པར་བཤད་དོ།། अत एवं व्याख्यायते अभि.स्फु.11ख/18; •*सं.* 1. व्याख्या – རྣམ་བཤད་དོན་གསལ་ཞེས་བྱའི་མིང་། །དོན་བཞིན་འདི་ནི་བདག་གིས་བྱས།། व्याख्या मया कृतेयं यथार्थनामा स्फुटार्थेति ॥ अभि.स्फु.1क/3; ཞེས་བྱ་བ་ནི་རྣམ་པར་བཤད་པ་མི་མཐུན་ཏེ इति व्याख्याभेदः अभि.स्फु.7क/12; व्याख्यानम् – མཚན་ཉིད...ཞེས་རྣམ་པར་བཤད་པའི་ཕྱིར་བདག་ཡོངས་སུ་ཆད་པར་ཐལ་བར་འགྱུར་རོ།། इति लक्षणव्याख्यानाच्चात्मनः परिच्छेदप्रसङ्गः अभि.भा.92ख/1223 2. देशना – དེ...རང་ཉིད་ཀྱིས། །དམ་ཆོས་རྣམ་པར་བཤད་པ་བྱས།། सा चक्रे स्वयं सद्धर्मदेशना अ.क.21क/3.18 3. विभाषा, शास्त्रविशेषः – ཕྱོགས་འདི་ནི་རྣམ་པར་བཤད་པའི་ནང་དུ་བྲིས་པ་ཡོད་མོད་ཀྱི། དེ་ནི་གཞག་པའི་ཕྱོགས་མ་ཡིན་པར་མཚོན་ཏེ अस्त्येष विभाषायां लिखितपक्षः। स तु न स्थापनापक्षो लक्ष्यते अभि.स्फु.182ख/937; གང་དག་ཆོས་མངོན་རྣམ་བཤད་པའམ། །ཆོས་མངོན་མཛོད་ལ་གོམས་བྱས་པ།། अभिधर्मविभाषायां कृतश्रमा योऽभिधर्मकोशे च । अभि.स्फु.2क/3 4. व्याख्या – སྟོང་ཕྲག་བརྒྱ་པའི་རྣམ་པར་བཤད་པ་ཞེས་བྱ་བ शतसाहस्रिकाव्याख्यानाम क.त.3802; व्याख्यानम् – འདུལ་བ་མདོའི་རྣམ་པར་བཤད་པ विनयसूत्रव्याख्यानम् क.त.4121; དེ་ཁོ་ན་ཉིད་རིན་པོ་ཆེ་སྣང་བའི་རྣམ་པར་བཤད་པ तत्त्वरत्नालोकव्याख्यानम् क.त.1890; विवरणम् – བྱང་ཆུབ་ཀྱི་སེམས་ཀྱི་རྣམ་པར་བཤད་པ बोधिचित्तविवरणम् क.त.4556; དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་ལྔའི་ཕྱག་རྒྱ་རྣམ་པར་བཤད་པ तथागतपञ्चमुद्राविवरणम् क.त.2242; भाष्यम् – འདི་ལྟར་རྣམ་པར་བཤད་པ་ལས། དམ་བཅའ་བ་ནི་ལུང་ཡིན་པར་བརྗོད་དོ།། तथा हि भाष्य उक्तम् – आगमः प्रतिज्ञा प्र.अ.161क/510; टीका – དམ་ཚིག་རྒྱན་གྱི་རྣམ་པར་བཤད་པ་ཞེས་བྱ་བ समयालङ्कारटीकानाम क.त.2212; བྱང་ཆུབ་སེམས་ཀྱི་འགྲེལ་པའི་རྣམ་པར་བཤད་པ बोधिचित्तविवरणटीका क.त.1829; འཕགས་པ་གདན་བཞི་པའི་རྣམ་པར་བཤད་པ आर्यचतुर्पीठटीका क.त.1608; वृत्तिः – དཔལ་འཁོར་ལོ་སྡོམ་པའི་རྒྱུད་ཀྱི་རྒྱལ་པོ་བདེ་མཆོག་བསྡུས་པ་ཞེས་བྱ་བའི་རྣམ་པར་བཤད་པ श्रीचक्रसंवरतन्त्रराजसम्बरसमुच्चयनामवृत्तिः क.त.1413 5. भाष्यकारः – དེ་ལ་རྣམ་བཤད་པའི་འདོད་པ་ནི तत्रेदं भाष्यकारस्य मतम् वा.टी.107क/73; (द्र. རྣམ་པར་བཤད་པ་བྱེད་པ།); •*भू.का.कृ.* व्याख्यातः – གཞན་གྱིས་གཡོགས་པ་ཉིད་ནི་མི་རེག་པར་འཇུག་པས་རྣམ་པར་བཤད་པ་ཡིན་ནོ།། अन्येनान्तरितत्वमस्पृष्टिप्रवेशेन व्याख्यातम् वि.सू.13ख/14; निवेदितः – ཨུ་དྲ་ཡ་ཎ་བུ་ཡི་གཏམ། །དེར་ནི་དེ་ཡིས་རྣམ་བཤད་པ།། उद्रायणसुतकथां तत्र तेन निवेदिताम्। अ.क.322ख/40.182.

རྣམ་པར་བཤད་པ་རྣམ་པར་ངེས་པ *पा.* व्याख्याविनि-

श्चयः, सांकथ्यविनिश्चयभेदः – འཕེལ་བའི་གཏམ་གྱི་རྣམ་པར་ངེས་པ་བདུན་ལ...རྣམ་པར་བཤད་པ་རྣམ་པར་ངེས་པ་ནི་གང་གིས་མདོ་སྡེ་རྣམས་ཀྱི་དོན་སྟོན་པ་སྟེ सप्तविधसांकथ्यविनिश्चये...व्याख्याविनिश्चयो येन सूत्रान्तानामर्थं निर्दिशति अभि.स.भा.105[क]/142.

རྣམ་པར་བཤད་པ་བསྡུ་བའི་སྒོ *पा.* व्याख्यासंग्रहमुखम्, व्याख्यामुखभेदः – ཡང་རྣམ་པར་བཤད་པའི་སྒོ་བཅུ་བཞི་སྟེ། རྣམ་པར་བཤད་པ་བསྡུ་བའི་སྒོ... མངོན་པར་སྒྲུབ་པའི་སྒོ अपि खलु चतुर्दश मुखानि व्याख्यायाः– व्याख्यासंग्रहमुखम्...अभिनिर्हारमुखम् अभि.स.भा.105[क]/142.

རྣམ་པར་བཤད་པ་བྱེད་པ व्याख्याकारः – འདི་ནི་རྣམ་པར་བཤད་པ་བྱེད་པ་གང་གིས་ཀྱང་མ་བྲིས་ཏེ नैतत् केनचिद् व्याख्याकारेण लिखितम् अभि.स्फु.234[क]/1024; भाष्यकारः – འདིས་ནི་རྣམ་པར་བཤད་པ་བྱེད་པའི་ཚིག་ཀྱང་སྤྲངས་པ་ཡིན་ཏེ एतेन भाष्यकारवचनं निरस्तम् प्र.अ.134[क]/479; རྣམ་བཤད་བྱེད་པའི་[འདོད་པ་]སུན་དབྱུང་ནས तत्र भाष्यकारमतं दूषयित्वा वा.टी.107[क]/73; विभाषाकारः – འདུལ་བ་རྣམ་པར་བཤད་པ་བྱེད་པ་རྣམས་ནི་མུ་བཞི་པར་བྱེད་དེ विनयविभाषाकारास्तु चतुष्कोटिकं कुर्वन्ति अभि.स्फु.3[क]/5.

རྣམ་པར་བཤད་པའི་རྒྱུད विख्याततन्त्रम् – དཔལ་གདན་བཞི་པའི་རྣམ་པར་བཤད་པའི་རྒྱུད་ཀྱི་རྒྱལ་པོ་ཞེས་བྱ་བ श्रीचतुःपीठविख्याततन्त्रराजनाम क.त.430.

རྣམ་པར་བཤད་པའི་སྒོ *पा.* व्याख्यामुखानि, सांकथ्यविनिश्चयभेदः – འཕེལ་བའི་གཏམ་གྱི་རྣམ་པར་ངེས་པ་བདུན་ལ...ཡང་རྣམ་པར་བཤད་པའི་སྒོ་བཅུ་བཞི་སྟེ सप्तविधसांकथ्यविनिश्चये...अपि खलु चतुर्दश मुखानि व्याख्यायाः अभि.स.भा.105[क]/ 142.

རྣམ་པར་བཤད་པའི་སྒོ་བཅུ་བཞི चतुर्दशमुखानि व्याख्यायाः – 1. རྣམ་པར་བཤད་པ་བསྡུ་བའི་སྒོ व्याख्यासंग्रहमुखम्, 2. དངོས་པོ་བསྡུ་བའི་སྒོ वस्तुसंग्रहमुखम्, 3. ཡན་ལག་དང་ཉེ་བའི་ཡན་ལག་གི་སྒོ अङ्गोपाङ्गमुखम्, 4. གོང་ནས་གོང་དུ་མངོན་པར་བསྒྲུབ་པའི་སྒོ उत्तरोत्तरनिर्हारमुखम्, 5. སྤོང་བའི་སྒོ प्रतिक्षेपमुखम्, 6. ཡི་གེ་ཡོངས་སུ་བསྒྱུར་བའི་སྒོ अक्षरपरिणाममुखम्, 7. ཆུད་ཟ་བ་དང་ཆུད་མི་ཟ་བའི་སྒོ नाशानाशमुखम्, 8. གང་ཟག་རྣམ་པར་གཞག་པའི་སྒོ पुद्गलव्यवस्थानमुखम्, 9. རབ་ཏུ་དབྱེ་བ་རྣམ་པར་གཞག་པའི་སྒོ प्रभेदव्यवस्थानमुखम्, 10. ཚུལ་གྱི་སྒོ नयमुखम्, 11. ཡོངས་སུ་ཤེས་པ་ལ་སོགས་པའི་སྒོ परिज्ञादिमुखम्, 12. སྟོབས་དང་སྟོབས་མ་ཡིན་པའི་སྒོ बलाबलमुखम्, 13. བསླས་ཏེ་བརྗོད་པའི་སྒོ प्रत्याहारमुखम्, 14. མངོན་པར་སྒྲུབ་པའི་སྒོ अभिनिर्हारमुखम् अभि.स.भा.105[क]/142.

རྣམ་པར་བཤད་པར་བྱ *क्रि.* व्याख्यायते – དོན་རྣམ་པར་བཤད་པར་བྱ་སྟེ अर्थस्तु व्याख्यायते वा.टी.51[क]/3.

རྣམ་པར་བཤིག་པ •*सं.* विलोपनम् – བཀའ་བཅག་པ་ལས་མནར་མེད་པར་འགྲོ་བར་འགྱུར་ཏེ། སློབ་དཔོན་གྱི་ཆོས་རྣམ་པར་བཤིག་པའི་ཕྱིར་རོ॥ आज्ञाभङ्गादवीचिगमनं भवति, आचार्यधर्मविलोपनाद् वि.प्र.156[ख]/3.105; व्याघातिः – ཡོད་པ་ཉིད་རྣམ་པར་བཤིག་པའི་ཕྱིར་རོ॥ व्याघातित्वात् सत्त्वस्य वि.सू.84[क]/101; •*भू.का.कृ.* विध्वस्तः – དེ་ཡིས་ཤིང་ཏ་སླང་པོ་ཆེ། །བཅོམ་ཞིང་རྣམ་བཤིག་བཅག་པས་དེ॥ स तेन हत-

विध्वस्तभग्नस्यन्दनकुञ्जरः । अ.क.29क/3.116.

རྣམ་པར་སངས་རྒྱས་པ *भू.का.कृ.* विबुद्धः – བདེན་དོན་རྣམ་པ་བཅུ་གཉིས་ལྡན། །དེ་ཉིད་རྣམ་པ་བཅུ་དྲུག་རིག། །རྣམ་པ་ཉི་ཤུས་བྱང་ཆུབ་པ། །རྣམ་པར་སངས་རྒྱས་ཀུན་རིག་མཆོག། द्वादशाकारसत्यार्थः षोडशाकारतत्त्ववित् । विंशत्याकारसंबोधिर्विबुद्धः सर्ववित् परः ॥ वि.प्र.65ख/4.114; ཟད་པ་དང་མི་ཟད་པའི་མཐའི་ཡེ་ཤེས་ཀྱིས་རྣམ་པར་སངས་རྒྱས་པ क्षयाक्षयकोटिज्ञानविबुद्धानाम् ग.व्यू.309क/31; གང་ཞིག་ཐོག་མ་དབུས་མཐའ་མེད་ཞི་སངས་རྒྱས་ཉིད་རང་རྣམ་སངས་རྒྱས། यो बुद्धत्वमनादिमध्यनिधनं शान्तं विबुद्धः स्वयम् र.वि.77ख/7; དམ་པའི་བདེ་བས་དེ་ཉིད་དེ། །བདེ་བ་རྟོགས་ཕྱིར་རྣམ་སངས་རྒྱས། सत्सुखत्वेन तत्त्वं च विबुद्धो बोधनात् रतेः । हे.त.6ख/16.

རྣམ་པར་སངས་རྒྱས་པའི་བློ *ना.* विबुद्धबुद्धिः, बोधिसत्त्वः – འདི་ལྟ་སྟེ། བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་སེམས་དཔའ་ཆེན་པོ་ཤེས་པ་དམ་པའི་ཡེ་ཤེས་དང...རྣམ་པར་སངས་རྒྱས་པའི་བློ་དང यदुत ज्ञानोत्तरज्ञानिना च बोधिसत्त्वेन महासत्त्वेन ...विबुद्धबुद्धिना च ग.व्यू.276ख/3.

རྣམ་པར་སངས་མ་རྒྱས *भू.का.कृ.* न विबुद्धः – ཅི་སླད་ཇི་ལྟར་འདོད་ཁམས་སུ། །རྣམ་སངས་མ་རྒྱས་བདག་ལ་གསུངས། कामधातौ कथं केन न विबुद्धो वदाहि मे। ल.अ.65ख/13.

རྣམ་པར་སད་པ = རྣམ་སད།

རྣམ་པར་སུན་འབྱིན = རྣམ་པར་སུན་འབྱིན་པ།

རྣམ་པར་སུན་འབྱིན་པ • *क्रि.* विदूष्यते – དེ་ནི་ངོ་བོ་གང་གིས་རྣམ་པར་སུན་འབྱིན་པ་དེ་ཉིད་ལ་ལྟོས་ནས་སྡུག་བསྔལ་ཁོ་ན་ཡིན་ནོ सात्र येन रूपेण विदूष्यते, तदेवेहापेक्षते इति दुःखैव भवति अभि.स्फु.152ख/876; • *सं.* विदूषणम् – དེ་ཡང་དེའི་མི་མཐུན་པའི་ཕྱོགས་རྣམ་པར་སུན་འབྱིན་པའི་ཕྱིར་ཕ་རོལ་ཏུ་ཕྱིན་པ་མངོན་པར་སྒྲུབ་པར་བྱེད་པར་འགྱུར་རོ། स च तद्विपक्षविदूषणात् पारमिताऽभिनिर्हाराय संपद्यते सू.व्या.219ख/126; विदूषणा – རྣམ་པར་སུན་འབྱིན་པའི་གཉེན་པོ་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་ནི་འོག་ནས་འཆད་དོ། विदूषणाप्रतिपक्षादयः परस्तान्निर्देक्ष्यन्ते अभि.स.भा.20ख/27.

རྣམ་པར་སུན་འབྱིན་པ་ཀུན་ཏུ་སྤྱོད་པ *पा.* विदूषणासमुदाचारः, बोधिसत्त्वस्य बलविशेषः – བྱམས་པ་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་སེམས་དཔའ་ཆེན་པོ་ཆོས་བཞི་དང་ལྡན་ན་སྡིག་པ་བྱས་ཤིང་བསགས་པ་ཟིལ་གྱིས་ནོན་པར་འགྱུར་རོ། ...རྣམ་པར་སུན་འབྱིན་པ་ཀུན་ཏུ་སྤྱོད་པ་དང...རྟེན་གྱི་སྟོབས་སོ། चतुर्भिः मैत्रेय धर्मैः समन्वागतो बोधिसत्त्वो महासत्त्वः कृतोपचितं पापमभिभवति ...यदुत विदूषणासमुदाचारेण ...आश्रयबलेन च शि.स.90क/89.

རྣམ་པར་སུན་འབྱིན་པའི་གཉེན་པོ *पा.* विदूषणाप्रतिपक्षः – དེ་ལ་རྣམ་པར་སུན་འབྱིན་པའི་གཉེན་པོ་ནི་ཟག་པ་དང་བཅས་པའི་འདུ་བྱེད་རྣམས་ལ་ཉེས་དམིགས་སུ་ལྟ་བ་སྟེ། དེས་ནད་དང་འབྲས་ལ་སོགས་པའི་རྣམ་པ་རྣམས་ཀྱིས་ཉེ་བར་ལེན་པའི་ཕུང་པོ་སུན་འབྱིན་པའི་ཕྱིར་རོ། तत्र विदूषणाप्रतिपक्षः सास्रवेषु संस्कारेष्वादीनवदर्शनम्, तेन रोगगण्डादिभिराकारैरुपादानस्कन्धदूषणात् अभि.स.भा.60ख/83.

རྣམ་པར་སུན་འབྱིན་པར་བྱེད *क्रि.* विदूषयति – འདི་ལྟར་འཕགས་པ་རྣམས་ནི་འདི་གང་གིས་ན་མི་བཞེད་པར

འགྱུར་བ་རྣམ་པ་གཞན་གྱིས་རྣམ་པར་སྨིན་འབྱིན་པར་བྱེད तथा ह्येनामाकारान्तरेण विदूषयन्त्यार्याः ...ये-नानभिप्रेता भवति अभि.भा.4ख/881.

རྣམ་པར་སྨིན་འབྱིན་པར་བྱེད་པ = རྣམ་པར་སྨིན་འབྱིན་པར་བྱེད།

རྣམ་པར་སེམས = རྣམ་པར་སེམས་པ།

རྣམ་པར་སེམས་པ • सं. विचिन्तनम् – གང་ཕྱིར་རྣམ་སེམས་བསམ་གཏན་ནི། །གང་བསམས་དེ་ནི་བསམ་གཏན་ནོ།། यद् ध्येयं चिन्तितं यच्च ध्येयं यस्माद् विचिन्तनम् ॥ हे.त.6ख/18; •वि. विचिन्तकः – ཁྱིམ་དང་ནོར་ལ་རྣམ་པར་སེམས།། गृहवित्तविचिन्तकाः स.पु.103क/164.

རྣམ་པར་སེལ = རྣམ་པར་སེལ་བ།

རྣམ་པར་སེལ་བ • क्रि. विनिवर्तयति – རྡོ་རྗེ་རིན་པོ་ཆེ་ནི་ཆག་ཀྱང་ཕོངས་པ་ཐམས་ཅད་རྣམ་པར་སེལ་ཏོ།། भिन्नमपि वज्ररत्नं सर्वदारिद्र्यं विनिवर्तयति ग.व्यू.323क/406; विधमति – རིན་པོ་ཆེ་ཆེན་པོ་མེ་འབྱུང་བ་ཞེས་བྱ་བ་ནི་གཅིག་པུ་གནས་ཀྱང་མུན་པ་ཐམས་ཅད་རྣམ་པར་སེལ་ཏོ།། एकमाग्नेयं नाम महामणिरत्नं सर्वतमोऽन्धकारं विधमति ग.व्यू.315क/400; विचीयते – སེམས་ནི་ལས་ཀྱང་སོགས་པར་བྱེད། །ཡེ་ཤེས་ཀྱིས་ནི་རྣམ་པར་སེལ།། चित्तेन चीयते कर्म ज्ञानेन च विचीयते । ल.अ.169ख/126; •सं. 1. विनयनम् – སེམས་ཅན་རྣམས་ཀྱི་ཐེ་ཚོམ་རྣམ་པར་སེལ་བའི་ཕྱིར सत्त्वानां संशयविनयनात् सू.व्या.152क/36; विकिरणम् – ཡིད་གཉིས་རྣམ་པར་སེལ་བ विमतिविकिरणस्य ग.व्यू.267ख/347; ནེམ་ནུར་རྣམ་པར་སེལ་བ་ཞེས་བྱ་བའི་ཏིང་ངེ་འཛིན विमतिविकिरणो नाम समाधिः म.व्यु.590 (14क); विध्वंसनम् – འཕགས་པ་ཕྱོགས་བཅུའི་མུན་པ་རྣམ་པར་སེལ་བ་ཞེས་བྱ་བའི་ཐེག་པ་ཆེན་པོའི་མདོ आर्यदशदिगन्धकारविध्वंसन-नाममहायानसूत्रम् क.त.269; विष्कम्भणम् म.व्यु.2551 (48क); विधमनम् – མུན་པ་ཐམས་ཅད་རྣམ་པར་སེལ་བའི་ཁ་དོག་དང सर्वान्धकारविधमनवर्णा ग.व्यू.186क/270 2. विगमः, भैषज्यविशेषः – རིགས་ཀྱི་བུ་འདི་ལྟ་སྟེ་དཔེར་ན། རྣམ་པར་སེལ་བ་ཞེས་བྱ་བའི་སྨན་ཡོད་དེ། དེ་བཅངས་ན་ཟུག་རྔུ་ཐམས་ཅད་འབྱིན་པར་འགྱུར་རོ།། तद्यथा कुलपुत्र अस्ति विगमो नाम भैषज्यम् । तेन सर्वशल्याः पतन्ति ग.व्यू.312ख/398 • ना. विष्कम्भी, बोधिसत्त्वः – བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་ནི་ཕྱག་ན་རྡོ་རྗེ་དང... རྣམ་པར་སེལ་བ་དང་ཀུན་ཏུ་བཟང་པོའོ།། बोधिसत्त्वा वज्रपाणिः...विष्कम्भी, समन्तभद्रः वि.प्र.55ख/4.95; *• भू.का.कृ. विगलितः – རྨོངས་པའི་མུན་ཆེན་རྣམ་པར་སེལ་ཞིང་ཡོངས་སུ་མྱང་འདས་ལ་བརྟེན་དང་།། विगलितमहामोहौघान्तःश्रितः परिनिर्वृतिम् अ.क.53क/5.74; *> རྣམ་པར་བསལ་བ།

རྣམ་པར་སེལ་བར་བགྱིད क्रि. विनोदयति लो.को.1418.

རྣམ་པར་སེལ་བར་བྱེད = རྣམ་པར་སེལ་བར་བྱེད་པ།

རྣམ་པར་སེལ་བར་བྱེད་པ • क्रि. विनोदयति लो.को.1418; • सं. विसर्जनम् – འདི་བདེ་གཤེགས་བསྟན་པ་དག་དང...།ཡིད་བྱུང་བ་རྣམ་པར་སེལ་བར་བྱེད་པ इदं सुगतशासनं...मनोभवविसर्जनम् अ.क.32ख/53.50; • वि. विध्वंसनकरः – བདུད་ཀྱི་དཀྱིལ་འཁོར་རྣམ་པར་སེལ་བར་བྱེད་པ་ཞེས་བྱ་བའི་ཏིང་ངེ་འཛིན मारमण्डलविध्वंसनकरो नाम समाधिः अ.सा.431क/243.

རྣམ་པར་སོགས་པ *क्रि.* विचीयते – སེམས་ནི་ལས་རྣམས་སོགས་པར་བྱེད། །ཡིད་ཀྱང་རྣམ་པར་སོགས་པ་སྟེ།། चित्तेन चीयते कर्म मनसा च विचीयते। ल.अ.73क/21.

རྣམ་པར་སླུ་བ *वि.* व्यामोहकः लो.को.1418.

རྣམ་པར་སླུ་བ་མེད་པ *वि.* अविसंवादकः – རྣམ་པར་སླུ་བ་མེད་པའི་སེམས། །ངེས་ན་བརྟན་པ་བསྐྱེད་པར་བྱ།། अविसंवादकं चित्तं समुत्पाद्यमतो दृढम्। ज्ञा.सि. 47क/120.

རྣམ་པར་གསལ་བ = རྣམ་གསལ།

རྣམ་པར་གསོད विशरः मि.को.50ख।

རྣམ་པར་བསད *भू.का.कृ.* निहतः – སྡིག་ཅན་འབྱོར་པ་ལ་ཆགས་པ། །བདག་གིས་ཕ་ནི་རྣམ་པར་བསད།། मया विभवलुब्धेन पापेन निहतः पिता॥ अ.क.339ख/44.35.

རྣམ་པར་བསད་པ = རྣམ་པར་བསད།

རྣམ་པར་བསམ *क्रि.* विचिन्तयेत् – རྡོ་རྗེ་བཤང་གཅིན་ནམ་མཁའི་དབྱིངས། །ཡོངས་སུ་གང་བར་རྣམ་པར་བསམ།། खधातुं विण्मूत्रवज्रेण परिपूर्णं विचिन्तयेत्। गु.स.140ख/107; चिन्तयेत् – བསྲུང་བའི་འཁོར་ལོ་རྣམ་པར་བསམ་མོ།། रक्षाचक्रं चिन्तयेत् वि.प्र.103क/3.23.

རྣམ་པར་བསམས = རྣམ་པར་བསམས་པ། རྣམ་པར་བསམས་ནས། °ཏེ विचिन्त्य – འཆད་པར་འགྱུར་བའི་མཚོན་ཆ་རྣམས་འཛིན་པ་རྣམ་པར་བསམས་ནས वक्ष्यमाणायुधधरं विचिन्त्य वि.प्र.114ख/3.35; विनिश्चित्य – དེ་ལྟར་ནི་བསྟན་མ་ཐག་པའི་ལེའུ་མ་ལུས་པས་བསྟན་པའི་དོན... རྣམ་པར་བསམས་ཏེ एवं समनन्तरसकलपरिच्छेदप्रतिपादितमर्थं विनिश्चित्य बो.प. 86ख/47; द्र.– དེ་ལྟར་རྣམ་བསམས...འབད་པར་བྱ།། एवं विनिश्चित्य करोमि यत्नम् बो.अ.10क/4.48.

རྣམ་པར་བསམས་ཤིང विचिन्तयन् – དེ་ནས་བཙུན་མོ་སྟོང་ཕྲག་ནི། །དྲུག་གིས་གང་བའི་ཕོ་བྲང་དུ། །རྒྱལ་པོའི་སྲས་ཀྱི་ཞི་བ་ནི། །དགྱེས་པར་རྣམ་པར་བསམས་ཤིང་ཞུགས།། षण्णां कान्तासहस्राणां वृतमन्तःपुरं ततः। विवेश राजतनयः प्रियां शान्तिं विचिन्तयन्॥ अ.क.218ख/24.120.

རྣམ་པར་བསམས་པ • *क्रि.* व्यचिन्तयत् – ཤཱ་ཀྱའི་དགེ་སློང་དེ་དག་རྣམས།... རྣམ་པར་བསམས།། ते शाक्यभिक्षवः...व्यचिन्तयन् अ.क.289क/37.17; བརྩེ་བའི་དབང་གྱུར་ཀུན་མཁྱེན་གྱིས། །དེ་ནི་གསན་ནས་རྣམ་པར་བསམས།། दयाविधेयः सर्वज्ञस्तदाकर्ण्य व्यचिन्तयत्। अ.क.231ख/25.81; अचिन्तयत् – ཆོམ་རྐུན་ཚོགས་ཀྱིས... རྣམ་བསམས་པ།། तस्करगणः... अचिन्तयत् अ.क.54क/6.5; • *भू.का.कृ.* विचिन्तितः – ཡིད་བཞིན་ནོར་བུ་ངེས་པར་རྣམ་བསམས་དངོས་པོ་སྟེར་བྱེད་ཅིང་།། चिन्तामणिः किल विचिन्तितवस्तुदाता अ.क.36ख/55.1; ཡིད་ཀྱིས་རྣམ་པར་བསམས་པ་དང་།། मनसा च विचिन्तितम् सु.प्र.9क/15.

རྣམ་པར་བསལ = རྣམ་པར་བསལ་བ།

རྣམ་པར་བསལ་བ • *सं.* व्यपोहः – དེ་བཞིན་བསྡུས་པའི་སྒྲ་དོན་རྣམས། །བསྡུས་པ་ཅན་ནི་རྣམ་བསལ་བས།། एवं समूहशब्दार्थे समुदायिव्यपोहतः। त.स.37क/386; व्युदासः – སེམས་ཙམ་དུ་ནི་རྟོགས་པ་དང་། །ཕྱི་རོལ་དངོས་པོ་རྣམ་བསལ་བས། །རྣམ་པར་རྟོག་པ་རྣམ་ལྡོག་སྟེ། །ལམ་དེ་ཉིད་ནི་དབུ་མ་འོ།། चित्तमात्रावबोधेन बाह्यभावा व्युदाश्रया[? बाह्यभावव्युदासेन]। विनिवृत्तिर्विकल्पस्य प्रतिपत् सैव मध्यमा॥ ल.अ.

172क/131; विधूननम् – ཆོས་ཐམས་ཅད་རྣམ་པར་བསལ་བ་ཞེས་བྱ་བའི་ཏིང་ངེ་འཛིན་ सर्वधर्मविधूननो नाम समाधिः अ.सा.429ख/242; • *भू.का.कृ.* व्यपनीतः – འདི་ལྟར་རློམ་སེམས་ཀུན་ཀྱང་རྣམ་པར་བསལ། व्यपनीतसर्वाणि मि मन्यितानि स.पु.26क/46; विधूतः – རྣལ་འབྱོར་ཤེས་པ... རྟོག་པའི་དྲ་བ་རྣམས་བསལ་བས། योगिनां ज्ञानं...विधूतकल्पनाजालम् प्र.वा.129क/2.281; विघटितः – གང་ཞིག་དགེ་བ་རྣམས་ཀྱིས་བཀུག་དང་ཡོངས་སུ་དཀྲིས་དང་རྣམ་པར་གསལ་[བསལ་]བ་དང་།...ཕྱེ་མར་བྱས་ཀྱང་ཟད་པ་ཉིད་མི་འགྱུར། याकृष्टा परिवेष्टिता विघटिता...कणशः कृतापि कुशलैर्नैव प्रयाति क्षयम् ॥ अ.क.4ख/50.33; परिकर्षितः लो.को.1418.

རྣམ་པར་བསྒོས *भू.का.कृ.* विवर्धितः – ཁྱོད་ནི་ཕ་མས་རྣམ་པར་བསྒོས། मत्पित्रा त्वं विवर्धितः अ.क.90ख/9.55.

རྣམ་པར་བསླད = རྣམ་པར་བསླད་པ།

རྣམ་པར་བསླད་པ • *सं.* विप्लवः – རྗེ་ཡི་སྲས་པོ་ཇི་ལྟར་ན། །ངེས་པར་དམ་ཚིག་བརྗེད་གྱུར་ཅིང་། །བདེན་པར་སྨྲ་བ་ཁྱོད་ཀྱི་ཐུགས། །གང་འདི་རྣམ་པར་བསླད་པ་སྐྱེས། आर्यपुत्र कथं नाम समयः सत्यवादिनः। विस्मृतस्तव संजातो यदयं चित्तविप्लवः ॥ अ.क.86ख/63.42; དུས་མིན་རྣམ་བསླད་རབ་ཏུ་དྲག །མི་བསྲུན་རོ་ལངས་ཚོགས་ཀྱིས་གང་། अकालविप्लवोत्तालखलवेतालसंकुलः ॥ अ.क.92क/9.71; རྒྱ་མཚོར་ལས་ཀྱིས་རྣམ་བསླད་པས། །གཟིངས་ནི་ཞིག་པར་གྱུར་པ་ན། །ཁྱོད་ཀྱི་ཐག་པར་བདག་བླང་བྱ། समुद्रे कर्मविप्लवात्। अहं ग्राह्यस्त्वया स्कन्धे जाते प्रवहणक्षये ॥ अ.क.260ख/31.13; विक्लवः – བདེན་མེད་ཡོངས་སུ་སྨྲ་བའི་རྣམ་པར་བསླད་པ་ནག་ཕྱོགས་ཉིན་གྱིས་སྤྱོད་པས་ཟླ་བ་ཟད་པར་བྱས། वितथपरिवादविक्लवकृष्णदिनक्षपि[क्षयि लि.पा.]तचरितचन्द्राणाम् ॥ अ.क.62क/59.111; अ.क.231क/89.119; • *भू.का.कृ.* विप्लुतः – འཇིག་ཚོགས་འཛིན་པའི་དཀའ་ཐུབ་ཅི། །རྣམ་པར་བསླད་ལ་ནགས་ཀྱིས་ཅི། <?> किं तपोभिः सकोपानां विप्लुतानां वनेन किम्। अ.क.40क/4.40; विपर्यस्तः – བྱིས་པ་འཛིན་པས་རྣམ་བསླད་དེ། बाला ग्राहविपर्यस्ताः ल.अ.163क/114.

རྣམ་པར་ལྷང་དེ • *क्रि.* विरोचते लो.को.1418; • *वि.* विरोचितः – ཉི་མ་ཇི་ལྟར་བཞིན་དུ་འབར། །ཀུན་ཏུ་རྣམ་པར་ལྷང་དེ་སྟེ། ज्वलमानं यथा सूर्यं समन्तेन विरोचितम्। सु.प्र.6ख/11.

རྣམ་པར་ལྷུང = རྣམ་པར་ལྷུང་བ།

རྣམ་པར་ལྷུང་བ • *क्रि.* विपद्यते – སྐྱེ་བོ་གཅིག་པུར་ཡང་དག་སྐྱེ། །གཅིག་པུ་ཉིད་དུ་རྣམ་པར་ལྷུང་། एकः संजायते जन्तुरेकैव विपद्यते ॥ अ.क.223क/24.169; • *सं.* विनिपातः – ཕྲག་དོག་གིས་བརྒྱལ་བའི། །བློན་པོའི་ཚོགས་ཀྱིས་དེ་ཡི་ནི། །རྣམ་པར་ལྷུང་བ་རབ་ཏུ་བསམས། मात्सर्यमूर्च्छिताः। मन्त्रिणः संहतास्तस्य विनिपातमचिन्तयन् ॥ अ.क.176क/20.6; • *भू.का.कृ.* विस्रस्तः – ས་བདག་ས་ལ་སྐད་ཅིག་གིས། །ལྷུང་སྟེ་འབྲས་བུ་རྣམ་ལྷུང་ཞིང་། །རྩ་བ་བཅད་པའི་ལྗོན་པ་བཞིན། क्षितौ क्षितिपतिः क्षणात्। पपात विस्रस्तफलश्छिन्नमूल इव द्रुमः ॥ अ.क.45ख/4.109; विनिपतितः लो.को.1425.

རྣམ་པར་ལྷུང་བྱེད *क्रि.* निपातयति – ཀྱེ་མ་དཔལ་དང་དུས་[? དག་]ཤིང་བསྣམས་ཙམ་གྱིས། །སྐྱེས་བུ་རྣམས་ནི་རྣམ་པར་ཉམས་པར་བྱེད།...།རྣམ་པར་ལྷུང་བྱེད निपात-

यति...आघ्रातमात्रैव करोति पुंसामहो विनाशं विषवल्लरी श्रीः ॥ अ.क.202क/22.94.

རྣམ་དཔྱད = རྣམ་པར་དཔྱད། ०य।

རྣམ་དཔྱད་པ = རྣམ་པར་དཔྱད། ०य।

རྣམ་དཔྱད་བྱ = རྣམ་པར་དཔྱད་པར་བྱ།

རྣམ་དཔྱད་བྱས *भू.का.कृ.* कृता चिन्ता – ཆ་ཤས་དབྱེ་བ མེད་པ་གང་།...།དུལ་ལྡན་དུ་ནི་གཞན་དག་འདོད། །དེ ཉིད་ལ་ནི་རྣམ་དཔྱད་བྱས॥ अपेतभागभेदश्च यः परेरणुरिष्यते। तत्रैवेयं कृता चिन्ता त.स.72ख/680.

རྣམ་དཔྱད་ཟིན *भू.का.कृ.* विचारितः – དངོས་རྣམས་དེ རྒྱུའི་རང་བཞིན་ན། །དངོས་པོ་རྣམ་དཔྱད་མ་ཟིན་ནམ॥ तद्धेतुरूपा भावाश्चेन्ननु भावा विचारिताः। बो.अ. 36क/9.131.

རྣམ་དཔྱོད = རྣམ་པར་དཔྱོད་པ།

རྣམ་དཔྱོད་ཅན = མཁས་པ संख्यावान्, विद्वान् मि.को. 119ख।

རྣམ་དཔྱོད་བྱེད = རྣམ་པར་དཔྱོད་པར་བྱེད།

རྣམ་སྤང = རྣམ་པར་སྤང་བ།

རྣམ་སྤངས = རྣམ་པར་སྤངས་པ།

རྣམ་སྤངས་པ = རྣམ་པར་སྤངས་པ།

རྣམ་སྤེལ •सं. विवृद्धिः – ཚངས་པ་ཆེན་པོ་གཙུག་ཕུད ཅན་ཡང་དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་ལ་ཡང་དང་ཡང་བསྐུལ བས་དགེ་བའི་རྩ་བ་རྣམ་པར་སྤེལ་བ་དང་། ཆོས་ཀྱང་ཤིན ཏུ་ཟབ་པའི་ཕྱིར་ཡང་གཅིག་པུ་དབེན་པར་གཤེགས་ཏེ། ནང་དུ་ཡང་དག་བཞག་ནས་ཐུགས་ལ་འདི་ལྟ་བུར་རྣམ པར་རྟོག་པར་གྱུར་ཏེ शिखिनश्च महाब्रह्मणः पुनः पुनस्तथागताध्येषणया कुशलमूलविवृद्ध्यर्थं धर्मस्य चातिगम्भीरोदारतामुपादाय पुनरप्येकस्य रहोगतस्य प्रतिसंलीनस्यायमेवंरूपश्चेतोवितर्कोऽभूत् ल. वि.189क/289; • *भू.का.कृ.* विवर्धितः – དཔྱིད་ཀྱི དུས་ལ་བབ་པས་རྣམ་སྤེལ་ཀྱང་། །ཉི་མའི་འོད་ཟེར་སྣང བ་མེད་པར་གྱུར॥ निदाघसंपर्कविवर्धितोऽपि तिरोबभूवार्ककरप्रभावः। जा.मा.88क/101; *विदर्भितः – ཡི་གེ་ཧཱུྃ་ཕཊ་རྣམ་སྤེལ་བའི། །ཆོ་ག་འདི་ཉིད་ཀྱིས་འདིར བྲི॥ तेनैव विधिनालिख्य हूँ फट्कारविदर्भितम्। स. उ.278क/10.52.

རྣམ་སྤེལ་ནས व्यवकीर्य – དེ་ལ་འཕར་བ་ཞེས་བྱ་བ་ནི འདིར་བསམ་གཏན་རྣམ་པར་སྤེལ་ནས तत्र प्लुतो नाम य इह ध्यानानि व्यवकीर्य अभि.भा.22ख/951.

རྣམ་སྤོང = རྣམ་པར་སྤོང་བ།

རྣམ་སྤོང་བ = རྣམ་པར་སྤོང་བ།

རྣམ་སྤྱད = རྣམ་པར་སྤྱད། ०य।

རྣམ་སྤྱད་པ = རྣམ་པར་སྤྱད། ०य།

རྣམ་སྤྱོད = རྣམ་པར་སྤྱོད་པ།

རྣམ་སྤྱོད་པ = རྣམ་པར་སྤྱོད་པ།

རྣམ་སྤྲས = རྣམ་པར་སྤྲས་པ།

རྣམ་སྤྲས་པ = རྣམ་པར་སྤྲས་པ།

རྣམ་སྤྲུལ = རྣམ་པར་སྤྲུལ་པ།

རྣམ་སྤྲུལ་པ = རྣམ་པར་སྤྲུལ་པ།

རྣམ་སྤྲོ = རྣམ་པར་སྤྲོ་བ།

རྣམ་སྤྲོ་བ = རྣམ་པར་སྤྲོ་བ།

རྣམ་སྤྲོས = རྣམ་པར་སྤྲོས་པ།

རྣམ་ཕྱེ = རྣམ་པར་ཕྱེ། ०य།

རྣམ་ཕྱེ་བ = རྣམ་པར་ཕྱེ། ०य།

རྣམ་ཁྲོད། वितुर्णम्, संख्याविशेषः म.व्यु.7730 (109ख), 7858 (110ख).

རྣམ་འཕེལ = རྣམ་པར་འཕེལ་བ།

རྣམ་འཕེལ་བ = རྣམ་པར་འཕེལ་བ།

རྣམ་འཕེལ་བྱེད = རྣམ་པར་འཕེལ་བར་བྱེད་པ།

རྣམ་འཕྱོ = ཉ विसारः, मत्स्यः – पृथुरोमा झषो मत्स्यो मीनो वैसारिणोऽण्डजः ॥ विसारः शकली च अ.को. 1.12.18; विचित्रं सरतीति विसारः अ.वि.1.12.18.

རྣམ་འཕྲུལ • *क्रि.* विकरोति – [བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་] བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའི་སྨོན་ལམ་གྱི་མཐུ་ཅན་རྣམས་སྨོན་ལམ་གྱི་ཁྱད་པར་གྱིས་རྣམ་པར་འཕྲུལ་ཏེ प्रणिधानबलिका बोधिसत्त्वाः प्रणिधानविशेषिकतया विकुर्वन्ति द.भू.185ख/14; • *सं.* 1. विकुर्वणम् – ཨེ་མ་ཧོ་མཆོག་ཏུ་ཟབ་ཉིད། །བྱང་ཆུབ་སེམས་ཀྱི་རྣམ་འཕྲུལ་ཡིན།། अहो परमगम्भीरं बोधिचित्तविकुर्वणम् ॥ गु.सि.12ख/27; རྣམ་པར་ཐར་པའི་དཀྱིལ་འཁོར་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའི་རྣམ་པར་འཕྲུལ་པ विमोक्षमण्डलबोधिसत्त्वविकुर्वणम् म.मू.88क/1; विकुर्वा – ཆོས་ཉིད་བསམ་བྱས་[? ཡས་]ཚིག་ལམ་ཤེས་པར་སྟོན། །དེ་དག་ཏིང་འཛིན་རྣམ་འཕྲུལ་དེ་འདྲ་འོ།། धर्ममचिन्तिय वाक्यपथज्ञ देशयि एष समाधि विकुर्वा ॥ शि.स.178ख/177; ཐེག་པ་མཆོག་གི་རྣམ་པར་འཕྲུལ་སྒོ་དང་།། उत्तमयान विकुर्वमुखेन शि.स.176ख/174; विकुर्वाणः – འཕགས་པ་འཇམ་དཔལ་རྣམ་པར་འཕྲུལ་པའི་ལེའུ་ཞེས་བྱ་བ་ཐེག་པ་ཆེན་པོའི་མདོ आर्यमञ्जुश्रीविकुर्वाणपरिवर्तनाममहायानसूत्रम् क.त.97 2. विकुर्वितम् – རྫུ་འཕྲུལ་གྱིས་རྣམ་པར་འཕྲུལ་པའི་རྩེད་མོས་དགའ་བ་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་དག་ཁོ་ན་ལ་ཡོད་ཀྱི ऋद्धिविकुर्वितं क्रीडारतिः बोधिसत्त्वानामेवास्ति सू.व्या. 142ख/19; ཤེས་རབ་རང་གི་དངོས་དེ་སྲིད། …།འདི་དག་ཐམས་ཅད་རྣམ་པར་འཕྲུལ།། तावत् प्रज्ञास्वरूपस्य सर्वमेतद् विकुर्वितम्। गु.सि.6क/13 3. विजृम्भितम् – གང་ཞིག…སྲིད་པའི་བདག་པོ་དང་…དེ་དག་བསོད་ནམས་རྣམ་འཕྲུལ་ཡིན།། यत्…भुवनाधिपत्यम्।..पुण्यविजृम्भितं तत् ॥ अ.क.278ख/103.24; ཀྱེ་ཀྱེ་རྒྱལ་བ་ཐམས་ཅད་གཟིགས། །བྱང་ཆུབ་སེམས་ཀྱི་རྣམ་འཕྲུལ་ཡིན། །གང་དུ་ལུས་ངག་སེམས་མེད་པ། །དེར་ནི་གཟུགས་སུ་རབ་ཏུ་མཐོང་།། दृश्यन्तां हे जिनाः सर्वे बोधिचित्तविजृम्भितम्। यत्र कायो न वाक् चित्तं तत्र रूपं प्रदृश्यते ॥ गु.सि.6क/13; ཐུགས་རྣམ་པར་འཕྲུལ་པ་རྡོ་རྗེ་ཞེས་བྱ་བའི་ཏིང་ངེ་འཛིན་ལ་སྙོམས་པར་ཞུགས་ནས वाग्विजृम्भितं नाम समाधिं समापद्य गु.स.124ख/74 4. = འཁྲུལ་པ विभ्रमः – གདུང་[? གཡོ་]བར་གྱུར་པའི་ལན་བུའི་འོད་ལྟར་བུང་བའི་ཚོགས་བཏིབས་རྣམ་པར་འཕྲུལ་པ་ཀུན་སྨོངས་གྱུར།། लोलालकाभभ्रमरमिलद्विभ्रमः संभ्रमोऽभूत् अ.क.242क/28.20; རི་དྭགས་ཐམས་ཅད་མགྲིན་པ་ནི། །འཕྱོག་པའི་རྣམ་འཕྲུལ་ལྡན་པས་བྲོས།། हरिणा दुद्रवुः सर्वे ग्रीवावलनविभ्रमैः ॥ अ.क.256क/30.12; ཕན་ཚུན་ལྟ་བར་བྱེད་པའི་རྣམ་འཕྲུལ་གྱིས།། परस्परालोकनविभ्रमेण अ.क.295ख/108.26; भ्रान्तिः – ཆུ་སྐྱེས་གདོང་ལྡན་མིག་གཉིས་ཀྱི། །རྣམ་འཕྲུལ་ཡིད་འོང་འདི་ལ་ནི། །དཔྱིད་ཀྱི་བུང་བའི་རྣམ་འཕྲུལ་གྱིས། །ཅི་འདྲི་བྱེད་པ་ཅི་ཡིན་སྨྲོས།། मधुरं मधुरम्भोजवदने वद नेत्रयोः। विभ्रमम्भ्रमरभ्रान्त्या विडम्बयति किन्न्विदम् ॥ का.आ.334ख/3.8; • *भू.का.कृ.* विभ्रान्तः – སྨིན་ལེགས་གལ་ཏེ་པད་མ་འགའ། །རྣམ་པར་འཕྲུལ་པའི་མིག་ལྡན་ན།། यदि किञ्चिद्भवेत्

पद्मं सुभ्रु विभ्रान्तलोचनम्। का.आ.322ख/2.24.

རྣམ་འགྲོ = རྣམ་པར་འགྲོ་བ།

རྣམ་འགྲོ་ངོ་ཚ *वि.* विसारलज्जः, बोधिसत्त्वस्य – མ་གུས་ངོ་ཚ... རྣམ་འགྲོ་ངོ་ཚ... བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་ཡིན།། विमानलज्जः...विसारलज्जः...खलु बोधिसत्त्वः॥ सू.अ.248ख/166.

རྣམ་བྱང = རྣམ་པར་བྱང་བ།

རྣམ་བྱིན = སྦྱིན་པ विसर्जनम्, दानम् – त्यागो विहायितं दानमुत्सर्जनविसर्जने। अ.को.2.7.29; विसृज्यते विसर्जनम् अ.वि.2.7.29.

རྣམ་བྱུང = རྣམ་པར་བྱུང་བ།

རྣམ་བྱུང་བ = རྣམ་པར་བྱུང་བ།

རྣམ་བྱེད = རྣམ་པར་བྱེད་པ།

རྣམ་བྱེད་ལྡན *पा.* विकृतिः, छन्दभेदः मि.को.93ख।

རྣམ་བྱེད་བུ *ना.* वैधात्रः, वैद्यसंहिताकर्ता – सनत्कुमारो वैधात्रः अ.को.1.1.52; विधातुरपत्यं वैधात्रः। वैद्यसंहिताकर्तृविधातृपुत्रस्य नामनी अ.वि.1.1.52.

རྣམ་བྲལ = རྣམ་པར་བྲལ་བ།

རྣམ་བྲལ་བ = རྣམ་པར་བྲལ་བ།

རྣམ་དབེན • *भू.का.कृ.* विविक्तः – ཐོས་དོན་རྣམ་དབེན་སྟོན་བྱེད་པ། །ཚད་མས་གྲུབ་པ་འདོད་པར་གྲིས།། पुमानतः [? प्रमाणतः]। श्रुत्यर्थानां विविक्तानामुपदेशकृदिष्यताम्॥ त.स.102ख/902; རྣམ་དབེན་ཞེས་བྱ་བ་ནི་ཁ་ན་མ་ཐོ་བ་མེད་པ་གཙང་བ་རྣམས་ཏེ विविक्तानामिति अनवद्यानां शुद्धानाम् त.प.216क/902; • *सं.* प्रविवेकः लो.को.1411.

རྣམ་དབྱེ = རྣམ་པར་དབྱེ་བ།

རྣམ་དབྱེ་ཅན *वि.* विभावकः – ཐེག་པ་སྣ་ཚོགས་ཐབས་ཚུལ་གྱིས། །འགྲོ་བའི་དོན་གྱི་རྣམ་དབྱེ་ཅན།། नानायाननयोपायजगदर्थविभावकः। ना.स.7ख/135.

རྣམ་དབྱེ་དང་བྲལ *वि.* अविभक्तः – རྣམ་དབྱེ་དང་བྲལ་གཅིག་ལ་ནི། །དབྱེ་བར་བརྟགས་པ་འགལ་བ་ཡིན།། एकस्मिन्नविभक्ते हि व्याहता भेदकल्पना॥ त.स.89ख/812.

རྣམ་དབྱེ་བ = རྣམ་པར་དབྱེ་བ།

རྣམ་དབྱེ་བ་མི་ཤེས *वि.* अविभागज्ञः – མཐོང་དང་རྟོག་པའི་རྣམ་དབྱེ་བ། །མི་ཤེས་ཕྱི་རོལ་སྙམ་དུ་སེམས།། दृश्यकल्पाविभागज्ञो बाह्य इत्यभिमन्यते॥ त.स.57ख/554.

རྣམ་དབྱེ་མ་བྱས་པ = རྣམ་པར་དབྱེ་བ་མ་བྱས་པ།

རྣམ་དབྱེ་མེད་པ *वि.* अविभक्तिकम् – རྒྱུ་མ་ཞེས་པ་ནི་རྣམ་དབྱེ་མེད་པའི་ཚིག་གོ།། अन्त्र इति अविभक्तिकं पदम् वि.प्र.234क/2.34; द्र. རྣམ་དབྱེར་མེད།

རྣམ་དབྱེ་ཤེས་པ *वि.* प्रविभागज्ञः – རྣམ་དབྱེ་ཤེས་པ་ནི་འཆད་པ प्रविभागज्ञ व्याख्याता त.प.253ख/981.

རྣམ་དབྱེའི་དོན་ཅན *वि.* प्रविभक्तार्थः – དོན་བཅས་རྣམ་དབྱེའི་དོན་ཅན་གྱི། །ཁྱད་པར་རིམ་དང་ལྡན་ཉིད་ནི། །སྐྱེས་བུས་མ་བྱས་ལ་བཀག་ཟིན།། सार्थकप्रविभक्तार्थविशिष्टक्रमयोगिता। निषिद्धाऽपौरुषेयत्वे त.स.101ख/895.

རྣམ་དབྱེའི་ཚིག विभक्तिः – རྣམ་དབྱེའི་ཚིག་ལེའུར་བྱས་པ विभक्तिकारिका क.त.4274.

རྣམ་དབྱེར་བཅས་པ सविनिर्भागः – རྣམ་དབྱེར་བཅས་པའི་མཚན་ཉིད་ཅན། །བློ་བུར་དག་གིས་ཁམས་སྟོང་གི། །རྣམ་དབྱེར་མེད་པའི་མཚན་ཉིད་ཅན། །བླ་མེད་ཆོས་ཀྱིས

སྟོང་མ་ཡིན༎ शून्य आगन्तुकैर्धातुः सविनिर्भागलक्षणैः। अशून्योऽनुत्तरैर्धर्मैरविनिर्भागलक्षणैः॥ र.वि. 113ख/76.

རྣམ་དབྱེར་མེད = རྣམ་པར་དབྱེ་བ་མེད་པ།

རྣམ་དབྱེར་མེད་པ = རྣམ་པར་དབྱེ་བ་མེད་པ།

རྣམ་འབྱུང विभूतंगमा, संख्याविशेषः – བྱེ་བ་ཕྲག་བརྒྱ་ན་ཐེར་འབུམ་ཞེས་བྱའོ༎ ...བདེ་སེམས་ཀུན་ཕྲག་བརྒྱ་ན་རྣམ་འབྱུང་ཞེས་བྱའོ༎ शतं कोटीनामयुतं नामोच्यते ...शतं सर्वसंज्ञानां विभूतंगमा नामोच्यते ल.वि.76ख/103; विभूतिगमम् – བདེ་སེམས་ཀུན་ཕྲག་བརྒྱ་ན་རྣམ་འབྱུང་ཞེས་བྱའོ༎ རྣམ་འབྱུང་ཕྲག་བརྒྱ་ན་དེའི་མཚན་ཉིད་ཅེས་བྱའོ༎ शतं सर्वसंज्ञानां विभूतिगमं नामोच्यते। शतं विभूतिगमानां तल्लक्षणं नामोच्यते म.व्यु.112क; विभूतः म.व्यु.8036 .

རྣམ་འབྱུང་ཆེན་པོ महाविभूतः, संख्याविशेषः म.व्यु. 8037; मि.को.21क।

རྣམ་འབྱེད = རྣམ་པར་འབྱེད་པ།

རྣམ་འབྱེད་སྐུ = རྣམ་པར་འབྱེད་པའི་སྐུ།

རྣམ་འབྱེད་པ = རྣམ་པར་འབྱེད་པ།

རྣམ་འབྱེད་མེད *वि.* अविवेकः – རབ་འབྱུང...།དབུལ་ཞིང་རྣམ་འབྱེད་མེད་ལས་ནི། །དམན་རྣམས་ཀྱིས་ཀྱང་རྙེད་པར་དཀའ༎ प्रव्रज्या...दारिद्र्यादविवेकाच्च नीचानामपि दुर्लभा। अ.क.163ख/18.23.

རྣམ་འབྱེད་མེད་པ = རྣམ་འབྱེད་མེད།

རྣམ་འབྱེས *भू.का.कृ.* विभक्तः – ཡན་ལག་ཤིན་ཏུ་རྣམ་འབྱེས་དང་༎ सुविभक्ताङ्गता अभि.अ.12ख/8.25.

རྣམ་འཕྲུལ = རྣམ་པར་འཕྲུལ་པ།

རྣམ་སྦྱང = རྣམ་པར་སྦྱང་། ০བ།

རྣམ་སྦྱང་བ = རྣམ་པར་སྦྱང་། ০བ།

རྣམ་སྦྱངས = རྣམ་པར་སྦྱངས་པ།

རྣམ་སྦྱངས་པ = རྣམ་པར་སྦྱངས་པ།

རྣམ་སྦྱོང = རྣམ་པར་སྦྱོང་བ།

རྣམ་སྦྱོང་བ = རྣམ་པར་སྦྱོང་བ།

རྣམ་སྦྱོང་མཛད *वि.* विशोधकः – ཡེ་ཤེས་སྤྱོད་པ་རྣམ་སྦྱོང་མཛད༎ ज्ञानचर्याविशोधकम् गु.स.86ख/13.

རྣམ་མང = རྣམ་པ་མང་པོ།

རྣམ་མང་པོ = རྣམ་པ་མང་པོ།

རྣམ་མི་རྟོག = རྣམ་པར་མི་རྟོག་པ།

རྣམ་མི་འཚེ = རྣམ་པར་མི་འཚེ་བ།

རྣམ་མེད = རྣམ་པ་མེད་པ།

རྣམ་མེད་པ = རྣམ་པ་མེད་པ།

རྣམ་སྨོངས = རྣམ་པར་སྨོངས་པ།

རྣམ་སྨོངས་པ = རྣམ་པར་སྨོངས་པ།

རྣམ་སྨིན = རྣམ་པར་སྨིན་པ།

རྣམ་སྨིན་པ = རྣམ་པར་སྨིན་པ།

རྣམ་གཙོགས = རྣམ་པར་གཙོགས་པ།

རྣམ་གཙོགས་པ = རྣམ་པར་གཙོགས་པ།

རྣམ་རྩེ = རྣམ་པར་རྩེ་བ།

རྣམ་རྩེ་བ = རྣམ་པར་རྩེ་བ།

རྣམ་རྩེན = རྣམ་པར་རྩེན་པ།

རྣམ་རྩེན་པ = རྣམ་པར་རྩེན་པ།

རྣམ་སྟོད = རྣམ་པར་སྟོད་པ།

རྣམ་སྤྱོད་པ = རྣམ་པར་སྤྱོད་པ།

རྣམ་བརྟེ = རྣམ་པར་བརྟེ་བ།

རྣམ་བརྟེ་བ = རྣམ་པར་བརྟེ་བ།

རྣམ་བརྩོན = རྣམ་པར་བརྩོན་པ།

རྣམ་བརྩོན་པ = རྣམ་པར་བརྩོན་པ།

རྣམ་འཚེ = རྣམ་པར་འཚེ་བ།

རྣམ་འཚེ་བ = རྣམ་པར་འཚེ་བ།

རྣམ་མཛེས = རྣམ་པར་མཛེས་པ།

རྣམ་མཛེས་པ = རྣམ་པར་མཛེས་པ།

རྣམ་མཛེས་མ *वि.* विराजिता – ལུས་ནི་ཆོས་གོས་ཀྱི། །རྟགས་དང་ལྷན་སྐྱེས་རྣམ་མཛེས་མ། །ཆོས་གོས་བུ་མོ་ཞེས་བྱ་བ།...གཞོན་ནུ་མ...མཐོང་།། तनुचीवरचिह्नेन सहजेन विराजिताम्। कन्यां चीवरकन्याख्यां...ददर्श अ.क.357ख/48.8.

རྣམ་འཛིན = རྣམ་པར་འཛིན་པ།

རྣམ་འཛིན་པ = རྣམ་པར་འཛིན་པ།

རྣམ་ཞི = རྣམ་པར་ཞི་བ།

རྣམ་ཞི་བ = རྣམ་པར་ཞི་བ།

རྣམ་ཞིག = རྣམ་པར་ཞིག་པ།

རྣམ་ཞིག་པ = རྣམ་པར་ཞིག་པ།

རྣམ་ཞུགས = རྣམ་པར་ཞུགས་པ།

རྣམ་ཞེན = རྣམ་པར་ཞེན་པ།

རྣམ་ཞེན་པ = རྣམ་པར་ཞེན་པ།

རྣམ་གཞག = རྣམ་པར་གཞག། ०པ།

རྣམ་གཞག་པ = རྣམ་པར་གཞག། ०པ།

རྣམ་གཞན = རྣམ་པ་གཞན།

རྣམ་གཞིག་པ = རྣམ་པར་གཞིག་པ།

རྣམ་གཞོམ = རྣམ་པར་གཞོམ་པ།

རྣམ་གཞོམ་པ = རྣམ་པར་གཞོམ་པ།

རྣམ་བཞག = རྣམ་པར་བཞག་པ།

རྣམ་བཞག་པ = རྣམ་པར་བཞག་པ།

རྣམ་བཞུགས = རྣམ་པར་བཞུགས་པ།

རྣམ་བཞུགས་པ = རྣམ་པར་བཞུགས་པ།

རྣམ་ཟློས = རྣམ་པར་ཟློས་པ།

རྣམ་ཟློས་པ = རྣམ་པར་ཟློས་པ།

རྣམ་ཟློག = རྣམ་པར་ཟློག་པ།

རྣམ་ཟློག་པ = རྣམ་པར་ཟློག་པ།

རྣམ་གཟིགས = རྣམ་པར་གཟིགས།

རྣམ་གཟིགས་པ = རྣམ་པར་གཟིགས།

རྣམ་བཟློག = རྣམ་པར་བཟློག་པ།

རྣམ་བཟློག་པ = རྣམ་པར་བཟློག་པ།

རྣམ་གཡེང = རྣམ་པར་གཡེང་བ།

རྣམ་གཡེང་བ = རྣམ་པར་གཡེང་བ།

རྣམ་གཡེང་མེད *वि.* अविक्षिप्तः – གང་ཞིག་རྒྱལ་བའི་བསྟན་པ་འབའ་ཞིག་གིས། །དབང་བྱས་རྣམ་གཡེང་མེད་ཡིད་ཅན་གྱིས་བཤད།། यत्स्यादविक्षिप्तमनोभिरुक्तं शास्तारमेकं जिनमुद्दिशद्भिः। र.वि.128ख/117.

རྣམ་གཡེངས = རྣམ་པར་གཡེངས་པ།

རྣམ་གཡེངས་པ = རྣམ་པར་གཡེངས་པ།

རྣམ་གཡོ = རྣམ་པར་གཡོ་བ།

རྣམ་གཡོ་བ = རྣམ་པར་གཡོ་བ།

རྣམ་གཡོས = རྣམ་པར་གཡོས་པ།

རྣམ་རིག = རྣམ་པར་རིག་པ།

རྣམ་རིག་ཅན *वि.* विवेकी – འཁོར་བ་ཀུན་རྨོངས་རབ་རིབ་ཀྱི། །ཡོང་བར་བརྩེ་བ་དང་ལྡན་པས། །སེམས་པ་སྣང་བའི་རྣམ་རིག་ཅན། །ས་སྐྱོང་ཁྱོད་ནི་མཛེས་པར་གྱུར།། संमोहपटलान्धेषु संसारेषु दयालुता । शोभते तव भूपाल सत्त्वलोकविवेकिनः ॥ अ.क.28क/3.106.

རྣམ་རིག་ལྡན་པ *वि.* विवेकभाक् – རྣམ་རིག་ལྡན་པས་རབ་ཞིར་ཞུགས་པའི་ཡིད། །གསར་བའི་དཔལ་འབྱོར་གྱིས་ཀྱང་ཁེགས་པ་མིན།། विवेकभाजां प्रशमप्रवृत्तं नवापि लक्ष्मीर्न मनो रुणद्धि ॥ अ.क.199क/22.64.

རྣམ་རིག་པ = རྣམ་པར་རིག་པ།

རྣམ་རིག་མིན = རྣམ་པར་རིག་པ་མ་ཡིན་པ།

རྣམ་རིག་ཙམ་ཉིད = རྣམ་པར་རིག་པ་ཙམ་ཉིད།

རྣམ་རིག་སློང *वि.* विज्ञप्त्युत्थापकः – ལུས་མིག་དང་། །རྣ་བའི་རྣམ་ཤེས་རྣམ་རིག་སློང་། །གང་ཡིན कायाक्षिश्रोत्रविज्ञानं विज्ञप्त्युत्थापकं च यत् । अभि.को. 24क/1151.

རྣམ་རོལ = རྣམ་པར་རོལ་པ།

རྣམ་རོལ་པ = རྣམ་པར་རོལ་པ།

རྣམ་ལོག = རྣམ་པར་ལོག་པ།

རྣམ་ལོག་པ = རྣམ་པར་ལོག་པ།

རྣམ་ཤེས = རྣམ་པར་ཤེས་པ།

རྣམ་ཤེས་ཀྱི་ཕུང་པོ = རྣམ་པར་ཤེས་པའི་ཕུང་པོ།

རྣམ་ཤེས་ཁམས = རྣམ་པར་ཤེས་པའི་ཁམས།

རྣམ་ཤེས་འགྱུར་བ *पा.* विज्ञानपरिणामः – གཟུང་བའི་མཚན་ཉིད་དང་ལྡན་པའི། །འདིར་ནི་ཅུང་ཟད་ཡོད་མིན་ཏེ། །དེ་ཕྱིར་འདི་དག་ཐམས་ཅད་ནི། །རྣམ་ཤེས་འགྱུར་བར་ཡང་དག་གནས།། ग्राह्यलक्षणसंयुक्तं न किञ्चिदिह विद्यते । विज्ञानपरिणामोऽयं तस्मात् सर्वः समीक्ष्यते ॥ त.स.13ख/156.

རྣམ་ཤེས་ཉིད विज्ञानत्वम् – རྣམ་ཤེས་ཉིད་དང་གསལ་བ་ཉིད། །དེ་ཡང་ཕྱི་རོལ་ལ་བརྟེན་མིན།། विज्ञानत्वं प्रकाशत्वं तच्च ग्रा[? बा]ह्ये निरास्पदम् । त.स.76क/710.

རྣམ་ཤེས་མཐའ་ཡས = རྣམ་པར་ཤེས་པ་མཐའ་ཡས།

རྣམ་ཤེས་མཐའ་ཡས་ཀྱི་སྐྱེ་མཆེད = རྣམ་ཤེས་མཐའ་ཡས་སྐྱེ་མཆེད།

རྣམ་ཤེས་མཐའ་ཡས་སྐྱེ་མཆེད *पा.* विज्ञानानन्त्यायतनम्, आरूप्यधातुभेदः – གཟུགས་མེད་པའི་ཁམས་སྐྱེ་བའི་བྱེ་བྲག་གིས་ནི་རྣམ་པ་བཞི་སྟེ། འདི་ལྟ་སྟེ། ནམ་མཁའ་མཐའ་ཡས་སྐྱེ་མཆེད་དང་རྣམ་ཤེས་མཐའ་ཡས་སྐྱེ་མཆེད་དང་...འདུ་ཤེས་མེད་འདུ་ཤེས་མེད་མིན་གྱི་སྐྱེ་མཆེད་དོ།། उपपत्तिभेदेन चतुर्विध आरूप्यधातुः । यदुत–आकाशानन्त्यायतनम्, विज्ञानानन्त्यायतनम्...नैवसंज्ञानासंज्ञायतनमिति अभि.भा.109क/383; བསམ་གཏན་བཞི་པ་ལས་དབེན་པ་ལས་སྐྱེས་པ་ནི་ནམ་མཁའ་མཐའ་ཡས་སྐྱེ་མཆེད་ཡིན་ནོ།། དེ་ལས་དབེན་པ་ལས་སྐྱེས་པ་ནི་རྣམ་ཤེས་མཐའ་ཡས་སྐྱེ་མཆེད་ཡིན་ནོ།། चतुर्थध्यानविवेकजं ह्याकाशानन्त्यायतनम्, तद्विवेकजं विज्ञानानन्त्यायतनम् अभि.भा.66ख/1130.

རྣམ་ཤེས་མཐའ་ཡས་སྐྱེ་མཆེད་དུ་ཉེ་བར་འགྲོ་བ विज्ञानानन्त्यायतनोपगाः 1. देवसमुदायविशेषः – གཞན་ཡང་རྣམ་པ་ཐམས་ཅད་དུ་ནམ་མཁའ་མཐའ་ཡས་སྐྱེ་མཆེད་ལས་ཡང་དག་པར་འདས་ཏེ་རྣམ་པར་ཤེས་པ་མཐའ་ཡས་སོ་སྙམ་ནས་རྣམ་ཤེས་མཐའ་ཡས་སྐྱེ་མཆེད་རྫོགས་པར་བྱས་ཏེ་གནས་པ་འདི་ནི་རྣམ་པར་ཐར་པ་ལྔ

པ་སྟེ། འདི་ལྟ་སྟེ་རྣམ་ཤེས་མཐའ་ཡས་སྐྱེ་མཆེད་དུ་ཉེ་བར་འགྲོ་བའི་ལྷ་རྣམས་ལྟ་བུའོ།། पुनरपरं सर्वश आकाशानन्त्यायतनं समतिक्रम्य 'अनन्तं विज्ञानम्, अनन्तं विज्ञानम्' इति विज्ञानानन्त्यायतनमुपसम्पद्य विहरति, तंद्यथा–देवा विज्ञानानन्त्यायतनोपगाः– अयं पञ्चमो विमोक्षः अभि.स्फु.306क/1175 2. अरूपभवविशेषः – སྲིད་པ་སུམ་ཅུ་རྩ་གཅིག...འདུ་ཤེས་མེད་འདུ་ཤེས་མེད་མིན་སྐྱེ་མཆེད་དུ་ཉེ་བར་འགྲོ་བ་དང་ཅི་ཡང་མེད་པའི་སྐྱེ་མཆེད་དུ་ཉེ་བར་འགྲོ་བ་དང་རྣམ་ཤེས་མཐའ་ཡས་སྐྱེ་མཆེད་དུ་ཉེ་བར་འགྲོ་བ་དང་ནམ་མཁའ་མཐའ་ཡས་སྐྱེ་མཆེད་དུ་ཉེ་བར་འགྲོ་བ་ཞེས་བྱ་བ་ནི་གཟུགས་མེད་པ་བཞིའོ།། एकत्रिंशद् भवाः...नैवसंज्ञानासंज्ञायतनोपगाः, आकिञ्चन्यायतनोपगाः, विज्ञानानन्त्यायतनोपगाः, आकाशानन्त्यायतनोपगाः इत्यरूपाश्चत्वारः वि.प्र.168ख/1.15.

རྣམ་ཤེས་དེ་མ་ཐག *पा.* अनन्तरविज्ञानम्, समनन्तरप्रत्ययः – རྣམ་ཤེས་དེ་མ་ཐག་གཅིག་ལས། །རྣམ་ཤེས་དྲུག་པོ་འབྱུང་བ་ནི། །གསལ་བར་ཅིག་ཅར་རིག་འགྱུར་ཏེ།། एकानन्तरविज्ञानात् षड्विज्ञानसमुद्भवः। युगपद् वेद्यते व्यक्तम् त.स.9क/110.

རྣམ་ཤེས་དྲུག་རྟེན་ཅན *वि.* षड्विज्ञानाश्रयः – ཉེ་བའི་ཉོན་མོངས་རང་དབང་ཡང་། །གཞན་ནི་རྣམ་ཤེས་དྲུག་རྟེན་ཅན།། उपक्लेशाः स्वतन्त्राश्च षड्विज्ञानाश्रयाः परे॥ अभि.को.18क/848.

རྣམ་ཤེས་ཕུང་པོ = རྣམ་པར་ཤེས་པའི་ཕུང་པོ།

རྣམ་ཤེས་དབའ་རླབས तरङ्गविज्ञानम् लो.को.1420.

རྣམ་ཤེས་གཞན विज्ञानान्तरम् – དེས་བསྐྱེད་པའི་རྣམ་ཤེས་གཞན་དང་འབྲེལ་ཕྱིར་ཞེས་བྱ་བ་ནི་རིག་བྱེད་ཀྱིས་བསྐྱེད་པའི་ཤེས་པ་གཞན་དང་འབྲེལ་པའི་ཕྱིར་རོ།། तज्जन्यविज्ञानान्तरसङ्गतेरिति वेदजन्यविज्ञानान्तरसम्बन्धात् त.प.229क/928.

རྣམ་ཤེས་ས་བོན = རྣམ་པར་ཤེས་པའི་ས་བོན།

རྣམ་ཤེས་ལྷ = ལྷ दिवोकाः, देवः – ཀྱི་ཧུད་ཤིང་རྟ་སྣ་ཚོགས་ཚལ། །ཀྱི་ཧུད་མཚེའུ་དང་དལ་གྱིས་འབབ། །ཀྱི་ཧུད་སྡུག་པ་རྣམ་ཤེས་ལྷ། །སྨྲེ་སྔགས་འདོན་བཞིན་ས་ལ་ལྷུང॥ हा चैत्ररथ हा वापि हा मन्दाकिनि हा प्रिये। इत्यार्ता विलपन्तोऽपि गां पतन्ति दिवौकसः॥ अभि.स्फु.152ख/876.

རྣམ་བཤད = རྣམ་པར་བཤད་པ།

རྣམ་བཤད་པ = རྣམ་པར་བཤད་པ།

རྣམ་བཤིག = རྣམ་པར་བཤིག་པ།

རྣམ་སངས་རྒྱས = རྣམ་པར་སངས་རྒྱས་པ།

རྣམ་སད • *सं.* = ལྷ विबुधः, देवः ङ.को.13/रा.को.4.410; • *भू.का.कृ.* विबुद्धः – ཤིན་ཏུ་རབ་སད་རྣམ་སད་བདག། །ཐམས་ཅད་ཡེ་ཤེས་ཀུན་རིག་མཆོག།། सुप्रबुद्धो विबुद्धात्मा सर्वज्ञः सर्ववित् परः॥ ना.स.6क/98.

རྣམ་སེམས = རྣམ་པར་སེམས་པ

རྣམ་སེམས་པ = རྣམ་པར་སེམས་པ

རྣམ་སེལ = རྣམ་པར་སེལ་བ།

རྣམ་སེལ་བ = རྣམ་པར་སེལ་བ།

རྣམ་སྲས = རྣམ་ཐོས་སྲས།

རྣམ་གསལ • *सं.* 1. अवधानम् – སྒྲ་རྣམ་པར་གསལ་བ་སྟེ་སྒྲ་དམིགས་པ शब्दावधानं शब्दोपलम्भः त.प.186क/833 2. = མཁས་པ विपश्चित्, विद्वान् – विद्वान् विपश्चिद् दोषज्ञः सन् सुधीः कोविदो बुधः।

अ.को.2.7.5; विशेषेण पश्यन् चेततीति विपश्चित्। चिती संज्ञाने अ.वि.2.7.5 **3.** = ཉི་མ विवस्वान्, सूर्यः – सूरसूर्यार्यमादित्यद्वादशात्मदिवाकराः।...भास्वद्विवस्वत्सप्ताश्वहरिदश्वोष्णरश्मयः। अ.को.1.3.29; विवस्ते प्रभया छादयतीति विवस्वान्। वस आच्छादने। विवः तेजोऽस्यास्तीति वा विवस्वान् अ.वि.1.3.29 **4.** = གློག सौदामिनी, विद्युत् – शम्पा ...तडित् सौदामिनी (सौदामनी पा.भे.) विद्युच्चञ्चला चपला अपि॥ अ.को.1.3.9; सुदामाद्रिणा सह वर्तत इति सौदामिनी। सुदाम्ना अद्रिणा दीव्यतीति सौदामिनी।...सुदामवत् दीर्घाकारोऽस्या अस्तीति वा। सौदामनीति वा पाठः अ.वि.1.3.9; • *पा.* विस्पष्टा, वागाकारभेदः– དེ་བཞིན་གཤེགས་པའི་གསུང་ནི་རྣམ་པ་དྲུག་ཅུ་དང་ལྡན་པར་འབྱུང་སྟེ། མཉེན་པ་དང་...རྣམ་པར་གསལ་བ་ནི་སློབ་དཔོན་གྱི་དཔེ་མཐུད་མེད་པར་ཆོས་སྟོན་པའི་ཕྱིར་རོ॥ तथागतस्य षष्ट्याकारोपेता वाग् निश्चरति स्निग्धा च...विस्पष्टा अनाचार्यमुष्टिधर्मविहितत्वात् सू.व्या.183क/78; ཚིག་དེ་ནི་ཀུན་ཤེས་པར་བྱེད་པ་དང་རྣམ་པར་ཤེས་པར་བྱེད་པ་དང་རྣམ་པར་གསལ་བ་དང यासौ वागाज्ञापनी विज्ञापनी विस्पष्टा ल.वि.141क/208; • *वि.* विस्पष्टः – འདི་ནི་བཞིན་ཉིད་པད་མ་མིན། །འདི་དག་བུང་བ་མ་ཡིན་མིག། །ཅེས་པ་རྣམ་གསལ་མཚུངས་པ་ལས། །དེ་ནི་དེ་ཉིད་བརྗོད་པའི་དཔེ॥ न पद्मं मुखमेवेदं न भृङ्गौ चक्षुषी इमे। इति विस्पष्टसादृश्यात्तत्त्वाख्यानोपमैव सा॥ का.आ.323क/2.36; མི་ཡི་སྐད་དུ་ཚིག་སྨྲས་པ། །རྣམ་པར་གསལ་ལ་ཚིག་འབྲུ་འཇམ॥ विसृजन्मानुषीं वाचं विस्पष्टमधुराक्षराम् जा.मा.124क/143; གཟུགས་རྣམ་པར་གསལ་བ बिम्बं विस्पष्टम् वि.प्र.75क/4.141; སེམས་ཀྱིས་དཔྱོད་སོགས་དུས་སུ་ཡང་། །དེ་ནི་རྣམ་པར་གསལ་བར་རྟོགས॥ चिन्तोत्प्रेक्षादिकाले च विस्पष्टं या प्रवेद्यते। त.स.45क/450; विप्रसन्नः–ཆུས་ཡོངས་སུ་གང་བའི་མཚོ་དང་ཞིང་རྙོག་པ་མེད་ལ་རྣམ་པར་གསལ་བ་ལ उदकसरसि स्वच्छेऽनाविले विप्रसन्ने ग.व्यू.389क/97; •*> རྣམ་པར་བསལ་བ།

རྣམ་གསལ་བྱེད = ཉི་མ विभाकरः, सूर्यः – सूरसूर्यार्यमादित्यद्वादशात्मदिवाकराः।...विभाकराः॥ अ.को.1.3.28; विभां करोतीति विभाकरः अ.वि.1.3.28.

རྣམ་གསུམ = རྣམ་པ་གསུམ།

རྣམ་གསུམ་བགྲོད་པ་ལ་གནས་པ *वि.* त्रिविधगतिगतः – རྣམ་གསུམ་བགྲོད་གནས་ཞེས་པ། གཡོན་གྱི་བགྲོད་པ་ལ་གནས་པའི་སྲོག་ནི་སྐུ་རྡོ་རྗེའི་བཟླས་པ་ཞེས་བརྗོད་དོ॥ གཡས་ཀྱི་བགྲོད་པ་ལ་གནས་པའི་སྲོག་ནི་གསུང་གི་བཟླས་པ་ཞེས་བརྗོད་དོ॥ དབུ་མའི་བགྲོད་པ་ལ་གནས་པའི་སྲོག་ནི་ཐུགས་ཀྱི་བཟླས་པ་ཞེས་བརྗོད་དེ त्रिविधगतिगत इति। वामे गतिगतः प्राणः कायवज्रजाप इत्युच्यते। दक्षिणे गतिगतः प्राणो वाग्जाप इत्युच्यते। मध्यमागतिगतः प्राणश्चित्तजाप इत्युच्यते। वि.प्र.64क/4.112.

རྣམ་གསུམ་པ *वि.* त्र्याकारः – དངོས་པོ་ངོ་བོ་རྣམ་གསུམ་པ། །དེ་ཡི་རིག་པ་རྣམ་གཅིག་ཅན॥ त्र्याकारं वस्तुनो रूपमेकाकाराश्च तद्विदः। त.स.3क/46.

རྣམ་བསམས = རྣམ་པར་བསམས་པ།

རྣམ་བསམས་པ = རྣམ་པར་བསམས་པ།

རྣམ་བསལ = རྣམ་པར་བསལ་བ།

རྣམ་བསལ་བ = རྣམ་པར་བསལ་བ།

རྣམ་བསྒྲད = རྣམ་པར་བསྒྲད་པ།

རྣམ་བསྒྲད་པ = རྣམ་པར་བསྒྲད་པ།

རྣམ་བསྣད་མེད *वि.* अपांशुलः – མི་བདག་ཡོན་ཏན་ལྡན་ན་སྐྱེས་བུ་རྣམས་ཀྱིས་[? ཀྱང་]ཐམས་ཅད་རྣམ་བསྣད་མེད་པར་འགྱུར། गुणवति नृपे सर्वं भवत्यपांशुलं प्रजाकुलम् अ.क.92क/9.69.

རྣམ་ལྷུང = རྣམ་པར་ལྷུང་བ།

རྣམས बहुवचनद्योतकशब्दः – ཉེ་དུ་རྣམས ज्ञातयः अ.श.174ख/161; མི་རྣམས་ཀྱི་ནི་སྐྱབས་དག་དང་། །གནས་དང शरणं लयनं नृणाम्। अभि.अ.7ख/4.27; འདབ་ཆགས་རྣམས་ནི་གནས་སུ་སོང་། यान्ति वासाय पक्षिणः। का.आ.330क/2.241; • द्र.– གྲོང་པ་རྣམས་ལ་བསོད་དགའ་ཡི། །ནད་ནི་རབ་ཏུ་རྒྱས་པར་གྱུར། दुःसहः सर्वपौराणामभूद्व्याधिसमुद्भवः॥ अ.क.268क/99.5; དགོན་པའི་གནས་དེ་ན་རྩ་བ་དང་འབྲས་བུ་དཀའ་ཐུབ་ཅན་རྣམས་ཀྱིས་བཟར་རུང་བ तस्मिन्नरण्यायतने तापसजनोपभोगयोग्यं मूलफलम् जा.मा.32क/37; མི་རྣམས་སྐྱོང་བ नरलोकपालः जा.मा.72ख/84; རྒྱ་མཚོ་ཆུ་སྲིན་རྣམས་ཀྱི་གནས། सागरो मकरालयः अ.श.10ख/9.

རྣམས་དག = རྣམས बहुवचनद्योतकशब्दसमूहः – ནགས་རྣམས་དག་དུ་འཇུག गाहन्ते गहनानि अ.क.4क/50.32; རྣོ་བའི་མཚོན་རྣམས་དག་གིས शितशस्त्रैः अ.क.193क/82.11.

རྣར = རྣ་བར།

རྣར་སྙན་པ *पा.* कर्णसुखा, वागाकारभेदः – དེ་བཞིན་གཤེགས་པའི་གསུང་ནི་རྣམ་པ་དྲུག་ཅུ་དང་ལྡན་པར་འབྱུང་སྟེ། མཉེན་པ་དང...རྣར་སྙན་པ་ནི་རྣམ་པར་གཡེང་བའི་གཉེན་པོ་ཡིན་པའི་ཕྱིར་རོ། तथागतस्य षष्ट्याकारोपेता वाग् निश्चरति – *स्निग्धा* च... *कर्णसुखा* विक्षेपप्रतिपक्षत्वात् सू.व्या.182ख/78; म.व्यु.460 (11क); द्र. རྣར་བདེ་བ།

རྣར་བདེ་བ *पा.* कर्णसुखा, वागाकारभेदः – ཚིག་དེ་ནི་ཀུན་ཤེས་པར་བྱེད་པ་དང...རྣར་བདེ་བ་དང यासौ वागाज्ञापनी...कर्णसुखा ल.वि.141क/208; द्र. རྣར་སྙན་པ།

རྣར་མི་འགྲོ *क्रि.* श्रवणं न याति – ལྷར་ནི་རྔ་ཡི་སྒྲ་ཆེན་པོ། །ས་རར་གནས་རྣམས་ཀྱི་རྣར་མི་འགྲོ། शब्दा महान्तो दिवि दुन्दुभीनां क्षितिस्थितेषु श्रवणं न यान्ति। र.वि.124क/103.

རྣར་མི་སྙན་པ *वि.* अकर्णसुखः – ཞེ་གཅོད་པའི་ཚིག་དང་བྲལ་བ་ཡིན་ཏེ།...རྣར་མི་སྙན་པ་དང...ཚིག་གི་རྣམ་པ་དེ་ལྟ་བུ་སྤངས་ཏེ परुषवचनात्प्रतिविरतः खलु पुनर्भवति...अकर्णसुखा...तथारूपां वाचं प्रहाय द.भू.188ख/15; कर्णकटुकः – ཕན་པ་འཚོལ་རྣམས་རྣ་བར་ནི། །མི་སྙན་བརྗོད་པ་དགག་པ་མེད། न कर्णकटुकं वक्तुं निषेधोऽस्ति हितैषिणाम्॥ अ.क.102क/64.171.

རྣར་མི་འོང = རྣར་མི་འོང་བ།

རྣར་མི་འོང་བ *वि.* असंबद्धः – དེ་ལྟར་ན་རྣར་མི་འོང་བ་སྨྲ་བར་འགྱུར་གྱི एवं ह्यसंबद्धप्रलापी स्यात् प्र.वृ.287क/30.

རྣར་འོང་བ •*सं.* श्रुतिः – ལ་ལ་ནི་ཁྱིམ་ན་གནས་པའི་དཀའ་ཐུབ་ཉིད་བསོད་ནམས་ཆེ་མོད་ཅེས་ཟེར་ཞིང་རྣར་འོང་བ་དང་རིགས་པའི་ཚིག་གིས་རྟོགས་པ་སྐྱེད गृहाश्रमैव पुण्यतम इत्येवमन्ये श्रुतियुक्तिसंग्रथितं ग्राहयितुमिहांचक्रिरे जा.मा.107ख/125; • *पा.* कर्णसुखा, वागाकारभेदः – (ཚིག) གང་འདི་འཇམ་པ་དང...རྣར་འོང་བ་དང येयं वाक् स्निग्धा... कर्णसुखा द.भू.188ख

/15; द्र. རྣར་བདེ་བ།

རྣར་བཤུབ་ཅིང་སྨྲ་བ उपकर्णकेन सन्देशदानम् – ཁྱིམ་པའི་རྣར་བཤུབ་ཅིང་སྨྲ་བ་ལའོ།། गृहिण उपकर्णकेन सन्देशदाने वि.सू.52ख/67.

རྣལ = རྣལ་བ།

རྣལ་དུ་བགོད་པ *क्रि.* अध्यावसति म.व्यु.6543(93ख); मि.को.43ख।

རྣལ་དུ་དགོད = རྣལ་དུ་དགོད་པ།

རྣལ་དུ་དགོད་པ अध्यावसनम् – མ་རྒྱལ་བ་རྒྱལ་བར་བྱེད་པ་དང་རྒྱལ་བ་རྣལ་དུ་དགོད་པའི་ཕྱིར अजितजयजिताध्या[ा]वसनाद् अभि.भा.30क/982; अभि.स्फु.209क/983; द्र. རྣལ་དུ་འགོད་པ།

རྣལ་དུ་འགོད = རྣལ་དུ་འགོད་པ།

རྣལ་དུ་འགོད་པ •*क्रि.* अध्यावसति – ཇི་ལྟར་དེ་གྲོང་དང་གྲོང་རྡལ་ལ་སོགས་པ་མ་རྒྱལ་བ་ལས་ནི་རྒྱལ་བར་བྱེད་ལ་རྒྱལ་བ་དག་ནི་རྣལ་དུ་དགོད་པ...རྣམ་པར་གྲོལ་བའི་ལམ་གྱིས་རྒྱལ་བ་རྣམས་ནི...རྣལ་དུ་འགོད་དོ།། यथा तदजितानि ग्रामनिगमादीनि जयति, जितानि चाध्यावसति... जितांश्चाध्यावसति विमुक्तिमार्गेण अभि.स्फु.209क/983; • *वि.* समाधाता – ཁྱོད་ནི་རྟན་འཛིན་བསྐྱེད་ལ་སྐྱུལ།...།ཕྱི་སྒྲུ་ཅན་རྣམས་རྣལ་དུ་འགོད།། स्थायिनां त्वं परिक्षेप्ता...समाधाता विजिह्यानाम् श.बु.114क/102; द्र. རྣལ་དུ་དགོད་པ།

རྣལ་དུ་འདུག་པ •*वि.* स्वस्थः – རྣམ་པར་གཡེངས་ལ་སེམས་མ་གཡེངས་པ་ནི་སེམས་རྣལ་དུ་འདུག་པའི་ཉོན་མོངས་པ་ཅན་ནོ།། चित्तं विक्षिप्तं न क्षिप्तं स्वस्थचित्तस्य क्लिष्टम् अभि.भा.196ख/667; •*सं.* प्रशठत्वम् – རྣལ་དུ་འདུག་པའི་དམིགས་པ प्रशठत्वालम्बनम् म.भा.26क/5.29; प्रशठता म.व्यु.2101(42क); मि.को.124क; द्र. རྣལ་དུ་བབ་པ།

རྣལ་དུ་འདུག་པའི་དམིགས་པ *पा.* प्रशठत्वालम्बनम्, आलम्बनभेदः – དམིགས་པ་ནི་རྣམ་པ་བཅུ་གཉིས་པོ་འདི་དག་སྟེ། འདི་ལྟར། ཆོས་བརྟགས་[? བཏགས་]པ་རྣམ་པར་གཞག་པའི་དམིགས་པ... རྣལ་དུ་འདུག་པའི་དམིགས་པ་དང...ཕུལ་དུ་བྱུང་བའི་དམིགས་པའོ།། इत्येतद् द्वादशविधमालम्बनम्, यदुत – धर्मप्रज्ञप्तिव्यवस्थानालम्बनम्...प्रशठत्वालम्बनम्...प्रकर्षालम्बनञ्च म.भा.26क/5.29.

རྣལ་དུ་གནས = རྣལ་དུ་གནས་པ།

རྣལ་དུ་གནས་གྱུར་ཅིག *क्रि.* अस्तु स्वस्थम् – གལ་ཏེ་ངས་བརྗོད་དམ་ཚིག་འདི་བདེན་ན། །དེ་ཡིས་ལུས་འདི་རྣལ་དུ་གནས་གྱུར་ཅིག། यद्येष सत्यः समयो मयोक्तस्तदस्तु मे स्वस्थमिदं शरीरम्॥ अ.क.35ख/3.182; स्वच्छमस्तु – བདེན་པ་དེ་ཡིས་གཉིས་པ་ཡི། །མིག་ཀྱང་རྣལ་དུ་གནས་གྱུར་ཅིག། स्वच्छं तेनास्तु सत्येन द्वितीयमपि लोचनम्। अ.क.346क/45.48.

རྣལ་དུ་གནས་པ •*वि.* स्वस्थः – འདི་བརྗོད་ལྷ་ཡི་སྨན་རྣམས་ཀྱིས། །དེ་ལུས་རྣལ་དུ་གནས་པར་བྱས།། उक्त्वेति दिव्यौषधिभिस्तं कृत्वा स्वस्थविग्रहम्। अ.क.26क/3.78; རྣལ་གནས་ཉེར་བསྟན་ཁྱོད་ཀྱིས་བྱེད་པ་འདི།། स्वस्थोपदेशः क्रियते त्वयायम् अ.क.54ख/59.44; གང་བློ་རྣལ་གནས་བསིལ་བ་དེ་དག་ལ། །བདེ་སླད་བརྟན་པ་ཆོས་འདི་ཚད་མ་སྟེ།། ये शीतलाः स्वस्थधियः सुखाय तेषां प्रमाणं स्थिर एष धर्मः। अ.क.54ख/59.47; • *सं.* = རྣལ་གནས་ཉིད स्वास्थ्यम् – ཅེས་པ་དག་པའི་བློ་ལྡན་དེས། །མཆོག་ཏུ་བདེན་པ་བརྗོད་པ་ལས། །འཕྲལ་ལ་ཡན་ལག་དེ་དག་ཉིད། །འགྱུར་ནས་རྣལ

དུ་གནས་པ་ཐོབ॥ इति शुद्धधियस्तस्य तीव्रसत्योपयाचनात्। शिलष्टान्यङ्गानि तान्येव सहसा स्वास्थ्यमाययुः ॥ अ.क.254क/29.78; སྨན་ཆེན་དོན་ཡོད་ཅེས་པ་ཡིས། །མིག་གཉིས་གང་དུ་རྒྱལ་གནས་སྟེར॥ यत्राक्ष्णोर्दिशति स्वास्थ्यममोघाख्या महौषधिः ॥ अ.क.59क/6.69.

རྒྱལ་དུ་གནས་པའི་གནས་སྐབས समावस्था – དོན་གང་ལ་དགག་དབྱེ་ལན་གསུམ་བརླས་པ་ཡིན་ཞེ་ན། རྒྱལ་དུ་གནས་པའི་གནས་སྐབས་དང་॥ कस्मिन्नर्थे त्रिवाचिका प्रवारणा ? समावस्थायाः वि.व.232ख/2.135.

རྒྱལ་དུ་གནས་པར་སོག क्रि. प्रयातु विधेयताम् – འགྲོ་བའི་སེམས་ནི་རྒྱལ་དུ་གནས་པར་སོག॥ प्रयातु चित्तं जगतां विधेयताम् श.बु.116क/153.

རྒྱལ་དུ་བབ་པ प्रशठता म.व्यु.2101 (42क); मि.को. 124क; द्र. རྒྱལ་དུ་འདུག་པ།

རྒྱལ་དུ་མི་གནས • वि. अस्वस्थः – གསོ་བ་དཀའ་བའི་ནད་ཀྱིས་ནི། །ལུས་ནི་རྒྱལ་དུ་མི་གནས་གྱུར॥ व्याधिना दुश्चिकित्स्येन बभूवास्वस्थविग्रहः ॥ अ.क.61ख/6.99; • सं. = རྒྱལ་དུ་མི་གནས་ཉིད अस्वस्थता – དེ་ཕྱིར་སྡུག་བསྔལ་གནས་པ་དང་། །ཡིད་ཀྱང་རྒྱལ་དུ་མི་གནས་འགྱུར॥ दुःखं विहरति तस्मान्मनोऽप्यस्वस्थतामेति ॥ सू.अ.221क/129.

རྒྱལ་དུ་གཞག་སྟེ = མ་ཆགས་པར་བྱས་ཏེ अध्युपेक्ष्य, अनासज्य – ལུས་དང་སེམས་རྒྱལ་དུ་གཞག་སྟེ་ཞེས་བྱ་བ་ནི་མ་ཆགས་པར་བྱས་ཏེ་ཞེས་བྱ་བའི་ཐ་ཚིག་གོ॥ कायं चित्तं वाध्युपेक्ष्येति अनासज्येत्यर्थः अभि.स्फु.163ख/899.

རྒྱལ་གནས = རྒྱལ་དུ་གནས་པ།

རྒྱལ་བ भू.का.कृ. परिमर्दितः – སྡོང་དུམ་དང་ཚེར་མ་ལ་སོགས་པ་རྒྱལ་བའི་ཕྱིར་གང་གིས་ན་བདེ་བླག་ཏུ་འགྲོ་བ परिमर्दितस्थाणुकण्टकादित्वात् येन सुखं गच्छति अभि.स्फु.332ख/1233.

རྒྱལ་འབྱོར • सं. 1. योगः i. विद्यास्थानभेदः – རིག་པའི་གནས་བཅོ་བརྒྱད (अष्टादश विद्यास्थानानि) गन्धर्वः རོལ་མོ།...योगः རྒྱལ་འབྱོར...इतिहासकम् སྔོན་བྱུང་བ म.व्यु.4964 (75ख) ii. दार्शनिकप्रस्थानविशेषः – ཚུལ་ཁྲིམས་དང་བརྟུལ་ཞུགས་ཙམ་དང་གྲངས་ཅན་དང་རྒྱལ་འབྱོར་གྱི་ཤེས་པ་ལ་སོགས་པ་ཐར་པའི་ལམ་མ་ཡིན་ན शीलव्रतमात्रकं सांख्ययोगज्ञानादयश्च न मार्गो मोक्षस्य अभि.भा.230क/773 2. = རྒྱལ་འབྱོར་པ योगी – རྒྱལ་འབྱོར་གྱིས་ནི་ནན་ཏན་དུ། །དུས་མཚམས་གསུམ་དུ་སྡོམ་གསུམ་བྱས॥ <?> त्रिशरणं त्रिसंध्यासु योगी कुर्यात्प्रयत्नतः ॥ ल.अ.188ख/160; རྒྱལ་འབྱོར་གྱི་མངོན་སུམ योगिप्रत्यक्षम् त.प.216क/902; • पा. 1. योगः – རྒྱལ་འབྱོར་ནི་ཏིང་ངེ་འཛིན་ནོ॥ योगः समाधिः न्या.टी.44क/70; འདུག་པ་ནི་རྒྱལ་འབྱོར་ཏེ निषद्या उच्यते योगः वि.व.132क/2.109; རྒྱལ་འབྱོར་འདོད་པ་ཡིད་ལ་བྱེད་པ་ནི། ཞི་གནས་དང་ལྷག་མཐོང་གི་རྒྱལ་འབྱོར་སྒོམ་པར་འདོད་པའི་ཕྱིར་རོ॥ योगाभिलाषमनस्कारः शमथविपश्यनायोगभावनाभिलाषात् सू.व्या.178क/72; རྫོགས་པའི་རིམ་པའི་རྒྱལ་འབྱོར་གྱིས॥ उत्पन्नक्रमयोगेन गु.सि.2क/6; ཐབས་ཀྱི་ལུས་ཀྱིས་རྒྱལ་འབྱོར་མིན། །ཤེས་རབ་གཅིག་པུས་འགྱུར་མ་ཡིན། །ཐབས་དང་ཤེས་རབ་སྙོམས་འཇུག་པ། །དེ་བཞིན་གཤེགས་པས་རྒྱལ་འབྱོར་གསུངས॥ योगो नोपायकायेन नैकया प्रज्ञया भवेत्। प्रज्ञोपायसमापत्तिर्योग उक्तस्तथागतैः ॥ वि.प्र.187ख/5.9; ལྷའི་རྒྱལ

འབྱོར་ देवतायोगः वि.प्र.159क/3.120; བྱང་ཆུབ་ཀྱི་སེམས་ཀྱི་ཐིག་ལེ་རྫོགས་པ་ནི་ཐིག་ལེའི་རྣལ་འབྱོར་རོ། बोधिचित्तबिन्दुनिष्पत्तिर्बिन्दुयोगः वि.प्र.62क/4.110; ཁུ་བ་འཕོ་བ་ལས་བདེ་བ་ལ་དམིགས་པ་ནི་ཕྲ་མོའི་རྣལ་འབྱོར་ཏེ शुक्रच्यवनात् सुखोपलब्धिः सूक्ष्मयोगः वि.प्र.62क/4.110 **2.** योगकरः, समाधिविशेषः – སྤྱན་རས་གཟིགས་ཀྱི་དབང་པོ་ནི་ཏིང་ངེ་འཛིན་བརྒྱ་ཕྲག་དུ་མ་དང་ལྡན་ཏེ། འདི་ལྟ་སྟེ། རབ་ཏུ་འཇོམས་ཞེས་བྱ་བའི་ཏིང་ངེ་འཛིན་དང...རྣལ་འབྱོར་ཅེས་བྱ་བའི་ཏིང་ངེ་འཛིན་དང अवलोकितेश्वरः अनेकैः समाधिशतैः समन्वागतः । तद्यथा–प्रभञ्जनो नाम समाधिः... योगकरो नाम समाधिः का.व्यू.244क/305; द्र. རྣལ་འབྱོར་བྱེད།

རྣལ་འབྱོར་ཀུན་རྫོབ योगिसंवृतिः, योगिनां व्यवहारः – རྣལ་འབྱོར་ཀུན་རྫོབ་ཞེས་མེད་དེ། །འཇིག་རྟེན་ལ་ལྟོས་དེ་ཉིད་མཐོང་། न दोषो योगिसंवृत्या लोकात्ते तत्त्वदर्शिनः । बो.अ.31क/9.8.

རྣལ་འབྱོར་མཁྱེན་པ = རྣལ་འབྱོར་པ योगवित्, योगी – རྣལ་འབྱོར་མཁྱེན་པས་རྟག་ཏུ་བཟའ། भक्षयेद् योगवित् सदा अ.सि.61ख/163.

རྣལ་འབྱོར་གོམས་པ योगाभ्यासः – རྣལ་འབྱོར་གོམས་པས་རྣལ་འབྱོར་པ། །ཅི་ཞིག་བཟློག་ཅིང་ཅི་ཞིག་སྒྲུབ། किं वा निवर्तयेद् योगी योगाभ्यासेन साधयेत्। त.स. 14क/158.

རྣལ་འབྱོར་གྱི་རྒྱུ योगोपनिषद् – ཤེས་པ་དང་མཚུངས་པར་ལྡན་པ་ནི་རྣལ་འབྱོར་གྱི་རྒྱུ་དང་རྣལ་འབྱོར་མི་ཤེས་པ་དང་བཅས་པ་གང་ཡིན་པ་སྟེ <?> ज्ञानसंप्रयुक्तो यो योगोपनिषद्योगसहगतः सू.व्या.166ख/58.

རྣལ་འབྱོར་གྱི་རྒྱུད *पा.* योगतन्त्रम्, वज्रयानस्य प्रस्थानभेदः – བྱ་བའི་རྣལ་འབྱོར་དང་རྣལ་འབྱོར་གྱི་རྒྱུད་རྣམས་རྣམ་པ་གསུམ་དང་དྲུག་གི་དབྱེ་བས་གསུངས་ཏེ क्रियायोगयोगतन्त्राणि त्रिषट्प्रकारभेदेनोच्यन्ते वि.प्र.241ख/2.52; དེས་ན་དོན་དམ་པའི་བདེན་པས་ཐབས་དང་ཤེས་རབ་ཀྱི་བདག་ཉིད་ཅན་རྣལ་འབྱོར་གྱི་རྒྱུད་རིགས་མེད་པ་དུས་ཀྱི་འཁོར་ལོའོ། तस्मात् प्रज्ञोपायात्मकं तन्त्रं योगतन्त्रं निरन्वयं कालचक्रं परमार्थसत्यतः वि.प्र.120ख/1, पृ.18; རྣལ་འབྱོར་གྱི་རྒྱུད་རྣམས་ལ་ཕྱག་རྒྱ་ཆེན་པོའི་དངོས་གྲུབ་ཉིད་བྱང་ཆུབ་མ་ཡིན་ནམ ननु योगतन्त्रेषु महामुद्रासिद्धिरेव बोधिः ख.टी.155ख/235; རྣལ་འབྱོར་གྱི་རྒྱུད་མ་ལུས་པ་རྣམས་ལས་དགོངས་པ་འདི་ཉིད་ཡིན་ནོ། अशेषयोगतन्त्रेष्वेवमभिप्राययति ज्ञा.सि.52क/135.

རྣལ་འབྱོར་གྱི་རྒྱུད་དཔལ་གདན་བཞི་པའི་སྒྲུབ་ཐབས *ना.* श्रीचतुःपीठयोगतन्त्रसाधनम्, ग्रन्थः क.त. 1610.

རྣལ་འབྱོར་གྱི་མངོན་སུམ = རྣལ་འབྱོར་པའི་མངོན་སུམ།

རྣལ་འབྱོར་གྱི་རྗེས་སུ་འབྲང་བ *ना.* योगानुसारिणी, ग्रन्थः क.त.1565.

རྣལ་འབྱོར་གྱི་སྟོབས योगबलम् – ཅི་སྟེ་རྣལ་འབྱོར་གྱི་སྟོབས་ཀྱིས་གཙུག་ཏོར་ཕུག་ནས་སྲོག་འགྲོ་ན अथ योगबलेनोष्णीषं भेदयित्वा प्राणो व्रजन् वि.प्र.68क/4.121.

རྣལ་འབྱོར་གྱི་གནས *पा.* योगपीठम् – དེ་ལ་ཞེས་བྱ་བ་ནི་རྣལ་འབྱོར་གྱི་གནས་སོ། तस्मिन् योगपीठे ख.टी.157क/237; དེ་ལྟ་མོད་ཀྱི་རྣལ་འབྱོར་གནས་ཀྱི་དོན་ཅི་ཡིན་ཞེ་ན योगपीठस्य तर्हि कोऽर्थः ख.टी.167क/250.

རྣལ་འབྱོར་གྱི་སྤྱོད་པ *पा.* योगचर्या – རྣལ་འབྱོར་པ་རྣམས་ཀྱི་རྣལ་འབྱོར་གྱི་སྤྱོད་པ་རྣམ་པ་གཉིས་ཏེ། གཅིག་ནི་ཕྱིའི་དང་གཉིས་པ་ནི་ནང་གིའོ། དེ་ལ་ཕྱིའི་གང་ཡིན་པ་དེ་འཇིག་རྟེན་པའི་འབྲས་བུའི་རྒྱུ་དང་ནང་གི་གང་ཡིན་པ་དེ་འཇིག་རྟེན་ལས་འདས་པའི་འབྲས་བུའི་རྒྱུར་རྣལ་འབྱོར་པས་བྱའོ། योगिनां योगचर्या द्विधा–एका बाह्या, द्वितीयाऽध्यात्मिकी। तत्र या बाह्या सा लौकिकफलहेतोः। या चाध्यात्मिकी सा लोकोत्तरफलहेतोर्योगिना कर्तव्या वि.प्र.69क/4.124.

རྣལ་འབྱོར་གྱི་དབང་པོ योगेन्द्रः – རྣལ་འབྱོར་དབང་པོའི་ཐིག་ལེ योगेन्द्रतिलकः ब.अ.803; योगात्मा – དེ་ལྟར་བསམས་ནས་རྣལ་འབྱོར་གྱི། །དབང་པོས་གང་ལའང་བརྟགས་མི་བྱ། इति संचिन्त्य योगात्मा न कञ्चिदवकल्पयेत्॥ ज्ञा.सि.37क/94; योगी – དེ་ཉིད་རྣལ་འབྱོར་དབང་པོས་བསྒོམ། भावयेत् तत्त्वयोगी ज्ञा.सि.39ख/100; द्र. རྣལ་འབྱོར་དབང་ཕྱུག། རྣལ་འབྱོར་པ།

རྣལ་འབྱོར་གྱི་དབང་ཕྱུག = རྣལ་འབྱོར་དབང་ཕྱུག།

རྣལ་འབྱོར་གྱི་མཚན་ཉིད་བདེན་པ *ना.* योगलक्षणसत्यम्, ग्रन्थः क.त.2458, 4536.

རྣལ་འབྱོར་གྱི་ཡན་ལག = རྣལ་འབྱོར་ཡན་ལག།

རྣལ་འབྱོར་གྱི་ལམ *पा.* योगमार्ग – རྣལ་འབྱོར་གྱི་ལམ་གྱིས་འཕགས་པའི་རིགས་ཀྱི་ལམ་བཅུ...རབ་ཏུ་ཐོབ་པར་འགྱུར་རོ། योगमार्गैर्दशार्यगोत्रमार्गं प्रतिलभते ल.अ.143ख/90; རྣལ་འབྱོར་ཅན་རྣལ་འབྱོར་བསྒོམ་པ་རྣམས་ཀྱི་རྣལ་འབྱོར་གྱི་ལམ་ལ་ཡང་སོ་སོ་རང་གིས་རིག་པའི་མཚན་ཉིད་ཀྱི་ཁྱད་པར་སྣང་ན योगिनामपि योगमभ्यस्यतां योगमार्गे प्रत्यात्मगतिलक्षणविशेषो दृष्टः ल.अ.62ख/8.

རྣལ་འབྱོར་གྱི་ལུགས *पा.* योगः, कलाविशेषः – མཚོངས་པ་དང...རྣལ་འབྱོར་གྱི་ལུགས་དང...སྤོས་སྦྱར་བ་ལ་སོགས་པའི་སྒྱུ་རྩལ ...ཐམས་ཅད་ལ लङ्घिते...योग...गन्धयुक्तौ – इत्येवमाद्यासु सर्वकर्मकलासु ल.वि.80ख/108.

རྣལ་འབྱོར་གྱི་ས *पा.* योगभूमिः – མཚོན་པ་ནི་རྣལ་འབྱོར་གྱི་ས་རྣམ་པ་ལྔ་སྟེ། གཞི་དང...རྟེན་ནོ། लक्षणा पुनः पञ्चविधा योगभूमिः। आधारः...आश्रयश्च सू.व्या.172ख/65.

རྣལ་འབྱོར་གྱི་ས་རྣམ་པ་ལྔ पञ्चविधा योगभूमिः – 1. གཞི आधारः, 2. བསྐྱེད་པ आधानम्, 3. མེ་ལོང་ལྟ་བུ आदर्शः, 4. སྣང་བ आलोकः, 5. རྟེན आश्रयः सू.व्या.172ख/65.

རྣལ་འབྱོར་རྒྱུད = རྣལ་འབྱོར་གྱི་རྒྱུད།

རྣལ་འབྱོར་བསྒོམ་པ་ལ་འཇུག་པ *ना.* भावनायोगावतारः, ग्रन्थः क.त.3918, 4537.

རྣལ་འབྱོར་བསྒོམ་པའི་ལམ *ना.* योगभावनामार्गः, ग्रन्थः क.त.3909; 4538.

རྣལ་འབྱོར་མངོན་པར་རྟོགས་པ *पा.* योगाभिसमयः – བཅོམ་ལྡན་འདས་ཇི་ལྟར་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་སེམས་དཔའ་ཆེན་པོ་རྣམས་རྣལ་འབྱོར་ཆེན་པོའི་རྣལ་འབྱོར་ཅན་དུ་འགྱུར་བའི་རྣལ་འབྱོར་མངོན་པར་རྟོགས་པ་བདག་ལ་བཤད་དུ་གསོལ देशयतु मे भगवन् योगाभिसमयं यथा बोधिसत्त्वा महासत्त्वा महायोगयोगिनो भवन्ति ल.अ.86ख/34.

རྣལ་འབྱོར་མངོན་སུམ = རྣལ་འབྱོར་པའི་མངོན་སུམ།

རྣལ་འབྱོར་ཅན 1. = རྣལ་འབྱོར་པ योगी – སྲིད་པ་སྒྱུ་མ་མི་འདྲ་བར། །རྣལ་འབྱོར་ཅན་གྱིས་རྟག་ཏུ་རྟོགས། प्रति-

पश्येत् सदा योगी मायास्वप्नोपमं भवम् ॥ ल.अ. 171ख/130; སྟོང་པའི་ཁྱིམ་སམ་དུར་ཁྲོད་དམ། །ཤིང་གི་དྲུང་དམ་ཕུག་རྣམས་སམ། །ལྡ་གབ་མེད་པའམ་སོག་ཁྲོད་དུ། །རྣལ་འབྱོར་ཅན་གྱིས་གནས་བཅའ་འོ།། शून्यागारे श्मशाने वा वृक्षमूले गुहासु वा। पलालेऽभ्यवकाशे च योगी वासं प्रकल्पयेत् ॥ ल.अ.171ख/129; सू.अ. 181क/76 **2.** = རྣལ་འབྱོར་ཅན योगित्वम्–རྣལ་འབྱོར་ཅན་དུ་འཛིན་པ योगित्वग्राहः म.भा.13क/3.16.

རྣལ་འབྱོར་ཅན་དུ་འཛིན་པ *पा.* योगित्वग्राहः, आत्मदर्शनविशेषः – བདག་ཏུ་ལྟ་བ་རྣམ་པ་བཅུ... འདི་ལྟ་སྟེ། གཅིག་པུར་འཛིན་པ་དང...རྣལ་འབྱོར་ཅན་དུ་འཛིན་པ་དང་མ་གྲོལ་བ་དང་གྲོལ་བར་འཛིན་པའོ།། दशविधमात्मदर्शनम्...यदुत–एकत्वग्राहः...योगित्वग्राहः, अमुक्तमुक्तत्वग्राहश्च म.भा.13क/3.16.

རྣལ་འབྱོར་ཆེན་པོ *पा.* महायोगः – རྣལ་འབྱོར་ཆེན་པོའི་རྣལ་འབྱོར་ཅན महायोगयोगिनः ल.अ.58ख/5; ཨ་ཕྲེང་ཀ་ཕྲེང་བདེ་མཆོག་འཁོར་ལོའི་རྣལ་འབྱོར་ཆེན་པོ་བསྒོམ་པ་ཞེས་བྱ་བ सम्बरचक्रालिकालिमहायोगभावनानाम क.त.2406; བཅོམ་ལྡན་འདས་ཇི་ལྟར་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་སེམས་དཔའ་ཆེན་པོ་རྣམས་རྣལ་འབྱོར་ཆེན་པོའི་རྣལ་འབྱོར་ཅན་དུ་འགྱུར་བའི་རྣལ་འབྱོར་མངོན་པར་རྟོགས་པ་བདག་ལ་བཤད་དུ་གསོལ देशयतु मे भगवन् योगाभिसमयं यथा बोधिसत्त्वा महासत्त्वा महायोगयोगिनो भवन्ति ल.अ.86ख/34; का.व्यू.227क/290; ज्ञा.सि.40क/100.

རྣལ་འབྱོར་ཆེན་པོ་ལ་རྣལ་འབྱོར་པ *वि.* महायोगयोगी, बुद्धस्य – སངས་རྒྱས་བཅོམ་ལྡན་འདས་རྣམས་ནི་བསོད་ནམས་དང་ཡེ་ཤེས་ཀྱི་ཚོགས་ཆེན་པོ་མངའ་བ... རྣལ་འབྱོར་ཆེན་པོ་ལ་རྣལ་འབྱོར་པ बुद्धा भगवन्तो महत्पुण्यज्ञानसंभाराः...महायोगयोगिनः शि.स.173क/171; द्र. རྣལ་འབྱོར་ཆེན་པོའི་རྣལ་འབྱོར་ཅན། རྣལ་འབྱོར་ཆེན་པོའི་རྣལ་འབྱོར་དང་ལྡན་པ།

རྣལ་འབྱོར་ཆེན་པོའི་རྒྱུད་དཔལ་རྡོ་རྗེ་ཕྲེང་བ་མངོན་པར་བརྗོད་པ་རྒྱུད་ཐམས་ཅད་ཀྱི་སྙིང་པོ་གསང་བ་རྣམ་པར་ཕྱེ་བ་ཞེས་བྱ་བ *ना.* श्रीवज्रमालाभिधानमहायोगतन्त्रसर्वतन्त्रहृदयरहस्यविभङ्गनाम, ग्रन्थः क.त.445.

རྣལ་འབྱོར་ཆེན་པོའི་རྒྱུད་དཔལ་རྡོ་རྗེ་ཕྲེང་བའི་རྒྱ་ཆེར་འགྲེལ་པ་ཟབ་མོའི་དོན་གྱི་འགྲེལ་པ་ཞེས་བྱ་བ *ना.* श्रीवज्रमालाभिधानमहायोगतन्त्रटीका गम्भीरार्थदीपिकानाम, ग्रन्थः क.त.1795.

རྣལ་འབྱོར་ཆེན་པོའི་རྒྱུད་དཔལ་གསང་བ་འདུས་པའི་བསྐྱེད་པའི་རིམ་པ་བསྒོམ་པའི་ཐབས་མདོ་དང་བསྲེས་པ་ཞེས་བྱ་བ *ना.* श्रीगुह्यसमाजमहायोगतन्त्रोत्पादक्रमसाधनसूत्रमेलापकनाम, ग्रन्थः क.त.1797.

རྣལ་འབྱོར་ཆེན་པོའི་རྒྱུད་དཔལ་གསང་བ་འདུས་པའི་གཏོར་མའི་ཆོ་ག་ཞེས་བྱ་བ *ना.* श्रीगुह्यसमाजमहायोगतन्त्रबलिविधिनाम, ग्रन्थः क.त.1824.

རྣལ་འབྱོར་ཆེན་པོའི་རྣལ་འབྱོར་ཅན *वि.* महायोगयोगी – རྣམ་པར་མི་རྟོག་པའི་རྒྱུ་བ་ལ་གནས་པ...རྣལ་འབྱོར་ཆེན་པོའི་རྣལ་འབྱོར་ཅན अविकल्पप्रचारस्थितस्य...महायोगयोगिनः ल.अ.58ख/5; བཅོམ་ལྡན་འདས་ཇི་ལྟར་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་སེམས་དཔའ་ཆེན་པོ་རྣམས་རྣལ་འབྱོར་ཆེན་པོའི་རྣལ་འབྱོར་ཅན་དུ་འགྱུར་བའི་རྣལ་འབྱོར་མངོན་པར་རྟོགས་པ་བདག་ལ་བཤད་དུ་གསོལ देशयतु मे भगवन् योगाभिसमयं यथा बोधिसत्त्वा महासत्त्वा महायोगयोगिनो भवन्ति ल.अ.86ख/34;

द्र. རྣལ་འབྱོར་ཆེན་པོའི་རྣལ་འབྱོར་དང་ལྡན་པ། རྣལ་འབྱོར་ཆེན་པོ་ལ་རྣལ་འབྱོར་པ།

རྣལ་འབྱོར་ཆེན་པོའི་རྣལ་འབྱོར་དང་ལྡན་པ *वि.* महायोगयोगी – ལང་ཀའི་བདག་པོ་འདི་ནི་རྒྱལ་བའི་སྲས་རྣལ་འབྱོར་ཆེན་པོའི་རྣལ་འབྱོར་དང་ལྡན་པ...རྣམས་ཀྱི་དམ་ཚིག་གོ॥ एष लङ्काधिपते अभिसमयो महा[योग]-योगिनां...जिनपुत्राणाम् ल.अ.59क/5; द्र. རྣལ་འབྱོར་ཆེན་པོའི་རྣལ་འབྱོར་ཅན། རྣལ་འབྱོར་ཆེན་པོ་ལ་རྣལ་འབྱོར་པ།

རྣལ་འབྱོར་ཆེན་མོའི་རྒྱུད महायोगिनीतन्त्रम् – དེ་ཁོ་ན་ཉིད་ཀྱི་སྒྲོན་མ་ཞེས་བྱ་བའི་རྣལ་འབྱོར་ཆེན་མོའི་རྒྱུད་ཀྱི་རྒྱལ་པོ तत्त्वप्रदीपनाममहायोगिनीतन्त्रराजः क.त.423.

རྣལ་འབྱོར་འཇིག་རྟེན योगिलोकः – དེ་ལ་འཇིག་རྟེན་རྣམ་གཉིས་མཐོང་། །རྣལ་འབྱོར་པ་དང་ཐལ་པ་པོ། །དེ་ལ་འཇིག་རྟེན་ཐལ་པ་ནི། །རྣལ་འབྱོར་འཇིག་རྟེན་གྱིས་གནོད་ཅིང་॥ तत्र लोको द्विधा दृष्टो योगी प्राकृतकस्तथा। तत्र प्राकृतको लोको योगिलोकेन बाध्यते ॥ बो.अ.31क/9.3.

རྣལ་འབྱོར་རྗེས་སུ་རིག་པ योगानुविद्धम्, तन्त्रभेदः – བྱ་བ་དང་རྣལ་འབྱོར་དང་རྣལ་འབྱོར་རྗེས་སུ་རིག་པ་དང་རྣལ་འབྱོར་མའི་རྒྱུད་དུ་མ་ལས་གསུངས་པ་རྣམས་ནི क्रियायोगयोगानुविद्धयोगिनीतन्त्रेष्वनेकेषु उक्ताः वि.प्र.140ख/3.78; རྣལ་འབྱོར་རྗེས་སུ་རིག་པའི་རྒྱུད་ལ་སྣ་ཚོགས་གཟུགས་ཅན་མས། དཔལ་ལྡན་སྣ་ཚོགས་གཟུགས་ཅན་མས། །རྡོ་རྗེ་འཇིགས་བྱེད་ལ་བཏུད་ཞུས། །རྣལ་འབྱོར་རྗེས་སུ་རིག་པའི་རྒྱུད། །རྡོ་རྗེ་སེམས་དཔའི་མཆོག་བདེ་ཅི॥...གསུངས་སོ॥ योगानुविद्धे [तन्त्रे] विश्वरूपिणी आह–श्रीविश्वरूपिणी नत्वा पृच्छते वज्रभैरवम्। तन्त्रं योगानुविद्धं किं वज्रसत्त्व परं सुखम्॥ वि.प्र.135क/1, पृ.34; द्र.– ཐབས་དང་ཤེས་རབ་དང་བྱ་བ་དང་རྣལ་འབྱོར་རྗེས་སུ་རིག་པ་དང་སྡོམ་པ་ཆེན་པོ་དང་འཁོར་ལོས་སྒྱུར་བ་དྲུག་སྤྲོ་བའི་ངོ་བོ་ཉིད་ཀྱིས་གནས་པ प्रज्ञोपायक्रियायोगानुविद्धमहासंवर-षट्चक्रवर्तिस्फरणस्वभावतयावस्थितः वि.प्र.116ख/1, पृ.14.

རྣལ་འབྱོར་སྙིང་པོ *ना.* योगसारः, ग्रन्थः क.त.2855.

རྣལ་འབྱོར་བཏུང་དགའ *वि.* योगपानरतः – རྣལ་འབྱོར་བཏུང་དགའ་རྣལ་འབྱོར་པ། །གཞན་གྱི་བཏུང་བས་བཟི་བ་མེད॥ योगपानरतो योगी नान्यपानेन मज्जनम्॥ हे.त.7ख/20.

རྣལ་འབྱོར་རྟོགས་པ་རྒྱུ་བ योगगतिप्रचारः – འཕོད་འགྲོགས་ཀྱི་རྣལ་འབྱོར་རྟོགས་པ་རྒྱུ་བ་ལ་རྗེས་སུ་དགོངས་ཤིང रावणस्यैव योगगतिप्रचारमनुविचिन्तयमानः ल.अ.60ख/6.

རྣལ་འབྱོར་ཐམས་ཅད་ལ་མངའ་མཛད་པ *वि.* सर्वयोगवशवर्ती – བཅོམ་ལྡན་འདས་རྣལ་འབྱོར་ཐམས་ཅད་ལ་མངའ་མཛད་པ भगवन्तं सर्वयोगवशवर्तिनम् ल.अ.59ख/5.

རྣལ་འབྱོར་མཐར་ཕྱིན་པ *वि.* योगपारगः – སྐྱེ་བོ་རྣལ་འབྱོར་མཐར་ཕྱིན་པས། །ང་རྒྱལ་མི་བཅག་[གཅག་]ཁྲོ་མི་བཙམ॥ जन्तवो नाभिमन्तव्या न विहेठया योगपारगैः। हे.त.29ख/98.

རྣལ་འབྱོར་དང་ལྡན = རྣལ་འབྱོར་ལྡན་པ།

རྣལ་འབྱོར་དང་ལྡན་པ = རྣལ་འབྱོར་ལྡན་པ།

རྣལ་འབྱོར་དུ་བྱ *कृ.* योगमापत्तव्यम् – ཤེས་རབ་ཀྱི་ཕ་རོལ་ཏུ་ཕྱིན་པ་འདི་ཉིད་ལ་བསླབ་པར་བྱའོ॥ རྣལ་འབྱོར

དུ་བྱའོ། इहैव प्रज्ञापारमितायां शिक्षितव्यं योगमापत्तव्यम् अ.सा.5क/4; म.व्यु.1800 (39क); योगः करणीयः – སངས་རྒྱས་ཀྱི་ཆོས་ཐམས་ཅད་ཐོབ་པར་བྱ་བའི་ཕྱིར་རྣལ་འབྱོར་དུ་བྱའོ། सर्वबुद्धधर्मसमुदागमाय योगः करणीयः अ.सा.5ख/4.

རྣལ་འབྱོར་དུ་བྱ་བ = རྣལ་འབྱོར་དུ་བྱ།

རྣལ་འབྱོར་དུ་བྱེད་པར་འགྱུར *क्रि.* योगमापत्स्यते – འཕགས་པ་རབ་འབྱོར་གང་ཤེས་རབ་ཀྱི་ཕ་རོལ་ཏུ་ཕྱིན་པ་འདི་ལ་དེ་ལྟར་རྣལ་འབྱོར་དུ་བྱེད་པ་དེ་ཅི་ལ་རྣལ་འབྱོར་དུ་བྱེད་པར་འགྱུར य आर्य सुभूते अत्र प्रज्ञापारमितायामेव योगमापत्स्यते, क्व स योगमापत्स्यते अ.सा. 175ख/98.

རྣལ་འབྱོར་གདན योगपीठम् – གཉིས་སུ་མེད་པར་གྲུབ་པའི་སྒྲུབ་ཐབས་ཞེས་བྱ་ར། འདི་ནི་ཨུ་རྒྱན་གྱི་ཆེ་བ་རྣལ་འབྱོར་གདན་གྱིས་སྒྲུབ་པའི་ལྷའི་གནས་ནས་བྱུང་བ श्रीमदोडियानविनिर्गता महायोगपीठागता...अद्वयसिद्धिर्नाम साधनोपायिका अ.सि.62क/164.

རྣལ་འབྱོར་བདག योगात्मा, योगी – འདི་ལྟར་སེམས་པའི་རྣལ་འབྱོར་བདག། །བཟའ་དང་བཏུང་བ་ལ་སོགས་སྤྱད།། इति संचिन्त्य योगात्मा खानपानादिमारभेत् ॥ हे.त.8ख/24.

རྣལ་འབྱོར་བདག་ཉིད་གདན योगपीठकम् – གཟུགས་སུ་སྣང་བ་ཀུན་རྫོབ་སྟེ། །རྣལ་འབྱོར་བདག་ཉིད་གདན་ལ་འདུག། रूपमाश्रित्य संवृत्या संस्थितो योगपीठके ॥ अ.सि.62क/164.

རྣལ་འབྱོར་བདུན་གྱི་ལམ་རྣམ་པར་ངེས་པ *ना.* सप्तयोगमार्गविनिश्चयः, ग्रन्थः – དཔལ་རྣལ་འབྱོར་བདུན་གྱི་ལམ་རྣམ་པར་ངེས་པ श्रीसप्तयोगमार्गविनिश्चयः क.त.2469.

རྣལ་འབྱོར་བདེ་བ सुयोगः – རྣལ་འབྱོར་བདེ་བ་ནི་ཉིན་པར་འདུ་འཛི་ཉུང་ཞིང་ལྷུན་ལྷིན་ཉུང་བའི་ཕྱིར་དང་མཚན་མོ་སྒྲ་ཉུང་བ་ལ་སོགས་པའི་ཕྱིར་རོ།། सुयोगो दिवाल्पाकीर्णाभिलापकत्वात् रात्रौ चाल्पशब्दादिकत्वात् सू.व्या.187ख/84.

རྣལ་འབྱོར་འདོད་པ་ཡིད་ལ་བྱེད་པ *पा.* योगाभिलाषमनस्कारः, अभिलाषमनस्कारभेदः – འདོད་པ་ཡིད་ལ་བྱེད་པ་ནི་དེ་ཡང་རྣམ་པ་བཞི་སྟེ། རྣལ་འབྱོར་འདོད་པ་ཡིད་ལ་བྱེད་པ...རྣམ་པར་མི་རྟོག་པ་འདོད་པ་ཡིད་ལ་བྱེད་པ...འཛིན་པར་འདོད་པ་ཡིད་ལ་བྱེད་པ...རྒྱན་དང་ལྡན་པར་འདོད་པ་ཡིད་ལ་བྱེད་པ अभिलाषमनस्कारः स पुनश्चतुर्विधः। योगाभिलाषमनस्कारः...अविकल्पाभिलाषमनस्कारः...धृत्यभिलाषमनस्कारः...प्रत्ययाभिगमाभिलाषमनस्कारः सू.व्या.178क/72.

རྣལ་འབྱོར་ལྡན = རྣལ་འབྱོར་ལྡན་པ།

རྣལ་འབྱོར་ལྡན་པ • *सं.* योगी – འདི་ནི་རྣལ་འབྱོར་ལྡན་པ་དག། །མཐོང་བའི་ཆོས་ལ་སྤྱོད་པའི་གནས།། योगिनां निलयो ह्येष दृष्टधर्मविहारिणाम् । ल.अ.57ख/3; འདིར་འཇིག་རྟེན་གསུམ་ན་ལྷ་དང་ཀླུ་དང་ལག་འགྲོ་མི་རྣམས་ཀྱི་ནང་ན་གང་ཞིག་རང་གི་ལུས་ལ་ཟླ་བ་ཉི་མ་དག་རྫོགས་པར་ནུས་པའི་རྣལ་འབྱོར་ལྡན་པ་མེད་དོ།། इह त्रैलोक्ये सुरभुजगनृणां मध्ये योगी नास्ति यः समर्थः पूरितुं चन्द्रादित्यौ स्वदेहे वि.प्र.266क/2.78; •*वि.* योगयुक्तः – རྣལ་འབྱོར་ནི་སྟོང་པ་དང་སྙིང་རྗེ་དབྱེར་མེད་པ་རྣམ་པར་དག་པའི་དེ་ཁོ་ན་ཉིད་དང་རྣམ་པར་དག་པའི་སེམས་སོ།། དེ་དང་ལྡན་པའི་ཕྱིར་རྣལ་འབྱོར་དང་ལྡན་པ་སྟེ योगः शून्यताकरुणाभिन्नं विशुद्धतत्त्वं विशुद्धचित्तम्; तेन युक्त इति योगयुक्तः वि.प्र.272ख/2.97;

བདག་མེད་རྣལ་འབྱོར་ལྡན་པ་ཡིས།། नैरात्म्यायोगयुक्तेन हे.त.15[क]/46; योगयुक्तात्मा – བདག་མེད་རྣལ་འབྱོར་ལྡན་པ་འམ། །ཡང་ན་ཧེ་རུ་ཀ་དཔལ་བརྩོན།། नैरात्म्ययोगयुक्तात्माऽथवा हेरुकयोगतः। हे.त.14[क]/44; योगसंयुक्तः – རྣལ་འབྱོར་མ་ནི་རྣལ་འབྱོར་ལྡན།། योगिनीयोगसंयुक्ते प्र.सि.32[क]/75; योगवान्–མཁའ་མཉམ་རང་བཞིན་ཞེས་བྱ་བ་ནི་རྡོ་རྗེ་སེམས་དཔའི་རྣལ་འབྱོར་དང་ལྡན་པས་སོ།། खसमस्वभाव इति वज्रसत्त्वयोगवान् ख.टी.166[ख]/249; सुयोगवान् – དམ་ཚིག་སྡོམ་ལས་རྣམ་པར་གྲོལ། །རྣལ་འབྱོར་ལྡན་པས་སྤྱོད་པ་བྱེད།། समयसंवरविनिर्मुक्तश्चर्यां कुरुते सुयोगवान् ॥ हे.त.7[ख]/20.

རྣལ་འབྱོར་ལྡན་པ་ཆེན་པོ महायोगी – རྣལ་འབྱོར་ལྡན་པ་ཆེན་པོ་སྟེ། །ཐུབ་པ་རྡུལ་མེད་ཅེས་བྱ་བའི། །ཐར་པ་འཆད་པའི་སྟོན་པར་འགྱུར། །འདི་ནི་ཐུབ་པའི་རྒྱལ་མཚན་ཞེས།། भविष्यति महायोगी नाम्ना वै विरजोमुनिः। मोक्षस्य देशकः शास्ता मुनीनामेष वै ध्वजः ॥ ल.अ.189[क]/161.

རྣལ་འབྱོར་ནམ་མཁའ ना. योगाम्बरः, देवता – རྣལ་འབྱོར་ནམ་མཁའི་སྒྲུབ་ཐབས योगाम्बरविधिः[? साधनम्] क.त.1619.

རྣལ་འབྱོར་གནས = རྣལ་འབྱོར་གྱི་གནས།

རྣལ་འབྱོར་རྣམས་ཀྱིས་བགྲོད་བྱ वि. योगगम्यम्–ཤེས་རབ་ཡེ་ཤེས་དབང་བསྐུར་སྲིད་པའི་འཇིགས་པ་འཇོམས་པ་རྣལ་འབྱོར་རྣམས་ཀྱིས་བགྲོད་བྱ་བཞི་པ་ཐོབ།། लब्धः… प्रज्ञाज्ञानाभिषेको भवभयमथनो योगगम्यश्चतुर्थः का.च.29[ख]/4.1.

རྣལ་འབྱོར་པ 1. योगी – རྣལ་འབྱོར་ནི་ཏིང་ངེ་འཛིན་ནོ།། དེ་གང་ལ་ཡོད་པ་ནི་རྣལ་འབྱོར་པ་སྟེ योगः समाधिः। स यस्यास्ति स योगी न्या.टी.44[क]/70; འདིར་གང་གི་ཚེ་སོ་སོར་སྡུད་པས་གཟུགས་བརྟན་པར་གྱུར་པའི་རྣལ་འབྱོར་པ་རྣམ་པར་དག་པར་གྱུར་པ इह प्रत्याहारेण योगी यदा विशुद्धो भवति बिम्बेन स्थिरीभूतेन वि.प्र.66[ख]/4.118; སྟོང་ཉིད་རྣལ་འབྱོར་པས་མི་གཏང་། །སྟོང་ཉིད་མིན་པ་ཡང་མི་གཏང་།། न शून्यं संत्यजेद् योगी न चाशून्यं परित्यजेत् ॥ प्र.सि.33[क]/78; ད་ནི་རྣལ་འབྱོར་པ་རྣམས་ཀྱི་མཚན་ཉིད་གསུངས་ཏེ། སེང་གེ་དག་ཀུང་འགྲོག་ན་གནས་ཤིང་ཡུལ་དང་རྣམ་བྲལ་འཇིགས་པ་མེད་ལ་གཏོང་བའི་ངང་ཚུལ་ཅན་ཞེས་པ་ནི་མི་བསྐྱོད་པའོ།། इदानीं योगिनां लक्षणमुच्यते। सिंहश्चैकान्तवासी विषयविरहितो निर्भयस्त्यागशीलः, अक्षोभ्यः वि.प्र.165[ख]/3.142; དེ་བཞིན་དུ་རྣལ་འབྱོར་པ་ཡང་རྣམ་པ་ལྔ་སྟེ། སེང་གེ་དང་རི་དྭགས་དང་རྟ་དང་ཁྱུ་མཆོག་དང་གླང་པོ་ཆེ་སྟེ་རིགས་ཀྱི་དབྱེ་བ་ལས་སོ།། …རིན་ཆེན་འབྱུང་ལྡན་ནི་རྟ་དང…རྣམ་པར་སྣང་མཛད་ནི་གླང་པོ་ཆེའོ།། एवं योग्यपि पञ्चधा सिंहो मृगोऽश्वो वृषभः कुञ्जरो जातिभेदात्। …रत्नसम्भवोऽश्वः… वैरोचनो गज इति वि.प्र.165[क]/3.140; ཇི་སྲིད་དུ་གཉིས་མེད་པའི་མཚན་ཉིད་རྣམ་པར་རིག་པ་ཙམ་ཉིད་ལ་རྣལ་འབྱོར་པའི་སེམས་གནས་པར་མ་གྱུར་པ यावदद्वयलक्षणे विज्ञप्तिमात्रे योगिनश्चित्तं न प्रतिष्ठितं भवति त्रि.भा.170[क]/96; ཉན་ཐོས་དང་རང་སངས་རྒྱས་དང་མུ་སྟེགས་ཅན་གྱི་རྣལ་འབྱོར་ལ་རྣལ་འབྱོར་པ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་ཡུལ་མ་ཡིན་པའི་ཕྱིར अविषयत्वाच्च सर्वश्रावकप्रत्येकबुद्धतीर्थ्ययोगयोगिनाम् ल.अ.143[क]/90 2. = རྣལ་འབྱོར་པ་ཉིད योगिता – རྣལ་འབྱོར་པ་དང་སློབ་དཔོན་ཞེས། །བདག་ནི་ཅི་ནས་ཤེས་འགྱུར་བ།། योगिताऽऽचार्यसंज्ञा च कथमस्माकमस्त्वति। प्र.सि.30[ख]/71.

རྣལ་འབྱོར་པ་དང་རྣལ་འབྱོར་མ་རྣམས་ལ་ཐུན་མོང་མ་ཡིན་པའི་དོན་ལ་གདམས་པ་ཞེས་བྱ་བ *ना.* योगियोगिनीनामसाधारणोपदेशनाम, ग्रन्थः क.त.1230.

རྣལ་འབྱོར་པའི་མངོན་སུམ *पा.* योगिप्रत्यक्षम्, प्रत्यक्षभेदः – རྣལ་འབྱོར་པའི་མངོན་སུམ་གྱིས་ཀྱང་དབང་པོ་ལས་འདས་པ་ཡུལ་དུ་བྱེད་པ་མ་ཡིན་ཏེ नापि योगिप्रत्यक्षमतीन्द्रियविषयम् त.प.131[क]/713; མཚུངས་པ་མེད་པའི་ངོ་བོ་གང་། །དེ་ནི་རྣལ་འབྱོར་མངོན་སུམ་ཡུལ།། असमानं तु तद्रूपं योगिप्रत्यक्षमिष्यते । त.स.72[ख]/675; གང་ཡང་ཆོས་ལ་སོགས་པ་རྣལ་འབྱོར་གྱི་མངོན་སུམ་གྱིས་ཀྱང་རྟོགས་པར་བྱ་བ་མ་ཡིན་ནོ་ཞེས་སྨྲས་པ यच्चोक्तम्–योगिप्रत्यक्षसमा[? सम]धिगम्योऽपि धर्मादिर्न भवतीति त.प.216[क]/902; द्र. རྣལ་འབྱོར་པའི་ཤེས་པ།

རྣལ་འབྱོར་པའི་ཤེས་པ *पा.* योगिज्ञानम्, प्रत्यक्षभेदः – ཡང་དག་པའི་དོན་བསྒོམ་པའི་རབ་ཀྱི་མཐའ་ལས་བྱུང་བ་རྣལ་འབྱོར་པའི་ཤེས་པའོ།། भूतार्थभावनाप्रकर्षपर्यन्तजं योगिज्ञानम् न्या.बि.231[क]/67; ཡང་ན་འདི་ལ་རྣལ་འབྱོར་པའི་ཤེས་པ་ཡང་ཡིད་ཡིན་ལ། དེ་ཡང་འཆད་པར་འགྱུར་རོ།། योगिज्ञानमिह मानसम्, तच्च वक्ष्यमाणम् त.प.19[क]/484; དེ་དག་གིས་ཅུང་ཟད་རང་ལས་ཚད་མ་ཉིད་དུ་འདོད་དེ། དཔེར་ན་རང་རིག་པའི་མངོན་སུམ་དང་རྣལ་འབྱོར་པའི་ཤེས་པ་དང་དོན་བྱེད་པའི་ཤེས་པ་དང་རྗེས་སུ་དཔག་པ་དང་གོམས་པ་དང་ལྡན་པའི་མངོན་སུམ་ལྟ་བུ་སྟེ तैः किञ्चित् स्वतःप्रमाणमिष्टम्, यथा – स्वसंवेदनप्रत्यक्षम्, योगिज्ञानम्, अर्थक्रियाज्ञानम्, अनुमानम्, अभ्यासवच्च प्रत्यक्षम् त.प.233[ख]/938; द्र. རྣལ་འབྱོར་པའི་མངོན་སུམ།

རྣལ་འབྱོར་སྤྱོད་པ •*सं.* योगाचारः 1. समाधिविशेषानुष्ठानपरः – ཀཽ་ཤི་ཀ་དཔེར་ན་དགེ་སློང་རྣལ་འབྱོར་སྤྱོད་པ་ཏིང་ངེ་འཛིན་ལས་ལངས་པའི་སེམས་ཡིད་ལ་བྱེད་པས་ཡོངས་སུ་བརླན་པས་ཁ་ཟས་ལ་བརྐམ་པ་དྲག་པོ་མི་འགྱུར तद्यथापि नाम कौशिक भिक्षोर्योगाचारस्य समाधेर्व्युत्थितस्य मनसिकारपरिष्यन्दितेन चित्तेन न बलवत्याहारे गृद्धिर्भवति अ.सा.82[क]/46; བློ་གྲོས་ཆེན་པོ་དུར་ཁྲོད་པ་རྣམས་དང... རྣལ་འབྱོར་པ། རྣལ་འབྱོར་ལ་སྤྱོད་པ་བྱམས་པ་ལ་གནས་པ་རྣམས་དང श्मशानिकानां च महामते...योगिनां योगाचाराणां मैत्रीविहारिणाम् ल.अ.154[क]/101; योगाचारी–འོད་སྲུངས་དེ་ལ་དགེ་སློང་གང་རྣལ་འབྱོར་སྤྱོད་པ་གང་ཡིན་པ तत्र काश्यप यो भिक्षुर्योगाचारी भवति शि.स.36[ख]/35; རྣལ་འབྱོར་སྤྱོད་པ་ནི་དང་པོ་ཉིད་དུ་རང་གི་ལུས་ཀྱི་ཡན་ལག་རྐང་པའི་མཐེ་བོའམ་དཔྲལ་བའི་དབྱེས་སམ་ཡང་ན་དེ་གར་དགའ་བར་སེམས་གཏོད་པར་བྱེད आदितो योगाचारः स्वाङ्गावयवे चित्तं निबध्नाति पादाङ्गुष्ठे ललाटे यत्र चास्याभिरतिः अभि.भा.9[ख]/896; མི་སྡུག་པ་ལ་གནས་པའི་རྣལ་འབྱོར་སྤྱོད་པ་ནི་མདོར་བསྡུ་ན་རྣམ་པ་གསུམ་སྟེ། ལས་དང་པོ་པ་དང་ཡོངས་སུ་སྦྱང་བ་བྱས་པ་དང་ཡིད་ལ་བྱེད་པ་རྫོགས་པའོ།། समासतोऽशुभायां वर्तमानो योगाचारस्त्रिविधः – आदिकर्मिकः, कृतपरिजयः, अतिक्रान्तमनसिकारश्च अभि.स्फु.162[क]/896 2. दार्शनिकप्रस्थानविशेषः – དེ་ནས་རྣལ་འབྱོར་སྤྱོད་པ་ཉིད། །དེ་ཡི་རྗེས་ལ་དབུ་མ་བསྟན།། योगाचारं ततः पश्चात् तदनु मध्यमकं दिशेत् । हे.त.27[क]/90; དེ་ལྟ་མ་ཡིན་ན་རྣལ་འབྱོར་སྤྱོད་པའི་ལུགས་ཀྱིས་དམིགས་པ་མ་གྲུབ་པའི་ཕྱིར अन्यथा हि योगाचारमतेनालम्बनासिद्धेः त.प.17[क]/479; • *पा.* योगाचारः, समाधिविशेषः – ཏིང་ངེ་འཛིན་འདི་དག་ཀྱང་སྒྲིབ་པ་ཐམས་ཅད་རྣམ་པར་སེལ་བས་ཐོབ་སྟེ

...རྣལ་འབྱོར་སྤྱོད་ཅེས་བྱ་བའི་ཏིང་ངེ་འཛིན་དང इमे समाधयः सर्वनीवरणविष्कम्भिनः प्रतिलब्धाः ...योगाचारो नाम समाधिः का.व्यू.238ख/300.

རྣལ་འབྱོར་སྤྱོད་པ་པ = རྣལ་འབྱོར་སྤྱོད་པ།

རྣལ་འབྱོར་སྤྱོད་པའི་དབུ་མ་རང་རྒྱུད་པ योगाचारमाध्यमिकस्वातन्त्रिकः लो.को.1428.

རྣལ་འབྱོར་སྤྱོད་པའི་ས ना. योगचर्याभूमिः, ग्रन्थः क.त.4035.

རྣལ་འབྱོར་སྤྱོད་པའི་ས་རྣམ་པར་གཏན་ལ་དབབ་པ་བསྡུ་བ ना. [योगचर्याभूमिविनिश्चयसंग्रहः], ग्रन्थः क.त.4038.

རྣལ་འབྱོར་སྤྱོད་པའི་ས་རྣམ་པར་བཤད་པ ना. योगचर्याभूमिव्याख्या, ग्रन्थः क.त.4043.

རྣལ་འབྱོར་སྤྱོད་པའི་ས་ལས་ཉན་ཐོས་ཀྱི་ས ना. [योगचर्याभूमौ श्रावकभूमिः], ग्रन्थः क.त.4036.

རྣལ་འབྱོར་སྤྱོད་པའི་ས་ལས་འདུལ་བ་བསྡུ་བ ना. [योगचर्याभूमौ विनयसंग्रहः], ग्रन्थः क.त.4040.

རྣལ་འབྱོར་སྤྱོད་པའི་ས་ལས་རྣམ་གྲངས་བསྡུ་བ ना. [योगचर्याभूमौ पर्यायसंग्रहः], ग्रन्थः क.त.4041.

རྣལ་འབྱོར་སྤྱོད་པའི་ས་ལས་རྣམ་པར་བཤད་པ་བསྡུ་བ ना. योगचर्याभूमौ विवरणसंग्रहः], ग्रन्थः क.त.4042.

རྣལ་འབྱོར་སྤྱོད་པའི་ས་ལས་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའི་ས ना. [योगचर्याभूमौ बोधिसत्त्वभूमिः], ग्रन्थः क.त.4037.

རྣལ་འབྱོར་སྤྱོད་པའི་ས་ལས་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའི་སའི་རྣམ་པར་བཤད་པ ना. योगचर्याभूमौ बोधिसत्त्वभूमिव्याख्या, ग्रन्थः क.त.4047.

རྣལ་འབྱོར་སྤྱོད་པའི་ས་ལས་གཞི་བསྡུ་བ ना. [योगचर्याभूमौ वस्तुसंग्रहः], ग्रन्थः क.त.4039.

རྣལ་འབྱོར་ཕྱག་རྒྱ पा. योगमुद्रा, मुद्राविशेषः – འདི་རྣམས་རྣལ་འབྱོར་ཕྱག་རྒྱ་དྲུག་སྟེ་རྣལ་འབྱོར་པ་རྣམས་ཀྱི་ས་ལ་སོགས་པ་རྣམས་སོ།། एताः षड् योगमुद्राः पृथिव्यादयो योगिनी(?)नाम् वि.प्र.161क/3.125.

རྣལ་འབྱོར་བྱུང वि. योगजः – སྡོམ་པ་སངས་རྒྱས་རྣལ་འབྱོར་བྱུང་། །དེང་ནས་བཙམས་ཏེ་གཟུང་བར་བགྱི།། अद्याग्रेण ग्रहीष्यामि संवरं बुद्धयोगजम् । स.दु.104क/146.

རྣལ་འབྱོར་བྱེད पा. योगकरः, समाधिविशेषः – རྣམ་པར་བྱེད་ཅེས་བྱ་བའི་ཏིང་ངེ་འཛིན་དང་...རྣལ་འབྱོར་བྱེད་ཅེས་བྱ་བའི་ཏིང་ངེ་འཛིན་དང आकारकरो नाम समाधिः...योगकरो नाम समाधिः का.व्यू.222क/284; द्र. རྣལ་འབྱོར།

རྣལ་འབྱོར་བླ་ན་མེད་པའི་རྒྱུད་ཀྱི་དོན་ལ་འཇུག་པ་བསྡུས་པ་ཞེས་བྱ་བ ना. योगानुत्तरतन्त्रार्थावतारसंग्रहनाम, ग्रन्थः क.त.3713.

རྣལ་འབྱོར་དབང་པོ = རྣལ་འབྱོར་གྱི་དབང་པོ།

རྣལ་འབྱོར་དབང་པོའི་ཐིག་ལེ ना. योगेन्द्रतिलकः, आचार्यः ब.अ.803.

རྣལ་འབྱོར་དབང་ཕྱུག योगीश्वरः – རྣལ་འབྱོར་དབང་ཕྱུག་གི་ཡིད་ནི། །དེ་ནི་རྟོག་བྲལ་མ་འཁྲུལ་ཡིན། །དེ་འཛིན་ན་ནི་རྟོག་བཅས་དང་། །འཁྲུལ་པ་དང་བཅས་ཐལ་བར་འགྱུར།། अविकल्पमविभ्रान्तं तद्योगीश्वरमानसम् । विकल्पविभ्रमाक्रान्तं तद्ग्रहे च प्रसज्यते ॥ त.स.132ख/1128; योगीशः – དེ་འཛིན་བྱེད་པའི་རྣམ་ཤེས

ནི། །བསྒོམ་པའི་སྟོབས་ལས་བྱུང་བ་གང་། །རྣལ་འབྱོར་དབང་ཕྱུག་ལ་མངོན་གསལ། །དེ་ནི་རང་མཚན་སྤྱོད་ཡུལ་ཅན།། तद्ग्राहकं च विज्ञानं भावनाबलभावि यत्। योगीशानामभिव्यक्तं तत्स्वलक्षणगोचरम् ॥ त.स. 132ख/1127; • ना. योगेश्वरः, ऋषिः – གང་ཡང་དྲང་སྲོང་དང་དྲང་སྲོང་ཆེན་པོ་དེ་དག་ལ་འདི་ལྟ་སྟེ། རྒྱུན་ཤེས་ཀྱི་བུ་དང...རྣལ་འབྱོར་དབང་ཕྱུག་དང...ཉི་མའི་རིགས་ཏེ येऽपि ते ऋषयो महर्षयः, तद्यथा–आत्रेयः...योगेश्वरः...मार्कण्डश्चेति म.मू.103ख/12.

རྣལ་འབྱོར་དབང་ཕྱུག་ཆེན་པོ महायोगीश्वरः – རྡོ་རྗེ་ཡེ་ཤེས་ཆེན་པོ་རབ་ཏུ་བསྒོམས་པའི་རྣལ་འབྱོར་གྱི་དབང་ཕྱུག་ཆེན་པོའི་མཐུ་ནི...བརྗོད་པར་མི་ནུས་མོད་ཀྱི महाज्ञानप्रभावितमहायोगीश्वरस्य प्रभावं...न शक्यं वर्णयितुम् ज्ञा.सि.58ख/152.

རྣལ་འབྱོར་དབང་ཕྱུག་མ योगेश्वरी – དེ་དག་རྣལ་འབྱོར་དབང་ཕྱུག་མ་ཞབས་གང་གི་རང་ཡིད་ལ་བྱེད་དེ་ལ་ཉམས་པར་འགྱུར།། नाशं तेऽस्य यान्ति स्वमनसि चरणं यस्य योगेश्वरीणाम् वि.प्र.112ख/1, पृ.10.

རྣལ་འབྱོར་མ योगिनी – ད་ནི ...རྣལ་འབྱོར་མ་རྣམས་ཀྱི་གཟུགས་ཡོངས་སུ་བསྒྱུར་བས་དམ་ཚིག་སུམ་ཅུ་རྩ་དྲུག་གསུངས་ཏེ། འདིར་ཁྱི་མོ་ནི་སྒྲོལ་མ་དང་རྟ་མོ་ནི་གོས་དཀར་མོ་དང इदानीं षट्त्रिंशत् समया उच्यन्ते योगिनीनां रूपपरिवर्तेन...इह श्वा तारा, अश्वा पाण्डरा वि.प्र.166ख/3.149; པདྨའི་འདབ་མ་རྣམས་ལ་འཇིགས་མ་ལ་སོགས་པ་རྣལ་འབྱོར་མ་དྲུག་ཅུ་རྩ་བཞི་རྣམས་ཀྱི་ས་བོན་གསུངས་ཏེ भीमादीनां चतुःषष्टियोगिनीनां बीजानि कमलदलेषूच्यन्ते वि.प्र.132क/3.63; དེ་ནས་རྣལ་འབྱོར་མ་བདག་མེད་མ་ལ་སོགས་པ་རྡོ་རྗེ་མཁའ་འགྲོ་མ་ཐམས་ཅད་ཀྱིས་བདུད་རྩི་ལྔ་བླངས་ཤིང अथ नैरात्म्ययोगिनीप्रमुखाः सर्ववज्रडाकिन्यः पञ्चामृतं गृहीत्वा हे.त.18क/58; ཇི་ལྟར་རིགས་པ་རྣལ་འབྱོར་མའི། །བསྐྱེད་དང་གནས་དང་བྱེད་རྒྱུ་དང་།། योगिनीनां यथान्यायमुत्पत्तिस्थितिकारणम्। हे.त. 2क/2; वि.प्र.45ख/4.46.

རྣལ་འབྱོར་མ་ཀུན་ཏུ་སྤྱོད་པའི་བཤད་སྦྱར ना. योगिनीसञ्चार्यनिबन्धः, ग्रन्थः क.त.1422.

རྣལ་འབྱོར་མ་ཀུན་སྤྱོད་ཀྱི་འགྲེལ་པ ना. [योगिनीसञ्चार्यटीका], ग्रन्थः क.त.1423.

རྣལ་འབྱོར་མ་ཀུན་ལས་བྱུང་བ वि. सर्वयोगिनीसंभवम् – རྣལ་འབྱོར་མ་ཀུན་ལས་བྱུང་བ། །ལྷན་ཅིག་སྐྱེས་དགའི་རང་བཞིན་ཉིད།། सर्वयोगिनीसम्भवम्। सहजानन्दस्वभावम् हे.त.20ख/64.

རྣལ་འབྱོར་མ་རྒྱུད = རྣལ་འབྱོར་མའི་རྒྱུད།

རྣལ་འབྱོར་མ་བདག་མེད་མ ना. नैरात्म्ययोगिनी, योगिनी – དེ་ནས་རྣལ་འབྱོར་མ་བདག་མེད་མ་ལ་སོགས་པ་རྡོ་རྗེ་མཁའ་འགྲོ་མ་ཐམས་ཅད་ཀྱིས་བདུད་རྩི་ལྔ་བླངས་ཤིང अथ नैरात्म्ययोगिनीप्रमुखाः सर्ववज्रडाकिन्यः पञ्चामृतं गृहीत्वा हे.त.18क/58.

རྣལ་འབྱོར་མ་བཞིའི་ཁ་སྦྱོར་གྱི་རྒྱུད་ཅེས་བྱ་བ ना. चतुर्योगिनीसंपुटतन्त्रनाम, ग्रन्थः क.त.376.

རྣལ་འབྱོར་མའི་ཀུན་ཏུ་སྤྱོད་པ ना. योगिनीसञ्चार्यम्, ग्रन्थः क.त.375.

རྣལ་འབྱོར་མའི་འཁོར་ལོ पा. योगिनीचक्रम् – ཤར་དུ་སྒྲོལ་མ་དང...རླུང་དུ་དྲི་རྡོ་རྗེ་མ་སྟེ་རྣལ་འབྱོར་མའི་འཁོར་ལོ་གཅེར་མོ་སྐྲ་གྲོལ་མ་ཕྱག་ན་གྲི་གུག་དང་ཐོད་པ་ཅན་རྣམས་དགོད་པར་བྱ पूर्वे तारा... वायव्ये गन्धवज्रा इति योगिनीचक्रं नग्नं मुक्तकेशं कर्तिकाकपालहस्-

तं विरचयेत् वि.प्र.158ख/3.119; སྲིད་གསུམ་ནི་རྣལ་འབྱོར་མའི་འཁོར་ལོའོ॥ त्रिभुवनं योगिनीचक्रम् ख.टी. 156ख/237.

རྣལ་འབྱོར་མའི་རྒྱུད *पा.* योगिनीतन्त्रम्, अनुत्तरयोगतन्त्रभेदः – འཇིག་རྟེན་གྱི་ཀུན་རྫོབ་ཀྱིས་རིགས་གསུམ་དང་རིགས་དྲུག་དང་རིགས་སུམ་ཅུ་རྩ་དྲུག་གི་རྣལ་འབྱོར་མའི་རྒྱུད་དེ་རྣལ་འབྱོར་མའི་རྒྱུད་ཀྱི་ངེས་པའོ॥ लोकसंवृत्या त्रिकुलषट्कुलत्रिंशत्कुलानि योगिनीतन्त्रमिति योगिनीतन्त्रनियमः वि.प्र.241ख/2.51; རྣལ་འབྱོར་མ་རྒྱུད་ཀྱེའི་རྡོ་རྗེ॥ हेवज्रे योगिनीतन्त्रे हे.त.8ख/24.

རྣལ་འབྱོར་མའི་རྒྱུད་ཀྱི་རྒྱལ་པོ་ཆེན་པོ་དཔལ་གདན་བཞི་པ་ཞེས་བྱ་བ *ना.* श्रीचतुःपीठमहायोगिनीतन्त्रराजनाम, ग्रन्थः क.त.428.

རྣལ་འབྱོར་མའི་སྒྲུབ་པའི་ཐབས <?> *ना.* वज्रयोगिनीसाधनम्, ग्रन्थः क.त.1547.

རྣལ་འབྱོར་མའི་རིགས योगिनीकुलम् – རྣལ་འབྱོར་མའི་རིགས་ཀྱི་རྒྱུད་རྣམས योगिनीकुलतन्त्राणि वि.प्र.168क/3.154.

རྣལ་འབྱོར་མའི་རིགས་ཀྱི་རྒྱུད *पा.* योगिनीकुलतन्त्रम् – དེ་བཞིན་དུ་དབྱངས་དང་བཅས་པའི་ཡི་གེ་སོ་སོས་བསྐྱེད་པ་རྣམས་ནི་རྣལ་འབྱོར་གྱི་རྒྱུད་སུམ་ཅུ་རྩ་དྲུག་གོ།། དེ་བཞིན་དུ་རྣལ་འབྱོར་མའི་རིགས་ཀྱི་རྒྱུད་རྣམས་ཏེ एवं प्रत्येकाक्षरेण जनितानि स्वरसहितेन षट्त्रिंशद्योगतन्त्राणि, एवं योगिनीकुलतन्त्राणि वि.प्र.168क/3.154.

རྣལ་འབྱོར་བརྩོན *वि.* योगपरः – སུ་ཞིག་ཚུལ་འདི་རིགས་པས་དཔོག་བྱེད་པ། །དད་ལྡན་རྣལ་འབྱོར་བརྩོན་ཞིང་མི་རྟོག་པ॥ इमं नयं योऽनुमिनोति युक्तितः प्रसादवान् योगपरो ह्यकल्पनः। ल.अ.191क/164.

རྣལ་འབྱོར་ཞུགས = རྣལ་འབྱོར་ཞུགས་པ།

རྣལ་འབྱོར་ཞུགས་པ *वि.* योगवाही – རྣལ་འབྱོར་ཞུགས་པའི་རྣལ་འབྱོར་པས། །ཉོ་དང་བཙོང་བར་མི་བྱ་འོ॥ क्रयविक्रयो न कर्तव्यो योगिना योगवाहिना। ल.अ.171क/129; योगवाहकः – སྨྲ་བའི་ནང་ན་སྨྲ་ཆེན་ཁྱོད། །རྣལ་འབྱོར་ཅན་གྱི་འང་རྣལ་འབྱོར་ཞུགས། །ཁྱོད་ལ་གུས་པར་གསོལ་འདེབས་ཀྱིས॥ वादिनां त्वं महावादी योगिनां योगवाहकः। अध्येषयामि त्वां भक्त्या ल.अ.58क/4; योगयोगी – མཉམ་པ་ཉིད་ནི་རྣམ་བཞི་སྟེ། །མཚན་ཉིད་རྒྱུ་དང་དངོས་ལས་སྐྱེས། །བདག་མེད་པ་ཡི་མཉམ་ཉིད་དེ། །རྣལ་འབྱོར་ཞུགས་པའི་བཞི་པ་འོ॥ चतुर्विधा वै समता लक्षणं हेतुभाजनम्। नैरात्म्यसमता चैव चतुर्थी योगयोगिनाम्॥ ल.अ.176ख/139.

རྣལ་འབྱོར་གཞོལ་བ *वि.* योगपरायणः – རྣལ་འབྱོར་གཞོལ་བའི་རྣལ་འབྱོར་པས། །བཟོ་ཡི་རིག་པ་མི་བསླབ་བོ॥ शिल्पविद्यां न शिक्षेत योगी योगपरायणः॥ ल.अ.171ख/129.

རྣལ་འབྱོར་བཞིའི་ཉམས་ལེན་གྱི་ཐབས་ཞེས་བྱ་བ *ना.* चतुर्योगभावनानाम, ग्रन्थः क.त.2380.

རྣལ་འབྱོར་བཞིའི་དེ་ཁོ་ན་ཉིད་ཅེས་བྱ་བ་རང་བྱིན་གྱིས་བརླབ་པའི་མན་ངག *ना.* स्वाधिष्ठानचतुर्योगतत्त्वोपदेशः, ग्रन्थः क.त.2025.

རྣལ་འབྱོར་ཡན་ལག योगाङ्गानि म.व्यु.1637 (རྣལ་འབྱོར་སྤྱོད་པ་དང་རྣལ་འབྱོར་གྱི་ཡན་ལག་གི་མིང་ལ 36ख).

རྣལ་འབྱོར་ཡན་ལག་དྲུག षडङ्गयोगः – རྣལ་འབྱོར་ཡན

ལག་དྲུག་གི་བརྗེད་བྱང་ཡོན་ཏན་གྱིས་འགེངས་པ་ཞེས་བྱ་བ गुणपूर्णिनामषडङ्गयोगटिप्पणी क.त.1388.

རྣལ་འབྱོར་ཡན་ལག་དྲུག་པ་ཞེས་བྱ་བ *ना.* योगषडङ्गनाम, ग्रन्थः क.त.1375.

རྣལ་འབྱོར་རབ་ཏུ་ཐོབ་པ *वि.* परमयोगमनुप्राप्तः, अवलोकितेश्वरस्य – ཕྱག་ན་མེ་ཏོག་པདྨ་བཟང་པོ་ཐོགས་པས་སྐྱབས་མཛོད་ཅིག།...རྣལ་འབྱོར་རབ་ཏུ་ཐོབ་པ...ལ་བདག་གིས་བསྟོད་པ་འདི་བགྱིས་སོ།། त्राणं भवाहि शुभपद्महस्त...परमयोगमनुप्राप्ताय...इदं स्तोत्रं मया कृतम् का.व्यू.215ख/275.

རྣལ་འབྱོར་རིག = རྣལ་འབྱོར་རིག་པ།

རྣལ་འབྱོར་རིག་པ योगवित्, योगी – གང་ཞིག་བརྒྱ་བྱིན་རྔ་དང་སྤྲིན་བཞིན་དང་།...།འབད་མེད་གཞན་དོན་བྱེད་དེ་རྣལ་འབྱོར་རིག། यः शक्रवद् दुन्दुभिवत् पयोदवद्...परार्थकृद्यत्नमृते स योगवित्॥ र.वि.127क/112; སྐྱེད་བྱེད་མ་དང་སྲིང་མོ་ཉིད། །རྣལ་འབྱོར་རིག་པས་རྟག་ཏུ་མཆོད།། जननीं भगिनीं चैव पूजयेद्योगवित् सदा। हे.त.6क/16; स.दु.113क/184; द्र. རྣལ་འབྱོར་ཤེས་པ།

རྣལ་འབྱོར་ལ་འཇུག་པ *ना.* योगावतारः, ग्रन्थः क.त. 4075, 4544.

རྣལ་འབྱོར་ལ་འཇུག་པའི་མན་ངག *ना.* [योगावतारोपदेशः], ग्रन्थः क.त.4074, 4539.

རྣལ་འབྱོར་ལ་རྣལ་འབྱོར་པ *वि.* योगयोगी – ཉན་ཐོས་དང་རང་སངས་རྒྱས་དང་མུ་སྟེགས་ཅན་གྱི་རྣལ་འབྱོར་ལ་རྣལ་འབྱོར་པ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་ཡུལ་མ་ཡིན་པའི་ཕྱིར अविषयत्वाच्च सर्वश्रावकप्रत्येकबुद्धतीर्थ्ययोगयोगिनाम् ल.अ.143क/90.

རྣལ་འབྱོར་ལ་སྤྱོད་པ = རྣལ་འབྱོར་སྤྱོད་པ།

རྣལ་འབྱོར་ལ་བརྩོན་པ *वि.* योगाभियुक्तः – དེ་ལོ་ཁྲི་ཉིས་སྟོང་དུ་འཆག་པ་ལ་ཞུགས་ཤིང་བརྩོན་འགྲུས་ཆེན་པོ་བརྩམས་པས་རྣལ་འབྱོར་ལ་བརྩོན་པར་གྱུར་ཏོ།། स द्वादशवर्षसहस्राणि चंक्रमाभिरूढोऽभूत्, महावीर्याऽऽरम्भेण योगाभियुक्तोऽभूत् स.पु.150ख/236.

རྣལ་འབྱོར་ལམ་གྱི་སྒྲོན་མ་ཞེས་བྱ་བ *ना.* योगपथप्रदीपनाम, ग्रन्थः क.त.2322.

རྣལ་འབྱོར་ཤེས་པ योगवित् – རྣལ་འབྱོར་ཤེས་པས་མདོ་འདུལ་དང་། །འཐད་པས་ཡང་དག་བསྡུས་ནས་ནི།། विनयात्सूत्रयुक्तिभ्यां तत्त्वं संहृत्य योगवित्। ल.अ. 171ख/130; द्र. རྣལ་འབྱོར་རིག་པ།

རྣལ་འབྱོར་གསུམ་གྱི་སྙིང་པོ་གསལ་བ་ཞེས་བྱ་བ *ना.* त्रियोगहृदयप्रकाशनाम, ग्रन्थः क.त.1371.

རྣལ་འབྱོར་ལྷུང་བཟེད योगपात्रिका, हस्तचिह्नविशेषः – གྷ་སྨ་རྻི་ཡི་གཡས་ན་སྦྲུལ། །གཡོན་པས་རྣལ་འབྱོར་ལྷུང་བཟེད་ཉིད།། घस्मर्या दक्षिणे सर्पः वामेन योगपात्रिका॥ हे.त.24ख/80.

རྣལ་མ प्रकृतम् – དེས་ན་འདི་ནི་རྣལ་མ་ཉིད་གསལ་བར་བྱེད་པ་ཡིན་ནོ།། तदनेन प्रकृतमेव स्पष्टयति वा.टी. 67ख/22; प्रकारान्तरम् – དགག་པ་གཉིས་ཀྱིས་རྣལ་མ་ཁོང་དུ་ཆུད་པར་བྱེད་དོ།། द्विःप्रतिषेधः प्रकारान्तरं गमयति अभि.स्फु.131क/837; द्र.– དེ་ལྟ་བུའི་རྒྱུད་དབང་པོ་རྣམས་ལས་བཀག་སྟེ་རྒྱུན་དུ་འཇུག་པ་དང་འབྱུང་བའི་བྱ་བ་བྱེད་པའི་ལམ་ལ་རྣལ་མ་ཉིད་དུ་གནས་པར་བྱེད་དོ།། स चेन्द्रियेभ्योऽपकृष्यानवरतस्वप्रवेशनिर्गमनिजवर्त्मव्यापारे व्यवस्थाप्यते त.सि.65क/173.

རྣལ་ལམ = རྨི་ལམ།

རྣེལ = རྙེལ།

རྣོ = རྣོ་བ།

རྣོ་རྒྱུན धारा – མང་ཚགས་དགའ་མས་མགུ་བྱས་ནས། །གང་གི་དགའ་བར་བགྲོད་བྱེད་དེ། །བསིལ་ཞིང་དྲི་མེད་འཇམ་པ་ཡིས། །རལ་གྲིའི་རྣོ་རྒྱུན་འཐུང་བར་བྱེད།། प्रचरन्तीं [? बहुरक्तां लि.पा.] प्रियां कण्ठे कृत्वा ये यान्ति निर्वृतिम्। शीतलां विमलां स्निग्धां खड्गधारां पिबन्ति ते॥ अ.क.84ख/8.65.

རྣོ་ཉིད = རྣོ་བ་ཉིད།

རྣོ་རྩལ = རྣོ་བ་དང་རྩལ་བ།

རྣོ་ལྡན = རྣོ་ལྡན་པ།

རྣོ་ལྡན་པ *वि.* कर्कशः – མཁན་པོ་རྟོག་གེ་རྣོ་ལྡན་པ། །ས་བདག་མདུན་ས་དེར་འོངས་ནས། །སྨྲ་བའི་སེང་གེ་དྲེགས་པ་ཡི། །རལ་བ་དག་ནི་ཆད་པར་བྱས།། भूभृत्सभामुपाध्यायः प्रेत्य तं तर्ककर्कशम्। चकार वादिसिंहस्य दर्पकेसरकर्तनम्॥ अ.क.300ख/39.38.

རྣོ་བ •*वि.* तीक्ष्णः – སྨོན་ལམ་དག་ནི་གུས་བཅས་པས། །དཱི་ལྟར་ཆེན་པོ་[? ཆན་པ་]རྣོ་འདི་དང་། །དཱི་ལྟར་ཟབ་མོར་འགྲོ་བའི་ཁབ། །དེ་ལྟར་བདག་གི་ཤེས་རབ་ནི། །མཆོག་ཏུ་གྱུར་ཅེས་ཡང་དག་བཏབ།། प्रणिधानं समादधे॥ यथेयं कर्तरी तीक्ष्णा यथा गम्भीरगामिनी। सूची तथा परा प्रज्ञा मम स्यादिति सादरा॥ अ.क. 162ख/18.10; དབང་པོ་རྣོ་བ तीक्ष्णेन्द्रियान् स.पु.14क/22; शितः – རྣོ་བའི་མཚོན་རྣམས་དག་གིས शितशस्त्रैः अ.क.193क/82.11; खरः – རྣལ་འབྱོར་གྱི། །མེ་ལྕེ་རྣོ योगखरार्चिषः प्र.सि.31क/73; पटुः – དེ་སེམས་རྣོ་བས་ཕྱོགས་གང་དང་གང་ན་རྔོན་པ་རྣམས་ཀྱི་བ་དང་འཁྲུལ་འཁོར་དང་རྟོད་དང་རྒྱ་མོ་དང་རྡོ་བཙུགས་པ་དང་རྟེང་དང་ཤིང་གི་ཕྱ་འཛོལ་རྣམས་ལེགས་པར་སྤངས་ནས पटुविज्ञानत्वाच्च तत्र तत्र व्याधजनविरचितानि यन्त्रकूटवागुरापाशावपातलेपकाष्ठनिवापभोजनानि सम्यक् परिहरन् जा.मा.151क/174; निपुणः – དེ་ཡང་འདི་ལྟར་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་སེམས་དཔའ་ཆེན་པོ་བློ་རབ་ཏུ་རྣོ་བ་གྲུའི་ཁ་ལོ་སྒྱུར་བ་ཞིག་ཏུ་གྱུར་ཏོ་ཞེས་གྲག་གོ།། बोधिसत्त्वभूतः किल महासत्त्वः परमनिपुणमतिर्नौसारथिर्बभूव जा.मा.79क/92; •*सं.* 1. धारा – རྡི་སྐྱེ་སྣ་རེ་རྣོ་ལྟ་བུའི། །བུད་མེད་ནང་དུ་མ་ཞུགས་པ། །དེ་སྲིད་རང་རིགས་སྙིག་མ་ནི། །མཐོན་པོ་རྣམ་གཉིས་མི་འགྱུར་རོ།། उन्नतानां स्ववंशानां द्वैधं तावन्न जायते। यावत्कुठारधारेव योषिद्विशति नान्तरम्॥ अ.क.282क/36.21 2. = རྣོ་བ་ཉིད तीक्ष्णता – བདག་གིས་ཅི་བསམས་མཆོག་ཏུ་སྨད་འོས་འདི། །ངེས་པར་རྣོ་བའི་རབ་བྱེད་འདི་ལྟ་ཅི།། किं चिन्तितं निन्द्यपरं मयैतत् कोऽयं प्रकारः खलु तीक्ष्णतायाः। अ.क.202क/22.92; तैक्ष्ण्यम् – སོགས་པ་སྨོས་པས… ཚེར་མའི་རྣོ་བ་ལ་སོགས་པ་གཟུང་ངོ་།། आदिग्रहणात्...कण्टकतैक्ष्ण्यादीनां च ग्रहणम् त.प.181क/79; पाटवम् – ཐོས་པ་མང་ཞིང་བློ་ཡང་རྣོ་བ་དང་།། श्रुताधिकारान्मतिपाटवाच्च जा.मा.78ख/90 3. = ལྕགས तीक्ष्णम्, लोहम् – लोहोऽस्त्री शस्त्रकं तीक्ष्णं पिण्डं कालायसायसी। अश्मसारः अ.को.2.9.98; तिज्यते तनूक्रियते शातनायेति तीक्ष्णम्। तिज निशातने अ.वि.2.9.98.

རྣོ་བ་ཉིད तीक्ष्णता – འཕང་མདུང་དང་ཁབ་དང་མདུང་དང་ཐུར་མ་ལ་སོགས་པ་རྣམས་ཀྱི་ལྕགས་ལ་སོགས་པའི་རང་བཞིན་ཉིད་ནི་མགར་བ་ལ་སོགས་པས་བྱེད་པ་མ་ཡིན

ཏེ། རྣོ་བ་ཉིད་བྱེད་པའི་ཡུལ་ཡིན་ནོ།། तोमरसूचीशूलतूलिकादीनां हि न लोहादिरूपता क्रियते लोहकारादिभिः तीक्ष्णतैव क्रियते प्र.अ.125क/133.

རྣོ་བ་དང་ལྡན་པ = རྣོ་ལྡན་པ།

རྣོ་བའི་ཤེས་རབ *वि.* तीक्ष्णप्रज्ञः, श्रावकस्य म.व्यु.1104 (24क).

རྣོ་བའི་སེམས་ལྡན *वि.* तीक्ष्णचित्तः – དེ་འོག་མི་བདག་ཐུགས་སྐྱོང་བརྩེ་བ་ཡིས། །མཉེན་པའི་གསུང་གིས་རབ་རྣོ་མཚོན་བས་ཀྱང་། །རྣོ་བའི་སེམས་ལྡན་དེ་རྣམས་མཚོན་རྣོན་གྱིས། །རང་ཉིད་སྤྱི་བོ་འགེམས་ལ་རབ་ཏུ་ཞུགས།། ततः कृपाकोमलचित्तवृत्तेः सुतीक्ष्णशस्त्रैर्वचसा नृपस्य । सुतीक्ष्णशस्त्रादपि तीक्ष्णचित्तः स्वयं शिरा पाटयितुं प्रवृत्तः ॥ अ.क.33क/3.158.

རྣོགས་པ अभिद्रुग्धम् म.व्यु.7647 (109क).

རྣོན = རྣོན་པོ།

རྣོན་པོ •*वि.* तीक्ष्णः – དབང་པོ་རྣོན་པོ तीक्ष्णेन्द्रियः अभि.भा.19क/935; མཚོན་ཆ་ནི། །རྣོན་པོས་ཀྱང་ནི་ཆོད་མི་འགྱུར།། भिद्यते न हि शस्त्रेण तीक्ष्णेनापि ज्ञा.सि.38ख/97; མཚོན་རྣོན་པོ་ཐོགས་ནས तीक्ष्णं शस्त्रं गृहीत्वा अ.सा.435ख/245; ལན་ཚྭའི་ཆུ་རྣོན་པོས तीक्ष्णेन खारोदकेन र.व्या.76ख/5; सुतीक्ष्णः – མཚོན་རྣོན་གྱིས सुतीक्ष्णशस्त्रैः अ.क.33क/3.158; खरः – བུད་མེད་སྤུ་གྲིའི་སོ་རྣོན་གྱིས་འཕྲལ་ལ་བཅད་ནས་འདོར་བར་བྱེད།། छित्वा हरन्ति सहसा क्षुरधाराखराः स्त्रियः ॥ अ.क.5ख/50.48; སྟག་མིག་རྣོན་པོ་ཡིས། །རྡོ་བའི་གཞི་ནི་ཉམས་བྱས་ཤིང་།། खरव्याघ्रखुरक्षुण्णशिलातलम् अ.क.129ख/66.52; कठिनः – བྱེད་པོ་གདུག་པས་རྩ་བ་འཇོམས་པ་ཡི། །སྟ་གྲི་རྣོན་པོ་འདི་ནི་ཆས་སུ་བྱས།། मूलाभिघाती विधुरेण धात्रा सज्जीकृतोऽयं कठिनः कुठारः ॥ अ.क.305ख/108.111; शितः – དེ་ཡིས་གཏད་པའི་མཚོན་རྣོན་གྱིས། །གཡོ་བ་མེད་པར་བཅད་ནས་ནི།། छित्वा तयोपनीतेन शितशस्त्रेण निश्चला । अ.क.15क/51.12; རལ་གྲི་རྣོན་པོས་བཅད་ནས་དྲངས་པ་དང་།། आकृष्यमाणं शितशस्त्रपातैः जा.मा.43क/50; निशितः – མཚོན་ཆ་རྣོན་པོ शस्त्रं निशितम् जा.मा.77क/89; མདའ་ལྡེའུ[མདེའུ]རྣོན་པོ་ཅན་ཕྱུང་ནས समुत्कृष्टनिशितसायकः जा.मा.146क/169; རལ་གྲི་རྣོན་པོ...བླངས་ཏེ निशितं निस्त्रिंशमादाय जा.मा.43क/50; पटु – སྣའི་དབང་པོ་རྣོན་པོས་དྲི་ཚོར་ནས पटुना घ्राणेनाघ्राय गन्धम् ल.अ.153ख/101; •*सं.* धारा – གནོད་སྦྱིན་ཁ་རྣོན་དག་གི་གནས། །དེ་ལས་སྣང་བ་མིན་གྱུར་ཏེ།། धारामुखस्य यक्षस्य स्थानादन्तर्हितस्ततः । अ.क.42क/56.2; •*ना.* तीक्ष्णः, नागः म.व्यु.3314 (57क).

རྣོན་མོ *ना.* निशिता, अर्थदत्तस्य पत्नी – རྒྱལ་པོའི་ཁབ་ན...དེད་དཔོན་དོན་བྱིན་གྱི། །ཆུང་མ་རྣོན་མོ་ཞེས་པ་ལ། །བུ་གཉིས་དག་ནི་དུས་གཅིག་ཏུ། །མཚེ་མ་ཉིད་དུ་བྱུང་བར་གྱུར།། राजगृहे...सार्थपतेरर्थदत्तस्य दारकौ। अभूतां निशिताख्यायां जायायां युगपद्यथा ॥ अ.क.260ख/95.3.

སྣ • *सं.* 1. नासिका – རྐང་པ་ལག་པ་དེ་བཞིན་རྣ་དང་སྣ། །སློང་བ་རྣམས་ལ་རབ་ཏུ་བགོས་[? རབ་ཏུ་དགས]བྱིན་ནོ།། हस्तपादमथ कर्णनासिका याचिता ददति संप्रहर्षिताः। रा.प.244ख/143; རིན་ཆེན་ཆེན་པོ་ཁ་དོག་ལྔ། །ཡུངས་ཀར་གྱི་ནི་འབྲུ་ཚད་ཙམ། །སྣ་ཡི་རྩེ་མོར་ནན་ཏན་དུ། །རྣལ་འབྱོར་གྱིས་ནི་རྟག་ཏུ་བསྒོམ།། पञ्चवर्णं महारत्नं सर्षपस्थूलमात्रकम्। नासिकाग्रे प्रय-

त्नेन भावयेद् योगतः सदा ॥ गु.स.96क/12; नासा– བདག་ཉིད་ཆེན་པོ་དེའི་ལག་པ་ཡ་གཅིག་དང་དཔུང་པ་གཉིས་དང་རྣ་བ་དང་སྣ་དང་རྐང་པ་གཉིས་ཀྱང་དེ་བཞིན་དུ་བཅད་དོ॥ तस्य महात्मनो द्वितीयं पाणिमुभौ बाहू कर्णनासं चरणौ तथैव निचकर्त जा.मा.171क/197; གླང་ཆེན་སྣ་འདྲ་རྟ་སྣ་འདྲ हस्तिनासा अश्वनासाः वि.सू.5क/5; घ्राणम् – སྣ་གཡས་པའི་བུག་པ་ནི་ཕུར་བུའོ॥ སྣ་གཡོན་པའི་བུག་པ་ནི་པ་སངས་སོ॥ दक्षिणघ्राणरन्ध्रं बृहस्पतिः, वामघ्राणरन्ध्रं शुक्रः वि.प्र.233ख/2.33; घोणा – མིག་མི་སྡུག་ལ་སྣ་ཡང་སྤུ་ཡི་འདྲ་བར་སྣང་॥ घोरेक्षणाः खुरनिकाशविरूपघोणाः जा.मा.81ख/94; नस्तः – སྣར་བླུགས་པའི་ལས་བྱའོ॥ དེ་ནི་སྣར་བླུགས་པའི་སྦྱོད་ཀྱིས་འགྲུབ་པོ॥ करणं नस्तकर्मणः। नस्तकरणेनास्य सम्पत्तिः वि.सू.77क/94; म.व्यु.9034 (125क) 2. शुण्डः, हस्तिहस्तः – རབ་གཏུམ་དབྱུག་པ་གླངས་འདྲའི་སྣ་ནི་གཡབ་མོའི་ཚོགས་འཕྱེད་ཕྱོགས་ཀྱི་བུད་མེད་འཇིགས་པ་ཡིས॥ उद्दण्डोच्चण्डशुण्डभ्रमणखलसत्साध्वसायासिताशा(?) अ.क.242क/28.20; तुण्डम् – གླང་པོ་ཆེའི་སྣ་ལྟར་ནར་བ་མ་ཡིན་པ न हस्तितुण्डावलम्बितम् म.व्यु.8528 (118क) 3. = མཐའ प्रान्तः – དེ་ནས་དེ་ལྟར་དེ་དག་གིས། །གསོལ་བཏབ་ཆོས་གོས་སྣ་ལ་འཕྱངས། །དེ་དག་ཁྱེར་ནས་དགེ་འདུན་སྲུངས། །རྫུ་འཕྲུལ་ཆེ་དེ་མཁའ་ལ་སོང་॥ इति तैरर्थितः सोऽथ चीवरप्रान्तलम्बिनः। तानादाय ययौ व्योम्ना महर्द्धिः सङ्घरक्षितः॥ अ.क.139ख/67.61 4. = རིགས प्रकारः – དེ་བཞིན་དུ་རན་པར་ཟ་བ་དང་... ཁ་ཟས་སྣ་གཅིག་ཟ་བ་དང तथा मात्राभोजी...एकप्रकाराशनभोजी बो.भू.144क/185; द्र.– རིན་པོ་ཆེ་སྣ་བདུན་གྱི་རང་བཞིན་གྱི་ར་བ་དེ་དག་གི तेषां च सप्तरत्नमयानां प्राकाराणाम् अ.सा.425ख/240; གངས་ཀྱི་རིའི་རྒྱལ་པོ་ལ་སྨན་སྣ་བཞི་ཡོད་དེ सन्ति तु हिमवति पर्वतराजे चतस्र ओषधयः स.पु.51ख/91; རྟག་ཏུ་གུ་གུལ་བདུག་པར་བགྱི། །སིལ་སྙན་སྣ་ལྔ་བསྒྲེད་དུ་སྩལ॥ गुग्गुलुं धूपयन्नित्यं पञ्चतूर्याणि योजयेत्। सु.प्र.29क/56; འདི་ཉིད་ནི་གདན་གྱི་པདྨ་སྟེ་ཤིང་སྟེན་གྱི་སྟེང་དུ་ཚོན་སྣ་ལྔས་བྲི་བར་བྱའོ॥ एतदेव पीठपद्मं पट्टोपरि लिखेत् पञ्चरङ्गैः वि.प्र.155क/3.104; བཅོམ་ལྡན་འདས་ཀྱིས་སྣ་གཅིག་སྤྱོད་པ་དང...ཡོངས་སུ་རྫོགས་པར་སྤྱོད་པའི་དགེ་བསྙེན་ཞེས་གསུངས་པ भगवता एकदेशकारी...परिपूर्णकारी चोपासक उक्तः अभि.भा.183क/626; ཚོན་སྣ་སྟོང་གིས་བྲིས་པ रङ्गसहस्रचित्रः अ.श.4ख/34 5. पदांशः – སེར་སྣ मात्सर्यम् प्र.सि.30ख/72; •पा. घ्राणम् 1. इन्द्रियविशेषः – དབང་པོ་ལྔ་པོ་མིག་དང་རྣ་བ་དང་སྣ་དང་ལྕེ་དང་ལུས་ཀྱི་དབང་པོ་རྣམས पञ्चेन्द्रियाणि–चक्षुःश्रोत्रघ्राणजिह्वाकायेन्द्रियाणि अभि.भा.29ख/30; དབང་པོ་རྣམས་ནི་དྲུག་སྟེ། །མིག་དང་རྣ་བ་སྣ་དང་ནི། །ལྕེ་དང་ལུས་དང་དེ་བཞིན་ཡིད॥ इन्द्रियाणि च षट्–चक्षुः श्रोत्रं च घ्राणं च जिह्वा कायो मनस्तथा। हे.त.18क/56 2. (सां.द.) बुद्धीन्द्रियविशेषः – བློའི་དབང་པོ་ལྔ་ནི། རྣ་བ་དང་པགས་པ་དང་མིག་དང་ལྕེ་དང་སྣའི་མཚན་ཉིད་ཅན་ནོ॥ पञ्च बुद्धीन्द्रियाणि श्रोत्रत्वक्चक्षुर्जिह्वाघ्राणलक्षणानि त.प.147क/21; •अव्य. पुरः – སྣ་དང་རྟིང་པའི་སྦུབས་ཅན་བཅང་བར་བྱའོ॥ धारयेत् पुरःपार्ष्णिपुटके वि.सू.74ख/91.

སྣ་ཀུན་ནས་དམའ་བ वि. अवटीटः, नतनासिकः श.को.764.

སྣ་སྐྱད <?> वाताष्ठीलः, देहस्थवायुविशेषः – གྱེན་དུ་འགྲོ་བའི་རླུང་དང་། ཐུར་དུ་འགྲོ་བ་དང... སྣ་སྐྱད་དང་ཨ-

ध्र्वङ्गमा वायवोऽधोगमाः...वाताष्ठीलाः शि.स.137ख /133.

སྣ་སྐམ = ཁན་སྐམ पीनसः, व्याधिविशेषः – प्रतिश्यायस्तु पीनसः अ.को.2.6.51; पीनं प्रवृद्धमप्यङ्गं स्यति व्यथयतीति पीनसः। षोऽन्तकर्मणि अ.वि.2.6.51.

སྣ་སྐྱེས = མདོ་རིས་སྨན་པ नासत्यौ, स्वर्वैद्यौ – स्वर्वैद्यावश्विनीसुतौ। नासत्यावश्विनौ दस्रावाश्विनेयौ च तावुभौ॥ अ.को.1.1.52; न असत्यौ नासत्यौ अ.वि.1.1.52.

སྣ་ཁུང = སྣ་བུག།

སྣ་ཁྲིད = སྣ་ཁྲིད་པ།

སྣ་ཁྲིད་པ = ཁ་ལོ་པ यन्ता, सारथिः – नियन्ता प्राजिता यन्ता सूतः क्षत्ता च सारथिः॥ अ.को.2.8.59; अश्वादीन् नियच्छतीति नियन्ता, यन्ता च। यम उपरमे अ.वि.2.8.59.

སྣ་འཁྱོག = འུག་པ वक्रनासिकः, पेचकः छो.को.484/रा.को.4.243.

སྣ་གྲངས་དུ་མ बहुप्रकारः – དེ་ལས་རྒྱུད་གཅིག་ལས་ཀྱང སྐད་ཀྱི་ཁྱད་པར་སྣ་དུ་མ་དང་ཁོང་དུ་འཆིག་པའི་སྣ་གྲངས དུ་མ་འབྱུང་བ་བསྟན་ཏོ॥ यत एकैकस्यां तन्त्र्यामनेके स्वरविशेषा मूर्च्छनाश्च बहुप्रकारा दर्शिताः अ.श.50ख/43.

སྣ་གླང་པོ་ཆེའི་ལྟ་བུ वि. हस्तिनासः म.व्यु.8842 (123क); द्र. གླང་ཆེན་སྣ་འདྲ།

སྣ་ཅན 1. = གླང་པོ་ཆེ करी, हस्ती – མི་ཕྱི་རྟ་དང་བ་ལང སྒྲོན། །སྣ་ཅན་དང་ནི་ཁྲུར་སྐྱེད་ཀྱིའང་॥ नरश्वहयगोदीपं करिणां गर्दभस्य च। ज्ञा.सि.37ख/94 2. = ཕག घोणी, शूकरः छो.को.409/रा.को.2.406.

སྣ་གཅིག་སྤྱོད = སྣ་གཅིག་སྤྱོད་པ།

སྣ་གཅིག་སྤྱོད་པ वि. एकदेशकारी – གལ་ཏེ་ཐམས་ཅད བསྡམས་ཡིན་ན། །སྣ་གཅིག་སྤྱོད་སོགས་ཇི་ལྟ་བུ॥ सर्वे चेत् संवृता एकदेशकार्यादयः कथम्। अभि.को.12क /625; म.व्यु.1609 (36ख).

སྣ་བཅད་པ विग्रः, गतनासिकः – विग्रस्तु गतनासिके अ.को.2.6.46; विगता छेदनादिना नासिका यस्य विग्रः अ.वि.2.6.46.

སྣ་ཆད་པ वि. छिन्ननासः – བུ་མོ་གཞོན་མོ་དར་མ་རྣམས སམ...རྣ་བ་ཆད་པའམ་སྣ་ཆད་པའམ बाला वृद्धास्तरुण्यो वा...छिन्नकर्णा वा, छिन्ननासा वा वि.प्र.164ख /3.138.

སྣ་ཆམས पीनसः, व्याधिविशेषः मि.को.52क।

སྣ་ཆུ = སྣབས सिंहाणम् – ཀུ་ལྟ་ཏ་ནི་པུས་མོ་སྟེ། །རྟག་ཏུ སྣ་ཆུ་འབབ་པས་གནས॥ कुलताजानुद्वयोः स्थित्वा बाल(?)सिंहाणवाहिनी॥ स.उ.272ख/7.15.

སྣ་ཆེ་བ वि. आयतनासः – མ་ཐམ་པ་འདི་ལྟར་ལྕེ་དང་སོ དང་མཆུ་སྲབ་ཅིང་སིན་ཏུ་ལེགས་པར་འགྱུར། སྣ་ཆེ་བ དང अपि तु खल्वजित सूक्ष्मसुजातजिह्वादन्तोष्ठो भवति, आयतनासः स.पु.131क/207.

སྣ་ཆེན 1. महामात्यः – ས་ཡི་བདག་པོ་བློ་གྲོས་ངན། །རྣམ་པར་མི་སྤྱོད་[? དཔྱོད་]སྤྱོད་ཚུལ་ངན། །སྣ་ཆེན བདེན་པ་ཉམས་པའི་ཚེ། །སྐྱེ་རྒུ་རྣམས་ནི་ག་ལ་འཚོ॥ निर्विचारे दुराचारे कुमतौ पृथिवीपतौ। लुप्तसत्ये महामात्ये प्रजानां जीवितं कुतः॥ अ.क.313ख/40.75 2. = གཙོ་བོ महामात्रः, प्रधानः – དེ་ནས་རྒྱལ པོས་བླང་ཆེན་གྱི། །སྣ་ཆེན་གནས་ནི་སྣར་ཡང་བྱིན།

།འབྱོར་པ་རྒྱ་ཆེན་ཐོབ་གྱུར་ནས། །དེ་ནས་ལྷག་པར་རྒྱས་པར་གྱུར།། अथ हस्तिमहामात्रपदं राज्ञार्पितं पुनः । आसाद्य विभवोदारः सोऽभूदभ्यधिकोद्भवः ॥ अ.क. 216ख/88.33; དེ་ཚེ་གླང་ཆེན་སྣ་ཆེན་པོ། །ཀུན་ཏུ་བསྒྲོད་ཀྱིས་དེ་ལ་སྨྲས།། तदा हस्तिमहामात्रः संयातस्तमभाषत। अ.क.269ख/100.7.

སྣ་ཆེན་པོ = སྣ་ཆེན།

སྣ་ཆེན་པོ་ལ་གཏོགས་པ महामात्रः म.व्यु.3679 (62क); महामात्यः लो.को.1430.

སྣ་ཆེན་མ *ना.* स्थूलनासा, पत्रदेवी, योगिनी वा – གཉིས་པ་ལ་སོགས་པ་ལ་དྲག་མོ་དང་དུས་ཀྱི་མཆེ་བ་མ་དང་...སྣ་ཆེན་མ་སྟེ་ཙར་ཙི་ཀཱའི་ནོར་འདབ་བརྒྱ་ལ་རང་གི་ཕྱོགས་རྣམས་སུའོ།། एवं द्वितीयादौ उग्रा, कालदंष्ट्रा ...स्थूलनासा कमलाष्टदलेषु चर्चिकायाः स्वदिक्षु वि.प्र.41क/4.29; པདྨའི་འདབ་མ་རྣམས་ལ་འཇིགས་མ་ལ་སོགས་པ་རྣལ་འབྱོར་མ་དྲུག་ཅུ་རྩ་བཞི་རྣམས་ཀྱི་ས་བོན་གསུངས་ཏེ...བརྒྱད་པ་ལ་སྣ་ཆེན་མའི་ཡཾ་དེ།། भीमादीनां चतुःषष्टियोगिनीनां बीजानि कमलदलेषूच्यन्ते...अष्टमे यं स्थूलनासायाः वि.प्र.132क/3.63.

སྣ་ཉག *वि.* चिपिटः – पृथुको चिपिटार्भकौ अ.को.3.3.3; द्र. སྣ་ཉེག།

སྣ་ཉག་ཉག = སྣ་ཉག། སྣ་ཉེག།

སྣ་ཉེག *वि.* = སྣ་ལེབ अवटीटः, नतनासिकः – अवटीटोऽवनाटश्चाऽवभ्रटो नतनासिके अ.को.2.6.45; अवनता नासिकाऽस्येति अवटीटः अ.वि.2.6.45; चिपिटः श्री.को.178ख।

སྣ་རྟའི་སྣ་བུ *वि.* अश्वनासः म.व्यु.8841 (123क).

སྣ་ཐག •*सं.* रश्मिः म.व्यु.5638 (སྲབ་སྒྲོགས་སམ་སྣ་ཐག 83क); སྣ་ཐག་དང་རྟའི་སྲབ་སྒྲོགས་ལའང་འཇུག मि.को.37क; •*वि.* = སྣ་ཐག་ཅན नस्तितः, नस्योतः– स्यान्नस्तितस्तु नस्योतः अ.को.2.9.63; नस्तः नासिकायां सूच्यादिना विद्धो नस्तितः । नस कौटिल्ये अ.वि.2.9.63; द्र. སྣ་ཐག་ཅན།

སྣ་ཐག་ཅན *वि.* नस्योतः, नस्तितः मि.को.37क; द्र. སྣ་ཐག།

སྣ་མཐོ་བ *वि.* उच्चघोणः – དཔྲལ་བའི་དབྱེས་ཆེ་བ། སྣ་མཐོ་བ། སྨིན་ལེགས་པ་སྨིན་མ་སྟུག་པ विस्तीर्णललाट उच्चघोषः [? घोणः] सङ्गतभ्रूस्तुङ्गनासः अ.श.64क/56.

སྣ་དྲངས *वि.* अग्रयायी – དགེ་སློང་ཚོགས་ཀྱིས་སྣ་དྲངས་ནས། །རིམ་གྱིས་བྱོན་པ་དེ་ལ་ནི།། क्रमेणागच्छतस्तस्य भिक्षुसङ्घाग्रयायिनः । अ.क.71क/60.27; पुरःसरः – རེ་བ་བཅས་པ་བསྟན་པ་ཡིས། །ལམ་ནས་དགའ་བས་སྣ་དྲངས་ཏེ།། आशाबन्धोपदिष्टेन पथा हर्षपुरःसरः ॥ अ.क.22ख/52.35; पुरस्तान् नीयमानः – ཁྱོགས... མི་བཞིས་བཏེག་ནས་མགྲོགས་མེས་ནི་སྣ་དྲངས शिविकां ...चतुर्भिः पुरुषैरुत्क्षिप्ताम् उल्कां च पुरस्तान्नीयमानाम् वि.व.155क/1.43.

སྣ་འདྲེན་པ* *वि.* = སྔོན་འགྲོ་འམ་མདུན་འགྲོ अग्रतःसरः, पुरोगामी – पुरोगाग्रेसरप्रष्ठाग्रतःसरपुरःसराः । पुरोगमः पुरोगामी अ.को.2.8.72; अग्रतः सरति गच्छतीति अग्रतःसरः अ.वि.2.8.72; मि.को.50क।

སྣ་འདྲེན་པ = ཁ་ལོ་པ यन्ता, सारथिः – नियन्ता प्राजिता यन्ता सूतः क्षत्ता च सारथिः ॥ अ.को.2.8.59; अश्वादीन् नियच्छतीति नियन्ता, यन्ता च । यम उपरमे अ.वि.2.8.59.

སྣ་ལྡན *वि.* नासिक्यम् – སྣ་ལྡན་དབུས་ན་གསལ་བྱེད་བཞིས། །ཡོངས་སུ་རྣམ་པར་བརྒྱན་པ་ཡི། །གྲོང་ཁྱེར་འགའ་ཡོད་གང་ཞིག་ན། །མི་བདག་ཡིག་བརྒྱད་མིང་ཅན་ཡོད།། नासिक्यमध्या परितश्चतुर्वर्णविभूषिता। अस्ति काचित्पुरी यस्यामष्टवर्णाख्या नृपाः ॥ का.आ. 338ख/3.114.

སྣ་རྣམ་པར་དག་པ घ्राणविशुद्धिः – མིག་རྣམ་པར་དག་པ་དང་...སྣ་རྣམ་པར་དག་པ་དང་...ཡིད་རྣམ་པར་དག་པ་དེ་ལྟ་བུ་ཐོབ་བོ།། इमां चैवंरूपां चक्षुर्विशुद्धिं...घ्राणविशुद्धिं... मनोविशुद्धिं च प्रतिलब्धवान् स.पु.141क/225.

སྣ་རྣམས་སྦྱོང་བ घ्राणविशोधनी, रश्मिविशेषः – སྣ་རྣམས་སྦྱོང་བའི་འོད་ཟེར་རབ་གཏོང་ཞིང་། །སྔོན་ཆད་མ་ཚོར་དྲི་ཞིམ་ཚོར་བར་འགྱུར།། घ्राणविशोधनि मुञ्चति रश्मीन् घ्रायि अघ्रायितपूर्व सुगन्धान्। शि.स.182क/181.

སྣ་སྤྲེའུའི་ལྟ་བུ *वि.* मर्कटनासः म.व्यु.8844 (123क).

སྣ་ཕག་གི་ལྟ་བུ *वि.* शूकरनासः म.व्यु.8846 (123क).

སྣ་ཕྱུག་པ *वि.* = སྣ་ཞབ་ཅན नस्तितः, नस्योतः मि.को. 37क।

སྣ་བ = སྣ།

སྣ་བ་ཕག་པའི་ལྟ་བུ = སྣ་ཕག་གི་ལྟ་བུ།

སྣ་བ་ལང་གི་ལྟ་བུ *वि.* गोनासः म.व्यु.8843 (123क).

སྣ་བའི་རྣམ་པར་ཤེས་པ = སྣའི་རྣམ་པར་ཤེས་པ།

སྣ་བུག = སྣའི་བུག་པ नासापुटम् – སྣ་བུག་གཡོན་པར वामनासापुटे वि.प्र.237क/2.40; གཡས་ཀྱི་སྣའི་བུག་པར सव्यनासापुटे वि.प्र.237क/2.40; नासारन्ध्रम् – སྣ་བུག་དག་ལ नासारन्ध्रयोः वि.प्र.115क/1, पृ.13; नासिकापुटम् – སྣ་བུག་ཏུ་ཆུད་པའི་མེ་ཏོག་ལ་སོགས་པའི་དྲི་སྣོམ་པ नासिकापुटविन्यस्तकुसुमामोदं जिघ्रति त.प.7ख/460; घ्राणरन्ध्रम् – སྣའི་བུག་པ་དག་ལ་ཨེ་ཨཻ་དག་གིས་སོ།། एऐभ्यां घ्राणरन्ध्रयोः वि.प्र.102क/3.23; སྣ་གཡས་པའི་བུག་པ་ནི་ཕུར་བུའོ།། སྣ་གཡོན་པའི་བུག་པ་ནི་པ་སངས་སོ།། दक्षिणघ्राणरन्ध्रं बृहस्पतिः, वामघ्राणरन्ध्रं शुक्रः वि.प्र.233ख/2.33; द्र.– སྒྲ་ནི་དམིགས་པའི་དུས་སུ་ནི། །རྣ་བ་ཞེགས་པར་བྱས་པ་དང་། །སྣ་བུག་[? རྣ་བུག་]མཐའ་ལ་གནས་གྱུར་པའི། །རླུང་རྣམས་རྟོགས་པར་འགྱུར་བ་མིན།། शब्दोपलम्भवेलायां कर्णपर्यन्तवर्तिनः। न वायवोऽवगम्यन्ते श्रोत्रसंस्कारकारिणः॥ त.स.90ख/819.

སྣ་བོ ग्रामणी – དེའི་ཕྱིར་སྣ་བོ་དག་ཁྱེད་ཅག་རང་རང་གི་ཡུལ་འཁོར་ཆོས་ཀྱིས་རྗེས་སུ་བསྐྱང་བར་བྱའི་ཆོས་མ་ཡིན་པས་ནི་མ་ཡིན་ནོ།། तेन हि यूयं ग्रामण्यः स्वकस्वकानि विजितानि समनुशासथ धर्मेण माऽधर्मेण वि.व.137ख/1.27; राजभटः – སྣ་བོ་བསྐོས་ཏེ་དཔྱ་ཁྲལ་བཅད། གཉེའུ་ཡང་བཟུང་ངོ་།། राजभटाः स्थापिताः, निपकाश्च गृहीताः, करप्रत्ययाश्च निबद्धाः वि.व.211ख/1.86; *चित्रकः – ལྷ་ཁྱོད་ཀྱི་བཀའ་དྲིན་གྱིས་རི་འོར་བ་ཕབ་སྟེ་གཉེའུ་བཟུང་། སྣ་བོ་བསྐོས་ལགས་ཏེ देव तव प्रसादात् कर्वटकः सन्नामितः। नीपका गृहीताः। चित्रकः स्थापितः वि.व.213ख/1.89.

སྣ་བོང་བུའི་ལྟ་བུ *वि.* खरनासः म.व्यु.8845 (123क).

སྣ་འབུགས་པ नासिकाभेदनम् – འདི་ལྟར་ཁ་ཅིག་སྣ་འབུགས་པ་དང་བརྡེག་པ་དང་བཅིང་བ་དང་གདགས་པ་ལ་སོགས་པ་བདག་ལ་དབང་མེད་པར་ཀུན་གྱིས་བདའ་བ་ཡིན་ཏེ तथा हि केचिन्नासिकाभेदनताडनबन्धना-

दिभिः अतन्त्रीकृतशरीराः परितः परिपीड्यमानाः भा.क्र.23क/188.

སྣ་སྦྲུགས་གཅིག = སྣ་སྦྲུགས་གཅིག་པ།

སྣ་སྦྲུགས་གཅིག་པ *वि.* एकनासः – བོང་བུའི་སྣ་འདྲ་ཕག་སྣ་འདྲ། །སྣ་སྦྲུགས་གཅིག་དང་སྣ་མེད་དང་། खरसूकरनासाश्च एकनासा अनासकाः ॥ वि.सू.5क/5; द्र. སྣ་སྦྲུབས་གཅིག་པ།

སྣ་སྦྲུབས་གཅིག་པ *वि.* एकनासः म.व्यु.8847 (123क); द्र. སྣ་སྦྲུགས་གཅིག་པ།

སྣ་སྦྲིད क्षवः, व्याधिविशेषः – क्षवः སྦྲིད་ནད་དེ་སྣ་སྦྲིད मि.को.52ख।

སྣ་མ ● *सं.* = སྣ་མའི་མེ་ཏོག सुमनाः, पुष्पविशेषः – སྣ་མའི་མེ་ཏོག་གི་ཕྲེང་བས་དེ་གཉིས་དེད་དོ། सुमनादामकेन च वाह्यमानौ ल.वि.182ख/277; जाती – དེ་བཞིན་དུ་མེ་ཏོག་དྲི་ཞིམ་པ་སྣ་མའི་མེ་ཏོག་དང་ཀླུ་སྤོས་དང་གླུའི་མེ་ཏོག་དང་མེ་ཏོག་པུ་ནྣཱ་ག་ལ་སོགས་པ एवं सुगन्धपुष्पान् जातीतगरनागपुष्पपुन्नागप्रभृतिम् म.मू.124ख/33; जातिः – सुमना मालती जातिः अ.को.2.4.72; जायते प्रीतिरनया इति जातिः । जनी प्रादुर्भावे अ.वि.2.4.72; मालती – སྣ་མའི་མེ་ཏོག་ཕྲི་ཡང་གུ། །དེ་བཞིན་ཀུ་ར་བ་ཀ་དང་། मालतीकुसुमं चैव प्रियङ्गुकुरबकम् म.मू.174क/97; ● *ना.* सुमनाः, दारकः – སྣ་མ་ཞེས་མིང་བཏགས་སོ། ...དེ་ནས་གནས་བརྟན་མ་འགགས་པས་དེ་ལ་ཆོས་གོས་ཆོན་ཅན་དག་བྱིན་ཏེ सुमना इति नामधेयं व्यवस्थापितम् ।... ततः स्थविरानिरुद्धेनास्मै काषायाणि दत्तानि अ.श. 220ख/204; བཅོམ་ལྡན་འདས་ཀྱིས ...སྣ་མ་བསྔོད་ཅིང་བསྔགས་པ भगवता सुमनाः...स्तुतः प्रशस्तः अ.श. 221क/205; द्र. སྣ་མའི་མེ་ཏོག།

སྣ་མའི་མེ་ཏོག ● *सं.* सुमनाः – སྣ་མའི་མེ་ཏོག་ནྭ་ཀྲུན་བྱས། །མགོ་ལ་མེ་ཏོག་ཕྲེང་བཅིངས་ནས།། कर्णे सुमनसं कृत्वा मालां च मूर्धनि । वि.व.288क/1.108; द्रष्ट. སྣ་མ། ● *ना.* सुमनाः, स्थविरो भिक्षुः – དེ་ནས་དགེ་སློང་གནས་བརྟན་གནས་བརྟན་རྣམས་ཀྱིས་ཚེ་དང་ལྡན་པ་སྣ་མའི་མེ་ཏོག་ལ་འདི་སྐད་ཅེས་སྨྲས་སོ།། अथ स्थविरस्थविरा भिक्षवः आयुष्मन्तं सुमनस[मिदमवोचन्] वि.व.288क/1.108; द्र. སྣ་མ།

སྣ་མའི་མེ་ཏོག་འོད सुमनापुष्पप्रभः लो.को.1431.

སྣ་མི་འཐུན་པ *वि.* विरुद्धः – དེ་ནས་དེ་དག་གིས་དེ་ཚང་གར་པོ་སྣ་མི་མཐུན་པས་གཏུ་ལུམ་པར་བྱས་ནས ततस्तैस्तं घनघनेन विरुद्धमद्येन पानेन क्षीवं कृत्वा अ.श.215ख/198.

སྣ་མེད *वि.* अनासकः – བོང་བུའི་སྣ་འདྲ་ཕག་སྣ་འདྲ། །སྣ་སྦྲུགས་གཅིག་དང་སྣ་མེད་དང་། खरसूकरनासाश्च एकनासा अनासकाः ॥ वि.सू.5क/5; म.व्यु.8848 (123क).

སྣ་མེད་པ = སྣ་མེད།

སྣ་རྩེ नासाग्रम् – སྣ་རྩེར་ཡུངས་ཀར་དུ་གྲགས་པ། །དེ་ཡང་སྲོག་རྩོལ་ཉིད་དུ་བཤད། नासाग्रे सर्षपः ख्यातः प्राणायामः स च स्मृतः ॥ वि.प्र.62ख/4.110.

སྣ་ཚིམ घ्राणतर्पणः, गन्धद्रव्यः – सुरभिर्घ्राणतर्पणः । इष्टगन्धः सुगन्धिः स्यात् अ.को.1.5.11.

སྣ་ཚོགས ● *वि.* 1. चित्रः – རྣམ་ཤེས་དབའ་རླབས་སྣ་ཚོགས་ཀྱིས། །གར་བྱེད་རབ་ཏུ་འདུད་[? འཇུག་]པར་འགྱུར། །གཟུང་དང་འཛིན་པའི་དངོས་པོར་ནི། །ལུས་ཅན་རྣམས་ཀྱི་སེམས་འཇུག་གོ[? འདུད་དོ]།། चित्रैस्तरङ्ग-

विज्ञानैर्नृत्यमानः प्रवर्तते ॥ ग्राह्यग्राहकभावेन चित्तं नमति देहिनाम् । ल.अ.161क/111; ཡིད་ཀྱི་ལུས་ནི་སྣ་ཚོགས་ལ། །དབང་གི་མེ་ཏོག་དག་གིས་བརྒྱན།། कायो मनोमयश्चित्रो वशितापुष्पमण्डितः ॥ ल.अ.110क/56; विचित्रः – ལྷ་དང་ལྷ་མ་ཡིན་གྱི་འཇིག་རྟེན་ཚིག་དང་ཡི་གེ་སྣ་ཚོགས་ཀྱིས་རྨམ་པར་རྨོངས་པར་བྱེད་དོ།། देवासुरलोकं विचित्रपदव्यञ्जनैर्व्यामोहयति ल.अ.124ख/71; བདུག་པ་སྣ་ཚོགས་ཀྱིས་ནི་བདུགས།། विचित्रधूपधूपितम् अ.श.40ख/35; གཞལ་མེད་ཁང་ཆེན་པོ་རྒྱལ་མཚན་སྣ་ཚོགས་དེར तस्मिंश्च विचित्रध्वजे महाविमाने ग.व्यू.365ख/79; विश्वः – ཁྱབ་འཇུག་གཟུགས་སྣ་ཚོགས་སུ་སྟོན་པ विष्णोर्विश्वरूपसन्दर्शनम् अभि.स्फु.6क/10; གཟུགས་སྣ་ཚོགས་འཆང་བ་ཆེན་པོ महाविश्वरूपधारिणः ल.अ.58ख/5; विश्वरूपः – ཇི་ལྟར་སྣ་ཚོགས་ནོར་བུ་བཞིན། །སེམས་ཅན་རྣམས་ཀྱི་དོན་བྱེད་དེ།། विश्वरूपो मणिर्यथा । करोति सत्त्वकृत्यानि ल.अ.191ख/165; शबलः – སྣ་ཚོགས་སུ་ནི་སྣང་བ་ཡི།། शबलाभासस्य प्र.अ.191क/545; नाना – ཁ་དོག་སྣ་ཚོགས་མེ་ཏོག་རྣམས། །ལྷུང་བའི་ཚོགས་ཀྱིས་རབ་བསྲས་པ། །དགའ་བའི་ནགས་ཚལ नानावर्णपतत्पुष्पप्रकारप्रचितानि...वनानि रम्याणि अ.क.252क/29.48; སྣ་ཚོགས་རྒྱན་གྱིས་རྣམ་པར་བརྒྱན།། नानालङ्कारभूषितः गु.सि.24क/51; སྣ་ཚོགས་རྒྱུད་དུ་བསྟན་པ་ནི།། नानातन्त्रेषु निर्दिष्टम् ज्ञा.सि.47क/121; ནད་སྣ་ཚོགས་ཀྱིས་ཐེབས नानाव्याधिस्पृष्टाः ग.व्यू.167क/250; नानाप्रकारः – དཔེར་ན་གཉིད་དང་འབྲེལ་པ་ཙམ་གྱིས་ནི་རྨི་ལམ་སྣ་ཚོགས་མཐོང་བ་མ་ཡིན་པ་བཞིན་ནོ།། तद्यथा–न सि[? मि]द्धसम्बन्धमात्रादेव नानाप्रकारस्वप्नदर्शनम् प्र.अ.62ख/71; नानाविधः – ཐེ་མོའི་གཏམ་ནི་སྣ་ཚོགས་དང་།། नानाविधप्रलापेषु बो.अ.12क/5.45; विविधः – ཞལ་ཟས་བཟའ་བཏུང་སྣ་ཚོགས་བཅས་པ་ཡི། །ལྷ་བཤོས་རྣམས་ཀྱང་དེ་ལ་དབུལ་བར་བགྱི།། भोज्यैश्च खाद्यैर्विविधैश्च पेयैस्तेभ्यो निवेद्यं च निवेदयामि ॥ बो.अ.4ख/2.16; དགེ་བ་སྒྲུབ་པ་སྣ་ཚོགས་ལ། །དགའ་བས་རྟག་པར་ཐམས་ཅད་དུ། །གནས་ཕྱིར विविधे शुभनिर्हारे रत्या विहरणात्सदा । सर्वत्र सू.अ.295ख/175; अनेकः – བག་ཆགས་རྣམས་ནི་རྣམ་པ་སྣ་ཚོགས་པ་ཡིན་པའི་ཕྱིར་རོ།། वासनानामनेकाकारत्वात् प्र.अ.63क/71 2. = ཀུན विश्वम्, सर्वम् – अथ समं सर्वम् ॥ विश्वमशेषं कृत्स्नं समस्तनिखिलाखिलानि निःशेषम् । समग्रं सकलं पूर्णमखण्डं स्यात् अ.को.3.1.62; •सं. 1. विश्वम् – གཡོ་བ་དང་མི་གཡོ་བ་སྣ་ཚོགས་མཐའ་དག ...བདེ་བ་ཆེན་པོའི་རང་བཞིན་རྣམ་པར་འགྱུར་རོ།། सकलमेव चलाचलं विश्वमेव महासुखाकारं स्यात् त.सि.66ख/175; སྣ་ཚོགས་ཡུམ विश्वमाता वि.प्र.60ख/4.106 2. = སྣ་ཚོགས་ཉིད चित्रता – རྣལ་འབྱོར་ཅན་གྱི་དངོས་པོ་ལྟར། །སྣ་ཚོགས་གཅིག་ཏུ་རྣམ་མཛེས་ཀྱང་། །དེ་ལ་སྣ་ཚོགས་ཡོད་པ་མིན།། यथा हि योगिनां वस्तु चित्रमेकं विराजते । न ह्यस्ति चित्रता तत्र ल.अ.107ख/53; विचित्रता – རྒྱ་མཚོ་ཡོངས་སུ་གྱུར་པ་ནི། །དབའ་རླབས་སྣ་ཚོགས་དེ་དག་སྟེ།། उदधेः परिणामोऽसौ तरङ्गाणां विचित्रता । ल.अ.73क/21; वैचित्र्यम् – ལས་ལས་འཇིག་རྟེན་སྣ་ཚོགས་སྐྱེས།། कर्मजं लोकवैचित्र्यम् अभि.स्फु.10क/17; དུ་མའི་བདག་ཉིད་སྣ་ཚོགས་ཏེ། །གཅིག་པུ་ཉིད་དང་འགལ་བ་ཡིན།། नानात्मना हि वैचित्र्यमेकत्वेन विरुध्यते ॥ त.स.63ख/600; ཐམ་ཟེ་གཅེར་བུ་སེར་སྐྱ་པས། །རྟོག་པས་དཔྱད་པ་ཉིད་དུ་ནི། །སྣ་ཚོགས་སུ་ནི་བརྗོད་པ་ན། །ཅི་ཞེས་ཡུལ་དུ་བྱུང་བ་སྨྲས།། कल्पनारचितस्यैव वैचित्र्यस्योपवर्णने। को नामा-

तिशयः प्रोक्तो विप्रनिर्ग्रन्थकापिलैः ॥ त.स.65[क]/611; नानात्वम् – སྣ་ཚོགས་ཀྱི་འདུ་ཤེས་དང་བྲལ་བའི་ཆོས་ཀྱི་དགའ་བ་ལ་ཡང་དགའ་བ་འཐོབ་པར་འགྱུར नानात्वसंज्ञाविगतिं च धर्मारामरतिं प्रतिलभते सू.व्या. 254[ख]/173; •ना. 1. चित्रा, नदी – ཆུ་བོ...ནང་ག་ཙེ་མ་ཞེབ་གདུངས་དང་། །སྣ་ཚོགས་དུད་མོ་དགོད་པ་དང་॥ नद्यः...नङ्गा पतङ्गा तपनी चित्रा रुदनी हसनी वि.व. 213[ख]/1.88; (द्र. སྣ་ཚོགས་ཅན།) 2. विश्वा (?), पुरी – སྣ་ཚོགས་ཞེས་པའི་གྲོང་ཁྱེར་བྱུང་།...།དེར་ནི་མི་བདག...ཀུན་ཏུ་རྒྱལ་བ་ཞེས་པ་བྱུང་॥ पुरी बभूव विश्वाख्या...संजयाख्योऽभवत् तस्याम्...नृपः ॥ अ.क.203[ख]/23.5 3. विश्वे, गणदेवताः – आदित्यविश्ववसवस्तुषिताभास्वरानिलाः। महाराजिकसाध्याश्च रुद्राश्च गणदेवताः ॥ अ.को.1.1.10; श्राद्धादौ अग्रे उपविशन्तीति विश्वे। विश प्रवेशने। ते त्रयोदशे अ.वि.1.1.10; •पा. विचित्रम्, क्षणभेदः – སྣ་ཚོགས་དང་ནི་རྣམ་སྨིན་དང་། །རྣམ་ཉེད་དེ་བཞིན་མཚན་ཉིད་བྲལ། །སྐད་ཅིག་བཞི་ནི་རབ་ཤེས་པ། །དེ་ལྟར་རྣལ་འབྱོར་པས་ཤེས་འགྱུར॥ विचित्रं च विपाकं च विमर्दो विलक्षणं तथा। चतुःक्षणसमागम्यमेवं जानन्ति योगिनः ॥ हे.त.16[ख]/52; द्र. རྣམ་པ་སྣ་ཚོགས།

སྣ་ཚོགས་ཀྱི་རྒྱལ་པོ *ना.* चित्रराजः, रोमविवरः – སྣ་ཚོགས་ཀྱི་རྒྱལ་པོ་ཞེས་བྱ་བའི་བ་སྤུའི་ཁུང་བུ་དེ་ན་རང་སངས་རྒྱས་བྱེ་བ་ཁྲག་ཁྲིག་བརྒྱ་སྟོང་ཕྲག་སྟོང་དུ་མ་གནས་ཏེ चित्त[? चित्र]राजो नाम रोमविवरः। तत्रानेकानि प्रत्येकबुद्धकोटिनियुतशतसहस्राणि प्रतिवसन्ति का.व्यू.240[क]/302.

སྣ་ཚོགས་ཀྱི་འདུ་ཤེས नानात्वसंज्ञा – སྣ་ཚོགས་ཀྱི་འདུ་ཤེས་དང་བྲལ་བའི་ཕྱིར་བསྙེལ་བ་མི་མངའ་བ་ཞེས་བྱའོ॥ नानात्वसंज्ञाविगतत्वान्नानात्वसंज्ञाविगत इत्युच्यते ल.वि.211[क]/313.

སྣ་ཚོགས་ཀྱི་འདུ་ཤེས་དང་བྲལ་བ नानात्वसंज्ञाविगतः, बुद्धस्य नामपर्यायः – བྱམས་པ་དེ་བཞིན་གཤེགས་པས་ཆོས་ཀྱི་འཁོར་ལོ་རྣམ་པ་འདི་ལྟ་བུ་བསྐོར་ཏེ། དེ་བསྐོར་བས་དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་ལ་དེ་བཞིན་གཤེགས་པའོ་ཞེས་བྱའོ॥...སྣ་ཚོགས་ཀྱི་འདུ་ཤེས་དང་བྲལ་བ་ཞེས་བྱའོ॥ एवंरूपं मैत्रेय तथागतेन धर्मचक्रं प्रवर्तितम्, यस्य प्रवर्तनात् तथागत इत्युच्यते... नानात्वसंज्ञाविगत इत्युच्यते ल.वि.211[क]/313.

སྣ་ཚོགས་ཀྱི་ཚིག वैचित्र्यपदम्, अष्टोत्तरशतपदान्तर्गतपदविशेषः – བཅོམ་ལྡན་འདས་ཚིག་བརྒྱ་རྩ་བརྒྱད་པོ་གང་ལགས། བཅོམ་ལྡན་འདས་ཀྱིས་བཀའ་སྩལ་པ། སྐྱེ་བའི་ཚིག་དང་མི་སྐྱེ་བའི་ཚིག་དང...སྣ་ཚོགས་ཀྱི་ཚིག་དང་སྣ་ཚོགས་མེད་པའི་ཚིག་དང कतमद्भगवन् अष्टोत्तरपदशतम् ? भगवानाह – उत्पादपदम्, अनुत्पादपदम् ... वैचित्र्यपदम्, अवैचित्र्यपदम् ल.अ.69[क]/17.

སྣ་ཚོགས་ཀྱི་གཟུགས་ཅན *वि.* विश्वरूपः – སྣ་ཚོགས་ཀྱི་གཟུགས་ཅན་ཡིད་བཞིན་གྱི་ནོར་བུ་ལྟ་བུ विश्वरूपचिन्तामणिसदृशाः ल.अ.83[ख]/31.

སྣ་ཚོགས་བཀོད་པ विचित्रव्यूहः, रश्मिविशेषः – སྣ་ཚོགས་བཀོད་པའི་འོད་ཟེར་རབ་གཏོང་ཞིང मुञ्चति रश्मि विचित्रवियूहान् शि.स.181[ख]/181.

སྣ་ཚོགས་རྐྱེན་ལས་བྱུང་བ *वि.* नानाप्रत्ययसंभवः – སྣ་ཚོགས་རྐྱེན་ལས་བྱུང་བ་ཡི། །སྒྱུ་མ་དེ་ཡང་སྣ་ཚོགས་ཉིད॥ साऽपि नानाविधा माया नानाप्रत्ययसंभवा। बो.अ.31[क]/9.12.

སྣ་ཚོགས་མཁའ་འགྲོ = སྣ་ཚོགས་མཁའ་འགྲོ་མ།

སྣ་ཚོགས་མཁའ་འགྲོ་མ *ना.* विश्वडाकिनी, डाकिनी लो.को.1432.

སྣ་ཚོགས་གྱུར *वि.* चित्रितः – སྣ་ཚོགས་གྱུར་གྱི་སེམས་ལ་ལྟོས चित्तं पश्यथ चित्रिक[? त]म् ल.अ.162क/ 112.

སྣ་ཚོགས་འགེངས 1. = ས་གཞི विश्वम्भरा, पृथ्वी – भूर्भूमिरचलानन्ता रसा विश्वम्भरा स्थिरा। अ.को. 2.1.2; विश्वं बिभर्तीति विश्वम्भरा। डुभृञ् धारण-पोषणयोः अ.वि.2.1.2 2. = ཁྱབ་འཇུག विश्वम्भरः, विष्णुः छो.को.486/रो.को.4.439.

སྣ་ཚོགས་རྒྱན चित्राभरणम् – ཁྲུས་དང་གཙང་སྦྲ་དྲི་ཞིམ་ལུས། །སྣ་ཚོགས་རྒྱན་གྱིས་རྣམ་པར་བརྒྱན།། स्नातः शुचिः सुगन्धाङ्गो चित्राभरणभूषितः। हे.त.12ख/38; विचित्रालङ्कारः म.व्यु.3433 (59क).

སྣ་ཚོགས་རྒྱན་གྱི་དབྱངས *ना.* विचित्रालङ्कारस्वरः, महोरगाधिपतिः म.व्यु.3433 (59क).

སྣ་ཚོགས་རྒྱན་གྱིས་རྣམ་པར་བརྒྱན *वि.* चित्राभरण-भूषितः – ཁྲུས་དང་གཙང་སྦྲ་དྲི་ཞིམ་ལུས། །སྣ་ཚོགས་རྒྱན་གྱིས་རྣམ་པར་བརྒྱན།། स्नातः शुचिः सुगन्धाङ्गो चित्राभरणभूषितः। हे.त.12ख/38.

སྣ་ཚོགས་སྐྱབ་བྱེད = ཚངས་པ विरिञ्चिः, ब्रह्मा – ब्रह्मात्मभूः...विरिञ्चिः कमलासनः अ.को.1.1.17; विरिणक्तीति विरिञ्चिः। रिचिर् विरेचने। विचिर् पृथग्भावे। विभिः हंसै रिच्यते उह्यते विरिञ्चः इति वा पाठः अ.वि.1.1.17.

སྣ་ཚོགས་ངོ་བོ *•वि.* विश्वरूपः – མི་མཐོང་རྣམ་གསུམ་ཅན་འདི་ཡང་། །སྣ་ཚོགས་ངོ་བོར་འཇུག་འགྱུར་ཏེ།། इयं च त्रिविधाऽदृष्टिर्विश्वरूपा प्रवर्तते। त.स.119ख/1034; *• सं.* वैश्वरूप्यम् – བློ་རྣམས་སྣ་ཚོགས་ངོ་བོའི་ཕྱིར། །དོན་རྣམས་སྣ་ཚོགས་ངོ་བོ་ཉིད།། वैश्वरूप्याद् धियामेव भावानां विश्वरूपता। प्र.वा.126क/2.204.

སྣ་ཚོགས་ངོ་བོ་ཉིད विश्वरूपता – བློ་རྣམས་སྣ་ཚོགས་ངོ་བོའི་ཕྱིར། །དོན་རྣམས་སྣ་ཚོགས་ངོ་བོ་ཉིད།། वैश्वरूप्याद् धियामेव भावानां विश्वरूपता। प्र.वा.126क/2.204.

སྣ་ཚོགས་ཅན *•वि.* नानाविधः – ཚོན་སྣ་སྟོང་གིས་སྤེལ་བ་སྣ་ཚོགས་ཅན།། नानाविधो रङ्गसहस्रचित्रः अ.श.4ख/3; *• ना.* चित्रा, नदी – ནང་ག་ན་ནི་སྲིན་མོ་ཁྲོ།...།སྣ་ཚོགས་ཅན་ན་འདོད་སྒྱུར་གཟུགས།། नङ्गायां राक्षसीकोपाः...चित्रायां कामरूपिणः वि.व.213ख/1.88; द्र. སྣ་ཚོགས།

སྣ་ཚོགས་ཆུ་སྐྱེས *पा.* विश्वाब्जम् – དེའི་དབུས་སུ་ཀྵཱཿ་ཡིག་ཡོངས་སུ་གྱུར་པ་ལས་ལྷུན་པོའི་ཚད་ཕྱེད་ཀྱིས་སྣ་ཚོགས་ཆུ་སྐྱེས་སོ།། तन्मध्ये विश्वाब्जं मेरुप्रमाणार्धेन क्षँकारपरिणतम् वि.प्र.33क/4.8.

སྣ་ཚོགས་ཉིད नानात्वम् – གང་ཕྱིར་མ་བརྟགས་དབྱེ་བ་ནི། །སྣ་ཚོགས་ཉིད་དུ་མངོན་པར་བརྗོད།། अकल्पितो विभेदो हि नानात्वमभिधीयते ॥ त.स.63क/598; चित्रत्वम् – དེ་མ་ཐག་ཏུ་འགག་པའི་ཕྱིར། །གཅིག་ནི་སྣ་ཚོགས་ཉིད་མ་ཡིན།། चित्रत्वमेकत्वं प्रतिषिद्धं ह्यनन्तरम् त.स.64क/603; विमात्रता – སྣོད་རྣམས་སྣ་ཚོགས་ཉིད་ལས་ནི། ཇི་ལྟར་བསིལ་ཞིང་མངར་དང་འཇམ་པ་དང་། །ཡང་བའི་ཆུ་ནི་སྤྲིན་དེ་ལས་འཐོན་པ།། भाजनविमात्रतायाम्–शीतं स्वादु प्रसन्नं मृदु लघु च पयस्तत्पयोदाद्विमुक्तम् र.व्या.124ख/105; वैश्वरूप्यम् – མཐའ་དག་གི་སྣ་ཚོགས་ཉིད་རྒྱུ་མེད་པ་ཅན་དུ་འགྱུར་བའམ་ཐམས་ཅད་ལས་ཐམས་ཅད་སྐྱེ་བར་འགྱུར་རོ།། अ-

कारणं विश्वस्य वैश्वरूप्यं स्यात्, सर्वं वा सर्वस्माज्जायेत प्र.वृ.273क/14.

སྣ་ཚོགས་གཉིས་མེད་ चित्राद्वैतम् – བདག་ཀུང་དོན་དམ་པ་པ་མ་ཡིན་པར་འགྱུར་རོ།། དེ་སྟེ་གཉིས་མེད་པ་མ་ཡིན་ན།། དེའི་ཚེ་སྣ་ཚོགས་གཉིས་མེད་ཡིན་པའི་ཕྱིར་བདག་ཅེས་བྱ་བ་ཡོད་པར་མི་འགྱུར་ཏེ <?> न आत्मनोऽपि न पारमार्थिकत्वम्। अथाद्वैतम्। तदा चित्राद्वैतमिति नात्मा नामास्ति प्र.अ.148क/158.

སྣ་ཚོགས་ཏོག *ना.* चित्रकेतुः, नृपः – དེ་ཡི་ཚེ་ན་འཁོར་ལོས་སྒྱུར། །སྣ་ཚོགས་ཏོག་ཅེས་རྒྱལ་པོར་འགྱུར།། चक्रवर्तिस[? र्ती] तदा ख्यातो नाम्नासौ चित्रकेतवः। म.मू.321ख/504.

སྣ་ཚོགས་དང་ལྡན *वि.* चित्रम् लो.को.1432.

སྣ་ཚོགས་དོན་གྱི་ཡུལ་ཅན *वि.* नानार्थगोचरः – ཡུལ་དང་དུས་སོགས་ཐ་དད་པའི། །བ་ལང་སྒྲ་གསལ་བློ་རྣམས་ནི། །ཐམས་ཅད་མཚུངས་པའི་ཡུལ་ཅན་ནམ། །སྣ་ཚོགས་དོན་གྱི་ཡུལ་ཅན་མིན།། देशकालादिभिन्नाश्च गोशब्दव्यक्तिबुद्धयः। समानविषयाः सर्वा न वा नानार्थगोचराः॥ त.स.77ख/722.

སྣ་ཚོགས་བདག་ཉིད •*सं.* नानात्मत्वम् – ནུས་པ་སྣ་ཚོགས་བདག་ཉིད་ནི། །བརྗོད་པར་འདོད་པ་ཙམ་གྱིས་སྤྲུལ།། नानात्मत्वं तु शक्तीनां विवक्षामात्रनिर्मितम्। त.स.63क/598; •*वि.* नानात्मकम् – དེ་དངོས་མི་འགྱུར་སྙམ་ཡང་དེ། །སྣ་ཚོགས་བདག་ཉིད་ཅེས་བྱ་འོ།། नानात्मकं तु तन्नाम न तद्भवति यत् पुनः॥ त.स.63क/598.

སྣ་ཚོགས་མདོག *वि.* विश्ववर्णः – དཀྱིལ་འཁོར་གྱི་ཁང་པ་སྣ་ཚོགས་མདོག་ལ… དཔའ་བོ་གཅིག་པ मण्डलगृहे विश्ववर्णे एकवीरम् वि.प्र.72ख/4.135; विश्ववर्णकः – སྒེག་མོ་ལ་སོགས་ལྷ་མོ་བཞི། །རིགས་ཀྱི་སྐུ་མདོག་འཛིན་པ་སྟེ། །དཀར་སེར་དམར་པོ་སྣ་ཚོགས་མདོག།། लास्यादिदेव्यश्चतस्रः कुलवर्णकधारिण्यः। सितं पीतं रक्तं विश्ववर्णकम्॥ स.दु.109क/166.

སྣ་ཚོགས་མདོག་ཅན = སྲིན་པོ कर्बुरः, राक्षसः – राक्षसः …रात्रिञ्चरो रात्रिचरः कर्बुरो निकषात्मजः। अ.को.1.1.61; कर्बुरवर्णत्वात् कर्बुरः। कृणाति हिनस्तीति वा कर्बुरः। कृ हिंसायाम् अ.वि.1.1.61.

སྣ་ཚོགས་རྡོ་རྗེ विश्ववज्रम् – ཧཱུྃ་ཡིག་གིས་སྣ་ཚོགས་རྡོ་རྗེ་བསམ་པར་བྱ हूँकारेण विश्ववज्रं चिन्तयेत् ख.टी.163क/245; ཟླ་བའི་དཀྱིལ་འཁོར་ལ་གནས་པ་སྣ་ཚོགས་རྡོ་རྗེའི་རྣམ་པས་སོ།། चन्द्रमण्डलस्थविश्ववज्राकारेण ख.टी.162क/243; སྣ་ཚོགས་རྡོ་རྗེའི་ལྟེ་བར विश्ववज्रवरटके ख.टी.162क/244; སྣ་ཚོགས་རྡོ་རྗེའི་ལྟེ་བའི་ནང་དུ विश्ववज्रवरटकान्तर्गतम् ख.टी.164ख/247.

སྣ་ཚོགས་རྡོ་རྗེ་འཛིན = སྣ་ཚོགས་རྡོ་རྗེ་འཛིན་པ།

སྣ་ཚོགས་རྡོ་རྗེ་འཛིན་པ *वि.* विश्ववज्रधरः – རྗེ་བོ་སྣ་ཚོགས་རྡོ་རྗེ་འཛིན། །ཁྲོ་བོའི་རྒྱལ་པོ་རྣམས་ཀྱི་གཙོ། །རྡོ་རྗེ་ཤུགས་ལ་ཕྱག་འཚལ་ནས།། वज्रवेगं नमस्कृत्य विश्ववज्रधरं प्रभुम्। नायकं क्रोधराजानाम् वि.प्र.72क/4.134; སངས་རྒྱས་ལྔ་ཡིས་བརྒྱན་པ་རལ་པའི་ཐོར་ཚུགས་ཅན… གཡས་ན་སྣ་ཚོགས་རྡོ་རྗེ་འཛིན་པ། གཡོན་པས་སྣ་ཚོགས་རྡོ་རྗེས་མཚན་པའི་དྲིལ་བུ་འཛིན་པ पञ्चबुद्धालंकृतजटामुकुटी दक्षिणेन विश्ववज्रधरो वामेन विश्ववज्राङ्कितघण्टाधरः ख.टी. 158क/239.

སྣ་ཚོགས་རྡོ་རྗེས་མཚན་པ *वि.* विश्ववज्राङ्कितः – དབུས་སུ་ཐོད་པ་དཀར་པོ་ཡང་། །སྣ་ཚོགས་རྡོ་རྗེས་མཚན་པ

གྲིས॥ मध्ये शुक्लकरोटं च विश्ववज्राङ्कितं लिखेत् ॥ हे.त.25[ख]/84.

སྣ་ཚོགས་རྡོ་རྗེས་མཚན་པའི་དྲིལ་བུ་འཛིན་པ *वि.* विश्ववज्राङ्कितघण्टाधरः – སངས་རྒྱས་ལྔ་ཡིས་བརྒྱན་པ་རལ་པའི་ཐོར་ཚུགས་ཅན...གཡས་ན་སྣ་ཚོགས་རྡོ་རྗེ་འཛིན་པ། གཡོན་པས་སྣ་ཚོགས་རྡོ་རྗེས་མཚན་པའི་དྲིལ་བུ་འཛིན་པ पञ्चबुद्धालंकृतजटामुकुटी दक्षिणेन विश्ववज्रधरो वामेन विश्ववज्राङ्कितघण्टाधरः ख.टी.158[क]/239; विश्ववज्राङ्कघण्टाधरः – ཕྱག་གཉིས་པོ་དག་གིས་སྣ་ཚོགས་རྡོ་རྗེ་དང་སྣ་ཚོགས་རྡོ་རྗེས་མཚན་པའི་དྲིལ་བུ་འཛིན་ཅིང་ भुजाभ्यां विश्ववज्रविश्ववज्राङ्कघण्टाधराभ्याम् ख.टी.163[क]/245.

སྣ་ཚོགས་སྡེ *ना.* 1. चित्रसेनः, गन्धर्वः – དྲི་ཟ་སྣ་ཚོགས་སྡེ་དང་ནི། །རྒྱལ་བ་ཁྱུ་མཆོག་རྒྱལ་པའི་རྒྱལ॥ चित्रसेनश्च गन्धर्वो जिनराजो जिनर्षभः। सु.प्र.43[क]/86 2. = ཁྱབ་འཇུག विष्वक्सेनः, विष्णुः – विष्णुः...विष्वक्सेनो जनार्दनः अ.को.1.1.19; विष्वक् विषूची सर्वगता सेना यस्य स विष्वक्सेनः अ.वि.1.1.19 3. चित्रसेनः, नागः म.व्यु.3334 (57[ख]).

སྣ་ཚོགས་ནོར *ना.* विश्वावसुः, सिद्धपतिः – བུ་མོ་འདི་ནི་གྲུབ་རིགས་རྒྱ་གཏེར་གྱི། །ཟླ་བ་གྲུབ་བདག་སྣ་ཚོགས་ནོར་གྱི་སྲས॥ सिद्धान्वयाम्भोधिसुधाधिक[? सुधाकर लि.पा.]स्य ।ऽश्वावसोः सिद्धपतेः सुतेयम्। अ.क. 297[क]/108.38.

སྣ་ཚོགས་སྣང་བ *वि.* विचित्राभः – བརྟགས་པ་སྣ་ཚོགས་སྣང་བ་ཡང་། །གཞན་གྱི་དབང་གིས་རྟོག་པར་བྱེད॥ कल्पितं हि विचित्राभं परतन्त्रे विकल्प्यते ल.अ.107[ख]/53; ल.अ.170[क]/127; चित्राभासः – སེམས་ནི་སྣ་ཚོགས་སྣང་བ་དང་། །རྣམ་པ་སྣ་ཚོགས་ཅན་དུ་འཇུག॥ इति चित्तं चित्राभासं चित्राकारं प्रवर्तते। सू.अ.171[क]/64.

སྣ་ཚོགས་པ •*वि.* 1. चित्रः – དེ་ལ་སྡུག་བསྔལ་ཆེན་པོ་ནི་ཡུན་རིང་བ་དང་བཟོད་བཀའ་བ་དང་སྣ་ཚོགས་པ་དང་རྒྱུན་མི་འཆད་པའོ॥ तत्र महादुःखं यद्दीर्घकालिकं प्रगाढं चित्रं निरन्तरञ्च बो.भू.130[ख]/168; विचित्रः – རིན་པོ་ཆེ་སྣ་ཚོགས་པའི་མཛོད་ན་མརྒད་དང་པདྨ་དམར་པོ་ལ་སོགས་པ་བཞིན་ནོ॥ विचित्ररत्नकोश इव मरकतपद्मरागादिः त.प.75[क]/603; चित्रकः – ཆོས་དེའི་སྣ་ཚོགས་པ་ཐ་དད་པའོ॥ བསྒོམ་པར་བྱ་ཞེས་བྱ་བ་ནི་ལྷག་མའོ॥ तस्य धर्मस्य चित्रकं भेदकं भावयतीति शेषः ख.टी.161[ख]/243; शबलः – ཁ་དོག་ལྷ་པོ་[? ཁྲ་བོ]ནི་ཁ་དོག་སྣ་ཚོགས་པའོ॥ कल्माषवर्णः शबलो वर्णः त.प.74[ख]/602; कर्चूरः – གཏུམ་མོ་ནམ་མཁའི་སྔོ་སངས་མ། །གཡུང་མོ་སྣ་ཚོགས་པ་ཞེས་བརྗོད॥ चण्डाली च नभःश्यामा डोम्बी कर्चूरा मता ॥ हे.त.24[ख]/80; कर्बुरः – चित्रं किर्मीरकल्माषशबलैताश्च कर्बुरे। अ.को.1.5.17; कीर्यन्ते नानावर्णा अत्रेति कर्बुरः अ.वि.1.5.17; नाना – ཐུགས་ཀྱི་དཀྱིལ་འཁོར་ལ་སོགས་པ་སྣ་ཚོགས་པའི་རང་བཞིན चित्तमण्डलादिनानास्वभावः ख.टी.168[क]/251; नानाप्रकारः – བྱ་བ་སྣ་ཚོགས་པ་རྣམས་ལ नानाप्रकारेषु व्यापारेषु हे.बि.244[ख]/59; प्रपञ्चः – གཏམ་རྒྱུད་སྣ་ཚོགས་པ་དག་ལ་ནི་སྐྱོན་ཅུང་ཟད་ཀྱང་མེད་དེ प्रपञ्चकथायां तु न कश्चिद् दोषः वा.न्या.348[क]/105 2. = ཐམས་ཅད विश्वम्, सर्वम् – ཐམས་ཅད་ཅེས་བྱ་བ་ནི་སྣ་ཚོགས་པའོ॥ सर्वमिति विश्वम् त.प.176[ख]/812; •*सं.* 1. विश्वम् – ལུས་ལ་སྣ་ཚོགས་ཚད་ནི་ནང་གི་ལེའུར་བརྗོད་པར་བྱའོ॥ देहे विश्वस्य मानमध्यात्मपटले वक्तव्यम् वि.प्र.152[ख]/1.2 2. = སྣ་ཚོགས་པ་ཉིད वैचित्र्यम् – སྣ་ཚོགས་པ་ཞེས

བྱ་བ་ནི་ཐ་དད་པའོ།། वैचित्र्यस्येति भेदस्य त.प.79क/611; རྣམ་པ་སྣ་ཚོགས་པའི་ཕྱིར आकारवैचित्र्यात् ख.टी.153ख/231; चित्रता – བྱིས་པ་འཛིན་པས་རྣམ་བསླད་དེ། །སྣ་ཚོགས་པ་ནི་ཕྱིན་ཅི་ལོག། बाला ग्राहविपर्यस्ता विपर्यासो हि चित्रता ॥ ल.अ.163क/114; རབ་དང་འབྲིང་དང་ཐ་མའི་བྱེ་བྲག་སྣ་ཚོགས་པའི། །སྐྱེ་བོ་འདི་དག་ངོ་བོ་ཉིད་ལས་གྱུར་མ་ཡིན།། निकृष्टमध्योत्तमभेदचित्रता । जनस्य चेयं न खलु स्वभावतः जा.मा.166क/192; विश्वरूपता – འགྲོ་བ་རྣམས་དེའི་བདག་ཉིད་དུ་བྱས་ཤིང་སེམས་ཀྱི་སྣ་ཚོགས་པ་དེ་བསམ་པར་བྱའོ།། जगत्तन्मयीकृत्य चित्तस्य विश्वरूपतां चिन्तयेत् ख.टी.164ख/247; नानात्वम् – དེ་ཇི་ལྟར་གཅིག་པ་ཉིད་དུ་བརྗོད་པར་བྱ་ཞིང་སྣ་ཚོགས་པར་བརྗོད་པར་མི་བྱ་ཞེ་ན तत्कथमेकत्वं गीयते न नानात्वमिति ख.टी.165क/248.

སྣ་ཚོགས་པ་ཉིད वैचित्र्यम् – མིག་གི་འཇུག་པ་སྣ་ཚོགས་པ་ཉིད་འཁྲུལ་པའི་ས་བོན་ཡིན་ནོ་སྙམ་དུ་བསམས་པ་ཡིན་ནོ།། चक्षुर्वृत्तेर्वैचित्र्यमेव भ्रान्तेर्बीजमिति भावः त.प.149क/750; नानात्वम् – རྟེན་དང་བརྟེན་པར་གྱུར་པ་དག། །སྣ་ཚོགས་པ་ཉིད་མཚན་ཉིད་འགྱུར། །ཀུ་ཎྜེ་སོགས་གནས་དཔལ་འབྲས་བཞིན། །འདི་ལ་འདི་ཞེས་པ་བློ་ཡི།། नानात्वलक्षणे हि स्यादाधाराधेयभूतयोः । इदमत्रेति विज्ञानं कुण्डादौ श्रीफलादिवत् ॥ त.स.31ख/328; བདེ་བ་ལ་སོགས་པའི་གནས་སྐབས་རྣམས་ཀྱི་ཐ་དད་པ་སྟེ། སྣ་ཚོགས་པ་ཉིད अवस्थानां सुखादीनां भेदः नानात्वम् त.प.209ख/135.

སྣ་ཚོགས་པདྨ विश्वपद्मम् – དེ་ནས་རང་གི་སྙིང་ཁར་པཾ་ཡིག་ཡོངས་སུ་གྱུར་པ་ལས་སྣ་ཚོགས་པདྨ་སྟེ། དེའི་ལྟེ་བའི་སྟེང་དུ་ཨཾ་ཡིག་ཡོངས་སུ་གྱུར་པ་ལས་ཟླ་བའི་དཀྱིལ་འཁོར་རོ།། ततः स्वहृदये पंकारपरिणतं विश्वपद्मम्, तदुपरि कर्णिकायां अँकारपरिणतं चन्द्रमण्डलम् वि.प्र.111क/ 3.35; དེ་ཀུན་སྣ་ཚོགས་པད་མར་གནས། །ཟླ་བའི་དཀྱིལ་འཁོར་ལ་བཞུགས་པའི།། सर्वे ते विश्वपद्मस्था निषण्णाश्चन्द्रमण्डले । स.दु.109क/166.

སྣ་ཚོགས་པའི་འཁོར་ལོ विश्वचक्रम् – དེ་ལྟར་ཡེ་ཤེས་ཀྱི་འཁོར་ལོ་བསྒྲུབ་བྱར་བྱས་ཤིང་དངོས་པོའི་མཚན་ཉིད་སྣ་ཚོགས་པའི་འཁོར་ལོ་མཐའ་དག་བསྐྱོད་པར་བྱས་ནས་སླར་ཡང་རང་གི་གནས་སུ་འགྲོའོ།། एवं ज्ञानचक्रं साध्यं कृत्वा व्रजति पुनः स्वस्थानं चालयित्वा समस्तं भावलक्षणं विश्वचक्रम् वि.प्र.49ख/4.53.

སྣ་ཚོགས་པའི་གོས་ཀྱིས་བརྒྱན་པ *वि.* विचित्रवस्त्राभरणः – བཅོམ་ལྡན་འདས་མི་བསྐྱོད་པ...སྣ་ཚོགས་པའི་གོས་ཀྱིས་བརྒྱན་པ भगवन्तमक्षोभ्यम्... विचित्रवस्त्राभरणम् ख.टी.162ख/244; द्र. རྣམ་པ་སྣ་ཚོགས་ན་བཟས་བརྒྱན་པ།

སྣ་ཚོགས་པའི་དོན་སྤྱོད་པ *पा.* विश्वार्थचर्या – ཐམས་ཅད་མཁའ་མཉམ་ནི་ལྷ་མོ་རྣམས་དང་སངས་རྒྱས་རྣམས་ཀྱི་རོལ་པ་སྟེ། ཚོགས་ནས་སྣ་ཚོགས་པའི་དོན་སྤྱོད་པ་ནི་མཆོག་ཏུ་རོལ་པའོ།། सर्वे खसमा देव्यो बुद्धाश्च क्रीडन्ति, समेत्य विश्वार्थचर्यया रमन्ते ख.टी.159ख/241.

སྣ་ཚོགས་སྤངས་པ *वि.* नानात्ववर्जितः – མཆོག་ཏུ་དགའ་བ་ཡང་དག་ཐོབ། །སྣ་ཚོགས་སྤངས་པའི་སྐད་ཅིག་ལ།། परमानन्दे तु संप्राप्ते नानात्ववर्जिते क्षणे । हे.त.17ख/54.

སྣ་ཚོགས་བྱེད = ཚངས་པ विश्वसृद्, ब्रह्मा – ब्रह्मा...विश्वसृट् विधिः अ.को.1.1.17; विश्वं सृजतीति विश्वसृट् । सृज विसर्गे अ.वि.1.1.17.

སྣ་ཚོགས་བྱེད་པ वैचित्र्यकरणम् – དེས་ན་རྩེད་མོའི་དོན་དུ་འགྲོ་བ་སྣ་ཚོགས་བྱེད་པ་ཡིན་ནོ།། ततः क्रीडाद्यर्थं जगद्वैचित्र्यकरणम् प्र.अ.35क/40.

སྣ་ཚོགས་བྱེད་པོ = ཚངས་པ विश्वसृट्, ब्रह्मा छो.को. 486/रा.को.2.439; द्र. སྣ་ཚོགས་བྱེད།

སྣ་ཚོགས་དབང་པོ *वि.* विश्वेशः – སྤྱན་རས་གཟིགས་སྣ་ཚོགས་དབང་པོ विश्वेश अवलोकितेश्वरः लो.को. 1498.

སྣ་ཚོགས་འབྱུང विश्वसम्भवः – གསལ་བའི་ཚོགས་ཀྱིས་མཆོད་པ་བྱེད། །འོ་མ་འབབ་[? བཅས་]པས་སྣ་ཚོགས་འབྱུང་།། पूजयेच्च प्रदीपाद्यैः सक्षीरैर्विश्वसम्भवैः ॥ अ.सि.61क/161.

སྣ་ཚོགས་སྲས चित्रगुप्तः लो.को.1433.

སྣ་ཚོགས་མ *पा.* चित्रिणी, योगिनीभेदः – གྲངས་བཞིན་དུ་དཔལ་ལྡན་བཟང་མོ་དང་པདྨ་ཅན་མ་དང་དུང་ཅན་མ་དང་སྣ་ཚོགས་མ་དང་གླང་ཆེན་མ་སྟེ... མ་མ་ཀཱི་ནི་སྣ་ཚོགས་མ यथासंख्यं श्रीभद्रा पद्मिनी शङ्खिनी चित्रिणी हस्तिनी...मामकी चित्रिणी वि.प्र.165क/3.140.

སྣ་ཚོགས་མིག = ལྷ་ཆེན विरूपाक्षः, महादेवः – शम्भुरीशः...महादेवो विरूपाक्षस्त्रिलोचनः अ.को.1.1.33; विरूपमक्षि यस्य स विरूपाक्षः अ.वि.1.1.33.

སྣ་ཚོགས་མིག་ཅན = དབང་ཕྱུག་ཆེན་པོ विरूपाक्षः, शिवः छो.को.486/रा.को.4.420; द्र. སྣ་ཚོགས་མིག།

སྣ་ཚོགས་མེད = སྣ་ཚོགས་མེད་པ།

སྣ་ཚོགས་མེད་པ •*वि.* अचित्रः – ཁྱབ་པ་མི་གཡོ་དག་པ་སྟེ། །སྣ་ཚོགས་མེད་ལ་སྣ་ཚོགས་འབྱུང་།། व्यापिनमचलं शुद्धमचित्रं चित्रसम्भवम् ॥ ल.अ.160ख/110; • *सं.* अनानात्वम् – བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ...སྣ་ཚོགས་མེད་པ་ལ་སྤྱོད་པ बोधिसत्त्वाः...अनानात्वचारिणः सु.प.33ख/12.

སྣ་ཚོགས་མེད་པ་ལ་སྤྱོད་པ *वि.* अनानात्वचारी – ཚེ་དང་ལྡན་པ་ཀུན་དགའ་བོ་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་མཚན་མ་དང་བྲལ་བ། མཚན་མ་མེད་པ་ལ་སྤྱོད་པ། སྣ་ཚོགས་མེད་པ་ལ་སྤྱོད་པ आयुष्मन्नानन्द बोधिसत्त्वाः निमित्तापगता अनिमित्तचारिणोऽनानात्वचारिणः सु.प. 33ख/12.

སྣ་ཚོགས་མེད་པའི་ཚིག अवैचित्र्यपदम्, अष्टोत्तरशतपदान्तर्गतपदविशेषः – བཅོམ་ལྡན་འདས་ཚིག་བརྒྱ་རྩ་བརྒྱད་པོ་གང་ལགས། བཅོམ་ལྡན་འདས་ཀྱིས་བཀའ་སྩལ་པ། སྐྱེ་བའི་ཚིག་དང་མི་སྐྱེ་བའི་ཚིག་དང... སྣ་ཚོགས་ཀྱི་ཚིག་དང་སྣ་ཚོགས་མེད་པའི་ཚིག་དང कतमद्भगवन् अष्टोत्तरपदशतम् ? भगवानाह–उत्पादपदम्, अनुत्पादपदम्...वैचित्र्यपदम्, अवैचित्र्यपदम् ल.अ.69क/17.

སྣ་ཚོགས་གཙུག་ཏོར *ना.* विश्वोष्णीषः, तथागतः – སྣ་ཚོགས་གཙུག་ཏོར་དེ་བཞིན་གཤེགས། །སྐུ་མདོག་ལྗང་གུ་འོད་འབར་བ། །འདི་ཡི་ཕྱག་རྒྱ་མི་འཇིགས་སྦྱིན།། विश्वोष्णीषस्तथागतः । हरितवर्णप्रभाज्वाल्यो मुद्रा चास्याभयप्रदः ॥ स.दु.109क/164.

སྣ་ཚོགས་གཙུག་ཕུད་ཀྱི་བུ = གཟའ་ཕུར་བུ चित्रशिखण्डिजः, बृहस्पतिः मि.को.32क; द्र. སྣ་ཚོགས་གཙུག་ཕུད་ཅན་གྱི་བུ།

སྣ་ཚོགས་གཙུག་ཕུད་ཅན चित्रशिखण्डिनः, सप्तर्षयः – सप्तर्षयो मरीच्यत्रिमुखाश्चित्रशिखण्डिनः । अ.को.1.3.27; चित्राः शिखण्डा जटा येषां ते चित्रशि-

खण्डिनः। के ते–मरीचिरत्र्यङ्गीरसौ पुलस्त्यः पुलहः क्रतुः। वसिष्ठश्चेति सप्तर्षीनाहुश्चित्रशिखण्डिनः॥ अ.वि.1.3.27.

སྣ་ཚོགས་གཙུག་ཕུད་ཅན་གྱི་བུ = གཟའ་ཕུར་བུ चित्रशिखण्डिजः, बृहस्पतिः – बृहस्पतिः सुराचार्यो गीष्पतिर्धिषणो गुरुः। जीव आङ्गिरसो वाचस्पतिश्चित्रशिखण्डिजः॥ अ.को.1.3.24; चित्रशिखण्डिनोऽङ्गिरसो जातः चित्रशिखण्डिजः अ.वि.1.3.24.

སྣ་ཚོགས་གཙོ་བོ *ना.* = དུས་འཁོར विश्वभर्ता, कालचक्रः – སྣ་ཚོགས་གཙོ་བོ་དུས་ཀྱི་འཁོར་ལོའི་སྒྲུབ་ཐབས साधनं विश्वभर्तुः कालचक्रस्य वि.प्र.66ख/4.117; སླར་ཡང་རྒྱལ་བ་མཆོག་དང་བཅས་པ་སྣ་ཚོགས་གཙོ་བོའི་སྒྲུབ་ཐབས་ཡང་དག་པར་ནི་བདག་ཞུའོ॥ भूयः पृच्छामि सम्यग् जिनवरसहितं साधनं विश्वभर्तुः वि.प्र.29ख/4.1.

སྣ་ཚོགས་རྩེ *वि.* विश्वाग्रम्–རླུང་གིས་བསྒྲོད་པ་སྣ་ཚོགས་རྩེ། །བ་དན་དྲིལ་བུའི་སྒྲ་བསམ་བྱ॥ मारुतोद्धूतविश्वाग्रपताकाघण्टानादितम्॥ ख.टी.162ख/244.

སྣ་ཚོགས་བརྩོན་འགྲུས *ना.* चित्रवीर्यः, कश्चित् पुरुषः – དཔེར་ན་ཙིཏྲ་ཨཾ་ག་ད་དང་སྣ་ཚོགས་བརྩོན་འགྲུས་ཞེས་བྱ་བའི་མཚེ་མ་གཉིས་ལས་གཅིག་བརྗོད་པས་དེར་གཞན་ལ་འཇུག་པར་མི་འགྱུར་བ་ནི་མ་ཡིན་པ་བཞིན་ནོ॥ यथा यमलकयोरेकचोदने चित्राङ्गदचित्रवीर्ययोः न हि तत्रान्यत्र न वृत्तिः प्र.अ.178क/192.

སྣ་ཚོགས་ཚད *पा.* विश्वमानम्, विश्वस्य मानम् – ཁྱོད་ཀྱིས་ཕྱི་རོལ་དུ་སྣ་ཚོགས་ཚད་ནི་གང་དག་བསྟན་པ་དེ་དག་ལུས་ལ་མི་ཤེས་སོ॥ त्वया देशितं बाह्ये विश्वमानं तद्देहे न ज्ञातम् वि.प्र.222ख/2.1.

སྣ་ཚོགས་འཛིན་པ = ས་གཞི विश्वम्भरा, पृथ्वी – གང་ཡང་བྱ་བས་རྒྱ་མཚོ་བཞི་ཡི་གོས་ཅན་སྣ་ཚོགས་འཛིན་པ་ཁྱབ་པར་བྱས॥ कृत्यं यच्च चतुःसमुद्ररसनां[? वसनां लि.पा.] व्याप्नोति विश्वंभराम्। अ.क.153क/69.23.

སྣ་ཚོགས་གཟུགས • *सं.* विश्वबिम्बः – བསམ་གཏན་མི་བསྐྱོད་པ་ཉིད་དོ་ཞེས་པ་རྣམ་པར་ཤེས་པའི་ཕུང་པོ་སྟེ་རྣམ་པ་བཅུ་ནི...གཅིག་ཉིད་དུ་སྣ་ཚོགས་གཟུགས་ལ་བསམ་གཏན་པའོ॥ ध्यानमक्षोभ्य एव [इति] दशविधो विज्ञानस्कन्धः... एकत्वं विश्वबिम्बे ध्यानम् वि.प्र.66क/4.115; विश्वमूर्तिः – གཅིག་ཉིད་ཡིན་ཡང་གཅིག་ཉིད་མིན། །སྣ་ཚོགས་གཟུགས་ཁྱོད་ལ་ཕྱག་འཚལ॥ एकस्त्वमप्यनेकोऽसि नमस्ते विश्वमूर्तये॥ का.आ.341क/3.184; नानारूपम्– སྣ་ཚོགས་གཟུགས་ཀྱིས་བཀྲ་བའི་སྤྱོད་པ་ལུས་ཅན་རྣམས་ལ་སྟོན་བྱེད་པ། །འདི་ནི་བཀྲ་བའི་རིམ་པས་ཡོངས་སྨིན་ལས་ཀྱི་སྤྲུལ་པའི་རི་མོ་ཡིན॥ नानारूपैः शबलचरितं देहिनां दर्शयन्ती सेयं चित्रक्रमपरिणता कर्मनिर्माणलेखा॥ अ.क.4ख/50.34; • *ना.* विश्वमूर्तिः, नृपः – སྣ་ཚོགས་གཟུགས་དང་ལྷ་དབང་ལྡན། །གྲགས་པ་པད་དཀར་རིམ་པས་སོ། །འདས་པའི་རྒྱལ་པོ་ཉི་མའི་འོད॥ विश्वमूर्तिः सुरेशानः यशः पुण्डरीकः क्रमात्। सूर्यप्रभो गतो राजा वि.प्र.127क/1, पृ.25.

སྣ་ཚོགས་གཟུགས་ཅན • *वि.* 1. विश्वरूपम् – ཤེས་རབ་རྒྱལ་འབྱོར་མ་རྣམས་དག་གི་མི་མཉམ་མཉམ་པའི་ཞལ་ནི་སྣ་ཚོགས་གཟུགས་ཅན་གང་॥ प्रज्ञानां विश्वरूपं ह्यसमसमपदं...योगिनीनाम् वि.प्र.113क/1, पृ.10 2. = སྣ་ཚོགས་གཟུགས་ཅན་མ विश्वरूपा – ལྷ་མོ་དཀའ་སྤྱིན་གནས་སྤྱིན་མ། །སྣ་ཚོགས་གཟུགས་ཅན་ཡིད་འོང་མ॥

रतिदां स्थानदां [सिद्धिदां पा.भे.] देवीं विश्वरूपां मनोरमाम्। हे.त.29ख/100; • ना. = ཁྱབ་འཇུག विश्वरूपः, विष्णुः ङ.को.25/रा.को.4.439.

སྣ་ཚོགས་གཟུགས་ཅན་མ *ना.* विश्वरूपिणी, देवी – རྣལ་འབྱོར་རྗེས་སུ་རིག་པའི་རྒྱུད་ལ་སྣ་ཚོགས་གཟུགས་ཅན་མས། དཔལ་ལྡན་སྣ་ཚོགས་གཟུགས་ཅན་མས། །རྡོ་རྗེ་འཇིགས་བྱེད་ལ་བཏུད་ཞུས། །རྣལ་འབྱོར་རྗེས་སུ་རིག་པའི་རྒྱུད། །རྡོ་རྗེ་སེམས་དཔའི་མཆོག་བདེ་ཅི།། ...གསུངས་སོ།། योगानुविद्धे [तन्त्रे] विश्वरूपिणी आह – श्रीविश्वरूपिणी नत्वा पृच्छते वज्रभैरवम्। तन्त्रं योगानुविद्धं किं वज्रसत्त्व परं सुखम् ॥ वि.प्र.135क/1, पृ.34.

སྣ་ཚོགས་འོད = ཉི་མ चित्रभानुः, सूर्यः – सूरसूर्यार्यमादित्यद्वादशात्मदिवाकराः।...चित्रभानुर्विरोचनः अ.को.1.3.30; चित्रा भानवो यस्य चित्रभानुः अ.वि.1.3.30.

སྣ་ཚོགས་འོད་ཟེར 1. = མེ चित्रभानुः, अग्निः – अग्निर्वैश्वानरः... चित्रभानुर्विभावसुः अ.को.1.1.57; चित्रा भानवो यस्य चित्रभानुः अ.वि.1.1.57 2. = ཉི་མ चित्रभानुः, सूर्यः मि.को.31ख; द्र. སྣ་ཚོགས་འོད་ཟེར།

སྣ་ཚོགས་ཡུམ *ना.* विश्वमाता, देवी – སྒྲོལ་མ་ལས་སྐྱེས་པ་དབྱེ་བར་འདོད་མ་དང... སྣ་ཚོགས་ཡུལ་[ཡུམ་]ལས་སྐྱེས་པ་ནི་སྐྱེད་པར་འདོད་མའོ།། विद्वेषे[? विभेदे]च्छा ताराजन्या...उत्पादनेच्छा विश्वमातृजन्या वि.प्र.44ख/4.43.

སྣ་ཚོགས་ཡུམ་གྱི་སྒྲུབ་ཐབས *ना.* विश्वमातासाधनम्, ग्रन्थः क.त.3505.

སྣ་ཚོགས་རི་མོ *ना.* चित्रलेखा, योगिनी – པདྨའི་འདབ་མ་རྣམས་ལ་འཇིགས་མ་ལ་སོགས་པ་རྣལ་འབྱོར་མ་དྲུག་ཅུ་རྩ་བཞི་རྣམས་ཀྱི་ས་བོན་གསུངས་ཏེ...སྣ་ཚོགས་རི་མོའི་ཧླྀཾའོ།། भीमादीनां चतुःषष्टियोगिनीनां बीजानि कमलदलेषूच्यन्ते...ह्लृ चित्रलेखायाः वि.प्र.132ख/3.64.

སྣ་ཚོགས་རིགས *वि.* नानाजातीयः – སྣ་ཚོགས་གང་ཡང་དེ་གཅིག་མིན། །སྣ་ཚོགས་རིགས་ཀྱི་རིན་ཆེན་བཞིན།། यत् चित्रं न तदेकं हि नानाजातीयरत्नवत् ॥ त.स.63ख/599.

སྣ་ཚོགས་རིན་ཆེན चित्ररत्नम् – དེ་ཉིད་ཀྱི་ནི་རྣམ་པ་ཡིས། །སྣ་ཚོགས་རིན་ཆེན་ལ་སོགས་བཤད།། एतेनैव प्रकारेण चित्ररत्नादयो गताः। त.स.63ख/600.

སྣ་ཚོགས་ལ་མི་དམིགས་པ अविचित्रालम्बनम् – ཁ་ཅིག་ན་རེ་འདི་ནི་སྣ་ཚོགས་ལ་མི་དམིགས་པའི་ཕྱིར་རྣམ་པར་རྟོག་པ་གཅོད་པར་བྱེད་པ་ཡིན་གྱི अविचित्रालम्बनत्वादेषां वितर्कोपच्छेदाय संवर्तत इत्येके अभि.भा.9क/895.

སྣ་ཚོགས་ལག་རྒྱན་ཅན *वि.* चित्राङ्गदः – སྣ་ཚོགས་ལག་རྒྱན་ཅན་འགའ་ཡི། །མིང་ནི་བཟུང་བར་གྱུར་པ་ན། །ཕྱི་མའི་དུས་སུ་སྒྲ་དེ་ལས། །མཛེས་པའི་ཅོད་པན་ཅན་རྟོགས་འགྱུར།། <?> न हि चित्राङ्गदे कश्चित् तन्नामग्रहणे सति। कालान्तरेण तं शब्दं वेत्ति चारुकिरीटिनि ॥ त.स.57ख/553.

སྣ་ཚོགས་ལས་ངན = ལྷའི་བཟོ་བོ विश्वकर्मा, देवशिल्पी छो.को.487/रा.को.4.437.

སྣ་ཚོགས་ཤིང་རྟ • *ना.* 1. चित्ररथम् [चैत्ररथम्], कुबेरस्य उद्यानम् – གང་གིས་སྣ་ཚོགས་ཤིང་རྟ་དེ་བཞིན

དུ། །དགའ་ཚལ་མེ་ཏོག་མན་དཱ་ར་འདབ་རྒྱས་སུ། །ལྷ་མོ་ལྷན་ཅིག་རྩེ་བར་འདོད་པ་དག། །སྐྱེས་བུ་ཆེན་པོ་འདི་ཡི་ཞབས་འབྲིང་གྱིས།། यस्येप्सितं रमितु चित्ररथे तथ नन्दने सुरवधूसहितः । मान्दारवैः कुसुमपत्रचिते अनुबन्धतामिमु महापुरुषम् ॥ ल.वि.27क/32; ལྷ་ཡི་སྣ་ཚོགས་ཤིང་རྟ चित्ररथं सुराणाम् रा.प.247ख/146; चैत्ररथम् – अस्य (कुबेरस्य) उद्यानं चैत्ररथम् अ.को.1.1.72; चित्ररथेन गन्धर्वेण निर्मितं चैत्ररथम् अ.वि.1.1.72 **2.** = ཉི་མ चित्ररथः, सूर्यः छो.को.487/रा.को.2.450.

སྣ་ཚོགས་བཤེས་གཉེན *ना.* **1.** विश्वामित्रः, महर्षिः – སྣ་ཚོགས་བཤེས་གཉེན་ལ་སོགས་པ། །དཀའ་ཐུབ་ནགས་ན་དྲང་སྲོང་ཆེ། །འདི་རྣམས་ཀྱང་ནི་མཚན་མ་དག། །མཐོང་བས་ཡིད་དམན་དེ་དག་བརྗོད།། निमित्तदर्शनोद्विग्नास्तपोवनगता अपि। विश्वामित्रप्रभृतयः स्वामीत्यूचुर्महर्षयः ॥ अ.क.48ख/5.24 **2.** कौशिकः, ऋषिः श्री.को.166क।

སྣ་ཚོགས་ལྷ *ना.* विश्वदेवः, देवता – གུ་ལང་ཆུ་ལྷ་ཀུ་བེ་ར་དང...དྲང་སྲོང་སྣ་ཚོགས་ལྷ་དང शिववरुणकुबेराः... विश्वदेवो महर्षिः। अ.श.217ख/201.

སྣ་ཞོམ་པ *वि.* भग्ननासः – ཁ་ཅིག་ནི...སྣ་ཞོམ་པ་གསུས་པ་བུམ་པ་ལྟ་བུར་འདུག་པ केचिद्...भग्ननासाः कुम्भोदराः ल.वि.150क/222.

སྣ་ཡོན་པོ *वि.* वक्रनासः – སྣ་ལེབ་ལེབ་པོར་མི་འགྱུར། སྣ་ཡོན་པོར་མི་འགྱུར་རོ།། न चिपिटनासो भवति, न वक्रनासो भवति स.पु.131क/207.

སྣ་རིངས खरणाः, तीक्ष्णनासिकः – खरणाः स्यात् खरणसः अ.को.2.6.46; खरस्य गर्दभस्येव नासिकास्येति खरणाः अ.वि.2.6.46.

སྣ་ལེགས་པ *वि.* तुङ्गनासः – དཔྲལ་བའི་དབྱེས་ཆེ་བ། སྣ་མཐོ་བ། སྣ་ལེགས་པ་སྨིན་མ་སྤུག་པ विस्तीर्णललाट उच्चघोषः[? णः] सङ्गतभ्रूस्तुङ्गनासः अ.श.64क/56.

སྣ་ལེབ *वि.* = སྣ་ཉེག अवनाटः, नतनासिकः – अवटीटोऽवनाटश्चाऽवभ्रटो नतनासिके अ.को.2.6.45; अवनता नासिकाऽस्येति अवटीटः, अवनाटः अ.वि.2.6.45; चिपिटः श्री.को.178ख।

སྣ་ལེབ་ལེབ་པོ *वि.* चिपिटनासः – སྣ་ལེབ་ལེབ་པོར་མི་འགྱུར། སྣ་ཡོན་པོར་མི་འགྱུར་རོ།། न चिपिटनासो भवति, न वक्रनासो भवति स.पु.131क/207.

སྣ་སྤལ चमसः म.व्यु.4050 (65क).

སྣ་ཤིང नासा – नासा སྣ་ཤིང་སྐེ་ཀ་བ་དང་སྣོའི་རྩིག་རྒྱུན་ལ་བརྟེན་པའི་ཤིང་གི་མིང मि.को.141क।

སྣག = སྣག་ཚ།

སྣག་གོང = སྣག་བུམ मसिधानम्, मस्याधारः छो.को.487/रा.को.3.648.

སྣག་གི་གཉེན་མཚམས **1.** सालोहितः – དུས་དུས་སུ་དགེ་སྦྱོང་དང་བྲམ་ཟེ་དང་ཕ་མ་དང་མཛའ་བོ་དང་བློན་པོ་དང་གཉེན་བཤེས་དང་སྣག་གི་གཉེན་མཚམས་དག་ལ་གཏོང कालानुकालं च श्रमणब्राह्मणेभ्यो ददाति मातापितृमित्रामात्यज्ञातिसालोहितेभ्यः शि.स.148ख/143; बो.भू.124ख/160; म.व्यु.3910 (64क) **2.** ज्ञातेयम् – ज्ञातेयं बन्धुता तेषां क्रमात् भावसमूहयोः। अ.को.2.6.35; ज्ञातेर्भावो ज्ञातेयम् । बन्धुत्वनाम अ.वि.2.6.35.

སྣག་གི་ཚ་བོ = ཚ་བོ भागिनेयः, भगिनीपुत्रः – དེའི་ཚེ

རིའི་རྒྱལ་པོ་གངས་རིའི་ངོས་ལ་དྲང་སྲོང་ཆེན་པོ་ནག་པོ་ཞེས་བྱ་བ་མངོན་པར་ཤེས་པ་ལྔ་དང་ལྡན་པ་ཞིག་སྣག་གི་ཚ་བོ་མིས་བྱིན་ཞེས་བྱ་བ་དང་ལྷན་ཅིག་ཏུ་འདུག་འདུག་པ་ལས तेन च समयेन हिमवतः पर्वतराजस्य पार्श्वे असितो नाम महर्षिः प्रतिवसति स्म पञ्चाभिज्ञः सार्धं नरदत्तेन भागिनेयेन ल.वि.54ख/72.

སྣག་གི་མཚམས = སྣག་གི་གཉེན་མཚམས सालोहितः म.व्यु. 3910 (64क).

སྣག་ཆུ = སྣག་ཚ मसिजलम्, लेखनद्रव्यम् मि.को.25क।

སྣག་བུ पेशी – ཞག་བདུན་ལོན་པ་དང་ཤ་སྣག་བུ་དེ་དོལ་ནས་བུ་བརྒྱ་བྱུང་སྟེ यावत्सप्तमे दिवसे सा मांसपेशी स्फुटिता। कुमारशतमुत्पन्नम् अ.श.182ख/169.

སྣག་བུམ = སྣག་ཚའི་སྣོད मसिधानी, मस्याधारः छो.को. 488/रा.को.3.648; मसिधानम् छो.को.488/रा.को. 3.648; मेलान्धुः मि.को.25क।

སྣག་ཙ = སྣག་ཚ།

སྣག་ཚ 1. मसिः, लेखनद्रव्यम् – འདི་ལྟ་སྟེ་དཔེར་ན་འཛམ་བུའི་ཆུ་བོའི་གསེར་གྱི་གན་དུ་སྣག་ཙའི་ཧུག་བཞག་ན་ཡམ་མེར་མི་རུང་། ལྷན་ནེར་མི་རུང་། ལྷང་ངེར་མི་རུང་ངོ་॥ तद्यथापि नाम जाम्बूनदस्य सुवर्णस्य पुरतो मसिपिण्ड उपनिक्षिप्तो न भासति, न तपति, न विरोचते ल.वि.65क/85; བྱ་གག་སྣག་ཙས་བསྒྲུས་པ་ལ། །དེ་ཉིད་ཕྱི་བར་མི་ཤེས་འཛིན॥ <?> मसिम्रक्षितको यद्वद् गृह्यते कुर्कुटोऽबुधैः। ल.अ.161ख/112; स.उ. 277ख/10.36; मषिः मि.को.25क; कालिका श्री.को. 165ख 2. = སྣག་གི་ཚ་བོ།

སྣག་ཚ་དཀར = སྣག་བུམ मेलानन्दा, मसिधानी मि.को. 25क।

སྣག་ཚ་བོ = སྣག་གི་ཚ་བོ།

སྣག་ཚའི་ཐིག་ལེ मसितिलकः – སྣག་ཚའི་ཐིག་ལེ་ནི་དེ་ཞེས་བྱའོ॥ मपिटिप्यकस्तदास्यः [? मसितिलकस्तदाख्यः] वि.सू.72ख/90.

སྣག་ཚའི་མདོག་ཅན *वि.* मसिवर्णः – བྱ་རྒོད་སྣང་ཐིལ་བཅག་པའི་འདྲ་ལྟ་བུ་དང་སྣག་ཙའི་མདོག་ཅན་ལྟ་བུར भिन्नाञ्जनमसिवर्णं गृध्रवेशम्। ***।

སྣག་ཚའི་ནོར་བུ = སྣག་བུམ मसिमणिः, मसिधानी मि.को.25क।

སྣང = སྣང་བ།

སྣང་གྱུར = སྣང་བར་གྱུར་པ།

སྣང་བགྱིས = སྣང་བར་བགྱིས་པ།

སྣང་འགྱུར = སྣང་བར་འགྱུར་བ།

སྣང་འགྱུར་བ = སྣང་བར་འགྱུར་བ།

སྣང་འགྱུར་མིན *क्रि.* न दृश्यते – བློ་འདི་ལ་ནི་འགའ་ཞིག་ཀྱང་། །གནོད་པ་ད་ལྟར་སྣང་འགྱུར་མིན॥ अस्याश्च न धियः काचिद् बाधा सम्प्रति दृश्यते। त.स.87क/796.

སྣང་ཅན = སྣང་བ་ཅན།

སྣང་ཉིད = སྣང་བ་ཉིད།

སྣང་བརྙན प्रतिभासः – འོན་ཀྱང་དེ་ལ་དེའི་གཟུགས་བརྙན་དང་དེའི་སྣང་བརྙན་ནམ་ཡེ་ཤེས་ཙམ་མམ་མཐོང་བ་ཙམ་མམ་རྗེས་སུ་དྲན་པ་ཙམ་འབྱུང་བར་འགྱུར་ཏེ अपि तु तत्प्रतिरूपकमस्योत्पद्यते, तत्प्रतिभासं वा ज्ञानमात्रं वा दर्शनमात्रं वा प्रतिस्मृतमात्रं वा श्रा.भू. 78क/199.

སྣང་དང་བཅས *वि.* सनिर्भासः – སྣང་བ་མེད་དང་སྣང་བ

བཅས། །གཞན་གྱི་སྣང་བ་ཁོ་ན་ཡི། །རྣམ་པར་ཤེས་པས་ཕྱི་རོལ་དོན། །རྣམ་པ་གང་གིས་ཀྱང་མི་ཤེས॥ अनिर्भासं सनिर्भासमन्यनिर्भासमेव च। विजानाति न च ज्ञानं बाह्यमर्थं कथञ्चन॥ त.स.73क/682.

སྣང་དུ་མི་རུང་བ་ཉིད अदृश्यत्वम् – མ་མཐོང་ཕྱིར་ཞེས་བྱ་བ་ནི་མི་དམིགས་པའི་ཕྱིར་དང་སྣང་དུ་མི་རུང་བ་ཉིད་དུ་འདོད་པའི་ཕྱིར་རོ॥ अदर्शनादिति अनुपलब्धेः, अदृश्यत्वेनाभिमतत्वाच्च त.प.204क/876.

སྣང་དུ་རུང་བ *वि.* दृश्यः – རྣམ་པ་དེ་ལྟ་བུ་ཞེས་བྱ་བ་ནི་སྣང་དུ་རུང་བའི་ཡོད་པ་མི་དམིགས་སོ॥ एवंविधमिति दृश्यं सदनुपलब्धम् वा.टी.67क/21.

སྣང་དུ་རུང་བ་ཉིད दृश्यत्वम् – གཟུགས་ལ་སོགས་པ་ལས་ཐ་དད་པར་ལྡན་པའམ་ཆ་ཤས་ཅན་སྣང་དུ་རུང་བ་ཉིད་དུ་འདོད་པ་ནི་བློ་ལ་སྣང་བ་མ་ཡིན་པས न च रूपादिव्यतिरेकेणापरः संयोगोऽवयवी च दृश्यत्वेनेष्टो बुद्धौ प्रतिभासत इति त.प.169ख/57.

སྣང་དུ་རུང་བ་མི་དམིགས་པ *पा.* दृश्यानुपलब्धिः – དེ་བས་ན་སྣང་དུ་རུང་བ་མི་དམིགས་པ་ཉིད་མེད་པའི་ཐ་སྙད་སྒྲུབ་པ་ཡིན་ནོ་ཞེས་བྱ་བ་འདི་གནས་སོ॥ तस्माद् दृश्यानुपलब्धिरेवासद्व्यवहारसाधनेति स्थितमेतत् वा.टी.83ख/40.

སྣང་ལྡང་གཙུག་ཕུད་ཅན *ना.* अवभासनशिखी, नागः म.व्यु.3357 (57ख).

སྣང་ལྡན •*वि.* अवभासी – གླིང་བཞི་མི་ཡི་བདག་པོ་སྣང་ལྡན་པ། །འཇིག་རྟེན་འདི་ལ་སྟོན་པ་མཛེས་པ་ལྟར॥ द्वीपचतुर्नृपतिर्ह्यवभासी शोभति लोकमिमं त्वनुभासन्। रा.प.228ख/121; भास्वती – དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་ཉི་མའི་གསུང་འོད་ཀྱིས། །སྣང་ལྡན་མྱ་ངན་འདས་གྲོང་ལམ་གཅིག་པ།...འདི॥ इमां हि निर्वाणपुरैकवर्तिनीं तथागतादित्यवचोंऽशुभास्वतीम्। अभि.भा.95क/1233; अवभासवती – སྣང་བ་དང་ལྡན་པའི་གཟུངས་རབ་ཏུ་ཐོབ་པ་ཡིན अवभासवतीधारणीप्रतिलब्धश्च भवति द.भू.256क/52; •*ना.* सांकाश्यम्, नगरम् – ཀྱེ་བཙོམ་ལྡན་འདས་ནི ... འཛམ་བུའི་གླིང་དུ་གྲོང་ཁྱེར་སྣང་ལྡན་གྱི་འདབ་ཨ་པད་ཛ་རའི་ནགས་སུ་ཤིང་ཨུ་དུམ་བ་རའི་དྲུང་དུ་གཤེགས་སོ॥ अवतरिष्यति भवन्तो भगवान्...जम्बूद्वीपं सांकाश्ये नगरे आपज्जुरे दावे उदुम्बरमूले अ.श.234क/215; •*सं.* = ཡུང་བ काञ्चनी, हरिद्रा मि.को.56ख।

སྣང་ལྡན་པ = སྣང་ལྡན།

སྣང་བ •*क्रि. (अवि., अक.)* **1.** भाति – དེར་རྟེན་ཤེས་པའི་སྣང་བ་གང་། །དོན་གྱི་གཟུགས་བརྙན་ तानुपाश्रित्य यज्ज्ञाने भात्यर्थप्रतिबिम्बकम्। त.स.37ख/390; ལྡོག་པ་བཞིན་དུ་སྒྲ་དག་ལས། །ཤེས་ལ་གཞན་[? དོན] གྱི་གཟུགས་བརྙན་སྣང་॥ व्यतिरेकीव यज्ज्ञाने भात्यर्थप्रतिबिम्बकम्। शब्दात् प्र.वा.124ख/2.165; प्रतिभाति – དེ་བས་ན་ལུས་ཐ་དད་དུ་སྣང་བའི་ཕྱིར་དེའི་ཚེ་འདི་དུ་མ་ཉིད་ག་ལས་ཡིན་ཏེ अतो भिन्नमूर्त्तिः प्रतिभातीति तदाऽस्यानेकता कुतः त.प.148क/748; གང་དང་གང་རང་གི་ངོ་བོ་ཉིད་ཀྱིས་མི་སྣང་བའི་གཟུང་བར་མངོན་པར་འདོད་པ་དེ་ནི... དམིགས་པའི་རྐྱེན་དུ་འགྱུར་བ་མ་ཡིན་ཏེ यदेव न प्रतिभाति स्वरूपेण ग्राह्याभिमतं स न भवत्यालम्बनप्रत्ययः प्र.अ.197क/211; ख्याति – དེ་ལྟ་ན་མཚན་ཉིད་མེད་པ་ཡིན་ནོ॥ ཡོད་པ་མ་ཡིན་ཡང་ཡོད་པ་ལྟ་བུར་སྣང་སྟེ། དེ་ལྟ་བས་ན་སྒྱུ་མ་ལྟ་བུ་ཡིན་ནོ॥ एवमलक्षणा अविद्यमानाश्च ख्यान्ति तस्मान्मायोपमाः सू.व्या.170क/62; प्रख्याति – དེ

ཡང... ལོངས་སྤྱོད་རྫོགས་པའི་སྐུས་[? སྐུར་]རྣམ་པ་སྣ་ཚོགས་པར་སྣང་སྟེ तेऽपि...सम्भोगकाये विचित्ररूपाः प्रख्यान्ति ख.टी.159क/241; पश्यति – ཁྲོན་པ་ལ་སོགས་པ་དག་ཀུང་ལན་འགའ་ནི་ཆུས་ཀྱུས་པར་སྣང་ལ कूपादीन्येकदा समृद्धोदकानि पश्यति श्रा.भू.183ख/483; भासते – གྲངས་ལྡན་ལས་ལ་སོགས་པ་ཡི། །ངོ་བོའང་བློ་ལ་མི་སྣང་ངོ་॥ संख्यासंयोगकर्मादेः... रूपं बुद्धौ न भासते ॥ प्र.अ.86क/94; अवभासते – རྟོག་པའི་དྲ་བ་རྣམ་བསལ་བས། །གསལ་བ་ཉིད་དུ་སྣང་བ་ཡིན།॥ विधूतकल्पनाजालं स्पष्टमेवावभासते ॥ प्र.वा.129क/2.281; གང་ལས་དུས་གསུམ་གནས་པ་ཡི། །དངོས་པོ་ཐམས་ཅད...སྣང་॥ यस्याध्वत्रितयस्थं हि सर्वं वस्त्ववभासते। त.स.123ख/1074; प्रतिभासते – གང་དུ་ལྷས་བསྟན་པས་རྨི་ལམ་མཐོང་བ་གཉི་ག་ལ་སྣང་བ यत्र च देवतादेशो द्वयोरपि स्वप्नदर्शिनोः प्रतिभासते प्र.अ.64क/72; གང་ཞིག་དེ་རྣམས་སྒྱུ་མ་འདྲ་བའི་ངོ་བོ་ཡིན་ཞིང་མཚུངས་པའི་ངོ་བོར་སྣང་སྟེ यतस्तेषां मायया स्वभावाः समानरूपाः प्रतिभासन्ते ख.टी.160क/241; प्रत्यवभासते – རྟོག་པ་མེད་པའི་ཤེས་པ་ལ་སྤྱི་སྣང་བ་ཡང་མ་ཡིན་ལ न च [अ]विकल्पे विज्ञाने सामान्यं प्रत्यवभासते त.प.99ख/648; भासमुपैति – ཇི་ལྟར་ཚངས་པ་འབད་མེད་སྣང་॥ ब्रह्मा यथा भासमुपैत्ययत्नात् र.वि.125ख/107; काशते – གཞན་དག་ན་རེ་འདིའི་ནང་ན་དངོས་པོ་རྣམས་ཤིན་ཏུ་སྣང་བས་ནམ་མཁའ་ཞེས་ཟེར་རོ॥ भृशमस्यान्तः काशन्ते भावा इत्याकाशमित्यपरे अभि.स्फु.12क/19; ईक्षते – དེ་མེད་ཀྱང་ནི་འབྲས་བུ་དེ། །འགའ་ཞིག་ལ་སྣང་མ་ཡིན་ནམ॥ तदभावेऽपि तत्कार्यं.ननु कस्याञ्चिदीक्षते ॥ त.स.119ख/1037; བདག་གི་ལུས་ལ་ཅི་སྣང་བ॥ कायेऽस्मिन् यद्यदीक्षसे बो.अ.29ख/8.159; दृश्यते – དེའི་བདག་ཉིད་དུ་གནས་པ་ཡང་གཞིར་སྟོན་པ་སྣང་སྟེ तादात्म्यावस्थानतोऽपि ह्यधिकरणनिर्देशो दृश्यते अभि.स्फु.8ख/14; དེ་ལྟ་བས་ན་དེའི་འདི་ནི་སྒྱུ་ཡིན་པར་སྣང་སྟེ इतीदमस्य शाठ्यं दृश्यते अभि.स्फु.136ख/848; ཇི་ལྟར་གཟུགས་བརྙན་མེ་ལོང་ལ། །རང་ཉིད་ངེས་པར་སྣང་བ་ལྟར॥ प्रतिबिम्बं यथादर्शे स्वकीयं दृश्यते ध्रुवम्। ज्ञा.सि.38ख/97; སེམས་ནི་རྣམ་པ་གཉིས་སུ་སྣང་॥ द्विधा चित्तं हि दृश्यते ल.अ.127ख/73; विदृश्यते – ཇི་ལྟར་ཚོན་རྩི་གཅིག་པུ་ཡང་། །རྩིག་པ་ལ་ནི་སྣ་ཚོགས་སྣང་॥ रङ्गं हि यथाप्येकं कुड्ये चित्रं विदृश्यते ॥ ल.अ.174क/134; संदृश्यते – འདུལ་བ་ལ་ཡང་སྣང विनये संदृश्यते सू.व्या.132क/4; प्रदृश्यते – ཐ་དད་པ་ཡི་ཆོས་རྣམས་ནི། །ཇི་ལྟར་འཇིག་རྟེན་དག་ན་སྣང་॥ पृथक्त्वादेव धर्माणामेवं लोके प्रदृश्यते ॥ ज्ञा.सि.43क/109; ख्यायते – ལུས་དང་ལོངས་སྤྱོད་གནས་འདྲ་བར། །མི་རྣམས་ལ་ནི་ཀུན་གཞི་སྣང་॥ देहभोगप्रतिष्ठान[?भ]मालयं ख्यायते नृणाम् ॥ ल.अ.175क/136; དཀར་པོ་ལ་ནི་དྲི་མ་སྣང་། །དྲི་མ་ལ་ནི་དཀར་མི་སྣང་॥ मलो वै ख्यायते शुक्ले न शुक्ले ख्यायते मलः। ल.अ.169ख/126; प्रज्ञायते – བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་དེའི་སྟོབས་དང་མཐུ་ཡང...མངོན་པར་འཕེལ་བར་སྣང་ངོ་॥ तस्य बोधिसत्त्वस्य बलस्थामाभिवृद्धिः प्रज्ञायते द.भू.264क/57; प्रतीयते – དེས་ན་འོག་ནི་ཉི་མ་སྟེ། །བར་མཚམས་བཅས་པར་ཉི་མ་སྣང་॥ अधस्तादेव तेनार्कः सान्तरालः प्रतीयते ॥ त.स.81क/750; समीक्ष्यते – གསལ་བར་སྣང་ཞེས་བྱ་བ་ནི་གསལ་བར་དམིགས་ཞེས་བྱ་བའི་དོན་ཏོ॥ व्यक्तं समीक्ष्यत इति स्पष्टमुपलभ्यत इत्यर्थः त.प.151ख/28; उपलभ्यते – རྒྱ་མཚོ་འདིའི་ནང་ན་སྔོན་མ་མཐོང་བའི་མཚན་མ་དག་ཅིག་སྣང་སྟེ अपूर्वं खल्विदमिह महास-

मुद्रे चिह्नमुपलभ्यते जा.मा.81ख/94; विद्यते – ཡོད་རྫོ་སྣང་རྫོ་ཞེས་བྱ་བ་ཡོད་པའི་རྒྱུ་མཚན་དང 'अस्ति', 'विद्यते' इति सत्ताप्रवृत्तिनिमित्तकौ त.प.311ख/338; गृह्यते – ནོར་བ་དག་གིས་བརྟགས་པ་སྣང་॥ कल्पितं गृह्यते भ्रान्त्या ल.अ.107ख/53; समारोहति – གང་ཇི་སྙེད་ཅིག་ཡོད་པ་ཉིད་དུ་ཉམས་སུ་མྱོང་བ་དེ་ཐམས་ཅད་སྣང་བ་ཡིན་ཏེ यावत् किञ्चिदस्तित्वमनुभवति तत् सर्वमेव समारोहति त.प.329क/1125 2. दृश्यते स्म – དེ་དག་གིས་གཙུག་ལག་ཁང་དེ་ཡོངས་སུ་མཛེས་པར་སྣང་སྟེ सर्वे ते विहारपरिशोभिता एव दृश्यन्ते स्म का.व्यू.203ख/260; संदृश्यते स्म – འགྲོ་བ་དྲུག་པོ་དེ་དག་ན་སེམས་ཅན་གང་ཡོད་པ་དེ་དག་ཐམས་ཅད་མ་ལུས་པར་སྣང་ངོ་॥ षट्सु गतिषु सत्त्वाः संविद्यन्ते स्म, ते सर्वेऽशेषेण संदृश्यन्ते स्म स.पु.4क/3 3. भासेरन् – དེ་ལྟ་མིན་ན་འཇིག་འགྱུར་བ[? གྱུར་པ]། །དྲན་པ་ལ་ནི་ཇི་ལྟར་སྣང་॥ अन्यथा हि विनष्टास्ते भासेरन् स्मरणे कथम् ॥ त.स.99ख/880; दृश्येत – གལ་ཏེ་རིག་བྱེད་བྱེད་པོ་དང་། །འདྲ་བ་ད་ལྟར་ཅུང་ཟད་སྣང་॥ वेदकारसदृक् कश्चिद् यदि दृश्येत सम्प्रति। त.स.76ख/716; ईक्ष्येत – ལུས་དང་རི་སོགས་ཆོས་ཅན་ལ། །གལ་ཏེ་དེ་འདྲ་ཉིད་སྣང་ན॥ तादृगेव यदीक्ष्येत तन्वगादिषु धर्मिषु। त.स.4क/60; •सं. 1. प्रतिभासः – རྣམ་པར་རྟོག་པའི་ཤེས་པས་ངེས་པའི་དོན་ནི་ཉེ་བ་[དང་མི་ཉེ་བ་]དག་ལས་ཤེས་པའི་སྣང་བ་ཐ་དད་པར་མི་བྱེད་དོ॥ विकल्पज्ञानेनावसीयमानो ह्यर्थः सन्निधानासन्निधानाभ्यां ज्ञानप्रतिभासं न भिनत्ति न्या.टी.45क/77; སྐྲར་སྣང་དོན་མེད་ཅན་ཡིན་ནོ॥ केशप्रतिभासमनर्थकम् प्र.वा.118ख/2.9; གཟུང་བ་དང་འཛིན་པ་དེར་སྣང་བ་མེད་པར་ཡོངས་སུ་གཅོད་པའི་ཕྱིར་རོ॥ ग्राह्यग्राहकतत्प्रतिभासानामसत्तया परिच्छेदनात् ख.टी.153ख/232; དེ་ལྟ་ན་འོ་ན་ནི་བློའི་སྣང་བ་ཁོ་ན་ཤེས་པའི་ངོ་བོ་ཡིན་པའི་ཕྱིར་ཡོད་པ་ཉིད་ཀྱི་ཡིན་ནོ་ཞེ་ན एवं तर्हि बुद्धेरेव प्रतिभासो ज्ञानरूपत्वात्सन्नेव सामान्यम् प्र.वृ.283क/25; आभासः – གཉིས་སུ་སྣང་ཞེས་བྱ་བ་ནི་གཟུང་བ་དང་འཛིན་པར་སྣང་བའོ॥ द्वयाभासा इति ग्राह्यग्राहकाभासाः सू.व्या.170ख/63; གཏན་ཚིགས་ལྟར་སྣང་བ་རྣམས हेत्वाभासाः वा.टी.107क/73; अवभासः – གསེར་གྱི་ཁ་དོག་ལྟ་བུའི་སྣང་བ་འབྱུང་བར་འགྱུར सुवर्णवर्णमयाश्चावभासाः प्रादुर्भविष्यन्ति सु.प्र.22क/44; དེ་ལ་ངོ་བོར་སྣང་བ་འམ། །དོན་ལ་དེ་ཉིད་དུ་འཛིན་པ॥ तस्यां रूपावभासो यस्तत्त्वेनार्थस्य वा ग्रहः। प्र.वा.119ख/2.29; བཙུན་པ་བཅོམ་ལྡན་འདས་ཆོས་ཐམས་ཅད་བདག་ལ་མངོན་སུམ་མོ॥ བཙུན་པ་བཅོམ་ལྡན་འདས་ཆོས་ཐམས་ཅད་ལ་བདག་གི་ཡེ་ཤེས་སྣང་བ་བསམ་གྱིས་མི་ཁྱབ་པོ॥ सर्वधर्मेष्वहं भदन्त भगवन्प्रत्यक्षः, अचिन्त्या मे भदन्त भगवञ्ज्ञानावभासाः सु.प्र.36क/68; निर्भासः – དོན་གཅིག་པ་མིན་ཐ་དད་པར། །སྣང་ཕྱིར་གཟུགས་རོ་སོགས་བློ་བཞིན॥ नैकार्था भिन्ननिर्भासाद् रसरूपादिबुद्धिवत् ॥ त.स.89ख/815; ཀུན་གཞི་རྣམ་པར་ཤེས་པ་ལས་བདག་ལ་སོགས་པར་སྣང་བ་དང་གཟུགས་ལ་སོགས་པར་སྣང་བའི་རྣམ་པར་རྟོག་པ་འབྱུང་ངོ་॥ आलयविज्ञानादात्मादिनिर्भासो विकल्पो रूपादिनिर्भासश्चोत्पद्यते त्रि.भा.147क/29; གནས་དང་ལུས་དང་ལོངས་སྤྱོད་དུ་སྣང་བའི་རྣམ་པར་ཤེས་པ प्रतिष्ठादेहभोगनिर्भासानां विज्ञप्तीनाम् ख.टी.153क/231; प्रभासः – སེམས་ནི་གཉིས་སུ་སྣང་བ་སྟེ॥ चित्तं द्वयप्रभासम् सू.अ.171क/63 2. = རྣམ་པ आकारः – གསལ་བར་སྣང་བའི་ཤེས་པ་སྐྱེས་ན་འདི་ནི་འདི་ལྟ་བུ་མ་ཡིན་ནོ་ཞེས་བྱ་བར་འགྱུར་བ་ཡིན་ནོ॥ नेदमेवंभूतमिति स्पष्टाकारप्रत्ययोदये सति

भवति प्र.अ.17क/19; उल्लेखः – མཚུངས་པ་ནི་རྣམ་པ་སྟེ། སྣང་བ་ཞེས་བྱ་བའི་དོན་ཏོ།། आकरणमाकारः, उल्लेख इत्यर्थः प्र.अ.19ख/22; उपरागः – དེ་ནི་དོན་མེད་སྣང་བ་དང་། །མཚུངས་པ་ཁོ་ནར་ངེས་པར་འགྱུར།། सोऽसदर्थोपरागेण तुल्य एवावसीयते ॥ त.स.70ख/660; སྣང་བ་ནི་རྣམ་པ་སྟེ उपरागः निर्भासः त.प.105क/661 3. भासनम् – འབྲས་བུའི་བྱེ་བྲག་ཐམས་ཅད་སྣང་བ་ཡིན་ལ सकलकार्यभेदभासनम् प्र.अ.107ख/115; अवभासनम्– རང་གི་ངོ་བོ་སྣང་བ་ལ། །མི་གསལ་ཞེས་བྱར་ཇི་ལྟར་འགྱུར།། अस्पष्टता कथं नाम स्वरूपेणावभासने ॥ प्र.अ.16ख/19; प्रतिभासनम् – མ་རིག་པའི་དབང་གིས་དེ་ལྟར་སྣང་བར་མི་རིགས་སོ།། न युक्तमविद्यावशात् तथा प्रतिभासनम् त.प.189ख/95; དེའི་ཕྱིར་མཚེ་མ་དག་ལས་འཁྲུལ་པར་ཤེས་པ་ལ་ཡང་མིང་དང་མཚན་མ་སྣང་བ་ཉིད་ཡིན་པས་དཔེ་མ་གྲུབ་པོ།། तस्माद् यमलकयोर(?)भ्रान्तिप्रतिपत्तौ नामनिमित्तप्रतिभासनमेवेति असिद्धो दृष्टान्तः प्र.अ.178क/193; आभासनम् – གསང་སྔགས་དག་གིས་འདྲེན་པ་ནི་སྣང་བ་ནའོ།། आभासने मन्त्रैराकर्षणे वि.सू.14ख/16; उद्द्योतनम् – བློ་གྲོས་ཆེན་པོ་སྣང་བར་བྱེད་པའི་རྒྱུ་ནི་རྣམ་པར་རྟོག་པའི་དངོས་པོ་སྐྱེས་པའི་མཚན་ཉིད་སྣང་བའི་བྱ་བ་བྱེད་དེ व्यञ्जनहेतुः पुनर्महामते उत्पन्नस्य विकल्पस्य भावस्य लक्षणोद्द्योतनकृत्यं करोति ल.अ.88ख/35 4. ख्यातिः – རྨི་ལམ་གྱི་མཐོང་བ་ཕྱིན་ཅི་ལོག་སྣང་བ་ཡིན་པར་བསྒྲུབ་པར་བྱའོ།། स्वप्नदर्शिनो विपरीतख्यातिं प्रतिपादयिष्यामि प्र.अ.181क/195; དེའི་རྣམ་པ་སྐྱེས་ཏེ། རྣམ་པ་ཇི་ལྟ་བ་བཞིན་དུ་མེད་པ་ཉིད་ཀྱིས་བཅོམ་ལྡན་འདས་སྣང་བ་ཞེས་བྱའོ།། तदाकारमुत्पद्य यथाकारमसत्तया भगवतः ख्यातिः ख.टी.157क/237; བརྫུན་པར་སྣང་བ་ཡང་འཁྲུལ་པ་ཡིན अलीकख्यातिश्च भ्रान्तिः ख.टी.168क/251; ख्यानम् – དོན་དུ་སྣང་བ་ནི་བརྗོད་པ་ལས་ཡིན་པར་རབ་ཏུ་འཛིན་པའི་ཕྱིར་བསམས་པ་ལས་བྱུང་བའི་ཤེས་པས་དེ་རྙེད་དེ जल्पादर्थख्यानस्य प्रधारणाच्चिन्तामयेन [ज्ञानेन] तल्लाभः सू.व्या.165ख/57; འཁྲུལ་བའི་དབང་གིས་དེ་ལྟར་སྣང་བ་ལ་ནི་འགལ་བ་མེད་དོ།། विभ्रमबलात्तु तथा ज्ञाने [? ख्याने] न विरोधः प्र.वृ.289ख/32; प्रख्यानम् – ཆོས་དེ་དག་དོན་དུ་སྣང་བར་རྟོགས་པའི་ཕྱིར तेषां धर्माणामर्थप्रख्यानावगमात् सू.व्या.146क/25; སྐུ་དང་གསུང་དང་ཐུགས་ཀྱི་སྣང་བ་[རྣམ་པ་]སྣ་ཚོགས་པར་སྣང་བའི་ཕྱིར་རོ།། विचित्रकायवाक्चित्ताकारेण प्रख्यानात् ख.टी.159ख/241; सम्प्रख्यानम् – གཟུང་བ་དང་འཛིན་པར་སྣང་བའི་རྒྱུ་ལ ग्राह्यग्राहकसम्प्रख्यानकारणे म.टी.297ख/164; विख्यानम् – དེ་ལས་ཀྱང་དོན་སྣང་བ་ནི། །ཀུན་བརྟགས་པ་ཡི་མཚན་ཉིད་དོ།། तस्मादप्यर्थविख्यानं परिकल्पितलक्षणम् ॥ सू.अ.171ख/64 5. = མཐོང་བ། མཐོང་པ दर्शनम् – གྲིབ་མ་ནི་གང་ན་གཟུགས་རྣམས་སྣང་བའོ།། छाया यत्र रूपाणां दर्शनम् अभि.भा.30क/32; དེ་ན་ཐུབ་པའི་མཆོག་དེ་རབ་ཏུ་ཞི་ཞིང་དུལ་བར་སྣང་ཡང तं मुनिवरं प्रशमसौम्यदर्शनम् जा.मा.165ख/191; སྣང་བའི་ཉེན་ཀོར་དུ दर्शनोपविचारे वि.सू.8क/8; संदर्शनम् – ཇི་ལྟར་མེ་ནི་གཞན་དུ་འབར། །གཞན་དུ་ཞི་བར་འགྱུར་བ་ལྟར། །དེ་བཞིན་སངས་རྒྱས་རྣམས་ལ་ཡང་། །སྣང་དང་མི་སྣང་ཤེས་པར་བྱ།། यथाग्निर्ज्वलतेऽन्यत्र पुनरन्यत्र शाम्यति। बुद्धेष्वपि तथा ज्ञेयं संदर्शनमदर्शनम् ॥ सू.अ.154ख/40; ईक्षणम् – ཁྲོན་པ་ལ་སོགས་གཏིང་དུ་ནི། །གཟུགས་བརྙན་མེད་ན་ཇི་ལྟར་སྣང་།། कूपादिषु कुतोऽधस्तात् प्रतिबिम्बाद् विनेक्षणम्। त.स.81क/749; དེས་ན་མི་དམིགས་འབའ་ཞིག་ནི། །རྣམ་པ་གཉིས

སུ་སྣང་བའི་ཕྱིར།། ततश्चानुपलम्भस्य केवलस्य द्विधेक्षणात् । त.स.120ख/1042; आलोकः – རབ་ཀྱི་རྩལ་གྱིས་རྣམ་པར་གནོན་པ་ཤེས་རབ་ཀྱི་ཕ་རོལ་ཏུ་ཕྱིན་པ་འདི་ནི་ཆོས་གང་འབྲི་བའི་ཕྱིར་རམ... སྣང་བའི་ཕྱིར་རམ... རབ་ཏུ་མ་རྟོགས་པའི་ཕྱིར་ཉེ་བར་གནས་པ་མ་ཡིན་ནོ།། न खलु पुनरियं सुविक्रान्तविक्रामिन् प्रज्ञापारमिता कस्यचिद्धर्मस्य हानाय वा...आलोकाय वा...अप्रतिवेधाय वा प्रत्युपस्थिता सु.प.47क/24; आलोकनम् – གཏུམ་མོའི་སྣང་བ་གང་ཞིག་སྲིད་པ་གསུམ་གྱི་ནམ་མཁའ་ལ་གྱུར་པ་དེ་ནི་རྗེས་སུ་དྲན་པ་སྟེ चण्डाल्यालोकनं यत् त्रिभवस्याम्बरे साऽनुस्मृतिः वि.प्र.66ख/4.117 6. = འོད ज्योतिः, आलोकः – གལ་ཏེ་སྒྲ་དོན་སྣང་བ་ནི། །འཁོར་བའི་བར་དུ་མི་གསལ་ན། །འཇིག་རྟེན་གསུམ་པོ་མཐའ་དག་འདི། །སྨག་རུམ་མུན་པ་ཉིད་དུ་འགྱུར།། इदमन्धन्तमः कृत्स्नं जायते भुवनत्रयम् । यदि शब्दाह्वयं ज्योतिरासंसारं न दीप्यते ॥ का.आ.318ख/1.4; དུ་བའི་ལམ་ནི་ཟླ་བའི་སྣང་བ་མཚན་མོ་དག་དང धूममार्गो ज्योतिश्चन्द्रो निशा च वि.प्र.274ख/2.101; དོན་འབྲས་ཉིད་ཀྱིས་ཤེས་དྲན་ན། །དོན་དྲན་ཕྱིར་ན་འཁྲུལ་པ་ཡིས། །གལ་ཏེ་སྦྲེ་ན་སྣང་བ་དང་། །ཡིད་བྱེད་ལ་ཡང་དེར་འགྱུར་རོ།། अर्थकार्यतया ज्ञानस्मृतावर्थस्मृतेर्यदि । भ्रान्त्या सङ्कलनं ज्योतिर्मनस्कारे च सा भवेत् ॥ प्र.वा.133क/2.382; आलोकः – གལ་ཏེ་ཐམས་ཅད་དུ་ཐུན་མོང་བའི་རིག་བྱེད་སྣང་བ་བཞིན་དུ་རང་ཉིད་ལས་ཚད་མ་མ་ཡིན་ནམ ननु यदि स्वत एव प्रमाणमालोकवत् सर्वसाधारणो वेदः त.प.165ख/785; ཆོས་སྣང་བའི་སྒོ धर्मालोकमुखम् ल.वि.22ख/25; འཇིག་རྟེན་རྣམས་ལ་ཡེ་ཤེས་ཀྱི་སྣང་བར་གྱུར་པ लोकस्य ज्ञानालोकभूताः ख.टी.160ख/241; འདི་ན་ཐབས་དང་ཤེས་རབ་ལས་སྐྱེས་པའི་བདེ་བ་ཆེན་པོའི་སྣང་བ་གནས་པ་ཡིན་ཏེ अस्मिन् प्रज्ञोपायोत्पन्नमहासुखालोकस्थाने त.सि.66क/175; लोकः – དེ་ཡི་བློན་པོ་ཟླ་ཆེན་པོ། །རབ་འབར་ཟླ་བའི་སྣང་བ་བཞིན།..གྱུར།། तस्य...अभून्मन्त्री महाचन्द्रश्चन्द्रलोक इवोज्ज्वलः ॥ अ.क.48क/5.15; प्रकाशः – སྣང་བ་དང་ནི་མུན་པ་ཡི། །ཕུང་པོ་དག་ལས་སྐྱབ་པ་པོ། །དེ་ཉིད་ཤེས་མཁའ་སྟོམ་སེམས་ཏེ། །གང་ཕྱིར་གནས [གཞན་]མེད་བལྟར་ཡང་མེད།། प्रकाशतमसो राशेस्तमेव व्योम मन्यते । प्रतिपत्ता यतोऽन्यस्य न सत्त्वं न च दर्शनम् ॥ त.स.61ख/586; ལེགས་བྱས་སྤྲ་དྲིའི་དུས་ནི་དྲི་མ་མེད་ཅིང་ཡངས་པ་ཡི། །དགེ་བ་ཕུལ་བྱུང་སྣང་བ་དེ་ལྟར་ཀུན་ཏུ་རྒྱས་པར་གྱུར།། इत्यातनोति विमला सुकृतप्रभाव[? त लि.पा.]वेला विशालकुशलातिशयप्रकाशम् ॥ अ.क.195ख/82.41; ཆུ་སྐྱུར་ལ་སོགས་པ་ཡང་མཚན་མོ་ཉུང་ཟད་ཉུང་ཟད་སྣང་བ་ན་ཡང་དེར་གནོགས་པའི་སྐྱ་བོ་ལ་སོགས་པའི་གཟུགས་མ་མཐོང་ཡང་བཟུང་བ་ཁོ་ནའོ།། बलाकादिश्च रात्रौ मन्दमन्दप्रकाशायां तद्गतसितादिरूपादर्शनेऽपि गृह्यत एव त.प.259क/234; प्रभा – དེའི་སྣང་བས་ཡབ་ཡུམ་ཞུ་བར་བལྟས་ལ तत्प्रभाविलीनौ च मातापितरौ विलोक्य ख.टी.162ख/244; तेजः – གང་ཚེ་རེ་ཞིག་ནི། །ཆུ་ལ་ཡིད་འོང་[? ཉིའི་འོད་]གཡོ་བ་ཡི། །མིག་གི་སྣང་བ་གང་བྱུང་བ། །དེ་ནི་ལྡོག་པར་གྱུར་པ་ན།། यदा तावज्जले सौरेण तेजसा । स्फुरता चाक्षुषं तेजः प्रतिस्रोतः प्रवर्तितम् ॥ त.स.80ख/748; भाः – བདག་གི་ཁང་ནང་འཇུག་ཚེ་མེ་ཁྱེར་ཕྲེང་བ་ལྟ་བུའི་སྣང་བ་ཆུང་ཞིང་ཆུང་བ་ནི། །མཛེས་ཤིང་རོལ་པའི་གློག་མ་གཡོ་བའི་སྒྲོག་གི་མིག་ནི་བྱས་ནས་ཁྱོད་ཀྱིས་ལྟ་བར་འོས།། अर्हस्यन्तर्भवनपतितां कर्तुमल्पाल्पभासं खद्योतालीविलसितनिभां विद्युदुन्मेषदृष्टिम् ॥ मे.दू.348क/2.20;

दीपः – ཆོས་ཀྱི་སྐུའི་སྣང་བའི་ཆོ་ག་ཞེས་བྱ་བ धर्मकायदीपविधिनाम क.त.1953; द्युतिः – ཐོ་རངས་སྣང་བ प्रभातद्युतिः अ.क.270ख/101.1; रुचिः मि.को.144ख; धृष्णिः मि.को.144क **7.** दृश्यम् – སེམས་ནི་ལས་རྣམས་སོགས་པར་བྱེད། ...།ལྔ་པོ་སྣང་ལ་རྟོག་པར་བྱེད།། चित्तेन चीयते कर्म...दृश्यं कल्पेति पञ्चभिः॥ ल.अ.73क/21; སེམས་ཀྱི་སྣང་བ་མི་ཤེས་པས། །རྣམ་པར་རྟོག་པ་རྣམ་གཉིས་སྐྱེ།། चित्तदृश्यापरिज्ञानाद्विकल्पो जायते द्विधा। ल.अ.129ख/75; སྣང་བའི་རྣམ་པ་སྣང་བ་མེད།། दृश्याकारं न दृश्योऽस्ति ल.अ.129ख/75 **8.** = སྣང་བ་ཉིད आभासता – དེ་བཞིན་དུ་ཡང་དག་པ་མ་ཡིན་པའི་ཀུན་ཏུ་རྟོག་པ་འདི་ལ་གཉིས་སུ་སྣང་བ་ནི་ཡོད་དོ།། གཉིས་ཀྱི་དངོས་པོ་ནི་མེད་དོ།། तथाऽत्राभूतपरिकल्पे द्वयाभासतास्ति द्वयभावश्च नास्ति सू.व्या.169क/61; प्रतिभासता – མི་གསལ་བར་སྣང་བའང་ཡང་ན་མི་སྣང་བའམ་གཞན་སྣང་བའམ अस्पष्टप्रतिभासता हि कदाचिदप्रतिभासता कदाचिदन्यप्रतिभासता प्र.अ.16ख/19; प्रख्यानता – དོན་དང་མིང་དུ་སྣང་བ་ནི་དོན་དང་མིང་དུ་སྣང་བའོ།། अर्थस्य नाम्नश्च प्रख्यानता यथानामार्थप्रख्यानता सू.व्या.172क/65; आलोकता – ཐོབས་པ་རྣམ་པར་ངེས་པ་འཐོབ། སྣང་བ་འཐོབ विनिश्चयप्रतिभानतां च प्रतिलभते, आलोकतां च प्रतिलभते रा.प.231क/124; आभत्वम् – དེ་བས་ན་རྫོགས་པའི་གནས་སྐབས་ལས་སྔ་རོལ་གྱི་གནས་སྐབས་ཀྱི་གསལ་བའི་སྣང་བ་ནི་རབ་ཀྱི་མཐའ་ཞེས་བྱའོ།། ततः सम्पूर्णावस्थायाः प्राक्तन्यवस्था स्फुटाभत्वप्रकर्षपर्यन्त उच्यते न्या.टी.44क/68; दृश्यता – སྣང་བ་ཞེས་བྱ་བ་འདི་ཅི་ཞིག केयं दृश्यता नाम प्र.अ.40क/46; भासिता – བློ་ཡི་རང་བཞིན་གསལ་བ་ན། །དོན་མི་གསལ་བར་སྣང་བ་མིན།། बुद्धिस्वरूपनिर्भासे नार्थस्यास्पष्टभासिता ॥ प्र.अ.16ख/19; प्रतिभासिता – རྣམ་རྟོག་རྗེས་སུ་འབྲེལ་བ་ལ། །དོན་གསལ་སྣང་བ་མ་ཡིན་ཏེ།། न हि विकल्पानुविद्धस्य स्पष्टार्थप्रतिभासिता त.प.17क/480 **9.** = འཆར་བ आविर्भावः – དེ་རྫུ་འཕྲུལ་གྱི་རྣམ་པ་དུ་མ་སྤྱོད་པར་བྱེད་དེ...སྣང་བ་དང་མི་སྣང་བ་ཡང་དག་རབ་ཏུ་སྤྱོད་དེ सोऽनेकविधां ऋद्धिविधिं प्रत्यनुभवति...आविर्भावं तिरोभावमपि प्रत्यनुभवति द.भू.199क/21 **10.** छाया – དག་པའི་བཻ་ཌཱུ་རྱ་འདྲ་སེམས་ལ་སྣང་བའི་ཐུབ་དབང་ཐོབ་བྱའི་ཕྱིར། वैडूर्यस्वच्छभूते मनसि मुनिपतिच्छायाधिगमने र.वि.123क/101 **0.** तारः, ०रम् – སྤྲིན་ནག་ཆེན་པོ་ལྡན་པའི་དུས། །སྣང་དང་རྒྱུ་སྐར་ཀུན་མི་མཚོན། །གསང་མཐོང་དཀའ་བ་སྒྲིག་བྱེད་པའི། །དུས་འདྲ་སུ་ཡིས་ལྟ་བར་ནུས།། कालं कालमनालक्ष्यतारतारकमीक्षितुम्। तारतारम्यरसितं कालं कालमहाघनम् ॥ का.आ.335ख/3.35; प्रज्वालनिकाकरणम् – མེ་ཁང་གི་ནི་སྣང་བར་སྒོ།། अग्निशालायां प्रज्वालनिकाकरणम् वि.सू.72क/88; • *पा.* आलोकः, रूपायतनभेदः – གཟུགས་ཀྱི་སྐྱེ་མཆེད་དེ་ཉིད་རྣམ་པ་ནི་ཤུ་ཞེས་བྱ་སྟེ། འདི་ལྟ་སྟེ། སྔོན་པོ་དང...སྣང་བ་ནི་ཟླ་བ་དང་སྐར་མ་དང་མེ་དང་སྨན་དང་ནོར་བུ་རྣམས་ཀྱི་འོད་དག་གོ།། तदेव रूपायतनं पुनरुच्यते–विंशतिधा, तद्यथा–नीलम्...आलोकः चन्द्रतारकाग्न्योषधिमणीनां प्रभा अभि.भा.30क/32; •*ना.* **1.** भाः, देवीसमूहः – བདག་པོའི་ཡན་ལག་ཏུ་གྱུར་པའི་ཕྱིར། རྟག་ཏུ་བརྒྱན་པ་ཞེས་བྱ་སྟེ། སྡོང་བའམ་ལྷ་མོ་བཞིས་བསྡུས་པའི་ངོ་བོ་ཉིད་ཀྱི་ཕྱིར་ཤིན་ཏུ་བརྒྱན་པ་ཞེས་བྱ་སྟེ་སྣང་བའོ།། पत्युरङ्गगतत्वान्नित्यं भासत इति भाः। चतुर्देवीसंग्रहरूपत्वाद्वा अत्यर्थं भासत इति भाः ख.टी.159ख/240; ལྷ་མོ་ནི་སྣང་བའི་ལྷ་མོའོ།། देवी भादेवी ख.टी.162क/243

2. अवभासम्, चिन्तामणिरत्नम् – གསེར་ཞེས་བྱ་བའི་བ་སྤུའི་ཁུང་བུ་ན་སྣང་བ་ཞེས་བྱ་བའི་ཡིད་བཞིན་གྱི་ནོར་བུ་རིན་པོ་ཆེ་ཡོད་དེ सुवर्णनामरोमविवरे अवभासं नाम चिन्तामणिरत्नम् का.व्यू.225ख/288; •वि. प्रतिभासी – བརྡ་འཛིན་པའི་དུས་ན་རྣམ་པར་རྟོག་པའི་བློ་ལ་སྣང་བའི་བློ་ལ་གནས་པའི་བ་མེན་ནི་དཔེའོ॥ सङ्केतग्रहणकाले विकल्पबुद्धिप्रतिभासी बुद्धिस्थो गवयो दृष्टान्तः त.प.51ख/554; अवभासी – རྒྱུ[? སྒྲ] ཡིས་སྤྲུལ་པ་ཤེས་པ་ནི། །དེ་རྣམས་འཁྲུལ་པའི་སྣང་བ་ཡིན॥ मिथ्याऽवभासिनो ह्येते प्रत्ययाः शब्दनिर्मिताः ॥ त.स.45क/448; निर्भासी – དེ་ལ་དོན་བྱེད་པར་སྣང་བའི་ཤེས་པ་རིགས་[? རིག་]པ་ཉིད་མི་སླུ་བ་ཡིན་ཏེ तत्र चार्थक्रियानिर्भासिज्ञानसंवेदनमेवाविसंवादः त.प. 239क/949; མྱ་ངམ་གྱི་ཐང་སྣང་བའི་ཤེས་པ मरुस्थलीनिर्भासि ज्ञानम् त.प.243क/957; ཡི་གེ་མཐའ་དག་སྣང་བའི་དྲན་པའི་ཤེས་པ समस्तवर्णनिर्भासि स्मार्त्तज्ञानम् त.प.205ख/879; भासी – ལྷན་ཅིག་ཏུ་ནི་སྐྱེས་པ་ཡང་། །དེ་དག་རང་བཞིན་དུ་ནི་སྣང་॥ साहित्येनापि जातास्ते स्वरूपेणैव भासिनः। त.स.72क/672; དོན་བྱེད་སྣང་བའི་ཤེས་པ་ནི། །རྨི་ལམ་ན་ཡང་ཡོད་མིན་ནམ॥ ननु चार्थक्रियाभासि ज्ञानं स्वप्नेऽपि विद्यते। त.स. 108ख/948; दृश्यः – འོན་ཏེ་གང་ཞིག་གང་ལ་མེད་པ་དེ་ཇི་ལྟར་དེར་སྣང་ཞེ་ན अथ यो यत्र नास्ति स कथं तत्र दृश्यः न्या.टी.49ख/101; རྒྱུ་སྣང་བ་ལ་ནི་སྣང་བ་མི་དམིགས་པ་གོ་ན་རྟོགས་པར་བྱེད་པ་ཡིན་ནོ॥ दृश्ये तु कारणे दृश्यानुपलब्धिरेव गमिका न्या.टी.55ख/126; प्रभास्वरः – སྣང་བ་ནས་མུན་ཁང་དུ་ཞུགས་པའི प्रभास्वरादपवरकं प्रविष्टस्य हे.बि.245ख/61; उष्णः – སྣང་བ་ཞེས་བྱ་བ་ནི་འོད་ཀྱིས་གསལ་བ་ལས་ཏེ उष्णादिति प्रभास्वरात् त.प.13क/471; बिम्बितः – དེར་ནི་མཐའ་ཡས་རྒྱལ་ཕྲན་གྱི། །མགོ་བོའི་རིན་ཆེན་ལ་སྣང་དེས॥ स तत्रानन्तसामन्तमौलिरत्नेषु बिम्बितः। अ.क.37ख/55.8; • कृ. 1. भू.का.कृ. प्रतिभासितः – ཇི་ལྟར་སྒྱུ་མ་དེ་ལ་སྒྱུ་མ་བྱས་པ་རྟ་དང་གླང་པོ་ཆེ་དང་གསེར་ལ་སོགས་པའི་གཟུགས་དེའི་ངོ་བོར་སྣང་བ यथा मायाकृतं तस्यां मायायां हस्त्यश्वसुवर्णाद्याकृतिस्तद्भावेन प्रतिभासिता सू.व्या.168ख/60; दृष्टः – དེས་ན་རྣམ་ཀུན་གྱིས་གཉིས་མཚུངས། །བཟློག་པ་དེ་ལས་ཚད་ཉིད་ལ། །ཁྱུད་དུ་བྱུང་བ་ཅི་ཞིག་སྣང་॥ सर्वथाऽतः समं द्वयम्॥ ततः कोऽतिशयो दृष्टः प्रामाण्यस्य विपर्ययात्। त.स.103ख/911; त.स.105ख/925; ख्यातः – སྔོ་སོགས་མྱོང་བར་སྣང་བ་ཡིན॥ नीलाद्यनुभवात् ख्यातः प्र.वा.131क/2.328; दीप्तः – ལྷ་ཡི་དཔལ་བདེ་ལ་ངོམས་པའི། །སྣང་བ་འབྱོར་ལྡན་དེར་ནི་དེས॥ स तत्र दीप्तविभवे दिव्योत्साह[? त्सव लि.पा.]सुखोचितः । अ.क.353ख/47.31 2. व.का.कृ. दीप्यमानः – རྡོ་རྗེ་སེམས་དཔའི་སྣང་བ་ཡིས། །རང་རང་ངོ་བོ་གསལ་བས་ན॥ लो[? रो]चना वज्रसत्त्वानां दीप्यमाना स्वभावतः। ज्ञा.सि.53क/137; • उ.प. आभः – བརྟགས་པ་སྣ་ཚོགས་སྣང་བ་ཡང་། །གཞན་གྱི་དབང་གིས་རྟོག་པར་བྱེད॥ कल्पितं हि विचित्राभं परतन्त्रं विकल्प्यते ल.अ.170क/127; དེ་ལྟར་ཇི་བཞིན་དོན་མེད་ནའང་། །རྗེས་དཔག་དང་ནི་དེར་སྣང་དག། །དོན་བྱེད་པ་དང་རྗེས་འབྲེལ་བས། །ཚད་མ་ཉིད་དུ་རྣམ་པར་གཞག[? བཞག]॥ यथा तथाऽयथार्थत्वेऽप्यनुमानतदाभयोः। अर्थक्रियाऽनुरोधेन प्रमाणत्वं व्यवस्थितम्॥ प्र.वा.120ख/2.58; འདི་ནི་བལྟ་བར་ནུས་པའི་དངོས་པོ་སྣང་བ་ཡང་ཡིན་ལ། མངོན་སུམ་ཡང་ཡིན་ནོ་ཞེས་བྱ་བ་ནི་ལས་འཛིན་པའོ॥ शक्यदर्शनवस्त्वाभं च तत् प्रत्यक्षं चेति कर्मधारयः त.प.64क/580; •द्र.– དེ་ན་གསེར་ཡོད་མ་ཡིན་ཡང་།

།ས་དག་ཀུང་ནི་གསེར་དུ་སྣང་༎ न ह्यस्ति कनकं तत्र भूमिश्च कनकायते ॥ ल.अ.162[क]/112.

སྣང་བ་བསྒྲིམས་པར་འགྱུར *क्रि.* अवभासितं भविष्यति– སྣང་བ་དེས་བདག་ཅག་གི་ཁང་པ་རྣམས་ཀུང་སྣང་བ་བསྒྲིམས་པར་འགྱུར་རོ༎ तेन चावभासेनास्माकं भवनान्यवभासितानि भविष्यन्ति सु.प्र.22[क]/44.

སྣང་བ་ངེས་པ 1. नियतप्रतिभासः – གཟུང་བའི་དོན་གྱིས་རྣམ་པར་ཤེས་པ་སྐྱེད་པ་ན་སྣང་བ་ངེས་པར་སྐྱེད་པར་བྱེད་པ་ཡིན་ཏེ ग्राह्यो ह्यर्थो विज्ञानं जनयन्नियतप्रतिभासं कुर्यात् न्या.टी.41[ख]/49 2. प्रतिभासनियमः – སྣང་བ་ངེས་པ་མེད་པ་ཡང་སྣང་བ་ངེས་པའི་རྒྱུ་མེད་པའི་ཕྱིར་རོ༎ अनियतप्रतिभासत्वं च प्रतिभासनियमहेतोरभावात् न्या.टी.41[ख]/49.

སྣང་བ་ངེས་པ་མེད་པ •*वि.* अनियतप्रतिभासः – རྣམ་པར་རྟོག་པའི་རྣམ་པར་ཤེས་པ་ནི་དོན་ལས་སྐྱེས་པ་མ་ཡིན་ནོ༎ དེ་བས་ན་སྣང་བ་ངེས་པའི་རྒྱུ་ངེས་པ་མེད་པའི་ཕྱིར་སྣང་བ་ངེས་པ་མེད་པ་ཡིན་ནོ༎ विकल्पविज्ञानं त्वर्थान्नोत्पद्यते। ततः प्रतिभासनियमहेतोरभावादनियतप्रतिभासम् न्या.टी.41[ख]/49; •*सं.* अनियतप्रतिभासत्वम् – བརྗོད་པ་དང་འདྲེས་པ་མེད་ན་ཇི་ལྟར་རུང་བ་ཉིད་དུ་ཤེས་པར་བྱ་ཞེ་ན། སྣང་བ་ངེས་པ་མེད་པའི་ཕྱིར་རོ༎ असत्यभिलापसंसर्गे कुतो योग्यतावसितिरिति चेत्। अनियतप्रतिभासत्वात् न्या.टी.41[ख]/49.

སྣང་བ་ཅན *वि.* अवभासी – ཇི་ལྟར་རྣམ་པ་འགའ་ཞིག་ལྟར། །དོན་དངོས་མེད་པར་སྣང་ཅན་དེ༎ यथाकथंचिद् तस्यार्थरूपं मुक्त्वाऽवभासिनः। प्र.वा.131[ख]/2.353; अवभासिनी – འདྲ་བའི་ངོ་བོར་སྣང་བ་ཅན༎ तुल्यरूपावभासिनीम् प्र.वा.98[ख]/3.14; निर्भासी – སྲེག་དང་བཙོ་བར་སྣང་བ་ཅན། །ཤེས་པ་ནམ་ཡང་སྐྱེ་མི་འགྱུར༎ न दाहपाकनिर्भासि विज्ञानं जातु जायते ॥ त.स.108[क]/943; भासमानः – ཁ་དོག་ལས་ནི་ཐ་དད་པའི། །དབྱིབས་ནི་འཐད་པ་མ་ཡིན་ནོ། །ཁ་དོག་དུ་ནི་སྣང་བ་ཅན། །མི་སླུ་བར་ནི་མཐོང་བ་ཡིན༎ <?> न वर्णव्यतिरिक्तं च संस्थानमुपपद्यते। भासमानस्य वर्णस्य न च संवाद ईक्ष्यते ॥ त.स.49[क]/483; दृश्यः – རིང་བ་ནི་ཡུལ་མི་སྣང་བ་ཅན་ནོ༎ །ཉེ་བ་ནི་ཡུལ་སྣང་བ་ཅན་ནོ༎ दूरमदृश्यदेशम्। अन्तिकं दृश्यदेशम् अभि.भा.35[ख]/58; •*उ.प.* निर्भासिः – ཇི་ལྟར་ཆུ་ལ་དང་པོའི་ཤེས། །མིག་ལས་བྱུང་བ་སྐྱེ་བར་འགྱུར། །འཐུང་དང་རེག་སོགས་སྣང་བ་ཅན༎ तथा हि सलिलज्ञानमाद्यमुत्पद्यतेऽक्षिजम्। पानस्नानादिनिर्भासम् त.स.112[ख]/972.

སྣང་བ་ཆེ = སྣང་བ་ཆེན་པོ།

སྣང་བ་ཆེན་པོ महावभासः – སྔོན་གྱི་ལྟས་སྣང་བ་ཆེན་པོ་བཅུ་པོ་དེ་དག་རབ་ཏུ་བྱུང་བར་གྱུར་ཏེ इमानि दश महावभासनिमित्तानि प्रादुर्बभूवुः ग.व्यू.210[क]/291; महालोकः – རྡོ་རྗེ་ཉི་མ་སྣང་བ་ཆེ། །རྡོ་རྗེ་ཟླ་བ་དྲི་མེད་འོད༎ वज्रसूर्यमहालोको वज्रेन्दुविमलप्रभः। वि.प्र.137[ख]/1, पृ.36; ཡེ་ཤེས་ཀྱི་སྣང་བ་ཆེན་པོ་རབ་ཏུ་འགྱེད་དོ༎ महाज्ञानालोकमवमुञ्चति ग.व्यू.314[ख]/400.

སྣང་བ་ཆེན་པོ་ཀུན་ཏུ་སྟོན་པ महावभाससंदर्शकः, बुद्धस्य नामपर्यायः – བྱམས་པ་དེ་བཞིན་གཤེགས་པས་ཆོས་ཀྱི་འཁོར་ལོ་རྣམ་པ་འདི་ལྟ་བུ་བསྐོར་ཏེ། དེ་བསྐོར་བས་དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་ལ་དེ་བཞིན་གཤེགས་པའོ་ཞེས་བྱའོ༎ ...སྣང་བ་ཆེན་པོ་ཀུན་ཏུ་སྟོན་པ་ཞེས་བྱའོ༎ एवंरूपं मैत्रेय तथागतेन धर्मचक्रं प्रवर्तितम्, यस्य प्रवर्तनात् तथागत इत्युच्यते... महावभाससंदर्शक इत्युच्यते ल.वि.205[ख]/309.

སྣང་བ་མཆེད་པ *पा.* आलोकवृद्धिः म.व्यु.899 (21[क]).

སྣང་བ་ཇི་ལྟ་བ་བཞིན यथाप्रतिभासम् – རྣམ་པ་གཉིས་ཀྱིས་ཚད་མར་འགྱུར་བ་ཡིན་ཏེ། སྣང་བ་ཇི་ལྟ་བ་བཞིན་དུ་མི་སླུ་བའམ་ཞེན་པ་ཇི་ལྟ་བ་བཞིན་དུ་ཡིན प्रामाण्यं हि भवद् द्वाभ्यामाकाराभ्यां भवति–यथाप्रतिभासमविसंवादाद्, यथाध्यवसायं वा त.प.18ख/483; དེའི་ཕྱིར་ལོངས་སྤྱོད་རྫོགས་པའི་སྐུ་ཡང་སངས་རྒྱས་ཀྱི་སྣང་བ་ཇི་ལྟ་བ་བཞིན་ནམ་མཁའ་དང་མཉམ་པ་ཉིད་དོ།། तस्मात् संभोगकायोऽपि बुद्धानां यथाप्रतिभासं खसम एव ख.टी.154क/232.

སྣང་བ་ཉིད अवभासित्वम् – ཤེས་པ་གཅིག་ལ་སྣང་བ་ཉིད། །དེ་དག་ལ་ནི་འགལ་བ་མིན།། एकज्ञानावभासित्वं न तु तेषां विरोधिता। त.स.132क/1121; आभता – གསལ་བར་སྣང་བ་ཉིད་ཀྱིས་དོན་ཡིན་ན་ནི་རང་གི་མཚན་ཉིད་ཡིན་པས स्फुटाभतया चार्थत्वे स्वलक्षणमेव प्र.अ.175ख/190; ख्यानता – དོན་ཡོད་པ་དེ་བཞིན་ཉིད་ཀྱི་སྣང་བ་ཉིད་ནི་གནས་གཞན་དུ་གྱུར་པ་ཡིན་པར་རིག་པར་བྱ་སྟེ सदर्थस्य तथतायाः ख्यानता आश्रयपरावृत्तिर्वेदितव्या सू.व्या.246ख/163; दृश्यत्वम् – སྣང་བ་ཉིད་དུ་སྒྲོ་བཏགས་པའི་ཕྱིར་མེད་དུ་ཟིན་ཀྱང་དེར་སྣང་བ་ཞེས་བྱ་སྟེ दृश्यत्वसमारोपादसन्नपि दृश्य उच्यते न्या.टी.49ख/101; སྣང་ཉིད་ཡིན་ན་གྲུབ་འགྱུར་ཏེ། །གང་ཡང་བདག་ཉིད་ཁྱབ་པ་[? ཁྱད་པར་]ཅན།། दृश्यत्वे सति सिद्ध्यति यश्चात्मा सविशेषणः ॥ त.स.119ख/1036; दृश्यता – དེའི་བདག་ཉིད་དགག་པ་ཡང་སྣང་བ་ཉིད་དུ་ཡིན་ནོ་ཞེས་[ཁས་བླངས་]པ་ལ་འགྲུབ་པ་ཡིན་ཏེ तादात्म्यनिषेधश्च दृश्यतयाऽभ्युपगतस्य सम्भवति न्या.टी.56ख/132.

སྣང་བ་ཐ་དད = སྣང་བ་ཐ་དད་པ།

སྣང་བ་ཐ་དད་པ *वि.* भिन्नाभः – ཇི་ལྟར་སྣང་བ་ཐ་དད་པའི་བློ་རྣམས་ཡུལ་གཅིག་པར་འགྱུར་ཏེ कथं भिन्नाभानां मतीनामेको विषयो भवेत् त.प.185क/831.

སྣང་བ་ཐོབ = སྣང་བ་ཐོབ་པ།

སྣང་བ་ཐོབ་པ • *ना.* अवभासप्राप्ता, लोकधातुः – དེ་ལུས་ཐ་མའི་ཚེ་བསྐལ་པ་བཀོད་པ་ཆེན་པོ་ཞེས་བྱ་བ་ལ་འཇིག་རྟེན་གྱི་ཁམས་སྣང་བ་ཐོབ་པ་ཞེས་བྱ་བར་དེ་བཞིན་གཤེགས་པ...འོད་ཟེར་རབ་ཏུ་སྣང་བ་ཞེས་བྱ་བ་འཇིག་རྟེན་དུ་འབྱུང་ངོ་།། स पश्चिमे समुच्छ्रये अवभासप्राप्तायां लोकधातौ महाव्यूहे कल्पे रश्मिप्रभासो नाम तथागतः... लोके भविष्यति स.पु.55क/97; • *पा.* आलोकलब्धः म.व्यु.898 (21क).

སྣང་བ་མཐའ་ཡས *ना.* अमिताभः, बुद्धः – དེ་ཀུན་སྣང་བ་མཐའ་ཡས་ཀྱི། །བདེ་བ་ཅན་ནས་བྱུང་བ་འོ།། सर्वे ते ह्यमिताभस्य सुखावत्या विनिर्गताः ॥ ल.अ.164क/116; མགྲིན་པའི་རྒྱབ་ཀྱི་སྟེང་དུ་སྣང་བ་མཐའ་ཡས་པདྨ་རཱ་ག་ལྟ་བུ་ཏིང་ངེ་འཛིན་གྱི་ཕྱག་རྒྱས་བཞུགས་པའོ།། ग्रीवापृष्ठोपरि अमिताभं पद्मरागनिभं समाधिमुद्रया स्थितम् ख.टी.164क/246; དེ་བཞིན་དུ་སྐྱིལ་ཀྲུང་ལ་ལག་པ་གཡོན་པའི་སྟེང་དུ་ལག་པ་གཡས་པ་གན་རྐྱལ་མཉམ་པར་གནས་པ་ནི་ཕྱག་ན་པདྨ་སྟེ། སྣང་བ་མཐའ་ཡས་ཀྱི་ཏིང་ངེ་འཛིན་གྱི་ཕྱག་རྒྱའོ།། एवं पर्यङ्के वामहस्तोर्ध्वेन सव्यहस्तः समगतोत्तानकः पद्मपाणेरमिताभस्य समाधिमुद्रा वि.प्र.173ख/3.171.

སྣང་བ་མཐའ་ཡས་ཀྱིས་དབུ་བརྒྱན་པ *वि.* अमिताभमौलिः – ཞི་བ་ལ་ཁ་དོག་དཀར་པོ་གོས་དང་བཅས་པ་སྣང་བ་མཐའ་ཡས་ཀྱིས་དབུ་བརྒྱན་པ शान्तौ शुक्लवर्णं सवस्त्रममिताभमौलिनम् वि.प्र.138क/3.74.

སྣང་བ་མཐའ་ཡས་དབང་པོའི་རྒྱལ་པོ *ना.* अनन्तावभासराजेन्द्रः, तथागतः – དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་སྣང་བ་མཐའ་ཡས་དབང་པོའི་རྒྱལ་པོ་ཞེས་བྱ་བ་དང་ अनन्तावभासराजेन्द्रो नाम तथागतः म.मू.92ख/5.

སྣང་བ་དང་བཅས་པ = སྣང་དང་བཅས།

སྣང་བ་དང་ལྡན་པ = སྣང་ལྡན།

སྣང་བ་དང་ལྡན་པའི་གཟུངས अवभासवतीधारणी, धारणीविशेषः – བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ...བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའི་ས་དགུ་པ་ལ་གནས་པ...སྣང་བ་དང་ལྡན་པའི་གཟུངས་རབ་ཏུ་ཐོབ་པ་ཡིན बोधिसत्त्वो नवमीं बोधिसत्त्वभूमिमनुप्राप्तः... अवभासवतीधारणीप्रतिलब्धश्च भवति द.भू.256क/52.

སྣང་བ་ནས་སྣང་བར་འགྲོ་བ *पा.* ज्योतिष्ज्योतिष्परायणः, पुद्गलभेदः म.व्यु.2972 (53क).

སྣང་བ་ནས་མུན་ཁྲིད་དུ་འགྲོ་བ *पा.* ज्योतिस्तमःपरायणः, पुद्गलभेदः म.व्यु.2971 (53क).

སྣང་བ་པོ *वि.* अवभासकः – དངོས་གྲུབ་རྙེད་པའི་སློབ་མ་གང་། །ཡང་དག་ཡེ་ཤེས་སྣང་བ་པོ། सिद्धिलब्धोऽपि यः शिष्यः सम्यग्ज्ञानावभासकः। हे.त.7ख/20.

སྣང་བ་བྱས་པ *भू.का.कृ.* अवभासितः लो.को.1436.

སྣང་བ་མ *ना.* 1. भा, देवी – གཡོན་པའི་ཕྱེད་ནི་ལྷ་མོ་སྣང་བ་མའི་ཆ་ཡིས་གཅིག་གི་རྣམ་པར་མཐོང་ཞེས་བྱ་བའི་ཐ་ཚིག་གོ། वामेनार्धेन भादेवीभागेनैकीकृत्य ताः पश्येदित्यर्थः ख.टी.166क/248; བཅོམ་ལྡན་འདས་གཡས་པའི་ཕྱེད་ཀྱིས་ལྷ་མོ་སྣང་བ་མའི་གཟུགས་འཛིན་པ भगवन्तं...वामार्द्धेन भादेवीरूपधरम् ख.टी.166क/249 2. आलोकिनी, यक्षिणी – སྣང་བ་མའི་སྔགས་ནི། ཨོཾ་ཨཱ་ལོ་ཀི་ནི་ལོ་ཀ་བ་ཏི་སྭཱ་ཧཱ आलोकिन्या मन्त्रः – ॐ [आ]लोकिनि लोकवति स्वाहा म.मू.283क/442.

སྣང་བ་མ་ཡིན་པ = སྣང་བ་མིན་པ།

སྣང་བ་མི་དམིགས་པ *पा.* दृश्यानुपलब्धिः – འབྲས་བུ་མི་དམིགས་པ་ཡང་གང་དུ་རྒྱུ་མི་སྣང་བ་དེར་སྦྱར་བར་བྱ་བ་ཡིན་གྱི། རྒྱུ་སྣང་བ་ལ་ནི་སྣང་བ་མི་དམིགས་པ་ཁོ་ན་རྟོགས་པར་བྱེད་པ་ཡིན་ནོ།། कार्यानुपलब्धिश्च यत्र कारणमदृश्यं तत्र प्रयुज्यते। दृश्ये तु कारणे दृश्यानुपलब्धिरेव गमिका न्या.टी.55ख/126; त.प.68ख/589; दृश्यानुपलम्भः – ཡང་ན་སྣང་བ་མི་དམིགས་པས་དོན་དམ་གཞན་དུ་རྟགས་ནི་ཐེ་ཚོམ་ཟ་བ་ཉེ་བ་ཡིན་ཞེས་བཤད་པར་བྱའོ།། यदि वा–ततो दृश्यानुपलम्भाल्लिङ्गात् सकाशादन्यथा सति लिङ्गे संशय इति व्याख्यातव्यम् वा.टी.67क/21.

སྣང་བ་མིན = སྣང་བ་མིན་པ།

སྣང་བ་མིན་པ •*क्रि.* न दृश्यते – སངས་རྒྱས་པ་སོགས་དག་གི་ནི། །རིག་བྱེད་ཉེ་རིག་བྱེད་ཡན་ལག །ཉིང་ལག་སོགས་དོན་རྟོགས་སྣང་མིན།། न च वेदोपवेदाङ्गप्रत्यङ्गाद्यर्थबोधनम्। बुद्धादेर्दृश्यते त.स.114ख/994; •*वि.* अलोकः – ས་འོག་སྣང་བ་མིན་པའི་ཡུལ་དུ་རབ་འཇུག पातालं प्रविशन्त्यलोकविषयम् अ.क.4क/50.32; •*सं.* अदर्शनम् – དར་བ་ཐོབ་ནས་ཡ་ནི་གཟི་བྱིན་གཉེར་དེ་སྣང་བ་མིན་པ་དག་ཏུ་བཀོད།། प्राप्य प्रौढिमदर्शनं स जनकस्तेजोनिधिः प्रापितः। अ.क.236ख/89.188.

སྣང་བ་མེད = སྣང་བ་མེད་པ། སྣང་བ་མེད་ན प्रतिभासं विना – སྣང་བ་མེད་ན་དངོས་པོ་ནི། །ཇི་ལྟར་སྣང་བར་འགྱུར་བ་ཡིན།། प्रतिभासं विना भावः कथं स्यात् प्रतिभासने॥ प्र.अ.16ख/19.

སྣང་བ་མེད་པ • *क्रि.* न विद्यते दृश्यम् – ཕྱི་རོལ་གྱི་དེ་སྣང་བ་མེད།། बाह्यं न विद्यते दृश्यम् ल.अ.175क/136; •*सं.* 1. अदृश्यम् – སེམས་ནི་སྣང་བ་མེད་ལས་བྱུང་། །དེ་ཡི་ཕྱིར་ན་སེམས་མི་སྣང་།། चित्तं ह्यदृश्यसम्भूतं तेन चित्तं न दृश्यते ॥ ल.अ.169ख/126; དབང་པོ་དོན་དང་རྣམ་བྲལ་ཞིང་། །སྣང་མེད་དེ་ཡི་གཟིགས་པ་བས།། इन्द्रियार्थविसंयुक्तमदृश्यं यस्य दर्शनम्। ल.अ.64क/10; अप्रतिभासनम् – མིང་དང་མཚན་མའི་རང་བཞིན་སྣང་བ་མེད་པའི་ཕྱིར་རོ།། नामनिमित्तस्य स्वरूपेणाप्रतिभासनात् प्र.अ.178क/193; दृश्याभावः – དེ་བས་ན་སྣང་བ་མི་དམིགས་པའི་སྟོབས་ཀྱིས་སྣང་བ་མེད་པར་ངེས་པ་ཡིན अतो दृश्यानुपलम्भनिश्चयाद् दृश्याभावः सामर्थ्यादवसितः न्या.टी.54क/119; प्रतिपत्त्यभावः – དྲི་མ་ཅན་ལ་གཟུགས་བརྙན་སྣང་བ་མེད་པའི་ཕྱིར་དང་བ་ཞེས་བྱ་བ་སྨོས་སོ།། मलिनस्य च्छायाप्रतिपत्त्यभावात् स्वच्छ इत्युक्तम् त.प.205ख/127 2. = མུན་པ तमिस्रम्, अन्धकारः – अन्धकारोऽस्त्रियां ध्वान्तं तमिस्रं तिमिरं तमः। अ.को.1.9.3; तमयति लोकं तमः। तमु ग्लानौ। तम एव तमिस्रम् अ.वि.1.9.3 3. = མཚན་མོ तमी, रात्रिः – अथ शर्वरी ॥ निशा निशीथिनी रात्रिस्त्रियामा क्षणदा क्षपा ॥... तमी अ.को.1.4.5; तमयति चक्रवाकान् तमी। तमु ग्लानौ अ.वि.1.4.5; •*पा.* निराभासः – ཤེས་རབ་ཀྱིས་ཀྱང་སྣང་མེད་དང་། །མཐུ་ཡང་རབ་ཏུ་ཐོབ་པར་བྱེད།། प्रज्ञया च निराभासं प्रभावं चाधिगच्छति ॥ ल.अ.117ख/64; རྟོག་པ་ལ་ནི་རྣམ་ཤེས་འཇུག །སྣང་བ་མེད་དང་བྱེ་བྲག་ལ། །ཤེས་རབ་ཡང་དག་རབ་ཏུ་འཇུག།། ज्ञानं तर्के प्रवर्तते। निराभासे विशेषे च प्रज्ञा वै संप्रवर्तते ॥ ल.अ.107ख/53; ल.अ.64ख/11; •*ना.* अद्योतः, बुद्धः – ལག་བཟང་དང་... སྣང་མེད་དང་... ཤཱཀྱ་ཐུབ་པ सुबाहुः ...अद्योतः ...शाक्यमुनिश्च म.मू.93ख/5; •*वि.* अदृश्यः – རབ་ཀྱི་རྩལ་གྱིས་རྣམ་པར་གནོན་པ་ཆོས་ཐམས་ཅད་ནི་གདགས་སུ་མེད་...སྣང་བ་མེད་དེ सर्वधर्माश्च सुविक्रान्तविक्रामिन् अप्रज्ञपनीयाः... अदृश्याश्च सु.प.23ख/3; གཞན་དག། །ཡོད་པར་སྣང་བ་མེད་ན་ནི། །དེ་དང་ལྡན་པའང་ཇི་ལྟར་ཡོད།། अन्येषु सत्स्वदृश्ये च सत्ता वा तद्वतः कथम् ॥ प्र.वा.121क/2.72; अनिर्भासः – སྣང་བ་མེད་དང་སྣང་བ་བཅས། །གཞན་གྱི་སྣང་བ་པོ་ན་ཡི། །རྣམ་པར་ཤེས་པས་ཕྱི་རོལ་དོན། །རྣམ་པ་གང་གིས་ཀྱང་མི་ཤེས།། अनिर्भासं सनिर्भासमन्यनिर्भासमेव च। विजानाति न च ज्ञानं बाह्यमर्थं कथञ्चन ॥ त.स.73क/682; निराभासः – དེ་ལྟ་བས་ན་སྣང་བ་མེད་པའི་ཆོས་ཀྱི་སྐུ་ཐོབ་པར་བྱེད་པ་མ་ཡིན་ནོ།། ततो निराभासस्य धर्मकायस्य नैव प्राप्तिः ख.टी.154ख/233; སངས་རྒྱས་ཀྱི་ས་སྣང་བ་མེད་པ་མི་སྐྱེ་བ་དྲན་པའི་ཕྱིར निराभासबुद्धभूम्यनुत्पादस्मरणतया ल.अ.71ख/20; अनालोकः – སྣང་བ་མེད་པའི་གནས་རྣམས་དག་ཏུ་སྒྲོན་མེ་བཞིན། །ལེགས་པར་བཤད་པ་བདེན་པའི་ལམ་ནི་གསལ་བར་བྱེད།། सुभाषितं सत्यपथप्रकाशनं करोत्यनालोकपदे सुदीपवत्। अ.क.239क/91.1; अनाभासः लो.को.1438.

སྣང་བ་མེད་པའི་སྤྱོད་ཡུལ *वि.* निराभासगोचरः – གཟུང་བ་དང་འཛིན་པ་དང་རྣམ་པར་བྲལ་བ། སྣང་བ་མེད་པའི་སྤྱོད་ཡུལ ग्राह्यग्राहकविसंयुक्तं निराभासगोचरम् ल.अ.71क/19; བདེན་པ་མ་ཡིན་ཐར་པ་མིན། །སྣང་མེད་སྤྱོད་ཡུལ་མ་ཡིན་ནོ།། न सत्या न विमोक्षा वै न निराभासगोचरम् ॥ ल.अ.166क/119; ल.अ.76ख/25.

སྣང་བ་མེད་པའི་ཚིག 1. अदृश्यपदम्, अष्टोत्तरशतपदान्तर्गतपदविशेषः – བཅོམ་ལྡན་འདས་ཚིག་བརྒྱ་རྩ

བརྒྱད་པོ་གང་ལགས། བཅོམ་ལྡན་འདས་ཀྱིས་བཀའ་སྩལ་པ། སྐྱེ་བའི་ཚིག་དང་མི་སྐྱེ་བའི་ཚིག་དང...སྣང་བའི་ཚིག་དང་སྣང་བ་མེད་པའི་ཚིག་དང कतमद्भगवन् अष्टोत्तरपदशतम् ? भगवानाह–उत्पादपदम्, अनुत्पादपदम्...दृश्यपदम्, अदृश्यपदम् ल.अ.68[ख]/17 **2.** निराभासपदम्, अष्टोत्तरशतपदान्तर्गतपदविशेषः – བཅོམ་ལྡན་འདས་ཚིག་བརྒྱ་རྩ་བརྒྱད་པོ་གང་ལགས། བཅོམ་ལྡན་འདས་ཀྱིས་བཀའ་སྩལ་པ། སྐྱེ་བའི་ཚིག་དང་མི་སྐྱེ་བའི་ཚིག་དང...སྣང་བའི་ཚིག་དང་སྣང་བ་མེད་པའི་ཚིག་དང कतमद्भगवन् अष्टोत्तरपदशतम् ? भगवानाह–उत्पादपदम्, अनुत्पादपदम्...निराभासपदम्, अनिराभासपदम् ल.अ.68[क]/17.

སྣང་བ་མེད་པའི་མཚན་ཉིད *पा.* निराभासलक्षणम्, आर्यज्ञानलक्षणभेदः – འཕགས་པའི་ཡེ་ཤེས་ཀྱི་མཚན་ཉིད་གསུམ...སྣང་བ་མེད་པའི་མཚན་ཉིད་དང་། སངས་རྒྱས་ཐམས་ཅད་ཀྱི་རང་གི་སྨོན་ལམ་གྱི་བྱིན་གྱིས་རླབས་ཀྱི་མཚན་ཉིད་དང་། འཕགས་པ་སོ་སོ་རང་གི་ཡེ་ཤེས་ཀྱི་མཚན་ཉིད་དེ आर्यज्ञानलक्षणत्रयं... निराभासलक्षणम्, सर्वबुद्धस्वप्रणिधानाधिष्ठानलक्षणम्, प्रत्यात्मार्यज्ञानगतिलक्षणं च ल.अ.74[क]/22.

སྣང་བ་མེད་པའི་ས निराभासभूमिः – བློ་གྲོས་ཆེན་པོ་འདི་ལྟར་རིགས་རྣམ་པར་དགོད་པ་འདི་ནི་ཡོངས་སུ་སྦྱོང་བའི་ས་སྟེ། སྣང་བ་མེད་པའི་ས་ལ་འཇུག་པའི་ཕྱིར་རྣམ་པར་དགོད་པར་བྱའོ॥ परिकर्मभूमिरियं महामते गोत्रव्यवस्था । निराभासभूम्यवक्रमणतया व्यवस्था क्रियते ल.अ.80[ख]/28.

སྣང་བ་ཚད་མེད་པ་དང་ལྡན་པ *वि.* अप्रमाणावभासप्राप्तः – དེའི་ཆོས་ཀྱི་སྟན་ཡང་དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་དག་དང་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་དབང་བསྐུར་བའི་ས་ཐོབ་པ་མ་གཏོགས་པར་ཐམས་ཅད་ལས་འཕགས་ཤིང་སྣང་བ་ཚད་མེད་པ་དང་ལྡན་པ་ཡིན धर्मासनं चास्य तथागतानभिषेकभूमिप्राप्तान् बोधिसत्त्वान् स्थापयित्वा सर्वतो विशिष्टमप्रमाणावभासप्राप्तं भवति द.भू.256[ख]/52.

སྣང་བ་མཛད་པ = སྣང་མཛད།

སྣང་བ་མཛེས་འབྱུང *ना.* रुचिरप्रभाससंभवः, महोरगाधिपतिः म.व्यु.3435 (59[क]).

སྣང་བ་གཟིགས अवभासदर्शी लो.को.1437.

སྣང་བ་ཡིད་ལ་བྱེད་པ आलोकमनसिकरणम् – རྫུ་འཕྲུལ་ལ་སོགས་པའི་སྦྱོར་བ་ནི་ཡང་བ་དང་སྒྲ་དང་སྣང་བ་ཡིད་ལ་བྱེད་པ་ཡིན་ནོ॥ ऋद्ध्यादीनां तु लघुत्वशब्दालोकमनसिकरणं प्रयोगः अभि.भा.61[ख]/1110.

སྣང་བ་ཡིན *क्रि.* आभाति – རྟོགས་པ་གསལ་བ་ལ་ནི་སྐྱོན་ཡོན་གྱི་རིགས་ཕྲ་མོ་མཐའ་དག་ཀྱང་སྣང་བ་ཡིན་ལ पटुप्रबोधस्य सकलमेव सूक्ष्ममपि गुणदोषजातमाभाति प्र.अ.107[ख]/115; प्रतिभासते – ཕྱི་རོལ་དོན་དུ་སྣང་བ་འདིའི། །བདག་ཉིད་ཇི་ལྟར་སྣང་བ་ཡིན॥ भासमानः किमात्माऽयं बाह्योऽर्थः प्रतिभासते। त.स.72[क]/671; समीक्षते – སེམས་ནི་གཞན་དུ་ཞེན་གྱུར་ཀྱང་། །ཟླ་བ་གཉིས་སོགས་སྣང་བ་ཡིན॥ अन्यार्थाऽऽसक्तचित्तोऽपि द्विचन्द्रादि समीक्षते। त.स.48[ख]/482; दृश्यते – རྟེན་དང་བརྟེན་པའི་ངེས་པ་ཡིས། །དཔེར་ན་སྟོད་དང་ཞོ་དག་ཀྱང་། །འབྲེལ་བ་གཅིག་ཏུའང་སྣང་བ་ཡིན། །དེ་བཞིན་འདི་ལའང་ངེས་པར་འདོད॥ तद्यथा कुण्डदध्नोश्च संयोगैक्येऽपि दृश्यते। आधाराधेयनियमस्तथेह नियमो मतः॥ त.स.32[क]/331; उपलक्ष्यते – སྔོན་པོ་སོགས་ལ་གཅིག་ཉིད་ནི། །རྗེས་འཇུག་པར་ཡང

སྣང་བ་ཡིན།། <?> नानुगतश्चैको नीलादिरुपलक्ष्यते ॥ त.स.28ख/301.

སྣང་བ་ལོག་པ दृश्यनिवृत्तिः – སྣང་བ་མི་དམིགས་པ་ལས་སྣང་བ་ལོག་པར་ངེས་པ་མ་ཡིན་ནམ་ཞེ་ན ननु च दृश्यनिवृत्तिरवसीयते दृश्यानुपलम्भात् न्या.टी.53ख/119.

སྣང་བ་ཤིན་ཏུ་སྦྱང་བ *वि.* सुपरिशुद्धालोकः – བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའི་ས་གསུམ་པ་ལ་སྣང་བ་ཤིན་ཏུ་སྦྱང་བ་ནི། བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའི་ས་བཞི་པ་ཡོངས་སུ་གནོན་ཏེ बोधिसत्त्वस्तृतीयायां बोधिसत्त्वभूमौ सुपरिशुद्धालोकश्चतुर्थीं बोधिसत्त्वभूमिमाक्रमति द.भू.204क/24.

སྣང་བ་ཤུགས་མཆོག་རྒྱལ་མཚན *ना.* आलोकसुवेगध्वजः, महोरगाधिपतिः म.व्यु.3431 (59क).

སྣང་བ་གསལ་བ 1. स्पष्टालोकः – འོན་ཏེ་མུན་པ་ལ་སོགས་པའི་ཕྱོགས་སུ་དང་པོའི་ཤེས་པས་བཟུང་ཟིན་པའི་དོན་ཡང་སྣང་བ་གསལ་བའི་གནས་སྐབས་ན་ཚད་མ་ཕྱི་མ་ཕྱི་མ་ཡོངས་སུ་གཅོད་པར་མཐོང་བ་ཉིད་མ་ཡིན་ནམ ननु च दृश्यत एव सन्तमसादिप्रदेशे प्रथमज्ञानगृहीतस्याप्यर्थस्योत्तरोत्तरतः प्रमाणात् परिच्छेदः स्पष्टालोकावस्थायाम् त.प.228ख/927 2. प्रतिभासः म.व्यु.556.

སྣང་བའི་རྒྱུ་མཚན་རྟོགས་པ *पा.* संप्रख्याननिमित्तप्रतिवेधः, प्रतिवेधप्रायोगिकमनस्कारभेदः – རྟོགས་པ་སྦྱོར་བ་པ་ནི་རྣམ་པ་བཅུ་གཅིག་ཏུ་རིག་པར་བྱ་སྟེ། གློ་བུར་བ་ཉིད་རྟོགས་པ་དང་སྣང་བའི་རྒྱུ་མཚན་རྟོགས་པ་དང...ཆོས་རྣམ་པར་གཞག་[? བཞག་]པ་རྟོགས་པའོ།། प्रतिवेधप्रायोगिकश्च । स पुनरेकादशविधो वेदितव्यः–आगन्तुकत्वप्रतिवेधतः, संप्रख्याननिमित्तप्रतिवेधतः...व्यवस्थापितधर्मप्रतिवेधतश्च सू.व्या.167ख/59.

སྣང་བའི་ཅོད་པན *ना.* अवभासमकुटी, तथागतः – དེའི་འོག་ཏུ་བསྐལ་པ་དེ་ཉིད་ན་གྲུལ་བུམ་གྱི་དབང་པོ་ཞིག་ཏུ་གྱུར་ཏེ། དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་སྣང་བའི་ཅོད་པན་ཞེས་བྱ་བ་བསྙེན་བཀུར་ཏོ།། तस्यानन्तरं तस्मिन्नेव कल्पे कुम्भाण्डेन्द्रभूतेन अवभासम(मु)कुटी नाम तथागत आरागितः ग.व्यू.198ख/278.

སྣང་བའི་ཉེ་འཁོར दर्शनोपविचारः – ཐོས་པའི་ཉེ་འཁོར་མ་གཏོགས་པ་སྣང་བའི་ཉེ་འཁོར་དུ་འདུག་སྟེ་ཁ་ཏོན་བྱའོ།། मुक्त्वा श्रवणोपविचारं स्वाध्यायनं दर्शनोपविचारे स्थित्वा वि.सू.93क/111.

སྣང་བའི་དེ་ཁོ་ན *पा.* दृश्यतत्त्वम्, तत्त्वभेदः – མདོར་བསྡུ་ན་དེ་ཁོ་ན་རྣམ་པ་གཉིས་ཏེ། མེ་ལོང་ལྟ་བུའི་དེ་ཁོ་ན་དང་སྣང་བའི་དེ་ཁོ་ནའོ།།...སྣང་བའི་དེ་ཁོ་ན་ནི་རྣམ་པ་དགུ་སྟེ། ང་རྒྱལ་མེད་པའི་སྣང་བའི་དེ་ཁོ་ན་དང...བདག་ཏུ་འཛིན་པའི་གཞི་ལ་དགོངས་པ་ཐམས་ཅད་*རྟོགས་པ་སྣང་བའི་དེ་ཁོ་ནའོ།། समासतो द्विविधं तत्त्वम्–आदर्शतत्त्वम्, दृश्यतत्त्वञ्च...दृश्यतत्त्वं नवविधम्–निरभिमानदृश्यतत्त्वम्... आत्मग्राहवस्तुसर्वाऽभिसन्धिप्रवेशदृश्यतत्त्वञ्च म.भा.15ख/3.22.

སྣང་བའི་དེ་ཁོ་ན་རྣམ་པ་དགུ नवविधं दृश्यतत्त्वम् : 1. ང་རྒྱལ་མེད་པའི་སྣང་བའི་དེ་ཁོ་ན निरभिमानदृश्यतत्त्वम्, 2. ཕྱིན་ཅི་ལོག་གི་གཉེན་པོའི་སྣང་བའི་དེ་ཁོ་ན अविपर्यासदृश्यतत्त्वम्, 3. ཉན་ཐོས་ཀྱི་ཐེག་པས་ངེས་པར་འབྱུང་བ་སྣང་བའི་དེ་ཁོ་ན श्रावकयाननिर्याणदृश्यतत्त्वम्, 4. ཐེག་པ་ཆེན་པོས་ངེས་པར་འབྱུང་བ་སྣང་བའི་དེ་ཁོ་ན महायाननिर्याणदृश्यतत्त्वम्, 5. ཕས་ཀྱི་རྒོལ་བ་ཚར་གཅོད་པ་སྣང་བའི་དེ་ཁོ་ན परवा-

दिनिग्रहदृश्यतत्त्वम्, 6. ཐེག་པ་ཆེན་པོ་མངོན་པར་བརྗོད་པ་སྣང་བའི་དེ་ཁོ་ན महायानाभिद्योतनदृश्यतत्त्वम्, 7. ཤེས་བྱའི་རྣམ་པ་ཐམས་ཅད་ལ་འཇུག་པ་སྣང་བའི་དེ་ཁོ་ན सर्वाकारज्ञेयप्रवेशदृश्यतत्त्वम्, 8. མ་ནོར་བའི་དེ་བཞིན་ཉིད་མངོན་པར་བརྗོད་པ་སྣང་བའི་དེ་ཁོ་ན अवितथतथताऽभिद्योतनदृश्यतत्त्वम्, 9. བདག་ཏུ་འཛིན་པའི་གཞི་ལ་དགོངས་པ་ཐམས་ཅད་*རྟོགས་པ་སྣང་བའི་དེ་ཁོ་ན आत्मग्राहवस्तुसर्वाभिसन्धिप्रवेशदृश्यतत्त्वम् म.भा.15ख/3.22.

སྣང་བའི་བདག་ཉིད दृश्यात्मत्वम् – འོན་ཏེ་སྣང་བའི་བདག་ཉིད་དངོས་པོ་ལས་གཞན་ཡིན་ན अथ वस्तुनोऽन्यद् दृश्यात्मत्वम् प्र.अ.40क/46.

སྣང་བའི་བདག་ཉིད་དང་ལྡན་པ *वि.* अवभासात्मकः लो.को.1437.

སྣང་བའི་བདག་པོ =ཉི་མ त्विषाम्पतिः, सूर्यः श.को.768.

སྣང་བའི་འདུ་ཤེས་དང་ལྡན་པ *वि.* आलोकसंज्ञः – གློ་གཡས་ཕྱོགས་ཀྱིས་གཟིམས་ཏེ། ཞབས་གཤིབས་ནས་སྣང་བའི་འདུ་ཤེས་དང་དྲན་པ་དང་ཤེས་བཞིན་དང་ལྡན་ཞིང་མྱ་ངན་ལས་འདས་པའི་འདུ་ཤེས་འབའ་ཞིག་ཐུགས་ལ་དགོངས་སོ॥ दक्षिणेन पार्श्वेन शय्यां कल्पयति पादे पादमाधाय अ[ा]लोकसंज्ञो स्मृतः संप्रजानन्निर्वाणसंज्ञामेव मनसि कुर्वन् अ.श.111ख/101.

སྣང་བའི་རྣམ་པར་ཤེས་པ *पा.* ख्यातिविज्ञानम्, विज्ञानभेदः – རྣམ་པར་ཤེས་པ...རྣམ་པ་གཉིས...བློ་གྲོས་ཆེན་པོ་དེ་ལ་སྣང་བའི་རྣམ་པར་ཤེས་པ་ནི་བསམ་གྱིས་མི་ཁྱབ་པའི་བག་ཆགས་ཡོངས་སུ་འགྱུར་བའི་རྒྱུ་ལས་བྱུང་བའོ॥ द्विविधं... विज्ञानम्...तत्र ख्यातिविज्ञानं महामते अचिन्त्यवासनापरिणामहेतुकम् ल.अ.69ख/18.

སྣང་བའི་སྤྱོད་ཡུལ་དུ་འགྱུར་བ *वि.* प्रतिभासगोचरः – རིམ་གྱིས་རྒྱུ་དང་འབྲས་བུའི་དངོས་པོར་རྣམ་པར་གནས་པ་རྣམས་ཀྱི་འབྲེལ་བ་ཡང་སྣང་བའི་སྤྱོད་ཡུལ་དུ་འགྱུར་བ་མེད་དོ॥ सम्बन्धश्च हेतुफलभावेन व्यवस्थितानां क्रमभाविनां न प्रतिभासगोचरः प्र.अ.11क/12.

སྣང་བའི་ཕྲེང་བ་ཞེས་བྱ་བའི་རབ་ཏུ་བྱེད་པ *ना.* आलोकमालाप्रकरणम्, ग्रन्थः क.त.3895.

སྣང་བའི་ཕྲེང་བའི་འགྲེལ་པ་ཡིད་དགའ་བ་བསྐྱེད་པ *ना.* [आलोकमालाटीका ह्रदानन्दजननी नाम], ग्रन्थः क.त.3896.

སྣང་བའི་ཚིག 1. अनिराभासपदम्, अष्टोत्तरशतपदान्तर्गतपदविशेषः – བཅོམ་ལྡན་འདས་ཚིག་བརྒྱ་རྩ་བརྒྱད་པོ་གང་ལགས། བཅོམ་ལྡན་འདས་ཀྱིས་བཀའ་སྩལ་པ། སྐྱེ་བའི་ཚིག་དང་མི་སྐྱེ་བའི་ཚིག་དང...སྣང་བའི་ཚིག་དང་སྣང་བ་མེད་པའི་ཚིག་དང कतमद्भगवन् अष्टोत्तरपदशतम् ? भगवानाह–उत्पादपदम्, अनुत्पादपदम्...निराभासपदम्, अनिराभासपदम् ल.अ.68क/17 2. दृश्यपदम्, अष्टोत्तरशतपदान्तर्गतपदविशेषः – བཅོམ་ལྡན་འདས་ཚིག་བརྒྱ་རྩ་བརྒྱད་པོ་གང་ལགས། བཅོམ་ལྡན་འདས་ཀྱིས་བཀའ་སྩལ་པ། སྐྱེ་བའི་ཚིག་དང་མི་སྐྱེ་བའི་ཚིག་དང...སྣང་བའི་ཚིག་དང་སྣང་བ་མེད་པའི་ཚིག་དང कतमद्भगवन् अष्टोत्तरपदशतम् ? भगवानाह– उत्पादपदम्, अनुत्पादपदम्... दृश्यपदम्, अदृश्यपदम् ल.अ.68ख/17.

སྣང་བའི་ཚོགས आलोकराशिः – སྣང་བའི་ཚོགས་ནི་སྣང་བ་འདུས་པའོ॥ आलोकराशिः आलोकसङ्घातः त.प.208ख/887.

སྣང་བའི་འོད = སྣང་འོད།

སྣང་བའི་འོད་ཀྱི་རྒྱལ་པོ *ना.* ज्योतिरश्मिराजेन्द्रः, तथागतः – དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་སྣང་བའི་འོད་ཀྱི་རྒྱལ་པོ་ཞེས་བྱ་བ་དང <?> ज्योतिरश्मिराजेन्द्रो नाम तथागतः म.मू.92ख/5.

སྣང་བའི་རང་བཞིན दृश्यस्वभावः – དམིགས་པའི་རིག་བྱར་གྱུར་པ་ཞེས་བྱ་བ་སྨོས་སོ།། སྣང་བའི་རང་བཞིན་གཞན་ཡིན་ནོ་ཞེས་བྱ་བའི་དོན་ཏོ།། <?> उपलब्धिलक्षणप्राप्तस्येति दृश्यस्वभावस्य, नान्यस्येति यावत् वा.टी.65क/19.

སྣང་བའི་ལྷ་མོ *ना.* भादेवी, देवी – སྣང་བའི་ལྷ་མོ་གཙོ་མོ་ཉིད་ཞི་བ་ལ་སོགས་པའི་ལྷ་མོ་རྣམས་ཀྱི་ཡང་གོ་རིམས་བཞིན་དུ་ཤར་ཕྱོགས་ལ་སོགས་པ་ཕྱོགས་ཀྱི་འདབ་མ་རྣམས་སུ་བསྐོར་བ भादेव्याः प्राधान्यं शान्त्यादिदेवीनां च यथाक्रमं पूर्वादिदिग्दलेषु वृत्तिः ख.टी. 159क/240; སྣང་བ།

སྣང་བར་གྱུར • *क्रि.* ईक्ष्येत – གལ་ཏེ་ཇི་ལྟར་ཉི་མ་གནས། །དེ་ལྟར་དེ་ནི་སྣང་གྱུར་ན།། यथैवावस्थितो ह्यर्कः तथैवेक्ष्येत यद्यसौ। त.स. 96क/845; •= སྣང་བར་གྱུར་པ།

སྣང་བར་གྱུར་པ • *क्रि.* 1. प्रज्ञायते – གང་གི་ཚེ་འཇིག་རྟེན་གསལ་བར་ཀུན་ནས་གནས་པར་གྱུར་ཏེ། སྐྱེ་བ་སྣང་བར་གྱུར། རྒ་བ་སྣང་བར་གྱུར अथ तर्हि यदा व्यक्तो लोकः सुस्थितो भवति, जातिः प्रज्ञायते, जरा प्रज्ञायते ल.वि.12ख/14; संदृश्यते – མ་ཕམ་པ་འདི་ལྟ་སྟེ་དཔེར་ན། ད་ལྟར་སངས་རྒྱས་ཀྱི་ཞིང་འདི་དག་སྣང་བར་གྱུར་པ་བཞིན་ནོ།། तद्यथापि नाम अजित एतर्ह्येतानि बुद्धक्षेत्राणि संदृश्यन्ते स.पु.9क/13 2. अवभासितोऽभूत् – དེ་དག་གི་འོད་ཀྱིས་འཇིག་རྟེན་ཐམས་ཅད་སྣང་བར་གྱུར་ཏོ།། तेषां च प्रभया सर्वलोकोऽवभासितोऽभूत् रा.प.246ख/145; संदृश्यते स्म – སངས་རྒྱས་ཀྱི་ཞིང་དེ་དག་ཐམས་ཅད་འོད་ཟེར་དེའི་འོད་ཀྱིས་ཤིན་ཏུ་ཁྱབ་པར་[? གསལ་བར་]སྣང་བར་གྱུར་ཏེ तानि च बुद्धक्षेत्राणि सर्वाणि तस्या रश्मेः प्रभया सुपरिस्फुटानि संदृश्यन्ते स्म स.पु.9क/13; • *भू.का.कृ.* अवभासितः – དེའི་ལུས་དང་ངག་དང་ཡིད་ཀྱི་ལས་མཚན་མ་ཐམས་ཅད་དང་བྲལ་བ་ཤིན་ཏུ་ཡོངས་སུ་སྦྱངས་པ་མི་སྐྱེ་བའི་ཆོས་ལ་བཟོད་པས་སྣང་བར་གྱུར་པ་ཚད་མེད་པ་འབྱུང་བར་འགྱུར་རོ།། तस्याप्रमाणं सर्वनिमित्तापगतं कायवाङ्मनस्कर्म प्रवर्तते सुपरिशोधितमनुत्पत्तिकधर्मक्षान्त्यावभासितम् बो.भू.180ख/237; आभासगतः – དེ་དག་ཀུང་གཟུགས་ལ་སོགས་པ་ཡུལ་རྣམས་ཡིན་ནོ།། སྣང་བར་གྱུར་པ་ཡིན ते पुना रूपादयो विषया आभासगता भवन्ति अभि.स्फु.127ख/829; आभासप्राप्तः – ཡུལ་སྣང་བར་གྱུར་པ་དང आभासप्राप्ते विषये अभि.भा.82क/1190; आलोकभूतः – སྐུལ་བར་བྱེད་པ་ཉིད་ཆོས་དང་ཆོས་མ་ཡིན་པ་ལ་སོགས་པ་རྣམ་པར་གཞག་པའི་རྒྱུ་མཚན་ཡིན་ཏེ། སྲོག་ཆགས་ཐམས་ཅད་ཀྱི་སྣང་བར་གྱུར་པ་ཐུན་མོང་གི་མིག་ལྟ་བུར་རྣམ་པར་གཞག་[? བཞག་]གོ།། चोदनैव धर्माधर्मादिव्यवस्थानिबन्धनमालोकभूता सर्वप्राणभृतां साधारणं चक्षुरिव व्यवस्थिता त.प.130ख/712; འཇིག་རྟེན་ཐམས་ཅད་ཀྱི་སྣང་བར་གྱུར་པ सर्वलोकस्यालोकभूताः शि.स.173क/171; འཇིག་རྟེན་རྣམས་ལ་ཡེ་ཤེས་ཀྱི་སྣང་བར་གྱུར་པ लोकस्य ज्ञानालोकभूताः ख.टी.160ख/241; निर्भाससम्भूतः – ཤེས་པ་རྣམ་བཅས་ཕྱོགས་ལ་ཡང་། །ཕྱི་རོལ་རྣམ་པ་རྗེས་མཐུན་པར། །ཤེས་པ་ལ་ནི

སྣང་གྱུར་པས། །དོན་རྟོགས་ཞེས་ནི་བརྗོད་པ་ཡིན།། साकारज्ञानपक्षेऽपि बाह्याकारानुरूपतः। ज्ञाने निर्भाससम्भूतावर्थो विदित उच्यते। त.स.91क/821.

སྣང་བར་གྱུར་པ་ཡིན *क्रि.* आभासगतो भवति – འདོད་པའི་འདོད་ཆགས་ཀྱི་ཀུན་ནས་དཀྲིས་པར་གྱུར་པའི་ཆོས་རྣམས་ཀྱང་སྣང་བར་གྱུར་པ་ཡིན कामरागपर्यवस्थानीयाश्च धर्मा आभासगता भवन्ति अभि.भा.34ख/1001.

སྣང་བར་བགྱིད = སྣང་བར་བགྱིད་པ།

སྣང་བར་བགྱིད་པ •*क्रि.* भासयति – འོད་ཀྱིས་ཞིང་བརྒྱ་དག་ཀྱང་སྣང་བར་བགྱིད།། प्रभया च भासयति क्षेत्रशतान् शि.स.172क/169; •*वि.* आलोककरी – བཅོམ་ལྡན་འདས་ཤེས་རབ་ཀྱི་ཕ་རོལ་ཏུ་ཕྱིན་པ་ནི་སྣང་བར་བགྱིད་པ་ལགས་སོ།། आलोककरी भगवन् प्रज्ञापारमिता अ.सा.151ख/86.

སྣང་བར་བགྱིས = སྣང་བར་བགྱིས་པ།

སྣང་བར་བགྱིས་པ *भू.का.कृ.* अवभासितः – དེ་ཡིས་ཕྱོགས་རྣམས་ཀུན་ཏུ་སྣང་བར་བགྱིས། །ཉི་མ་ཤར་བས་ཇི་ལྟར་བགྱིས་པ་བཞིན།། अवभासिता येन दिशः समन्ताद्दिवाकरेणोदयता यथैव॥ अ.श.4ख/3; आभासितः लो.को.1437; आदीप्तः लो.को.1437; प्रभासितः लो.को.1437.

སྣང་བར་འགྱུར = སྣང་བར་འགྱུར་བ།

སྣང་བར་འགྱུར་ཅིང་མི་སྣང་བར་ཡང་འགྱུར *पा.* आवि-[द्युति लि.पा.]र्भवति तिरोभावमपि प्रत्यनुभवति, अभिज्ञाकर्मभेदः म.व्यु.218 (6ख).

སྣང་བར་འགྱུར་བ •*क्रि.* 1. भाति – བསྒོམས་པ་ཡོངས་སུ་རྫོགས་པ་ན། །དེ་དང་དེ་དག་གསལ་སྣང་འགྱུར།། ते ते भान्ति परिस्फुटम्। भावनापरिनिष्पत्तौ त.स.125ख/1084; प्रतिभाति – གང་ཕྱིར་མེ་ལོང་ཆུང་ངུ་ལ། །གདོང་ནི་ཆུང་ངུར་སྣང་བར་འགྱུར།། अल्पीयस्यास्यमल्पीयो दर्पणे प्रतिभाति हि। त.स.96क/846; ख्याति – ཕྱི་རོལ་སྣང་བའི་གཟུགས་ཅན་གྱིས། །སེམས་དང་སེམས་ནི་སྣང་བར་འགྱུར།། चित्तं हि ख्याति चित्तस्य बहिर्धा ख्याति रूपिणः। ल.अ.161ख/111; आभासीभवति – མཚན་མ་ཀྱུ་བ་དག་ཀྱང...མི་སྣང་བར་འགྱུར་རོ།། निमित्तसमुदाचारो वा नाभासीभवति द.भू.240क/42; प्रतिभासः प्राप्नोति – ཡི་གེ་ཅིག་ཅར་སྣང་བར་འགྱུར་ལ सकृद्वर्णप्रतिभासः प्राप्नोति त.प.7ख/460; भासते – གང་གི་དབང་གིས་བསྟན་པ་རྣམས། །འབྱུང་ཞིང་ད་ལྟར་ཡང་སྣང་འགྱུར།། यदाधिपत्यभाविन्यो भासन्तेऽद्यापि देशनाः॥ त.स.129क/1104; अवभासते – སྒྲ་ནི་བློ་ལ་སྣང་བར་འགྱུར།། बुद्धौ शब्दोऽवभासते त.स.99क/876; त.स.71ख/670; ख्यायते – ཁམས་གསུམ་ན་ནི་ནོར་བ་ཡི[? བའི་སེམས]། །དེ་ཕྱིར་སྣ་ཚོགས་སྣང་བར་འགྱུར།། भ्रान्तं त्रैधातुके चित्तं विचित्रं ख्यायते यतः॥ ल.अ.160क/109; दृश्यते – དེས་ན་དེ་ཡང་ཕྲོག་མཚམས་དང་མཚུངས་པ་དང་མི་འདྲ་བར་སྣང་བར་འགྱུར་རོ།། तेन सोऽप्यवधिः समो विषमश्च दृश्यते त.प.12क/469; སོར་མོས་ཅུང་ཟད་མནན་མིག་ལ། །གཅིག་ཀྱང་ཉ་མར་སྣང་བ་གང་།། ईषत्सम्मीलितेऽङ्गुल्या यच्च चक्षुषि दृश्यते। पृथगेकोऽपि त.स.93क/847; प्रदृश्यते – མེ་ལོང་ཆུ་དང་མིག་རྣམས་ལ། །ཇི་ལྟར་གཟུགས་བརྙན་སྣང་འགྱུར་བ།། दर्पणे उदके नेत्रे यथा बिम्बं प्रदृश्यते। ल.अ.190क/162; ईक्ष्यते – ཇི་ལྟར་ཉི་གཅིག་ཆུ་སོགས་ལ། །དབྱེར་མེད་དེ་ཡང་དུ་མ་ཡི། །བདག་ཉིད་དུ་ནི་སྣང་བར་འགྱུར།། जलादिषु यथैकोऽपि नानात्मा सवितेक्ष्यते। त.स.80ख/747; वी-

क्ष्यते – སྔོ་དང་སེར་དང་དཀར་སོགས་བཞིན། །ཡུལ་དང་རང་བཞིན་དབྱེ་བ་ཡིས། །དངོས་པོའི་དབྱེ་བས་འགལ་བ་ཅན། །གང་ཕྱིར་ཅིག་ཅར་དུ་སྣང་འགྱུར། नीलपीतावदातादिरूपभेदविरोधिनः। देशप्रकृतिभेदेन वीक्ष्यन्ते युगपद् यतः॥ त.स.132क/1122 2. भासेत – དེ་ལྟར་རྗེས་སུ་དཔག་པའི་ཤེས་པ་ལ་ཡང་སྣང་བར་འགྱུར་རོ། तथैवानुमानज्ञानेऽपि भासेत त.प.126क/702; གཞན་ཡང་གལ་ཏེ་གསལ་བ་བསྒྲིབས་ན་ཇི་ལྟར་སྣང་བར་འགྱུར་ཏེ किञ्च–यदि तिरोभूतव्यक्तयः, कथं भासेरन् त. प.206क/881; दृश्येत – རྟག་ཏུ་དེ་ཡི་རྣམ་པ་འམ། །དེ་དང་བྲལ་བར་སྣང་བར་འགྱུར། सर्वथा। तच्छायस्तद्वियुक्तो वा स दृश्येत त.स.11क/132; ईक्ष्येत – གལ་ཏེ་ཇི་ལྟར་ཉི་མ་གནས། །དེ་ལྟར་དེ་ནི་སྣང་འགྱུར་ན། यथेवावस्थितो ह्यर्कस्तथैवेक्ष्येत यद्यसौ। त.स.96क/845; प्रत्यवभासेत – གང་ཞིག་སྣང་བར་འགྱུར་བ་མྱུར་བ་ལ་སོགས་པའི་རྣམ་པ་དང་ལྡན་པའི་དོན་གཞན་ཡང་ཡོད་པ་མ་ཡིན་ཏེ न चान्यो द्रुताकारवानर्थः सम्भवति यः प्रत्यवभासेत त.प.179ख/820; • सं. आविर्भावः – མང་པོར་གྱུར་ཅིང་གཅིག་ཏུ་འགྱུར་བ་དང་། སྣང་བར་འགྱུར་བ་དང་མི་སྣང་བར་འགྱུར་བ་ཤེས་པ་དང་མཐོང་བས་ཉམས་སུ་མྱོང་བར་བྱེད་དེ बहुधा भूत्वैको भवति, आविर्भावं तिरोभावं ज्ञानदर्शनेन प्रत्यनुभवति अभि.स्फु.231ख/1019; •वि. भासमानः – དེ་ལ་ཡང་ནི་སྒྲ་གཞན་ལ། །སྣང་བར་འགྱུར་བར་མཚོན་མ་ཡིན། तस्यामपि न शब्दोऽन्यो भासमानो हि लक्ष्यते॥ त.स.99क/877; སྣང་བར་འགྱུར་བའི་རྣམ་པ་ནི། आकारो भासमानः त.स.75क/703; दृश्यमानः – རྒན་པོ་རྣམས་ཀྱི་རྟོགས་པ་ནི། །ཡང་དང་ཡང་དུ་སྣང་འགྱུར་བ། वृद्धानां दृश्यमाना प्रतिपत्तिः पुनः पुनः। त.स.101ख/894.

སྣང་བར་འགྱུར་བ་ཡིན क्रि. समीक्ष्यते – གཟུགས་བརྙན་དེ་འདང་ཆུ་ཡི་ནི། །ནང་དུ་སྣང་བར་འགྱུར་བ་ཡིན། जलाद्यन्तर्गतं चेदं प्रतिबिम्बं समीक्ष्यते। त.स.95ख/844.

སྣང་བར་བྱ = སྣང་བར་བྱ་བ།

སྣང་བར་བྱ་བ • क्रि. अवभासयति – འཇིག་རྟེན་གྱི་ཁམས་བརྒྱ་སྣང་བར་བྱ་བ་དང लोकधातुशतं चावभासयति द.भू.185ख/14; •सं. अवभासनम् – གླིང་བཞི་པ་སྣང་བར་བྱ་བའི་ཕྱིར་ཉི་མ་གཅིག་པོ་འདི་ཤོ་ན་འཆར་རོ། एक एवैषां सूर्य उदागच्छति चतुर्द्वीपावभासनाय शि.स.155क/149; उद्भासनम् – གང་ཡིན་པ་ཞེས་སྨོས་པ་དང་ཤེས་པ་སྣང་བར་བྱ་བས་སོ། यामिति चोलिङ्गनतो ज्ञानोद्भासनेन वि.सू.91ख/109.

སྣང་བར་བྱས = སྣང་བར་བྱས་པ། སྣང་བར་བྱས་ཏེ། °ནས अवभासयित्वा – དགའ་བའི་ཚལ་ཡང་ཀུན་དུ་སྣང་བར་བྱས་ཏེ नन्दनवनं च समन्तादवभासयित्वा स.दु.97क/120; अवभास्य – དེའི་དགེ་བའི་རྩ་བ་སྣང་བ་དེས་ནི་སེམས་ཅན་རྣམས་ཀྱི་ཉོན་མོངས་པ་དང་སེམས་ཀྱི་ཐིབས་པོ་སྣང་བར་བྱས་ཏེ་དེ་ཉིད་ནས་ཕྱིར་ལྡོག་གོ། तस्य सा कुशलमूलाभा सत्त्वानां क्लेशचित्तगहनान्यवभासस्य तत एव व्यावर्तते द.भू.258क/54; རྒྱལ་པོའི་ཁབ་རིལ་གྱིས་འོད་ཆེན་པོས་སྣང་བར་བྱས་ནས सकलं राजगृहमुदारेणावभासेनावभास्य अ.श.47क/40; आभास्य – ཇི་ལྟར་རྒྱ་ཆེ་འོད་ཟེར་སྣང་ལྡན་ཉི་མ་བཞིན། །འཇིག་རྟེན་ཀུན་ཏུ་སྣང་བར་བྱས་ནས་རིམ་གྱིས་ནི། उदित इह समन्ताल्लोकमाभास्य यद्वत् प्रततदशशतांशुः सप्तसप्तिः क्रमेण। र.वि.126क/109; प्रकाशीकृत्य – དེ་དག་གཡོགས་ཏེ་སྔ་མ་དག་སྣང་བར་བྱས་ནས་བརྗོད་པར་བྱའོ། प्रतिच्छाद्यैनां पूर्वाः प्रकाशीकृत्योपयाचनम् वि.सू.91क/109.

སྣང་བར་བྱས་པ *भू.का.कृ.* अवभासितः – ཚོང་དཔོན་གྱི་བུ་ནོར་བཟངས་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའི་རྣམ་པར་ཐར་པ་གཞན་གྱིས་མི་ཐུབ་པའི་རྒྱལ་མཚན་གྱི་ཡེ་ཤེས་ཀྱིས་སྣང་བར་བྱས་པ सुधनः श्रेष्ठिदारकोऽपराजितध्वजबोधिसत्त्वविमोक्षज्ञानावभासितः ग.व्यू.380क/90; སེམས་ཅན་དམྱལ་བ་ཆེན་པོ་དག་ཀྱང་སྣང་བར་བྱས सर्वमहानरकाश्चावभासिताः ग.व्यू.73ख/164; निर्भासीकृतः – མི་དང་སེང་གེ་དག་གི་ཆ་གང་ཡིན་པ་དེ་དག་དང་ལྡན་པ་སྟེ་སྣང་བར་བྱས་པའི་ངོ་ཤེས་པ་གང་ཡོད་པ་དེ་ལ་དེ་སྐད་ཅེས་བྱའོ། नृसिंहयोर्ये भागास्तैरनुस्यूतं निर्भासीकृतं यत् प्रत्यभिज्ञानं तत्तथोक्तम् त.प.74क/600.

སྣང་བར་བྱེད = སྣང་བར་བྱེད་པ།

སྣང་བར་བྱེད་ཅིང་མི་སྣང་བར་ཡང་བྱེད་པ *पा.* आविर्भावस्तिरोभावः, पारिणामिक्या ऋद्धेर्भेदः – དེ་ལ་ཡོངས་སུ་བསྒྱུར་བའི་རྫུ་འཕྲུལ་གྱི་རྣམ་པའི་རབ་ཏུ་དབྱེ་བ་གང་ཞེ་ན། འདི་ལྟ་སྟེ། གཡོ་བར་བྱེད་པ་དང...སྣང་བར་བྱེད་ཅིང་མི་སྣང་བར་ཡང་བྱེད་པ་དང...འོད་ཟེར་འབྱིན་པ་དང तत्र पारिणामिक्या ऋद्धेः प्रकारभेदः कतमः। तद्यथा–कम्पनं... आविर्भावस्तिरोभावः... रश्मिप्रमोक्षणं च बो.भू.32ख/40.

སྣང་བར་བྱེད་པ •*क्रि.* भासं करोति – གང་ཞིག་ཕྱལ་དུ་ཕྱིན་པར་སྣང་བར་བྱེད་པ་དེ་ཉི་མ་ཡིན་གྱི य एव प्रकर्षेण भासं करोति स एव भास्करः अभि.स्फु. 285क/1128; अवभासं करोति लो.को.1438; आविष्करोति – ཕྱིར་ཡང་དེ་བཞིན་དུ་བདག་ཉིད་སྟོན་ཅིང་སྣང་བར་བྱེད་པ་ཡིན་ནོ། पुनश्च तथैवात्मभावमुपदर्शयत्याविष्करोति बो.भू.34क/43; अवभासं कुरुते – རིགས་ཀྱི་བུ་དེ་ན་ཉི་མ་དང་ཟླ་བ་མི་སྣང་སྟེ། ནོར་བུ་ཡིད་བཞིན་རིན་པོ་ཆེ་དམ་པ་སྦྱིན་པ་ཞེས་བྱ་བ་དེ་སྣང་བར་བྱེད་དོ། यत्र कुलपुत्र चन्द्रादित्यौ न ज्ञायेते, तत्र च पृथिवीप्रदेशे वरदो नाम चिन्तामणिरत्नराजोऽस्ति। स च तत्रावभासं कुरुते का.व्यू.217ख/277; अवभासते – ཇི་སྲིད་དུ་ཉི་མ་དང་ཟླ་བའི་དཀྱིལ་འཁོར་གྱི་འོད་ཀྱིས་སྣང་བར་བྱེད་པ यावच्चन्द्रसूर्यौ मण्डलप्रभया अवभासेते बो.प.48ख/9; प्रतिभासते – དེ་ཕྱིར་དེར་ཡང་རང་བཞིན་དེས། །ཅི་ཕྱིར་དེ་ལྟར་སྣང་བར་བྱེད། किमिति प्रतिभासन्ते तेन रूपेण तत्र च॥ त.स.11क/129; अवभासयति – འོད་སྲུང་འདི་ལྟ་སྟེ་དཔེར་ན་ཉི་མ་དང་ཟླ་བའི་འོད་ཀྱིས་འཇིག་རྟེན་ཐམས་ཅད་དུ་སྣང་བར་བྱེད་པ་ནི तद्यथा काश्यप चन्द्रसूर्यप्रभा सर्वलोकमवभासयति स.पु.50ख/90; प्रकाशयति – མར་མེས་ཅི་ཞིག་སྣང་བར་བྱེད། किं प्रकाशयति दीपः प्र.प.51क/62; आलोकयति – འོད་ཟེར... །འཇིག་རྟེན་ལ་ཡང་སྣང་བར་བྱེད། रश्मयः...लोकमालोकयन्ति च॥ सू.अ.156क/42; भास्यते – ཉི་མའི་འོད་ཟེར་གཅིག་བཏང་བས། །འགྲོ་འདི་སྣང་བར་བྱེད་པ་ལྟར། यथा सूर्यैकमुक्ताभे रश्मिभिर्भास्यते जगत्। सू.अ.156क/42; व्यज्यते – ཡི་གེ་ནི་རང་གི་མཚན་ཉིད་ཀྱིས་སྣང་བར་བྱེད་པས་ན་ཡི་གེའོ། स्वलक्षणेन व्यज्यते इति कृत्वा व्यञ्जनम् ल.अ.100ख/47; •*सं.* 1. प्रकाशः – འདིར་སྣང་བར་བྱེད་པ་ཞེས་བྱ་བ་ནི་མུན་པ་སེལ་བས་ཡིན་ན इह प्रकाशो नाम तमस्य[? सो] वधः प्र.प.51क/62; प्रकाशनम् – དེའི་ཕྱིར་མར་མེ་ལ་མུན་པ་སེལ་བའི་མཚན་ཉིད་ཅན་གྱི་སྣང་བར་བྱེད་པ་ཡོད་པ་ཡིན་ལ तस्मादस्त्येव अन्धकारघातलक्षणं प्रकाशनं प्रदीपस्य प्र.प.51ख/62; अवभासनम् – དེ་བཞིན་གཤེགས་པའི་དགེ་བའི་རྩ་བ་སྣང་བར་བྱེད་པའི་ཁ་དོག་དང तथागतकुशलमूलावभासनवर्णा ग.व्यू.187क/

270 2. अभिव्यक्तिः – རྐྱེན་སྣང་བར་བྱེད་པའི་འགྱུར་བ་དང་བྱ་བ་སྣང་བར་བྱེད་པའི་འགྱུར་བ་དང प्रत्ययाभिव्यक्तिपरिणामः क्रियाभिव्यक्तिपरिणामः ल.अ. 118क/65; आविर्भावः – སྣང་བར་བྱེད་ཅིང་མི་སྣང་བར་ཡང་བྱེད་པ आविर्भावस्तिरोभावः बो.भू.32ख/40; व्यञ्जनम् – བློ་གྲོས་ཆེན་པོ་སྣང་བར་བྱེད་པའི་རྒྱུ་ནི་རྣམ་པར་རྟོག་པའི་དངོས་པོ་སྐྱེས་པའི་མཚན་ཉིད་སྣང་བའི་བྱ་བ་བྱེད་དེ व्यञ्जनहेतुः पुनर्महामते उत्पन्नस्य विकल्पस्य भावस्य लक्षणोद्द्योतनकृत्यं करोति ल.अ.88ख/35 3. = ཉི་མ भास्करः, सूर्यः – ཨཱ་ལི་ཟླ་བའི་གཟུགས་ཀྱིས་གནས། །ཀཱ་ལིའི་གཟུགས་ཀྱིས་སྣང་བྱེད་དོ།། स्थिताऽऽलिश्चन्द्ररूपेण कालिरूपेण भास्करः ॥ हे.त.9क/26; अहस्करः – सूरसूर्यार्यमादित्यद्वादशात्मदिवाकराः ।...भास्कराहस्करब्रध्नप्रभाकरविभाकराः ॥ अ.को.1.3.28; अहः करोतीति अहस्करः अ.वि.1.3.28 0. ज्योतिः – སྣང་བར་བྱེད་པའི་ཚོགས ज्योतिर्गणः म.व्यु.6610 (94ख); • *पा.* 1. आभासकरः, समाधिविशेषः – རིགས་ཀྱི་བུ་འདི་ལྟ་སྟེ། རྣམ་པར་བྱེད་ཅེས་བྱ་བའི་ཏིང་ངེ་འཛིན་དང...སྣང་བར་བྱེད་ཅེས་བྱ་བའི་ཏིང་ངེ་འཛིན་དང तद्यथापि नाम कुलपुत्र आकारकरो नाम समाधिः...आभासकरो नाम समाधिः का.व्यू.222क/284 2. आलोककरः, समाधिविशेषः म.व्यु.557 (13क); • *ना.* अवभासकरः, देवपुत्रः – འདི་ལྟ་སྟེ། ལྷའི་བུ་ཨུད་ཀ་ལི་[? ཨུཏ་ཁ་ལི]ཞེས་བྱ་བ་དང...སྣང་བྱེད་དང तद्यथा–उत्खली च नाम देवपुत्रः... अवभासकरश्च ल.वि.137क/202; • *वि.* आलोककरः – ཐམས་ཅད་སྣང་བར་བྱེད་ཅེས་བྱ་བའི་ཏིང་ངེ་འཛིན सर्वालोककरो नाम समाधिः का.व्यू.238ख /300; དེ་ལྟར་ན་འཇིག་རྟེན་ཐམས་ཅད་ལ་སྣང་བར་བྱེད་པ་ཡིན་ནོ།། एवमालोककरो भवति सर्वसत्त्वानाम् ग.व्यू.208क/290; प्रकाशकः – སྣང་བར་བྱེད་པ་ཉིད प्रकाशकत्वम् प्र.प.51क/62; अवभासकः – མི་སྣང་གྱུར་པ་ཐམས་ཅད་ལ། །སྟོང་གསུམ་གཅིག་པུས་སྣང་བྱེད་པས།། अन्तर्धानेषु सर्वेषु साहस्रैकावभासकः । गु.स.111क/45.

སྣང་བར་བྱེད་པ་ཉིད प्रकाशकत्वम् – མུན་པ་གང་སེལ་བར་བྱེད་པས་མར་མེ་ལ་གཞན་སྣང་བར་བྱེད་པ་ཉིད་ཡོད་པར་འགྱུར་བ यत्तमो निघ्नतः प्रदीपस्य परप्रकाशकत्वं स्यात् प्र.प.51क/62; प्रकाशत्वम् – མུན་པ་གང་སེལ་བར་བྱེད་པས་རང་གི་བདག་ཉིད་སྣང་བར་བྱེད་པ་ཉིད་དུ་འགྱུར་བ यत्तमो निघ्नतः स्वात्मप्रकाशत्वं स्यात् प्र.प.51क/62.

སྣང་བར་བྱེད་པའི་རྒྱུ *पा.* व्यञ्जनहेतुः, हेतुभेदः – རྒྱུ་ནི་རྣམ་པ་དྲུག་སྟེ...བློ་གྲོས་ཆེན་པོ་སྣང་བར་བྱེད་པའི་རྒྱུ་ནི་རྣམ་པར་རྟོག་པའི་དངོས་པོ་སྐྱེས་པའི་མཚན་ཉིད་སྣང་བའི་བྱ་བ་བྱེད་དེ हेतुः...षड्विधः...व्यञ्जनहेतुः पुनर्महामते उत्पन्नस्य विकल्पस्य भावस्य लक्षणोद्द्योतनकृत्यं करोति ल.अ.88ख/35.

སྣང་བར་བྱེད་པའི་ཚོགས ज्योतिर्गणः म.व्यु.6610 (སྐར་མའི་ཚོགས་སམ་སྣང་བར་བྱེད་པའི་ཚོགས། 94ख).

སྣང་བར་མི་འགྱུར་བ = སྣང་མི་འགྱུར་བ།

སྣང་བར་མཛད = སྣང་མཛད།

སྣང་བར་མཛད་པ = སྣང་མཛད།

སྣང་བས་ཁྱབ་པར་འགྱུར अवभासकरणं भवति – བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་དེ་དང་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་དེ་དག་གིས་མཉམ་པར་བཞག་མ་ཐག་ཏུ་འཇིག་རྟེན་གྱི་ཁམས་ཐམས་ཅད་མ་ལུས་པར་གཡོ་བར་འགྱུར་རོ།། ...ཆོས་ཀྱི་དབྱིངས་ཐམས་ཅད་སྣང་བས་ཁྱབ་པར་འགྱུར་རོ།། सम-

नन्तरसमापन्ने च तस्मिन् बोधिसत्त्वे तेषु च बोधिसत्त्वेषु निरवशेषमथ सर्वलोकधातुसंप्रकम्पनं भवति... सर्वधर्मधात्ववभासकरणं च... भवति द.भू. 262[ख]/55.

སྣང་བྱེད = སྣང་བར་བྱེད་པ།

སྣང་བྱེད་བདག = ཉི་མ अहर्पतिः, सूर्यः – सूरसूर्यार्यमादित्यद्वादशात्मदिवाकराः।... विभावसुर्ग्रहपतिस्त्विषांपतिरहर्पतिः ॥ अ.को.1.3.30; अह्नः पतिः अहर्पतिः, अहःपतिः अ.वि.1.3.30.

སྣང་བྱེད་པ = སྣང་བར་བྱེད་པ།

སྣང་བྲལ *ना.* भाविविक्तः, आचार्यः – གསལ་བྱེད་པ་དང་སྣང་བྲལ་ལ་སོགས་པ་རྣམས་གཏན་ཚིགས་མ་གྲུབ་པ་ཉིད་དུ་སྟོན་པར་བྱེད་དེ उद्योतकरभाविविक्तादयो हेतोरसिद्धतामुद्भावयन्ति त.प.259[क]/234; ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པས་སྣང་བྲལ་གྱིས་སྨྲས་པའི་ཚད་མ་དག་དོགས་པར་བྱེད་དེ इत्यादिना भाविविक्तोक्तानि प्रमाणान्याशङ्कते 243[ख]/202; त.प.198[ख]/113.

སྣང་མ་ཡིན = སྣང་མིན།

སྣང་མི་འགྱུར = སྣང་མི་འགྱུར་བ།

སྣང་མི་འགྱུར་བ • *क्रि.* नावभासते – མྱུར་དང་དལ་སོགས་ངོ་བོ་ཡིས། །གཞན་པའི་སྒྲ་ནི་སྣང་མི་འགྱུར། द्रुतमध्यादिभेदाद्धि नान्यः शब्दोऽवभासते। त.स.90[ख]/820; न दृश्यते – གལ་ཏེ་དེ་ཉིད་རྟོགས་གྱུར་ན། །ཅི་ཕྱིར་སྟེང་དུ་སྣང་མི་འགྱུར། स एव चेत् प्रतीयेत कस्मान्नोपरि दृश्यते ॥ त.स.81[क]/749; • *कृ.* अदृश्यम् – གང་ཕྱིར་རྨོངས་པའི་བློ་མཐོང་ལ། །རྟག་ཏུ་མཁྱེན་ཀུན་སྣང་མི་འགྱུར། सर्वार्थज्ञो यतोऽदृश्यः सदैव जडधीदृशाम्। त.स.120[ख]/1043.

སྣང་མི་སྣང *ना.* लोकालोकः, पर्वतः मि.को.147[क]।

སྣང་མིན = སྣང་བ་མིན་པ།

སྣང་མིན་གྱུར་པ *भू.का.कृ.* तिरोभूतः – ཐ་དད་སྣང་མིན་གྱུར་པ་ཡི། །དཔེ་ཉིད་དག་ནི་གཟུགས་ཅན་འདོད། उपमैव तिरोभूतभेदा रूपकमिष्यते। का.आ.324[क]/2.65.

སྣང་མེད = སྣང་བ་མེད་པ།

སྣང་མེད་རྒྱུ་བ निराभासगतिः – སྣང་མེད་རྒྱུ་བ་གང་ཞིག་ལགས། निराभासगतिश्च का ल.अ.65[क]/12.

སྣང་མེད་སྤྱོད་ཡུལ = སྣང་བ་མེད་པའི་སྤྱོད་ཡུལ།

སྣང་མཚན ज्यौत्स्नी, चन्द्रिकयान्विता रात्रिः – ज्यौत्स्नी चन्द्रिकयान्विता अ.को.1.4.5; ज्योत्स्ना अस्त्यस्यामिति ज्यौत्स्नी अ.वि.1.4.5; मि.को.133[क]।

སྣང་མཛད •*क्रि.* आभासयेत् – སྐུ་མདོག་དཀར་དམར་འོད་ཀྱིས་ནི། །ཁམས་གསུམ་པོ་ནི་སྣང་བར་མཛད། सितरक्तकवर्णभिस्त्रैधातुकमाभासयेत्। स.दु.109[क]/166; • *सं.* आलोककरः, बुद्धस्य नामपर्यायः – བྱམས་པ་དེ་བཞིན་གཤེགས་པས་ཆོས་ཀྱི་འཁོར་ལོ་རྣམ་པ་འདི་ལྟ་བུ་བསྐོར་ཏེ། དེ་བསྐོར་བས་དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་ལ་དེ་བཞིན་གཤེགས་པའོ་ཞེས་བྱའོ། ...སྣང་བ་མཛད་པ་ཞེས་བྱའོ། एवंरूपं मैत्रेय तथागतेन धर्मचक्रं प्रवर्तितम्, यस्य प्रवर्तनात् तथागत इत्युच्यते...आलोककर इत्युच्यते ल.वि.203[ख]/307; •*ना.* 1. अवभासंकरः, बुद्धः – ལག་བཟང་དང་...སྣང་བར་མཛད་པ་དང་...ཤཱཀྱ་ཐུབ་པ सुबाहुः...अवभासंकरः...शाक्यमुनिश्च म.मू.94[क]/6 2. = རྣམ་པར་སྣང་མཛད वैरोचनः – དབུ་རྒྱན་སྣང་མཛད་བཞུགས་བསྒོམས་ན། །རྡོ་རྗེ་ཅན་ནི་དགྲེས་པར་འགྱུར། मुकुटे वैरोचनपदं

ध्यात्वा तुष्यन्ति वज्रिणः। गु.स.118क/60.

སྣང་བཞིན = སྣང་བཞིན་པ།

སྣང་བཞིན་པ •व.का.कृ. प्रतिभासमानः – དེ་ལྟ་ཡིན་དང་མངོན་སུམ་ཡང་སྣང་བཞིན་པའི་དོན་ངེས་པར་སྟོན་པར་བྱེད་པ་དང तथा च प्रत्यक्षं प्रतिभासमानं नियतमर्थं दर्शयति न्या.टी.38क/21; གང་ཡང་ཐེ་ཚོམ་ཟ་བ་དེར་གདོན་མི་ཟ་བར་སྣང་བཞིན་པའི་རྣམ་པ་ངེས་པ་ཡོད་པ་ཡིན་ཏེ यत्र च संशयस्तत्रावश्यं प्रतिभासमानाकारावसायोऽस्ति त.प.238क/946; भासमानः – འདི་སྙམ་དུ་སྣང་བཞིན་པ་མི་མངོན་ནོ་ཞེས་བྱ་བ་འདི་མ་གྲུབ་སྟེ स्यादेतत्–'भासमानो न लक्ष्यते' इत्येतदसिद्धम् त.प.204क/876; •वि. भासी – སྣང་བཞིན་ཞེས་བྱ་བ་ནི་སྣང་བཞིན་པའོ།། भासिन इति भासमानस्य त.प.207ख/884.

སྣང་གཟིགས वि. अवभासदर्शी लो.को.1439.

སྣང་བསྒྲིམ = མཚན་མོ विभावरी, रात्रिः – अथ शर्वरी॥ निशा निशीथिनी रात्रिस्त्रियामा क्षणदा क्षपा॥ विभावरी अ.को.1.4.5; तमसावृतत्वात् विभावरी अ.वि.1.4.5.

སྣང་འོད •सं. 1. ज्योतिरश्मिः – དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་སྣང་བའི་འོད་ཀྱི་རྒྱལ་པོ་ཞེས་བྱ་བ་དང ज्योतिरश्मिराजेन्द्रो नाम तथागतः म.मू.92ख/5; आलोकावभासः – ཕྱོགས་བཅུའི་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་རྣམས་སྨོན་ལམ་ཐམས་ཅད་ལ་དབང་བསྒྱུར་བའི་ཡེ་ཤེས་སྣང་བའི་འོད་ཇི་སྙེད་ཅིག་ཡོད་པ यश्च दशसु दिक्षु बोधिसत्त्वानां सर्वप्रणिधानवशिताज्ञानालोकावभासः ग.व्यू.210क/291; आभासरश्मिः लो.को.1437 2. ज्योतिः, पुष्पभेदः – མེ་ཏོག་སྣང་འོད་དང་སྣ་ཡི་ཀ་དང་སྣ་མའི་མེ་ཏོག་དང ज्योतिर्मालिकासुमनाः ल.वि.8क/8; •ना. अवभासप्रभः, देवपुत्रः – ལྷ་རྣམས་ཀྱི་དབང་པོ་བརྒྱ་བྱིན་དང་འཁོར་ལྷའི་བུ་ཉི་ཁྲི་འདི་ལྟ་སྟེ། ལྷའི་བུ་ཟླ་བ་དང...ལྷའི་བུ་སྣང་འོད་དང...ཐབས་ཅིག शक्रेण च देवानामिन्द्रेण सार्धं विंशतिदेवपुत्रसहस्रपरिवारेण। तद्यथा– चन्द्रेण च देवपुत्रेण...अवभासप्रभेण च देवपुत्रेण स.पु.3क/2.

སྣང་ཡལ་ཅན अवलोकनकः – ངེས་དེའི་ཕྱི་སྒོར་འདུག་པར་མི་བྱའོ།། སྣང་ཡལ་ཅན་དུ་མི་བྱའོ།། ལམ་གྱི་བཞི་མདོར་མི་བྱའོ།། नास्यैपाय [? नास्य बाह्य]द्वारे तिष्ठेत्। नावलोकनके। न चतुष्पथे वि.सू.97ख/117.

སྣང་ལས་བྱུང་བ वि. दृश्यनिर्जातः – མཐོང་བྱེད་སྣང་ལས་བྱུང་བ་ནི། །སྣང་བ་ཅི་ཡི་རྒྱུ་ལས་འབྱུང་།། पश्यको दृश्यनिर्जातो दृश्यं किं हेतुसम्भवम्॥ ल.अ.187क/158.

སྣང་གསལ आलोकः मि.को.8क; भाः मि.को.144ख।

སྣད = སྣད་པ།

སྣད་པ •सं. 1. नाशः – ས་སྣད་པ་བསྲུང་བར་བྱའོ།། रक्ष्यो भूमिनाशः वि.सू.81क/98 2. अस्वास्थ्यम् – གླང་པོ་དག་ལ་དྲེགས་པས་བརྐྱལ་དྲགས་སམ། །རབ་ཏུ་མགྱོགས་པས་རི་དྭགས་བསྙགས་དྲགས་སམ། །མཚོངས་པ་དྲགས་པས་འདི་ལྟར་ཁྱོད་སྣད་དམ།། द्विपेषु दर्पातिरसानु[? दर्पाभिलङ्घन]वृत्त्या जवप्रसङ्गादथ वा मृगेषु। कृतं तवास्वास्थ्यमिदं श्रमेण जा.मा.210क/245; • वि. क्षतः – རྡོ་བའི་ཟེར་མས་ཁྱོད་ཞབས་ཀྱི། །མཐེ་བོང་སྣད་པ་ཅི་ཡིས་སྣད།། पादाङ्गुष्ठः क्षतः कस्मात्तव पाषाणधारया। अ.क.3ख/50.25; विक्षतः – བདག་གི་ལུས་འདི་ཆེར་མ་སྣད།། इदं गात्रं मे नातिविक्षतम् जा.मा.147ख/171; पीडितः – རྒྱལ་པོ་ཆེན་པོ་སྣད་པར་མ་གྱུར་ཏམ कच्चिन्महाराज न पीडितोऽ-

सि जा.मा.147[क]/171; आतुरः – རང་གི་ཕྲགས་པའི་ཕྲེང་བས་དྲངས་པས་སྣད། །ཕན་ཚུན་ཐོས་ཏེ་སྣད་པས་ངོ་དོད་འབོད། स्ववध्रचीरप्रविकर्षणातुराः परस्पर-प्रस्खलनार्तनादिनः ॥ जा.मा.176[क]/203; आर्तः – ཕན་ཚུན་ཐོས་ཏེ་སྣད་པས་ངོ་དོད་འབོད། परस्परप्रस्ख-लनार्तनादिनः ॥ जा.मा.176[क]/203; (द्र. སྣད་པའི་རྨ། སྣད་པར་གྱུར་པ།).

སྣད་པའི་རྨ क्षतम् – སྣད་པའི་རྨ་ལ་སུ་ཞིག་ཞིགས་པར་བགྱིད། <?> को हि क्षते क्षारमिवावसिञ्चेत् जा.मा. 155[क]/179.

སྣད་པར་གྱུར = སྣད་པར་གྱུར་པ།

སྣད་པར་གྱུར་པ *भू.का.कृ.* पीडितः – རྒྱལ་པོ་ཆེན་པོ་སྣད་པར་མ་གྱུར་ཏམ། कच्चिन्महाराज न पीडितोऽसि जा.मा.147[क]/171; क्षतः – རྒྱལ་པོ་...བདག་གི་ལུས་ལྟ་སྣད་པར་གྱུར་ཀྱང་རུང་། कामं शरीरं क्षितिप क्षतं मे जा.मा.162[क]/187.

སྣད་པར་འགྱུར *क्रि.* हन्यते – འདི་ཡིས་སྣད་པར་འགྱུར་བ་འམ། །ཤི་བར་འགྱུར་འདིར་གདོན་མི་ཟ། अनेन हन्यते वाऽपि म्रियते नात्र संशयः। गु.स.126[क]/78.

སྣབས शिङ्घाणम्, नासिकामलम् – སྡོམ་པ་ལ་བརྩོན་པ་རྣམས་ལ་ཟས་དང་སྐོམ་ལྷག་མར་གྱུར་པའམ་ཕྱི་ས་དང་གཅིན་དང་མཆིལ་མ་དང་སྣབས་དང་སྐྱུགས་པ་དང་དམྱང་བུ་དང་རྣག་དང་ཁྲག་གིས་འབགས་པ་དང यतीनामुच्छिष्टं वा पानभोजनमुच्चारप्रस्रावखेटशिङ्घाणकवान्तविरिक्तपूयरुधिरसंसृष्टं वा बो.भू.72[ख]/84; शिङ्घाणकम् – དེ་ལ་ནང་ལ་བརྟེན་པའི་མི་གཙང་བའི་མི་སྡུག་པ་ཉིད་གང་ཞེ་ན། འདི་ལྟ་སྟེ། སྐྲ་དང...སྣབས་དང तत्राध्यात्ममुपादाय [प्रत्यशुभता कतमा ?] तद्यथा – केशाः... शिङ्घाणकम् श्रा.भू.79[क]/203; ལུས་འདི་ལ་སྐྲ་དང...སྣབས་དང...གཅིན་དག་ཡོད་དོ། सन्ति अस्मिन् काये केशाः...शिङ्घाणकः...मूत्रमिति वि.व. 132[क]/2.109; सिङ्घाणम् – སོ་དང་སྐྲ་སེན་བདག་མ་ཡིན། ...།སྣབས་མིན་བད་ཀན་མ་ཡིན་ཏེ། दन्तकेशनखा नाहं...न सिङ्घाणं न च श्लेष्मा बो.अ.33[क]/9.58; सिङ्घाणकम् – སྣབས་དང་མཆིལ་མ་ཁ་ཆུ་དང་། །བད་ཀན་རྣག་དང་གླད་རྒྱུས་དང་། सिङ्घाणककफा लालाः श्लेष्मणि क्लिन्नमस्तकाः। शि.स.51[क]/48; ཕྱི་ས་དང་གཅིན་དང་མཆིལ་མ་དང་སྣབས་དང་ཁྲག་ལ་སོགས་པ་དག་ལ་ཡོད་པ་དང विण्मूत्रखेटसिङ्घाणकशोणितादिषु अभि.भा.43[क]/91.

སྣབས་ཀྱིས་གོས་པ *पा.* शिङ्घाणककृतम्, अशुभताभेदः – དེ་ལ་ཕྱི་རོལ་ལ་བརྟེན་པའི་མི་གཙང་བའི་མི་སྡུག་པ་ཉིད་གང་ཞེ་ན། འདི་ལྟ་སྟེ། རྣམ་པར་བསྔོས་པ་དང...སྣབས་ཀྱིས་གོས་པ་དང तत्र बहिर्धा चोपादाय अशुभता कतमा? तद्यथा – विनीलकं वा...शिङ्घाणककृतं वा श्रा.भू.79[ख]/203.

སྣམ = སྣམ་བུ།

སྣམ་ཕྱིས वर्चस्कुटी – བླངས་ནས་དགེ་འདུན་གྱི་སྣམ་ཕྱིས་སམ་ཆབ་ཁུང་སར་གཞག་པར་བྱའོ། प्रतिगृह्य साङ्घिकायां वर्चस्कुटयां वा प्रस्रावकुटयां प्रक्षेपयितव्या वि.व.380[क]/2.174.

སྣམ་སྦྱར द्र.– སྣམ་སྦྱར་གྱི་སྣམ་སྦྱར་དག་ནི་དགུ་ཡན་ཆད་ཉི་ཤུ་རྩ་ལྔ་མན་ཆད་དེ་ཟུང་མ་གཏོགས་སོ། खण्डसंघाटयां नव प्रभृत्या पञ्चविंशतेर्युग्मवर्जम् वि.सू. 23[ख]/28 ; སྣམ་སྦྱར་སྦྲེལ་ཞི་ཉིད་དང་ལྷག་མ་མཉམ་པ་ཉིད་དང་དབུས་ནས་གཞན་དུ་གློགས་བུའི་འཁྲི་ཕྱོགས་ཕྱོགས་སུ་ལྟ་བ་ཉིད་དང་མཐའ་བསྐོར་བ་ཉིད་དག་གིས་སོ། भक्तिचित्रताशेषसममध्यान्यत्तद्गतपत्रमुखत्वप-

རིམণ্ডিতत्वैः —

रिमण्डितत्वैः वि.सू.67क/84.

སྣམ་ཕྲན་སྤྲེལ་ཞི་ཉིད་ भक्तिचित्रता – སྣམ་ཕྲན་སྤྲེལ་ཞི་ཉིད་དང་ལྷག་མ་མཉམ་པ་ཉིད་དང་དབུས་ནས་གཞན་དུ་གླེགས་བུའི་འཕྲོ་ཕྱོགས་ཕྱོགས་སུ་ལྟ་བ་ཉིད་དང་མཐའ་བསྐོར་བ་ཉིད་དག་གིས་སོ॥ भक्तिचित्रताशेषसमम-ध्यान्यत्तद्गतपत्रमुखत्वपरिमण्डितत्वैः वि.सू.67क/84.

སྣམ་བུ 1. पटः – ཐགས་ལས་སྣམ་བུ तन्तुभ्यः पटाः ल.अ.88क/35; འོན་ཏེ་ཐ་ག་པ་ལ་སོགས་པ་སྣམ་བུ་ལ་སོགས་པ་ཁོ་ནའི་རྒྱུ་ཉིད་དུ་གྲགས་པ་མ་ཡིན་ནམ ननु कुविन्दादयः पटादीनामेव कारणत्वेन सिद्धाः त.प.258ख/233; སྒྲ་རླུང་ལས་བྱུང་བ་ཡིན་ན་རླུང་གི་བཀོད་པའི་ཁྱད་པར་ཡིན་ཏེ། དཔེར་ན་སྣམ་བུ་སྣལ་མའི་རང་བཞིན वायवीयश्चेच्छब्दो भवेद्, वायोः सन्निवेश-विशेषः स्यात्।...यथा पटस्य तन्तुमयान् त.प.186ख/834; སྐྱེ་ལྡན་རྣམས་ཀྱི་ཡིད་འདི་ཇི་སྲིད་རྟོག་པའི་མུན་པ་སྣམ་བུ་མཐུག་པོས་དགྲིས་གྱུར་པ॥ यावत् कल्प-तमःपटेन गुरुणा रुद्धं मनो जन्मिनाम् प्र.सि.34क/80; पट्टिका – སྒོ་དྲུང་དུ་སྣམ་བུའམ་རས་དཔྱངས་ཏེ་ཉལ་བར་བྱ द्वारस्थूलपट्टिकां वा पटकं वा लम्बयि-त्वा शयितव्यम् वि.व.188ख/2.111; शाटी – སྣལ་མ་དེ་རྣམས་ཀྱིས་སྣམ་བུ། །འདི་ཞེས་སྣལ་མ་འདུས་བྱས་ལས། །ཕྱིས་འབྱུང་འབྲས་བུར་བརྗོད་ཡིན་གྱི॥ तैस्तन्तु-भिरियं शाटीत्युत्तरं कार्यमुच्यते। तन्तुसंस्कारसम्-भूतम् प्र.वा.124क/2.151 2. = ལ་བ कम्बलः – སུམ་ཅུ་རྩ་གསུམ་པའི་ལྷ་ཡུལ་ན་སིང་གི་རྒྱལ་པོ་ཡོངས་འདུས་བརྩོལ་གྱི་དྲུང་ནས་ཐག་མི་རིང་བ་ཞིག་ན་རྡོ་ལེབ་སྣམ་བུ་དཀར་པོ་ལྟ་བུའི་སྟེང་དུ་དབྱར་གནས་པར་དམ་བཞེས་ཏེ देवेषु त्रायस्त्रिंशेषु वर्षा उपगतः पाण्डुकम्बल-शिलायां पारिजातस्य कोविदारस्य नातिदूरे अ.श.231क/213; སྣམ་བུ་སྔོན་པོར་བཙོས་པ་དང་॥ कम्बला नीलरक्ताश्च ल.अ.171क/129 3. = སྙེགས་བུ पट्टिका, वेदिका – མཐའ་ཡས་པའི་གཟུངས་མ་རྣམས་ནི་སྣམ་བུ་ལ་སྟེ་སྙེགས་བུ་ལའོ॥ अनन्ता धारि[धार]ण्यः पट्टिका-यां वेदिकायाम् वि.प्र.44ख/4.43.

སྣམ་སྦྱར सङ्घाटी – ཇི་ལྟར་ན་ཆོས་གོས་གསུམ་པ་ཡིན་ཞེ་ན། ཆོས་གོས་གསུམ་པོ་སྣམ་སྦྱར་དང་བླ་གོས་དང་མཐང་གོས་ཀྱིས་འཚོ་བར་བྱེད कथं त्रैचीवरिको भवति। त्रि-भिश्च चीवरैर्यापयति – सङ्घाटिना, उत्तरासङ्गेन, अन्तर्वासेन च श्रा.भू.64क/159; སྐྲ་བྲེ་སྣམ་སྦྱར་གྱོན་པའི་ལུས་ལྡན་ཞིང་॥ मुण्डश्च सङ्घाटीपरीतदेहः वि.व.134क/1.23; ལྟ་བ་དང་...ཆོས་གོས་སྣམ་སྦྱར་དང་ཐང་བ་དང་ལྷུང་བཟེད་དང་ཆོས་གོས་འཆང་བ་དང ...ནང་དུ་ཡང་དག་པར་འཇོག་པ་ན་ཤེས་བཞིན་དུ་སྤྱོད་པ་ཡིན་ནོ॥ आलोकिते...सङ्घाटीपटपात्रचीवरधारणे...प्रतिसंल-यने संप्रजानचारी भवति बो.प.92ख/56; སྣམ་སྦྱར་དང་ཆོས་གོས་ལྷུང་བཟེད་བཅང་བ་དང सङ्घाटीचीवर-पात्रधारणे श्रा.भू.6क/11.

སྣམ་སྦྱར་དང་བཅས་པ་ཉིད་ ससङ्घाटिता – སྣམ་སྦྱར་དང་བཅས་པ་ཉིད་ན་བསྙེན་པར་རྫོགས་པའི་ཕྱིར་འདུས་པ་ལ་ཡང་ངོ་॥ ससङ्घाटितायामुपसंपत्संनिपाते वि.सू.83ख/100.

སྣམ་སྦྱར་ནང་སྲུན་ཅན त्रिपुटसङ्घाटी, सङ्घाटीभेदः म.व्यु.9187 (126ख).

སྣམ་སྦྱར་སུམ་རིམ་པ त्रिपुटसङ्घाटी, सङ्घाटीभेदः म.व्यु.9188 (126ख).

སྣམ་སྦྱར་གསོལ वि. सङ्घाटिप्रावृतः – དབུ་སྐྲ་བྲེགས

ཆོས་གོས་སྣམ་སྦྱར་གསོལ་ནས་ཡུལ་གསུམ་པོ་ཆེ་འདི་ཉིད་ན་བསོད་སྙོམས་ལ་རྒྱུ་ཞིང मुण्डः सङ्घाटिप्रावृतोऽस्मिन्नेव स्थूलकोष्ठके पिण्डपातमटति अ.श.247ख/227.

སྣམ་གཙོས = རྐུབ་ཚོས स्फिच् – འབྲས་བུ་གཉིས་ལ་དཔེ་བྱད་བཟང་པོ་གཉིས་དང་། མདོམས་དང་། སྣམ་གཙོས་གཉིས་ལ་དཔེ་བྱད་བཟང་པོ་གཉིས་དང वृषणेऽनुव्यञ्जनद्वयम्, उपस्थम्, द्वे स्फिचौ अनुव्यञ्जनद्वयम् बो.भू.193ख/260.

སྣམ་ལོགས། ०སུ पृष्ठतः – བཅོམ་ལྡན་འདས་ཀྱི་སྣམ་ལོགས་སུ་ཁྲུས་བགྱིས་ནས भगवतः पृष्ठतः स्नात्वा सु.प्र.29क/56.

སྣམས། ०པ *> བསྣམས་པ། སྣོམ་པ།

སྣའི་སྐྱེ་མཆེད *पा.* घ्राणायतनम्, आयतनभेदः – སྐྱེ་མཆེད་ནི་བཅུ་གཉིས་ཏེ། མིག་གི་སྐྱེ་མཆེད་དང་...སྣའི་སྐྱེ་མཆེད་དང་...ཆོས་ཀྱི་སྐྱེ་མཆེད་དེ द्वादशायतनानि–चक्षुरायतनं... घ्राणायतनं... धर्मायतनं च श्रा.भू.92ख/246.

སྣའི་ཁམས *पा.* घ्राणधातुः, धातुभेदः – ཁམས་ནི་བཅོ་བརྒྱད་དེ། མིག་གི་ཁམས་དང་...སྣའི་ཁམས་དང་...ཡིད་ཀྱི་རྣམ་པར་ཤེས་པའི་ཁམས་ཏེ अष्टादश धातवः–चक्षुर्धातुः... घ्राणधातुः... मनोविज्ञानधातुः श्रा.भू.92क/245.

སྣའི་ཚོ་ག *पा.* नासाकर्म – ནད་དེ་དག་ཐམས་ཅད་ཞི་བར་བྱ་བ་ཡང་ཤེས་ཏེ...སྣའི་ཚོ་ག་དང་ཞ་ར་དང་དུགས་དང་...རབ་ཏུ་ཤེས तेषां च सर्वव्याधीनां प्रशमं प्रजानामि...नासाकर्म कर्षुपरिणाहं...प्रजानामि ग.व्यू.20क/117.

སྣའི་དྲི་མ नासिकामलम् – རྣ་བའི་དྲི་མ་དང་སྣའི་དྲི་མ་དང... མཆན་ཁུང་གི་དྲི་མ་སྟེ... དམ་ཚིག་བརྒྱད་ནི་ལྷ་མིན་མོ་རྣམས་ཀྱི कर्णमलं नासिकामलम्...कक्षमलम्...इति समयाष्टकमासुरीणाम् वि.प्र.170क/3.161.

སྣའི་འདུས་ཏེ་རེག་པ་ལས་བྱུང་བའི་ཚོར་བ *पा.* घ्राणसंस्पर्शजा वेदना, वेदनाभेदः – དེ་ཡང་དབྱེ་ན་ཚོར་བའི་ཚོགས་དྲུག་སྟེ། མིག་གི་འདུས་ཏེ་རེག་པ་ལས་བྱུང་བའི་ཚོར་བ་ནས་ཡིད་ཀྱི་འདུས་ཏེ་རེག་པ་ལས་བྱུང་བའི་ཚོར་བའི་བར་རོ། स पुनर्भिद्यमानः षड् वेदनाकायाः चक्षुःसंस्पर्शजा वेदना यावन्मनःसंस्पर्शजा वेदना अभि.भा.33क/48.

སྣའི་རྣམ་པར་ཤེས་པ *पा.* घ्राणविज्ञानम्, विज्ञानभेदः – མིག་གི་རྣམ་པར་ཤེས་པ་དང...སྣའི་རྣམ་པར་ཤེས་པ་དང...ཡིད་ཀྱི་རྣམ་པར་ཤེས་པ་རྣམ་པར་དག་པས་རྣམ་པ་དྲུག་སྟེ चक्षुर्विज्ञानं...घ्राणविज्ञानं...मनोविज्ञानं विशुद्धया षड्विधम् वि.प्र.185क/5.4.

སྣའི་རྣམ་པར་ཤེས་པའི་ཁམས *पा.* घ्राणविज्ञानधातुः, धातुभेदः – ཁམས་ནི་བཅོ་བརྒྱད་དེ། མིག་གི་ཁམས་དང ...སྣའི་རྣམ་པར་ཤེས་པའི་ཁམས་དང...ཡིད་ཀྱི་རྣམ་པར་ཤེས་པའི་ཁམས་ཏེ अष्टादश धातवः–चक्षुर्धातुः ...घ्राणविज्ञानधातुः...मनोविज्ञानधातुः श्रा.भू.97क/245.

སྣའི་བུ་ག नासिकाबिलम् – དེ་ལྟ་མ་ཡིན་ན་མིག་དང་རྣ་བའི་རྟེན་གཅིག་དང་སྣའི་བུ་ག་གཅིག་ཏུ་གྱུར་ན་ཤིན་ཏུ་མི་མཛེས་པར་འགྱུར་རོ། अन्यथा हि एकचक्षुःश्रोत्राधिष्ठानैकनासिकाबिलसम्भवात् महद्वैरूप्यं स्यात् अभि.भा.35क/55; द्र. སྣ་བུག།

སྣའི་བུག = སྣ་བུག།

སྣའི་བུག་པ = སྣ་བུག།

སྣའི་དབང་པོ *पा.* घ्राणेन्द्रियम्, इन्द्रियभेदः – མིག་གི་དབང་པོ་དང་...སྣའི་དབང་པོ་དང་...ལུས་ཀྱི་དབང་པོ च-क्षुरिन्द्रियं...घ्राणेन्द्रियं...कायेन्द्रियं अभि.भा.85क/1199; घ्राणम् – སྣའི་དབང་པོ་རྣོན་པོས་དྲི་ཚོར་ནས पटुना घ्राणेनाघ्राय गन्धम् ल.अ.153ख/101.

སྣའི་རྩེ = སྣའི་རྩེ་མོ།

སྣའི་རྩེ་མོ नासाग्रम् – སྣའི་རྩེ་མོར་གཏད་པ नासाग्रविनिवेशिता बो.प.94ख/59; नासिकाग्रम् – འཇོག་པ་ཞེས་བྱ་བ་ནི་ཇི་སྲིད་བུའི་ཐག་པ་བཞིན་དུ་སྣའི་རྩེ་མོ་ནས་རྐང་པའི་མཐེ་བོང་གི་བར་དུ་གནས་པར་ལྟ་ཞིང स्थापना नाम नासिकाग्रे यावत् पादाङ्गुष्ठे स्थितां पश्यति, मणिसूत्रवत् अभि.भा.11क/900.

སྣའི་རྩེ་མོར་གཏད་པ *वि.* नासाग्रविनिर्निवेशितः – རྫི་མ་གཉིས་ཅུང་ཟད་ཕྱེ་ལ། སྣའི་རྩེ་མོར་གཏད་པའམ་གཉའ་ཤིང་གང་ཙམ་དུ་རྣམ་པར་བལྟ་བར་བྱ་སྟེ ईषन्मुकुलितपक्ष्मयुगला नासाग्रविनिवेशिता युगमात्रव्यवलोकिनी वा कार्या दृष्टिः बो.प.94ख/59.

སྣའི་གཟེངས་མཐོ = སྣའི་གཟེངས་མཐོ་བ།

སྣའི་གཟེངས་མཐོ་བ *वि.* तुङ्गनासः – གཞོན་ནུ་གཟུགས་བཟང་པོ...སྣའི་གཟེངས་མཐོ་བ...སྐྱེས་བུ་ཆེན་པོའི་མཚན་སུམ་ཅུ་རྩ་གཉིས་ཀྱིས་ཀུན་ནས་བརྒྱན་པའི་ལུས་དང་ལྡན་པ་ཞིག་བྱུང་ངོ་།། कुमारो जातः अभिरूपः...तुङ्गनासो द्वात्रिंशता महापुरुषलक्षणैः समलङ्कृतगात्रः वि.व. 170क/1.59.

སྣར་བསྒོས་པ नियुक्तकः म.व्यु.3713 (62क).

སྣར་བླུགས་པའི་སྦྱད नस्तकरणम् – དེ་ནི་སྣར་བླུགས་པའི་སྦྱད་ཀྱིས་འགྲུབ་པོ།། नस्तकरणेनास्य संपत्तिः वि. सू.77क/94.

སྣར་བླུགས་པའི་ལས नस्तकर्म – སྣར་བླུགས་པའི་ལས་བྱའོ།། करणं नस्तकर्मणः वि.सू.77क/94.

སྣར་མ • *ना.* 1. रोहिणी i. नक्षत्रम् – ཐུར་མ་དང་པོ་ལ་སྣར་མའོ།། གཉིས་པ་ལ་མགོའོ།། प्रथमशलाकायां रोहिणी, द्वितीयायां मृगशिरा वि.प्र.236क/2.37; ཟླ་ཉ་ཀུ་སྐར་རྒྱལ་པོ་མཚན་མོ་གསལ་བྱེད་ཀྱེ། །ཁྱོད་ནི་སྣར་མའི་མིག་ཏུ་སྡུག་པ་དེད་དཔོན་བཟང་།། भोः पूर्णचन्द्र रजनीकर तारराज त्वं रोहिणीनयनकान्त सुसार्थवाह । वि.व.215क/1.91; སྨིན་དྲུག་ཤར་བ་ལས་ཀྱང་ནི། །སྣར་མ་ཉེ་བ་ཡིན་པར་རྟོག།། कृत्तिकोदयतश्चापि रोहिण्यासत्तिकल्पना ॥ त.स.52क/509; दाक्षायणी श्री.को.185क ii. राजकुमारी – གྲོང་ཁྱེར་གང་གཱའི་བདག་པོ་ནི། །ས་བདག་ལྷུན་པོ་བཏུལ་ནས་དེའི། །བུ་མོ་སྣར་མ་ཞེས་བྱ་བ། །དེས་ཐོབ་བདུད་རྩིའི་ཟེར་གྱིས་བཞིན།། गङ्गाधिपत्ये नगरे मेरुं जित्वा महीपतिम् । तत्सुतां रोहिणीं नाम स सुधांशुरिवाप्तवान् ॥ अ.क. 277क/103.5 2. रोहिणः, शाक्यः – དེའི་ཚེ་ཤཱཀྱ་རྣམས་ཀྱི་ནང་ན་ཤཱཀྱ་སྣར་མ་ཞེས་བྱ་བ་ཕྱུག་ཅིང...རྣམ་ཐོས་ཀྱི་བུའི་ནོར་དང་འགྲན་པ་ཞིག་གནས་པ शाक्येषु रोहिणो नाम शाक्यः प्रतिवसति आढ्यः...वैश्रवणधनप्रतिस्पर्धी अ.श.195क/180; • *सं.* रोहिणी, नाडीविशेषः – སྙིང་ཁར་བརྒྱད་དེ་ཞེས་པ་ནི་ཙ་སྣར་མ་ལ་སོགས་པ་མཉམ་གནས་པ་ལ་སོགས་པ་རྣམས་ཀྱི་རྟེན་དུ་གྱུར་པ་རྣམས་ཏེ हृदोऽष्टौ नाड्यो रोहिण्यादयः समानादीनामाधारभूताः वि.प्र.245क/2.57.

སྣར་མ་སྐྱེས = སྣར་མའི་བུ།

སྣར་མའི་བདག་པོ = ཟླ་བ रोहिणीपतिः, चन्द्रः श.को. 770.

སྣར་མའི་བུ रौहिणेयः 1. = གཟའ་ལྷག་པ बुधः – रौहिणेयो बुधः सौम्यः अ.को.1.3.26; रोहिण्या अपत्यं पुमान् रौहिणेयः अ.वि.1.3.26 2. = སྟོབས་བཟང बलभद्रः – बलभद्रः प्रलम्बघ्नो बलदेवोऽच्युताग्रजः ॥ ...रौहिणेयः अ.को.1.1.24; रोहिण्या अपत्यं पुमान् रौहिणेयः अ.वि.1.1.24.

སྣར་མའི་མིག་ཏུ་སྡུག་པ = ཟླ་བ रोहिणीनयनकान्तः, चन्द्रः – ཟླ་ཉ་རྒྱུ་སྐར་རྒྱལ་པོ་མཚན་མོ་གསལ་བྱེད་ཀྱི། །ཁྱོད་ནི་སྣར་མའི་མིག་ཏུ་སྡུག་པ་དེད་དཔོན་བཟང་॥ भोः पूर्णचन्द्र रजनीकर ताराराज त्वं रोहिणीनयनकान्त सुसार्थवाह। वि.व.215[क]/1.91.

སྣལ = སྣལ་མ།

སྣལ་སྐུད सूत्रतन्तुः मि.को.27[क]।

སྣལ་མ तन्तुः – སྣལ་མ་ནག་པོ་དག་ལས་བྱས་པའི་སྣམ་བུ་ནི་ནག་པོ་དང་། དཀར་པོ་ལས་བྱས་པ་ནི་དཀར་པོ་ཡིན་ནོ॥ कृष्णैस्तन्तुभिरारब्धः पटः कृष्णो भवति, शुक्लैस्तु शुक्लः त.प.147[ख]/21; མངོན་སུམ་གྱི་བློ་ལ་སྣལ་མ་ལ་སོགས་པ་འདུ་བ་དེ་ལས་ཐ་དད་པའི་གོས་ལ་སོགས་པའི་རང་བཞིན་སྣང་བ་ཡང་མ་ཡིན་ལ नाप्यध्यक्षचेतसि तन्त्वादिसमवेतं तद्व्यतिरेकि वस्त्रादिरूपमाभासते त.प.269[क]/254; སྣལ་མ་དེ་རྣམས་ཀྱིས་སྣམ་བུ། །འདི་ཞེས་སྣལ་མ་འདུས་བྱས་ལས། །ཕྱིས་འབྱུང་འབྲས་བུར་བརྗོད་ཡིན་གྱི॥ तैस्तन्तुभिरियं शाटीत्युत्तरं कार्यमुच्यते। तन्तुसंस्कारसम्भूतम् प्र.वा.124[क]/2.151; सूत्रम् – སྣལ་མ་འདི་དག་གིས་རས་ཡུག་ཆེན་བཏགས་སོ་ཞེས་བྱ་བ་ནི་མཐོང་བ་མ་ཡིན་ནོ॥ न ह्यस्य सूत्रस्य शाटकं वयेति दृश्यते प्र.अ.205[क]/562; अंशुः – སྣལ་མ་རྣམས་ལ་བ་ཐག་བཞིན། །ཆུ་ལ་ཆུ་ཤེལ་ཇི་བཞིན་དང་॥ ऊर्णनाभ इवांशूनां चन्द्रकान्त इवाम्भसाम्। त.प.190[क]/96.

སྣལ་མའི་ལྷག་མ *वि.* तन्तुशेषः – ཐག་མཚུངས་སྣལ་མའི་ལྷག་མ་ཡང་། །སེམས་ཅན་བདག་གིས་ལམ་དུ་མཐོང་॥ रज्ज्वाभास्तन्तुशेषाश्च दृष्टाः सत्त्वा मया पथि। अ.क.140[क]/67.65; ཁྲི་སོགས་གཏུན་ནི་དྲག་པ་དང་། །སྣལ་མའི་ལྷག་དང་རྣམ་གཉིས་གྱུར། །...སེམས་ཅན ख‍ट्वाद्युलूखलस्थूलांस्तन्तुशेषान् द्विधागतान्। सत्त्वान् अ.क.137[ख]/67.37.

སྣས་རྣམ་པར་ཤེས་པར་བྱ་བ *वि.* घ्राणविज्ञेयः – སྣ་དང་ལྕེ་དང་ལུས་ཀྱིས་རྣམ་པར་ཤེས་པར་བྱ་བ घ्राणजिह्वाकायविज्ञेयम् अभि.भा.84[क]/1196.

སྣས་ཤེས་པར་བྱ = སྣས་ཤེས་པར་བྱ་བ།

སྣས་ཤེས་པར་བྱ་བ *वि.* घ्राणविज्ञेयः – སྣས་ཤེས་པར་བྱ་བའི་དྲི་རྣམས घ्राणविज्ञेया गन्धाः अ.श.103[ख]/93.

སྣུ་ཧ गण्डीरका, स्नूहा – སྣུ་ཧ་ཙི་ཏྲ་ཀྲིཾ་ག་ཨར་ཀ་དང་། །མྱུ་ངན་མེད་སྲུན་ཙུ་ཧ་ཚ་བ་གཅིག། །བཙོས་པའི་མར་ཁུས་ཤུ་བ་མཛེ་གླང་ཤུ། །གདུག་པའི་མ་དང་ཟ་འབྲུམ་སེར་ཁ་འཇོམ་ས॥ गण्डीरकाचित्रकमार्कवार्ककुष्ठद्रुमत्वक्लवणैः समूत्रैः। तैलं पचेत् मण्डलदद्रुकुष्ठे एतत् व्रणारुःकिटिभापहारि॥ यो.श.3[ख]/43.

སྣུན • *क्रि.* (वर्त., विधौ; བསྣུན་པ भवि., भूत.) हन ब.वि. 162[ख]; (द्र. སྣུན་ཅིག); *• *कृ.* ताडयितव्यम् – དེའི་ཚེ་ཁྱོད་ཀྱིས་སྦྲུལ་ཁས་སྔགས་དེའི་གནད་དུ་མདས་སྣུན་ལ तदा त्वयाऽसावाहितुण्डिकः शरेण मर्मणि ताडयितव्यः वि.व.205[क]/1.79; • = སྣུན་པ།

སྣུན་ཅིག *क्रि.* प्रहरतु – སྣུན་ཅིག་ཅེས་ཀྱང་བརྗོད་མཐོང་ནས། །དེ་དག་ཞི་བ་ཐོབ་པར་གྱུར॥ प्रहरेति ब्रुवाणं च दृष्ट्वैव शममाप्तवान्॥ अ.क.284[क]/36.46.

སྣུན་པ प्रहारः – འདི་ལ་སྣུམ་[? སྣུན་]པ་རེ་རེ་ལས་དེ་ཐ་དད་པ་ཡིན་གྱི་དངོས་པོ་ལས་ནི་མ་ཡིན་ནོ༎ प्रतिप्रहारस्यात्र भेदः, न वस्तुतः वि.सू.30ख/38; द्र. བསྣུན་པ།

སྣུན་པར་བྱེད = སྣུན་བྱེད།

སྣུན་བྱེད •क्रि. 1. ताडनं करोति – རྣ་བའི་ཨུཏྤལ་གྱིས་སྣུན་བྱེད༎ करोति... श्रवणोत्पलताडनम् ॥ का.आ.335क/3.21; हन्यते – རླུང་གིས་རླུང་ལ་སྣུན་པར་བྱེད། वातेन हन्यते वातम् हे.त.16क/50 2. आपाययति– མ་ནི་བུ་རྣམས་ལ་ཕན་པ་རྣམ་པ་ལྔ་བྱེད་དེ། ཁོང་ན་འཛིན་པར་བྱེད། སྐྱེད་པར་བྱེད། སྣུན་པར་བྱེད། གསོ་བར་བྱེད། ཀུན་ཏུ་སྐྱེད་པར་བྱེད माता हि पुत्रस्य पञ्चविधमुपकारं करोति–गर्भेण धारयति, जनयति, आपाययति, पोषयति, संवर्धयति सू.व्या.241क/155; • सं. 1. घनम्, मध्यमनृत्यम् मि.को.30क 2. = འཇག་མ तोत्रम्, प्राजनम् मि.को.35क; •वि. प्रहारी, प्रहारकर्ता – མིང་པོ་ཞུ་གྲོ་ཧྲ་བརྟེན་པའི། །གནོད་སྦྱིན་སྟོབས་ཆེན་སྣུན་བྱེད་པ། །དྲུག་ཅུའི་གྲངས་ཀྱི་གྲོང་ཁྱེར་འདི། །སྐྱེ་བོ་མེད་པ་དག་ཏུ་བྱས༎ भ्रातर्निर्जनतां नीतं पुरमेतत्प्रहारिभिः । षष्टिसंख्यैर्महानागैर्यक्षैर्न्यग्रोधसंश्रयैः ॥ अ.क.287क/106.16.

སྣུན་བྱེད་པ = སྣུན་བྱེད།

སྣུམ = སྣུམ་པ།

སྣུམ་ཁུར घृतपूरः – ཞལ་ཟས་ནི་གང་ཞིག་ཞལ་བཀང་ནས་གསོལ་བའོ༎ བཟའ་བ་ནི་གང་ཁམ་དུ་བཅད་ནས་ཏེ་སྣུམ་ཁུར་ལ་སོགས་པའོ༎ भोज्यं यन्मुखमापूर्य भुज्यते । खाद्यं यत् कवलशः छेद्यं घृतपूरादि बो.प.62क/26; अपूपः – ཙ་བ་དང་སྡོང་བུ་དང་འདབ་མ་དང...ཤ་དང་སྣུམ་ཁུར་དང་འོ་མ་དང...ཤ་སྐམ་དག་ནི་མི་རུང་བ་ཉིད་མ་ཡིན་ནོ༎ नाकल्पिकत्वं मूलगण्डपत्र...मांसापूपक्षीर...वल्लूराणाम् वि.सू.79ख/97; पूपिका – དེས་བྱིས་པ་སློང་བ་དག་ལ་བསོད་སྙོམས་ལས་སྣུམ་ཁུར་སྦྱིན་པར་བྱ་ཞིང་རིལ་གྱིས་ནི་མི་སྦྱིན་ནོ༎ दद्यादस्य याचमानेभ्यो बालेभ्यः पिण्डपात्रात् पूपिकामसकलाम् वि.सू.48ख/62.

སྣུམ་གྱི་སྣོད = སྣུམ་སྣོད།

སྣུམ་གྱིས་བསྐུ་བ स्नेहनम् – ས་དང་ཕྱེ་མ་དང་ཆུ་ལ་སོགས་པ་ཉེ་བར་གཞག་པ་དང་ཤིང་བརྟག་པ་དང་དྲིལ་ཕྱིས་དང་སྣུམ་གྱིས་བསྐུ་བ་དང་བཀྲུ་བ་དང་ཕྱགས་པ་དང་ཕྱག་དར་དོར་བ་ལ་སོགས་པའོ༎ मृच्चूर्णपानीयाद्युपस्थापनकाष्ठप्रत्यवेक्षणोद्वर्तनस्नेहनस्नापनसम्मार्जनसंकरच्छोरणादेः वि.सू.6ख/7.

སྣུམ་བརྗོས = སྣུམ་ཚོས चिक्कणम् – चिक्कणं मसृणं स्निग्धम् अ.को.2.9.46; पेषणकाले चिमिति कणति चिक्कणम्। कण शब्दे अ.वि.2.9.46.

སྣུམ་དང་རབ་ཏུ་ལྡན་པ वि. स्निग्धतरम्– དྲི་དང་རབ་ཏུ་ལྡན་པ་དང་སྣུམ་དང་རབ་ཏུ་ལྡན་པ་དང་རོ་ཞིམ་པོར་འགྱུར་བ་དང་བལྟ་ན་རབ་ཏུ་སྡུག་པ་དང་རབ་ཏུ་ཆེ་བར་འགྱུར་རོ༎ गन्धतराणि स्निग्धतराण्यास्वादनीयानि दर्शनीयतराणि महत्तराणि च भविष्यन्ति सु.प्र.33ख/64.

སྣུམ་སྣུམ वि. स्निग्धः – དེ་ན་ཡང་མེ་ཏོག་དང་འབྲས་བུ་དང་ལོ་མས་བརྒྱན་པའི་ཤིང་ལྗོན་པ་སྣུམ་སྣུམ་ལྟར་འདུག་[? སྡུག་]པ་རྣམ་པ་དུ་མས་གང་བ...དཀའ་ཐུབ་ཀྱི་ནགས་ཚལ་དུ तत्र च पुष्पफलपल्लवालंकृतस्निग्धविविधरुचिरतरुवरनिचितं... तपोवनम् जा.मा.53ख

/63.

སྣུམ་སྣོད་ स्नेहपात्रम् – कुतूः कृत्तेः स्नेहपात्रं सैवाल्पा कुतुपः पुमान्। अ.को.2.9.33; गुण्डकः श्री.को.166ख।

སྣུམ་སྣོད་ཆུང་བ་ कुतुपः, स्नेहपात्रविशेषः – कुतूः कृत्तेः स्नेहपात्रं सैवाल्पा कुतुपः पुमान् । अ.को.2.9.33; अल्पा कुतूः कुतुपः अ.वि.2.9.33.

སྣུམ་པ •सं. स्नेहः – ལྕི་བ་ཉིད་དང་གཤེར་བ་ཉིད་དང་སྣུམ་པ་ལ་སོགས་པ་[རྣམས་ནི་གཟུགས་ལ་སོགས་པ་]བཞིན་དུ་དགག་པ་བསྒྲུབ་པར་བྱའོ།། गुरुत्वद्रवत्वस्नेहानां तु रूपादिवत् प्रतिषेधो विधेयः त.प.285क/282; སྣུམ་བཅས་ལྕི་བའི་ལ་དུ་ सस्नेहैर्गुरुभिः...मोदकैः अ.क.145क/68.46; སྣུམ་གོས་ནི་ཆལ་ཁྲུས་སོ།། स्नेहेनोपस्नानेन वि.सू.32क/40; •पा. स्निग्धा, वागाकारभेदः – ཚིག་དེ་ནི་ཀུན་ཤེས་པར་བྱེད་པ་དང་... སྣུམ་པ་དང་ यासौ वागाज्ञापनी...स्निग्धा ल.वि.141क/208; •वि. स्निग्धः – དེར་ནི་ནགས་ཚལ་དག་གི་མཐའ། །སྣུམ་ལྗང་ཀང་འཁྲུང་ལྡན་པ་ན།། तत्र काननपर्यन्ते स्निग्धश्यामलपादपे । अ.क.91ख/64.40; མདོག་སྣུམ་ཚོ་ག་ཤེས་པ་དང་།། स्निग्धच्छाया विधिज्ञा गु.सि.25क/55; सुस्निग्धः – སྨིན་ཚུགས་རིང་དང་འཇམ་པ་དང་། །སྣུམ་དང་སྤུ་ནི་མཉམ་པ་དང་། །ཕྱག་རིང་རྒྱས་དང་ आयतश्लक्ष्णसुस्निग्धसमरोम्नौ भुवौ भुजौ । पीनायतौ अभि.अ.12ख/8.30; आर्द्रः – ཟླ་བའི་འོད་ཟེར་རབ་བསིལ་བས། །རེག་ཅེས་ཡི་གེ་ཐུང་བ་ཉིད། །སཧ་ཀཱ་རའི་ལོ་འདབ་གསར་པ་རྣམས། །སྣུམ་ཞེས་ཡི་གེ་ལྷག་པའོ།། इन्दुपादाः शिशिराः स्पृशन्तीत्यूनवर्णता। सहकारस्य किसलयान्यार्द्राणीत्यधिकाक्षरम्॥ का.आ.340क/3.157; सान्द्रः – གྲིབ་མ་སྣུམ་པའི་ལྗོན་པ་ཆེ།། सान्द्रच्छायो महावृक्षः का.आ.329क/2.206.

སྣུམ་པའི་གཤེར་བ पा. (वैदि.द.) स्नेहः, गुणपदार्थभेदः म.व्यु.4616 (71ख).

སྣུམ་པར་བྱ་བ पा. स्नेहनम् – ནད་དེ་དག་ཐམས་ཅད་ཞི་བར་བྱ་བ་ཡང་ཤེས་ཏེ། འདི་ལྟར་སྣུམ་པར་བྱ་བ་ཡང་རབ་ཏུ་ཤེས་སོ།། तेषां च सर्वव्याधीनां प्रशमं प्रजानामि यदुत स्नेहनं प्रजानामि ग.व्यू.20क/117.

སྣུམ་པར་བྱེད क्रि. स्नेहयति लो.को.1440.

སྣུམ་བག 1. स्नेहः – དགེ་འདུན་ལ་ཡང་སྣུམ་བག་གི་རྙེད་པའོ།། स्नेहलाभश्च सङ्घे वि.सू.58ख/75 2. वसा, मेदः – मेदस्तु वपा वसा अ.को.2.6.64; वासयति मांसं स्नेहयति वसा। वस निवासे। वस स्नेहमोहच्छेदापहरणेषु अ.वि.2.6.64.

སྣུམ་བག་ཅན वि. स्निग्धः – བུམ་པ་ལ་སོགས་པ་སྣུམ་བག་ཅན་དག་སྣུམ་མེད་པར་བྱ་བའི་ཕྱིར་ཆུའི་ཏིང་བུ་ཟབ་མོའི་ནང་དུ་གཞུག་གོ།། निःस्नेहतायै स्निग्धस्य च घटादेर्गम्भीरोदके ह्रदे निधानम् वि.सू.36ख/46.

སྣུམ་བག་མེད = སྣུམ་བག་མེད་པ།

སྣུམ་བག་མེད་པ वि. रूक्षिका – ཟན་དྲོན་ལན་ཚྭ་དག་གིས་མ་བཏབ་ཅིང་། །སྣུམ་བག་མེད་པ रूक्षिकाया अलवणिकायाः कुल्माषपिण्डिकायाः वि.व.166ख/1.55.

སྣུམ་མེད་པ निःस्नेहता – བུམ་པ་ལ་སོགས་པ་སྣུམ་བག་ཅན་དག་སྣུམ་མེད་པར་བྱ་བའི་ཕྱིར་ཆུའི་ཏིང་བུ་ཟབ་མོའི་ནང་དུ་གཞུག་གོ།། निःस्नेहतायै स्निग्धस्य च घटादेर्गम्भीरोदके ह्रदे निधानम् वि.सू.36ख/46.

སྣུམ་མེད་པ་ཉིད निःस्नेहता – བསྲེགས་པས་ཀྱང་སྣུམ་མེད་པ་ཉིད་དུ་འགྱུར་རོ།། दाहतोऽपि निःस्नेहतापत्तिः

वि.सू.36ख/46.

སྣུམ་མེད་པར་གྱུར་པ *वि.* निःस्नेहितः – སྣུམ་མེད་པར་གྱུར་པ་ནི་བཀྲུ་བས་སོ། འདག་རྫས་སམ་ལྕི་བས་འདག་པ་ཉིད་དོ། निर्मादने निःस्नेहितस्योषाटुकेन गोमयेन वा शुद्धत्वम् वि.सू.36ख/46.

སྣུམ་ཚོས *वि.* मसृणम् – चिक्कणं मसृणं स्निग्धम् अ.को.2.9.46; मस्यति द्रवत्वेन परिणमति मसृणम् । मसी परिणामे अ.वि.2.9.46.

སྣུམ་འཛིན་པ = དུ་ལ་མ ऋजीषम्, पिष्टपचनम्–ऋजीषं पिष्टपचनम् अ.को.2.9.32; अर्जयत्यपूपादिकमिति ऋजीषम् । अर्ज अर्जने अ.वि.2.9.32.

སྣེའུ वास्तूकम्, शाकभेदः – वास्तूकं शाकभेदाः स्युः अ.को.2.4.158; वसन्त्यत्र त्रिदोषघ्नगुणा इति वास्तूकम् । वस निवासे अ.वि.2.4.158.

སྣོད 1. = སྣོད་སྤྱད पात्रम् – སློང་མོ་སྤྱོད་པར་བྱ་བའི་ཕྱིར། །བརྟུལ་ཞུགས་ཅན་གྱིས་སྣོད་མི་གཟུང་། भैक्ष्यपर्यटनार्थाय न पात्रं संग्रहेद् व्रती । गु.सि,20क/42; དེའི་སྣོད་ནི་གླང་པོ་ཆེའི་རྨིག་མཐིལ་ལྟ་བུ पात्रमस्य हस्तिपदबुध्नम् वि.सू.7क/7; དམ་པའི་སྣོད། །བདུད་རྩི་དག་གིས་ཡོངས་སུ་བཀང་། सत्पात्रं सुधया समपूरयत् अ.क.158क/17.9; भाजनम् – ཆུའི་སྣོད जलभाजनम् अ.क.260क/94.12; ཏིལ་གྱི་ཚིགས་མ་དང་...ཁར་བའི་སྣོད་རྣམས་ཀྱང་ཡོངས་སུ་སྤང་བར་བྱའོ། पिण्याक...कांस्यभाजनानि च वर्जयेत् म.मू.222ख/242; དུག་དང་བཅས་པའི་སྣོད་ལྟར་འགྱུར་བའི་སྡུག་བསྔལ་ཅན सविषभाजनमिव परिणामदुःखा ल.वि.106क/153; चषकः, °कम् – དཔེར་ན་བུ་ག་དང་བཅས་པའི་སྣོད་སྟེང་བཀག་ན་ཆུ་མི་འཛག་པ་བཞིན་དུ་རྡུལ་ཕྲ་རབ་འདུས་པ་ཡང་ཡིན་ནོ། यथा चा[? स]च्छिद्रचषके न जलच्युतिरुपरि पिधाने । तथा परमाणुसंहतावपि प्र.अ.86ख/94; स्थाली – བླངས་ནས་ཤེལ་གྱི་སྣོད་དུ་ནི། །དགེ་བའི་འོ་ཐུག་བརྟུལ་ཞུགས་མཐར། गृहीत्वा स्फटिकस्थाल्या व्रतान्ते पायसं शुभम् ॥ अ.क.225क/25.7; स्थालकम् – ལག་པ་ཟས་དང་འབགས་པས་ཆུ་སྣོད་ལ་མི་གཟུང न सामिषेण पाणिनोदकस्थालकं ग्रहिष्यामः म.व्यु.8592 (119क); कटाहकम् – མཆིལ་མའི་སྣོད श्लेष्मकटाहकम् म.व्यु.9019 (124ख), घटिका – བདུག་སྤོས་ཀྱི་སྣོད་དངུལ་ལས་བྱས་པ་བཞི चतस्रश्च धूपघटिका रूप्यमय्यः अ.सा.442ख/249; कुम्भी – སྣོད་དེར་སེམས་ཅན་བྱེ་བ་ཁྲག་ཁྲིག་བརྒྱ་སྟོང་ཕྲག་དུ་མ་སྐྱུལ་ཏོ། तस्यामेव कुम्भ्यामनेकानि सत्त्वकोटीनियुतशतसहस्राणि प्रक्षिप्तानि का.व्यू.204क/261; पात्री – མཁར་བའི་སྣོད་བཞིན་སྒྲ་ལྡན་ཞིང་། रणन्ती कांस्यपात्रीव अ.क.226ख/25.30; पुटिका – དེ་བཞིན་དུ་སྒྲུགས་རྣམས་ནི་ཤར་དུ་ཉ་ཕྱིས་ཀྱི་སྣོད तथा करोटकानि पूर्वे शुक्तिपुटिका वि.प्र.162ख/3.126; भाण्डम् – ཆུར་རྡུལ་ཚོན་གྱི་སྣོད रजोभाण्डानि वरुणे वि.प्र.108ख/3.32; བ་དམར་སེར་གྱི་མར་སྣོད་སར་པར་བཅུག་ལ कपिलागोघृतं नवे भाण्डे स्थाप्य स.दु.116क/194; བུམ་པ་དང་ཧྱེའུ་དང་ཁམ་ཕོར་ལ་སོགས་པ་ཁམ་པའི་སྣོད घटघटीशरावादि च मृन्मयं भाण्डम् बो.भू.42ख/55; करण्डकः – རིན་ཆེན་སྣོད་ཉིད་དུ...རྣམ་པར་གཞག स्थापितं...रत्नकरण्डके गु.सि.3ख/8; द्र. མེ་ཏོག་སྣོད करण्डम् गु.सि.24ख/53; पेटा – རིན་པོ་ཆེའི་སྣོད་ཕྱེ་བ་ནི་དེའི་དཔེའོ། विवृता रत्नपेटा तदौपम्यम् सू.व्या.152ख/37; पिटकः पेटकः पेटा मञ्जुषा अ.को.2.10.29; पेटति महत्त्वं प्राप्नोतीति पिटकः । पिट महत्त्वे । पेटकश्च पेटा च

अ.वि.2.10.29; प्रसेविका – སྣོད་དུའོ॥ प्रसेविकायाः वि.सू.13[क]/14; स्थविकः – ལྷུང་བཟེད་ཀྱི་སྣོད पात्रस्थविकः म.व्यु.8951 (124[क]); स्थविका – རས་མ སྣོད कोलाहल[? कौशेय]स्थविका म.व्यु.9004 (124[ख]); पोणिकः – ལྷུང་བཟེད་ཀྱི་སྣོད पात्रपोणिकः म.व्यु.8950 (124[क]); भाण्डिका – ཆོས་གོས་ཀྱི་སྣོད चीवरभाण्डिका म.व्यु.9378 (129[क]); (द्र.– ཆུ་སྣོད ཆག་པའི་སྣྲ་དང་ལྡན स्फुटितवारिधानीघटम् अ.क. 177[क]/79.16;) 2. भाजनम् – དེ་ལ་སྣོད་ཀྱི་འཇིག་རྟེན་གྱི། །གནས་པར་འདོད་པའི་འོག་དག་གི॥ तत्र भाजनलोकस्य सन्निवेशमुशन्त्यधः। अभि.को.8[ख]/506; स्थानम् – དེ་ནི་སྣོད་ཀྱིས་སྣོད་ན་གནས་པ་བསྟན་པ་ཡིན་ནོ་ཞེས་བྱ་བ་ནི་སྣོད་ཀྱིས་སྣོད་ཅན་སེམས་ཅན་གྱི་འཇིག་རྟེན་བསྟན་ཏོ་ཞེས་བྱ་བའི་ཐ་ཚིག་གོ॥ तद्भाजनेन भाजनगतं दर्शितमिति स्थानेन स्थानीयसत्त्वलोको दर्शित इत्यर्थः अभि.स्फु.305[क]/1172; आशयः – གང་ཕྱིར་གདུལ་བྱ་དག་པ་ཡི། །ཆུ་ཡི་སྣོད་ནི་ཐམས་ཅད་ལ॥ यतः शुचिनि सर्वत्र विनेयसलिलाशये। र.वि.125[ख]/108 3. पात्रम् – ཚུལ་ཁྲིམས་དག་ཕྱིར་སྣོད་ཀྱི་མཆོག། །ཞིང་གཤིན་འབྲས་བུ་ཕུན་སུམ་ཚོགས॥ सत्पात्रं शुद्धवृत्तत्वात् सत्क्षेत्रं फलसम्पदा। श.बु. 114[क]/99; भाजनम् – དེ་ནི་ངན་འགྲོ་ཀུན་སྣོད་དུ། །དཔལ་ལྡན་རྡོ་རྗེ་མགོན་པོས་གསུངས॥ उक्ता श्रीवज्रनाथेन सर्वे तेऽपायभाजनाः॥ प्र.सि.30[ख]/72 4. = སྣོད་ཉིད भाजनता – དྲན་པའི་སྣོད་ཚད་མེད་པ་དང अप्रमाणस्मृतिभाजनतया च द.भू.169[ख]/3; भाजनत्वम् – སངས་རྒྱས་བསྙེན་དང་ཀུན་འདྲི་དང་། །སྦྱིན་དང་ཚུལ་ཁྲིམས་སོགས་སྤྱོད་པས། །ལེན་དང་འཛིན་ལ་སོགས་པ་ཡི། །སྣོད་དུ་དམ་པ་རྣམས་བཞེད་དོ॥ बुद्धोपासनसम्प्रश्नदानशीलादिचर्यया। उद्ग्रहधारणादीनां भाजनत्वं सतां मतम् अभि.अ.7[क]/4.7.

སྣོད་དང་འདྲ भाजनवत् – གཟུགས་ལ་བདག་གནས་ཏེ་སྣོད་དང་འདྲ रूपे आत्मा भाजनवत् म.व्यु.4688 (73[क]).

སྣོད་ཀྱི་མཆོག सत्पात्रम् – ཚུལ་ཁྲིམས་དག་ཕྱིར་སྣོད་ཀྱི་མཆོག། །ཞིང་གཤིན་འབྲས་བུ་ཕུན་སུམ་ཚོགས॥ सत्पात्रं शुद्धवृत्तत्वात् सत्क्षेत्रं फलसम्पदा। श.बु.114[क]/99.

སྣོད་ཀྱི་འཇིག་རྟེན भाजनलोकः, स्थावरलोकः – དེ་ལ་སྣོད་ཀྱི་འཇིག་རྟེན་གྱི། །གནས་པར་འདོད་པའི་འོག་དག་གི॥ तत्र भाजनलोकस्य सन्निवेशमुशन्त्यधः। अभि.को.8[ख]/506; གནས་ཀྱི་རྣམ་པར་རིག་པ་ནི་སྣོད་ཀྱི་འཇིག་རྟེན་གནས་པར་རྣམ་པར་རིག་པ་སྟེ स्थानविज्ञप्तिर्भाजनलोकसन्निवेशविज्ञप्तिः त्रि.भा.150[ख]/38.

སྣོད་ཀྱི་རྗེ ना. पात्रस्वामी, आचार्यः – གཞན་དུ་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པས་སྣོད་ཀྱི་རྗེའི་ལུགས་ཀྱི་དོགས་པ་བསུ་བ་ཡིན་ཏེ अन्यथेत्यादिना पात्रस्वामिमतमाशङ्कते त.प. 24[ख]/495.

སྣོད་ཁ་སྦྱོར་ཅན = སྲ་མཁན भाण्डिपुटकः, नापितः मि. को.26[ख]।

སྣོད་སྒྱུར = སྣོད་དུ་སྒྱུར་བ།

སྣོད་སྒྱུར་བ = སྣོད་དུ་སྒྱུར་བ།

སྣོད་ཁྱོ་རལ खण्डमल्लकः – དེས་བླངས་པའི་འབྲུ་མར་ཅུང་ཟད་སྣོད་ཁྱོ་རལ་གྱི་ནང་དུ་བླུགས་ཏེ तया खण्डमल्लकेन तैलस्य स्तोकं याचित्वा वि.व.168[क]/1.57.

སྣོད་འགྱུར་དངོས་པོ भाजनीभावः – དང་པོས་སྣོད་འགྱུར་དངོས་པོ་སྟེ། །གཉིས་པ་ཡིས་ནི་མོས་པ་ཡིན། आद्येन भाजनीभावो द्वितीयेनाधिमुच्यना । सू.अ. 210क/113.

སྣོད་ཅན *वि.* स्थानीयः – དེ་ནི་སྣོད་ཀྱིས་སྣོད་ན་གནས་པ་བསྟན་པ་ཡིན་ནོ་ཞེས་བྱ་བ་ནི་སྣོད་ཀྱིས་སྣོད་ཅན་སེམས་ཅན་གྱི་འཇིག་རྟེན་བསྟན་ཏོ་ཞེས་བྱ་བའི་ཐ་ཚིག་གོ། तद्भाजनेन भाजनगतं दर्शितमिति स्थानेन स्थानीयसत्त्वलोको दर्शित इत्यर्थः अभि.स्फु.305क/1172.

སྣོད་ཆག་པ भिन्नभाजनम् – སྣོད་ཆག་པ་བཞིན་དུ་འགྱུར། གཅིག་ལ་གཅིག་འཕྲུལ་པ་ཚོལ་བ་དང भिन्नभाजनीभूता भविष्यन्ति अन्योऽन्यस्खलितगवेषिणः रा.प.242क/140.

སྣོད་ཆེན་པོ पात्री – དགེ་སློང་དག་དེ་ནས་གྲོང་པའི་བུ་མོ་ལེགས་སྐྱེས་མས་འོ་ཐུག་སྦྲང་རྩི་ཅན་གྱིས་གསེར་གྱི་སྣོད་ཆེན་པོ་བཀང་སྟེ་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་ལ་ཕུལ་ལོ། अथ खलु भिक्षवः सुजाता ग्रामिकदुहिता सुवर्णमयीं पात्रीं मधुपायसपूर्णां बोधिसत्त्वस्योपनामयति स्म ल.वि. 132ख/196.

སྣོད་ཆེན་པོའི་དུས་སྟོན पात्रीमहः, पर्वविशेषः – དེང་སང་དུའང་སུམ་ཅུ་རྩ་གསུམ་པའི་ལྷ་རྣམས་ལོ་གཅིག་བཞིན་དུ་སྣོད་ཆེན་པོའི་དུས་སྟོན་བྱེད་དོ། अद्यापि च त्रायस्त्रिंशेषु देवेषु प्रतिसंवत्सरं पात्रीमहो वर्तते ल. वि.133क/196.

སྣོད་སྙིང་ཕྱིར་པ <?> फुफ्फुसः म.व्यु.9446 (129ख).

སྣོད་དུ་གྱུར = སྣོད་དུ་གྱུར་པ།

སྣོད་དུ་གྱུར་པ • *सं.* पात्रम् – རྒྱ་ཆེན་ཆོས་ཀྱི་སྣོད་གྱུར་པ། །དམན་པའི་ཆོས་ལ་སྦྱར་མི་བྱ། नोदारधर्मपात्रं च हीने धर्मे नियोजयेत् । बो.अ.13ख/5.90; •*पा.* भाजनत्वम्, फलभेदः – འབྲས་བུ་རྣམ་པ་ལྔ་སྟེ། སྣོད་དུ་གྱུར་པ་དང་སྟོབས་དང་འདོད་པ་དང་འཕེལ་བ་དང་རྣམ་པར་དག་པའོ། पञ्चविधं फलम्–भाजनत्वम्, बलम्, रुचिः, वृद्धिः, विशुद्धिश्च म.टी.283ख/145; • *वि.* पात्रभूतः – ལྟ་བ་དྲང་པོར་གྱུར་ནས་ཆོས་སྒྲུབ་ནུས་པའི་སྣོད་དུ་གྱུར་པར་མཐོང་ནས ऋजुभूतदृष्टिं धर्मप्रतिपत्तिपात्रभूतमवेक्ष्य जा.मा.178क/207; བདག་ཅག་གིས་བཅོམ་ལྡན་འདས་ཀྱི་ཉན་ཐོས་སྣོད་དུ་གྱུར་པ་དང་སྣོད་དུ་མ་གྱུར་པ་རྣམས་ལ་བརྡེགས वयं भगवतः श्रावकानपात्रभूतान् पात्रभूतांश्च प्रहरितवन्तः शि. स.44क/42; पात्रीभूतः – དེ་ལྟར་སྣོད་དུ་གྱུར་པ་དེ་ཇི་ལྟར་ན་བསྒོམ་པ་དེ་ལ་འཇུག་པ་ཡིན་ཞེ་ན तस्य त्वेवं पात्रीभूतस्य कथं तस्यां भावनायामवतारो भवति अभि.भा.9क/894; भाजनभूतः – དེ་བཞིན་གཤེགས་པའི་སྐུ་འདི་དག་ནི། ཐམས་ཅད་མཁྱེན་པའི་ཡེ་ཤེས་ཀྱི་སྣོད་དུ་གྱུར་པ་ལགས་སོ། सर्वज्ञज्ञानस्येमानि तथागतशरीराणि भाजनभूतान्यभूवनिति अ.सा.88क/50; भाजनीभूतः – ཏིང་ངེ་འཛིན་དང་གཟུངས་དང་བཟོད་པའི་ས་རྣམས་ཀྱི་སྣོད་དུ་གྱུར་པ समाधिधारणीक्षान्तिभूमिषु भाजनीभूताः शि.स.42क/39; भव्यः – རྒྱ་མཚོའི་ཆུ་རྦུང་[? ཆུར་བྱིང་]གྱུར་ཅིང་བསྐལ་པའི་མེས་གདུངས་ཀྱང་། །གལ་ཏེ་སྣོད་གྱུར་སེམས་ཅན་དེ་དག་འདི་ལ་ཉན། <?> सागरजले निमग्नाः कल्पोद्दाहेषु प्रक्षिप्ताः । भव्यास्ते धर्मपर्यायमिमं श्रोतुमसंदिग्धाः ॥ द.भू.173ख/6.

སྣོད་དུ་གྱུར་པར་མཛད་པ *भू.का.कृ.* भाजनीभूतः कृतः – སངས་རྒྱས་བཅོམ་ལྡན་འདས་ཀྱིས་གདུལ་བྱའི་སྐྱེ་བོ་ཚད་མེད་པ་རྣམས་སྣོད་དུ་གྱུར་པར་མཛད་པའོ། बुद्धेन

भगवताऽप्रमाणा विनेयजना भाजनीभूताः कृताः स.दु.97ख/122.

སྣོད་དུ་འགྱུར་བ *वि.* भव्यः – སྒྲུབ་པའི་སྣོད་དུ་ངེས་པར་འགྱུར།། भव्यास्ते खलु साधने गु.सि.19क/39.

སྣོད་དུ་བྱ = སྣོད་དུ་བྱ་བ།

སྣོད་དུ་བྱ་བ། °འི་ཕྱིར भाजनत्वाय – སེམས་ཅན་སྣོད་དུ་བྱ་བའི་ཕྱིར། དོན་གང་གི་ཆེད་དུ་སེམས་ཅན་སྣོད་དུ་བྱ་ཞེ་ན सत्त्वानां भाजनत्वाय। कस्मिन्नर्थे भाजनत्वाय सू.व्या.223ख/132.

སྣོད་དུ་བྱས *भू.का.कृ.* पात्रीकृतः – ལྕགས་དེ་ཉིད་སྣོད་དུ་བྱས་ན་ཆེར་ཡང་བཅོས་ལེགས་བྱས་པའི་ཡོན་ཏན་གྱིས་ཆུའི་སྟེང་དུ་འཕྱོ་ཞིང་འབྱིང་བར་མི་འགྱུར་རོ།། तदेव पुनर्लोहं पात्रीकृतं सन्महज्जातमुदके प्लवते तरति, तदभिसंस्कारगुणात् अभि.स्फु.187क/944.

སྣོད་དུ་བྱས་པ = སྣོད་དུ་བྱས།

སྣོད་དུ་མ་གྱུར་པ *वि.* अभाजनीभूतः – སེམས་ཅན་སྣོད་དུ་མ་གྱུར་པ་རྣམས་ལ་སངས་རྒྱས་ཀྱི་ཆོས་རྒྱ་ཆེན་པོ་སྟོན་པ अभाजनीभूतेषु सत्त्वेषूदारबुद्धधर्मसंप्रकाशनात् शि.स.36क/34; बो.प.104क/73.

སྣོད་དུ་མ་གྱུར་པའི་སེམས་ཅན अभाजनभूतसत्त्वः मि.को.127ख।

སྣོད་དུ་མ་བྱས *भू.का.कृ.* अपात्रीकृतः – དེ་བཞིན་དུ་མི་མཁས་པ་ནི་ཡོན་ཏན་རྣམས་ཀྱིས་སྣོད་དུ་མ་བྱས་པའི་ཕྱིར་འབྱིང་བར་འགྱུར་གྱི एवमबुधो गुणैरपात्रीकृतत्वान्मज्जति अभि.स्फु.187क/944.

སྣོད་དུ་རུང = སྣོད་དུ་རུང་བ།

སྣོད་དུ་རུང་བ *वि.* भाजनभूतः – ལྷ་དང་མི་རྣམས་ཀྱི་ནང་དུ་གང་དུ་བདེན་པ་རྣམས་ཀྱི་སྣོད་དུ་རུང་བར་འགྱུར་བ་དེར་ཉིད་མཚམས་འཛིན་པར་འགྱུར་རོ།། देवमनुष्येषु प्रतिसन्धिं गृह्णन्ति, यत्र सत्यानां भाजनभूता भवन्ति अ.श.3ख/2.

སྣོད་དུ་རུང་བར་འགྱུར *क्रि.* भाजनीभवति – ཟང་ཟིང་གི་སྦྱིན་པས་ནི་སྣོད་དུ་རུང་བར་འགྱུར་ཏེ། ཆོས་ཉན་དུ་བཏུབ་པར་བྱེད་པའི་ཕྱིར་རོ།། आमिषदानेन भाजनीभवति धर्मस्य विधेयतापत्तेः सू.व्या.210क/113.

སྣོད་དོང་བུ नालिका – མིག་སྨན་སྣོད་དོང་བུ भेषज्याञ्जननालिका म.व्यु.9014 (124ख).

སྣོད་དྲི་ཞིམ *ना.* स्थालीसुगन्धः, सूपकारपुत्रः – ཁོ་བོ་གཡོས་མཁན་གྱི་བུ་ཡིན་ནོ།། ཁྱོད་ཀྱི་མིང་ཅི་ཡིན། སྣོད་དྲི་ཞིམ་ཞེས་བྱའོ།། अहं सूपकारपुत्रः। किं नामा त्वम् ? स्थालीसुगन्धो नाम वि.व.190ख/1.65.

སྣོད་པོ་ཆེ = ཆུ་སྣོད་ཆེན་པོ अलिञ्जरः, महाकुम्भः – अलिञ्जरः स्यान्मणिकः अ.को.2.9.31; अलं शीघ्रं जीर्यते अलिञ्जरः। जृष् झृष् वयोहानौ अ.वि.2.9.31; मि.को.38क।

སྣོད་སྤྱད भाण्डम् – ལྕགས་ལས་བྱས་པའི་སྣོད་སྤྱད अयोभाण्डम् वि.सू.72ख/89; སྣོད་སྤྱད་ཐམས་ཅད་ལ་ཆོ་ག་དེ་བཞིན་ནོ།། सर्वत्रैष भाण्डे विधिः वि.सू.6ख/7; भाण्डिका – སྣོད་སྤྱད་བླང་བར་བྱའོ།། भाण्डिका[ss]दानम् वि.सू.17ख/20; भाण्डोपस्करः – ས་ལ་ཇི་ལྟ་བ་བཞིན་དུ་མེ་དང...སྣོད་སྤྱད་དང...ཁྱིམ་གྱི་དངོས་པོ་དང यथा पृथिव्यामेवमग्नौ...भाण्डोपस्करे...गृहवस्तुनि बो.भू.20ख/25; कटाहकः – མཆིལ་མའི་སྣོད་གཞག་པར་བྱའོ།། स्थापयेत् खेटकटाहकम् वि.सू.59ख/75; भाजनम् – पात्रामत्रं च भाजनम् अ.को.2.9.33;

भज्यते भोक्तृणेति भाजनम्। भज सेवायाम् अ.वि. 2.9.33.

སྣོད་སྤྱད་ཀྱི་དངོས་པོ भाण्डोपस्करः – དེ་བཞིན་དུ་སྣོད་སྤྱད་ཀྱི་དངོས་པོ་རྣམས་ཀྱང་ལ་ལ་ནི་བྱི་དོར་མ་བྱས་པར་སྣང་ལ། ལ་ལ་ནི་བྱི་དོར་བྱས་པར་སྣང་བ་དང་། ལ་ལ་ནི་བརྙིང་པར་སྣང་ལ། ལ་ལ་ནི་ཆག་པར་སྣང་བ་དང་ भाण्डोपस्का[? स्क]राणामनभिसंस्काराभिसंस्कारसारभग्नतां पश्यति श्रा.भू.184क/484.

སྣོད་སྤྱད་འགེད་པ = སྣོད་སྤྱད་འགྱེད་པ།

སྣོད་སྤྱད་འགྱེད་པ भाण्डभाजकः म.व्यु.9063(125क).

སྣོད་སྤྱད་འགྲུབ་པ *> སྣོད་སྤྱད་འབྲུབ་པ།

སྣོད་སྤྱད་འདྲུབ་པ *> སྣོད་སྤྱད་འབྲུབ་པ།

སྣོད་སྤྱད་འབྲུབ་པ भाण्डगोपकः – དགེ་འདུན་གྱི་དེར་གཏོགས་པ་ནི་སྣོད་སྤྱད་འབྲུབ་པའི་ལས་ཡིན་ནོ།། भाण्डगोपकस्य तद्गतः साङ्घिके व्यापारः वि.सू.39ख/49; སྣོད་སྤྱད་འགྲུབ་[? འབྲུབ་]པས་རྙེད་པ་འགྲུབ་[? འབྲུབ་]པར་བྱའོ།། भाण्डगोपकेन लाभस्य गोपनम् वि.सू. 72क/89.

སྣོད་མ་ཡིན་པ *वि.* अपात्रम् – དེ་ལྟ་བས་ན་འདི་དག་ཕན་གདགས་པར་བྱ་བའི་སྣོད་མ་ཡིན་པར་ཟུང་ཞིག [? ཟུངས་ཤིག] इत्थं चैष चिकित्साप्रयोगस्यापात्रमिति गृह्यताम् जा.मा.34ख/40; अभाजनम् लो.को.1441.

སྣོད་མིན = སྣོད་མ་ཡིན་པ།

སྣོད་གཙང शुचिभाजनम्–ཕན་པར་འདོད་ཅིང་ཡོན་ཏན་དགའ་བ་ཡི། །སྐྱེ་བོ་སྣོད་གཙང་འདྲ་ལ་སློས་ཅི་དགོས།། क एव वादः शुचिभाजनोपमे हितार्थिनि प्रेमगुणोत्सुके जने॥ जा.मा.129क/149.

སྣོད་བཟང་པོ *वि.* सत्पात्रः, सुपात्रः – བདག་གི་སྒོ་ན་ངེས་པར་སྣོད་བཟང་པོ་ཞིག་འདུག་གོ།། अवश्यमयं स सत्पात्रो द्वारे स्थितः का.व्यू.219क/280.

སྣོད་སོ་མ་བཏང་བ आमभाजनम् – འདོད་པ་འདི་དག་ནི་མི་རྟག་པ...སྣོད་སོ་མ་བཏང་བ་ལྟར་མཐར་འཇིག་པ अनित्याः खल्वेते कामाः...आमभाजनवद्भेदनात्मकाः ल.वि.106क/153.

སྣོན་པར་བྱེད = སྣོན་པར་བྱེད་པ།

སྣོན་པར་བྱེད་པ •*क्रि.* प्रतिक्षिपति – དེ་ལྟར་ན་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་ནི་ཆོས་ཀྱི་དབྱིངས་ཐམས་ཅད་ལ་ཅི་ཡང་དབྲི་བར་ཡང་མི་བྱེད། སྣོན་པར་ཡང་མི་བྱེད एवं हि बोधिसत्त्वः सर्वस्माद्धर्मधातोर्न किञ्चिदुत्क्षिपति, न च किञ्चित् प्रतिक्षिपति बो.भू.141क/181; •*सं.* क्षेपणम् – ལུག་སོགས་རྣམས་ཀྱི་སྣོན་བྱེད་དག་ལ་གཟའ་དང་ཆུ་ཚོད་ཅེས་པ་སྟེ मेषादौ वारनाड्यां...क्षेपणे वि.प्र.181क/1.37; •*वि.* क्षेपकः – ད་ནི་ལོའི་ངེས་པ་ལ་ལུག་ལ་སོགས་པའི་འཕོ་བ་ལ་སྣོན་པར་བྱེད་པ་ལ་སྣོན་བྱེད་བཅུ་གཉིས་གསུངས་པ इदानीं मेषादिसंक्रान्तौ क्षेपणे क्षेपका द्वादश वर्षध्रुवके उच्यते वि.प्र.181क/1.37.

སྣོན་བྱེད = སྣོན་པར་བྱེད་པ།

སྣོམ = སྣོམ་པ།

སྣོམ་པ •*क्रि.* (*वर्त.; सक.; नश्रृव भवि., भूत.*) जिघ्रति – སྣ་བུག་ཏུ་ཆུད་པའི་མེ་ཏོག་ལ་སོགས་པའི་དྲི་སྣོམ་པ नासिकापुटविन्यस्तकुसुमामोदं जिघ्रति त.प.7ख/460; ཨུཏྤ་ལ་ལ་སོགས་པའི་དྲི་སྣོམ་པ་དང कुवलयादिगन्धं च जिघ्रति त.प.197क/110; •*सं.* 1. जिघ्रणम् – དབང་འབྱོར་གཟུགས་དོན་ལྟ་དང་གཏམ་བཟང

ནི། །གཙང་མ་ཉན་དང་བདེ་གཤེགས་ཚུལ་ཁྲིམས་ཀྱི། །དྲི་གཙང་སྣོམ་དང...རྒྱུར་གྱུར विभूतिरूपार्थविदर्शने सदा निमित्तभूतं सुकथाशुचिश्रवे। तथागतानां शुचिशील-जिघ्रणे र.वि.117क/82 2. आघ्रातम् – ཁ་ཚུར་ཐལ་མོ་དང་མཐང་གྲུད་པ་དང་འོ་བྱེད་པ་དང་འཁྱུད་པ་དང་སྣོམ་པ་དང་མིག་ཟུར་གྱིས་བལྟ་བ་དག་གི་འདོད་ཆགས་ དེ་དག་དེ་ལ་མི་འབྱུང་ངོ་॥ खटचपेटलिङ्गितचुम्बितपरिष्वक्ताघ्रातकटाक्षेक्षितैः तस्य... रागो न प्रवर्तते ल.अ.103क/49; • पा. घ्राणम्, इन्द्रियभेदः – ལྟ་དང་ཉན་དང་སྣོམ་པ་དང་། །མྱོང་བར་བྱེད་དང་རེག་བྱེད་ཡིད། །དབང་པོ་དྲུག་སྟེ་དེ་དག་གི། །སྤྱོད་ཡུལ་བལྟ་བར་བྱ་ལ་སོགས॥ दर्शनं श्रवणं घ्राणं रसनं स्पर्शनं मनः। इन्द्रियाणि षडेतेषां द्रष्टव्यादीनि गोचरः॥ प्र.प.38क/43; •उ.प. आघ्रातम् – ཚེར་མས་གཏམས་སེང་སྟག་གིས་སྣོམ། །ནགས་ཚལ་མཆོག་ཏུ་གནས་པར་བྱ॥ वास्तव्यं कण्टकाकीर्णे व्याघ्राघ्राते वरं वने। अ.क.178क/20.32.

སྣོམ་པ་པོ वि. घ्राता – དྲི་མེད་སྣོམ་པ་པོ་ཡང་མེད། །རོ་མེད་མྱོང་བ་པོ་ཡང་མེད॥ न गन्धो नापि घ्राता च न रसो नापि *रासकः। हे.त.6क/14.

སྣོམ་བྱེད = སྣ घ्राणम्, नासिका – क्लीबे घ्राणं गन्धवहा घोणा नासा च नासिका॥ अ.को.2.6.89; जिघ्रत्यनेनेति घ्राणम्। घ्रा गन्धोपादाने अ.वि.2.6.89.

སྣོམས་ཤིག क्रि. गृहाण – གནས་བརྟན་ལྷུང་བཟེད་འདི་ནི་ཤིན་ཏུ་གསལ་བ་དབྱིབས་ལེགས་པ་ཡོངས་སྤྱད་པར་བཟོད་པ་ལགས་ཀྱིས། གལ་ཏེ་བཞེད་ན་སྣོམས་ཤིག स्थविर इदं पात्रं स्वच्छं परिमण्डलं परिभोगक्षमं स चेदाकांक्षति गृहाण वि.सू.27ख/34; द्र.– དེས་སྨྲས་པ། ཁྱོད་སྣོམས་ཤིག सा आह–तवैव भवत्विति ल.वि.132ख/196.

སྣོལ इङ्गितम् – བློ་གྲོས་ཆེན་པོ་སངས་རྒྱས་ཀྱི་ཞིང་ལ་ལ་ན་མིག་མི་འཛུམས་པས། ལ་ལ་ན་སྣོལ་གྱིས...ཆོས་སྟོན་ཏེ क्वचिन्महामते बुद्धक्षेत्रेऽनिमिषप्रेक्षया धर्मो देश्यते, क्वचिदिङ्गितैः ल.अ.97क/43.

སྣྲུབས ना. मूला, नक्षत्रम् – རྒྱུ་སྐར་ནི་ཐ་སྐར་དང... སྣྲུབས་དང...ནམ་གྲུ་སྟེ་ཉི་ཤུ་རྩ་བདུན་ནོ॥ नक्षत्राणि अश्विनी...मूला...रेवतीति सप्तविंशतिः वि.प्र.179ख/1.36; मूलम् म.व्यु.3203 (55ख).

སྣྲེལ་ཞི • वि. व्यत्यस्तः – འཇིག་རྟེན་གྱི་ཁམས་སྣྲེལ་ཞིའི་སྒོ་དང व्यत्यस्तलोकधातुमुखम् ग.व्यू.390ख/97; འཇིག་རྟེན་གྱི་ཁམས...ཕྲ་བ་དང་རགས་པ་དང་སྣྲེལ་ཞི་དང་སྤྱི་འུ་ཚུགས་དང... མ་ལུས་པ་ཡེ་ཤེས་ཀྱི་ཁོང་དུ་ཆུད་པར་བྱ་ཞིང་མངོན་དུ་འགྱུར་བར་བྱ་བའི་ཕྱིར निरवशेषसर्वलोकधातु...सूक्ष्मौदारिकव्यत्यस्तावमूर्ध...ज्ञानानुगमप्रत्यक्षतायै शि.स.161क/154; •सं. = སྣྲེལ་ཞི་ཉིད व्यत्यस्तता – ཞིང་གི་ལུས་རྣམས་ཀྱི་ཆུང་བའི་རང་བཞིན་ཡང་རབ་ཏུ་ཤེས་སོ॥ ...རྣམ་པར་དག་པ་དང་སྣྲེལ་ཞི་དང क्षेत्रकायानां परीत्ततां च प्रजानाति... विशुद्धतां च व्यत्यस्ततां च द.भू.244ख/45; • पा. व्यत्यस्तः, समाधिविशेषः – སྣྲེལ་ཞི་ཞེས་བྱ་བའི་ཏིང་ངེ་འཛིན व्यत्यस्तो नाम समाधिः म.व्यु.534 (12ख).

སྣྲེལ་ཞི་ཉིད चित्रता – སྣམ་ཕྲན་སྣྲེལ་ཞི་ཉིད་དང་ལྷག་མ་མཉམ་པ་ཉིད་དང་དབུས་ནས་གཞན་དུ་གློགས་བུའི་འཁྱོགས་ཕྱོགས་སུ་ལྟ་བ་ཉིད་དང་མཐའ་བསྐོར་བ་ཉིད་དག་གིས་སོ॥ भक्तिचित्रताशेषसममध्यान्यत्तद्गतपत्रमुखत्वपरिमण्डितत्वैः वि.सू.67क/84.

སྣྲེལ་ཞིའི་སྙོམས་པར་འཇུག་པ पा. व्यास्कन्दकसमा-

पत्तिः [व्यत्यस्तकसमापत्तिः ?], समापत्तिविशेषः म. व्यु.1497 (32क).

སྤྲེལ་ཞིའི་སྤྱོད་པ་ལ་འཇུག་པ་ཡང་དག་པར་བསྟན་པའི་ཡེ་ཤེས *पा.* व्यत्यस्तचरिसंदर्शनावतारज्ञानम्, तथागतानामवतारज्ञानविशेषः – གང་འདི་དག་དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་རྣམས་ཀྱིས་ཕྱུགས་སུ་ཆུད་པའི[? ཀྱི་འཇུག་པའི་]ཡེ་ཤེས་འདི་ལྟ་སྟེ། སྐྲའི་རྩེ་མོ་ལ་འཇུག་པའི་ཡེ་ཤེས་སམ...སྤྲེལ་ཞིའི་སྤྱོད་པ་ལ་འཇུག་པ་ཡང་དག་པར་བསྟན་པའི་ཡེ་ཤེས་སམ स यानीमानि तथागतानाम्...अवतारज्ञानानि यदुत बालपथा[? बालाग्रा]वतारज्ञानं वा...व्यत्यस्तचरिसंदर्शनावतारज्ञानं वा द.भू.267क/59.

སྣྲོན *ना.* ज्येष्ठा, नक्षत्रम् – རྒྱུ་སྐར་ནི་ཐ་སྐར་དང་... སྣྲོན་དང་... ནམ་གྲུ་སྟེ་ཉི་ཤུ་རྩ་བདུན་ནོ། नक्षत्राणि अश्विनी...ज्येष्ठा...रेवतीति सप्तविंशतिः वि.प्र.179ख/1.36.

སྣྲོན་གྱི་ཟླ་བ ज्येष्ठः, मासविशेषः – དེ་བཞིན་དུ་སྣྲོན་གྱི་ཟླ་བ་དང་ཆུ་སྟོད་ཀྱི་ཟླ་བ་དག་ལ་ཊ་སྡེའོ། एवं टवर्गः ज्येष्ठाषाढयोः वि.प्र.54ख/4.85; སྣྲོན་གྱི་ཟླ་བའི་ཚེས་རྣམས་མེའི་ལའོ། ज्येष्ठतिथयः पावकस्य वि.प्र.42ख/4.36.

བརྟག = བརྟག་པ།

བརྟག་པ 1. सङ्कल्पः – ཡང་ན་བརྟག་པ་རྒྱ་ཆེ་བའི། །སློང་བ་སུ་ཡིས་ཡོངས་རྫོགས་ཏེ།། अथ वा पृथुसङ्कल्पः केनार्थी परिपूर्यते। अ.क.57क/6.44; བརྟག་པ་ཡོངས་སུ་རྫོགས་པ परिपूर्णसङ्कल्पः म.व्यु.1094 (23ख) 2. कलना – དེ་ལྟར་བསམས་ནས་ཏེ་སྔོན་དུ་ཉེ་བར་གནས་སྐབས་བཟང་པོ་དང་པོའི་རྣམ་གཞག་རབ་གནས་པ། །མི་བཟོད་འབངས་མེའི་དངོས་པོ་བརྟག་པའི་སྙིངས་པར་གྱུར་པ་བཞིན་དུ་གཡོ་བ་མེད་ཉིད་གྱུར།། संचिन्त्याथ पुरःप्रवृत्तसुदशासन्नाव[? प्र]सन्नस्थितिं प्राप्तेवासमदासभावकलनावैलक्ष्यनिःस्पन्दताम्। अ.क.75क/7.46.

བརྟག་པ་ཡོངས་སུ་རྫོགས་པ *वि.* परिपूर्णसङ्कल्पः, श्रावकस्य म.व्यु.1094 (23ख).

བརྟག་པར་བྱ भवितव्यता – རྨི་ལམ་སྒྱུ་མ་མིག་འཕྲུལ་སོགས། །གང་གི་ལྟད་མོའི་ཟེར་མ་ནི། །མད་བྱུང་ཡང་དག་ཚོགས་པའི་ས། །བརྟག་པར་བྱ་སྟེ་རྒྱལ་གྱུར་ཅིག། स्वप्नमायेन्द्रजालादि यस्याः कौतुकविप्रुषः। जयत्यद्भुतसंभारभूमिः सा भवितव्यता॥ अ.क.37ख/4.11.

བརྟག་བྱས། °ནས संस्तभ्य – ལག་པ་རྐང་པ་ངེས་བཅད་པའི། །གདུང་བ་དྲག་པོ་བརྟག་བྱས་ནས།། निकृत्तपाणिचरणः स संस्तभ्य पृथुव्यथाम्। अ.क.253क/29.67; द्र. བརྟགས་བྱས་ཏེ།

བརྟགས་པ सङ्कल्पः – ང་ཡིས་སྔོན་ཆད་ཇི་ལྟར་བརྟགས་པ་དེ། །ང་ཡི་སྨོན་ལམ་དེ་དག་ཡོངས་རྫོགས་ཏེ།། यथा च सङ्कल्प ममासि पूर्वम्। परिपूर्णमेतत् प्रणिधानु मह्यम् स.पु.20ख/32.

བརྟགས་བྱས། °ཏེ संस्तभ्य – སྐྲག་པས་ཉེན་པ་དེ་དག་གིས། །གདུང་བ་བཟོད་དཀའ་བརྟགས་བྱས་ཏེ།། तमहं त्रासतरलं व्यथां संस्तभ्य दुःसहाम्। अ.क.187ख/80.81.

བརྟང द्र.– དེ་ནས་རྒྱལ་པོ་མ་སྐྱེས་དགྲ་ཀ་དམ་པའི་མེ་ཏོག་བཞིན་དུ་སྤུ་ཟིང་ཞེས་བྱས་ཏེ་མཆི་མས་བརྟང་ཞིང་ངུ་བའི་བཞིན་གྱིས ततो राजा अजातशत्रुः कदम्बपुष्पवदाहृष्टरोमकूपः साश्रुकण्ठो रुदन्मुखः अ.श.276ख/254.

བརྒྱད་ཡ • सं. मेलुः, संख्याविशेषः – བརྒྱ་སྟོང་ཕྲག་བརྒྱ་ན་བྱེ་བའོ། ...ཕན་ཕུན་ཕན་ཕུན་ན་བརྒྱད་ཡའོ། शतं शतसहस्राणां कोटिः ...पेलुः पेलूनां मेलुः ग.व्यू.3ख/103.

བརྒྱངས་པ द्र.– མཆི་མས་བརྒྱངས་ནས་ཡང་སྨྲས་པ सबाष्पगद्गदं पुनरुवाच जा.मा.58क/67; གསོལ་ཀ་བ མཆི་མས་བརྒྱངས་ཤིང་སྐད་འཛེར་བ་ལ་དབུགས་ཀྱིས བརྒྱངས་པའི་ཚིག་མི་གསལ་བས། གཅོམ་ཆུང་དུས་སྨྲས་པ क्षत्ता बाष्पवेगोपरुध्यमानगद्गदकण्ठः श्वासविस्खलितलुलिताक्षरं शनैरित्युवाच जा.मा.49ख/58; དེས་ཚེམ་ཀུན་པ་དེ་དག་བསད་པ་མཐོང་ནས་མཆི་མས་བརྒྱངས་ཏེ་འདུག་པར་གྱུར་པ་དང तेन ते चोरा दृष्टाः प्रघातिताः । साश्रुकण्ठो व्यवस्थितः वि.व.128ख/2.105.

བརྣབ་སེམས पा. अभिध्या, अकुशलकर्मभेदः – སྲོག་གཅོད་པ་དང་...བརྣབ་སེམས་དང་གནོད་སེམས་དང་ལོག་པར་ལྟ་བ་རྣམས་ནི་མི་དགེ་བ་བཅུའོ། प्राणातिपात... अभिध्याव्यापादमिथ्यादृष्टयो दशाकुशलाः त.प.314ख/1096.

བརྣབ་སེམས་སྤོང་བ पा. अभिध्यायाः प्रतिविरतिः, दशसु कुशलकर्मसु एकम् म.व्यु.1696 (37ख).

བརྣབ་སེམས་མེད་པ पा. अनभिध्या – ལུས་དང་ངག་དང་ཡིད་ཀྱི་ལས་དགེ་བ་དང་བརྣབ་སེམས་མེད་པ་དང་གནོད་སེམས་མེད་པ་དང་ཡང་དག་པའི་ལྟ་བ་རྣམས་སོ། इष्टं कुशलं कायवाङ्मनस्कर्म अनभिध्याऽव्यापादसम्यग्दृष्टयश्च अभि.भा.199क/674.

བརྫོགས = བརྫོགས་པ།

བརྫོགས་པ संनिष्ठपनम् – བརྫོགས་ན་བཀུམ་པ་ཡིན་ནོ། संनिष्ठपनं हारः वि.सू.16क/18.

བསྣད་པ अभिघातः – བདག་བསྣད་པའི་སྡུག་བསྔལ་ལ་མི་སེམས་པར स्वमभिघातदुःखमचिन्तयित्वा जा.मा.143ख/166; निघातः – གཡང་ས་ནས་ལྷུང་སྟེ་བསྣད་པའི་ཚོར་བ་སྐྱེད་པ་ནི་སེམས་ལ་ཁྲབ་པར་གྱུར་ཏེ प्रपातपतननिघातसंजनिताभिर्वेदनाभिरापीड्यमानहृदयम् जा.मा.147क/170.

བསྣན = བསྣན་པ། བསྣན་ཏེ प्रक्षिप्य – འདོད་ཆགས་དང་བཅས་པས་ནི...དྲུག་འཐོབ་སྟེ...འདོད་ཆགས་དང་བྲལ་བས་ནི་ཕ་རོལ་གྱི་སེམས་ཤེས་པ་བསྣན་ཏེ་བདུན་འཐོབ་པོ། सरागस्य षण्णां... वीतरागस्य सप्तानां परचित्तज्ञानं प्रक्षिप्य अभि.भा.54क/1074.

བསྣན་པ • सं. 1. = ལྷག་པ अधिकम् – རྣམ་པ་གཅིག་ཏུ་ན་རང་གིས་བསྣན་པ་ནི་རང་གིས་ལྷག་པ་སྟེ अथ वा–स्वेनाधिकानि स्वाधिकानि अभि.स्फु.123क/822; ལ་ལ་དག་ཏུ་འགྱོད་པ་བསྣན། कौकृत्यमधिकं क्वचित् अभि.को.5क/195; उत्क्षेपः – ཤེས་རབ་ཀྱི་ཕ་རོལ་ཏུ་ཕྱིན་པ་ནི་གཉིས་སུ་བལྟ་བར་མི་བྱ། གཉིས་མ་ཡིན་པར་ཡང་མ་ཡིན... བསྣན་པར་མ་ཡིན། བསྣན་པ་མེད་པར་ཡང་མ་ཡིན प्रज्ञापारमिता न द्वयेन द्रष्टव्या न अद्वयेन...नोत्क्षेपतो न प्रक्षेपतः कौ.प.142क/95 2. अवधारणम् – འཛིན་པའི་སྤྱོད་ཡུལ་ཉིད་ཅེས་བསྣན་པ་ནི་སེམས་དང་སེམས་ལས་བྱུང་བ་བསལ་བའི་ཕྱིར་རོ། ग्राहकगोचर एवेत्यवधारणं [चित्त]चैतसिकव्युदासार्थम् अभि.स.भा.19ख/26 3. वीप्सा – वीप्सा ཕྱིར་བསྐྱགས་པའམ་བསྣན་པའམ་ཟློས་པ म.व्यु.7556 (108क); मि.को.33क 0. *> བསྣུན་པ प्रहारः – དེ་ནི་ཐོ་བས་བསྣུན་སོགས་པའི། །བརྩལ་མ་ཐག་ཏུ་འབྱུང་བ་ཡིན། स मुद्गरप्रहारादिप्रयत्नानन्तरीयकः । त.स.

85क/780; हतः – གཡུལ་དུ་དགྲ་ཡི་གླང་པོ་རྣམས། །ཁྱོད་ཀྱི་ལག་པ་མཐར་བྱེད་ཀྱིས། །བསྣུན་པའི་ཁྲག་ནི་རབ་ཐྲག་པས། །ཐུན་མཚམས་དག་གི་སྤྲིན་བཞིན་མཛེས།། करेण ते रणेष्वन्तकरेण द्विषतां हताः । करेणवः क्षरद्रक्ता भान्ति सन्ध्याघना इव ॥ का.आ.335ख/3.26; • *भू.का.कृ.* प्रक्षिप्तः – འདི་ལྟ་སྟེ། བློ་གྲོས་ཆེན་པོ་གང་གཱའི་ཀླུང་གི་བྱེ་མ་རྣམས་ནི་ཕྲི་ཡང་མངོན་པ་མེད་དོ། བསྣུན་ཀྱང་མངོན་པ་མེད་དོ།། तद्यथा महामते गङ्गायां नद्यां वालुका अपकृष्टा अपि न प्रज्ञायन्ते, प्रक्षिप्ता अपि न प्रज्ञायन्ते ल.अ.148क/94.

བསྣུན་པ་མེད་པ <?>प्रक्षेपः – ཤེས་རབ་ཀྱི་ཕ་རོལ་ཏུ་ཕྱིན་པ་ནི་གཉིས་སུ་བལྟ་བར་མི་བྱ། གཉིས་མ་ཡིན་པར་ཡང་མ་ཡིན... བསྣུན་པར་མ་ཡིན། བསྣུན་པ་མེད་པར་ཡང་མ་ཡིན प्रज्ञापारमिता न द्वयेन द्रष्टव्या न अद्वयेन...नोत्क्षेपतो न प्रक्षेपतः कौ.प.142क/95.

བསྣུན་པའི་ཡི་གེ प्रक्षेपलिपिः, लिपिविशेषः – ཚངས་པའི་ཡི་གེའམ་ཁ་རོ་ཥྟིའི་ཡི་གེའམ་པད་མའི་སྙིང་པོའི་ཡི་གེའམ...བསྣུན་པའི་ཡི་གེའམ...ཡི་གེ་དྲུག་ཅུ་རྩ་བཞི་པོ་དེ་དག་གི་ནང་ནས ब्राह्मीखरोष्टीपुष्करसारिं..प्रक्षेपलिपिं...आसां...चतुष्षष्टीलिपीनाम् ल.वि.66ख/88.

བསྣུམ་དུ་མེད་པ *वि.* अनाघ्रातः – འཇམ་དཔལ་དེ་བཞིན་དུ་དེ་བཞིན་གཤེགས་པ...བསིལ་བར་གྱུར་པ...བསྣུམ་དུ་མེད་པ एवमेव मञ्जुश्रीस्तथागतः...शीतीभूतः...अनाघ्रातः र.व्या.78ख/9.

བསྣུམས = བསྣུམས་པ། བསྣུམས་ཏེ། °ནས 1. गृहीत्वा – བཅོམ་ལྡན་འདས་ཀྱིས་རུས་པ་རྣམས་དགེ་འདུན་གྱི་མདུན་དུ་བསྣུམས་ཏེ་ཕྱག་ཏུ་བཞེས་ཏེ་བཀའ་སྩལ་པ भगवांश्चास्थीनि गृहीत्वा सङ्घस्य पुरतः संस्थाप्योवाच सु.प्र.54क/107; आदाय – ལྷུང་བཟེད་དང་ཆོས་གོས་བསྣུམས་ཏེ पात्रचीवरमादाय वि.व.129ख/1.19 2. घ्रात्वा – མེ་ཏོག་གི་དྲི་བསྣུམས་ནས पुष्पगन्धं च घ्रात्वा अभि.भा.168क/574.

བསྣུམས་པ • *क्रि. (སྣོམ इत्यस्याः भूत.)* <?>जिघ्रति – དེ་ལྟར་[ངེས་པར་]རྟོགས་པའི་ཤེས་རབ་དང་ལྡན་པས་གང་ཅི་མཐོང་བ་དང་ཐོས་པ་དང་བསྣུམས་པ་དང་མྱངས་པ་དང་རེག་པ་དང་རྣམ་པར་ཤེས་པ་དེ་དག་ཐམས་ཅད་ངེས་པར་རྟོགས་སོ།། स एवं नैर्वेधिक्या प्रज्ञया समन्वागतो यत्किंचित् पश्यति शृणोति जिघ्रति आस्वादयति स्पृशति विजानीते वा, तत्सर्वं निर्विध्यति सु.प.25क/5; • *सं.* 1. आघ्रातम् – ཀྱེ་མ་དཔལ་དང་དུག་ཤིང་བསྣུམས་ཙམ་གྱིས། །སྐྱེས་བུ་རྣམས་ནི་རྣམ་པར་ཉམས་པར་བྱེད།། आघ्रातमात्रैव करोति पुंसामहो विनाशं विषवल्लरी श्रीः ॥ अ.क.202क/22.94 2. घ्राणम् – དྲི་བསྣུམས་པ་དང་རོ་མྱང་བ་དང་རེག་བྱ་རེག་པ་རྣམས་ཀྱི་ཐུན་མོང་མ་ཡིན་པའི་རྒྱུ་ཉིད་ལ་དབང་བྱེད་པའོ།། गन्धघ्राणरसाऽऽस्वादनस्प्रष्टव्यस्पर्शनानां चासाधारणकारणत्वे (आधिपत्यम्) इति अभि.भा.53क/136 3. धारणम् – འོན་ཏེ་ལྷུང་བཟེད་ཆོས་གོས་བསྣུམས་པ་དག། །གཽ་ཏམ་ཁྱོད་ཀྱི་ཐམས་ཅད་མཛེས་པ་ཉིད།། अथ चीवरपात्रधारणं रुचिरं गौतम सर्वमेव ते ॥ वि.व.126क/1.15; • *वि.* व्यग्रः (समस्तपदे) – དེ་ནས་བཅོམ་ལྡན་འདས་ཀྱིས་དགེ་སློང་སྟོང་པོ་དེ་དག་མི་སྣང་བར་མཛད་དེ། ཉག་གཅིག་ལྷུང་བཟེད་དང་ཆུ་སྣོད་ཕྱག་ན་བསྣུམས་ནས་གང་པོ་དང་ཉེ་བ་ཞིག་ཏུ་གཤེགས་སོ།། अथ भगवांस्तं भिक्षुसहस्रमन्तर्धाप्य एकः पात्रकरकव्यग्रहस्तः पूर्णसमीपे स्थितः अ.श.2ख/2; • *भू.का.कृ.* 1. घ्रातः – དགེ་བའི་མེ་ཏོག་བསྣུམས་པ་ཉིད་མིན་བདེན་པ་ཡི་ནི་ཚུལ་མ་མཐོང་།། नैव घ्रातं कुशलकुसुमं सत्यरूपं न दृष्टम्। अ.क.215ख/24.87

2. धृतः – འཁོར་གསུམ་སྟེན་ལ་མཁས་པར་གྱུར་པ་དང༌། །འབངས་ལ་ཕན་ཕྱིར་གནམ་རུ་བསྣམས་པ་དེ། त्रिवर्गसेवानिपुणस्य तस्य प्रजाहितार्थं धृतकार्मुकस्य । जा.मा.61ख/71; • *उ.प.* धृक् – མཁྱེན་བརྩེའི་རལ་གྲི་རྡོ་རྗེ་མཆོག་བསྣམས ज्ञानकृपासिवज्रवरधृक् र.वि. 77ख/7; པད་བསྣམས་འཇིག་རྟེན་མགོན་པོ་ལྟར། लोकेश इव पद्मधृक् गु.सि.27ख/61; धरः – ཡིད་བཞིན་ནོར་བུའི་རྒྱལ་མཚན་བསྣམས། चिन्तामणिध्वजधरः । स.दु.107क/158; धारी – ཡེ་ཤེས་ཀྱི་ཆུས་གང་བའི་རིན་པོ་ཆེའི་བུམ་པ་བསྣམས་པ་རྣམས་ཀྱིས ज्ञानाम्बुपूर्णरत्नकलशधारिभिः ख.टी.163ख/246; ཀུན་ད་ཟླ་བུའི་མདོག་ལྟ་བུ། །འདི་ཡི་ཕྱག་མཚན་གདུགས་བསྣམས་པ། कुन्देन्दुवर्णसन्निभा मुद्रेयं छत्रधारिणः । स.दु.109क/166.

བསྣམས་པ་ཅན उ.प. धारी – སྐུ་མདོག་དམར་པོ་འོད་འབར་བ། །རྡོ་རྗེ་གུར་ནི་བསྣམས་པ་ཅན། रक्तवर्णप्रभादिव्यो वज्रपञ्जरधारिणः । स.दु.110क/170.

བསྣུན = བསྣུན་པ། བསྣུན་ནས अभिहत्य – མའི་མགོ་བོ་ལ་རྡོག་པས་བསྣུན་ནས་འགྲོན་པོ་རྣམས་དང་ཆས་སོ། मातरं पादेन शिरस्यभिहत्य सार्थसहायः संप्रस्थितः अ.श.100क/90; प्रहृत्य – གཞན་ལ་བསྣུན་ནས་སྐྱེས་བུ་ནི། परं प्रहृत्य...पुरुषः का.आ.320ख/1.67.

བསྣུན་དུ प्रहन्तुम् – མགོན་པོ་འབྲལ་བ་བཟོད་པར་བགྱི། །གང་གིས་མིག་བསྔོས་བདག་ལ་ནི། །འདོད་པས་བསྣུན་དུ་མི་མཐོང་བའི། །མཐོང་མེད་མིག་སྨན་བདག་ལ་སྟོལ། सहिष्ये विरहं नाथ देह्यदृश्याञ्जनं मम । यदक्तनेत्रां कन्दर्पः प्रहन्तुं मां न पश्यति ॥ का.आ. 327क/2.150.

བསྣུན་པ •*क्रि.* (*སྣུན इत्यस्याः भवि., भूत.*) <?>हन्ति – བརྟན་པ་དང་གཡོ་བ་གང་ལ་བསྣུན་དེ་ཕྱེ་མ་བརྒྱུར་བྱེད་དོ། स्थावरं जङ्गमं यं हन्ति शतचूर्णं करोति वि.प्र. 145ख/3.88; भिनत्ति – ཁ་ཅིག་ནི་མགོར་ཐལ་བའི་བུམ་པ་དག་གིས་བསྣུན केषाञ्चिद्भस्मघटिकया शिरांसि भिनत्ति वि.व.8ख/2.80; • *सं.* प्रहारः – མཁའ་ལྡིང་དག་གིས་སོ། །དྲག་བསྣུན་གཏུབས་པའི་དབྱིབས་ཅན་དག། །མཐོང་ནས प्रियं पतङ्गराजोग्रप्रहारदलिताकृतिम् । दृष्ट्वा अ.क.311ख/108.165; ལག་པ་གཡས་པས་ཐལ་མོ་ལན་གཅིག་བསྣུན་པས་བསད་པར་གྱུར་ཏོ། दक्षिणेन पाणिना चपेटया एकप्रहारेणैव हतोऽभूत् ल.वि.74ख/101; ས་སྐྱོང་རྣམས་ལ་མཚོན་བསྣུན་པ། །སྟེར་བྱེད་ཁྱོད་ཀྱི་ལག་པ་ཡིས། शस्त्रप्रहारं ददता भुजेन तव भूभुजाम् । का.आ.334क/2.353; घातः – འབར་བའི་རལ་གྲི་མདུང་ཐུང་གིས་བསྣུན་ཤ་ཡི་དུམ་བུ་བརྒྱར་ལྷགས་ཤིང༌། ज्वलदसिशक्तिघातशतशातितमांसदलः बो.अ.22क/7.45; དེ་ལ་ལག་མཐིལ་གྱི་ཐལ་ལྕག་གིས་བསྣུན་པ་ལའོ། पाणितलघातस्यात्र दाने वि.सू.52ख/67; आघातः – འདི་ནི་སྒྲ་དམིགས་པའི་དུས་ན་ལྕག་གིས་བསྣུན་པ་དང་རླུང་གཞན་སྟོང་བར་བརྗོད་པར་རིགས་པ་མ་ཡིན་ཏེ तदेतदयुक्तं शब्दोपलब्धिकाले कशाघातवातान्तरविदो वक्तुम् त.प. 186क/833; སྤྲིན་གྱི་བཞོན་པ་མཁའ་ལྡིང་གིས། །བསྣུན་ཅིང་གཏུབས་པ་མཐོང་གྱུར་ནས། स दृष्ट्वा गरुडाघातदीर्णं जीमूतवाहनम् । अ.क.310ख/108.157; अभिघातः – གཞན་དག་ན་རེ་བསྣུན་པ་ལས་འབྱུང་བའི་ཕྱིར་རོ་ཞེས་ཟེར་རོ། अभिघातजत्वादित्यपरे अभि. स्फु.281ख/1117; निर्घातः – འཇིགས་པའི་རླུང་གིས་བསྣུན་པ་ཡི། །རྒྱུ་སྐར་རབ་ཏུ་གཡོ་བ་བཞིན། उत्पातवातनिर्घाततरलास्तारका इव ॥ अ.क.310क/108. 154; अवघातः – ཁྱིམས་ལྡན་མ་ཡི་ཁྱིམས་པ་གླང་པོ

ལ། །བསྣུན་པའི་ཁྲག་བསྒོས་སྔེར་མོའི་འཕྲེང་བ་བཞིན།། मनस्विनीमानगजावघातरक्ता च सिक्ता नखरावलीव ॥ अ.क.295क/108.20; आहतिः – ནགས་ནང་ཡིན་ཡང་མྱ་ངན་མེད། །བུད་མེད་རྐང་པས་བསྣུན་པ་མཐོང་།། दृष्टा वनेऽप्यशोकस्य ललनाचरणाहतिः ॥ अ.क.249क/29.24; प्रहतिः – གསོད་པའི་སེམས་ཀྱིས་དུད་འགྲོ་ལ་བསྣུན་ནའོ།། वधकचित्तेन तिरश्चः प्रहतौ वि.सू.44क/55; ताडनम् – དགའ་མའི་ལག་པ་ཤིན་ཏུ་དམར། །རྒྱུད་མངས་ལ་བསྣུན་རྣམ་འཕྲུལ་ལ། །ཕྲག་དོག་ལྡན་པར་མཛའ་བོ་ལའང་། །རྣ་བའི་ཨུཏྤ་ལ་ཡིས་སྣུན་བྱེད།། करोऽतिताम्रो रामाणान्तन्त्रीताडनविभ्रमम्। करोति सेर्ष्यं कान्ते वा श्रवणोत्पलताडनम् ॥ का.आ.335क/3.21; དང་པོར་བསྣུན་པར་བྱ་བ་སྟེ། །དེ་ནས་དབབ་དང་བསྲེག་པ་དང་།། प्रथमं ताडनं कुर्यादावेशं दाहनं ततः। वि.प्र.81ख/4.168; • *भू.का.कृ.* हतः – དཔྲལ་བར་རྒྱ་མཚོས་བསྣུན་པའི་དུས་རྣམས་ཞེས་པ་བཅུ་དྲུག་སྟེ जलधिहतयुगा इति षोडश ललाटे वि.प्र.245क/2.59; आहतः – བདེ་བའི་དཔལ་ནི་རླུང་བསྣུན་མར་མེ་རྩེ།། वाताहता दीपशिखा सुखश्रीः अ.क.31ख/3.146; འཁྲུལ་མང་བྱ་སྐྱིབས་རྒྱ་[? བརྒྱ] ཡིས་བསྣུན་པ་རྣམས། །ངེས་པར་རྒྱུན་མ་དག་ཏུ་ལྷུང་བར་འགྱུར།། बहुभ्रमश्वभ्रशताहतानां भवत्यलं पातपरम्परैव ॥ अ.क.235ख/89.176; अभ्याहतः – མ་ཅིག་དཀའ་བ་བྱེད་བྱེད་པའི། །མགོ་བོར་རྡོག་པས་བསྣུན་པས་ན།། माता दुष्करकारिका। पादेनाभ्याहता मूर्ध्नि अ.श.102क/92; निहतः – དེ་ཉིད་ལྔ་ཡིས་བསྒྱུར་ཏེ་སླར་ཡང་མདའ་ཞེས་པ་ལྔས་བསྣུན་པ་ནི་བསྒྱུར་ཞེས་པའི་དོན་ཏོ།། तदेव पञ्चगुण्यं पुनरिषुरिति पञ्चभिर्निहतं गुणितमित्यर्थः वि.प्र.201क/1.80; अभिनिहतः – གདོལ་པའི་མི་ཡིས་མདའ་རྣམས་བསྣུན་ཀྱང་ནི། །སྤྲེའུར་གྱུར་ངས་ནི་མི་དེ་མ་བཏང་ངོ་།། न च त्यक्त वानरगतेन व्याधनरः शराभिनिहतेन ॥ रा.प.238ख/135; उपहतः – གང་ཞིག་ལེ་ལོས་བསྣུན་པ་དང་། །རྨོངས་པ་གང་གིས་ང་མི་ཤེས།། मां न जानन्ति ये मुग्धाः कौसीद्योपहताश्च ये ॥ हे.त.15ख/48; ताडितः – ཞེས་པ་དགེ་སློང་ཚིག་ཐོས་ནས། །རྡོ་བ་ཡིས་ནི་བསྣུན་པ་བཞིན།། इति भिक्षोर्वचः श्रुत्वा शिलयेव स ताडितः। अ.क.235क/89.173; ཡུལ་མ་ག་དྷའི་བཙབ་ཁར...ལག་པས་བསྣུན་མ་ཐག་ཏུ་སྣྲ་འབྱུང་ཞིང་སྣྲ་རྒྱུན་རིང་དུ་བྱུང་ངོ་།། मागधिकानां कांसपात्री... पाणिताडिता रणत्यनुरणति स्म ल.वि.156क/233; མཚོན་ཆའི་རྒྱལ་པོས་བསྣུན་པ་སྟེ། །བརྒྱལ་བའི་གནས་སྐབས་ཐོབ་པར་འགྱུར།། मूर्छावस्थामवाप्नोति अस्त्रराजेन ताडितः ॥ वि.प्र.81ख/4.168; क्षतः – འཕྲལ་ལ་མཁའ་ལྡིང་དག་གིས་བསྣུན་ཞིང་ལུས་ནི་བཏུབས་པར་གྱུར་མོད་ཀྱང་།...གཞོན་ནུ कुमारस्ताक्ष्र्येण क्षतदलितगात्रोऽपि सहसा अ.क.308ख/108.140; विद्धः – དུག་དང་བཅས་པའི་མདའ་ཡིས་བསྣུན་ཀྱང་ནི सविषेण शरेण च विद्धः रा.प.239क/135; प्रहारो दत्तः – རྡོག་པས་བསྣུན་པ पार्ष्णिप्रहारो दत्तः वि.व.144क/1.32; स्थापितः – དེ་ཡང་དེ་རྣམས་ཀྱིས་དབེན་པའི་ཕྱོགས་ཤིག་ཏུ་བསྣུན་གསོས་བསྐྱེད་དེ सोऽपि ताभिः प्रतिगुप्ते प्रदेशे स्थापितः पोषितः संवर्धितः वि.व.123ख/1.12; • *वि.* शातिनी – བདག་གི་གནད་བསྣུན་ཟུག་རྡུ་འདི།། व्यथा मे मर्मशातिनी अ.क.130क/66.57; हन्यमानः – མདུང་ཐུང་དག་གིས་བསྣུན हन्यमानाश्च शक्तिभिः बो.अ.26ख/8.78.

བསྣུན་པར་བྱ • *क्रि.* ताडनं कुर्यात् – དང་པོར་བསྣུན་པར་བྱ་བ་སྟེ། །དེ་ནས་དབབ་དང་བསྲེག་པ་དང་།།' प्रथमं

ताडनं कुर्यादावेशं दाहनं ततः। वि.प्र.81ख/4.168; • कृ. ताडनीयम् – རྣལ་འབྱོར་པས་ཕྱག་རྒྱ་འདི་ཡིས་བསྣུན་པར་བྱ་སྟེ योगिना ताडनीयमनया मुद्रया वि.प्र. 174ख/3.174.

བསྣུན་པར་བྱ་བ = བསྣུན་པར་བྱ།

བསྣུན་བྱས། ०शिद हत्वा – དེའི་ཕྱིར་རྣམ་པར་དག་པས... ལྟེ་བར་རྡོ་རྗེ་ལྕགས་ཀྱུས་བསྣུན་བྱས་ཤིང अतो विशुद्ध्या हत्वा नाभौ वज्राङ्कुशेन वि.प्र.49ख/4.53.

བསྣོན = བསྣོན་པ།

བསྣོན་པ आयः – འོང་བ་ནི་རྗེས་སུ་འཇུག་པ་ཡིན་ལ། དེ་ཡང་བསྣོན་པ་སྟེ། བསྡིང་བའི་ཆ་ཙམ་ཡང་ཡོད་པ་མ་ཡིན་ནོ།। आगमनमागमः अनुप्रवेशः । स च आयस्य उपचयस्य लेशतोऽपि न संविद्यते बो.प.65क/31.

བསྣོར = བསྣོར་བ།

བསྣོར་བ • भू.का.कृ. व्यस्तः – འདུ་འཛི་མེད་པའི་རྐྱེན་གྱིས་དངོས་པོ་ལ་མངོན་པར་ཞེན་པ་དང་། རང་གི་ལུས་ཀྱི་རྫུ་འཕྲུལ་སྣ་ཚོགས་རྣམ་པ་མང་པོ་བསྣོར་བ་དང་ཟུང་གི་ཆོ་འཕྲུལ་བསྟན་པར་རབ་ཏུ་བཤད་ན་དགའ་བར་འགྱུར་བ་ཡིན་ཏེ असंसर्गप्रत्ययाद्भावाभिनिवेशबहुविविधस्वकायवैचित्र्यर्द्धिव्यस्तयमकप्रातिहार्यदर्शने निर्दिश्यमानेऽनुनीयते ल.अ.80ख/28; संपरिवर्तितः – དེ་སེར་སྣས་ཉོན་པས་དུས་བསྣོར་ཏེ་དབྱར་གྱི་གང་ཡིན་པ་དེ་ནི་དགུན་གྱིར་བྱས། དགུན་གྱི་གང་ཡིན་པ་དེ་ནི་དབྱར་གྱིར་བྱས་པ तेन मात्सर्याभिभूतेन लाभः संपरिवर्तितः । यो वार्षिकः स हैमन्तिकः परिणामितः। यस्तु हैमन्तिकः स वार्षिकः परिणामितः शि.स.38ख/36; • सं. परिवर्तः लो.को.1443; • वि. परिवर्तकः लो. को.1443.

བསྟོལ = བསྟོལ་བ།

བསྟོལ་བ • सं. विनिमयः – ཡོན་ཏན་ལས་རྣམས་ལྷན་ཅིག་གི། །དངོས་པོ་བརྗོད་པ་ལྷན་ཅིག་བརྗོད། །དོན་རྣམས་བསྟོལ་བ་གང་ཡིན་པ། །ཡོངས་བརྗེས་ཡིན་ཏེ་དེ་དག་དཔེར།། सहोक्तिः सहभावस्य कथनं गुणकर्मणाम्। अर्थानां यो विनिमयः परिवृत्तिस्तु सा यथा॥ का. आ.334क/2.348; • भू.का.कृ. मिश्रितः – གཡས་པ་འོག་ཏུ་བྱས་ནས་ནི། །གཡོན་པའང་སྟེང་དུ་བཀན་པར་བྱ། །ལག་གཉིས་ཕན་ཚུན་བསྟོལ་བ་འདི། །རྒྱལ་བ་མཆོག་གིས་མཆོག་སྦྱིན་གསུངས།། दक्षिणं तु अधः कृत्वा वाममुत्तानकः सदा। अन्योऽन्यमिश्रितौ ह्येतौ फरमित-या[? वरमा]हुर्जिनोत्तमाः ॥ म.मू.249क/282; • द्र. – ཕྱམ་ཐབས་ཅི་ནས་ཀུང་ཟླུམ་པོར་འདུག་པར་འགྱུར་བ་དེ་ལྟར་བགོ་བར་བྱའོ།། ...གཉའ་གོང་དུ་མི་བསྟོལ་བར་བྱ། ལྷག་པར་མི་བསྟོལ་བར་བྱ།། तथा निवसनं निवसीत यथा परिमण्डलं संस्थितं स्यात्...न वितस्तिकया। न पर्यस्तिकया वि.सू.49क/62; མི་ན་བར་གཉའ་གོང་དུ་བསྟོལ་བ་ལ་ཆོས་མི་བཤད न व्यस्तिकाकृतायागलानाय धर्मं देशयिष्यामः म.व्यु.8609 (119ख); ཐལ་མོ་བསྟོལ་ཏེ་བཅང་ངོ།། बद्धक्रतोः (?) वि.सू.93क/111.

བསྟོལ་མ द्र.– སྒོ་བསྟོལ་མར་གདོད་དོ།། विकर्णाकारया द्वारम् वि.सू.81क/98.

ཎ

ཎ 1. ण (नागरीवर्णः) – ཨ་ཞེས་བརྗོད་པ་དེའི་ཚེ་འདུ་བྱེད་ཐམས་ཅད་མི་རྟག་པའི་སྒྲ་བྱུང་ངོ།། ...ཎ་ཞེས་བརྗོད་པ་དང་ཉོན་མོངས་པ་ནི་ཐ་བ་ཞེས་བྱ་བའི་སྒྲ་བྱུང་ངོ།། यदा अकारं परिकीर्तयन्ति स्म, तदा अनित्यः सर्व-

संस्कारशब्दो निश्चरति स्म…णकारे रेणुक्लेशा इति ल.वि.67ख/89 2. णः i. = གཏན་ལ་ཕབ निश्चयः श्री.को.181ख ii. = ཤེས་པ ज्ञानम् श्री.को.181ख।

ཎ་ཡི་གེ णकारः – རྩ་དྲུག་ལ་ནམ་མཁའ་ལ་སོགས་པའི་དཀྱིལ་འཁོར་གྱི་རིམ་པས་ཎ་ཡི་གེ་ལ་སོགས་པའི་ཡི་གེ་རྣམས་སོ॥ षड्नाडीषु आकाशादिमण्डलक्रमेण णकारादीन्यक्षराणि वि.प्र.258ख/2.68.

***

I am very glad to have these two volumes (3 & 4) of your excellent dictionary. It is almost impossible in a work of this scope to avoid entirely some small mistakes. I admire the energy with which you have accomplished this task and I hope that you will find assistance in preparing future volume of this dictionary, which promises to be of very great help to scholars in this field. I have often consulted the first two volumes and always found very useful information.

J.W. De Jong

Indo-Iranian Journal Vol. 40(3), p. 273, July 1997.

...this dictionary which will contain about 40,000 Tibetan terms (words, names and technical terms) and more than 150,000 Sanskrit synonyms. The dictionary does not only list for each word the Sanskrit equivalents which occur in Sanskrit texts translated into Tibetan but also in many instances it indicates the context. The sources used by J. S. Negi are 86 texts, eleven dictionaries and ten kosas. The sources comprise many sutras, sastras and Tantric texts. Non-Buddhist texts have also been consulted as, for instance, the Kavyadarsa, the Unadivrtti and the Candronadivrtti.

The dictionary has been very carefully planned. As explained in the instructions for users, the following principles have been followed: a. if there is more than one Sanskrit equivalent having roughly the same meaning, the equivalents are arranged according to their frequency; b. if there are several Sanskrit equivalents with different meaning, they are classified under Arabic numerals 1, 2 etc.; c. when a word has only one Sanskrit equivalent which has different meanings, the meanings are arranged under Arabic numerals; d. when a word has different Sanskrit equivalents but one of them has different meanings, they are arranged under Roman numerals (for example: rkan-pa 1. padah i. sariravayavisesah; ii. asanader angam, etc.); e. when the meaning of a Sanskrit equivalent is unclear in its context, this is indicated with the numeral 0; f. in cases of doubt in determining the Sanskrit equivalent an asterisk is placed before it.

...this dictionary which, once completed, will be of great use for the study of Sanskrit and Tibetan texts. According to the introduction the dictionary is compiled primarily for the purpose of restoration work. To restore Tibetan texts into Sanskrit will always be very difficult if not impossible but, undoubtedly, this dictionary will greatly help in determining the range of Sanskrit words rendered into Tibetan by translators and, in this way, will facilitate the understanding of Tibetan translations of lost Sanskrit works.

J.W. DE JONG

ISBN 81-87127-10-4